Registered No

नई किताब

चाइना टूडे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से वेश्यापन, भिकमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल कारख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया, किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़त्म की, देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया. वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक़्शों के साथ—दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शिलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता—

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

بر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری
لے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن
جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے ۔

ب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے
ئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور' آج کا
' کس طرح وہاں سے ویشیاپن' بھکمنگی
کو ختم کیا گیا' کس طرح وہاں کے بےزمین
کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی
ے چین کیسے بھکمنگے سے ان داتا بن گیا'
ہ کی ناکےبندی کے باوجود اس نے اپنے
دے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو
لیا' کس طرح اپنے تعلیم کے نئے ڈھنگ سے
ں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور
ں جان پھونک دی' کس طرح شادی کے نئے
نی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت
کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری' سادگی
وا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر
ی' کام چوری اور سینہ زوری ختم کی' دیش
ٹھن کو ٹھیک کیا' وغیرہ وغیرہ ۔

تار کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے
نا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے
سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد
ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس
روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ
گئی ہے ۔

ادہ صفحے' بڑھیا کاغذ' کپڑے کی جلد' ایک
یک رنگی تصویریں' دو رنگین نقشوں کے
ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ ۔

کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھیے ۔

ہند' 145' مٹھی گنج الہٰ آباد ۔

सूफ़ी कहता है—

बावजूदे कि वह मुज़दा तेरा 'नहनो अक़रब'

सफ़े मसहफ़ पै लिखा था मुझे मालूम न था.

अर्थ—अगरचे क़ुरान के पन्ने पर तेरी बाबत यह ख़ुशख़बरी लिखी हुई थी कि तू इनसान की गरदन की रग से भी उनके ज़ियादा पास है, फिर भी मुझे तेरा पता न था, यानी मेरी ख़ुदी ने मुझे अन्धा कर रखा था.

इसलाम का कलमा यानी महावाक्य 'लाइलाह इल्लल्लाह'—सिवाय उस एक ख़ुदा के और कोई ख़ुदा नहीं है—अल्लाह को अपने से अलग समझ कर कहा गया है. सूफ़ी कहता है कि यह केवल उनके लिये है जो अभी अन्दर के ज्ञान नहीं पा सके.

भागवत में भगवान कहते हैं कि—"मेरे सिवा और कोई दूसरा नहीं है, यह सचाई अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये."

यही बात अल्लाह ने क़ुरान में कही है—"लाइलाह इल्ला अना." यही बात गीता में बार बार साफ़ साफ़ शब्दों में दोहराई गई है.

सब पैग़म्बरों, रिशियों, नबियों, रसूलों, तीर्थंकरों और अवतारों ने यही उपदेश दिया है.

यह उपदेश सच्चे खोजियों, अहलेदिल, भिक्शुओं, फ़क़ीरों और दरवेशों, दीक्शितों और मिस्कीनों को दिया जाता है. यही इल्म सीना या पराविद्या है, दूसरे सब इल्म इल्मसफ़ीना या अपरा विद्या हैं—यह इल्मसफ़ीना नीचे का ज्ञान है जो अहले दौल, श्रावकों, उपासकों और मामूली गृहस्थों के लिये है, उनके लिये जो दुनिया की खोज में हैं.

जिस तरह ईसाई किताबों में कहीं कहीं 'प्राफ़ेट' यानी नबियों और 'प्रीस्ट' यानी पुरोहितों में फ़रक़ किया गया है, उसी तरह इसलाम में 'सूफ़ी औलियाओं' और 'शरा के पाबन्द मुल्लाओं' में फ़रक़ किया गया है. ऐसे ही वैदिक धर्म में ज्ञानी भक्तों और करम काण्डियों में. हज़रत ईसा ने इस तरह के रस्म परस्तों को 'क़ानूनी' कह कर उन्हें इन शब्दों में डांटा है—"ऐ क़ानूनियों, तुम पर अफ़सोस है! तुमने ज्ञान की कुंजी लेली है, पर ज्ञान का दरवाज़ा खोल कर तुम उसके अन्दर नहीं गए, और जो अन्दर जाना चाहते थे उन्हें भी तुमने रोक दिया." बुद्ध ने सच्चे ब्राह्मन में और झूटे नाम के ब्राह्मन में फ़रक़ किया. इसी से लोग उनके ख़िलाफ़ हो गए. असली ज्ञान की कुंजी आदमी ख़ुद ही अपने अन्दर घुमा सकता है.

मोहम्मद साहब कहते थे—'मैं इल्म रूहानी का शहर हूं और अली उस शहर में जाने का दरवाज़ा है.'

صوفی کہتا ہے—

باوجودیکہ وہ مژدہ ترا 'نحن و اقرب'

صفحۂ مصحف پہ لکھا تھا مجھے معلوم نہ تھا.

ارتھ—اگرچہ قرآن کے پنے پر تیری بابت یہ خوش خبری لکھی ہوئی تھی کہ تو انسان کی گردن کی رگ سے بھی ان کے زیادہ پاس ہے' پھر بھی مجھے تیرا پتہ نہ تھا' یعنی میری خودی نے مجھے اندھا کر رکھا تھا.

اسلام کا کلمہ یعنی مہاواکیہ ' لاالہ الاللہ '—سوائے اُس ایک خدا کے اور کوئی خدا نہیں ہے—اللہ کو اپنے سے الگ سمجھکر کہا گیا ہے. صوفی کہتا ہے کہ یہ کیول اُن کے لئے ہے جو ابھی اندر کے گیان نہیں پاسکے.

بھاگوت میں بھگوان کہتے ہیں کہ—" میرے سوا اور کوئی دوسرا نہیں ہے' یہ سچائی اچھی طرح سمجھ لینی چاہئے."

یہی بات اللہ نے قرآن میں کہی ہے—" لاالہ الاانا. " یہی بات گیتا میں بار بار صاف صاف شبدوں میں دوہرائی گئی ہے.

سب پیغمبروں' رشیوں' نبیوں' رسولوں' تیرتھنکروں اور اوتاروں نے یہی اُپدیش دیا ہے.

یہ اُپدیش سچے کھوجیوں' اہل دل' بھکشوؤں' فقیروں اور درویشوں' دیکشتوں اور مسکینوں کو دیا جاتا ہے. یہی علم سینہ یا پراودیا ہے' دوسرے سب علم علم سفینہ یا اپر اودیا ہیں—یہ علم سفینہ نیچے کا گیان ہے جو اہل دول' شراوکوں' اُپاسکوں اور معمولی گرہستوں کے لئے ہے' اُن کے لئے جو دنیا کی کھوج میں ہیں.

جس طرح عیسائی کتابوں میں کہیں کہیں 'پرافٹ' یعنی نبیوں اور 'پریسٹ' یعنی پروہتوں میں فرق کیا گیا ہے' اُسی طرح اسلام میں 'صوفی اولیاؤں' اور 'شرع کے پابند ملاؤں' میں فرق کیا گیا ہے. ایسے ہی ویدک دھرم میں گیانی بھکتوں اور کرم کانڈیوں میں. حضرت عیسیٰ نے اِس طرح کے رسم پرستوں کو 'قانونی' کہکر اُنہیں اِن شبدوں میں ڈانٹا ہے—" اے قانونیو' تم پر افسوس ہے! تم نے گیان کی کنجی لے لی ہے' پر گیان کا دروازہ کھول کر تم اُس کے اندر نہیں گئے' اور جو اندر جانا چاہتے تھے اُنہیں بھی تم نے روک دیا." بدھ نے سچے براہمن میں اور جھوٹے نام کے براہمن میں فرق کیا. اِسی سے لوگ اُن کے خلاف ہوگئے. اصلی گیان کی کنجی آدمی خود ہی اپنے اندر گھما سکتا ہے.

محمد صاحب کہتے تھے—" میں علم روحانی کا شہر ہوں اور علی اس شہر میں جانے کا دروازہ ہے."

़न्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

कता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों छापना.

ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, ा सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में मेल बढ़ाना

—:o:—

ाटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; सीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल रनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट- डा० भगवानदास; -पं० सुन्दरलाल.

रनिंग बाडी के और मेम्बर—

सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम ।, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम तीवाल.

ी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" ाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया ा पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से ी फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई ो एक रुपया दाम की होंगी मुफ़्त ले सकेंगे या म की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम ो.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ' وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس: سکریٹری — پنڈت سندرلال .

<u>گورننگ باڈی کے اور ممبر—</u>

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی'

145 مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

<u>गांधी जयन्ती पर नई भेंट</u>

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जनम से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि मायें अपने बच्चों को महा पुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधी जी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधी जी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है... मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तस्वीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन, कवर और, कपड़े की मज़बूत ।—दाम केवल दो रुपए.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

<u>گاندھی جینتی پر نئی بھینٹ</u>

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی۔ ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرتر کہانی کے روپ میں سناتی ہیں۔ اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور ان کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں۔ بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھگت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور ان کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے۔ ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے۔ اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اُپدیش بھی۔

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے۔ وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں۔ ان کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے...... مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے۔"

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور کپڑے کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'

[illegible] 1950 [illegible] और [illegible] के मैदान में आवें और पूर्वी पच्छिम के देशों में युद्ध करवाने सुलगने से यह घाटा बढ़ेगा ही.

इसके अलावा संगीन चीज एक और है. 1951 की जुलाई से दिसम्बर तक हमारे स्टार्लिंग बैलेंसेज वाली अमानत गिरती ही जा रही है और 1952 के पांच महीने में वह 781 करोड़ रुपये से गिर कर 683 करोड़ पर आ पहुंची. और फिर विदेशी पूंजी इस देश में धड़ाधड़ बढ़ने और फैलने ही जा रही है जो अलग तबाही की अलामत है.

योजना की कमी

इससे साफ़ पता चलता है कि हमारी सरकार दिवालियेपन के रास्ते पर चल रही है. फिर भी उसको गुमान है कि "घबराने की कोई बात नहीं है." शायद यह सब योजना के मुताबिक़ ('according to plan') हो रहा हो. लेकिन योजना कहां है ? फ़ाइनेन्स मिनिस्टर साहब ने 23 अगस्त को बम्बई में ही कहा:

> "यह सच बात है कि अगर आज के रहन सहन के पैमाने को 100 नम्बर दिये जायें तो पंच साला योजना के अमल में आने के बाद यह नम्बर 101 तक ही पहुंच पायेगा. लेकिन यह अपने असली मानों में कोई योजना थोड़े ही है, यह तो एक बड़ी योजना के लिये सिर्फ़ भूमिका जैसी है."

ठीक ही है. जब योजना न होगी और अंधाधुन्ध पैसा फेंका जायेगा तो दिवालियापन बढ़ेगा ही. पर योजना बने कैसे और कौन बनाये ? नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन और उसके ढंग पर चल कर तो कोई योजना बना नहीं सकता. योजना वह बनाये जो उतने पांव पसारने में विश्वास रखता हो जितनी लम्बी चादर हो. और, योजना वह बनाये जो देश की पांच लाख से ऊपर देहातों में पड़ी जनता को अपना समझता हो, उनकी ताक़त में यक़ीन रखता हो और यह मानता हो कि बिना इनके हाथ में रोज़गार दिये इस देश की बदनसीबी दूर नहीं हो सकती. अगर सरकार यह नहीं करती तो [illegible] देश के दिन ख़राब ही रहने वाले हैं, अकाल और [illegible] बढ़ने ही वाली हैं और हमें डर है कि कहीं हमारी आज़ादी भी चंद रोज़ा न साबित हो.

—सुरेश रामभाई

[illegible] اور [illegible] کے [illegible]
[illegible] کے میدان میں آئے اور پوربی ایشیا
[illegible] میں خود لڑکانے لگانے سے یہ گھاٹا بڑھے گا ہی۔

[illegible] کے علاوہ سنگین چیز ایک اور ہے ۔ 1951 کی [illegible] سے دسمبر تک ہمارے اسٹرلنگ بیلنسز والی امانت [illegible] ہی جا رہی ہے اور 1952 کے پانچ مہینوں میں وہ 781 کروڑ [illegible] سے گر کر 683 کروڑ پر آ پہنچی ۔ اور پھر ودیشی [illegible] اس دیش میں دھڑا دھڑ بڑھنے اور پھیلنے دی [illegible] ہے جو الگ تباہی کی علامت ہے ۔

یوجنا کی کمی

اس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ ہماری سرکاری دیوالیئے کے راستے پر چل رہی ہے ۔ پھر بھی اس کو گمان ہے [illegible] گھبرانے کی کوئی بات نہیں ہے ۔" شاید یہ سب [illegible] کے مطابق ('according to plan') ہو رہا [illegible] لیکن یوجنا کہاں ہے ؟ فائیننس منسٹر صاحب نے [illegible] کو بمبئی میں ہی کہا :

> " یہ سچ بات ہے کہ اگر آج کے رہن سہن کے [illegible] پیمانے کو 100 نمبر دیئے جائیں تو پنچ سالہ یوجنا [illegible] عمل میں آنے کے بعد یہ نمبر 101 تک ہی پہونچ [illegible] پائے گا ۔ لیکن یہ اپنے اصلی معنوں میں کوئی یوجنا [illegible] تھوڑے ہی ہے ' یہ تو ایک بڑی یوجنا کے لئے صرف [illegible] بھومکا جیسی ہے ۔"

ٹھیک ہی ہے ۔ جب یوجنا نہ ہوگی اندھادھند [illegible] پھینکا جائے گا تو دیوالیہ پن بڑھے گا ہی ۔ پر یوجنا [illegible] کیسے اور کون بنائے ؟ نئی دلی کے راشٹرپتی بھون [illegible] کے ڈھنگ پر چل کر تو کوئی یوجنا بنا نہیں [illegible] ۔ یوجنا وہ بنائے جو اتنے پاؤں پسارنے میں وشواس [illegible] ہو جتنی لمبی چادر ہو ۔ اور یوجنا وہ بنائے جو [illegible] کی پانچ لاکھ سے اوپر دیہاتوں میں پڑی جنتا کو [illegible] سمجھتا ہو ' ان کی طاقت میں یقین رکھتا ہو اور [illegible] مانتا ہو کہ بنا ان کے ہاتھ میں روزگار دیئے اس دیش [illegible] بدنصیبی دور نہیں ہو سکتی ۔ اگر سرکار یہ نہیں کرتی [illegible] دیش کے دن خراب ہی رہنے والے ہیں ' اکال اور [illegible] بڑھنے ہی والی ہیں اور ہمیں ڈر ہے کہ کہیں [illegible] آزادی بھی چند روزہ نہ ثابت ہو ۔

—سریش رام بھائی

साफ़ साफ़ बयान की है. अपर लंकाशायर बरो (borough) में मानचेस्टर ट्रेड्स कौंसिल की सालाना कान्फ्रेंस में बोलते हुए 6 सितम्बर 1952 को एटली साहब ने फ़रमाया:

"इंग्लिस्तान में बना माल अमरीका में बेचना दूभर है. इसकी कई वजह हैं. एक तो यह कि अमरीका वाले हर एक के लिये तो फ्री ट्रेड या खुले व्यापार के पैरोकार बनते हैं पर अपने को अलग महफ़ूज़ रखते हैं. दूसरे यह कि अमरीका की माल पैदा करने की बिसात बहुत ज़ियादा है.

"अमरीका के व्यापार में बहुत थोड़ी हेर फेर भी हो तो इसका असर उस पर तो बहुत कम पड़ता है लेकिन बाक़ी दुनिया पर बहुत करारा असर पड़ता है. मुझे सदा इस बात पर ताज्जुब हुआ है कि अमरीका इस फ़िक्र में तो हमेशा रहता है कि हम ब्रिटेन वाले योजना के मुताबिक़ आर्थिक हाथ पैर मारें लेकिन वह ख़ुद किसी योजना की पाबन्दी नहीं चाहता."

एटली साहब की खरी बात से कौन इन्कार करेगा ? भला अमरीकी पैसा बाहर जायेगा तो सिवाय अमरीकी हित के दूसरे हित की हिफ़ाज़त वह क्यों करे और कैसे करे. काश हमारे हिन्दुस्तान के हुक्काम व नीतिज्ञ यह मामूली बात समझ लेते ! हर देश को अपनी आर्थिक बेहतरी ख़ुद ही करनी पड़ती है—कोई दूसरा उसमें हाथ क्यों बटाये ? इसी तरह हिन्दुस्तान को भी अपनी आर्थिक बेहतरी ख़ुद ही करनी पड़ेगी. लेकिन नई दिल्ली, बम्बई और कलकत्ते में रहने वाले हमारे देश के आर्थिक माहिर व अफ़सर चाहते हैं कि हमारी ख़ातिर यह काम अमरीका कर दे. यही वजह है कि हमारी बजट पोज़ीशन भी लगातार ख़राब होती जा रही है.

हमारे व्यापार में घाटा

हिन्दुस्तान के व्यापार के आंकड़ों को देख कर किसी के भी कान खड़े हो सकते हैं. ज़रा हमारे यहां का घाटा देखिये:

करोड़ रुपये में

	साल	माल आया	गया	घाटा
1.	1951 (12 महीने)	849·97	763·11	86·86
2.	1952 (5 महीने)	430·00	267·00	163·00

पांच महीने का घाटा पूरे साल के घाटे का लगभग दूना है. इसके अलावा पूर्वी एशिया के देशों के साथ जो व्यापार है उसमें भी 1951–52 में क़रीब 80 करोड़ का घाटा हुआ:

1.	माल आया	221·79	करोड़ रुपया
2.	गया	141·81	"
3.	घाटा	79·98	"

صاف صاف بیان کی ہے . اپر لنکاشائر بورو (Borough) میں مانچسٹر ٹریڈس کونسل کی سالانہ کانفرنس میں بولتے ہوئے 6 ستمبر 1952 کو اٹلی صاحب نے فرمایا :

" انگلستان میں بنا مال امریکہ میں بیچنا دوبھر ہے . اس کی کئی وجہ ہیں . ایک تو یہ کہ امریکہ والے ہر ایک کے لئے تو فری ٹریڈ یا کھلے ویاپار کے پیروکار بنتے ہیں پر اپنے کو الگ محفوظ رکھتے ہیں . دوسرے یہ کہ امریکہ کی مال پیدا کرنے کی بساط بہت زیادہ ہے .

" امریکہ کے ویاپار میں بہت تھوڑی ہیر پھیر بھی ہو تو اس کا اثر اس پر تو بہت کم پڑتا ہے لیکن باقی دنیا پر بہت کرارا اثر پڑتا ہے . مجھے سدا اس بات پر تعجب ہوا ہے کہ امریکہ ہمیشہ اس فکر میں تو رہتا ہے کہ ہم برٹین والے یوجنا کے مطابق آرتھک ہاتھ پیر ماریں لیکن وہ خود کسی یوجنا کی پابندی نہیں چاہتا ."

اٹلی صاحب کی کھری بات سے کون انکار کرے گا ؟ بھلا امریکی پیسہ باہر جائے گا تو سوائے امریکی ہت کے دوسرے ہت کی حفاظت وہ کیوں کرے اور کیسے کرے . کاش ہمارے ہندستان کے حکام و نیتیگیہ یہ معمولی بات سمجھ لیتے ! ہر دیش کو اپنی آرتھک بہتری خود ہی کرنی پڑتی ہے — کوئی دوسرا اس میں ہاتھ کیوں بٹائے ؟ اسی طرح ہندستان کو بھی اپنی آرتھک بہتری خود ہی کرنی پڑے گی. لیکن نئی دلی، بمبئی اور کلکتے میں رہنے والے ہمارے دیش کے آرتھک ماہر و افسر چاہتے ہیں کہ ہماری خاطر یہ کام امریکہ کر دے . یہی وجہ ہے کہ ہماری بجٹ پوزیشن بھی لگاتار خراب ہوتی جا رہی ہے .

ہمارے ویاپار میں گھاٹا

ہندستان کے ویاپار کے آنکڑوں کو دیکھکر کسی کے بھی کان کھڑے ہو سکتے ہیں . ذرا ہمارے یہاں کا گھاٹا دیکھئے:

کروڑ روپیہ میں

	سال	مال آیا	گیا	گھاٹا
1.	1951 (12 مہینے)	849·97	763·11	86 86
2.	1952 (5 مہینے)	430·00	267·00	163·00

5 مہینے کا گھاٹا پورے سال کے گھاٹے کا لگ بھگ دونا ہے . اس کے علاوہ پوربی ایشیا کے دیشوں کے ساتھ جو ویاپار ہے اس میں بھی سن 1951–52 میں قریب 80 کروڑ کا گھاٹا ہوا :

1.	مال آیا	221·79	کروڑ روپیہ
2.	گیا	141·81	"
3.	گھاٹا	79·98	"

इलक़ों का कहना है, अमरीका के रवैये से—यह कि हिन्दुस्तान की मांगों की सुनवाई उसने बहुत कम की—बड़ा धक्का पहुँचा है.

"हम यह बता दें कि पंच-साला-योजना जो तैयार की गई थी तो विदेशी मदद्—और काफ़ी ज़ियादा मदद्—मिलने की उम्मीद में तैयार की गई थी. लेकिन प्लानिंग कमीशन में क्या, फ़ाइनेन्स मिनिस्ट्री में क्या, नीतिज्ञ लोग अब महसूस करते हैं कि अमरीकी मदद उतनी नहीं होगी जितनी कि उम्मीद थी.

"नई दिल्ली वालों को ख़ास चुभन इस चीज़ पर हुई कि इसराइल जैसे छोटे-से देश को तो 1952-53 के लिये अमरीका ने क़रीब साढ़े सात करोड़ डालर की मदद दी है लेकिन लम्बे-चौड़े और ज़रूरत मन्द हिन्दुस्तान को केवल साढ़े चार करोड़ ही मिलेगा. स्पेन और फ़िलिपाइन तक को हिन्दुस्तान से ज़ियादा मदद दी गई है.

"एक ऊंचे अफ़सर ने कहा कि अमरीका के जो हिन्दुस्तानी दोस्त हैं उनको इस चीज़ से दर असल बड़ी झेंप होती है."

इस झेंप को समझाते हुए 'अमृत बाज़ार पत्रिका' का नुमाइन्दा लिखता है :

"हिन्दुस्तान को अमरीका पर ना-उम्मेदी इस वजह से और भी ज़ियादा हुई कि अमरीकी राजदूत चेस्टर बाउल्स ने तो साढ़े चार करोड़ से छ गुनी मदद के पुल बांध रखे थे. पंच साला योजना के पांच साल के बजट को देखने पर पता चलता है कि क़रीब दो सौ करोड़ रुपये की कमी पड़ रही है. फिर हमारी सालाना बजट पोज़ीशन भी बिगड़ती जा रही है."

अमरीका की ख़ुदग़रज़ नीति

हिन्द सरकार की फ़ाइनेन्स, विदेशी मामला और प्लानिंग कमीशन के नीतिज्ञ या माहर लोग मालूम होता है नाम के ही माहर हैं और अपने विषय की बस सरसरी जानकारी रखते हैं. वरना उनको इस तरह की ना उम्मेदी न होती. हम अमरीका की आर्थिक पालिसी की तफ़सील में इस वक़्त न जा कर इतना ही कहेंगे कि अमरीका—एक सच्चे व्यापारी या पूंजीपति की तरह—सिर्फ़ यह चाहता है कि उसकी चांदी हमेशा बनी रहे और उसके हितों पर कोई आंच न आये. इसी वजह से हाल ही में मैक्सिको में होने वाली कान्फ़्रेंस में उसने दक्खिन अफ़्रीका की इस तजवीज़ को कि सोने का दाम बढ़ा दिया जाये ठुकरा दिया. अमरीका की नीति की असलियत हाल ही में ब्रिटेन के पिछले वर्ष वज़ीर, मिस्टर गेटस्केल ... ने बहुत

ھتلوں کا کہنا ھے' امریکہ کے رویہ سے—یہ کہ ھندستان کی مانگوں کی سنوائی اُس نے بہت کم کی—بڑا دھکا پہنچا ھے .

"ھم یہ بتادیں کہ پنچ سالہ یوجنا جو تیار کی گئی تھی تو ودیشی مدد—اور کافی زیادہ مدد—ملنے کی اُمید میں تیار کی گئی تھی. لیکن پلاننگ کمیشن میں کیا' فائینینس منسٹری میں کیا' نیتگیہ لوگ اب یہ محسوس کرتے ھیں کہ امریکی مدد اتنی نہیں ھوگی جتنی کہ اُمید تھی .

"نئی دلی والوں کو خاص چبھن اس چیز پر ھوئی کہ اسرائیل جیسے چھوٹے سے دیش کو تو 1952-53 کے لئے امریکہ نے قریب ساڑھے سات کروڑ ڈالر کی مدد دی ھے لیکن لمبے چوڑے اور ضرورت مند ھندستان کو کیول ساڑھے چار کروڑ ھی ملیگا. اسپین اور فی لی پائن تک کو ھندستان سے زیادہ مدد دی گئی ھے .

"ایک اونچے افسر نے کہا کہ امریکہ کے جو ھندستانی دوست ھیں اُن کو اس چیز سے دراصل بڑی جھینپ ھوتی ھے ."

اُس جھینپ کو سمجھاتے ھوئے 'امرت بازار پتریکا' کا لکھتا ھے :

"ھندستان کو امریکہ پر نااُمیدی اس وجہ سے بھی زیادہ ھوئی کہ امریکی راجدوت چیسٹر لس نے تو ساڑھے چار کروڑ سے چھ گنی مدد کے پل دہ رکھے تھے. پنچ سالہ یوجنا کے پانچ سال کے ٹ کو دیکھنے پر پتہ چلتا ھے کہ قریب دو سو ز روپیہ کی کمی پڑ رھی ھے . پھر ھماری سالانہ ٹ پوزیشن بھی بگڑتی جا رھی ھے ."

ریکہ کی خود غرض نیتی

ند سرکار کی فائینانس' ودیشی معاملہ اور پلاننگ کے نیتگیہ یا ماھر لوگ معلوم ھوتا ھے نام کے ھی ھیں اور اپنے وشے کی بس سرسری جانکاری رکھتے ورنہ ان کو اس طرح کی نااُمیدی نہ ھوتی . ھم کی آرتھک پالیسی کو تفصیل میں اس وقت نہ تنا کہیں گے کہ امریکہ—ایک سچے بیوپاری یا پتی کی طرح—صرف یہ چاھتا ھے کہ اس کی ھمیشہ بنی رھے اور اس کے ھتوں پر کوئی آنچ اسی وجہ سے حال ھی میں میکسکو میں ھونے کانفرنس میں اس نے دکھن امریکہ کی اس تجویز سونے کا دام بڑھا دیا جائے ٹھکرا دیا. امریکہ کی کی [illegible] حال ھی میں برٹین کے

रही है जिसकी वजह से हम अपनी तरक्की पर मायूस हों, और फिर यह देखते हुए कि किन मुसीबतों से हम गुज़रे हैं इस मायूसी की कोई जगह ही नहीं रह जाती."

अमरीकी पैसे वाली योजनायें

दो दिन बाद कैजत नाम की जगह पर जो बम्बई शहर से 40 मील के फ़ासले पर है उन्होंने फरमाया :

"हम जो 55 विकास योजनायें या कम्यूनिटी प्रोजेक्ट चलाने जा रहे हैं उन में अमरीकी पैसा लग रहा है. अगर यह 55 कामयाब रहीं तो फिर 25 और शुरू करेंगे और इसके बाद फिर 25 और—जिन में पैसा हिन्द सरकार और रिज़र्व बैन्क आफ़ इन्डिया के लोन से लगाया जायेगा."

इस के अलावा उन्होंने इतमिनान दिलाया :

"अगर यह विकास योजनायें कामयाब रहीं तो अपनी बुनियादी ज़रूरतों के मामले में हिन्दुस्तान अपने पैरों पर खड़ा या स्वावलम्बी से भी ज़ियादा हो जाएगा और उसे बाहर की इमदाद का मुंह नहीं ताकना पड़ेगा."

पर उन्होंने ख़तरे की घंटी भी बजाई :

"अगर यह विकास योजनायें नाकामयाब रहीं तो हिन्दुस्तान की लाखों-करोड़ों जनता की बेहतरी का कोई रास्ता नहीं रह जायेगा."

फ़ाइनेन्स मिनिस्टर की इन बातों से हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि हिन्दुस्तान की नैया मंझधार में है. उसे बस अमरीकी पूंजी से चलने वाली इन 55 योजनाओं का सहारा है. अगर यह डूबीं तो हमभी डूबे.

हमारे हुक्कामों की नाउम्मेदी

यह हुआ तसवीर का एक रुख़. अब ज़रा दूसरा रुख़ मुलाहिज़ा हो. सरकारी प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट का मसविदा मई 1951 में छपा था. साथ ही साथ यह कहा गया था कि पूरी तफ़सीली रिपोर्ट जल्दी ही—और हद से हद एक साल में—निकल आयेगी. पर एक साल से ज़ियादा बीत चुका, रिपोर्ट का कहीं पता नहीं. हर मर्तबा यह कह दिया जाता है कि 'अगले महीने के आख़िर तक निकल आयेगी.' इसलिये कोई नहीं कह सकता कि यह आख़िर निकलेगी तो कब. हम हैरान थे कि यह देरी क्यों हो रही है, लेकिन इस देरी की एक झलक 'अमृत बाज़ार पत्रिका' के 4 सितम्बर 1952 वाले परचे में छपी एक रिपोर्ट से कुछ कुछ मिलती है. इस अख़बार के दिल्ली नुमायन्दे का कहना है :

"फ़ाइनेन्स मिनिस्ट्री, विदेशी मामला मिनिस्ट्री और प्लानिंग कमीशन के नीतिज्ञ लोगों को, जानकार

نہیں ہے جس کی وجہ سے ہم اپنی ترقی پر مایوس ہوں، اور پھر یہ دیکھتے ہوئے کہ کن مصیبتوں سے ہم گذرے ہیں اس مایوسی کی کوئی جگہ ہی نہیں رہ جاتی."

امریکی پیسے والی یوجنائیں

دو دن بعد کیجت نام کی جگہ پر جو بمبئی شہر سے 40 میل کے فاصلے پر ہے اُنہوں نے فرمایا :

"ہم جو 55 وکاس یوجنائیں یا کمیونٹی پروجیکٹ چلانے جا رہے ہیں ان میں امریکی پیسہ لگ رہا ہے . اگر یہ 55 کامیاب رہیں تو پھر 25 اور شروع کریں گے اور اُس کے بعد پھر 25 اور—جن میں پیسہ ہند سرکار اور ریزرو بینک آف انڈیا کے لون سے لگایا جائے گا ."

اِس کے علاوہ اُنہوں نے اطمینان دلایا :

"اگر یہ وکاس یوجنائیں کامیاب رہیں تو اپنی بنیادی ضرورتوں کے معاملے میں ہندستان اپنے پیروں پر کھڑا یا سواولمبی سے بھی زیادہ ہو جائے گا اور اُسے باہر کی امداد کا منہ نہیں تاکنا پڑے گا ."

پر اُنہوں نے خطرے کی گھنٹی بھی بجائی :

"اگر یہ وکاس یوجنائیں ناکامیاب رہیں تو ہندستان کی لاکھوں کروڑوں جنتا کی بہتری کا کوئی راستہ نہیں رہ جائے گا ."

"فائیننس منسٹر کی اِن باتوں سے ہم اس نتیجے پر پہنچتے ہیں کہ ہندستان کی نیا منجھدار میں ہے . اسے بس امریکی پونجی سے چلنے والی اِن 55 یوجناؤں کا سہارا ہے . اگر یہ ڈوبیں تو ہم بھی ڈوبے .

ہمارے حکاموں کی نااُمیدی

یہ ہوا تصویر کا ایک رخ . اب ذرا دوسرا رخ ملاحظہ ہو . سرکاری پلاننگ کمیشن کی رپورٹ کا مسودہ مئی 1951 میں چھپا تھا . ساتھ ہی ساتھ یہ کہا گیا تھا کہ پوری تفصیلی اور رپورٹ جلدی ہی—اور حد سے حد ایک سال میں—نکل آئے گی . پر ایک سال سے زیادہ بیت چکا رپورٹ کا کہیں پتہ نہیں . ہر مرتبہ یہ کہہ دیا جاتا ہے کہ 'اگلے مہینہ کے آخر تک نکل جائیگی .' اس لئے کوئی نہیں کہہ سکتا کہ یہ آخر نکلے گی تو کب . ہم حیران تھے کہ یہ دیری کیوں ہو رہی ہے . لیکن اُس دیری کی ایک جھلک 'امرت بازار پترکا' کے 4 ستمبر 1952 والے پرچہ میں چھپی ایک رپورٹ سے کچھ کچھ ملتی ہے . اس اخبار کے دلی نمائندہ کا کہنا ہے :

"فائیننس منسٹری" ودیشی معاملہ منسٹری اور پلاننگ کمیشن کے نیتگیہ لوگوں کو' جانکر

फ़िशर साहब का फ़र्ज़

अब वक़्त आ गया है कि हिन्दुस्तान के समझदार लोग ट्रूमनवाद की इस नंगी तलवार से बाख़बर हो जायें. सच तो यह है कि "मदद" और "कम्यूनिटी प्रोजेक्ट" के नाम पर हिन्दुस्तान में यह घर भी बना चुकी है. यह भी बताया जाता है कि जल्दी ही अमरीका और हिन्दुस्तान के बीच एक भारी-भरकम हर-पहलू "सुलह" होने जा रही है. भला शेर और बकरी के बीच भी सुलह की ज़रूरत है? पिछली 5 जनवरी को एक "समझौते" पर दस्तख़त कर प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दुस्तान की आर्थिक आज़ादी को ख़त्म कर दिया, ऐसा लगता है जो दूसरी आज़ादियां थोड़ी-बहुत बची हैं उन्हें अब नई "सुलह" मिट्टी कर देगी. और कौन जानता है कि फ़िशर साहब इसी "सुलह" के सिलसिले में आये हों? इस बात का पता तो बहुत बाद में अगर लगा तो लगा जब, ईश्वर न करे, हिन्दुस्तान अमरीका की मिलकियत बन चुका होगा. पर नहीं, यह नामुमकिन है. कुछ समय की देर है जब हिन्दुस्तान की जन शक्तियां फिर से एक हो जायेंगी और अपने सही रास्ते पर—वही रास्ता जिस पर चल कर हमने अंगरेज़ों से छुटकारा पाया—मिल कर काम करेंगी. हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है और हमारा ही रहेगा, हर माने में हमारा ही रहेगा. अमरीका वालों को चाहिये कि इस सचाई को अच्छी तरह समझ लें और लालच के मोह में न फंसे. और फ़िशर साहब जैसे जानकारों का फ़र्ज़ है कि वह इस सचाई को—चाहे वह कितनी ही कड़वी क्यों न महसूस हो—अमरीका का के कान में अच्छी तरह डाल दें, और उसे बतादें कि हिन्दुस्तान के दामन पर चिमटे से भी हाथ लगाना इन्सानियत के ख़िलाफ़ जुर्म है.

—सुरेश रामभाई

सरकार का दिवालियापन

पार्लियामेन्ट का पिछला इजलास ख़त्म होने के बाद नई दिल्ली वाले मिनिस्टर अपने अपने हलक़ों में और देश के दूसरे हिस्सों में दौरे को निकल गए और ख़ूब स्पीचें दीं. हमारे फ़ाइनैन्स मिनिस्टर साहब भी अगस्त के महीने में बम्बई सूबे के कुछ इलाक़ों में घूमे. 25 अगस्त को बेसीन में "हिन्दुस्तान की आर्थिक तरक़्क़ी" पर बोलते हुए उन्होंने कहा :

"1947 मे केन्द्री सरकार ने कन्ट्रोल तोड़ने का का जो क़दम उठाया था वह आर्थिक पहलू से कमज़ोर और बे तुका था. इससे हमारी तरक़्क़ी में काफ़ी धक्का लगा. लेकिन इसके अलावा कोई दूसरी चीज़ ऐसी

فشر صاحب کا فرض

اب وقت آ گیا ہے کہ ہندستان کے سمجھدار لوگ ٹرومن‌واد کی اس ننگی تلوار سے باخبر ہو جائیں۔ سچ تو یہ ہے کہ "مدد" اور "کمیونٹی پروجیکٹ" کے نام پر ہندستان میں یہ گھر بھی بنا چکی ہے۔ یہ بھی بتایا جاتا ہے کہ جلدی ہی امریکہ اور ہندستان کے بیچ ایک بھاری بھرکم ہر پہلو "صلح" ہونے جا رہی ہے۔ بھلا شیر اور بکری کے بیچ بھی صلح کی ضرورت ہے؟ پچھلی 5 جنوری کو ایک "سمجھوتے" پر دستخط کر پردھان منتری جواہر لال نہرو نے ہندستان کی آرتھک آزادی کو ختم کردیا' ایسا لگتا ہے کہ جو دوسری آزادیاں تھوڑ بہت بچی ہیں انہیں اب نئی "صلح" مٹی کردیگی۔ اور کون جانتا ہے کہ فشر صاحب اسی "صلح" کے سلسلے میں آئے ہوں؟ اس بات کا پتہ تو بہت بعد میں اگر لگا تو لگا جب' ایشور نہ کرے' ہندستان امریکہ کی ملکیت بن چکا ہوگا۔ پر نہیں' یہ ناممکن ہے۔ کچھ سمے کی دیر ہے جب ہندستان کی جن شکتیاں پھر سے ایک ہو جائیں گی اور اپنے صحیح راستے پر—وہی راستہ جس پر چل کر ہم نے انگریزوں سے چھٹکارا پایا—مل کر کام کریں گی۔ ہندستان ہندستانیوں کا ہے اور ہمارا ہی رہیگا' ہر معنی میں ہمارا ہی رہیگا۔ امریکہ والوں کو چاہئے کہ اس سچائی کو اچھی طرح سمجھ لیں اور لالچ کے موہ میں نہ پھنسیں۔ اور فشر صاحب جیسے جانکاروں کا فرض ہے کہ وہ اس سچائی کو—چاہے وہ کتنی ہی کڑوی کیوں نہ محسوس ہو—امریکہ کے کان میں اچھی طرح ڈال دیں اور اسے بتادیں کہ ہندستان کے دامن پر چمٹے سے بھی ہاتھ لگانا انسانیت کے خلاف جرم ہے۔

—سریش رام‌بھائی

سرکار کا دیوالیہ‌پن

پارلیامنٹ کا پچھلا اجلاس ختم ہونے کے بعد نئی دلی والے منسٹر اپنے اپنے حلقوں میں اور دیش کے دوسرے حصوں میں دورے کو نکل گئے اور خوب اسپیچیں دیں۔ ہمارے فائننس منسٹر صاحب بھی اگست کے مہینے میں بمبئی صوبے کے کچھ علاقوں میں گھومے۔ 25 اگست کو بیسین میں "ہندستان کی آرتھک ترقی" پر بولتے ہوئے انہوں نے کہا :

"1947 میں کیندری سرکار نے کنٹرول توڑنے کا جو قدم اٹھایا تھا وہ آرتھک پہلو سے کمزور اور بیتکا تھا۔ اس سے ہماری ترقی میں کافی دھکا لگا۔ لیکن اس کے علاوہ کوئی دوسری چیز ایسی

...चीन से दुनिया को डरने का सवाल ही नहीं उठता. सच्ची बात कुछ और ही है—दुनिया को डर है अमरीका से जो जापान में 603 अड्डे बना कर बैठा है, कोरिया में की जनता को लड़ा कर सिंगमान री को सबसे सवार बना रहा है, फ़ारमूसा में च्यांग काई शेक को "चीन" का प्रतिनिधि बनाये रखे है, इन्डो चीन में बाओ दाई को राजा बना कर साम्राजशाही फ्रांसीसियों की मदद कर रहा है, हिन्दुस्तान में मदद के नाम पर अपने लिये कच्चे व पक्के माल के बाज़ार बना रहा है, ईरान व मिस्र में लूट पसन्द अंगरेज़ों की दाद दे रहा है, ट्यूनीशिया में ज़ालिम फ्रांसीसियों की और दक्खिन अफ़रीक़ा में इन्सानी क़ौम के दुश्मन डाक्टर मालन की पीठ ठोंक रहा है. इन सब देशों की जनता जो चाहती है अमरीका ठीक उसके ख़िलाफ़ वहां के विदेशी शासकों को शै देकर साम्राजशाही और ग़ुलामी की जड़ें मज़बूत कर रहा है.

ट्रूमनवाद से ख़तरा

इस तरह हम देखते हैं कि दुनिया के लिये तबाहकुन चीज़ स्तालिनवाद नहीं बल्कि ट्रूमनवाद है जिसका झंडा फ़िशर साहब उठाये हुए हैं. यह ट्रूमनवाद सीधे ना-सीधे दुनिया के हर छोटे बड़े देश पर अपना फ़ौजी, राजकाजी व आर्थिक पंजा जमाना चाहता है. अंगरेज़ों के राजकाजी साम्राज के ख़त्म होने के बाद अमरीका अपना आर्थिक साम्राज खड़ा करने की कोशिश कर रहा है जो कहीं ज़ियादा नुक़सान दे और बरबादकारी चीज़ है. कुछ अरसा पहले उसने चीन पर छा जाने की कोशिश की मगर बाल बराबर कसर रह गई और उसको मुंह की खानी पड़ी. अब उसने हिन्दुस्तान को पसंद किया है ताकि पूरब में जापान, पच्छिम में तुर्की और बीच में हिन्दुस्तान को पैर तले दबा कर वह एशिया का मालिक बन कर रूस और चीन की—यानी फ़िशर साहब के स्तालिनवाद की—नाकेबन्दी कर सके. इस तरह घर में पूंजीपतियों की गोद में पल कर और देश-देश के पिछघसीटू और ग़ुलाम-जन्मा टट्टुओं का सहारा लेकर ट्रूमनवाद दुनिया भर का शोषण करने और ख़ून चूसने की मशीन बनता जा रहा है. जैसा डाक्टर राधा कृष्नन ने कहा यह चीज़ हिटलर की जीत है. पर हम कहेंगे कि हिटलर की ही नहीं दर असल शैतान की जीत है. और जब तक इस आलम में ट्रूमनवाद का निशान भी रहता है तब तक उसके रोटी-कपड़े और रहने-सहने के सवाल नहीं हल हो सकते. जिसे अमरीका विकास कहता है वह हिन्दुस्तान और दूसरे पिछड़े देशों के लिये ज़हर है और मौत का रास्ता है. जो अपने को दुनिया का बाशिन्दा कहे उसे सच को सच और झूट को झूट बताना चाहिये. पर फ़िशर साहब को यह शौक़ ही नहीं.

روس و چین سے دنیا کو ڈرنے کا سوال ہی نہیں اٹھتا. اصلی بات کچھ اور ہی ہے—دنیا کو ڈر ہے امریکہ سے جو جاپان میں 603 اڈے بنا کر بیٹھا ہے. کوریا میں وہاں کی جنتا کو لڑا کر سنگمان ری کو سروے سرا بنا رہا ہے' فارموسا میں چیانگ کائی شیک کو "چین" کا پرتی ندھی بنائے رکھے ہے' انڈوچین میں باؤ دائی کو راجہ مانکر سامراج شاہی فرانسیسیوں کی مدد کر رہا ہے' ہندستان میں مدد کے نام پر اپنے لئے کچے و پکے مال کے بازار بنا رہا ہے' ایران و مصر میں لوٹ پسند انگریزوں کی داد دے رہا ہے' ٹیونیشیا میں ظالم فرانسیسیوں کی اور دکھن افریقہ میں انسانی قوم کے دشمن ڈاکٹر مالن کی پیٹھ ٹھونک رہا ہے. ان سب دیشوں کی جنتا جو چاہتی ہے امریکہ ٹھیک اس کے خلاف وہاں کے ودیشی شاسکوں کو شہ دے کر سامراج شاہی اور غلامی کی جڑیں مضبوط کر رہا ہے.

ٹرومن واد سے خطرہ

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ دنیا کے لئے تباہ کن چیز استالن واد نہیں بلکہ ٹرومن واد ہے جس کا جھنڈا فشر صاحب اٹھائے ہوئے ہیں. یہ ٹرومن واد سیدھے ناسیدھے دنیا کے ہر چھوٹے بڑے دیش پر اپنا فوجی' راج کاجی و آرتھک پنجہ جمانا چاہتا ہے. انگریزوں کے راج کاجی سامراج کے ختم ہونے کے بعد امریکہ اپنا آرتھک سامراج کھڑا کرنے کی کوشش کر رہا ہے جو کہیں زیادہ نقصان دہ اور بربادکاری چیز ہے. کچھ عرصہ پہلے اس نے چین پر چھا جانے کی کوشش کی مگر بال برابر کسر رہ گئی. اور اس کو منہ کی کھانی پڑی. اب اس نے ہندستان کو پسند کیا ہے تاکہ پورب میں جاپان' پچھم میں ترکی اور بیچ ہندستان کو پیر تلے دباکر وہ ایشیا کا مالک بن کر روس اور چین کی—یعنی فشر صاحب کے استالن واد کی—ناکے بندی کرسکے. اس طرح گھر میں پونجی پتیوں کی گود میں پل کر اور دیش دیش کے پچھ گھسیٹو اور غلام جنما ٹٹوؤں کا سہارا لے کر ٹرومن واد دنیا بھر کا شوشن کرنے اور خون چوسنے کی مشین بنتا جا رہا ہے. جیسا ڈاکٹر رادھا کرشنن نے کہا کہ یہ چیز ہٹلر کی جیت ہے. پر ہم کہیں گے کہ ہٹلر کی ہی نہیں در اصل شیطان کی جیت ہے. اور جب تک اس عالم میں ٹرومن واد کا نشان بھی رہتا ہے تب تک اس کے روٹی کپڑے اور رہنے سہنے کے سوال نہیں حل ہوسکتے. جسے امریکہ وکاس کہتا ہے وہ ہندستان اور دوسرے پچھڑے دیشوں کے لئے زہر ہے اور موت کا راستہ ہے. جو اپنے کو دنیا کا باشندہ کہے اسے سچ کو سچ اور جھوٹ کو جھوٹ بتانا چاہئے پر فشر صاحب کو یہ شوق ہی نہیں.

है और कोई खास सबक़ नहीं है. पर जो सबक़ गांधीजी के जीवन से ही ख़ास कर मिलता है और दूसरों से उतना नहीं. वह यह है कि किस तरह कमज़ोर कहे जाने वाले और बे-हथियार लोग मिल कर मज़बूत और हथियार बन्द ताक़तों का कामयाबी के साथ मुक़ाबला कर सकते हैं. लेकिन फ़िशर साहब ने अगर यह सबक़ सीखा होता तो फिर आज वह इस तरह की बातें कैसे कर सकते थे.

बड़े अफ़सोस की बात है कि लुई फ़िशर साहब जैसे दुनिया देखा और तजुर्बेकार आदमी अमरीकी हकूमत के भोंपू बन कर रह गये हैं. उनको चाहिये था कि वह कांटे को कांटा और फूल को फूल कहते. उनको चाहिये था कि वह नये चीन की क़द्र करते और अपने मुल्क वालों से कहते कि माओ त्से-तुंग की हकूमत को चीन की हकूमत क़बूल करो. उनको चाहिये था कि वह अमरीका की फ़ौजों को कोरिया, इन्डो चीन और जापान से हटाने के लिये अपनी आवाज़ उठाते, वह अमरीका के जगह बजगह हवाई और समुद्री अड्डों के क़ायम करने के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बुलन्द करते. और उनको यह भी चाहिये था कि अमरीका दूसरों को ख़ास कर हिन्दुस्तान को जो पैसे की मदद कर रहा है उसको भी ख़राब बताते क्योंकि वह मदद हमें अपने पैरों पर खड़े होने के बजाये दूसरों का केवल मोहताज ही नहीं बनाती उनके चंगुल में भी फांसती है. लेकिन फ़िशर साहब ने यह कुछ न कर एक हकूमत का गुर्गा होना पसन्द किया—ऐसी हकूमत का जो अपनी नियत और अमल के लिये बदनाम हो चुकी है और जो कुछ नेक नामी बची थी उसे भी तेज़ी से धोये डाल रही है. ऐसी हालत में हमें उन्हें एक बेलाग पत्रकार मानने में भी झिझक होती है. हां, अमरीका की इन्फ़ारमेशन सर्विस का एक कारिन्दा ज़रूर मान सकते हैं.

गांधीवाद की आड़ में

हमने ऊपर कहा है कि फ़िशर साहब का गांधीवाद एक आड़ है. सचमुच वह एक टट्टी है जिसकी ओट में बैठ कर वह अमरीका के लिये शिकार फांसना चाहते हैं. आज अमरीका सारी दुनिया से कहता है कि दुनिया को कम्यूनिज़्म से बचाना है. कम्यूनिज़्म कहां है? रूस व चीन में? सारी दुनिया को रूस व चीन से बचाने का दावा अमरीका करता है हम पूछना चाहते हैं कि रूस व चीन ने किस के मुल्क पर हमला किया, उनकी फ़ौजें या माहिर या पैसा किस मुल्क की नीति पर हावी होने को गये, और वह किस तरह दुनिया के लिये ख़तरनाक हैं? हमें याद है डाक्टर राधा कृष्णन ने हाल ही में कहा था कि स्टालिन को अपने बुढ़ापे में सिर्फ़ एक बात की चाह है—अमन व शान्ति. चीन के नेता माओ की अमन पसन्दी तो मशहूर है ही. इसलिये

۔ اور کوئی خاص سبق نہیں ہے ۔ پر جو سبق گاندھی جی
؛ جیون سے ہی خاص کر ملتا ہے اور دوسروں سے اتنا نہیں'
۔ یہ ہے کہ کس طرح کمزور کہے جانے والے اور بے ہتھیار
وگ ملکر مضبوط اور ہتھیار بند طاقتوں کا کامیابی کے
ساتھ مقابلہ کر سکتے ہیں ۔ لیکن فشر صاحب نے اگر یہ
سبق سیکھا ہوتا تو پھر آج وہ اس طرح کی باتیں کیسے
ر سکتے تھے ۔

بڑے افسوس کی بات ہے کہ لوئی فشر صاحب جیسے
نیا دیکھا اور تجربہ کار آدمی امریکی حکومت کے بھانک
ن کر رہ گئے ہیں ۔ ان کو چاہئے تھا وہ کانٹے کانٹا
ور پھول کو پھول کہتے ۔ ان کو چاہئے تھا کہ وہ نئے چین
ی قدر کرتے اور اپنے ملک والوں سے کہتے کہ ماؤتسے تنگ
ی حکومت کو چین کی حکومت قبول کرو ۔ ان کو
چاہئے تھا کہ وہ امریکہ کی فوجوں کو کوریا' انڈوچین اور
جاپان سے ہٹانے کے لئے اپنی آواز اٹھاتے' وہ امریکہ کے جگہ
بجگہ ہوائی اور سمندری اڈوں کے قائم کرنے کے خلاف اپنی
واز بلند کرتے ۔ اور ان کو یہ بھی چاہئے تھا کہ امریکہ
دوسروں کو خاص کر ہندستان کو جو پیسہ کی مدد کر
رہا ہے اس کو بھی خراب بتاتے کیونکہ وہ مدد ہمیں اپنے
پیروں پر کھڑے ہونے کے بجائے دوسروں کا کیول محتاج ہی
نہیں بناتی ان کے چنگل میں بھی پھانستی ہے ۔ لیکن
فشر صاحب نے یہ کچھ نہ کر ایک حکومت کا گرگہ ہونا
پسند کیا—ایسی حکومت کا جو اپنی نیت اور عمل کے
لئے بدنام ہو چکی ہے اور جو کچھ نیک نامی بچی تھی
اسے بھی تیزی سے دھوئے ڈال رہی ہے ۔ ایسی حالت میں
ہمیں انہیں ایک بے لاگ پترکار ماننے میں بھی جھجھک
ہوتی ہے ۔ ہاں' امریکہ کی انفارمیشن سروس کا ایک
کارندہ ضرور مان سکتے ہیں ۔

گاندھی واد کی آڑ میں

ہم نے اوپر کہا ہے کہ فشر صاحب کا گاندھی واد ایک
آڑ ہے ۔ سچ مچ وہ ایک ٹٹی ہے جس کی اوٹ میں بیٹھ
کر وہ امریکہ کے لئے شکار پھانسنا چاہتے ہیں ۔ آج امریکہ
ساری دنیا سے کہتا ہے کہ دنیا کو کمیونزم سے بچانا ہے ۔ کمیونزم
کہاں ہے؟ روس و چین میں؟ یعنی دنیا کو روس و چین سے بچانے
کا دعویٰ امریکہ کرتا ہے ۔ ہم پوچھنا چاہتے ہیں کہ روس و
چین نے کس کے ملک پر حملہ کیا' ان کی فوجیں یا
ماہر یا پیسہ کس ملک کی نیت پر حاوی ہونے کو گئے'
اور وہ کس طرح دنیا کے لئے خطرناک ہیں ؟ ہمیں یاد
ہے ڈاکٹر رادھا کرشنن نے حال ہی میں کہا تھا کہ اسٹالن
کو بڑھاپے میں صرف ایک بات کی چاہ ہے—امن و شانتی ۔
چین کے نیتا ماؤ کی امن پسندی تو مشہور ہے ہی ۔ اس لئے

'हिन्द स्वराज' का असली सबक़

हमने गांधीजी के 'हिन्द स्वराज' को पढ़ने समझने की कोशिश की है. उसमें उन्होंने यह ज़रूर कहा है कि महज़ गोरे अफ़सरों की जगह काले आ जाने से हिन्दुस्तान आज़ाद नहीं हो जाता. लेकिन गांधीजी ने उस से कहीं ज़ियादा गहरी और वज़नी चीज़ें कही हैं. अपनी सारी किताब का निचोड़ उन्होंने आख़िर में ख़ुद दे दिया है जो यह है—

(i) असली होम-रूल या आज़ादी के माने हैं अपना रूल या ख़ुद कन्ट्रोल.

(ii) इसके लिये शान्तिमय तरीक़े से मुक़ाबला करना ही एक रास्ता है, यानी आत्म बल या प्रेम बल.

(iii) इस बल पर चलने के लिये स्वदेशी हर मानों में ज़रूरी है.

(iv) मुझे अंगरेज़ों से बैर नहीं लेकिन उनकी सभ्यता से ज़रूर है.

दूसरे शब्दों में 'हिन्द स्वराज' का मतलब है देश का राजकाजी के अलावा आर्थिक व समाजी रूप से पूरी तरह आज़ाद, ख़ुद मुख़्तार और स्वावलम्बी होना—जिसमें सर्वे सर्वा कुछ पूंजी पति या सरकारी हुक्काम न हो कर जनता ख़ुद ही होगी. इस निगाह से देखने पर मालूम होता है कि हिन्दुस्तान के लिये स्टालिनवाद अगर बुरा है तो चर्चिल वाद और ट्रूमनवाद—जिसके अलमबरदार लुई-फ़िशर साहब हैं—कहीं ज़ियादा बुरे और ख़तरनाक हैं, और गांधीजी आज महज़ स्टालिन के ही जवाब नहीं, ट्रूमन, चर्चिल, टाइटो, फ्रैन्को और पच्छिमी सभ्यता या मशीन के हर पैरोकार के आला जवाब हैं.

फिर फ़िशर साहब का यह कहना कि हिन्दुस्तान में अगर तानाशाह सरकार होती तो गांधीजी की जान खींच लेती या उन्हें जेल में डाल देती, साबित करता है कि उन्होंने गांधी-जी के जीवन को क़तई नहीं समझा और अंगरेज़ी साम्राज के इतिहास की जानकारी भी सिर्फ़ ऊपरी रखते हैं. हमारा ख़्याल है कि कैसी ही ज़ालिम सरकार क्यों न होती वह अंगरेज़ी सरकार से ज़ियादा ज़ालिम नहीं हो सकती थी और अगर होती भी और गांधीजी को जेल में ही डाले रहती तो वह एक तरफ़ तो उसके लिये कहीं ज़ियादा ख़तरनाक साबित होते, दूसरी तरफ़ अहिंसा का और भी बेहतरीन विकास व नमूना दुनिया के आगे आया होता.

फ़िशर साहब ने यह भी कहा है कि गांधीजी का जीवन बताता है कि एक इन्सान संगठित शक्ति का किस तरह मुक़ाबला कर सकता है. यह सबक़ तो सिकन्दर, तैमूर, नैपोलियन, लेनिन, वग़ैरा बहुत सी ज़िन्दगियों से मिलता

'ہند سوراج' کا اصلی سبق

ہم نے گاندھی جی کے 'ہند سوراج' کو پڑھنے سمجھنے کی کوشش کی ہے۔ اس میں انہوں نے یہ ضرور کہا ہے کہ محض گورے افسروں کی جگہ کالے آجانے سے ہندستان آزاد نہیں ہو جاتا۔ لیکن گاندھی جی نے اس سے کہیں زیادہ گہری اور وزنی چیزیں کہی ہیں۔ اپنی ساری کتاب کا نچوڑ انہوں نے آخیر میں خود دے دیا ہے جو یہ ہے—

(i) اصلی ہوم رول یا آزادی کے معنی ہیں اپنا رول یا خود کنٹرول۔

(ii) اس کے لئے شانتی مے طریقے سے مقابلہ کرنا ہی ایک راستہ ہے، یعنی آتم بل یا پریم بل۔

(iii) اس بل پر چلنے کے لئے سودیشی ہر معنوں میں ضروری ہے۔

(iv) مجھے انگریزوں سے بیر نہیں لیکن ان کی سبھیتا سے ضرور ہے۔

دوسرے شبدوں میں 'ہند سوراج' کا مطلب ہے دیش کا راجکاجی کے علاوہ آرتھک و سماجی روپ سے پوری طرح آزاد، خود مختار اور سواولمبی ہونا—جس میں سروے سروا کچھ پونجی پتی یا سرکاری حکام نہ ہوکر جنتا خود ہی ہوگی۔ اس نگاہ سے دیکھنے پر معلوم ہوتا ہے کہ ہندستان کے لئے اسٹالن واد اگر برا ہے تو چرچل واد اور ٹرومن واد—جس کے علم بردار لوئی فشر صاحب ہیں—کہیں زیادہ برے اور خطرناک ہیں۔ اور گاندھی جی آج محض اسٹالن کے ہی جواب نہیں، ٹرومن، چرچل، ٹائٹو، فرنکو اور پچھمی سبھیتا یا مشین کے ہر پیروکار کے اعلیٰ جواب ہیں۔

پھر فشر صاحب کا یہ کہنا کہ ہندستان میں اگر تاناشاہ سرکار ہوتی تو گاندھی جی کی جان کھینچ لیتی یا انہیں جیل میں ڈال دیتی، ثابت کرتا ہے کہ انہوں نے گاندھی جی کے جیون کو قطعئی نہیں سمجھا اور انگریزی سامراج کے اتہاس کی جانکاری بھی صرف اوپری رکھتے ہیں۔ ہمارا خیال ہے کہ کیسی ہی ظالم سرکار کیوں نہ ہوتی وہ انگریزی سرکار سے زیادہ ظالم نہیں ہوسکتی تھی اور اگر ہوتی بھی اور گاندھی جی کو جیل میں ہی ڈالے رہتی تو وہ ایک طرف تو اس کے لئے کہیں زیادہ خطرناک ثابت ہوتے، دوسری طرف اہنسا کا اور بھی بہترین وکاس و نمونہ دنیا کے آگے آیا ہوتا۔

فشر صاحب نے یہ بھی کہا ہے کہ گاندھی جی کا جیون بتاتا ہے کہ ایک انسان سنگٹھت شکتی کا کس طرح مقابلہ کر سکتا ہے۔ یہ سبق تو سکندر، تیمور، نیپولین، لینن وغیرہ بہت سی زندگیوں سے ملتا

है कि डाक्टर राधाकृष्नन ने यह बयान दे कर हिन्दुस्तान के बच्चे बच्चे के दिल की तरजुमानी की है. लेकिन फ़िशर साहब का यह कहना कि इसमें तास्सुब है और यह झूटी है, फ़िशर साहब के तास्सुब को ही जाहिर करता है और बतलाता है कि उनकी सच झूट की परख कितनी हलकी है. और यह कहना कि डाक्टर राधाकृष्नन के इस बयान से हिन्दुस्तान के विदेशी ताल्लुक़ों को चोट पहुंचेगी छोटे मुंह बड़ी बात करना है और ज़बरदस्त अहंकार की अलामत है. हमारा यक़ीन है कि एक लुई फ़िशर साहब नहीं सौ मिल कर भी डाक्टर राधाकृष्नन के जैसी गंभीर व पक्की और हिन्दुस्तान के हित की बात न कह सकते हैं न सोच ही सकते.

गांधीजी पर एक लेख

फ़िशर साहब की सातों बातों पर हम ज़रा तफ़सील में इस वजह से गये क्योंकि—जैसा हमने ऊपर कहा है—वह अपने को एक अथारिटी मानते हैं और हमारे देश के कुछ अखबार और पढ़े लिखे लोग भी समझ के फेर में वैसा मान बैठे हैं. लेकिन इन सातों को भी ओझल कर देने वाली फ़िशर साहब की एक और चीज़ है—गांधी जयन्ती के मौक़े पर उनका लिखा एक लेख—"गांधीजी - ए लिविंग फ़ोर्स"—जो काफ़ी अखबारों में छपा. उस लेख की खास बातें यह हैं—

(1) 'हिन्द स्वराज' में गांधीजी ने लिखा है कि हिन्दुस्तान की आज़ादी का मन्शा यह नहीं है कि गोरे अफ़सरों की जगह काले रख दिये जायें.

(2) स्टालिन की निगाह में इन्सान की कोई हस्ती नहीं. लेकिन गांधीजी के लिये वह सब कुछ है. इस तरह स्टालिन का जवाब आज गांधीजी ही हैं, और स्टालिनवाद के खिलाफ़ असरदार हथियार गांधीवाद है.

(3) अगर हिन्दुस्तान में तानाशाह सरकार रही होती तो गांधीजी की जान खींच लेती या उन्हें जेल में डाल देती. गांधीजी बाग़ी थे लेकिन इन्क़लाब के बाद जो सरकारें आज क़ायम हैं वह बाग़ियों को नहीं बर्दाश्त करतीं.

(4) गांधीजी का जीवन बताता है कि एक इन्सान संगठित शक्ति का किस तरह मुक़ाबला कर सकता है.

ऊपर दी हुई सात बातों की रोशनी में जब हम फ़िशर साहब की इन चार बातों को देखते हैं तो उनका मन्शा साफ़ समझ में आ जाता है. फ़िशर साहब का गांधीवाद महज़ एक आड़ है जिसके सहारे वह रूस या स्टालिन को भला बुरा कह कर अमरीका की हर हरकत को जा ठहराना चाहते हैं. साथ ही साथ दुनिया के सामने कम्यूनिज़्म या स्टालिनवाद का हौवा पेश करके उसे डरा धमका कर अमरीका की तरफ़ खींचना चाहते हैं.

کہ ڈاکٹر رادھا کرشنن نے یہ بیان دیکر ہندستان کے بچے بچے کے دل کی ترجمانی کی ہے . لیکن فشر صاحب کا یہ کہنا اس میں تعصب ہے اور یہ جھوٹی ہے' فشر صاحب کے تعصب کو ہی ظاہر کرتا ہے اور بتلاتا ہے کہ ان کی سچ جھوٹ کی پرکھ کتنی ہلکی ہے . اور یہ کہنا کہ ڈاکٹر رادھا کرشنن کے اس بیان سے ہندستان کے ودیشی تعلقوں کو چوٹ پہنچے گی چھوٹے منہ بڑی بات کرنا ہے اور زبردست اہنکار کی علامت ہے. ہمارا یقین ہے کہ ایک لوئی فشر صاحب نہیں سو مل کر بھی ڈاکٹر رادھا کرشنن کے جیسی گمبھیر و پکی اور ہندستان کے ہت کی بات نہ کہہ سکتے ہیں نہ سوچ ہی سکتے .

گاندھی جی پر ایک لیکھ

فشر صاحب کی ساتوں باتوں پر ہم ذرا تفصیل میں اس وجہ سے گئے کیونکہ—جیسا ہم نے اوپر کہا ہے—وہ اپنے کو ایک اتھارٹی مانتے ہیں اور ہمارے دیش کے کچھ اخبار اور پڑھے لکھے لوگ بھی سمجھ کے پھیر میں ویسا مان بیٹھے ہیں. لیکن ان ساتوں کو بھی اوجھل کر دینے والی فشر صاحب کی ایک اور چیز ہے—گاندھی جینتی کے موقعے پر اُن کا لکھا ایک لیکھ—"گاندھی جی—اے لونگ فورس"—جو کافی اخباروں میں چھپا . اس لیکھ کی خاص باتیں یہ ہیں :—

(1) 'ہند سوراج' میں گاندھی جی نے لکھا ہے کہ ہندستان کی آزادی کا منشا یہ نہیں ہے کہ گورے افسروں کی جگہ کالے رکھ دئے جائیں .

(2) اسٹالین کی نگاہ میں انسان کی کوئی ہستی نہیں. لیکن گاندھی جی کے لئے وہ سب کچھ ہے. اس طرح اسٹالن کا جواب آج گاندھی جی ہی ہیں' اور اسٹالن واد کے خلاف اثردار ہتھیار گاندھی واد ہے .

(3) اگر ہندستان میں تانا شاہ سرکار رہی ہوتی تو گاندھی جی کی جان کھینچ لیتی یا اُنہیں جیل میں ڈال دیتی . گاندھی جی باغی تھے لیکن انقلاب کے بعد جو سرکاریں آج قائم ہیں وہ باغیوں کو نہیں برداشت کرتیں .

(4) گاندھی جی کا جیون بتاتا ہے کہ ایک انسان سنگٹھت شکتی کا کس طرح مقابلہ کرسکتا ہے .

اوپر دی ہوئی سات باتوں کی روشنی میں جب ہم فشر صاحب کی ان چار باتوں کو دیکھتے ہیں تو ان کا منشا صاف سمجھ میں آ جاتا ہے. فشر صاحب کا گاندھی واد محض ایک آڑ ہے جس کے سہارے وہ روس یا اسٹالن کو بھلا برا کہکر امریکہ کی ہر حرکت کو جا ٹھہرانا چاہتے ہیں. ساتھ ہی ساتھ دنیا کے سامنے کمیونزم یا اسٹالن واد کا ہوا پیش کرکے اُسے ڈرا دھمکا کر امریکہ کی طرف کھینچنا چاہتے ہیں .

हिमायत कर रहा है अमरीका के साम्राजी मनसूबे और जापान की तरह हिन्दुस्तान के साथ मन माना व्यवहार करना जाहिर करता है. यह बहुत ख़तरनाक चीज़ है.

हिन्दुस्तान की फ़ौज छोटी और कमज़ोर है सो हम मानते हैं. लेकिन हमें यह नहीं मालूम था कि हमारी ख़ैरियत पच्छिमी ताक़तों पर मुनहसिर है. इसके लिये हम फ़िशर साहब के अहसानमन्द हैं. फ़िशर साहब के बयान के माने हैं कि फ़ौजी निगाह से हिन्दुस्तान अमरीका का ग़ुलाम है और उसका फ़ौज रखना न रखना बराबर है. हम यह मानते हैं कि आज़ाद हिन्दुस्तान में न फ़ौज चाहिये न हथियार. हम अपनी हिफ़ाज़त अहिंसात्मक असहयोग, विकेन्द्रीकरन और स्वावलम्बन के आधार पर ही कर सकते हैं.

हिन्दुस्तान को जो सलाह फ़िशर साहब ने दी है वह एक दम अमरीकी ढंग की है, वैसी ही मसनूई और व्योहारी है जैसे अमरीकी राजदूत और दूसरे अमरीकी एक्सपर्ट रोज़ दिया करते हैं. हम सिर्फ़ इतना ही कहेंगे कि यह सलाह सरासर ग़लत और बरबादकुन है. हमें न ख़ुराक में इन्क़लाब करने की ज़रूरत है, न बर्थ कन्ट्रोल या हमल रोक तरकीबें करने की. और असली लोकशाही किस चिड़िया का नाम है फ़िशर साहब ही जानें. हमें तो जनता की या असली लोकशाही न अमरीका में दिखती है न इंगलैन्ड में और न रूस में. फ़िशर साहब को जानना चाहिये कि हिन्दुस्तान के मर्ज़ का इलाज पच्छिमी धोखा भरी दवाओं से नहीं हमारे अपने तरीक़ों से ही हो सकता है.

फ़िशर साहब हमें साम्राजशाही के माने बताना चाहते हैं. बड़े अदब के साथ हमें कहना है कि साम्राजशाही के माने हम ख़ूब जानते हैं और भुगते बैठे हैं. हम यह भी जानते हैं कि अमरीका क्या और क्यों "दे रहा" है. समझदार भारतवासी अमरीका के इस देने को बख़ूबी समझते हैं और मानते हैं कि यह देना नहीं है बल्कि, जैसा स्वर्गीय किशोरलाल भाई ने कहा है, एक तरीक़ा है हिन्दुस्तान में पाँव जमाने का, पहले एक व्यापारी के रूप में, फिर राज-काजी तानाशाह के रूप में. फ़िशर साहब के माने उन्हीं को मुबारक!

डाक्टर राधाकृश्नन के जिस बयान पर फ़िशर साहब ख़फ़ा हैं वह यह था:—

नाज़ीवाद को लड़ाई के मैदान में हराया गया. पर हम यक़ीन के साथ यह नहीं कह सकते कि उस की आत्मा मर गई. कुछ लोगों को शिकायत है कि आज जो हम कर रहे हैं—पच्छिम का संगठन इस वजह से करना ताकि उस चीज़ का मुक़ाबला किया जा सके जिसे हिटलर रूसी अत्याचार कहता था—वह हिटलरवाद की सबसे बड़ी जीत है.

यह चीज़ फ़िशर साहब के गले नहीं उतरेगी हम जानते हैं. पर इसमें झूट रत्ती भर भी नहीं है. वाक़या यह

حفاظت کر رہا ہے امریکہ کے سامراجی منصوبے اور جاپان کی طرح ہندستان کے ساتھ من مانا ویوہار کرنا ظاہر کرتا ہے ۔ یہ بہت خطرناک چیز ہے ۔

ہندستان کی فوج چھوٹی اور کمزور ہے سو ہم مانتے ہیں ۔ لیکن ہمیں یہ نہیں معلوم تھا کہ ہماری خیریت پچھمی طاقتوں پر منحصر ہے۔ اس کے لئے ہم فشر صاحب کے احسان مند ہیں ۔ فشر صاحب کے بیان کے معنی ہیں کہ فوجی نگاہ سے ہندستان امریکہ کا غلام ہے اور اس کا فوج رکھنا نہ رکھنا برابر ہے۔ ہم یہ مانتے ہیں کہ آزاد ہندستان میں نہ فوج چاہئے نہ ہتھیار ۔ ہم اپنی حفاظت اہنساتمک اسہیوگ، ویکیندری کرن اور سواولمبن کے آدھار پر ہی کر سکتے ہیں ۔

ہندستان کو جو صلاح فشر صاحب نے دی ہے وہ ایک دم امریکی ڈھنگ کی ہے، ویسی ہی مصنوعی اور ویوہاری ہے جیسی امریکی راجدوت اور دوسرے امریکی ایکسپرٹ روز دیا کرتے ہیں ۔ ہم صرف اتنا ہی کہیں گے کہ یہ صلاح سراسر غلط اور بربادکن ہے ۔ ہمیں نہ خوراک میں انقلاب کی ضرورت ہے، نہ برتھ کنٹرول کی یا حمل روک ترکیبیں کرنے کی ۔ اور اصلی لوک شاہی کس چڑیا کا نام ہے فشر صاحب ہی جانیں ۔ ہمیں تو جنتا کی یا اصلی لوک شاہی نہ امریکہ میں دکھتی ہے نہ انگلینڈ میں اور نہ روس میں ۔ فشر صاحب کو جاننا چاہئے کہ ہندستان کے مرض کا علاج پچھمی دھوکا بھری دواؤں سے نہیں ہمارے اپنے طریقوں سے ہی ہوسکتا ہے۔

فشر صاحب ہمیں سامراج شاہی کے معنی بتانا چاہتے ہیں ۔ بڑے ادب کے ساتھ ہمیں کہنا ہے کہ سامراج شاہی کے معنی ہم خوب جانتے ہیں اور بھگتے بیٹھے ہیں ۔ ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ امریکہ کیا اور کیوں "دے رہا" ہے ۔ سمجھدار بھارت واسی امریکہ کے اس دینے کو بخوبی سمجھتے ہیں اور مانتے ہیں کہ یہ دینا نہیں ہے بلکہ، جیسا سورگیہ کشور لال بھائی نے کہا ہے، ایک طریقہ ہے ہندستان میں پاؤں جمانے کا، پہلے ایک ویوپاری کے روپ میں، پھر راج کاجی تانا شاہ کے روپ میں ۔

فشر صاحب کے معنی انہیں کو مبارک!

ڈاکٹر رادھا کرشنن کے جس بیان پر فشر صاحب خفا ہیں وہ یہ تھا :—

نازی واد کو لڑائی کے میدان میں ہرایا گیا ۔ پر ہم یقین کے ساتھ یہ نہیں کہہ سکتے کہ اس کی آتما مر گئی۔ کچھ لوگوں کو شکایت ہے کہ آج جو ہم کر رہے ہیں— پچھم کا سنگٹھن اس وجہ سے کرنا تاکہ اس چیز کا مقابلہ کیا جاسکے جسے ہٹلر روسی اتیاچار کہتا تھا—وہ ہٹلر واد کی سب سے بڑی جیت ہے ۔

یہ چیز فشر صاحب کے گلے نہیں اترے گی ہم جانتے ہیں، پر اس میں جھوٹ رتی بھر بھی نہیں ہے۔ واقعہ یہ

(5) आज हिन्दुस्तान में इन्क़लाब की ज़रूरत है—यहां के लोगों की ख़ुराक की आदत में इन्क़लाब होना चाहिये, और वर्थ कन्ट्रोल या हमल रोक और असली लोक शाही क़ायम करना चाहिये.

(6) साम्राजशाही के माने होते हैं लेना, लेकिन अमरीका तो हिन्दुस्तान से लेने के बजाये उसे दे ही रहा है और उसने लिया कुछ भी नहीं है.

(7) डाक्टर राधा कृश्नन का हाल ही में यह कहना—पच्छिमी सरकारों की नीति हिटलरवाद की जीत है—तास्सुब की निशानी है, झूट है और हिन्दुस्तान के विदेशी ताल्लुक़ों को चोट पहुंचाने वाली चीज़ है.

इन सात बातों को देख कर हमारे ऊपर क्या, किसी के ऊपर क्या, यही असर पड़ेगा कि श्री फ़िशर कोई आज़ाद ख़्याल अख़बार नवीस नहीं हैं और न जैसा वह दावा करते हैं 'एक दुनिया' के बाशिन्दे हैं बल्कि एक अपनी ख़ास दुनिया के बाशिन्दे मालूम पड़ते हैं जिस में अमरीका ही सर्वेसर्वा हो. इसलिये उनको अमरीकी सरकार के कोरे प्रचारक कहना ठीक होगा.

कौन नहीं जानता कि आज अमरीका मुलज़िम और दुःखयों की तरफ़ नहीं बल्कि ज़ुल्म करने वालों और दुःख देने वालों का अलमबरदार है. कोरिया के मामले में अब तो सारी दुनिया जानती है कि चढ़ाई की पहल उत्तर वालों ने नहीं की. फिर भी अमरीका ने उन्हें हमलावर क़रार दे दिया और फिर, क्या उत्तर क्या दक्खिन, पूरे कोरिया को तबाह कर डाला. साथ ही साथ मन्चूरिया के कारख़ानों पर गोले और जगह जगह बीमारी बम बरसा कर अमरीका ने बता दिया है कि वह कहता कुछ है करता कुछ है और सारी दुनिया को ही अपने आर्थिक व फ़ौजी चंगुल में फांसे रखना चाहता है.

चीन के बारे में जो नाइन्साफ़ी की बात फ़िशर साहब ने कही उससे तो साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि वह चियांग काई शेक को ही चीन का असली हाकिम मानते हैं. हमें नहीं मालूम कि नये चीन ने हिन्दुस्तान के साथ दुशमनी पैदा करने के कौन से काम किये. लेकिन हम इतना ज़रूर जानते हैं कि लुई फ़िशर साहब ने चीन पर जो बे तुका इल्ज़ाम लगाया है उसकी सफ़ाई अगर हिन्द सरकार ने उनसे तलब नहीं की तो दोनों देशों के ताल्लुक़ों पर बुरा असर पड़ सकता है.

इन्डो चीन में अमरीकी मदद व फ़ौज के लिये फ़िशर साहब का हामी भरना साफ़ जताता है कि वह अमरीकी पूंजीशाही और नौकरशाही के सोलह आने ताबेदार हो गये हैं. ऊपर से यह कहना कि इन्डो चीन में अमरीका हिन्दुस्तान की

(5) آج ھندستان میں انقلاب کی ضرورت ھے۔ یہاں کے لوگوں کی خوراک کی عادت میں انقلاب ھونا چاھئے' اور انھیں برتھ کنٹرول یا حمل روک اور اصلی لوک شاھی قائم کرنا چاھئے ۔

(6) سامراج شاھی کے معنی ھوتے ھیں لینا' لیکن امریکہ تو ھندستان سے لینے کے بجائے اسے دے ھی رھا ھے اور اس نے لیا کچھ بھی نہیں ھے ۔

(7) ڈاکٹر رادھا کرشنن کا حال ھی میں یہ کہنا —پچھمی سرکاروں کی نیتی ھٹلر واد کی جیت ھے— تعصب کی نشانی ھے' جھوٹ ھے اور ھندستان کے ودیشی تعلقوں کو چوٹ پہنچانے والی چیز ھے ۔

ان سات باتوں کو دیکھکر ھمارے اوپر کیا' کسی کے اوپر کیا' یہی اثر پڑے گا کہ شری فشر کوئی آزاد خیال اخبار نویس نہیں ھیں اور نہ جیسا وہ دعوی کرتے ھیں 'ایک دنیا' کے باشندے ھیں بلکہ ایک اپنی خاص دنیا کے باشندہ معلوم پڑتے ھیں جس میں امریکہ ھی سروے سروا ھو' اس لئے ان کو امریکی سرکار کے کورے پرچارک کہنا ٹھیک ھوگا ۔

کون نہیں جانتا کہ آج امریکہ ملزم اور دکھیوں کی طرف نہیں بلکہ ظلم کرنے والوں اور دکھ دینے والوں کا علم بردار ھے ۔ کوریا کے معاملے میں اب تو ساری دنیا جانتی ھے کہ چڑھائی کی پہل اتر والوں نے نہیں کی ۔ پھر بھی امریکہ نے انھیں حملہ‌ور قرار دے دیا اور پھر' کیا اتر کیا دکھن' پورے کوریا کو تباہ کر ڈالا ۔ ساتھ ھی ساتھ منچوریہ کے کارخانوں پر گولے اور جگہ جگہ بیماری بم برسا کر امریکہ نے بتا دیا ھے کہ وہ کہتا کچھ ھے کرتا کچھ ھے اور ساری دنیا کو ھی اپنے آرتھک اور فوجی چنگل میں پھانسے رکھنا چاھتا ھے ۔

چین کے بارے میں جو ناانصافی کی بات فشر صاحب نے کہی اس سے تو صاف ظاھر ھو جاتا ھے کہ وہ چیانگ کائی شیک کو ھی چین کا اصلی حاکم مانتے ھیں ۔ ھمیں نہیں معلوم کہ نئے چین نے ھندستان کے ساتھ دشمنی پیدا کرنے کے کون سے کام کئے ۔ لیکن ھم اتنا ضرور جانتے ھیں کہ لوئی فشر صاحب نے چین پر جو بیتکا الزام لگایا اس کی صفائی اگر ھند سرکار نے ان سے طلب نہیں کی تو دونوں دیشوں کے تعلقوں پر برا اثر پڑ سکتا ھے ۔

انڈوچین میں امریکی مدد و فوج کے لئے فشر صاحب حامی بھرنا صاف جتاتا ھے کہ وہ امریکی پونجی شاھی اور نوکر شاھی کے سولہ آنے تابعدار ھو گئے ھیں ۔ اوپر سے یہ کہنا کہ انڈوچین میں امریکہ ھندستان کی

पर एक तौर मामूली हस्ती या अथारिटी (authority) समझने लगे हैं, और अपनी इस किताबी हैसियत के बल पर वह ख़ास तौर से असर जमाने की कोशिश भी करते हैं.

अपने इस सफ़र में फ़िशर साहब ने जो कुछ हिन्दुस्तान में कहा है उस पर राय ज़ाहिर करने के पहले हम दो बातें बता देना चाहते हैं—पहली यह कि 1940 और 41-42 का ज़माना कुछ और था और आज का कुछ और है, ख़ास कर अमरीका के लिये जो लिहाज़ व मुहब्बत एशिया वालों या दूसरे आज़ाद देशों के लोगों के दिल में तब थी उसकी अब याद ही रह गई है और पिछले दस बरस के अपने कारनामों से अमरीका ने उसे एक दम धो कर ख़त्म सा कर दिया है. दूसरी यह कि महात्मा गांधी के साथ महज़ एक हफ़्ता रह कर या उन पर किताब लिखकर कोई गांधी-वाद या हिन्दुस्तान पर अथारिटी नहीं बन सकता. अगर ऐसा हो सकता तो जाने कितने अख़बार नवीसों और कितने क़लम बाज़ लोगों को लुई फ़िशर साहब के मुक़ाबले ऊंची अथारिटी मानना पड़ेगा. पर किसी को सचमुच अथारिटी बनने की तमन्ना हो तो एनी बसेन्ट, दीनबन्धु एन्डू ज़ और मीरा बहन वग़ैरा की ज़िन्दगी से सबक़ लेना चाहिये और अपने में हिन्दुस्तानी का ख़ातिर मिटने की ताक़त पैदा करनी चाहिये.

फ़िशर साहब की सात बातें और उनका जवाब

लुई फ़िशर साहब ने अपने दौरे में बहुत काफ़ी स्पीचें दी होंगी. उन सब की रिपोर्ट देखने का हम दावा नहीं करते पर दिल्ली, बम्बई और मद्रास की स्पीचों की रिपोर्टें हमारे देखने में ज़रूर आई हैं. उनकी ख़ास बातें लुई फ़िशर साहब के ही लफ़्ज़ों में हम नीचे देते हैं:—

(1) कोरिया में यूनो की तरफ़ से शिरकत ख़ास कर अमरीका ने ही की. लेकिन अमरीका हमेशा मुलज़िम और दुख के मारों की तरफ़ रहा.

(2) चीन की कम्यूनिस्ट सरकार ने हिन्दुस्तान के साथ नेकी या भलाई का कोई काम नहीं किया बल्कि दुशमनी पैदा करने के बहुत से काम किये हैं.

(3) हम इन्डो चीन में फ्रांस की जो मदद कर रहे हैं वह दर असल इन्डो चीन के अन्दर से हिन्दुस्तान को बाहरी हमले से महफ़ूज़ करने के लिये. आपकी उत्तरी सरहद पर तो कम्यूनिस्ट हैं ही और अगर हम इन्डो चीन में उन्हें नहीं रोकते हैं तो उनके आप के बीच फिर रह ही क्या जायेगा.

(4) हिन्दुस्तान की फ़ौज छोटी और कमज़ोर है और उसकी हिफ़ाज़त व ख़ैरियत पच्छिमी देशों की ताक़त पर ही मुनहसिर है.

پر ایک غیر معمولی ہستی یا (authority) اتھارٹی سمجھنے لگے ہیں' اور اپنی اس کتابی حیثیت کے بل پر وہ خاص طور سے اثر جمانے کی کوشش بھی کرتے ہیں۔

اپنے اِس سفر میں فشر صاحب نے جو کچھ ہندستان میں کہا ہے اِس پر رائے ظاہر کرنے کے پہلے ہم دو باتیں بتا دینا چاہتے ہیں— پہلی یہ کہ 1940 اور 41-42 کا زمانہ کچھ اور تھا اور آج کا کچھ اور ہے' خاص کر امریکہ کے لئے جو لحاظ و محبت ایشیا والوں یا دوسرے آزاد دیشوں کے لوگوں کے دل میں تب تھی اِس کی اب یاد ہی رہ گئی ہے اور پچھلے دس برس کے اپنے کارناموں سے امریکہ نے اِسے ایکدم دھوکر ختم سا کردیا ہے۔ دوسری یہ کہ مہاتما گاندھی کے ساتھ محض ایک ہفتہ رہ کر یا اِن پر کتاب لکھکر کوئی گاندھی واد یا ہندستان پر اتھارٹی نہیں بن سکتا۔ اگر ایسا ہوسکتا تو جانے کتنے اخبار نویسوں اور کتنے قلم باز لوگوں کو لوئی فشر صاحب کے مقابلے اونچی اتھارٹی ماننا پڑیگا۔ پر کسی کو سچ مچ اتھارٹی بننے کی تمنا ہو تو اینی بسنت' دین بندھو اینڈریوز اور میرا بہن وغیرہ کی زندگی سے سبق لینا چاہئے اور اپنے میں ہندستان کی خاطر مٹنے کی طاقت پیدا کرنی چاہئے۔

فشر صاحب کی سات باتیں اور اُن کا جواب

لوئی فشر صاحب نے اپنے دورے میں بہت کافی اسپیچیں دی ہونگی۔ اُن سب کی رپورٹ دیکھنے کا ہم دعویٰ نہیں کرتے پر دلی' بمبئی اور مدراس کی اسپیچوں کی رپورٹیں ہمارے دیکھنے میں ضرور آئی ہیں۔ اُن کی خاص باتیں فشر صاحب کے ہی لفظوں میں ہم نیچے دیتے ہیں:—

(1) کوریا میں یونو کی طرف سے شرکت خاص کر امریکہ نے ہی کی۔ لیکن امریکہ ہمیشہ ملزم اور دکھ کے ماروں کی طرف رہا۔

(2) چین کی کمیونسٹ سرکار نے ہندستان کے ساتھ نیکی یا بھلائی کا کوئی کام نہیں کیا بلکہ دشمنی پیدا کرنے کے بہت سے کام کئے ہیں۔

(3) ہم انڈوچین میں فرانس کی جو مدد کر رہے ہیں وہ دراصل انڈوچین کے اندر سے ہندستان کو باہری حملے سے محفوظ کرنے کے لئے۔ آپ کی اُتری سرحد پر تو کمیونسٹ ہیں ہی اور اگر ہم انڈوچین میں انہیں نہیں روکتے ہیں تو ان کے آپ کے بیچ پھر رہ ہی کیا جائے گا۔

(4) ہندستان کی فوج چھوٹی اور کمزور ہے اور اس کی حفاظت و خیریت پچھمی دیشوں کی طاقت پر ہی منحصر ہے۔

रफ्तार से आज बढ़ रही है तो गाय के बछड़ों वाली बैलों का क्या उपयोग रह जायगा ? आखिर यही तो होगा कि यह बछड़े लाद लाद कर ऐसे देशों में भेज दिये जायेंगे जहां गोवध की खुली छूट है. अब यह गो रक्षा हुई या गोवध का स्थान बदला ?

जीव रक्षा और गो रक्षा यह बड़े पेचीदा सवाल हैं. यह ठंडे दिल से ही समझ में आ सकते हैं. जोशीले आदमी तो जब जब जीव रक्षा या गो रक्षा के मैदान में आयेंगे तो उलटा जीव बध और गोबध बढ़ा ही देंगे.

26. 9. 52. —भगवानदीन

एक अमरीकी एजेन्ट और हिन्दुस्तान

आज की पैसा-परस्त दुनिया का दस्तूर है कि अगर कोई किसी की इमदाद करता है तो देने वाला अपने को ऊंचा और लेने वाले को गिरा हुआ समझता है और इसी लये उसे वक़्त बे-वक़्त पर तरह तरह के उपदेश और खरी खोटी सुनाता रहता है. यही वजह है कि जब से 5 जनवरी 1952 वाला हिन्द सरकार और अमरीकी सरकार के बीच राज़ी नामा (या गुलामी का पट्टा ?) हुआ है और अमरीका ने अपना पैसा हिन्दुस्तान में बहाना शुरू किया है तब से आये दिन अमरीकी अखबार और अमरीकी अखबार नवीस हिन्दुस्तान पर उसकी बेहतरी या तरक़्क़ी के ज़बरदस्त जानकार होने का रोब गांठते रहते हैं. इसके अलावा आये दिन हिन्दुस्तान में अमरीकी नुमांया हस्तियों का तांता लगा रहता है. थोड़े दिन हुए अमरीका के पिछले राजपति श्री रुज़वेल्ट की पत्नी श्रीमती रुज़वेल्ट यहां आई थीं, जिन्होंने बताया कि हिन्दुस्तान को जो मदद अमरीका दे रहा है वह हिन्दुस्तान की खातिर है. फिर हिन्दुस्तान में जो अमरीकी राजदूत हैं वह कभी अमरीका जा कर, कभी अमरीकी और कभी हिन्दुस्तानी अखबारों में लेख लिख कर यह जताते रहते हैं कि एशिया में बढ़ते एक कम्यूनिज़्म को रोकने की अब जो आशा है सो हिन्दुस्तान से ही और इसलिये हिन्दुस्तान के उठाने में ही एशिया की खैरियत है !

लुई फ़िशर और नया ज़माना

लेकिन अगस्त सितम्बर के महीने में एक दूसरे अमरीकी मेहरबान हिन्दुस्तान में आये, देश का दौरा किये और जगह जगह स्पीचें-व्याख्यान दिये. उनका नाम है श्री लुई फ़िशर जो पहले भी हिन्दुस्तान में घूम ही नहीं चुके हैं बल्कि एक हफ़्ते तक महात्मा गांधी के साथ रहे और एक किताब "ए वीक विद गांधी" लिखी. महात्मा गांधी की शहादत के बाद उन्होंने "लाइफ़ आफ़ महात्मा गांधी" नाम की एक और किताब लिखी. इन दोनों किताबों की वजह से वह अपने को हिन्दुस्तान, महात्मा गांधी और गांधीवाद

رفتار سے آج بڑھ رہی ہے تو گئے کے بچھڑوں یعنی بیلوں کا کیا اُپیوگ رہ جائے گا؟ آخر یہی تو ہوگا کہ یہ بچھڑے لاد لاد کر ایسے دیشوں میں بھیج دیئے جائیں گے جہاں گو بدھ کی کھلی چھوٹ ہے . اب یہ گو رکشا ہوئی یا گو بدھ کا استھان بدلا ؟

جیورکشا اور گو رکشا یہ بڑے پیچیدہ سوال ہیں . یہ ٹھنڈے دل سے ہی سمجھ میں آسکتے ہیں . جوشیلے آدمی تو جب جب جیورکشا یا گو رکشا کے میدان میں آئیں گے تو اُلٹا جیو بدھ اور گو بدھ بڑھا ہی دیں گے .

—بھگوان دین 26-9-'52

ایک امریکی ایجنٹ اور ہندستان

آج کی پیسہ پرست دنیا کا دستور ہے کہ اگر کوئی کسی کی امداد کرتا ہے تو دینے والا اپنے کو اُونچا اور لینے والے کو گرا ہوا سمجھتا ہے اور اسی لئے اُسے وقت بےوقت پر طرح طرح کے اُپدیش اور کھری کھوٹی سناتا رہتا ہے . یہی وجہ ہے کہ جب سے 5 جنوری 1952 والا ہند سرکار اور امریکی سرکار کے بیچ راضی نامہ (یا غلامی کا پٹہ؟) ہوا ہے اور امریکہ نے اپنا پیسہ ہندستان میں بہانا شروع کیا ہے تب سے آئے دن امریکی اخبار اور امریکی اخبارنویس ہندستان پر اس کی بہتری یا ترقی کے زبردست جانکار ہونے کا رعب گانٹھتے رہتے ہیں . اس کے علاوہ آئے دن ہندستان میں امریکی نمایاں ہستیوں کا تانتا لگا رہتا ہے . تھوڑے دن ہوئے امریکہ کے پچھلے راج پتی شری روزویلٹ کی پتنی شری متی روزویلٹ یہاں آئی تھیں' جنھوں نے بتایا کہ ہندستان کو جو مدد امریکہ دے رہا ہے وہ ہندستان کی خاطر . پھر ہندستان میں جو امریکی راجدوت ہیں وہ کبھی امریکہ جاکر' کبھی امریکی اور کبھی ہندستانی اخباروں میں لیکھ لکھکر یہ جتاتے رہتے ہیں کہ ایشیا میں بڑھتے ہوئے کمیونزم کو روکنے کی اب جو آشا ہے سو ہندستان سے ہی اور اس لئے ہندستان کے اُٹھانے میں ہی ایشیا کی خیریت ہے !

لوئی فشر اور نیا زمانہ

لیکن اگست ستمبر کے مہینے میں ایک دوسرے امریکی مہربان ہندستان میں آئے' دیش کا دورہ کیا اور جگہ جگہ اسپیچیں ویاکھیان دئے . ان کا نام ہے شری لوئی فشر جو پہلے بھی ہندستان میں گھوم ہی نہیں چکے ہیں بلکہ ایک ہفتہ تک مہاتما گاندھی کے ساتھ رہے اور ایک کتاب "اے ویک ود گاندھی" لکھی مہاتما گاندھی کی شہادت کے بعد انہوں نے "لائف آف مہاتما گاندھی" نام کی ایک اور کتاب لکھی . ان دونوں کتابوں کی وجہ سے وہ اپنے کو ہندستان' مہاتما گاندھی اور گاندھی واد

जीते नहीं फल सकते. फिर न जाने क्यों कभी हिन्दुओं ने गोरक्षा की तरह न बकरी रक्षा की बात सोची और न गधी रक्षा की. भैंस रक्षा की तरफ़ से तो उन्हें शायद कुछ करना ही नहीं है.

गो रक्षा का आन्दोलन इस हद तक पहुँच गया है कि गो रक्षा के पत्र निकलने लगे हैं. गोवध बन्द होने का क़ानून बनना चाहिये, इसका आये दिन शोर उठता रहता है. गोवध को लेकर अगर सौ दो सौ आदमियों की जान चली जाय तो इस में भी कोई हर्ज नहीं समझा जाता. गोवध को रोकने की ख़ातिर जिन्होंने आदमी की जान ली होती है उनकी पूजा की जाती है. वह धर्म रक्षक नाम से पुकारे जाते हैं. क्या यह जीव रक्षा की खिल्ली उड़ाना नहीं है ? क्या उन आदमियों में जीव नहीं था जो गो रक्षकों की तलवार की घाट उतारे गये पर इस तरफ़ किसी का ध्यान नहीं जाता. दूसरों के अशगुन करने के लिये अपनी नाक काट डालने में भी शायद तकलीफ़ न होती होगी.

जीव रक्षा को लेकर इस तरह की अनगिनत भूलें फैलती आई हैं, फैल रही हैं और फैलती रहेंगी. और गो रक्षा को लेकर तो क्या क्या नहीं हुआ, क्या नहीं हो रहा है और क्या नहीं हो कर रहेगा.

एक ओर गो रक्षा का शोर मच रहा है दूसरी ओर प्रयाग हरिद्वार जैसे तीर्थों पर बहुत कम भाग्य शाली गायें मिलेंगी जिनके बछड़े तीन महीने भी जीने को पा सकें. दूध न देने वाली गायें गोचर भूमि न होने की वजह से रोज़ मौत का शिकार बनती हैं पर मरती नहीं. अगर उन्हें आदमी की तरह ज़हर ख़रीदना आता होता और कहीं मिल सकता होता तो वह सुख पाने के लिये उसका ज़रूर उपयोग करतीं.

एक तरफ़ लोगों के पास कुछ खिलाने के लिये न होने से कुछ गायें जंगली बन गई हैं. उन्होंने वह तूफ़ान उठा रक्खा है कि खेत के खेत साफ़ कर जाती हैं. दूसरी तरफ़ कहीं आदमी अनाज के दाने को तरस कर जान दे रहे हैं. क्या ऊंचे दर्जे की गो रक्षा है !

सुना है ऐसे आदमी जिनका गोवध ही पेशा था इस बात के लिये तैयार हो गये हैं कि वह अपना पेशा छोड़ देंगे पर उन्हें कोई ऐसा काम तो मिलना चाहिये जिससे वह अपना और अपने कुटुम्ब का पेट भर सकें. अगर इसमें कुछ सचाई है तो इन आदमियों की रक्षा करने से उस ढंग की गो रक्षा तो आपो आप हो जायगी जिसका कुछ मन चले हिन्दुओं ने शोर मचा रक्खा है.

अगर कल हिन्दुस्तानी सरकार गोवध बन्द करने का क़ानून पास कर दे और बिजली और ट्रैक्टरों के ज़रिये अमरीकी ढंग की खेती इसी रफ़्तार से बढ़ती रहे जिस

کیوے نہیں پھلپ سکتے . پھر نہ جانے کیوں هندوں نے کبھی گو رکھشا کی طرح نہ بکری رکھا کی بات سوچی اور نہ گدھی رکھا کی. بھینس رکھا کی طرف سے تو انہیں شاید کچھ کرنا ہی نہیں .

گو رکھا کا آندولن اس حد تک پہنچ گیا ہے کہ گورکھا کے پتر نکالنے لگے هیں . گو بدھ بند ہونے کا قانون بننا چاهئے . اس کا آئے دن شور اُٹھتا رهتا ہے . گو بدھ کو لے کر اگر سو دو سو آدمیوں کی جان چلی جائے تو اس میں بھی کوئی هرج نہیں سمجھا جاتا . گو بدھ روکنے کی خاطر جنہوں نے آدمی کی جان لی ہوتی ہے اُن کی پوجا کی جاتی ہے. وہ دھرم کے رکشک کے نام سے پکارے جاتے هیں. کیا یہ جیورکشا کی کھلی اُڑانا نہیں ہے ؟ کیا اُن آدمیوں میں جیو نہیں تھا جو گو رکشوں کی تلوار کی گھاٹ اُتارے گئے پر اس طرف کسی کا دھیان نہیں جاتا . دوسروں کے اشگن کرنے کے لئے اپنی ناک کاٹ ڈالنے میں شاید تکلیف نہ ہوتی ہوگی .

جیورکشا کو لے کر اس طرح کی ان گنت بھولیں پھیلتی آئیں هیں پھیل رہی هیں اور پھیلتی رهیں گی . اور گو رکشا کو لے کر تو کیا کیا نہیں ہوا' کیا نہیں ہو رہا اور کیا نہیں ہو کر رہے گا .

ایک اور گو رکشا کا شور مچ رہا ہے دوسری اور پریاگ هردوار جیسے تیرتھوں پر بہت کم بھاگیہ شالی گائیں میں گی جن کے بچھڑے تین مہینے بھی جینے کو پا سکیں. دودھ نہ دینے والی گائیں گوچر بھومی نہ ہونے کی وجہ سے روز موت کا شکار بنتی هیں پر مرتی نہیں . اگر انہیں آدمی کی طرح زہر خریدنا آتا ہوتا اور کہیں مل سکتا ہوتا تو وہ سکھ پانے کے لئے اس ضرور اُپیوگ کرتیں .

ایک طرف لوگوں کے پاس کچھ کھلانے کے لئے نہ ہونے سے کچھ گائیں جنگلی بن گئی هیں . اُنہوں نے وہ طوفان اُٹھا رکھا ہے کہ کھیت کے کھیت صاف کر جاتی هیں. دوسری طرف کہیں آدمی اناج کے دانے کو ترس کر جان دے رہے هیں. کیا اُونچے درجے کی گو رکشا ہے ! سنا ہے کہ ایسے آدمی جن کا گو بدھ ہی پیشہ تھا اس بات کے لئے تیار ہوگئے هیں کہ وہ اپنا پیشہ چھوڑ دینگے پر انہیں کوئی ایسا کام تو ملنا چاهئے جس سے وہ اپنا اور اپنے کٹمب کا پیٹ بھر سکیں . اگر اس میں کچھ سچائی ہے تو ان آدمیوں کی رکشا کرنے سے اس ڈھنگ کی گو رکشا تو آپو آپ ہوجائے گی جس کا کچھ من چلے هندوؤں نے شور مچا رکھا ہے .

اگر کل هندستانی سرکار گو بدھ بند کرنے کا قانون پاس کر دے اور بجلی اور ٹریکٹروں کے ذریعے امریکی ڈھنگ کی کھیتی اسی رفتار سے بڑھتی رہے جس

जीव रक्षा

मोटे तौर से देखा जाय तो जीव रक्षा से बढ़ कर धर्म का काम कोई दूसरा नहीं हो सकता. इस बात को ले कर एक धर्म ही खड़ा हो गया है जिसका नाम है जैन धर्म. हो सकता है कि और भी धर्मों को यह दावा हो कि वह जीव रक्षा को ही लेकर खड़े हुये हैं. हमें वैसा मानने में कोई इन्कार नहीं.

बारीकी और ग़ौर से देखा जाय तो जीव रक्षा करना बेहद मुश्किल काम है. ऐसा मालूम होता है, नामुमकिन है.

एक बार एक सज्जन जीव रक्षा का चोग़ा पहने एक सभा के मंच से हिसाब सुना रहे थे कि उन्होंने अमुक देवी के मन्दिर से बकरों की बलि बन्द करा दी. और इस तरह उन्होंने साल भर में कटने वाले सैंकड़ों बकरों की जान बचा ली.

हम उस सभा में मौजूद थे, पूछ बैठे, क्या वह सब बकरे आपके घर बंधे हैं ?

वह बिगड़ कर बोले—क्या मतलब ?

हम बोले—मतलब यही कि आप ने बकरों की जान नहीं बचाई, बकरों के कटने की जगह तबदील कर दी. यह जीव रक्षा नहीं हुई. हां कुछ लोगों के ख़्याल से एक बेवक़ूफ़ी ज़रूर दूर हुई कि बकरे काटने जैसा नीच काम देवी के मन्दिर जैसी ऊंची जगह पर किया जाय.

वर्धा में रहने वाले स्वामी सत्यभक्त का लिखा 'नया संसार' पढ़ा. उसमें उन्होंने जीव रक्षा का एक नया उपाय सुझाया है और वह यह कि एक जगह उन्हें कहीं सुअर नाम को न मिले. उन्होंने लोगों से पूछा कि क्या तुमने सब सुअर मार डाले ? लोग बोले—हैं ! हैं ! जीव हिंसा जैसा काम यहां नहीं होता. तो वह बोले—फिर सुअर क्या हुये ? लोग बोले—नर मादा हमने अलग अलग रख दिये और सुअर अपनी मौत ख़त्म हो गये.

सूझ बड़ी सुन्दर है पर जो लोग नर मादा को न मिलने देना हिंसा मानते हों उनको क्या किया जाय ? ख़ैर इसे छोड़िये. ऊपर की बात कल्पना की दुनिया की है, व्योहारी दुनिया की नहीं.

हिन्दू धर्म में जीव रक्षा का काम कम महत्व का नहीं, पर न जाने क्यों उन्हें गाय छोड़ कर और जीव, जीव ही नहीं दिखाई देते. आज कल की नई तहक़ीक़ात तो गाय के दूध से बढ़ कर गधी के दूध को मानती है. और अब तो यह भी पता चला है कि जो गायें बंधे बंधे खाना खाती हैं उन सब के दूध में टी. बी. के कीड़े रहते हैं. यह तो सभी को मालूम है कि जिस घर में बकरी रहती है उसमें टी. बी. के

جیورکشا

موٹے طور سے دیکھا جائے تو جیورکشا سے بڑھ کر دھرم کا کام کوئی دوسرا نہیں ہو سکتا . اس بات کو لے کر ایک دھرم ہی کھڑا ہوگیا ہے جس کا نام ہے جین دھرم . ہو سکتا ہے کہ اور بھی دھرموں کو یہ دعویٰ ہو کہ وہ جیورکشا کو ہی لے کر کھڑے ہوئے ہیں . ہمیں ویسا ماننے میں کوئی انکار نہیں .

باریکی اور غور سے دیکھا جائے تو جیورکشا کرنا بے حد مشکل کام ہے . ایسا معلوم ہوتا ہے' ناممکن ہے .

ایک بار ایک سجن جیورکشا کا چوغا پہنے ایک سبھا کے منچ سے حساب سنا رہے تھے کہ انہوں نے اَمک دیوی کے مندر سے بکروں کی بلی بند کرا دی . اور اس طرح انہوں نے سال بھر میں کٹنے والے سیکڑوں بکروں کی جان بچا لی .

ہم اس سبھا میں موجود تھے' بیٹھے' پوچھ بیٹھے کیا وہ سب بکرے آپ کے گھر بندھے ہیں ؟

وہ بگڑ کر بولے—کیا مطلب ؟

ہم بولے—مطلب یہی کہ آپ نے بکروں کی جان نہیں بچائی' بکروں کے کٹنے کی جگہ تبدیل کر دی . یہ جیورکشا نہیں ہوئی . ہاں کچھ لوگوں کے خیال سے ایک بیوقوفی ضرور دور ہوئی کہ بکرے کاٹنے جیسا نیچ کام دیوی کے مندر جیسی اونچی جگہ پر کیا جائے .

وردھا میں رہنے والے سوامی ستیہ بھکت کا لکھا 'نیا سنسار' پڑھا اس میں انہوں نے جیورکشا کا ایک نیا اپائے سجھایا ہے اور وہ یہ کہ ایک جگہ انہیں کہیں سوور نام کو نہ ملے . انہوں نے لوگوں سے پوچھا کہ کیا تم نے سب سوور مار ڈالے ؟ لوگ بولے ہیں ! ہیں ! جیوہنسا جیسا کام یہاں نہیں ہوتا . تو وہ بولے—پھر سوور کیا ہوئے ؟ لوگ بولے—نر مادا ہم نے الگ الگ رکھ دئے اور سوور اپنی موت ختم ہوگئے .

سوجھ بڑی سندر ہے پر جو لوگ نر مادا کو نہ ملنے دینا ہنسا مانتے ہوں اُن کو کیا کیا جائے ؟ خیر اِسے چھوڑئے . اوپر کی بات کلپنا کی دنیا کی ہے' ویوہارک دنیا کی نہیں .

ہندو دھرم میں جیورکشا کا کام کم مہتو کا نہیں' پر نہ جانے کیوں انہیں گائے چھوڑ کر' اور جیو' جیو ہی نہیں دکھائی دیتے . آج کل کی نئی تحقیقات تو گائے کے دودھ سے بڑھ کر گدھی کے دودھ کو مانتی ہے . اور اب تو یہ بھی پتہ چلا ہے کہ جو گائیں بندھے بندھے کھانا کھاتی ہیں اُن سب کے دودھ میں ٹی . بی . کے کیڑے رہتے ہیں . یہ تو سبھی کو معلوم ہے کہ جس گھر میں بکری رہتی ہے اِس میں ٹی . بی . کے

है नहीं पचा सकते. फिर न जाने क्यों कभी हिन्दुओं ने रक्षा की तरह न बकरी रक्षा की बात सोची और न गधी क्षा की. भैंस रक्षा की तरफ़ से तो उन्हें शायद कुछ करना ी नहीं है.

गो रक्षा का आन्दोलन इस हद तक पहुँच गया है कि रक्षा के पत्र निकलने लगे हैं. गोवध बन्द होने का ानून बनना चाहिये, इसका आये दिन शोर उठता रहता है. वध को लेकर अगर सौ दो सौ आदमियों की जान चली य तो इस में भी कोई हर्ज नहीं समझा जाता. गोवध को कने की ख़ातिर जिन्होंने आदमी की जान ली होती है नकी पूजा की जाती है. वह धर्म रक्षक नाम से पुकारे जाते . क्या यह जीव रक्षा की खिल्ली उड़ाना नहीं है ? क्या उन दमियों में जीव नहीं था जो गो रक्षकों की तलवार की ाट उतारे गये पर इस तरफ़ किसी का ध्यान नहीं जाता. सरों के अशगुन करने के लिये अपनी नाक काट डालने भी शायद तकलीफ़ न होती होगी.

जीव रक्षा को लेकर इस तरह की अनगिनत भूलें फैलती ाई हैं, फैल रही हैं और फैलती रहेंगी. और गो रक्षा को कर तो क्या क्या नहीं हुआ, क्या नहीं हो रहा है और क्या हो कर रहेगा.

एक ओर गो रक्षा का शोर मच रहा है दूसरी ओर याग हरिद्वार जैसे तीर्थों पर बहुत कम भाग्य शाली गायें लेंगी जिनके बछड़े तीन महीने भी जीने को पा सकें. दूध देने वाली गायें गोचर भूमि न होने की वजह से रोज़ त का शिकार बनती हैं पर मरती नहीं. अगर उन्हें दमी की तरह ज़हर ख़रीदना आता होता और कहीं मिल कता होता तो वह सुख पाने के लिये उसका ज़रूर पयोग करतीं.

एक तरफ़ लोगों के पास कुछ खिलाने के लिये न होने कुछ गायें जंगली बन गई हैं. उन्होंने वह तूफ़ान उठा खा है कि खेत के खेत साफ़ कर जाती हैं. दूसरी तरफ़ ही आदमी अनाज के दाने को तरस कर जान दे रहे हैं. या ऊंचे दर्जे की गो रक्षा है !

सुना है ऐसे आदमी जिनका गोवध ही पेशा था इस त के लिये तैयार हो गये हैं कि वह अपना पेशा छोड़ देंगे उन्हें कोई ऐसा काम तो मिलना चाहिये जिससे वह पना और अपने कुटुम्ब का पेट भर सकें. अगर इसमें कुछ चाई है तो इन आदमियों की रक्षा करने से उस ढंग की रक्षा तो आपो आप हो जायगी जिसका कुछ मन चले न्दुओं ने शोर मचा रक्खा है.

अगर कल हिन्दुस्तानी सरकार गोवध बन्द करने का नून पास कर दे और बिजली और ट्रैक्टरों के ज़रिये रीकी ढंग की खेती इसी रफ़्तार से बढ़ती रहे जिस

کھوٹے نہیں پچا سکتے . پھر نہ جانے کیوں ہندوؤں نے کبھی گو رکھشا کی طرح نہ بکری رکھشا کی بات سوچی اور نہ گدھی رکھشا کی. بھینس رکھشا کی طرف سے تو انہیں شاید کچھ کرنا ہی نہیں .

گو رکھشا کا آندولن اس حد تک پہنچ گیا ہے کہ گورکھشا کے پتر نکالنے لگے ہیں . گو بدھ بند ہونے کا قانون بننا چاہئے . اس کا آئے دن شور اُٹھتا رہتا ہے . گو بدھ کو لے کر اگر سو دو سو آدمیوں کی جان چلی جائے تو اس میں بھی کوئی ہرج نہیں سمجھا جاتا . گو بدھ روکنے کی خاطر جنہوں نے آدمی کی جان لی ہوتی ہے اُن کی پوجا کی جاتی ہے. وہ دھرم کے رکشک کے نام سے پکارے جاتے ہیں. کیا یہ جیورکشا کی کھلی اُڑانا نہیں ہے ؟ کیا اُن آدمیوں میں جیو نہیں تھا جو گو رکشوں کی تلوار کی گھاٹ اُتارے گئے پر اس طرف کسی کا دھیان نہیں جاتا . دوسروں کے اشگن کرنے کے لئے اپنی ناک کاٹ ڈالنے میں شاید تکلیف نہ ہوتی ہوگی .

جیورکشا کو لے کر اس طرح کی ان گنت بھولیں پھیلتی آئیں ہیں پھیل رہی ہیں اور پھیلتی رہیں گی . اور گو رکشا کو لے کر تو کیا کیا نہیں ہوا، کیا نہیں ہو رہا اور کیا نہیں ہو کر رہے گا .

ایک اور گو رکشا کا شور مچ رہا ہے دوسری اور پریاگ ہردوار جیسے تیرتھوں پر بہت کم بھاگیہ شالی گائیں ملیں گی جن کے بچھڑے تین مہینے بھی جینے کو پا سکیں. دودھ نہ دینے والی گائیں گوچر بھومی نہ ہونے کی وجہ سے روز موت کا شکار بنتی ہیں پر مرتی نہیں . اگر انہیں آدمی کی طرح زہر خریدنا آتا ہوتا اور کہیں مل سکتا ہوتا تو وہ سکھ پانے کے لئے اس ضرور اپیوگ کرتیں .

ایک طرف لوگوں کے پاس کچھ کھلانے کے لئے نہ ہونے سے کچھ گائیں جنگلی بن گئی ہیں . انہوں نے وہ طوفان اُٹھا رکھا ہے کہ کھیت کے کھیت صاف کر جاتی ہیں. دوسری طرف کہیں آدمی اناج کے دانے کو ترس کر جان دے رہے ہیں. کیا اونچے درجے کی گو رکشا ہے ! سنا ہے کہ ایسے آدمی جن کا گو بدھ ہی پیشہ تھا اس بات کے لئے تیار ہوگئے ہیں کہ وہ اپنا پیشہ چھوڑ دینگے پر انہیں کوئی ایسا کام تو ملنا چاہئے جس سے وہ اپنا اور اپنے کٹمب کا پیٹ بھر سکیں . اگر اس میں کچھ سچائی ہے تو ان آدمیوں کی رکشا کرنے سے اس ڈھنگ کی گو رکشا تو آپو آپ ہوجائے گی جس کا کچھ من چلے ہندوؤں نے شور مچا رکھا ہے .

اگر کل ہندستانی سرکار گو بدھ بند کرنے کا قانون پاس کر دے اور بجلی اور ٹریکٹروں کے ذریعے امریکی ڈھنگ کی کھیتی اسی رفتار سے بڑھتی رہے جس

जीव रक्षा

मोटे तौर से देखा जाय तो जीव रक्षा से बढ़ कर धर्म का काम कोई दूसरा नहीं हो सकता. इस बात को ले कर एक धर्म ही खड़ा हो गया है जिसका नाम है जैन धर्म. हो सकता है कि और भी धर्मों को यह दावा हो कि वह जीव रक्षा को ही लेकर खड़े हुये हैं. हमें वैसा मानने में कोई इन्कार नहीं.

बारीकी और गौर से देखा जाय तो जीव रक्षा करना बेहद मुश्किल काम है. ऐसा मालूम होता है, नामुमकिन है.

एक बार एक सज्जन जीव रक्षा का चोग़ा पहने एक सभा के मंच से हिसाब सुना रहे थे कि उन्होंने अमुक देवी के मन्दिर से बकरों की बलि बन्द करा दी. और इस तरह उन्होंने साल भर में कटने वाले सैंकड़ों बकरों की जान बचा ली.

हम उस सभा में मौजूद थे, पूछ बैठे, क्या वह सब बकरे आपके घर बंधे हैं ?

वह बिगड़ कर बोले—क्या मतलब ?

हम बोले—मतलब यही कि आप ने बकरों की जान नहीं बचाई, बकरों के कटने की जगह तबदील कर दी. यह जीव रक्षा नहीं हुई. हां कुछ लोगों के ख्याल से एक बेवक़ूफ़ी ज़रूर दूर हुई कि बकरे काटने जैसा नीच काम देवी के मन्दिर जैसी ऊंची जगह पर किया जाय.

वर्धा में रहने वाले स्वामी सत्यभक्त का लिखा 'नया संसार' पढ़ा. उसमें उन्होंने जीव रक्षा का एक नया उपाय सुझाया है और वह यह कि एक जगह उन्हें कहीं सुअर नाम को न मिले. उन्होंने लोगों से पूछा कि क्या तुमने सब सुअर मार डाले ? लोग बोले—हैं ! हैं ! जीव हिंसा जैसा काम यहां नहीं होता. तो वह बोले—फिर सुअर क्या हुये ? लोग बोले—नर मादा हमने अलग अलग रख दिये और सुअर अपनी मौत खत्म हो गये.

सूझ बड़ी सुन्दर है पर जो लोग नर मादा को न मिलने देना हिंसा मानते हों उनको क्या किया जाय ? खैर इसे छोड़िये. ऊपर की बात कल्पना की दुनिया की है, व्योहारी दुनिया की नहीं.

हिन्दू धर्म में जीव रक्षा का काम कम महत्व का नहीं, पर न जाने क्यों उन्हें गाय छोड़ कर और जीव, जीव ही नहीं दिखाई देते. आज कल की नई तहक़ीक़ात तो गाय के दूध से बढ़ कर गधी के दूध को मानती है. और अब तो यह भी पता चला है कि जो गायें बंधे बंधे खाना खाती हैं उन सब के दूध में टी. बी. के कीड़े रहते हैं. यह तो सभी को मालूम है कि जिस घर में बकरी रहती है उसमें टी. बी. के

جیورکھا

موٹے طور سے دیکھا جائے تو جیورکھشا سے بڑھ کر دھرم کا کام کوئی دوسرا نہیں ہو سکتا۔ اِس بات کو لے کر ایک دھرم ہی کھڑا ہوگیا ہے جس کا نام ہے جین دھرم۔ ہو سکتا ہے کہ اور بھی دھرموں کو یہ دعویٰ ہو کہ وہ جیورکھشا کو ہی لے کر کھڑے ہوئے ہیں۔ ہمیں ویسا ماننے میں کوئی اِنکار نہیں۔

باریکی اور غور سے دیکھا جائے تو جیورکھشا کرنا بے حد مشکل کام ہے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے، ناممکن ہے۔

ایک بار ایک سجن جیورکھشا کا چوغا پہنے ایک سبھا کے منچ سے حساب سنا رہے تھے کہ انہوں نے اَمک دیوی کے مندر سے بکروں کی بلی بند کرا دی۔ اور اس طرح انہوں نے سال بھر میں کٹنے والے سیکڑوں بکروں کی جان بچا لی۔

ہم اس سبھا میں موجود تھے، بیٹھے، پوچھ بیٹھے کیا وہ سب بکرے آپ کے گھر بندھے ہیں ؟

وہ بگڑ کر بولے—کیا مطلب ؟

ہم بولے—مطلب یہی کہ آپ نے بکروں کی جان نہیں بچائی، بکروں کے کٹنے کی جگہ تبدیل کر دی۔ یہ جیورکھشا نہیں ہوئی۔ ہاں کچھ لوگوں کے خیال سے ایک بیوقوفی ضرور دور ہوئی کہ بکرے کاٹنے جیسا نیچ کام دیوی کے مندر جیسی اونچی جگہ پر کیا جائے۔

وردھا میں رہنے والے سوامی ستیہ بھکت کا لکھا 'نیا سنسار' پڑھا اس میں انہوں نے جیورکھشا کا ایک نیا اپائے سجھایا ہے اور وہ یہ کہ ایک جگہ انہیں کہیں سوور نام کو نہ ملے۔ انہوں نے لوگوں سے پوچھا کہ کیا تم نے سب سوور مار ڈالے ؟ لوگ بولے ہیں ! ہیں ! جیوہنسا جیسا کام یہاں نہیں ہوتا۔ تو وہ بولے—پھر سوور کیا ہوئے ؟ لوگ بولے—نر مادا ہم نے الگ الگ رکھ دئے اور سوور اپنی موت ختم ہوگئے۔

سوجھ بڑی سندر ہے پر جو لوگ نر مادا کو نہ ملنے دینا ہنسا مانتے ہوں اُن کو کیا کیا جائے ؟ خیر اِسے چھوڑئے۔ اُوپر کی بات کلپنا کی دنیا کی ہے، ویوہارک دنیا کی نہیں۔

ہندو دھرم میں جیورکھشا کا کام کم مہتو کا نہیں، پر نہ جانے کیوں اُنہیں گائے چھوڑکر اور جیو، جیو ہی نہیں دکھائی دیتے۔ آج کل کی نئی تحقیقات تو گائے کے دودھ سے بڑھ کر گدھی کے دودھ کو مانتی ہے۔ اور اب تو یہ بھی پتہ چلا ہے کہ جو گائیں بندھے بندھے کھانا کھاتی ہیں اُن سب کے دودھ میں ٹی۔ بی۔ کے کیڑے رہتے ہیں۔ یہ تو سبھی کو معلوم ہے کہ جس گھر میں بکری رہتی ہے اِس میں ٹی۔ بی۔ کے

पूंजी के दिल को टुकड़े टुकड़े कर देने के लिये काफ़ी !

दूसरी अक्तूबर को दुनिया बापू जी का जन्म दिन ...नायगी, लेकिन हमारे लिये इस देश में इस साल यह दिन ...ास मातम का दिन होगा. उस दिन हमारी सरकार, ढोंग ...ौर दीदा दलेरी के साथ, भारत के गांवों में 55 नई तरह ...ी शामलाती योजनाएं शुरू करने जा रही है जिन्हें ...कम्युनिटी प्रोजेक्टस' कहा जाता है. ज़ाहिर है यह पाक ...न इसलिये चुना गया जिससे लोग और ख़ास कर गांव ... रहने वाले यह समझें कि यह योजनाएं बापूजी के ...ादर्शों के अनुसार चलाई जा रही हैं और इन योजनाओं ...ा शुरू करना बापू जी की यादगार को ज़िन्दा करने का ...क मुनासिब तरीक़ा है. बापू जी की ओर आदर दिखाने ...ा इससे ज़ियादा अन्याय का तरीक़ा सोच सकना भी ...ठिन है.

बापू जी का आदर्श यह था कि गांव के लोग अपने पैरों ... खड़े हों और माली या आर्थिक निगाह से किसी के ...ोहताज या गुलाम न हों. यह 'कम्युनिटी योजनाएं' हमारे ...ांव वालों को बाहर की ताक़त के ग़ुलाम बना देंगी.

बापू जी का आदर्श यह था कि हमारे गांवों से बेकारी ...बलकुल दूर हो जाय और गांव के ग़रीब से ग़रीब आदमी ...ो रोज़ी मिल सके. हमारे गांव में अब भी बेकारी इतनी ...ी हुई है कि उसे देख कर चक्कर आने लगता है. यह नई ...जनाएं इस बेकारी को और भी बढ़ा देंगी.

बापू जी का आदर्श यह था कि खेती की सारी ज़मीन ...न लोगों में बांट दी जाय जो अपने हाथ से खेतों में काम ...ते हैं, और हर एक को इतनी ज़मीन दी जाय जिससे ...सका गुज़ारा हो सके. यह नई योजनाएं इस तरह के ...टवारे की कोई बात नहीं सोचतीं. इसके ख़िलाफ़ इन ...जनाओं में बड़ी चालाकी के साथ एक ऐसा रास्ता ...काला गया है जिससे पुरानी ज़मींदारी की जगह नई और ...से ज़ियादा बुरी ज़मींदारी क़ायम हो जाय, और हमारी ...ृ भूमि व्यापारियों और विदेशियों के मुनाफ़े के लिये ...रदी के साथ चूसी जा सके.

किसी की सालगिरह मनाने के यह तरीक़े मुनासिब हैं ... नहीं इसका फ़ैसला दुनिया ख़ुद करे.

गोपाल आश्रम

पिलखी, टेहरी गढ़वाल —मीरा बहन

10-9-'52

باپوجی کے دل کو ٹکڑے ٹکڑے کر دینے کے لئے کافی !

دوسری اکتوبر کو دنیا باپو جی کا جنم دن منائیگی، لیکن ہمارے لئے اِس دیش میں اِس سال یہ دن خاص ماتم کا دن ہوگا. اُس دن ہماری سرکار، ڈھونگ اور دیدہ دلیری کے ساتھ، بھارت کے گاؤں میں 55 نئی طرح کی شاملاتی یوجنائیں شروع کرنے جا رہی ہے جنہیں 'کمیونٹی پروجیکٹس' کہا جاتا ہے. ظاہر ہے یہ پاک دن اِس لئے چنا گیا جس سے لوگ اور خاص کر گاؤں کے رہنے والے یہ سمجھیں کہ یہ یوجنائیں باپو جی کے آدرشوں کے انوسار چلائی جا رہی ہیں، اور اِن یوجناؤں کا شروع کرنا باپو جی کی یادگار کو زندہ کرنے کا ایک مناسب طریقہ ہے. باپو جی کی اور آدر دکھانے کا اِس سے زیادہ انیائے کا طریقہ سوچ سکنا بھی کٹھن ہے.

باپو جی کا آدرش یہ تھا کہ گاؤں کے لوگ اپنے پیروں پر کھڑے ہوں اور مالی یا آرتھک نگاہ سے کسی کے محتاج یا غلام نہ ہوں. یہ 'کمیونٹی یوجنائیں' ہمارے گاؤں والوں کو باہر کی طاقت کے غلام بنادیں گی.

باپو جی کا آدرش یہ تھا کہ ہمارے گاؤں سے بیکاری بالکل دور ہو جائے اور گاؤں کے غریب سے غریب آدمی کو روزی مل سکے. ہمارے گاؤں میں اب بھی بیکاری اِتنی بڑھی ہوئی ہے کہ اُسے دیکھکر چکر آنے لگتا ہے. یہ نئی یوجنائیں اِس بیکاری کو اور بھی بڑھادیں گی.

باپو جی کا آدرش یہ تھا کہ کھیتی کی ساری زمین اُن لوگوں میں بانٹ دی جائے جو اپنے ہاتھ سے کھیتوں میں کام کرتے ہیں، اور ہر ایک کو اِتنی زمین دی جائے جس سے اُس کا گذارا ہوسکے. یہ نئی یوجنائیں اس طرح کے بٹوارے کی کوئی بات نہیں سوچتیں. اِس کے خلاف اِن یوجناؤں میں بڑی چالاکی کے ساتھ ایک ایسا راستہ نکالا گیا ہے جس سے پرانی زمینداری کی جگہ نئی اور اُس سے زیادہ بری زمینداری قائم ہو جائے، اور ہماری ماتربھومی بیوپاریوں اور ودیشیوں کے منافے کے لئے بیدردی کے ساتھ چوسی جاسکے.

کسی کی سالگرہ منانے کے طریقے مناسب ہیں یہ نہیں اِس کا فیصلہ دنیا خود کرے.

گوپال آشرم

پلکھی، ٹیہری گڑھوال —میرا بہن

10 . 9 . '52

दुनिया की जनता का भला हो. यह हमारा साफ़ और सीधा मक़सद है. कोई भला आदमी इसके ख़िलाफ़ नहीं हो सकता."

आगे चल कर को मो जो ने लिखा है कि:—

"चीन में एक पुरानी कहावत है कि 'धन का लोभ आदमी को अन्धा और बहरा कर देता है.' आज दुनिया में इसीलिये अशान्ति बढ़ रही है क्योंकि मुट्ठी भर ख़ुद ग़रज़ लोग अपने लिये बड़े बड़े मुनाफ़े कमाना चाहते हैं."

पहली मई सन 1952 को अमरीकी पन्जे से अपने को आज़ाद करने की कोशिश में लगे हुए जापानियों ने जापान में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया था. प्रदर्शन करने वालों पर गोलियां बरसाई गईं. उनमें मासाओ ताकाहाशी नाम का एक नौजवान भी गोली का शिकार हुआ. कुछ दिनों बाद 'तोकियो मदर्स सोसाइटी' यानी तोकियो की माताओं की सोसाइटी का एक जलसा तोकियो में हुआ जिसमें ताका हाशी की मां ने कहा—"मेरे बेटे के कपड़ों में मुझे एक काग़ज़ मिला जिसमें मेरे बेटे ने लिखा है कि वह अपने देश में आज़ादी, शान्ति और इन्सानी ज़िन्दगी क़ायम करना चाहता था. उसकी मां की हैसियत से मैं अपने बेटे की इस इच्छा को पूरा करना चाहती हूं." को मो जो ने ताका हाशी की मां के इन शब्दों को दोहराते हुए जापानी जनता के नाम अपनी चिट्ठी में लिखा है कि—"कौन होगा जिसका दिल इन शब्दों को सुन कर पिघल न जाये ? जापान में इस तरह की हज़ारों माताएं हैं. इसलिये जापान के देश भक्त दोस्तो ! मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे देश के नुमाइन्दे पीकिंग कानफ़रेन्स में आयेंगे. हम लोग उनका दिल से स्वागत करेंगे. एशिया के और पैसिफ़िक महासागर के सब देशों के नुमाइन्दे उनका दिल से स्वागत करेंगे. आपके रास्ते में कितनी ही कठिनाइयां क्यों न हों, एशिया और पैसिफ़िक महासागर के देशों के एक अरब साठ करोड़ आदमी आपके साथ हैं और आपकी आज़ादी के लिये पूरा ज़ोर लगाएंगे, क्योंकि आपकी आज़ादी पर ही हम सब की और दुनिया की आज़ादी निर्भर है."

योशीदा सरकार ने ऐलान कर दिया था कि वह किसी जापानी को पीकिंग शान्ति सम्मेलन में जाने के लिये पास पोर्ट न देगी यह कह कर कि "चीन में जापानियों को जान का ख़तरा है ! !" फिर भी जापान के तेरह देश भक्त नुमाइन्दे जिस तरह हो सका पीकिंग कानफ़रेन्स में पहुंचे, उनका ख़ूब स्वागत हुआ और उन्होंने कारवाई में पूरा पूरा हिस्सा लिया.

6–10–'52. —सुन्दरलाल

دنیا کی جنتا کا بھلا ہو. یہ ہمارا صاف اور سیدھا مقصد ہے . کوئی بھلا آدمی اس کے خلاف نہیں ہوسکتا ."

آگے چل کر کوموجو نے لکھا ہے کہ :—

"چین میں ایک پرانی کہاوت ہے کہ 'دھن کا لوبھ آدمی کو اندھا اور بہرا کر دیتا ہے' آج دنیا میں اسی لئے اشانتی بڑھ رہی ہے کیونکہ مٹھی بھر خود غرض لوگ اپنے لئے بڑے بڑے منافے کمانا چاہتے ہیں ."

پہلی مئی سن 1952 کو امریکی پنجے سے اپنے کو آزاد کرنے کی کوشش میں لگے ہوئے جاپانیوں نے جاپان میں ایک بہت بڑا پردرشن کیا تھا . پردرشن کرنے والوں پر گولیاں برسائی گئیں . ان میں ماساؤ تاکا ہاشی نام کا ایک نوجوان بھی گولی کا شکار ہوا . کچھ دنوں بعد 'توکیو مدرس سوسائٹی' یعنی توکیو کی ماتاؤں کی سوسائٹی کا ایک جلسہ توکیو میں ہوا جس میں تاکا ہاشی کی ماں نے کہا—' میرے بیٹے کے کپڑوں میں مجھے ایک کاغذ ملا جس میں میرے بیٹے نے لکھا ہے کہ وہ اپنے دیش میں آزادی' شانتی اور انسانی زندگی قائم کرنا چاہتا تھا. اس کی ماں کی حیثیت سے میں اپنے بیٹے کی اس اِچھا کو پورا کرنا چاہتی ہوں ." کوموجو نے تاکا شاہی کی ماں کے اِن شبدوں کو دہراتے ہوئے جاپانی جنتا کے نام اپنی چٹھی میں لکھا ہے کہ—"کون ہوگا جس کا دل اِن شبدوں کو سنکر پگھل نہ جائے؟ جاپان میں اس طرح کی ہزاروں ماتائیں ہیں . اس لئے جاپان کے دیش بھگت دوستو ! مجھے اُمید ہے کہ تمہارے دیش کے نمائندے پیکنگ کانفرنس میں آئیں گے . ہم لوگ اُن کا دل سے سواگت کریں گے . ایشیا کے اور پیسفک مہاساگر کے سب دیشوں کے نمائندے اُن کا دل سے سواگت کریں گے. آپ کے راستے میں کتنی ہی کٹھنائیاں کیوں نہ ہوں' ایشیا اور پیسفک مہاساگر کے دیشوں کے ایک ارب ساٹھ کروڑ آدمی آپ کے ساتھ ہیں اور آپ کی آزادی کے لئے پورا زور لگائیں گے' کیونکہ آپ کی آزادی پر ہی ہم سب کی اور دنیا کی آزادی نربھر ہے ."

یوشیدا سرکار نے اعلان کر دیا تھا کہ وہ کسی جاپانی کو پیکنگ شانتی سمیلن میں جانے کے لئے پاس پورٹ نہ دے گی یہ کہکر کہ "چین میں جاپانیوں کو جان کا خطرہ ہے!!" پھر بھی جاپان کے تیرہ دیش بھگت نمائندے جس طرح ہوسکا پیکنگ کانفرنس میں پہنچے' اُن کا خوب سواگت ہوا اور اُنہوں نے کارروائی میں پورا پورا حصہ لیا .

—سندرلال 6 . 10 . '52

में जापान के बारे में पास किया था. वर्ल्ड पीस कौंसिल के उस इजलास में 59 देशों के 240 मेम्बरों ने हिस्सा लिया था और जापान पर अमरीकी क़ब्ज़े के ख़िलाफ़ सब ने एक राय से ठहराव पास किया था.

को मो जो ने लिखा है कि—"एशिया में और पैसिफ़िक महा सागर में शान्ति क़ायम रह सकती है या नहीं इसका पूरा दारोमदार इस बात पर है कि जापान को अमरीका की ख़ुद ग़रज़ी के लिये फिर से हथियारों से लैस किया जाता है या जापानियों को सच्ची आज़ादी और लोक शाही की ज़िन्दगी बसर करने दिया जाता है.

पीकिंग की "एशियाई और पैसिफ़िक पीस कान्फ़रेन्स" के मक़सद को बयान करते हुए को मो जो ने लिखा है कि :—

"हमारी यह कानफ़रेन्स जनता के नुमाइन्दों की कानफ़रेन्स है. इसका एक साफ़ और सीधा मक़सद है—शान्ति की रक्षा करना. हमारी मांग है कि जापान में पूरी और सच्ची लोक शाही क़ायम की जाए. हम आज कल के हालात में जापान के फिर से फ़ौजियाए जाने और हथियारों से लैस किये जाने के ख़िलाफ़ हैं. हमारी मांग है कि सब देशों की फ़ौजें और हथियार कम किये जायें. हम आम जनता के संहार के इस तरह के हथियारों जैसे ऐटम बम, बीमारी बम और रसायनी बम के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ हैं. हमारी मांग है कि सब देशों के बीच तिजारती सम्बन्धों और कलचरी लेन देन को फिर से क़ायम किया जाये हम देश और देश के बीच की तिजारत पर बन्दिशों और पाबन्दियों के ख़िलाफ़ हैं. हमारी मांग है कि कोरिया के सवाल का और दक्खिन पूरबी एशियाई देशों के सब सवालों का जल्दी और शान्ति के साथ फ़ैसला कर दिया जाए. हम इस बात के ख़िलाफ़ हैं कि कोई भी देश किसी दूसरे देश के अन्दर के मामलों में ज़बरदस्ती या अपनी फ़ौजी ताक़त से दख़ल दे. हमारे यह मक़सद खुले और साफ़ मक़सद हैं. यह मांग केवल एशिया और पैसिफ़िक महा सागर के देशों के लोगों की ही मांग नहीं है, यह दुनिया भर के सब देशों के उन लोगों की मांग है जो शान्ति और न्याय चाहते हैं. हम चाहते हैं और आशा करते हैं कि सब देश जिन में अलग अलग तरह की राज पद्धतियां और अलग अलग तरह की हुकूमतें हैं मिल कर अमन से रह सकें. हम किसी दूसरे पर हमला या किसी दूसरे के साथ ज़ियादती नहीं करेंगे. हम किसी दूसरे का हमला या ज़ियादती भी बरदाश्त नहीं करेंगे. हम चाहते हैं कि सब की बढ़ोती हो और सब तरक़्क़ी करें. हम चाहते हैं कि बराबरी के और सब के भले के आधार पर सब एक एक दूसरे को मदद दें और एक दूसरे के यहां के शान्तिमय रचनात्मक कामों को तरक़्क़ी दें जिससे सारी

میں جاپان کے بارے میں پاس کیا تھا. ورلڈ پیس کونسل کے اس اجلاس میں 59 دیشوں کے 240 ممبروں نے حصہ لیا تھا اور جاپان پر امریکی قبضہ کے خلاف سب نے ایک رائے سے ٹھہراؤ پاس کیا تھا .

کوموجو نے لکھا ہے کہ—"ایشیا میں اور پیسفک مہاساگر میں شانتی قائم رہ سکتی ہے یا نہیں اس کا پورا دارومدار اس بات پر ہے کہ جاپان کو امریکہ کی خود غرضی کے لئے پھر سے ہتھیاروں سے لیس کیا جاتا ہے یا جاپانیوں کو سچی آزادی اور لوک شاہی کی زندگی بسر کرنے دیا جاتا ہے ."

پیکنگ کی "ایشیائی اور پیسفک پیس کانفرنس" کے مقصد کو بیان کرتے ہوئے کوموجو نے لکھا ہے کہ :—

"ہماری یہ کانفرنس جنتا کے نمائندوں کی کانفرنس ہے. اس کا ایک صاف اور سیدھا مقصد ہے—شانتی کی رکشا کرنا. ہماری مانگ ہے کہ جاپان میں پوری اور سچی لوک شاہی قائم کی جائے. ہم آج کل کے حالات میں جاپان کے پھر سے فوجیائے جانے اور ہتھیاروں سے لیس کئے جانے کے خلاف ہیں. ہماری مانگ ہے کہ سب دیشوں کی فوجیں اور ہتھیار کم کئے جائیں . ہم عام جنتا کے سنہار کے اس طرح کے ہتھیاروں جیسے ایٹم بم' بیماری بم اور رسائنی بم کے استعمال کے خلاف ہیں . ہماری مانگ ہے کہ سب دیشوں کے بیچ تجارتی سمبندھوں اور کلچری لین دین کو پھر سے قائم کیا جائے. ہم دیش اور دیش کے بیچ کی تجارت پر بندشوں اور پابندیوں کے خلاف ہیں. ہماری مانگ ہے کہ کوریا کے سوال کا اور دکھن پوربی ایشیائی دیشوں کے سب سوالوں کا جلدی اور شانتی کے ساتھ فیصلہ کر دیا جائے. ہم اس بات کے خلاف ہیں کہ کوئی بھی دیش کسی دوسرے دیش کے اندر کے معاملوں میں زبردستی یا اپنی فوجی طاقت سے دخل دے . ہمارے یہ مقصد کھلے اور صاف مقصد ہیں . یہ مانگ کیول ایشیا اور پیسفک مہاساگر کے دیشوں کے لوگوں کی ہی مانگ نہیں ہے' یہ دنیا بھر کے سب دیشوں کے ان لوگوں کی مانگ ہے جو شانتی اور نیائے چاہتے ہیں . ہم چاہتے ہیں اور آشا کرتے ہیں کہ سب دیش جن میں الگ الگ طرح کی راج پدھتیاں اور الگ الگ طرح کی حکومتیں ہیں مل کر امن سے رہ سکیں . ہم کسی دوسرے پر حملہ یا کسی دوسرے کے ساتھ زیادتی نہیں کریں گے . ہم کسی دوسرے کا حملہ یا زیادتی بھی برداشت نہیں کریں گے . ہم چاہتے ہیں کہ سب کی بڑھوتی ہو اور سب ترقی کریں. ہم چاہتے ہیں کہ برابری کے اور سب کے بھلے کے آدھار پر سب ایک دوسرے کو مدد دیں اور ایک دوسرے کے یہاں کے شانتی میں رچناتمک کاموں کو ترقی دیں جس سے ساری

साथ कहा था कि—"अमरीका जापान से यह आशा करता है कि जापान एशिया का नेता बने, और मैं पक्का इरादा कर चुका हूं कि अमरीका की इस आशा को पूरा करूंगा !"

जापानियों के नाम को मो जो की चिट्ठी

जापान की इस हालत को सामने रखते हुए चीन पीस कमेटी के चेयरमैन और वर्ल्ड कौंसिल आफ़ पीस के वाइस प्रेसीडेन्ट मशहूर चीनी नेता को मो जो ने 7 सितम्बर 1952 को जापानी जनता के नाम एक खुली चिट्ठी भेजी जो दुनिया के बहुत से अख़बारों में शाया हुई. इस चिट्ठी का ख़ास मतलब था कि उस एशियाई पैसिफ़िक पीस कानफ़रेन्स में जापान के नुमाइन्दों को दावत देना जो इसी अक्तूबर के शुरू में चीन की राजधानी पीकिंग में हुई थी और जिसमें एशिया के 37 देशों से आए हुए 344 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था. इसी तरह की एक खुली चिट्ठी को मो जो ने सितम्बर सन 1951 में भी जापानी जनता को भेजी थी, जिसमें उन्होंने लिखा था—"इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि आज जापान की हालत वैसी ही है जैसी सन 1949 में आज़ादी हासिल करने से पहले चीन की थी." अपनी नई चिट्ठी में को मो जो ने एक साल पहले की चिट्ठी के उस फ़िक़रे को जापानी जनता को याद दिलाई और लिखा कि जापानी जनता इस समय दोहरे ज़ुल्मों से पिस रही है—एक विदेशी अमरीकी फ़ौजों का ज़ुल्म और दूसरे अमरीका के जापानी एजेन्टों का ज़ुल्म. जापानी देश भक्तों को मुख़ातिब करते हुए को मो जो ने लिखा है कि :—

"जापानी देश भक्तों और दोस्तों ! इस दोहरे अन्याय के नीचे आप की दिमाग़ी उलझनों और जिसमानी तकलीफ़ों को हम अच्छी तरह समझते हैं. हम चीनी लोग इसी तरह की मुसीबतों में से निकल चुके हैं. अभी कुछ बरस ही हुए हम इन मुसीबतों से आज़ाद हुए हैं. ताइवान (फ़ारमोसा) में हमारे देश भाई अभी तक इसी मुसीबत में हैं और उनकी हालत दिन बदिन बदतर होती जा रही है. हमारे दिलों में आप की उन पाक कोशिशों के लिये भी बहुत बड़ी इज़्ज़त है जो आप अपने देश में स्वाधीनता, शान्ति और सच्ची लोक शाही को फिर से क़ायम करने के लिये बरसों से कर रहे हैं. ख़ास कर जापान को फिर से फ़ौजियाने और हथियार बन्द करने के ख़िलाफ़ आपकी कोशिशों की हमारे दिल में और भी ज़ियादा क़दर है, क्योंकि इस फ़ौजियाने का असली और अमली मतलब जापान को अमरीका की एक नौआबादी बना देना है. केवल चीन के लोग ही नहीं, दुनिया भर की जनता जो शान्ति और न्याय चाहती है आपकी इन कोशिशों को सराहती है."

इसके बाद को मो जो ने उस ठहराव की चरचा की है जो बरलिन की वर्ल्ड पीस कौंसिल ने जुलाई सन 1952

ساتھ کہا تھا کہ—" امریکہ جاپان سے یہ آشا کرتا ہے کہ جاپان ایشیا کا نیتا بنے، اور میں پکا ارادہ کر چکا ہوں کہ امریکہ کی اس آشا کو پورا کرونگا !"

جاپانیوں کے نام کوموجو کی چٹھی

جاپان کی اس حالت کو سامنے رکھتے ہوئے چین پیس کمیٹی کے چیرمین اور ورلڈ کونسل آف پیس کے وائس پریسیڈینٹ مشہور چینی نیتا کوموجو نے 7 ستمبر 1952 کو جاپانی جنتا کے نام ایک کھلی چٹھی بھیجی جو دنیا کے بہت سے اخباروں میں شائع ہوئی۔ اس چٹھی کا خاص مطلب تھا اس ایشیائی پیسفک پیس کانفرنس میں جاپان کے نمائندوں کو دعوت دینا جو اسی اکتوبر کے شروع میں چین کی راجدھانی پیکنگ میں ہوئی تھی اور جس میں ایشیا کے 37 دیشوں سے آئے ہوئے 344 پرتی ندھیوں نے حصہ لیا تھا۔ اسی طرح کی ایک کھلی چٹھی کوموجو نے ستمبر سن 1951 میں بھی جاپانی جنتا کو بھیجی تھی، جس میں انہوں نے لکھا تھا—" اس بات سے کوئی انکار نہیں کر سکتا کہ آج جاپان کی حالت ویسی ہی ہے جیسی سن 1949 میں آزادی حاصل کرنے سے پہلے چین کی تھی۔" اپنی نئی چٹھی میں کوموجو نے ایک سال پہلے کی چٹھی کے اس فقرے کی جاپانی جنتا کو یاد دلائی اور لکھا کہ جاپانی جنتا اس سمے دہرے ظلموں سے پس رہی ہے—ایک ودیشی امریکی فوجوں کا ظلم اور دوسرے امریکہ کے جاپانی ایجنٹوں کا ظلم جاپانی دیش بھگتوں کو مخاطب کرتے ہوئے کوموجو نے لکھا ہے کہ :—

" جاپانی دیش بھگتوں اور دوستو ! اس دوہرے انیائے کے نیچے آپ کی دماغی الجھنوں اور جسمانی تکلیفوں کو ہم اچھی طرح سمجھتے ہیں۔ ہم چینی لوگ اسی طرح کی مصیبتوں میں سے نکل چکے ہیں۔ ابھی کچھ برس ہی ہوئے ہم ان مصیبتوں سے آزاد ہوئے ہیں۔ تائی وان (فارموسا) میں ہمارے دیش بھائی ابھی تک اسی مصیبت میں ہیں اور ان کی حالت دن بدن بدتر ہوتی جا رہی ہے۔ ہمارے دلوں میں آپ کی ان پاک کوششوں کے لئے بھی بہت بڑی عزت ہے جو آپ اپنے دیش میں سوادھینتا، شانتی اور سچی لوک شاہی کو پھر سے قائم کرنے کے لئے برسوں سے کر رہے ہیں۔ خاص کر جاپان کو پھر سے فوجیانے اور ہتھیار بند کرنے کے خلاف آپ کی کوششوں کی ہمارے دل میں اور بھی زیادہ قدر ہے، کیونکہ اس فوجیانے کا اصلی اور عملی مطلب جاپان کو امریکہ کی ایک نوآبادی بنا دینا ہے۔ کیول چین کے لوگ ہی نہیں، دنیا بھر کی جنتا جو شانتی اور نیائے چاہتی ہے آپ کی ان کوششوں کو سراہتی ہے۔"

اس کے بعد کوموجو نے اس ٹھہراؤ کی چرچہ کی ہے جو برلن کی ورلڈ پیس کونسل نے جولائی سن 1952

इन खुली सन्धियों के अलावा कुछ गुप्त अहद नामे भी जिनका सम्बन्ध जापान भर के रेल, तार, टेलीफ़ोन, फ़्या पुलिस और खबररसानी के महकमों से है. इन्हें फ़ौजी रहस्य" बता कर गुप्त रखा गया है.

जापान पर अमरीकी फ़ौज का क़बज़ा हुए छै साल हो के. क़बज़ा करते वक़्त दुनिया से कहा गया था कि जापान ा "आज़ादी" (इन्डीपेनडैन्स) दी जा रही है. "आज़ादी" इन छै बरस के अन्दर जापान को देश भर में फैली हुई छाई हुई इस अमरीकी फ़ौज के खर्च के लिये चार ख सत्तानवे करोड़ अमरीकी डालर देने पड़े हैं. न्दुस्तानी सिक्के में यह रक़म इक्कीस अरब रुपये से र होती है. जापानी सरकार का बजट बढ़ता चला जा है और कुल बजट का सत्तर फ़ी सदी इसी फ़ौजी खर्च जाता है. नतीजा यह है कि जापानी जनता की ज़िन्दगी न पर दिन एक मुसीबत और बोझ होती जा रही है. कहा ता है कि जितना कम से कम पौश्टिक खाना हर दिन आदमी को तन्दुरुस्त रहने के लिये मिलना चाहिये का मुश्किल से चालीस फ़ीसदी आज हर जापानी को ल रहा है. युद्ध से सम्बन्ध रखने वाले धन्दों और खानों को छोड़ कर बाक़ी सब धन्दे और कारखाने त बुरी हालत में हैं. छोटी छोटी और दरमियानी दरजे छै हज़ार सात सौ से ऊपर फ़रमों का दिवाला निकल ा है, इन्हें अपना कारबार बिलकुल बन्द करना पड़ा है.

28 जुलाई सन 1952 को वाशिंगटन (अमरीका) में कानफ़रेन्स हुई थी, जिस में अमरीका, इंगलैंड, फ़्रांस, डा और जापान शामिल थे. उस कानफ़रेन्स में यह तय ा कि जापान के कारखाने वाले और व्यापारी नए चीन साथ तिजारत न करने पायें, और जापान को अपने यहां जो कुछ माल बाहर भेजना हो वह दक्खिन-पूरब के याई देशों को भेजे. दूसरी एक ऐसी ही कानफ़रेन्स 4 स्त सन 1952 से 6 अगस्त तक होनोलूलू में हुई में अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और जापान मेल थे. इसमें तय पाया कि उत्तर में बैरिंग की खाड़ी से र जो एशिया को अमरीकी महाद्वीप से अलग करती है, शेयन्स, जापान, फ़ारमोसा, फ़िलिप्पाइन, आस्ट्रेलिया धुर दक्खिन में न्यूज़ीलैंड तक एक लगातार फ़ौजी र खड़ी कर दी जाये, जिसकी सब से आगे बढ़ी हुई निवां कोरिया में हों.

हाल में एक अमरीकी नीतिज्ञ स्टैसन ने साफ़ कहा —"दुनिया में अमन क़ायम रखने का सब से आसान क़ यही है कि एशिया के लोग एशिया वालों को काटने लगा दिये जायें."

एक तरफ़ यह हालत है और दूसरी तरफ़ 4 अगस्त 952 को जापान के प्रधान मंत्री योशीदा ने बड़े गर्व के

اِن کھلی سندھیوں کے علاوہ کچھ گپت عہدنامے بھی ہیں جن کا سمبندھ جاپان بھر کے ریل' تار' ٹیلیفون' خفیاپلس اور خبر رسانی کے محکموں سے ہے . انہیں " فوجی رہسیہ " بتاکر گپت رکھا گیا ہے .

جاپان پر امریکی فوج کا قبضہ ہوئے چھ سال ہو چکے. قبضہ کرتے وقت دنیا سے کہا گیا تھا کہ جاپان کو ''آزادی'' (انڈیپینڈنس) دی جا رہی ہے . '' آزادی '' کے اِن چھ برس کے اندر جاپان کو دیش بھر میں پھیلی ہوئی اور چھائی ہوئی اس امریکی فوج کے خرچ کے لئے چار ارب ستانوے کروڑ امریکی ڈالر دینے پڑے ہیں . ہندستانی سکے میں یہ رقم اکیس ارب روپئے سے اوپر ہوتی ہے . جاپانی سرکار کا بجٹ بڑھتا چلا جا رہا ہے اور کل بجٹ کا ستر فی صدی اسی فوجی خرچ میں جاتا ہے . نتیجہ یہ ہے کہ جاپانی جنتا کی زندگی دن پر دن ایک مصیبت اور بوجھ ہوتی جا رہی ہے . کہا جاتا ہے کہ جتنا کم سے کم پوشٹک کھانا ہر دن ہر آدمی کو تندرست رہنے کےلئے ملنا چاہئے اس کا مشکل سے چالیس فی صدی آج ہر جاپانی کو مل رہا ہے . یدھ سے سمبندھ رکھنے والے دھندوں اور کارخانوں کو چھوڑ کر باقی سب دھندے اور کارخانے بہت بری حالت میں ہیں . چھوٹی چھوٹی اور درمیانی درجے کی چھ ہزار سات سو سے اوپر فرموں کا دیوالہ نکل چکا ہے' انہیں اپنا کاربار بالکل بند کرنا پڑا ہے ,

28 جولائی سن 1952 کو واشنگٹن (امریکہ) میں ایک کانفرنس' ہوئی تھی' جس میں امریکہ' انگلینڈ' فرانس' کناڈا اور جاپان شامل تھے . اس کانفرنس میں یہ طے پایا کہ جاپان کے کارخانے والے اور ویاپاری نئے چین کےساتھ تجارت نہ کرنے پائیں' اور جاپان کو اپنے یہاں کا جو کچھ مال باہر بھیجنا ہو وہ دکھن پورب کے ایشیائی دیشوں کو بھیجے . دوسری ایک ایسی ہی کانفرنس 4 اگست سن 1952 سے 6 اگست تک ہونو لولو میں ہوئی جس میں امریکہ' آسٹریلیا' نیوزی لینڈ اور جاپان شامل تھے . اِس میں طے پایا کہ اُتر میں بیرنگ کی کھاڑی سے لے کر جو ایشیا کو امریکی مہادیپ سے الگ کرتی ہے' ایلوشینس' جاپان' فارموسا' فی لی پائن' آسٹریلیا اور دھور دکھن میں نیوزیلینڈ تک ایک لگاتار فوجی دیوار کھڑی کر دی جائے' جس کی سب سے آگے بڑھی ہوئی چھاونیاں کوریا میں ہوں .

حال میں ایک امریکی نیتگیہ اسٹیسن نے صاف کہا تھا—'' دنیا میں امن قائم رکھنے کا سب سے آسان طریقہ یہی ہے کہ ایشیا کے لوگ ایشیا والوں کو کاٹنے پر لگا دیئے جائیں ."

ایک طرف یہ حالت ہے اور دوسری طرف 4 اگست سن 1952 کو جاپان کے پردھان منتری یوشیدا نے بڑے گرو کے

हमारी राय

ہماری رائے

ज़ापन और अमरीका

एक साल से ऊपर हुआ सैन फ़्रानसिसको में अमरीका और जापान के बीच एक मशहूर "सुलहनामा" लिखा गया था, जिसका मतलब था जापान पर अमरीकी फ़ौजी पन्जे को कसना और दूसरे देशों पर हमला करने के लिये जापान को अमरीकी फ़ौज की एक विशाल और पक्की छावनी बना लेना. उसके बाद जापान और अमरीका के बीच इसी तरह का एक और "सुरक्षा पट्टा" लिखा गया. 28 फ़रवरी सन 1952 को जापानी सरकार और अमरीकी सरकार के बीच एक तीसरा "इन्तज़ामी समझौता" हुआ. इन सुलहनामों, पट्टों और समझौतों में तय हुआ कि अमरीका जापान के अन्दर हमेशा के लिये अपनी फ़ौजें रख सकता है और जगह जगह छावनियां और फ़ौजी अड्डे बना सकता है. यह भी शर्त कर ली गई कि जापान में रहने वाले अमरीकी और उनके जापानी एजेन्ट और मुलाज़िम जापान के किसी क़ानून के मातहत न होंगे और न जापान की किसी अदालत में उन पर कोई मुक़दमा चल सकेगा.

28 अप्रैल को जापानी सरकार और फ़ारमोसा की सरकार के बीच "दोस्ती का एक सुलहनामा" लिखा गया, जिसमें फ़ारमोसा की चांग काई शेक वाली सरकार को "चीनी जनतंत्र" (रिपबलिक आफ़ चाइना) का नाम दिया गया और उसे सारे चीन की असली सरकार मान लिया गया.

26 जुलाई सन 1952 को अमरीकी सरकार और जापानी सरकार के बीच, जिसके प्रधान मंत्री योशीदा अमरीकी फ़ौजी अफ़सरों के हाथों में हैं, एक और अहद नामा हुआ जिसमें तय किया गया कि जापान के अन्दर अमरीकी फ़ौज की 603 बड़ी बड़ी छावनिया रहेंगी जिनमें से एक एक में बहुत सी बारकें, और हवाई, ज़मीनी और समन्दरी फ़ौजों की लम्बी लम्बी आबादियां और परेड और नक़ली लड़ाइयों के बड़े बड़े मैदान होंगे. इन 603 छावनियों में से लिखा है कि 303 पर अमरीकी फ़ौज का आरज़ी क़ब्ज़ा है, और बाक़ी 300 पर हमेशा के लिये अमरीकी फ़ौज और अमरीकी शहरी आबाद रहेंगे.

جاپان اور امریکہ

ایک سال سے اوپر ہوا سین فرانسسکو میں امریکہ اور جاپان کے بیچ ایک مشہور صلح نامہ لکھا گیا تھا، جسکا مطلب تھا جاپان پر امریکی فوجی پنجے کو کسنا اور دوسرے دیشوں پر حملہ کرنے کے لئے جاپان کو امریکی فوج کی ایک وشال اور پکی چھاونی بنا لینا۔ اسکے بعد جاپان اور امریکہ کے بیچ اسی طرح کا ایک اور "سرکھشا پٹہ" لکھا گیا۔ 28 فروری سن 1952 کو جاپانی سرکار اور امریکی سرکار کے بیچ ایک تسرا "انتظامی سمجھوتہ" ہوا۔ ان صلح ناموں، پٹوں اور سمجھوتوں میں طے ہوا کہ امریکہ جاپان کے اندر ہمیشہ کے لئے اپنی فوجیں رکھ سکتا ہے اور جگہ جگہ چھاونیاں اور فوجی اڈے بنا سکتا ہے۔ یہ بھی شرط کر لی گئی کہ جاپان میں رہنے والے امریکی اور ان کے جاپانی ایجنٹ اور ملازم جاپان کے کسی قانون کے ماتحت نہ ہونگے اور نہ جاپان کی کسی عدالت میں ان پر کوئی مقدمہ چل سکے گا۔

28 اپریل کو جاپانی سرکار اور فارموسا کی سرکار کے بیچ "دوستی کا ایک صلح نامہ" لکھا گیا، جس میں فارموسا کی چیانگ کائی شیک والی سرکار کو "چینی جن تنتر" (ریپبلک آف چائنا) کا نام دیا گیا اور اسے سارے چین کی اصلی سرکار مان لیا گیا۔

26 جولائی سن 1952 کو امریکی سرکار اور جاپانی سرکار کے بیچ، جس کے پردھان منتری یوشیدہ امریکی فوجی افسروں کے ہاتھوں میں ہیں، ایک اور عہد نامہ ہوا جس میں طے کیا گیا کہ جاپان کے اندر امریکی فوج کی 603 بڑی بڑی چھاونیاں رہیں گی جن میں سے ایک ایک میں بہت سی بارکیں، اور ہوائی، زمینی اور سمندری فوجوں کی لمبی لمبی آبادیاں اور پریڈ اور نقلی لڑائیوں کے بڑے بڑے میدان ہوں گے۔ ان 603 چھاونیوں میں سے لکھا ہے کہ 303 پر امریکی فوج کا عارضی قبضہ ہے، اور باقی 300 پر ہمیشہ کے لئے امریکی فوج اور امریکی شہری آباد رہیں گے۔

"कन्हैया" होता तो शायद किताब नाम "चुभन" या "दरीचा" या "झांकियां" या "फुरन, स्फुरन" कुछ ऐसा होता. लाल जी, मिश्र जी या प्रभाकर जी की लेखनी कितनी असरदार होती है इसके कहने की ज़रूरत नहीं. मेरे देखने में हिन्दी में ऐसी एक ही पुस्तक और है और वह है सुदर्शन जी की "झरोखे" पुस्तक. जिन्हें खलील जिब्रान पढ़ने में आनन्द आता है वह इस किताब को ज़रूर मंगा कर पढ़ें. यह किताब मेरे पास दो महीने से है. मैं अभी इसको एक तिहाई भी खतम नहीं कर पाया. कोई यह न समझे कि यह रुचिकर नहीं है. बेहद रुचिकर है. अपनी रुचि को मारना पड़ता है क्योंकि इसकी एक एक चीज़ पढ़ कर मन विचार रस में डूब जाता है और बहुत देर बाद दूसरी चीज़ पढ़ने को तैयार होता है.

यह दो पुस्तकें निकाल कर ज्ञान पीठ ने हिन्दी और हिन्दी के पाठकों का बड़ा उपकार किया है.

—भगवानदीन

ममता—

लेखक—ओंकार शरद; निकालने वाले—मनोरम प्रकाशन संस्थान, इलाहाबाद; लिखावट हिन्दी; सफ़े 120; दाम दो रुपये.

इस किताब में नौ कहानियां हैं. सब खासी हैं. पहिली कहानी "ममता" सचमुच पहले नम्बर के ही लायक़ है. भाषा बहती हुई है, किसी को कहीं नहीं अटकना पड़ेगा. लेखक ने जिस धरती को अपनाया है वह भी बहुत साफ़ छांटी है. इसलिये छोटे बड़े, लड़के, लड़की सब के हाथ बेखटके सौंपी जा सकती है.

खां साहब—

लेखक—ओंकार शरद; निकालने वाले—मनोरम प्रकाशन संस्थान, इलाहाबाद; लिखावट हिन्दी; सफ़े 134; दाम ढाई रुपया.

इसमें नौ रेखाचित्र हैं. सबके सब अच्छे हैं. भाषा में सुथराव है, और खासी मंजी हुई है. जिस रेखाचित्र को पढ़िये, उसमें कुछ न कुछ नवीनता ज़रूर पाइयेगा. कहानी की किताब से इस किताब में जियादा मर्म मिला. और आनन्द भी जियादा आया.

—भगवानदीन

"کنہیا" ہوتا تو شاید کتاب کا نام "چبھن" یا "دریچہ" یا "جھانکیاں" یا "پھرن اسپھرن" کچھ ایسا ہوتا. لال جی، مشرجی یا پربھاکر جی کی لیکھنی کتنی اثردار ہوتی ہے اس کے کہنے کی ضرورت نہیں. میرے دیکھنے میں ہندی میں ایسی ایک ہی پستک اور ہے اور وہ ہے سدرشن جی کی "جھروکھے" پستک. جنہیں خلیل جبران پڑھنے میں آنند آتا ہے وہ اس کتاب کو ضرور منگا کر پڑھیں. یہ کتاب میرے پاس دو مہینے سے ہے. میں ابھی اس کو ایک تہائی بھی ختم نہیں کرپایا. کوئی یہ نہ سمجھے کہ یہ رچی کر نہیں ہے. بےحد رچی کر ہے. اپنی رچی کو مارنا پڑتا ہے کیونکہ اس کی ایک ایک چیز پڑھکر من وچار رس میں ڈوب جاتا ہے اور بہت دیر بعد دوسری چیز پڑھنے کو تیار ہوتا ہے.

یہ دو پستکیں نکال کر گیان پیٹھ نے ہندی اور ہندی کے پاٹھکوں کا بڑا اپکار کیا ہے.

— بھگوان دین

ممتا

لیکھک—اونکار شرد، نکالنے والے منورم پرکاشن سنستھان، الہ آباد؛ لکھاوٹ ہندی، صفحہ 120؛ دام دو روپیہ.

اس کتاب میں نو کہانیاں ہیں—سب خاص ہیں. پہلی کہانی "ممتا" سچ مچ پہلے نمبر کے ہی لائق ہے. بھاشا بہتی ہوئی ہے. کسی کو کہیں نہیں اٹکنا پڑے گا. لیکھک نے جس دھرتی کو اپنایا ہے وہ بھی بہت صاف چھانٹی ہے. اس لئے چھوٹے بڑے، لڑکے لڑکی سب کے ہاتھ بے کھٹکے سونپی جا سکتی ہے.

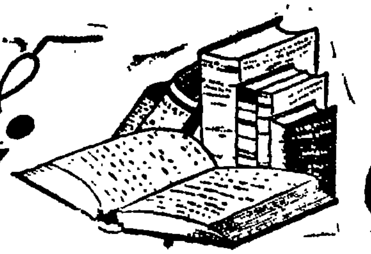
خاں صاحب

لیکھک—اونکار شرد: نکالنے والے—منورم پرکاشن سنستھان؛ الہ آباد؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحہ 134؛ دام ڈھائی روپیہ.

اس میں نو ریکھا چتر ہیں. سب کے سب اچھے ہیں. بھاشا میں ستھراؤ ہے، اور خاصی منجھی ہوئی ہے. جس ریکھا چتر کو پڑھئے، اس میں کچھ نہ کچھ نوینتا ضرور پایئے گا. کہانی کی کتاب سے اس کتاب میں زیادہ مرم ملا. اور آنند بھی زیادہ آیا.

—بھگوان دین

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

इस संस्था की उमर तो ज़ियादा नहीं पर थोड़ी सी उमर में ही इसने बहुत काम कर डाला है और कई अच्छे अच्छे ग्रन्थ निकाल दिये. यह दूसरी बात है कि किसी किसी किताब के बारे में यह पीठ ज्ञान पीठ न रह कर कोरी दर्शन पीठ रह जाती है. पर इस से क्या ? चांद पर भी तो धब्बा होता है. अब की बार दो किताबें हमारे पास समालोचना के लिये आई हैं. दोनों ही खूब अच्छी हैं. गेट अप के लिहाज़ से तो कहने की कोई बात ही नहीं. वह तो इस संस्था की किताबों का काफ़ी अच्छा रहता ही है. सफ़ाई छपाई भी खासी अच्छी है. दाम भी ठीक हैं. कुछ कम हो सकते तो और अच्छा था.

एक किताब है :—

संस्मरण—यह श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के संस्मरन हैं. इनकी लेखनी कितनी पैनी और असरदार होती है यह क़रीब क़रीब सब पढ़ने वालों को मालूम है. इसमें कुछ जीवन चरित्र हैं. भाशा खूब मंजी हुई है. शैली एक दम नई है. इस में दो एक चरित्र ऐसे ज़रूर हैं जो चतुर्वेदी जी की हथनी स्मृति की सूंड़ ने न जाने कैसे उठा लिये क्योंकि रेत में बिखरे चीनी के कन चींटी तो उठा सकती है, हथनी नहीं. पर यही खूबी तो चतुर्वेदी जी में है कि वह ऐसे ऐसे कन भी जनता के सामने ला रखते हैं और इस खूबी से रख देते हैं कि वह चमकते हुए तारे से मालूम होने लगते हैं.

जीवन चरित्र के पढ़ने में जो उपन्यास और कविता का रस लेना चाहें वह इस पुस्तक को ज़रूर खरीदें. एक साथ तीन तीन मज़े बहुत कम किताबों में मिलते हैं.

ढाई सौ पेज की किताब के दाम हैं तीन रुपए.

दूसरी किताब है :—

धरती के फूल आकाश के तारे—इसके लेखक हैं श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'. लेखक के नाम जितना लम्बा ही किताब का नाम है. अगर लेखक का नाम

بھارتیہ گیان پیٹھ' کاشی

اس سنستھا کی عمر تو زیادہ نہیں پر تھوڑی سی عمر میں ہی اس نے بہت کام کر ڈالا ہے اور کئی اچھے اچھے گرنتھ نکال دئے. یہ دوسری بات ہے کہ کسی کسی کتاب کے بارے میں یہ پیٹھ گیان پیٹھ نہ رہ کر کوری درشن پیٹھ رہ جاتی ہے. پر اس سے کیا؟ چاند پر بھی تو دھبہ ہوتا ہے. اب کی بار دو کتابیں ہمارے پاس سمالوچنا کے لئے آئی ہیں. دونوں ہی خوب اچھی ہیں. گیٹ اپ کے لحاظ سے تو کہنے کی کوئی بات ہی نہیں. وہ تو اس سنستھا کی کتابوں کا کافی اچھا رہتا ہی ہے. صفائی چھپائی بھی خاصی اچھی ہے. دام بھی ٹھیک ہیں. کچھ کم ہوسکتے تو اور اچھا تھا.

ایک کتاب ہے :—

سنسمرن—یہ شری بنارسی داس چترویدی کے سنسمرن ہیں. ان کی لیکھنی کتنی پینی اور اثردار ہوتی ہے یہ قریب قریب سب پڑھنے والوں کو معلوم ہے. اس میں کچھ جیون چرتر ہیں. بھاشا خوب منجھی ہوئی ہے. شیلی ایک دم نئی ہے. اس میں دو ایک چرتر ایسے ضرور ہیں جو چترویدی جی کی ہتھنی اسمرتی کی سونڈ نے نہ جانے کیسے اٹھا لئے. کیونکہ ریت میں بکھرے چینی کے کن چیونٹی تو اٹھا سکتی ہے' ہتھنی نہیں. پر یہی خوبی تو چترویدی جی میں ہے کہ وہ ایسے ایسے کن بھی جنتا کے سامنے لا رکھتے ہیں اور اس خوبی سے رکھ دیتے ہیں کہ وہ چمکتے ہوئے تارے سے معلوم ہونے لگتے ہیں.

جیون چرتر کے پڑھنے میں جو اپنیاس اور کویتا کا رس لینا چاہیں وہ اس پستک کو ضرور خریدیں. ایک ساتھ تین تین مزے بہت کم کتابوں میں ملتے ہیں.

ڈھائی سو پیج کی کتاب کے دام ہیں تین روپیہ.

دوسری کتاب ہے :—

دھرتی کے پھول آکاش کے تارے—اس کے لیکھک ہیں شری کنہیا لال مشر پربھاکر' لیکھک کا نام جتنا لمبا ہی کتاب کا نام ہے. اگر لیکھک کا نام

मेरी टांगे, मेरा मान
मेरे नीचे दो भगवान."

दोनों दामाद यह सुन कर हंस पड़े और बोले, बेशक
तुम हार गए, आप पहले जा सकते हैं.

अन्दर पहुँच कर खाने के मामले में फिर झगड़ा हो
गया. अफसर दामाद बोला—पहले मुझे खाना परोसना
चाहिये. किसान दामाद बोला—पहले मुझ को मिलना
चाहिये क्योंकि मैं पहले आया हूँ. दोनों को झगड़ते देख
फौजी दामाद बोला—फिर से छन्द बना कर क्यों नहीं
झगड़ा मिटा लेते? तीनों राजी हो गये. सब से बड़ा
बोलाः

"मैं अफसर मैं हूं बलवान
सब लोगों में मेरी शान
पैसे का है मुझ में घोर
लक्ष्मी खिंचती मेरी ओर."

फौजी दामाद बोलाः

"इधर तीर तो उधर कमान
बड़ी फौज का मैं भगवान
टेढ़ी आंखों देखूं काश
पड़ी मिले फिर उसकी लाश."

किसान दामाद थोड़े में बोलाः

"ले हल बैल न जोतूं खेत
भूख मरो सब, फांको रेत."

दोनों दामाद ठहाका मार कर हंस पड़े और बोले इस
बार भी तुम जीत गये.

तीनों को बारी-बारी से खाना परोसा गया. तीनों ने
अभी खाना शुरू भी नहीं किया था कि मकान में आग
लग गई और उनके ससुर साहिब पानी की बाल्टी लेकर
आग बुझाने दौड़े.

अफसर दामाद थाली पर बैठा-बैठा चिल्लायाः

"दौड़ो नौकर आग बुझाओ."

फौजी दामाद बोलाः

"चलो सिपाही पानी लाओ."

किसान दामाद बोलाः

"बे मतलब मत शोर मचाओ
ससुर लग रहे कुछ शरमाओ
उठा बाल्टी आग बुझाओ
मेरी नकल करो लो आओ."

दोनों में से कोई न उठा, किसान दामाद और ससुर ने
मिल कर आग बुझाई और सुनते हैं कि वह आदमी मरते
वक्त अपनी सारी दौलत छोटी बेटी के नाम कर गया जो
किसान को ब्याही थी.

مری ٹانگیں' میرا مان
میرے نیچے دو بھگوان ."

دونوں داماد یہ سنکر ھنس پڑے اور بولے' بیشک ہم
ہار گئے' آپ پہلے جا سکتے ھیں .

اندر پہنچکر کھانے کے معاملے میں پھر جھگڑا ہو پڑا.
افسر داماد بولا—پہلے مجھے کھانا پروسنا چاھئے . کسان
داماد بولا—پہلے مجھکو ملنا چاھئے کیونکہ میں پہلے
آیا ھوں . دونوں کو جھگڑتے دیکھ فوجی داماد بولا—پھر
سے چھند بنا کر کیوں نہیں جھگڑا مٹا لیتے ؟ تینوں
راضی ہوگئے . سب سے بڑا بولا :

" میں افسر میں ھوں بلوان
سب لوگوں میں میری شان
پیسے کا ہے مجھ میں زور
لکشمی کھنچتی میری اور ."

فوجی داماد بولا :

" اِدھر تیر تو اُدھر کمان
بڑی فوج کا میں بھگوان
ٹیڑھی آنکھوں دیکھوں کاش
پڑی ملے پھر اسکی لاش ."

کسان داماد تھوڑے میں بولا :

" لےھل بیل نہ جوتوں کھیت
بھوک مرو سب' پھانکو ریت ."

دونوں داماد ٹھاکا مار کر ھنس پڑے اور بولے اِس بار
بھی تم جیت گئے .

تینوں کو باری باری سے کھانا پروسا گیا . تینوں نے
ابھی کھانا شروع بھی نہیں کیا تھا کہ مکان میں آگ لگ
گئی اور اِن کے سسر صاحب پانی کی بالٹی لیکر آگ بجھانے
دوڑے .

افسر داماد تھالی پر بیٹھا بیٹھا چلایا :

" دوڑو نوکر آگ بجھاؤ ."

فوجی داماد بولا :

" چلو سپاھی پانی لاؤ !"

کسان داماد بولا :

" بے مطلب مت شور مچاؤ
سسر لگ رہے کچھ شرماؤ
اُٹھا بالٹی آگ بجھاؤ
میری نقل کرو لو آؤ ."

دونوں میں سے کوئی نہ اُٹھا . کسان داماد اور سسر نے
ملکر آگ بجھائی اور سنتے ھیں کہ وہ آدمی مرتے وقت
اپنی ساری دولت چھوٹی بیٹی کے نام کر گیا جو کسان
کو بیاھی تھی .

बच्चों की दुनिया

तीन दामाद

(एक चीनी कहानी)

बहुत दिनों की बात है एक आदमी था. उसकी तीन लड़कियां थीं. एक लड़की जो सबसे बड़ी थी उसकी शादी एक सरकारी अफ़सर के साथ हो गई. दूसरी का ब्याह एक फ़ौजी कर्नल के साथ हो गया. तीसरी ने एक किसान से शादी कर ली. तीनों अपने अपने घर में खूब सुखी थीं.

एक त्योहार के मौक़े पर तीनों दामाद ससुर के यहां पहुंचे. किसान दामाद पैदल चल कर पहुंचा और दूसरों से ज़रा जल्दी पहुंच गया. वह दरवाज़े में दाख़िल होने को ही था कि सबसे बड़ा अफ़सर दामाद पालकी में बैठा आ पहुंचा और किसान दामाद से बोला—ठहरो, ठहरो! मैं अफ़सर हूं, मैं तुम से बड़ा हूं. मकान के अन्दर दाख़िल होने का सबसे पहला मेरा हक़ है.

.इन दोनों में बहस चल ही रही थी कि फ़ौजी दामाद भी घोड़े पर सवार आ पहुंचा. और दोनों को लड़ते देख कर बोला—आपस में झगड़ते क्यों हो? अपने अपने अधिकार के बारे में अपनी दलीलों के साथ एक एक छन्द बना कर दिखाओ, जिसकी दलील बलवान होगी उसको सबसे पहले अन्दर जाने को मिलेगा. बनाए हुए छन्द में तीन बातों का ध्यान रखना पड़ेगा:—

(i) तुम्हारे सिर के ऊपर क्या है?
(ii) जो पद तुम्हें हासिल है उसे तुमने कैसे कमाया?
(iii) तुम किस पर सवार होकर आए?

तीनों दामाद इस बात पर राज़ी हो गए.

सबसे बड़ा दामाद जो अफ़सर था बोला:

"मिरी पालकी की छत गोल
मिरी पढ़ाई मेरा मोल
मुझे उठाते चार जवान
बीच में मैं, मैं हूं भगवान."

दूसरा बोला:

"लोह की टोपी मेरी गोल
बीच लड़ाई मेरा मोल
घुड़सवार, ये मेरा मान
इस पर बैठा मैं भगवान."

किसान दामाद बोला:

"मेरी घास की टोपी गोल
डटकर काम, मेरा है मोल

بچوں کی دنیا

تین داماد

(ایک چینی کہانی)

بہت دنوں کی بات ہے ایک آدمی تھا . اُسکی تین لڑکیاں تھیں. ایک لڑکی جو سب سے بڑی تھی اُسکی شادی ایک سرکاری افسر کے ساتھ ہوگئی . دوسری کا بیاہ ایک فوجی کرنیل کے ساتھ ہوگیا . تیسری نے ایک کسان سے شادی کر لی . تینوں اپنے اپنے گھر میں خوب سکھی تھیں.

ایک تیوہار کے موقعے پر تینوں داماد سسر کے یہاں پہنچے . کسان داماد پیدل چل کر پہنچا اور دوسروں سے ذرا جلدی پہنچ گیا . وہ دروازہ میں داخل ہونے کو ہی تھا کہ سب سے بڑا افسر داماد پالکی میں بیٹھا آ پہنچا اور کسان داماد سے بولا—ٹھہرو' ٹھہرو ! میں افسر ہوں' میں تم سے بڑا ہوں . مکان کے اندر داخل ہونے کا سب سے پہلا میرا حق ہے .

اِن دونوں میں بحث چل ہی رہی تھی کہ فوجی داماد بھی گھوڑے پر سوار آ پہنچا. اور دونوں کو لڑتے دیکھ کر بولا—آپس میں جھگڑتے کیوں ہو اپنے اپنے ادھیکار کے بارے میں اپنی دلیلوں کے ساتھ ایک ایک چھند بنا کر دکھاؤ' جسکی دلیل بلوان ہوگی اس کو سب سے پہلے اندر جانے کو ملے گا . بنائے ہوئے چھند میں تین باتوں کا دھیان رکھنا پڑے گا :—

(i) تمہارے سر کے اوپر کیا ہے ؟
(ii) جو پد تمہیں حاصل ہے اسے تم نے کیسے کمایا؟
(iii) تم کس پر سوار ہو کر آئے ؟

تینوں داماد اس بات پر راضی ہوگئے .

سب سے بڑا داماد جو افسر تھا بولا :

" میری پالکی کی چھت گول
میری پڑھائی میرا مول
مجھے اُٹھاتے چار جوان
بیچ میں میں' میں ہوں بھگوان ."

دوسرا بولا :

" لوہ کی ٹوپی میری گول
بیچ لڑائی میرا مول
گھڑ سوار' یہ میرا مان
اس پر بیٹھا میں بھگوان ."

کسان داماد بولا :

" میری گھاس کی ٹوپی گول
ڈٹ کر کام' میرا ہے مول

अमरीकी विशेषज्ञ दूसरी तरह के हैं. उनके आने जाने का सारा खर्च हम देते हैं, फ़रनीचर, एयरकन्डीशन बंगला, बंगले के सारे लवाज़मात का खर्च हमारी जेब से जाता है. सुना जाता है कि इन में से किसी किसी को 350 डालर रोज़ाना यानी तीस तीस और चालीस चालीस हज़ार रुपये महीने तनख़्वा मिलती है. फिर भी वह हमारे अधीन नहीं हैं, उन पर हमारा कोई कन्ट्रोल नहीं है. उन पर किसी भारती अदालत में मुक़दमा नहीं चल सकता, उन पर हमारा कोई क़ानून लागू नहीं हो सकता.

"रूस और अमरीका के विशेशज्ञों में फ़र्क़ यह है कि रूसी मज़दूर हैं और अमरीकी रईसज़ादे. हमारा भला मज़दूर और किसान की दोस्ती में है, अमरीका के पूंजी-पतियों की दोस्ती में नहीं. आज हमें यह समझ लेना चाहिये कि जापान और कोरिया की आज़ादी का सवाल सारी एशिया की आज़ादी का सवाल है. ख़ुद हमारी आज़ादी का सवाल है. चीन पर आघात एशिया के मान पर आघात है. हमें अपने को ज़िन्दा रखना है तो नए चीन का ज़िन्दा रहना ज़रूरी है. इसीलिये चीन की आवाज़ हम बुलन्द करते हैं और चीन की दोस्ती का दम भरते है."

इस समारोह में मशहूर जनवादी गायक अमर शेख़ भी मौजूद थे. उनके गाने ने एक समा बांध दिया. चीन की दोस्ती पर उनका गीत बहुत ही सुन्दर था और उन्होंने जो भाव उस में भर दिये थे उसने गीत की सुन्दरता और बढ़ा दी थी. गीत का मतलब था—ऐ चीन, हम कई बार मिल चुके हैं. वह मुलाक़ातें हमें याद हैं. तूने हमें काग़ज़ और बारूद दिया था. काग़ज़ पर हमने अपना महान इतिहास लिखा था और बारूद ने सुलग कर हमें अंगरेज़ों का गुलाम बनाया था. ऐ चीन, अब की हम फिर मिले हैं. तूने फिर हमें काग़ज़ और बारूद दिया है. काग़ज़ पर तेरा नया पैग़ाम लिखा है, जन राज का नक़्शा खिंचा है. तेरी बारूद एक नए क़िस्म की बारूद है. यह बारूद एकता की बारूद है. हम इस बारूद से साम्राज को भगा देंगे और एशिया को फिर आज़ाद करेंगे—गाना ख़त्म होने के बाद तक ऐसा असर रहा मालूम होता था जैसे सारा वातावरन कह रहा हो—साम्राज को भगा देंगे, एशिया को आज़ाद करेंगे.

—प्रवासी

امریکی وشیشگ دوسری طرح کے ھیں . اُن کے آنے جانے کا سارا خرچ ھم دیتےھیں' فرنیچر' ایر کنڈیشن بنگلہ' بنگلے کے سارے لوازمات کا خرچ ھماری جیب سے جاتا ھے . سنا جاتا ھے کہ اِن میں سے کسی کسی کو 350 ڈالر روزانہ یعنی تیس تیس اور چالیس چالیس ھزار روپیہ مہینے تنخواہ ملتی ھے . پھر بھی وہ ھمارے ادھین نہیں ھیں' اُن پر ھمارا کوئی کنٹرول نہیں ھے . اُن پر کسی بھارتی عدالت میں مقدمہ نہیں چل سکتا' اُن پر ھمارا کوئی قانون لاگو نہیں ھوسکتا .

"روس اور امریکہ کے وشیشگوں میں فرق یہ ھے کہ روسی مزدور ھیں اور امریکی رئیس زادے . ھمارا بھلا مزدور اور کسان کی دوستی میں ھے امریکہ کے پونجی پتیوں کی دوستی میں نہیں . آج ھمیں یہ سمجھ لینا چاھئے کہ جاپان اور کوریا کی آزادی کا سوال ساری ایشیا کی آزادی کا سوال ھے' خود ھماری آزادی کا سوال ھے . چین پر آگھات ایشیا کے مان پر آگھات ھے . ھمیں اپنے کو زندہ رکھنا ھے تو نئے چین کا زندہ رھنا ضروری ھے . اسی لئے چین کی آواز ھم بلند کرتے ھیں اور چین کی دوستی کا دم بھرتے ھیں ."

اس سماروہ میں مشہور جن وادی گایک امر شیخ بھی موجود تھے . اُن کے گانے نے ایک سماں باندھ دیا. چین کی دوستی پر اُن کا گیت بہت ھی سندر تھا اور انہوں نے جو بھاؤ اُسمیں بھر دیئے تھے اُس نے گیت کی سندرتا اور بڑھا دی تھی. گیت کا مطلب تھا—اے چین' ھم کئی بار مل چکے ھیں . وہ ملاقاتیں ھمیں یاد ھیں . تونے ھمیں کاغذ اور بارود دیا تھا . کاغذ پر ھم نے اپنا مہان اتہاس لکھا تھا اور بارود نے سلگ کر ھمیں انگریزوں کا غلام بنایا تھا . اے چین' اب کی ھم پھر ملے ھیں . تونے پھر ھمیں کاغذ اور بارود دیا ھے . کاغذ پر تیرا نیا پیغام لکھا ھے' جن راج کا نقشہ کھینچا ھے . تیری بارود ایک نئے قسم کی بارود ھے . یہ بارود ایکتا کی بارود ھے . ھم اِس بارود سے سامراج کو بھگا دیں گے اور ایشیا کو پھر آزاد کریں گے—گانا ختم ھونے کے بعد تک ایسا اثر رھا معلوم ھوتا تھا جیسے سارا واتاورن کہہ رھا ھو—سامراج کو بھگا دیں گے' ایشیا کو آزاد کریں گے .

—پرواسی

सूबों की रिपोर्ट केन्द्री सरकार के पास पहुँचती है. सरकार में हर दल के लोग अपनी मेम्बरी के मुताबिक़ मौजूद हैं. यहां तक कि कोमन तांग पार्टी के प्रतिनिधि भी उसमें शामिल हैं! सरकारी मेम्बर इस बहस के नतीजों पर ग़ौर करते हैं और इस का निचोड़ निकालने की कोशिश करते हैं. यहां कोई बड़ा काम बहुमत से नहीं होता. जितनी बात पर सब एक राय हो जाते हैं वही बात आख़री मान ली जाती है. दुनिया की कोई सरकार ऐसा नहीं करती. कोई किसान यूनियन अगर यह ठहराव पास कर दे कि उसके इलाक़े का फ़लां सरकारी अफ़सर ख़राब है तो वह अफ़सर बिना किसी मेल मुहब्बत के फ़ौरन वहां से हटा दिया जाता है. हमारे यहां किस जगह और किस महकमे में जनता की आवाज़ की इतनी सुनवाई हो सकती है? पंडित गोविन्द बल्लभ पंत मेरे दोस्त हैं, मुझ से एक साल छोटे भी हैं. उनसे इलाहाबाद के एक मशहूर वकील ने पूछा कि चीन ने जो दो साल में कर दिखाया है वह हिन्दुस्तान में क्यों नहीं हुआ. उन्होंने जवाब दिया कि अगर वही तानाशाही की ताक़तें हम को मिल जाएँ तो हम भी वही सब कर सकते हैं. मैं आप से अपील करूंगा कि आप भारत का विधान और चीन का विधान ज़रूर पढ़ें. आप को पता चल जाएगा कि भारत के राजपति को जो ताक़तें मिली हुई हैं उनसे बहुत कम ताक़तें चीन के राजपति को दी गई हैं. चीन में जनवाद न होने की बात वह देश करते हैं जहां शान्ति कान्फ्रेंस तक नहीं हो सकती, जहां शान्ति का झंडा ऊंचा करने पर जेल में ठूंस दिया जाता है, जहां आज भी निग्रो सफ़ेद चमड़ी के लोगों के होटल में नहीं जा सकते, जहां आज भी निग्रो को ज़िन्दा जला दिया जाता है, पत्थर बरसा कर मार डाला जाता है. हमें दुनिया की हालत को समझना चाहिये और उस झूटे प्रचार से अपने को बचाये रखना चाहिये.

"तीसरा एतराज़ यह है कि चीन रूस के चंगुल में फंसा हुआ है. मैंने तो चीन जा कर यह ख़बर पाई कि चीन की सरकार पर हमारे राजदूत पानिक्कर का रूसी राजदूत के मुक़ाबले में कहीं ज़ियादा असर था. रूस और चीन गहरे दोस्त हैं इसमें कोई शक नहीं है. वह दोस्ती एक दूसरे की लाज रखने, एक दूसरे की सहायता करने के लिये है, गहरे पानी में डिबोने के लिये नहीं है. रूस के सैकड़ों विशेशज्ञ या एक्सपर्ट चीन में हैं. लेकिन वह चीन वालों की तरह रहते हैं, उनकी मातहती में काम करते हैं, उनके बराबर ही तनख़ा लेते हैं. सरदार पानिक्कर ने हमें बताया कि एक दफ़ा वह वह एक हवाई जहाज़ के अड्डे पर एक रूसी विशेशज्ञ के साथ ठहर गये. उनका पाख़ाना उस विशेशज्ञ की बीवी ने ख़ुद अपने हाथ से साफ़ किया. रूसी लोग झोंपड़ियों में रहते हैं, ख़ुद अपना पाख़ाना साफ़ करते हैं. ऐसे विशेशज्ञ हमें भी मिलें तो हम उन्हें सर पर बिठायें. लेकिन हमारे

صوبوں کی رپورٹ کیندری سرکار کے پاس پہونچتی ہے ۔ سرکار میں ہر دل کے لوگ اپنی ممبری کے مطابق موجود ہیں ۔ یہاں تک کہ کومن تانگ پارٹی کے پرتی ندھی بھی اس میں شامل ہیں! سرکاری ممبر اس بحث کے نتیجوں پر غور کرتے ہیں اور اس کا نچوڑ نکالنے کی کوشش کرتے ہیں ۔ یہاں کوئی بڑا کام بہومت سے نہیں ہوتا ۔ جتنی بات پر سب ایک رائے ہوجاتے ہیں وہی بات آخری مان لی جاتی ہے ۔ دنیا کی کوئی سرکار ایسا نہیں کرتی ۔ کوئی کسان یونین اگر یہ ٹھہراؤ پاس کر دے کہ اس کے علاقے کا فلاں سرکاری افسر خراب ہے تو وہ افسر بنا کسی میل محبت کے فوراً وہاں سے ہٹا دیا جاتا ہے ۔ ہمارے یہاں کس جگہ اور کس محکمے میں جنتا کی آواز کی اتنی سنوائی ہو سکتی ہے؟ پنڈت گوبند بلبھ پنت میرے دوست ہیں، مجھ سے ایک سال چھوٹے بھی ہیں ۔ ان سے الہ آباد کے ایک مشہور وکیل نے پوچھا کہ چین نے جو دو سال میں کر دکھایا ہے وہ ہندستان میں کیوں نہیں ہوا ۔ انہوں نے جواب دیا کہ اگر وہی تانا شاہی کی طاقتیں ہم کو مل جائیں تو ہم بھی وہی سب کر سکتے ہیں ۔ میں آپ سے اپیل کروں گا کہ آپ بھارت کا ودھان اور چین کا ودھان ضرور پڑھیں ۔ آپ کو پتہ چل جائے گا کہ بھارت کے راج پتی کو جو جو طاقتیں ملی ہوئی ہیں ان سے بہت کم طاقتیں چین کے راج پتی کو دی گئی ہیں ۔ چین میں جن واد نہ ہونے کی بات وہ دیش کرتے ہیں جہاں شانتی کانفرنس تک نہیں ہوسکتی، جہاں شانتی کا جھنڈا اونچا کرنے پر جیل میں ٹھونس دیا جاتا ہے، جہاں آج بھی نیگرو سفید چمڑی کے لوگوں کے ہوٹل میں نہیں جا سکتے، جہاں آج بھی نگرو کو زندہ جلا دیا جاتا ہے، پتھر برسا کر مار ڈالا جاتا ہے ۔ ہمیں دنیا کی حالت کو سمجھنا چاہئے اور اس جھوٹے پرچار سے اپنے کو بچائے رکھنا چاہئے ۔

"تیسرا اعتراض یہ ہے کہ چین روس کے چنگل میں پھنسا ہوا ہے ۔ میں نے تو چین جاکر یہ خبر پائی ۔ چین کی سرکار پر ہمارے راج دوت پانیکر کا روسی راج دوت کے مقابلے میں کہیں زیادہ اثر تھا ۔ روس اور چین گہرے دوست ہیں اس میں کوئی شک نہیں ہے ۔ وہ دوستی ایک دوسرے کی لاج رکھنے، ایک دوسرے کی سہائتا کرنے کے لئے ہے، گہرے پانی میں ڈبونے کے لئے نہیں ہے ۔ روس کے سیکڑوں وشیشگ یا ایکسپرٹ چین میں ہیں ۔ لیکن وہ چین والوں کی طرح رہتے ہیں، انکی ماتحتی میں کام کرتے ہیں، ان کے برابر ہی تنخواہ لیتے ہیں ۔ سردار پانیکر نے ہمیں بتایا کہ ایک دفعہ وہ ایک ہوائی جہاز کے اڈے پر ایک روسی وشیشگ کے ساتھ ٹھہر گئے ۔ ان کا پاخانہ اس وشیشگ کی بیوی نے خود اپنے ہاتھ سے صاف کیا ۔ روسی لوگ جھونپڑیوں میں رہتے ہیں، خود اپنا پاخانہ صاف کرتے ہیں ۔ ایسے وشیشگ ہمیں بھی ملیں تو ہم انہیں سر پر بٹھائیں ۔ لیکن ہمارے

{कार अहिंसा में विश्वास नहीं करती. अपनी ही सरकार | ले लीजिये. क्या हम कशमीर में फूल बरसाने गये थे, ा हम ने हैदराबाद में बताशे बांटे थे ? अहिंसा की दुहाई र हिंसा करना और भी बुरा है. माओ की फ़ौज ने ग काई शेक की जिस फ़ौज से हथियार रखाये उसकी दाद लगभग सत्तर लाख थीं. इन सत्तर लाख फ़ौजी ानों को बिल्कुल माफ़ कर दिया गया. उनको पूरे अधिकार दिये गये और वह अपने अपने गांव में जा कर नई {कार के दिल से प्रशंसक हो कर खेतों की पैदावार बढ़ाने ो. कुछ से हथियार ज़रूर रखा लिये गये थे और उनसे ा गया था कि अगर दो साल तक वह ठीक से रहेंगे तो के हथियार वापिस कर दिये जायेंगे. आज सब के हथियार पिस हो चुके हैं. सत्तर लाख में सिर्फ़ चार हज़ार लोगों पर ़दमे चले थे. यह लोग वह थे जो अकेले ख़ुद ही नहीं बल्कि जिन्होंने जत्थे बनाये और साज़िशें की थीं. इन भी कहा गया कि यह माफ़ी मांग लें. एक हज़ार ने माफ़ी ग ली लेकिन बाक़ी तीन हज़ार किसी सूरत से इस बात राज़ी न हुए. उन्हें मौत की सज़ा दी गई. इतनी बड़ी ाई में, इतने बड़े इन्क़िलाब में तीन हज़ार आदमियों को त की सज़ा काई बड़ी बात नहीं है. ज़रा हमें अपनी फ़ भी देखना चाहिये. हमने आज़ादी लेने में पांच लाख ादमियों की हत्या की है, कम से कम एक करोड़ को बे घर का कर दिया मुझे ताज्जुब होता है कि अमरीका ऐसा हमें आज गांधीवाद और अहिंसा का पाठ पढ़ाने की म्मत करता है. अमरीका वह देश है जिसने कोरिया को ़स नहस कर रखा है, जिसने जापान पर एटम बम फेंके अभी अभी होनोलूलू में अमरीका की देख रेख अमरीका, इन्गलैंड, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, कनाडा, जापान र न्यूज़ीलैंड की एक बैठक हुई थी. इसमें तय हुआ है कि र में बैरंग की खाड़ी से लेकर दक्खिन में न्यूज़ीलैंड तक ज की एक दीवार खड़ी की जाए. इस फ़ौज की सब से गे की छावनियां कोरिया में होंगी. आज अमरीका ने पान में 603 फ़ौजी अड्डे बना रखे हैं.

"दूसरा एतराज़ यह है कि चीन जन वादी नहीं है. मैं पूरी म्मेदारी के साथ कहता हूँ कि अगर कहीं भी जनता की । सब से ज़ियादा ली जाती है तो वह चीन में. वहां कोई म क़ानून बिना जनता की राय लिये पास नहीं होता. ले क़ानून की कापियां हर हर यूनियन को भेज दी जाती बारह बरस से ऊपर का हर चीनी किसी न किसी नियन का मेम्बर ज़रूर होता है. यूनियन की सभाओं में क़ानून पर ख़ूब बहस होती है और उसके बाद पूरी स का नतीजा ज़िले की सरकार को भेज दिया जाता ज़िले भर के यूनियन की बहसों के नतीजों को इकट्ठा के सूबाई सरकार के पास भेजा जाता है. फिर तमाम

سرکار اهنسا میں وشواس نہیں کرتی ۔ اپنی هی سرکار کو لے لیجئے ۔ کیا هم کشمیر میں پھول برسانے گئے تھے' کیا هم نے حیدرآباد میں بتاشے بانٹے تھے؟ اهنسا کی دهائی دے کر هنسا کرنا اور بھی برا هے ۔ ماؤ کی فوج نے چانگ کائی شیک کی جس فوج سے هتھیار رکھائے اسکی تعداد لگ بھگ ستر لاکھ تھی ۔ اِن ستر لاکھ فوجی جوانوں کو بالکل معاف کر دیا گیا ۔ اُن کو پورے ادھیکار دے دیئے گئے اور وہ اپنے گاؤں میں جا کر نئی سرکار کے دل سے پرشنسک هو کر کھیتوں کی پیداوار بڑھانے لگے ۔ کچھ سے هتھیار ضرور رکھا لئے گئے تھے اور اُن سے کہا گیا تھا کہ اگر دو سال تک وہ ٹھیک سے رهیں گے تو اُن کے هتھیار واپس کر دیئے جائیں گے ۔ آج سب کے هتھیار واپس هو چکے هیں ۔ ستر لاکھ میں سے صرف چار هزار لوگوں پر مقدمے چلے تھے ۔ یہ لوگ وہ تھے جو اکیلے خود هی نہیں لڑے بلکہ جنھوں نے جتھے بنائے تھے اور سازشیں کی تھیں ۔ اِن سے بھی کہا گیا کہ یہ معافی مانگ لیں ۔ ایک هزار نے معافی مانگ لی لیکن باقی تین هزار کسی صورت سے اِس بات پر راضی نہ هوئے ۔ اُنھیں موت کی سزا دی گئی ۔ اتنی بڑی لڑائی میں' اتنے بڑے انقلاب میں تین هزار آدمیوں کو موت کی سزا کوئی بڑی بات نہیں هے ۔ ذرا همیں اپنی طرف بھی دیکھنا چاهئے ۔ هم نے آزادی لینے میں پانچ لاکھ آدمیوں کی هتیا کی هے' کم سے کم ایک کروڑ کو بے گھر بار کا کر دیا ۔ مجھے تعجب هوتا هے کہ امریکہ ایسا دیش همیں آج گاندھی واد اور اهنسا کا پاٹھ پڑھانے کی همت کرتا هے ۔ امریکہ وہ دیش هے جس نے کوریا کو تہس نہس کر رکھا هے' جس نے جاپان پر ایٹم بم پھینکے هیں ۔ ابھی ابھی هو نولولو میں امریکہ کی دیکھ ریکھ میں امریکہ' انگلینڈ' آسٹریلیا' فرانس' کناڈا' جاپان اور نیوزیلینڈ کی ایک بیٹھک هوئی تھی ۔ اِس میں طے هوا هے کہ اُتر میں بیرنگ کی کھاڑی سے لے کر دکھن میں نیوزی لینڈ تک فوج کی ایک دیوار کھڑی کی جائے ۔ اِس فوج کی سب سے آگے کی چھاؤنیاں کوریا میں هونگی ۔ آج امریکہ نے جاپان میں 603 فوجی اڈے بنا رکھے هیں ۔

دوسرا اعتراض یہ هے کہ چین جن وادی نہیں هے ۔ میں پوری ذمے داری کے ساتھ کہتا هوں کہ اگر کہیں بھی جنتا کی رائے سب سے زیادہ لی جاتی هے تو وہ چین میں ۔ وهاں کوئی اهم قانون بنا جنتا کی رائے لئے پاس نہیں هوتا ۔ پہلے قانون کی کاپیاں هر هر یونین کو بھیج دی جاتی هیں ۔ بارہ برس سے اوپر کا هر چینی کسی نہ کسی یونین کا ممبر ضرور هوتا هے ۔ یونین کی سبھاؤں میں اِسی قانون پر خوب بحث هوتی هے اور اُس کے بعد پوری بحث کا نتیجہ ضلع کی سرکار کو بھیج دیا جاتا هے ۔ ضلع بھر کی یونین کے بحثوں کے نتیجوں کو اکٹھا کر کے صوبائی سرکار کے پاس بھیجا جاتا هے ۔ پھر تمام

मज़दूर को इस पर गर्व है. वह जोश से कहता है—जो काम मैं दो दिन में करता था उसे मैंने चार घंटे में ख़त्म किया है. मुझे, मेरे बच्चों को, मेरे घर को, मेरे देश को शान्ति की ज़रूरत है. मैंने शान्ति की राह पर यह कोशिश की है. मेरी आने वाली नसल इस बात पर फ़ख़्र करेगी कि मैंने शान्ति क़ायम करने में, दुनिया को तबाही से बचाने में हिस्सा लिया था—आप ही इन्साफ़ कीजिये क्या गोले बन्दूक़ पर टिके राज में यह सब कुछ हो सकता है ?"

हम सब कुछ बना सकते हैं—दशहरा और मुहर्रम अब की साथ साथ हुए. कहीं कहीं से गड़ बड़ की ख़बरें भी आई हैं. लेकिन ज़ियादातर हिन्दू और मुसलमान एक साथ रहे. मुसलमानों ने काफ़ी तादाद में दशहरे में हिस्सा लिया. इलाहाबाद की ख़ास ख़ास चौकियां मुसलमानों की तरफ़ से थीं. दशहरा अब सिर्फ़ धार्मिक त्योहार नहीं रह गया. समाजी, राज काजी, माली सभी विषयों पर चौकियां निकली थीं. यह बहुत काम की बात है. दसहरे पर लोग अपने अपने मुहल्ले की कला, अपने बनाने की शक्ति का प्रदर्शन करते हैं. यह चौकियां सचमुच जनता की कला के नमूने होती हैं. इस दफ़ा रेल के इन्जन की एक चौकी निकली थी. यह पूरा इन्जन था. यह चौकी यह आशा बंधाती थी कि हम सब कुछ बना सकते हैं. ऐसे कारीगरों को और ऐसे कामों के लिये हमें पूरी तरह प्रोत्साहन देना चाहिये.

5 अक्तूबर—मुहर्रम की वजह से पहली अक्तूबर को नए चीन की तीसरी सालगिरह पर आम सभा नहीं हुई. पांच अक्तूबर को स्वरूप रानी पार्क में आम सभा हुई. काफ़ी लोग आये. कुछ के दिमाग़ों में शक थे, कुछ भ्रम में थे, कुछ रास्ता जान गए थे लेकिन चलने का ढंग सीखना चाहते थे. पंडित सुन्दरलाल ने अपने भाषण में कहा—"आज चीन को समझने की सब से ज़ियादा ज़रूरत है. अमरीका वाले प्रोपेगन्डे पर लाखों रुपया ख़र्च कर रहे हैं. मुझे ख़ुशी है कि जो बातें हमने चीन से लौट कर कही थीं आज वह घर घर पहुंच गई हैं. हमारी बातों पर तीन ही एतराज़ हुए हैं. एक यह कि और सब सच है लेकिन चीन में ख़ून-ख़राबा बहुत हुआ है. दूसरे यह कि वहां जनता की राय की कोई क़दर नहीं है. तीसरे यह कि चीन रूस के चंगुल में फंसा हुआ है. इन तीनों भ्रमों को मैं दूर करना चाहता हूँ.

"यह सच है कि चीन सरकार अहिंसा को हम गांधी-वादियों की तरह नहीं मानती. फिर भी मैं कह सकता हूँ कि दूसरी सरकारों के मुक़ाबले में वह काफ़ी हद तक अहिंसा को अपनाने की कोशिश करती है. दुनिया की कोई भी

مزدور کو اِس پر گرو ہے . وہ جوش سے کہتا ہے— جو کام میں دو دن میں کرتا تھا اُسے میں نے چار گھنٹے میں ختم کیا ہے . مجھے، میرے بچوں کو، میرے گھر کو، میرے دیش کو شانتی کی ضرورت ہے . میں نے شانتی کی راہ پر یہ کوشش کی ہے . میری آنے والی نسل اِس بات پر فخر کرے گی کہ میں نے شانتی قائم کرنے میں، دنیا کو تباہی سے بچانے میں حصہ لیا تھا—آپ ہی انصاف کیجئے کیا گولے بندوق پر ٹکے راج میں یہ سب کچھ ہوسکتا ہے."

ہم سب کچھ بنا سکتے ہیں—دسہرہ اور محرم اب کی ساتھ ساتھ ہوا . کہیں کہیں سے گڑبڑ کی خبریں بھی آئی ہیں . لیکن زیادہ‌تر ہندو اور مسلمان ایک ساتھ رہے . مسلمانوں نے کافی تعداد میں دسہرہ میں حصہ لیا . الہ‌آباد کی خاص خاص چوکیاں مسلمانوں کی طرف سے تھیں . دسہرہ اب صرف دھارمک تہوار نہیں رہ گیا . سماجی، راج کاجی، مالی سبھی وشیوں پر چوکیاں نکلی تھیں . یہ بہت کام کی بات ہے . دسہرے پر لوگ اپنے اپنے محلے کی کلا اپنے بنانے کی شکتی کا پردرشن کرتے ہیں . یہ چوکیاں سچ مچ جنتا کی کلا کے نمونے ہوتی ہیں . اِس دفعہ ریل کے انجن کی ایک چوکی نکلی تھی . یہ پورا انجن تھا . یہ چوکی یہ آشا بندھاتی تھی کہ ہم سب کچھ بنا سکتے ہیں . ایسے کاریگروں کو اور ایسے کاموں کے لئے ہمیں پوری طرح پروتساہن دینا چاہئے .

5 اکتوبر—محرم کی وجہ سے پہلی اکتوبر کو نئے چین کی تیسری سالگرہ پر عام سبھا نہیں ہوئی . 5 اکتوبر کو سروپ رانی پارک میں عام سبھا ہوئی . کافی لوگ آئے . کچھ کے دماغوں میں شک تھے، کچھ بھرم میں تھے، کچھ راستہ جان گئے تھے لیکن چلنے کا ڈھنگ سیکھنا چاہتے تھے . پنڈت سندر لال نے اپنے بھاشن میں کہا—" آج چین کو سمجھنے کی سب سے زیادہ ضرورت ہے . امریکہ والے پروپیگنڈے پر لاکھوں روپیہ خرچ کر رہے ہیں . مجھے خوشی ہے کہ جو باتیں ہم نے چین سے لوٹ کر کہی تھیں آج وہ گھر گھر پہونچ گئی ہیں . ہماری باتوں پر تین ہی اعتراض ہوئے ہیں . ایک یہ کہ اور سب سچ ہے لیکن چین میں خون خرابہ بہت ہوا ہے . دوسرے یہ کہ وہاں جنتا کی رائے کی کوئی قدر نہیں ہے . تیسرے یہ کہ چین روس کے چنگل میں پھنسا ہوا ہے . اِن تینوں بھرم کو میں دور کرنا چاہتا ہوں .

" یہ سچ ہے کہ چین سرکار اہنسا کو ہم گاندھی وادیوں کی طرح نہیں مانتی . پھر بھی میں کہہ سکتا ہوں کہ دوسری سرکاروں کے مقابلے میں وہ کافی حد تک اہنسا کو اپنانے کی کوشش کرتی ہے . دنیا کی کوئی بھی

. शान्ति के कुछ प्रेमी अमरीकी फ़ौजी अड्डों को लांगते हुए
ॆकिंग पहुँच ही गये. हिन्दुस्तान से साठ आदमियों का
क प्रतिनिधि मंडल गया है, उसके नेता डाक्टर किचलू हैं.

पहली अक्तूबर—पहली अक्तूबर
न 1949 को चीन में एक नया इतिहास लिखा गया
ा. उस तारीख को एशिया की तक़दीर का सितारा
मका था. पहली अक्तूबर हर एशियाई के दिल में
पर उठने और तरक़्क़ी करने की भावना पैदा करती है.
र एक को यक़ीन हो चला है कि जो काम चीन दो साल
कर चुका है वह हम भी कर सकते हैं. साम्राजशाही के
गुल से पूरी तरह निकलने पर एशिया फिर से महान
ो सकता है, एशिया फिर योरप को बहुत कुछ सिखा सकता
. पहली अक्तूबर ने यह उम्मीद दी है और इस उम्मीद
ी किरन ने एशियाई दिमाग़ में एक तूफ़ान पैदा कर दिया
. इस तूफ़ान को साम्राजी देख रहे हैं. तूफ़ान को रोकने
े लिये डालर की दीवारें खड़ी कर रहे हैं, फूट डालने के
लेये बेचैन हैं. हिन्दुस्तान में भी शहर शहर में पहली
अक्तूबर का दिन मनाया गया. हर विचार, हर पेशे के लोग
क जगह इकट्ठे हुए. उन्होंने चीनी इन्क़िलाब का
स्वागत किया. इलाहाबाद में भी स्वदेशी लीग के दफ़्तर में
क बैठक हुई. कांग्रेसी, किसान मज़दूर प्रजा पार्टी वाले,
्युनिस्ट और दूसरे दलों और स्वतंत्र विचारों के लोग
क साथ बैठे. सब ने चीन को बधाई दी और यह पक्का
ादा ज़ाहिर किया कि वह साम्राज के दामन से गांठ छुड़ा
र चीन की तरह आज़ाद होंगे और एशिया का दूसरा
बाज़ू बन कर एशिया की लाज की रक्षा करेंगे.

पंडित सुन्दरलाल ने इस सभा में बोलते हुए कहा—
"लोग कहते हैं कि चीन में डंडे के ज़ोर से हकूमत होती है.
. शायद ग़लत कहता हूँ. लेकिन श्रीमती विजय लक्ष्मी
ंडित तो ख़ामख़ां चीन का पक्ष न लेंगी. उनसे पूछ लीजिये.
मैं चीनियों के मुंह पर अपने देश और अपनी सरकार के
लेये प्रेम की छाप देख आया हूँ. मैं पूरी ज़िम्मेदारी के
ाथ कहता हूँ कि सन 1921 में हिन्दुस्तानी जनता के
देल में गांधीजी को जो इज़्ज़त थी आज चीनियों के दिल
में माओ की इज़्ज़त उससे दस गुना है. मैं तो उनके कारनामे
पढ़ कर दंग रह जाता हूँ. अभी अभी पीकिंग में शान्ति
कान्फ़रेन्स के लिये एक "शान्ति होटल" बनाया गया है.
समें दो सौ रहने के कमरे हैं, हाल है और बहुत से दूसरे
कमरे हैं. इस पूरे होटल की तैयारी में सिर्फ़ सत्रह हफ़्ते लगे
. अन्दाज़ा है कि दो साल से कम में यह इमारत नहीं
बन सकती थी. यह "शान्ति होटल" किसी क़र्ज़ से
नहीं बना, बाहर के एक्सपर्ट ने इसे नहीं बनाया.
चीनियों ने इसे ख़ुद बनाया है. हर बढ़ई, हर राज और हर

پر شانتی کے کچھ پریمی امریکی فوجی اڈوں کو لانگھتے
ہوئے پیکنگ پہونچ ہی گئے. ہندستان سے ساٹھ
آدمیوں کا ایک پرتی ندھی منڈل گیا ہے' اس کے نیتا
ڈاکٹر کچلو ہیں.

پہلی اکتوبر—پہلی اکتوبر سن 49' کو چین
میں ایک نیا اتہاس لکھا گیا تھا. اس تاریخ کو ایشیا کی
تقدیر کا ستارہ چمکا تھا. پہلی اکتوبر ہر ایشیائی کے دل
میں اوپر اٹھنے اور ترقی کرنے کی بھاونا پیدا کرتی ہے. ہر
ایک کو یقین ہو چلا ہے کہ جو کام چین دو سال میں کر
چکا ہے وہ ہم بھی کرسکتے ہیں. سامراج شاہی کے
چنگل سے پوری طرح نکلنے پر ایشیا پھر سے مہان
ہوسکتا ہے' ایشیا پھر یورپ کو بہت کچھ سکھا
سکتا ہے. پہلی اکتوبر نے یہ امید دی ہے اور اس امید کی
کرن نے ایشیائی دماغ میں ایک طوفان پیدا کر دیا ہے.
اس طوفان کو سامراجی دیکھ رہے ہیں. طوفان کو روکنے
کے لئے ڈالر کی دیواریں کھڑی کر رہے ہیں' پھوٹ ڈالنے کے
لئے بےچین ہیں. ہندستان میں بھی شہر شہر میں
پہلی اکتوبر کا دن منایا گیا. ہر وچار' ہر پیشے کے لوگ
ایک جگہ اکٹھا ہوئے. انہوں نے چینی انقلاب کا
سواگت کیا. الہ آباد میں بھی سودیشی لیگ کے دفتر
میں ایک بیٹھک ہوئی. کانگریسی' کسان مزدور پرجا پارٹی
والے' کمیونسٹ اور دوسرے دلوں اور سوتنتر وچاروں کے
لوگ ایک ساتھ بیٹھے. سب نے چین کو بدھائی دی اور یہ
پکا ارادہ ظاہر کیا کہ وہ سامراج کے دامن سے گانٹھ چھڑا کر
چین کی طرح آزاد ہوں گے اور ایشیا کا دوسرا بازو بن کر
ایشیا کی لاج کی رکشا کریں گے.

پنڈت سندرلال نے اس سبھا میں بولتے ہوئے کہا—
"لوگ کہتے ہیں کہ چین میں ڈنڈے کے زور سے حکومت
ہوتی ہے. میں شاید غلط کہتا ہوں لیکن شریمتی وجے
لکشمی پنڈت تو خواہ مخواہ چین کا پکش نہ لیں گی. ان
سے پوچھ لیجئے. میں چینیوں کے منہ پر اپنے دیش اور اپنی
سرکار کے لئے پریم کی چھاپ دیکھ آیا ہوں. میں پوری
ذمہ داری کے ساتھ کہتا ہوں کہ سن 1921 میں ہندستانی
جنتا کے دل میں گاندھی جی کی جو عزت تھی آج
چینیوں کے دل میں ماؤ کی عزت اس سے دس گنا ہے.
میں تو ان کے کارنامے پڑھ کر دنگ رہ جاتا ہوں. ابھی ابھی
پیکنگ میں شانتی کانفرنس کے لئے ایک "شانتی ہوٹل"
بنایا گیا ہے. اس میں دو سو رہنے کے کمرے ہیں' ہال
ہے اور بہت سے دوسرے کمرے ہیں. اس پورے ہوٹل کی تیاری
میں صرف سترہ ہفتے لگے ہیں. اندازہ ہے کہ دو سال سے
کم میں یہ عمارت نہیں بن سکتی تھی. یہ "شانتی ہوٹل"
کسی قرض سے نہیں بنا' باہر کے اکسپرٹ نے اسے نہیں بنایا.
چینیوں نے اسے خود بنایا ہے. ہر بڑھئی' ہر راج اور ہر

सफल, उनका करतब खतम. सर पी. सी. बनर्जी होस्टल के इसी तरह के एक क्लब में पंडित सुन्दरलाल बोल रहे थे. हाल, मेज कुर्सियां, जगाती के बैरे, पुरानी चाय और हालडा की मिठाई—रस्म रस्म है—सब मौजूद थे. चाय का धुंआ उठ रहा था—घूमता हुआ, बल खाता हुआ. लोगों के दिमाग़ भी पंडित जी की बातें सुनकर हिल गये थे, बल खा रहे थे, बिना लक्ष्य के हो रहे थे. पंडित जी ने कहा—"जनवादी भावना लोकशाही (डिमोक्रेसी) पर बहस करने से नहीं आती, उसे पहले दिमाग़ में और अमल में पैदा करना होता है. अगर आप लोग अपने मेहतर, अपने बैरे और अपने नौकरों के साथ बैठ कर खाना नहीं खा सकते तो आप लोकशाही के सच्चे पुजारी नहीं हो सकते." वहां लोग यह कड़ुवे सच सुनने नहीं आये थे, वह लोकशाही पर दूसरों के कथन पर बहस करने आए थे. उन पर एक सन्नाटा छा गया. पंडित जी ने आगे कहा—"आज हमें आंख उठा कर देखना चाहिये कि दुनिया हमारे बारे में क्या सोचती है. आप लोगों को खुद भी सोचना चाहिये कि आप क्या करना चाहते हैं. आपके तो आदर्श सिर्फ़ यह हैं—बड़ी नौकरी, ज़ियादा जहेज़ लाने वाली बीवी और बस—दो रास्तों में से एक रास्ता आपको चुनना है. अगर देश सेवा करना चाहते हैं तो चढ़ान का रास्ता इख़तियार कीजिये. ऐश को लात मारिये, दिमाग़ी वहमों को छुट्टी दीजिये. एक इन्सान दोस्त मनुश्य की तरह से गिरी जनता को ऊपर उठाने में लग जाइये. अगर देश से कोई सरोकार नहीं है, अपना पेट भरना ही सब कुछ है तब आपके लिये ढलान का रास्ता खुला है. देश जिस ख़तरे से गुज़र रहा है उसको देख कर मैं आपसे यही अपील कर सकता हूँ कि आप ढलान के रास्ते को छोड़कर चढ़ान के रास्ते पर क़दम उठाइये. बिना इसके आप देश की लाज नहीं बचा सकते, देश को अमरीकी ग़ुलामी के रास्ते पर जाने से नहीं रोक सकते. आप जहेज़ लेने से इन्कार कर दीजिये, ऐसी शादियां करने से इनकार दीजिये. बग़ावत कर दीजिये, हर इस तरह की अड़चन से बग़ावत कर दीजिये."

शान्ति कांगरेस— पंजाब के एक शहर जालन्धर में आल इन्डिया शान्ति कांगरेस 12–14 सितम्बर को हुई. हर हर सूबे, हर हर ज़िले के लोग इकट्ठे हुए. हर पेशे के लोगों ने उसमें भाग लिया. सबकी आवाज़ एक थी—शान्ति. शान्ति क़ायम करने का दुनिया ने यह बड़ा प्रयास किया है. शान्ति की आवाज़ जितनी दबाई जाती है उतनी ही ऊंची हो रही है.

चीन के शहर पीकिंग में एक शान्ति कान्फ़रेन्स 25 सितम्बर से शुरू हुई. एशिया के हर हर मुल्क से प्रतिनिधि आये. जापान के प्रतिनिधियों पर पाबन्दी लगा दी गई थी.

سپھل، ان کا کرتب ختم. سر پی. سی. بنرجی ہوسٹل کے اسی طرح کے ایک کلب میں پنڈت سندر لال بول رہے تھے. ہال، میز کرسیاں، جگاتی کے بیرے، پرانی چائے اور ڈالڈا کی مٹھائی — رسم رسم ہے — سب موجود تھے. چائے کا دھواں اٹھ رہا تھا — گھومتا ہوا، بل کھاتا ہوا. لوگوں کے دماغ بھی پنڈت جی کی باتیں سن کر ہل گئے تھے، بل کھا رہے تھے، بنا لکش کے ہو رہے تھے. پنڈت جی نے کہا — "جن وادی بھاونا لوک شاہی (ڈیموکریسی) پر بحث کرنے سے نہیں آتی، اسے پہلے دماغ میں اور عمل میں پیدا کرنا ہوتا ہے. اگر آپ لوگ اپنے مہتر، اپنے بیرے اور اپنے نوکروں کے ساتھ بیٹھ کر کھانا نہیں کھا سکتے تو آپ لوک شاہی کے سچے پجاری نہیں ہو سکتے." وہاں لوگ یہ کڑوے سچ سننے نہیں آئے تھے، وہ لوک شاہی پر دوسروں کے کتھن پر بحث کرنے آئے تھے. ان پر ایک سناٹا چھا گیا. پنڈت جی نے آگے کہا — "آج ہمیں آنکھ اٹھا کر دیکھنا چاہئے کہ دنیا ہمارے بارے میں کیا سوچتی ہے، آپ لوگوں کو خود بھی سوچنا چاہئے کہ آپ کیا کرنا چاہتے ہیں. آپ کے تو آدرش صرف یہ ہیں — بڑی نوکری، زیادہ جہیز لانے والی بیوی اور بس — دو راستوں میں سے ایک راستہ آپ کو چننا ہے. اگر دیش سیوا کرنا چاہتے ہیں تو چڑھان کا راستہ اختیار کیجئے. عیش کو لات ماریئے، دماغی وہموں کو چھٹی دیجئے. ایک انسان دوست منش کی طرح سے گری جنتا کو اوپر اٹھانے میں لگ جائیے. اگر دیش سے کوئی سروکار نہیں ہے، اپنا پیٹ بھرنا ہی سب کچھ ہے تب آپ کے لئے ڈھلان کا راستہ کھلا ہے. دیش جس خطرے سے گزر رہا ہے اس کو دیکھ کر میں آپ سے یہی اپیل کر سکتا ہوں کہ آپ ڈھلان کے راستے کو چھوڑ کر چڑھان کے راستے پر قدم اٹھائیے. بنا اس کے آپ دیش کی لاج نہیں بچا سکتے، دیش کو امریکی غلامی کے راستے پر جانے سے نہیں روک سکتے. آپ جہیز لینے سے انکار کر دیجئے، ایسی شادیاں کرنے سے انکار کر دیجئے. بغاوت کر دیجئے. ہر اس طرح کی اڑچن سے بغاوت کر دیجئے."

شانتی کانگریس— پنجاب کے ایک شہر جالندھر میں آل انڈیا شانتی کانگریس 12-14 ستمبر کو ہوئی. ہر ہر صوبے، ہر ہر ضلع کے لوگ اکٹھا ہوئے. ہر پیشے کے لوگوں نے اس میں بھاگ لیا. سب کی آواز ایک تھی. شانتی. شانتی قائم کرنے کا دنیا نے یہ بڑا پریاس کیا ہے. شانتی کی آواز جتنی دبائی جاتی ہے اتنی ہی اونچی ہو رہی ہے.

چین کے شہر پیکنگ میں ایک شانتی کانفرنس 25 ستمبر سے شروع ہوئی. ایشیا کے ہر ہر ملک سے پرتی ندھی آئے. جاپان کے پرتی ندھیوں پر پابندی لگا دی گئی تھی.

भी कोई भूक से नहीं मरा. फिर इसके ख़िलाफ़ कहने वाला सच्चा कैसे ठहराया जा सकता है. तरह तरह के दांव पेंच चले जा रहे हैं—सिर्फ़ एक सच को छिपाने के लिये. एक असलियत पर परदा डालने के लिये. ताक़त हाथ में है, अखबार उनके सहयोगियों के हैं. रेडियो उनका है, भाषन देना उनका पेशा है. जो भी भ्रम वह फैलाना चाहें फैला सकते हैं. लेकिन कब तक, कहां तक—अंधेरा पाक ज़ियादा दिनों नहीं रहता.

साम्प्रदायिक भावना—देश की हालत कुछ तेज़ी से बदल रही है. ऐसा लगता है साम्प्रदायिक भावना ख़त्म होती जा रही है. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पहले हिन्दू राष्ट्र क़ायम करना चाहता था. उस से हट कर वह लोग एक ऐसे राज पर डटे कि जिस में मुसलमानों को छोड़ कर सब रह सकते थे. जब एक दफ़ा पैर फिसल जाता है तो बहुत मुश्किल से रुकता है. पहले उनके सामने साफ़ आदर्श थे, साफ़ रास्ता था. अब सिर्फ़ भ्रम है और कुछ कुछ ज़िद. काफ़ी लोग संघ छोड़ रहे हैं. महात्मा भगवानदीन बनारस यूनिवर्सिटी के लड़कों के सामने बोल रहे थे. कुछ लड़कों ने सवाल किये. इस सवाल जवाब के बीच में यह पता चला कि वहां संघियों की काफ़ी तादाद रह चुकी है. पर वह सब अब संघ के मेम्बर नहीं थे, संघ का मज़ाक़ उड़ा रहे थे, उसकी धज्जियां उड़ा रहे थे, अपने साथियों को जो अभी तक मेम्बर थे उपदेश दे रहे थे. हौसले से भरे, दिल के सच्चे, भ्रम में डूबे, इन नौजवानों को मदद की ज़रूरत है. आज इस बात की आवश्यकता है कि इनको अपनाया जाये, इनका भ्रम दूर किया जाए और जिस ख़न्दक़ से निकलने की यह कोशिश कर रहे हैं उससे उन्हें निकाला जाए. महात्मा जी ने ठीक ही कहा था—"सब धर्म एक हैं. धर्म एक हो कर ही ज़िन्दा रह सकते हैं. सारे धर्मों के भेद भाव मिटा कर कम से कम एक बात पर ही एक हो जाना चाहिये. वह बात है विश्व शान्ति. शान्ति आज युग की पुकार है, आज इन्सानियत की मांग है. जो धर्म इस मांग में अपनी आवाज़ नहीं मिलाता वह अपने फ़र्ज़ का पालन नहीं करता, अपनी क़ब्र खोदता है, विनाश को दावत देता है."

यूनिवर्सिटी के क्लब—यूनिवर्सिटी में समाजी ज़िन्दगी का मतलब कुछ और ही है. जो जितना यारबाशी करता है, सिनेमा पर टीका टिप्पनी कर सकता है, कुछ चुटकुले सुना सकता है, हर विषय पर कुछ न कुछ राय दे सकता है, वह उतना ही सोशल है, उतना ही सभ्य है. इसी समाजी भावना और चेतना को उभारने के लिये हर होस्टल में क्लब खोले जाते हैं. इन क्लबों में जगाती की चाय की प्याली होती है और कुछ मुंह ज़ोर लोगों की टीका. बस विद्यार्थियों का जीवन

بھی کوئی بھوک سے نہیں مرا. پھر اِس کے خلاف کہنے والا سچا کیسے ٹھہرایا جاسکتا ہے. طرح طرح کے داؤں پیچ چلے جا رہے ھیں—صرف ایک سچ کو چھپانے کے لئے' ایک اصلیت پر پردہ ڈالنے کےلئے. طاقت ہاتھ میں ہے' اخبار اُن کے سہیوگیوں کے ھیں. ریڈیو اُن کا ہے' بھاشن دینا اُن کا پیشہ ہے. جو بھی بھرم وہ پھیلانا چاہیں پھیلا سکتے ھیں. لیکن کب تک' کہاں تک—اندھیراپاک زیادہ دنوں نہیں رھتا.

سامپردائک بھاؤنا—دیش کی حالت کچھ تیزی سے بدل رھی ہے. ایسا لگتا ہے سامپردائک بھاؤنا ختم ہوتی جا رھی ہے. راشٹری سویم سیوک سنگھ پہلے ھندو راشٹر قائم کرنا چاھتا تھا. اُس سے ھٹ کر وہ لوگ ایک ایسے راج پر ڈٹے کہ جس میں مسلمانوں کو چھوڑ کر سب رہ سکتے تھے. جب ایک دفعہ پیر پھسل جاتا ہے تو بہت مشکل سے رکتا ہے. پہلے اُن کے سامنے صاف آدرش تھے' صاف راستہ تھا. اب صرف بھرم ہے اور کچھ کچھ ضد. کافی لوگ سنگھ چھوڑ رہے ھیں. مہاتما بھگوان دین بنارس یونیورسٹی کے لڑکوں کے سامنے بول رہے تھے. کچھ لڑکوں نے سوال کئے. اِس سوال جواب کے بیچ میں پتہ چلا کہ وھاں سنگھیوں کی کافی تعداد رہ چکی ہے. پر وہ سب اب سنگھ کے ممبر نہیں تھے' سنگھ کا مذاق اُڑا رہے تھے' اُس کی دھجیاں اُڑا رہے تھے' اپنے ساتھیوں کو جو ابھی تک ممبر تھے اُپدیش دے رہے تھے. حوصلے سے بھرے' دل کے سچے' بھرم میں ڈوبے اِن نوجوانوں کو مدد کی ضرورت ہے. آج اِس بات کی آوشیکتا ہے کہ اِن کو اپنایا جائے' اِن کا بھرم دور کیا جائے اور جس خندق سے نکلنے کی یہ کوشش کر رہے ھیں اُس سے اُنہیں نکالا جائے. مہاتما جی نے ٹھیک ھی کہا تھا —"سب دھرم ایک ھیں. دھرم ایک ھوکر ھی زندہ رہ سکتے ھیں. سارے دھرموں کے بھید بھاؤ مٹاکر کم سے کم ایک بات پر ھی ایک ھوجانا چاھئے. وہ بات ہے وشوشانتی. شانتی آج یگ کی پکار ہے' آج انسانیت کی مانگ ہے. جو دھرم اِس مانگ میں اپنی آواز نہیں ملاتا' وہ اپنے فرض کا پالن نہیں کرتا' اپنی قبر کھودتا ہے' وناش کو دعوت دیتا ہے."

یونیورسٹی کے کلب—یونیورسٹی میں سماجی زندگی کا مطلب کچھ اور ھی ہے. جو جتنا یارباشی کرتا ہے' سنیما پر ٹیکا ٹپنی کرسکتا ہے' کچھ چٹکلے سنا سکتا ہے' ھر وشے پر کچھ نہ کچھ رائے دے سکتا ہے' وہ اُتنا ھی سوشل ہے' اُتنا ھی سبھیہ ہے. اسی سماجی بھاؤنا اور چیتنا کو اُبھارنے کے لئے ھر ھوسٹل میں کلب کھولے جاتے ھیں. اِن کلبوں میں جگاتی کی چائے کی پیالی ھوتی ہے اور کچھ منہ زور لوگوں کی ٹیکا. بس ودیارتھیوں کا جیون

प्रवासी की डायरी

तसवीर हाथ में लेते ही भूत का विचार दिमाग़ में गूंज उठा. मैंने कभी भूत नहीं देखा, भूत से मैं डरता भी नहीं हूं. फिर भी मैं सब तरफ़ से बे-ख़बर हो कर भूत की दुनिया में खो गया. इस भूत के न उल्टे पैर थे और न बड़े बड़े बाल थे. नाख़ून भी नहीं थे. यह अनोखा भूत था—पर भूत के आम विचार से बहुत ही भयानक, बहुत ही डरावना. मुझ जैसे आदमी को शायद भूत सामने आ कर भी नहीं डरा सकता—लेकिन—यह भूत, इसका भयानक रूप मेरे दिमाग़ में बस गया था. मैं इसे निकालना भी चाहूँ तो नहीं निकाल सकता. दिन हो या रात मैंने आंख बन्द की नहीं कि यह सामने आ खड़ा हुआ. इसने मेरे दिल को दहला दिया है, आत्मा में कम्पन पैदा कर दी है—यह भूत नहीं, विचार नहीं—यह असलियत है, बीसवीं सदी की असलियत. यह इन्सान है, भूका और नंगा इन्सान—एक चारपाई पर एक इन्सान का ढांचा पड़ा है. एक हाथ पेट पर रखा है और दूसरा फैला हुआ है—जैसे कुछ मांग रहा है. पर कौन दे सकता है, कौन इसे खाना खिला सकता है. वहां कोई नहीं है. केवल वह ढांचा है, चारपाई है, उसकी पत्नी है और सुअरबाड़े ऐसे मकान का भयानक सन्नाटा है. फैले हुए हाथ में जीवन साथिन कुछ नहीं दे सकती. लज्जा, बेचारगी, बेबसी से उसने हाथ से दूसरी तरफ़ आखें नीची कर ली हैं—इस आदमी के ढांचे के सर पर बाल नहीं है, बाल बनाये नहीं गए, झड़ गए हैं. हड्डियां उभरी हुई हैं, एक एक गिनी जा सकती हैं. जोड़ों पर गोश्त का नाम नहीं, नसें तन कर ऊपर झलक उठी हैं. ऐसा लगता है कि हड्डियों का एक ढांचा बना कर उस पर पतली खाल ओढ़ा दी गई है. यह ढांचा मुर्दा नहीं है. यह ज़िन्दा है, सांस लेता है, कराहता है और कभी कभी "रोटी, रोटी" के शब्द मुंह से कहता है. यह गोरखपुर का जीता-जागता इन्सान है, भुकमरी का सबूत है—पर राज हट को किसी सबूत की ज़रूरत नहीं होती. बंगाल में पैंतीस लाख आदमी मर गए लेकिन अंगरेज़ों ने यह नहीं माना कि वहां लोग भूकों मर रहे हैं. उन अंगरेज़ों के जानशीन उस परम्परा को कैसे न निभायें. सरकारी अफ़सर जो कुछ कह दें वह ब्रह्म वाक्य है और बाक़ी सब झूट, प्रचार और पार्टी बन्दी. डाक्टर कुमारप्पा और पंडित सुन्दरलाल झूटे हैं क्योंकि यू. पी. सरकार के अधिकारियों ने कह दिया है कि कहीं

پرواسی کی ڈائری

تصویر ہاتھ میں لیتے ہی بھوت کا وچار دماغ میں گونج اُٹھا. میں نے کبھی بھوت نہیں دیکھا' بھوت سے میں ڈرتا بھی نہیں ہوں. پھر بھی میں سب طرف سے بےخبر ہوکر بھوت کی دنیا میں کھو گیا. اِس بھوت کے نہ اُلٹے پیر تھے اور نہ بڑے بڑے بال تھے. ناخون بھی نہیں تھے. یہ انوکھا بھوت تھا—پر بھوت کے عام وچار سے بہت ہی بھیانک' بہت ہی ڈراونا. مجھ جیسے آدمی کو شاید بھوت سامنے آکر بھی نہیں ڈرا سکتا—لیکن—یہ بھوت' اِس کا بھیانک، روپ میرے دماغ میں بس گیا تھا. میں اِسے نکالنا بھی چاہوں تو نہیں نکال سکتا. دن ہو یا رات میں نے آنکھ بند کی نہیں کہ یہ سامنے آ کھڑا ہوا. اِس نے میرے دل کو دہلا دیا ہے' آتما میں کمپن پیدا کر دی ہے—یہ بھوت نہیں' وچار نہیں—یہ اصلیت ہے' بیسویں صدی کی اصلیت. یہ انسان ہے' بھوکا اور ننگا انسان—ایک چارپائی پر ایک انسان کا ڈھانچہ پڑا ہے. ایک ہاتھ پیٹ پر رکھا ہے اور دوسرا پھیلا ہوا ہے—جیسے کچھ مانگ رہا ہے. پر کون دے سکتا ہے' کون اِسے کھانا کھلا سکتا ہے. وہاں کوئی نہیں ہے. کیول وہ ڈھانچہ ہے' چارپائی ہے' اُس کی پتنی ہے اور سور باڑے ایسے مکان کا بھیانک سناٹا ہے. پھیلے ہوئے ہاتھ میں جیون ساتھن کچھ نہیں دے سکتی. لجا' بیچارگی' بے بسی سے اُس نے ہاتھ سے دوسری طرف آنکھیں نیچی کرلی ہیں—اِس آدمی کے ڈھانچے کے سر پر بال نہیں ہیں' بال بنائے نہیں گئے' جھڑ گئے ہیں. ہڈیاں اُبھری ہوئی ہیں' ایک ایک گنی جاسکتی ہیں. جوڑوں پر گوشت کا نام نہیں' نسیں تن کر اُوپر جھلک اُٹھی ہیں. ایسا لگتا ہے کہ ہڈیوں کا ایک ڈھانچہ بناکر اُس پر پتلی کھال اُڑھا دی گئی ہے. یہ ڈھانچہ مردہ نہیں ہے. یہ زندہ ہے' سانس لیتا ہے' کراہتا ہے اور کبھی کبھی "روٹی' روٹی" کے شبد منہ سے کہتا ہے. یہ گورکھپور کا جیتا جاگتا انسان ہے' بھکمری کا ثبوت ہے—پر راج ہٹ کو کسی ثبوت کی ضرورت نہیں ہوتی. بنگال میں پینتیس لاکھ آدمی مر گئے لیکن انگریزوں نے یہ نہیں مانا کہ وہاں لوگ بھوکوں مر رہے ہیں. اُن انگریزوں کے جانشین اُس پرمپرا کو کیسے نہ نبھائیں. سرکاری افسر جو کچھ کہدیں وہ برہم واکیہ ہے اور باقی سب جھوٹ' پرچار اور پارٹی بندی. ڈاکٹر کماریپا اور پنڈت سندرلال جھوٹے ہیں کیونکہ یو. پی. سرکار کے ادھیکاریوں نے کہ دیا ہے کہ کہیں

..derground Army	पाताली फ़ौज
..nderhand policy	भेद पालिसी
..topia	राम सराब
..mpire	ख़ून चूसन, ख़ून चूसिया
..llage Council	गांव कौन्सिल
..ter	वोट दाता
..ting population	वोटवार आबादी
..ant of confidence	अदम भरोसा

इसी उसूल के मुताबिक़ हम न सिर्फ़ रिवाज पाई हुई ..स्तलाहों का तरजुमा कर सकते हैं बल्कि नई नई इस्तलाहें ..र लफ़्ज़ी तरकीबें सुझा सकते हैं जैसे—

छुट वहम और छुटपन की तरह छुटदिला या छुट ..ापन.

..ज़बान	के क़यास पर	बद वहम या बद ज़ोर
..न्दुस्तान	,,	फ़िल्मिस्तान, रेतिस्तान
..मराग़ा	,,	समाज मराग़ा
..र फिरा	,,	दिल फिरा
..ल फेंक	,,	ख़ुद फेंक

हर लफ़्ज़ की टीका करना हमें अपने मतलब से दूर .. देगा. इसलिये हम सिर्फ़ नमूने के तौर पर दो तीन ..फ़्ज़ों की शरह करते हैं.

समाज मराग़ा वह शख़्स है जो अपनी ख़ान्दानी और ..माती ज़हनियत में ऐसा फ़ना हो चुका हो और उसके ..पहलों से इस क़दर असर ले चुका हो कि वह ख़ुद सांचा ..न कर दूसरों को समाज मराग़ा बना रहा हो.

हम सिर फिरा उस शख़्स को कहते हैं जिसे समझ .. बात न तो सूझती और न पसन्द आती हो. दिल ..िरा वह शख़्स है जिसे प्रेम और इश्क़ में ढंग की बात न ..ती हो.

वह शख़्स जो मुख़्तलिफ़ तहरीक़ों में एक के बाद एक ..शी ख़ुशी शरीक होता और इन्हिमाक से काम करता और ..र्बानियां करता हो मगर चन्द दिनों के बाद किसी और ..रीक या मशग़ले में उसी सरगर्मी से हिस्सा लेता हो या ..क मरतबा दो दो, तीन तीन तहरीक़ों या मशग़लों से ..नके बरअक्स मक़सदों के बावजूद यकसां दिलचस्पी रखता .. उसे हम ख़ुद फेंक कह सकते हैं. यह लफ़्ज़ अच्छे मानों ..भी इस्तेमाल हो सकता है—यानी वह शख़्स जो तन ..और धन की क़ुर्बानियां कर चुका हो और अब अपनी ..सरतों, अरमानों और ख़ुशियों को भेंट चढ़ा रहा हो.

Underground Army	پاتالی فوج
Uuderhand policy	بھیدپالیسی
Utopia	رام سراب
Vampire	خون چوسن، خون چوسیا
Village Council	گاؤں کونسل
Voter	ووٹ داتا
Voting population	ووٹ وار آبادی
Want of Confidence	عدم بھروسا

اسی اسول کے مطابق ہم نہ صرف رواج پائی ہوئی اصطلاحوں کا ترجما کر سکتے ہیں بلکہ نئی نئی اصطلاحیں اور لفظی ترکیبیں سجھا سکتے ہیں جیسے—

چھوٹ وہم اور چھوٹ پن کی طرح چھوٹ دلا یا چھوٹ دلاپن

بد زبان	کے قیاس پر	بدوہم یا بد زور
ہندستان	,,	فلمستان، ریگستان
کم مغزا	,,	سماج مغزا
سرپھرا	,,	دل پھرا
دل پھینک	,,	خد پھینک

ہر لفظ کی ٹیکا کرنا ہمیں اپنے مطلب سے دور کر دےگا. اس لئے ہم صرف نمونے کے طور پر دو تین لفظوں کی شرح کرتے ہیں۔

سماج مغزا وہ شخص ہے جو اپنی خاندانی اور جماعتی ذہنیت میں ایسا فنا ہو چکا ہو اور اس کے کھوروں سے اس قدر اسر لے چکا ہو کہ وہ خد سانچہ بن کر دوسروں کو سماج مغزا بنا رہا ہو۔

ہم سرپھرا اس شخص کو کہتے ہیں جسے سمجھ کی بات نہ تو سو جھتی ہو اور نہ پسند آتی ہو۔ دل پھرا وہ شخص ہے جسے پریم اور عشق میں ڈھنگ کی بات نہ آتی ہو۔

وہ شخص جو مختلف تحریکوں میں ایک کے بعد ایک خوشی خوشی شریک ہوتا اور انہماک سے کام کرتا اور قربانیاں کرتا ہو مگر چند دنوں کے بعد کسی اور تحریک یا مشغلے میں اسی سرگرمی سے حصہ لیتا ہو یا بار مرتبا دو دو، تین تین تحریکوں یا مشغلوں سے ان کے برعکس مقصدوں کے باوجود یکساں دلچسپی رکھتا ہو اسے ہم خد پھینک کہہ سکتے ہیں۔ یہ لفظ اچھے مانوں میں بھی استعمال ہو سکتا ہے—یانی وہ شخص جو تن اور دھن کی قربانیاں کر چکا ہو اور اب اپنی حسرتوں، ارمانوں اور خشیوں کو بھینٹ چڑھا رہا ہو۔

Entomology	कीड़ विद्या	**Entomology**	کیڑ ودیا
Flying Bomb	उड़न बम	**Flying Bomb**	اڑن بم
Freezing Point	जमाव नुक़ता	**Freezing Point**	جماؤ نقطہ
Glacier	बरफ़ नदी	**Glacier**	برف ندی
Half hearted	अध दिला	**Half hearted**	ادھدلا
Half heartedness	अधदिलापन	**Half heartedness**	ادھ دلاپن
Inferiority Complex	छुट वहम	**Inferiority Complex**	چھٹ وہم
Initiative	पहलकारी	**Initiative**	پہل کاری
Irredeemable	अन चुकाउ	**Irredeemable**	ان چکاؤ
Isthmus	ज़मीन जोड़	**Isthmus**	زمین جوڑ
Kakistocrocy	गुन्डे राज, गुन्डा राज	**Kakistocracy**	غنڈے راج' غنڈا راج
Love play	मुहब्बती खेल	**Love play**	محبتی کھیل
Machine Age	मशीन जुग	**Machine Age**	مشین جگ
Melting Point	पिघलाव नुक़ता	**Melting point**	پگھلاؤ نقطہ
Merry Widow	सुहागन बेवा	**Merry widow**	سہاگن بیوہ
Mortgage Tax	रहन टैक्स, गिरवी टैक्स	**Mortgage Tax**	رہن ٹیکس' گروی ٹیکس
Necrology	मौत विद्या	**Necrology**	موت ودیا
Negligee	खिलवती पहनाव	**Negligee**	خلوتی پہناؤ
Old Age pension	बुढ़ापा पेन्शन	**Old Age pension**	بڑھاپا پینشن
Painting	चित्रकारी	**Painting**	چترکاری
Pan-movements	कुलछाव तहरीकें	**Pan-movements**	کل چھاؤ تحریکیں
People's Party	जनता पार्टी	**People's Party**	جنتا پارٹی
Poison Gas	बिस गैस	**Poison Gas**	بس گیس
Politics	राजकाज	**Politics**	راج کاج
Search Warrant	खोज वारन्ट, तलाश वारन्ट	**Search warrant**	کھوج وارنٹ' تلاش وارنٹ
Season Ticket	म्यादी टिकट	**Season Ticket**	میعادی ٹکٹ
Seasonal Occupations	मौसमी धन्दे	**Seasonal occupations**	موسمی دھندے
Sex appeal	जिन्सी अपील	**Sex Appeal**	جنسی اپیل
Sex hunger	जिन्सी भूक	**Sex Hunger**	جنسی بھوک
Social work	समाजकाज	**Social work**	سماج کاج
Social worker	समाजकाजी	**Social worker**	سماج کاجی
Superiority complex	बड़ वहम	**Superiority Complex**	بڑوہم
Therapeutics	सिह्हत विद्या	**Therapeutics**	صحت ودیا
Time signal	वक़्त सिगनल	**Time Signal**	وقت سگنل
Token cut	नमूनी काट	**Token Cut**	نمونی کاٹ
Token pole	टुटमी खम्बा	**Token pole**	ٹوٹمی کھمبا

गुरु बख्श, खुशहाल चन्द, कबीर दास, इक़बाल चन्द, हरलाल, भीकन साहब, आफ़ताब राये, सरदार पटेल, यिषलाल, ख्वाजापरशाद, ऊषा इस्माईल, खूब चन्द, त सिंह.

इसी आधार पर चन्द नये नाम सुझाये जा सकते हैं, राम बख्श, किशन बख्श, सुख बख्श, प्रेम बख्श, दार खां, सुन्दर अली बेग, हिम्मत सिंह, देव बख्श, ो सावन्त, जमधर अली, दिल आसिया, दिल । हुसेन.

जिस तरह हमारे बुज़ुर्गों ने और पिछली पीढ़ियों ने ों, हज़ारों जुड़वां शब्द और मिलवां इस्तलाहें बनाईं उसी तरह हम भी नए नए जुड़वां और मिलवां शब्द । कर अपनी ज़बान को मालामाल कर सकते हैं जैसे—

lenology	रादूद विद्या
erolites	आसमानी पत्थर
ntidote	ज़हर तोड़
ntirational	अक़ल तोड़
scending Order	चढ़ती तरतीब
enevolent Despotism	दयालु ख़ुदराज, कृपालु ख़ुदराज
oiling Point	उबलाव नुक़ता
omber	बमबार
ardiology	दिल विद्या
asting vote	जिताउ वोट
omet	जोत तारा
ontemporary	हम समय, हम वक़्त
ontraception	हमल रोक
onvertible	बदलाउ
ost Price	लागती क़ीमत
ounter Attraction	तोड़ कशिश
ounter Charge	तोड़ इलज़ाम
Counter Propaganda	तोड़ प्रोपेगेन्डा
Counter Revolution	तोड़ इन्क़लाब
Co-worker	काम संघी
Credit Price	उधार क़ीमत
Current Price	चालू क़ीमत
Demand Price	मांग क़ीमत
Descending Order	उतरती तरतीब
Desperate	यास निडर

جیسے گرو بخش، خوشحال چند، کبیرداس، اقبال چند، جواهرلال، بهیکن صاحب، آفتاب رائے، سردار پٹیل، متھائیب لال، خاجہ پرشاد، اوشااسمائیل، خوب چند، عزت سنگھ ۔

اسی آدھار پر چند نئے نام سجھائے جاسکتے ھیں، جیسے رام بخش، کشن بخش، سکھبخش، پریم بخش، سکھ دارخاں، سندر علی بیگ، همت سنگھ، دیو بخش، علی ساونت، جمدھر علی، دل آسیا، دلراج حسین ۔

جس ترہ همارے بزرگوں نے اور پچھلی پیڑھیوں نے سیکڑوں، هزاروں جڑواں شبد اور ملواں اسطلاحیں بنائی ھیں، اسی ترہ هم بھی نئے نئے جڑواں اور ملواں شبد بناکر اپنی زبان کو مالا مال کرسکتے ھیں جیسے—

Adenology	غدود ودیا
Aerolites	آسمانی پتھر
Antidote	زهر توڑ
Antirational	عقل توڑ
Ascending Order	چڑھتی ترتیب
Benevolent Despotism	دیالو خدراج، کرپالو خدراج
Boiling Point	ابلاؤ نقطہ
Bomber	بمبار
Cardiology	دل ودیا
Casting vote	جتاؤ ووٹ
Comet	جوت تارا
Contemporary	هم سمے هم وقت
Contraception	حمل روک
Convertible	بدلاؤ
Cost Price	لگتی قیمت
Counter-Attraction	توڑ کشش
Counter Charge	توڑ الزام
Counter Propaganda	توڑ پروپگنڈا
Counter Revolution	توڑ انقلاب
Co-worker	کام سنگھی
Credit Price	ادھار قیمت
Current Price	چالو قیمت
Demand Price	مانگ قیمت
Descending Order	اترتی ترتیب
Desperate	یاس نڈر

करे उसको पुलिस नहीं पकड़ सकती, हिन्दुस्तानी अदालत उसे अपने सामने नहीं बुला सकती और इस तरह विश्वास के मामले में वह दो एक क़दम आप से आगे ही बढ़े हैं. यह बात तो बड़ी अच्छी है पर इसकी जड़ में मोह जो बैठा है जो बे मतलब दोनों की जान ख़तरे में डालेगा. इसीलिये तो हम यह सलाह दे रहे हैं कि अमरीकी हम को हमारी हालत पर छोड़ दें. हम इतने कमज़ोर हरगिज़ नहीं हैं कि बग़ैर अंगुली पकड़े चल ही न सकें.

बापू, आप हमारी बात समझ गए होंगे. तभी तो आप चुप हैं. अच्छा आज आप न मुस्काइये, न बोलिये, फिर कभी सही.

—भगवानदीन

ے اس کو پولیس نہیں پکڑ سکتی . ہندستانی
الت اسے اپنے سامنے نہیں بلا سکتی اور اس طرح وشواس
ے معاملہ میں وہ دو ایک قدم آپ سے آگے ہی بڑھے ہیں .
؛ بات تو بڑی اچھی ہے پر اس کی جڑ میں موہ جو
بیٹھا ہے جو بے مطلب دونوں کی جان خطرے میں ڈالے
. اسی لئے ہم یہ صلاح دے رہے ہیں کہ امریکی ہم کو
ہماری حالت پر چھوڑ دیں . ہم اتنے کمزور ہرگز نہیں
ں کہ بغیر انگلی پکڑے چل ہی نہ سکیں .

باپو، آپ ہماری بات سمجھ گئے ہونگے . تبھی تو آپ
چپ ہیں . اچھا آج آپ نہ مسکائیے، نہ بولئے، پھر کبھی
سہی .

—بھگوان دین

हिन्दुस्तानी शब्दियात का दूसरा उसूल मिलवां लफ़्ज़

(डाक्टर जाफ़र हसन)

लफ़्ज़ और जुज़ लफ़्ज़ के जोड़ से नये शब्द बनाने के अलावा हिन्दी और उर्दू की मुश्तरिक पूंजी बढ़ाने और हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने का दूसरा उसूल यह है कि मिलवां लफ़्ज़ बनाए जायें जिनमें से एक संस्कृती या हिन्दी हो और दूसरा फ़ारसी, अरबी या उर्दू, या नहीं तो एक हिन्दी हो तो दूसरा अंगरेजी. ग़रज़ हिन्दुस्तानी के जो तीन अहम सर चश्मे हैं, याने—

(i) संस्कृत और हिन्दी

(ii) फ़ारसी और अरबी

(iii) अंगरेजी

इन ही के किसी दो मुख़्तलिफ़ सर चश्मों से सम्बन्ध रखने वाली ज़बानों के दो लफ़्ज़ लेकर हिन्दुस्तानी का एक मिलवां शब्द या इस्तलाह बनाई जाये जिस तरह आरसी मसहफ़, शादी ब्याह, आग बोट, निकाही ब्याही, हुसेन सागर, जगत उस्ताद, रेल गाड़ी, तार आफ़िस, तार घर, टुकर गदा, गुलाब जामुन, घर दामाद, उमर पट्टा, मोती मस्जिद, मोती महल, पैसा अख़बार.

इसी सुनहरे उसूल के अनुसार हमारे देस के बहुत से समझदार लोगों ने अपने चहेतों के मिलवां नाम रखे हैं,

ہندستانی شبدیات کا دوسرا اسول: ملواں لفز

(ڈاکٹر جافر حسن)

لفز اور جزلفز کے جوڑ سے نئے شبد بنانے کے الاوا ہندی
ور اردو کی مشترک پونجی بڑھانے اور ہندستانی کو
رقی دینے کا دوسرا اسول یہ ہے کہ ملواں لفز بنائے جائیں
جن میں سے ایک سنسکرتی یا ہندی ہو اور دوسرا فارسی،
ربی یا اردو، یا نہیں تو ایک ہندی ہو تو دوسرا انگریزی.
رز ہندستانی کے جو تین اہم سرچشمے ہیں، یانے—

(i) سنسکرت اور ہندی

(ii) فارسی اور اربی

(iii) انگریزی

ان ہی کے کسی دو مختلف سرچشموں سے سمبندھ
رکھنے والی زبانوں کے دو لفز لے کر ہندستانی کا ایک ملواں
شبد یا اسطلاح بنائی جائے جس طرح آرسی مصحف،
شادی بیاہ، آگ بوٹ، نکاحی بیاہی، حسین ساگر، جگت
استاد، ریل گاڑی، تار آفس، تار گھر، ٹکر گدا، گلاب جامن،
گھر داماد، عمر پٹہ، موتی مسجد، موتی محل، پیسہ
اخبار .

اسی سنہرے اسول کے انوسار ہمارے دیس کے بہت
سے سمجھدار لوگوں نے اپنے چہیتوں کے ملواں نام رکھے ہیں،

बापू, आप इसकी फ़िकर न करें कि फिर गांव वालों
ा क्या होगा. हमारे गांव वालों को चीन के गांव वालों
ी ऐसा देखी अपना पुराना ज़माना याद आ गया है और
ह सोचने लगे हैं कि अगर लड़ाई के दिनों में हम अपने
ाम्मूली हल बैलों से अपना पेट भर लेते थे और औरों को
ाला देते थे तो आज हम विदेशी हल पर क्यों भरोसा
रें. अगर हमने गुनिया, सावल और सूत से बड़े बड़े महल
र क़िले बना डाले और ताज महल जैसी दिखनौटू चीज़
ड़ी कर दी तो क्या आज हम इसके लिये विदेशियों का
ह ताकें! चीनी लोग अगर आज विदेशियों की मदद के
ौर पुल खड़े कर लेते हैं तो क्या वैसा पहले हम ने नहीं
या और क्या आज नहीं कर सकते. रही ट्रैक्टरों और
ीन जैसे औज़ारों की बात. उन्हें कुछ न कुछ दिन में
मारे बच्चे बना ही लेंगे. तो क्या हम इतने बे सबरे बन
एं कि विदेश से ट्रैक्टर मंगा बैठें और हाथ पांव की
नत करने की जगह ट्रैक्टर की गद्दी पर बैठ कर हल की
ठ को छोड़ उसका पहिया घुमाने का मज़ा लेने लगें, और,
र अपनी जान से प्यारे बैलों का क्या करें?

बापू, आप फ़िकर न करें एक दल ऐसा तैयार हो रहा
जिसे सच्चे मानों में अमरीका से मुहब्बत है और वह
पनी मुहब्बत के बल पर अमरीका को इस मोह में नहीं
ने देगा जिससे उसको बे मतलब ही अपनी जान जोखम
डालनी पड़े.

अमरीका को हिन्दुस्तानियों से इतनी मुहब्बत हो चली
कि वह हिन्दुस्तानी सरकार की अगर खुले खुले मदद
ता है तो पारलियामेन्ट के मेम्बरों को, अख़बार वालों
, दूसरी और पोलिटिकल पारटियों को, इक्का दुक्का
असर आदमियों को गुप्तदान भी देता है. हिन्दुस्तान में
कर इतना भी न सीखे तो क्या सीखे? सूरज ग्रहन के
पर हिन्दुस्तान में गुप्तदान का महत्व बहुत बड़ा माना
ा है. आज भी तो हिन्दुस्तान में ईमानदारी का सूरज ग्रहन
रहा है. फिर अमरीका गुप्तदान देकर पुन्य का भागी क्यों
बनें?

बापू, हां, हम इतना चाहते हैं कि यह गुप्तदान लेने वाले
म्मत कर के खुले खुले बताना शुरू कर दें कि कब,
स को, किस से, किन शर्तों पर, किस काम के लिये,
ना गुप्त दान मिला तो और भी अच्छा. हम नहीं चाहते
अमरीका फ़ैय्याज़ी के इस जस से महरूम रह जाए.
, अमरीका की फ़ैय्याज़ी और जान जोखम में डालने
हिम्मत को देख कर हमारी सरकार ने अमरीकियों पर
विश्वास कर लिया है. और वैसा करना भी चाहिये,
प भी तो सब पर विश्वास कर लेते थे. हां, सरकार ने
ह और किया है कि विश्वास पात्र कोई अमरीकी कुछ भी

باپو' آپ اس کی فکر نہ کریں کہ پھر گاؤں والوں کا
کیا ہوگا ۔ ہمارے گاؤں والوں کو چین کے گاؤں والوں کی دیکھا
دیکھی اپنا پرانا زمانہ یاد آ گیا ہے اور وہ سوچنے لگے
ہیں کہ اگر لڑائی کے دنوں میں ہم اپنے معمولی ہل
بیلوں سے اپنا پیٹ بھر لیتے تھے اور اوروں کو کھلا دیتے
تھے تو آج ہم ودیشی ہل پر کیوں بھروسہ کریں ۔ اگر ہم
نے گنیہ' ساول اور سوت سے بڑے بڑے محل اور قلعے بنا
ڈالے اور تاج محل جیسی دکھ نوٹو چیز کھڑی کر دی تو کیا
آج ہم اس کے لئے ودیشیوں کا منہ تاکیں! چینی لوگ
اگر آج ودیشیوں کی مدد کے بغیر پل کھڑے کر لیتے ہیں
تو کیا ویسا پہلے ہم نے نہیں کیا اور کیا آج نہیں کر
سکتے؟ رہی ٹریکٹروں اور دوربین جیسے اوزاروں کی بات ۔
انہیں کچھ نہ کچھ دن میں ہمارے بچے بنا ہی لیں گے۔
تو کیا ہم اتنے بے صبرے بن جائیں کہ ودیش سے ٹریکٹر
منگا بیٹھیں اور ہاتھ پاؤں کی محنت کرنے کی جگہ
ٹریکٹر کی گدی پر بیٹھ کر ہل کی مونٹھ کو چھوڑ اس کا
پہیہ گھمانے کا مزہ لینے لگیں' اور پھر اپنی جان سے پیارے
بیلوں کا کیا کریں؟

باپو' آپ فکر نہ کریں ایک دل ایسا تیار ہو رہا ہے
جسے سچے معنوں میں امریکہ سے محبت ہے اور وہ اپنی
محبت کے بل پر امریکہ کو اس موہ میں نہیں پھنسنے
دے گا جس سے اس کو بے مطلب ہی اپنی جان جوکھم
میں ڈالنی پڑے ۔

امریکہ کو ہندوستانیوں سے اتنی محبت ہو چلی ہے
کہ وہ ہندوستانی سرکار کی اگر کھلے کھلے مدد کرتا ہے تو
پارلیامنٹ کے ممبروں کو' اخبار والوں کو' دوسری اور
پولیٹیکل پارٹیوں کو' اکا دکا با اثر آدمیوں کو گپت دان
بھی دیتا ہے ۔ ہندوستان میں آ کر اتنا بھی نہ سیکھے تو
کیا سیکھے؟ سورج گرہن کے موقع پر ہندوستان میں گپت دان
کا مہتو بہت بڑا مانا گیا ہے ۔ آج بھی تو ہندوستان میں
ایمانداری کا سورج گرہن ہو رہا ہے۔ پھر امریکہ گپت دان
دے کر پنیہ کا بھاگی کیوں نہ بنے؟

باپو' ہاں' ہم اتنا چاہتے ہیں کہ یہ گپت دان لینے
والے ہمت کر کے کھلے کھلے بتانا شروع کر دیں کہ کب' کس
کو' کس سے' کن شرطوں پر' کس کام کے لئے' کتنا گپت دان
ملا تو اور بھی اچھا' ہم نہیں چاہتے کہ امریکہ فیاضی کے
اس جس سے محروم رہ جائے ۔ باپو' امریکہ کو فیاضی اور
جان جوکھم میں ڈالنے کی ہمت کو دیکھ کر ہماری
سرکار نے امریکیوں پر پورا وشواس کر لیا ہے' اور ویسا کرنا
بھی چاہئے' آپ بھی تو سب پر وشواس کر لیتے تھے ۔ ہاں'
سرکار نے اتنا اور کیا ہے کہ وشواس پاتر کوئی امریکی کچھ بھی

काही की कठिया बगल में दाब
कौन चली और किसकी बात ?"

बापू, सचमुच अमरीका दस बरस में यहां पर मौज ही मौज कर देगा. गेहूँ की रोटी और गेहूँ का ही ईंधन. पर बापू, अमरीका के अपने नाज की खपत कहां होगी ! और उसका खेती सम्बन्धी और माल कहां खपेगा ! और और मुल्कों के माल का क्या होगा और फिर अमरीका की इतनी मेहनत के बाद कहीं हिन्दुस्तान अमरीका के माल की नक़ल करने की सोच बैठा तो अमरीका क्यों पसंद करेगा कि उसके रहते कोई हिन्दुस्तानी तकलीफ़ उठाये ! अंगरेज़ों ने अपने रहते हमें कब कोई तकलीफ़ उठाने दी थी क्या अमरीका अंगरेज़ों से भी गया बीता साबित होगा !

बापू, इसी तरह अगर कोई हिन्दुस्तान की तरफ़ आंख उठायेगा तो क्या अमरीका उसकी आंख न निकाल लेगा और अगर हिन्दुस्तान किसी से दोस्ती जोड़ेगा तो क्या अमरीका इतनी मेहनत के बाद हिन्दुस्तान को फटकार भी न सकेगा. और ऐसी हालत में कहीं कोई लड़ाई छिड़ गई तो अमरीका की जान पर आ बनेगी. बस इसी ख़्याल से मैं अमरीका से कह रहा हूँ कि वह हिन्दुस्तान का मोह छोड़ कर हिन्दुस्तान से चल दे. थोड़ा बुरा लगे तो बरदाश्त कर ले और अमरीका के इसी मुहब्बत के बल पर मैं हिन्दुस्तानियों को सलाह देता हूं कि वह आज की तारीख़ से अमरीकी माल का बाईकाट शुरू कर दें.

शुरू शुरू में अमरीका को थोड़ा खटकेगा. अंगरेज़ों को भी खटका था, पर, आज अंगरेज़ कितनी मौज में हैं. एक अंगरेज़ रेल में बैठे हिन्दुस्तानी सेठ से कह रहा था.

"हम अंगरेज़ आज हिन्दुस्तान में जितने सुख और शान से रह रहे हैं और जितनी तादाद में रह रहे हैं उतने सुख और उतनी शान से और उतनी तादाद में उस वक़्त नहीं रह रहे थे जब यहां हमारा अपना राज था.

सेठ ने पूछा, यह कैसे ?

अंगरेज़ बोला, तुम मुझ से बड़े सेठ हो, चलो मेरे साथ दिल्ली, मैं एक परचा जवाहरलाल जी के नाम भेजता हूँ, तुम भी भेजो, देखें, पहले किसे मुलाक़ात मिलती है ?

सेठ बोला, पहले बाहर वालों से मिलना चाहिये, हिन्दुस्तान का यही बड़प्पन है.

अंगरेज़ बोला, अच्छा कोई ठेका लीजिये और उसकी खातिर जवाहरलाल से मिलिये, पहले मुझे ठेका मिलेगा पीछे तुम्हें.

सेठ चुप हो गया.

अंगरेज़ों की इस बात से अमरीका को सबक़ लेना चाहिये और जल्दी से जल्दी हिन्दुस्तान से चल देना चाहिये.

واهی کی لٹھیا بغل میں داب
کون چلی اور کس کی بات؟"

باپو' سچ مچ امریکہ دس برس میں یہاں پر موج ہی موج کر دیگا. گیہوں کی روٹی اور گیہوں کا ہی ایندھن. پر باپو' امریکہ کے اپنے ناج کی کھپت کہاں ہوگی ! اور اس کا کھیتی سمبندھی اور مال کہاں کھپیگا ! اور اور ملکوں کے مال کا کیا ہوگا اور پھر امریکہ کی اتنی محنت کے بعد کہیں ہندستان امریکہ کے مال کی نقل کرنے کی سوچ بیٹھا تو امریکہ کیوں پسند کریگا کہ اس کے رہتے کوئی ہندستانی تکلیف اٹھائے ! انگریزوں نے اپنے رہتے ہمیں کب کوئی تکلیف اٹھانے دی تھی. کیا امریکہ انگریزوں سے بھی گیا بیتا ثابت ہوگا !

باپو' اسی طرح اگر کوئی ہندستان کی طرف آنکھ اٹھائیگا تو کیا امریکہ اس کی آنکھ نہ نکال لیگا اور اگر ہندستان کسی سے دوستی جوڑیگا تو کیا امریکہ اتنی محنت کے بعد ہندستان کو پھٹکار بھی نہ سکیگا. اور ایسی حالت میں کہیں کوئی لڑائی چھڑ گئی تو امریکہ کی جان پر آ بنیگی. بس اسی خیال سے میں امریکہ سے کہہ رہا ہوں کہ وہ ہندستان کا موہ چھوڑ کر ہندستان سے چل دے. تھوڑا برا لگے تو برداشت کرے اور امریکہ کے اس محبت کے بل پر میں ہندستانیوں کو صلاح دیتا ہوں کہ وہ آج کی تاریخ سے امریکی مال کا بائی کاٹ شروع کر دیں.

شروع شروع میں امریکہ کو تھوڑا کھٹکیگا' انگریزوں کو بھی کھٹکا تھا' پر' آج انگریز کتنی موج میں ہیں. ایک انگریز ریل میں بیٹھے ہندستانی سیٹھ سے کہہ رہا تھا:

" ہم انگریز آج ہندستان میں جتنے سکھ اور شان سے رہ رہے ہیں اور جتنی تعداد میں رہ رہے ہیں اتنے سکھ اور اتنی شان سے اور اتنی تعداد میں اسوقت نہیں رہ رہے تھے جب یہاں ہمارا اپنا راج تھا."

سیٹھ نے پوچھا' یہ کیسے؟

انگریز بولا' تم مجھ سے بڑے سیٹھ ہو' چلو میرے ساتھ دلی' میں ایک پرچہ جواہرلال جی کے نام بھیجتا ہوں' تم بھی بھیجو' دیکھیں' پہلے کسے ملاقات ملتی ہے؟

سیٹھ بولا' پہلے باہر والوں سے ملنا چاہئے' ہندستان کا یہی بڑپن ہے.

انگریز بولا' اچھا کوئی ٹھیکہ لیجئے اور اسکی خاطر جواہرلال سے ملئے' پہلے مجھے ٹھیکہ ملیگا پیچھے تمہیں.

سیٹھ چپ ہوگیا.

انگریزوں کی اس بات سے امریکہ کو سبق لینا چاہئے اور جلدی سے جلدی ہندستان سے چل دینا چاہئے.

भी न सोचेगा कि च्यांग काई शेक की खातिर तीसरी लड़ाई अपने सर पर ले ले और अमरीका को मिट्टी में मिल जाने दे. हिन्दुस्तान में जिन्होंने ऐसे काम किये थे उन्होंने अपनी रियासत को मिट्टी में मिलाने की बात नहीं सोची थी. दोस्ती की खातिर वैसा हो गया, हो गया! अमरीका भी कुछ यह थोड़े ही सोच रहा है कि ऐसा करने से मिट्टी में मिल जाएगा, फिर वह च्यांग की खातिर मिट्टी में मिल जाए, मिल जाए.

हिन्दुस्तान से उसका दिन दूना मोह बढ़ रहा है. तन, मन, धन सब उस पर वारने को तैयार है. यह मोह नहीं है तो क्या है? बापू, उसको इस मोह से छुटाना अगर भला नहीं तो क्या बुरा है? उसे थोड़ा बहुत बुरा लगे तो लगे.

बापू, अमरीका को छोड़िये, हमारी हिन्द की सरकार को गांव वालों से इतना मोह हो गया है कि फिर अगर उसका बस चले तो गांव के बच्चे बच्चे के लिये एक एक मोटर खरीद दे. बापू, सच बात यह है कि आज कल हमारी सरकार और गांव वालों के बीच में बिलकुल वही सम्बन्ध हो गया है जो कुछ कम अर्थों में अंगरेज़ी सरकार और गांव वालों के बीच में था, यानी अंगरेज़ी सरकार गांव वालों की माई बाप थी. वह पूरे अर्थों में नहीं थी क्योंकि विदेशी थी. आज की सरकार पूरे अर्थों में माई बाप है, क्योंकि अपनी है. आज कल हिन्दुस्तानी कैबिनेट का एक भी मेम्बर यह बरदाश्त नहीं कर सकता कि वह खुद तो मोटर में बैठे और गांव का कोई भी बच्चा बे मोटर के रहे, बापू, खिलौने की मोटर न समझना, सच्ची मोटर सच्ची. मुझे तो मोटरों के नाम याद नहीं क्योंकि मैं कभी किसी मोटर का मालिक नहीं रहा और न कभी आई. सी. एस. या पी. सी. एस. के इमतहान में बैठा. फिर भी फ़ोर्ड मोटर का नाम जानता हूँ. बस वैसी ही फ़ोर्ड मोटर हर गांव वाले को दिलवाने की बात हमारी कैबिनेट सोच रही है.

गांव वालों की तरक़्क़ी की खातिर हिन्दुस्तान अमरीका के हाथ गिरवी भी रखना पड़े तो इसमें, बापू, बुराई क्या!

बापू, क्या आपको इस में शक है कि अगर दस पांच बरस के लिये हिन्दुस्तान के सारे गांव अमरीका के हाथ सौंप दिये जाएँ तो क्या इन पांच दस बरस में हर एक के पास मोटर नहीं हो जाएगी! और बापू, क्या गेहूँ की खेती इतनी नहीं हो जाएगी कि या तो उस में आग लगानी पड़े या ईंधन की जगह उससे काम लेना पड़े. अरहर के बारे में छुटपन में हमने एक पहेली सुनी थी वह यह थी:—

"वाही की रोटी वाही की दाल
वाही की लकड़ी चूल्हे में बाल
वाही की टटिया दे कर द्वार
वाही का छप्पर ऊपर डार

بھی نہ سوچیگا کہ چیانگ کائی شیک کی خاطر تیسری لڑائی اپنے سر پر لے لے اور امریکہ کو مٹی میں مل جانے دے. ہندستان میں جنہوں نے ایسے کام کئے تھے انہوں نے اپنی ریاست کو مٹی میں ملانے کی بات نہیں سوچی تھی. دوستی کی خاطر ویسا ہوگیا' ہو گیا! امریکہ بھی کچھ یہ تھوڑے ہی سوچ رہا ہے کہ ایسا کرنے سے مٹی میں مل جائیگا' پھر وہ چیانگ کی خاطر مٹی میں مل جائے' مل جائے.

ہندستان سے اس کا دن دونا موہ بڑھ رہا ہے. تن من دھن سب اس پر وارنے کو تیار ہے یہ موہ نہیں ہے تو کیا ہے؟ باپو' اسکو اس موہ سے چھٹانا اگر بھلا نہیں تو کیا برا ہے؟ اسے تھوڑا بہت برا لگے تو لگے.

باپو' امریکہ کو چھوڑیئے' ہماری ہند سرکار کو گاؤں والوں سے اتنا موہ ہوگیا ہے کہ پھر اگر اس کا بس چلے تو گاؤں کے بچے بچے کے لئے ایک ایک موٹر خرید دے. باپو' سچ بات یہ ہے کہ آج کل ہماری سرکار اور گاؤں والوں کے بیچ میں بالکل وہی سمبندھ ہوگیا ہے جو کچھ کم ارتھوں میں انگریزی سرکار اور گاؤں والوں کے بیچ میں تھا یعنی انگریزی سرکار گاؤں والوں کی مائی باپ تھی. وہ پورے ارتھوں میں نہیں تھی کیونکہ ودیشی تھی. آج کی سرکار پورے ارتھوں میں مائی باپ ہے کیونکہ اپنی ہے. آج کل ہندستانی کیبنٹ کا ایک بھی ممبر یہ برداشت نہیں کر سکتا کہ وہ خود تو موٹر میں بیٹھے اور گاؤں کا کوئی بھی بچہ بے موٹر کے رہے. باپو کھلونے کی موٹر نہ سمجھنا' سچی موٹر سچی. مجھے تو موٹروں کے نام یاد نہیں کیونکہ میں کبھی کسی موٹر کا مالک نہیں رہا اور نہ کبھی آئی. سی. ایس. یا پی. سی. ایس. کے امتحان میں بیٹھا. پھر بھی فورڈ موٹر کا نام جانتا ہوں بس ویسی ہی فورڈ موٹر ہر گاؤں والے کو دلوانے کی بات ہماری کیبنٹ سوچ رہی ہے.

گاؤں والوں کی ترقی کی خاطر ہندستان امریکہ کے ہاتھ گروی بھی رکھنا پڑے تو اس میں' باپو' برائی کیا!

باپو' کیا آپ کو اس میں شک ہے کہ اگر دس پانچ برس کے لئے ہندستان کے سارے گاؤں امریکہ کے ہاتھ سونپ دئے جائیں تو کیا ان پانچ دس برس میں ہر ایک کے پاس موٹر نہیں ہو جائے گی! اور باپو' کیا گیہوں کی کھیتی اتنی نہیں ہوجائے گی کہ یا تو اس میں آگ لگانی پڑے یا ایندھن کی جگہ اس سے کام لینا پڑے. ارہر کے بارے میں چھٹپن میں ہم نے ایک پہیلی سنی تھی وہ یہ تھی.

" واہی کی روٹی واہی کی دال
واہی کی لکڑی چولھے میں بال
واہی کی ٹٹیا دیکر دوار
واہی کی چھپر اوپر ڈار

की उसे आज तक निबाह रहे हैं. ताईवान (फ़ारमूसा) का अपनी जान जोखम में डाल कर जहाज़ी घेरा डाले हुए हैं. उसकी ख़ातिर कितनी तकलीफ़ उठा रहे हैं. ताईवान छोड़ सारे चीन को दुखी देख रहे हैं और च्यांग की इतनी मदद नहीं कर पा रहे कि च्यांग चीन के दुख को दूर कर सके. बिचारे अमरीकी करें भी क्या? कहां कहां हाथ लगायें? कितनी ज़िम्मेवारियां निबाहें? दुनिया के किसी मुल्क का दुख उनसे देखा नहीं जाता! जापान के दुख में वह इतने दुखी हैं कि वह उस कोरिया को जो जापान के सिर पर तमंचा है उसको खिलौने वाला तमंचा बनाने पर तुले हुए हैं. तमंचा तो उसे क़ुदरत ने बनाया है उसकी तबदीली तो अमरीकी ताक़त से बाहर है पर वह उसे डमी तमंचा तो बना ही सकते हैं और जब कोरिया खिलौने का तमंचा बन गया तब जापानी बच्चा उससे आसानी से खेल सकता है. अगर बहुत छोटा हो तो निडर हो कर मुंह में भी दे सकता है और ख़तरे से बचा भी रह सकता है. अमरीकियों के यह उपकार क्या दुनिया कभी भुला सकती है, पर, मुश्किल यही है कि अमरीकियों को बड़ी जल्दी हर मुल्क से मोह हो जाता है.

कुछ ही दिनों में दखिनी कोरिया से मोह हो बैठा और उसकी ख़ातिर तो वह इतने अंधे हो गए कि यू. एन. ओ. की इजाज़त लिये बिना उत्तरी कोरिया पर चढ़ बैठे. कोई भी बाबा या बाप अपने बेटे पर किसी को चढ़ता आते देख कर कैसे चुप रह सकता है? वैसे ही अमरीका ने दखिनी कोरिया को बचाने की ख़ातिर अपनी जान जोखम में डाल दी, इसी लिए मैं इस मोही अमरीका को यह सलाह दे रहा हूं कि वह हिन्दुस्तान से मोह छोड़ दे.

मोह का नतीजा बहुत ख़राब होता है. यही हाल दोस्ती का होता है. बापू, हमने सुन रखा है कि बैरम ख़ां के लड़के को अकबर से बड़ी मुहब्बत थी. बस वह अकबर का दोस्त ही था और दोस्ती निबाहने की ख़ातिर, सुनते हैं, वह बाप का सिर काट लाया था, और अकबर के क़दमों में रख दिया था. दोस्ती में ऐसे काम करने ही पड़ते हैं. आज भी च्यांग काई शेक की ख़ातिर अगर अमरीकी सरकार इससे मिलता जुलता कोई काम कर बैठे या करने की सोच बैठे तो कोई बड़ी बात नहीं. दोस्ती में क्या नहीं हो सकता.

अमरीका को अगर तीसरी लड़ाई छिड़ जाने की परवाह होती या वह बुरी तरह कोरिया के मामले में फंसा न होता तो क्या वह च्यांग काई शेक को इस तरह ग़मगीन पड़ा हुआ देखना गवारा करता! हिन्दुस्तान में ऐसे राजा हुये हैं जिन्होंने अपने घर में किसी को जगह दे कर उसकी ख़ातिर लड़ाई मोल ली और अपनी रियासत मिट्टी में मिला दी. फिर क्या अमरीका हिन्दुस्तान से दोस्ती करके इतना

کی اُسے آج تک نباہ رہے ہیں. تائی‌وان (فارموسا) کا اپنی جان جوکھم میں ڈال کر جہازی گھیرا ڈالے ہوئے ہیں. اس کی خاطر کتنی تکلیف اٹھا رہے ہیں. تائی‌وان چھوڑ سارے چین کو دکھی دیکھ رہے ہیں اور چیانگ کی اتنی مدد نہیں کرپا رہے کہ چیانگ چین کے دکھ کو دور کرسکے. بچارے امریکی کریں بھی کیا ؟ کہاں کہاں ہاتھ لگائیں؟ کتنی ذمہ‌داریاں نباہیں؟ دنیا کے کسی ملک کا دکھ اُن سے دیکھا نہیں جاتا ! جاپان کے دکھ میں وہ اتنے دکھی ہیں کہ وہ اس کوریا کو جو جاپان کے سر پر تمنچہ ہے اس کو کھلونے والا تمنچہ بنانے پر تلے ہوئے ہیں. تمنچہ تو اُسے قدرت نے بنایا ہے. اس کی تبدیلی تو امریکی طاقت سے باہر ہے پر وہ اُسے ڈمی تمنچہ تو بنا ہی سکتے ہیں اور جب کوریا کھلونے کا تمنچہ بن گیا تب جاپانی بچہ اُسے آسانی سے کھیل سکتا ہے. اگر بہت چھوٹا ہو تو نڈر ہوکر منہ میں بھی دے سکتا ہے اور خطرہ سے بچا بھی رہ سکتا ہے. امریکیوں کے یہ اُپکار کیا دنیا کبھی بھلا سکتی ہے، پر، مشکل یہی ہے کہ امریکیوں کو بڑی جلدی ہر ملک سے موہ ہو جاتا ہے .

کچھ ہی دنوں میں دکھنی کوریا سے موہ ہو بیٹھا اور اُس کی خاطر تو وہ اتنے اندھے ہوگئے کہ یو. این. اُو. کی اجازت لئے بنا اُتری کوریا پر چڑھ بیٹھے. کوئی بھی بابا یا باپ اپنے بیٹے پر کسی کو چڑھتا آتے دیکھکر کیسے چپ رہ سکتا ہے ؟ ویسے ہی امریکہ نے دکھنی کوریا کو بچانے کی خاطر اپنی جان جوکھم میں ڈال دی، اسی لئے میں اِس موہی امریکہ کو یہ صلاح دے رہا ہوں کہ وہ ہندستان سے موہ چھوڑ دے .

موہ کا نتیجہ بہت خراب ہوتا ہے. یہی حال دوستی کا ہوتا ہے. باپو، ہم نے سن رکھا ہے کہ بیرم‌خاں کے لڑکے کو اکبر سے بڑی محبت تھی. بس وہ اکبر کا دوست ہی تھا اور دوستی نباہنے کی خاطر سنتے ہیں، وہ باپ کا سر کاٹ لایا تھا، اور اکبر کے قدموں میں رکھ دیا تھا . دوستی میں ایسے کام کرنے ہی پڑتے ہیں . آج بھی چیانگ کائی شیک کی خاطر اگر امریکی سرکار اس سے ملتا جلتا کوئی کام کر بیٹھے یا کرنے کی سوچ بیٹھے تو کوئی بڑی بات نہیں. دوستی میں کیا نہیں ہوسکتا .

امریکہ کو اگر تیسری لڑائی چھڑ جانے کی پرواہ نہ ہوتی یا وہ بری طرح کوریا کے معاملے میں پھنسا نہ ہوتا تو کیا وہ چیانگ کائی شیک کو اس طرح غم ذدہ پڑا ہوا دیکھنا گوارا کرتا ! ہندستان میں ایسے راجہ ہوئے ہیں جنہوں نے اپنے گھر میں کسی کو جگہ دے کر اس کی خاطر لڑائی مول لی اور اپنی ریاست مٹی میں ملا دی . پھر کیا امریکہ ہندستان سے دوستی کر کے اتنا

का प्याला हाथ में लिये हुए है, मुंह को लगाने को है या मुंह से लगाये हुए है, और घूंट लेने को है या एक आध घूंट ले चुकी है, और सब का सब उंडेल जाने को है, तो क्या मैं देखता रहूं ? हरगिज़ नहीं. मेरी मुहब्बत मुझे मजबूर करती है कि मैं साफ़ साफ़ कहूं और दौड़ कर प्याला छीन लूं या फ़ौरन छीन लेने का किसी को हुक्म दूं.

बापू, हरबर्ट स्पेन्सर कुछ बेवक़ूफ़ न था कि उसने जापानियों को सलाह दी कि वह योरोपियों और अमरीकियों से अपने आपको एक हाथ दूर रखें. मैं आज उसी ढंग की सलाह पर, अपने नए कारन लिये, अंगरेज़ों और अमरीकियों को सलाह देता हूँ कि वह हिन्दुस्तान से एक हाथ दूर ही रहें.

हिन्दुस्तान को अपना कर अंगरेज़ क़रीब क़रीब मिटने को हो गए थे कि बापू, आपने उनको बचा लिया. हिन्दुस्तान जब उनके हाथ में था तो उन्हें हिन्दुस्तान से बड़ी मुहब्बत थी. उस मुहब्बत ने मोह का रूप ले लिया था. हिन्दुस्तान को बचाये रखने की ख़ातिर उनको आये दिन लड़ाइयां लड़नी पड़ती थीं. अपना पैसा ख़र्च करना पड़ता था, अपने आदमी कटाने पड़ते थे. आपकी वजह से उनको इन सब झंझटों से छुटकारा मिल गया. बापू, पर क्या उनका हिन्दुस्तान से मोह छुट पाया है ! अभी तक उसको कामन-वेल्थ का हिस्सा बनाए हुए हैं और अपनी जान जोखम में डाल कर जहाज़ी बेड़े और हवाई बेड़े की कमान अपने हाथ में लिये हुए हैं. न जाने हिन्दुस्तान की ख़ातिर कब उनकी जान पर आ बने.

बापू, अंगरेज़ों की यही बात याद आ कर आज मैं अमरीकियों से कहना चाहता हूँ कि वह हिन्दुस्तान के मोह में न पड़ें. मोह में जो पड़ता है वह मिट जाता है. वह भी मोह में पड़ कर मिट जावेंगे. बापू, यह किसे नहीं मालूम कि बच्चे को ज़रा गोद खिला कर उससे मोह हो जाता है अगर कहीं उस बच्चे पर सौ पचास ख़र्च कर दिये जायें और दो चार दिन उसकी मालिश कर दी जाये और उसे नहला धुला दिया जाये तो फिर मां पर रोब जमाने की हिम्मत हो जाती है और कहीं उसे पढ़ा लिखा दिया जाये तब तो उसे मां से छीन कर अपने पास रखने को जी चाहने लगता है. और उसकी ख़ातिर जान जोखम में डालने की तैयारी में रहने लग जाने को मन होने लगता है. इसी से तो मैं कह रहा हूं कि अमरीकियों को हिन्दुस्तान के मोह में नहीं फंसना चाहिये. इसमें हिन्दुस्तान का इतना नहीं बिगड़ेगा जितना अमरीकियों का.

बापू, और फिर अमरीकियों के सामने तो चीन की मिसाल मौजूद है. उससे मोह बढ़ा कर आज तक मोह जाल से नहीं निकल पाये. च्यांग के साथ उन्होंने जो दोस्ती

کا پیالہ ہاتھ میں لئے ہوئے ہے، منہ کو لگانے کو ہے یا منہ لگائے ہوئے ہے، اور گھونٹ لینے کو ہے یا ایک آدھ گھونٹ لے چکی ہے، اور سب کا سب انڈیل جانے کو ہے، تو کیا میں دیکھتا رہوں ؟ ہرگز نہیں ۔ میری محبت مجھے مجبور کرتی ہے کہ میں صاف صاف کہوں اور دوڑ کر پیالہ چھین لوں یا فوراً چھین لینے کا کسی کو حکم دوں ۔

باپو، ہربرٹ اسپینسر کچھ بیوقوف نہ تھا کہ اس نے جاپانیوں کو صلاح دی کہ وہ یوروپیوں اور امریکیوں سے اپنے آپ کو ایک ہاتھ دور رکھیں ۔ میں آج اسی ڈھنگ کی صلاح پر، اپنے نئے کارن لئے، انگریزوں اور امریکیوں کو صلاح دیتا ہوں کہ وہ ہندستان سے ایک ہاتھ دور ہی رہیں ۔

ہندستان کو اپنا کر انگریز قریب قریب مٹنے کو ہوگئے تھے کہ باپو، آپ نے ان کو بچا لیا ۔ ہندستان جب اُن کے ہاتھ میں تھا تو انہیں ہندستان سے بڑی محبت تھی ۔ اس محبت نے موہ کا روپ لے لیا تھا ۔ ہندستان کو بچائے رکھنے کی خاطر اُن کو آئے دن لڑائیاں لڑنی پڑتی تھیں ۔ اپنا پیسہ خرچ کرنا پڑتا تھا، اپنے آدمی کٹانے پڑتے تھے ۔ آپ کی وجہ سے اُن کو ان سب جھنجھٹوں سے چھٹکارا مل گیا ۔ باپو، پر کیا ان کا ہندستان سے موہ چھٹ پایا ہے ! ابھی تک اس کو کامن ویلتھ کا حصہ بنائے ہوئے ہیں اور اپنی جان جوکھم میں ڈال کر جہازی بیڑے اور ہوائی بیڑے کی کمان اپنے ہاتھ میں لئے ہوئے ہیں ۔ نہ جانے ہندستان کی خاطر کب اُن کی جان پر آ بنے ۔

باپو، انگریزوں کی یہی بات یاد آکر آج میں امریکیوں سے کہنا چاہتا ہوں کہ وہ ہندستان کے موہ میں نہ پڑیں ۔ موہ میں جو پڑتا وہ مٹ جاتا ہے ۔ وہ بھی موہ میں پڑکر مٹ جائیں گے ۔ باپو، یہ کسے نہیں معلوم کہ بچے کو ذرا گود کھلاکر اس سے موہ ہو جاتا ہے ۔ اگر کہیں اس بچے پر سو پچاس خرچ کر دیے جائیں اور دو چار دن اس کی مالش کر دی جائے اور اُسے نہلا دھلا دیا جائے تو پھر ماں پر رعب جمانے کی ہمت ہو جاتی ہے اور کہیں اُسے پڑھا لکھا دیا جائے تو اُسے ماں سے چھین کر اپنے پاس رکھنے کو جی چاہنے لگتا ہے ۔ اور ان کی خاطر جان جوکھم میں ڈالنے کو تیاری میں رہنے لگ جانے کو من ہونے لگتا ہے ۔ اسی سے تو میں کہہ رہا ہوں کہ امریکیوں کو ہندستان کے موہ میں نہیں پھنسنا چاہئے ۔ اس میں ہندستان کا اتنا نہیں بگڑیگا جتنا امریکیوں کا ۔

باپو، اور پھر امریکیوں کے سامنے تو چین کی مثال موجود ہے ۔ اس سے موہ بڑھا کر آج تک موہ جال سے نہیں نکل پائے ۔ چیانگ کے ساتھ انہوں نے جو دوستی

बापू से

बापू, 2 अक्तूबर का दिन हिन्द की हकूमत ने आपके नाम पर निछावर कर रखा है. उस दिन, सब को नहीं, कुछ को छुट्टी जरूर रहती है. हां, उस दिन आप की याद अनगिनत आदमियों को आ जाती है. मैं भी उनमें से एक हूं. मुझे भी आपकी याद आ गई.

आप के इस दुनिया में रहते रहते और आपके यहां से चले जाने के बाद से कई 2 अक्तूबर आ चुकीं, पर इस बार की 2 अक्तूबर को मन में जितनी ऐंठन हुइ उतनी पहले कभी नहीं. ऐंठन की तकलीफ़ बिलकुल ऐसी थी जैसी मां को बच्चा जनमते वक़्त होती है. मैं औरत नहीं, मैं मां की जनन कष्ट की बात क्या जानूं ? फिर मैंने ऐसी बात क्यों कही ? उसका कारन है. उस दिन मुझ में काम करने के बल का जन्म हुआ. उम्र्सर की उमर ने मेरी हिम्मत को इतना नहीं तोड़ा जितना आंखों की रोशनी की कमी ने, पर, उस दिन आंखों की कमज़ोरी पर भी काम करने की हिम्मत असर डाल बैठी.

असर तो पड़ा, पर यह कितने अचरज की बात है कि वह असर आपकी याद की वजह से न था, और, न उसका कुछ भी सम्बन्ध आपकी ज़ात से था. वह असर शायद शुरू हुआ होगा आपके दिन ही कम्यूनिटी प्रोजेक्ट को खोलने की रस्म अदा होने से, पर वह पूरे ज़ोर पर आया उस वक़्त जब लुई फ़िशर नामी एक अमरीकी ने व्यास पीठ से गांधी धर्म प्रवचन शुरू किया.

बापू, मैं सच्चे जी से लुई फ़िशर का अहसानमन्द हूं, क्योंकि उन्होंने मेरी आंखें खोल दीं. मेरे अन्दर जो अमरीकियों से नफ़रत थी वह एक दम दूर कर दी, और बापू, मुझे काफ़ी उम्मीद है कि वह अब कभी मेरे मन में जगह न बना पायेगी.

अगर मैं इतना उमर वाला हूं कि मैं यह कह सके कि मुझे अमरीकियों से ऐसी ही मुहब्बत पैदा हो गई है जैसे किसी बाबा को अपने पोते से, तो यह बढ़ कर कहना न समझा जाय.

अब, किसी बाबा का पोता अगर ज़हरीली दवा पीने लगे तो क्या उसका बाबा सिर्फ़ इस वजह से उसके हाथ से वह दवा न छीने, कि वैसा करने से बच्चा रोयेगा ? हरगिज़ नहीं. वह उसे रोने देगा और उससे वह प्याला छीन लेगा जिसमें ज़हरीली दवा भरी हुई है और जिसे वह मुंह को लगाने वाला था या मुंह को लगाये हुए था. अगर वह ऐसा नहीं करता तो यह सबूत देता है कि उसे अपना पोता प्यारा नहीं. ठीक इसी तरह अमरीकी सरकार ज़हर

باپو سے

باپو' 2 اکتوبر کا دن هند کی حکومت نے آپ کے نام
ر نچھاور کر رکھا ھے . اُس دن' سب کو نہیں' کچھ کو
ھٹی ضرور رهتی ھے . ھاں' اس دن آپ کی یاد انگنت
دمیوں کو آ جاتی ھے . میں بھی اُن میں سے ایک ھوں.
جھے بھی آپ کی یاد آگئی .

آپ کے اس دنیا میں رهتے رهتے اور آپ کے یہاں سے
لے جانے کے بعد سے کئی 2 اکتوبر آچکیں. پر اس بار کی
2 اکتوبر کو من میں جتنی اینٹھن هوئی اتنی پہلے
بھی نہیں. اینٹھن کی تکلیف بالکل ایسی تھی جیسی
ماں کو بچہ جنمتے وقت هوتی ھے. میں عورت نہیں' میں
ماں کی جنن کشت کی بات کیا جانوں؟ پھر میں نے
یسی بات کیوں کہی؟ اُس کا کارن ھے. اُس دن مجھ میں
ام کرنے کے بل کا جنم هوا. اُنہتر کی عمر نے میری همت
و اتنا نہیں توڑا جتنا آنکھوں کی روشنی کی کمی نے'
ر' اس دن آنکھوں کی کمزوری پر بھی کام کرنے کی همت
ر ڈال بیٹھی .

اثر تو پڑا' پر یہ کتنے اچرج کی بات ھے کہ وہ اثر آپ کی
اد کی وجہ سے نہ تھا اور نہ اس کا کچھ بھی سمبندھ آپ کی
ات سے تھا. وہ اثر شاید شروع هوا هوگا آپ کے دن هی
کمیونٹی پروجیکٹ کو کھولنے کی رسم ادا هونے سے' پر
ہ پورے زور پر آیا اس وقت جب لوئی فشر نامی ایک
مریکی نے ویاس پیٹھ سے گاندھی دھرم پروچن شروع کیا.

باپو' میں سچے جی سے لوئی فشر کا احسان مند هوں'
یونکہ اُنہوں نے میری آنکھیں کھول دیں. میرے اندر جو
مریکیوں سے نفرت تھی وہ ایک دم دور کردی' اور باپو'
مجھے کافی امید ھے کہ وہ اب کبھی میرے من میں جگہ
ہ بنا پائے گی .

اگر میں اتنا عمر والا هوں کہ میں یہ کہ سکوں کہ
مجھے امریکیوں سے ایسی هی محبت پیدا هوگئی ھے
جیسے کسی بابا کو اپنے پوتے سے' تو یہ بڑھکر کہنا نہ
سمجھا جائے .

اب' کسی بابا کا پوتا اگر زهریلی دوا پینے لگے تو کیا
س کا بابا صرف اس وجہ سے اس کے هاتھ سے وہ دوا نہ
چھینے' کہ ویسا کرنے سے بچہ روئیگا؟ هرگز نہیں . وہ اسے
ونے دیگا اور اس سے وہ پیالہ چھین لیگا جس میں زهریلی
دوا بھری هوئی ھے اور جسے وہ منہ کو لگانے والا تھا یا منہ
و لگائے هوئے تھا. اگر وہ ایسا نہیں کرتا تو یہ ثبوت دیتا ھے
کہ اسے اپنا پوتہ پیارا نہیں. ٹھیک اس طرح امریکی سرکار زهر

जब किसी इन्सान में यह सच्ची इन्सानियत जागती है तो वह बिना किसी दुनियावी रिश्ते के हर एक का अपना बन जाता है. भेद भावों में ज़िन्दगी बिताने वाला इन्सान यह तो नहीं समझ पाता कि उस आदमी से उसका क्या रिश्ता है मगर अपने दिल की गहराईयों में उसके लिये जगह पाता है.

इन्सान में सच्ची इन्सानियत पैदा करने के लिये दुनिया में हमेशा ही कुछ लोगों ने कोशिशें की हैं. आज भी अलग अलग नामों से यह कोशिशें जारी हैं. हमारे देश में महात्मा गांधी ने इस तरह की कोशिश 'सर्व धर्म समभाव' के नाम से की. इस ख़याल को लोग अच्छा तो समझते रहे मगर ऐसे बहुत कम हुए जिन्होंने इसे अपने दिल की गहराइयों में उतार लिया हो.

उन्हीं कम लोगों में से जैसा कि उस दिन काका साहब ने दोहराया, एक थे भाई किशोरलाल मशरूवाला.

'सर्व धर्म समभाव' यानी हर मज़हब को यकसां मानना और इस तरह मज़हब की बिना पर किसी इन्सान से ग़ैरियत न बरतना, किसी धर्म को बुरा या कम न समझना, इन्सान को इन्सान के क़रीब करना है, और सच्ची इन्सानियत को पैदा करने की कोशिश करना है.

आज जब हमारे देश में धर्म के नाम पर भेद भाव की दीवारें खड़ी हैं और कुछ लोग इन दीवारों को और मज़बूत करने में लगे हुए हैं, काश, हम महात्मा गांधी और भाई किशोरलाल मशरूवाला के इस जीवन सन्देश को ईमानदारी से अपना सकते और यह महसूस कर सकते कि अगरचे एक सुतून गिर गया मगर इन्सानियत के महल को कोई धक्का न लगने पाएगा !

किशोरलाल मशरूवाला हमारे बिरले कार्यकर्ताओं में से एक हैं. काम करते हुए वह कभी थकते नहीं. वह अत्यन्त जागरूक रहते हैं. उनकी जाग्रत निगाह से ब्योरे की कोई भी बात नहीं छूट पाती. वह एक तत्वज्ञानी हैं...वह एक स्वतंत्र चिंतक हैं. वह राजनीतिज्ञ नहीं, एक पैदायशी समाज सुधारक हैं. सब धर्मों के विद्यार्थी हैं. उनमें धार्मिक कट्टरता का कोई निशान नहीं. वह ज़िम्मेवारी ओढ़ने और विज्ञापन बाज़ी से भागते है. इतने पर भी कोई ऐसा आदमी न मिलेगा जो ज़िम्मेवारी ले लेने पर उसे उनके मुक़ाबले ज़ियादा अच्छे तौर के साथ पूरा कर सके.

—महात्मा गांधी

ایک ستون گر گیا

جب کسی إنسان میں یہ سچی إنسانیت جاگتی ہے تو وہ بنا کسی دنیاوی رشتے کے ہر ایک کا اپنا بن جاتا ہے . بھید بھاوں میں زندگی بتانے والا إنسان یہ تو نہیں سمجھ پاتا کہ اُس آدمی سے اُس کا کیا رشتہ ہے مگر اپنے دل کی گہرائیوں میں اس کے لئے جگہ پاتا ہے .

إنسان میں سچی إنسانیت پیدا کرنے کے لئے دنیا میں ہمیشہ ہی کچھ لوگوں نے کوششیں کی ہیں . آج بھی الگ الگ ناموں سے یہ کوششیں جاری ہیں . ہمارے دیش میں مہاتما گاندھی نےاس طرح کی کوشش 'سرو دھرم سمبھاؤ' کے نام سے کی. اس خیال کو لوگ اچھا تو سمجھتے رہے مگر ایسے بہت کم ہوئے جنھوں نے اُسے اپنے دل کی گہرائیوں میں اُتار لیا ہو.

اُنہیں کم لوگوں میں سے جیسا کہ اس دن کاکا صاحب نے دہرایا' ایک تھے بھائی کشور لال مشرو والا .

' سرو دھرم سمبھاؤ ' یعنی ہر مذہب کو یکساں ماننا اور اِسطرح مذہب کی بنا پر إنسان سے غیریت نہ برتنا' کسی دھرم کو برا یا کم نہ سمجھنا' إنسان کو إنسان کے قریب کرنا ہے' اور سچی إنسانیت کو پیدا کرنے کی کوشش کرنا ہے .

آج جب ہمارے دیش میں دھرم کے نام پر بھید بھاؤ' کی دیواریں کھڑی ہیں اور کچھ لوگ ان دیواروں کو اور مضبوط کرنے میں لگے ہوئے ہیں' کاش' ہم مہاتما گاندھی اور بھائی کشور لال مشرو والا کے اس جیون سندیش کو ایمانداری سے اپنا سکتے اور یہ محسوس کر سکتے کہ اگرچہ ایک ستون گر گیا مگر إنسانیت کے محل کو کوئی دھکا نہ لگنے پائے گا !

کشور لال مشرو والا ہمارے برلے کاریہ کارتاوں میں سے ایک ہیں . کام کرتے ہوئے وہ کبھی تھکتے نہیں . وہ اتینت جاگروک رہتے ہیں . اُن کی جاگرت نگاہ سے بیورے کی کوئی بھی بات نہیں چھوٹ پاتی. وہ ایک تتوگیانی ہیں...وہ ایک سوتنتر چنتک ہیں . وہ راج نیتگیہ نہیں' ایک پیدائشی سماج سدھارک ہیں . سب دھرموں کے ودیارتھی ہیں . اُن میں دھارمک کٹرتا کا کوئی نشان نہیں . وہ ذمہداری اوڑھنے اور وگیاپن بازی سے بھاگتے ہیں . اتنے پر بھی کوئی ایسا آدمی نہ ملے گا جو ذمہداری لے لینے پر اُسے اُن کے مقابلہ زیادہ اچھے طور کے ساتھ پورا کر سکے .

— مہاتما گاندھی

गए थे कि वह किस जाति या धर्म या किस देश के हैं, और करोड़ों ही आदमी सिर्फ़ इन्सान रह गए थे. ऐसा क्यों होता है? इन्सान की एक शक्ल तो वह है जिसका उसके जिस्म के लिहाज़ से जात, धर्म या देश से सम्बन्ध होता है. यह शक्ल उसकी ऊपरी है, उसकी दूसरी शक्ल जिसका सम्बन्ध उसकी रूह से होता है, बुनियादी और भीतरी है.

इन्सान की इन दोनों शक्लों में जो खींचातानी होती रहती है उसके नतीजे में कभी इन्सान के दिल में नफ़रत और दुश्मनी की आग भड़कती है और वह तंगनज़री और तंग ख़्याली का शिकार हो कर इन्सान की शक्ल में हैवान से भी नीचे चला जाता है, और कभी उसमें सच्ची इन्सानियत इस तरह जागती है कि बावजूद अपने जिस्म के जो किसी जात, धर्म या देश से सम्बन्ध रखता है, उसका दिल इन्सानियत के रिश्ते को ही क़बूल करता है. ऐसी हालत में इन्सान सारे इन्सानों का अपना बन जाता है और कोई इन्सान उसके पास जा कर परायापन महसूस नहीं कर पाता.

भाई किशोरलाल ऐसे ही लोगों में से एक थे.

अगरचे बहुत से हिन्दू उनके विचारों से सहमत न थे मगर उनके सामने जा कर सब यह महसूस करते थे कि किशोरलाल भाई का ही रास्ता ठीक है, उसी से हिन्दू धर्म का और देश का कल्यान हो सकता है. मुसलमान यह देखते हुए भी कि उसके सामने एक हिन्दू बैठा हुआ है यह महसूस करता था कि किशोरलाल भाई का ही रास्ता सही है और उसी से मुसलमानों का और मुल्क का भला हो सकता है. इसी तरह एक ईसाई भी उनके सामने यही महसूस करता था कि भाई किशोरलाल की इस सच्ची इन्सानियत ने उसके दिल से सारे भेद भावों को ख़त्म कर दिया था. उनका ज़िक्र करते हुए हमें मशहूर सूफ़ी संत मौलाना जलालउद्दीन रूमी की शवयात्रा की याद आ गई. रूमी के चरित लेखकों ने लिखा है कि जब उनकी अरथी का जलूस क़ब्रिस्तान की तरफ़ चला, तो जुलूस में मुसलमान, ईसाई और यहूदी सब शामिल हुए. धर्म के ऊपरी रूप को मानने वाले कुछ मुसलमानों ने ईसाइयों से पूछा "आप लोगों का मौलाना से क्या सम्बन्ध था?" ईसाइयों ने जवाब दिया "अगर वह तुम्हारे मुहम्मद थे तो हमारे ईसा थे." फिर यहूदियों से पूछा गया "आप लोगों का मौलाना से क्या सम्बन्ध था?" यहूदियों ने जवाब दिया "अगर मौलाना मुसलमानों के मुहम्मद और ईसाइयों के ईसा थे तो वह हमारे मूसा थे."

दर असल इन्सानियत इसी का नाम है, जो सारे ऊपरी और बनावटी भेदों को ख़तम कर दे और एक इन्सानियत के रिश्ते को ही क़ायम रक्खे.

گئے تھے کہ وہ کس جات یا دھرم یا کس دیش کے ہیں' اور کروڑوں ہی آدمی صرف انسان رہ گئے تھے. ایسا کیوں ہوتا ہے؟ انسان کی ایک شکل تو وہ ہے جس کا اس کے جسم کے لحاظ سے جات' دھرم یا دیش سے سمبندھ ہوتا ہے. یہ شکل اسکی اوپری ہے' اسکی دوسری شکل جس کا سمبندھ اسکی روح سے ہوتا ہے' بنیادی اور بھیتری ہے.

انسان کی ان دونوں شکلوں میں جو کھینچا تانی ہوتی رہتی ہے اس کے نتیجے میں کبھی انسان کے دل میں نفرت اور دشمنی کی آگ بھڑکتی ہے اور وہ تنگ نظری اور تنگ خیالی کا شکار ہو کر انسان کی شکل میں حیوان سے بھی نیچے چلا جاتا ہے' اور کبھی اس میں سچی انسانیت اس طرح جاگتی ہے کہ باوجود اپنے جسم کے جو کسی جات' دھرم یا دیش سے سمبندھ رکھتا ہے' اس کا دل انسانیت کے رشتے کو ہی قبول کرتا ہے. ایسی حالت میں انسان سارے انسانوں کا اپنا بن جاتا ہے اور کوئی انسان اس کے پاس جا کر پرایاپن محسوس نہیں کر پاتا.

بھائی کشور لال ایسے ہی لوگوں میں سے ایک تھے.

اگرچہ بہت سے ہندو ان کے وچاروں سے سہمت نہ تھے مگر ان کے سامنے جا کر سب یہ محسوس کرتے تھے کہ کشور لال بھائی کا ہی راستہ ٹھیک ہے' اسی سے ہندو دھرم کا اور دیش کا کلیان ہو سکتا ہے. مسلمان یہ دیکھتے ہوئے بھی کہ اس کے سامنے ایک ہندو بیٹھا ہوا ہے یہ محسوس کرتا تھا کہ کشور لال بھائی کا ہی راستہ صحیح ہے اور اسی سے مسلمانوں کا اور ملک کا بھلا ہو سکتا ہے. اسی طرح ایک عیسائی بھی ان کے سامنے بھی محسوس کرتا تھا کہ بھائی کشور لال کی اس سچی انسانیت نے اس کے دل سے سارے بھید بھاؤوں کو ختم کر دیا تھا. ان کا ذکر کرتے ہوئے ہمیں مشہور صوفی سنت مولانا جلال الدین رومی کی شو یاترا کی یاد آ گئی. رومی کے چرت لیکھکوں نے لکھا ہے کہ جب ان کی ارتھی کا جلوس قبرستان کی طرف چلا تو جلوس میں مسلمان' عیسائی اور یہودی سب شامل ہوئے. دھرم کے اوپری روپ کو ماننے والے کچھ مسلمانوں نے عیسائیوں سے پوچھا "آپ لوگوں کا مولانا سے کیا سمبندھ تھا؟" عیسائیوں نے جواب دیا "اگر وہ تمہارے محمد تھے تو ہمارے عیسیٰ تھے." پھر یہودیوں سے پوچھا گیا "آپ لوگوں کا مولانا سے کیا سمبندھ تھا؟" یہودیوں نے جواب دیا "اگر مولانا مسلمانوں کے محمد اور عیسائیوں کے عیسیٰ تھے تو وہ ہمارے موسیٰ تھے."

دراصل انسانیت اسی کا نام ہے' جو سارے اوپری اور بناوٹی بھیدوں کو ختم کر دے اور ایک انسانیت کے رشتے کو ہی قائم رکھے.

एक सुतून गिर गया

(रसूल अहमद 'अबोध')

9 सितम्बर की शाम को जब मैंने यह खबर सुनी कि भाई किशोरलाल मशरूवाला चल बसे तो मुझे ऐसा महसूस आ कि एक सतून गिर गया और दर असल एक सतून ी गिर गया. ईंट पत्थर से बने हुए महल का सतून नहीं, न्सानियत के महल का सतून,

बात की बात में यह खबर सारे वर्धा में, और फिर सारे देश में फैल गई. वर्धा की रचनात्मक संस्थाओं के लोग और दूसरे नगर वासी अन्तिम दर्शनों के लिये उमड़ पड़े. रात बीती, दिन निकला, 9 बजे के लगभग शव यात्रा का जलूस चला, और क़रीब ग्यारह बजे भाई किशोरलाल का दुबला पतला और जर जर शरीर राख के एक ढेर में बदल गया.

यों तो आदमी किसी की भी मौत से दुख ही महसूस करता है मगर अपने किसी कुटुम्बी की मौत से जो शोक होता है वह एक तरह असह होता है. कुछ लोग होते हैं जिनसे कुटुम्बी या दोस्त अहबाब की तरह का कोई खास अपनापन नहीं होता फिर भी उनकी मौत से दिल को धक्का लगता है.

ऐसे लोग जिनकी मौत से दिल को धक्का लगता है, कभी कभी अपनी जात और धर्म के भी नहीं होते और ज़मीन के उस टुकड़े के भी नहीं होते जिसे हम अपना देश कहते हैं. फिर भी उनकी मौत से ऐसा महसूस होता है कि मरने वाले से सचमुच अपना कोई सम्बन्ध था. ऐसी मौतें अलग अलग धर्मों और पन्थों, और अलग अलग जाति और समाज के लोगों को कुछ देर के लिये इस तरह एक सतह पर ला कर इन्सानियत के रिश्ते को जगा देती हैं कि लोग भूल जाते हैं कि वह किस जात के या किस धर्म के और किस देश के हैं.

वह इन्सान जो तरह तरह के गिरोहों में बंटे हुए हैं और जिन का दिल टुकड़ों टुकड़ों में बंट कर ही खुशी महसूस करता है, वह अपने सारे भेदों को भूल कर क्यों एक सतह पर आ जाते हैं, और क्यों एक खास आदमी की मौत से ऐसा हो जाता है.

आज से पांच साल पहले जब महात्मा गांधी अपने दिल का दर्द लिये हम से जुदा हुए तो हमारे देश के अलग अलग जाति और धर्म के लोग और देश विदेश के लोग जिन्होंने गांधी जी को कभी देखा भी न था, सब एक सतह पर आ गए थे. कुछ समय के लिये करोड़ों आदमी यह भूल

ایک ستون گر گیا

(رسول احمد ' ابودھ ')

9 ستمبر کی شام کو جب میں نے یہ خبر سنی کہ بھائی کشور لال مشروالا چل بسے تو مجھے ایسا محسوس ہوا کہ ایک ستون گر گیا' اور دراصل ایک ستون ہی گر گیا . اینٹ پتھر سے بنے ہوئے محل کا ستون نہیں' انسانیت کے محل کا ستون .

بات کی بات میں یہ خبر سارے وردھا میں' اور پھر سارے دیش میں پھیل گئی . وردھا کی رچناتمک سنستھاؤں کے لوگ اور دوسرے نگر واسی انتم درشنوں کے لئے امڈ پڑے . رات بیتی' دن نکلا' 9 بجے کے لگ بھگ شو یاترا کا جلوس چلا' اور قریب 11 بجے بھائی کشور لال کا دبلا پتلا اور جرجر شریر راکھ کے ایک ڈھیر میں بدل گیا .

یوں تو آدمی کسی کی بھی موت سے دکھ ہی محسوس کرتا ہے مگر اپنے کسی کٹمبی کی موت سے جو شوک ہوتا ہے وہ ایک طرح اسہ ہوتا ہے . کچھ لوگ ہوتے ہیں جن سے کٹمبی یا دوست احباب کی طرح کا کوئی خاص اپناپن نہیں ہوتا پھر بھی اُن کی موت سے دل کو دھکا لگتا ہے.

ایسے لوگ جن کی موت سے دل کو دھکا لگتا ہے' کبھی کبھی اپنی جات اور دھرم کے بھی نہیں ہوتے اور زمین کے اس ٹکڑے کے بھی نہیں ہوتے جسے ہم اپنا دیش کہتے ہیں . پھر بھی اُن کی موت سے ایسا محسوس ہوتا ہے کہ مرنے والے سے سچ مچ اپنا کوئی سمبندھ تھا . ایسی موتیں الگ الگ دھرموں اور پنتھوں' اور الگ الگ جات اور سماج کے لوگوں کو کچھ دیر کے لئے اس طرح ایک سطح پر لا کر انسانیت کے رشتے کو جگا دیتی ہیں کہ لوگ بھول جاتے ہیں کہ وہ کس جات کے یا کس دھرم کے اور کس دیش کے ہیں .

وہ انسان جو طرح طرح کے گروہوں میں بٹے ہوئے ہیں اور جن کا دل ٹکڑوں ٹکڑوں میں بٹ کر ہی خوشی محسوس کرتا ہے' وہ اپنے سارے بھیدوں کو بھول کر کیوں ایک سطح پر آجاتے ہیں' اور کیوں ایک خاص آدمی کی موت سے ایسا ہو جاتا ہے .

آج سے پانچ سال پہلے جب مہاتما گاندھی اپنے دل کا درد لئے ہم سے جدا ہوئے تو ہمارے دیش کے الگ الگ جات اور دھرم کے لوگ اور دیش ودیش کے لوگ جنہوں نے گاندھی جی کو کبھی دیکھا بھی نہ تھا' سب ایک سطح پر آ گئے تھے. کچھ سمے کے لئے کروڑوں آدمی یہ بھول

12—रेशम में 25 सेर और रोज़वेज़ में 10 सेर तक सूत, रेशम और सूत रेशम से तैयार हुए हैन्डलूम कपड़ों को बग़ैर बुक कराए ले आने ले जाने की इजाज़त हो.

13—सरकारी इस्तेमाल में आने वाले तमाम कपड़े हैन्डलूम के हों.

14—हकूमत हैन्डलूम के कपड़ों को ज़ियादा से ज़ियादा पब्लिसिटी दे और हकूमत ख़ुद बाहर मंडियां तलाश करे.

15—हकूमत की तरफ़ से बेकार बुनकरों को हफ़्तेवार इमदादी भत्ता दिया जाए जैसा कि हकूमत मद्रास ने किया है.

16—बेसहारा, अपाहिज और बेकार बुनकरों को मुफ़्त राशन दिया जाए.

17—मुबारकपुर और कोपागंज में फ़ौरन राशन की दूकानें खोली जायें.

18—मुबारकपुर और उसके आस पास के बेकार रेशमी हैन्डलूम बुनकरों को मदद देने और बारोज़गार बनाने के लिये सरकार इमदादी स्कीमें खोले और सरकारी आर्डर दे.

19—बुनकरों को बिके माल की क़ीमत फ़ौरन अदा की जाए.

20—बुनकर दस्तकारी की जांच पड़ताल और तरक़्क़ी के लिये हकूमत फ़ौरन एक तहक़ीक़ाती कमेटी मुकर्रर करे जिसमें बुनकर यूनियन के भी नुमायन्दे हों.

21—बुनकर यूनियन को हकूमत बुनकरों की नुमायन्दा जमात माने.

22—डिस्ट्रिक्ट हैन्डलूम वीवर्स सोसाइटी से अमानत का रुपया वापिस किया जाए.

23—हिस्सों का रुपया वापिस करने की सहूलियत दी जाए.

बुनकर यूनियन, ज़िला आज़मगढ़.

मैं चाहता हूँ कि धोती और साड़ी की बुनाई हाथ करघे पर ही की जाये. यह सवाल महज़ कुछ गज़ कपड़े का नहीं है बल्कि इन्सानी ख़ान्दानों का सवाल है जिनकी तरफ़ से क्या सूबे की सरकारें और क्या नई दिल्ली की सरकार लापरवाह नहीं हो सकतीं. हैन्डलूम के धन्धे को कोई हिफ़ाज़त नहीं दी गई. इसके बरक्स मिलों को अरसे से सरकार ने हिफ़ाज़त दी है. इस वजह से दोनों में झगड़ा खड़ा हो गया है. इस सवाल का मुनासिब, इन्साफ़ भरा और आर्थिक लिहाज़ से सच्चा जवाब यही है कि धोती और साड़ी को हैन्डलूम के लिये रिज़र्व कर दिया जाये.

—राजगोपालाचारी

12—ریشم میں 25 سیر اور روزویز میں 10 سیر تک سوت، ریشم اور سوت ریشم سے تیار ہوئے ہینڈلوم کپڑوں کو بغیر بک کرائے لے آنے لے جانے کی اجازت ہو۔

13—سرکاری استعمال میں آنے والے تمام کپڑے ہینڈلوم کے ہوں۔

14—حکومت ہینڈلوم کے کپڑوں کو زیادہ سے زیادہ پبلسٹی دے اور حکومت خود باہر منڈیاں تلاش کرے۔

15—حکومت کی طرف سے بیکار بنکروں کو ہفتہ وار امدادی بھتہ دیا جائے جیسا کہ حکومت مدراس نے کیا ہے۔

16—بے سہارا، اپاہج اور بیکار بنکروں کو مفت راشن دیا جائے۔

17—مبارک پور اور کوپاگنج میں فوراً راشن کی دوکانیں کھولی جائیں۔

18—مبارک پور اور اس کے آس پاس کے بیکار ریشمی ہینڈلوم بنکروں کو مدد دینے اور بارozگار بنانے کے لئے سرکار امدادی اسکیمیں کھولے اور سرکاری آرڈر دے۔

19—بنکروں کو بکے مال کی قیمت فوراً ادا کی جائے۔

20—بنکر دستکاری کی جانچ پڑتال اور ترقی کے لئے حکومت فوراً ایک تحقیقاتی کمیٹی مقرر کرے جس میں بنکر یونین کے بھی نمائندے ہوں۔

21—بنکر یونین کو حکومت بنکروں کی نمائندہ جماعت مانے۔

22—ڈسٹرکٹ ہینڈلوم ویورس سوسائٹی سے امانت کا روپیہ واپس کیا جائے۔

23—حصوں کا روپیہ واپس کرنے کی سہولیت دی جائے۔

بنکر یونین، ضلع اعظم گڈھ

میں چاہتا ہوں کہ دھوتی اور ساڑی کی بنائی ہاتھ کرگھے پر ہی کی جائے۔ یہ سوال محض کچھ گز کپڑے کا نہیں ہے بلکہ انسانی خاندانوں کا سوال ہے جن کی طرف سے کیا صوبے کی سرکاریں اور کیا نئی دلی کی سرکار لاپرواہ نہیں ہوسکتی۔ ہینڈلوم کے دھندے کو کوئی حفاظت نہیں دی گئی۔ اس کے برعکس کپڑے کی ملوں کو عرصہ سے سرکار نے حفاظت دی ہے۔ اس وجہ سے دونوں میں جھگڑا کھڑا ہوگیا ہے۔ اس سوال کا مناسب، انصاف بھرا اور آرتھک لحاظ سے سچا جواب یہی ہے کہ دھوتی اور ساڑی کو ہینڈلوم کے لئے ریزرو کر دیا جائے۔

راجگوپال آچاری

इसलिये हम दरख्वास्त करते हैं कि नीचे लिखी मांगों फ़ौरन मंज़ूर किया जाये और इस धन्धे को और हम करों को तबाही से बचाया जाये.

23 सितम्बर 1952.

❀ ❀ ❀ ❀

वैनशन के अहम फ़ैसले

1—इन मांगों पर अक्तूबर के आखिर तक कम से 40 हज़ार दस्तख़त कराये जायें.

2—अक्तूबर के आखिर तक बुनकर यूनियन के 5 ार मेम्बर बनाये जायें.

❀ ❀ ❀ ❀

बुनकर यूनियन की मांगें.

1—सूत का भाव 40 से 50 फ़ी सदी तक फ़ौरन कम या जाये.

2—सूत के देश से बाहर जाने पर पाबन्दी लगाई ए.

3—मऊ में फ़ौरन सरकार की तरफ़ से एक सूत कातने ाी स्पिनिंग मिल खोली जाये जो ख़ास तौर से इसी स्म का अच्छा सूत तैयार करे जिसकी ज़रूरत आज़म- के बुनकरों को होती है.

4—यू. पी. हुकूमत सूती करघों के लिये कम से कम 200 ये और रेशमी करघों के लिये 500 रुपया क़र्ज़ बिला दे.

5—खद्दर की तरह हुकूमत हैन्डलूम कपड़ों पर भी दो ाना फ़ी रुपया मदद दे.

6—विदेशों जैसे जापान और इटली से आने वाले रेशम र केले पर से कस्टम ड्यूटी ख़त्म की जाये और हिन्दुस्तान रेशम और केले पैदा करने वाली कारीगरियों को देशी मुक़ाबले से बचाने के लिये हुकूमत उन्हें मदद दे.

7—विदेशों से आने वाले हर तरह के रेशम और केले कपड़ों की आमद पर पाबन्दी लगा दी जाए जिसकी एक क्ल यह है कि उन पर बहुत ज़ियादा ड्यूटी लगाकर यहां रेशमी दस्तकारी को बचाया जाए.

8—बाहर भेजे जाने वाले हैन्डलूम कपड़ों पर परमिट सटम ख़त्म किया जाए.

9—बाहर जाने वाले तमाम कपड़ों में 25 फ़ी सदी न्डलूम का कपड़ा ज़रूर हो.

10—हुकूमत ने जिन ख़ास क़िस्म के कपड़ों को पैदा ने पर पाबन्दी लगाई है उस पर सख़्ती से अमल किया ए क्योंकि मिल मालिक तरह तरह की तिकड़मों से फ़रेब कर उस पर अमल नहीं करते हैं.

11—हर तरह की साड़ियों का एक बड़ा हिस्सा बुनकर न्धे के लिये महफ़ूज़ कर दिया जाए.

اس لئے ہم درخواست کرتے ہیں کہ نیچے لکھی مانگوں کو فوراً منظور کیا جائے اور اس دھندے کو اور ہم بنکروں کو تباہی سے بچایا جائے۔

23 ستمبر 1952.

❀ ❀ ❀ ❀

کنوینشن کے اہم فیصلے

1—اِن مانگوں پر اکتوبر کے آخر تک کم سے کم 40 ہزار دستخط کرائے جائیں.

2—اکتوبر کے آخر تک بنکر یونین کے 5 ہزار ممبر بنائیں جائیں۔

❀ ❀ ❀ ❀

بنکریونین کی مانگیں

1—سوت کا بھاو 40 سے 50 فیصدی تک فوراً کم کیا جائے۔

2—سوت کے دیش سے باہر جانے پر پابندی لگائی جائے۔

3—مئو میں فوراً سرکار کی طرف سے ایک سوت کاتنے والی اسپننگ مل کھولی جائے جو خاص طور سے اسی قسم کا اچھا سوت تیار کرے جس کی ضرورت اعظم گڈھ کے بنکروں کو ہوتی ہے۔

4—یو۔ پی۔ حکومت سوتی کرگھوں کے لئے کم سے کم 200 روپیہ اور ریشمی کرگھوں کے لئے 500 روپیہ قرض بلا سود دے۔

5—کھدر کی طرح حکومت ہینڈلوم کپڑوں پر بھی دو آنہ فی روپیہ مدد دے۔

6—بدیشوں جیسے جاپان اور اٹلی سے آنے والے ریشم اور کیلے پر سے کسٹم ڈیوٹی ختم کی جائے اور ہندستان میں ریشم اور کیلے پیدا کرنے والی کاریگریوں کو بدیشی مقابلے سے بچانے کے لئے حکومت انہیں مدد دے۔

7—بدیشوں سے آنے والے ہر طرح کے ریشم اور کیلے کے کپڑوں کی آمد پر پابندی لگا دی جائے جس کی ایک شکل یہ ہے کہ ان پر بہت زیادہ ڈیوٹی لگا کر یہاں کی ریشمی دستکاری کو بچایا جائے۔

8—باہر بھیجے جانے والے ہینڈلوم کپڑوں پر پرمٹ سسٹم ختم کیا جائے۔

9—باہر جانے والے تمام کپڑوں میں 25 فیصدی ہینڈلوم کا کپڑا ضرور ہو۔

10—حکومت نے جن خاص قسم کے کپڑوں کو پیدا کرنے پر پابندی لگائی ہے اس پر سختی سے عمل کیا جائے کیوں کہ مل مالک طرح طرح کی تکڑموں سے فریب دیکر اس پر عمل نہیں کرتے ہیں۔

11—ہر طرح کی ساڑیوں کا ایک بڑا حصہ بنکر دھندے کے لئے محفوظ کر دیا جائے۔

रेशम और केला बहुत गिरां पड़ जाता है. जब इसको कम करने की बात की जाती है तो हुकूमत जवाब यह देती है कि उसने तो इतनी ज़्यादा ड्यूटी इसलिये लगा रखी है ताकि हिन्दुस्तान के अन्दर रेशम और केला पैदा करने वाली कारीगरी को बचाया जाये. मगर क्या आप इस कारीगरी को रेशमी बुन करों को तबाह कर के बचाना चाहते हैं? बुनाई के धन्धे और बुनकरों के फ़ायदे को देखते हुए होना यह चाहिये था कि बाहर से आने वाले रेशम और केले पर से ड्यूटी को कम किया जाये और हिन्दुस्तान में रेशम और केला पैदा करने वाली कारीगरी को बचाने के लिये हुकूमत उसे मदद दे.

4—चौथी वजह है बाहर माल भेजने पर परमिट सिस्टम का होना. उससे हैन्डलूम के कपड़ों की आज़ाद तिजारत के रास्ते में बहुत दिक़्क़तें पैदा होती हैं और बाज़ार और भी तंग हो जाता है.

5—पांचवीं वजह है दल्लालों और सट्टेबाज़ों की लूट-खसोट और बुनकरों के बिके हुए माल के दाम का फ़ौरन न मिलना.

6—छटी और बड़ी वजह है गौर्मिन्ट की आम ला परवाही और उसकी तबाहकुन पालिसी. हिन्दुस्तान की मरकज़ी या यू. पी. की सूबाई हुकूमत ने इस धन्धे से इतनी ज़ियादा ला परवाही बरती है कि यह दस्तकारी तबाह हो रही है. बजट के अन्दर इस दस्तकारी की बहाली और तरक़्क़ी के लिये सिर्फ़ एक लाख 92 हज़ार रुपया रखा गया है जब कि पूरे यू. पी. में 3 लाख 8 हज़ार से ज़ियादा कारखाने हैं, और यह सारी रक़म भी महकमे के अफ़सरों और मुलाज़िमों की तनख़ाह में या कुछ नाम के बेकार वीविंग स्कूलों में ही चली जाती है. बुनकर घरानों को एक पैसा नहीं मिलता, जबकि हुकूमत ने खादी के लिये जो बहुत कम बनती है 26 लाख 50 हज़ार से ज़ियादा रुपया दिया है. ज़रूरत मन्द बुनकरों को बिला सूद क़र्ज़ और मदद के लिये कोई सहूलियत नहीं पैदा की गई. सरमायेदारों को ज़ियादा मुनाफ़े कमाने और फिर बाद में सूत पर कन्ट्रोल के के लिये शोर मचाने की ग़रज़ से सरकार ने 18 जून 1952 को सूत को देश से बाहर भेजने पर से पाबन्दी हटा ली. हुकूमत ने बेरोज़गार बुनकरों को आबाद करने या रोज़गार देने के लिये कोई क़दम नहीं उठाया और किसी तरह की तक़ावी या भत्ते की सहूलियत नहीं दी. लापरवाही की हद यह है कि इस दस्तकारी की छान-बीन करने और तरक़्क़ी के रास्ते ढूंढने के लिये कोई एक तहक़ीक़ाती कमेटी भी नहीं मुक़र्रर की गई.

ऊपर लिखे कारनों से यह इतनी बड़ी हैन्डलूम दस्तकारी जिस पर लाखों ज़िन्दगियों का दारमदार है तबाही की तरफ़ जा रही है.

ئم اور کیلا بہت گراں پڑ جاتا ہے. جب اس کو کم کرنے کی
ت کی جاتی ہے تو حکومت جواب یہ دیتی ہے کہ اس
تو اتنی زیادہ ڈیوٹی اسی لئے لگا رکھی ہے تاکہ ہندستان
اندر ریشم اور کیلا پیدا کرنے والی کاریگری کو بچایا
ئے . مگر کیا آپ اس کاریگری کو ریشمی بنکروں کو
اہ کرکے بچانا چاہتے ہیں ؟ بنائی کے دھندے اور
کروں کے فائدے کو دیکھتے ہوئے ہونا یہ چاہئے تھا کہ
ر سے آنے والے ریشم اور کیلے پر سے ڈیوٹی کو کم کیا
ائے. اور ہندستان میں ریشم اور کیلا پیدا کرنے والی
کری کو بچانے کے لئے حکومت اسے مدد دے .

4—چوتھی وجہ ہے باہر مال بھیجنے پر پرمٹ
سٹم کا ہونا . اس سے ہینڈلوم کے کپڑوں کی آزاد تجارت
. راستے میں بہت دقتیں پیدا ہوتی ہیں اور بازار
ر بھی تنگ ہو جاتا ہے .

5—پانچویں وجہ ہے دلالوں اور سٹے داروں کی لوٹ
سوٹ اور بنکروں کے بکے ہوئے مال کے دام کا فوراً نہ ملنا.

6—چھٹی اور بڑی وجہ ہے گورنمنٹ کی عام لاپرواہی
ر اس کی تباہ کن پالیسی. ہندستان کی مرکزی یا
و. پی. کی صوبائی حکومت نے اس دھندے سے اتنی زیادہ
پرواہی برتی ہے کہ یہ دستکاری تباہ ہو رہی ہے . بجٹ
. اندر اس دستکاری کی بحالی اور ترقی کے لئے صرف
یک لاکھ 92 ہزار روپیہ رکھا گیا ہے جب کہ پورے یوپی
یں 3 لاکھ 8 ہزار سے زیادہ کارخانے ہیں ' اور یہ ساری
ئم بھی محکمے کے افسروں اور ملازموں کی تنخواہ میں
ا کچھ نام کے بیکار ویونگ اسکولوں میں ہی چلی
جاتی ہے. بنکر گھرانوں کو ایک پیسہ نہیں ملتا' جبکہ
حکومت نے کھادی کے لئے جو بہت کم بنتی ہے 26 لاکھ
50 ہزار سے زیادہ روپیہ دیا ہے. ضرورت مند بنکروں کو
بلا سود قرض اور مدد کے لئے کوئی سہولیت نہیں پیدا
کی گئی . سرمایہ داروں کو زیادہ منافع کمانے اور پھر
عد میں سوت پر کنٹرول کے لئے شور مچانے کی غرض
ے سرکار نے 18 جون 1952 کو سوت کو دیش سے باہر
بھیجنے پر سے پابندی ہٹالی. حکومت نے بےروزگار بنکروں
کو آباد کرنے یا روزگار دینے کے لئے کوئی قدم نہیں اٹھایا
ور کسی طرح کی تقاوی یا بھتے کی سہولیت نہیں دی.
اپرواہی کی حد یہ ہے کہ اس دستکاری کی چھان بین
رنے اور ترقی کے راستے ڈھونڈنے کے لئے کوئی ایک
تحقیقاتی کمیٹی بھی نہیں مقرر کی گئی .

اوپر لکھے کارنوں سے یہ اتنی بڑی ہینڈلوم دستکاری
جس پر لاکھوں زندگیوں کا دار مدار ہے تباہی کی طرف
جا رہی ہے.

दशहरा के बाद वाला बुहरान जो अब शुरू हो चुका कितना भयानक होगा इसके ख्याल से ही रोंगटे खड़े जाते हैं, क्योंकि बाज़ार लगातार कम होता जा रहा है, कसी कम होती जा रही है, और अब हर तरफ़ मऊ ला माल तैयार होता है.

इस तरह पूरे ज़िले की तसवीर यह निकलती है—

(i) कम से कम 75 फ़ी सदी करघे बन्द हैं या बन्द रहे हैं.

(ii) बुनकरों में आम बेकारी फैली हुई है. कम से 60 फ़ी सदी बुनकर बेकार हैं.

(iii) हैन्डलूम दस्तकारी तेज़ी से मुकम्मल तबाही की फ़ जा रही है.

सवाल पैदा होता है हैन्डलूम दस्तकारी में इस तेज़ रावट की वजह आख़िर क्या है. कुछ ख़ास वजहें नीचे जाती हैं.

1—पहली वजह है कि इस धन्धे में इस्तेमाल होने ी तमाम ख़ास चीज़ों जैसे सूत, रेशम, रंग वग़ैरा के हद दर्जा बढ़े हुए हैं. सूत ही का भाव सन 1949 के बले में आज दुगना है. ख़ुद हकूमत की फ़ैक्ट फ़ाइन्डिग टी की रिपोर्ट के मुताबिक़ हैन्डलूम के तैयार कपड़ों की त में 50 से 80 फ़ी सदी तक क़ीमत तो सिर्फ़ सूत ही निकल जाती है. बात बिल्कुल सही है. आज देहात में करों की हालत यह है कि किसी किसी माल को तैयार ने में उन्हें एक बन्डल सूत बुनने पर भी मुश्किल से चार आना मुनाफ़ा होता है.

सूत के चढ़ते दामों और तैयार माल के गिरते दामों ने इस धन्दे को इतना गिरा दिया है कि बुनकर परेशान कर भाग रहा है और फ़ाक़े कर रहा है.

2—दूसरी ख़ास वजह है मार्केट या बाज़ार का न होना, मार्केट का लगातार तंग होता जाना. बटवारे के पहले मारकेट थे. मगर बंटवारे के बाद एक दम से मारकेट होने लगे, और अब तो ले दे कर मद्रास और कलकत्ता गए हैं.

ऐसी हालत में मिलों से तैयार होने वाले कपड़ों से बले ने हालत को और भी संगीन बना दिया है. मुबारक और उसके आस पास देहातों की बनारसी कारीगरी देशी ख़ास कर अमरीकी और जापानी जार्जट रेशमी कपड़ों के मुक़ाबले की वजह से बिल्कुल तबाह गई.

3—तीसरी ख़ास वजह है, बाहर से और ख़ास कर न और इटली से आने वाले रेशम और केले पर हकूमत ने भारी ड्यूटी लगा रखी है. जिसकी वजह से कच्चा

دسہرے کے بعد والا بحران جو اب شروع ہوچکا ہے کتنا بھیانک ہوگا اِس کے خیال سے ہی رونگٹے کھڑے ہوجاتے ہیں، کیونکہ بازار لگاتار کم ہوتا جا رہا ہے، نکاسی کم ہوتی جا رہی ہے، اور اب ہر طرف مئو والا مال تیار ہوتا ہے۔

اِس طرح پورے ضلعے کی تصویر یہ نکلتی ہے—

(i) کم سے کم 75 فی صدی کرگھے بند ہیں یا بند ہو رہے ہیں۔

(ii) بنکروں میں عام بیکاری پھیلی ہوئی ہے۔ کم سے کم 60 فی صدی بنکر بیکار ہیں۔

(iii) ہینڈلوم دستکاری تیزی سے مکمل تباہی کی طرف جا رہی ہے۔

سوال پیدا ہوتا ہے ہینڈلوم دستکاری میں اِس تیز گراوٹ کی وجہ آخر کیا ہے۔ کچھ خاص وجہیں نیچے دی جاتی ہیں۔

1—پہلی وجہ ہے کہ اِس دھندے میں استعمال ہونے والی تمام خاص چیزوں جیسے سوت، ریشم، رنگ وغیرہ کے دام حد درجہ بڑھے ہوئے ہیں۔ سوت ہی کا بھاؤ سن 1949 کے مقابلے میں آج دوگنا ہے۔ خود حکومت کی فیکٹ فائنڈنگ کمیٹی کی رپورٹ کے مطابق ہینڈلوم کے تیار کپڑوں کی قیمت میں 50 سے 80 فیصدی تک قیمت تو صرف سوت ہی کی نکل جاتی ہے۔ بات بالکل صحیح ہے۔ آج دیہات میں بنکروں کی حالت یہ ہے کہ کسی کسی مال کو تیار کرنے میں انہیں ایک بنڈل سوت بننے پر بھی مشکل سے 4-5 آنہ منافع ہوتا ہے۔

سوت کے چڑھتے داموں اور تیار مال کے گرتے داموں نے آج اِس دھندے کو اتنا گرا دیا ہے کہ بنکر پریشان ہوکر بھاگ رہا ہے اور فاقے کر رہا ہے۔

2—دوسری خاص وجہ ہے مارکیٹ یا بازار کا نہ ہونا، اور مارکیٹ کا لگاتار تنگ ہوتا جانا۔ بٹوارے کے پہلے کافی مارکیٹ تھے مگر بٹوارے کے بعد ایک دم سے مارکیٹ ختم ہونے لگے، اور اب تو لے دے کر مدراس اور کلکتہ رہ گئے ہیں۔

ایسی حالت میں ملوں سے تیار ہونے والے کپڑوں کے مقابلے نے حالت کو اور بھی سنگین بنا دیا ہے۔ مبارکپور اور اُس کے آس پاس دیہاتوں کی بنارسی کاریگری تو بدیشی خاص کر امریکی اور جاپانی جارجٹ اور ریشمی کپڑوں کے مقابلے کی وجہ سے بالکل تباہ ہوگئی۔

3—تیسری خاص وجہ ہے، باہر سے اور خاص کر جاپان اور اٹلی سے آنے والے ریشم اور کیلے پر حکومت ہند نے کافی ڈیوٹی لگا رکھی ہے جس کی وجہ سے کچا

ऐसे तमाम गांवों में जहां 15–20–25–50 सौ सवा सौ करघे चलते थे आज वहां की हालत यह है कि करघों का चलना क़रीब क़रीब बन्द हो चुका है. यहां के बुनकर मऊ की मंडी से मोटा सूत ले जा कर गाढ़ा, अंगोछा वग़ैरा तैयार करते थे. आज इन जगहों की हालत यह है कि पूरे एक बंडल सूत से माल तैयार करने पर उन्हें शायद ही एक डेढ़ रुपये का फ़ायदा होता हो, अकसर वह भी नहीं होता.

मऊ से सूत ले जाने में डेढ़ दो रुपये फ़ी बंडल का और ख़र्च, रास्ते में और रेलवे के मुलाज़िमों की धांधली और रिश्वत ख़ोरी. डिस्ट्रिक्स बोर्ड के भारी टैक्स, इन सब ने मिल कर इस धन्दे को बिलकुल तबाह कर दिया है.

नतीजा है कि ज़िले के देहातों में बिखरे हुए बुनकर इस धन्दे को छोड़ छोड़ कर दूसरे शहरों में या तो मज़दूरी करने चले गए हैं या किसी और धन्दे की तलाश में मारे मारे फिरते हैं.

मऊ हिन्दुस्तान के अन्दर सूती कपड़ों की सबसे बड़ी मंडियों में से है. लगभग बीस हज़ार करघे हैं. इस मंडी में बलिया, ग़ाज़ीपुर, आज़मगढ़, फ़ैज़ाबाद और लोहता तक का माल आता है. यहां का माल हर बाज़ार में यहां तक कि अफ़्रीक़ा और आस्ट्रेलिया तक जाता था. मऊ हिन्दुस्तान का छोटा जापान मशहूर था.

15 अगस्त 1947 के बटवारे के बाद मऊ को ज़बरदस्त धक्का लगा. पाकिस्तान में, पूरबी बंगाल में साड़ियों का और पंजाब में क्रेप, डल और मलमल का जाना बिलकुल बन्द हो गया. पहले डल का रिवाज बहुत ज़ियादा था. अब सौ फ़ी सदी बन्द है. अब सिर्फ़ सूती माल तैयार होता है और उसके लिये भी सिर्फ़ एक बाज़ार कलकत्ते का बचा है.

यहां भी तबाही कम नहीं है. मंदी के पहले यानी अप्रैल 1952 के पहले और बाद में अगस्त तक बाज़ार बिल्कुल ठप रहा. आज बाज़ार चालू है क्योंकि दशहरा का मौसम है. फिर भी 20–25 फ़ी सदी करघे ठप हैं. ख़ास परेशानी यहां के बुनकरों के लिये यह है कि बुनाई में काम आने वाली हर चीज़ तो उन्हें नक़द पैसे देने पर मिलती है चाहे वह एक पैसे की हो या एक सौ रुपये की. मगर बिके हुए माल का दाम उन्हें दो दो तीन तीन महीने बाद मिलता है.

मारकेट के लगातार कम होने, सूत का भाव लगातार बढ़ते रहने, तैयार माल के भाव में लगातार गिरावट और बिके माल की क़ीमत के उसी वक़्त न अदा होने से मऊ भी तेज़ी से तबाही की तरफ़ जा रहा है. आज मऊ के 75 फ़ी सदी बुनकर दल्लालों और महाजनों की आसामी बन चुके हैं या उनके हाथ बिक चुके हैं यानी दूसरों के रहम करम पर ज़िन्दा हैं.

ایسے تمام گاؤں میں جہاں 15–20–25–50 سو سواسو کرگھے چلتے تھے آج وہاں کی حالت یہ ہے کہ کرگھوں کا چلنا قریب قریب بند ہو چکا ہے. یہاں کے بنکر مئو کی منڈی سے موٹا سوت لے جا کر گاڑھا، انگونچھا وغیرہ تیار کرتے تھے. آج ان جگہوں کی حالت یہ ہے کہ پورے ایک بنڈل سوت سے مال تیار کرنے پر انہیں شاید ہی ایک ڈیڑھ روپیہ کا فائدہ ہوتا ہو . اکثر وہ بھی نہیں ہوتا .

مئو سے سوت لے جانے میں ڈیڑھ دو روپیہ فی بنڈل کا اور خرچ، راستے میں اور ریلوے کے ملازمین کی دھاندلی اور رشوت خوری . ڈسٹرکٹ بورڈ کے بھاری ٹیکس، ان سب نے مل کر اس دھندے کو بالکل تباہ کر دیا ہے .

نتیجہ ہے کہ ضلع کے دیہاتوں میں بکھرے ہوئے بنکر اس دھندے کو چھوڑ چھوڑ کر دوسرے شہروں میں یا تو مزدوری کرنے چلے گئے ہیں یا کسی اور دھندے کی تلاش میں مارے مارے پھرتے ہیں .

مئو ہندستان کے اندر سوتی کپڑوں کی سب سے بڑی منڈیوں میں سے ہے . لگ بھگ 20 ہزار کرگھے ہیں . اس منڈی میں بلیا، غازیپور، اعظم گڑھ، فیض آباد اور لوہتا تک کا مال آتا ہے . یہاں کا مال ہر بازار میں یہاں تک کہ افریقہ اور آسٹریلیا تک جاتا تھا . مئو ہندستان کا چھوٹا جاپان مشہور تھا .

15 اگست 1947 کے بٹوارے بعد مئو کے کو زبردست دھکا لگا . پاکستان میں، پوربی بنگال میں ساڑیوں کا اور پنجاب میں کریپ، ڈل اور ململ کا جانا بالکل بند ہوگیا . پہلے ڈل کا رواج بہت زیادہ تھا . اب سو فی صدی بند ہے . اب صرف سوتی مال تیار ہوتا ہے اور اس کے لئے بھی صرف ایک بازار کلکتہ کا بچا ہے .

یہاں بھی تباہی کم نہیں ہے . منڈی کے پہلے یعنی اپریل 1952 کے پہلے اور بعد میں اگست تک بازار بالکل ٹھپ رہا . آج بازار چالو ہے کیونکہ دسہرہ کا موسم ہے . پھر بھی 20–25 فی صدی کرگھے ٹھپ ہیں . خاص پریشانی یہاں کے بنکروں کے لئے یہ ہے کہ بنائی میں کام آنے والی ہر چیز تو انہیں نقد پیسہ دینے پر ملتی ہے چاہے وہ ایک پیسے کی ہو یا ایک سو روپیہ کی . مگر بکے ہوئے مال کا دام انہیں دو دو تین تین مہینے بعد ملتا ہے .

مارکیٹ کے لگاتار کم ہونے، سوت کا بھاؤ لگاتار بڑھتے رہنے، تیار مال کے بھاؤ میں لگاتار گراوٹ اور بکے مال کی قیمت کے اسی وقت نہ ادا ہونے سے مئو بھی تیزی سے تباہی کی طرف جا رہا ہے . آج مئو کے 75 فی صدی بنکر دلالوں اور مہاجنوں کے اسامی بن چکے ہیں یا ان کے ہاتھ بک چکے ہیں یعنی دوسروں کے رحم کرم پر زندہ ہیں .

तबाही का सही अन्दाज़ा लगाने के लिये हम ज़िले के
धे को तीन हिस्सों में बांटते हैं:—

1—मुबारकपुर और उसके आस पास के देहातों की
मी दस्तकारी.

2—ज़िले के अन्दर बिखरे हुए बुनकर .

3—मऊ की मंडी और मऊ की ख़ास कारीगरी.

मुबारकपुर और उसके आस पास के गावों में आज से
ने बनारसी माल तैयार करने के 7726 करघे थे और
। से कम 50 हज़ार आदमी इसी धन्दे से गुज़र बसर
ते थे. आज 80 फ़ी सदी करघे ठप हैं. काम करने वालों
50 फ़ी सदी बुनकर (5–6 हज़ार के दरमियान) आज
क़ों से तंग आ कर रोज़ी की तलाश में बाहर ख़ास तौर
मलाया, माले गांव, नागपुर और बम्बई चले गए हैं.
बचे हैं उनमें एक बड़ी तादाद ऐसे बेकारों की है जिनके
घर का सब कुछ ज़ेवर और बरतन भांडा बेच डालने
बाद अब इतना भी नहीं बचा कि वह किसी तरह अपने
के लिये किराये का इन्तज़ाम कर सकें. हालत यह है
अगर आज किराये का इन्तज़ाम हो जाये तो कुछ दिनों
न्दर ही काफ़ी बड़ी तादाद में (ढाई तीन हज़ार) लोग
हलक़े से बाहर चले जाए. कम से कम 75 फ़ी सदी
ा रोज़ाना फ़ाक़ा करते हैं.

बटवारे के पहले यहां का माल सिंगापुर, लन्का,
या, पंजाब, सरहदी सूबे, मदरास, हैदराबाद रियासतों
ाया करता था. अब सिर्फ़ मदरास में थोड़ा बहुत जाता
यहां के ऊंचे दरजे के बाहुनर कारीगर आज फेरी करते
ौर दर दर की ठोकरें खा रहे हैं. पूरे पूरे ख़ान्दान की
नत का 12–14 घंटे रोज़ की मेहनत का मुआवज़ा उन्हें
रुपया एक रुपया भी नहीं मिलता.

इस पर यह ज़ुल्म कि यहां मुबारकपुर क़सबे की आबादी
ार है. कोई खेती नहीं करता, फिर भी यहां सस्ती
न की दूकान नहीं है, हालांकि जंग के दिनों में थी. बार
की कोशिशों को सरकार ने बीस हज़ार आबादी पर
नैंग हो सकती है का बहाना बना कर ठुकरा दिया.

आढ़तियों और महाजनों ने इस तबाही से ख़ूब फ़ायदा
या है. ऐसे बुनकरों की तादाद को उंगलियों पर गिना
सकता है जो ख़ुद की पूंजी से करघे चलाते हों. 95 फ़ी
से ज़ियादा लोग बेकार हैं या महाजनों की लगार
बानी पर बुनते हैं.

ज़िले के अन्दर चारों तरफ़ और ख़ास तौर से
की मुहम्मदाबाद और घोसी तहसीलों में बिखरे हुए
रों की हालत आज कम तबाह नहीं. इस तरह
नकरों की कुल तादाद पचास साठ हज़ार से कम नहीं.

تباہی کا صحیح اندازہ لگانے کے لئے ہم ضلع کے دھندے
کو تین حصوں میں بانٹتے ہیں—

1—مبارک پور اور اُس کے آس پاس کے دیہاتوں
کی ریشمی دستکاری ۔

2—ضلع کے اندر بکھرے ہوئے بنکر ۔

3—مئو کی منڈی اور مئو کی خاص کاریگری۔

مبارک پور اور اُس کے آس پاس کے گاؤں میں آج سے
پہلے بنارسی مال تیار کرنے کے 7726 کرگھے تھے اور کم
سے کم 50 ہزار آدمی اِسی دھندے سے گزر بسر کرتے تھے ۔
آج 80 فی صدی کرگھے ٹھپ ہیں ۔ کام کرنے والوں میں
50 فی صدی بنکر (5-6 ہزار کے درمیان) آج فاقوں
سے تنگ آ کر روزی کی تلاش میں باہر خاص طور سے
ملایا، مالے گاؤں، ناگپور اور بمبئی چلے گئے ہیں ۔
جو بچے ہیں اُن میں ایک بڑی تعداد ایسے بیکاروں کی
ہے جن کے پاس گھر کا سب کچھ زیور اور برتن بھانڈا
بیچ ڈالنے کے بعد اب اِتنا بھی نہیں بچا کہ وہ کسی
طرح اپنے جانے کے لئے کرائے تک کا انتظام کر سکیں ۔
حالت یہ ہے کہ اگر آج کرائے کا انتظام ہو جائے تو کچھ
دنوں کے اندر ہی کافی بڑی تعداد میں (ڈھائی تین ہزار)
لوگ اِسی حلقے سے باہر چلے جائیں ۔ کم سے کم 75 فی
صدی لوگ روزانہ فاقہ کرتے ہیں ۔

بٹوارے کے پہلے یہاں کا مال سنگاپور، لنکا، ملایا،
پنجاب، سرحدی صوبے، مدراس، حیدرآباد ریاستوں میں
جایا کرتا تھا اب صرف مدراس میں تھوڑا بہت جاتا ہے۔
یہاں کے اونچے درجے کے باہنر کاریگر آج پھیری کرتے ہیں
اور در در کی ٹھوکریں کھا رہے ہیں ۔ پورے پورے خاندان
کی محنت کا 12-14 گھنٹے روز کی محنت کا معاوضہ
اُنہیں ڈیڑھ روپیہ ایک روپیہ بھی نہیں ملتا ۔

اِس پر ظلم یہ کہ یہاں مبارک پور قصبے کی آبادی
18 ہزار ہے ۔ کوئی کھیتی نہیں کرتا، پھر بھی یہاں سستی
راشن کی دوکان نہیں ہے، حالانکہ جنگ کے دنوں میں
تھی ۔ بار بار کی کوششوں کو سرکار نے 20 ہزار آبادی
پر راشننگ ہو سکتی ہے کا بہانہ بنا کر ٹھکرا دیا ۔

آڑھتیوں اور مہاجنوں نے اِس تباہی سے خوب فائدہ
اُٹھایا ہے ۔ ایسے بنکر کی تعداد کو اُنگلیوں پر گنا
جا سکتا ہے جو خود کی پونجی سے کرگھے چلاتے ہوں ۔
95 فی صدی سے زیادہ لوگ بیکار ہیں یا مہاجنوں کی
لگار پر بانی پر بنتے ہیں ۔

ضلعے کے اندر چاروں طرف اور خاص طور سے
ضلع کی محمدآباد اور گھوسی تحصیلوں میں بکھرے
ہوئے بنکروں کی حالت آج کم تباہ نہیں ۔ اِس طرح کے
بنکروں کی کل تعداد پچاس ساٹھ ہزار سے کم نہیں ۔

प्रार्थना करता हूँ कि भगवान के लिये, इतनी बड़ी तादाद में बुनकरों को तबाही से बचाने के लिये, भूकों मरते बुनकर स्त्री और बच्चों को शान्ति प्रदान करने के लिये आप अपनी पूरी ताक़त लगा दें. आप 18 और 19 अक्तूबर को होने वाले इस ज़िला सम्मेलन में ज़रूर आवें. खुद अपनी आंखों से आप देखें कि कितनी ज़ियादा तबाही और कितनी ज़ियादा भुकमरी और बेकारी फैली हुई है.

मैं नहीं जानता कि आप का प्रोग्राम क्या है. मैं इतना जानता हूँ कि बुनकरों की दशा इन्तहाई ख़राब है. पिछले 15 दिन से तो बाज़ार बिलकुल ठप है. इसलिये मुझे विश्वास है कि आप हमारे इस अनुरोध को नहीं ठुकरायेंगे और इस सम्मेलन के अवसर पर आप अवश्य पधारें और अपनी आंखों से तबाही देख और सुन लें.

मऊ बनारस और भटनी के बीच में ओ. टी. आर. लाइन पर एक बड़ा जंकशन है. यहीं पर 18 और 19 अक्तूबर को यह लगभग प्रान्तीय महत्व का और बुनकरों का अपना असली सम्मेलन हो रहा है. पूरा प्रोग्राम नत्थी है.

आपका सेवक

इश्तियाक़ आब्दी

❀ ❀ ❀ ❀

तीसरा ज़िला बुनकर कन्वेन्शन आज़मगढ़ (तारीख़ 6 और 7 सितम्बर 1952) का मेमोरेन्डम—

जिसे 7 सितम्बर की शाम को लगभग 7 हज़ार के आम जलसे ने मंज़ूर किया. कन्वेनशन मऊनाथ भन्जन में हुआ.

(i) हमारे ज़िले में हैन्डलूम का धन्धा एक बहुत अहम पोज़ीशन रखता है. क़रीब दो लाख लोग इस धन्धे से पेट पालते हैं. मऊ, मुबारकपुर, कोपागंज, बड़े गांव, करीमउद्दीनपुर, जहानागंज, इमल, ख़ैराबाद, मुहम्मदाबाद, पूरामारूफ़ वग़ैरा बुनकरों के घने आबाद क़स्बे हैं. ज़िले के अन्दर 34 हज़ार के क़रीब सूती और 7726 के क़रीब रेशमी करघे हैं. सिर्फ़ इतना ही नहीं मुबारकपूर और उसके आस पास के रेशमी करघों पर पड़ोस के देहातों के क़रीब 25 हज़ार मज़दूर भी काम करते और रोज़ी हासिल करते थे.

यह आंकड़े साफ़ बताते हैं कि आज़मगढ़ ज़िले में हैन्डलूम का धन्धा कितनी बड़ी पोज़ीशन रखता है.

(ii) जंग के बाद इस धन्धे की हालत तेज़ी से गिरती गई. और अब इस पूरे धन्धे में इतना ज़बरदस्त बुहरान आया है कि बहुत हद तक यह धन्दा तबाह हो चुका है, और तेज़ी से मुकम्मल तबाही की तरफ़ जा रहा है. बुनकर जमात एक जमात की हैसियत से मिटती जा रही है.

پرارتھنا کرتا ہوں کہ بھگوان کے لئے اتنی بڑی تعداد میں بنکروں کو تباہی سے بچانے کے لئے بھوکوں مرتے بنکر استری اور بچوں کو شانتی پردان کرنے کے لئے آپ اپنی پوری طاقت لگا دیں ۔ آپ 18 اور 19 اکتوبر کو ہونے والے اِس ضلع سمیلن میں ضرور آویں ۔ خود اپنی آنکھوں سے آپ دیکھیں کہ کتنی زیادہ تباہی اور کتنی زیادہ بھکمری اور بیکاری پھیلی ہوئی ہے ۔

میں نہیں جانتا کہ آپ کا پروگرام کیا ہے ۔ میں اتنا جانتا ہوں کہ بنکروں کی دشا انتہائی خراب ہے ۔ پچھلے پندرہ دن سے تو بازار بالکل ٹھپ ہے ۔ اس لئے مجھے وشواس ہے کہ آپ ہمارے اس انورودھ کو نہیں ٹھکرائیں گے اور اِس سمیلن کے اوسر پر آپ اوشیہ پدھاریں اور اپنی آنکھوں سے تباہی دیکھ اور سن لیں ۔

مئو بنارس اور بھٹنی کے بیچ میں او ۔ ٹی ۔ آر ۔ لائن پر ایک بڑا جنکشن ہے ۔ یہیں پر 18 اور 19 اکتوبر کو یہ لگ بھگ پرانتی مہتو کا اور بنکروں کا اپنا اصلی سمیلن ہو رہا ہے ۔ پورا پروگرام نتھی ہے ۔

آپ کا سیوک

اشتیاق عابدی

❀ ❀ ❀ ❀

تیسرا ضلع بنکر کنونشن اعظم گڈھ (تاریخ 6 اور 7 ستمبر 1952) کا میمورنڈم—

جسے 7 ستمبر کی شام کو لگ بھگ 7 ہزار کے عام جلسے نے منظور کیا ۔ کنونشن مئو ناتھ بھنجن میں ہوا ۔

(i) ہمارے ضلعے میں ہینڈلوم کا دھندا ایک بہت اہم پوزیشن رکھتا ہے ۔ قریب دو لاکھ لوگ اِس دھندے سے پیٹ پالتے ہیں ۔ مئو، مبارک پور، کوپا گنج، بڑے گاؤں، کریم الدین پور، جہاناگنج، اِملو، خیرآباد، محمد آباد، پورہ معروف وغیرہ بنکروں کے گھنے آباد قصبے ہیں، ضلعے کے اندر 34 ہزار کے قریب سوتی اور 7726 کے قریب ریشمی کرگھے ہیں ۔ صرف اتنا ہی نہیں مبارک پور اور اُس کے آس پاس کے ریشمی کرگھوں پر پڑوس کے دیہاتوں کے قریب 25 ہزار مزدور بھی کام کرتے اور روزی حاصل کرتے تھے ۔

یہ آنکڑے صاف بتاتے ہیں کہ اعظم گڈھ ضلعے میں ہینڈلوم کا دھندا کتنی بڑی پوزیشن رکھتا ہے ۔

(ii) جنگ کے بعد اِس دھندے کی حالت تیزی سے گرتی گئی ۔ اور اب اس پورے دھندے میں اتنا زبردست بحران آیا ہے کہ بہت حد تک یہ دھندا تباہ ہو چکا ہے، اور تیزی سے مکمل تباہی کی طرف جا رہا ہے ۔ بنکر جماعت ایک جماعت کی حیثیت سے مٹتی جا رہی ہے ۔

यह हालत उस ज़िले की है जहां बुनकरों की आबादी .र प्रदेश में सब से अधिक है, जहां मऊ की मन्डी जो भारतवर्ष में हैंडलूम के सूती कपड़ों की सब से बड़ी न्डी है और जहां बेहतरीन सुन्दर कपड़े तैयार होते हैं. आज . से बढ़िया घरेलू धन्दे, हमारे राष्ट्र की यह निधि तेज़ी नष्ट हो रही है.

हम आज एक साल से बुनकरों का संगठन करने, .की मांग ऊपर उठाने, क़ानूनी तरीक़ों से सरकार को ग मानने पर मजबूर करने और इस गौरव पूर्न उद्योग : नष्ट होने से बचाने के लिये जतन कर रहे हैं. र दो महीने से यह आन्दोलन एक बाढ़ की शकल उठ खड़ा हुआ है. पिछली 6 और 7 सितम्बर को मऊ .ला बुनकर सम्मेलन में ज़िले के हर क़स्बे और देहात प्रतिनिध आए थे. दूसरे ज़िलों से भी प्रतिनिधि आए थे. फ़ी बहस मुबाहसे के बाद नत्थी मेमोरन्डम स्वीकार या गया. यह सम्मेलन बहुत सफल रहा. इसने ज़िले के .ाम बुनकरों को संगठन करने और आन्दोलन करने का साह दिया. दूसरे ज़िलों जैसे बनारस, गोरखपुर, फ़ैज़ाबाद, राबंकी, बरौरा में भी इसकी लहर पहुँची, और वहां भी नकरों में जान आने लगी और आशा बन्धने लगी.

हमने अक्तूबर के अन्त तक मांगपत्र पर इसी ज़िले चालीस हज़ार दसख़त कराने का फ़ैसला किया था. ततनी तेज़ी से काम हो रहा है और जितने उत्साह से नकर दसख़त कर रहे हैं उस से आशा है कि 18 तारीख़ . साठ हज़ार दसख़त अवश्य हो जायंगे. मेम्बरी भी इसी मय तक पांच हज़ार से ऊपर पहुँच जायगी.

हमने प्रन कर लिया है कि इस सवाल को हम जी तोड़ न्नत कर के सरकार और जनता के सामने लायेंगे. म लखनऊ जायंगे, दिल्ली जायंगे, अख़बारों में शोर चायंगे, भारत के प्रभाव शाली नेताओं और ईमानदार र्मठ लोगों से इस में मदद लेंगे.

आपने गोरखपुर और देवरिया के अकाल पीड़ित सानों की हालत देखी सुनी है. यहां भी मुबारकपुर के नकरों की हालत किसी तरह उससे कम शोचनीय नहीं है. ातों के बुनकरों की हालत और भी शोचनीय है. पर स पर कोई ध्यान इसलिये नहीं देता कि इस सवाल पर .खबारों में शोर-ग़ल नहीं मचा.

आज समूचे भारत का यह घरेलु उद्योग नष्ट हो रहा . ऐसी हालत में यह सब का अपना फ़र्ज़ है कि इस तरफ़ .रन ध्यान दें और पीड़ित बुनकरों के पक्श को हाथ : लें. मैं अपने दिल के भीतर से और जितनी विनती इस नेया में की जा सकती है उतनी विनती के साथ आप से

یہ حالت اُس ضلع کی ہے جہاں بنکروں کی آبادی اتر پردیش میں سب سے ادھک ہے' جہاں مئو کی منڈی ہے جو بھارت ورش میں ہینڈلوم کے سوتی کپڑوں کی سب سے بڑی منڈی ہے اور جہاں بہترین سندر کپڑے تیار ہوتے ہیں. آج یہ سب سے بڑھیا گھریلو دھندے' ہمارے راشٹر کی یہ ندھی تیزی سے نشٹ ہو رہی ہے .

ہم آج ایک سال سے بنکروں کا سنگھٹن کرنے' ان کی مانگ اوپر اٹھانے' قانونی طریقوں سے سرکار کو مانگ ماننے پر مجبور کرنے اور اِس گورو پورن اُدیوگ کو نشٹ ہونے سے بچانے کے لئے جتن کر رہے ہیں . اِدھر دو مہینوں سے یہ آندولن ایک باڑھ کی شکل میں اٹھ کھڑا ہوا ہے . پچھلی 6 اور 7 ستمبر کو مئو ضلع بنکر سمیلن میں ضلع کے ہر قصبے اور دیہات سے پرتی‌ندھی آئے تھے . دوسرے ضلعوں سے بھی پرتی ندھی آئے تھے . کافی بحث مباحثے کے بعد نتھی میمورنڈم سویکار کیا گیا . یہ سمیلن بہت سپھل رہا . اس نے ضلع کے تمام بنکروں کو سنگٹھن کرنے اور آندولن کرنے کا اُتساہ دیا . دوسرے ضلعوں جیسے بنارس' گورکھپور' فیض‌آباد' بارابنکی' وغیرہ میں بھی اس کی لہر پہونچی' اور وہاں بھی بنکروں میں جان آنے لگی اور آشا بندھنے لگی .

ہم نے اکتوبر کے انت تک مانگ پتر پر اسی ضلع سے چالیس ہزار دستخط کرانے کا فیصلہ کیا تھا . جتنی تیزی سے کام ہو رہا ہے اور جتنے اُتساہ سے بن کر دستخط کر رہے ہیں اس سے آشا ہے کہ 18 تاریخ تک ساٹھ ہزار دستخط اوشیہ ہوجائیں گے . ممبری بھی اس سمے تک پانچ ہزار سے اوپر پہونچ جائے گی .

ہم نے پرن کرلیا ہے کہ اس سوال کو ہم جی توڑ محنت کرکے سرکار اور جنتا کے سامنے لائیں گے. ہم لکھنؤ جائیں گے' دلی جائیں گے' اخباروں میں‌شور مچائیں گے' بھارت کے پربھاؤ شالی نیتاؤں اور ایمان‌دار کرمٹھ لوگوں سے اس میں مدد لیں گے .

آپ نے گورکھپور اور دیوریا کے اکال پیڑت کسانوں کی حالت دیکھی سنی ہے یہاں بھی مبارکپور کے بنکروں کی حالت کسی طرح اُس سے کم شوچنیہ نہیں ہے . دیہاتوں کے بنکروں کی حالت اور بھی شوچنیہ ہے پر اس پر کوئی دھیان اس‌لئے نہیں دیتا کہ اس سوال پر اخباروں میں شور غل نہیں مچا .

آج سموچے بھارت کا یہ گھریلو اُدیوگ نشٹ ہو رہا ہے. ایسی حالت میں یہ سب کا اپنا فرض ہے کہ اس طرف فوراً دھیان دیں اور پیڑت بنکروں کے پکش کو ہاتھ میں لیں . میں اپنے دل کے بھیتر سے اور جتنی بنتی اس دنیا میں کی جاسکتی ہے اُتنی بنتی کے ساتھ آپ سے

हमारे हैन्डलूम धन्दे की बरबादी

[देश के कई अलग अलग हिस्सों से हाथ से कपड़ा बुनने वालों की बरबादी और उनकी तरफ़ से सरकार की दर्दनाक लापरवाही की खबरें बहुत दिनों से सुनने में आ रही हैं. कम से कम दो प्रान्तों में इसी सवाल के ऊपर सत्याग्रह भी हो चुके हैं और लोग अपनी मुसीबत सरकार के कानों तक पहुंचाने के लिये तरह तरह के कष्ट भोग रहे हैं. हमारे प्रान्त के अन्दर मऊ के बुनकरों की दस्तकारी सदियों से देश के लिये एक बड़े गौरव की चीज़ रही है. हाल में मऊ से भाई इश्तियाक़ आब्दी का एक खत हमारे पास आया है जिस से मालूम होता है कि हमारी आज़ादी के बाद से मऊ की यह कारीगरी भी बिलकुल बरबाद और खतम होती जा रही है. भाई इश्तियाक़ आब्दी के दुख भरे खत और वहां के बुनकरों के इस सम्बन्ध के मेमोरन्डम को हम नीचे दे रहे हैं. हमारी हार्दिक इच्छा है और विनम्र प्रार्थना है कि प्रान्त की सरकार और दिल्ली सरकार दोनों इस ओर ध्यान दें. हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं कि अगर वह चाहें तो उस इलाक़े के लाखों ग़रीब बुनकरों और उनके इतने बड़े धन्दे को अब भी बरबादी से बचा सकती हैं—सुन्दरलाल]

ज़िला बुनकर यूनियन
मऊनाथ भंजन
ज़िला आज़मगढ़
29-9-'52

आदरनीय सुन्दरलाल जी,

हमारे ज़िले में लगभग दो लाख बुनकरों की आबादी है. 40 हज़ार करघे हैं. यह उद्योग कितना नष्ट हो चुका है, कितने भयानक संकट से गुज़र रहा है, बुनकर कितने ज़ियादा बेकार और तबाह हैं यह बातें आपको विस्तार से और आंकड़ों के साथ नत्थी मेमोरन्डम में मिल जायंगी. हालत इतनी बिगड़ चुकी है कि मुश्किल से 10 फ़ीसदी बुनकर आज अपनी पूंजी से काम करते होंगे. बाक़ी सभी या तो बेकार हैं और छोड़ छोड़ कर भाग रहे हैं या महाजनों और सेठों के चंगुल में इस तरह फंस चुके हैं कि उससे छुटकारे की आशा खो बैठे हैं. आम तरीक़े से घरों में फ़ाक़े हो रहे हैं. बहुत बड़ी तादाद में घरों में औरतों के ज़ेवर वग़ैरा बिक चुके हैं. हालत इतनी ज़ियादा तबाह हो चुकी है कि शब्दों में बयान नहीं की जा सकती. वह केवल देखने, अनुभव करने और दुखी होने ही की चीज़ है.

ھمارے ھینڈلوم دھندے کی بربادی

[دیش کے کئی الگ الگ حصوں سے ھاتھ سے کپڑا بننے والوں کی بربادی اور اُن کی طرف سے سرکار کی دردناک لاپرواھی کی خبریں بہت دنوں سے سننے میں آرھی ھیں . کم سے کم دو پرانتوں میں اسی سوال کے اُوپر ستیاگرہ بھی ھو چکے ھیں اور لوگ اپنی مصیبت سرکار کے کانوں تک پہنچانے کے لئے طرح طرح کے کشٹ بھوگ رھے ھیں . ھمارے پرانت کے اندر مئو کے بنکروں کی دست کاری صدیوں سے دیش کے لئے ایک بڑے گورو کی چیز رھی ھے . حال میں مئو سے بھائی اشتیاق عابدی کا ایک خط ھمارے پاس آیا ھے جس سے معلوم ھوتا ھے کہ ھماری آزادی کے بعد سے مئو کی یہ کاری گری بھی بالکل برباد اور ختم ھوتی جا رھی ھے . بھائی اشتیاق عابدی کے دکھ بھرے خط اور وھاں کے بنکروں کے اس سمبندھ کے میمورنڈم کو ھم نیچے دے رھے ھیں . ھماری ھاردک اچھا ھے اور ونمر پرارتھنا ھے کہ پرانت کی سرکار اور دلی سرکار دونوں اس اور دھیان دیں . ھمیں اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اگر وہ چاھیں تو اُس علاقے کے لاکھوں غریب بنکروں اور اِن کے اتنے بڑے دھندے کو اب بھی بربادی سے بچا سکتی ھیں—سندرلال]

ضلع بن کر یونین
مئو ناتھ بھنجن
ضلع اعظم گڑھ
29-9-'52

آدرنیہ سندر لال جی'

ھمارے ضلع میں لگ بھگ دو لاکھ بنکروں کی آبادی ھے . 40 ھزار کرگھے ھیں . یہ اُدیوگ کتنا نشٹ ھو چکا ھے' کتنے بھیانک سنکٹ سے گزر رھا ھے' بنکر کتنے زیادہ بیکار اور تباہ ھیں یہ باتیں آپ کو وستار سے اور آنکڑوں کے ساتھ نتھی میمورنڈم میں مل جائیں گی . حالت اتنی بگڑ چکی ھے کہ مشکل سے 10 فی صدی بن کر آج اپنی پونجی سے کام کرتے ھونگے . باقی سبھی یا تو بیکار ھیں اور چھوڑ چھوڑ کر بھاگ رھے ھیں یا مہاجنوں اور سیٹھوں کے چنگل میں اسی طرح پھنس چکے ھیں کہ اس سے چھٹکارے کی آشا کھو بیٹھے ھیں . عام طریقے سے گھروں میں فاقے ھو رھے ھیں . بہت بڑی تعداد میں گھروں میں عورتوں کے زیور وغیرہ بک چکے ھیں . حالت اتنی زیادہ تباہ ھو چکی ھے کہ شبدوں میں بیان نہیں کی جا سکتی . وہ کیول دیکھنے' انوبھو کرنے اور دکھی ھونے ھی کی چیز ھے .

वह आ गया और उसने इस समस्या का बिल्कुल साइन्सी कारन बता दिया —

"नदियां पहाड़ से बहती हैं. वहां जंगल होते हैं. वह नदी के बहाव के साथ पत्थर के टुकड़ों को बहने से रोकते रहते हैं. आबादी बढ़ जाने के कारन लोगों को जियादा ईंधन की ज़रूरत पड़ती है. उन्होंने ईंधन के लिये जंगल काट डाले हैं. जंगल न होने के कारन पानी छोटे छोटे पत्थर बहा लाता है. वह नदी के पेटे में जमते चले जाते हैं और सैकड़ों बरस से ऐसा हो रहा है. नदियों के गहरे पेटे इस कारन से छिछले हो गये हैं और बाढ़ आ जाती है........."

वह महाशय चौंधिया चौंधिया कर कभी मुझे देख रहे थे और कभी अमरीकी एक्सपर्ट को. मैं मूंछों के नीचे मुस्करा रहा था. मेरे दिमाग़ में एक ही बात गूंज रही थी—

"इसी बात की तो रोटी हम लोग खाते हैं."

मैंने कहा—"ज़रा इनको इस समस्या का हल भी बता दीजिये.

उसने कहा—"इसके दो हल हैं—एक थोड़े अरसे का और दूसरा लम्बे अरसे का. सब से पहले हमें पेड़ लगाने पड़ेंगे.........मेरे विचार में आप के यहां के तुलसी के पेड़ जल्दी बढ़ जाते हैं.........उनका इस्तेमाल बहुत उचित होगा. इसी को तो आप बन महोत्सव कहते हैं न?.........और आख़ीर में तो वही बर्थ कन्ट्रोल करना पड़ेगा...........जब तक लोग बच्चे पैदा करने कम नहीं करते, हिन्दुस्तान की समस्या हल नहीं हो सकती..."

वह महाशय अपना सा मुंह ले कर चले गये. कहने लगे—"तुम सब ग़द्दार हो, तुम सब देश को गुलाम बनाना चाहते हो, तुम सब भारत को अमरीका के हाथ बेच रहे हो........"

कहीं हम लोग ऐसा कर सकते हैं? कहीं भारत को गुलाम बना सकते हैं? अमरीका तो कोई शर्त भी नहीं लगाता?—वाहरे दक़ियानूसी हिन्दुस्तान!...........हा हा हा हा हा...............

—मुजीब रिज़वी

وہ آ گیا اور اُس نے اِس سمسیا کا بالکل سائنسی کارن بتا دیا —

" ندیاں پہاڑ سے بہتی ہیں . وہاں جنگل ہوتے ہیں . وہ ندی کے بہاؤ کے ساتھ پتھر کے ٹکڑوں کو بہنے سے روکتے رہتے ہیں . آبادی بڑھ جانے کے کارن لوگوں کو زیادہ ایندھن کی ضرورت پڑتی ہے . اُنہوں نے ایندھن کے لئے جنگل کاٹ ڈالے ہیں . جنگل نہ ہونے کے کارن پانی چھوٹے چھوٹے پتھر بہالاتا ہے . وہ ندی کے پیٹے میں جمتے چلے جاتے ہیں سیکڑوں برس سے ایسا ہو رہا ہے . ندیوں کے گہرے پیٹے اِس کارن سے چھچھلے ہوگئے ہیں اور باڑھ آ جاتی ہے........"

وہ مہاشے چوندھیا چوندھیا کر کبھی مجھے دیکھ رہے تھے اور کبھی امریکی ایکسپرٹ کو . میں مونچھوں کے نیچے مسکرا رہا تھا . میرے دماغ میں ایک ہی بات گونج رہی تھی —

" اسی بات کی تو روٹی ہم لوگ کھاتے ."

میں نے کہا —" ذرا اِن کو اِس سمسیا کا حل بھی بتا دیجئے........"

اُس نے کہا —" اِس کے دو حل ہیں — ایک تھوڑے عرصے کا اور دوسرا لمبے عرصے کا — سب سے پہلے ہمیں پیڑ لگانے پڑیں گے.........میرے وچار میں آپ کے یہاں تلسی کے پیڑ جلدی بڑھ جاتے ہیں...اُن کا استعمال بہت اُچت ہوگا......اسی کو تو آپ بن مہو اُتسو کہتے ہیں نہ؟......اور آخیر میں تو وہی برتھ کنٹرول کرنا پڑے گا......جب تک لوگ بچے پیدا کرنے کم نہیں کرتے' ہندستان کی سمسیا حل نہیں ہو سکتی......"

وہ مہاشے اپنا سا منہ لے کر چلے گئے . کہنے لگے —"تم سب غدار ہو' تم سب دیش کو غلام بنانا چاہتے ہو' تم سب بھارت کو امریکہ کے ہاتھ بیچ رہے ہو......"

کہیں ہم لوگ ایسا کر سکتے ہیں ؟ کہیں بھارت کو غلام بنا سکتے ہیں ؟......امریکہ تو کوئی شرط بھی نہیں لگاتا ؟ — واہ رے دقیانوسی ہندستان !...... ہا ہا ہا ہا ہا............

— مجیب رضوی

हिन्दुस्तान में कुछ ऐसे दक़ियानूसी हैं जो मुल्क को आगे बढ़ने ही नहीं देते. एक उटपटांग महाशय मेरी खोपड़ी खाने को आ ही टपके. मिलने को मन तो नहीं चाहता था लेकिन चुनाव का भी तो ख्याल रखना पड़ता है. किसी का विरोध मोल लेना बेकार है. आते ही लगे वह ईरान तूरान की हांकने.

वह बोले—"अमरीका से खाद मंगाने की क्या ज़रूरत है? हमारे यहां का गोबर अमरीका जा रहा है और फिर वही खाद बन कर यहां आ रहा है. इस खर्च से क्या फ़ायदा. हिन्दुस्तानी खेती के लिये जितना फ़ायदा गोबर से है उतना अमरीकी खाद से नहीं........."

मैंने कहा—"ख़र्च को कम करने के लिये ही हमने अमरीकी एक्सपर्ट को यहां बुला लिया है. 23 करोड़ रुपया लगा कर हम सिन्दरी में खाद की फ़ैक्टरी खोल रहे हैं. अमरीकन आ कर उसे चालू कर देंगे........."

वह बोले—"यह सब बेकार है."

मैंने कहा—"मेरे एक्सपर्ट कहते हैं कि सिर्फ़ इसी तरह भारत का उद्धार हो सकता है."

वह फिर बोले—"सिंचाई का प्रबन्ध नहीं है. कहीं कहीं बाढ़ आ जाती है और कहीं कहीं हर साल क़हत पड़ जाता है........."

मैंने कहा—"हमने सब इन्तज़ाम कर लिया है. अमरीका से मशीन और एक्सपर्ट आ रहे हैं. वह सब ठीक कर देंगे........."

उन्होंने फिर ज़बान हिलाई—"यह बड़ी बड़ी स्कीमें भारत में नहीं चल सकती.........खेतों में एक इंच पानी तो पहुंचेगा नहीं और अमरीका का अरबों का क़र्ज़ सर पर चढ़ आयेगा........."

"फिर क्या किया जाये........." मैंने पूछा.

"कच्चे कुएँ खुदवा दो........." वह बोले.

यह बीसवीं सदी और कच्चे कुएँ!.........अफ़सोस होता है इन लोगों के दिमाग़ पर! मैंने पूछा—"बाढ़ कैसे रोकी जाय?"

बोले—"जापान की तरह पहाड़ों पर से ही नदियों को अलग अलग नहरों में तोड़ दो........."

मैंने कहा—"आप बाढ़ के कारन ही नहीं समझे...... ठहरिये........."

मैंने अमरीकन एक्सपर्ट को फ़ोन किया. थोड़ी देर में

ہندستان میں کچھ ایسے دقیانوسی ہیں جو ملک کو آگے بڑھنے ہی نہیں دیتے ۔ ایک اوٹ پٹانگ مہاشے میری کھوپڑی کھانے کو آ ہی ٹپکے ۔ ملنے کو من تو نہیں چاہتا تھا لیکن چناؤ کا بھی تو خیال رکھنا پڑتا ہے ۔ کسی کا ورودھ مول لینا بیکار ہے — آتے ہی لگے وہ ایران توران کی ہانکنے ۔

وہ بولے — "امریکہ سے کھاد منگانے کی کیا ضرورت ہے؟ ہمارے یہاں کا گوبر امریکہ جا رہا ہے اور پھر وہی کھاد بن کر یہاں آ رہا ہے ۔ اس خرچ سے کیا فائدہ ۔ ہندستانی کھیتی کے لئے جتنا فائدہ گوبر سے ہے اتنا امریکی کھاد سے نہیں.. ......"

میں نے کہا — " خرچ کو کم کرنے کے لئے ہی ہم نے امریکی ایکسپرٹ کو یہاں بلا لیا ہے ۔ 23 کروڑ روپیہ لگا کر ہم سندری میں کھاد فیکٹری کھول رہے ہیں ۔ امریکن آ کر اسے چالو کر دیں گے...."

وہ بولے — " یہ سب بیکار ہے ۔"

میں نے کہا — " میرے ایکسپرٹ کہتے ہیں کہ صرف اسی طرح بھارت کا ادھار ہو سکتا ہے ۔"

وہ پھر بولے — "سینچائی کا پربندھ نہیں ہے ۔ کہیں کہیں باڑھ آ جاتی ہے اور کہیں کہیں ہر سال قحط پڑ جاتا ہے........."

میں نے کہا — "ہم نے سب انتظام کر لیا ہے ۔ امریکہ سے مشین اور ایکسپرٹ آ رہے ہیں وہ سب ٹھیک کر دیں گے........"

انہوں نے پھر زبان ہلائی — "یہ بڑی بڑی اسکیمیں بھارت میں نہیں چل سکتیں........کھیتوں میں ایک انچ پانی تو پہونچے گا نہیں اور امریکہ کا اربوں کا قرض سر پر چڑھ آئے گا........."

" پھر کیا کیا جائے........" میں نے پوچھا

" کچے کنوئیں کھدوا دو........" وہ بولے

یہ بیسویں صدی اور کچے کنوئیں!......افسوس ہوتا ہے ان لوگوں کے دماغ پر!

میں نے پوچھا — " باڑھ کیسے روکی جائے؟"

بولے — "جاپان کی طرح پہاڑوں پر سے ہی ندیوں کو الگ الگ نہروں میں توڑ دو......."

میں نے کہا — "آپ باڑھ کے کارن ہی نہیں سمجھے...... ٹھہریئے........"

میں نے امریکی ایکسپرٹ کو فون کیا. تھوڑی دیر میں

एक माहिर की स्कीम तो मुझे बेहद पसन्द आई. क्या दिमाग़ पाया है इन लोगों ने. हर चीज़ में नया पन चाहते हैं, हर बात में तरक़्क़ी करने की सोचते हैं. साइन्स तो न्हीं के दम से ज़िन्दा है. एक दिन एक एक्सपर्ट ने मेरे सामने एक स्कीम रखी. हमने इस पर कभी सोचा भी न था.

एक्सपर्ट ने कहा—"हिन्दुस्तान बहुत पुराना देश है. दुनिया की दौड़ में बहुत पिछड़ा हुआ है. यह बहुत शर्म की बात है. नए हिन्दुस्तान में हर चीज़ नई होनी चाहिये. हिन्दुस्तान के हलवाई भी मिठाई बनाने के पुराने तरीक़े इस्तैमाल करते हैं........"

मैंने कहा—"अमरीका में तो ऐसी मिठाइयां बनती नहीं, फिर आपने यह बात कैसे पता लगा ली."

एक्सपर्ट बोला—"इसी काम की तो हम रोटी खाते हैं."

मैंने कहा—"फिर हलवाइयों के तरीक़ों में क्या सुधार किया जाए ?"

उसने कहा—"उत्तर हिन्दुस्तान में जलेबी बहुत खाई जाती है. पुराने हलवाई शीरा बना कर रख देते हैं और फिर जलेबियां उसमें डालते जाते हैं. जलेबियों में रस भरने का यह बहुत दक़ियानूसी तरीक़ा है. अब हमें एक मशीन बनानी पड़ेगी जिस में रस भर कर जलेबियों में आसानी से इन्जेक्शन दिया जायगा.........."

मैं ख़ुशी से कुर्सी पर उछल पड़ा. जी चाहता था कि उसके दिमाग़ की बलाऐं ले लूं. मैंने उससे फिर पूछा—

"इस स्कीम पर क्या ख़र्च होगा?"

उसने कहा—"एक लेबोरेटरी बनानी पड़ेगी. मशीनें उसके लिये अमरीका से आएंगी. दो एक कारीगर भी आयेंगे.........मेरी तनख़्वाह का कोई ज़ियादा सवाल नहीं है. मैं केवल दस हज़ार महीने ही लूंगा. सफ़र ख़र्च और हिन्दुस्तान में रहने का ख़र्च तनख़्वाह के अलावा. मेरी आमदनी पर कोई टैक्स नहीं लगेगा..........इमारतें वग़ैरा भी बनवानी पड़ेंगी.........देखिये मैं सिर्फ़ दो साल के लिये कन्ट्रेक्ट कर सकता हूं. इसमें भी शर्त यह है कि मैं रहूंगा अमरीका में और कभी कभी आ कर लोगों को सलाह मशविरा दे जाया करूंगा. आने जाने का ख़र्च आपको देना पड़ेगा......"

मैंने कहा—'मुझे सब कुछ मंज़ूर है. तुम सचमुच एक्सपर्ट हो."

ऐसी ऐसी हज़ारों स्कीमों पर मैंने सैकड़ों ऐसे ऐसे अमरीकी एक्सपर्ट मुक़र्रर कर दिये.

ایک ماہر کی اسکیم تو مجھے بے حد پسند آئی۔ کیا دماغ پایا ہے ان لوگوں نے۔ ہر چیز میں نیا پن چاہتے ہیں، ہر بات میں ترقی کرنے کی سوچتے ہیں۔ سائنس تو انہیں کے دم سے زندہ ہے۔ ایک دن ایک ایکسپرٹ نے میرے سامنے ایک اسکیم رکھی۔ ہم نے اس پر کبھی سوچا بھی نہ تھا۔

ایکسپرٹ نے کہا—" ہندستان بہت پرانا دیش ہے۔ دنیا کی دوڑ میں بہت پچھڑا ہوا ہے۔ یہ بہت شرم کی بات ہے۔ نئے ہندستان میں ہر چیز نئی ہونی چاہئے۔ ہندستان کے حلوائی بھی مٹھائی بنانے کے پرانے طریقے استعمال کرتے ہیں.........."

میں نے کہا—" امریکہ میں تو ایسی مٹھائیاں بنتی نہیں، پھر آپ نے یہ بات کیسے پتہ لگا لی۔"

ایکسپرٹ بولا—" اسی کام کی تو ہم روٹی کھاتے ہیں۔"

میں نے کہا—"پھر حلوائیوں کے طریقوں میں کیا سدھار کیا جائے؟"

اس نے کہا—"اتر ہندستان میں جلیبی بہت کھائی جاتی ہے۔ حلوائی شیرا بنا کر رکھ دیتے ہیں اور پھر جلیبیاں اس میں ڈالتے جاتے ہیں۔ جلیبیوں میں رس بھرنے کا یہ بہت دقیانوسی طریقہ ہے۔ اب ہمیں ایک مشین بنانی پڑے گی جس میں رس بھر کر جلیبیوں میں آسانی سے انجکشن دیا جائے گا........"

میں خوشی سے کرسی پر اچھل پڑا۔ جی چاہتا تھا کہ اس کے دماغ کی بلائیں لے لوں۔ میں نے اس سے پھر پوچھا—

" اس اسکیم پر کیا خرچ ہوگا؟"

اس نے کہا—" لیبوریٹری بنانی پڑے گی مشینیں اس کے لئے امریکہ سے آئیں گی۔ دو ایک کاریگر بھی آئیں گے.........میری تنخواہ کا کوئی زیادہ سوال نہیں ہے۔ میں کیول دس ہزار مہینے ہی لوں گا۔ سفر خرچ اور ہندستان میں رہنے کا خرچ تنخواہ کے علاوہ۔ میری آمدنی پر کوئی ٹیکس نہیں لگے گا۔.........عمارتیں وغیرہ بھی بنوانی پڑیں گی.........دیکھئے میں صرف دو سال کے لئے کنٹریکٹ کر سکتا ہوں۔ اس میں بھی شرط یہ ہے کہ میں رہوں گا امریکہ میں اور کبھی کبھی آ کر لوگوں کو صلاح مشورہ دے جایا کروں گا۔ آنے جانے کا خرچ آپ کو دینا پڑے گا.........."

میں نے کہا—" مجھے سب کچھ منظور ہے۔ تم سچ مچ ایکسپرٹ ہو۔"

ایسی ایسی ہزاروں اسکیموں پر میں نے سیکڑوں ایسے ایسے امریکی ایکسپرٹ مقرر کر دیئے۔

दिया जाए तो बहुत बड़ी रक़म वसूल हो सकती है. अगर शादी पर टैक्स लगा दिया जाए तो और भी रक़म वसूल हो जाए. हिन्दुस्तान में लोग बच्चे बहुत पैदा करते हैं अगर बच्चों की पैदाइश पर भी टैक्स लगा दिया जाए तो हमारी सारी स्कीमों के लिये रुपया मिल सकता है."

मेरे ताबड़ तोड़ सुझावों को सुन कर सभी क़ायल हो गए. मगर कुछ ने अपनी टांग अड़ानी शुरू कर दी.

एक बोला—"इन टैक्सों से पूरी योजना के लिये रक़म नहीं मिल सकती."

मैंने कहा—"लोग पान खाते हैं, सुपारी खाते हैं, पानी पीते हैं, सब पर टैक्स लगा दो."

दूसरा बोला—"सरकार ऐसे टैक्सों से बदनाम हो जायेगी. फिर दूसरे चुनाव में हमें कठिनाई होगी."

यहां आ कर तो सभी को अटकना पड़ा. आख़िर में यह तय हुआ कि मंत्री लोग इस विषय पर सोचते रहें और दूसरी बैठक में फिर इस पर बात चीत हो.

मैं घर आया. कमरे में गया ही था कि फ़ोन की घंटी बजी. बात करनी शुरू कर दी. मैं ख़ुशी से फूला जा रहा था. फ़ोन पर अमरीकी राजदूत ने कहा था—"आप घबराते क्यों हैं. जितनी भी ज़रूरत हो हम डालर देने को तैयार हैं. आप पर हमें पूरा विश्वास है. केवल आप की वजह से ही हम इतना बड़ा क़र्ज़ा देने को तैयार हैं……"

मैं ने जल्दी से फ़ोन उठाया और बड़े वज़ीर को इस बात की सूचना दी. फ़ोन खड़क गए. सारे मंत्रियों को ख़बर हो गई. मैंने इस ख़ुशी में शाम को अपने यहां एक पार्टी भी कर दी. अमरीकी राजदूत भी उस में आए.

……और मैं योजना मंत्री बन गया.

पहले ही दिन मैंने अमरीकी राजदूत से जा कर कहा कि वह मुझे कुछ विशेषज्ञ अपने देश से मंगवा दें. यह अमरीकन भी कितने होशियार और फुर्तीले होते हैं. हफ़्तों में ही ऐक्सपर्टों की भरमार हो गई. मैं बातें करते करते थक गया. जो था अपने काम में होशियार. जो था अपने विषय का पूरा जानकार. मेरी तो आंखें चौंधियां गईं. बहुत सी स्कीमें ख़ुद मेरी समझ में नहीं आईं. मैंने उनसे कहा—"आपकी स्कीमें हमारी समझ में नहीं आईं."

उन्होंने उत्तर दिया—"फ़िकर मत कीजिये, आप डालर मंगाते जाएं और हम स्कीम बनाते जाएं, यही हमारी स्कीम है. जब हम अपनी स्कीम में सफल हो जाएंगे तो आप ख़ुद ही सारी बात समझ जाएंगे."

मैं हंस दिया और वह सब भी हंस दिये.

یا جائے تو بہت رقم وصول ہو سکتی ہے . اگر شادی پر ٹیکس لگا دیا جائے تو اور بھی رقم وصول ہوجائے. ہندستان میں لوگ بچے بہت پیدا کرتے ہیں اگر بچوں کی پیدائش پر بھی ٹیکس لگا دیا جائے تو ہماری ساری اسکیموں کے لئے روپیہ مل سکتا ہے ."

میرے تابڑ توڑ سجھاؤں کو سن کر سبھی قائل ہوگئے . مگر کچھ نے اپنی ٹانگ اڑانی شروع کر دی .

ایک بولا—"اِن ٹیکسوں سے پوری یوجنا کے لئے رقم نہیں مل سکتی ."

میں نے کہا—"لوگ پان کھاتے ہیں' سپاری کھاتے ہیں' پانی پیتے ہیں سب پر ٹیکس لگا دو ."

دوسرا بولا—"سرکار ایسے ٹیکسوں سے بدنام ہوجائے گی . پھر دوسرے چناؤ میں ہمیں کٹھنائی ہوگی."

یہاں آکر تو سبھی کو اٹکنا پڑا . آخیر میں یہ طے ہوا کہ منتری لوگ اِس وشے پر سوچتے رہیں اور دوسری بیٹھک میں پھر اِس پر بات چیت ہو .

میں گھر آیا . کمرے میں گیا ہی تھا کہ فون کی گھنٹی بجی . بات کرنی شروع کر دی . میں خوشی سے پھولا جا رہا تھا. فون پر امریکی راجدوت نے کہا تھا—"آپ گھبراتے کیوں ہیں . جتنی بھی ضرورت ہو ہم ڈالر دینے کو تیار ہیں . آپ پر ہمیں پورا وشواس ہے. کیول آپکی وجہ سے ہی ہم اتنا بڑا قرضہ دینےکو تیار ہیں ...."

جلدی سے فون اُٹھایا اور بڑے وزیر کو اِس بات کی سوچنا دی . فون کھڑک گئے . سارے منتریوں کو خبر ہوگئی. میں نے اِس خوشی میں شام کو اپنے یہاں ایک پارٹی بھی کر دی . امریکی راجدوت بھی اُس میں آئے.

........اور میں یوجنا منتری بن گیا .

پہلے ہی دن میں نے امریکی راجدوت سے جاکر کہا کہ وہ مجھے کچھ وشیشگیہ اپنے دیش سے منگوا دیں . یہ امریکی بھی کتنے ہوشیار اور پھرتیلے ہوتے ہیں . ہفتوں میں ہی اکسپرٹوں کی بھرمار ہوگئی . میں باتیں کرتے کرتے تھک گیا . جو تھا اپنے کام میں ہوشیار' جو تھا اپنے وشے کا پورا جانکار . میری تو آنکھیں چوندھیا گئیں. بہت سی اسکیمیں تو خود میری سمجھ میں نہیں آئیں . میں نے اُن سے کہا—" آپ کی اسکیمیں ہماری سمجھ میں نہیں آئیں ."

انہوں نے اتر دیا—"فکر مت کیجئے' آپ ڈالر منگاتے جائیں اور ہم اسکیم بناتے جائیں' یہی ہماری اسکیم ہے . جب ہم اپنی اسکیم میں سپھل ہوجائیں گے تو آپ خود ہی ساری بات سمجھ جائیں گے ."

میں ہنس دیا اور وہ سب بھی ہنس دئیے .

म चुका है. अखबार वाले मेरे जवाब को मोटेमोटे अक्षरों
आप ही देते हैं. सच झूट का पता लगाए जाओ. पहले
तो पता लगना ही मुशकिल है और अगर लग भी गया और
कोई रास्ता निकलने का दिखाई न पड़ा तो कह दीजिये—मुझे
बहुत दुख है, मैंने ग़लती ठीक करने का हुक्म दे दिया है.
उमर में पहुंचे हुए दक्खिन अफ़रीका के बड़े वज़ीर जनरल
स्मटस की मिसाल मैं सदा अपने सामने रखता हूँ—एक
दफ़ा किसी सरफिरे ने उनसे कोई सवाल पूछ लिया, सवाल
टेढ़ा था और बिना मोटे मोटे आंकड़ों का इस्तेमाल किये काम
न चलता. उन्होंने अपने सेक्रेटरी से कहा—"इस विषय
पर सारे आंकड़े मुझे ला कर दो."

"इसकी तैयारी में कम से कम पन्द्रह बरस लग जाएंगे."
सेक्रेटरी ने जवाब दिया.

जनरल स्मट्स ने कहा—"अच्छा, जो मैं बोलता जाता
हूँ लिखते जाओ."

सेक्रेटरी बोला—"जनरल यह तो खुला धोका है."

जनरल ने उत्तर दिया—"अगर इन आंकड़ों के इकट्ठा
करने में हमें पन्द्रह बरस लगेंगे तो हमारे इस धोके को धोका
साबित करने के लिये कम से कम तीस बरस लगेंगे !"

ऐसे ही लोग होते हैं जो किसी देश का इन्तज़ाम कर
सकते हैं, जनतन्त्र को ज़िन्दा रख सकते हैं, पार्लियामेन्ट
को पूरी तरह क़ाबू में रख सकते हैं.

माफ़ कीजियेगा मैं कुछ बहक गया. इधर उधर की बातें
करने की कुछ आदत भी पड़ गई है. मेरा सेक्रेटरी कहता है
कि बहकी बहकी बातें करने से लोग सोचते हैं कि इस
आदमी की बातों में कुछ तत्व है. सेक्रेटरी जो कहता है
हमेशा ठीक कहता है. पुराना आई. सी. एस. है. इतनी उमर
कोई घास थोड़े ही खोदा है उसने !

मैं आपको अपने कुछ तजुर्बे सुना रहा था. पहले तो मैं
यह बता दूं कि मैं केवल मंत्री से योजना मंत्री कैसे बन गया.
कुछ दिनों तक मुझे कोई महकमा नहीं सौंपा गया था. मैं
रोज़ सोचता था कि या कोई मंत्री मर जाय और या कोई
मंत्री कहीं का गवर्नर हो जाये. होनहार तो हो कर ही रहता
है. मंत्री मंडल में यह बात उठाई गई कि भारत का उद्धार
कैसे किया जाए. मैंने जेल में योजनाओं पर कई पैम्फ़लेट
पढ़े थे. मौक़ा पा कर मैंने कई स्कीमों के नाम गिना दिये. बस
वही दो चार मोटी मोटी स्कीमें—डाम, नहर, कम्यूनिटी
प्रोजेक्टस, आदि आदि. सारे मंत्री दंग रह गए. सब को
मेरी बुद्धि की सराहना करनी पड़ी. ख़ज़ाना मंत्री ने
अड़चन लगा ही दी. वह बोला—"इन बड़ी बड़ी स्कीमों के
लिये धन कहां से आएगा." सवाल ज़रा पेचीदा था. मेरी
बुद्धि ने फिर काम किया. मैंने कहा—"हिन्दुस्तान में मरने
वालों की बहुत बड़ी गिनती है. अगर मरने पर टैक्स लगा

کہ نسخہ ہے. اخبار والے میرے جواب کو موٹے موٹے اکھروں
میں چھاپ ہی دیتے ہیں . سچ جھوٹ کا پتہ لگائے جاؤ.
پہلے تو پتہ لگنا ہی مشکل ہے اور اگر لگ بھی گیا اور
کوئی راستہ نکلنے کا دکھائی نہ پڑا تو کہہ دیجئے—مجھے
بہت دکھ ہے' میں نے غلطی ٹھیک کرنے کا حکم دے دیا ہے .
عمر میں پہونچے ہوئے دکھن افریقہ کے بڑے وزیر جنرل
اسمٹس کی مثال میں سدا اپنے سامنے رکھتا ہوں—ایک
دفعہ کسی سر پھرے نے اُن سے کوئی سوال پوچھ لیا . سوال
ٹیڑھا تھا اور بنا موٹے موٹے آنکڑوں کا استعمال کئے کام نہ
چلتا . اُنھوں نے اپنے سکریٹری سے کہا—"اِس وشے پر سارے
آنکڑے مجھے لا کر دو ."

" اِس کی تیاری میں کم سے کم پندرہ برس لگ
جائیں گے ." سکریٹری نے جواب دیا .

جنرل اسمٹس نے کہا—" اچھا' جو میں بولتا جاتا
ہوں لکھتے جاؤ ."

سکریٹری بولا—" جنرل یہ تو کھلا دھوکا ہے ."

جنرل نے اُتر دیا—"اگر اِن آنکڑوں کے اکٹھا کرنے میں
ہمیں پندرہ برس لگیں گے تو ہمارے اِس دھوکے کو دھوکا
ثابت کرنے کے لئے کم سے کم تیس برس لگیں گے !"

ایسے ہی لوگ ہوتے ہیں جو کسی دیش کا انتظام کر
سکتے ہیں' جن تنتر کو زندہ رکھ سکتے ہیں' پارلیامنٹ
کو پوری طرح قابو میں رکھ سکتے ہیں .

معاف کیجئے گا میں کچھ بہک گیا . اِدھر اُدھر کی باتیں
کرنے کی کچھ عادت بھی پڑ گئی ہے . میرا سکریٹری
کہتا ہے کہ بہکی بہکی باتیں کرنے سے لوگ سوچتے ہیں کہ
اِس آدمی کی باتوں میں کچھ تتو ہے . سکریٹری جو
کہتا ہے ہمیشہ ٹھیک کہتا ہے . پرانا آئی . سی . ایس .
ہے . اتنی عمر کوئی گھاس تھوڑے ہی کھودا ہے اُس نے !

میں آپ کو اپنے کچھ تجربے سنا رہا تھا . پہلے تو
میں یہ بتادوں کہ میں کیول منتری سے یوجنا منتری
کیسے بن گیا . کچھ دنوں تک مجھے کوئی محکمہ
نہیں سونپا گیا تھا . میں روز سوچتا تھا کہ یا کوئی
منتری مر جائے اور یا کوئی منتری کہیں کا گورنر ہو جائے .
ہونہار تو ہو کر ہی رہتا ہے . منتری منڈل میں یہ
بات اُٹھائی گئی کہ بھارت کا اُدھار کیسے کیا جائے . میں
نے جیل میں یوجناؤں پر کئی پمفلٹ پڑھے تھے . موقع
پاکر میں نے کئی اسکیموں کے نام گنا دیئے . بس وہی
دو چار موٹی موٹی اسکیمیں—ڈام' نہر' کمیونیٹی پروجکٹس
آدی آدی . سارے منتری دنگ رہ گئے . سب کو میری
بدھی کی سراہنا کرنی پڑی . خزانہ منتری نے اڑچن لگا
ہی دی . وہ بولا "—اِن بڑی بڑی اسکیموں کے لئے دھن
کہاں سے آئے گا ." سوال ذرا پیچیدہ تھا . میری بدھی
نے پھر کام کیا . میں نے کہا—" ہندستان میں مرنے
والوں کی بہت بڑی گنتی ہے . اگر مرنے پر ٹیکس لگا

से हर तीसरे साल किताबें बदल जाती हैं. जब कि सरकारी अफसरों को सैकड़ों में तनख़ाह मिलती है, आने वाली नसल के निर्माताओं को कहीं कहीं पचास रुपये भी नहीं मिलते. गावों में बोनस मिलने की कौन कहे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मास्टरों को छे छे महीनें तक तनख़ाह ही नहीं मिलती. विद्यार्थियों के खाने और रहने का प्रबन्ध तो दूर रहा उनकी पढ़ाई की फ़ीस तक माफ़ नहीं होती. चैकोसलावेकिया की सरकार सब को नौकरी देने का बेड़ा उठाती है और हमारी सरकार यह जानती ही नहीं कि जो आज बेकार हैं उन्हें काम पर कैसे लगाए.

योजना मंत्री

भगवान जिसे देता है छप्पर फाड़ कर देता है. रात को जब मैं सोया तो मंत्री नहीं था और सुबह जब आंख खुली तो मालूम हुआ कि मैं मंत्री हूँ. कुछ भनक पहले से कान में पड़ गई थी इसलिये कोई अचरज नहीं हुआ. एक न एक दिन यह होना ही था. मेहनत का फल सब को मिलता है. पार्टी की बैठकों में मैं खूब गरम गरम बातें करता था, पारलियामेन्ट में सवाल करना तो मेरी आदत हो गई थी. यह बुरी आदत कभी कभी अब भी उभर आती है. कोशिश करके दबाता हूँ—अब मैं जवाब देने के लिये हूँ सवाल करने के लिये नहीं. पहले मैं सोचता था कि पारलियामेन्ट में सवालों का जवाब देने के लिये काफ़ी अक़ल की ज़रूरत है. तजुर्बे ने बताया कि हर सवाल का जवाब तैयार रहना चाहिये, बस. तैयारी में मुझे कुछ नहीं करना पड़ता. सेक्रेटरी जो लिख कर दे देता है मैं वही कह देता हूँ. मैं कभी कभी जवाब देने के लिये समय भी मांग लेता हूँ. मेम्बरों पर रोब पड़ता है और वह समझते हैं कि मैं काफ़ी मेहनत करता हूँ. जवाब मुझे एक ही देना है चाहे वह मैं अब दे दूँ या दो चार रोज़ के बाद दूँ. वह जवाब एक ही है. सब के सेक्रेटरी वही कहते हैं, मेरा सेक्रेटरी भी वही कहता है—"जो कुछ मैं या मेरा डिपार्टमेंट करता है वही ठीक है, देश के उद्धार का वही एक तरीक़ा है." मैं हमेशा इसी बात को दुहराता रहता हूँ. सेक्रेटरी ने एक गुर और बताया है. वह कहता है अगर कहीं फंसने लगिये तो सच से साफ़ इंकार कर जाया कीजिये. मैंने आज़मा कर देख लिया बहुत ही फ़ायदे

سے ہر تیسرے سال کتابیں بدل جاتی ہیں، جب کہ سرکاری افسروں کو سیکڑوں میں تنخواہ ملتی ہے، آنے والی نسل کے نرماتاؤں کو کہیں کہیں پچاس روپے بھی نہیں ملتے۔ گاؤں میں بونس ملنے کی کون کہے ڈسٹرکٹ بورڈ کے ماسٹروں کو چھ چھ مہینے تک تنخواہ ہی نہیں ملتی۔ ودیارتھیوں کے کھانے اور رہنے کا پربندھ تو دور رہا اُن کی پڑھائی کی فیس تک معاف نہیں ہوتی۔ چیکوسلاویکیا کی سرکار سب کو نوکری دینے کا بیڑا اُٹھاتی ہے اور ہماری سرکار یہ جانتی ہی نہیں کہ جو آج بیکار ہیں اُنہیں کام پر کیسے لگائے۔

یوجنا منتری

بھگوان جسے دیتا ہے چھپر پھاڑ کر دیتا ہے۔ رات کو جب میں سویا تو منتری نہیں تھا اور صبح جب آنکھ کھلی تو معلوم ہوا کہ میں منتری ہوں۔ کچھ بھنک پہلے سے کان میں پڑ گئی تھی اس لئے کوئی اچرج نہیں ہوا۔ ایک نہ ایک دن یہ ہونا ہی تھا۔ محنت کا پھل سب کو ملتا ہے۔ پارٹی کی بیٹھکوں میں میں خوب گرم گرم باتیں کرتا تھا، پارلیامنٹ میں سوال کرنا تو میری عادت ہوتی گئی تھی۔ یہ بری عادت کبھی کبھی اب بھی اُبھر آتی ہے۔ کوشش کر کے دباتا ہوں—اب میں جواب دینے کے لئے ہوں سوال کرنے کے لئے نہیں۔ پہلے میں سوچتا تھا کہ پارلیامنٹ میں سوالوں کا جواب دینے کے لئے کافی عقل کی ضرورت ہے۔ تجربے نے بتایا کہ ہر سوال کا جواب تیار رہنا چاہئے، بس۔ تیاری میں مجھے کچھ نہیں کرنا پڑتا۔ سکریٹری جو لکھ کر دے دیتا ہے میں وہی کہہ دیتا ہوں۔ میں کبھی کبھی جواب دینے کے لئے سمے بھی مانگ لیتا ہوں۔ ممبروں پر رعب پڑتا ہے اور وہ سمجھتے ہیں کہ میں کافی محنت کرتا ہوں۔ جواب مجھے ایک ہی دینا ہے چاہے وہ میں اب دے دوں یا دو چار روز کے بعد دوں۔ وہ جواب ایک ہی ہے۔ سب کے سکریٹری وہی کہتے ہیں، میرا سکریٹری بھی وہی کہتا ہے—"جو کچھ میں یا میرا ڈیپارٹمنٹ کرتا ہے وہی ٹھیک ہے، دیش کے اُدھار کا وہی ایک طریقہ ہے۔" میں ہمیشہ اسی بات کو دہراتا رہتا ہوں۔ سکریٹری نے ایک گر اور بتایا ہے۔ وہ کہتا ہے اگر کہیں پھنسنے لگئے تو سچ سے صاف انکار کر جایا کیجئے۔ میں نے آزما کر دیکھ لیا بہت ہی فائدے

कर विद्यार्थियों का चुनाव करता है. केवल आखिरी साल ही परीक्षा होती है. ऊंची तालीम पाने वाले हर विद्यार्थी को हर साल चार हफ्ते खेती बाड़ी, उद्योग धन्धों और व्योपार के सम्बन्ध में काम करना पड़ता है. जो लड़के तीसरे ग्रेड की ऊंची तालीम नहीं हासिल करते उन्हें चार साल तक बेसिक तकनीकी स्कूल में पढ़ाया जाता है. इन स्कूलों में तालीम बिलकुल मुफ्त है. बेसिक तकनीकी स्कूलों से निकल कर ऊंचे तकनीकी ज्ञान के लिये विद्यार्थी खास ज्ञान तकनीकी स्कूलों में भरती होते हैं. इस स्कूल की पढ़ाई दो से तीन साल में खतम होती है. ऊंचे तकनीकी स्कूलों में विद्यार्थी खेती बाड़ी, उद्योग धन्धों, व्योपार वगैरा सम्बन्धी शिक्षा प्राप्त करते हैं. इस शिक्षा का समय चार से पांच बरस तक होता है. इसके अलावा जमनीशिया स्कूलों में आर्ट की पढ़ाई होती है—साइन्स, प्रकृति शास्त्र, समाज शास्त्र, चेक, सलावाक, रूसी, लातीनो भाषाएं, गनित, दर्शन शास्त्र, वगैरा.

अपाहिज, गूंगे बहरे और दूसरे रोगी बच्चों के लिये भी अलग अलग स्कूल हैं. नई खोज के लिये खोज और प्रयोग स्कूल भी खोले गए हैं.

हर स्कूल में खेल मैदान, बागीचा, होस्टल, मास्टरों के मकान, वर्कशाप, खेती करने के लिये काफी जमीन, लाइब्रेरी वगैरा का प्रबन्ध सरकार करती है. आपसी मेल बढ़ाने के लिये "यूथ होस्टल" और "यूथ क्लब" खोले गए हैं.

स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली किताबें सरकारी प्रकाशन की तरफ से छपती हैं. केवल धार्मिक शिक्षा के लिये किताबें अलग अलग धर्म वालों की राय से छपती हैं. सरकार केवल यह देखती है कि उनमें आपसी नफरत बढ़ाने की कोई चीज न हो. स्कूलों में फौजी तालीम दी जाती है.

मास्टरों और स्कूलों में दूसरे काम करने वालों की तनखाह सरकारी दफ्तरों की तनखाह के बराबर ही होती है. जो मास्टर गावों में पढ़ाते हैं उन्हें खास बोनस भी दिया जाता है.

हमारे देश में भी कहने को लाजमी तालीम का रिवाज है. यहां भी बेसिक स्कूल, जूनियर हाई स्कूल, हायर सेकेन्डरी स्कूल और यूनीवर्सिटियां हैं पर इन सब में पढ़े लिखे आदमी पैदा नहीं होते, क्लर्क ढाले जाते हैं. किसी ने ठीक कहा है कि यह सब बूचड़ खाने हैं जहां बच्चों के जीवन का वध किया जाता है. हमारे पढ़े लिखे नौजवान किसी जगह ठीक नहीं खपते. समान शिक्षा की गारन्टी तो हमारा विधान भी देता है पर समान अवसर और हालत की गारन्टी कहीं दिखाई नहीं पड़ती. हमारे यहां हजारों पब्लिशर पुस्तकें छाप कर धन कमाते हैं, उन्हीं की वजह

کو ودیارتھیوں کا چناؤ کرتا ہے. کیول آخری سال ہی پریکشا ہوتی ہے . اونچی تعلیم پانے والے ہر ودیارتھی کو ہر سال چار ہفتے کھیتی باڑی، ادیوگ دھندوں اور بیوپار کے سمبندھ میں کام کرنا پڑتا ہے . جو لڑکے تیسرے گریڈ کی اونچی تعلیم نہیں حاصل کرتے انہیں چار سال تک بیسک ٹکنیکی اسکول میں پڑھایا جاتا ہے. ان اسکولوں میں تعلیم بالکل مفت ہے . بیسک ٹکنیکی اسکولوں سے نکل کر اونچے ٹکنیکی گیان کے لئے ودیارتھی خاص گیان ٹکنیکی اسکولوں میں بھرتی ہوتے ہیں . اس اسکول کی پڑھائی دو سے تین سال میں ختم ہوتی ہے . اونچے ٹکنیکی اسکولوں میں ودیارتھی کھیتی باڑی، ادیوگ دھندوں، بیوپار وغیرہ سمبندھی شکشا پراپت کرتے ہیں. اس شکشا کا سمے چار سے پانچ برس تک ہوتا ہے . اس کے علاوہ جمنیشیا اسکولوں میں آرٹ کی پڑھائی ہوتی ہے— سائنس، پرکرتی شاستر، سماج شاستر، چیک، سلواک، روسی، لاطینی بھاشائیں، گنت، درشن شاستر، وغیرہ .

اپاہج، گونگے بہرے اور دوسرے روگی بچوں کے لئے بھی الگ الگ اسکول ہیں . نئی کھوج کے لئے کھوج اور پریوگ اسکول بھی کھولے گئے ہیں .

ہر اسکول میں، کھیل میدان، باغیچہ، ہوسٹل، ماسٹروں کے مکان، ورک شاپ، کھیتی کرنے کے لئے کافی زمین، لائبریری وغیرہ کا پربندھ سرکار کرتی ہے . آپسی میل بڑھانے کے لئے " یوتھ ہوسٹل " اور " یوتھ کلب " کھولے گئے ہیں .

اسکولوں میں پڑھائی جانے والی کتابیں سرکاری پرکاشن کی طرف سے چھپتی ہیں . کیول دھارمک شکشا کے لئے کتابیں الگ الگ دھرم والوں کی رائے سے چھپتی ہیں . سرکار کیول یہ دیکھتی ہے کہ ان میں آپسی نفرت بڑھانے کی کوئی چیز نہ ہو . اسکولوں میں فوجی تعلیم دی جاتی ہے .

ماسٹروں اور اسکولوں میں دوسرے کام کرنے والوں کی تنخواہ سرکاری دفتروں کی تنخواہ کے برابر ہی ہوتی ہے. جو ماسٹر گاؤں میں پڑھاتے ہیں انہیں خاص بونس بھی دیا جاتا ہے.

ہمارے دیش میں بھی کہنے کو لازمی تعلیم کا رواج ہے . یہاں بھی بیسک اسکول، جونیر ہائی اسکول، ہائیر سکنڈری اسکول اور یونیورسٹیاں ہیں. پر ان سب میں پڑھے لکھے آدمی پیدا نہیں ہوتے، کلرک ڈھالے جاتے ہیں. کسی نے ٹھیک کہا ہے کہ یہ سب بوچڑ خانے ہیں جہاں بچوں کے جیون کا بدھ کیا جاتا ہے . ہمارے پڑھے لکھے نوجوان کسی جگہ ٹھیک نہیں کھپتے . سمان شکشا کی گارنٹی تو ہمارا ودھان بھی دیتا ہے پر سمان اوسر اور حالت کی گارنٹی کہیں دکھائی نہیں پڑتی. ہمارے یہاں ہزاروں پبلشر پستکیں چھاپ کر دھن کماتے ہیں . انہیں کی وجہ

और गांव में खोल दिये जाते हैं जहां पर 20 बच्चे हों. किसी भी नरसरी स्कूल में तीस से ज़ियादा बच्चे नहीं रखे जाते. किसी सूरत में भी पन्द्रह से कम बच्चे न होने चाहियें. इन स्कूलों का सारा भार प्रान्त की सरकारें उठाती हैं. बच्चों की पढ़ाई, तन्दुरुस्ती और भोजन वग़ैरा का सारा इन्तज़ाम सरकार की तरफ़ से होता है.

नरसरी स्कूल के बाद बच्चे शुरू की तालीम के लिये पहले और दूसरे ग्रेड के मिले जुले स्कूलों में दाख़िल होते हैं. यह तालीम लाज़मी होती है. दाख़ले से पहले तन्दुरुस्ती की परीक्षा में पास होना ज़रूरी है. इन स्कूलों में नौ बरस तक के बच्चे पढ़ते हैं. पहली ग्रेड में अगर कोई लड़का बराबर आता रहा है पर उस की ज़रूरी तालीम पूरी नहीं हुई तो उसे दूसरी ग्रेड में नहीं भेजा जाता. उस को यह सुविधा दी जाती है कि अगर वह जल्द ही ज़रूरी तालीम पूरी कर ले तो उसे दूसरे ग्रेड में भेज दिया जाएगा. जो बच्चे बीमारी के कारन अपनी तालीम पूरी नहीं कर पाते वैसे बीस बीस लड़कों को मिला कर अलग ग्रुप बना दिये जाते हैं. इन स्कूलों में हर विद्यार्थी को उसके धर्म के अनुसार धार्मिक तालीम दी जाती है. कुछ स्कूलों में केवल पहले ग्रेड की तालीम होती है. उनमें भी यही नियम माने जाते हैं. इन स्कूलों में भाशा, गनित, तकनीकी विशय, तन्दुरुस्ती और खेल कूद जैसे समाजी विशयों की तालीम होती है. दूसरे ग्रेड के स्कूलों में इन विशयों के अलावा चेक, सलावाक और रूसी भाशा की तालीम दी जाती है. पहले ग्रेड की तालीम की मेआद पांच हिस्सों में बंटी हुई है और दूसरे ग्रेड की तालीम चार हिस्सों में. इन स्कूलों में लड़कियों को दूसरे विशयों के साथ साथ गृहस्थी शास्त्र की भी तालीम मिलती है. विद्यार्थियों के दिमाग़ से हाथ और दिमाग़ के कामों के भेद भाव को मिटाने के लिये हर विद्यार्थी के लिये यह ज़रूरी कर दिया गया है कि पढ़ाई पूरी करने से पहले वह चार हफ़्ते किसी कारख़ाने में या उस जगह जहां सरकार ने मुक़र्रर कर रखा हो मज़दूरों का काम करें. यह स्कूल हमारे देश के जूनियर हाई स्कूल और हायर सेकेन्डरी स्कूलों की तरह हैं.

पहले और दूसरे ग्रेड की तालीम ख़तम करने के बाद ऊंची तालीम पाने के लिये जो विद्यार्थी मिले जुले तीसरे ग्रेड के स्कूलों में आते हैं वह या तो ज़रूरी तकनीकी तालीम हासिल करते हैं या अपने पसन्द के विशयों का अध्ययन करते हैं. लड़कियां घर सम्बन्धी शिक्षा हासिल करती हैं. कुछ विशयों की पढ़ाई चार साल में ख़तम होती है और कुछ की चार साल से पहले. यह स्कूल यूनीवर्सिटी स्तर के होते हैं. दाख़ले के लिये सरकार की तरफ़ से एक बोर्ड होता है जो पुराने रिकार्ड को देख कर, दिमाग़ी रुजहान को समझ

گاؤں میں کھول دیئے جاتے ہیں جہاں پر 20 ہوں. کسی بھی نرسری اسکول میں تیس سے زیادہ نہیں رکھے جاتے . کسی صورت میں بھی پندرہ سے بچے نہ ہونے چاہئیں. اِن اسکولوں کا سارا بھار پرانت سرکاریں اُٹھاتی ہیں . بچوں کی پڑھائی' تندرستی بھوجن وغیرہ کا سارا انتظام سرکار کی طرف سے ہوتا ہے .

نرسری اسکول کے بعد بچے شروع کی تعلیم کے لئے لے اور دوسرے گریڈ کے ملے جلے اسکولوں میں داخل تے ہیں . یہ تعلیم لازمی ہوتی ہے . داخلے سے پہلے ندرستی کی پریکشا میں پاس ہونا ضروری ہے . ان کولوں میں نو برس تک کے بچے پڑھتے ہیں . پہلی یڈ میں اگر کوئی لڑکا برابر آتا رہا ہے پر اس کی ضروری لیم پوری نہیں ہوئی تو اُسے دوسری گریڈ میں نہیں بھیجا جاتا . اُس کو یہ سودھا دی جاتی ہے کہ اگر وہ د ہی ضروری تعلیم پوری کر لے تو اُسے دوسرے گریڈ یں بھیج دیا جائے گا . جو بچے بیماری کے کارن اپنی لیم پوری نہیں کر پاتے ویسے بیس بیس لڑکوں کو ملا الگ گروپ بنا دیئے جاتے ہیں . اِن اسکولوں میں ہر ۔ارتھی کو اُس کے دھرم کے انوسار دھارمک تعلیم ی جاتی ہے . کچھ اسکولوں میں کیول پہلے گریڈ کی لیم ہوتی ہے . اُن میں بھی یہی نیم مانے جاتے ہیں. اسکولوں میں بھاشا' گنت' تکنیکی وشے' تندرستی کھیل کود جیسے سماجی وشیوں کی تعلیم ہوتی ہے . سرے گریڈ کے اسکولوں میں اِن وشیوں کے علاوہ چیک' لاواک اور روسی بھاشا کی تعلیم دی جاتی ہے . پہلے گریڈ تعلیم کی معیاد پانچ حصوں میں بٹی ہوتی ہے اور سرے گریڈ کی تعلیم چار حصوں میں . اِن اسکولوں میں یوں کو دوسرے وشیوں کے ساتھ ساتھ گرہستی شاستر کی ی تعلیم ملتی ہے . ودیارتھیوں کے دماغ سے ہاتھ اور ماغ کے کاموں کے بھید بھاؤ کو مٹانے کے لئے ہر دیارتھی کے لئے یہ ضروری کر دیا گیا ہے کہ پڑھائی پوری لے سے پہلے وہ چار ہفتے کسی کارخانے میں یا اُس جگہ ہاں سرکار نے مقرر کر رکھا ہو مزدوروں کا کام کرے. یہ اسکول ارے دیش کے جونیئر ہائی اسکول اور ہائیر سکنڈری کولوں کی طرح ہیں .

پہلے اور دوسرے گریڈ کی تعلیم ختم کرنے کے بعد چی تعلیم پانے کے لئے جو ودیارتھی ملے جلے تیسرے یڈ کے اسکولوں میں آتے ہیں وہ یا تو ضروری تکنیکی لیم حاصل کرتے ہیں یا اپنے پسند کے وشیوں کا ادھین تے ہیں . لڑکیاں گھر سمبندھی شکشا حاصل کرتی ہیں. چھ وشیوں کی پڑھائی چار سال میں ختم ہوتی ہے اور کچھ چار سال سے پہلے. یہ اسکول یونیورسٹی استر کے ہوتے یں . داخلے کے لئے سرکار کی طرف سے ایک بورڈ ہوتا ہے پرانے ریکارڈ کو دیکھ کر' دماغی رجحان کو سمجھ

के सामने ठोस बातें रखी जाएं जिससे वह अपने नैतिक ... को अच्छी तरह समझें और इनसान से इनसान के बन्ध को पूरी तरह जानें. थोड़े से शब्दों में चैकोसला-...या के नए तालीमी ढंग का मतलब यह था कि नौजवानों काम के क़ाबिल बनाया जाय और वह असली मानों में लिखे बन सकें.

नए चैकोसलावेकिया के विधान में लिखा है कि बेसिक ...म मुफ्त दी जाएगी और सरकार इस बात की पूरी तरह ...म्मेदार होगी कि हर औरत और मर्द को उसकी क़ाब-...त, ज़रूरत और उपयोगिता के अनुसार तालीम मिले.

नए तालीमी ढांचे को अनुसार सारे चैकोसलावेकिया स्कूलों में जिसमानी और दिमाग़ी तरक़्क़ी और ...त्र के विकास को सामने रख कर कुल तालीम दी ... है. रचनात्मक कामों पर बेहद ध्यान दिया जाता है. के अलावा नागरिक जीवन के बारे में पूरी जानकारी, प्रेम और समाजी ज़िम्मेदारी का जज़बा पैदा करने के अलग अलग संस्थाएं खोली गई हैं. स्कूलों में पढ़ाई ...ती भाषाओं में होती है. बूहीमिया, मोरोविया और ...सिया प्रान्त में चेक भाषा में पढ़ाई होती है और सला-...या प्रान्त में सलावाक भाषा में. शिक्षा मंत्री की देख में एक डाईरेक्टर इन सारे स्कूलों की तालीमी पालीसी चलाता है. विद्यार्थियों के मां बाप और वारिसों का एक है जिसकी सहायता और सलाह से यह डाइरेक्टर करता है.

नए चैकोसलावेकिया में नीचे लिखे स्कूल होते हैं :—

1. नरसरी (छोटे बच्चों का) स्कूल.
2. शुरू की तालीम के स्कूल—
   (i) पहले और दूसरे ग्रेड के मिले जुले स्कूल.
   (ii) पहले ग्रेड के स्कूल.
   (iii) दूसरे ग्रेड के स्कूल.
3. ऊंची तालीम—
   (i) तीसरे ग्रेड के मिले जुले स्कूल.
   (ii) बेसिक तकनीकी स्कूल.
   (iii) तकनीकी स्कूल.
   (iv) ऊंचे तकनीकी स्कूल.
   (v) जमनीशिया (Faculty of Art).
4. अपाहिज और रोगी बच्चों के स्कूल.
5. खोज और प्रयोग स्कूल.

नरसरी स्कूलों में तीन से छै बरस तक के बच्चों की ...ई होती है. इस तरह के स्कूल हर एक ...कार, क़स्बे

اُن کے سامنے ٹھوس باتیں رکھی جائیں جس سے وہ اپنے نیتک فرض کو اچھی طرح سمجھیں اور انسان سے انسان کے سمبندھ کو پوری طرح جانیں ۔ تھوڑے سے شبدوں میں چیکوسلوویکیا کے نئے تعلیمی ڈھنگ کا مطلب یہ تھا کہ نوجوانوں کو کام کے قابل بنایا جائے اور وہ اصلی معنوں میں پڑھے لکھے بن سکیں ۔

نئے چیکوسلوویکیا کے ودھان میں لکھا ہے کہ بیسک تعلیم مفت دی جائے گی اور سرکار اِس بات کی پوری طرح ذمہ دار ہوگی کہ ہر عورت اور مرد کو اُس کی قابلیت، ضرورت اور اُپیوگتا کے انوسار تعلیم ملے ۔

نئے تعلیمی ڈھانچے کے انوسار سارے چیکوسلوویکیا کے اسکولوں میں جسمانی اور دماغی ترقی اور چرتر کے وکاس کو سامنے رکھ کر کل تعلیم دی جاتی ہے ۔ رچناتمک کاموں پر بے حد دھیان دیا جاتا ہے ۔ اِس کے علاوہ ناگرک جیون کے بارے میں پوری جانکاری، دیش پریم اور سماجی ذمہ داری کا جذبہ پیدا کرنے کے لئے الگ الگ سنستھائیں کھولی گئی ہیں اسکولوں میں پڑھائی پرانتی بھاشاؤں میں ہوتی ہے. بوہیمیا، موراویا اور سلیسیا پرانت میں چیک بھاشا میں پڑھائی ہوتی ہے اور سلوواکیا پرانت میں سلوواک بھاشا میں ۔ شکشا منتری کی دیکھ ریکھ میں ایک ڈائرکٹر اِن سارے اسکولوں کی تعلیمی پالیسی کو چلاتا ہے ۔ ودیارتھیوں کے ماں باپ اور وارثوں کا ایک سنگھ ہے جس کی سہائتا اور صلاح سے یہ ڈائرکٹر کام کرتا ہے ۔

نئے چیکوسلوویکیا میں نیچے لکھے اسکول ہوتے ہیں :—

1. نرسری (چھوٹے بچوں کا) اسکول ۔
2. شروع کی تعلیم کے اسکول ۔
   (i) پہلے اور دوسرے گریڈ کے ملے جلے اسکول ۔
   (ii) پہلے گریڈ کے اسکول ۔
   (iii) دوسرے گریڈ کے اسکول ۔
3. اونچی تعلیم—
   (i) تیسرے گریڈ کے ملے جلے اسکول ۔
   (ii) بیسک تکنیکی اسکول ۔
   (iii) تکنیکی اسکول ۔
   (iv) اونچے تکنیکی اسکول ۔
   (v) جم نیشیا (Faculty of Art)
4. اپاہج اور روگی بچوں کے اسکول ۔
5. کھوج اور پریوگ اسکول ۔

نرسری اسکولوں میں تین سے چھ برس تک کے بچوں کی تعلیم ہوتی ہے ۔ اس طرح کے اسکول ہر اُس نگر، قصبے

चैकोसलावेकिया में पढ़ाई का ग

(दीना नाथ मिश्र)

हिटलर शाही के चंगुल से आज़ाद होने के बाद चैकोसलावेकिया के लोग भी दूसरे पूरबी योरप के देशों की तरह अपने देश को फिर से बनाने में जुट गए. लड़ाई के दर्दनाक दृश्य वहां के ज़र्रे ज़र्रे में दिखाई पड़ रहे थे. हमलावरों के जंगी जहाज़ों ने इमारतों, उद्योग धन्धों और ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरी चीज़ों को तहस नहस कर दिया था. चैकोसलावेकिया के सामने माली, राज काजी, समाजिक और कलचरी सवाल थे. नई सरकार ने मज़बूत क़दम उठाये और अन्त में उसे सफलता मिली. जहां एक तरफ़ देश की माली और राजकाजी ज़िन्दगी में इनक़लाब आया वहां दूसरी तरफ़ तालीम के स्तर को ऊंचा करने, उसकी उस समय की बुराईयां दूर करने, सभी नागरिकों को पढ़ा लिखा बनाने और जीवन के हर मैदान में उन्हें बराबर का मौक़ा देने के लिये कोशिशें की गईं. पहले तो सरकार ने देश का माली ढांचा बदल कर सब की रोज़ी का इन्तज़ाम किया, उसके बाद कलचरी ज़िन्दगी को ठीक करने के लिये तालीम के ढांचे में ज़बरदस्त सुधार किया गया. सची और अच्छी तालीम के लिये ऐसे स्कूलों की ज़रूरत थी. जहां पढ़ाई लिखाई होती हो तालीम के भेस में दूकानदारी न होती हो. सरकार ने सारे स्कूलों को अपने क़बज़े में कर लिया. कुछ ऐसी तालीमी संस्थाएं बच रहीं जिन्हें सरकार ने नहीं छेड़ा लेकिन उन की रूप रेखा ऐसी कर दी गई कि वह किसी सूरत से भी स्कूल नहीं कहलाई जा सकतीं.

जब नई सरकार ने इस सवाल को उठाया तो बहुत सी समस्याएं उसके सामने आ खड़ी हुईं. उन पर सोच विचार हुआ. बच्चों की तन्दुरुस्ती, रहन सहन और तालीम का ध्यान रख के नरसरी स्कूलों पर ज़ोर दिया गया. पहली और दूसरी ग्रेड के स्कूलों में ऐसी सुविधाएं पैदा की गईं. ताकि सब नागरिक समान तरीक़े से इन से फ़ायदा उठा सकें. चैकोसलावेकिया में तीन अलग अलग इलाक़े शामिल हैं. तीनों के रहन वालों में काफ़ी खिचाव रहता था. नौ जवानों के दिमाग़ से भेद भाव के इस ज़हर को मिटाने के लिये भी तालीम से काम लिया गया. दिमाग़ी काम करने वालों और हाथ से काम करने वालों के बीच की गहरी खाई को भी पाटना था. चैकोसलावेकिया के नौजवानों को किताबी मसाले से अधिक रोज़ काम आने वाली तालीम देना आवश्यक था ताकि वह अपने पैरों पर ख़ुद खड़े हो सकें. बच्चों का चरित्र ठीक करने के लिये ज़रूरी था कि

چیکوسلاویکیا میں پڑھائی کا ڈھنگ

(دینا ناتھ مشر)

ہٹلر شاہی کے چنگل سے آزاد ہونے کے بعد چیکوسلاویکیا کے لوگ بھی دوسرے پوربی یورپ کے دیشوں کی طرح اپنے دیش کو پھر سے بنانے میں جٹ گئے۔ لڑائی کے دردناک درشیہ وہاں کے ذرے ذرے میں دکھائی پڑ رہے تھے۔ حملہ آوروں کے جنگی جہازوں نے عمارتوں، ادیوگ دھندوں اور زندگی کی تمام ضروری چیزوں کو تہس نہس کر دیا تھا۔ چیکوسلاویکیا کے سامنے مالی، راج کاجی، سماجک اور کلچری سوال تھے۔ نئی سرکار نے مضبوط قدم اٹھائے اور انت میں اسے سپھلتا ملی۔ جہاں ایک طرف دیش کی مالی اور راج کاجی زندگی میں انقلاب آیا وہاں دوسری طرف تعلیم کے استر کو اونچا کرنے، اس کی اس سمے کی برائیاں دور کرنے، سبھی ناگرکوں کو پڑھا لکھا بنانے اور جیون کے ہر میدان میں انہیں برابر کا موقع دینے کے لئے کوششیں کی گئیں۔ پہلے تو سرکار نے دیش کا مالی ڈھانچا بدل کر سب کی روزی کا انتظام کیا، اس کے بعد کلچری زندگی کو ٹھیک کرنے کے لئے تعلیم کے ڈھانچے میں زبردست سدھار کیا گیا۔ سچی اور اچھی تعلیم کے لئے ایسے اسکولوں کی ضرورت تھی جہاں پڑھائی لکھائی ہوتی ہو، تعلیم کے بھیس میں دوکانداری نہ ہوتی ہو۔ سرکار نے سارے اسکولوں کو اپنے قبضے میں کر لیا۔ کچھ ایسی تعلیمی سنستھائیں بچ رہیں جنہیں سرکار نے نہیں چھیڑا لیکن ان کی روپ ریکھا ایسی کر دی گئی کہ وہ کسی صورت سے بھی اسکول نہیں کہلائی جا سکتیں۔

جب نئی سرکار نے اس سوال کو اٹھایا تو بہت سی سمسیائیں اس کے سامنے آ کھڑی ہوئیں۔ ان پر سوچ وچار ہوا۔ بچوں کی تندرستی، رہن سہن اور تعلیم کا دھیان رکھ کے نرسری اسکولوں پر زور دیا گیا۔ پہلی اور دوسری گریڈ کے اسکولوں میں ایسی سودھائیں پیدا کی گئیں تاکہ سب ناگرک سمان طریقے سے ان سے فائدہ اٹھا سکیں۔ چیکوسلاویکیا میں تین الگ الگ علاقے شامل ہیں۔ تینوں کے رہنے والوں میں کافی کھنچاؤ رہتا تھا۔ نوجوانوں کے دماغ سے بھید بھاؤ کے اس زہر کو مٹانے کے لئے بھی تعلیم سے کام لیا گیا۔ دماغی کام کرنے والوں اور ہاتھ سے کام کرنے والوں کے بیچ کی گہری کھائی کو بھی پاٹنا تھا۔ چیکوسلاویکیا کے نوجوانوں کو کتابی مسالے سے ادھک روز کام آنے والی تعلیم دینا آوشیک تھا تاکہ وہ اپنے پیروں پر خود کھڑے ہو سکیں۔ بچوں کا چرتر ٹھیک کرنے کے لئے ضروری تھا کہ

सच, बिलकुल सच. यह बात सच न होती तो उसकी गाह मेरे दिल में क्यों होती ? हां, मैं ने तलाक़ ली, पर मैंने हीं, मेरे उस 'मैं' ने जो जोश में लिपटा हुआ था, और वह मैं' क्या मेरा 'मैं' था ? पानी से कब कोई जला है ? जो जला है गरम पानी से. गरम पानी, 'पानी' नहीं होता. पानी ; खिलाफ़ में आग होती है जो जलाती है, पानी हीं. वह गुस्सा था जिसने तलाक़ लिया, मुझ सुनैना ने नहीं. ह सुनैना, जिसने तलाक़ लिया, कोई मानिनीय रही होगी. ह मेरी कौन, उसके किये को मैं क्यों भुगतूं ?

मेरी बच्ची क्या तुझे अपने बाप की याद नहीं आती ? यूं से मैं समझ गई कि तुझ को याद आती है और यों न याद आयेगी. तेरी खातिर, नहीं नहीं मेरी बेटी खातिर तो उसने मुझको झिड़कना सीखा. वह कितना रा था जिसे मैं अपने मान के नशे में कड़वा र कटीला समझ बैठी. क्यों न टूट गई मेरी टांगें जब मैं दालत तलाक़ के लिये चलने लगी. क्यों न कट कर गिर मेरी ज़बान जब मैं तलाक़ की बात कहने लगी. क्यों टुकड़े टुकड़े हो गया मेरा मन जब मैं तलाक़ की बात चने लगी.

मैंने फ़रेब से, अपने मतलब से, अपने सुख के लिये, माज में बड़े बनने के लिये उसे पकड़ा था और पना कर लिया था. तो क्या अपने सच्चे मन से उसके पकड़ कर मैं उसको अपना नहीं बना सकती, ज़रूर सकती हूँ.

मेरी बच्ची, अब तू न घबरा, मैं जाती हूं, उस को ले ही लौटूंगी. मैं अब मज़दूरिन हूँ, मज़दूर बच्ची की हूँ, मज़दूर की प्यारी हूं, मज़दूर की साथिन हूं. मज़दूर ज़दूरी दोनों को अमीरी, रईसी से बढ़ कर मानती हूं. ज़दूरों को ही दुनिया को ऊंचा उठाने वाला समझती हूँ. मैं क्यों खाली हाथ लौटने लगी. अब तलाक़ के क़ानूनी म की क्या मजाल जो मेरे और मेरे पति के बीच में आसके. प्रेम के पानी को, क़ानून की तलवार, नाम लिये कहने को काट सकती है, अलग नहीं कर ती. प्रेम प्राण है, प्राण हवा है, हवा को क़ानून की र क्या खा कर काटेगी, वह खुद कट कर रह जायगी. काटने वाले के हाथ में झटका लगेगा.

वह गले में आगया.

मैं आ गया !

गले से लिपटा कर खोंपी में भींच कर सुनयना बोली.. ने खींचा तुमने बड़ा ज़ोर लगवाया, बड़े भारी निकले."

हवा और पानी आग के साथ मिल कर क्या नहीं सकते ?

—भगवानदीन

سچ' بالکل سچ . یہ بات سچ نہ ھوتی تو اُس کی چاہ میرے دل میں کیوں ہوتی ؟ ھاں' میں نے طلاق لی' پر میں نے نہیں' میرے اُس 'میں' نے' جو جوش میں لپٹا ہوا تھا' اور وہ 'میں' کیا میرا 'میں' تھا؟ پانی سے کب کوئی جلا ہے ؟ جو جلا ھے گرم پانی سے . گرم پانی' 'پانی' نہیں ھوتا . پانی کے خلاف میں آگ ہوتی ھے' جو جلاتی ھے' پانی نہیں . یہ غصہ تھا جس نے طلاق لیا' مجھ سنینا نے نہیں . وہ سنینا' جس نے طلاق لیا کوئی مانلنیہ رھی ھوگی . وہ میری کون' اُس کے کئے کو میں کیوں بھگتوں ؟

میری بچی کیا تجھے اپنے باپ کی یاد نہیں آتی ؟ کیوں کیوں سے میں سمجھ گئی کہ تجھ کو یاد آتی ھے اور کیوں نہ یاد آئے گی. تیری خاطر' نہیں نہیں' میری بیٹی کی خاطر تو اُس نے مجھ کو جھڑکنا سیکھا . وہ کتنا پیارا تھا جسے میں اپنے مان کے نشے میں کڑوا اور کٹیلا سمجھ بیٹھی . کیوں نہ ٹوٹ گئیں میری ٹانگیں جب میں عدالت طلاق کے لئے چلنے لگی. کیوں نہ کٹ کر گر گئی میری زبان جب میں طلاق کی بات کہنے لگی. کیوں نہ ٹکڑے ٹکڑے ھوگیا میرا من جب میں طلاق کی بات سوچنے لگی .

میں نے فریب سے' اپنے مطلب سے' اپنے سکھ کے لئے' سماج میں بڑے بننے کے لئے اُسے پکڑا تھا اور اپنا کر لیا تھا . کیا اپنے سچے من سے اُس کے پاؤں پکڑ کر میں اُسکو اپنا نہیں بنا سکتی' ضرور بنا سکتی ھوں .

میری بچی' اب تو نہ گھبرا' میں جاتی ھوں' اُسکو لے کر ھی لوٹوں گی. میں اب مزدورن ھوں' مزدور بچی کی ماں ھوں' مزدور کی پیاری ھوں' مزدور کی ساتھن ھوں . مزدور مزدوری دونوں کو امیری' رئیسی سے بڑھکر مانتی ھوں . مزدوروں کو ھی دنیا کو اونچا اُٹھانے والا سمجھتی ھوں. پھر میں کیوں خالی ھاتھ لوٹنے لگی. اب طلاق کے قانونی حکم کی کیا مجال جو میرے اور میرے پتی کے بیچ میں آڑے آ سکے . پریم کے پانی کو' قانون کی تلوار' نام کے لئے کہنے کو کاٹ سکتی ھے' الگ نہیں کر سکتی . پریم پران ھے' پران ھوا ھے' ھوا کو قانون کی کٹار کیا کھاکر کاٹے گی' وہ خود کٹ کر رہ جائے گی اور کاٹنے والے کے ھاتھ میں جھٹکا لگے گا .

وہ [illegible] میں آگیا .

میں آگیا !

گلے سے لپٹا کر کھونپی میں بھینچ کر سنینا بولی.

''میں نے کھینچا تم نے بڑا زور لگوایا' بڑے بھاری نکلے.''

ھوا اور پانی آگ کے ساتھ مل کر کیا نہیں کھینچ سکتے ؟

—بھگوان دین

हूं, मैंने उसकी सेवा को खुद ऊंची होने की सीढ़ी बनाया, उस तक पहुंचने की सीढ़ी नहीं, मेरी नजर उसकी ग़रीबी के दुखों पर ही पड़ कर रह गई, उस ग़रीबी के सुखों तक कहां पहुँच पाई ? मैं यह समझती रही, ग़रीबों के न आत्म अभिमान होता है न स्वभिमान, जब कि देखने को यह मिला कि वह दोनों समान रूप से ग़रीब अमीर दोनों में होते हैं. मेरे और उसके तन मिले न मन मिले, न आत्मा. वह मज़दूर था, मैं मज़दूरिन कब बनी ? उसके मन रईसज़ादी को कहां जगह थी ? और मैं बनी रही रईसज़ादी. वह देवता था, कैसा ही सही, पत्थर का सही पर मैं तो कलाकार बन कर उसे धोती पोंछती रही, अपना मन खुश करती रही, मैंने पुजारिन बन कर उसकी पूजा कब की ? ग़रीबी आदर की चीज़ है, उसको मैंने दया की चीज़ समझा. फिर मैं किस तरह उसके गले का हार बन सकती थी. मैं उसकी आंख की किरकिरी रही, शीतल सुरमा कब बनी ! मुझे मां बनने की क्या खुशी जब मैं सच्चे मानों में अर्धांगी न बन सकी. और सम्बन्ध भी तो मैंने उससे छोड़ा नहीं, कांटा अभी तो हर वक़्त कसकता है. मेरी बच्ची मज़दूर की बेटी है यह सुन कर मेरा चेहरा खिल उठता है, मन कहां खिलता है ? मज़दूर की बेटी उसे कोई क्यों नहीं कहता. हां अगर बसन्त आज मेरे पास होता तो मैं मज़दूरिन होती और मेरी बेटी मज़दूरिन की बेटी होती और तब मैं भीतर बाहर सब तरफ़ खिल उठती. रईस होना इतना गुनाह नहीं जितना रईस मानना. और वह बड़ा गुनाह मैं कर रही हूँ. रईस होना, न होना हो सकता है. रईस मानना पर न मानना असम्भव नहीं, तो मुश्किल बहुत है.

(बच्ची को गले लगा लेती है और कहती है.)

बेटी, तो बड़ी है, मज़दूर की बेटी जो है, मैं मज़दूर की बेटी नहीं. लोगो, मुझे मज़दूर बेटी की मां कहो रईस की बेटी नहीं. परिग्रह पाप है, मैं पापिन हूँ. मैं ने रियासत छोड़ दी, रईसी से चिपकी हूँ. हे मेरे मन, हे मेरी आत्मा, हे मेरे ईश्वर मुझे बल दो कि मैं अपने मन से रईसी को निकाल फेंक सकूं. मेरी बच्ची तू ज़ोर से मेरी छाती से दूध खींच और उसके साथ रईसी को भी खींच ले. देख देख उस दूध को कहीं पी न जाना, उसे थूक देना. वह बड़ी ज़हरीली चीज़ है, कहीं तुमको भी उस जैसी बे वफ़ा न बना दे. बच्ची तो बे बाप नहीं है. दुनिया मानती है तेरा बाप है, ज़िन्दा है, मज़दूर है, स्वाभिमानी है, आत्माभिमानी है. वह तेरी मां का हाथ न पकड़े; पर तेरी मां तो तेरे बाप के दिल का हाथ पकड़े है.

मैं उसके दिल का हाथ पकड़े हूं, झूठ, बिलकुल झूठ. दिल का हाथ पकड़े होती तो खींच न लेती. दिलों के बीच में क़ानून की क्या मजाल आने की हिम्मत करे !

ہوں، میں نے اُس کی سیوا کو خود اُونچی ہونے کی سیڑھی بنایا، اُس تک پہونچانے کی سیڑھی نہیں، میری نظر اُس کی غریبی کے دکھوں پر ہی پڑ کر رہ گئی، اُس غریبی کے سکھوں تک کہاں پہنچ پائی ؟ میں یہ سمجھتی رہی، غریبوں کے نہ آتم ابھیمان ہوتا ہے نہ سوابھیمان، جب کہ دیکھنے کو یہ ملا کہ یہ دونوں سمان روپ سے غریب امیر دونوں میں ہوتے ہیں۔ میرے اُس کے تن ملے نہ من ملے، نہ آتما۔ وہ مزدور تھا، میں مزدورن کب بنی ؟ اُس کے من میں رئیس زادی کو کہاں جگہ تھی ؟ اور میں بنی رہی رئیس زادی۔ وہ دیوتا تھا، کیسا ہی سہی، پتھر کا سہی، پر میں تو کلاکار بن کر اُسے دھوتی پونچھتی رہی، اپنا من خوش کرتی رہی، میں نے پجارن بن کر اُس کی پوجا کب کی ؟ غریبی آدر کی چیز ہے، اُسکو میں نے دیا کی چیز سمجھا۔ پھر میں کس طرح اُسکے گلے کا ہار بن سکتی تھی۔ میں اُسکی آنکھ کی کرکری رہی، شیتل سرمہ کب بنی ! مجھے ماں بننے کی کیا خوشی جب میں سچے معنوں میں اردھانگی نہ بن سکی۔ اور سمبندھ بھی تو میں نے اُس سے چھوڑا نہیں، کانٹا ابھی تو ہر وقت کسکتا ہے۔ میری بچی مزدور کی بیٹی ہے یہ سن کر میرا چہرہ کھل اُٹھتا ہے، من کہاں کھلتا ہے ؟ مزدور کی بیٹی اُسے کوئی کیوں نہیں کہتا۔ ہاں اگر بسنت آج میرے پاس ہوتا تو میں مزدورن ہوتی اور میری بیٹی مزدورن کی بیٹی ہوتی اور تب میں بھیتر باہر سب طرف کھل اُٹھتی۔ رئیس ہونا اتنا گناہ نہیں جتنا رئیس ماننا۔ اور وہ بڑا گناہ میں کر رہی ہوں۔ رئیس ہونا، نہ ہونا ہوسکتا ہے۔ پر رئیس ماننا، نہ ماننا اسمبھو نہیں تو مشکل بہت ہے۔

(بچی کو گلے لگا لیتی ہے اور کہتی ہے۔)

بیٹی، تو بڑی ہے، مزدور کی بیٹی جو ہے، میں مزدور کی بیٹی نہیں۔ لوگو، مجھے مزدور بیٹی کی ماں کہو رئیس کی بیٹی نہیں۔ پریگرہ پاپ ہے، میں پاپن ہوں۔ میں نے ریاست چھوڑ دی، رئیسی سے چپکی ہوں۔ میرے من، ہے میری آتما، ہے میرے ایشور مجھے بل دو کہ میں اپنے من سے رئیسی کو نکال پھینک سکوں۔ میری بچی تو زور سے میری چھاتی سے دودھ کھینچ اور اُس کے ساتھ رئیسی کو بھی کھینچ لے۔ دیکھ، دیکھ اُس دودھ کو کہیں پی نہ جانا، اُسے تھوک دینا۔ وہ بڑی زہریلی چیز ہے، کہیں تجھ کو بھی اُس جیسی بے وفا نہ بنا دے۔ بچی تو بے باپ نہیں ہے۔ دنیا مانتی ہے تیرا باپ ہے، زندہ ہے، مزدور ہے، سوابھیمانی ہے، آتم ابھیمانی ہے۔ وہ تیری ماں کا ہاتھ نہ پکڑے، پر تیری ماں تو تیرے باپ کے دل کا ہاتھ پکڑے ہے۔

میں اُس کے دل کا ہاتھ پکڑے ہوں، جھوٹ، بالکل جھوٹ۔ دل کا ہاتھ پکڑے ہوتی تو کھینچ نہ لیتی۔ دلوں کے بیچ میں قانون کی کیا مجال جو آنے کی ہمت کرے !

अब आप सोती ही रहेंगी ? उठिये उठिये. बच्ची को सम्भालिये. ख़बर भी है वह कब से रो रही है.

सुनैना ऐसे हुक्मों के जवाब में कुछ न बोलती. चुपचाप हुकुम मानने में ही ख़ैरियत समझती.

सुनैना कहां तो बड़े शौक़ से बसन्त की मालिश करती थी, सर में तेल लगाती थी, पांव दबाती थी, चारपाई बिछाती थी, उसके जूते तक साफ़ थी और कहां आज अगर बसन्तलाल उसे हाथ धुलाने के लिये हुक्म देता तो उसे डर कर हाथ तो धुलाने पड़ते थे पर अन्दर से जी जल कर ख़ाक हो जाता था. उसे अब मालूम हो रहा था कि सेवक और दास में क्या अन्तर है. वह जब अपने हुकुम की सेविका थी तो वह रानी थी. आज वह दूसरों के हुकुम पर चलने वाली दासी है. इसलिये बांदी है. बांदी बन कर रहना उसे कैसे सुहा सकता था. उसका दिल उसी को कुरेदने लगा और अब वह तलाक़ की बात सोचने लगी. तलाक़ देने के लिये उसे कोई वजह ढूंढे नहीं मिलती थी. आख़िर एक दिन उसे सूझ ही गई और वह बसन्त लाल का मुक़ाबिला कर बैठी और बसन्त लाल भी हाथ उठा बैठे. हाथ उठे पीछे हाथ रुका नहीं करता और अब रोज़ हाथ उठने लगा. बस इस हाथ को लेकर सुनैना अदालत में पहुंची और तलाक़ की डिगरी पा गई.

बसन्तलाल ने ज़रा भी तकलीफ़ नहीं मानी. वह अब डेढ़ सौ रुपये तनख्वाह पाते थे. मां दुनिया छोड़ कर जा ही चुकी थी. उन्होंने तुरन्त सुनैना काम कान छोड़ दिया और नया मकान किराये पर ले लिया. और ख़ूब आराम के साथ रहने लगे.

दस दिन के बाद ही सुनैना बसन्तलाल के बिना तड़पने लगी और उसकी आंखों के सामने अंधेरा अंधेरा सा मालूम होने लगा. आख़िर एक दिन हिम्मत कर के वह बसन्तलाल के मकान के दरवाज़े पर जा खड़ी हुई. बसन्तलाल निकला और सीधा अपने दफ़्तर चल दिया. न उसने सुनैना से बात की न दुआ सलाम. दूसरे दिन जब सुनैना फिर उसी तरह दरवाज़े पर खड़ी हुई और उसने बसन्तलाल को सलाम किया तो जवाब में उसने भी सलाम किया और दफ़्तर चल दिया.

कई दिन ऐसा करने पर भी सुनैना बसन्तलाल को बात करने के लिये मजबूर न कर पाई. अब उसकी समझ में न आता था कि वह क्या करे ? उसने बैठे बैठे अपनी जांच शुरू कर दी:—

मैं बसन्तलाल का देह ख़रीद सकी दिल तक पहुंच भी न सकी, मैंने उस पर दया की, प्रेम कब किया ! मैंने उसके साथ जो कुछ किया यह समझ कर किया कि मैं एहसान कर रही हूं, यह समझ कर कब किया कि सेवा करा रही

اب آپ سوتی ہی رہیں گی ؟ اُٹھئے اُٹھئے . بچی کو سنبھالئے. خبر بھی ہے وہ کب سے رو رہی ہے .

سنیدا ایسے حکموں کے جواب میں کچھ نہ بولتی . چپ چاپ حکم ماننے میں ہی خیریت سمجھتی .

سنینا کہاں تو بڑے شوق سے بسنت کی مالش کرتی تھی، سر میں تیل لگاتی تھی، پاؤں دباتی تھی، چارپائی بچھاتی تھی، اُس کے جوتے تک صاف کرتی تھی اور کہاں آج اگر بسنت لال اُسے ہاتھ دھلانے کے لئے حکم دیتا تو اُسے ڈر کر ہاتھ تو دھلانے پڑتے تھے پر اندر سے جی جل کر خاک ہو جاتا تھا . اُسے اب معلوم ہوتا رہا تھا کہ سیوک اور داس میں کیا انتر ہے . وہ جب اپنے حکم کی سیویکا تھی تو وہ رانی تھی . آج وہ دوسروں کے حکم پر چلنے والی داسی ہے . اِس لئے باندی ہے . باندی بن کر رہنا اُسے کیسے سہا سکتا تھا . اُس کا دل اُسی کو کھرنے لگا اور اب وہ طلاق کی بات سوچنے لگی . طلاق دینے کے لئے اُسے کوئی وجہ ڈھونڈھے نہیں ملتی تھی . آخر ایک دن اُسے سوجھ ہی گئی اور وہ بسنت لال کا مقابلہ کر بیٹھی اور بسنت لال بھی ہاتھ اُٹھا بیٹھے . ہاتھ اُٹھے پیچھے ہاتھ رکا نہیں کرتا اور اب روز ہاتھ اُٹھنے لگا . بس اِس ہاتھ کو لے کر سنینا عدالت میں پہونچی اور طلاق کی ڈگری پاگئی.

بسنت لال نے ذرا بھی تکلیف نہیں مانی. وہ اب ڈیڑھ سو روپئے تنخواہ پاتے تھے . ماں دنیا چھوڑ کر جا ہی چکی تھی . اُنہوں نے ترنت سنینا کا مکان چھوڑ دیا اور نیا مکان کرائے پر لے لیا. اور خوب آرام کے ساتھ رہنے لگے .

دس دن کے بعد ہی سنینا بسنت لال کے بنا تڑپنے لگی اور اُس کی آنکھوں کے سامنے اندھیرا اندھیرا سا معلوم ہونے لگا . آخر ایک دن ہمت کر کے وہ بسنت لال کے مکان کے دروازے پر جا کھڑی ہوئی. بسنت لال نکلا اور سیدھا اپنے دفتر چل دیا . نہ اُس نے سنینا سے بات کی نہ دعا سلام . دوسرے دن جب سنینا پھر اُسی طرح دروازے پر کھڑی ہوئی اور اُس نے بسنت لال کو سلام کیا تو جواب میں اُس نے بھی سلام کیا اور دفتر چل دیا .

کئی دن ایسا کرنے پر بھی سنینا بسنت لال کو بات کرنے کے لئے مجبور نہ کر پائی . اب اُس کی سمجھ میں نہ آتا تھا کہ وہ کیا کرے ؟ اُس نے بیٹھے بیٹھے اپنی جانچ شروع کر دی:—

میں بسنت لال کا دیہ خرید سکی دل تک پہنچ بھی نہ سکی، میں نے اُس پر دیا کی، پریم کب کیا! میں نے اُس کے ساتھ جو کچھ کیا یہ سمجھ کرکیا کہ میں احسان کر رہی ہوں، یہ سمجھ کر کب کیا کہ سیوا کرا رہی

देखो बसन्त, तुम दफ्तर से थके हुए आए हो, तुम्हारी मां बुढ़िया है. मेरे पास कोई काम नहीं. मैंने अगर तुम्हारे हाथ पांव धुला दिये या जरा हाथ लगा कर धो दिये तो इसमें तुम्हें अचरज क्यों ?

बहन जी, कहां आप और कहां हम ग़रीब. आपने अपने घर में हमें जगह दे दी और एक पैसा किराया नहीं लेतीं. यह एहसान ही हम पर इतना है कि हम उमर भर आपकी सेवा करें तो उसको पूरा पूरा नहीं चुका सकते. और फिर उल्टे आप मेरे पांव धोयें !

नहीं नहीं बसन्त, तुम यह ग़लत सोच रहे हो. मेरे पास जगह बेकार पड़ी थी. मैंने तुम्हें उसमें बसा दिया इसमें एहसान कैसा ? आदमी आदमी सब एक हैं. इसमें बड़े छोटे का क्या सवाल. मैं ठाली रहती हूं तुम बहुत काम करते हो. फिर मैं अगर तुम्हारी सेवा कर दूँ तो इसमें बुराई क्या ?

बसन्ता चुप हो गया.

सुनैना का अब रोज़ ही यह काम हो गया कि वह कभी बसन्ता की मां की खाने में मदद करती और कभी उसे अच्छे अच्छे सामान दे जाती और कभी कभी पकवान भी दे जाती. बसन्ता के लिये तो वह हर दम तैयार रहती, उसके सर में तेल लगाती, उसके बदन की मालिश करती, उसके पांव दबाती, उसके लिये बढ़िया बढ़िया खाना लाती. उसके सब कपड़े धोबी के यहां धुलवाती और उसे कभी एक मिन्ट को भी गन्दा न रहने देती. एक तरह से उसका सारा खर्च अपने सिर ले लिया और आखिर एक दिन उससे उसने सिवल मैरिज कर ली. शादी हो जाने के बाद कुछ ही दिनों में वह एक लड़के की मां बन गई और मां होने के बाद उसमें फिर से बड़े होने का अभिमान जाग उठा. उधर बसन्ता अब बसन्त लाल हो गये थे और थोड़े पढ़ लिख भी गये थे. एक मिल में नौकरी कर ली थी. डेढ़ सौ रुपये वेतन पाते थे. उनमें सुनैना जैसी मालदार और पढ़ी लिखी स्त्री के पति होने का अभिमान जाग उठा और एक रईस की धेवती के बाप होने का घमन्ड ज़ोर मारने लगा. पति पत्नि के अहंकार टकरा गये. बसन्त लाल पहले लड़की को लेकर सुनैना पर नाराज़ होना शुरू हुये. धीरे धीरे दूसरे घरेलू मामलों में उल्टी सीधी सुनाने लगे. और जल्दी ही यह नौबत आ पहुँची कि अगर सुनैना ज़रा कुछ कहती तो मार खाती. सुनैना होशियार थी वह ताड़ गई और उसने अपने आप पर पूरी तरह क़ाबू पा लिया. पर सिर्फ़ इतना ही कि मार खाने से बच जाय. रहा उसका बड़ेपन का अहंकार वह देखने के लिये भले ही घटा हो पर अन्दर अन्दर ज्वालामुखी की तरह सुलग रहा था.

× × ×

دیکھو بسنت' تم دفتر سے تھکے ہوئے آئے ہو' تمہاری
ں بڑھیا ہے . میرے پاس کوئی کام نہیں . میں نے اگر
ہارے ہاتھ پاؤں دھلا دئے یا ذرا ہاتھ لگا کر دھو دئے تو
ں میں تمہیں اچرج کیوں ؟

بہن جی' کہاں آپ اور کہاں ہم غریب . آپ نے
. گھر میں ہمیں جگہ دے دی اور ایک پیسہ کرایہ
ہیں لیتیں . یہ احسان ہی ہم پر اتنا ہے کہ ہم عمر
ر آپ کی سیوا کریں تو اس کو پورا پورا نہیں چکا
تے. اور پھر الٹے آپ میرے پاؤں دھوئیں !

نہیں نہیں بسنت' تم یہ غلط سوچ رہے ہو . میرے
س جگہ بیکار پڑی تھی . میں نے تمہیں اس میں بسا
ا اس میں احسان کیسا ؟ آدمی آدمی سب ہیں .
ں میں بڑے چھوٹے کا کیا سوال. میں ٹھالی رہتی ہوں
بہت کام کرتے ہو . پھر میں اگر تمہاری سیوا کردوں تو
ں میں برائی کیا ؟

بسنتا چپ ہوگیا .

سنینا کا اب روز ہی یہ کام ہوگیا کہ وہ کبھی بسنتا
ں ماں کی کھانے میں مدد کرتی اور کبھی اسے اچھے اچھے
امان دے جاتی اور کبھی کبھی پکوان بھی دے جاتی .
سنتا کے لئے تو وہ ہر دم تیار رہتی . اس کے سر میں
ل لگاتی' اس کے بدن کی مالش کرتی' اس کے پاؤں
باتی' اس کے لئے بڑھیا بڑھیا کھانا لاتی. اس کے سب
بڑے دھوبی کے یہاں دھلواتی اور اسے کبھی ایک منٹ کو
ی گندا نہ رہنے دیتی . ایک طرح سے اس کا سارا خرچ
سر لے لیا اور آخر ایک دن اس سے اس نے سیول
رج کرلی . شادی ہو جانے کے بعد کچھ ہی دنوں میں
ایک لڑکی کی ماں بن گئی اور ماں ہونے کے بعد اس
ں پھر سے بڑے ہونے کا ابھیمان جاگ اٹھا. ادھر بسنتا
ب بسنت لال ہوگئے تھے اور تھوڑے پڑھ لکھ بھی گئے
ے. ایک مل میں نوکری کر لی تھی. ڈیڑھ سو روپئے ویتن
تے تھے . ان میں سنینا جیسی مالدار اور پڑھی لکھی
ستری کے پتی ہونے کا ابھیمان جاگ اٹھا اور ایک رئیس
ں دھیوتی کے باپ ہونے کا گھمنڈ زور مارنے لگا. پتی پتنی
اہنکار ٹکرا گئے . بسنت لال پہلے لڑکی کو لے کر سنینا
ناراض ہونا شروع ہوئے . دھیرے دھیرے دوسرے گھریلو
معاملوں میں الٹی سیدھی سنانے لگے. اور جلدی ہی یہ
وبت آپہنچی کہ اگر سنینا ذرا کچھ کہتی تو مار کھاتی.
سنینا ہوشیار تھی وہ تاڑ گئی اور اس نے اپنے آپ پر پوری
طرح قابو پالیا . پر صرف اتنا ہی کہ مار کھانے سے بچ
جائے . رہا اس کا بڑے پن کا اہنکار وہ دیکھنے کے لئے بھلے
ہی گھٹا ہو پر اندر اندر جوالا مکھی کی طرح سلگ رہا تھا.

× × ×

बेटी, यह तो ठीक है, पर दूसरा तुझे इस तरह के कपड़े कैसे पहनने देगा ?

वह दूसरा क्या ऐसे ही कपड़ों वाला नहीं हो सकता ?

हो तो सकता है, और न हुआ ?

तो क्या दूसरा होना ज़रूरी है ?

किस तरह की बातें करती है. लड़कियां कहीं अकेली रही हैं !

अकेली रही तो हैं, रह भी रही हैं और रह भी सकती हैं. और अगर अब तक नहीं रहीं तो क्या आगे रह ही नहीं सकतीं ?

छोड़ छोड़ इन बातों को, मुझे तो यह कपड़े सुहाते नहीं.

अम्मा, कुछ दिन में सुहाने लगेंगे.

× × ×

तुम कै बजे दफ़्तर जाते हो ?

नौ बजे.

और वहां से आते कै बजे हो ?

छै बजे, कभी सात भी बज जाते हैं.

तुम्हारे घर में कौन कौन हैं ?

एक मैं और एक मेरी मां.

तुम्हें तनख्वाह क्या मिलती है?

चालीस रुपये.

इसमें गुज़र हो जाती है ?

खूब.

घी दूध कितना खाते हो ?

घी दूध तो तीज त्योहार को खाते हैं. हम तो तेल खाते हैं, तेल.

तुम्हारा अपना मकान है ?

शहर में, हम ग़रीबों के लिये, अपना मकान !

क्या किराया देते हो ?

पांच रुपये.

कितना बड़ा मकान है ?

बड़ा मकान ! एक छोटी सी कोठरी.

अच्छा, कल से तुम दोनों मां बेटे मेरे यहां आ जाओ.

यह बातें सुनैना और बसन्ता चपरासी में हुईं.

× × ×

बाई जी आप यह क्या करती हैं ?

بیٹی، یہ تو ٹھیک ہے، پر دوسرا تجھے اس طرح کے کپڑے کیسے پہننے دے گا ؟

وہ دوسرا کیا ایسے ہی کپڑوں والا نہیں ہوسکتا ؟

ہو تو سکتا ہے، اور نہ ہوا ؟

تو کیا دوسرا ہونا ضروری ہے ؟

کس طرح کی باتیں کرتی ہے ۔ لڑکیاں کہیں اکیلی رہی ہیں !

اکیلی رہیں تو ہیں، رہ بھی رہی ہیں اور رہ بھی سکتی ہیں ۔ اور اگر اب تک نہیں رہیں تو کیا آگے رہ ہی نہیں سکتیں ؟

چھوڑ چھوڑ ان باتوں کو، مجھے تو یہ کپڑے سہاتے نہیں.

اماں، کچھ دن میں سہانے لگیں گے ۔

× × ×

تم کے بجے دفتر جاتے ہو ؟

نو بجے ۔

اور وہاں سے آتے کے بجے ہو ؟

چھ بجے، کبھی سات بھی بج جاتے ہیں ۔

تمہارے گھر میں کون کون ہیں ؟

ایک میں اور ایک میری ماں ۔

تمہیں تنخواہ کیا ملتی ہے ؟

چالیس روپئے ۔

اس میں گذر ہو جاتی ہے ؟

خوب ۔

گھی دودھ کتنا کھاتے ہو ؟

گھی دودھ تو تیج تیوہار کو کھاتے ہیں. ہم تو تیل کھاتے ہیں، تیل.

تمہارا اپنا مکان ہے ؟

شہر میں، ہم غریبوں کے لئے، اپنا مکان !

کیا کرایہ دیتے ہو ؟

پانچ روپئے ۔

کتنا بڑا مکان ہے !

ایک چھوٹی کوٹھری ۔

اچھا، کل سے تم دونوں ماں بیٹے میرے یہاں آجاؤ ۔

یہ باتیں سنینا اور بسنتا چپراسی میں ہوئیں ۔

× × ×

بائی جی آپ یہ کیا کرتی ہیں ؟

किस का तलाक़ ?

तेरे कपड़े मोटे मोटे.
तेरे कपड़े मैले.
मेरे रेशमी हैं.
मेरे साफ़ और धुले हुए हैं.

यह बातें हुईं सात बरस की सुनैना और उसकी सहेली कमला में.

यह सुनैना मेट्रिक करते करते इतने बारीक और रेशमी कपड़े पहनने लगी जिसका कुछ ठिकाना नहीं. जब कालेज में पहुंची तो चालीस चालीस रुपये तो उसके चेस्टर पर सिलाई के ख़र्च होते थे. जब वह एम. ए. में पढ़ती थी तो उसका दो सौ रुपये माहवार का ख़र्च था. होस्टल में नहीं रहती थी, खाना घर पर खाती थी. मां बाप खुले दिल से उस पर ख़र्च तो करते थे पर इस सोच में घुलते रहते थे कि इसको इसके योग्य वर भी मिल सकेगा या नहीं. अचानक एक दिन क्या देखते हैं कि सुनैना एक मोटी साड़ी और मोटा जम्पर पहने उनके सामने खड़ी है. और पता लगा जम्पर उसने अपने हाथ से सिया है. पेटीकोट पुराना ही है.

मां पूछ बैठी, बेटी यह क्या ?

सुनैना बोली—मां, जब मेरी सैकड़ों बहनें आधे पेट खा कर रह जाती हैं और एक फटी साड़ी में अपना जीवन काट देती हैं तब मुझे यह अच्छा नहीं मालूम होता कि मैं इतने बढ़िया कपड़े पहनूं और इतना ज़ियादा उन पर ख़र्च करूं.

बेटी, तो क्या यह इतनी पढ़ाई लिखाई बेकार ही जायगी.

नहीं मां, बेकार कहां जा रही है. पढ़ाई लिखाई का तो यही काम है कि वह हमारी अन्दर की आंखें खोल दे और हम दूसरों को भी अन्दर से देख सकें.

तो क्या तू अब इसी तरह रहेगी ?

इस तरह रहने में हर्ज क्या है ? इन कपड़ों में सरदी से जितना अच्छा बचा जाता है उन कपड़ों में नहीं. इन कपड़ों में गर्मी का जितनी आसानी से मुक़ाबिला किया जा सकता है उतना उन कपड़ों में नहीं. बरसात में जितना यह सुख देते हैं वह कपड़े नहीं. अम्मा, रेशमी और बढ़िया कपड़ों में तो मैं सचमुच बंध जाती थी, न कहीं उठ सकूं न कहीं बैठ सकूं. इन कपड़ों में तो मैं कहीं भी बैठ जाती हूं. उन कपड़ों में मैं दासी थी. इनमें मैं मालकिन हूं. इनमें इतना सुख न होता तो मैं इन्हें अपनाती क्यों ?

کس کا طلاق ؟

تیرے کپڑے موٹے موٹے ۔
تیرے کپڑے میلے ۔
میرے ریشمی ہیں ۔
میرے صاف اور دھلے ہوئے ہیں ۔

یہ باتیں ہوئیں سات برس کی سنینا اور اُس کی سہیلی کملا میں ۔

یہی سنینا میٹرک کرتے کرتے اتنے باریک اور ریشمی کپڑے پہننے لگی جس کا کچھ ٹھکانا نہیں ۔ جب کالج پہنچی تو چالیس چالیس روپئے تو اُس کے چیسٹر پر سلائی کے خرچ ہوتے تھے ۔ جب وہ ایم ۔ اے ۔ میں پڑھتی تھی تو اُس کا دو سو روپئے ماہوار کا خرچ تھا ۔ ہوسٹل میں نہیں رہتی تھی، کھانا گھر پر کھاتی تھی ۔ ماں باپ کھلے دل سے اُس پر خرچ تو کرتے تھے پر اِس سوچ میں گھلتے رہتے تھے کہ اِس کو اِس کے یوگیہ ور بھی مل سکے گا یا نہیں ۔ اچانک ایک دن کیا دیکھتے ہیں کہ سنینا ایک موٹی ساڑی اور موٹا جمپر پہنے اُن کے سامنے کھڑی ہے ۔ اور پتہ لگا جمپر اُس نے اپنے ہاتھ سے سیا ہے ۔ پیٹی کوٹ پرانا ہی ہے ۔

ماں پوچھ بیٹھی، بیٹی یہ کیا ؟

سنینا بولی—ماں، جب میری سیکڑوں بہنیں آدھے پیٹ کھاکر رہ جاتی ہیں اور ایک پھٹی ساڑی میں اپنا جیون کاٹ دیتی ہیں تب مجھے یہ اچھا نہیں معلوم ہوتا کہ میں اتنے بڑھیا کپڑے پہنوں اور اتنا زیادہ اُن پر خرچ کروں ۔

بیٹی، تو کیا یہ اتنی پڑھائی لکھائی بیکار ہی جائے گی ۔

نہیں ماں، بیکار کہاں جا رہی ہے ۔ پڑھائی لکھائی کا تو یہی کام ہے کہ وہ ہماری اندر کی آنکھیں کھول دے اور ہم دوسروں کو بھی اندر سے دیکھ سکیں ۔

تو کیا تو اب اِسی طرح رہے گی ؟

اِس طرح رہنے میں ہرج کیا ہے ؟ اِن کپڑوں میں سردی سے جتنا اچھا بچا جاتا ہے اُن کپڑوں میں نہیں ۔ اِن کپڑوں میں گرمی کا جتنی آسانی سے مقابلہ کیا جا سکتا ہے اتنا اُن کپڑوں میں نہیں ۔ برسات میں جتنا یہ سکھ دیتے ہیں وہ کپڑے نہیں ۔ اماں، ریشمی اور بڑھیا کپڑوں میں تو میں سچ مچ بندھ جاتی تھی ۔ نہ کہیں اٹھ سکوں نہ کہیں بیٹھ سکوں ۔ اِن کپڑوں میں تو میں کہیں بھی بیٹھ جاتی ہوں ۔ اُن کپڑوں میں میں داسی تھی، اِن میں میں مالکن ہوں ۔ اِن میں اتنا سکھ نہ ہوتا تو میں انہیں اپناتی کیوں ؟

ज़मींदार-जागीरदारों और सेठ-साहूकारों की जीत होती है, जनता की जीत नहीं होती. और कश्मीरी जनता की नाराज़गी से, भारत और कश्मीरी जनता के अलगाव से, बाहर के साम्राजवादियों को दख़ल देने का अवसर मिलेगा और दुनिया की शान्ति प्रेमी, साम्राज विरोधी और तरक़्क़ी पसन्द जनता के दिल को ठेस पहुंचेगी.

इन ग़लत सवालों के उठाने से सब से बड़ा ख़तरा यह है कि कश्मीर के सही सवाल, उसकी असली समस्या को एक दम भुला दिया जाता है. कश्मीर का सवाल यह नहीं कि कश्मीर को सौ फ़ीसदी भारत में शामिल होना चाहिये या कि कुछ आज़ाद (Autonomous) रहना चाहिये. कश्मीर की असली समस्या वहां की लड़ाई है. ख़ुद कश्मीर के दो टुकड़े हो गए हैं. एक पाकिस्तान के पास है, दूसरा हिन्दुस्तान के साथ है. दोनों हिस्सों में हज़ारों सिपाही पड़े हुए हैं. तोप और बन्दूक़ें ठंडी हैं लेकिन गोला बारूद सूखा और गरम है और लड़ाई की लाइन के दोनों तरफ़ कभी कभी गोलियां चटकने लग जाती हैं. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, दोनों ही देशों को करोड़ों रुपया लड़ाई पर ख़र्च करना पड़ता है और दोनों ही देश ऐसी दल दल में फंसे हैं कि निकलते नहीं बनता और इस हालत से फ़ायदा उठाते हैं, कश्मीरी नहीं हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी नहीं, बल्कि कोई और ही. वह जो दोनों को लड़ाई का सामान देते हैं, जो दोनों के बीच बीच बचाव करने में लगे हैं और कहानी के बन्दर की तरह दोनों बिल्लियों की रोटी को सटके चले जा रहे हैं. कश्मीर की असली समस्या है हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच की लड़ाई. उससे मुंह मोड़ना असलियत से मुंह मोड़ना है. उसका हल न निकालना अपने दुश्मनों को दावत देना है.

(बाक़ी फिर)

زمیندار، جاگیرداروں اور سیٹھ ساھوکاروں کی جیت ہوتی ہے، جنتا کی جیت نہیں ہوتی ۔ اور کشمیری جنتا کی ناراضگی سے، بھارت اور کشمیر کی جنتا کے الگاؤ سے باہر کے سامراج وادیوں کو دخل دینے کا اوسر ملے گا اور دنیا کی شانتی پریمی، سامراج ورودھی اور ترقی پسند جنتا کے دل کو ٹھیس پہونچے گی.

اِن غلط سوالوں کے اُٹھانے سے سب سے بڑا خطرہ یہ ہے کہ کشمیر کے صحیح سوال، اُس کی اصلی سمسیا کو ایک دم بھلا دیا جاتا ہے . کشمیر کا سوال یہ نہیں کہ کشمیر کو سو فی صدی بھارت میں شامل ہونا چاہئے یا کہ کچھ آزاد (Autonomous) رہنا چاہئے. کشمیر کی اصلی سمسیا وہاں کی لڑائی ہے . خود کشمیر کے دو ٹکڑے ہوگئے ہیں . ایک پاکستان کے پاس ہے، دوسرا ہندستان کے ساتھ ہے. دونوں حصوں میں ہزاروں سپاہی پڑے ہوئے ہیں . توپ اور بندوقیں ٹھنڈی ہیں لیکن گولا بارود سوکھا اور گرم ہے اور لڑائی کی لائن کے دونوں طرف کبھی کبھی گولیاں چٹکنے لگ جاتی ہیں . ہندستان اور پاکستان، دونوں ہی دیشوں کو کروڑوں روپیہ لڑائی پر خرچ کرنا پڑتا ہے اور دونوں ہی دیش ایسی دل دل میں پھنسے ہیں کہ نکلتے نہیں بنتا اور اِس حالت سے فائدہ اُٹھاتے ہیں، کشمیری نہیں، ہندستانی اور پاکستانی نہیں، بلکہ کوئی اور ہی . وہ جو دونوں کو لڑائی کا سامان دیتے ہیں، جو دونوں کے بیچ بیچ بچاؤ کرنے میں لگے ہیں اور کہانی کے بندر کی طرح دونوں بلیوں کی روٹی کو سٹکے چلے جا رہے ہیں . کشمیر کی اصلی سمسیا ہے ہندستان اور پاکستان کے بیچ کی لڑائی. اُس سے منھ موڑنا اصلیت سے منھ موڑنا ہے، اُس کا حل نہ نکالنا دشمنوں کو دعوت دینا ہے .

(باقی پھر)

जैसे हिंसा की तालीम में मारना सीखना ज़रूरी है उसी तरह अहिंसा की तालीम में मरना सीखना पड़ता है. हिंसा में डर से मुक्ति नहीं मिलती, लेकिन डर से बचने का इलाज ढूंढने का प्रयत्न रहता है. अहिंसा में डर को जगह ही नहीं है. निडर या भय मुक्त होने के लिए अहिंसा के उपासक को ऊंचे पाये के त्याग के लिये तैयार रहना चाहिये........इस तरह अहिंसा की तालीम हिंसा की तालीम से एक दम उल्टी होती है.

—महात्मा गांधी

جیسے ہنسا کی تعلیم میں مارنا سیکھنا ضروری ہے اُسی طرح اہنسا کی تعلیم میں مرنا سیکھنا پڑتا ہے . ہنسا میں ڈر سے مکتی نہیں ملتی، لیکن ڈر کے بچنے کا علاج ڈھونڈنے کا پریتن رہتا ہے . اہنسا میں ڈر کو جگہ ہی نہیں ہے . نڈر یا بھے مکتی ہونے کے لئے اہنسا کے اُپاسک کو اونچے پائے کے تیاگ کے لئے تیار رہنا چاہئے ....اِس طرح اہنسا کی تعلیم ہنسا کی تعلیم سے ایک دم الٹی ہوتی ہے .

—مہاتما گاندھی

(iv) कश्मीर के नेता भारतीय झन्डे के विरोधी नहीं. भारत का झन्डा उनका झन्डा है. लेकिन उनका अपना भी एक झन्डा रहा है जिसके नीचे उन्होंने अपना संगठन किया, जिसके लिये उन्होंने त्याग किया. इसलिये वह अपने झन्डे को भी छोड़ना नहीं चाहते, उसको भूलना नहीं चाहते. अगर हम उनकी अपनी भाशा, भूशा और झन्डे का मान नहीं करते तो खतरा है कि वह हमारे झन्डे का भी मान न करें. अगर हम चाहते हैं कि वह भारतीय झन्डे से प्रेम करें तो हमको उनके झन्डे से भी प्रेम करना चाहिये.

कश्मीर के नेता आज़ादी चाहते हैं लेकिन भारत से अलग होने के लिये नहीं, उसके अन्दर रह कर आगे बढ़ने के लिये, आज़ादी के साथ तरक़्क़ी करने के लिये. पंडित नेहरू ने भी कहा है कि राजप्रमुख की लोकशाही में ज़रूरत नहीं. कोई ज़मींदारी प्रथा नहीं चाहता और अगर भारत का एक भाग बाक़ी भारत को उन्नति का रास्ता दिखाता है तो तरक़्क़ी चाहने वाले दलों को क्यों परेशानी हो.

हम को यह भी जानना चाहिये कि कश्मीर की आज़ादी के दुश्मन कौन हैं, और इस सवाल को कौन उठाते रहते हैं.

यह साफ़ है कि डोगराशाही कश्मीर की आज़ादी नहीं चाहती. हमारे विधान के अनुसार निज़ाम हैदराबाद की तरह कश्मीर की डोगराशाही भी ज़िन्दा रह सकती है. इस लिये कश्मीर के महाराजा, उनके साथी और अफ़सर, कुछ कश्मीरी पंडित और जम्मू के सिख जो महाराजा की कृपा से सरकारी नौकरियां पाते थे वह सब यह चाहते हैं कि कश्मीर पर भारत का विधान सौ फ़ीसदी लागू किया जाय जिससे उनको अपनी पुरानी बपौती वापिस मिल जाय. ज़मींदार और साहूकार भी यही चाहते हैं क्योंकि महाराजा के साथ ही वह भी अपनी ज़मीनें फिर से पा जायंगे या कम से कम मुआविज़ा मिल जायगा. बहुत से हिन्दुस्तानी व्यापारियों और पूंजीपतियों को भी कशमीरी बाज़ारों पर क़ाबू पाने का मौक़ा मिल जायगा.

लेकिन इसका असर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, कश्मीर और बाक़ी दुनिया पर क्या होगा ? पहिले कश्मीर को ही लीजिये. वहां की जनता जो आज भी परेशान है, और भी दुखी होगी. वह भारत के साथ न आकर और भी दूर चली जायगी. वहां के नेता भी इससे खुश नहीं हो सकते. इस तरह इससे भारत और कश्मीर एक दूसरे के क़रीब नहीं आयंगे, दूर चले जायंगे. कशमीर के आगे बढ़ने से हिन्दुस्तान को आगे बढ़ने का मौक़ा मिलता है. अगर कश्मीर पर भारत का विधान लागू कर उसके सुधारों को मिटा दिया जाता है तो बाक़ी भारत के राजा-नवाबों

iv) کشمیر کے نیتا بھارتی جھنڈے کے ورودھی
. بھارت کا جھنڈا اُن کا جھنڈا ہے . لیکن اُن کا اپنا
یک جھنڈا رہا ہے جس کے نیچے اُنہوں نے اپنا
ٹھن کیا' جس کے لئے اُنہوں نے تیاگ کیا . اِس لئے
جھنڈے کو بھی چھوڑنا نہیں چاہتے' اُس کو بھولنا
. چاہتے . اگر ہم اُن کی اپنی بھاشا' بھوشا اور جھنڈے
ن نہیں کرتے تو خطرہ ہے کہ وہ ہمارے جھنڈے کا
مان نہ کریں . اگر ہم چاہتے ہیں کہ وہ بھارتی
ڈے سے پریم کریں تو ہم کو اُن کے جھنڈے سے بھی
رنا چاہئے .

کشمیر کے نیتا آزادی چاہتے ہیں لیکن بھارت سے
ہونے کے لئے نہیں' اُس کے اندر رہ کر آگے بڑھنے کے
آزادی کے ساتھ ترقی کرنے کے لئے . پنڈت نہرو نے
کہا ہے کہ راج پر مکھ کی لوک شاہی میں ضرورت
. کوئی زمینداری پرتھا نہیں چاہتا اور اگر بھارت
ک بھاگ باقی بھارت کو اُنتی کا راستہ دکھاتا ہے
نی چاہنے والے دلوں کو کیوں پریشانی ہو .

ہم کو یہ بھی جاننا چاہئے کہ کشمیر کی آزادی
من کون ہیں' اور اِس سوال کو کون اُٹھاتے رہتے ہیں.

یہ صاف ہے کہ ڈوگرا شاہی کشمیر کی آزادی نہیں
ی . ہمارے ودھان کے انوسار نظام حیدرآباد کی طرح
ر کی ڈوگرا شاہی بھی زندہ رہ سکتی ہے . اِس لئے
یر کے مہا راجا' اُن کے ساتھی اور افسر' کچھ کشمیری
ت اور جموں کے سکھ جو مہا راجا کی کرپا سے سرکاری
یاں پاتے تھے وہ سب یہ چاہتے ہیں کہ کشمیر پر بھارت
ھان سو فی صدی لاگو کیا جائے جس سے اُن کو اپنی پرانی
واپس مل جائے. زمیندار اور ساہوکار بھی یہی چاہتے
کیونکہ مہاراجا کے ساتھ ہی وہ بھی اپنی زمینیں پھر سے
یں گے یا کم سے کم معاوضہ مل جائے گا . بہت سے
ستانی بیوپاریوں اور پونجی پتیوں کو بھی کشمیری
وں پر قابو پانے کا موقع مل جائے گا .

لیکن اِس کا اثر ہندستان' پاکستان' کشمیر اور باقی
پر کیا ہوگا ؟ پہلے کشمیر کو ہی لیجئے . وہاں کی
نا جو آج بھی پریشان ہے اور بھی دکھی ہوگی . وہ
ت کے ساتھ نہ آکر اور بھی دور چلی جائے گی . وہاں
تا بھی اِس سے خوش نہیں ہو سکتے . اِس طرح
سے بھارت اور کشمیر ایک دوسرے کے قریب نہیں
گے' دور چلے جائیں گے . کشمیر کے آگے بڑھنے سے
ستان کو آگے بڑھنے کا موقع ملتا ہے . اگر
یر پر بھارت کا ودھان لاگو کر اُس کے سدھاروں
مٹا دیا جاتا ہے تو باقی بھارت کے راجا نوابوں'

ाया जाता है, फ़ारसी दस्तरख़ान पर दावतें होती हैं, जहां
ं रहने वालों पर पश्तो भाषा और फ़ारसी कला का भी
सर है. भारत एक कुटुम्ब है जिसमें सगे भाई, चचेरे भाई
ब शामिल हैं. इस कुटुम्ब में एकता भी है और अनेकता
ी है. हमको अपनी एकता बनाए रखना है लेकिन यह
सी हद तक मुमकिन होगा जिस हद तक कि हम अनेकता
ौर भिन्नता का आदर करेंगे. अगर हम सब फ़रक़ों को
ुचल कर एकता क़ायम करना चाहेंगे तो अगर कुछ दिन
े लिये सफलता प्राप्त भी कर लें तो ऐसी एकता सब जगह
ूट के बीज बो देगी. एकता प्रेम का बन्धन है, वह फूट
ा बीज नहीं.

इस नज़रिये से देखें तो साफ़ ज़ाहिर हो जायगा कि
श्मीर की भीतरी आज़ादी की मांग नाजायज़ नहीं. कश्मीर
ा अपना राष्ट्री आन्दोलन रहा है और उसका भी अपना
तिहास है. उस आन्दोलन ने हमारे कांगरेस आन्दोलन से
हायता ली है, लेकिन वह एक स्वतन्त्र आन्दोलन रहा है,
उसका अपना झन्डा, अपना प्रोग्राम, अपना संगठन और
अपने अगुआ रहे हैं. जब हमने 'भारत छोड़ो" का नारा
ऊंचा किया ।तो उन्होंने "कश्मीर छोड़ो" का नारा लगाया.
वे डोगराशाही, ज़मींदारी प्रथा, साहूकारी के विरोधी रहे
. सरकार में आने के बाद वह अपने वादों को भूलना नहीं
चाहते, उनको पूरा करना चाहते हैं.

(i) वह डोगराशाही का इसलिये अन्त करना चाहते
क्योंकि डोगराशाही विदेशी साम्राजवाद की एजेन्ट बन
रही, क्योंकि वह जनता के ऊपर, उनके राष्ट्रीय
आन्दोलन और उनके नेताओं के ऊपर, पंडित नेहरू तक
ऊपर अत्याचार करती रही. और वह लोक शाही के
से चुना हुआ राज पाल या राष्ट्रपति चाहते हैं. इस से
राष्ट्रीय एकता में कोई बाधा नहीं पड़ती.

(ii) कश्मीरी नेताओं ने ज़मींदारी और साहूकारी
मिटाने का जनता से वादा किया था. उन्होंने बिना
मुआविज़े के ज़मींदारी प्रथा का अन्त किया है और किसानों
साहूकारों के चंगुल से बचाया है. उन्होंने कई शिक्षा
सम्बन्धी सुधार भी किये हैं जो बाक़ी भारत के लिये
मिसाल हैं.

(iii) वह अपने आर्थिक ढांचे को भी एक हद तक
आज़ाद रखना चाहते हैं. इसके मानी यह नहीं कि वह
हिन्दुस्तान से लेन देन या व्यापार नहीं करना चाहते. लेकिन
साथ ही वह यह भी नहीं चाहते कि वहां के कारबार और
व्यापार पर कश्मीरियों का क़ाबू न रह जाय और वह दूसरों
के नौकर या मोहताज बन जायं.

کھایا جاتا ہے ۔ فارسی دسترخوان پر دعوتیں ہوتی
ہیں' جہاں کے رہنے والوں پر پشتو بھاشا اور فارسی
کلا کا بھی اثر ہے ۔ بھارت ایک کٹمب ہے جس میں سگے
بھائی' چچیرے بھائی سب شامل ہیں ۔ اس کٹمب
میں ایکتا بھی ہے اور انیکتا بھی ہے ۔ ہم کو اپنی ایکتا
بنائے رکھنا ہے لیکن یہ اسی حد تک ممکن ہوگا جس
حد تک کہ ہم انیکتا اور بھنّتا کا آدر کریں گے ۔ اگر ہم
سب فرقوں کو کچل کر ایکتا قائم کرنا چاہیں گے تو اگر
کچھ دن کے لئے سپھلتا پراپت بھی کر لیں تو ایسی ایکتا
سب جگہ پھوٹ کے بیج بو دے گی ۔ ایکتا پریم کا بندھن
ہے' وہ پھوٹ کا بیج نہیں ۔

اس نظریئے سے دیکھیں تو صاف ظاہر ہو جائیگا کہ کشمیر
کی بھیتری آزادی کی مانگ ناجائز نہیں ۔ کشمیر کا
اپنا راشٹری آندولن رہا ہے اور اس کا بھی اپنا اتہاس
ہے ۔ اس آندولن نے ہمارے کانگریس آندولن سے سہائتا لی
ہے' لیکن وہ ایک سوتنتر آندولن رہا ہے' جس کا اپنا
جھنڈا' اپنا پروگرام' اپنا سنگٹھن اور اپنے اگوا رہے ہیں ۔
جب ہم نے "بھارت چھوڑو" کا نعرہ اونچا کیا تو انہوں
نے "کشمیر چھوڑو" کا نعرہ لگایا ۔ وہ ڈوگرا شاہی'
زمینداری پرتھا' ساہوکارے کے ورودھی رہے ہیں ۔ سرکار
میں آنے کے بعد وہ اپنے وعدوں کو بھولنا نہیں چاہتے' ان
کو پورا کرنا چاہتے ہیں ۔

(i) وہ ڈوگرا شاہی کا اس لئے انت کرنا چاہتے
ہیں کیونکہ ڈوگرا شاہی ودیشی سامراج واد کی ایجنٹ
بن کر رہی' کیونکہ وہ جنتا کے اوپر' ان کے راشٹری
آندولن اور ان کے نیتاؤں کے اوپر' پنڈت نہرو تک کے اوپر
اتیاچار کرتی رہی ۔ اور وہ لوک شاہی کے ڈھنگ سے
چنا ہوا راج پال یا راشٹرپتی چاہتے ہیں ۔ اس سے
بھارتیہ ایکتا میں کوئی بادھا نہیں پڑتی ۔

(ii) کشمیری نیتاؤں نے زمینداری اور ساہوکارے
کو مٹانے کا جنتا سے وعدہ کیا تھا ۔ انہوں نے بنا معاوضہ
کے زمینداری پرتھا کا انت کیا ہے اور کسانوں کو ساہوکاروں
کے چنگل سے بچایا ہے ۔ انہوں نے کئی شکشا سمبندھی
سدھار بھی کئے ہیں جو باقی بھارت کے لئے مثال ہیں ۔

(iii) وہ اپنے آرتھک ڈھانچے کو بھی ایک حد تک
آزاد رکھنا چاہتے ہیں ۔ اس کے معنی یہ نہیں کہ وہ
ہندستان سے لین دین یا ویاپار نہیں کرنا چاہتے ۔
لیکن ساتھ ہی وہ یہ بھی نہیں چاہتے کہ وہاں کے کاروبار
اور ویاپار پر کشمیریوں کا قابو نہ رہ جائے اور وہ دوسروں
کے نوکر یا محتاج بن جائیں ۔

कश्मीर के सम्बन्ध में जो दूसरा सवाल उठाया जाता है वह है एकता या बटवारे का सवाल. हम अभी तक हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बटवारे को नहीं भूले. दिल में कसक और कराहें बाक़ी हैं, और क़ुदरती भी है. जब कश्मीरी नेता अपनी कुछ आज़ादी (Autonomy) की बात करते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि देश को बांटना चाहते हैं. यह तो हम साफ़ कर चुके हैं कि कश्मीरी नेता पाकिस्तान से मिलने का कभी ख़्वाब तक नहीं देखते. उनका भविश्य हिन्दुस्तान के साथ है.

लेकिन हमको यह भी समझना चाहिये कि अपने अन्दर की ख़ुदमुख़्तारी (Autonomy) का अर्थ बटवारा नहीं होता. ऐसी आज़ादी के रहते हुए एका और मेल रह सकता है और उस एके की जड़ें दिखावटी या बनावटी एके से ज़ियादा मज़बूत होंगी. सोवियत रूस के प्रजातन्त्र राज अलग अलग आज़ाद हैं. उनकी अपनी अपनी स्वतन्त्र सेना हो सकती है, वह अपनी परराष्ट्र नीति में भी आज़ाद रह सकते हैं, वह अपने रहन सहन, शिक्षा दीक्षा, बोल चाल वग़ैरा में पूरी तौर से आज़ाद हैं, लेकिन फिर भी सोवियत रूस किसी देश से कम संगठित और अखण्ड नहीं है. इसी तरह नई चीनी सरकार तिब्बत, मंगोलिया वग़ैरा को आज़ादी दे कर कमज़ोर या कम मज़बूत नहीं हुई. हमारे देश में भी कुछ कांग्रेसी लीडर तक भाषा के आधार पर प्रान्तों और राज्यों को बांटना चाहते हैं, और वही नेता कश्मीर की आज़ादी के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं.

कारन यह है कि हम लोगों में बहुत से ऐसे हैं जिनके विचार देश, समाज और उसकी राजनीति के सम्बन्ध में साफ़ नहीं. यह ज़रूरी है कि हम अपने देश को समझने के लिये उसके भूगोल, इतिहास, समाज और संस्कृति को समझें और इस समझ के आधार पर सही राजनैतिक नतीजे निकालें.

पामीर का ऊंचा मैदान दुनिया की छत कहलाता है. उसके नीचे तिब्बत के उत्तर और पच्छिम में चारों ओर बरफ़ीली पहाड़ियों से घिरा हुआ एक देश है जिसको कश्मीर कहते हैं. इसका भारत से लगाव है—इतिहासिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक. और कुछ अलगाव भी है. इसका अपनापन है. इसकी अपनी वेश भूशा है, अपनी बोली है, इसकी संस्कृति और इतिहास में कुछ अपनापन है. यह भारत का अकेला भाग है जहां मुसलिम जनता अधिक है. जहां पढ़ाई लिखाई की भाषा उरदू है, जहां का रहन सहन भारत से मिलते हुए भी बीच एशिया से भी मिलता जुलता है, जहां बीच एशियाई समोवर में चाय उबाली जाती है, कुलचा

کشمیر کے سمبندھ میں جو دوسرا سوال اُٹھایا جاتاہے
ہے ایکتا یا بٹوارے کا سوال . ہم ابھی تک ہندستان
پاکستان کے بٹوارے کو نہیں بھولے . دل میں کسک
کراہیں باقی ہیں' اور قدرتی بھی ہے . جب کشمیری
نا اپنی کچھ آزادی (Autonomy) کی بات کرتے ہیں
ایسا معلوم ہوتا ہے کہ دیش کو بانٹنا چاہتے ہیں . یہ
ہم صاف کرچکے ہیں کہ کشمیری نیتا پاکستان سے ملنے
بھی خواب تک نہیں دیکھتے. اُن کا بھوشیہ ہندستان
ساتھ ہے .

لیکن ہم کو یہ بھی سمجھنا چاہئے کہ اپنے اندر کی خود
مختاری (Autonomy) کا ارتھ بٹوارا نہیں ہوتا. ایسی
ی کے رہتے ہوئے ایکا اور میل رہ سکتا ہے اور اُس ایکے
جڑیں دکھاوٹی یا بناوٹی ایکے سے زیادہ مضبوط ہونگی.
یت روس کے پرجاتنتر راج الگ الگ آزاد ہیں. اُن کی
ی اپنی سوتنتر سینا ہوسکتی ہے' وہ اپنی پرراشٹر
ی میں بھی آزاد رہ سکتے ہیں' وہ اپنے رہن سہن'
ھشا دیکشا' بول چال وغیرہ میں پوری طور سے آزاد ہیں'
کن پھر بھی سوویت روس کسی دیش سے کم سنگھٹت
ر اکھنڈ نہیں ہے . اِسی طرح نئی چینی سرکار تبت'
نگولیا وغیرہ کو آزادی دے کر کمزور یا کم مضبوط نہیں
ئی . ہمارے دیش میں بھی کچھ کانگریسی لیڈر تک
اشا کے آدھار پر پرانتوں اور راجیوں کو بانٹنا چاہتے ہیں'
ر وہی نیتا کشمیر کی آزادی کے خلاف آواز اُٹھاتے ہیں.

کارن یہ ہے کہ ہم لوگوں میں بہت سے ایسے ہیں جن
وچار دیش' سماج اور اُس کی راج نیتی کے سمبندھ
ں صاف نہیں . یہ ضروری ہے کہ ہم اپنے دیش کو
سمجھنے کے لئے اُس کے بھوگول' اِتہاس' سماج اور سنسکرتی
و سمجھیں اور اِس سمجھ کے آدھار پر صحیح راج نیتک
تیجے نکالیں .

پامیر کا اونچا میدان دنیا کی چھت کہلاتا ہے .
س کے نیچے تبت کے اُتر پچھم میں' چاروں اور برفیلی
پہاڑیوں سے گھرا ہوا ایک دیش ہے جس کو کشمیر کہتے
ہیں . اِس کا بھارت سے لگاؤ ہے—اِتہاسک' سانسکرتک
ور بھوگولک . اور کچھ الگاؤ بھی ہے . اس کا اپنا پن ہے .
س کی اپنی ویش بھوشا ہے' اپنی بولی ہے' اِس کی
سنسکرتی اور اِتہاس میں کچھ اپنا پن ہے . یہ بھارت
کا اکیلا بھاگ ہے جہاں مسلم جنتا ادھک ہے' جہاں
پڑھائی لکھائی کی بھاشا اُردو ہے' جہاں کا رہن سہن
بھارت سے ملتے ہوئے بھی بیچ ایشیا سے بھی ملتا جلتا
ہے' جہاں بیچ ایشیائی سمووَر میں چائے اُبالی جاتی ہے' کلچا

ाह आगे बढ़ने से रोका और यह सब उस हालत में जब उनके पास हथियार न थे. अगर हिन्दुस्तानी जनता ने भी पाकिस्तानी हमले के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ी है तो वह मीर में और शेख़ अब्दुल्ला की अगुआई में. राष्ट्रियता र भारतीयता का इससे बढ़ कर सबूत और क्या हो ाता है ?

आज भी पाकिस्तान की नेताशाही का अगर सब से यादा विरोध कहीं होता है तो श्रीनगर रेडियो से, अगर केस्तान के लीडरों का विरोध करते हैं तो कश्मीरी नेता, गर पाकिस्तानी कश्मीर के लोगों से विद्रोह की अपील जाती है तो कश्मीर रेडियो से या कश्मीर के नेताओं तरफ़ से. ऐसी हालत में शेख़ अब्दुल्ला पर साम्प्रदायिकता का सन्देह करना केवल सन्देह करने वालों की पनी खुली या छिपी साम्प्रदायिक भावना का सबूत है र शेख़ अब्दुल्ला और उनके साथियों के साथ गहरा न्याय है.

यह भी सच है कि सन 1947 से पहिले की और उसके द की कश्मीर की सरकारों में ज़मीन आसमान का फ़रक़ डोगरा शासक शासन में हिन्दुओं को ही जगह देते थे. ब यह नहीं हो सकता. जिस देश में नव्वे फ़ी सैकड़ा सलमान हों उस के शासन में नव्वे फ़ी सैकड़ा हिन्दुओं रखना अन्याय है. अब पढ़े लिए और हक़दार सलमानों को भी सरकारी नौकरियां मिल जाती हैं. पढ़ाई खाई में भी मुस्लिम जनता पिछड़ी हुई थी, नई सरकार पढ़ाने का इन्तज़ाम कर रही है.

इन सुधारों और ख़ास कर ज़मींदारी और कारी के संबंध के क़ानूनों से हिन्दू जनता में, और स कर पढ़ी लिखी हिन्दू जन्ता में कुछ असंतोश पैदा आ है. वह नौकरियों में अपनी बपौती क़ायम रखना हते हैं और ज़मींदारी और साहुकारे के ख़त्म होने से शान हैं. अगर देश की आर्थिक हालत और अच्छी होती, गर सब पढ़े लिखे आदमियों को काम मिल सकता तो यद हिन्दुओं में इतना असंतोश न होता. लेकिन क्योंकि समय बहुत से पढ़े लिखे हिन्दु नौजवान कश्मीर में कार हैं और वह देखते हैं कि उनके बराबर या उनसे कम बिल मुसलमानों को नौकरी मिल जाती है, इससे उनको स्सा आता है.

लेकिन जैसा कि साफ़ है असली सवाल आर्थिक है. गर कश्मीर का आर्थिक ढांचा सुधर जाता है, अगर वहां दावार और व्यापार बढ़ते हैं तो सारे सवाल अपने आप ल हो सकते हैं.

جگہ آگے بڑھنے سے روکا اور یہ سب اُس حالت میں جب کہ اُن کے پاس ہتھیار نہ تھے۔ اگر ہندستانی جنتا نے کہیں بھی پاکستانی حملے کے خلاف لڑائی لڑی ہے تو وہ کشمیر میں اور شیخ عبداللہ کی اگوائی میں۔ راشٹریتا اور بھارتیتا کا اِس سے بڑھکر ثبوت اور کیا ہوسکتا ہے ؟

آج بھی پاکستان کی نیتاشاہی کا اگر سب سے زیادہ ورودھ کہیں ہوتا ہے تو شری‌نگر ریڈیو سے، اگر پاکستان کے لیڈروں کا ورودھ کرتے ہیں تو کشمیری نیتا، اگر پاکستانی کشمیر کے لوگوں سے ورودھ کی اپیل کی جاتی ہے تو کشمیر ریڈیو سے یا کشمیر کے نیتاؤں کی طرف سے۔ ایسی حالت میں شیخ عبداللہ پر سامپردائکتا کا سندیہ کرنا کیول سندیہ کرنے والوں کی اپنی کھلی یا چھپی سامپردائک بھاونا کا ثبوت ہے اور شیخ عبداللہ اور اُن کے ساتھیوں کے ساتھ گہرا انیائے ہے۔

یہ بھی سچ ہے کہ سن 1947 سے پہلے کی اور اُس کے بعد کی کشمیر کی سرکاروں میں زمین آسمان کا فرق ہے۔ ڈوگرا شاسک شاسن میں ہندوؤں کو ہی جگہ دیتے تھے۔ اب یہ نہیں ہوسکتا۔ جس دیش میں نوے فی سیکڑا مسلمان ہوں اُس کے شاسن میں نوے فی سیکڑا ہندوؤں کو رکھنا انیائے ہے۔ اب پڑھے لکھے اور حقدار مسلمانوں کو بھی سرکاری نوکریاں مل جاتی ہیں۔ پڑھائی لکھائی میں بھی مسلم جنتا پچھڑی ہوئی تھی، نئی سرکار اُسے پڑھانے کا انتظام کر رہی ہے۔

اِن سدھاروں اور خاص کر زمینداری اور ساہوکاری کے سمبندھ کے قانونوں سے ہندو جنتا میں، اور خاص کر پڑھی لکھی ہندو جنتا میں، کچھ اسنتوش پیدا ہوا ہے۔ وہ نوکریوں میں اپنی بپوتی قائم رکھنا چاہتے ہیں اور زمینداری اور ساہوکارے کے ختم ہونے سے پریشان ہیں۔ اگر دیش کی آرتھک حالت اور اچھی ہوتی، اگر سب پڑھے لکھے آدمیوں کو کام مل سکتا تو شائد ہندوؤں میں اِتنا اسنتوش نہ ہوتا۔ لیکن کیونکہ اِس سمے بہت سے پڑھے لکھے ہندو نوجوان کشمیر میں بیکار ہیں اور وہ دیکھتے ہیں کہ اُن کے برابر یا اُن سے کم قابل مسلمانوں کو نوکری مل جاتی ہے، اِس سے اُن کو غصہ آتا ہے۔

لیکن جیسا کہ صاف ہے اصلی سوال آرتھک ہے۔ اگر کشمیر کا آرتھک ڈھانچہ سدھر جاتا ہے، اگر وہاں پیداوار اور بیوپار بڑھتے ہیں تو سارے سوال اپنے آپ حل ہو سکتے ہیں۔

पर हिन्दुस्तान के राष्ट्री आन्दोलन का असर कश्मीर पर भी पड़ा. कश्मीरी नेताओं ने जल्द ही समझ लिया कि कशमीर और भारत की समस्या साम्प्रदायिक नहीं, राष्ट्री है. बस, कश्मीर मुसलिम कानफ़रेन्स का नाम बदल कर राष्ट्री कानफ़रेन्स हो गया और वह हिन्दू और मुसलमान दोनों को मिलाकर डोगरा सामन्तशाही के ख़िलाफ़ लड़ने लगी. उस दिन से आज तक शेख़ अब्दुल्ला और उनेके साथियों ने राष्ट्रीयता के सच्चे असूलों पर काम किया है और इसका सबूत एक बार नहीं, अनेक बार मिल चुका है. मिस्टर जिनाह ने शेख़ अब्दुल्ला को मुसलिम लीग में लाने की कई बार कोशिश की, लेकिन हमेशा नाकाम रहे.

जिस वक़्त पाकिस्तान से कश्मीर पर हमला हुआ तो शेख़ अब्दुल्ला और उनके साथी महाराजा की जेल में बन्द थे. जम्मू के इलाके में हिन्दू मुस्लिम झगड़ा हो रहा था और राजा और उसके अफ़सर मुसलमानों पर अत्याचार करने में शामिल थे. महाराजा और उसके अफ़सर हमला करने वालों के सामने भाग खड़े हुए. श्रीनगर और कश्मीर के इलाक़े भर में न पुलिस थी और न फ़ौज. मुसलिम जनता डोगराशाही से नाख़ुश थी. डोगराशाही ने अत्याचार किये थे, साम्प्रदायिक दंगे कराए थे और आख़िरी वक़्त वह जनता को असहाय छोड़ कर और सारा ख़ज़ाना और माल टाल लेकर देश से भाग निकली थी. हमले वाले बढ़ते चले आ रहे थे. वह मुसलमानों पर भी सब तरह के ज़ुल्म करते थे और साथ ही हिन्दुओं की भी बेइज़्ज़ती करते थे, उनका माल छीन लेते थे और उनको या तो मुसलमान बना लेते थे या मार डालते थे.

ऐसी हालत में शेख़ अब्दुल्ला और उनके साथी अगर चुप रह जाते तो कश्मीर को बचाना नामुमकिन था. हमला करने वाले श्रीनगर की हद पर आ चुके थे, आस पास के गांवों में पहुंच गए थे और श्रीनगर के हवाई अड्डे पर पहुंचना ही चाहते थे कि शेख़ अब्दुल्ला और उनके साथी जेल से छोड़ गए. छूटते ही उन्होंने भारत के साथ गठ बन्धन को स्वीकार किया और कश्मीरी जनता से हमले का मुक़ाबला करने की अपील की. जनता ने शेख़ अब्दुल्ला और राष्ट्री कानफ़रेंस का साथ दिया. मुसलिम वालन्टियरों ने अपनी जान की बाज़ी लगा कर हिन्दू जनता को बचाया और श्रीनगर और कश्मीर को हमला करने वालों के चंगुल से बचाया. आज कश्मीरी पंडित कश्मीर सरकार से नाख़ुश हैं, लेकिन जब सन 1947 के अक्तूबर नवम्बर की याद करते हैं तो शेख़ अब्दुल्ला और नेशनल कानफ़रेंस की सेवाओं की दिल खोल कर सराहना भी करते हैं और उस इतिहास को कश्मीर के इतिहास का सुनहरा पन्ना भी मानते हैं. नेशनल कानफ़रेंस के वालन्टियरों ने शहर में न केवल अमन क़ायम रक्खा बल्कि हमला करने वालों को जगह

پر ہندستان کے راشٹری آندولن کا اثر کشمیر پر بھی پڑا ۔ کشمیری نیتاؤں نے جلد ہی سمجھ لیا کہ کشمیر اور بھارت کی سمسیا سامپردائک نہیں' راشٹری ہے. بس' کشمیر مسلم کانفرنس کا نام بدل کر راشٹری کانفرنس ہوگیا اور وہ ہندو اور مسلمان دونوں کو ملاکر ڈوگرا سامنت شاہی کے خلاف لڑنے لگی ۔ اُس دن سے آج تک شیخ عبداللہ اور اُس کے ساتھیوں نے راشٹریتا کے سچے اصولوں پر کام کیا ہے اور اِس کا ثبوت ایک بار نہیں' انیک بار مل چکا ہے ۔ مسٹر جناح نے شیخ عبداللہ کو مسلم لیگ میں لانے کی کئی بار کوشش کی' لیکن ہمیشہ ناکام رہے.

جس وقت پاکستان سے کشمیر پر حملہ ہوا تو شیخ عبداللہ اور اُن کے ساتھی مہاراجا کی جیل میں بند تھے. جمو کے علاقے میں ہندو مسلم جھگڑا ہو رہا تھا اور راجہ اور اُس کے افسر مسلمانوں پر اتیاچار کرنے میں شامل تھے ۔ مہاراجا اور اُس کے افسر حملہ کرنے والوں کے سامنے بھاگ کھڑے ہوئے ۔ شری نگر اور کشمیر کے علاقے بھر میں نہ پولیس تھی اور نہ فوج ۔ مسلم جنتا ڈوگرا شاہی سے ناخوش تھی. ڈوگرا شاہی نے اتیاچار کئے تھے' سامپردائک دنگے کرائے تھے اور آخری وقت وہ جنتا کو اسہائے چھوڑ کر اور سارا خزانہ اور مال ٹال لیکر دیش سے بھاگ نکلی تھی ۔ حملے والے بڑھتے چلے آ رہے تھے ۔ وہ مسلمانوں پر بھی سب طرح کے ظلم کرتے تھے اور ساتھ ہی ہندوؤں کی بھی بےعزتی کرتے تھے' اُن کا مال چھین لیتے تھے اور اُن کو یا تو مسلمان بنا لیتے تھے یا مار ڈالتے تھے ۔

ایسی حالت میں شیخ عبداللہ اور اُن کے ساتھی اگر چپ رہ جاتے تو کشمیر کو بچانا ناممکن تھا ۔ حملہ کرنے والے شری نگر کی حد پر آ چکے تھے' آس پاس کے گاؤں میں پہونچ گئے تھے اور شری نگر کے ہوائی اڈے پر پہونچنا ہی چاہتے تھے کہ شیخ عبداللہ اور اُن کے ساتھی جیل سے چھوڑے گئے ۔ چھوٹتے ہی اُنہوں نے بھارت کے ساتھ گٹھ بندھن کو سویکار کیا اور کشمیری جنتا سے حملے کا مقابلہ کرنے کی اپیل کی ۔ جنتا نے شیخ عبداللہ اور راشٹری کانفرنس کا ساتھ دیا ۔ مسلم والنٹیروں نے اپنی جان کی بازی لگاکر ہندو جنتا کو بچایا اور شری نگر اور کشمیر کو حملہ کرنے والوں کے چنگل سے بچایا. آج کشمیری پنڈت کشمیر سرکار سے ناخوش ہیں' لیکن جب سن 1947 کے اکتوبر نومبر کی یاد کرتے ہیں تو شیخ عبداللہ اور نیشنل کانفرنس کی سیواؤں کی دل کھول کر سراہنا بھی کرتے ہیں اور اُس اِتہاس کو کشمیر کے اِتہاس کا سنہرا پنّا بھی مانتے ہیں. نیشنل کانفرنس کے والنٹیروں نے شہر میں نہ کیول امن قائم رکھا بلکہ حملہ کرنے والوں کو جگہ

कश्मीर का सवाल

(आशाराम)

कश्मीर का सवाल हमारे सामने इस तरह रखा जाता है मानों कोई इस देश को हमसे छीन लेना चाहता है, मानों हिन्दुस्तान के फिर से टुकड़े किये जा रहे हैं, उसको बांटा जा रहा है. ऐसा मालूम होता है कि जिस ज़मीन के लिये और जिस ज़मीन पर हमारे जवानों ने खून पसीना बहाया है और जिसको रखने के लिये हमने पिछले पांच साल में अरबों रुपया खर्च किया है वह आज हमसे अलग होना चाहती है. इस विचार से हमको दुख होता है.

कश्मीर की सरकार और वहां के नेता अपना अलग विधान बनाना चाहते हैं, वह अपना दूसरा ही झन्डा रखना चाहते हैं, राजप्रमुख को हटा कर चुना हुआ प्रेसीडेन्ट या राजपाल रखना चाहते हैं, बिना मुआविज़े के ज़मींदारी का खात्मा करते हैं, हर शहरी के बुनियादी अधिकारों में भी अदल बदल करना चाहते हैं, लोगों पर माली या आर्थिक रोक थाम लगाते हैं वग़ैरा. एक मामूली आदमी को यह सब बातें ऐसी मालूम होती हैं जैसे एक नये पाकिस्तान की मांग हो रही हो. यह डर इसलिये भी और पक्का होने लगता है क्योंकि कश्मीर में मुसलमानों की गिनती अधिक है और वहां के नेता भी अधिकतर मुसलमान हैं. सच यह है कि हमारे अन्दर की छिपी दबी साम्प्रदायिक और कच्ची राष्ट्री भावना इस तरह से ज़ाहिर होती है.

इसलिये पहली ज़रूरत यह है कि कश्मीर सरकार, वहां के राष्ट्री आन्दोलन और कश्मीरी नेताओं के बारे में हमारी समझ साफ़ हो जाए.

यह सच है कि कश्मीर के नेताओं ने सब से पहले डोगरा शाही के खिलाफ़ वहां के मुसलमानों का संगठन किया था. यह स्वाभाविक था. क्योंकि कश्मीर देश के सौ पीछे लगभग नब्बे निवासी मुसलमान हैं और वह बेहद ग़रीब हैं. देश का राजा हिन्दू था, उसके अफ़सर, नौकर चाकर, पुलिस और फ़ौज सब हिन्दू थे. ज़मींदार और साहूकार और ज़ियादातर व्यापारी भी हिन्दू थे. मुसलमान मज़दूर थे या खेती बाड़ी करते थे. उनमें पढ़े लिखे नहीं के बराबर थे. और अगर कभी मुसलमान अफ़सरों की ज़रूरत भी पड़ी तो राजा पंजाबी मुसलमानों को बुलाकर नौकर रख लेता था. ऐसी हालत में हिन्दुओं का राजा के साथ रहना और मुसलमानों का इस अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाना कुदरती और ठीक ही था.

کشمیر کا سوال

(آشارام)

کشمیر کا سوال ہمارے سامنے اس طرح رکھا جاتا ہے مانو کوئی اِس دیش کو ہم سے چھین لینا چاہتا ہے' مانو ہندستان کے پھر سے ٹکڑے کئے جارہے ہیں' اس کو بانٹا جارہا ہے . ایسا معلوم ہوتا ہے کہ جس زمین کے لئے اور جس زمین پر ہمارے جوانوں نے خون پسینا بہایا ہے اور جس کو رکھنے کے لئے ہم نے پچھلے پانچ سال میں اربوں روپیہ خرچ کیا ہے وہ آج ہم سے الگ ہونا چاہتی ہے . اِس وچار سے ہم کو دکھ ہوتا ہے .

کشمیر کی سرکار اور وہاں کے نیتا اپنا الگ ودھان بنانا چاہتے ہیں' وہ اپنا دوسرا ہی جھنڈا رکھنا چاہتے ہیں' راج پرمکھ کو ہٹاکر چنا ہوا پریسیڈنٹ یا راج پال رکھنا چاہتے ہیں' بنا معاوضے کے زمینداری کا خاتمہ کرتے ہیں' ہر شہری کے بنیادی ادھیکاروں میں بھی ادل بدل کرنا چاہتے ہیں' لوگوں پر مالی یا آرتھک روک تھام لگاتے ہیں وغیرہ . ایک معمولی آدمی کو یہ سب باتیں ایسی معلوم ہوتی ہیں جیسے ایک نئے پاکستان کی مانگ ہو رہی ہو . یہ ڈر اِس لئے بھی اور پکا ہونے لگتا ہے کیونکہ کشمیر میں مسلمانوں کی گنتی ادھک ہے اور وہاں کے نیتا بھی ادھک تر مسلمان ہیں . سچ یہ ہے کہ ہمارے اندر کی چھپی دبی سامپردائک اور کچی راشٹری بھاونا اِس طرح سے ظاہر ہوتی ہے .

اِس لئے پہلی ضرورت یہ ہے کہ کشمیر سرکار' وہاں کے راشٹری آندولن اور کشمیری نیتاؤں کے بارے میں ہماری سمجھ صاف ہو جائے .

یہ سچ ہے کہ کشمیر کے نیتاؤں نے سب سے پہلے ڈوگرا شاہی کے خلاف وہاں کے مسلمانوں کا سنگھٹن کیا تھا . یہ سوابھاوک تھا . کیونکہ کشمیر دیش کے سو پیچھے لگ بھگ نوے نواسی مسلمان ہیں اور وہ بے حد غریب ہیں . دیش کا راجہ ہندو تھا' اس کے افسر' نوکر چاکر' پولیس اور فوج سب ہندو تھے . زمیندار اور ساہوکار اور زیادہ تر بیوپاری بھی ہندو تھے . مسلمان مزدور تھے یا کھیتی باڑی کرتے تھے . ان میں پڑھے لکھے نہیں کے برابر تھے . اور اگر کبھی مسلمان افسروں کی ضرورت بھی پڑی تو راجہ پنجابی مسلمانوں کو بلاکر نوکر رکھ لیتا تھا . ایسی حالت میں ہندوؤں کا راجہ کے ساتھ رہنا اور مسلمانوں کا اِس اتیاچار کے خلاف آواز اُٹھانا قدرتی اور ٹھیک ہی تھا .

मरतबा ही नहाते हैं. कुछ औरतें इतनी बेशरम हो गई हैं कि दूसरे तीसरे महीने नहाए बिना रह नहीं सकतीं ! सुनता हूँ कि यू. पी. के आदर्श देश में बहुत से घरानों में अब भी अगर बहू सास से परदा न करे तो बेशरम कहलाए. वहां अब भी शरम के अजीब अजीब ज़ेवर पाये जाते हैं. लेकिन साथ ही यह भी सुनता हूँ कि यू. पी. में यह ज़ेवर घिस घिस कर कुछ तो टूट गए हैं और कुछ हलके पड़ते जाते हैं. मालूम होता है कि वहां भी औरतों ने बेशरमी पर कमर बांध रखी है.

हाल ही में हमने हालसिंकी ओलम्पिक में कुछ नौजवान अपना अपना खेल, हुनर दिखाने के लिये भेजे. उनमें कम से कम दो हिन्दुस्तानी लड़कियां भी थीं जिनकी तस्वीरें स्वीमिंग ड्रेस (तैरने की पोशाक) में कुछ अख़बारों में छपी थीं. यह स्वीमिंग ड्रेस क्या. एक बुना हुआ मिला जुला छोटा सा जांगिया और मुख़तसर बनियाइन होता है. टांगें और बाहें तो नंगी रहती ही हैं, छाती भी आधी नंगी और जो बदन का हिस्सा ढका भी रहता है उसका भी सब उतराव चढ़ाव दिखाई देता है. इन लड़कियों को तैरने में कमाल था इसलिये उसका ही मैच करने गई थीं. ज़ाहिर में इनका बदन कसरती होने की वजह से कुछ कम ख़ूबसूरत नहीं. हिन्दुस्तान भर में कहीं भी किसी ने उन्हें बेशर्म नहीं कहा.

जो कुछ मैं लिख आया हूँ उससे एक बात तो साबित होती है कि बेशर्मी का जो आदर्श पचास साल पहले हिन्दुस्तान में आम था वह आज नहीं. कौन कह सकता है कि जो आज आम लोगों का आदर्श है पचास साल के बाद वह क़ायम रहेगा. इसलिये किसी को बेशर्म कहना सिर्फ़ इस वजह से कि उसका आदर्श मेरे आदर्श से मुख़्तलिफ़ है कुछ बहुत अक़लमन्दी नहीं मालूम होती. मुमकिन है कि दूसरा ही दुरुस्त साबित हो. हमारी दुनिया इस तेज़ी से बदल रही है कि किसी को बुरा कहना शायद दुरुस्त हो पर किसी को बेशर्म कहना ठीक नहीं लगता.

مرتبہ ہی نہاتے ہیں ۔ کچھ عورتیں اتنی بے شرم ہوگئی ہیں کہ دوسرے تیسرے مہینے نہائے بنا رہ نہیں سکتیں ! سنتا ہوں کہ یو ۔ پی ۔ کے آدرش دیش میں بہت سے گھرانوں میں اب بھی اگر بہو ساس سے پردہ نہ کرے تو بے شرم کہلائے ۔ وہاں اب بھی شرم کے عجیب عجیب زیور پائے جاتے ہیں ۔ لیکن ساتھ ہی یہ بھی سنتا ہوں کہ یو ۔ پی ۔ میں یہ زیور گھس گھس کر کچھ تو ٹوٹ گئے ہیں اور کچھ ہلکے پڑتے جاتے ہیں ۔ معلوم ہوتا ہے کہ وہاں بھی عورتوں نے بے شرمی پر کمر باندھ رکھی ہے ۔

حال ہی میں ہم نے ہالسنکی اولمپک میں کچھ نوجوان اپنا اپنا کھیل، ہنر دکھانے کے لئے بھیجے ۔ ان میں کم سے کم دو ہندستانی لڑکیاں بھی تھیں جن کی تصویریں سومنگ ڈرس (تیرنے کی پوشاک) میں کچھ اخباروں میں چھپی تھیں ۔ یہ سومنگ ڈرس کیا ۔ ایک بنا ہوا ملا جلا چھوٹا سا جانگیا اور مختصر بنیائن ہوتا ہے ۔ ٹانگیں اور باہیں تو ننگی رہتی ہی ہیں، چھاتی بھی آدھی ننگی اور جو بدن کا حصہ ڈھکا بھی رہتا ہے اس کا بھی سب اتراؤ چڑھاؤ دکھائی دیتا ہے ۔ ان لڑکیوں کو تیرنے میں کمال تھا اس لئے اس کا ہی میچ کرنے گئی تھیں ۔ ظاہر میں ان کا بدن کسرتی ہونے کی وجہ سے کچھ کم خوبصورت نہیں ۔ ہندستان بھر میں کہیں بھی کسی نے انہیں بے شرم نہیں کہا ۔

جو کچھ میں لکھ آیا ہوں اس سے ایک بات تو ثابت ہوتی ہے کہ بےشرمی کا جو آدرش پچاس سال پہلے ہندستان میں عام تھا وہ آج نہیں ۔ کون کہہ سکتا ہے کہ جو آج عام لوگوں کا آدرش ہے پچاس سال کے بعد وہ قائم رہے گا ۔ اس لئے کسی کو بے شرم کہنا صرف اس وجہ سے کہ اس کا آدرش میرے آدرش سے مختلف ہے کچھ بہت عقلمندی نہیں معلوم ہوتی ۔ ممکن ہے کہ دوسرا ہی درست ثابت ہو ۔ ہماری دنیا اس تیزی سے بدل رہی ہے کہ کسی کو برا کہنا شاید درست ہو پر کسی کو بے شرم کہنا ٹھیک نہیں لگتا ۔

मी एक हरती फिरती छांव है जिसकी असलियत कोई . चूंकि मेरे जीवन का तजुरबा यही सबक़ सिखाता है . लिये जरूरी है कि मैं अपने जीवन के कुछ हालात पर ानी डालूं. मैं लाहौर शहर का रहने वाला हूँ. लाहौर कभी न का मरकज़ समझा जाता था. इस सदी के शुरू में 1900 में (लेखक की उम्र इस समय अस्सी से एक कम है—एडीटर) मेरा एक पुराना जमाती कुछ मेरी ाह लेने आया. उसके मुहल्ले में मेरे एक दोस्त का घर जो उन दिनों तालीम की ग़रज़ से वलायत गया हुआ था. बातों बातों में अपने दोस्त के घर का हाल पूछा. कहने —"कुछ न पूछो. वहां तो कनजर खाना है कनजर ना." दिल पर चोट तो जरूर लगी लेकिन हौसला कर पूछ ही लिया "कुछ बात भी बताओ." कहने लगा स घर की औरतें रोज़ धोबी का धुला हुआ कपड़ा नती हैं. ससुर से परदा नहीं करतीं और बातें भी करती और रोज़ चाय पोती हैं चाय. हद हो गई बेशरमी की." सुन कर मेरी तो हिम्मत न पड़ी कि मैं उससे कह दूँ यह तीनों खराबियां मेरी बीबी भी मेरे कहने से करती चुप रहना ही मुनासिब समझा. लेकिन मेरा ही दिल नता है कि इन बेशरमी की बातों की वजह से हमें क्या . नहीं सुनना पड़ा. वह वह फबतियां सुनीं और गालियां कि रहे नाम साईं का. हमारे बूढ़े बाप का नाम भी चड़ में लुथेड़ा गया. अब आज पचास बरस के बाद मेरे घराने का हाल सुन लो. परदा तो रहा चूल्हे में बहुएं नंगे खुले बाल मेरे सामने इस तरह फिरती हैं मानो बूढ़ा में है ही नहीं. और पोत बहुएं तो लड़कियों और बच्चियों तरह पांव पड़ने के बजाय बूढ़े के गले मिलती हैं. मुमकिन के उस पवित्र देश में जहां गंगा जमुना मिलती हैं इसे बुरा समझा जाए. लेकिन अपना दिल साफ़ है इसलिये परवाह नहीं. एक तरह से देखा जाए जिनके अपने में पाप होता है या जिन्हें अपने मन के बिगड़ने का रहता है वही अपनी कमज़ोरी दूसरों पर थोप कर उन्हें म कहते हैं.

एक और मेरी आंखों देखी बात सुन लो हमारे देश स पचास मील लम्बे हिस्से में जहां चन्द्रा और भागा कर अपना सफ़र करती हैं 1925 तक किसी त के लिये मुंह धोना भी बड़ी बेशरमी की बात समझी ी थी. नतीजा यह कि उस पचास मील में हर औरत नी मालूम होती थी. काले काले चपटे चेहरों पर सुर्खी दी की झुर्रियां. 1925 में सरकार ने वहां स्कूल खोल दिया. 31 में मैं वहां से निकला तो कुछ लड़कियों को स्कूल ढ़ते देखा और हर बच्ची का चेहरा गोरा चिट्टा जैसा कों का. 1939 में वहां गया तो हर औरत मर्दों जैसी ी चिट्टी. सुना था कि वहां मर्द तो साल में एक दो

شرم بھی ایک ھرتی پھرتی چھاؤں ہے جس کی اصلیت کوئی نہیں۔ چونکہ میرے جیون کا تجربہ یہی سبق سکھاتا ہے اس لئے ضروری ہے کہ میں اپنے جیون کے کچھ حالات پر روشنی ڈالوں . میں لاہور شہر کا رہنے والا ہوں . لاہور کبھی فیشن کا مرکز سمجھا جاتا تھا . اِس صدی کے شروع میں سن 1900 میں (لیکھک کی عمر اِس سے اسی سے ایک دو کم ہے—ایڈیٹر) میرا ایک پرانا جماعتی کچھ میری صلاح لینے آیا . اس کے محلے میں میرے ایک دوست کا گھر تھا جو اُن دنوں تعلیم کی غرض سے ولایت گیا ہوا تھا . میں نے باتوں باتوں میں اپنے دوست کے گھر کا حال پوچھا. کہنے لگا—"کچھ نہ پوچھو . وھاں تو کنجر خانہ ہے کنجرخانہ." دل پر چوٹ تو ضرور لگی لیکن حوصلہ کرکے پوچھ ہی لیا " کچھ بات بھی بتاؤ . " کہنے لگا " اس گھر کی عورتیں روز دھوبی کا دھلا ہوا کپڑا پہنتی ہیں . سسر سے پردہ نہیں کرتیں اور باتیں بھی کرتی ہیں اور روز چائے پیتی ہیں چائے . حد ہوگئی بے شرمی کی ." یہ سن کر میری تو ہمت نہ پڑی کہ میں اس سے کہہ دوں کہ یہ تینوں خرابیاں میری بیوی بھی میرے کہنے سے کرتی ہے . چپ رہنا ہی مناسب سمجھا . لیکن میرا ہی دل جانتا ہے کہ اِن بے شرمی کی باتوں کی وجہ سے ہمیں کیا کیا نہیں سننا پڑا . وہ وہ پھبتیاں سنیں اور گالیاں کھائیں کہ رہے نام سائیں کا۔ ہمارے بوڑھے باپ کا نام بھی کیچڑ میں لتھیڑا گیا . اب آج پچاس برس کے بعد میرے ہی گھرانے کا حال سن لو . پردہ تو رہا چولھے میں بہوئیں ننگے سر کھلے بال میرے سامنے اِس طرح پھرتی ہیں مانو بوڑھا گھر میں ہے ہی نہیں۔ اور پوت بہوئیں تو لڑکیوں اور بچیوں کی طرح پاؤں پڑنے کی بجائے بوڑھے کے گلے ملتی ہیں . ممکن ہے کہ اُس پوتر دیش میں جہاں گنگا جمنا ملتی ہیں اِسے بھی برا سمجھا جائے . لیکن اپنا دل صاف ہے اس لئے کچھ پرواہ نہیں۔ ایک طرح سے دیکھا جائے جن کے اپنے دل میں پاپ ہوتا ہے یا جنہیں اپنے من کے بگڑنے کا ڈر رہتا ہے وہی اپنی کمزوری دوسروں پر تھوپ کر انہیں بےشرم کہتے ہیں۔

ایک اور میری آنکھوں دیکھی بات سن لو . ہمارے دیش کے اُس پچاس میل لمبے حصے میں جہاں چندرا اور بھاگا مل کر اپنا سفر شروع کرتی ہیں 1925 تک کسی عورت کے لئے منہ دھونا بھی بڑی بے شرمی کی بات سمجھی جاتی تھی . نتیجہ یہ کہ اُس پچاس میل ہر عورت بھتنی معلوم ہوتی تھی . کالے کالے چپٹے چہروں پر سرخی سفیدی کی جھریاں . 1925 میں سرکار نے وہاں اسکول کھول دیا . 1931 میں میں وہاں سے نکلا تو کچھ لڑکیوں کو اسکول میں پڑھتے دیکھا اور ہر بچی کا چہرا گورا چٹا جیسا لڑکوں کا۔ 1939 میں وہاں گیا تو ہر عورت مردوں جیسی گوری چٹی۔ سنا تھا کہ وہاں مرد تو سال میں ایک دو

यह तो साफ़ है कि क़ुदरत ने या ईश्वर ने दुनिया में सुन्दरता के साथ सुन्दरता का अहसास या उसकी समझ भी पैदा की. विकास के जानकारों का तो यह ख़्याल है कि दुनिया में सुन्दरता न होती अगर उसका अहसास न होता और सुन्दरता फैलाने और बढ़ाने के लिये सुन्दर के दिल में अपनी सुन्दरता दिखाने की उमंग पैदा न की गई होती. चुनांचे उनकी राय में यह नुमाइश या प्रदर्शन का माद्दा ईश्वर की एक देन है और ऐसी जो उसने अपनी सारी रचना के लिये लाज़मी ठहरा दी. केवल आदमी के लिये नहीं जानवरों और फूल पत्तों तक के लिये. कुछ ज्ञानी तो ऐसे भी हो सकते हैं जो इस ईश्वरी देन को रोकना या दबाना पाप समझते हों. लेकिन कुछ विद्वान यह समझते हैं कि हमें अपनी सभ्यता या समाजिक ज़िन्दगी को बनाए रखने के लिये इस देन को रोकना चाहिये. इसलिये इसके रोकने को उन्होंने एक समाजी ख़ूबी या गुन बना लिया है. कुछ लिखने वाले तो यहां तक लिख गए हैं कि शर्म का जन्म उस ज़माने में हुआ जब मर्द जिस्मानी शक्ति की वजह से नहीं बल्कि अपनी बुज़ुर्गी या धन दौलत की वजह से औरों पर राज करने लगा और अपनी शक्ति से ज़ियादा औरतें रखने लगा.

ऐसी हालत में मजबूर हो कर उसे अपनी जवान बीवियों को क़ाबू में रखने के लिये यह ज़ेवर कहो, ज़ंजीर कहो या पिंजड़ा कहो बनाना पड़ा और उसका नाम रखा 'शर्म' और झूट मूट उसे ईश्वरी आज्ञा का दरजा दिया ताकि नरक के डर से उसकी बीवियां और रखेल उसकी क़ैद से निकलने का इरादा न करें.

असल सवाल यह है कि सुन्दरता ऐब है या गुन क्योंकि किसी आदमी को अपना गुन या जौहर दिखाने में शर्म नहीं आती. शर्म आती है ऐब के खुलने से. भड़ के काटने से अगर चेहरा सूज जाए तो मर्द भी बाहर निकलने से हिचकिचाता है और अगर किसी ज़रूरी काम से निकलना ही पड़े तो रूमाल से उसे छिपाने की कोशिश करता है. इसे भी शर्म कहते हैं लेकिन इसे ज़ेवर कोई नहीं कहता. गाने वाला गा कर, चित्रकार तसवीर बना कर, शायर कविता कह कर, लिखने वाला लेख लिख कर अपनी अपनी लियाक़त (सुन्दरता) दिखाता है. किसी को शर्म नहीं आती. जो लोग झूट बोलते हैं, चोरी करते हैं और उसमें अपनी लियाक़त समझते हैं चोरी करने, झूट बोलने में उन्हें शर्म नहीं आती. पकड़े जाने में आती है. रात के वक़्त बिला लम्प बाइसिकिल की सवारी क़ानूनन मना है. इस क़ानून को तोड़ने में किसी को शर्म नहीं आती. हां, पकड़े जाने में ज़रूर झेंप है. इस क़िस्म की शर्म भी कभी ज़ेवर न कहलाई.

मालूम होता है कि शर्म एक समाजिक बन्धन है और चूंकि समाज की हालत और उसके नियम बदलते रहते हैं,

یہ تو صاف ہے کہ قدرت نے یا ایشور نے دنیا میں سندرتا کے ساتھ سندرتا کا احساس یا اس کی سمجھ بھی پیدا کی۔ وکاس کے جانکاروں کا تو یہ خیال ہے کہ دنیا میں سندرتا نہ ہوتی اگر اس کا احساس نہ ہوتا اور سندرتا پھیلانے اور بڑھانے کے لئے سندر کے دل میں اپنی سندرتا دکھانے کی امنگ پیدا نہ کی گئی ہوتی۔ چنانچہ ان کی رائے میں یہ نمائش یا پردرشن کا مادہ ایشور کی ایک دین ہے اور ایسی جو اس نے اپنی ساری رچنا کے لئے لازمی ٹھہرا دی۔ کیول آدمی کے لئے نہیں جانوروں اور پھول پتوں تک کے لئے۔ کچھ گیانی تو ایسے بھی ہوسکتے ہیں جو اس ایشوری دین کو روکنا یا دبانا پاپ سمجھتے ہوں۔ لیکن کچھ ودوان یہ سمجھتے ہیں کہ ہمیں اپنی سبھیتا یا سماجک زندگی کو بنائے رکھنے کے لئے اس دین کو روکنا چاہئے۔ اس لئے اس کے روکنے کو انہوں نے ایک سماجی خوبی یا گن بنا لیا ہے۔ کچھ لکھنے والے تو یہاں تک لکھ گئے ہیں کہ شرم کا جنم اس زمانہ میں ہوا جب مرد جسمانی شکتی کی وجہ سے نہیں بلکہ اپنی بزرگی یا دھن دولت کی وجہ سے اوروں پر راج کرنے لگا اور اپنی شکتی سے زیادہ عورتیں رکھنے لگا۔

ایسی حالت میں مجبور ہوکر اسے اپنی جوان بیویوں کو قابو میں رکھنے کے لئے یہ زیور کہو' زنجیر کہو یا پنجرا— کہو بنانا پڑا اور اس کا نام رکھا 'شرم' اور جھوٹ موٹ اسے ایشوری آگیا کا درجہ دیا تاکہ نرک کے ڈر سے اس کی بیویاں اور رکھیل اس کی قید سے نکلنے کا ارادہ نہ کریں۔

اصل سوال یہ ہے کہ سندرتا عیب ہے یا گن کیونکہ کسی آدمی کو اپنا گن یا جوہر دکھانے میں شرم نہیں آتی۔ شرم آتی ہے عیب کے کھلنے سے۔ بھڑ کے کاٹنے سے اگر چہرا سوج جائے تو مرد بھی باہر نکلنے سے ہچکچاتا ہے اور اگر کسی ضروری کام سے نکلنا ہی پڑے تو رومال سے اسے چھپانے کی کوشش کرتا ہے۔ اسے بھی شرم کہتے ہیں لیکن اسے زیور کوئی نہیں کہتا۔ گانے والا گا کر چترکار تصویر بنا کر' شاعر کویتا کہہ کر' لکھنے والا لیکھ لکھ کر اپنی اپنی لیاقت (سندرتا) دکھاتا ہے۔ کسی کو شرم نہیں آتی۔ جو لوگ جھوٹ بولتے ہیں' چوری کرتے ہیں اور اس میں اپنی لیاقت سمجھتے ہیں چوری کرنے' جھوٹ بولنے میں انہیں شرم نہیں آتی۔ پکڑے جانے میں آتی ہے۔ رات کے وقت بلا لیمپ بائیسکل کی سواری قانوناً منع ہے۔ اس قانون کو توڑنے میں کسی کو شرم نہیں آتی۔ ہاں' پکڑے جانے میں ضرور جھینپ ہے۔ اس قسم کی شرم بھی کبھی زیور نہ کہلائی۔

معلوم ہوتا ہے کہ شرم ایک سماجک بندھن ہے اور چونکہ سماج کی حالت اور اس کے نیم بدلتے رہتے ہیں'

गुलशने राज़ में लिखा है—"हर वक़्त लिबास बदलते रहने से लिबास बदलने वाला नहीं बदलता. यह लिबास ही हस्ती-ए-कुल यानी विश्वात्मा से हमें थोड़ी देर के लिये जुदाई के धोखे में डाल देता है. यह लिबास यानी यह जिस्म ही 'हक़' (ईश्वर) और 'बन्दे' (जीव) का फ़रक़ पैदा करता है."

گلشن راز میں لکھا ھے—" ہر وقت لباس بدلتے رھنے سے لباس بدلنے والا نہیں بدلتا . یہ لباس ہی اس ھستئی کل یعنی وشوآتما سے ھمیں تھوڑی دیر کے لئے جدائی کے دھوکے میں ڈال دیتا ھے . یہ لباس یعنی یہ جسم ہی 'حق' (ایشور) اور ' بندے ' (جیو) کا فرق پیدا کرتا ھے."

शर्म औरत का ज़ेवर है या ज़ंजीर

(मदन गोपाल)

जून के 'नया हिन्द' में एडीटर साहब ने इस सवाल को फब्ती कस कर उड़ा दिया मानो इस में शक की गुन्जाइश नहीं. आइये इस सवाल पर ज़रा गौर करें. विकास (इवोल्यूशन) अब निरा ख्याल नहीं रहा. अब यह एक तेहासी घटना या साइन्सी असूल माना जाता है. किसी चीज़ को परखने के लिये उसकी जड़ कुरेदी जाती है. आज कल इस बात से कोई पढ़ा लिखा इन्कार नहीं कर सकता कि आदमी पशु की औलाद है. आज तक नहीं सुना कि कोई जानवर शर्माता है. मोर पर फैला कर नाचता है, अपने परों का रंग बिरंगी हुस्न दिखा कर औरों को रिझाता है. उसे शर्म नहीं आती. हिन्दू दुनिया के शुरू में शिव जी महाराज नाच कर अपना रंग रूप दिखाते थे, किसी ने उन्हें बेशर्म नहीं कहा. जमुना के किनारे किशन जी महाराज बनसी बजा कर नित नया नृत्य करके गोपियों का दिल लुभाते थे, कहीं नहीं पढ़ा कि वह बेशर्म थे. अगर यह मान भी लिया जाय कि यह क़िस्से कहानियां हैं तो इनके बनाने वाले बुज़ुर्गों को कभी यह नहीं सूझा कि वह बेशर्मी की बात लिख रहे हैं. आज कल भी कोई मर्द मूछों पर ताव दे कर या दाढ़ी मूछ मुंडा बछड़ों में जा मिले और सीना उभार कर औरतों में फिरे तो उसे चाहे कोई बुरा कह ले बेशर्म नहीं कहता. यह भी कभी नहीं सुना कि शर्म किसी मर्द का ज़ेवर है या था. बतौर ज़ेवर तो यह औरतों की ही क़िस्मत में लिखा मालूम होता है.

जहां तक हम जानते हैं शर्म सिवाय इन्सान के और किसी जानवर को नहीं आती. पछतावा, अफ़सोस वग़ैरा शायद और जानवरों को भी आते हों, शर्म नहीं. इसलिये सच्चाई या असलियत जानने के लिये यह मालूम करना ज़रूरी है कि इन्सान में यह गुन या ख़राबी कब और कैसे पैदा हुई.

شرم عورت کا زیور ھے یا زنجیر

(مدن گوپال)

جون کے 'نیا ھند' میں ایڈیٹر صاحب نے اس سوال کو ایک پھبتی کس کر اُڑا دیا مانو اِس میں شک کی گنجائش ہی نہیں . آئیے اس سوال پر ذرا غور کریں . وکاس (ایولیوشن) اب نرا خیال نہیں رہا . اب یہ ایک اتہاسی گھٹنا یا سائنسی اصول مانا جاتا ھے . کسی چیز کو پرکھنے کے لئے اس کی جڑ کریدی جاتی ھے . آج کل اس بات سے تو کوئی پڑھا لکھا انکار نہیں کرسکتا کہ آدمی پشو کی اولاد ھے . آج تک نہیں سنا کہ کوئی جانور شرماتا ھے . مور پر پھیلا کر ناچتا ھے' اپنے پروں کا رنگ برنگی حسن دکھا کر اوروں کو رجھاتا ھے . اُسے شرم نہیں آتی . ھندو دنیا کے شروع میں شوجی مہاراج ناچ کر اپنا رنگ روپ دکھاتے تھے' کسی نے انہیں بےشرم نہیں کہا . جمنا کے کنارے کشن جی مہاراج بنسی بجاکر نت نیا نرت کرکے گوپیوں کا دل لبھاتے تھے' کہیں نہیں پڑھا کہ وہ بےشرم تھے . اگر یہ مان بھی لیا جائے کہ یہ قصے کہانیاں ھیں تو ان کے بنانے والے بزرگوں کو کبھی یہ نہیں سوجھا کہ وہ بےشرمی کی بات لکھ رھے ھیں. آج کل بھی کوئی مرد مونچھوں پر تاؤ دیکر یا ڈاڑھی مونچھ منڈا بچھڑوں میں جا ملے اور سینہ اُبھارکر عورتوں میں پھرے تو اُسے چاھے کوئی برا کہ لے بےشرم نہیں کہتا . یہ بھی کبھی نہیں سنا کہ شرم کسی مرد کا زیور ھے یا تھا. بطور زیور تو یہ عورتوں کی ہی قسمت میں لکھا معلوم ھوتا ھے .

جہاں تک ہم جانتے ھیں شرم سوائے انسان کے اور کسی جانور کو نہیں آتی . پچھتاوا' افسوس وغیرہ شائد اور جانوروں کو بھی آتے ھیں' شرم نہیں . اس لئے سچائی یا اصلیت جاننے کےلئے یہ معلوم کرنا ضروری ھے کہ انسان میں یہ گن یا خرابی کب اور کیسے پیدا ہوئی .

न्यायधीश से डरने की ज़रूरत नहीं है. आत्मा ही असली यमराज है."

महाभारत ही में एक दूसरी जगह लिखा है—"बड़े बड़े पुन्य और बड़े बड़े पापों का फल आदमी को यहीं इसी दुनिया में मिल जाता है. कोई फल से बच नहीं सकता, क्योंकि फल देने वाला अन्तरयामी यम सब के दिलों के अन्दर बैठा हुआ है."

अच्छे या बुरे कामों के फल से न बचने का असली कारन यही है कि आदमी किसी भी दूसरे से तो बच सकता है पर अपने दिल अपनी आत्मा से कैसे बच सकता है. इस तरह की बहसें जैसे जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र, क़द्र ठीक है या जब्र, ऐसे ही ईश्वर दयालु है या न्यायी, रहीम है या मुनसिफ़ इस तरह की सब बहसें केवल इसलिये होती हैं कि हम इस बात को भूल जाते हैं कि फ़ैसला करने वाला जज कहीं बाहर नहीं बैठा, वह हमारे ही अन्दर है. जो कोई यह समझता है कि वह पाप करने पर मजबूर है तो वह नतीजा भुगतने पर भी मजबूर होगा. मासूम बच्चा भी अगर ग़लती से ज़हर पी लेगा तो बीमार पड़ेगा या मरेगा. यह सज़ा ही हमें पाक करती है. एक बड़े दरजे तक यह भी सच है कि भगवान जिसे सब से अधिक प्यार करते हैं उसे ही सब से अधिक आज़माते हैं, परखते हैं, कष्ट दे देकर पाक करते हैं.

कुछ लोगों में यह एक आम बीमारी है कि अपना दोश दूसरों पर डालना चाहते हैं. कोई क़िस्मत या भाग्य को बुरा कहता है, कोई कहता है झगड़े की पहल दूसरे ने की थी, जंग की शुरूआत दूसरे देश की तरफ़ से हुई वग़ैरा वग़ैरा. पर जब आदमी समझने लगता है तो भलाई बुराई सब की जड़ अपने ही अन्दर देखता है. सब जीवन एक है, एक ही सूत्रात्मा सब को एक डोरे में पिरोए हुए है, सब जानदार एक दूसरे का दुख सुख अनुभव करते हैं, सब एक दूसरे के विचारों पर असर डालते हैं. क़ुदरत के किसी हिस्से में कोई हरकत हो सारी सृष्टि पर उसका असर पड़ता है.

पच्छिम के बड़े से बड़े साइन्सदां जीवन की इस एकता, इस अखंडता को मानते जा रहे हैं. सर जेम्स जीन्स ने इंगलैन्ड की 'ब्रिटिश एसोसिएशन फ़ार दी एडवान्समैन्ट आफ़ साइन्स' के सामने लेकचर देते हुए सन 1935 में कहा था—"जब हम अपने को देश और काल यानी मकान और ज़मान के अन्दर देखते हैं तो हम साफ़ अलग अलग प्रानी मालूम होते हैं, पर जब हम देश और काल को पार कर जाते हैं तो हम सब ज़िंदगी की एक लगातार बहती हुई धार में मिलकर एक हो जाते हैं." साइन्स के विद्वान यह भी मानते हैं कि जान और बेजान, जड़ और चेतन कोई अलग अलग वजूद नहीं हैं. सब एक लगातार बहता हुआ धारा है, यही वेदान्त है, यही तसव्वुफ़ है.

نیایہ‌دھیش سے ڈرنے کی ضرورت نہیں ہے . آتما ہی اصلی یم راج ہے ."

مہا بھارت ہی میں ایک دوسری جگہ لکھا ہے— " بڑے بڑے پنیہ اور بڑے بڑے پاپوں کا پھل آدمی کو یہیں اسی دنیا میں مل جاتا ہے . کوئی پھل سے بچ نہیں سکتا' کیونکہ پھل دینے والا انتر یامی یم سب کے دلوں کے اندر بیٹھا ہوا ہے ."

اچھے اور برے کاموں کے پھل سے نہ بچنے کا اصلی کارن یہی ہے کہ آدمی کسی بھی دوسرے سے تو بچ سکتا ہے پر اپنے دل اپنی آتما سے کیسے بچ سکتا ہے . اس طرح کی بحثیں جیسے جیو سوتنتر ہے یا پرتنتر' قدر ٹھیک ہے یا جبر' ایسے ہی ایشور دیالو ہے یا نیائی' رحیم ہے یا منصف اس طرح کی سب بحثیں کیول اس لئے ہوتی ہیں کہ ہم اس بات کو بھول جاتے ہیں کہ فیصلہ کرنے والا جج کہیں باہر نہیں بیٹھا' وہ ہمارے ہی اندر ہے. جو کوئی یہ سمجھتا ہے کہ وہ پاپ کرنے پر مجبور ہے تو وہ نتیجہ بھگتنے پر بھی مجبور ہوگا . معصوم بچہ بھی اگر غلطی سے زہر پی لے گا تو بیمار پڑے گا یا مرے گا . یہ سزا ہی ہمیں پاک کرتی ہے . ایک بڑے درجے تک یہ بھی سچ ہے کہ بھگوان جسے سب سے ادھک پیار کرتے ہیں اسے ہی سب سے ادھک آزماتے ہیں' پرکھتے ہیں' کشٹ دے دے کر پاک کرتے ہیں .

کچھ لوگوں میں یہ ایک عام بیماری ہے کہ اپنا دوش دوسروں پر ڈالنا چاہتے ہیں . کوئی قسمت یا بھاگ کو برا کہتا ہے' کوئی کہتا ہے جھگڑے کی پہل دوسرے نے کی تھی' جنگ کی شروعات دوسرے دیش کی طرف سے ہوئی وغیرہ وغیرہ . پر جب آدمی سمجھنے لگتا ہے تو بھلائی برائی سب کی جڑ اپنے ہی اندر دیکھتا ہے . سب جیون ایک ہے' ایک ہی سوتر آتما سب کو ایک ڈورے میں پروئے ہوئے ہے' سب جاندار ایک دوسرے کا دکھ سکھ انوبھو کرتے ہیں' سب ایک دوسرے کے وچاروں پر اثر ڈالتے ہیں. قدرت کے کسی حصے میں کوئی حرکت ہو ساری سرشٹی پر اس کا اثر پڑتا ہے .

پچھم کے بڑے سے بڑے سائنس داں جیون کی اس ایکتا' اس اکھنڈتا کو مانتے جا رہے ہیں . سر جیمس جینس نے انگلینڈ کی ' برٹش ایسوسی ایشن فار دی ایڈوانسمینٹ آف سائنس' کے سامنے لیکچر دیتے ہوئے سن 1935 میں کہا تھا—" جب ہم اپنے کو دیش اور کال یعنی مکان اور زمان کے اندر دیکھتے ہیں تو ہم صاف الگ الگ پرانی معلوم ہوتے ہیں' پر جب ہم دیش اور کال کو پار کر جاتے ہیں تو ہم سب زندگی کی ایک لگاتار بہتی ہوئی دھار میں مل کر ایک ہو جاتے ہیں." سائنس کے ودوان یہ بھی مانتے ہیں کہ جان اور بے جان' جڑ اور چیتن کوئی الگ الگ وجود نہیں ہیں. سب ایک لگاتار بہتا ہوا دھارا ہے' یہی ویدانت ہے' یہی تصوف ہے.

पारसी धर्म की किताबों में भी यही विचार बारबार ता है.

गाथा में लिखा है—"ऐ लोगो, अहुरमज़्द के बनाए र सुख और दुख के इन क़ानूनों को समझो. क़ानून यह कि जो बुराई करेगा वह तकलीफ़ उठायगा और जो नेकी ेगा वह सुख भोगेगा."

चीन के कन्फ़ूशियन मत की किताब में लिखा है—सुख और दुख लोगों पर यूं ही नहीं आ जाते. जैसा जो ता है वैसा उसे फल मिलता है. दूसरों की मिसाल का असर होता है. एक कुनबे के लोग दूसरे कुनबे से प्यार ते हों तो सारे देश में प्यार फैल सकता है. एक की नेकी सब में नेकी आती है. और एक की बुराई से सब में ाई और अबतरी फैल सकती है. इस तरह एक का दूसरों असर पड़ता है."

एक दूसरी चीनी धर्म पुस्तक कोआंगत्ज़े में लिखा —"जो लोग दिन दहाड़े बुराई करते हैं उन्हें लोग सज़ा हैं और जो छिप कर बुराई करते हैं उन्हें भगवान सज़ा हैं. जो दोनों तरह की बुराई से बचते हैं वही ठीक ल चलते हैं."

एक और चीनी किताब शूकिंग में लिखा है—"भगवान ों को आशीर्वाद देते हैं और बुरों को सज़ा देते हैं. की सज़ा देने की ग़रज़ भी यही होती है कि नेकी बढ़े सज़ा देना बन्द हो."

एक और चीनी किताब में लिखा है—"भलाई और का नतीजा ऐसे ही आदमी के पीछे पीछे आता है जैसे का साया."

बौद्ध ग्रन्थ महावग्ग में लिखा है—"जो कोई बुरी बात गा या बुराई करेगा उसके पीछे पीछे दुख इसी तरह गा जिस तरह बैलों के पीछे गाड़ी का पहिया."

इन्जील में लिखा है—"जो कोई ऊपर की तरफ़ पत्थर ता है वह उसी के सिर पर आ कर लगता है. जो कोई ा खोदेगा वह उसी में गिरेगा. जो दूसरे के लिये जाल यगा वह उसी में फंसेगा. जो दूसरे को नुक़सान चगा वह खुद नुक़सान उठायागा.

इसी तरह की बातें सब धर्म ग्रंथों में भरी पड़ी हैं.

महा भारत में एक जगह बहुत अच्छा लिखा है—"कुछ एक दूसरे के डर से पाप नहीं करते. कुछ लोग राजा ण्ड के डर से पाप नहीं करते. कुछ इस डर से पाप नहीं कि मरने के बाद यम राज उन्हें दण्ड देंगे. पर आदमी असली दण्ड देने या न देने वाला उसके अपने अन्दर आत्मा है. जिसकी अपनी आत्मा सन्तुष्ट है उसका कोई का कुछ नहीं बिगाड़ सकता. उसे किसी दूसरे जज या

پارسی دھرم کی کتابوں میں بھی یہی وچار بار بار آتا ہے۔

گاتھا میں لکھا ہے—" اے لوگو، اہرمزد کے بنائے ہوئے سکھ اور دکھ کے اِن قانونوں کو سمجھو۔ قانون یہ ہے کہ جو برائی کریگا وہ تکلیف اُٹھائے گا اور جو نیکی کرے گا وہ سکھ بھوگے گا۔"

چین کے کنفیوشین مت کی کتاب میں لکھا ہے— " سکھ اور دکھ لوگوں پر یوں ہی نہیں آ جاتے۔ جیسا جو کرتا ہے ویسا اُسے پھل ملتا ہے۔ دوسروں کی مثال کا بھی اثر ہوتا ہے۔ ایک کنبے کے لوگ دوسرے کنبے سے پیار کرتے ہوں تو سارے دیش میں پیار پھیل سکتا ہے۔ ایک کی نیکی سے سب میں نیکی آتی ہے۔ اور ایک کی برائی سے سب میں برائی اور ابتری پھیل سکتی ہے۔ اِس طرح ایک کا دوسروں پر اثر پڑتا ہے۔"

ایک دوسری چینی دھرم پستک کوآنگتزے میں لکھا ہے—" جو لوگ دن دھاڑے برائی کرتے ہیں انہیں لوگ سزا دیتے ہیں اور جو چھپ کر برائی کرتے ہیں انہیں بھگوان سزا دیتے ہیں۔ جو دونوں طرح کی برائی سے بچتے ہیں وہی ٹھیک چال چلتے ہیں۔"

ایک اور چینی کتاب شوکنگ میں لکھا ہے— "بھگوان نیکوں کو آشیرواد دیتے ہیں اور بروں کو سزا دیتے ہیں۔ اُن کی سزا دینے کی غرض بھی یہی ہوتی ہے کہ نیکی بڑھے اور سزا دینا بند ہو۔"

ایک اور چینی کتاب میں لکھا ہے—" بھلائی اور برائی کا نتیجہ ایسے ہی آدمی کے پیچھے پیچھے آتا ہے جیسے اس کا سایہ۔"

بودھ گرنتھ مہاوگ میں لکھا ہے—" جو کوئی بری بات کہے گا یا برائی کرے گا اس کے پیچھے پیچھے دکھ اسی طرح آئے گا جس طرح بیلوں کے پیچھے گاڑی کا پہیا۔"

اِنجیل میں لکھا ہے—" جو کوئی اوپر کی طرف پتھر پھینکتا ہے وہ اُسی کے سر پر آ کر لگتا ہے۔ جو کوئی گڑھا کھودے گا وہ اُسی میں گرے گا۔ جو دوسرے کے لئے جال بچھائے گا وہ اِسی میں پھنسے گا۔ جو دوسرے کو نقصان پہونچائے گا وہ خود نقصان اُٹھائے گا۔"

اِسی طرح کی باتیں سب دھرم گرنتھوں میں بھری پڑی ہیں۔

مہا بھارت میں ایک جگہ بہت اچھا لکھا ہے— "کچھ لوگ ایک دوسرے کے ڈر سے پاپ نہیں کرتے۔ کچھ لوگ راجا کے ڈنڈ کے ڈر سے پاپ نہیں کرتے۔ کچھ اس ڈر سے پاپ نہیں کرتے کہ مرنے کے بعد یم راج اُنہیں ڈنڈ دیں گے۔ پر آدمی کا اصلی ڈنڈ دینے یا نہ دینے والا اس کے اپنے اندر کی آتما ہے۔ جس کی اپنی آتما سنتشٹ ہے اس کا کوئی یم راج کچھ نہیں بگاڑ سکتا۔ اُسے کسی دوسرے جج یا

चूं उज़वे बदर्द आवरद रोज़गार
दिगर उज़वहारा न मानद क़रार

यानी आदमी की औलाद जितने हैं सब एक दूसरे के हाथ पांव हैं क्योंकि सब एक ही जौहर यानी असल से निकले हैं. अगर बदन के किसी एक हिस्से में दर्द हो तो दूसरे हिस्से भी आराम से नहीं रह सकते.

वेद में लिखा है:—

सहस्र शीर्षः पुरुषः, सहस्राक्षः सहस्रपात.

यानी उस भगवान के हज़ारों सिर हैं, हज़ारों आंखें हैं, हज़ारों पैर हैं. इसका भी वही मतलब है जो शेख़ सादी का यानी यह कि सब अनगिनत सिरों, आंखों और पैरों में उसी एक अल्लाह का नूर काम कर रहा है, सब रूप उसी के रूप हैं और सब मिला कर एक जिस्म हैं.

इंजील में लिखा है—"जिस्म के एक अंग को तकलीफ़ होती है तो सब अंगों को तकलीफ़ होती है, एक को सुख पहुंचता है तो सब को सुख पहुंचता है."

गरुड़ पुरान में लिखा है—"सुख और दुख हमें कोई बाहर से नहीं पहुंचाता, जो लोग समझते हैं कि कोई दूसरा उन्हें सुख दुख पहुंचाता है वह ग़लत समझते हैं. हम ख़ुद अपने कर्मों का फल भोगते हैं इसलिये जो बुराई हमने की है उसके लिये हमें ख़ुद अपने को ठीक करना चाहिये."

इंजील में लिखा है—"अफ़सोस है उन लोगों पर जो बुराई को भलाई और भलाई को बुराई कहते हैं......हमें धोके में नहीं रहना चाहिये. भगवान को कोई धोका नहीं दे सकता. जैसा कोई बोता है वैसा ही उसे काटना पड़ता है. जो बुराई बोएंगे वह बुराई काटेंगे जो नेकी बोएंगे वह नेकी काटेंगे. कांटे की झाड़ियों से कोई अंगूर की फ़सल नहीं ले सकता और न कांस से अन्जीर लिये जा सकते हैं. भगवान सब को उनके कर्मों का फल देते हैं. जिस नाप से तुम दूसरे को नाप कर दोगे उसी नाप से तुम्हें नप कर मिलेगा. जैसा कोई करेगा वैसा पाएगा. अल्लाह रहम करने वाला है. वह हर एक को उसके कामों का फल देता है."

क़ुरान में लिखा है—"जो कोई मुसीबत किसी पर आती है वह उसी के किये का नतीजा होती है. जो कोई एक रत्ती भर भी नेकी करेगा वह उसका उतना ही फल पायेगा और जो एक रत्ती भर भी बुराई करेगा वह उसका उतना ही नतीजा भुगतेगा. किसी के साथ ज़रा सी भी बेइन्साफ़ी नहीं होती. जो जैसा करता है वैसा ही पाता है."

दुनिया की सब मज़हबी किताबों में यही विचार बार बार और तरह तरह से दोहराया गया है.

महाभारत में लिखा है—"जिसका दिल का हिसाब साफ़ है उसे कुरुक्षेत्र या गंगा जाने की कोई ज़रूरत नहीं."

چوں از وے بدرد آورد روزگار
دیگر عضوہارا نہ ماند قرار

یعنی آدمی کی اولاد جتنے ہیں سب ایک دوسرے کے ہاتھ پاؤں ہیں کیونکہ سب ایک ہی جوہر یعنی اصل سے نکلے ہیں ۔ اگر بدن کے کسی ایک حصے میں درد ہو تو دوسرے حصے بھی آرام سے نہیں رہ سکتے ۔

وید میں لکھا ہے :—

سہسٹر شیرشا پرشہ' سہسٹراکشہ سہسٹرپات ۔

یعنی اُس بھگوان کے ہزاروں سر ہیں' ہزاروں آنکھیں ہیں' ہزاروں پیر ہیں ۔ اِس کا بھی وہی مطلب ہے جو شیخ سعدی کا یعنی یہ کہ سب اَن‌گنت سروں' آنکھوں اور پیروں میں اُسی ایک اللہ کا نور کام کر رہا ہے' سب روپ اُسی کے روپ ہیں اور سب مل کر ایک جسم ہیں ۔

انجیل میں لکھا ہے—" جسم کے ایک انگ کو تکلیف ہوتی ہے تو سب انگوں کو تکلیف ہوتی ہے' ایک کو سکھ پہونچتا ہے تو سب کو سکھ پہونچتا ہے ۔"

گرڑ پران میں لکھا ہے—" سکھ اور دکھ ہمیں کوئی باہر سے نہیں پہونچاتا' جو لوگ سمجھتے ہیں کہ کوئی دوسرا اُنہیں سکھ دکھ پہونچاتا ہے وہ غلط سمجھتے ہیں. ہم خود اپنے کرموں کا پھل بھوگتے ہیں اس لئے جو برائی ہم نے کی ہے اس کے لئے ہمیں خود اپنے کو ٹھیک کرنا چاہئے ۔"

انجیل میں لکھا ہے—"افسوس ہے اُن لوگوں پر جو برائی کو بھلائی اور بھلائی کو برائی کہتے ہیں...... ہمیں دھوکے میں نہیں رہنا چاہئے ۔ بھگوان کو کوئی دھوکا نہیں دے سکتا ۔ جیسا کوئی بوتا ہے ویسا ہی اُسے کاٹنا پڑتا ہے ۔ جو برائی بوئیں گے وہ برائی کاٹیں گے جو نیکی بوئیں گے وہ نیکی کاٹیں گے ۔ کانٹے کی جھاڑیوں سے کوئی انگور کی فصل نہیں لے سکتا اور نہ کانس سے انجیر لئے جاسکتے ہیں ۔ بھگوان سب کو ان کے کرموں کا پھل دیتے ہیں ۔ جس ناپ سے تم دوسرے کو ناپ کر دو گے اُسی ناپ سے تمہیں نپ کر ملیگا ۔ جیسا کوئی کرے گا ویسا پائے گا ۔ اللہ رحم کرنے والا ہے ۔ وہ ہر ایک کو اُس کے کاموں کا پھل دیتا ہے ۔"

قرآن میں لکھا ہے—" جو کوئی مصیبت کسی پر آتی ہے وہ اُسی کے کئے کا نتیجہ ہوتی ہے ۔ جو کوئی ایک رتی بھر بھی نیکی کرے گا وہ اس کا اتنا ہی پھل پائے گا اور جو ایک رتی بھر بھی برائی کرے گا وہ اُس کا اتنا ہی نتیجہ بھگتے گا ۔ کسی کے ساتھ ذرا سی بھی بے انصافی نہیں ہوتی. جو جیسا کرتا ہے ویسا ہی پاتا ہے ۔"

دنیا کی سب مذہبی کتابوں میں یہی وچار بار بار اور طرح طرح سے دہرایا گیا ہے ۔

مہا بھارت میں لکھا ہے—" جس کا دل کا حساب صاف ہے اُسے کوروکشیتر یا گنگا جانے کی کوئی ضرورت نہیں۔"

इनमें बहुत से फ़िरक़े यह मानते हैं कि बुरे आदमी फिर से जानवरों के रूप में पैदा होते हैं. कुछ ऐसे हैं जो रूह का बार बार आदमी के जिस्म में पैदा होना तो मानते हैं पर जानवर के जिस्म में पैदा होना नहीं मानते. कुछ यह मानते हैं कि जो लोग उनके फ़िरक़े में रह कर गुनाह करते हैं वह फिर दूसरे मज़हबों में जन्म लेते हैं. कुछ मानते हैं कि जो लोग दीन से बिलकुल इनकार करते हैं वह ऊंट, खच्चर, गधों, कुत्तों या बन्दरों के रूप में जन्म लेते हैं वग़ैरा वग़ैरा.. इसी तरह के फ़र्क़ और मज़हबों के लोगों के विचारों में भी हैं. बहुत से लोग तनासुख से इनकार भी करते हैं. ख़ास कर इसलाम और ईसाई मज़हबों में आजकल अधिकतर तनासुख से इनकार करते हैं. इस सम्बन्ध की क़ुरान की कुछ आयतों और कुछ मुसलमान आलिमों के क़ौलों के कुछ लोग एक तरह से मानी करते हैं और दूसरे दूसरी तरह से. पर किसी न किसी दर्जे तक किसी न किसी शकल में तनासुख या पुनर्जन्म के मानने वाले हर मज़हब, और हर मुल्क के अन्दर रहे हैं और हैं.

(2)

अब हम कर्मों के फल के असूल की तरफ़ आते हैं.

यह बात भी सब मज़हबों में पाई जाती है कि हर आदमी को अपने अच्छे कामों के लिये अच्छा फल मिलता और बुरे कामों के लिये वैसा ही बुरा नतीजा भोगना पड़ता है. यह फल या नतीजा इस जन्म में मिले या किसी अगले जन्म में, इस दुनिया में, या किसी और दुनिया में, जल्दी मिले या देर में, इतनी बात सब मानते हैं कि जैसा हम बोते हैं वैसा हमें काटना पड़ता है. इसी को हिन्दुओं में 'कर्म का असूल' कहा जाता है. इसी असूल को साइन्स दूसरी तरह बयान करती है. हर सबब का कोई न कोई नतीजा ज़रूर होता है और हर अमल (क्रिया) का रद्दे अमल (प्रतिक्रिया) ज़रूरी है. रूह की दुनिया में यह असूल अन्दर ही अन्दर काम करता रहता है. सब के अन्दर एक आत्मा काम कर रही है. इसलिये जो दूसरे को दुख देगा वह कभी न कभी ख़ुद दुख भोगेगा और जो किसी दूसरे को सुख पहुंचायगा वह कभी न कभी ख़ुद सुख भोगेगा. यह बात इसलिये भी क़तई ज़रूरी है कि एक ही रूहे आलम, रूहे आज़म या रूहुलरूह यानी एक ही विश्व आत्मा, सूत्रआत्मा या जगत आत्मा सबके अन्दर मौजूद है, और सबको एक डोर में बांधे हुए है. हाथ अगर पांव को तकलीफ़ पहुंचायगा तो हाथ को भी तकलीफ़ होगी.

शेख़ सादी ने बहुत ठीक कहा है:—

बनी आदम आज़ाए यक दीगर अन्द
कि दर आफ़रीनश ज़ि यक जौहर अन्द

ان میں بہت سے فرقے یہ مانتے ہیں کہ برے آدمی پھر سے جانوروں کے روپ میں پیدا ہوتے ہیں . کچھ ایسے ہیں جو روح کا بار بار آدمی کے جسم میں پیدا ہونا تو مانتے ہیں پر جانور کے جسم میں پیدا ہونا نہیں مانتے . کچھ یہ مانتے ہیں کہ جو لوگ اُن کے فرقے میں رہ کر گناہ کرتے ہیں وہ پھر دوسرے مذہبوں میں جنم لیتے ہیں . کچھ مانتے ہیں کہ جو لوگ دین سے بالکل انکار کرتے ہیں وہ اونٹ' کھچر' گدھوں' کتوں یا بندروں کے روپ میں جنم لیتے ہیں وغیرہ وغیرہ . اِسی طرح کے فرق اور مذہبوں کے لوگوں کے وچاروں میں بھی ہیں . بہت سے لوگ تناسخ سے انکار بھی کرتے ہیں . خاص کر اسلام اور عیسائی مذہبوں میں آج کل ادھک تر تناسخ سے انکار کرتے ہیں . اس سمبندھ کی قرآن کی کچھ آیتوں اور کچھ مسلمان عالموں کے قولوں کے کچھ لوگ ایک طرح سے معنی کرتے ہیں اور دوسرے دوسری طرح سے . پر کسی نہ کسی درجے تک کسی نہ کسی شکل میں تناسخ یا پنر جنم کے ماننے والے ہر مذہب اور ہر ملک کے اندر رہے ہیں اور ہیں .

(2)

اب ہم کرموں کے پھل کے اصول کی طرف آتے ہیں .

یہ بات بھی سب مذہبوں میں پائی جاتی ہے کہ ہر آدمی کو اپنے اچھے کاموں کے لئے اچھا پھل ملتا ہے اور برے کاموں کے لئے ویسا ہی برا نتیجہ بھوگنا پڑتا ہے . یہ پھل یا نتیجہ اس جنم میں ملے یا کسی اگلے جنم میں' اس دنیا میں یا کسی اور دنیا میں' جلدی ملے یا دیر میں' اتنی بات سب مانتے ہیں کہ جیسا ہم بوتے ہیں ویسا ہمیں کاٹنا پڑتا ہے . اسی کو ہندوؤں میں 'کرم کا اصول' کہا جاتا ہے . اسی اصول کو سائنس دوسری طرح بیان کرتی ہے . ہر سبب کا کوئی نہ کوئی نتیجہ ضرور ہوتا ہے اور ہر عمل (کریا) کا ردعمل (پرتی کریا) ضروری ہے . روح کی دنیا میں یہ اصول اندر ہی اندر کام کرتا رہتا ہے . سب کے اندر ایک ہی آتما کام کر رہی ہے . اس لئے جو دوسرے کو دکھ دے گا وہ کبھی نہ کبھی خود دکھ بھوگے گا اور جو کسی دوسرے کو سکھ پہونچائے گا وہ کبھی نہ کبھی خود سکھ بھوگے گا . یہ بات اِس بھی قطعی ضروری ہے کہ ایک ہی روح عالم' روح اعظم یا روح الروح یعنی ایک ہی وشو آتما' سوتر آتما یا جگت آتما سب کے اندر موجود ہے' اور سب کو ایک ڈور میں باندھے ہوئے ہے. ہاتھ اگر پاؤں کو تکلیف پہونچائے گا تو ہاتھ کو بھی تکلیف ہوگی .

شیخ سعدی نے بہت ٹھیک کہا ہے :—

بنی آدم اعضائے یک دیگر اند
کہ در آفرینش یک جوہر اند

क़बीले का ख़ुदा समझते हैं. लेकिन समझदार आदमी जानते हैं कि 'इतोंगगो' ही सबके अन्दर की जान है, सब प्राणियों और सब चीज़ों में है, और उसी के नाते से धरती के सब आदमी भाई भाई हैं.' मनकन येफी के यह विचार सब ज़मानों और सब देशों के लोगों के बुनियादी विचारों से मिलते हुए हैं. अफ़रीका में पुरानी क़ौमों के अन्दर इस तरह के काफ़ी सियाने मिलते हैं. मैं बहुत सी अफ़रीक़ी क़ौमों के इस तरह के सियानों से मिला. मैंने उनमें से कुछ में सैकड़ों मील दूर की चीज़ें देख लेने और अपने विचार केवल अपनी दिमाग़ी ताक़त से सैकड़ों मील दूर दूसरों तक पहुँचा देने की शक्ति भी देखी. इनमें से एक सियाने ने मुझे अच्छी तरह समझाया कि किस तरह रूह धीरे धीरे पत्थर मिट्टी से निकल कर सबज़ी में जाती है, फिर सबज़ी से निकर कर जानवरों में जाती है, जानवरों से आदमी में और इसी तरह ऊपर चढ़ते चढ़ते वह इतोंगगो यानी रूहे कुल में जा कर मिल जाती है. उसने मुझे पुनर्जन्म का असूल भी समझाया और आदमी के तरह तरह के जिस्मों का फ़रक़ भी बताया."

पैट्रिक बोविन ने और आगे चल कर लिखा है कि—"अफ़रीक़ा के पुराने लोगों में एक बिरादरी है जो 'बोना—काकूलू अबासे खेमू' कहलाती है. इस फ़िक़रे के मानी हैं—'मिस्र के ऊंचे लोगों की बिरादरी.' मिस्र यानी इजिप्ट का एक पुराना नाम 'खेम' भी है. इसी खेम से अंगरेज़ी लफ़्ज़ 'कैमिस्टरी' बना है, चूंकि कैमिस्टरी या कीमिया की साइन्स सब से पहले मिस्र ही से शुरू हुई थी. इस बिरादरी के लोग मानते हैं कि आदमी जब पूरा ज्ञानी हो जाता है तो फिर उसे जन्म लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती. लेकिन फिर भी अगर वह चाहे तो अपनी मरज़ी से जन्म ले सकता है और धरती पर रह सकता है."

यह सब कहानी हमने केवल यह दिखाने को लिखी है कि दुनिया की लगभग सब क़ौमों में इस बारे में शुरू से एक से विचार रहे हैं.

अंगरेज़ी की मशहूर किताब 'The Encyclopedia of Reigions and Ethics' में पुनर्जन्म पर एक लम्बा लेख है जो एक मामूली किताब के अस्सी सफ़ों के बराबर है. उसमें दिखाया गया है कि सब अधिक पुरानी क़ौमों के अलावा हिन्दुस्तानियों, ईरानियों, ज़रथुस्त्रियों, मिस्रियों, यहूदियों, यूनानियों, रोमियों, कैलटिक और ट्यूटोनिक क़ौमों सबने पुनर्जन्म को माना है.

दूसरी मशहूर किताब 'The Encyclopedia of Islam' में तनासुख़ पर एक बड़ा लेख है जिस में बताया गया है कि इसलाम के बहुत से फ़िरक़े तनासुख़ को मानते हैं. ख़ास कर शियों में इस तरह के कई फ़िरक़े हैं.

قبیلے کا خدا سمجھتے ھیں لیکن سمجھدار آدمی جانتے ھیں کہ 'اِتوں‌گگو' ھی سب کے اندر کی جان ھے' سب پرانیوں اور سب چیزوں میں ھے' اور اُسی کے ناتے سے دھرتی کے سب آدمی بھائی بھائی ھیں ۔ من‌کن‌ایفی کے یہ وچار سب زمانوں اور سب دیشوں کے لوگوں کے بنیادی وچاروں سے ملتے ھوئے ھیں ۔ افریقہ میں پرانی قوموں کے اندر اس طرح کے کافی سیانے ملتے ھیں ۔ میں بہت سی افریقی قوموں کے اس طرح کے سیانوں سے ملا ۔ میں نے ان میں سے کچھ میں سیکڑوں میل دور کی چیزیں دیکھ لینے اور اپنے وچار کیول اپنی دماغی طاقت سے سیکڑوں میل دور دوسروں تک پہنچا دینے کی شکتی بھی دیکھی. اِن میں سے ایک سیانے نے مجھے اچھی طرح سمجھایا کہ کس طرح روح دھیرے دھیرے پتھر مٹی سے نکل کر سبزی میں جاتی ھے' پھر سبزی سے نکل کر جانوروں میں جاتی ھے' جانوروں سے آدمی میں اور اِسی طرح اوپر چڑھتے چڑھتے وہ اِتوں‌گگو یعنی روح کل میں جاکر مل جاتی ھے ۔ اس نے مجھے پنرجنم کا اُصول بھی سمجھایا اور آدمی کے طرح طرح کے جسموں کا فرق بھی بتایا."

پیٹرک‌بووِن نے اور آگے چل‌کر لکھا ھے کہ—" افریقہ کے پرانے لوگوں میں ایک برادری ھے جو 'بونا باکولواباسے کھیمو' کہلاتی ھے ۔ اس فقرے کے معنی ھیں—'مصر کے اونچے لوگوں کی برادری.' مصر یعنی ایجپٹ کا ایک پرانا نام' 'کھیم' بھی‌ھے. اسی کھیم سے انگریزی لفظ 'کیمسٹری' بنا ھے' چونکہ کیمسٹری یا کیمیاکی سائنس سب سے پہلے مصر ھی سے شروع ھوئی تھی ۔ اس برادری کے لوگ مانتے ھیں کہ آدمی جب پورا گیانی‌ھو جاتاھے تو پھر اسے جنم لینے کی ضرورت نہیں‌پڑتی. لیکن‌پھربھی‌اگر وہ چاھے تو اپنی مرضی سے جنم لے سکتا ھے اور دھرتی‌پر رہ سکتاھے."

یہ سب کہانی ھم نے کیول یہ دکھانے کو لکھی ھے کہ دنیا کی لگ بھگ سب قوموں میں اس بارے میں شروع سے ایک سے وچار رھے ھیں ۔

انگریزی کی مشہور کتاب 'The Encyclopedia of Religions And Ethics' میں پنرجنم پر ایک لمبا لیکھ ھے جو ایک معمولی کتاب کے اسی صفحوں کے برابر ھے. اس میں دکھایا گیا ھے کہ سب آدھک پرانی قوموں کے علاوہ ھندستانیوں' ایرانیوں' جرتھسترییوں' مصریوں' یہودیوں' یونانیوں' رومیوں' کیلٹک اور ٹیوٹونک قوموں سب نے پنرجنم کو مانا ھے ۔

دوسری مشہور کتاب 'The Encyclopedia of Islam' میں تناسخ پر ایک بڑا لیکھ ھے جس میں بتایا گیا ھے کہ اسلام کے بہت سے فرقے تناسخ کو مانتے ھیں ۔ خاص کر شیعوں میں اس طرح کے کئی فرقے ھیں.

सज़ा भुगतती हैं. थोड़े दिनों बाद वह फिर नया जन्म लेने के लिये भेजी जाती हैं. अच्छी रूहें अच्छे जिस्मों में और बुरी रूहें बुरे जिस्मों में. पर जो लोग अपनी आत्मा का ख़ून करते हैं उनकी रूहें पाताल की अन्धेरी दुनिया में भेजी जाती हैं."

जोज़ेफ़स का आख़िरी फ़िक़रा ईशोपनिशद के इस फ़िक़रे से लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ मिलता है—"अन्धं तमः प्रविशन्ति ये के चात्म हनो जनाः"—यानी जो लोग आत्म हत्या करते हैं वह घोर अन्धकार में जाते हैं.

इतिहास लेखक गिबन ने अपनी मशहूर किताब 'Decline and Fall of the Roman Empire' में लिखा है कि हज़रत ईसा के चेले पुनर्जन्म को मानते थे. मशहूर ईसाई आचारियों में आरीगन, क्लीमैन्स एलेग्ज़ैन्ड्रिनस, सिनेसियस, चैलसीडियस जैसे बहुत से विद्वान पुनर्जन्म के असूल को मानते थे.

बाद के योरप के मशहूर विद्वानों और फ़िलासफ़रों में गिआरडानों ब्रूनो, वान हैलमान्ट, स्वीडिनबर्ग, गेटे, लैसिंग, चार्ल्स बौनेट, हरडर, ह्यूम, शौपनहायर जैसे बड़े बड़े विचारक पुनर्जन्म के मानने वाले थे.

अब हम ज़रा अफ़रीक़ा की पुरानी क़ौमों की तरफ़ निगाह डालें. पैट्रिक बौविन 'The Ancient Wisdom in Africa' में लिखता है—"जब मेरी उम्र दस बारह बरस की थी तो मैं उत्तर ट्रान्सवाल के जंगली इलाक़ों में अपने बाप की गाड़ी के पीछे पीछे जाया करता था. इस तरह ज़ूलू क़ौम के बहुत से सियाने लोगों से मेरी जान पहचान हो गई. उनमें से एक का नाम मनकन येग्री था. मनकन येग्री ने एक दिन मुझे समझाया कि इस जिस्म के अन्दर एक रूह है और रूह के अन्दर 'इलोंगगो' यानी विश्वात्मा या रूहे कुल का एक अंश या उसकी एक चिंगारी रहती है. मरने के बाद रूह कुछ देर जिस्म के आस पास मंडलाती रहती है. फिर किसी दूसरी दुनिया में चली जाती है. वहां उसकी शकल आधी जानवर की सी और आधी आदमी की सी हो जाती है. यही आदमी का असली रूप है क्योंकि आदमी के अन्दर जानवर का स्वाभाव भी मौजूद है और विश्व आत्मा की छोटी सी चिंगारी भी मौजूद है. फिर कुछ दिनों के बाद रूह के ऊपर एक तरह की नींद छा जाती है. इसके बाद उसे यह सपना सा होने लगता है कि उसे धरती पर फिर जन्म लेकर अभी कुछ करना है और सीखना है. फिर वह रूह धरती पर आती है और बच्चे के रूप में जन्म लेती है. इस तरह हर रूह बार बार जन्म लेती रहती है यहां तक कि आख़ीर में आदमी 'सच्चा आदमी' बन जाता है और उसी 'इलोंगगो' यानी विश्व आत्मा में जा कर मिल जाता है जिससे वह निकला था. मामूली लोग 'इलोंगगो' को अपने अपने

سزا بھگتتی ہیں ۔ تھوڑے دنوں بعد وہ پھر نیا جنم لینے کے لئے بھیجی جاتی ہیں ۔ اچھی روحیں اچھے جسموں میں اور بری روحیں برے جسموں میں ۔ پر جو لوگ اپنی آتما کا خون کرتے ہیں ان کی روحیں پاتال کی اندھیری دنیا میں بھیجی جاتی ہیں ۔"

جوزیفس کا آخری فقرہ ایشو اپنشد کے اس فقرے سے لفظ با لفظ ملتا ہے—"اندھم تمہ پروشنتی یے کے چاتم ھنو جنا"—یعنی جو لوگ آتم ہتیا کرتے ہیں وہ گھور اندھکار میں جاتے ہیں ۔

اتہاس لیکھک گبن نے اپنی مشہور کتاب 'Decline and Fall of the Roman Empire' میں لکھا ہے کہ حضرت عیسیٰ کے چیلے پنرجنم کو مانتے تھے ۔ مشہور عیسائی آچاریوں میں آری گن' کلی منس ایلگزینڈرنس' سی نے سی ایس' چیل سیڈی ایس جیسے بہت سے ودوان پنرجنم کے اصول کو مانتے تھے ۔

بعد کے یورپ کے مشہور ودوانوں اور فلاسفروں میں گی آرڈانو برونو' وان ہیلمانٹ' سویڈن برگ' گیٹے' لیسنگ' چارلس بونیٹ' ہرڈر' ھیوم' شوپن ہایر جیسے بڑے بڑے وچارک پنرجنم کے ماننے والے تھے ۔

اب ہم ذرا افریقہ کی پرانی قوموں کی طرف نگاہ ڈالیں ۔ پیٹرک بووِن 'The Ancient wsidom in Africa' میں لکھتا ہے—"جب میری عمر دس بارہ برس کی تھی تو میں اُتر ٹرانسوال کے جنگلی علاقوں میں اپنے باپ کی گاڑی کے پیچھے پیچھے جایا کرتا تھا ۔ اس طرح زولو قوم کے بہت سے سیانے لوگوں سے میری جان پہچان ہوگئی ۔ ان میں سے ایک کا نام من کن ایزی تھا من کن ایزی نے ایک دن مجھے سمجھایا کہ اس جسم کے اندر ایک روح ہے اور روح کے اندر 'الون گگو' یعنی وشوآتما یا روح کل کا ایک انش یا اس کی ایک چنگاری رہتی ہے ۔ مرنے کے بعد روح کچھ دیر جسم کے آس پاس منڈلاتی رہتی ہے ۔ پھر کسی دوسری دنیا میں چلی جاتی ہے ۔ وہاں اس کی شکل آدھی جانور کی سی اور آدھی آدمی کی سی ہو جاتی ہے ۔ یہی آدمی کا اصلی روپ ہے کیوں کہ آدمی کے اندر جانور کا سو بھاؤ بھی موجود ہے اور وشوآتما کی چھوٹی سی چنگاری بھی موجود ہے ۔ پھر کچھ دنوں کے بعد روح کے اوپر ایک طرح کی نیند چھا جاتی ہے ۔ اس کے بعد اسے یہ سپنا سا ہونے لگتا ہے کہ اسے پھر دھرتی پر پھر جنم لے کر ابھی کچھ کرنا ہے اور سیکھنا ہے ۔ پھر وہ روح دھرتی پر آتی ہے اور بچے کے روپ میں جنم لیتی ہے ۔ اس طرح ہر روح بار بار جنم لیتی رہتی ہے یہاں تک کہ آخیر میں آدمی 'سچا آدمی' بن جاتا ہے اور اسی 'الون گگو' یعنی وشوآتما میں جا کر مل جاتا ہے جس سے وہ نکلا تھا ۔ معمولی لوگ 'الون گگو' کو اپنے اپنے

पुनर्जन्म (तनासुख़) और कर्म फल

(डाक्टर भगवानदास)

(1)

पिछले लेखों में हम आत्मा (रूह) और पुनर्जन्म की बाबत कुछ विचार प्रगट कर चुके हैं, इस लेख में भी पहले हम पुनर्जन्म ही के बारे में कुछ और कहना चाहते हैं.

योरप के कुछ विद्वानों का ख़याल है कि पुनर्जन्म का विश्वास पुराने मिस्रियों से शुरू हुआ. कुछ लोग इस विश्वास को यूनान के मशहूर फ़िलासफ़र पाईथा गोरस और हिन्दुस्तान के महात्मा बुद्ध से भी जोड़ते हैं. पर सच यह है कि यह विश्वास इन सब से बहुत पुराना है, और दुनिया के लगभग हर मुल्क में कुछ न कुछ लोगों ने हमेशा से इसे माना है. यूनान में पाईथा गोरस से बहुत पहले लोग पुनर्जन्म के मानने वाले थे. पाईथा गोरस ने भी इस असूल को माना और इसे इतनी सुन्दरता के साथ दुनिया के सामने रखा कि यह असूल उसी के नाम के साथ जुड़ गया. अफ़लातून (Plato) भी पुनर्जन्म के असूल को मानता था. उसने भी अपनी किताबों में इसे ख़ूब समझा कर बयान किया है. यूनानी विद्वानों और कैलडिया की पुरानी फ़िलासफ़ी के असर से यहूदियों ने भी पुनर्जन्म के असूल को माना. यहूदी किताबें पुनर्जन्म के विश्वास से भरी पड़ी हैं. यहूदी भाशा में पुनर्जन्म या तनासुख़ को 'गिल गूलिम' कहते थे. यहूदी परम्परा 'क़ब्बालह' में भी इस असूल को माना गया है. उनकी किताब 'ज़ोहर' में साफ़ लिखा है कि "सब रूहों को बार बार जन्म लेना पड़ता है." इस बारे में क़ब्बालह के विचार वेदान्त के विचारों और मुसलमान सूफ़ियों के विचारों से बिलकुल मिलते हुए हैं.

ईसाई मज़हब की शुरू की सदियों में ग्नास्टिक सम्प्रदाय के लोग जिन्हें सब इतिहासकार एक राय से विद्वान, समझदार और नेक बताते हैं पुनर्जन्म को पूरी तरह मानते थे. 'ग्नास्टिक' शब्द का निकास उसी जड़ से है जिससे संस्कृत शब्द 'ज्ञान' का. ईसा की चौथी और पांचवीं सदियों में मनीशियन फ़िरक़े के लोग भी पुनर्जन्म को मानते थे. ईसा की दूसरी सदी में ईसाई धर्म का मशहूर विद्वान ऐरीगन साफ़ लिखता है कि—"बार बार जन्म लेने पर फ़रिश्ते आदमी बन सकते हैं और आदमी फ़रिश्ते. और बुरे से बुरे लोग भी तरक़्क़ी करते करते अच्छे आदमी या फ़रिश्ते बन जाते हैं." ईसाई विद्वान जोज़ेफ़स लिखता है—"रूहें सब शुद्ध होती हैं, नेक आदमियों की रूहें फिर फिर अच्छे जिस्मों में जाती हैं. बुरे आदमियों की रूहें

پنرجنم (تناسخ) اور کرم پھل

(ڈاکٹر بھگوان داس)

پچھلے لیکھوں میں ہم آتما (روح) اور پنرجنم کی بابت کچھ وچار پرگٹ کرچکے ہیں' اس لیکھ میں بھی پہلے ہم پنرجنم ہی کے بارے میں کچھ اور کہنا چاہتے ہیں .

یورپ کے کچھ ودوانوں کا خیال ہے کہ پنرجنم کاوشواس پرانے مصریوں سے شروع ہوا . کچھ لوگ اس وشواس کو یونان کے مشہور فلاسفر پایتھا گورس اور ہندستان کے مہاتما بدھ سے بھی جوڑتے ہیں . پر سچ یہ ہے کہ یہ وشواس ان سب سے بہت پرانا ہے' اور دنیا کے لگ بھگ ہر ملک میں کچھ نہ کچھ لوگوں نے ہمیشہ سے اسے مانا ہے. یونان میں پایتھا گورس سے بہت پہلے لوگ پنرجنم کے ماننے والے تھے . پایتھا گورس نے بھی اس اصول کو مانا اور اسے اتنی سندرتا کے ساتھ دنیا کے سامنے رکھا کہ یہ اصول اسی کے نام کے ساتھ جڑ گیا. افلاطون (Plato) بھی پنرجنم کے اصول کو مانتا تھا . اس نے بھی اپنی کتابوں میں اِسے خوب سمجھاکر بیان کیاہے. یونانی ودوانوں اور کیلڈیا کی پرانی فلسفی کے اثر سے یہودیوں نے بھی پنرجنم کے اصول کو مانا . یہودی کتابیں پنرجنم کے وشواس سے بھری پڑی ہیں . یہودی بھاشا میں پنرجنم یا تناسخ کو 'گلگولم' کہتے تھے. یہودی پرمپرا 'قبالہ' میں بھی اس اصول کو مانا گیا ہے . ان کی کتاب 'زوہر' میں صاف لکھا ہے کہ "سب روحوں کو بار بار جنم لینا پڑتا ہے." اس بارے میں "قبالہ" کے وچار ویدانت کے وچاروں اور مسلمان صوفیوں کے وچاروں سے بالکل ملتے ہوئے ہیں .

عیسائی مذہب کی شروع کی صدیوں میں گناسٹک سمپردائے کے لوگ جنہیں سب اتہاس کار ایک رائے سے ودوان' سمجھدار اور نیک بتاتے ہیں پنرجنم کو پوری طرح مانتے تھے. 'گناسٹک' شبد کا نکاس اسی جڑ سے ہے جس سے سنسکرت شبد 'گیان' کا. عیسیٰ کی چوتھی اور پانچویں صدیوں میں منی شی ان فرقے کے لوگ بھی پنرجنم کو مانتے تھے . عیسیٰ کی دوسری صدی میں عیسائی دھرم کا مشہور ودوان اریگن صاف لکھتا ہے کہ—"بار بار جنم لینے پر فرشتے آدمی بن سکتے ہیں اور آدمی فرشتے . اور برے سے برے لوگ بھی ترقی کرتے کرتے اچھے آدمی یا فرشتے بن جاتے ہیں." عیسائی ودوان جوزیفس لکھتا ہے—"روحیں سب شدھ ہوتی ہیں' نیک آدمیوں کی روحیں پھر پھر اچھے جسموں میں جاتی ہیں. برے آدمیوں کی روحیں

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 13 | अक्तूबर, सन '52 | नम्बर 4

جلد 13 | اکتوبر' سن '52 | نمبر 4

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

क़ैदी का सपना

(पिरिंसिपल 'मनोरंजन')

एक दिन मैंने देखा था, सुन्दर सोने सा-सपना
कि यह ज़मीन अपनी है, और आसमान है अपना

आज़ाद प्रकृति करती है, सानंद नृत्य मस्ताना,
चल-अचल सभी गाते हैं, बस आज़ादी का गाना

मस्ती से शीश उठा कर, हंसता है वृद्ध हिमालय,
सागर स्वतंत्र हो गाता, हो भारत माता की जय!

नदियां इठला-इठला कर, गाती हैं दे कर ताली,
चलते हैं शीश उठा कर, भारत के सब नर-नारी!

सब में अजीब मस्ती है, सब हैं स्वतंत्र, हैं निर्भय
मैं बोल उठा पागल-सा, 'जय भारत माता की जय'!

खुल गईं अचानक आंखें, कुछ होश हमें हो आया
तब ज़ंजीरों से जकड़ा, मैंने अपने को पाया

थी पड़ी पांव में बेड़ी, हाथों में थीं हथकड़ियां
हा! कहां गईं सपने की वह सोने की सी घड़ियां

मिट गए दृश्य वह सारे, हा! रहा न कुछ भी अपना
हे ईश, कभी सच होगा, क्या मेरा वह सुख सपना

قیدی کا سپنا

(پرنسپل 'منورنجن')

ایک دن میں نے دیکھا تھا' سندر سونے سا سپنا
کہ یہ زمین اپنی ہے' اور آسمان ہے اپنا

آزاد پرکرتی کرتی ہے' سانند نرتیہ مستانا'
چل اچل سبھی گاتے ہیں' بس آزادی کا گانا

مستی سے شیش اٹھا کر' ہنستا ہے وردھ ہمالیہ'
ساگر سوتنتر ہو گاتا' ہو بھارت ماتا کی جے!

ندیاں اٹھلا اٹھلا کر' گاتی ہیں دے کر تالی'
چلتے ہیں شیش اٹھا کر' بھارت کے سب نر ناری!

سب میں عجیب مستی ہے' سب ہیں سوتنتر' ہیں نربھے
میں بول اٹھا پاگل سا' 'جے بھارت ماتا کی جے'!

کھل پڑیں اچانک آنکھیں' کچھ ہوش ہمیں ہو آیا
تب زنجیروں سے جکڑا' میں نے اپنے کو پایا

تھی پڑی پاؤں میں بیڑی' ہاتھوں میں تھیں ہتھکڑیاں
ہا! کہاں گئیں سپنے کی وہ سونے کی سی گھڑیاں

مٹ گئے درشیہ وہ سارے' ہا! رہا نہ کچھ بھی اپنا
ہے ایش' کبھی سچ ہوگا' کیا میرا وہ سکھ سپنا

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अक्तूबर 1952

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اکتوبر 1952

जापान और अमरीका—सुन्दरलाल; बापू जी के दिल को टुकड़े टुकड़े कर देने के लिये काफ़ी! मीरा बहन; जीव रक्षा—भगवानदीन; एक अमरीकी एजेन्ट और हिन्दुस्तान—सुरेश रामभाई; सरकर का दिवालियापन—सुरेश रामभाई.

جاپان اور امریکہ—سندرلال؛ باپو جی کے دل کو ٹکڑے ٹکڑے کردینے کے لئے کافی!—میرا بہن؛ جیو رکشا—بھگوان دین؛ ایک امریکی ایجنٹ اور ہندستان—سریش رام بھائی؛ سرکار کا دیوالیہ پن—سریش رام بھائی ۔

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال' باہر دس روپیہ سال' ایک پرچہ دس آنے ۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ہند'
'145 مٹھی گنج' الہ آباد

याहिन्द   جھلاہ

सम्पादक — ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हुसेन, विश्वम्भर नाथ, सुन्दरलाल
ایڈیٹر — تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسین، ... ناتھ، سندر لال
सहायक सम्पादक — सुरेश रामभाई, ...

* * * * *

र के ख़ास लेख   س نمبر کے خاص لیکھ

नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद   ...انی کلچرسوسائٹی الٰہ آباد

अक्तूबर 1952 اکتوبر

क़ीमत ... आना   قیمت ... آنہ

Registered No. A—210

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से वेश्यापन, भिकमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल कारख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया, किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़त्म की. देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया. वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक़शों के साथ—दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शिलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता—

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

چائنا تو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے .

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اِس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور' آج کا چین کیسا ہے' کس طرح وہاں سے ویشیاپن' بھکمنگی اور بےروزگاری کو ختم کیا گیا' کس طرح وہاں کے بےزمین والے کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے ان‌داتا بن گیا' کسطرح امریکہ کی ناکےبندی کے باوجود اُس نے اپنے اُدیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سواولمبی بنا لیا' کس طرح اپنے تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر اُنہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی' کس‌طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی' کس‌طرح وہاں‌کے نیتاؤں نے ایمانداری' سادگی اور جنتا کی‌سیوا کے تین اُصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری' کام چوری اور سینازوری ختم کی' دیش کے آرتھک سنگھٹن کو ٹھیک کیا' وغیرہ وغیرہ .

اگر آپ وستار کے ساتھ اِن سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہوں اور یہ جاننا چاہتے ہوں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی . ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے

700 سے زیادہ صفحے' بڑھیا کاغذ' کپڑے کی جلد' ایک ترنگی اور تیس ایک رنگی تصویریں' دو رنگین نقشوں کے ساتھ—دام صرف ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ .

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھئے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر' نیا ہند' 145' مٹھی گنج الہ‌آباد .

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

.क़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना ग्रौर प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों ग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; ाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल ़क़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; ेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद ुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० ेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम न्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम ्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी ी फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" े जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया न्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से ेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई ़िताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम रा सकेंगे.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی. کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری' ھندستانی کلچر سوسائٹی'

145' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ھے . "نیا ھند" کے جو گاھک ممبر بننا چاھیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें खरीदने वालों को और बुकसेलरों को खास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی ۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا ۔

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी 1920 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेजी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا ۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے ۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायेगा कि ईसाई धर्म की खास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा जी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया कागज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کماریپا.

انووادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری' بھائی چارے' پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے ۔

مہاتما جی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے' چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم ماننے والا ہو' میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے......."

سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ ۔

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ملنے کا پتہ—

[illegible] '145' [illegible] الہ آباد

क मेरे दिल पर नक्श है. यह घटना मैं कई बार लोगों ो सुना चुका हूँ.

आप इस पत्र का जिस तरह चाहें उपयोग कर सकते हैं.

सस्नेह
आपका भाई
सुन्दरलाल

[भाई मशरूवाला ने मरने से ठीक नौ दिन पहले एक चिट्ठी लिखी थी और उसके साथ श्री गोरा की किताब से नीचे लिखी सतरें भेजी थीं.]

"शादी के मौक़े पर बोलते हुए पंडित सुन्दरलाल जी ने मेहमानों को एक ख़ास बात बताई जो हाल के फ़िरक़ेवाराना दंगों के दिनों में दिल्ली में बापू जी ने मिलने पर उनसे कही थी. बापू जी ने कहा था कि अगर दोनों फ़िरक़े वालों के नास्तिक हो जाने से फ़िरक़ेवाराना नफ़रत और दंगे बन्द हो सकें तो मैं चाहूँगा कि यह दोनों नास्तिक हो जायं. बापू जी यह कहना भी इस बात की एक मिसाल है कि बापू जी किसी असूल की क़दर इसलिये ज़ियादा नहीं करते थे कि उस असूल में विचारों या भावों की निगाह से कितनी सचाई है, बल्कि इसलिये ज़ियादा करते थे कि उस असूल के अमली नतीजे क्या निकलते हैं. अगर नास्तिकता से मानव समाज अधिक सभ्य बन सके तो वह नास्तिकता के ख़िलाफ़ नहीं थे."

("एन एथीइस्ट विद गांधी", सफ़ा 46)

تک میرے دل پر نقش ہے. یہ گھٹنا میں کئی بار لوگوں کو سنا چکا ہوں .

آپ اس پتر کا جس طرح چاہیں اپیوگ کر سکتے ہیں .

سسنیہ
آپ کا بھائی
سندر لال

[بھائی مشروّالا نے مرنے سے ٹھیک نو دن پہلے ایک چٹھی لکھی تھی اور اُس کے ساتھ شری گورا کی کتاب سے نیچے لکھی سطریں بھیجی تھیں.]

" شادی کے موقعے پر بولتے ہوئے پنڈت سندر لال جی نے مہمانوں کو ایک خاص بات بتائی جو حال کے فرقے وارانہ دنگوں کے دنوں میں دلی میں باپو جی نے ملنے پر اُن سے کہی تھی . باپو جی نے کہا تھا کہ اگر دونوں فرقے والوں کے ناستک ہوجانے سے فرقے وارانا نفرت اور دنگے بند ہوسکیں تو میں چاہونگا کہ یہ دونوں ناستک ہو جائیں. باپو جی کا یہ کہنا بھی اِس بات کی ایک مثال ہے کہ باپو جی کسی اصول کی قدر اِس لئے زیادہ نہیں کرتے تھے کہ اُس اصول میں وچاروں یا بھاؤں کی نگاہ سے کتنی سچائی ہے' بلکہ اِس لئے زیادہ کرتے تھے کہ اُس اصول کے عملی نتیجے کیا نکلتے ہیں . اگر ناستکتا سے مانو سماج ادھک سبھیہ بن سکے تو وہ ناستکتا کے خلاف نہیں تھے ."

(" این اتھیسٹ ود گاندھی" صفحہ 46)

बापू—क्या मतलब तुम्हारा ? मैं नहीं समझा.

मैं फिर—क्या आप समझते हैं आप हिन्दू और मुसलमानों को इस तरह मिला लेंगे ?

बापू—क्या कहना चाह रहे हो ? मैं नहीं समझा.

मैं तीसरी बार—क्या आप समझते हैं आप हिन्दू और मुसलमानों को इस तरह मिला लेंगे ?

बापू—अच्छा ! अब मैं समझा तुम क्या कहना चाह रहे हो, तुम्हारी मेरी जुहू में बात चीत हुई थी न ? वही कहना चाहते हो न ?

मैं—जी, हां.

बापू—तो मुझ से क्या पूछते हो ? मैं तो यह कहने को तैयार हूँ कि यह सब के सब नास्तिक हो जायं तो अच्छा ! इनके न मानने से कोई खुदा थोड़े ही मिट जायगा ! पर यह आदमी तो बनें ! पर मेरी सुनता कौन है. तुम क्या पिद्दी हो, तुम्हारी कौन सुनेगा ? मर गए कबीर कहते कहते, मर गए नानक कहते कहते. दुनिया तो अपने ही रास्ते पर चलती है !

बापू के चेहरे पर दुख और घबराहट बढ़ती जा रही थी. इतना कह कर वह रुक गए. दो मिनट फिर ख़ामोशी रही. मैंने कोई जवाब नहीं दिया. दो मिनट की ख़ामोशी के बाद पांव छुए और चुपके से अपने मित्र को लिये हुए बाहर चला आया. मुझे याद है बाहर आकर मैंने मौलाना मोहम्मद अली और हकीम जी दोनों से कहा कि "यह बुड्ढा कुछ बड़ी चीज़ करने वाला है. क्या करेगा नहीं मालूम ?" मैं घबरा गयाथा. मेरी बात सुन कर मौलाना साहब और हकीम जी भी घबरा गए. इसके चौबीस घन्टे के अन्दर बापू ने इक्कीस दिन के उपवास का एलान कर दिया.

जुहू की जिस बात की तरफ़ बापू ने ऊपर के फ़िक़रे में इशारा किया है वह मेरी उनकी यह बहस थी कि मैं कबीर के विचारों से मिलते हुए सब अलग अलग धर्मों को हटा कर एक मानव धर्म चलाने की बात कर रहा था और बापू सब धर्मों के अलग अलग रहते हुए एक दूसरे का आदर और अपने सर्वधर्म समभाव की बात कर रहे थे. आप इस बारे में मेरे और उनके विचारों को काफ़ी अच्छी तरह जानते हैं.

मैं इसका यह मतलब तो नहीं लेता कि बापू नास्तिकवाद के प्रचार का "स्वागत" करते. पर जो कुछ है बात यही है. और उनके वह शब्द और उनके चेहरे की वह हालत आज

باپو—کیا مطلب تمہارا ؟ میں نہیں سمجھا .

میں پھر—کیا آپ سمجھتے ہیں آپ ہندو اور مسلمانوں کو اس طرح ملا لیں گے؟

باپو— کیا کہنا چاہ رہے ہو ؟ میں نہیں سمجھا .

میں تیسری بار—کیا آپ سمجھتے ہیں ؟ آپ ہندو اور مسلمانوں کو اس طرح ملا لیں گے ؟

باپو—اچھا ! اب میں سمجھا تم کیا کہنا چاہ رہے ہو، تمہاری میری جوہو میں بات چیت ہوئی تھی نا ؟ وہی کہنا چاہتے ہو نا ؟

میں—جی، ہاں .

باپو—تو مجھ سے کیا پوچھتے ہو ؟ میں تو یہ کہنے کو تیار ہوں کہ یہ سب کے سب ناستک ہوجائیں تو اچھا ! اِن کے نہ ماننے سے کوئی خدا تھوڑے ہی مٹ جائے گا ! پر یہ آدمی تو بنیں ! پر میری سنتا کون ہے . تم کیا پدی ہو، تمہاری کون سنے گا ؟ مر گئے کبیر کہتے کہتے، مر گئے نانک کہتےکہتے. دنیا تو اپنے ہی راستے پر چلتی ہے!

باپوکے چہرے پر دکھ اور گھبراہٹ بڑھتی جا رہی تھی. اتنا کہکر وہ رک گئے . دو منٹ پھر خاموشی رہی . میں نے کوئی جواب نہیں دیا . دو منٹ کی خاموشی کے بعد پاؤں چھوئے اور چپکے سے اپنے متر کو لئے ہوئے باہر چلا آیا. مجھے یاد ہے باہر آکر میں نے مولانا محمد علی اور حکیم جی دونوں سے کہا کہ " یہ بڈھا کچھ بڑی چیز کرنے والا ہے. کیا کرے گا نہیں معلوم ؟" میں گھبرا گیا تھا. میری بات سن کر مولانا صاحب اور حکیم جی بھی گھبرا گئے . اس کے چوبیس گھنٹے کے اندر باپو نے اکیس دن کے اُپواس کا اعلان کر دیا .

جوہو کی جس بات کی طرف باپو نے اوپر کے فقرےمیں اشارا کیا ہے وہ میری اُن کی یہ بحث تھی کہ میں کبیر وچاروں سے ملتے ہوئے سب الگ الگ دھرموں کو ہٹا ایک مانو دھرم چلانے کی بات کر رہا تھا اور باپو سب دھرموں کے الگ الگ رہتے ہوئے ایک دوسرے کا آدر اور اپنے سرو دھرم سمبھاؤ کی بات کر رہے تھے . آپ اِس بارے میں میرے اور اُن کے وچاروں کو کافی اچھی طرح جانتے ہیں .

میں اس کا یہ مطلب تو نہیں لیتا کہ باپو ناستک واد کے پرچار کا " سواگت" کرتے . پر جو کچھ ہے بات یہی ہے . اور اُن کے وہ شبد اور اُن کے چہرے کی وہ حالت آج

प्यारे भाई किशोरलाला जी,

आपका 25. 8. '52 का कार्ड अभी मिला. अभी जवाब दे रहा हूँ. गोरा की किताब में क्या लिखा है मैं नहीं जानता. मैंने सन '48 में व्याख्यान देते हुए क्या कहा था यह भी अब कहां याद. पर जहां तक मुझे याद है इस विशय की बात चीत बापू से मेरी एक ही बार दिल्ली में हुई थी. उसे मैं कई बार औरों से भी कह चुका हूँ. मैं समझता हूँ वही मैंने सन '48 में सेवाग्राम के व्याख्यान में कही होगी. वह बात चीत नीचे देता हूं.

यह बात सन 1924 की है. बापू मौलाना मोहम्मद अली के मकान में ठहरे हुए थे. दिल्ली का हिन्दू मुस्लिम दंगा हो चुका था. उसी सिलसिले में बापू दिल्ली गये थे. बापू के वहां रहते मुलतान और कोहाट के दंगों की दर्दनाक खबरें आईं. बापू के दिल पर उनका गहरा असर हुआ. जो बात चीत मैं नीचे दे रहा हूँ वह उस दिन से एक दिन पहले की है जिस दिन बापू ने इक्कीस दिन के उपवास का एलान किया था. अपने और बापू के शब्द मैं याद से लिख रहा हूँ. पर जहां तक याद रह गया है ठीक ठीक लिख रहा हूँ.

तीसरे पहर का समय था. मेरे एक अलीगढ़ के नौजवान मित्र मुझसे मिलने आए थे. उन्होंने चाहा बापू के भी दर्शन कर लें. बापू बीच के हाल से मिले हुए लम्बे कमरे में अकेले बैठे थे. इधर का दरवाजा उड़का हुआ था. मैंने अपने नौजवान मित्र को साथ ले कर दरवाजा खोला. अन्दर से बापू ने मुड़ कर मेरी तरफ़ देखा. मैंने देखा उनका चेहरा लाल था और कुछ गहरी चिन्ता या दुख चेहरे से टपक रही थी. मैंने अन्दर जाना उचित न समझ झट से फिर दरवाजा बन्द कर के लौट आना चाहा. उन्होंने अन्दर से मेरा नाम ले कर दो तीन आवजें दीं. मेरे टालने की कोशिश करने पर भी उन्होंने जिद कर के मुझे अन्दर बुला लिया. मैं अपने मित्र को साथ लिये गया. सामने जा कर हम दोनों चुप बैठ गए. एक दो मिनट की खामोशी के बाद मैंने फिर उठ कर अपने मित्र को साथ लिये हुए बाहर जाना चाहा. बापू ने पूछा—"कैसे आये थे ?" मैंने कहा—"कोई काम नहीं है, यह आपके दर्शन करने अलीगढ़ से आए थे. दर्शन हो गए, जाते हैं. मैं भी जाता हूं, कोई काम नहीं है." हमने उठना चाहा. बापू ने फिर ज़िद कर के बैठा लिया. हम बैठ गए. उनके चेहरे की वही अजीब हालत थी. मालूम होता था अन्दर कोई भट्टी जल रही है. मैं समझ गया कि कोहाट और मुलतान की खबरों पर गहरी चिन्ता और दुख है. दो एक मिनट की खामोशी के बाद फिर यह बात चीत हुई :—

मैं—क्या आप समझते हैं आप हिन्दू और मुसलमानों को इस तरह मिला लेंगे ?

پیارے بھائی کشورلال جی'

آپ کا 52' . 8 . 25 کا کارڈ ابھی ملا. ابھی جواب دے رہا ہوں . گورا کی کتاب میں کیا لکھا ہے میں نہیں جانتا . میں نے سن 48' میں ویاکھان دیتے ہوئے کیا کہا تھا یہ بھی اب کہاں یاد . پر جہاں تک مجھے یاد ہے اس وشے کی بات چیت باپو سے میری ایک ہی بار دلی میں ہوئی تھی. اسے میں کئی بار اوروں سے بھی کہہ چکا ہوں. میں سمجھتا ہوں وہی میں نے سن 48' میں سیواگرام کے ویاکھان میں کہی ہوگی. وہ بات چیت نیچے دیتا ہوں .

یہ بات سن 1924 کی ہے . باپو مولانا محمد علی کے مکان میں ٹھہرے ہوئے تھے . دلی کا ہندومسلم دنگا ہوچکا تھا . اسی سلسلہ میں باپو دلی گئے تھے . باپو کے وہاں رہتے ملتان اور کوہاٹ کے دنگوں کی دردناک خبریں آئیں. باپو کے دل پر ان کا گہرا اثر ہوا . جو بات چیت میں نیچے دے رہا ہوں وہ اُس دن سے ایک دن پہلے کی ہے جس دن باپو نے اکیس دن کے اُپواس کا اعلان کیا تھا . اپنے اور باپو کے شبد میں یاد سے لکھ رہا ہوں . پر جہاں تک یاد رہ گیا ہے ٹھیک ٹھیک لکھ رہا ہوں .

تیسرے پہر کا سمے تھا. میرے ایک علی گڑھ کے نوجوان متر مجھ سے ملنے آئے تھے . اُنہوں نے چاہا باپو کے بھی درشن کرلیں. باپو بیچ کے حال سے ملے ہوئے لمبے کمرے میں اکیلے بیٹھے تھے . اِدھر کا دروازہ اُڑکا ہوا تھا . میں نے اپنے نوجوان متر کو ساتھ لے کر دروازہ کھولا . اندر سے باپو نے مڑکر میری طرف دیکھا . میں نے دیکھا اُن کا چہرا لال تھا اور کچھ گہری چنتا یا دکھ چہرے سے ٹپک رہی تھی . میں نے اندر جانا اُچت نہ سمجھ جھٹ سے پھر دروازہ بند کرکے لوٹ آنا چاہا . اُنہوں نے اندر سے میرا نام لے کر دو تین آوازیں دیں . میرے ٹالنے کی کوشش کرنے پر بھی اُنہوں نے ضد کرکے مجھے اندر بلا لیا . میں اپنے متر کو ساتھ لئے گیا. سامنے جاکر ہم دونوں چپ بیٹھ گئے . ایک دو منٹ کی خاموشی کے بعد میں نے پھر اُٹھ کر اپنے متر کو ساتھ لئے ہوئے باہر جانا چاہا . باپو نے پوچھا—"کیسے آئے تھے؟" میں نے کہا—"کوئی کام نہیں ہے' یہ آپ کے درشن کرنے علی گڑھ سے آئے تھے . درشن ہوگئے' جاتے ہیں . میں بھی جاتا ہوں' کوئی کام نہیں ہے." ہم نے اُٹھنا چاہا . باپو نے پھر ضد کرکے بٹھا لیا . ہم بیٹھ گئے. اُن کے چہرے کی وہی عجیب حالت تھی. معلوم ہوتا تھا اندر کوئی بھٹی جل رہی ہے. میں سمجھ گیا کہ کوہاٹ اور ملتان کی خبروں پر گہری چنتا اور دکھ ہے . دو ایک منٹ کی خاموشی کے بعد پھر یہ بات چیت ہوئی :—

میں—کیا آپ سمجھتے ہیں آپ ہندو اور مسلمانوں کو اس طرح ملالیں گے ؟

क जा सकती हैं. पर हमारी छोटी निगाहें जहां तक जा सकती हैं वहां तक किशोरलाल भाई के उठ जाने से गांधी जी के सच्चे अनुयाइयों और देश के सच्चे सेवकों में जो जगह खाली हो गई है उसका भर सकना अब नामुमकिन ही दिखलाई देता है. किशोरलाल भाई के अनगिनत मित्रों, आश्रम के अपने बहन भाइयों और सब से अधिक गोमती बहन के साथ हम हार्दिक समवेदना प्रगट करते हैं.

बुधवार
10. 9. '52 —सुन्दरलाल

दो चिट्ठियां

(1)

बजाज बाड़ी, वर्धा
25. 8. ' 2

प्रिय पंडित सुन्दरलाल जी,

गोरा का An atheist with Gandhi में यह उल्लेख (लिखना) है कि उनकी पुत्री का हरिजन युवक (लड़के) से सेवाग्राम में 1948 में जब विवाह हुआ तब आपने वयाख्यान देते हुए कहा था कि इस विशय पर दिल्ली में आप के और पूज्य बापू जी के बीच बातों के दौरान में आप को बापू ने कहा कि अगर नास्तिकवाद (खुदा से इन्कार) द्वारा (ज़रिये) क़ौमी झगड़े मिट सकें तो वह नास्तिकवाद के प्रचार का भी स्वागत करेंगे.

क्या आप इस बात चीत का कुछ अधिक हाल बता सकेंगे? मैंने मनुगांधी से पूछा कि उसकी डायरी में उसका कोई उल्लेख हो तो बता दे. वह लिखती है कि वह देख गई किन्तु उसको कोई उल्लेख नहीं मिल रहा है. बापू जी की ईश्वर पर जो असीम श्रद्धा (बहुत ज़ियादा यक़ीन) थी उस से इस कथन में कुछ गैरसमझी की शंका (शक) आती है. इस लिये पूछ रहा हूं. पूरी बात चीत का किसी ने भी नोट दिया हो, ऐसा खयाल है? आप स्वस्थ होंगे.

आप का
किशोरलाल

تک جاسکتی ھیں پر ھماری چھوٹی نگاھیں جہاں تک جا سکتی ھیں وھاں تک کشورلال بھائی کے اُٹھ جانے سے گاندھی جی کے سچے انیائیوں اور دیش کے سچے سیوکوں میں جو جگہ خالی ھو گئی ھے اُس کا بھر سکنا اب ناممکن ھی دکھلائی دیتا ھے . کشورلال بھائی کے اَنگنت مترون' آشرم کے اپنے بہن بھائیوں اور سب سے ادھک گومتی بہن کے ساتھ ھم هاردک سمویدنا پرگٹ کرتے ھیں .

بدھوار
10-9-'52 —سندر لال

دو چٹھیاں

(1)

بجاج واڑی' وردھا
25 . 8 . '52

پریہ پنڈت سندر لال جی'

گورا کا An Atheist with Gandhi میں یہ اُلیکھ (لکھنا) ھے کہ اُن کی پتری کا ھریجن یووک (لڑکے) سے سیواگرام میں 1948 میں جب وواہ ھوا تب آپ نے ویاکھیان دیتے ھوئے کہا تھا کہ اِس وشے پر دلی میں آپ کے اور پوجیہ باپو جی کے بیچ باتوں کے دوران میں آپ کو باپو نے کہا کہ اگر ناستک واد (خدا سے انکار) دوارا (ذریعہ) قومی جھگڑے مٹ سکیں تو وہ ناستک واد کے پرچار کا بھی سواگت کریں گے .

کیا آپ اِس بات چیت کا کچھ ادھک حال بتا سکیں گے ؟ میں نے منو گاندھی سے پوچھا کہ اُس کی ڈائری میں اُس کا کوئی اُلیکھ ھو تو بتا دے . وہ لکھتی ھے کہ وہ دیکھ گئی کنتو اس کو کوئی اُلیکھ نہیں مل رھا ھے . باپو جی کی ایشور پر جو اسیم شردھا (بہت زیادہ یقین) تھی اُس سے اِس کتھن میں کچھ غیر سمجھی کی شنکا (شک) آتی ھے . اس لئے پوچھ رھا ھوں . پوری بات چیت کا کسی نے بھی نوٹ دیا ھو' ایسا خیال ھے؟ آپ سوستھ ھونگے .

آپ کا
کشورلال

भेद पैदा हो गया है. किशोरलाल भाई समझते थे कि ी जी के इस तरह के गहरे तजुरबों का दूसरे कमज़ोर बहनों पर बुरा असर भी पड़ सकता है. डाक्टर महमूद उन दिनों आश्रम में थे. बात यहां तक पहुंची कि गांधी सदा के लिये आश्रम छोड़ देने तक को राज़ी हो गए. किशोरलाल भाई अपनी राय से न डिगे. विचारों के ाग अलग होते हुए भी दोनों के दिल में एक दूसरे के ये और एक दूसरे के स्वतंत्र विचारों के लिये गहरा मान जब कभी किशोरलाल भाई अपनी ग़लती समझ लेते थे उतनी ही सफ़ाई के साथ मान भी लेते थे.

धर्म मज़हब के मामले में सच्चे आस्तिक होते हुए भी ोरलाल भाई उदार, बड़े दिल के और पूरे आज़ाद ख़याल मेरी छोटी छोटी किताबों 'गीता और क़ुरान' और रत मोहम्मद और इसलाम' के गुजराती अनुवाद कराने उन्होंने ही सबसे अधिक आग्रह किया. गीता के उपदेशों उनकी अपनी पुस्तक उनकी विद्वता और उदारता दोनों का ा जागता सबूत है. साम्प्रदायिक मामलों में दिमाग़ी, ली, अमली या किसी तरह की भी तंग नज़री उन्हें छू तक गई थी. इस वक़्त मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है पर एक मामले में गांधी जी के आस पास के लोगों में वह नी एक अलग और सब से ऊंची जगह रखते थे.

किशोरलाल भाई की उमर 61 बरस की हो चुकी थी. से कम पन्द्रह बरस से उनकी तन्दुरुस्ती हद दरजे की ब चली आ रही थी. इन हालतों में उनकी मौत कोई रज की चीज़ नहीं थी. कहीं अधिक अचरज की यह थी कि उन्होंने मुश्किल से पचीस सेर के हलके शरीर को गहरी बीमारियों से घिरे रहते हुए भी बरस के लम्बे अरसे तक कैसे संभाले रखा, और फिर ीर वक़्त तक काम करते करते ही शरीर छोड़ा. हमारे उनका आख़िरी ख़त मरने से ठीक नौ दिन पहले लेखा हुआ है जिससे उनकी ज़बरदस्त खोज और लगन का काफ़ी पता चलता है. यह सब किशोरलाल भाई ज़बूत क़ूवतेइरादी और आत्मबल का नतीजा था.

कोई आदमी कितना भी अच्छा, बड़ा, नेक और काम यों न हो उसे एक दिन पके पान की तरह डाल से गिर ही पड़ता है. शायद दुनिया के बदलते हुए हालात में ो उपयोगिता या अनुपयोगिता को क़ुदरत हम से कहीं दा अच्छा समझती है. कई बार हमें ऐसा लगता है धीजी जैसे महान आत्मा की सूरत में भी उनका री बलिदान जो काम कर गया और करोड़ों देश- ियों के दिलों पर जो असर छोड़ गया वह शायद उनका पांच बरस और जीना न कर पाता. जो हो, दुनिया के साथ बदल रही है. हमारी निगाहें बहुत थोड़ी दूर

مت بھید پیدا ہوگیا ہے ۔ کشورلال بھائی سمجھتے تھے کہ گاندھی جی کے اس طرح کے گہرے تجربوں کا دوسرے کمزور بھائی بہنوں پر برا اثر بھی پڑ سکتا ہے ۔ ڈاکٹر محمود بھی اُن دنوں آشرم میں تھے. بات یہاں تک پہونچی کہ گاندھی جی سدا کے لئے آشرم چھوڑ دینے تک کو راضی ہوگئے ۔ پر کشورلال بھائی اپنی رائے سے نہ ڈگے ۔ وچاروں کے الگ الگ ہوتے ہوئے بھی دونوں کے دل میں ایک دوسرے کے لئے اور ایک دوسرے کے سوتنتر وچاروں کے لئے گہرا مان تھا ۔ جب کبھی کشورلال بھائی اپنی غلطی سمجھ لیتے تھے تو اُتنی ہی صفائی کے ساتھ مان بھی لیتے تھے.

دھرم مذہب کے معاملے میں سچے آستک ہوتے ہوئے بھی کشور لال بھائی اُدار' بڑے دل کے اور پورے آزاد خیال تھے ۔ میری چھوٹی چھوٹی کتابیں ' گیتا اور قرآن' اور 'حضرت محمد اور اسلام' کے گجراتی انوواد کرانے کا اُنہوں نے ہی سب سے ادھک آگرہ کیا. گیتا کے اُپدیشوں پر اُن کی اپنی پستک اُن کی ودوتا اور اُدارتا دونوں کا جیتا جاگتا ثبوت ہے ۔ سامپردایک معاملوں میں دماغی' اصولی' عملی یا کسی طرح کی بھی تنگ نظری اُنہیں چھو تک نہیں گئی تھی ۔ اس وقت مثالیں دینے کی ضرورت نہیں ہے پر اِس ایک معاملے میں گاندھی جی کے آس پاس کے لوگوں میں وہ اپنی ایک الگ اور سب سے اونچی جگہ رکھتے تھے ۔

کشور لال بھائی کی عمر 61 برس کی ہو چکی تھی ۔ کم سے کم پندرہ برس سے اُن کی تندرستی حد درجے کی خراب چلی آ رہی تھی ۔ اِن حالتوں میں اُن کی موت کوئی اچرج کی چیز نہیں تھی ۔ کہیں ادھک اچرج کی چیز یہ تھی کہ اُنہوں نے مشکل سے پچیس سیر کے ہلکے پھلکے شریر کو گہری بیماریوں سے گھرے رہتے ہوئے بھی پندرہ برس کے لمبے عرصے تک کیسے سنبھالے رکھا' اور پھر آخیر وقت تک کام کرتے کرتے ہی شریر چھوڑا ۔ ہمارے پاس اُن کا آخیری خط مرنے سے ٹھیک نو دن پہلے کا لکھا ہوا ہے جس سے اُن کی زبردست کھوج اور لگن دونوں کا کافی پتہ چلتا ہے ۔ یہ سب کشور لال بھائی کی مضبوط قوت اِرادی اور آتم بل کا نتیجہ تھا ۔

کوئی آدمی کتنا بھی اچھا' بڑا' نیک اور کام کا کیوں نہ ہو اُسے ایک دن پکے پان کی طرح ڈال سے گر جانا ہی پڑتا ہے ۔ شاید دنیا کے بدلتے ہوئے حالات میں ہماری اُپیوگتا یا اَن اُپیوگتا کو قدرت ہم سے کہیں زیادہ اچھا سمجھتی ہے ۔ کئی بار ہمیں ایسا لگتا ہے کہ گاندھی جی جیسے مہان آتما کی صورت میں بھی اُن کا آخیری بلیدان جو کام کر گیا اور کروڑوں دیش واسیوں کے دلوں پر جو اثر چھوڑ گیا وہ شاید اُن کا دس پانچ برس اور جینا نہ کرپاتا. جو ہو' دنیا تیزی کے ساتھ بدل رہی ہے ۔ ہماری نگاہیں بہت تھوڑی دور

मुख्य मंत्री साहब कहते हैं कि भूक से कोई नहीं मरा. यह ऐसे ही सच है जैसे कोई भी दिक़, मलेरिया या दमा से कभी नहीं मरता. आम तरीक़े से लोग उस समय मरते हैं जब उनका दिल बहुत ही कमज़ोर हो जाता है और उस में धड़कते रहने की और ताक़त नहीं रह जाती. गहरे से गहरे जाने जैसी मज़े की चीज़ कोई और नहीं है !

मैंने अपनी जांच प्रताल के नतीजे जनता तक पहुंचा दिये हैं और मंत्रियों के बयान भी उसके पास हैं. इस जगह जो चर्चा मैंने की है इस के अलावा सच को किसी सफ़ाई की ज़रूरत नहीं है. मुझे इतमिनान है कि जनता इन बयानों की आत्मा की गवाही पर ख़ुद ही नतीजे निकाल लेगी.

(विजिल से) —जे. सी. कुमारप्पा

भाई किशोरलाल मशरूवाला

मंगलवार 9 सितम्बर की रात को लगभग दस बजे जब हम बिछौने पर जा चुके थे प्रेस ट्रस्ट आफ़ इंडिया के संवाद दाता ने आ कर जगाया. श्री किशोरलाल मशरूवाला नहीं रहे एक धक्का सा लगा.

गांधीजी के जीवन, उनके असूलों, उनके चरित्र और उनके प्रेम से खिंच कर जो लोग अपने सब धन्दे छोड़ कर उनके आस पास जमा हो गए थे उनमें किशोरलाल भाई इने गिने और चोटी के लोगों में से थे. वह बहुत बड़े विद्वान थे, ऊंचे दरजे के स्वतंत्र विचारक थे. सादगी, त्याग और निस्वार्थता की मूर्ति थे. जिन ऊंचे असूलों को वह दिमाग़ी तौर पर ठीक मानते थे उन्हें अपनी ज़िन्दगी में ढालने की भी पूरी और हद दरजे की कोशिश करते थे.

गांधीजी अपने प्रेम के कारन हमें अपने आश्रमवासियों में गिनते थे. कभी कभी जब हम आश्रम में न होते तो उनकी आज्ञा से हमारी कोठरी ख़ाली भी रखी जाती थी. एक आश्रमवासी की हैसियत से हमें अनेक बार किशोरलाल भाई के साथ बहुत निकट सम्पर्क में आने का मौक़ा मिला. किशोरलाल भाई गांधीजी के केवल भक्त ही नहीं थे. वह उनके ख़ास सलाहकारों में से भी थे. जब कभी किसी बात में उनकी राय गांधीजी की राय से मेल न खाती थी तो वह बिना संकोच और पूरी निडरता के साथ अपनी राय ज़ाहिर कर देते थे और जहां तक ठीक समझते थे उस पर डट भी जाते थे.

एक बार जब हम बाहर से घूम घाम कर सेवाग्राम आश्रम पहुँचे और पहले सीधे गांधीजी के दर्शनों के लिये गये तो हमें उनसे मालूम हुआ कि गांधीजी के कुछ ब्रह्मचर्य के तजुरबों के बारे में उनमें और किशोरलाल भाई में गहरा

مکھیہ منتری صاحب کہتے ھیں کہ بھوک سے کوئی نہیں مرا . یہ ایسے هی سچ ھے جیسے کوئی بھی دق' ملیریا یا دمہ سے کبھی نہیں مرتا . عام طریقے سے لوگ اُس سمے مرتے ھیں جب اُن کا دل بہت هی کمزور ھو جاتا ھے اور اُس میں دھڑکتے رھنے کی اور طاقت نہیں رہ جاتی. گہرے سے گہرے جانے جیسی مزے کی چیز کوئی اور نہیں ھے !

میں نے اپنی جانچ پرتال کے نتیجے جنتا تک پہونچا دیئے ھیں اور منتریوں کے بیان بھی اُس کے پاس ھیں . اِس جگہ جو چرچا میں نے کی ھے اِس کے علاوہ سچ کو کسی صفائی کی ضرورت نہیں ھے. مجھے اطمینان ھے کہ جنتا اِن بیانوں کی آتما کی گواهی پر خود هی نتیجے نکال لے گی .

(وجل سے) —جے . سی . کماریپا

بھائی کشورلال مشرو والا

منگل وار 9 ستمبر کی رات کو لگ بھگ دس بجے جب هم بچھونے پر جا چکے تھے پریس ٹرسٹ آف انڈیا کے سمواد داتا نے آ کر جگایا. شری کشورلال مشرو والا نہیں رہے ایک دھکا سا لگا .

گاندھی جی کے جیون' اُن کے اصولوں' اُن کے چرتر اور اُن کے پریم سے کھنچ کر جو لوگ اپنے سب دھندے چھوڑ کر اُن کے آس پاس جما ھوگئے تھے ان میں کشورلال بھائی گنے گنے اور چوٹی کے لوگوں میں سے تھے . وہ بہت بڑے ودوان تھے' اونچے درجے کے سوتنتر وچارک تھے . سادگی' تیاگ اور نسوارتھتا' کی مورتی تھے . جن اونچے اصولوں کو وہ دماغی طور پر ٹھیک مانتے تھے انہیں اپنی زندگی میں ڈھالنے کی بھی پوری اور حد درجے کی کوشش کرتے تھے .

گاندھی جی اپنے پریم کے کارن همیں اپنے آشرم واسیوں میں گنتے تھے. کبھی کبھی جب هم آشرم میں نہ ھوتے تو اُن کی آگیاں سے هماری کوٹھری خالی بھی رکھی جاتی تھی . ایک آشرم واسی کی حیثیت سے همیں انیک بار کشورلال بھائی کے ساتھ بہت نکٹ سمپرک میں آنے کا موقع ملا . کشورلال بھائی گاندھی جی کے کیول بھکت هی نہیں تھے . وہ اُن کے خاص صلاحکاروں میں سے بھی تھے . جب کبھی کسی بات میں اُن کی رائے گاندھی جی کی رائے سے میل نہ کھاتی تھی تو وہ بنا سنکوچ اور پوری نڈرتا کے ساتھ اپنی رائے ظاهر کر دیتے تھے اور جہاں تک ٹھیک سمجھتے تھے اُس پر ڈٹ بھی جاتے تھے .

ایک بار جب هم باهر سے گھوم گھام کر سیوا گرام آشرم پہنچے اور پہلے سیدھے گاندھی جی کے درشنوں کے لئے گئے تو ھمیں اُن سے معلوم ھوا کہ گاندھی جی کے کچھ برہمچریہ تجربوں کے بارے میں اِن میں اور کشورلال بھائی میں گہرا

(2) उनके पास कपड़े क्यों नहीं थे.

(मेरे सेक्रेटरी पानी पीना चाहते थे. उन्होंने एक झोंपड़े [पर] जा कर पानी मांगा. एक औरत ने अन्दर से चिल्ला [कर] कहा—"मैं आपको पानी देने बाहर नहीं आ सकती [क्यों]कि मेरे बदन पर कोई कपड़ा नहीं है.")

(3) उनके घरों में मुझे सिर्फ घास के बीज ही क्यों दिखाई पड़े?

शायद मैंने ग़लत नतीजे निकाले हैं कि—

(1) खाना न होने के कारन वह भूके थे,

(2) वह इतने ग़रीब थे कि उन्हें कपड़े नहीं मुयस्सर हो सकते थे,

और (3) अपना पेट भरने के लिये घास के बीज उन्हों ने अपने घरों में इकट्ठा कर रखे थे.

शायद उपमन्त्री रावत ने मुकामी हिन्दी भाषा के ज़बरदस्त ज्ञान की मदद से जो जांच प्रताल की है उसमें [उन्]होंने इन सवालों के दूसरे नतीजे भी ढूंढ निकाले हों. [वह] नतीजे यह हो सकते हैं—

(1) "ख़ूबसूरती मैच में "मिस गोरखपुर" की संज्ञा जीतने के लिये इन गांवों के रहने वालों में अपने बदन को दुबला करने की एक होड़ लग गई है."

(2) "बहुत मुमकिन है कि यह मर्द और औरतें किसी "नांगा सभा" (Nudist Club) की मेम्बर हों."

(3) "शायद यह लोग घास के बीज इस लिये इकट्ठा कर रहे हैं ताकि उन्हें अपने झोपड़ों के सामने बो कर और सींचाई करके मंत्रियों की तरह शाम को ठंड का मज़ा लेने के लिये लान तैयार कर लें."

मुझे नहीं मालूम था कि इस तरह की जांच प्रताल में [भा]शा की बहुत ज़रूरत होती है. सिर्फ़ झूट को सच दिखाने [के] लिये अथक भाशन ज़रूरी हैं और यहां ज़रूर भाशा बहुत काम करती है!

जहां तक सरकारी काग़ज़ों में मुजरिमाना अदल बदल [का] सम्बन्ध है अगर उपमन्त्री रावत अपने आस पास [खो]ज करें तो उन्हें और ऐसी बहुत सी अदल बदल मिल [जा]येंगी. मैंने तो उनमें से कुछ नमूने के तौर पर ले लिये हैं [औ]र उन्हें प्रधान मंत्री के सुपुर्द कर दिये हैं. अधिकारियों से वह ही एक आदमी हैं जिन पर भरोसा किया जा [सक]ता है कि वह इस सवाल पर बेलाग रख लेंगे.

(2) اُن کے پاس کپڑے کیوں نہیں تھے ۔

(میرے سکریٹری پانی پینا چاہتے تھے ۔ انہوں نے ایک جھونپڑے پر جا کر پانی مانگا ۔ ایک عورت نے اندر سے چلا کر کہا—" میں آپ کو پانی دینے باہر نہیں آسکتی کیونکہ میرے بدن پر کوئی کپڑا نہیں ہے ۔"

(3) اُن کے گھروں میں مجھے صرف گھاس کے بیج ہی کیوں دکھائی پڑے ؟

شاید میں نے غلط نتیجے نکالے ہیں کہ—

(1) کھانا نہ ہونے کے کارن وہ بھوکے تھے،

(2) وہ اتنے غریب تھے کہ اُنہیں کپڑے نہیں میسر ہو سکتے تھے،

اور (3) اپنا پیٹ بھرنے کے لئے گھاس کے بیج اُنہوں نے اپنے گھروں میں اکٹھا کر رکھے تھے ۔

شاید اُپ منتری راوت نے مقامی ہندی بھاشا کے زبردست گیان کی مدد سے جو جانچ پرتال کی ہے اُس میں اُنہوں نے اِن سوالوں کے دوسرے نتیجے بھی ڈھونڈھ نکالے ہوں ۔ وہ نتیجے یہ ہو سکتے ہیں—

(1) "خوبصورتی میچ میں "مس گورکھپور" کی سنگیا جیتنے کے لئے اِن گاؤں کے رہنے والوں میں اپنے بدن کو دبلا کرنے کی ایک ہوڑ لگ گئی ہے ۔"

(2) "بہت ممکن ہے کہ یہ مرد اور عورتیں کسی "ناںگا سبھا" (Nudist Club) کی ممبر ہوں ۔"

(3) "شاید یہ لوگ گھاس کے بیج اِس لئے اکٹھا کر رہے ہیں تاکہ اُنہیں اپنے جھونپڑوں کے سامنے بو کر اور سینچائی کرکے منتریوں کی طرح شام کو ٹھنڈ کا مزا لینے کے لئے لان تیار کرلیں ۔"

مجھے نہیں معلوم تھا کہ اس طرح کی جانچ پرتال میں بھاشا کی بہت ضرورت ہوتی ہے ۔ صرف جھوٹ کو سچ دکھانے کے لئے اتھک بھاشن ضروری ہیں اور یہاں ضرور بھاشا بہت بڑا کام کرتی ہے !

جہاں تک سرکاری کاغذوں میں مجرمانہ ادل بدل کا سمبندھ ہے اگر اُپ منتری راوت اپنے آس پاس کھوج کریں تو اُنہیں اور ایسی بہت سی ادل بدل مل جائیں گی ۔ میں نے تو اُن میں سے کچھ نمونے کے طور پر لے لئے ہیں اور اُنہیں پردھان منتری کے سپرد کر دیئے ہیں ۔ ادھیکاریوں میں سے وہ ہی ایک آدمی ہیں جن پر بھروسہ کیا جاسکتا ہے کہ وہ اِس سوال پر بے لاگ رخ لیں گے ۔

को यह बान पड़ गई है कि जहां कहीं उनका विरोध हुआ उन्होंने फ़ौरन उसे कम्युनिस्टों या कम्युनिज़्म के सर मढ़ा. यह भी एक अजीब चक्कर है. कोई कांगरेस वाला तो किसी कांगरेसी सरकार की कोई बुराई, ग़लती या कमज़ोरी इसलिये नहीं बताएगा क्योंकि ऐसा करने से उसे अपने ख़िलाफ़ डिसिपलिनरी एकशन लिये जाने का डर है. और अगर कोई ग़ैरकांगरेसी इनसान सरकार की कोई ग़लती बताए या जनता की कोई शिकायत उन तक पहुंचाए तो उसे फ़ौरन पार्टी बन्दी कह कर ख़त्म किया जा सकता है. और फिर कम्युनिज़्म या कम्युनिस्टों के सर पर तो हर टोपी चाहे वह उनके सर पर बैठे या न बैठे जबर्दस्ती चिपकाई ही जा सकती है. लेकिन हम फिर यह कहेंगे कि इस तरह की हलकी चालें न किसी सरकार के मान या उसकी उम्र को बढ़ा सकती हैं और न दुनिया की तारीख़ के धारे को पलट सकती हैं.

12. 9. '52 —सुन्दरलाल

गोरखपुर में मौज ही मौज !

अख़बार वाले पूछते हैं कि क्या मुझे मुख्य मंत्री गोविन्द बल्लभ पंत और उपमंत्री जगन प्रसाद रावत के उन बयानों के जवाब में कुछ नहीं कहना है जो उन्होंने मेरी गोरखपुर अकाल रिपोर्ट पर दिये हैं.

मुख्य मंत्री का कहना है कि मैंने पूरे इलाक़े की जांच नहीं की. इसमें कोई शक नहीं है कि मैंने इस ज़िले की पूरी जनगिन्ती करने की नहीं ठानी. मेरी जांच परताल तो सिर्फ़ इसलिये थी कि अकाल के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी हो जाए. मैंने लगभग 350 मील का चक्कर काटा और क़रीब क़रीब 75000 आदमियों में घूमा. मेरे लिये यह चक्कर ही बहुत काफ़ी था.

उपमंत्री रावत का कहना है कि उन्हें कोई ऐसा आदमी नहीं मिला जिसे 24 घंटे में कुछ न कुछ खाने को न मिला हो. रावत साहब का बयान ठीक होगा क्योंकि पीड़ितों में से ज़ियादातर ने घास की जड़ें तो खाई ही होंगी. मैं अपने भोले पन के कारन इन चीज़ों की गिनती इनसानों की ख़ोराक में नहीं करता.

रावत साहब ने मेरे ऊपर दूसरा इलज़ाम लगाया है कि मैंने दूसरे फ़रीक़ की बातें नहीं सुनीं. मैं अपनी बेवक़ूफ़ी को मानता हूँ कि जिन तीन बातों की जांच परताल मैं कर रहा था उनको वहां पा कर मैं एक नतीजे पर क्यों पहुँच गया. वह बातें यह थीं.

(1) लोग सिर्फ़ खाल और हड्डी के ढांचे क्यों बन गए थे.

کو یہ بان پڑ گئی ہے کہ جہاں کہیں اُن کا ورودھ ہوا اُنہوں نے فوراً اُسے کمیونسٹوں یا کمیونزم کے سر منڈھا. یہ بھی ایک عجیب چکر ہے. کوئی کانگریس والا تو کسی کانگریسی سرکار کی کوئی برائی، غلطی یا کمزوری اِس لئے نہیں بتائیگا کیونکہ ایسا کرنے سے اُسے اپنے خلاف ڈسپلنری ایکشن لئے جانے کا ڈر ہے. اور اگر کوئی غیر کانگریسی اِنسان سرکار کی کوئی غلطی بتائے یا جنتا کی کوئی شکایت اُن تک پہونچائے تو اُسے فوراً پارٹی بندی کہ کر ختم کیا جاسکتا ہے. اور پھر کمیونزم یا کمیونسٹوں کے سر پر تو ہر ٹوپی چاہے وہ اُن کے سر پر بیٹھے یا نہ بیٹھے زبردستی چپکائی ہی جاسکتی ہے. لیکن ہم پھر یہ کہینگے کہ اِس طرح کی ہلکی چالیں نہ کسی سرکار کے مان یا اُس کی عمر کو بڑھا سکتی ہیں اور نہ دنیا کی تاریخ کے دھارے کو پلٹ سکتی ہیں.

12. 9. '52 —سندرلال

گورکھ پور میں موج ہی موج!

اخبار والے پوچھتے ہیں کہ کیا مجھے مکھیہ منتری گووند بلبھ پنت اور اُپ منتری جگن پرشاد راوت کے اُن بیانوں کے جواب میں کچھ نہیں کہنا ہے جو اُنہوں نے میری گورکھ پور اکال رپورٹ پر دیئے ہیں.

مکھیہ منتری کا کہنا ہے کہ میں نے پورے علاقے کی جانچ نہیں کی. اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ میں نے اِس ضلع کی پوری جن گنتی کرنے کی نہیں ٹھانی. میری جانچ پرتال تو صرف اس لئے تھی کہ اکال کے بارے میں تھوڑی بہت جانکاری ہوجائے. میں نے لگ بھگ 350 میل کا چکر کاٹا اور قریب قریب 75000 آدمیوں میں گھوما. میرے لئے یہ چکر ہی بہت کافی تھا.

اُپ منتری راوت کا کہنا ہے کہ اُنہیں کوئی ایسا آدمی نہیں ملا جسے 24 گھنٹے میں کچھ نہ کچھ کھانے کو نہ ملا ہو. راوت صاحب کا بیان ٹھیک ہوگا کیونکہ پیڑتوں میں سے زیادہ تر نے گھاس کی جڑیں تو کھائی ہی ہونگی. میں اپنے بھولے پن کے کارن اِن چیزوں کی گنتی انسانوں کی خوراک میں نہیں کرتا.

راوت صاحب نے میرے اوپر دوسرا الزام لگایا ہے کہ میں نے دوسرے فریق کی باتیں نہیں سنیں. میں اپنی بیوقوفی کو مانتا ہوں کہ جن تین باتوں کی جانچ پرتال میں کر رہا تھا اُن کو وہاں پا کر میں ایک نتیجے پر کیوں پہونچ گیا. وہ باتیں یہ تھیں.

(1) لوگ صرف کھال اور ہڈی کے ڈھانچے کیوں بن گئے تھے.

ाई शिब्बनलाल और भाई कुमारप्पा की नियत पर भी हमले ये गए हैं. देश के सेवक जो कल तक एक दूसरे के साथ म करते रहे हैं अपनी बहसों में इतने नीचे क्यों उतर आवें ! ाई कुमारप्पा की और अपनी बाबत हमें यह नम्रता के साथ सकते हैं कि न हमारे पास सरकारी या ग़ैरसरकारी ोई इस तरह का पद है जिसे संभाले रखने की में चिन्ता हो और न आगे के लिये किसी ऐसे की लालसा है. भाई शिब्बनलाल की बाबत हम केवल तना ही कह सकते हैं कि इस नोट को लिखते समय हमें ल्दी से यह याद भी नहीं आ रहा कि भाई शिब्बनलाल जकल किस पार्टी में हैं. हमें इस में भी कोई शक नहीं कम से कम गोरखपुर के मामले में जनता के दुखों को र करने की चिनता जितनी किसी सरकारी मिनिस्टर को ो सकती है उससे कम भाई शिब्बनलाल सकसेना को ीं. मुमकिन है कुछ ज़ियादा ही हो.

हमें दुख है कि सूबे की सरकार जनता के दुखों को र करने की चिन्ता में जितनी दिखाई देती है उससे धिक इस बात को साबित करने की कोशिश में नज़र ाती है कि उसके राज के अन्दर कोई भूक से नहीं मरा. म यह भी भूल जाते हैं कि सरकारी एलान या इनकार ा हुकूमती या वकीली बहसें न असल घटनाओं को बदल सकती हैं, न जनता के दिलों को जीत सकती हैं और न सरकार या सरकारी लोगों के मान को बढ़ा सकती है. हमें यह देख कर भी दुख हुआ कि हुकूमत से बाहर जनता के आम सेवकों और पुराने काम करने वालों का ध्यान भी अब जनता के दुखों की तरफ़ कम और अपने अपने धन्दों और आगे के चुनाव में कामयाब होने की तरफ़ ज़ियादा . इसमें शक नहीं कि राजकाजी आज़ादी मिल जाने ने मारे सब के चरित्र को नीचे गिराया है ऊपर नहीं उठाया.

फिर भी गोरखपुर से चलते चलते हमें कुछ आशा की किरन दिखाई दी. सूबे की सरकार अपनी कोशिशों को बढ़ा रही है. हुकूमत से बाहर काम करने वालों में भी कुछ हलचल दिखाई दी. हमें गोरखपुर की जनता का भला इसी में दिखाई देता है कि वहां की जनता के दुखों को दूर करने के लिये सरकार, उसके मिनिस्टर और अफ़सर और हुकूमत से बाहर के सब देश सेवक पूरी तरह मिल कर काम करें और इस वक़्ती मुसीबत को दूर करने के बाद बल्कि इसके साथ साथ इस इलाक़े की ग़रीबी को हमेशा को दूर करने के लिये इन टिकाऊ तदबीरों की तरफ़ भी ध्यान दें जिनकी ऊपर के बयान में चर्चा की गई है.

हमने हाल में एक बयान में यह भी देखा कि गोरखपुर के मामले को कम्युनिस्टों के साथ जोड़ने की कोशिश की जा रही है. हमारे कुछ सरकारी और ग़ैरसरकारी भाइयों

بھائی شبن لال اور بھائی کمارپا کی نیت پر بھی حملے کئے گئے ہیں. دیش کے سیوک جو کل تک ایک دوسرے کے ساتھ کام کرتے رہے ہیں اپنی بحثوں میں اتنے نیچے کیوں اتر آویں ! بھائی کمارپا کی اور اپنی بابت ہم یہ نمرتا کے ساتھ کہ سکتے ہیں کہ نہ ہمارے پاس سرکاری یا غیر سرکاری کوئی اسطرح کا پد ہے جسے سنبھالے رکھنے کی ہمیں چنتا ہو اور نہ آگے کے لئے کسی ایسے پد کی لالسا ہے . بھائی شبن لال کی بابت ہم کیول اتنا ہی کہ سکتے ہیں کہ اس نوٹ کو لکھتے سمے ہمیں جلدی سے یہ یاد بھی نہیں آ رہا ہے کہ بھائی شبن لال آج کل کس پارٹی میں ہیں. ہمیں اس میں بھی کوئی شک نہیں کہ کم سے کم گورکھپور کے معاملے میں جنتا کے دکھوں کو دور کرنے کی چنتا جتنی کسی سرکاری منسٹر کو ہوسکتی ہے اس سے کم بھائی شبن لال سکسینا کو نہیں. ممکن ہے کچھ زیادہ ہی ہو .

ہمیں دکھ ہے کہ صوبے کی سرکار جنتا کے دکھوں کو دور کرنے کی چنتا میں جتنی دکھائی دیتی ہے اس سے ادھک اس بات کو ثابت کرنے کی کوشش میں نظر آتی ہے کہ اس کے راج کے اندر کوئی بھوک سے نہیں مرا. ہم یہ بھی بھول جاتے ہیں کہ سرکاری اعلان یا انکار یا حکومتی یا وکیلی بحثیں نہ اصل گھٹناؤں کو بدل سکتی ہیں، نہ جنتا کے دلوں کو جیت سکتی ہیں اور نہ سرکار یا سرکاری لوگوں کے مان کو بڑھا سکتی ہیں. ہمیں یہ دیکھ کر بھی دکھ ہوا کہ حکومت سے باہر جنتا کے عام سیوکوں اور پرانے کام کرنے والوں کا دھیان بھی اب جنتا کے دکھوں کی طرف کم اور اپنے اپنے دھندوں اور آگے کے چناؤ میں کامیاب ہونے کی طرف زیادہ ہے . اس میں شک نہیں کہ راج کاجی آزادی مل جانے نے ہمارے سب کے چرتر کو نیچے گرایا ہے اوپر نہیں اٹھایا .

پھر بھی گورکھپور سے چلتے چلتے ہمیں کچھ آشا کی کرن دکھائی دی . صوبے کی سرکار اپنی کوششوں کو بڑھا رہی ہے . حکومت سے باہر کام کرنے والوں میں بھی کچھ ہلچل دکھائی دی . ہمیں گورکھپور کی جنتا کا بھلا اسی میں دکھائی دیتا ہے کہ وہاں کی جنتا کے دکھوں کو دور کرنے کے لئے سرکار، اس کے منسٹر اور افسر اور حکومت سے باہر کے سب دیش سیوک پوری طرح مل کر کام کریں اور اس وقتی مصیبت کو دور کرنے کے بعد بلکہ اس کے ساتھ ساتھ اس علاقے کی غریبی کو ہمیشہ کو دور کرنے کے لئے ان ٹکاؤ تدبیروں کی طرف بھی دھیان دیں جن کی اوپر کے بیان میں چرچا کی گئی ہے .

ہم نے حال میں ایک بیان میں یہ بھی دیکھا کہ گورکھپور کے معاملے کو کمیونسٹوں کے ساتھ جوڑنے کی کوشش کی جا رہی ہے. ہمارے کچھ سرکاری اور غیر سرکاری بھائیوں

किशोरलाल जी मशरूवाला या डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा तीनों में से कोई आ कर खुद तहक़ीक़ात करके इस बारे में अपना फ़ैसला दे दें और अगर वह फ़ैसला उनके खिलाफ़ हो तो वह अपनी ग़लती मान कर अनशन तोड़ देंगे और अगर फ़ैसला सरकार के खिलाफ़ और उन के हक़ में हो तो जब तक सरकार अपनी ग़लती न माने और लोगों के दुख को दूर करने के लिये मुनासिब क़दम न उठाए तब तक वह अनशन जारी रखेंगे और ज़रूरत होगी तो अपने प्रान भी दे देंगे.

इस पर किसी कांगरेसी भाई ने गोरखपुर से भाई कुमारप्पा को वर्धा तार दिया कि आप फ़ौरन गोरखपुर आकर हालत की जांच करें. भाई कुमारप्पा गोरखपुर जाने के इरादे से इलाहाबाद आए. उन्होंने मुझ से चाहा कि मैं भी इस काम के लिये उनके साथ गोरखपुर जाऊं. मेरे पास फिर वक़्त की कमी थी. मैंने सोचा कि मैं अपनी जगह किसी तजुर्बेकार वकील या बैरिस्टर को कुमारप्पा जी के साथ कर दूँ. एक एक कर मैंने श्री के. के. भट्टाचार्य, श्री टी. एन. सप्रू, श्री सुरेन्द्र नाथ वर्मा और श्री मुहम्मद अहमद काज़मी से प्रार्थना की कि वह चन्द रोज़ के लिये कुमारप्पा जी के साथ चले जाएं. लेकिन वक़्त की कमी और अपने दूसरे ज़रूरी कामों की वजह से इन में से कोई भी जल्दी तैयार न हो सका. मजबूर हो कर मैंने कुमारप्पा जी का साथ देना तय किया. कुमारप्पा जी 26 अगस्त को गोरखपुर के लिये रवाना हो गए. 27 की शाम को इलाहाबाद से चल कर 28 की सुबह मैं भाई कुमारप्पा से जा मिला. इसके बाद जो कुछ हम दोनों ने अपनी आंखों से देखा और जिन नतीजों पर हम पहुंचे वह ऊपर के बयान में दर्ज हैं.

हमें अफ़सोस है कि इसके बाद भी सरकार और भाई शिब्बनलाल के बीच बहसा बहसी बराबर जारी है. यहां हम केवल इतना दुहरा देना ज़रूरी समझते हैं कि ऊपर के बयान की जिस पर भाई कुमारप्पा और हमारे दोनों के दस्तख़त हैं एक एक बात सोलह आने सच है. जब हम उन गावों में गए, हमने लोगों के बयान सुने, अपनी आंखों से उनकी हालत को देखा, दिल कड़ा कर के उन से जिरह की और घरों में घुस घुस कर उनके कोठी कोठलों और रसोई के बरतनों की तलाशी ली तो जो हालत ऊपर के बयान में दी गई है असल हालत उस से कुछ बदतर ही थी बेहतर नहीं.

देश के कुछ अख़बारों ने हमारे बयान के बाद इस सवाल पर ख़ासे अच्छे नोट लिखे हैं और सरकार और जनता दोनों को मुनासिब और नेक सलाह दी है. लेकिन हमें यह देख कर और भी दुख हुआ कि सरकारी बयानों में और सरकार की हां में हां मिलाने वाले कुछ अख़बारों में

کشورلال جی مشروالا یا ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا تینوں میں کوئی سے آکر خود تحقیقات کر کے اس بارے میں اپنا فیصلہ دے دیں اور اگر وہ فیصلہ اُن کے خلاف ہو تو وہ اپنی غلطی مان کر اَن شن توڑ دیں گے اور اگر فیصلہ سرکار کے خلاف اور اُن کے حق میں ہو تو جب تک سرکار اپنی غلطی نہ مانے اور لوگوں کے دکھ دور کرنے کے لئے مناسب قدم نہ اُٹھائے تب تک وہ اَن شن جاری رکھیں گے اور ضرورت ہوگی تو اپنے پران بھی دے دیں گے۔

اس پر کسی کانگریسی بھائی نے گورکھ پور سے بھائی کمارپپا کو وردھا تار دیا کہ آپ فوراً گورکھ پور آکر حالت کی جانچ کریں۔ بھائی کمارپپا گورکھ پور جانے کے ارادے سے الہ آباد آئے۔ اُنہوں نے مجھ سے چاہا کہ میں بھی اس کام کے لئے اُن کے ساتھ گورکھ پور جاؤں۔ میرے پاس پھر وقت کی کمی تھی۔ میں نے سوچا کہ میں اپنی جگہ کسی تجربہ کار وکیل یا بیرسٹر کو کمارپپا جی کے ساتھ کردوں۔ ایک ایک کر میں نے شری کے. کے. بھٹا چاریہ، شری ٹی. این. سپرو، شری سریندر ناتھ ورما اور شری محمد احمد کاظمی سے پرارتھنا کی کہ وہ چند روز کے لئے کمارپپا جی کے ساتھ چلے جائیں۔ لیکن وقت کی کمی اور اپنے دوسرے ضروری کاموں کی وجہ سے اِن میں سے کوئی بھی جلدی تیار نہ ہوسکا۔ مجبور ہو کر میں نے کمارپپا جی کا ساتھ دینا طے کیا۔ کمارپپا جی 26 اگست کو گورکھ پور کے لئے روانہ ہو گئے۔ 27 کی شام کو الہ آباد سے چل کر 28 کی صبح میں بھائی کمارپپا سے جا ملا۔ اِس کے بعد جو کچھ ہم دونوں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا اور جن نتیجوں پر ہم پہونچے وہ اوپر کے بیان میں درج ہیں۔

ہمیں افسوس ہے کہ اس کے بعد بھی سرکار اور بھائی شبن لال کے بیچ بحثا بحثی برابر جاری ہے۔ یہاں ہم کیول اِتنا دہرا دینا ضروری سمجھتے ہیں کہ اوپر کے بیان کی جس پر بھائی کمارپپا اور ہمارے دونوں کے دستخط ہیں ایک ایک بات سولہ آنے سچ ہے۔ جب ہم اُن گاؤوں میں گئے ہم نے لوگوں کے بیان سنے، اپنی آنکھوں سے اُن کی حالت کو دیکھا، دل کڑا کر کے اُن سے جرح کی اور گھروں میں گھس گھس کر اُن کے کوٹھی کٹھلوں اور رسوئی کے برتنوں کی تلاشی لی تو جو حالت اوپر کے بیان میں دی گئی ہے اصل حالت اُس سے کچھ بدتر ہی تھی بہتر نہیں۔

دیش کے کچھ اخباروں نے ہمارے بیان کے بعد اِس سوال پر خاصے اچھے نوٹ لکھے ہیں اور سرکار اور جنتا دونوں کو مناسب اور نیک صلاح دی ہے۔ لیکن ہمیں یہ دیکھ کر اور بھی دکھ ہوا کہ سرکاری بیانوں میں اور سرکار کی ہاں میں ہاں ملانے والے کچھ اخباروں میں

गन्ना उगाना चाहिये जितना वह अपने कोल्हुओं में पेर कर गुड़ और खंडसारी बना सकें.

भूमि सुधार

गोरखपुर जिला भूमि के बिलकुल बेहिसाब बटवारे के लिये भी बदनाम है और लोगों की बेहद ग़रीबी की यह भी एक ख़ास वजह है. लम्बे अरसे के प्रोग्राम में सही ढंग का भूमि सुधार और मुनासिब और बराबरी के आधार पर भूमि का फिर से बटवारा होना चाहिये, जिससे कोई भी खेत जोतने वाला बिना किसी ऐसी ज़मीन के न रह जाय जो उसकी अपनी पूरी मिलकियत न हो. मशीनों के ज़रिये मिली जुली खेती या ज़बर्दस्ती की सहकारी खेती से ग़रीब लोगों को कोई भी असली लाभ नहीं मिलेगा.

नतीजा

अगर हम सचमुच ग़रीब देहातियों का भला चाहते हैं तो हमें इस मामले में चीन, कश्मीर और बर्मा की राह को अपनाना चाहिये. उसमें हम अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ हेर फेर कर सकते हैं. अगर हिन्दुस्तान को ज़िन्दा रखना है तो हमें अपने गांवों को ज़रूर ख़ुशहाल बनाना चाहिये और उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लायक़ कर देना चाहिये. गोरखपुर में इस ढंग पर सच्ची सेवा करने का सरकार, पब्लिक काम करने वालों और जनता सब को अच्छा मौक़ा है. हम आशा करते है कि हम सब इस संकट से फ़ायदा उठायंगे.

इलाहाबाद
6 सितम्बर 1952

—सुन्दरलाल
—जे. सी. कुमारप्पा

यू. पी. सरकार और गोरखपुर

गोरखपुर में अनाज की कमी और वहां जनता की सीबतों की ख़बरें बहुत दिनों से आ रही थीं. कई बार मुझ से भी यह कहा गया कि मैं जा कर वहां की हालत को देखूं. सेहत की ख़राबी और वक़्त की कमी के कारन मैं यह न कर सका. अख़बारों के अन्दर श्री शिब्बनलाल सकसेना और यू. पी. सरका में बहस भी चल रही थी. शिब्बनलाल जी का कहना था कि गोरखपुर ज़िले में खाना न मिलने के कारन लोग सैकड़ों की तादाद में मर रहे हैं. सरकार नाज की कमी और लोगों की दिक़्क़त को तो मानती थी पर मौतों से साफ़ इनकार करती थी. लोगों की दिक़्क़त को दूर करने के लिये सरकार ने कुछ क़दम भी उठाए. शिब्बनलाल जी का कहना था कि वह क़दम नाकाफ़ी हैं. शिब्बनलाल जी ने इस बात पर कि भूक से लोगों के मरने के बारे में सरकार ने उनके बयान को ग़लत ठहराया था अनशन शुरू कर दिया और साथ ही यह एलान कर दिया कि अगर विनोबा जी,

گنا اُگانا چاہئے جتنا وہ اپنے کولہوؤں میں پیر کر گڑ اور کھنڈساری بناسکیں ۔

بھومی سدھار

گورکھپور ضلع بھومی کے بالکل بے حساب بٹوارے کے لئے بھی بدنام ہے اور لوگوں کی بے حد غریبی کی یہ بھی ایک خاص وجہ ہے ۔ لمبے عرصے کے پروگرام میں صحیح ڈھنگ کا بھومی سدھار اور مناسب اور برابری کے آدھار پر بھومی کا پھر سے بٹوارہ ہونا چاہئے، جس سے کوئی بھی کھیت جوتنے والا بنا کسی ایسی زمین کے نہ رہ جائے جو اُس کی اپنی پوری ملکیت نہ ہو. مشینوں کے ذریعے ملی جلی کھیتی یا زبردستی کی سہکاری کھیتی سے غریب لوگوں کو کوئی بھی اصلی لابھ نہیں ملے گا ۔

نتیجہ

اگر ہم سچ مچ غریب دیہاتیوں کا بھلا چاہتے ہیں تو ہمیں اِس معاملے میں چین، کشمیر اور برما کی راہ کو اپنانا چاہئے ۔ اس میں ہم اپنی ضرورت کے مطابق ہیر پھیر کرسکتے ہیں ۔ اگر ہندوستان کو زندہ رکھنا ہے تو ہمیں اپنے گاؤں کو ضرور خوش‌حال بنانا چاہئے اور انہیں اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کے لائق کردینا چاہئے ۔ گورکھپور میں اِس ڈھنگ پر سچی سیوا کرنے کا سرکار، پبلک کام کرنے والوں اور جنتا سب کو اچھا موقع ہے. ہم آشا کرتے ہیں کہ ہم سب اِس سنکٹ سے فائدہ اُٹھائیں گے ۔

الہ‌آباد
6 ستمبر 1952

—سندر لال
—جے . سی . کمارپا

یوپی سرکار اور گورکھ پور

گورکھ پور میں اناج کی کمی اور وہاں جنتا کی مصیبتوں کی خبریں بہت دنوں سے آرہی تھیں ۔ کئی بار مجھ سے بھی یہ کہا گیا کہ میں جا کر وہاں کی حالت کو دیکھوں. صحت کی خرابی اور وقت کی کمی کے کارن میں یہ نہ کر سکا ۔ اخباروں کے اندر شری شبن لال سکسینا اور یو ۔ پی ۔ سرکار میں بحث بھی چل رہی تھی ۔ شبن لال جی کا کہنا تھا کہ گورکھ پور ضلعے میں کھانا نہ ملنے کے کارن لوگ سیکڑوں کی تعداد میں مر رہے ہیں. سرکار ناج کی کمی اور لوگوں کی دقت کو تو مانتی تھی پر موتوں سے صاف انکار کرتی تھی ۔ لوگوں کی دقت کو دور کرنے کے لئے سرکار نے کچھ قدم بھی اُٹھائے ۔ شبن لال جی کا کہنا تھا کہ وہ قدم ناکافی ہیں ۔ شبن لال جی نے اِس بات پر کہ بھوک سے لوگوں کے مرنے کے بارے میں سرکار نے اُن کے بیان کو غلط ٹھہرایا تھا اَن شن شروع کر دیا اور ساتھ ہی یہ اعلان کر دیا کہ اگر ونوبا جی،

बम्बई, कलकत्ता और हिन्दुस्तान के बाहर भी हज़ारों की तादाद में मज़दूरी करने जाते हैं क्योंकि उनके ज़िले में खाने और काम की कमी है.

घरेलू धन्दे नाम की लगभग कोई चीज़ गोरखपुर ज़िले में नहीं है जो खेती की कमी को पूरी कर सके या जो गिरानी के वक़्त लोगों की अनाज ख़रीदने की ताक़त को बनाए रख कर उनकी मदद कर सके. हमने सुना कि गोरखपुर ज़िले के कुछ हिस्सों में, जिनमें फ़रेन्दा और महराजगंज भी शामिल हैं, गुड़ और खंडसारी के फलते फूलते धन्दे थे जो ज़िले में चीनी की मिलों के हो जाने से बरबाद हो गए हैं. इसलिये इलाज दो तरह का होना चाहिये. एक थोड़े अरसे का और दूसरा लम्बे अरसे का.

थोड़े अरसे का प्रोग्राम

थोड़े अरसे के प्रोग्राम में यह चीज़ें होनी चाहियें. गिरानी के हर इलाक़े में ग़ल्ले का तुरंत पहुंचाना और बांटना, रिलीफ़ के कामों को इस समय के मुक़ाबले में कई गुना बढ़ाना ताकि सब को मदद पहुंच सके और जिसे ज़रूरत हो और जो इस हालत में न हो कि रिलीफ़ कैम्पों में जा सके उसकी रुपए से मदद करना

लम्बे अरसे का प्रोग्राम

लम्बे अरसे के प्रोग्राम में जो और भी ज़ियादा ज़रूरी है यह बातें होनी चाहियें. रूई और ऊन की कताई, चमड़े का सिझाना और गुड़ और खंडसारी के उद्योग जैसे घरेलू उद्योगों का संगठन, उन अभागे इलाक़ों से ग़रीबी को हटाने के लिये यह छोटे छोटे धंदे बिलकुल ज़रूरी हैं. इनमें सरकार और वहां के कारकर्ताओं को तुरन्त हाथ लगा देना चाहिये.

बाढ़ की रोक थाम

लम्बे अरसे के प्रोग्राम में नहरों, कुओं और पानी के हौज़ बना कर नदियों की रोक थाम भी शामिल होनी चाहिये. इन्हें बड़ी स्कीमों के ढंग पर जिनमें बड़ी बड़ी मशीनों और बहुत पैसों की ज़रूरत है न कर के छोटे पैमाने पर करना चाहिये जैसे कि इस तरह की चीज़ें जापान और नये चीन में हो रही हैं. इसमें मशीनों और लम्बी रक़मों के बजाय आदमी की ताक़त और लोगों की इच्छा से बनी हुई सहकारी समितियों पर ज़ियादा भरोसा करना चाहिये.

ठीक फ़सल का उगाना

गांव वालों को व्यापारी फ़सलों की जगह अनाज की फ़सलों को बोने के लिये समझाना चाहिये. मिलों के लिये गन्ना उगाना उनका काम नहीं है. उससे जो कुछ थोड़ा सा पैसा उन्हें मिलता है वह सिर्फ़ धोखा है जिससे आख़िर में भुकमरी और मौत होती है. उन्हें सिर्फ़ उतना ही

بمبئی، کلکتہ اور ہندستان کے باہر بھی ہزاروں کی تعداد میں مزدوری کرنے جاتے ہیں کیونکہ اُن کے ضلع میں کھانے اور کام کی کمی ہے ۔

گھریلو دھندے نام کی لگ بھگ کوئی چیز گورکھپور ضلع میں نہیں ہے جو کھیتی کی کمی کو پوری کرسکے یا جو گرانی کے وقت لوگوں کی اناج خریدنے کی طاقت کو بنائے رکھ کر اُن کی مدد کرسکے ۔ ہم نے سنا کہ گورکھپور ضلع کے کچھ حصوں میں، جن میں پھرندا اور مہراج گنج بھی شامل ہیں، گڑ اور کھنڈساری کے پھلتے پھولتے دھندے تھے جو ضلع میں چینی کی ملوں کے ہو جانے سے برباد ہوگئے ہیں. اِس لئے علاج دو طرح کا ہونا چاہئے. ایک تھوڑے عرصے کا اور دوسرا لمبے عرصے کا ۔

تھوڑے عرصے کا پروگرام

تھوڑے عرصے کے پروگرام میں یہ چیزیں ہونی چاہئیں. گرانی کے ہر علاقے میں غلے کا ترنت پہنچانا اور بانٹنا، رلیف کے کاموں کو اِس سمے کے مقابلے میں کئی گنا بڑھانا تاکہ سب کو مدد پہونچ سکے اور جسے ضرورت ہو اور جو اِس حالت میں نہ ہو کہ ریلیف کیمپوں میں جاسکے اُس کی روپئے سے مدد کرنا ۔

لمبے عرصے کا پروگرام

لمبے عرصے کے پروگرام میں جو اور بھی زیادہ ضروری ہے یہ باتیں ہونی چاہئیں ۔ روئی اور اون کی کتائی، چمڑے کا سجھانا اور گڑ اور کھنڈ ساری کے اُدیوگ جیسے گھریلو اُدیوگوں کا سنگھٹن، اُن ابھاگے علاقوں سے غریبی کو ہٹانے کے لئے یہ چھوٹے چھوٹے دھندے بالکل ضروری ہیں. ان میں سرکار اور وہاں کے کارکرتاؤں کو ترنت ہاتھ لگا دینا چاہئے ۔

باڑھ کی روک تھام

لمبے عرصے کے پروگرام میں نہروں، کوؤں اور پانی کے حوض بناکر ندیوں کی روک تھام بھی شامل ہونی چاہئے ۔ انہیں بڑی اسکیموں کے ڈھنگ پر جن میں بڑی بڑی مشینوں اور بہت پیسوں کی ضرورت ہے نہ کرکے چھوٹے پیمانے پر کرنا چاہئے جیسے کہ اِس طرح کی چیزیں جاپان اور نئے چین میں ہو رہی ہیں ۔ اِس میں مشینوں اور لمبی رقموں کے بجائے آدمی کی طاقت اور لوگوں کی اِچھا سے بنی ہوئی سہکاری سمتیوں پر زیادہ بھروسہ کرنا چاہئے ۔

ٹھیک فصل کا اُگانا

گاؤں والوں کو ویاپاری فصلوں کی جگہ اناج کی فصلوں کو بونے کے لئے سمجھانا چاہئے ۔ ملوں کے لئے گنا اُگانا اُن کا کام نہیں ہے ۔ اُس سے جو کچھ تھوڑا سا پیسہ اُنہیں ملتا ہے وہ صرف دھوکا ہے جس سے آخیر میں بھکمری اور موت ہوتی ہے ۔ اُنہیں صرف اُتنا ہی

सहारा ले सकें. हजारों एकड़ बढ़िया जमीन गन्ने की खेती में इस्तेमाल हो रही है. उस जमीन से लोगों को चावल या दूसरे अनाज की फ़सलें मिल सकती थीं. ऐसी जगह जहां पर ग़ल्ले की कमी हो कुछ लोगों का गन्ना बोना अर्थशास्त्र में अक़्ल के खिलाफ़ है और घाटे की चीज़ है. चीनी की मिलों से पहले कुछ साल जो फ़ायदा होता है उसकी वजह से यह किसान ऐसे फंस गए हैं कि निकलने में बड़ी मुश्किल पड़ रही है.

"लोगों की मुसीबतों के लिये बहुत ज़ियादा सबूत की जरूरत नहीं है और उसके लिये हिसाब की केवल इतनी जानकारी की जरूरत है जिससे उनकी पसलियां और हड्डियां गिनी जा सकें. कुछ गावों में मेरा घुसना किसी मातम के घर में घुसने जैसा था. ज्यों ही औरतों ने किसी हमदर्द को देखा वह उसका स्वागत मातम और आंसुओं से करती थीं. ऐसी मुसीबत में फंसे जन समूह की मदद करने के लायक़ न होने पर बड़ा अफ़सोस होता था.

"मुझे यह देख कर भी बड़ा दर्द होता था कि आम जनता इस हालत को सुधारने के लिये लगभग कुछ भी कोशिश नहीं कर रही है. सब यह सोचते हैं कि जिम्मेदारी सरकार की है. पर मुश्किल से ही कोई ऐसा मिलेगा जिसमें इतना जोश हो कि रिलीफ़ का कोई काम खुद शुरू करे. मुझे यह देख कर बड़ी तकलीफ़ हुई कि पहले के रचनात्मक काम करने वाले उदासीन थे और इस काम में बहुत कम दिलचस्पी लेते थे. लोगों में राजकाजी जागृति समाजिक हमदर्दी से कहीं ज़ियादा है. आज़ादी मिलने के बाद इसकी उम्मीद नहीं थी. मुझे ऐसा लगता है कि हमारे रचनात्मक कामों ने हम में यह क़ाबलियत पैदा नहीं की कि इस तरह के संकट के समय हम काम कर सकें. मुझे आशा है कि कम से कम अब इस जिम्मेवारी को संभालने के लिये प्राइवेट कमेटियां बनेंगी. यह एक ऐसा मौक़ा है जब कि नई पीढ़ी को आगे चल कर नेता बनने के लिये ट्रेनिंग दी जा सकती है अगर उन्हें कालिजों से निकाल कर अकाल पीड़ितों की मदद के प्रोग्राम में हिस्सा लेने दिया जाय. मुझे डर है कि इस मौक़े का उपयोग आने वाले समय के नेताओं को तैयार करने के लिये नहीं किया जा रहा है."

इलाज

अब हमें इस मुसीबत के इलाज पर कुछ विचार करना चाहिये. गोरखपुर के लोगों की ग़रीबी की समस्या कोई नई समस्या नहीं है. उत्तर प्रदेश के कई और पूर्वी ज़िलों में भी यह समस्या बहुत पुरानी है. गोरखपुर के ज़िले में बारी बारी सूखा और बाढ़ की वजह से बराबर अकाल पड़ा करते हैं. गावों में ज़ियादातर लोगों को बीस साल से ठीक तरह का खाना नहीं मिला है. गोरखपुर के लोग बराबर कानपुर,

سہارا لے سکیں۔ ہزاروں ایکڑ بڑھیا زمین گنے کی کھیتی میں استعمال ہو رہی ہے ۔ اس زمین سے لوگوں کو چاول یا دوسرے اناج کی فصلیں مل سکتی تھیں ۔ ایسی جگہ جہاں پر غلے کی کمی ہو کچھ لوگوں کا گنا بونا ارتھ شاستر میں عقل کے خلاف ہے اور گھاٹے کی چیز ہے ۔ چینی کی ملوں سے پہلے کچھ سال جو فائدہ ہوتا ہے اس کی وجہ سے یہ کسان ایسے پھنس گئے ہیں کہ نکلنے میں بڑی مشکل پڑ رہی ہے ۔

"لوگوں کی مصیبتوں کے لئے بہت زیادہ ثبوت کی ضرورت نہیں ہے اور اس کے لئے حساب کی کیول اتنی جانکاری کی ضرورت ہے جس سے ان کی پسلیاں اور ہڈیاں گنی جاسکیں ۔ کچھ گاؤں میں میرا گھسنا کسی ماتم کے گھر میں گھسنے جیسا تھا ۔ جیوں ہی عورتوں نے کسی ہمدرد کو دیکھا وہ اس کا سواگت ماتم اور آنسوؤں سے کرتی تھیں۔ ایسی مصیبت میں پھنسے جن سموہ کی مدد کرنے کے لائق نہ ہونے پر بڑا افسوس ہوتا تھا ۔

"مجھے یہ دیکھ کر بھی بڑا درد ہوتا تھا کہ عام جنتا اس حالت کو سدھارنے کے لئے لگ بھگ کچھ بھی کوشش نہیں کر رہی ہے ۔ سب یہ سوچتے ہیں کہ ذمہ داری سرکار کی ہے۔ پر مشکل سے ہی کوئی ایسا ملے گا جس میں اتنا جوش ہو کہ ریلیف کا کوئی کام خود شروع کرے ۔ مجھے یہ دیکھ کر بڑی تکلیف ہوئی کہ پہلے کے رچناتمک کام کرنے والے اداسین تھے اور اس کام میں بہت کم دلچسپی لیتے تھے۔ لوگوں میں راج کاجی جاگرتی سماجک ہمدردی سے کہیں زیادہ ہے ۔ آزادی ملنے کے بعد اس کی امید نہیں تھی۔ مجھے ایسا لگتا ہے کہ ہمارے رچناتمک کاموں نے ہم میں یہ قابلیت پیدا نہیں کی کہ اس طرح کے سنکٹ کے سمے ہم کام کرسکیں ۔ مجھے آشا ہے کہ کم سے کم اب اس ذمہ داری سنبھالنے کے لئے پرائیویٹ کمیٹیاں بنیں گی ۔ یہ ایک ایسا موقع ہے جب کہ نئی پیڑھی کو آگے چل کر نیتا بننے کے لئے ٹریننگ دی جاسکتی ہے اگر انہیں کالجوں سے نکال کر اکال پیڑتوں کی مدد کے پروگرام میں حصہ لینے دیا جائے ۔ مجھے ڈر ہے کہ اس موقعہ کا اپیوگ آنے والے سمے کے نیتاؤں کو تیار کرنے کے لئے نہیں کیا جا رہا ہے ۔"

علاج

اب ہمیں اس مصیبت کے علاج پر کچھ وچار کرنا چاہئے ۔ گورکھ پور کے لوگوں کی غریبی کی سمسیا کوئی نئی سمسیا نہیں ہے۔ اترپردیش کے کئی اور پوربی ضلعوں میں بھی یہ سمسیا بہت پرانی ہے ۔ گورکھپور کے ضلعے میں باری باری سوکھا اور باڑھ کی وجہ سے برابر اکال پڑا کرتے ہیں۔ گاؤں میں زیادہ تر لوگوں کو بیس سال سے ٹھیک طرح کا کھانا نہیں ملا ہے ۔ گورکھپور کے لوگ برابر کانپور،

गए इस तरह की मौतों की सैकड़ों कहानियां मरे हुओं के रिश्तेदारों ने इस तरह सुनाई कि उन पर विश्वास न करने की कोई वजह नहीं थी. हम इन मौतों की तफ़सील या अलग अलग मौतों पर कुछ नहीं कहेंगे. फिर भी हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि अकेले फरेन्दा और महाराज गंज की तहसीलों में पिछले क़रीब दो महीनों के भीतर कम से कम कई सौ आदमी खाने की इस कमी की वजह से मर चुके हैं. अगर हम यह ख़्याल रखें कि लगातार तीन तीन फ़सलें नहीं हुईं और लोगों की ख़रीदारी की ताक़त हमेशा बहुत ही कम रही है, तो इसमें क्या ताज्जुब की बात है. ऐसी हालत में और हो ही क्या सकता था. कोई भी सरकार इन मौतों की ज़िम्मेदारी से अपने को बरी नहीं समझ सकती.

सरकारी काग़ज़ों में अदल बदल

कई जगहों पर सरकारी अफ़सर ख़ास तौर पर पुलिस अफ़सर उन लोगों के पास गए जिन्होंने अपने आदमियों की मौतों को भूक की वजह से हुई लिखाया था, और उनसे धमकी दे कर उनकी रिपोर्टों को बदलने के लिये कहा. हमने कई ऐसे मामले देखे जिनमें इस बात का साफ़ सबूत है कि सरकारी काग़ज़ों में मुजरिमाना अदल बदल की गई है. हमने ऐसे रजिस्टर देखे हैं, जिनमें "भूक से मर गया" को बदल कर "बुख़ार से मर गया" कर दिया गया है. या मौत का कारन "भूकमरी" को बदल कर "बुख़ार" कर दिया गया है. हमारी यह राय है कि ऐसे मामलों की तुरन्त पूरी और ईमानदारी से जांच होनी चाहिये और ऐसी हरकत को सख़्ती से बन्द करना चाहिये. ऐसे मामलों में सरकार या सरकारी अफ़सरों को ऐसे आदमियों को बचाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये.

सरवे

पंडित सुन्दरलाल को इलाहाबाद लौट आना था. डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा फरेन्दा और महराजगंज तहसील के और गांवों में अकेले गए. कुमारप्पा जी ने क़रीब साढ़े तीन सौ मील का सफ़र किया. वह क़रीब 75 हज़ार आदमियों से गांवों में जा कर मिले. ज़ियादातर गांव जिनमें वह गए, बड़ी सड़कों से क़रीब चार पांच मील के भीतर ही थे. इससे यह ज़ाहिर है कि जो कुछ उन्होंने देखा वह अकाल के ख़ित्ते का सब से ख़राब हिस्सा नहीं था. हम यह समझते हैं कि और अन्दर के गांवों की हालत कहीं ज़ियादा ख़राब होगी. अपनी आंखों देखी को बयान करते हुए डाक्टर कुमारप्पा लिखते हैं:

"इन जगहों में लोगों के पास ग़रीबी बचाव से का खेती से मेल खाते हुए रोज़गार या दस्तकारी जैसा कोई और ऐसा ज़रिया नहीं है जिसका मुसीबत के वक़्त किसान

گئے اِس طرح کی موتوں کی سیکڑوں کہانیاں مرے ہوؤں کے رشتے داروں نے اِسطرح سنائیں کہ اُن پر وشواس نہ کرنے کی کوئی وجہ نہیں تھی ۔ ہم اِن موتوں کی تفصیل یا الگ الگ موتوں پر کچھ نہیں کہیں گے ۔ پھر بھی ہمیں اِس میں ذرا بھی شک نہیں ہے کہ اکیلے پھرندا اور مہراج گنج کی تحصیلوں میں پچھلے قریب دو مہینوں کے بھیتر کم سے کم کئی آدمی کھانے کی اس کمی کی وجہ سے مر چکے ہیں ۔ اگر ہم یہ خیال رکھیں کہ لگاتار تین تین فصلیں نہیں ہوئیں اور لوگوں کی خریداری کی طاقت ہمیشہ بہت ہی کم رہی ہے' تو اِس میں کیا تعجب کی بات ہے ۔ ایسی حالت میں اور ہو ہی کیا سکتا تھا ۔ کوئی بھی سرکار اِن موتوں کی ذمہ داری سے اپنے کو بری نہیں سمجھ سکتی ۔

سرکاری کاغذوں میں ادل بدل

کئی جگہوں پر سرکاری افسر خاص طور پر پولیس افسر اُن لوگوں کے پاس گئے جنہوں نے اپنے آدمیوں کی موتوں کو بھوک کی وجہ سے ہوئی لکھایا تھا' اور اُن سے دھمکی دے کر اُن کی رپورٹوں کو بدلنے کے لئے کہا ۔ ہم نے کئی ایسے معاملے دیکھے جن میں اِس بات کا صاف ثبوت ہے کہ سرکاری کاغذوں میں مجرمانہ ادل بدل کی گئی ہے ۔ ہم نے ایسے رجسٹر دیکھے ہیں' جن میں "بھوک سے مر گیا" کو بدل کر "بخار سے مر گیا" کر دیا گیا ہے ۔ یا موت کا کارن "بھکمری" کو بدل کر "بخار" کر دیا گیا ہے ۔ ہماری یہ رائے ہے کہ ایسے معاملوں کی ترنت پوری اور ایمانداری سے جانچ ہونی چاہئے اور ایسی حرکت کو سختی سے بند کرنا چاہئے ۔ ایسے معاملوں میں سرکار یا سرکاری افسروں کو ایسے آدمیوں کو بچانے کی کوشش نہیں کرنی چاہئے ۔

سروے

پنڈت سندر لال کو الہ آباد لوٹ آنا تھا ۔ ڈاکٹر جے ۔ سی ۔ کماریپا پھرندا اور مہراج گنج تحصیل کے اور گاؤں میں اکیلے گئے ۔ کماریپا جی نے قریب ساڑھے تین سو میل کا سفر کیا ۔ وہ قریب 75 ہزار آدمیوں سے گاؤں میں جاکر ملے ۔ زیادہ تر گاؤں جن میں وہ گئے' بڑی سڑکوں سے قریب چار پانچ میل کے بھیتر ہی تھے ۔ اس سے یہ ظاہر ہے کہ جو کچھ انہوں نے دیکھا وہ اکال کے خطے کا سب سے خراب حصہ نہیں تھا ۔ ہم یہ سمجھتے ہیں کہ اور اندر کے گاؤں کی حالت کہیں زیادہ خراب ہوگی ۔ اپنی آنکھوں دیکھی کو بیان کرتے ہوئے ڈاکٹر کماریپا لکھتے ہیں :

"ان جگہوں میں لوگوں کے پاس غریبی سے بچاؤ کا کھیتی سے میل کھاتے ہوئے روزگار یا دستکاری جیسا کوئی اور ایسا ذریعہ نہیں ہے جس کا مصیبت کے وقت کسان

हुए एक कारकर्ता गिर पड़े और उनके पैरों में चोट आ गई.

जनता की हालत

हम तहसील फरेन्दा के कई गांवों में गए. शिवपुर गांव में कई सौ गांव वाले हमें अपनी कहानी सुनाने के लिये इकट्ठा हो गये. उनके मुंह से उनकी कहानी सुनने की कोई ज़रूरत तक नहीं थी. दरजनों बच्चों के सूखे बदन जिन की पसलियां दूर से गिनी जा सकती थीं, उनके निकले हुए पेट और पीले और भूके चेहरों को देख कर दुख होता था. बालिग मर्दों और औरतों की हालत भी किसी मानी में उनसे बेहतर न थी. यह सब देख कर अवध के गांवों के सन 1908 के अकाल के दिनों की याद हमें आ गई. एक के बाद एक लगातार तीन फ़सलें मारी गईं. ज़ियादातर लोगों में अनाज खरीदने की ताक़त बिल्कुल नहीं के बराबर है. इसकी वजह से बहुत से लोग बहुत दिनों से घास के बीजों और खाने और न खाने लायक़ दोनों तरह की घास फूस पर जी रहे थे. इनकी इन खाने की चीज़ों के हमने कई नमूने देखे. हम उनकी झोंपड़ियों में गए और देखा कि उन्होंने सवेरे क्या पकाया था और शाम को वह क्या खाने वाले थे. ऐसी दर्दनाक हालत में कोई अचरज नहीं. गांव की ज़ियादातर आबादी भिकारी हो गई है. हमने उनसे बातें की और उनके गालों पर गिरते हुए आंसुओं के साथ उनकी दर्दनाक कहानी सुना.

भूक से मौतें

अब हम गोरखपुर की भुकमरी के सवाल पर कुछ रोशनी डालेंगे. इस पर बहुत बहस हो चुकी है. यह कहना बहुत मुश्किल है कि भुकमरी के क्या मानी होते हैं. हमें यह नहीं मालूम कि अकाल के क़ानून में भुकमरी की क्या परिभाषा की गई है, और परिभाषा की भी गई है या नहीं. हमारा और ज़ियादातर लोगों का यह तजुरबा है कि बुरे से बुरे अकाल में भी बहुत कम लोग सिर्फ़ भूक से मरते हैं. एक मामूली आदमी बिना खाने के, बिना पानी के नहीं, छै से ले कर दस हफ़्ते तक या उससे भी ज़ियादा ज़िन्दा रह सकता है. पिछले बंगाल के अकाल में मरने वाले तीस लाख आदमियों में से बहुत बड़ी तादाद सिर्फ़ भूक ही से नहीं बल्कि दस्त, पेचिश और बुख़ार जैसी बीमारियों से मरी. यह बीमारियां ऐसी चीज़ों के खाने से हुई थीं जो किसी तरह उन्हें मिल गई थीं, जो खराब और बे नाप तौल थीं और जो उन्होंने कई दिनों या एक हफ़्ते के लगातार भूके रहने के बाद खाई थीं. ऐसी मौतों को "भूक की मौतें", "अकाल की मौतें" या कोई भी और नाम दिया जा सकता है. पर ईमानदारी की बात यह है कि असल में यह मौतें जड़ में भूक ही की मौतें हैं. गोरखपुर ज़िले के जिन गांवों में हम

پر بیٹھے ہوئے ایک کارکرتا گر پڑے اور اُن کے پیروں میں چوٹ آ گئی ۔

جنتا کی حالت

ہم تحصیل پھرندا کے کئی گاؤں میں گئے۔ شیو پور گاؤں میں کئی سو گاؤں والے ہمیں اپنی کہانی سنانے کے لئے اکٹھا ہو گئے ۔ اُن کے منھ سے اُن کی کہانی سن نے کی کوئی ضرورت تک نہیں تھی ۔ درجنوں بچوں کے سوکھے بدن جن کی پسلیاں دور سے گنی جا سکتی تھیں، اُن کے نکلے ہوئے پیٹ اور پیلے اور بھوکے چہروں کو دیکھ کر دکھ ہوتا تھا ۔ بالغ مردوں اور عورتوں کی حالت بھی کسی معنی میں ان سے بہتر نہ تھی ۔ یہ سب دیکھکر اودھ کے گاؤں کے سن 1908 کے اکال کے دنوں کی یاد ہمیں آ گئی ۔ ایک کے بعد ایک لگاتار تین فصلیں ماری گئیں ۔ زیادہ تر لوگوں میں اناج خریدنے کی طاقت بالکل نہیں کے برابر ہے ۔ اسکی وجہ سے بہت سے لوگ بہت دنوں سے گھاس کے بیجوں اور کھانے اور نہ کھانے لائق دونوں طرح کی گھاس پھوس پر جی رہے تھے ۔ اِنکی ان کھانے کی چیزوں کے ہم نے کئی نمونے دیکھے۔ ہم اُنکی جھونپڑیوں میں گئے اور دیکھا کہ اُنھوں نے سویرے کیا پکایا تھا اور شام کو وہ کیا کھانے والے تھے ۔ ایسی درد ناک حالت میں کوئی اچرج نہیں ۔ گاؤں کی زیادہ تر آبادی بھکاری ہوگئی ہے ۔ ہم نے اُن سے باتیں کیں اور اُن کے گالوں پر گرتے ہوئے آنسوں کے ساتھ اُنکی درد ناک کہانی سنا ۔

بھوک سے موتیں ۔

اب ہم گورکھ پور کی بھکمری کے سوال پر کچھ روشنی ڈالیں گے ۔ اس پر بہت بحث ہو چکی ہے ۔ یہ کہنا بہت مشکل ہے کہ بھکمری کے کیا معنی ہوتے ہیں ۔ ہمیں یہ نہیں معلوم کہ اکال کے قانون میں بھکمری کی کیا پریبھاشا کی گئی ہے، اور پریبھاشا کی بھی گئی ہے یا نہیں۔ ہمارا اور زیادہ تر لوگوں کا یہ تجربہ ہے کہ برے سے برے اکال میں بھی بہت کم لوگ صرف بھوک سے مرتے ہیں ۔ ایک معمولی آدمی بنا کھانے کے، بنا پانی کے نہیں، چھ سے لے کر دس ہفتے تک یا اُس سے بھی زیادہ زندہ رہ سکتا ہے ۔ پچھلے بنگال کے اکال میں مرنے والے تیس لاکھ آدمیوں میں سے بہت بڑی تعداد صرف بھوک ہی سے نہیں بلکہ دست، پیچش اور بخار جیسی بیماریوں سے مری ۔ یہ بیماریاں ایسی چیزوں کے کھانے سے ہوئی تھیں جو کسی طرح اُنھیں مل گئی تھیں، جو خراب اور بے ناپ تول تھیں اور جو اُنھوں نے کئی دنوں یا ایک ہفتے کے لگاتار بھوکے رہنے کے بعد کھائی تھیں ۔ ایسی موتوں کو "بھوک کی موتیں" "اکال کی موتیں" یا کوئی بھی اور نام دیا جاسکتا ہے ۔ پر ایمانداری کی بات یہ ہے کہ اصل میں یہ موتیں جڑ میں بھوک ہی کی موتیں ہیں ۔ گورکھ پور ضلع کے جن گاؤں میں ہم

तहसील फरेन्दा गए. हमसे कई ऐसे केन्द्रों पर गए जो सरकार ने अकाल पीड़ितों की मदद के लिये अभी हाल में खोले हैं. हमने वहां पर काम करने वाले कितने ही मज़दूरों और उन केन्द्रों के इन्चार्ज सरकारी नौकरों से बात चीत की. हमें यह मालूम हुआ कि सरकार ने अकाल पीड़ितों की मदद के लिये अब तक तहसील फरेन्दा और महराज गंज में, जहां की हालत सबसे खराब थी, दोनों तहसीलों को मिला कर कुल ऐसे लगभग पचास केन्द्र खोल रखे थे. हमें यह भी मालूम हुआ कि इन केन्द्रों पर काम में लगे हुए मज़दूरों की कुल गिनती क़रीब बीस हज़ार थी और क़रीब एक लाख ने वहां काम करने के लिये अर्ज़ियां दी थीं. इन में से ज़ियादातर को इन रिलीफ़ केन्द्रों में दाख़ले के लिये "कार्ड" नहीं दिये गए थे. कुछ मज़दूर रोज़ अपने घर से 6 से 8 मील तक पैदल चल कर इन रिलीफ़ केन्द्रों में काम करने आते थे. अर्ज़ियां देने वालों में से कुछ से कहा गया कि अपने घरों से चौदह मील दूर के केन्द्रों में जा कर काम करें. अधिकतर सड़कें बेहद ख़राब थीं जिसकी वजह से ज़ियादा-तर अर्ज़ियां देने वाले इस सलाह से फ़ायदा नहीं उठा पाते थे. नामुमकिन था कि लोग, ख़ास तौर पर भूक से मरते हुए लोग, रोज़ काम करने के लिये चौदह मील पैदल जायं और फिर चौदह मील चल कर अपने गावों को लौटें. इन कैम्पों में थोड़ी देर रह कर हम तीन नतीजों पर पहुंचे. पहला यह कि सरकार ने रिलीफ़ का काम शुरू कर के पब्लिक की तकलीफ़ को मान लिया है. यह तो ठीक ही है. इसे "रिलीफ़ का काम" (Relief Work) न कह कर "आज़माइश का काम" (Test Work) कहने से सिर्फ़ मालूम होता है कि सरकारी दिमाग़ कितने एहतियात से चलते हैं. दूसरा यह कि रिलीफ़ के यह काम पब्लिक की तकलीफ़ों को दूर करने के लिये अभी भी बहुत कम हैं. तीसरा यह कि इन केन्द्रों के इन्चार्जों में और ज़ियादा इनसानी हमदर्दी की ज़रूरत है.

इन रिलीफ़ केन्द्रों पर पूरे दिन काम करने की मज़दूरी हर बालिग़ मर्द को आठ आना, हर बालिग़ औरत को आठ आना और हर लड़के या लड़की को चार आना, मिलती थी. कहीं कहीं उसी वक़्त बालिग़ मर्द की मज़दूरी आठ आने से बढ़ा कर दस आने कर दी गई थी. अनाज वग़ैरा के चालू भाव देखते हुए और यह देखते हुए कि एक घर के सिर्फ़ एक ही आदमी को एक कैम्प में काम करने दिया जायगा, हमारा कहना है कि मज़दूरी बहुत कम है.

दोपहर के बाद हमने पास के कुछ गांवों में जाना तय किया. मोटर के लिये ख़ास तौर पर हाल की बारिश के बाद सड़कें बहुत ख़राब थीं. आने जाने के लिये सिर्फ़ हाथी ही की सवारी मिल सकती थी. सड़कों पर इतनी कीचड़ थी कि हमारे दो हाथियों में से एक फिसल गया, उस पर चढ़े

سے تحصیل پھرندا گئے ۔ ہم کئی ایسے کیندروں پر گئے جو سرکار نے اکال پیڑتوں کی مدد کے لئے ابھی حال میں کھولے ہیں ۔ ہم نے وہاں پر کام کرنے والے کتنے ہی مزدوروں اور اُن کیندروں کے انچارج سرکاری نوکروں سے بات چیت کی ۔ ہمیں یہ معلوم ہوا کہ سرکار نے اکال پیڑتوں کی مدد کے لئے اب تک تحصیل پھرندا اور مہراج گنج میں، جہاں کی حالت سب سے خراب تھی، دونوں تحصیلوں کو ملا کر کل ایسے لگ بھگ پچاس کیندر کھول رکھے تھے ۔ ہمیں یہ بھی معلوم ہوا کہ اِن کیندروں پر کام میں لگے ہوئے مزدوروں کی کل گنتی قریب بیس ہزار تھی اور قریب ایک لاکھ نے وہاں کام کرنے کے لئے عرضیاں دی تھیں ۔ اِن میں سے زیادہ ترکو اِن ریلیف کیندروں میں داخلے کے لئے "کارڈ" نہیں دیئے گئے تھے ۔ کچھ مزدور روز اپنے گھر سے 6 سے 8 میل تک پیدل چل کر ان ریلیف کیندروں میں کرنے کام آتے تھے ۔ عرضیاں دینے والوں میں سے کچھ سے کہا گیا کہ اپنے گھروں سے چودہ میل دور کے کیندروں میں جا کر کام کریں ۔ ادھک تر سڑکیں بے حد خراب تھیں جس کی وجہ سے زیادہ تر عرضیاں دینے والے اِس صلاح سے فائدہ نہیں اُٹھا پاتے تھے ۔ ناممکن تھا کہ لوگ، خاص طور پر بھوک سے مرتے ہوئے لوگ، روز کام کرنے کے لئے چودہ میل پیدل جائیں اور پھر چودہ میل چلکر اپنے گاؤں کو لوٹیں ۔ اِن کیمپوں میں تھوڑی دیر رہ کر ہم تین نتیجوں پر پہونچے ۔ پہلا یہ کہ سرکار نے ریلیف کا کام شروع کر کے پبلک کی تکلیف کو مان لیا ہے ۔ یہ تو ٹھیک ہی ہے ۔ اِسے 'ریلیف کا کام' (Relief Work) نہ کہکر "آزمائش کا کام" (Test Work) کہنے سے صرف معلوم ہوتا ہے کہ سرکاری دماغ کتنے احتیاط سے چلتے ہیں ۔ دوسرا یہ کہ ریلیف کے یہ کام پبلک کی تکلیفوں کو دور کرنے کے لئے ابھی بھی بہت کم ہیں ۔ تیسرا یہ کہ اِن کیندروں کے انچارجوں میں اور زیادہ اِنسانی ہمدردی کی ضرورت ہے ۔

اِن ریلیف کیندروں پر پورے دن کام کرنے کی مزدوری ہر بالغ مرد کو آٹھ آنا، ہر بالغ عورت کو آٹھ آنا اور ہر لڑکے یا لڑکی کو چار آنا، ملتی تھی ۔ کہیں کہیں اُسی وقت بالغ مرد کی مزدوری آٹھ آنے سے بڑھا کر دس آنے کر دی گئی تھی ۔ اناج وغیرہ کے چالو بھاؤ کو دیکھتے ہوئے اور یہ دیکھتے ہوئے کہ ایک گھر کے صرف ایک ہی آدمی کو ایک کیمپ میں کام کرنے دیا جائے گا، ہمارا کہنا ہے کہ مزدوری بہت کم ہے ۔

دوپہر کے بعد ہم نے پاس کے کچھ گاؤں میں جانا طے کیا ۔ موٹر کے لئے خاص طور پر حال کی بارش کے بعد سڑکیں بہت خراب تھیں ۔ آنے جانے کے لئے صرف ہاتھی ہی کی سواری مل سکتی تھی ۔ سڑکوں پر اتنی کیچڑ تھی کہ ہمارے دو ہاتھیوں میں سے ایک پھسل گیا، اُس پر چڑھے

हमारी राय

ہماری رائے

गोरखपुर के अकाल पर पंडित सुन्दरलाल
और
डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का बयान

गोरखपुर के अकाल की हालत की जांच करने के लिये वहां से बुलावा आने पर मैं 26 अगस्त को सवेरे इलाहाबाद पहुँचा. मैंने पंडित सुन्दरलाल से साथ चलने को कहा. वह राज़ी हो गए.

पहले मैं अकेला गोरखपुर पहुंचा. मैंने 27 अगस्त को वहां की हालत पर उस वक़्त तक के सरकारी और ग़ैर सरकारी हर तरह के बयानों को पढ़ा. मैं श्री शिब्बनलाल सक्सेना के पास गया, श्री जगन प्रसाद रावत, डिप्टी मिनिस्टर, गोरखपुर रिलीफ़ के इनचार्ज, से मिला और मैंने वहां के ख़ास ख़ास आदमियों से वहां की गिरानी के बारे में सही बातें जानने की कोशिश की.

श्री शिब्बनलाल सक्सेना का उपवास

28 अगस्त को पंडित सुन्दरलाल भी वहां पहुँच गए. हमने सबसे पहले श्री शिब्बन लाल सक्सेना को इस बात के लिये राज़ी किया कि वह उपवास तोड़ कर श्री जगन प्रसाद रावत और दूसरे सरकारी अफ़सरों का पब्लिक की तकलीफ़ दूर करने में साथ दें. हम श्री जगन प्रसाद रावत से मिले. उन्होंने हमें इतमिनान दिलाया कि वह पब्लिक की तकलीफ़ दूर करने में श्री शिब्बन लाल सक्सेना और उनके दोस्तों के साथ मिल कर काम करेंगे और उनकी सलाह से पूरा फ़ायदा उठायेंगे. जब दोनों तरफ़ से इसका इतमिनान हो गया तो उसी दिन शाम को छै बजे श्री शिब्बन लाल सक्सेना ने उपवास तोड़ दिया. उस समय वहां पर श्री जगन प्रसाद रावत, गोरखपुर के कई कारकर्ता और शहर के ख़ास ख़ास लोग मौजूद थे.

तकलीफ़ और उसे दूर करना

29 अगस्त को सवेरे हम लोग श्री शिब्बन लाल सक्सेना और कई कारकर्ताओं को साथ ले कर गोरखपुर

گورکھ پور کے اکال پر پنڈت سندرلال
اور
ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا کا بیان

گورکھ پور کے اکال کی حالت کی جانچ کرنے کے لئے وہاں سے بلاوا آنے پر میں 26 اگست کو سویرے الہ آباد پہونچا. میں نے پنڈت سندر لال سے ساتھ چلنے کو کہا. وہ راضی ہوگئے.

پہلے میں اکیلا گورکھ پور پہونچا. میں نے 27 اگست کو وہاں کی حالت پر اس وقت تک کے سرکاری اور غیر سرکاری ہر طرح کے بیانوں کو پڑھا. میں شری شبن لال سکسینا کے پاس گیا، شری جگن پرساد راوت، ڈپٹی منسٹر، گورکھ پور ریلیف کے انچارج، سے ملا اور میں نے وہاں کے خاص خاص آدمیوں سے وہاں کی گرانی کے بارے میں صحیح باتیں جاننے کی کوشش کی.

شری شبن لال سکسینا کا اپواس.

28 اگست کو پنڈت سندر لال بھی وہاں پہونچ گئے. ہم نے سب سے پہلے شری شبن لال سکسینا کو اس بات کے لئے راضی کیا کہ وہ اپواس توڑ کر شری جگن پرساد راوت اور دوسرے سرکاری افسروں کا پبلک کی تکلیف دور کرنے میں ساتھ دیں. ہم شری جگن پرساد راوت سے ملے. انہوں نے ہمیں اطمینان دلایا کہ وہ پبلک کی تکلیف دور کرنے میں شری شبن لال سکسینا اور ان کے دوستوں کے ساتھ ملکر کام کریں گے اور ان کی صلح سے پورا فائدہ اٹھائیں گے. جب دونوں طرف سے اس کا اطمینان ہوگیا تو اسی دن شام کو چھ بجے شری شبن لال سکسینا نے اپواس توڑ دیا. اس سمے وہاں پر شری جگن پرساد راوت، گورکھپور کے کئی کارکرتا اور شہر کے خاص خاص لوگ موجود تھے.

تکلیف اور اسے دور کرنا.

29 اگست کو سویرے ہم لوگ شری شبن لال سکسینا اور کئی کارکرتاؤں کو ساتھ لے کر گورکھپور

गिर सकता है इसका अनुवाद नहीं किया जा सकता. भूक इस सवाल का असरदार जवाब है.

किसी भी अनुवाद की तारीफ़ यह है कि अनुवाद अनुवाद मालूम न हो. मख़मूर जालंधरी ने ऐसा अनुवाद किया है कि मालूम होता है 'भूक' ख़ुद उनकी ही लिखी किताब है.

मकतबा शाहराह ने भूक छाप कर उर्दू जगत को बहुत बड़ी भेंट दी है और हम उसको इस पर बधाई देते हैं.

—मुजीब रिज़वी

रजत रश्मि

लिखने वाले—डाक्टर राम कुमार वर्मा; निकालने-वाले—भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—174; दाम—ढ़ाई रुपया.

भारत की दूसरी भाषाओं के मुक़ाबले में हिन्दी नाटक बहुत पीछे है. हिन्दी उरदू दोनों में ही यह कमी बुरी तरह खटकती है. इने गिने लोगों के दम से ही हिन्दी नाटक का दीप जल रहा है और डाक्टर राम कुमार वर्मा इन में से एक हैं. राम कुमार ने हिन्दी एकांकी नाटक को एक नई शैली दी है. 'रजत रश्मि' में हिन्दी के इस मशहूर नाटककार के पांच एकांकी नाटक हैं—प्रतिशोध, तैमूर की हार, दुर्गावती, औरंगज़ेब की आख़िरी रात, कलंक रेखा. लग भग यह सारे नाटक इलाहाबाद रेडियो पर खेले जा चुके हैं. इन सब का आधार इतिहास है. इतिहास सभी पढ़ते हैं लेकिन साहित्यकार केवल चलती फिरती घटनाओं को ही नहीं पढ़ता बल्कि उन घटनाओं के स्रोत को भी जानने की कोशिश करता है, इतिहास की आत्मा को समझने की पूरी चेश्टा करता है. इन नाटकों में इतिहास है पर इन में इतिहास की आत्मा नहीं है. अंगरेज़ों का लिखा झूटा इतिहास हमें अन्धेरे की तरफ़ ले जाता है, हमें अब असली इतिहास की खोज होनी चाहिये और ग़लत घटनाओं पर ग़लत भाव पैदा कर के उन्हें साहित्य का जामा न पहनाना चाहिये—हम आशा करते हैं कि राम कुमार जी पुराने इतिहास को अपनी जगह पर छोड़ कर अब हमें उस इतिहास के नाटक देंगे जो इतिहास बन रहा है, जनता जिसे बना रही है, और जो सच्चा इतिहास है

—मुजीब रिज़वी

کر سکتا ہے اِس کا انوواد نہیں کیا جا سکتا ۔ ' بھوک ' اِس سوال کا اثردار جواب ہے ۔

کسی بھی انوواد کی تعریف یہ ہے کہ انوواد انوواد معلوم نہ ہو ۔ مخمور جالندھری نے ایسا انوواد کیا ہے کہ معلوم ہوتا ہے ' بھوک ' خود اُن کی ھي لکھی کتاب ہے ۔

مکتبہ شاہراہ نے ' بھوک ' چھاپ کر اُردو جگت کو بہت بڑی بھینٹ دي ہے اور ہم اُس کو اِس پر بدھائی دیتے ہیں ۔

—مجیب رضوی

رجت رشمی

لکھنے والے—ڈاکٹر رام کمار ورما؛ نکالنے والے—بھارتیہ گیان پیٹھ' کاشی؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ—174؛ دام—ڈھائی روپیہ ۔

بھارت کی دوسری بھاشاؤں کے مقابلے میں ہندي ناٹک بہت پیچھے ہے ۔ ہندی اُردو دونوں میں ہی یہ کمی بری طرح کھٹکتی ہے ۔ اِنے گنے لوگوں کے دم سے ہی ہندی ناٹک کا دیپ جل رہا ہے اور ڈاکٹر رام کمار ورما اِن میں سے ایک ہیں ۔ رام کمار نے ہندی ایکانکی ناٹک کو ایک نئی شیلی دی ہے ۔ 'رجت رشمی' میں ہندی کے اِس مشہور ناٹک کار کے پانچ ایکانکی ناٹک ہیں—پرتی شودھ' تیمور کي ہار' درگا وتی' اورنگ زیب کي آخری رات' کلنک ریکھا ۔ لگ بھگ یہ سارے ناٹک الہ آباد ریڈیو پر کھیلے جا چکے ہیں ۔ اِن سب کا آدھار اتہاس ہے ۔ اتہاس سبھی پڑھتے ہیں لیکن ساہتیہ کار کیول چلتی پھرتی گھٹناؤں کو ہی نہیں پڑھتا بلکہ اُن گھٹناؤں کے سروت کو بھی جاننے کی کوشش کرتا ہے' اتہاس کی آتما کو سمجھنے کي پوری چیشٹا کرتا ہے ۔ اِن ناٹکوں میں اتہاس ہے پر اِن میں اتہاس کی آتما نہیں ہے ۔ انگریزوں کا لکھا جھوٹا اتہاس ہمیں اندھیرے کی طرف لے جاتا ہے' ہمیں اب اصلی اتہاس کی کھوج ہونی چاہئے اور غلط گھٹناؤں پر غلط بھاؤ پیدا کرکے اُنہیں ساہتیہ کا جاما نہ پہنانا چاہئے—ہم آشا کرتے ہیں کہ رام کمار جی پرانے اتہاس کو اپنی جگہ پر چھوڑ کر اب ہمیں اُس اتہاس کے ناٹک دیں گے جو اتہاس بن رہا ہے' جنتا جسے بنا رہی ہے' اور جو سچا اتہاس ہے ۔

—مجیب رضوی

राजनीति समस्या

लिखने वाले—स्वामी सत्य भक्त; मिलने का पता—सत्याश्रम, वर्धा; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—92; दाम—चौदह आना.

इस किताब के लिखने वाले सत्य भक्त जी लिखने की राह में लीक लीक चलने वाले नहीं हैं. वह हमेशा नई राह बना कर चलते हैं. इस किताब में भी पढ़ने वालों को उनकी लेखनी की नई सूझ देखने को मिलेगी. रिश्वत खोरी, चुनाव, हर बात में दूसरे मुल्कों की नक़ल और एक दम पुराने ढंग की दोहाई पीटना, इन सब पर खूब प्रकाश डाला गया है. बुराइयों का रोना नहीं रोया गया. यह भी सुझाया गया है कि किस तरह क्या करना चाहिये. भाशा भी सीधी सादी है. मामूली पढ़े लिखे पढ़ सकते और समझ सकते हैं. राजनीति पर इस तरह की किताबें कम लिखी गई हैं. हमारी राय में इस छोटी सी किताब को उन्हें मंगाकर ज़रूर पढ़ना चाहिये जिन्हें राजनीति में कुछ रस आता है.

म. द.

راج نیت سمسیا

لکھنے والے—سوامی ستیہ بھگت؛ ملنے کا پتہ—ستیہ آشرم، وردھا؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ—92؛ دام چودہ آنا .

اِس کتاب کے لکھنے والے ستیہ بھگت جی لکھنے کی راہ میں لیکھ لیکھ چلنے والے نہیں ہیں . وہ ہمیشہ نئی راہ بنا کر چلتے ہیں . اس کتاب میں بھی پڑھنے والوں کو اُن کی لیکھنی کی نئی سوجھ دیکھنے کو ملے گی . رشوت خوری، چناؤ، ہر بات میں دوسرے ملکوں کی نقل اور ایک دم پرانے ڈھنگ کی دوہائی پیٹنا، اِن سب پر خوب پرکاش ڈالا گیا ہے . برائیوں کا رونا نہیں رویا گیا . یہ بھی سجھایا گیا ہے کہ کس طرح کیا کرنا چاہئے . بھاشا بھی سیدھی سادی ہے . معمولی پڑھے لکھے پڑھ سکتے اور سمجھ سکتے ہیں . راج نیت پر اِس طرح کی کتابیں کم لکھی گئی ہیں . ہماری رائے میں اِس چھوٹی سی کتاب کو اُنہیں منگا کر ضرور پڑھنا چاہئے جنہیں راج نیت میں کچھ رس آتا ہے .

—م . د .

भूक

लिखने वाले—नेट हेमसन; अनुवाद करने वाले—मख़मूर जालंधरी; निकालने वाले—मकतबा शाह राह, देहली; लिखावट—उरदू; सफ़ा—229; क़ीमत—तीन रुपया.

नेट हेमसन नार्वे के मशहूर लेखक थे. सन 1920 में इन के नावेल 'Hunger' को नोबिल प्राइज़ मिला था. नार्वे में इस नावेल ने हलचल मचा दी थी, लोगों के सामने साहित्य का एक नया मैदान खोल दिया था. 'भूक' उसी नावेल का उर्दू अनुवाद है. यह किताब एक भूके लेखक की जीवन कथा है. 'भूक' में लेखक क्या सोच सकता है, क्या कर सकता है, क्या क्या करने पर वह मजबूर हो सकता है, कहां कहां वह ठोकरें खा सकता है, इस सब की तसवीर 'भूक' में मिलती है. इस किताब में उसे शायद मज़ा न आए जिसने न कभी भूक की जलन महसूस की हो और न ही भूकों के मनोविज्ञान को जानता हो. बहुत से लोग कहते हैं कि रोटी ही सब कुछ नहीं है. यह ठीक है कि रोटी ही सब कुछ नहीं है लेकिन रोटी के बिना किन किन गढ़ों में आदमी

بھوک

لکھنے والے—نٹ ہیمسن؛ انوواد کرنے والے—مخمور جالندھری؛ نکالنے والے—مکتبہ شاہراہ، دہلی؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحہ—229؛ قیمت تین روپیہ .

نٹ ہیمسن ناروے کے مشہور لیکھک تھے . سن 1920 میں ان کے ناول 'Hunger' کو نوبل پرائز ملا تھا . ناروے میں اس ناول نے ہلچل مچادی تھی، لوگوں کے سامنے ساہتیہ کا ایک نیا میدان کھول دیا تھا . 'بھوک' اسی ناول کا اُردو انوواد ہے . یہ کتاب ایک بھوکے لیکھک کی جیون کتھا ہے . 'بھوک' میں ایک لیکھک کیا سوچ سکتا ہے، کیا کر سکتا ہے، کیا کیا کرنے پر وہ مجبور ہو سکتا ہے، کہاں کہاں وہ ٹھوکریں کھا سکتا ہے، اِس سب کی تصویر 'بھوک' میں ملتی ہے . اس کتاب میں اسے شاید مزا نہ آئے جس نے نہ کبھی بھوک کی جلن محسوس کی ہو اور نہ ہی بھوکوں کے منووگیان کو جانتا ہو . بہت سے لوگ کہتے ہیں کہ روٹی ہی سب کچھ نہیں ہے . یہ ٹھیک ہے کہ روٹی ہی سب کچھ نہیں ہے لیکن روٹی کے بنا کن کن گڑھوں میں آدمی

आदमी और सिक्के

लिखने वाले—महेन्द्र नाथ; निकालने वाले—मकतबा शाहराह, देहली; लिखावट—उर्दू, सफ़ा—192; क़ीमत—दो रुपया बारह आना.

कहानीकार की हैसियत से महेन्द्र नाथ उर्दू जगत में बहुत मशहूर हो चुके हैं लेकिन नावेल के मैदान में 'आदमी और सिक्के' इन का पहला तजुरबा है. इस नावेल में कोई प्लाट नहीं है और न इस का कोई हीरो है. सिक्का घटनाओं को जन्म देता है, कैरेक्टरों को जन्म देता है, उनकी परवरिश करता है. आदमी सिक्के के बहाव में बहते जाते हैं, कुछ बहते बहते उभर पड़ते हैं और साथियों की आत्मा को झकझोर कर कहते हैं—इस गन्द से निकल आओ, इस मुसीबत से बच निकलो. इसके बाहर ही जीवन है, मोक्ष है, सब कुछ है. लोग सुनते हैं, कभी कभी उनके कान खड़े भी होते हैं, वह तैयार भी होते हैं लेकिन सिक्का फिर उन्हें बहा ले जाता है. अन्त में या वह खुदकुशी कर लेते हैं, या निराश हो कर बैठ रहते हैं, अन्तर आत्मा का गला घोंट देते हैं. इस नावेल में घटनाएं नहीं बोलतीं बल्कि महेन्द्र नाथ अपनी लोचदार रंगीन भाशा से पढ़ने वाले का ध्यान क़ाबू में रखते हैं और कहीं कहीं वह बात भी उसके दिमाग़ में उतार देते हैं जो कि वह इस नावेल के ज़रिये कहना चाहते हैं. नावेल में जिन्सी लज़्ज़त के चटख़ारे बहुत हैं और उन्होंने असली मक़सद को लगभग गुम सा कर दिया है. जीवन आज जैसा भी है उसे केवल उसी तरह काग़ज़ के सफ़्हों पर रंग देना आज के साहित्य की मांग नहीं है. आज के साहित्य कार का फ़र्ज़ है कि वह इस पर भी रोशनी डाले कि जीवन क्या होना चाहिये. हमेशा की तरह महेन्द्रनाथ समाज की गन्दगी की तसवीर खींचने में काफ़ी हद तक सफल हो गए हैं लेकिन किसी बेहतर समाज की असरदार तसवीर वह पढ़ने वाले के सामने नहीं रख सके.

किताब की छपाई और गेटअप बहुत ही अच्छा है, और बिना किसी दो राय के इसका सेहरा मकतबा शाहराह के सर है.

—मुजीब रिज़वी

آدمی اور سکے

لکھنے والے—مہیندر ناتھ؛ نکالنے والے—مکتبہ شاہراہ، دہلی؛ لکھاوٹ—اردو، صفحہ—192؛ قیمت—دو روپیہ بارہ آنہ .

کہانی‌کار کی حیثیت سے مہیندر ناتھ اردو جگت میں بہت مشہور ہوچکے ہیں لیکن ناول کے میدان میں 'آدمی اور سکے' ان کا پہلا تجربہ ہے . اس ناول میں کوئی پلاٹ نہیں ہے اور نہ اس کا کوئی ہیرو ہے. سکہ گھٹناؤں کو جنم دیتا ہے، کیریکٹروں کو جنم دیتا ہے، ان کی پرورش کرتا ہے . آدمی سکے کے بہاؤ میں بہتے جاتے ہیں، کچھ بہتے بہتے ابھر پڑتے ہیں اور ساتھیوں کی آتما کو جھنجھوڑ کر کہتے ہیں—اس گند سے نکل آؤ، اس مصیبت سے بچ نکلو. اس کے باہر ہی جیون ہے، موکش ہے، سب کچھ ہے . لوگ سنتے ہیں، کبھی کبھی ان کے کان کھڑے بھی ہوتے ہیں، وہ تیار بھی ہوتے ہیں لیکن سکہ پھر انہیں بہا لے جاتا ہے . انت میں یا وہ خودکشی کر لیتے ہیں، یا نراش ہوکر بیٹھ رہتے ہیں، انتر آتما کا گلا گھونٹ دیتے ہیں . اس ناول میں گھٹنائیں نہیں بولتیں بلکہ مہیندر ناتھ اپنی لوچدار رنگین بھاشا سے پڑھنے والے کا دھیان قابو میں رکھتے ہیں اور کہیں کہیں وہ بات بھی اس کے دماغ میں اتار دیتے ہیں جو کہ وہ اس ناول کے ذریعہ کہنا چاہتے ہیں. ناول میں جنسی لذت کے چٹخارے بہت ہیں اور انہوں نے اصلی مقصد کو لگ بھگ گم سا کر دیا ہے . جیون آج جیسا بھی ہے اسے کیول اسی طرح کاغذ کے صفحوں پر رنگ دینا آج کے ساہتیہ کی مانگ نہیں ہے . آج کے ساہتیہ کار کا فرض ہے کہ وہ اس پر بھی روشنی ڈالے کہ جیون کیا ہونا چاہئے . ہمیشہ کی طرح مہیندر ناتھ سماج کی گندگی کی تصویر کھینچنے میں کافی حد تک سپھل ہوگئے ہیں لیکن کسی بہتر سماج کی اثردار تصویر وہ پڑھنے والے کے سامنے نہیں رکھ سکے .

کتاب کی چھپائی اور گیٹ‌اپ بہت ہی اچھا ہے، اور بنا کسی دو رائے کے اس کا سہرا مکتبہ شاہراہ کے سر ہے.

—مجیب رضوی

किताबें  کتابیں

विपत रूस में सदाचार

लिखने वाले—मुजीब रिज़वी; निकालने वाले—पीपुल्स लशिंग हाऊस लिमिटेड, बम्बई 4; लिखावट—हिन्दी; —26; क़ीमत—छे आने.

लेखक ने इस छोटी सी किताब में इस सवाल का ब कि रूस में सदाचार जैसी कोई चीज़ नहीं है इस से दिया है कि पढ़ने वाले को ज़रूर तसल्ली हो जायगी रूस पर यह इलज़ाम ग़लत लगाया जाता है. इतना ही , उसकी समझ में यह बात भी आजायगी कि रूस ने तरीक़े से धीरे धीरे असदाचार को हटा कर सदाचार जगह दी है उस तरीक़े से अगर कहीं भी अमल किया तो असदाचार दूर हो सकता है. इस किताब को पढ़ तो ऐसा मालूम होता है कि सदाचार अगर कहीं है तो रूस में ही है. आम आदमियों के पढ़ने की यह चीज़ ही। पर अगर इसे वह भी पढ़ जायं जिन के हाथ में की बागडोर है तो और भी अच्छा.

—म. द.

سوویت روس میں سداچار

لکھنے والے—مجیب رضوی؛ نکلنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لیمیٹڈ، بمبی 4؛ لکھاوٹ—ھندی؛ صفحے—26؛ قیمت—چھ آنے۔

لیکھک نے اس چھوٹی سی کتاب میں اس سوال کا جواب کہ روس میں سداچار جیسی کوئی چیز نہیں ہے اس خوبی سے دیا ہے کہ پڑھنے والے کو ضرور تسلی ہو جائے گی کہ روس پر یہ الزام غلط لگایا جاتا ہے۔ اتنا ہی نہیں، اس کی سمجھ میں یہ بات بھی آجائے گی کہ روس نے جس طریقے سے دھیرے دھیرے اسداچار کو ہٹا کر سداچار کو جگہ دی ہے اس طریقے سے اگر کہیں بھی عمل کیا جائے تو اسداچار دور ہو سکتا ہے۔ اس کتاب کو پڑھکر تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ سداچار اگر کہیں ہے تو وہ روس میں ہی ہے۔ عام آدمیوں کے پڑھنے کی یہ چیز تو ہے ہی پر اگر اسے وہ بھی پڑھ جائیں جن کے ہاتھ میں راج کی باگ ڈور ہے تو اور بھی اچھا۔

—م. د.

मान

लिखने वाले—महाकवि अनूप; निकालने वाले—ज्ञान काशी; लिखावट—हिन्दी.

वर्धमान पुस्तक अपने ढंग की अनोखी पुस्तक है. न यानी जैनों के आख़िरी तीर्थंकर महावीर स्वामी कर यह काव्य लिखा गया है. यह न इतिहास है न , जीवनी भी नहीं, कोरा काव्य है. और इस ढंग का है कि वर्धमान की जगह अगर किसी दूसरे का नाम दिया जाय तो उस पर भी ठीक बैठ सकता है. इसमें न कहीं ढूंढे नहीं मिलते. पुस्तक भर में काव्य के अनूप ही चमक रहे हैं. ज्ञान पीठ ने क्या समझ कर किसके लिये यह पुस्तक अपने यहां से निकाली है समझ में नहीं आता.

—म. द.

وردھمان

لکھنے والے—مہاکوی انوپ؛ نکالنے والے—گیان پیٹھ کاشی؛ لکھاوٹ—ھندی۔

وردھ مان پستک اپنے ڈھنگ کی انوکھی پستک ہے۔ وردھمان یعنی جینوں کے آخری تیرتھنکر مہاویر سوامی کو لے کر یہ کاویہ لکھا گیا ہے۔ یہ نہ اتہاس ہے نہ پران، جیونی بھی نہیں، کورا کاویہ ہے۔ اور اس ڈھنگ کا کاویہ ہے کہ وردھ مان کی جگہ اگر کسی دوسرے کا نام لکھ دیا جائے تو اس پر بھی ٹھیک بیٹھ سکتا ہے۔ اس میں وردھ مان کہیں ڈھونڈھے نہیں ملتے پستک بھر میں کاویہ کے روپ میں انوپ ہی چمک رہے ہیں۔ گیان پیٹھ نے کیا سمجھکر اور کس کے لئے یہ پستک اپنے یہاں سے نکالی ہے یہ سمجھ میں نہیں آتا۔

—م. د.

सरदार बोला—मैं दसियों साधुओं से मिला. दो-चार पहुंचे हुए कहे जाने वाले संतों के पांव छुए पर कोई मेरा दिल न धो सका. उल्टे चोरी की आदत में बढ़ती हुई. साधु संत निडर नहीं होते, न सच बोलते हैं, सच में रमे हुए नहीं होते. यह बच्चे सिर से पैर तक सच की मूरत हैं. चोर को वह ऐसा ही आदमी समझते हैं जैसा साधु और संत को. इनके एक एक शब्द से मेरा मन धुलता है, चमकता है और आंखों के रास्ते बरस पड़ता है. हां, अब आप आगे सुनाइये.

मौसी—हां, मैं कुछ न समझ पाई और आप से मिलने को जी मचल पड़ा. बच्चों ने आपस में आप को देखने की बात की, मेरा बच्चा भी आप को देखने के लिये ललचा गया. फिर भी मैं न समझ पाई. हां, यह मैं जानती हूँ मेरी बहन के दोनों बच्चे कभी झूट नहीं बोलते. पर यह न समझ पाई कि रात को इन दोनों ने चोर कहां से देख लिया! न रात को मोहल्ले में कुछ हुआ न किसी ने कुछ कहा. बस चलते चलते मैंने इन बच्चों से कह दिया, जब आप आएं तब मुझे बुला लिया जाय. यह सब मुझे बुला लाए और मैंने आपके दर्शन कर लिये.

दर्शन की बात सुनकर सरदार से न रहा गया. बोला—हम.........कुछ रुका—हमारे और दर्शन!

मौसी—जब आपने आंसू बहा कर दिल धो लिया तब फिर दर्शन क्यों नहीं? मौसी कुछ कहे कि हंसमुखी सरदार का हाथ पकड़ कर बोली, मामा चोरी कैसी होती है? इस सवाल को सुन कर हंसमुखी और सचबहादुर दोनों सरदार की तरफ झुक कर जवाब सुनने के लिये बिलकुल चुप होकर खड़े हो गए.

सरदार ने हंसमुखी को गोदी में उठा कर और उसे पुचकार कर जैसे ही कहा 'चोरी ऐसी होती है' कि तीनों बच्चे खिलखिला कर हंस पड़े.

हंसमुखी—फिर रात क्यों नहीं की थी?

सरदार—बिटिया, रात को भूल गया इसीलिये दिन में चोरी करने आना पड़ा.

हंसमुख हंसमुखी दोनों अम्मा से पूछ बैठे, अम्मा तुम हमें रोज पुचकारती हो, बताया क्यों नहीं पुचकारने को चोरी कहते हैं?

सचबहादुर बोल पड़ा, मामा की चोरी बड़ी अच्छी है. मोहल्ले वाले चोरी को कुछ का कुछ बताते हैं, चोरों से डराते हैं. चोर, मामा बड़े अच्छे होते हैं. है न, हंसमुख भैया!

हंसमुख—हां अच्छे तो होते ही हैं.

तीनों बच्चे अपने मामाओं से लिपट लिपट कर खेलने कूदने लगे.

—भगवानदीन

سردار بولا—میں دسیوں سادھوؤں سے ملا. دو چار پہونچے ہوئے کہے جانے والے سنتوں کے پاؤں چھوئے پر کوئی میرا دل نہ دھو سکا. الٹے چوری کی عادت میں بڑھتی ہوئی. سادھو سنت نڈر نہیں ہوتے، نہ سچ بولتے ہیں، سچ میں رمے ہوئے نہیں ہوتے. یہ بچے سر سے پیر تک سچ کی مورت ہیں. چور کو وہ ایسا ہی آدمی سمجھتے ہیں جیسا سادھو اور سنت کو. ان کے ایک ایک شبد سے میرا من دھلتا ہے، چمکتا ہے اور آنکھوں کے راستے برس پڑتا ہے. ہاں، اب آپ آگے سنائیے.

موسی—ہاں، میں کچھ نہ سمجھ پائی اور آپ سے ملنے کو جی مچل پڑا. بچوں نے آپس میں آپ کو دیکھنے کی بات کی، میرا بچہ بھی آپ کو دیکھنے کے لئے للچا گیا. پھر بھی میں نہ سمجھ پائی. ہاں، یہ میں جانتی ہوں میری بہن کے دونوں بچے کبھی جھوٹ نہیں بولتے. پر یہ نہ سمجھ پائی کہ رات کو ان دونوں نے چور کہاں سے دیکھ لیا! نہ رات کو محلے میں کچھ ہوا نہ کسی نے کچھ کہا. بس چلتے چلتے میں نے ان بچوں سے کہ دیا، جب آپ آئیں تب مجھے بلا لیا جائے. یہ سب مجھے بلا لائے اور میں نے آپ کے درشن کرلئے.

درشن کی بات سن کر سردار سے نہ رہا گیا. بولا—ہم.........کچھ رکا—ہمارے اور درشن!

موسی—جب آپ نے آنسو بہاکر دل دھو لیا تب پھر درشن کیوں نہیں؟ موسی کچھ کہے کہ ہنس مکھی سردار کا ہاتھ پکڑ کر بولی، ماما چوری کیسی ہوتی ہے؟ اس سوال کو سن کر ہنس مکھی اور سچ بہادر دونوں سردار کی طرف جھک کر جواب سننے کے لئے بالکل چپ ہوکر کھڑے ہوگئے.

سردار نے ہنس مکھی کو گودی میں اٹھاکر اور اسے پچکار کر جیسے ہی کہا 'چوری ایسی ہوتی ہے' کہ تینوں بچے کھلکھلا کر ہنس پڑے.

ہنس مکھی—پھر رات کیوں نہیں کی تھی؟

سردار—بٹیا، رات کو بھول گیا اسی لئے دن میں چوری کرنے آنا پڑا.

ہنس مکھ ہنس مکھی دونوں اماں سے پوچھ بیٹھے، اماں تم ہمیں روز پچکارتی ہو، بتایا کیوں نہیں پچکارنے کو چوری کہتے ہیں؟

سچ بہادر بول پڑا، ماما کی چوری بڑی اچھی ہے. محلے والے چوری کو کچھ کا کچھ بتاتے ہیں، چوروں سے ڈراتے ہیں. چور، ماما بڑے اچھے ہوتے ہیں. ہے نہ، ہنس مکھ بھیا!

ہنس مکھ—ہاں اچھے تو ہوتے ہی ہیں.

تینوں بچے اپنے ماماؤں سے لپٹ لپٹ کر کھیلنے کودنے لگے.

—بھگوان دین

गिरता रहा और वह कुछ बोल न पाये. इतने में मुख बोला—

'ठहरिये, हम अपनी मौसी को ले आयें. वह आपसे ना चाहती हैं.' यह कह तीनों बच्चे मौसी को लेने गये.

अब आये हुए तीनों मेहमानों को बच्चों के मां-बाप बात करने का मौक़ा मिला.

सरदार—कहिये बच्चे क्या कहते थे ?

हंसमुखी की अम्मा—यह सब तो आप अभी जान . पहले कुछ खा-पी लीजिये.

सरदार ने जवाब में कुछ नहीं कहा. ज़रा गर्दन झुका और दूध का गिलास ले लिया. उसके दोनों साथियों भी ऐसा ही किया.

दूध पी चुकने पर सरदार ने फिर वही बात पूछी. तब मुख की अम्मा ने कहा—

बच्चों से उठते ही मैंने पूछा कि रात कोई आया था ? बोला—हां, तीन आदमी आए थे. मैंने पूछा, क्या ते थे, बोला ताली मांगते थे. लड़की बोल उठी ताली पास थीं, मैंने जेब से निकाल कर उनको दे दीं. मैंने , फिर वह क्या बोले ? लड़का बोला, बोले कुछ नहीं, ली खाट पर बैठ गए और हम दोनों सो गए. मैंने उनसे , कि थोड़ी देर में वह तुमसे मिलने आयेंगे. लड़का ला, अच्छी बात है. उसने कहा, वह कहते थे, हम चोर चोरी करेंगे. उसने आप से यह भी पूछा था कि चोरी ी, लड़की ने भी पूछा था. मैंने उनसे कह दिया, अभी आते होंगे, उन्हीं से पूछना, चोरी कैसी होती है. इसके कुछ खा कर वह अपनी मौसी के यहां चले गए और को साथ ले आए. वहां मौसी से इन्होंने क्या बात पता नहीं. कोई बात हुई ज़रूर है तभी तो बहन ने प से मिलने को कहला भेजा है. बच्चे उन्हीं को लेने हैं.

जैसे बातें ख़त्म हुईं कि बच्चे मौसी के साथ आ पहुंचे.

हंसमुख की मां ने अपनी बहन की जान पहचान उन नों से करा दी और उन तीनों को अपने मेहमान बता कर की पहचान बहन से करा दी.

आपस में नमस्ते होने के बाद सरदार ने बच्चों की ी से पूछा, 'यह बताइये आपको हम से मिलने की सूझी ?'

बच्चों की मौसी ने हंसमुख हंसमुखी से जो बात हुई और उन्होंने जो बताया था सब सुना दिया.

अभी बात पूरी न हो पाई थी कि सरदार की आंखें फिर स पड़ीं. बच्चों की मौसी पूछ बैठीं—

'आप अपना दिल इतना भारी क्यों करते हैं ?'

پانی گرتا رہا اور وہ کچھ بول نہ پائے . اتنے میں هنس مکھ بولا—

' ٹھہریئے ' ہم اپنی موسی کو لے آئیں . وہ آپ سے ملنا چاہتی ہیں .' یہ کہ تینوں بچے موسی کو لینے دوڑ گئے .

اب آئے ہوئے تینوں مہمانوں کو بچوں کے ماں باپ سے بات کرنے کا موقع ملا .

سردار—کہئے بچے کیا کہتے تھے ؟

هنس مکھی کی اماں—یہ سب تو آپ ابھی جان لیں گے . پہلے کچھ کھاپی لیجئے .

سردار نے جواب میں کچھ نہیں کہا . ذرا گردن جھکا لی اور دودھ کا گلاس لے لیا . اُس کے دونوں ساتھیوں نے بھی ایسا ہی کیا .

دودھ پی چکنے پر سردار نے پھر وہی بات پوچھی . تب هنس مکھ کی اماں نے کہا—

بچوں سے اُٹھتے ہی میں نے پوچھا کہ رات کوئی آیا تھا ؟ ایک بولا—ہاں' تین آدمی آئے تھے. میں نے پوچھا' کیا کہتے تھے' بولا تالی مانگتے تھے . لڑکی بول اُٹھی تالی میرے پاس تھیں' میں نے جیب سے نکال کر اُن کو دے دیں. میں نے پوچھا' پھر وہ کیا بولے ؟ لڑکا بولا' بولے کچھ نہیں' خالی کھاٹ پر بیٹھ گئے اور ہم دونوں سو گئے . میں نے اُن سے کہا' کہ تھوڑی دیر میں وہ تم سے ملنے آئینگے . لڑکا بولا' اچھی بات ہے . اُس نے کہا' وہ کہتے تھے' ہم چور ہیں' چوری کریں گے . اُس نے آپ سے یہ بھی پوچھا تھا کہ چوری کیسی' لڑکی نے بھی پوچھا تھا . میں نے ان سے کہ دیا' ابھی وہ آتے ہونگے' اُنہیں سے پوچھنا' چوری کیسی ہوتی ہے . اس کے بعد کچھ کھا کر وہ اپنی موسی کے یہاں چلے گئے اور بھائی کو ساتھ لے آئے . وہاں موسی سے اِنہوں نے کیا بات کی' پتہ نہیں . کوئی بات ہوئی ضرور ہے تبھی تو بہن نے آپ سے ملنے کو کہلا بھیجا ہے . بچے اُنہیں کو لینے گئے ہیں .

جیسے باتیں ختم ہوئیں کہ بچے موسی کے ساتھ آ پہونچے .

هنس مکھ کی ماں نے اپنی بہن کی جان پہچان اُن تینوں سے کرادی اور اُن تینوں کو اپنے مہمان بتاکر اُن کی پہچان بہن سے کرا دی .

آپس میں نمستے ہونے کے بعد سردار نے بچوں کی موسی سے پوچھا' 'یہ بتائیے آپ کو ہم سے ملنے کی کیسے سوجھی؟'

بچوں کی موسی نے هنس مکھ هنس مکھی سے جو بات ہوئی تھی اور اُنہوں نے جو بتایا تھا سب سنا دیا .

ابھی بات پوری نہ ہو پائی تھی کہ سردار کی آنکھیں پھر برس پڑیں . بچوں کی موسی پوچھ بیٹھیں—

'آپ اپنا دل اتنا بھاری کیوں کرتے ہیں ؟'

अम्मा—थोड़ी देर में वह तुम से मिलने आएंगे.

हंसमुख—अच्छी बात है. अम्मा, वह कहते थे, हम चोर हैं, चोरी करेंगे. मैंने पूछा, चोरी कैसी ?

हंसमुखी—हां अम्मा, चोरी कैसी ?

अम्मा—वह आते होंगे, वही बतायेंगे.

× × ×

हंसमुख हंसमुखी नहा-धो और कुछ खा पी सच बहादुर के यहां चल दिये. उसके घर पहुँच कर सचबहादुर की अम्मा से बोले, हमारे घर कोई आयेंगे. सचबहादुर को हमारे साथ कर दीजिये.

सचबहादुर की मां—तुम्हारे घर कौन आयेंगे ?

हंसमुख हंसमुखी दोनों एक साथ बोल उठे—मौसी, चोर आयेंगे !

सचबहादुर की मां एक दम हंस पड़ीं और पूछ बैठीं—चोर कैसे ?

हंसमुख हंसमुखी—मौसी, चोर आदमी होते हैं. बड़े अच्छे होते हैं. रात को आते हैं, आज दिन में आयेंगे.

यह सुनकर सचबहादुर बोला—भैया हंसमुख, हम तुम्हारे साथ चोर देखने चलेंगे. तुमने उनको देखा है ?

हंसमुख—हां, देखा है.

हंसमुखी—मैंने भी देखा है.

सचबहादुर—कब देखा ?

हंसमुख—कल रात.

हंसमुखी—हां, कल रात.

सचबहादुर की मां बच्चों की बात कुछ समझ न पाईं. यह वह अच्छी तरह जानती थीं, हंसमुख हंसमुखी कभी झूट नहीं बोलते, पर यह न समझ पाईं कि कल रात इन बच्चों ने चोर कहां से देख लिये ! मोहल्ले में न शोर हुआ न किसी ने कुछ कहा. उनका भी जी हुआ कि वह हंसमुख के घर जा कर देखें कि बात क्या है. उन्होंने सचबहादुर को उनके साथ भेज दिया और हंसमुख से बोलीं, जब तुम्हारे घर वह आयें तब मुझे बुला लेना.

हंसमुख मौसी को 'हां' कह कर सचबहादुर के साथ घर पहुंचा. अपनी अम्मा से बोला, सचबहादुर भी उनसे मिलेगा जो हमारे घर आयेंगे और मौसी भी उनसे मिलना चाहती हैं.

कुछ देर बाद वह तीनों आदमी आ पहुंचे. हंसमुख हंसमुखी उनसे ऐसे लिपट गये मानों बहुत दिनों की जान पहचान हो. सचबहादुर भी उनकी देखा देखी उन तीनों से जल्दी हिलमिल गया. थोड़ी देर तक उन तीनों की आंखों से

اماں—تھوڑی دیر میں وہ تم سے ملنے آئیں گے ۔

ھنس مکھ—اچھی بات ھے ۔ اماں، وہ کہتے تھے، ہم چور ھیں، چوری کریں گے ۔ میں نے پوچھا، چوری کیسی؟

ھنس مکھی—ھاں اماں، چوری کیسی؟

اماں—وہ آتے ھونگے، وھی بتائینگے ۔

× × × ×

ھنس مکھ ھنس مکھی نہادھو اور کچھ کھاپی سچ بہادر کے یہاں چل دیئے ۔ اُس کے گھر پہونچ کر سچ بہادر کی اماں سے بولے، ہمارے گھر کوئی آئیں گے ۔ سچ بہادر کو ہمارے ساتھ کر دیجئے ۔

سچ بہادر کی ماں—تمہارے گھر کون آئینگے ؟

ھنس مکھ ھنس مکھی دونوں ایک ساتھ بول اٹھے —موسی، چور آئینگے !

سچ بہادر کی ماں ایک دم ھنس پڑیں اور پوچھ بیٹھیں—چور کیسے ؟

ھنس مکھ ھنس مکھی—موسی، چور آدمی ھوتے ھیں ۔ بڑے اچھے ھوتے ھیں ۔ رات کو آتے ھیں، آج دن میں آئینگے ۔

یہ سنکر سچ بہادر بولا—بھیا ھنس مکھ، ہم تمہارے ساتھ چور دیکھنے چلیں گے ۔ تم نے اُن کو دیکھا ھے؟

ھنس مکھ—ھاں، دیکھا ھے ۔

ھنس مکھی—میں نے بھی دیکھا ھے ۔

سچ بہادر—کب دیکھا ؟

ھنس مکھ—کل رات ۔

ھنس مکھی—ھاں، کل رات ۔

سچ بہادر کی ماں بچوں کی بات کچھ سمجھ نہ پائیں ۔ یہ وہ اچھی طرح جانتی تھیں، ھنس مکھ ھنس مکھی کبھی جھوٹ نہیں بولتے، پر یہ نہ سمجھ پائیں کہ کل رات اِن بچوں نے چور کہاں سے دیکھ لئے ! محلے میں نہ شور ھوا نہ کسی نے کچھ کہا ۔ اُن کا بھی جی ھوا کہ وہ ھنس مکھ کے گھر جا کر دیکھیں کہ بات کیا ھے ۔ انھوں نے سچ بہادر کو اُن کے ساتھ بھیج دیا اور ھنس مکھ سے بولیں، جب تمہارے گھر آئیں تب مجھے بلا لینا ۔

ھنس مکھ موسی کو 'ھاں' کہکر سچ بہادر کے ساتھ گھر پہونچا ۔ اپنی اماں سے بولا، سچ بہادر بھی اُن سے ملے گا جو ہمارے گھر آئیں گے اور موسی بھی اُن سے ملنا چاہتی ھیں ۔

کچھ دیر بعد وہ تینوں آدمی آ پہونچے ۔ ھنس مکھ ھنس مکھی اُن سے ایسے لپٹ گئے مانو بہت دنوں کی جان پہچان ھو ۔ سچ بہادر بھی اُن کی دیکھا دیکھی اُن تینوں سے جلدی ھل مل گیا ۔ تھوڑی دیر تک اُن تینوں کی آنکھوں سے

चिमट रहा पर दूर पकड़ से
लिपट रहा पर दूर रगड़ से

देन मिली ऐसी कुछ रब की
आंख लगी है इस पर सब की

जीने देगा जीते रहते
हां, यह झन्डा हम यह कहते

जब तक दम है इसके दम में
यह हो शामिल सब के ग़म में

कहे कोई कुछ यह क्यों भड़के
जगह न ली कुछ इसने लड़के

सच सच कहे वे खटके
हां, दो टूक कहे वे अटके

इसकी इसी अदा पर मरते
हम हिन्दी हम ज़रा न डरते

यह देता है दाना अभय का
यह झन्डा है सर्वोदय का

सबक़ दे रहा है यह कब का
सबके लिये जियो, सुख सबका

प्रीत और भी है कुछ इससे
मिला हमें यह है भी किस से

—भगवानदीन

●●●●

सच के बीज

(4)

हंसमुख हंसमुखी दोनों सुबह उठे. उठते ही उनकी अम्माने पूछा, रात कोई आया था ?

हंसमुख बोला, हां अम्मा तीन आदमी आये थे.

उनकी अम्मा ने पूछा, क्या कहते थे ?

हंसमुख बोला, ताली मांगते थे.

तुरंत हंसमुखी बोल उठी, अम्मा ताली मेरे पास थीं, मैंने जेब से निकाल कर उनको दे दीं.

अम्मा—फिर वह क्या बोले ?

हंसमुख—बोले कुछ नहीं. खाली खाट पर बैठ गए. फिर म सो गये.

چمٹ رھا پر دور پکڑ سے
لپٹ رھا پر دور رگڑ سے

دین ملی ایسی کچھ رب کی
آنکھ لگی ھے اس پر سب کی

جینے دے گا جیتے رھتے
ھاں' یہ جھنڈا ھم یہ کہتے

جب تک دم ھے اِس کے دم میں
یہ ھو شامل سب کے غم میں

کہے کوئی کچھ یہ کیوں بھڑکے
جگہ نہ خالی کچھ اس نے لڑکے

سچ سچ کہے یے کھٹکے
ھاں' دو ٹوک کہے یے اٹکے

اِسکی اِسی ادا پر مرتے
ھم ھندی ھم ذرا نہ ڈرتے

یہ دیتا ھے دان ابھے کا
یہ جھنڈا ھے سرودے کا

سبق دے رھا ھے یہ کب کا
سب کے لئے جیو' سکھ سب کا

پریت اور ابھی ھے کچھ اِس سے
ملا ھمیں یہ ھے بھی کس سے !

—بھگوان دین

●●●●

سچ کے بیج

(4)

ھنس مکھ ھنس مکھی دونوں صبح اٹھے. اُٹھتے ھی اُن کی اماں نے پوچھا' رات کوئی آیا تھا ؟

ھنس مکھ بولا' ھاں اماں تین آدمی آئے تھے .

اُن کی اماں نے پوچھا' کیا کہتے تھے ؟

ھنس مکھ بولا' تالی مانگتے تھے .

ترنت ھنس مکھی بول اُٹھی' اماں تالی میرے پاس تھیں' میں نے جیب سے نکال کر اُن کو دے دیں .

اماں—پھر وہ کیا بولے ؟

ھنس مکھ—بولے کچھ نہیں . خالی کھاٹ پر بیٹھ گئے . پھر ھم سو گئے .

बच्चों की दुनिया

अपना झण्डा

अपना झण्डा अपने वश का
हम सब इसके यह हम सबका
हम इससे यह ऊंचा हमसे
फहक रहा हम सब के दम से

इस के दर्शन करते करते
जी उठते हम मरते मरते
जब हम सब का जी है दुखता
इसका भी दुखता यह झुकता

जन गन मन जब लहर लहरता
इसका तन मन फहर फहरता
हम दुख में हों इसको दुख है
हम सुख में हों इसको सुख है

इसका एक निराला गुन है
इसकी एक अनोखी धुन है
दूर रहें सब बन्दे दुख से
देश रहें सब के सब सुख से

छाया हुआ अम्न हो हर जा
ऊंचा नीचा रहे न दरजा
एक सरीखा रब ने सिरजा
किस का राजा कैसी प्रजा

अपने झण्डे का यह कहना
अपने आप भरोसे रहना
सारे झण्डे भाई इसके
फिर वह हों चाहे भी जिसके

जगत विजय का गन्दा सपना
कभी न देखे झण्डा अपना
नहीं जैक को इस ने पटका
सीधा चला नहीं यह अटका

डट कर खड़ा अकड़ में कब है
मिल कर खड़ा जकड़ में कब है

بچوں کی دنیا

اپنا جھنڈا

اپنا جھنڈا اپنے قصب کا
ہم سب اس کے یہ ہم سب کا
ہم اِس سے یہ اُونچا ہم سے
پھوک رہا ہم سب کے دم سے

اِس کے درشن کرتے کرتے
جی اُٹھتے ہم مرتے مرتے
جب ہم سب کا جی ہے دکھتا
اس کا بھی دکھتا یہ جھکتا

جن گن من جب لہر لہرتا
اِس کا تن من پھہر پھہرتا
ہم دکھ میں ہوں اِس کو دکھ ہے
ہم سکھ میں ہوں اِسکو سکھ ہے

اس کا ایک نرالا گن ہے
اس کی ایک انوکھی دھن ہے
دور رہیں سب بندے دکھ سے
دیش رہیں سب کے سب سکھ سے

چھایا ہوا امن ہو ہر جا
اُونچا نیچا رہے نہ درجا
ایک سریکھا رب نے سر جا
کس کا راجہ کیسی پرجا

اپنے جھنڈے کا یہ کہنا
اپنے آپ بھروسے رہنا
سارے جھنڈے بھائی اِسکے
پھر وہ ہوں چاہے بھی جسکے

جگت وجے کا گندا سپنا
کبھی نہ دیکھے جھنڈا اپنا
نہیں جیک کو اس نے پٹکا
سیدھا چلا نہیں یہ اٹکا

ڈٹ کر کھڑا اکڑ میں کب ہے
مل کر کھڑا جکڑ میں کب ہے

रही थी और प्रान्ती शान्ति सम्मेलन के अधिकारी घंटों घंटों बाद पंडित जी को किसी सूरत गया ले जाने की मांग कर रहे थे. नेचर ने सब को मजबूर कर दिया था.—पंडित जी गया न जा सके. सम्मेलन कामयाब रहा. आल इन्डिया शान्ति कौन्सिल के सदर डाक्टर किचलू यहां आये थे.

18 अगस्त को डाक्टर किचलू पटना आ गये. गया सम्मेलन खत्म हो गया. उन्होंने एक प्रेस कानफ्रेन्स की. गांधी मैदान में आम सभा रखी गई थी और पंडित जी वहां बोलने वाले थे. एक दुविधा लोगों के दिल में था. पानी का—और सब से ज़ियादा इस बात का कि शायद पंडित जी कमज़ोरी के कारन बोलने की कौन कहे वहां तक जा भी न सकें. पानी बरस गया और सभा अंजुमन इस्लामिया हाल में करनी पड़ी. पंडित जी जी कड़ा करके हांपते कांपते हाल में पहुंच गये. पसीना छूट रहा था, डाक्टर साहब बगल में बैठे थे. लोगों की बेताबी की हद नहीं थी. हाल से लेकर बाहर दूर सड़क तक लोग घेरे हुए थे. पंडित जी के पहुंचते ही डाक्टर किचलू ने जल्दी तक़रीर खत्म कर दी.

पंडित जी ने कांपती हुई ज़बान से धीरे धीरे बोलना शुरू किया. वही सन्नाटा छा गया. पंडित जी की आवाज़ में एक नया पन था, पहले से असर ज़ियादा था. वह पंद्रह मिनट बोलने के लिये तैयार हुए थे लेकिन क़रीब एक घन्टा बोल गये. उन्होंने एक घन्टे में सब कुछ कह दिया. और आख़ीरी वाक्य उनका शायद हमेशा लोगों के कानों में गूंजता रहेगा—यह भारत की जनता का फ़ैसला है जिसका मुंह बन कर पंडित जी ने यह फ़ैसला दुहराया था—

"हमारा पहला फ़ैसला यह है कि हमारे देश का न तो एक दाना गेहूँ, न एक फूटी कौड़ी और न हमारे बच्चों का एक क़तरा ख़ून चीन या रूस के विरुद्ध स्तेमाल होगा."

पंडित जी ने आगे कहा—"मैं पूरी ज़िम्मेदारी के साथ कहता हूँ कि जो कुछ चीन के अन्दर हो रहा है, अगर वही कम्युनिज़्म है तो मैं चाहता हूँ कि सारी दुनियां कम्युनिस्ट हो जाए, सारी दुनियां चीन की तरह हो जाए. उतनी ही ज़िम्मेदारी के साथ मैं यह भी कहता हूँ कि चीन आज जो कुछ कर रहा है, अगर वही कम्युनिज़्म है तो कम्युनिज़्म और गांधीइज़्म में कोई फ़र्क़ नहीं है."

19 अगस्त को सुबह पंडित जी और डाक्टर किचलू पटने से रवाना हो गये. गाड़ी धीरे धीरे प्लेट फ़ार्म छोड़ती रही और दूर तक कान में भनक आती रही—साम्राजियो एशिया छोड़ो—ईरान छोड़ो, मिस्र छोड़ो—चीन छोड़ो, कोरिया छोड़ो—हिन्द चीन छोड़ो, मलाया छोड़ो—हमें रोटी चाहिये बम नहीं—हमें शांती चाहिये जंग नहीं—शान्ती की आवाज़ ज़िन्दा बाद ! जनता की एकता ज़िन्दा बाद.

——प्रवासी

رہی تھی اور پرانتی شانتی سمیلن کے ادھیکاری گھنٹوں گھنٹوں بعد پنڈت جی کو کسی صورت گیا لے جانے کی مانگ کر رہے تھے ۔ نیچر نے سب کو مجبور کر دیا تھا—پنڈت جی گیا نہ جا سکے ۔ سمیلن کامیاب رہا ۔ آل انڈیا شانتی کونسل کے صدر ڈاکٹر کچلو یہاں آئے تھے ۔

18 اگست کو ڈاکٹر کچلو پٹنہ آگئے ۔ گیا سمیلن ختم ہوگیا ۔ انہوں نے ایک پریس کانفرنس کی ۔ گاندھی میدان میں عام سبھا رکھی گئی تھی اور پنڈت جی وہاں بولنے والے تھے ۔ ایک دودھا لوگوں کے دل میں تھا ۔ پانی کا—اور سب سے زیادہ اِس بات کا کہ شاید پنڈت جی کمزوری کے کارن بولنے کی کون کہے وہاں تک جا بھی نہ سکیں ۔ پانی برس گیا اور سبھا انجمن اسلامیہ ہال میں کرنی پڑی ۔ پنڈت جی جی کڑا کر کے ہانپتے کانپتے ہال میں پہونچ گئے ۔ پسینہ چھوٹ رہا تھا ' ڈاکٹر صاحب بغل میں بیٹھے تھے ۔ لوگوں کی بیتابی کی حد نہیں تھی ۔ ہال سے لےکر باہر دور سڑک تک لوگ گھیرے ہوئے تھے ۔ پنڈت جی کے پہونچتے ہی ڈاکٹر کچلو نے جلدی تقریر ختم کردی ۔

پنڈت جی نے کانپتی ہوئی زبان سے دھیرے دھیرے بولنا شروع کیا ۔ وہی سناٹا چھا گیا ۔ پنڈت جی کی آواز میں ایک نیا پن تھا ' پہلے سے اثر زیادہ تھا ۔ وہ پندرہ منٹ بولنے کے لئے تیار ہوئے تھے لیکن قریب ایک گھنٹہ بول گئے ۔ انہوں نے ایک گھنٹے میں سب کچھ کہ دیا ۔ اور آخری واکیہ اُن کا شاید ہمیشہ لوگوں کے کانوں میں گونجتا رہے گا—یہ بھارت کی جنتا کا فیصلہ ہے جس کا منہ بنکر پنڈت جی نے یہ فیصلہ دھرایا تھا—

" ہمارا پہلا فیصلہ یہ ہے کہ ہمارے دیش کا نہ تو ایک دانہ گیہوں ' نہ ایک پھوٹی کوڑی اور نہ ہمارے بچوں کا ایک قطرہ خون چین یا روس کے ورُدھ استعمال ہوگا ۔ "

پنڈت جی نے آگے کہا—" میں پوری ذمہ داری کے ساتھ کہتا ہوں کہ جو کچھ چین کے اندر ہو رہا ہے ' اگر وہی کمیونزم ہے تو میں چاہتا ہوں کہ ساری دنیا کمیونسٹ ہوجائے ' ساری دنیا چین کی طرح ہو جائے ۔ اتنی ہی ذمہ داری کے ساتھ میں یہ بھی کہتا ہوں کہ چین آج جو کچھ کر رہا ہے ' اگر وہی کمیونزم ہے تو کمیونزم اور گاندھی ازم میں کوئی فرق نہیں ۔ "

19 اگست کو صبح پنڈت جی اور ڈاکٹر کچلو پٹنہ سے روانہ ہوگئے ۔ گاڑی دھیرے دھیرے پلیٹ فارم چھوڑتی رہی اور دور تک کان میں بھنک آتی رہی—سامراجیو ایشیا چھوڑو—ایران چھوڑو ' مصر چھوڑو—چین چھوڑو ' کوریا چھوڑو—ہند چین چھوڑو ' ملایا چھوڑو—ہمیں روٹی چاہئے بم نہیں—ہمیں شانتی چاہئے جنگ نہیں—شانتی کی آواز زندہ باد ! جنتا کی ایکتا زندہ باد !

——پرواسی

जी चीन का आंखों देखा हाल सुना रहे थे तो दस हज़ार से ज़ियादा आदमी वहां मौजूद थे वही खामोशी, उसी तरह सब के सब मौन—सब मन ही मन मुक़ाबला करते हुए—हिन्दुस्तान और चीन, चीन और हिन्दुस्तान, माओ और नेहरू, नेहरू और माओ—इस सभा में किसान दूर दूर से आए थे. उनकी पगड़ी, उनकी धजा, उनके चेहरे साफ़ कह रहे थे कि यह किसान हैं.

भागलपुर—बारह और तेरह अगस्त को भागलपुर में शान्ति सम्मेलन था. बिहार में कोई पुल ही नहीं है. नदी बीच में आ जाए तो जहाज़ से दूसरे किनारे पर पहुंचिये और वहां फिर छोटी लाइन के छकड़े पर क़दम रखिये. सारी मुसीबतों को पार करते हम भागलपुर पहुंच ही गए. च्योड़ा और दही हर दूकान पर दिखाई पड़ा. मन मसोस कर रह गया. बुखार चढ़ा था और मैं इन चीज़ों को छू न सकता था.

पंडित जी के मंज़िल पर पहुंचते ही सुना गया कि यहां भी पुलिस ने काफ़ी दौड़ धूप करके लोगों को धमकाया है कि वह शान्ति सम्मेलन में कोई सहयोग न दें—पुलिस अपना काम करती रही और जिन लोगों को वह धमकी देती थी वह एक एक कर के पंडित जी के पास आते गए. एक ही सवाल था—चीन क्या है और क्यों ऐसा है ? खाने पीने, शादी ब्याह, रहन सहन, माली, राजकाजी सभी सम्बन्ध में सवाल किये जा रहे थे और पंडित जी सब का जवाब दे रहे थे. पंडित जी को आराम करना चाहिये था लेकिन वह इन भोले लोगों के शकों को दूर करना अपने आराम से ज़ियादा अच्छा काम समझते थे. पंडित जी ने एक दो नहीं कई सभाओं में भाशन दिया. एक एक दिन में पांच पांच और छै छै घन्टे उन्हें बोलना पड़ा, घर पर जो बात चीत होती थी वह इसके ऊपर थी—14 की शाम को आम सभा हुई. लगभग दस बारह हज़ार आदमी पंडित जी के संदेश को सुनने के लिये मौजूद थे.

मुकामा—मुकामा पटना ज़िले का एक क़स्बा है. अधिकतर दुकानदार यहां रहते हैं. यहां का शान्ति सम्मेलन भी काफ़ी अच्छा रहा. कांगरेस सदर ने सदारत की और पंडित जी ने अपना संदेश जनता तक पहुंचा दिया.

पटना—पंद्रह की सुबह पटना पहुंच कर पंडित जी आराम करने वाले थे. खुद तो वह आराम क्या करते. नेचर ने आराम उनके सर थोप ही दिया. मजबूरन पंडित जी को चुप हो कर लेटना ही पड़ा. सख्त बुखार चढ़ आया था. पंडित जी बिहार के प्रान्ती शान्ति सम्मेलन में गया जाने वाले थे. वहां से बराबर फ़ोन आ रहे थे. जनता चीन के बारे में सुनने के लिये बेचैन थी. लोगों की मांग बढ़ती जा

جی چین کا آنکھوں دیکھا حال سنا رہے تھے تو دس ہزار سے زیادہ آدمی وہاں موجود تھے . وہی خاموشی' اسی طرح سب کے سب مون—سب من ہی من مقابلہ کرتے ہوئے—ہندستان اور چین' چین اور ہندستان' ماؤ اور نہرو' نہرو اور ماؤ—اِس سبھا میں کسان دور دور سے آئے تھے . اُن کی پگڑی' اُن کی دھجا' اُن کے چہرے صاف کہہ رہے تھے کہ یہ کسان ہیں .

بھاگلپور—بارہ اور تیرہ اگست کو بھاگلپور میں شانتی سمیلن تھا . بہار میں کوئی پل ہی نہیں ہے . ندی بیچ میں آجائے تو جہاز سے دوسرے کنارے پر پہونچئے اور وہاں پھر چھوٹی لائن کے چھکڑے پر قدم رکھئے. ساری مصیبتوں کو پار کرتے ہم بھاگلپور پہونچ ہی گئے . چیوڑا اور دہی ہر دوکان پر دکھائی پڑا . من مسوس کر رہ گیا . بخار چڑھا تھا اور میں اِن چیزوں کو چھو نہ سکتا تھا .

پنڈت جی کے منزل پر پہونچتے ہی سنا گیا کہ یہاں بھی پولیس نے کافی دوڑ دھوپ کر کے لوگوں کو دھمکایا ہے کہ وہ شانتی سمیلن میں کوئی سہیوگ نہ دیں—پولیس اپنا کام کرتی رہی اور جن لوگوں کو وہ دھمکی دیتی تھی وہ ایک ایک کر کے پنڈت جی کے پاس آتے گئے . ایک ہی سوال تھا—چین کیا ہے اور کیوں ایسا ہے ؟ کھانے پینے' شادی بیاہ' رہن سہن' مالی' راجکاجی سبھی سمبندھ میں سوال کئے جا رہے تھے اور پنڈت جی سب کا جواب دے رہے تھے . پنڈت جی کو آرام کرنا چاہئے تھا لیکن وہ اِن بھولے لوگوں کے شکوں کو دور کرنا اپنے آرام سے زیادہ اچھا کام سمجھتے تھے . پنڈت جی نے ایک دو نہیں کئی سبھاؤں میں بھاشن دیا . ایک ایک دن میں پانچ پانچ اور چھ چھ گھنٹے انہیں بولنا پڑا' گھر پر جو بات چیت ہوتی تھی وہ اِس کے اوپر تھی—14 کی شام کو عام سبھا ہوئی . لگ بھگ دس بارہ ہزار آدمی پنڈت جی کے سندیش کو سننے کے لئے موجود تھے .

مکامہ—مکامہ پٹنہ ضلع کا ایک قصبہ ہے . ادھک تر دوکاندار یہاں رہتے ہیں ، یہاں کا شانتی سمیلن بھی کافی اچھا رہا . کانگریس صدر نے صدارت کی اور پنڈت جی نے اپنا سندیش جنتا تک پہونچا دیا .

پٹنہ—پندرہ کی صبح پٹنہ پہونچ کر پنڈت جی آرام کرنے والے تھے . خود تو وہ آرام کیا کرتے . نیچر نے آرام اُن کے سر تھوپ ہی دیا . مجبوراً پنڈت جی کو چپ ہو کر لیٹنا ہی پڑا . سخت بخار چڑھ آیا تھا . پنڈت جی بہار کے پرانتی شانتی سمیلن میں گیا جانے والے تھے . وہاں سے برابر فون آ رہے تھے . جنتا چین کے بارے میں سننے کے لئے بے چین تھی . لوگوں کی مانگ بڑھتی جا

र पर्लियामेन्ट के मेम्बर चुने गये हैं. अभी तक खबरें कान में आई थीं कि हमारी पार्लियामेन्ट के ों को फुसलाने के लिये अमरीका करोड़ों रुपया खर्च हा है लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं था. महेश्वर जी ने आम जनता के सामने भरी सभा में साफ साफ —"अमरीका करोड़ों रुपया खर्च करके हमारी पार्लिया के मेम्बरों को खरीद रहा है. मुझे खुद लालच दी गई र आज तक दी जा रही है. मैं चाहूँ तो लाखों मिन्टों ा सकता हूँ." पता नहीं यह बात हमारे अधिकारियों ी पहुंचती है या नहीं. क्या इस आरोप का जवाब र देगी, क्या इस खतरनाक पालीसी का नतीजा के दिमाग़ में है या डालर की पीलाहट ने आंखों में का रोग कर दिया है.

भा में लगभग सात हज़ार आदमी थे. पंडित जी तीन क बोलते रहे और लोग बिना हिले डुले सुनते रहे. कोई उनके दिल की आवाज़ सुन सकता, कोई उसे सकता. वह सब के सब कह रहे थे—हमें चीन ये अमरीका नहीं—हमें रोटी चाहिये बम नहीं—हमें चाहिये जंग नहीं !

बीगू सराए—सुबह सवेरे ही उठना पड़ा. पंडित जी कोई मशीन. बटन दबाया और तैयार. मुज़फ़्फ़रपुर से सराय के लिये रवाना हो गये. बहुत से लोग स्टेशन पर थे. वह पंडित जी को छोड़ना नहीं चाहते थे. चीन ी भी तस्वीर उनके दिमाग़ में बन पाई थी उसे वह जी के सामने खोल कर रख देना चाहते थे, उसे जी के ब्रुश से ठीक करवा लेना चाहते थे.

ीगू सराए मुंगेर ज़िले का एक बड़ा क़स्बा है, ग़ल्ले डी है. यहां जिन लोगों की शकलें दिखाई पड़ीं वह सरी तरह के थे—दूसरों से ज़ियादा सीधे. पंडित स्टेशन पर उतरते ही नारे गूंज उठे. एक नया नारा पड़ा—साम्राजियो एशिया छोड़ो—ईरान छोड़ो, छोड़ो—चीन छोड़ो, कोरिया छोड़ो —हिन्द चीन मलाया छोड़ो—मोटर में सख्त गरमी थी, पंडित जी थक गये थे लेकिन लोगों का जोश लहरें मार रहा पंडित जी का जुलूस निकालने पर तुले हुए थे. निकाला—बहुत लम्बा चौड़ा—सड़कों को पार करता, में शान्ती की गूंज उठाता एक जगह पर आख़ीर रुक . यह थी हमारी आज की मंज़िल !

हां सुना गया कि पुलिस ने डुग्गी पीट रखी थी कि की सभा में कोई न जाए. जो जाएगा उस पर चलेंगे, वहां लाठी चार्ज होगा—लोगों को डराने ी कोशिश की गई थी—लेकिन शाम को शान्ति का पूरी मस्ती से हवा में झूम रहा था और पंडित

ھیں اور پارلیامنٹ کے ممبر چلے گئے ھیں . ابھی تک اُڑتی خبریں کان میں آئی تھیں کہ ھماری پارلیامنٹ کے ممبروں کو پھسلانے کے لئے امریکہ کروڑوں روپیہ خرچ کر رھا ہے لیکن اِس بات کا کوئی ثبوت نہیں تھا . مہیشور پرساد جی نے عام جنتا کے سامنے بھری سبھا میں صاف صاف کہا—"امریکہ کروڑوں روپیہ خرچ کرکے ھماری پارلیامنٹ کے ممبروں کو خرید رھا ہے . مجھے خود لالچ دی گئی ہے اور آج تک دی جا رہی ہے . میں چاھوں تو لاکھوں منٹوں میں کما سکتا ھوں ." پتہ نہیں یہ بات ھمارے ادھیکاریوں تک بھی پہونچتی ہے یا نہیں . کیا اِس آروپ کا جواب سرکار دے گی، کیا اِس خطرناک پالیسی کا نتیجہ بھی اُس کے دماغ میں ہے یا ڈالر کی پیلاھٹ نے آنکھوں میں کمل کا روگ کردیا ہے .

سبھا میں لگ بھگ سات ھزار آدمی تھے . پنڈت جی تین گھنٹے تک بولتے رھے اور لوگ بنا ھلے ڈلے سنتے رھے . کاش کوئی اُن کے دل کی آواز سن سکتا، کوئی اُسے سمجھ سکتا . وہ سب کے سب کہہ رھے تھے—ھمیں چین چاھئے امریکہ نہیں—ھمیں روٹی چاھئے بم نہیں—ھمیں شانتی چاھئے جنگ نہیں !

بیگو سرائے—صبح سویرے ھی اُٹھنا پڑا . پنڈت جی تھے یا کوئی مشین . بٹن دبایا اور تیار . مظفر پور سے بیگو سرائے کے لئے روانہ ھوگئے . بہت سے لوگ اسٹیشن پر آئے تھے . وہ پنڈت جی کو چھوڑنا نہیں چاھتے تھے . چین کی جو بھی تصویر اُن کے دماغ میں بن پائی تھی اُسے وہ پنڈت جی کے سامنے کھول کر رکھ دینا چاھتے تھے، اُسے پنڈت جی کے برش سے ٹھیک کروا لینا چاھتے تھے .

بیگو سرائے منگیر ضلع کا ایک بڑا قصبہ ہے، غلے کی منڈی ہے . یہاں جن لوگوں کی شکلیں دکھائی پڑیں وہ کچھ دوسری طرح کے تھے—دوسروں سے زیادہ سیدھے . پنڈت جی کے اسٹیشن پر اُترتے ھی نعرے گونج اُٹھے . ایک نیا نعرہ سنائی پڑا—سامراجیو ایشیا چھوڑو—ایران چھوڑو، مصر چھوڑو—چین چھوڑو، کوریا چھوڑو—ھند چین چھوڑو، ملایا چھوڑو—موٹر میں سخت گرمی تھی، پنڈت جی کافی تھک گئے تھے لیکن لوگوں کا جوش لہریں مار رھا تھا، وہ پنڈت جی کا جلوس نکالنے پر تلے ھوئے تھے . جلوس نکلا—بہت لمبا چوڑا—سڑکوں کو پار کرتا، محلوں میں شانتی کی گونج اُٹھاتا ایک جگہ پر آخیر رک ھی گیا . یہ تھی ھماری آجکی منزل !

یہاں سنا گیا کہ پولیس نے ڈگی پیٹ رکھی تھی کہ شانتی کی سبھا میں کوئی نہ جائے . جو جائے گا اُس پر مقدمے چلیں گے، وھاں لاٹھی چارج ھوگا—لوگوں کو ڈرانے کی پوری کوشش کی گئی تھی—لیکن شام کو شانتی کا جھنڈا جب پوری مستی سے ھوا میں جھوم رھا تھا اور پنڈت

आपसी मुख़ालफ़त रखने वाले एक प्लेटफ़ार्म पर जमा हो गए थे, सबका एक ही ध्येय बन गया था—शान्ति—शान्ति से उनका जीवन है और लड़ाई से वह ही न रहेंगे तो कौन सोशलिस्ट होगा, कौन कम्युनिस्ट रहेगा, कौन कांगरेसी होगा, कौन किसान मज़दूर प्रजापारटी का झन्डा बुलन्द करेगा.

पंडित सुन्दर लाल ने अपना भाशन शुरू किया. चार पांच हज़ार आदमी उत्सुक बैठे थे. पंडित जी ढ़ाई घंटे तक बोलते रहे. लोग जैसे गुम सुम हो गए थे, जैसे वह दुनिया की हर चीज़ से बे ख़बर हो रहे थे. जैसे वह जादू के तमाशे के बारे में सुन रहे हों. पंडितजी उन्हें चीन का हाल सुना रहे थे— चीन की कहानी, ज़िन्दा जादू का तमाशा—उम्मीद से कभी उनकी आंखों में चमक आ जाती थी और कभी भुकमरी, कन्ट्रोल, अफ़सरी धांधागर्दी, दुख मुसीबत की अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी पर उनका ध्यान जाता था और वह गुस्से से कांप उठते थे—सब के मन से एक ही आवाज़ उठ रही थी, एक ही सवाल पैदा हो रहा था—यह क्योंकर हुआ, यह जादू क्यों कर किया जा सका, चीन ने यह स्वर्ग दो साल में कैसे बना लिया—और पंडित जी का जवाब था—जहां चाह होती है, वहां राह होती है. हम भी कर सकते थे, हम अब भी कर सकते हैं—लेकिन हमारी चाह बुझ गई, हमने राह गुम कर दी. चाह पैदा हो जाये तो राह निकल आएगी.

दिन भर लोगों का तांता बंधा रहता था. सब लोग चीन के बारे में जानना चाहते थे, शान्ती आन्दोलन का मतलब समझना चाहते थे. कुछ को शक थे, वह उसे दूर करना चाहते थे, कुछ डर गये थे और वह अपनी हिम्मत बंधाना चाहते थे.

मुज़फ़्फ़रपुर—10 अगस्त को क़रीब ग्यारह बजे पंडित जी मुज़फ़्फ़रपुर के लिये चल पड़े. चार बजे हम सब मुज़फ़्फ़रपुर पहुँचे. स्टेशन पर वही धूम, वही नारों की गूंज, वही झन्डे—सिर्फ़ फ़रक़ एक था, आदमी दूसरे थे, जगह दूसरी थी.

मुज़फ़्फ़रपुर में पंडित जी पहले भी आ चुके थे जब मुज़फ़्फ़रपुर लावे के नीचे दबा था. दोनों दफ़ा के आने का मक़सद एक ही था—उस दफ़ा भी दुखियों को ढारस देनी थी और इस दफ़ा भी. उसी दिन शाम को एक बड़े मैदान में शान्ती सम्मेलन हुआ. डाइस पर पार्लियामेन्ट के मेम्बर भी थे, डाक्टर भी थे, सौदागर भी थे, प्रोफ़ेसर भी थे, पंजाबी भी थे, बंगाली भी थे. श्री महेश्वर प्रसाद नरायन सिंह ने इस सभा की सदारत की. आप सोशलिस्ट पारटी के मेम्बर

آپسی مخالفت رکھنے والے ایک پلیٹ فارم پر جمع ہوگئے تھے، سب کا ایک ہی دھیہ بن گیا تھا—شانتی—شانتی سے اُن کا جیون ہے اور لڑائی سے وہ ہی نہ رہیں گے تو کون سوشلسٹ ہوگا، کون کمیونسٹ رہے گا، کون کانگریسی ہوگا، کون کسان مزدور پرجا پارٹی کا جھنڈا بلند کرے گا.

پنڈت سندر لال نے اپنا بھاشن شروع کیا. چار پانچ ہزار آدمی اُتسک بیٹھے تھے. پنڈت جی ڈھائی گھنٹے تک بولتے رہے. لوگ جیسے گم سم ہوگئے تھے، جیسے وہ دنیا کی ہر چیز سے بے خبر ہو رہے تھے. جیسے وہ جادو کے تماشے کے بارے میں سن رہے ہوں پنڈت جی انہیں چین کا حال سنا رہے تھے—چین کی کہانی، زندہ جادو کا تماشہ—اُمید سے کبھی اُن کی آنکھوں میں چمک آ جاتی تھی اور کبھی بھک مری، کنٹرول، افسری دھاندا گردی، دکھ مصیبت کی اپنی روزانہ کی زندگی پر اُن کا دھیان جاتا تھا اور وہ غصے سے کانپ اُٹھتے تھے—سب کے من سے ایک ہی آواز اُٹھ رہی تھی، ایک ہی سوال پیدا ہو رہا تھا—یہ کیوں کر ہوا؟ یہ جادو کیوں کر کیا جاسکا، چین نے یہ سورگ دو سال میں کیسے بنا لیا—اور پنڈت جی کا جواب تھا—جہاں چاہ ہوتی ہے، وہاں راہ ہوتی ہے. ہم بھی کرسکتے تھے، ہم اب بھی کرسکتے ہیں—لیکن ہماری چاہ بجھ گئی، ہم نے راہ گم کردی. چاہ پیدا ہو جائے تو راہ نکل آئے گی.

دن بھر لوگوں کا تانتا بندھا رہتا تھا. سب لوگ چین کے بارے میں جاننا چاہتے تھے، شانتی آندولن کا مطلب سمجھنا چاہتے تھے. کچھ کو شک تھے، وہ اُسے دور کرنا چاہتے تھے، کچھ ڈر گئے تھے اور وہ اپنی ہمت بندھانا چاہتے تھے.

مظفرپور—10 اگست کو قریب گیارہ بجے پنڈت جی مظفرپور کے لئے چل پڑے. چار بجے ہم سب مظفرپور پہونچے. اسٹیشن پر وہی دھوم، وہی نعروں کی گونج، وہی جھنڈے—صرف فرق ایک تھا، آدمی دوسرے تھے، جگہ دوسری تھی.

مظفرپور میں پنڈت جی پہلے بھی آ چکے تھے جب مظفرپور لاوے کے نیچے دبا تھا. دونوں دفعہ کے آنے کا مقصد ایک ہی تھا—اُس دفعہ بھی دکھیوں کو ڈھارس دینی تھی اور اِس دفعہ بھی. اُسی دن شام کو ایک بڑے میدان میں شانتی سمیلن ہوا. ڈائس پر پارلیامنٹ کے ممبر بھی تھے، ڈاکٹر بھی تھے، سوداگر بھی تھے، پروفیسر بھی تھے، پنجابی بھی تھے، بنگالی بھی تھے. شری مہیشور پرساد نرائن سنگھ نے اِس سبھا کی صدارت کی. آپ سوشلسٹ پارٹی کے ممبر

…ा होगा कि यह किसी सूरत मरते नहीं हैं—इन्हें …ा जन्म चाहिये, स्वर्ग चाहिये, आदर्श चाहिये. केवल …की इन्हें ज़रूरत है. जब तक इन की यह इच्छा इस …जागती दुनिया में ही पूरी नहीं होती यह इसी तरह …टते जाएंगे, मरते जाएंगे, नहाते जाएंगे, पूजते जाएंगे— …हम पढ़े लिखे अपने ज़ोम में इनका मज़ाक उड़ाते …, इन्हें सीख देते रहेंगे, इनका सुधार करते रहेंगे, इन्हें …समझाते रहेंगे, इन्हें स्वर्ग का रास्ता दिखाते रहेंगे.

एक आए, दो आए, तीन आए, एक तांता बंध गया. …ा भर गया. डिब्बे में फिर सांस रुकने लगी. कन्धे से …ा छिलने लगा. अमीर ग़रीब, छोटे बड़े, मर्द औरत …का भेद मिट गया—सब इनसान थे, सब मुसाफ़िर थे— …ना आनन्द था इस तकलीफ़ में !—एक दूसरे के लिये, …ने लिये, सब के लिये !

छपरा—छपरा के स्टेशन पर ट्रेन एक धचके के साथ …ी और कान में गूंज सुनाई पड़ी—शान्ति ज़िन्दाबाद— …न्ति ज़िन्दाबाद. और फिर क़रीब से एक ज़ोर का …ा सुनाई दिया—रोटी चाहिये बम नहीं, शान्ति चाहिये …ा नहीं. ज़ोर की आवाज़ें गूंज रही थीं. पहले सारे नारे …खरे बिखरे मालूम होते थे, जैसे अलग अलग, दूर दूर ! …र वह क़रीब होते गए, एक दूसरे में मिलते गए, एक …गए, इकट्ठा हो गए, शान्ति की गूंज ऊंची हो गई, ज़ोर …गया. दिमाग़ों में एक थरथरी पैदा होने लगी, दिलों में …श पैदा होने लगा, ढारस बंधने लगी.

नीले नीले झण्डों पर सुफ़ेद कबूतर फुदक रहे थे. कभी …बूतर पैग़ाम ले जाता था, उस के पर काटे जाते थे, वह …ठों की मुंडेर पर बैठ कर संदेश पहुँचाता था—आज …आकाश में उड़ रहा है. हर एक उसे चाहता है, हर …का सन्देश एक है—शान्ति—और वह उसे दुनिया के …ने कोने में पहुंचा रहा है.

छपरा ज़िला शान्ति सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिये …डेत सुन्दर लाल यहां आए थे. यह फरेरे उन्हीं के चारों …रफ़ उड़ रहे थे, यह नारे उन्हीं का स्वागत कर रहे … शान्ति शान्ति का स्वागत कर रही थी और थोड़ी देर …लिये ही सही लड़ाई, दंगे, फ़साद के भूत उस जगह से …ग गए थे—दूर बहुत दूर—इन शान्ति के नारों की पहुँच …बहुत दूर. लेकिन कब तक भागेंगे. उनकी आत्मा भी …न्ति शान्ति चिल्ला उठेगी और ख़ुद उन्हें कहना पड़ेगा—

इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से

8 अगस्त को टाउन हाल छपरा में शान्ति सम्मेलन …आ. सब साथ बैठे थे—फिर दीवार टूट गई थी. धर्म …ी नहीं, समाज की नहीं, केवल राजनीति की. कांगरेसी, …शलिस्ट, प्रजा पार्टी के मेम्बर, कम्युनिस्ट और सब

اچھا ہوگا کہ یہ کسی صورت مرتے نہیں ہیں—انہیں اچھا جنم چاہئے' سورگ چاہئے' آدرش چاہئے. کیول اسی کی انہیں ضرورت ہے . جب تک اِن کی یہ اچھا اِس جیتی جاگتی دنیا میں ہی پوری نہیں ہوتی یہ اسی طرح گھستے جائیں گے' مرتے جائیں گے' نہاتے جائیں گے' پوجتے جائیں گے—اور ہم پڑھے لکھے اپنے زعم میں اِن کا مذاق اُڑاتے رہیں گے' اِنہیں سیکھ دیتے رہیں گے' اِن کا سدھار کرتے رہیں گے' انہیں دھرم سمجھاتے رہیں گے' انہیں سورگ کا راستہ دکھاتے رہیں گے .

ایک آئے' دو آئے' تین آئے' ایک تانتا بندھ گیا. ڈبہ بھر گیا . ڈبے میں پھر سانس رکنے لگی. کندھے سے کندھا چھلنے لگا . امیر غریب' چھوٹے بڑے' مرد عورت سب کا بھید مٹ گیا—سب انسان تھے' سب مسافر تھے—کتنا آنند تھا اِس تکلیف میں!—ایک دوسرے کے لئے' اپنے لئے' سب کے لئے !

چھپرا—چھپرا کے اسٹیشن پر ٹرین ایک دھچکے کے ساتھ رکی اور کان میں گونج سنائی پڑی—شانتی زندہ باد—شانتی زندہ باد . اور پھر قریب سے ایک زور کا نعرہ سنائی دیا—روٹی چاہئے بم نہیں' شانتی چاہئے جنگ نہیں . زور کی آوازیں گونج رہی تھیں . پہلے سارے نعرے بکھرے بکھرے معلوم ہوتے تھے' جیسے الگ الگ' دور دور ! پھر وہ قریب ہوتے گئے' ایک دوسرے میں ملتے گئے' ایک ہوگئے' اکٹھا ہوگئے' شانتی کی گونج اونچی ہوگئی' زور بڑھ گیا. دماغوں میں ایک تھر تھری پیدا ہونے لگی' دلوں میں جوش پیدا ہونے لگا' ڈھارس بندھنے لگی .

نیلے نیلے جھنڈوں پر سفید کبوتر پھدک رہے تھے . کبھی کبوتر پیغام لے جاتا تھا' اُس کے پر کاٹے جاتے تھے' وہ کوٹھوں کی منڈیر پر بیٹھ کر سندیش پہونچاتا تھا . —آج وہ آکاش میں اُڑ رہا ہے . ہر ایک اُسے چاہتا ہے' ہر ایک کا سندیش ایک ہے—شانتی—اور وہ اُسے دنیا کے کونے کونے میں پہونچا رہا ہے .

چھپرا ضلع شانتی سمیلن کا اُدگھاٹن کرنے کے لئے پنڈت سندر لال یہاں آئے تھے . یہ پھریرے انہیں کے چاروں طرف اُڑ رہے تھے' یہ نعرے اُنہیں کا سواگت کر رہے تھے . شانتی شانتی کا سواگت کر رہی تھی اور تھوڑی دیر کے لئے ہی سہی لڑائی' دنگے' فساد کے بھوت اُس جگہ سے بھاگ گئے تھے—دور بہت دور—اِن شانتی کے نعروں کی پہونچ سے بہت دور . لیکن کب تک بھاگیں گے . اُن کی آتما بھی شانتی شانتی چلا اُٹھے گی اور خود اُنہیں کہنا پڑے گا—

اِس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ سے

8 اگست کو ٹاون ہال چھپرا میں شانتی سمیلن ہوا . سب ساتھ بیٹھے تھے—پھر دیوار ٹوٹ گئی تھی . دھرم کی نہیں' سماج کی نہیں' کیول راج نیت کی . کانگریسی' سوشلسٹ' پرجا پارٹی کے ممبر' کمیونسٹ اور سب

प्रवासी की डायरी

डिब्बों में एक हलचल पैदा हुई. सब आपस में टकरा गये. डिब्बे के बाहर से आती हुई इंजिन की सीटियां कानों में गूंजी—फिर एक सन्नाटा छा गया. केवल छनों के लिये—और फिर वही सीं सीं—ज़ोर ज़ोर से, रुक रुक कर, धीमे धीमे से. कोई मोटा आदमी जैसे दूर से चल कर आया हो और सांस निकाल निकाल कर दम ले रहा हो.

7 अगस्त को सुबह राम बाग़ स्टेशन से गाड़ी चल दी. लेकिन ख़रामा ख़रामा टहलने की नीयत से, मस्ती में, न कोई तेज़ी, न कोई जल्दी. दिन अपना, रात अपनी, सफ़र अपना. एक फ़रलांग पर फिर एक धक्का लगा और मालूम हुआ कि गाड़ी रुक गई है. मुसाफ़िर चिल्लाने लगे, कोई इंजिन को कोसने लगा, किसी ने गार्ड पर ग़ुस्सा उतारा. एक बूढ़े आदमी मेरे डिब्बे में बैठे थे उन्होंने शान्त भाव से, हंस कर, कहा—ओटी आर है, ओटी आर. अभी क्या देखा है—आगे आगे देखिये होता है क्या.

बनारस तक गाड़ी आराम से चली गई. कोई भीड़ नहीं थी, कोई धक्कम धक्का नहीं था. मुझे शक होने लगा कि हो न हो कोई वज़ीर इस ट्रेन से सफ़र कर रहा है और अधिकारियों ने उसकी सुविधा के लिये टिकट देना ही बन्द कर दिया है. गौतम बुद्ध के पिता ने गौतम के चित्त को ठीक रखने के लिये ऐसा प्रबन्ध कर रखा था कि भयानक सीन—जीवन में रोज़मर्रा के दृश्य—उन्हें न दिखाई पड़ें. हमारे रेलवे अधिकारियों को भी वज़ीरों का बहुत ख़्याल है. कहीं बेचारे वैरागी न हो जाएँ!

बनारस में सारे क़ानून टूट गये. कोई दरजा नहीं रह गया, कोई दीवार नहीं रह गई. ट्रेन ट्रेन थी और उससे सबको सफ़र करने का अधिकार था. सफ़ेद पोशों के कपड़े ख़राब हो रहे थे और वह चुप थे, किसानों के पसीने से बहुत से लोग नाक चढ़ा रहे थे लेकिन मजबूर थे. नीचे से एक सैलाब आया था और सारे भेद भाव मिटाता सारी गाड़ी पर छा गया था. गंगा अश्नान लोग करने आये थे—ज़िलों, सूबों की सीमाओं को पार करके—बरसों इसका उन्होंने इन्तज़ार किया था, लाखों सपने उन्होंने देखे थे. ज़िन्दगी में न वह सपने सच होने वाले हैं और न इन बेचारों को निराशा होने वाली है. आशा की एक मद्धिम किरन के सहारे यह जीये जा रहे हैं—यह कहना ज़ियादा

پرواسی کی ڈائری

ڈبوں میں ایک ہلچل پیدا ہوئی . سب آپس میں ٹکرا گئے . ڈبے کے باہر سے آتی ہوئی انجن کی سیٹیاں کانوں میں گونجیں—پھر ایک سناٹا چھا گیا . کیول چھنوں کے لئے—اور پھر وہی سیں سیں—زور زور سے' رک رک کر' دھیمے دھیمے سے . کوئی موٹا آدمی جیسے دور سے چل کر آیا ہو اور سانس نکال نکال کر دم لے رہا ہو.

7 اگست کو صبح رام باغ اسٹیشن سے گاڑی چل دی. لیکن خراما خراما' ٹہلنے کی نیت سے' مستی میں' نہ کوئی تیزی' نہ کوئی جلدی . دن اپنا' رات اپنی' سفر اپنا . ایک فرلانگ پر پھر ایک دھچکا لگا اور معلوم ہوا کہ گاڑی رک گئی ہے . مسافر چلانے لگے' کوئی انجن کو کوسنے لگا' کسی نے گارڈ پر غصہ اُتارا . ایک بوڑھے آدمی میرے ڈبے میں بیٹھے تھے اُنہوں نے شانت بھاؤ سے' ہنس کر' کہا—او ٹی آر ہے' او ٹی آر . ابھی کیا دیکھا ہے—آگے آگے دیکھئے ہوتا ہے کیا .

بنارس تک گاڑی آرام سے چلی گئی . کوئی بھیڑ نہیں تھی' کوئی دھکم دھکا نہیں تھا. مجھے شک ہونے لگا کہ ہو نہ ہو کوئی وزیر اِس ٹرین سے سفر کر رہا ہے اور ادھیکاریوں نے اُس کی سودھا کے لئے ٹکٹ دینا ہی بند کر دیا ہے . گوتم بدھ کے پتا نے گوتم کے چت کو ٹھیک رکھنے کے لئے ایسا پربندھ کر رکھا تھا کہ بھیانک سین—جیون میں روز مرہ کے درشیہ—اُنہیں نہ دکھائی پڑیں . ہمارے ریلوے ادھیکاریوں کو بھی وزیروں کا بہت خیال ہے . کہیں بیچارے ویراگی نہ ہو جائیں!

بنارس میں سارے قانون ٹوٹ گئے . کوئی درجہ نہیں رہ گیا' کوئی دیوار نہیں رہ گئی . ٹرین ٹرین تھی اور اُس سے سب کو سفر کرنے کا ادھیکار تھا . سفید پوشوں کے کپڑے خراب ہو رہے تھے اور وہ چپ تھے' کسانوں کے پسینے سے بہت سے لوگ ناک چڑھا رہے تھے لیکن مجبور تھے . نیچے سے ایک سیلاب آیا تھا اور سارے بھید بھاؤ مٹاتا ساری گاڑی پر چھا گیا تھا . گنگا اشنان لوگ کرنے آئے تھے—ضلعوں' صوبوں کی سیماؤں کو پار کرکے—برسوں اِس کا اُنہوں نے انتظار کیا تھا' لاکھوں سپنے اُنہوں نے دیکھے تھے . زندگی میں نہ وہ سپنے سچ ہونے والے ہیں اور نہ ان بیچاروں کو نراشا ہونے والی ہے . آشا کی ایک مدھم کرن کے سہارے یہ جئے جا رہے ہیں—یہ کہنا زیادہ

अमरीकी फ़ौजी हाकिम और इंजीनियरों का आना जाना ज़ोरों पर है. एटम बम से बचने के लिये ज़मीन के नीचे हवाई अड्डे और हथियार और दूसरे जंगी सामानों को जमा करने के लिये ख़ास तरह के तहख़ाने बनाने की स्कीम पर भी अमरीकन सोच विचार कर रहे हैं. अमरीकी जंगी माहिरों का विचार है कि लड़ाई छिड़ जाने की सूरत में योरप के हवाई अड्डों पर ज़ियादा भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि वह आसानी से रूसी हवाई जहाज़ों का निशाना बन सकते हैं. इसलिये रूसी एलाक़ों से दूर टियुनीशिया और मराको को अमरीका ने अपना फ़ौजी अड्डा बनाया है. लोक शाही का राग अलापने वाला यह मुल्क किसी भी क़ीमत पर टियुनीशिया को साम्राजी पंजे से छूटने की इजाज़त नहीं दे सकता.

जिस तरह एशिया के दूसरे मुल्क साम्राजी ताक़तों से तेज़ी से छुटकारा हासिल कर रहे हैं उसी तरह वह वक़्त भी जल्द आएगा जब साम्राज के क़िले अफ़्रीक़ा में भी गिरना शुरू हो जायेंगे और टियुनीशिया, मराको और अलजीरिया वग़ैरा के रहने वाले अपने मुल्क में आज़ादी से सांस ले सकेंगे.

"..........मैं तो रामराज यानी दुनिया में ईश्वर के राज का सपना देखता हूँ. वही आज़ादी है. स्वर्ग में यह राज कैसा होगा, सो मैं नहीं जानता. बहुत दूर की चीज़ जानने की मुझे इच्छा भी नहीं है. अगर वर्तमान (हाल) दिल को काफ़ी अच्छा लगता हो, तो भविश्य (मुस्तक़बिल) उससे बहुत अलग नहीं हो सकता.

"इसलिये राज नैतिक, आर्थिक और नैतिक (अख़लाक़ी) तीनों तरह की आज़ादी ही सच्ची आज़ादी है......"

—महात्मागांधी

تیونیشیا

امریکی فوجی حاکم اور انجینیروں کا آنا جانا زوروں پر ہے. ایٹم بم سے بچنے کے لئے زمین کے نیچے ہوائی اڈے اور ہتھیار اور دوسرے جنگی سامانوں کو جمع کرنے کے لئے خاص طرح کے تہ خانے بنانے کی اسکیم پر بھی امریکن سوچ بچار کر رہے ہیں. امریکی جنگی ماہروں کا وچار ہے کہ لڑائی چھڑ جانے کی صورت میں یورپ کے ہوائی اڈوں پر زیادہ بھروسہ نہیں کیا جا سکتا کیونکہ وہ آسانی سے روسی ہوائی جہازوں کا نشانہ بن سکتے ہیں. اس لئے روسی علاقوں سے دور تیونیشیا اور مراکو کو امریکہ نے اپنا فوجی اڈا بنایا ہے. لوک شاہی کا راگ الاپنے والا یہ ملک کسی بھی قیمت پر تیونیشیا کو سامراجی پنجے سے چھوٹنے کی اجازت نہیں دے سکتا.

جس طرح ایشیا کے دوسرے ملک سامراجی طاقتوں سے تیزی سے چھٹکارا حاصل کر رہے ہیں اسی طرح وہ وقت بھی جلد آئے گا جب سامراج کے قلعے افریقہ میں بھی گرنا شروع ہوجائیں گے اور تیونیشیا' مراکو اور الجیریا وغیرہ کے رہنے والے اپنے ملک میں آزادی سے سانس لے سکیں گے.

"............... میں تو رام راج یعنی دنیا میں ایشور کے راج کا سپنا دیکھتا ہوں. وہی آزادی ہے. سورگ میں یہ راج کیسا ہوگا' سو میں نہیں جانتا. بہت دور کی چیز جاننے کی مجھے اچھا بھی نہیں ہے. اگر ورتمان (حال) دل کو کافی اچھا لگتا ہو' تو بھوشیہ (مستقبل) اس سے بہت الگ نہیں ہو سکتا.

"اس لئے راج نیتک' آرتھک اور نیتک (اخلاقی) تینوں طرح کی آزادی ہی سچی آزادی ہے......"

—مہاتما گاندھی

यह लोग पूरी आज़ादी की मांग करते हैं. एक तरफ़ राष्ट्री नेताओं की गिरफ़्तारी शुरू हुई और दूसरी तरफ़ फ़्रान्स ने दुनिया को धोका देने के लिये अपने कुछ देसी हमदर्दों को वज़ीर बना दिया और कुछ क़ानूनी अधिकार देने का एलान कर दिया. बहुत से एलानों की तरह यह एलान भी अभी तक पूरा नहीं हुआ.

टियुनीशिया की हालत दिन पर दिन ख़राब होती जा रही है. जनता अपना पैदायशी हक़ हासिल करने के लिये कोशिश कर रही है. मुल्क के कोने कोने में हड़तालें हो रही हैं. पुलिस उन्हें बेदर्दी से कुचलने की कोशिश करती है. औरतों और बच्चों तक पर कभी लाठी चार्ज किया जाता है और कभी गोलियां बरसाई जाती हैं.

टियुनीशिया के नाम के हाकिम बे को उनके महल में क़रीब क़रीब बिल्कुल नज़र बंद कर दिया गया है. इनके हर क़दम पर कड़ी निगरानी रखी जाती है. ताज़ा ख़बरें आई हैं कि उन्हें ज़हर देने की भी कोशिश की गई थी. इत्तफ़ाक़ से साज़िश का भेद खुल गया. बे का नाम सैयदुल अमीन है. इनकी उम्र इस वक़्त 70 साल है. टियुनिस से कुछ दूरी पर कारथेज नामी जगह पर इनका महल है. उस सड़क पर जो बीच अफ़्रीक़ा को स्वेज़ से मिलाती है एक ख़ूबसूरत बाग़ के अन्दर यह महल बना है. बे का ख़ास काम है अपने बड़े कमरे की अनगिनत घड़ियों की देख भाल करना और महल के प्रोजेक्टर से सनीमा देखना. इसके अलावा इन्हें दवाओं से भी काफ़ी दिलचस्पी है. कहने के लिये हाकिम बे हैं और इनके मातहत एक मंत्री मंडल भी काम करता है. इसमें आधे अरब वज़ीर भी होते हैं. लेकिन असलियत में फ़्रान्स का रेज़ीडेन्ट जनरल ही जो चाहता है करता है, उसकी मर्ज़ी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता. इन सब पाबन्दियों के होते हुए भी देश की आज़ादी के आन्दोलन में उनकी हमदर्दी सराहना के क़ाबिल है. वह छुप छुपा कर फ़्रान्सीसियों से अपने मुल्क को आज़ाद कराने की कोशिश करते रहते हैं.

राष्ट्री आन्दोलन को भंग करने के लिये फ़्रान्सीसियों ने बहुत से दांव चले हैं. कभी अन्दरूनी मामलों में ज़ियादा से ज़ियादा अधिकार देने का वादा किया, कभी आपस में लड़ाने की कोशिश की और कभी फ़ौजी ताक़त इस्तेमाल की. हिन्द चीन में मुंह की खाने पर भी फ़्रान्स की साम्राजी पालीसी में कोई तबदीली नज़र नहीं आ रही. वह अपने चंगुल को और मज़बूत करने की कोशिश में है. अमरीका की मदद भी उसे इस काम में हासिल हो गई है.

तीसरी बड़ी जंग की तैयारी के सिलसिले में अमरीका ने टियूनीशिया और मराको में हवाई अड्डे क़ायम करने शुरू कर दिये हैं. सड़कें और रेलवे लाइनें बनाई जा रही हैं.

یہ لوگ پوری آزادی کی مانگ کرتے ہیں . ایک طرف راشٹری نیتاؤں کی گرفتاری شروع ہوئی اور دوسری طرف فرانس نے دنیا کو دھوکا دینے کے لئے اپنے کچھ دیسی ہمدردوں کو وزیر بنا دیا اور کچھ قانونی ادھیکار دینے کا اعلان کر دیا . بہت سے اعلانوں کی طرح یہ اعلان بھی ابھی تک پورا نہیں ہوا .

ٹیونیشیا کی حالت دن پر دن خراب ہوتی جا رہی ہے . جنتا اپنا پیدائشی حق حاصل کرنے کے لئے کوشش کر رہی ہے . ملک کے کونے کونے میں ہڑتالیں ہو رہی ہیں . پولیس انہیں بےدردی سے کچلنے کی کوشش کرتی ہے . عورتوں اور بچوں تک پر کبھی لاٹھی چارج کیا جاتا ہے اور کبھی گولیاں برسائی جاتی ہیں .

ٹیونیشیا کے نام کے حاکم بے کو اُن کے محل میں قریب قریب بالکل نظر بند کر دیا گیا ہے . اِن کے ہر قدم پر کڑی نگرانی رکھی جاتی ہے . تازہ خبریں آئی ہیں کہ انہیں زہر دینے کی بھی کوشش کی گئی تھی . اتفاق سے سازش کا بھید کھل گیا . بے کا نام سیدالامین ہے . اِن کی عمر اِسوقت 70 سال ہے . ٹیونس سے کچھ دوری پر کارتھیج نامی جگہ پر اِن کا محل ہے . اُس سڑک پر جو بیچ افریقہ کو سوئز سے ملاتی ہے ایک خوبصورت باغ کے اندر یہ محل بنا ہے . بے کا خاص کام ہے اپنے بڑے کمرے کی انگنت گھڑیوں کی دیکھ بھال کرنا اور محل کے پروجیکٹر سے سنیما دیکھنا . اِسکے علاوہ اِنہیں دواؤں سے بھی کافی دلچسپی ہے . کہنے کے لئے حاکم بے ہیں اور اِن کے ماتحت ایک منتری منڈل بھی کام کرتا ہے . اِسمیں آدھے عرب وزیر بھی ہوتے ہیں . لیکن اصلیت میں فرانس کا ریزیڈنٹ جنرل ہی جو چاہتا ہے کرتا ہے ، اس کی مرضی کے بنا پتا بھی نہیں ہل سکتا . اِن سب پابندیوں کے ہوتے ہوئے بھی دیش کی آزادی کے آندولن میں اُن کی ہمدردی سراہنا کے قابل ہے . وہ چھپ چھپا کر فرانسیسیوں سے اپنے ملک کو آزاد کرانے کی کوشش کرتے رہتے ہیں .

راشٹری آندولن کو بھنگ کرنے کے لئے فرانسیسیوں نے بہت سے داؤں چلے ہیں . کبھی اندرونی معاملوں میں زیادہ سے زیادہ ادھیکار دینے کا وعدہ کیا ، کبھی آپس میں لڑانے کی کوشش کی اور کبھی فوجی طاقت استعمال کی . ہند چین میں منھ کی کھانے پر بھی فرانس کی سامراجی پالیسی میں کوئی تبدیلی نظر نہیں آرہی . وہ اپنے چنگل کو اور مضبوط کرنے کی کوشش میں ہے . امریکہ کی مدد بھی اُسے اِس کام میں حاصل ہوگئی ہے .

تیسری بڑی جنگ کی تیاری کے سلسلے میں امریکہ نے ٹیونیشیا اور مراکو میں ہوائی اڈے قائم کرنے شروع کر دیئے ہیں . سڑکیں اور ریلوے لائنیں بنائی جا رہی ہیں .

पाते कि अपने बाल बच्चों को ज़िन्दा रख सकें और खुद ही मामूली ज़रूरतें पूरा कर सकें. साल के बाक़ी महीनों में इनकी जो दुर्गत होती है उसका नक़्शा खींचना ताक़त से बाहर है. मामूली और छोटी मोटी नौकरियों के अलावा सारी नौकरियां फ़्रानसीसियों को दी जाती हैं. ऊंची तालीम हासिल किये हुए अरबों पर कम पढ़े फ़्रानसीसियों को हर जगह और हर नौकरी में तरजीह मिलती है. देश के इन्तज़ाम से सम्बन्ध रखने वाली नौकरियों के दरवाज़े तो अरबों पर बिलकुल बन्द हैं. फ़्रान्सीसी माल की खपत के लिये देसी उद्योग धन्दों का गला घोंट दिया गया है. नतीजा यह है कि सैकड़ों देसी कारीगर भीक मांगने पर मजबूर हो गए हैं.

ग़रीबी के कारन हर साल हज़ारों लोग बीमारियों के शिकार हो जाते हैं. विदेसी हुकूमत इन बीमारियों की रोक थाम के लिये कोई असरदार क़दम नहीं उठाती. मुल्क भर के सरकारी अस्पताल उंगलियों पर गिने जा सकते हैं. सब के सब बड़े बड़े शहरों में हैं और वहां भी देसी लोगों के साथ लापरवाही बरती जाती है. देहातों में तो सिरे से कोई दवा इलाज का इन्तज़ाम है ही नहीं. मरने वालों की तादाद बराबर बढ़ती जा रही है. छोटे बच्चों की मौत ज़ियादा होती है.

टियुनीशिया के अरबों की आबादी में लगभग 15 फ़ीसदी लोग पढ़े लिखे हैं और बाक़ी लोग बिलकुल जाहिल हैं.

जनता समय समय पर जलसे और जलूसों की शकल में इन ज़ियादतियों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाती रही है. फ़्रान्स ने इन शान्ति पूर्न प्रदर्शनों को भी सख़्ती से दबाया है. प्रदर्शन करने वालों पर बेजा सख़्ती ने कभी कभी हथियार बंद बग़ावत की भी शकल ले ली है.

टियुनीशिया के आज़ादी आन्दोलन को चलाने वाली दो ख़ास पारटियां हैं. एक न्यू दस्तूर पारटी और दूसरी कम्यूनिस्ट पारटी. न्यू दस्तूर पारटी के सदर हबीब बूर-जीबा हैं. इन्होंने फ़्रान्स में तालीम पाई है और एक फ़्रान्सीसी औरत से शादी की है. यह एक अच्छे वकील हैं. इस समय इनकी उम्र 50 साल है. हाल में इन्होंने बहुत से बाहरी मुल्कों का दौरा किया है. दूसरे मुल्कों और ख़ास कर मिस्र के राष्ट्री आन्दोलनों का इन पर बहुत असर पड़ा है. किसी तरह से इन्होंने टियुनीशिया के 'बे' की हमदर्दी भी हासिल कर ली है. न्यू दस्तूर पारटी सिर्फ़ अन्दरूनी मामलों में ही आज़ादी मांगती है. फिर भी साम्राजियों ने इस पारटी के सब नेताओं, बड़े वज़ीर और दूसरे देसी वज़ीरों को जेल में डाल दिया है. कम्यूनिस्ट पारटी के लीडरों को हाल का आन्दोलन चलते ही सन '51 में गिरफ़्तार कर लिया गया.

پاتے کہ اپنے بال بچوں کو زندہ رکھ سکیں اور خود ہی معمولی ضرورتیں پورا کرسکیں ۔ سال کے باقی مہینوں میں ان کی جو درگت ہوتی ہے اس کا نقشہ کھینچنا طاقت سے باہر ہے ۔ معمولی اور چھوٹی موٹی نوکریوں کے علاوہ ساری نوکریاں فرانسیسیوں کو دی جاتی ہیں ۔ اونچی تعلیم حاصل کئے ہوئے عربوں پر کم پڑھے فرانسیسیوں کو ہر جگہ اور ہر نوکری میں ترجیح ملتی ہے ۔ دیش کے انتظام سے سمبندھ رکھنے والی نوکریوں کے دروازے تو عربوں پر بالکل بند ہیں ۔ فرانسیسی مال کی کھپت کے لئے دیسی ادیوگ دھندوں کا گلا گھونٹ دیا گیا ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ سیکڑوں دیسی کاریگر بھیک مانگنے پر مجبور ہوگئے ہیں ۔

غریبی کے کارن ہر سال ہزاروں لوگ بیماریوں کے شکار ہو جاتے ہیں ۔ بدیسی حکومت ان بیماریوں کی روک تھام کے لئے کوئی اثر دار قدم نہیں اٹھاتی ۔ ملک بھر کے سرکاری اسپتال انگلیوں پر گنے جا سکتے ہیں ۔ سب کے سب بڑے بڑے شہروں میں ہیں اور وہاں بھی دیسی لوگوں کے ساتھ لاپروائی برتی جاتی ہے ۔ دیہاتوں میں تو سرے سے کوئی دوا علاج کا انتظام ہے ہی نہیں ۔ مرنے والوں کی تعداد برابر بڑھتی جا رہی ہے ۔ چھوٹے بچوں کی موت زیادہ ہوتی ہے ۔

تیونیشیا کے عربوں کی آبادی میں لگ بھگ 15 فیصدی لوگ پڑھے لکھے ہیں اور باقی لوگ بالکل جاہل ہیں ۔

جنتا سمے سمے پر جلسے اور جلوسوں کی شکل میں ان زیادتیوں کے خلاف آواز اٹھاتی رہی ہے ۔ فرانس نے ان شانتی پورن پردرشنوں کو بھی سختی سے دبایا ہے ۔ پردرشن کرنے والوں پر بےجا سختی نے کبھی کبھی ہتھیار بند بغاوت کی بھی شکل لے لی ہے ۔

تیونیشیا کے آزادی آندولن کو چلانے والی دو خاص پارٹیاں ہیں ۔ ایک نیو دستور پارٹی اور دوسری کمیونسٹ پارٹی ۔ نیو دستور پارٹی کے صدر حبیب بورجیبا ہیں ۔ انہوں نے فرانس میں تعلیم پائی ہے اور ایک فرانسیسی عورت سے شادی کی ہے ۔ یہ ایک اچھے وکیل ہیں ۔ اس سمے ان کی عمر 50 سال ہے ۔ حال میں انہوں نے بہت سے باہری ملکوں کا دورہ کیا ہے ۔ دوسرے ملکوں اور خاصکر مصر کے راشٹری آندولنوں کا ان پر بہت اثر پڑا ہے ۔ کسی طرح سے انہوں نے تیونیشیا کے 'بے' کی ہمدردی بھی حاصل کر لی ہے ۔ نیو دستور پارٹی صرف اندرونی معاملوں میں ہی آزادی مانگتی ہے ۔ پھر بھی سامراجیوں نے اس پارٹی کے سب نیتاؤں، بڑے وزیر اور دوسرے دیسی وزیروں کو جیل میں ڈال دیا ہے ۔ کمیونسٹ پارٹی کے لیڈروں کو حال کا آندولن چلتے ہی سن 51 میں گرفتار کر لیا گیا ۔

टियुनीशिया

(ज़मीर हसन काज़मी)

जनता के जोशीले प्रदर्शनों, पिसे और मजबूर लोगों के उभार और फ़्रान्सीसी गोलियों की सनसनाहट से दुनिया की निगाहें यकायक अफ़्रीक़ा के एक छोटे से कोने पर जम गई हैं. यू. एन. ओ. का चार्टर वहां बिखर रहा है. कुछ साम्राजी ताक़तें एक देश को ग़ुलाम बनाये हुये हैं. उन्हें यह भी गवारा नहीं है कि बेबसी की ज़ंजीर में जकड़े इन मज़लूमों की फ़रियाद भी कोई दुनिया की सब से बड़ी इन्सानी अदालत के सामने पेश कर सके.

इस खुली ना-इनसाफ़ी और अत्याचार का शिकार टियुनीशिया है. उन्नीसवीं सदी के बीच में काफ़ी कोशिशें करने के बाद टियुनीशिया को. तुर्कों के चंगुल से छुटकारा मिला. पर 1881 में उसे दूसरी मुसीबत ने आ घेरा. मुल्क की माली बद हाली और आपसी फूट का फ़ायदा उठा कर फ़्रान्स ने हमला कर दिया. टियुनीशिया हार गया और उसके हाकिम 'बे' को एक राज़ीनामे पर दस्तख़त करना पड़ा. इस राज़ीनामे से टियुनीशिया के अन्दरूनी और बाहरी मामलों में फ़्रान्स को पूरा दख़ल देने का अधिकार मिल गया. तभी से इस छोटे से ग़रीब मुल्क की ग़ुलामी का एक नया खंड शुरू होता है.

टियुनीशिया उत्तर अफ़्रीक़ा का एक छोटा सा हिस्सा है. इस के उत्तर में रूम सागर, दक्खिन पच्छिम में अलजीरिया और पूरब में लीबिया है. टियुनिस यहां की राजधानी है. यह शहर रूम सागर का एक ख़ास बंदरगाह भी है. दूसरा शहर और बंदरगाह बाईज़रता है जो फ़्रांस के समुन्द्री बेड़े का दूसरा बड़ा केन्द्र है. टियुनीशिया की कुल आबादी 35 लाख है जिनमें लगभग 31 लाख अरब और बाक़ी यूरोपियन हैं. लगभग कुल यूरोपियन आबादी फ़्रान्सीसी और इटालियन लोगों की है.

देश के व्योपार, कारख़ानों, फ़ैक्ट्रियों और सरकारी ओहदों पर फ़्रानसीसियों का क़रीब क़रीब पूरा क़ब्ज़ा है. कुल पछत्तर हज़ार एकड़ ज़मीन खेती के क़ाबिल है. इसका आधे से ज़ियादा हिस्सा फ़्रानसीसियों के क़ब्ज़े में है. यह ज़मीन जायेज़ और ना जायेज़ जिस तरह से भी मुमकिन हो सका असल मालिकों से छीनी गई है. अधाधुन्द बेदख़ली ने हज़ारों किसान ख़ान्दानों को भूकों मरने पर मजबूर कर दिया है. अरब मज़दूरों की हालत रहम के क़ाबिल है. साल भर में तीन या चार महीने से ज़ियादा काम उन्हें नहीं मिलता. इस बीच में भी वह इतनी मज़दूरी नहीं

تیونیشیا

(ضمیر حسن کاظمی)

جنتا کے جوشیلے پردرشنوں، پسے اور مجبور لوگوں کے ابھار اور فرانسیسی گولیوں کی سنسناہٹ سے دنیا کی نگاہیں یکایک افریقہ کے ایک چھوٹے سے کونے پر جم گئی ہیں. یو. این. او. کا چارٹر وہاں بکھر رہا ہے. کچھ سامراجی طاقتیں ایک دیش کو غلام بنائے ہوئے ہیں. انہیں یہ بھی گوارا نہیں ہے کہ بےبسی کی زنجیر میں جکڑے ان مظلوموں کی فریاد بھی کوئی دنیا کی سب سے بڑی انسانی عدالت کے سامنے پیش کرسکے.

اس کھلی ناانصافی اور اتیاچار کا شکار تیونیشیا ہے. انیسویں صدی کے بیچ میں کافی کوششیں کرنے کے بعد تیونیشیا کو ترکوں کے چنگل سے چھٹکارا ملا. پر 1881 میں اسے دوسری مصیبت نے آگھیرا. ملک کی مالی بدحالی اور آپسی پھوٹ کا فائدہ اٹھا کر فرانس نے حملہ کردیا. تیونیشیا ہار گیا اور اس کے حاکم 'بے' کو ایک راضی نامے پر دستخط کرنا پڑا. اس راضی نامے سے تیونیشیا کے اندرونی اور باہری معاملوں میں فرانس کو پورا دخل دینے کا ادھیکار مل گیا. تبھی سے اس چھوٹے سے غریب ملک کی غلامی کا ایک نیا کھنڈ شروع ہوتا ہے.

تیونیشیا اتر افریقہ کا ایک چھوٹا سا حصہ ہے. اس کے اتر میں روم ساگر، دکھن پچھم میں الجیریا اور پورب میں لیبیا ہے. تیونس یہاں کی راجدھانی ہے. یہ شہر روم ساگر کا ایک خاص بندرگاہ بھی ہے. دوسرا شہر اور بندرگاہ بائیزرطہ ہے جو فرانس کے سمندری بیڑے کا دوسرا بڑا کیندر ہے. تیونیشیا کی کل آبادی 35 لاکھ ہے جن میں لگ بھگ 31 لاکھ عرب اور باقی یوروپین ہیں. لگ بھگ کل یوروپین آبادی فرانسیسی اور اٹالین لوگوں کی ہے.

دیش کے بیوپار، کارخانوں، فیکٹریوں اور سرکاری عہدوں پر فرانسیسیوں کا قریب قریب پورا قبضہ ہے. کل پچھتر ہزار ایکڑ زمین کھیتی کے قابل ہے. اس کا آدھے سے زیادہ حصہ فرانسیسیوں کے قبضے میں ہے. یہ زمین جائز اور ناجائز جس طرح سے بھی ممکن ہوسکا اصل مالکوں سے چھینی گئی ہے. آدھا دھند بے دخلی نے ہزاروں کسان خاندانوں کو بھوکوں مرنے پر مجبور کردیا ہے. عرب مزدوروں کی حالت رحم کے قابل ہے. سال بھر میں تین یا چار مہینے سے زیادہ کام انہیں نہیں ملتا. اس بیچ میں بھی وہ اتنی مزدوری نہیں

इसमें काफ़ी डर है और सरकारी आमदनी के घट जाने का भी ख़तरा है. और हमेशा के लिये लगान मुक़र्रर करने में पैदावार बढ़ती है, किसान खेतों पर ख़ूब मेहनत करते हैं, क्योंकि किसान समझते हैं कि खेत उनका है और आगे जो भी पैदावार होगी उससे उनको ही फ़ायदा पहुंचेगा.

सरकारी ज़ाफ़रान के खेत उन किसानों को मिल जायंगे जिन्होंने सम्बत 2007 बिक्रमी की ख़रीफ़ में उन खेतों पर खेती की थी. शर्त सिर्फ़ यह है:—

(1) चालीस रुपया एकड़ लगान के अलावा किसान दूसरे टैक्स भी अदा करेंगे जो इस समय कुछ वक़्त के लिये लगाए गए हैं.

(2) किसी को भी 32 कनाल से ज़ियादा ज़ाफ़रानी खेत न मिलेगा.

(3) किसी भी किसान की ज़मीन सब मिला कर 160 कनाल या बीस एकड़ से ज़ियादा किसी सूरत में न होने पाएगी.

अगर किसी सूरत में यह शर्तें पूरी न हो सकेंगी तो ज़ाफ़रान की सरकारी ज़मीन उन किसानों में भी बांटी जायगी जिन्होंने उस पर सम्बत 2007 में खेती नहीं की थी.

ज़ाफ़रान की बिक्री के लिये आसानियां पैदा की जायेंगी. इस से कई फ़ायदे होंगे. बाज़ार से नक़ली ज़ाफ़रान उड़ जायेगा. क़र्ज़ देने वाले महाजनों और इजारा दारों के चंगुल से ज़ाफ़रान का व्योपार निकल आयेगा और किसान को पूरा फ़ायदा पहुंच सकेगा.

क़र्ज़ के भूत से कुछ दिनों के लिये कश्मीरी किसान को छुटकारा मिल गया है. मौजूदा ज़ाफ़रानी खेती के ठेकेदारी प्रथा को ख़त्म करने से किसान अपनी मेहनत का फल ख़ुद भोगेगा और दूसरे उससे नाजायज़ फ़ायदा न उठा सकेंगे.

फल और मेवों के बाग़ों को छोड़ कर कश्मीर की सारी खेती के ज़मीन बिना किसी ज़मींदार को मोआवज़ा दिये या तो अब तक किसानों में बांट दी गई है और या बांटी जा रही है.

(नेशनल हेराल्ड से)

اس میں کافی ڈر ہے اور سرکاری آمدنی کے گھٹ جانے کا بھی خطرہ ہے . اور ہمیشہ کے لئے لگان مقرر کرنے میں پیداوار بڑھتی ہے، کسان کھیتوں پر خوب محنت کرتے ہیں، کیونکہ کسان سمجھتے ہیں کہ کھیت ان کا ہے اور آگے جو بھی پیداوار ہوگی اس سے ان کو ہی فائدہ پہونچے گا .

سرکاری زعفران کے کھیت ان کسانوں کو مل جائیں گے جنھوں نے سمت 2007 بکرمی کی خریف میں ان کھیتوں پر کھیتی کی تھی . شرط صرف یہ ہے :—

(1) چالیس روپیہ ایکڑ لگان کے علاوہ کسان دوسرے ٹیکس بھی ادا کریں گے جو اس سمے کچھ وقت کے لئے لگائے گئے ہیں .

(2) کسی کو بھی 32 کنال سے زیادہ زعفرانی کھیت نہ ملے گا .

(3) کسی بھی کسان کی زمین سب ملاکر 160 کنال یا بیس ایکڑ سے زیادہ کسی صورت میں نہ ہونے پائے گی .

اگر کسی صورت میں یہ شرطیں پوری نہ ہو سکیں گی تو زعفران کی سرکاری زمین ان کسانوں میں بھی بانٹی جائے گی جنھوں نے اس پر سمت 2007 میں کھیتی نہیں کی تھی .

زعفران کی بکری کے لئے آسانیاں پیدا کی جائیں گی. اس سے کئی فائدے ہونگے. بازار سے نقلی زعفران اڑ جائے گا . قرض دینے والے مہاجنوں اور اجارہ داروں کے چنگل سے زعفران کا بیوپار نکل آئے گا اور کسان کو پورا فائدہ پہونچ سکے گا .

قرض کے بھوت سے کچھ دنوں کے لئے کشمیری کسان کو چھٹکارا مل گیا ہے. موجودہ زعفرانی کھیتی کے ٹھیکیداری پرتھا کو ختم کرنے سے کسان اپنی محنت کا پھل خود بھوگے گا اور دوسرے اس سے ناجائز فائدہ نہ اٹھا سکیںگے.

پھل اور میووں کے باغوں کو چھوڑ کر کشمیر کی ساری کھیتی کے زمین بنا کسی زمیندار کو معاوضہ دیئے یا تو اب تک کسانوں میں بانٹ دی گئی ہے اور یا بانٹی جا رہی ہے .

(نیشنل ہیرالڈ سے)

जंगल के नीलाम में इस बात ध्यान रखा जाता है कि जंगल में कितनी लकड़ी है और किस क़िस्म की लकड़ी है लेकिन ज़ाफ़्रान के खेतों के नीलाम में पैदावार का कोई ख्याल नहीं किया जाता. ठेकेदार दूसरों से इन खेतों पर ज़ाफ़्रान की खेती कराते हैं. इन खेतों के नीलाम से पिछले 31 साल में सरकार को एकावन हज़ार पांच सौ रुपया सालाना की आमदनी हुई. सन'50 में यह आमदनी एकासी हज़ार हो गई और सन '51 में बढ़ कर दो लाख तक पहुँच गई.

पुलवामा तहसील के सोलह गांव और शहर खास तहसील के चार गांव में ही ज़ाफ़्रान की खेती का रक़बा फैला हुआ है. कुल चार हज़ार तीन सौ तेईस एकड़ ज़मीन पर ज़ाफ़्रान उगाया जाता है. इसमें से तीन हज़ार तीन सौ इकयासी एकड़ अलग अलग लोगों की निजी मिलकियत है और बाक़ी नौ सौ ब्यालीस एकड़ सरकार के क़ब्ज़े में है. पांच सौ छब्बीस एकड़ ज़मीन को छोड़ कर जिस पर मालिक लोग खुद काश्त करते हैं बाक़ी सारा सरकारी और निजी मिलकियत का ज़ाफ़्रानी रक़बा ठेकेदारों को नीलाम किया जाता है. पटवारी के काग़ज़ों में सिर्फ़ तीन हज़ार सात सौ नवासी एकड़ ही 'ज़ाफ़्रानी' दर्ज है और बाक़ी पांच सौ चौंतीस एकड़ पर ज़ाफ़्रान की खेती तो होती है लेकिन वह सरकारी काग़ज़ों में दर्ज नहीं हैं.

सरकार ने "मोहाल ज़ाफ़्रान" (ज़ाफ़्रानी खेती की ज़मीन) के बारे में जानकारी हासिल करने के लिये एक कमेटी बनाई थी जिसने ज़ाफ़्रान की खेती के मौजूदा तरीक़े में तीन खास बुराईयां बताई हैं. इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि ठेकेदारी की प्रथा के कारन किसानों की मेहनत का पूरा पूरा फल उन्हें नहीं मिलता और उनकी ग़रीबी बढ़ती जाती है. किसान और ठेकेदारों के बीच एक ग़ुलाम और मालिक का नाता क़ायम होता है और दोनों में ज़बरदस्त तनाओ पैदा होता है. ठेकेदार बेरहमी से खेत के उपजाऊपन से फ़ायदा उठाने की कोशिश करते हैं और उसे जल्द ही कमज़ोर कर देते हैं.

कमेटी की रिपोर्ट ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि मौजूदा प्रथा को किसी तरह क़ायम न रखना चाहिये. माली दृष्टीकोन से यह तरीक़ा बिल्कुल निकम्मा और नुक़सान पहुँचाने वाला है. सरकार को चाहिये कि इन खेतों का भी 'खेत मालगुज़ारी ऐक्ट' के बन्धान के अनुसार लगान मुक़र्रर कर दे. यह लगान किसी खास आधार पर हमेशा के लिये मुक़र्रर कर दिया जाय क्योंकि हर साल लगान मुक़र्रर करने में दिक़्क़तें होती हैं. इसके लिये ईमानदार अफ़सरों की ज़रूरत है जो अच्छे ढंग से इन्तज़ाम कर सकें. किसानों पर अफ़सरों की ज़ुल्म ज़ियादती का

جنگل کے نیلام میں اِسی بات کا دھیان رکھا جاتا ہے کہ جنگل میں کتنی لکڑی ہے اور کس قسم کی لکڑی ہے لیکن زعفران کے کھیتوں کے نیلام میں پیداوار کا کوئی خیال نہیں کیا جاتا . ٹھیکیدار دوسروں سے اِن کھیتوں پر زعفران کی کھیتی کراتے ہیں . ان کھیتوں کے نیلام سے پچھلے 31 سال میں سرکار کو اکیاون ہزار پانچسو روپیہ سالانہ کی آمدنی ہوئی. سن 50' میں یہ آمدنی اکیاسی ہزار ہوگئی اور سن 51' میں بڑھکر دو لاکھ تک پہونچ گئی.

پل واما تحصیل کے سولہ گاؤں اور شہر خاص تحصیل کے چار گاؤں میں ہی زعفران کی کھیتی کا رقبہ پھیلا ہوا ہے . کل چار ہزار تین سو تیئیس ایکڑ زمین پر زعفران اُگایا جاتا ہے . اِس میں سے تین ہزار تین سو اکیاسی ایکڑ الگ الگ لوگوں کی نجی ملکیت ہے اور باقی نو سو بیالیس ایکڑ سرکار کے قبضے میں ہے. پانچسو چھبیس ایکڑ زمین چھوڑ کر جس پر مالک لوگ خود کاشت کرتے ہیں باقی سارا سرکاری اور نجی ملکیت کا زعفرانی رقبہ ٹھیکیداروں کو نیلام کیا جاتا ہے . پٹواری کے کاغذوں میں صرف تین ہزار سات سو نواسی ایکڑ ہی ' زعفرانی ' درج ہے اور باقی پانچسو چونتیس ایکڑ زعفران کی کھیتی تو ہوتی ہے لیکن وہ سرکاری کاغذوں میں درج نہیں ہیں .

سرکار نے " محال زعفران " (زعفرانی کھیتی کی زمین) کے بارے میں جانکاری حاصل کرنے کے لئے ایک کمیٹی بنائی تھی جس نے زعفران کی کھیتی کے موجودہ طریقے میں تین خاص برائیاں بتائی ہیں . اِس کمیٹی نے اپنی رپورٹ میں کہا ہے کہ ٹھیکیداری کی پرتھا کے کارن کسانوں کی محنت کا پورا پورا پھل انہیں نہیں ملتا اور اُن کی غریبی بڑھتی جاتی ہے . کسان اور ٹھیکیداروں کے بیچ ایک غلام اور مالک کا ناتا قائم ہوتا ہے اور دونوں میں زبردست تناؤ پیدا ہوتا ہے . ٹھیکیدار بے رحمی سے کھیت کے اُپجاؤ پن سے فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرتے ہیں اور اُسے جلد ہی کمزور کر دیتے ہیں .

کمیٹی کی رپورٹ نے اِس بات پر زور دیا ہے کہ موجودہ پرتھا کو کسی طرح قائم نہ رکھنا چاہئے. مالی درشٹی کون سے یہ طریقہ بالکل نکما اور نقصان پہونچانے والا ہے . سرکار کو چاہئے کہ اِن کھیتوں کا بھی 'کھیت مالگذاری ایکٹ' کے بندھان کے انوسار لگان مقرر کر دے . یہ لگان کسی خاص آدھار پر ہمیشہ کے لئے مقرر کر دیا جائے کیونکہ ہر سال لگان مقرر کرنے میں دقتیں ہوتی ہیں . اس کے لئے ایماندار افسروں کی ضرورت ہے جو اچھے ڈھنگ سے انتظام کر سکیں . کسانوں پر افسروں کی ظلم زیادتی کا

एक लाख साठ हज़ार एकड़ जागीरी ज़मीन किसानों [में] बांट दी गई और सरकारी काग़ज़ों में साठ हज़ार [कि]सान परिवारों के नाम मिलकियत का हक़ दर्ज कर दिया [ग]या. स्पेशल तहसीलदार मुक़र्रर किये गए जिन्होंने लाखों [कि]सानों की मिलकियत को काग़ज़ों में दर्ज करने के काम [क]ो सोलह महीने में ख़त्म किया. ज़मीन सुधार अफ़सरों [क]ा कहना है कि अगर पुराने इलाक़ेवारी तहसीलदारों के [सु]पुर्द यह काम किया जाता तो अगर वह इसे किसी सूरत [क]रते भी तो कम से कम दस साल लगा देते. आशा की [जा]ती है कि इस सम्बन्ध का सारा काम अप्रैल सन '53 [त]क बिल्कुल पूरा हो जायगा. इन अफ़सरों की मेहनत और [ल]गन तारीफ़ के क़ाबिल है. काग़ज़ों में मिलकियत दर्ज [हो]ने से पहले ही किसानों को अपने अपने खेत पर पूरा [ह]क़ मिल गया था. इस बीच में किसानों से लगान वसूल [क]रने में माल विभाग के अफ़सरों ने बहुत अक़्लमन्दी और [प्रे]म भाव से काम लिया. लगान का एक आना भी वसूल [हो]ने से बाक़ी न रहा. किसान सरकार के अहसान मन्द थे. [उन्]होंने ख़ुशी ख़ुशी सरकारी अधिकारियों को पूरा सहयोग [दि]या.

खेत पर किसान की मिलकियत को पूरी तरह सुरक्षित [क]र देने के बन्धान को ज़मीन सुधार अफ़सर जम्मू और [क]श्मीर के किसानों के लिये "आज़ादी का चार्टर" कहते हैं.

ज़मींदार किसी हालत और किसी बहाने से भी जल्दी [से] किसान से खेत नहीं छीन सकता. अगर उसका लगान [ब]क़ाया है तो वह कचहरी में नालिश कर सकता है. डिग्री [हो] जाने पर किसान का घर, बैल, खेती के अवज़ार कुड़क [न]हीं किये जा सकते. अगर किसान की कोई चल जायदाद [है] तो वह कुड़क की जा सकती है. तीन साल के बाद बक़ाया [ल]गान का दावा रद्द हो जाता है. इस सुधार से यह फ़ायदा [हु]आ कि इस साल 4·7 फ़ीसदी पैदावार बढ़ गई और [भ]विष्य में पैदावार बढ़ने और जनता की आम हालत [बेह]तर होने की ज़बरदस्त उम्मीद है.

तरह तरह के कोआपरेटिव संस्थाओं का संगठन किया [ग]या है जो किसानों में 'अपनी मदद आप करो' के भाव [को] उभारती हैं. यह संस्थायें किसानों को मामूली सूद पर [क़]र्ज़ देती हैं और अच्छे बीज और अच्छे खेती के औज़ार [मुहै]या करती हैं.

ज़ाफ़रान की खेती

कश्मीर में ज़ाफ़रान की खेती का सारा ढांचा व्योपारी [नि]गाह से खड़ा किया गया है. घाटी की सारी ज़मीन जिस [पर] ज़ाफ़रान की खेती होती है ठेकेदारों को एक साल के लिये [या] एक फ़सल के लिये नीलाम कर दी जाती है. इस तरह [ज़ाफ़]रान की खेती कुछ पूंजी पतियों की इजारादारी हो गई है.

ایک لاکھ ساٹھ ہزار ایکڑ جاگیری زمین کسانوں میں بانٹ دی گئی اور سرکاری کاغذوں میں ساٹھ ہزار کسان پریواروں کے نام ملکیت کا حق درج کر دیا گیا ۔ اسپیشل تحصیلدار مقرر کئے گئے جنہوں نے لاکھوں کسانوں کی ملکیت کو کاغذوں میں درج کرنے کے کام کو سولہ مہینے میں ختم کیا ۔ زمین سدھار افسروں کا کہنا ہے کہ اگر پرانے علاقے واری تحصیلداروں کے سپرد یہ کام کیا جاتا تو اگر وہ اسے کسی صورت کرتے بھی تو کم سے کم دس سال لگا دیتے ۔ آشا کی جاتی ہے کہ اس سمبندھ کا سارا کام اپریل سن '53 تک بالکل پورا ہو جائے گا ۔ اِن افسروں کی محنت اور لگن تعریف کے قابل ہے. کاغذوں میں ملکیت درج ہونے سے پہلے ہی کسانوں کو اپنے اپنے کھیت پر پورا حق مل گیا تھا ۔ اِس بیچ میں کسانوں سے لگان وصول کرنے میں مال وبھاگ کے افسروں نے بہت عقلمندی اور پریم بھاؤ سے کام لیا ۔ لگان کا ایک آنہ بھی وصول ہونے سے باقی نہ رہا ۔ کسان سرکار کے احسان مند تھے ۔ اُنہوں نے خوشی خوشی سرکاری ادھیکاریوں کو پورا سہیوگ دیا ۔

کھیت پر کسان کی ملکیت کو پوری طرح سرکشت کر دینے کے بندھان کو زمین سدھار افسر جمو اور کشمیر کے کسانوں کے لئے ۔ '' آزادی کا چارٹر '' کہتے ہیں ۔

زمیندار کسی حالت اورکسی بہانے سے بھی جلدی سے کسان سے کھیت نہیں چھین سکتا ۔ اگر اُس کا لگان بقایا ہے تو وہ کچہری میں نالش کر سکتا ہے ۔ ڈگری ہوجانے پر کسان کا گھر' بیل' کھیتی کے اوزار کرک نہیں کئے جاسکتے. اگر کسان کی کوئی چل جائداد ہے تو وہ کرک کی جا سکتی ہے ۔ تین سال کے بعد بقایا لگان کا دعوی رد ہو جاتا ہے ۔ اِس سدھار سے یہ فائدہ ہوا کہ اس سال 4·7 فیصدی پیداوار بڑھ گئی اور بھوشیہ میں پیداوار بڑھنے اور جنتا کی عام حالت بہتر ہونے کی زبردست اُمید ہے ۔

طرح طرح کے کوآپریٹو سنستھاؤں کا سنگھٹن کیا گیا ہے جو کسانوں میں 'اپنی مدد آپ کرو' کے بھاؤ کو ابھارتی ہیں ۔ یہ سنستھائیں کسانوں کو معمولی سود پر قرض دیتی ہیں اور اچھے بیج اور اچھے کھیتی کے اوزار مہیا کرتی ہیں ۔

زعفران کی کھیتی ۔

کشمیر میں زعفران کی کھیتی کا سارا ڈھانچہ بیوپاری نگاہ سے کھڑا کیا گیا ہے ۔ گھاٹی کی ساری زمین جس پر زعفران کی کھیتی ہوتی ہے ٹھیکیداروں کو ایک سال کے لئے یا ایک فصل کے لئے نیلام کر دی جاتی ہے ۔ اسطرح زعفران کی کھیتی کچھ پونجی پتیوں کی اجارہداری ہوگئی ہے ۔

ज़ियादा न होगा. अगर कोई खेत इक्कीस बरस तक गिरवी करने वाले के क़ब्ज़े में रह चुका हो तो गिरवीदार अपने आप इस खेत का मालिक बन जायगा. इस क़ानून में नाव को भी अचल जायदाद माना गया है.

इस क़ानून के अनुसार 14 कचहरियां क़ायम हुईं जिनमें 3270 मुक़द्दमे पेश हुए और उनमें से 1456 का फ़ैसला 15 अप्रैल सन '52 तक कर दिया गया. गिरवी के कारन गांव में निठल्ले ज़मींदारों की तादाद बढ़ गई थी. मेहनत करने वाले और ईमानदार किसान ज़मीन छिन जाने के कारन खेती नहीं कर पाते थे. इस क़ानून ने इस बात का बन्धान रखा है कि किसान अपने खेतों के मालिक बने रहें और अपनी पैदावार में से थोड़ा थोड़ा करके क़र्ज़ अदा कर दें.

ज़बरदस्त ज़मीन सुधार

कश्मीर में ज़मीन सुधार क़ानून बन जाने से साढ़े छै लाख एकड़ ज़मीन जो ज़मींदारों के क़ब्ज़े में थी दो लाख किसान परिवारों में बंट गई. इस सुधार से क़रीब दस लाख आदमियों को फ़ायदा पहुंचा. किसी तरह का भी मावज़ा नहीं दिया गया.

राजा पुंछ के क़ब्ज़े में चार पूरी पूरी तहसीलें थीं जिनमें दो लाख एकड़ खेती के लायक़ ज़मीन थी. राजा साहब की आमदनी चौदह लाख रुपया सालाना थी. छनानी के जागीरदार अकेले ही 47 गांव के मालिक बने बैठे थे. दीवान का लम्बा चौड़ा ताल्लुक़ा घाटी भर में फैला था. क़रीब पन्द्रह हज़ार एकड़ इनके क़ब्ज़े में था. ऐसे बड़े बड़े ज़मींदारों की ज़मीनें ले ली गई हैं. ज़मीन सुधार प्रोग्राम ने वक़्फ़ की और मंदिरों की ज़मीनों को भी नहीं छोड़ा. ज़मींदार ज़मींदार है चाहे उसे जागीरदार कहा जाय या राजा कहा जाय या उसका मज़हब से ताल्लुक़ बता कर मठ, वक़्फ़ या और कोई दूसरा नाम रख दिया जाय. इसमें कोई शक नहीं है कि कश्मीर का ज़मीन सुधार ठीक ढंग पर किया गया है.

ज़ियादा से ज़ियादा कुल बीस एकड़ ज़मीन पर ही एक आदमी क़ब्ज़ा रख सकता है. ज़मींदारों के साथ रिआयत की गई है और उन्हें अपने कुटुम्ब के पालन पोशन के लिये साढ़े बाइस एकड़ तक रखने की इजाज़त दे दी गई है. यह बन्धान इसलिये किया गया है ताकि छोटे छोटे ग़रीब ज़मींदारों को रोज़ी का साधन मुहैया किया जा सके. 25 या 50 एकड़ वाले ज़मींदार कोई बड़े ज़मींदार नहीं थे फिर भी वह ख़ुद खेती नहीं करते थे और लगान पर खेत उठाते थे. यह लोग दूसरे पेशों में लगे हुए थे और ज़मीन से भी फ़ायदा उठाते थे. इन लोगों के कारन किसान पर बोझ बहुत बढ़ जाता था.

زیادہ نہ ہوگا ۔ اگر کوئی کھیت اکیس برس تک گروی کرنے والے کے قبضے میں رہ چکا ہو تو گرویدار اپنے آپ اس کھیت کا مالک بن جائے گا ۔ اس قانون میں ناؤ کو بھی اچل جائداد مانا گیا ہے ۔

اس قانون کے انوسار 14 کچہریاں قائم ہوئیں جن میں 3270 مقدمے پیش ہوئے اور ان میں سے 1456 کا فیصلہ 15 اپریل سن '52 تک کردیا گیا ۔ گروی کے کارن گاؤں میں نکھلے زمینداروں کی تعداد بڑھ گئی تھی ۔ محنت کرنے والے اور ایماندار کسان زمین چھن جانے کے کارن کھیتی نہیں کر پاتے تھے ۔ اس قانون نے اس بات کا بندھان رکھا ہے کہ کسان اپنے کھیتوں کے مالک بنے رہیں اور اپنی پیداوار میں سے تھوڑا تھوڑا کرکے قرض ادا کردیں ۔

زبردست زمین سدھار

کشمیر میں زمین سدھار قانون بن جانے سے ساڑھے چھ لاکھ ایکڑ زمین جو زمینداروں کے قبضے میں تھی دو لاکھ کسان پریواروں میں بٹ گئی ۔ اس سدھار سے قریب دس لاکھ آدمیوں کو فائدہ پہونچا ۔ کسی طرح کا بھی معاوضہ نہیں دیا گیا ۔

راجہ پونچھ کے قبضے میں چار پوری پوری تحصیلیں تھیں جن میں دو لاکھ ایکڑ کھیتی کے لائق زمین تھی ۔ راجہ صاحب کی آمدنی چودہ لاکھ روپیہ سالانہ تھی ۔ چھنانی کے جاگیردار اکیلے ہی 47 گاؤں کے مالک بنے بیٹھے تھے ۔ دیوان کا لمبا چوڑا تعلقہ گھاٹی بھر میں پھیلا تھا ۔ قریب پندرہ ہزار ایکڑ ان کے قبضے میں تھا ۔ ایسے بڑے بڑے زمینداروں کی زمینیں لے لی گئیں ہیں ۔ زمین سدھار پروگرام نے وقف کی اور مندروں کی زمینوں کو بھی نہیں چھوڑا ۔ زمیندار زمیندار ہے چاہے اسے جاگیردار کہا جائے یا راجہ کہا جائے یا اس کا مذہبی تعلق بتاکر مٹھ، وقف یا اور کوئی دوسرا نام رکھ دیا جائے ۔ اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ کشمیر کا زمین سدھار ٹھیک ڈھنگ پر کیا گیا ہے ۔

زیادہ سے زیادہ کل بیس ایکڑ زمین پر ہی ایک آدمی قبضہ رکھ سکتا ہے ۔ زمینداروں کے ساتھ رعایت کی گئی ہے اور انہیں اپنے کٹمب کے پالن پوشن کے لئے ساڑھے بائیس ایکڑ تک رکھنے کی اجازت دے دی گئی ہے ۔ یہ بندھان اس لئے کیا گیا ہے تاکہ چھوٹے چھوٹے غریب زمینداروں کو روزی کا سادھن مہیا کیا جا سکے ۔ 25 یا 50 ایکڑ والے زمیندار کوئی بڑے زمیندار نہیں تھے پھر بھی وہ خود کھیتی نہیں کرتے تھے اور لگان پر کھیت اٹھاتے تھے ۔ یہ لوگ دوسرے پیشوں میں لگے ہوئے تھے اور زمین سے بھی فائدہ اٹھاتے تھے ۔ ان لوگوں کے کارن کسان پر بوجھ بہت بڑھ جاتا تھا ۔

15 अप्रैल सन '52 तक इन बोर्डों के सामने इकतालीस हज़ार दो सौ पचानवे दावे पेश हुए और जिनमें से चौंतीस हज़ार छै सौ चालीस का फ़ैसला कर दिया गया. छियानवे लाख उनसठ हज़ार पैंतीस रुपये के क़र्ज़ के दावे में से सिर्फ़ दस लाख तीन हज़ार आठ सौ छाछट रुपये की रक़म को बोर्ड ने जायज़ माना.

किसानों के क़र्ज़ में यह कमी क़रीब 77 फ़ीसदी है. इतनी कमी भारत के किसी और हिस्से में नहीं की गई.

क़र्ज़ के दावों में से 71 फ़ीसदी गांव के क़र्ज़दारों के ख़िलाफ़ हैं और बाक़ी शहर वालों के. इस सम्बन्ध में ...सी हज़ार नौ सौ पांच आदमी बोर्ड के सामने पेश हुए उन में से चौंतीस हज़ार तीन सौ सत्तर क़र्ज़दार थे और ...ह हज़ार पांच सौ पैंतीस क़र्ज़ देने वाले. क़र्ज़ देने वालों से लगभग 48 फ़ीसदी पेशावर साहूकार थे और बाक़ी गांव के दुकानदार और सरकारी नौकरों जैसे ग़ैर पेशावर. क़र्ज़दारों में ज़ियादा तादाद किसान, मज़दूर और कारीगरों की थी. सूद पचास पचास फ़ीसदी तक था. बोर्ड ने अब जो क़र्ज़ की असली रक़म मुक़र्रर की है वह सुविधा के अनुसार क़िस्तों में अदा की जायगी. औसत क़िस्त दस रुपया मुक़र्रर की गई है जो हर फ़सल पर अदा की जाएगी. सबसे बड़ी क़िस्त दो सौ पच्चीस रुपए की है और सब से कम एक रुपये की. क़र्ज़ के अदायगी की मेयाद ज़ियादा से ज़ियादा पचास साल है और कम से कम एक साल.

मुक़दमेबाज़ी में किसानों को तरह तरह की मुसीबतें उठानी पड़तीं और लाखों रुपए कचहरियों में ख़र्च होते लेकिन समझौता बोर्ड के क़ायम होने से किसान इन मुसीबतों और माली बोझ से बच गए. इसका सेहरा कश्मीर के माल मंत्री मिरज़ा अफ़ज़ल बेग के सिर है जो इस क़ानून के निर्माता हैं और जिन्होंने समझौता बोर्ड के रोज़ाना के कामों में बहुत दिलचस्पी ली है. कश्मीर के सरहदी ज़िले लद्दाख़ की हालत तो बहुत ही भयानक थी. 90 से लेकर 99 फ़ीसदी आबादी भारी क़र्ज़ के नीचे दबी थी. बौद्ध मठ इस इलाक़े के ज़मींदार भी थे और साहूकार भी. बोर्ड के क़ायम होते ही सूद का दर 25 फ़ीसदी से घटा कर 12 फ़ीसदी कर दिया गया

गिरवी की वापसी

हर उस अचल जायदाद पर जो गिरवी की गई हो और उसकी क़ीमत दस हज़ार से अधिक न हो जम्मू और कश्मीर गिरवी जायदाद वापसी एक्ट लागू होता है. अगर किसी गिरवी रखने वाले को मूल रक़म का डेढ़ गुना और वह रक़म जो जायदाद को बढ़ाने में लगाई गई हो मिल जाय तो जायदाद मालिक को वापस मिल जाएगी. सिर्फ़ मूल रक़म पर सूद मिलेगा और वह भी छै फ़ीसदी सालाना से

15 اپریل سن '52 تک ان بورڈوں کے سامنے اکتالیس ہزار دو سو پچانوے دعوے پیش ہوئے اور جن میں سے چونتیس ہزار چھ سو چالیس کا فیصلہ کردیا گیا۔ چھیانوے لاکھ انسٹھ ہزار پینتیس روپے کے قرض کے دعوے میں سے صرف دس لاکھ تین ہزار آٹھ سو چھیاسٹھ روپئے کی رقم کو بورڈ نے جائز مانا۔

کسانوں کے قرض میں یہ کمی قریب 77 فی صدی ہے۔ اتنی کمی بھارت کے کسی اور حصے میں نہیں کی گئی۔

قرض کے دعووں میں سے 71 فی صدی گاؤں کے قرضداروں کے خلاف ہیں اور باقی شہر والوں کے۔ اس سلسلہ میں بیاسی ہزار نو سو پانچ آدمی بورڈ کے سامنے پیش ہوئے جن میں سے چونتیس ہزار تین سو ستر قرضدار تھے اور اڑتالیس ہزار پانچ سو پینتیس قرض دینے والے۔ قرض دینے والوں میں سے لگ بھگ 48 فیصدی پیشہ ور ساہوکار تھے اور باقی گاؤں کے دوکاندار اور سرکاری نوکروں جیسے غیر پیشہ ور۔ قرضداروں میں زیادہ تعداد کسان، مزدور اور کاریگروں کی تھی۔ سود پچاس پچاس فیصدی تک تھا۔ بورڈ نے اب جو قرض کی اصلی رقم مقرر کی ہے وہ سودھا کے انوسار قسطوں میں ادا کی جائے گی۔ اوسط قسط دس روپیہ مقرر کی گئی ہے جو ہر فصل پر ادا کی جائے گی۔ سب سے بڑی قسط دو سو پچیس روپیہ کی ہے اور سب سے کم ایک روپیہ کی۔ قرض کے ادائگی کی میعاد زیادہ سے زیادہ پچاس سال ہے اور کم سے کم ایک سال۔

مقدمے بازی میں کسانوں کو طرح طرح کی مصیبتیں جھیلنی پڑتیں اور لاکھوں روپئے کچہریوں میں خرچ ہوتے لیکن سمجھوتہ بورڈ کے قائم ہونے سے کسان ان مصیبتوں اور مالی بوجھ سے بچ گئے۔ اس کا سہرا کشمیر کے مال منتری مرزا افضل بیگ کے سر ہے جو اس قانون کے نرماتا ہیں اور جنہوں نے سمجھوتہ بورڈ کے روزانہ کے کاموں میں بہت دلچسپی لی ہے۔ کشمیر کے سرحدی ضلع لداخ کی حالت تو بہت ہی بھیانک تھی۔ 90 سے لے کر 99 فیصدی آبادی بھاری قرض کے بوجھ تلے دبی تھی۔ بودھ مٹھ اس علاقے کے زمیندار بھی تھے اور ساہوکار بھی۔ بورڈ کے قائم ہوتے ہی سود کا در 25 فی صدی سے گھٹا کر 12 فیصدی کردیا گیا۔

گروی کی واپسی۔

ہر اس اچل جائداد پر جو گروی کی گئی ہو اور اس کی قیمت دس ہزار سے ادھک نہ ہو جموں اور کشمیر گروی جائداد واپسی ایکٹ لاگو ہوتا ہے۔ اگر کسی گروی رکھنے والے کو مول رقم کا ڈیڑھ گنا اور وہ رقم جو جائداد کو بڑھانے میں لگائی گئی ہو مل جائے تو جائداد مالک کو واپس مل جائے گی۔ صرف مول رقم پر سود ملے گا اور وہ بھی چھ فیصدی سالانہ سے

कश्मीर के नये सुधार

(ताराचन्द गुप्ता)

अत्याचारी ज़मीदारों और साहूकारों के चंगुल से मुक्ति पाकर कश्मीरी किसान उम्मीद और विश्वास से अपने भविष्य के चमकते तारे को देख रहे हैं.

दो साल पहले कश्मीर की नई सरकार ने "जम्मू और कश्मीर दुखी क़र्ज़दार एक्ट" पास किया. इस क़ानून का मक़सद यह है कि समझौता बोर्ड बना कर उनके ज़रिये थोड़े से ही अरसे में क़र्ज़ की मुसीबत से किसानों को छुटकारा दिलाया जाय. इस क़ानून के चौथे भाग के बन्धानों के अनुसार क़र्ज़ देने वाले और क़र्ज़ लेने वाले दोनों को समझौते के लिये समझौता बोर्ड को अरज़ी देनी पड़ती है. जिस दिन से यह क़ानून लागू हुआ है उसके चार महीने के अन्दर ही क़र्ज़ देने वाले के लिये ज़रूरी था कि वह फ़ैसले के लिये अपना दावा बोर्ड के सामने पेश कर दे नहीं तो बाद में क़र्ज़ वापिस लेने का उसका अधिकार ख़त्म होजाएगा. समझौता बोर्ड को सिर्फ़ पांच हज़ार रुपया या उससे कम के क़र्ज़ के फ़ैसले का ही अधिकार है. व्योपार के लिये क़र्ज़ और बैंकिंग के रोज़ के मामूली कामों में दख़ल देने का बोर्ड को कोई अधिकार नहीं है.

इस क़ानून ने कम से कम ऐसी सात छूटें भी रखी हैं जिनके होते हुए पांच हज़ार के ऊपर के मुक़दमें में भी समझौता बोर्ड अपना फ़ैसला दे सकता है. समझौता बोर्ड को सिविल कचहरी के सारे अधिकार हासिल हैं. इस बोर्ड के फ़ैसले के ख़िलाफ़ सिर्फ़ एक ख़ास जज के यहां अपील हो सकती है. इसके अलावा इस बोर्ड का हुक्म तमाम अमली ग़रज़ों के लिये आख़िरी माना जाता है और न तो इसके फ़ैसले पर किसी दूसरी कचहरी में सुनवाई हो सकती है और न दोबारा कोई बाक़ायदा मुक़दमा ही चलाया जा सकता है. इस क़ानून का बन्धान है कि समझौता बोर्ड क़र्ज़ की असली रक़म तजवीज़ करे, उस क़र्ज़दार के ख़िलाफ़ दावे को रद्द कर दे जिसने मूल की डियोढ़ा रक़म अदा कर दी हो, और बोर्ड के बनने के बाद क़र्ज़ के भुगतान के लिये जितने भी आपसी समझौते हुए हों उन्हें ग़ैर क़ानूनी क़रार दे.

बोर्ड के बनाए जाने का मक़सद यह है कि वह "रियासत में रहने वालों के और ख़ास कर किसानों के क़र्ज़ के बोझ को हलका करे." जम्मू, अनन्त नाग, श्री नगर ज़िलों में दो दो बोर्ड और ऊधमपुर, कठवा, बारमौला और लद्दाख़ के ज़िलों में एक एक बोर्ड क़ायम किये गए हैं.

کشمیر کے نئے سدھار

(تارا چند گپتا)

اتیاچاری زمینداروں اور ساہوکاروں کے چنگل سے مکتی پاکر کشمیری کسان امید اور وشواس سے اپنے بھوشیہ کے چمکتے تارے کو دیکھ رہے ہیں ۔

دو سال پہلے کشمیر کی نئی سرکار نے "جموں اور کشمیر دکھی قرضدار ایکٹ" پاس کیا ہے ۔ اس قانون کا مقصد یہ ہے کہ سمجھوتہ بورڈ بناکر ان کے ذریعے تھوڑے سے ہی عرصے میں قرض کی مصیبت سے کسانوں کو چھٹکارا دلایا جائے ۔ اس قانون کے چوتھے بھاگ کے بندھانوں کے انوسار قرض دینے والے اور قرض لینے والے دونوں کو سمجھوتے کے لئے سمجھوتہ بورڈ کو عرضی دینی پڑتی ہے ۔ جس دن سے یہ قانون لاگو ہوا ہے اس کے چار مہینے کے اندر ہی قرض دینے والے کے لئے ضروری تھا کہ وہ فیصلے کے لئے اپنا دعویٰ بورڈ کے سامنے پیش کردے نہیں تو بعد میں قرض واپس لینے کا اس کا ادھیکار ختم ہو جائیگا ۔ سمجھوتہ بورڈ کو صرف پانچ ہزار روپیہ یا اس سے کم کے قرض کے فیصلے کا ہی ادھیکار ہے ۔ بیوپار کے لئے قرض اور بینکنگ کے روز کے معمولی کاموں میں دخل دینے کا بورڈ کو کوئی ادھیکار نہیں ہے ۔

اس قانون نے کم سے کم ایسی سات چھوٹیں بھی رکھی ہیں جن کے ہوتے ہوئے پانچ ہزار کے اوپر کے مقدمے میں بھی سمجھوتہ بورڈ اپنا فیصلہ دے سکتا ہے۔ سمجھوتہ بورڈ کو سول کچہری کے سارے ادھیکار حاصل ہیں ۔ اس بورڈ کے فیصلے کے خلاف صرف ایک خاص جج کے یہاں اپیل ہوسکتی ہے ۔ اس کے علاوہ اس بورڈ کا حکم تمام عملی غرضوں کے لئے آخری مانا جاتا ہے اور نہ تو اس کے فیصلے پر کسی دوسری کچہری میں سنوائی ہوسکتی ہے اور نہ دوبارہ کوئی باقاعدہ مقدمہ ہی چلایا جا سکتا ہے ۔ اس قانون کا بندھان ہے کہ سمجھوتہ بورڈ قرض کی اصلی رقم تجویز کرے، اس قرضدار کے خلاف دعوے کو رد کر دے جس نے مول کی ڈیوڑھا رقم ادا کردی ہو، اور بورڈ کے بننے کے بعد قرض کے بھگتان کے لئے جتنے بھی آپسی سمجھوتے ہوئے ہوں انہیں غیر قانونی قرار دے ۔

بورڈ کے بنائے جانے کا مقصد یہ ہے کہ وہ "ریاست میں رہنے والوں کے اور خاص کر کسانوں کے قرض کے بوجھ کو ہلکا کرے۔" جموں، اننت ناگ، سری نگر ضلعوں میں دو دو بورڈ اور ادھمپور، کٹھوا، بارہمولا اور لداخ کے ضلعوں میں ایک ایک بورڈ قائم کئے گئے ہیں ۔

(6) हमारी गांव की ज़िन्दगी का बुनियादी सवाल है भूमि सुधार का सवाल. सरकार की यह योजना इधर ध्यान ही नहीं देती. इस लिये यह योजना बिल्कुल निकम्मी है.

(7) इस योजना में इस बात का बिल्कुल ख्याल नहीं किया गया कि कोई गांव या कोई इलाक़ा खाने की चीज़ों के मामले में किसी दूसरे का मोहताज न हो और सब को इस तरह का ठीक ठीक अच्छा खाना मिल सके जिससे सब की तन्दुरुस्ती क़ायम रह सके. इस लिये इस योजना से आये दिन के अकालों का खतरा दूर नहीं हो सकता.

(8) अमरीका कोरिया से लेकर पच्छिम जर्मनी तक रूस को बीच में घेर लेने के लिये एक जाल बिछा देने की कोशिश कर रहा है. यह योजना उसी जाल या उसी घेरे की एक कड़ी है. इसके लिये हिन्दुस्तान को उसी राह पर ले जाया जा रहा है जिस राह पर कोरिया को जाना पड़ा. इससे डर है कि हम अमरीकी गुट के जाल में फंस जावें. इसलिये हम में से वह लोग जो अहिन्सा के मानने वाले हैं इस योजना से कोई सम्बंध नहीं रख सकते.

अंगरेज़ों की राजकाजी साम्राज शाही के चले जाने पर हमारे यहां जो नाक़ाबिल हकूमत क़ायम हो गई उससे मुल्क में एक खाली खाली जगह दिखाई देने लगी. अमरीका की माली साम्राज शाही उस खाली जगह को भरने की कोशिश कर रही है जिससे मालूम होता है कि अब अमरीकी माली साम्राज शाही का ज़माना आ रहा है. आम तौर पर मुझे यह डर है कि उंगली पकड़ते पहुँचा पकड़ने की कहावत की तरह यह योजना उसी चीज़ की शुरूआत है. इसीलिये मेरी राय है कि जो लोग इस योजना में साथ दे रहे हैं वह उन देश घातकों की तरह हैं जो अपने देश के दुश्मनों के साथ मिलकर काम करते हैं और अपने मुल्क पर बरबादी लाते हैं. हालत इतनी गम्भीर हो गई है कि मुझे मजबूर हो कर कड़वी पर साफ़ और खरी खरी बात कहनी पड़ती है.

प्रेम के साथ आपका

जे. सी. कुमारप्पा

नोट. चूंकि यह मामला हमारे मुल्क की इसी वक़्त की भलाई बुराई से सम्बन्ध रखता है, इस लिये मैं यह खत अखबारों को भेज रहा हूँ.

(6) ھماری گاؤں کی زندگی کا بنیادی سوال ھے بھومی سدھار کا سوال. سرکار کی یہ یوجنا اِدھر دھیان ھی نہیں دیتی. اس لئے یہ یوجنا بالکل نکمی ھے.

(7) اِس یوجنا میں اِس بات کا بالکل خیال نہیں کیا گیا کوئی گاؤں یا کوئی علاقہ کھانے کی چیزوں کے کے معاملے میں کسی دوسرے کا محتاج نہ ھو اور سبکو اِسطرح کا ٹھیک ٹھیک اچھا کھانا مل سکے جس سے سب کی تندرستی قائم رہ سکے. اس لئے اِس یوجنا سے آئے دن کے اکالوں کا خطرہ دور نہیں ھو سکتا.

(8) امریکہ کوریا سے لے کر پچھم جرمنی تک روس کو بیچ میں گھیر لینے کے لئے ایک جال بچھا دینے کی کوشش کر رھا ھے. یہ یوجنا اُسی جال یا اُسی گھیرے کی ایک کڑی ھے. اِس کے لئے ھندستان کو اُسی راہ پر لے جایا جا رھا ھے جس راہ پر کوریا کو جانا پڑا. اس سے ڈر ھے کہ ھم امریکی گٹ کے جال میں پھنس جاویں. اس لئے ھم میں سے وہ لوگ جو اھنسا کے ماننے والے ھیں اِس یوجنا سے کوئی سمبندھ نہیں رکھ سکتے.

انگریزوں کی راجکاجی سامراج شاھی کے چلے جانے پر ھمارے یہاں جو ناقابل حکومت قائم ھوگئی اُس سے ملک میں ایک خالی خالی جگہ دکھائی دینے لگی. امریکہ کی مالی سامراج شاھی اُس خالی جگہ کو بھرنے کی کوشش کر رھی ھے. جس سے معلوم ھوتا ھے کہ اب امریکی مالی سامراج شاھی کا زمانہ آ رھا ھے. عام طور پر مجھے یہ ڈر ھے کہ اُنگلی پکڑتے پہونچا پکڑنے کی کہاوت کی طرح یہ یوجنا اُسی چیز کی شروعات ھے. اِسی لئے میری رائے ھے کہ جو لوگ اس یوجنا میں ساتھ دے رھے ھیں وہ اُن دیش گھاتکوں کی طرح ھیں جو اپنے دیش کے دشمنوں کے ساتھ مل کر کام کرتے ھیں اور اپنے ملک پر بربادی لاتے ھیں. حالت اتنی گمبھیر ھوگئی ھے کہ مجھے مجبور ھو کر کڑوی پر صاف اور کھری کھری بات کہنی پڑتی ھے.

پریم کے ساتھ آپکا

جے. سی. کماریا

نوٹ. چونکہ یہ معاملہ ھمارے ملک کی اسی وقت کی بھلائی برائی سے سمبندھ رکھتا ھے' اس لئے میں یہ خط اخباروں کو بھیج رھا ھوں.

आपने ठीक कहा है कि सरकारी पैम्फलेट में इस बारे में जो बातें बताई गई हैं वह बहुत कम हैं जिन से इस मामले की पूरी जानकारी नहीं हो सकती. फिर भी चूंकि आपने अपने ख़त में आम तौर पर मेरे विचार जानना चाहा है इसलिये मेरे जो कुछ विचार हैं मैं नीचे दे रहा हूँ.

(1) हिन्दुस्तान और अमरीका के बीच जिस तकनीकी सहायता समझौते (इन्डो यू. एस. टैकनिकल कोआपरेशन एग्रीमेन्ट) पर हमारे प्रधान मंत्री और अमरीकी राजदूत ने मिल कर दस्तख़त किये हैं वह समझौता किसी भी आत्मसम्मान वाले आज़ाद मुल्क को शोभा नहीं देता. क्योंकि इस समझौते के मुताबिक़ हमारे देश के अन्दर काम करने वाले ग़ैर सरकारी बिदेशी लोगों तक को मुल्क के क़ानून से बरीयत के वह अधिकार दे दिये गए हैं जो दूसरे देशों के केवल ख़ास राजदूतों को दिये जाते हैं. इसका नतीजा यह होगा कि हमारे मुल्क भर में बीच बीच में विदेशियों के एक तरह के अलग इलाक़े बन जाएंगे.

(2) अमरीका इस काम में रुपया में सिर्फ़ लग भग दो आने लगाएगा और इस दो आने के बदले में कम्युनिटी प्रोजेक्टस के सब मामलों में अमरीका की राय या आवाज़ सबसे ऊपर रहेगी. हर बात में अमरीका का फ़ैसला आख़री फ़ैसला होगा.

(3) इस सारी योजना से पता चलता है कि हमारे प्रधान मंत्री को अपने साथियों की क़ाबलियत में इतना ग़ज़ब का अविश्वास है कि वह हमारे देश के गांव की फिर से रचना करने के लिये विदेशियों को दावत दे रहे हैं और उस के लिये इतना झुकने को तैयार हैं.

(4) इस तरह की किसी भी अच्छी योजना में एक बड़ी ज़रूरी बात यह होनी चाहिये कि आदमी इन्सानी स्वभाव को अच्छी तरह और पूरी तरह समझता हो. यह काम इसी जानकारी के सहारे चल सकता है. हमारी सरकार की इस योजना में इस इतनी ज़रूरी बात का बिलकुल ख़्याल ही नहीं किया गया.

(5) हमारे गांव की ज़िन्दगी जिस तरह की सोशल फ़िलासफ़ी यानी जिस तरह के समाजी विचारों और जिस तरह के रहन सहन के ढंग पर क़ायम है उनका मक़सद यह है कि गांव वाले अपने पैरों पर ख़ुद खड़े रह सकें और अपने गांव का शासन ख़ुद चला सकें. जब तक हम इसी बुनियाद पर अपने गांव की रचना फिर से नहीं करेंगे तब तक हमारी सब कोशिशें न केवल बेकार ही जाएंगी बल्कि उनका नतीजा यह भी होगा कि हमारे देश का समाज टुकड़े टुकड़े हो जायेगा और हमारी कलचर का ख़ात्मा हो जायेगा.

آپ نے ٹھیک کہا ہے کہ سرکاری پمفلٹ میں اِس بارے میں جو باتیں بتائی گئی ہیں وہ بہت کم ہیں جن سے اِس معاملے کی پوری جانکاری نہیں ہوسکتی. پھر بھی چونکہ آپ نے اپنے خط میں عام طور پر میرے وچار جاننا چاہا ہے اس لئے میرے جو کچھ وچار ہیں میں نیچے دے رہا ہوں.

(1) ہندستان اور امریکہ کے بیچ جس تکنیکی سہائتا سمجھوتے (انڈو یو. ایس. ٹکنیکل کوآپریشن اگریمنٹ) پر ہمارے پردھان منتری اور امریکی راجدوت نے مل کر دستخط کئے ہیں وہ سمجھوتہ کسی بھی آتم سمان والے آزاد ملک کو شوبھا نہیں دیتا. کیونکہ اِس سمجھوتے کے مطابق ہمارے دیش کے اندر کام کرنے والے غیر سرکاری ودیشی لوگوں تک کو ملک کے قانون سے بریت کے وہ ادھیکار دے دیئے گئے ہیں جو دوسرے دیشوں کے کیول خاص راجدوتوں کو دیئے جاتے ہیں. اِس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ ہمارے ملک بھر میں بیچ بیچ میں ودیشیوں کے ایک طرح کے الگ علاقے بن جائیں گے.

(2) امریکہ اِس کام میں روپیہ میں صرف لگ بھگ دو آنے لگائے گا اور اس دو آنے کے بدلے میں کمیونٹی پروجیکٹس کے سب معاملوں میں امریکہ کی رائے یا آواز سب سے اُوپر رہے گی. ہر بات میں امریکہ کا فیصلہ آخری فیصلہ ہوگا.

(3) اِس ساری یوجنا سے پتہ چلتا ہے کہ ہمارے پردھان منتری کو اپنے ساتھیوں کی قابلیت میں اتنا غضب کا اوشواس ہے کہ وہ ہمارے دیش کے گاؤں کی پھر سے رچنا کرنے کے لئے ودیشیوں کو دعوت دے رہے ہیں اور اُسکے لئے اتنا جھکنے کو تیار ہیں.

(4) اِسطرح کی کسی بھی اچھی یوجنا میں ایک بڑی ضروری بات یہ ہونی چاہئے کہ آدمی انسانی سبھاؤ کو اچھی طرح اور پوری طرح سمجھتا ہو. یہ کام اِسی جانکاری کے سہارے چل سکتا ہے. ہماری سرکار کی اِس یوجنا میں اِس اتنی ضروری بات کا بالکل خیال ہی نہیں کیا گیا.

(5) ہمارے گاؤں کی زندگی جسطرح کی سوشل فلسفی یعنی جس طرح کے سماجی وچاروں اور جس طرح کے رہن سہن کے ڈھنگ پر قائم ہے اُن کا مقصد یہ ہے کہ گاؤں والے اپنے پیروں پر خود کھڑے رہ سکیں اور اپنے گاؤں کا شاسن خود چلا سکیں. جب تک ہم اِسی بنیاد پر اپنے گاؤں کی رچنا پھر سے نہیں کرینگے تب تک ہماری سب کوششیں نہ کیول بیکار ہی جائیں گی بلکہ اُن کا نتیجہ یہ بھی ہوگا کہ ہمارے دیش کا سماج ٹکڑے ٹکڑے ہوجائے گا اور ہماری کلچر کا خاتمہ ہوجائے گا.

अमरीका और हमारे गांव

[भारत सरकार ने एक प्लानिंग कमीशन बनाया है. उसके मातहत एक कम्युनिटी प्रोजेक्टस एडमिनिस्ट्रेशन है. इन कम्युनिटी प्रोजेक्टस का काम यह है कि भारत में जगह जगह यहां के गांव वालों को अमरीकी पैसे की मदद से, अमरीकी जानकारों की देख रेख और सरपरस्ती में, अमरीकी सामान और अमरीकी मशीनों के सहारे अच्छी तरह मिल कर रहना और अपने गांव को तरक़्क़ी देना सिखाया जाए. भारत सरकार को अपनी इस योजना पर फ़ख़्र है. कुछ लोग इसे मुल्क के लिये और ख़ास कर हिन्दुस्तान के गांव वालों के लिये बरबादी और तबाही की चीज़ समझते हैं. इस ख़्याल के लोगों में से एक महात्मा गांधी के परम भक्त और अर्थशास्त्र के पंडित डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा भी हैं जो हाल में चीन, जापान, रूस, जर्मनी हो कर लौटे हैं. भारत सरकार ने अपनी इस कम्युनिटी प्रोजेक्टस पर एक छोटा सा पैम्फ़लेट भी निकाला है. हाल में यह पैम्फ़लेट सरकार ने कुमारप्पा जी के पास भेजा था और उनसे राय मांगी थी. इसके बाद 20 अगस्त को कम्युनिटी प्रोजेक्टस पर भारत सरकार के सब से बड़े अफ़सर श्री एस. के. दे कुमारप्पा जी से मिलने वर्धा गए थे. दोनों में इस बारे में काफ़ी बात चीत हुई. अगले दिन भारत सरकार के इस काम पर अपनी राय ज़ाहिर करते हुए कुमारप्पा जी ने एक ख़त अंग्रेज़ी में श्री एस. के. दे को भेजा जिसकी एक नक़ल 'नया हिन्द' में छापने के लिये उन्होंने हमारे पास भेजी है. ख़त यह है—एडीटर]

मगन वाड़ी, वर्धा

21 अगस्त 1952

श्री एस. के. दे

कम्युनिटी प्रोजेक्टस एडमिनिस्ट्रेशन

प्लानिंग कमीशन,

नई दिल्ली.

डियर श्री दे,

मुझे अफ़सोस है कि आप के सात जुलाई के ख़त का जवाब देने में देर हुई. मैं बाहर चला गया था और जब से वापस आया हूं बहुत सा काम बक़ाया में पड़ा हुआ है. मैंने इस मामले पर सोचने के लिये भी वक़्त लिया है. आप कल मुझ से मिलने आए. इसलिये अब मैं इस बारे में अपनी राय लिखता हूं.

امریکہ اور ہمارے گاؤں

[بھارت سرکار نے ایک پلیننگ کمیشن بنایاہے . اس کے ماتحت ایک کمیونیٹی پروجکٹس اڈمنسٹریشن ہے . ان کمیونیٹی پروجکٹس کا کام یہ ہے کہ بھارت میں جگہ جگہ یہاں کے گاؤں والوں کو امریکی پیسے کی مدد سے' امریکی جانکاروں کی دیکھ ریکھ اور سرپرستی میں' امریکی سامان اور امریکی مشینوں کے سہارے اچھی طرح مل کر رہنا اور اپنے گاؤں کو ترقی دینا سکھایا جائے . بھارت سرکار کو اپنی اس یوجنا پر فخر ہے . کچھ لوگ اسے ملک کے لئے اور خاص کر ہندستان کے گاؤں والوں کے لئے بربادی اور تباہی کی چیز سمجھتے ہیں . اس خیال کے لوگوں میں سے ایک مہاتما گاندھی کے پرم بھکت اور ارتھ شاستر کے پنڈت ڈاکٹر جے . سی . کماریپا بھی ہیں جو حال میں چین' جاپان' روس' جرمنی ہوکر لوٹے ہیں . بھارت سرکار نے اپنی اس کمیونٹی پروجکٹس پر ایک چھوٹا سا پمفلٹ بھی نکالا ہے . حال میں یہ پمفلٹ سرکار نے کماریپا جی کے پاس بھیجاتھا اور ان سے رائے مانگی تھی . اس کے بعد 20 اگست کو کمیونیٹی پروجکٹس پر بھارت سرکار کے سب سے بڑے افسر شری ایس . کے . ڈے کماریپا جی سے ملنے وردھا گئے تھے . دونوں میں اس بارے میں کافی بات چیت ہوئی. اگلے دن بھارت سرکار کے اس کام پر اپنی رائے ظاہر کرتے ہوئے کماریپا جی نے ایک خط انگریزی میں شری ایس . کے . ڈے کو بھیجا جس کی ایک نقل ' نیا ہند ' میں چھاپنے کے لئے انہوں نے ہمارے پاس بھیجی ہے . خط یہ ہے—ایڈیٹر]

مگن واڑی' وردھا

21 اگست سن 1952

شری ایس . کے . ڈے

کمیونیٹی پروجکٹس ایڈمنسٹریشن

پلیننگ کمیشن'

نئی دلی .

ڈیر شری ڈے'

مجھے افسوس ہے کہ آپ کے سات جولائی کے خط کا جواب دینے میں دیر ہوئی . میں باہر چلا گیا تھا اور جب سے واپس آیا ہوں بہت سا کام بقایا میں پڑا ہوا ہے . میں نے اس معاملے پر سوچنے کے لئے بھی وقت لیا ہے . آپ کل مجھ سے ملنے آئے . اس لئے اب میں اس بارے میں اپنی رائے لکھتا ہوں .

में इस्तेमाल करते थे और इसका नतीजा अच्छा निकलता था. अब सारे इलाक़े में इस तरकीब का प्रचार किया गया है और लोगों ने इसे अपना लिया है. फ़रवरी सन '52 में इस इलाक़े के सारे सूबों की सरकारों ने बर्फ़ इकट्ठा करने में अपनी ताक़त लगा दी. शान्सी सूबे के नौ लाख अट्ठारह हज़ार किसानों ने नौ करोड़ तीस लाख गट्ठर बर्फ़ के इकट्ठा किये, जिससे वक़्त पर बुआई के लिये दो लाख पचास हज़ार एकड़ ज़मीन में नमी पहुंचाई जा सकी. चहार सूबे में भी एक लाख सत्तर हज़ार एकड़ ज़मीन में इसी ढंग से नमी पहुँचाई गई. बारिश इस साल बहुत ही कम हुई फिर भी इस इलाक़े में अच्छी फ़सल पैदा की जा सकी.

सूखा के ख़िलाफ़ जेहाद की अहमियत माली फ़ायदे के अलावा भी बहुत है. किसानों को इससे भाईचारे का सबक़ मिला, उन्हें सूखा के ख़तरे से छुटकारा मिल गया, उनके सामने राजकाजी मसले साफ़ हो गए और साथ ही साथ उनमें देश भक्ति की भावना पैदा हो गई.

(चाइना रीकन्सट्रक्ट से)

میں استعمال کرتے تھے اور اس کا نتیجہ اچھا نکلتا تھا. اب سارے علاقے میں اس ترکیب کا پرچار کیا گیا ہے اور لوگوں نے اسے اپنا لیا ہے. فروری سن '52 میں اس علاقے کے سارے صوبوں کی سرکاروں نے برف اکٹھا کرنے میں اپنی طاقت لگا دی. شانسی صوبے کے نو لاکھ اٹھارہ ہزار کسانوں نے نو کروڑ تیس لاکھ گٹھر برف کے اکٹھا کئے، جس سے وقت پر بوائی کے لئے دو لاکھ پچاس ہزار ایکڑ زمین میں نمی پہونچائی جا سکی. چہار صوبے میں بھی ایک لاکھ ستر ہزار ایکڑ زمین میں اسی ڈھنگ سے نمی پہونچائی گئی. بارش اس سال بہت ہی کم ہوئی پھر بھی اس علاقے میں اچھی فصل پیدا کی جا سکی.

سوکھا کے خلاف جہاد کی اہمیت مالی فائدے کے علاوہ بھی بہت ہے. کسانوں کو اس سے بھائی چارے کا سبق ملا، انہیں سوکھا کے خطرے سے چھٹکارا مل گیا، ان کے سامنے راج کاجی مسئلے صاف ہو گئے اور ساتھ ہی ساتھ ان میں دیش بھکتی کی بھاونا پیدا ہو گئی.

(چائنا رکنسٹرکٹ سے)

मन्त्र पढ़ना, भजन गाना और माला फेरना छोड़, मन्दिर के सारे दरवाज़े बन्द कर. इस अंधेरे एकान्त कोने में तू किस की पूजा करता है ? अपनी आंखें खोल कर देख तेरा देवता तेरे सामने नहीं है.

हल चलाने वाला जहां कठोर भूमि में हल चला रहा है और सड़क बनाने वाला जहां पत्थर तोड़ रहा है, भगवान वहां ही उनके साथ धूप में है और बारिश में है, उसका कपड़ा धूल में लतपत है.

—रविन्द्र नाथ ठाकुर

منتر پڑھنا، بھجن گانا اور مالا پھیرنا چھوڑ، مندر کے سارے دروازے بند کر. اس اندھیرے اکانت کونے میں تو کس کی پوجا کرتا ہے؟ اپنی آنکھیں کھولکر دیکھ تیرا دیوتا تیرے سامنے نہیں ہے.

ہل چلانے والا جہاں کٹھور بھومی میں ہل چلا رہا ہے اور سڑک بنانے والا جہاں پتھر توڑ رہا ہے، بھگوان وہاں ہی ان کے ساتھ دھوپ میں ہے اور بارش میں ہے، اس کا کپڑا دھول میں لت پت ہے.

—رویندر ناتھ ٹھاکر

सामान जुटा कर और सिचाई क़ायम करके जनता का इस तरफ़ ध्यान दिलाने के अलावा सरकार आम जनता में प्रचार करती है ताकि वह खुद अपना संगठन कर सके और सूखा से छुटकारा पाने के लिये अपनी हालत के मुताबिक़ तरकीबें निकाल सके. बड़ी बड़ी कान्फ्रेंन्सें की जाती हैं जिन में आदर्श मज़दूर और आपसी सहयोग ग्रुप के प्रतिनिधि एक साथ बैठते हैं और काम को आगे बढ़ाने की तरकीबों पर सोच विचार करते हैं. इस विषय पर ड्रामे खेले जाते हैं, गीत गा गा कर प्रचार किया जाता है, लाउड स्पीकर पर एलान होता है, बोर्डों पर लिखे अख़बारों से भी यह बात किसानों तक पहुंचाई जाती है. किसान संगठन किसानों को नई सरकार की योजनाएं समझाते हैं.

अब गांव गांव में सिंचाई के साधन पैदा हो गए हैं. सन '52 में उत्तर चीन के इलाक़े में पचास फ़ीसदी सिंचाई के साधन बढ़ गए. पंगयूआन सूबे में सिंचाई के लिये तालाब खोदने की योजना मार्च के अन्त तक पूरी हो गई. होपी सूबे में अपना आधा काम पूरा कर लिया. चहार सूबे में तीन लाख पचास हज़ार एकड़ ज़मीन की सिंचाई होने लगी. सन '52 के शुरू के तीन महीनों में ही उत्तर चीन में अट्ठावन हज़ार पक्के और दो लाख कच्चे कुएं खोद डाले गए.

उत्तर पश्चिम चीन में ऐसी दस लाख एकड़ ज़मीन की सिंचाई होने लगी जिसमें पहले पानी कभी नहीं पहुँच पाता था. इस इलाक़े का सन '52 का प्रोग्राम वक़्त पर पूरा हो जायगा, इसमें कोई शक नहीं है. केवल शान-तुंग सूबे में दो लाख तीस हज़ार कुएं खोदे जा चुके हैं. बीच दक्खिन इलाक़े के होपे और क्यांगसी सूबों ने मार्च के आख़ीर तक अपनी इसी तरह की योजना का सत्तर फ़ीसदी हिस्सा पूरा कर लिया है. हुनान सूबे में छै लाख पचास हज़ार एकड़ ज़मीन की सिंचाई का प्रबन्ध हो गया है. दक्खिन पश्चिम चीन का इलाक़ा किसी तरह भी किसी इलाक़े से पीछे नहीं है. आज यह कहा जा सकता है कि चीन का सारा देश पिछले साल के मुक़ाबले में इस साल और भी अच्छी हालत में हो गया है और सूखा का ख़तरा बहुत हद तक ख़त्म कर दिया गया है.

हर इलाक़े की अलग अलग समस्यायें हैं और अलग अलग कठिनाइयां हैं. अपनी अपनी कठिनाइयों को सुलझाने की हर एक कोशिश करता है. उत्तर चीन में ज़रूरत के वक़्त बारिश नहीं होती और अगर होती भी है तो बूंदें पड़ कर रह जाती हैं. किसान को खेतों में ज़ियादा से ज़ियादा नमी क़ायम रखने और उनमें ज़ियादा से ज़ियादा नमी पैदा करने की भर पूर कोशिश करना पड़ती है.. कहीं कहीं कोई कोई किसान जाड़े की बर्फ़ को जमा करके खेतों

سادھن جٹاکر اور سنچائی قائم کرکے جنتا کا اِس طرف دھیان دلانے کے علاوہ سرکار عام جنتا میں پرچار کرتی ہے تاکہ وہ خود اپنا سنگٹھن کر سکے اور سوکھا سے چھٹکارا پانے کے لئے اپنی حالت کے مطابق ترکیبیں نکال سکے۔ بڑی بڑی کانفرنسیں کی جاتی ہیں جن میں آدرش مزدور اور آپسی سہیوگ گروپ کے پرتیندھی ایک ساتھ بیٹھتے ہیں اور کام کو آگے بڑھانے کی ترکیبوں پر سوچ بچار کرتے ہیں۔ اِس وشے پر ڈرامے کھیلے جاتے ہیں' گیت گا گا کر پرچار کیا جاتا ہے' لاؤڈ اسپیکر پر اعلان ہوتا ہے' بورڈوں پر لکھے اخباروں سے بھی یہ بات کسانوں تک پہونچائی جاتی ہے۔ کسان سنگٹھن کسانوں کو نئی سرکار کی یوجنائیں سمجھاتے ہیں۔

اب گاؤں گاؤں میں سینچائی کے سادھن پیدا ہو گئے ہیں۔ سن 52 میں اتر چین کے علاقے میں پچاس فیصدی سینچائی کے سادھن بڑھ گئے۔ پنگ‌یوان صوبے میں سینچائی کے لئے تالاب کھودنے کی یوجنا مارچ کے انت تک پوری ہوگئی۔ ہوپی صوبے نے اپنا آدھا کام پورا کر لیا۔ چہار صوبے میں تین لاکھ پچاس ہزار ایکڑ زمین کی سینچائی ہونے لگی۔ سن 52 کے شروع کے تین مہینوں میں ہی اتر چین میں اٹھاون ہزار پکے اور دو لاکھ کچے کنوئیں کھود ڈالے گئے۔

اتر پچھم چین میں ایسی دس لاکھ ایکڑ زمین کی سینچائی ہونے لگی جس میں پہلے پانی کبھی نہیں پہونچ پاتا تھا۔ اِس علاقے کا سن '52 کا پروگرام وقت پر پورا ہو جائے گا' اِس میں کوئی شک نہیں ہے۔ کیول شانتنگ صوبے میں دو لاکھ تیس ہزار کنوئیں کھودے جا چکے ہیں۔ بیچ دکھن علاقے کے ہوپے اور کیانگسی صوبوں نے مارچ کے آخیر تک اپنی اِسی طرح کی یوجنا کا ستر فیصدی حصہ پورا کر لیا ہے۔ ہونان صوبے میں چھ لاکھ پچاس ہزار ایکڑ زمین کی سینچائی کا پربندھ ہوگیا ہے۔ دکھن پچھم چین کا علاقہ کسی طرح بھی کسی علاقے سے پیچھے نہیں ہے۔ آج یہ کہا جا سکتا ہے کہ چین کا سارا دیش پچھلے سال کے مقابلے میں اِس سال اور بھی اچھی حالت میں ہوگیا ہے اور سوکھا کا خطرہ بہت حد تک ختم کر دیا گیا ہے۔

ہر علاقے کی الگ الگ سمسیائیں ہیں اور الگ الگ کٹھنائیاں ہیں۔ اپنی اپنی کٹھنائیوں کو سلجھانے کی ہر ایک کوشش کرتا ہے۔ اتر چین میں ضرورت کے وقت بارش نہیں ہوتی اور اگر ہوتی بھی ہے تو بوندیں پڑ کر رہ جاتی ہیں۔ کسان کو کھیتوں میں زیادہ سے زیادہ نمی قائم رکھنے اور اُن میں زیادہ سے زیادہ نمی پیدا کرنے کی بھرپور کوشش کرنا ہوتی ہے۔ کہیں کہیں پر کوئی کوئی کسان جاڑے کی برف کو جمع کر کے کھیتوں

[illegible] किये गए. [illegible] उनकी देख रेख [illegible] एक बूढ़े किसान के मुंह पर थी— "[illegible] के बड़े बड़े नेता तक हमारे खेतों को सींचने आए हैं. हम अपना फर्ज कैसे भूल सकते हैं."

शहरों से इस काम के लिये जो आदमी आए थे उनके साथ मिल कर किसानों ने पूरी समझ और पक्के इरादे से काम किया. खेतों में पानी पहुंचाने, पानी निकालने, कुएं खोदने, तालाबों की मरम्मत करने, नए तालाब खोदने और जरूरत पड़ने पर बांध वगैरा तैयार करने के लिये आपसी सहयोग ग्रुपों का मजबूत संगठन खड़ा हो गया. ऐसे ऐसे सूबों और ऐसे ऐसे इलाकों में सिंचाई होने लगी जहां पानी का सपने में भी विचार नहीं हो सकता था, और उन इलाकों के किसान जोश से कहने लगे—"चेयरमैन माओ का ही दम है जो यहां तक पानी पहुँच सका." कहीं कहीं भयानक संकटों का भी सामना करना पड़ा. एक गांव में पानी नहीं था और पच्चीस एकड़ जमीन की सिंचाई करनी थी. इस गांव से पांच मील की दूरी पर एक नदी थी. वहां से बाल्टियों में पानी भर भर कर लाया गया और सिंचाई की गई. बाद को इस गांव में सात कुएं खोदे गए और सतरह हजार पेड़ लगाए गए. पेड़ों के लगाने से भी आस पास की जमीन की नमी बहुत बढ़ जाती है. आज बूढ़े से बूढ़े किसान की भी समझ में आ गया है कि आपसी सहयोग बहुत अच्छी चीज है और वह कहता है कि "अगर हम सब अलग अलग काम करते तो इतना बड़ा काम कभी पूरा न कर पाते."

सूखा से एक साथ और मिल कर मोरचा लेने के कारन किसान एक दूसरे के नजदीक आए और आपसी नफरत, दुश्मनी और भेद भाव को भूल कर हमेशा से जियादा एकता के धागे में गुथ गए. एक दूसरे की मदद से ही हर किसान को फायदा पहुँचा है. इसीलिए अब उनमें दूसरों की मदद करने का जबरदस्त जज़्बा पैदा हो गया है. पहले जो किसान किसी को अपनी कोई चीज उधार देना पसन्द नहीं करते थे आज वह खुशी खुशी और बड़े उत्साह से खेती के अपने औज़ार और खाद वगैरा दूसरे जरूरत मन्द किसानों को देने को तैयार रहते हैं. तुंग शुआंग-हू नाम का एक अधेड़ उम्र का किसान है. उसके गांव में उन लोगों को मकान और कुछ धन की जरूरत थी जिन्हें अभी हाल में जिन्दगी में पहली बार अपने अपने खेत मिले हैं. इस किसान ने अपने सुअर बिना झिझक बेच दिये और उस धन से इन साथियों की मदद की. इस मिसाल का जनता में प्रचार किया गया और दूसरों ने भी इस लीक पर चलना शुरू कर दिया. यह पुरानी कहावत आज सच के सांचे में ढल गई है—"हम सब एक कुटुम्ब हैं."

اور [illegible] گئے . [illegible] کی دیکھ بھال [illegible] ایک بوڑھے کسان کے منھ پر یہی تھا— "ملک کے بڑے بڑے نیتا تک ہمارے کھیتوں کو سینچنے آئے ہیں ، ہم اپنا فرض کیسے بھول سکتے ہیں ."

شہروں سے اس کام کے لئے جو آدمی آئے تھے اُن کے ساتھ مل کر کسانوں نے پوری سمجھ اور پکے ارادے سے کام کیا . کھیتوں میں پانی پہنچانے ، پانی نکالنے ، کنوئیں کھودنے ، تالابوں کی مرمت کرنے ، نئے تالاب کھودنے اور ضرورت پڑنے پر باندھ وغیرہ تیار کرنے کے لئے آپسی سہیوگ گروپوں کا مضبوط سنگٹھن کھڑا ہوگیا . ایسے ایسے صوبوں اور ایسے ایسے علاقوں میں سینچائی ہونے لگی جہاں پانی کا سپنے میں بھی وچار نہیں ہو سکتا تھا اور اُن علاقوں کے کسان جوش سے کہنے لگے— "چیرمین ماؤ کا ہی دم ہے جو یہاں تک پانی پہنچ سکا ." کہیں کہیں بھیانک سنکٹوں کا بھی سامنا کرنا پڑا . ایک گاؤں میں پانی نہیں تھا اور پچیس ایکڑ زمین کی سینچائی کرنی تھی . اس گاؤں سے پانچ میل کی دوری پر ایک ندی تھی . وہاں سے بالٹیوں میں پانی بھر بھر کر لایا گیا اور سینچائی کی گئی . بعد کو اس گاؤں میں سات کنوئیں کھودے گئے اور سترہ ہزار پیڑ لگائے گئے . پیڑوں کے لگانے سے بھی آس پاس کی زمین کی نمی بہت بڑھ جاتی ہے . آج بوڑھے سے بوڑھے کسان کی بھی سمجھ میں آ گیا ہے کہ آپسی سہیوگ بہت اچھی چیز ہے اور وہ کہتا ہے کہ "اگر ہم سب الگ الگ کام کرتے تو اتنا بڑا کام کبھی پورا نہ کر پاتے ."

سوکھا سے ایک ساتھ اور مل کر مورچہ لینے کے کارن کسان ایک دوسرے کے نزدیک آئے اور آپسی نفرت ، دشمنی اور بھید بھاؤ کو بھول کر ہمیشہ سے زیادہ ایکتا کے دھاگے میں گُتھ گئے . ایک دوسرے کی مدد سے ہی ہر کسان کو فائدہ پہنچا ہے . اس لئے اب اُن میں دوسروں کی مدد کرنے کا زبردست جذبہ پیدا ہوگیا ہے . پہلے جو کسان کسی کو اپنی کوئی چیز اُدھار دینا پسند نہیں کرتے تھے آج وہ خوشی خوشی اور بڑے اُتساہ سے کھیتی کے اوزار اور کھاد وغیرہ دوسرے ضرورت مند کسانوں کو دینے کو تیار رہتے ہیں . تنگ شوانگ ہو نام کا ایک ادھیڑ عمر کا کسان ہے . اس کے گاؤں میں اُن لوگوں کو مکان اور کچھ دھن کی ضرورت تھی جنھیں ابھی حال میں زندگی میں پہلی بار اپنے اپنے کھیت ملے ہیں . اس کسان نے اپنے سور بنا جھجک بیچ دئے اور اس دھن سے اِن ساتھیوں کی مدد کی . اس مثال کا جنتا میں پرچار کیا گیا اور دوسروں نے بھی اس لیک پر چلنا شروع کر دیا . [illegible] کے سانچے میں ڈھل [illegible]

(1) जहां और जिस हालत में भी पानी मिले उसे सिंचाई के काम में लिया जाय. (2) नए नए कुएं खोदे जाएं. (3) सिंचाई के लिये नई नहरें खोदी जाएं. इस बात पर भी ज़ोर दिया गया कि हर जगह की मुक़ामी हालत को खूब समझा जाए और उस हालत में ही काम को पूरा किया जाय. किसी दूसरे का सहारा तकने के बजाए अपनी ही मेहनत से जनता 'आपसी सहयोग ग्रुप' बना कर सारा काम कर डाले.

पीकिंग सरकार की तरफ़ से सब मुक़ामी सरकारों को हुक्म दिया गया कि वह छोटे मोटे ग़ैर ज़रूरी कामों को छोड़ कर पूरी तरह से इधर लग जाएं और धन से, साइन्सी नाप जोड़ से, इमारती मसाले से और तकनीकी जानकारों से जनता को पूरी मदद दें. सरकारों के अलावा कम्यूनिस्ट पार्टी और जनवादी नौजवान सभा ने गांवों में रहने वाले अपने मेम्बरों से अपील की कि वह कमर बांध कर मुस्तैदी से सूखा के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ने में लग जाएं और दूसरों के लिये एक मिसाल क़ायम कर दें.

सारे देश में ज़ोरदार कोशिश शुरू हो गई. हर इलाक़े के काम की रिपोर्टों से अख़बार भरे रहते थे. हर हर सूबे, हर हर ज़िले और हर हर गांव में पैदावार को बढ़ाने और सूखे की बला को ख़त्म करने के लिये कमेटियों का संगठन किया गया.

सिर्फ़ हूपे के सूबे में स्टेट बैंक ने चार करोड़ चार लाख अमरीकी डालर किसानों को इस काम के लिये उधार दिये. सरकार और दूसरी कोआपरेटिव संस्थाओं ने किसानों से उनकी बची पैदावार ख़रीद ली ताकि उनको नक़द रक़म मिल जाय. क्यांगसी सूबे में थोड़े ही अरसे में एक करोड़ इकासी लाख साठ हज़ार अमरीकी डालरों की क़ीमत की लकड़ी, चमड़े, तम्बाकू और दूसरी चीज़ें सरकार ने किसानों से ख़रीदीं. सिंचाई करने और सूखा को रोकने के लिये औज़ार सरकार ने मुहैया किये. इस तरह सारी चिन्ताओं से छुट्टी पा कर इत्मिनान से किसानों ने काम शुरू किया.

पहले किसान अपने अपने खेत पर ही अपनी अपनी शक्ति के मुताबिक़ अलग अलग काम करते थे. नई सरकार ने उन्हें मिल कर काम करने का उत्साह दिलाया. जिन इलाक़ों को हाल में आज़ादी मिली है उनमें सरकार को कुछ दिक़्क़त का भी सामना करना पड़ा. लोगों के दिमाग़ों में पुराने भ्रम और खुद ग़रज़ी भरी हुई थी. वह मिल कर काम करने को अच्छा नहीं समझते थे. सरकार ने मिसाल क़ायम कर के किसानों का ध्यान इस तरफ़ खींचा. पूरब सेच्वान में सरकारी दफ़्तरों के नौकर और फ़ौजी सिपाही [illegible] लाख आदमी तालाबों की मरम्मत करने

(1) جہاں اور جس حالت میں بھی پانی ملے آبپاشی کے کام میں لیا جائے (2) نئے نئے کنوئیں کھودے جائیں اور (3) آبپاشی کے لئے نئی نہریں کھودی جائیں۔ اس بات پر بھی زور دیا گیا کہ ہر جگہ کی مقامی حالت کو خوب سمجھا جائے اور اُس حالت میں ہی کام کو پورا کیا جائے۔ کسی دوسرے کا سہارا تکنے کے بجائے اپنی ہی محنت سے جنتا 'آپسی سہیوگ گروپ' بناکر سارا کام کر ڈالے۔

پیکنگ سرکار کی طرف سے سب مقامی سرکاروں کو حکم دیا گیا کہ وہ چھوٹے موٹے غیر ضروری کاموں کو چھوڑ کر پوری طرح سے ادھر لگ جائیں اور دھن سے، سائنسی ناپ جوڑ سے، عمارتی مسالے سے اور تکنیکی جانکاروں سے جنتا کو پوری مدد دیں۔ سرکاروں کے علاوہ کمیونسٹ پارٹی اور جنوادی نوجوان سبھا نے گاؤں میں رہنے والے اپنے ممبروں سے اپیل کی کہ وہ کمر باندھ کر مستعدی سے سوکھا کے خلاف لڑائی لڑنے میں لگ جائیں اور دوسروں کے لئے ایک مثال قائم کردیں۔

سارے دیش میں زوردار کوشش شروع ہو گئی۔ ہر علاقے کے کام کی رپورٹوں سے اخبار بھرے رہتے تھے۔ ہر ہر صوبے، ہر ہر ضلع اور ہر ہر گاؤں میں پیداوار کو بڑھانے اور سوکھے کی بلا کو ختم کرنے کے لئے کمیٹیوں کا سنگٹھن کیا گیا۔

صرف ہوپے کے صوبے میں اسٹیٹ بینک نے چار کروڑ چار لاکھ امریکی ڈالر کسانوں کو اس کام کے لئے ادھار دیئے۔ سرکار اور دوسری کوآپریٹو سنستھاؤں نے کسانوں سے اُن کی بچی پیداوار خریدلی تاکہ اُن کو نقد رقم مل جائے۔ کیانگسی صوبے میں تھوڑے ہی عرصہ میں ایک کروڑ اکاسی لاکھ ساٹھ ہزار امریکی ڈالروں کی قیمت کی لکڑی، چمڑے، تمباکو اور دوسری چیزیں سرکار نے کسانوں سے خریدیں۔ آبپاشی کرنے اور سوکھا کو روکنے کے لئے اوزار سرکار نے مہیا کئے۔ اس طرح ساری چنتاؤں سے چھٹی پاکر اطمینان سے کسانوں نے کام شروع کیا۔

پہلے کسان اپنے اپنے کھیت پر ہی اپنی اپنی شکتی کے مطابق الگ الگ کام کرتے تھے۔ نئی سرکار نے انہیں مل کر کام کرنے کا اُتساہ دلایا۔ جن علاقوں کو حال میں آزادی ملی ہے اُن میں سرکار کو کچھ دقت کا بھی سامنا کرنا پڑا۔ لوگوں کے دماغوں میں پرانے بھرم اور خود غرضی بھری ہوئی تھی۔ وہ مل کر کام کرنے کو اچھا نہیں سمجھتے تھے۔ سرکار نے مثال قائم کر کے کسانوں کا دھیان اس طرف کھینچا۔ پورب سیچوان میں سرکاری دفتروں کے نوکر اور فوجی سپاہی کل ملا کر پانچ لاکھ آدمی تالابوں کی مرمت کرنے

चीनी किसानों को 'सूखा' से छुटकारा कैसे मिला ?

चीनी किसानों को ज़मींदारों के दबाव और लूट खसोट से छुटकारा मिल गया है, वह अब अपनी ज़मीन के खुद मालिक बन गए हैं. उनके बचे खुचे सब से बड़े दुश्मन हैं, सूखा और कीड़े हैं. बड़ी बड़ी नदियों पर बांध बांध कर और दूसरे साधनों से चीनी सरकार ने बाढ़ को बहुत हद तक क़ाबू में कर लिया है. साथ ही साथ सूखा से छुटकारा दिलाने की कोशिशें की गईं हैं और उनके नतीजे भी अच्छे निकले हैं. नई सरकार के आते ही चार हज़ार छः सौ वर्ग मील खेती के लायक़ बिना पानी की ज़मीन की सिंचाई का इन्तज़ाम हो चुका है. सरकार अब ऐसी स्कीमों को सफल बनाने की कोशिश कर रही है जिनसे सूखे का नाम निशान मिट जायगा.

अब भी जगह जगह हर साल सूखा पड़ जाता है, लेकिन सरकार और किसान न तो बरखा की आस लगाए हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और न इस उम्मीद में वक़्त ख़राब करते हैं कि जब हमारी बड़ी बड़ी स्कीमें में कामयाब हो जाएंगी तो सूखा ख़त्म हो जाएगा. यह बात पूरी तरह से किसानों के दिमाग़ में बैठ गई है कि अगर वह आपसी सहयोग से मिल कर इन मुसीबतों का मुक़ाबला करें तो वह मौजूदा हालत में भी पैदावार बहुत बढ़ा सकते हैं. सन 1951 में बाईस सूबों में सूखा पर जेहाद बोला गया और प्रकृति की तरफ़ से पूरी मुख़ालफ़त होते हुए भी इन सूबों में सन '50 की पैदावार के ऊपर सात फ़ी सदी ग़ल्ला ज़ियादा पैदा किया गया. सन '52 में चीन के कुछ इलाक़ों ख़ासकर दक्खिन पश्चिम चीन में जाड़े में बर्फ़ ठीक से न पड़ा और वक़्त पर बारिश भी न हुई. एक फ़सल बिलकुल ख़तरे में थी. आम जनता ने एक साथ कोशिश की और उस फ़सल को ख़राब होने से बचा लिया.

इस कामयाबी की एक ही कुंजी थी और वह यह कि जनता और सरकार दोनों प्रकृति की लाई मुसीबतों से लड़ने और हर हालत में अपनी पैदावार बढ़ाने पर पूरी तरह डट गए. 8 फ़रवरी को सूखा के ख़िलाफ़ देश भर में लड़ाई छेड़ने का सरकार ने एलान कर दिया. पुराने तजुर्बों को सामने रख कर और लम्बी बहस के बाद इस लड़ाई की योजना तैयार की गई. इस योजना में बताया गया कि जगह जगह पर जैसी हालत पैदा हो उसका समय की मांग के मुताबिक़ ही मुक़ाबिला किया जाए और हर ख़तरे के लिए लोग तैयार रहें. इस योजना में बताया गया था कि

چینی کسانوں کو 'سوکھا' سے چھٹکارا کیسے ملا ؟

چینی کسانوں کو زمینداروں کے دباؤ اور لوٹ کھسوٹ سے چھٹکارا مل گیا ہے، وہ اب اپنی زمین کے خود مالک بن گئے ہیں ۔ ان کے بچے کھچے سب سے بڑے دشمن باڑھ، سوکھا اور کیڑے ہیں ۔ بڑی بڑی ندیوں پر باندھ باندھ کر اور دوسرے سادھنوں سے چینی سرکار نے باڑھ کو بہت حد تک قابو میں کرلیا ہے ۔ ساتھ ہی ساتھ سوکھا سے چھٹکارا دلانے کی کوشش کی گئی ہیں اور ان کے نتیجے بھی اچھے نکلے ہیں ۔ نئی سرکار کے آتے ہی چار ہزار چھ سو ورگ میل کھیتی کے لائق بنا پانی کی زمین کی سینچائی کا انتظام ہو چکا ہے ۔ سرکار اب ایسی اسکیموں کو سپھل بنانے کی کوشش کر رہی ہے جن سے سوکھے کا نام نشان مٹ جائے گا ۔

اب بھی جگہ جگہ ہر سال سوکھا پڑ جاتا ہے، لیکن سرکار اور کسان نہ تو برکھا کی آس لگائے ہاتھ پر ہاتھ دھرے بیٹھے رہتے ہیں اور نہ اس امید میں وقت خراب کرتے ہیں کہ جب ہماری بڑی بڑی اسکیمیں کامیاب ہو جائیں گی تو سوکھا ختم ہو جائے گا ۔ یہ بات پوری طرح سے کسانوں کے دماغ میں بیٹھ گئی ہے کہ اگر وہ آپسی سہیوگ سے مل کر ان مصیبتوں کا مقابلہ کریں تو وہ موجودہ حالت میں بھی پیداوار بہت بڑھا سکتے ہیں ۔ سن 1951 میں بائیس صوبوں میں سوکھا پر جہاد بولا گیا اور پرکرتی کی طرف سے پوری مخالفت ہوتے ہوئے بھی ان صوبوں میں سن '50 کی پیداوار کے اوپر سات فیصدی غلہ زیادہ پیدا کیا گیا ۔ سن '52 میں چین کے کچھ علاقوں خاص کر دکھن پچھم چین میں جاڑے میں برف ٹھیک سے نہ پڑا اور وقت پر بارش بھی نہ ہوئی ۔ ایک فصل بالکل خطرے میں تھی ۔ عام جنتا نے ایک ساتھ کوشش کی اور اس فصل کو خراب ہونے سے بچا لیا ۔

اس کامیابی کی ایک ہی کنجی تھی اور وہ یہ کہ جنتا اور سرکار دونوں پرکرتی کی لائی مصیبتوں سے لڑنے اور ہر حالت میں اپنی پیداوار بڑھانے پر پوری طرح ڈٹ گئے ۔ 8 فروری کو سوکھا کے خلاف دیش بھر میں لڑائی چھیڑنے کا سرکار نے اعلان کر دیا ۔ پرانے تجربوں کو سامنے رکھ کر اور لمبی بحث کے بعد اس لڑائی کی یوجنا تیار کی گئی ۔ اس یوجنا میں بتایا گیا کہ جگہ جگہ پر جیسی حالت پیدا ہو اس کا سمے کی مانگ کے مطابق مقابلہ کیا جائے اور ہر خطرے کے لئے لوگ [illegible] یوجنا میں بتایا گیا تھا کہ

[illegible]
एक [illegible] चली जा रही थी. [illegible] इस औरत की अंग अंग से बनावट टपकती थी. किसी भी भले आदमी को उस से नफ़रत हो जाना स्वाभाविक था. मैंने तेज़ आंखों से पिता जी की तरफ़ देखा और फिर उस स्त्री की ओर घूरा. पिता जी उससे परे खिसक गए. उन्हें मेरे आने से ताज्जुब सा हुआ, इस आश्चर्य में खुशी की जगह दुख की रेखायें झलक रही थीं. वह चुप रहे. मैं भी केवल घूरता रहा.

“आप ही के लड़के हैं बहू जी, बड़े अच्छे हैं. चार साल के बाद घर आए हैं. इनकी आपाजान ज़िन्दा होतीं......” कहते कहते रामअधीन के आंसू निकल आए और उसकी आवाज़ भर्रा गई.

मैं सन्नाटे में आ गया. मेरा सर चकराने लगा. क्या करूं क्या न करूं मुझे कुछ सुझाई नहीं पड़ रहा था. मेरी मां मर गई थी, मेरी आपाजान मुझे छोड़ कर चली गईं थीं. मेरे मुंह से एक चीख निकली और फिर मैं नहीं जानता क्या हुआ. जब आंख खुली, देखा, रामअधीन पलंग पर मुझे लिटा कर पंखा कर रहा है. पिता जी असमंजस में दूर खड़े हैं और मेरी नई माता जी उन्हें आदेश दे रही हैं—

“इस को हटाओ यहां से. मैं सौत के जवान लड़के के साथ नहीं रह सकती. दुनिया आखिर क्या कहेगी. जल्दी फ़ैसला करो. या मैं इस घर में रहूँगी या यह......बोलो...मुंह क्यों सी रखा है.”

पिता जी चुप थे. उनका धर्म संकट मुझसे नहीं देखा गया. मैं आंसू बहाता चारपाई से उठा. रामअधीन को गले से लगा लिया. दुखी सब भाई भाई हैं. यह भाईचारा तभी जाग उठता है जब सचमुच दोनों दुखी हों. फिर मैंने झुक कर नई मां को सलाम किया और पिता जी को सलाम कर धीरे धीरे जिधर से आया था उधर ही चल दिया. किसी ने भी मुझे नहीं रोका, किसी ने मुझे नहीं बुलाया. मैंने पीछे मुड़ कर देखा भी नहीं. चलते चलते मैंने वह ख़त निकाला. आपाजान को यह मेरी पहली और आखिरी चिट्ठी थी. मुझे क्या मालूम था कि मेरी चिट्ठी पाते ही वह दुनिया से चल देंगी और मुझे ख़बर भी नहीं होगी. चिट्ठी के सारे अक्षर वेदना से भरी एक कहानी बन गए और मैं पढ़ता गया और रोता गया.

इसी घर से मैं चार बरस पहले निकला था. उस समय जोश था, गुस्सा था, फुर्ती थी, लगन थी, इरादा था, बहुतों को मैंने रोता छोड़ा था, नीलम थी, कुंवर थी, आपा जान थीं ......और आज—चार बरस बाद—मेरी आंखों में आंसू थे, दिल में दर्द था, बहुतों की शिकायत थी, यादों की भरमार थी, [illegible] थी, न कुंवर थी और न आपाजान.

میں باہر نکل آیا۔ میرے پتا جی [illegible]
سہارے ایک پچیس برس کی استری کھڑی تھی اور بن بولے چلی جا رہی تھی۔ عجیب دھنا تھی اس عورت کی۔ انگ انگ سے بناوٹ ٹپکتی تھی۔ کسی بھی بھلے آدمی کو اس سے نفرت ہو جانا سوابھاوک تھا۔ میں نے تیز آنکھوں سے پتاجی کی طرف دیکھا اور پھر اس استری کی اور گھورا۔ پتا جی اس سے پرے کھسک گئے۔ انہیں میرے آنے سے تعجب سا ہوا، اس اچرج میں خوشی کی جگہ دکھ کی ریکھائیں جھلک رہی تھیں۔ وہ چپ رہے۔ میں بھی کیول گھورتا رہا۔

”آپ ہی کے لڑکے ہیں بہو جی، بڑے اچھے ہیں، چار سال کے بعد گھر آئے ہیں۔ ان کی آپا جان زندہ ہوتیں......“ کہتے کہتے رام ادھین کے آنسو نکل آئے اور اسکی آواز بھرا گئی۔

میں سناٹے میں آگیا۔ میرا سر چکرانے لگا۔ کیا کروں کیا نہ کروں مجھے کچھ سجھائی نہیں پڑ رہا تھا، میری ماں مرگئی تھی، میری آپاجان مجھے چھوڑ کر چلی گئی تھیں۔ میرے منھ سے ایک چیخ نکلی اور پھر میں نہیں جانتا کیا ہوا۔ جب آنکھ کھلی، دیکھا، رام ادھین پلنگ پر مجھے لٹا کر پنکھا کر رہا ہے۔ پتاجی اس اسمنجس میں دور کھڑے ہیں اور میری نئی ماتاجی انہیں آدیش دے رہی ہیں—

”اس کو ہٹاؤ یہاں سے۔ میں سوت کے جوان لڑکے کے ساتھ نہیں رہ سکتی۔ دنیا آخر کیا کہیگی۔ جلدی فیصلہ کرو۔ یا میں اس گھر میں رہونگی یا یہ...... بولو...... منھ کیوں سی رکھا ہے۔“

پتا جی چپ تھے۔ ان کا دھرم سنکٹ مجھ سے نہیں دیکھا گیا۔ میں آنسو بہاتا چارپائی سے اٹھا۔ رام ادھین کو گلے سے لگا لیا۔ دکھی سب بھائی بھائی ہیں۔ یہ بھائی چارا تبھی جاگ اٹھتا ہے جب سچ مچ دونوں دکھی ہوں۔ پھر میں نے جھک کر نئی ماں کو سلام کیا اور پتا جی کو سلام کر دھیرے دھیرے جدھر سے آیا تھا ادھر ہی چل دیا۔ کسی نے بھی مجھے نہیں روکا، کسی نے مجھے نہیں بلایا۔ میں نے مڑ کر دیکھا بھی نہیں۔ چلتے چلتے میں نے وہ خط نکالا۔ آپا جان کو یہ میری پہلی اور آخری چٹھی تھی۔ مجھے کیا معلوم تھا کہ میری چٹھی پاتے ہی وہ دنیا سے چل دیںگی اور مجھے خبر بھی نہیں ہوگی۔ چٹھی کے سارے اکشر ویدنا سے بھری ایک کہانی بن گئے اور میں پڑھتا گیا اور روتا گیا۔

اسی گھر سے میں چار برس پہلے نکلا تھا۔ اس سمے جوش تھا، غصہ تھا، پھرتی تھی، لگن تھی، ارادہ تھا، بہتوں کو میں نے روتا چھوڑا تھا، نیلم تھی، کنور تھی، آپا جان تھیں...... اور آج—چار برس بعد—میری آنکھوں میں آنسو تھے، دل میں درد تھا، بہتوں کی شکایت تھی، یادوں کی بھرمار تھی—نہ نیلم تھی، نہ کنور تھی اور نہ آپا جان۔

[illegible] थी. ऐसा लगा जैसे कोई इस में अन्दर रहता है. मेरी माँ के अलावा उनके कमरे में रहने की हिम्मत किसको हो सकती है. सारा सामान सजा रखा था. मालूम हुआ जैसे वह अभी अभी यहां से उठ कर कहीं बाहर गई हों. उनके गहने का बक्स अपनी जगह पर था, रेशमी कपड़े के बक्स कुछ हटे हुए थे. मुझे ऐसा अन्दाज़ा हुआ कि अभी अभी उन्होंने कपड़े बदले हैं. मैंने इतमिनान का सांस लिया. कमरे में इधर उधर चक्कर लगाया. बहुत सी यादें इस कमरे की मेरे मानस पटल पर अंकित हो गईं. मैं सोच रहा था कि आपाजान मुझे यहां देख कर चौंक पड़ेंगी. उन्हें बड़ा आश्चर्य होगा.........फिर एक विचार आया कि रामअधीन रोया क्यों, मुझे जवाब दिये बिना चला क्यों गया? मैंने शंका को दबाने की कोशिश की. हो सकता है कि उसका दिल नीलम और कुंवर की घटना बताते बताते भर आया हो और वह रो पड़ा हो. उद्गार के बहाव में हो सकता है उसने मुझे कुछ कहते सुना भी न हो. लेकिन वह चला क्यों गया? सनकी भी तो है वह. कौन जाने क्या मन में आ गई. मैं सोचता रहा. और कमरे में टहलता रहा. यकायक एक चिट्ठी मैंने फ़र्श पर पड़ी देखी, किसी ने सफ़ाई करते समय सैंत कर रखी यह चिट्ठी गिरा दी थी. लिखावट मेरी थी. मैंने उसे खोला और पढ़ने लगा. मैं पढ़ कर दुखी हो रहा था. मैंने यह चिट्ठी न जाने किस मुद्रा में लिखी थी. आपाजान को बहुत ताने सुनाये थे. इस चिट्ठी को पढ़ कर उन्हें जो दुख हुआ होगा उसका अनुमान मैं करने लगा. मैंने सोचा कि आपाजान इसे बचपना समझ कर टाल देंगी. मैं इसी उधेड़ बुन में खड़ा बार बार चिट्ठी पढ़ रहा था. आज न जाने क्यों इस चिट्ठी ने मुझे मोह लिया था. मैं आस पास की चीज़ों से बे ख़बर सा हो गया. पैरों की चाप ने यकायक मुझे चौंका दिया. मैंने अनुमान किया कि आपाजान आ रही हैं. जल्दी से मैंने चिट्ठी जेब में छुपा ली. आपाजान को चौंकाने की कोशिश में दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा. अभी दरवाज़े के क़रीब भी न पहुंचा था कि एक आवाज़ सुनाई दी—

"यह तुम्हारा कमरा है. गहने तुम्हारे इसमें हैं, कपड़े भी इसी में बन्द हैं. सन्दूकों में देख लो. ज़रूरत होगी तो कपड़े और आ जायेंगे." यह मेरे पिता जी की आवाज़ थी.

मैं इन वाक्यों को मिला कर पूरा अर्थ समझने की कोशिश करते हुए आगे बढ़ रहा था. और सब को विस्मित करने का विचार मेरे दिमाग़ में घूम रहा था. यकायक दरवाज़े पर एक चीख सुनाई दी. ऐसा लगा जैसे कोई अन्दर आ रहा हो और मुझे यहां देख कर चीख कर भागा हो. एक औरत तेज़ आवाज़ से हांप हांप कर कह रही थी—

"यह कौन चोर है मेरे कमरे में. पकड़ लो इसे, कमीना, घर अकेला देख कर घुस आया है........"

صفائی [illegible] اس میں ضرور رہتا ہے۔ میری ماں کے علاوہ ان کے کمرے میں رہنے کی ہمت کس کو ہو سکتی ہے۔ سارا سامان سجا رکھا تھا۔ معلوم ہوا جیسے وہ ابھی ابھی یہاں سے اٹھ کر باہر گئی ہوں۔ ان کے گہنے کا بکس اپنی جگہ پر تھا، ریشمی کپڑے کے بکس کچھ ہٹے ہوئے تھے۔ مجھے ایسا اندازہ ہوا کہ ابھی ابھی انہوں نے کپڑے بدلے ہیں۔ میں نے اطمینان کا سانس لیا۔ کمرے میں ادھر ادھر چکر لگایا۔ بہت سی یادیں اس کمرے کی میرے مانس پٹل پر انکت ہو گئیں۔ میں سوچ رہا تھا کہ آپا جان مجھے یہاں دیکھ کر چونک پڑیں گی۔ انہیں بڑا آشچریہ ہوگا......پھر ایک وچار آیا کہ رام ادھین رویا کیوں' مجھے جواب دئے بنا چلا کیوں گیا؟ میں نے شنکا کو دبانے کی کوشش کی۔ ہو سکتا ہے کہ اس کا دل نیلم اور کنور کی گھٹنا بتاتے بتاتے بھر آیا ہو اور وہ رو پڑا ہو۔ اُدگار کے بہاؤ میں ہو سکتا ہے اس نے مجھے کچھ کہتے سنا بھی نہ ہو۔ لیکن وہ چلا کیوں گیا؟ سنکی بھی تو ہے وہ۔ کون جانے کیا من میں آ گئی۔ میں سوچتا رہا اور کمرے میں ٹہلتا رہا۔ یکایک ایک چٹھی میں نے فرش پر پڑی دیکھی۔ کسی نے صفائی کرتے سمے سینت کر رکھی یہ چٹھی گرا دی تھی۔ لکھاوٹ میری تھی۔ میں نے اسے کھولا۔ اور پڑھنے لگا۔ میں پڑھ کر دکھی ہو رہا تھا۔ میں نے یہ چٹھی نہ جانے کس مدرا میں لکھی تھی۔ آپا جان کو بہت طعنے سنائے تھے۔ اس چٹھی کو پڑھ کر انہیں جو دکھ ہوا ہوگا اس کا انومان میں کرنے لگا۔ میں نے سوچا کہ آپا جان اسے بچپنا سمجھ کر ٹال دیں گی۔ میں اسی ادھیڑ بن میں کھڑا بار بار چٹھی پڑھ رہا تھا۔ آج نہ جانے کیوں اس چٹھی نے مجھے موہ لیا تھا۔ میں اس پاس کی چیزوں سے بے خبر سا ہو گیا۔ پیروں کی چاپ نے یکایک مجھے چونکا دیا۔ میں نے انومان کیا کہ آپا جان آ رہی ہیں۔ جلدی سے میں نے چٹھی جیب میں چھپا لی۔ آپا جان کو چونکانے کی کوشش میں دروازے کی طرف بڑھا۔ ابھی دروازے کے قریب بھی نہ پہنچا تھا کہ ایک آواز سنائی دی—

"یہ تمہارا کمرہ ہے۔ گہنے تمہارے اس میں ہیں' کپڑے بھی اسی میں بند ہیں۔ صندوقوں میں دیکھ لو۔ ضرورت ہوگی تو کپڑے اور آ جائیں گے۔" یہ میرے پتا جی کی آواز تھی۔

میں ان واکیوں کو ملا کر پورا ارتھ سمجھنے کی کوشش کرتے ہوئے آگے بڑھ رہا تھا۔ اور سب کو وسمت کرنے کا وچار میرے مستشک میں گھوم رہا تھا۔ یکایک دروازے پر ایک چیخ سنائی دی۔ ایسا لگا جیسے کوئی اندر آ رہا ہو اور مجھے یہاں دیکھ کر چیخ کر بھاگا ہو۔ ایک عورت تیز آواز سے ہانپ ہانپ کر کہہ رہی تھی—

[illegible] میں۔ پکڑ لو اسے کمینہ [illegible]

[illegible] है और न [illegible] हमारा [illegible] है फिर भी हमसे [illegible] है, [illegible] है. यही तो इस युग की रीति है. मैंने फिर भी उसका कुछ नहीं पूछा. झट से बोला—“कुंवर का क्या हाल है?”

“आपके जाते ही वह बे क़ाबू हो गई. सिरी आपने ही बनवा कर दी थी. जब आप चले गए मैं सिरी पिलाने गया, वह भड़क उठी. सिरी को उसने मुंह नहीं लगाया. दाना भी उसने नहीं खाया. कई दिन तक भूकी और प्यासी बंधी रही. एक रोज़ रस्सी तुड़ा कर खुद ही भाग गई. बहुत कोशिश हुई पर किसी के क़ब्ज़े में नहीं आई. केवल शाम को घर आती थी. चारों तरफ़ चक्कर लगाती थी और ज़ोर ज़ोर से हिनहिनाती थी. बड़े भैया के कहने पर आप की आपा जान ने एक दिन खिड़की से उसे चुमकारा. वह पास आ गई. जो घोड़ी किसी के पकड़ में न आई, जिस पर हाथ रखते बड़े बड़े सवार कांपते थे, वह आपाजान के बग़ल में खड़ी हो गई. सचमुच कहता हूँ वह उस समय रो रही थी. आपाजान को भी आप की याद हो आई, कुंवर को पकड़ लिया गया. तीन चार रोज़ में वह बिक गई. जाते जाते हिनहिना रही थी और मुड़ मुड़ कर देखती जाती थी. आपाजान बाद में बहुत रोईं लेकिन जो कुछ होना था वह हो कर रहा.”

“कुंवर बिक गई, मेरी हर चीज़ से नफ़रत है.” मैंने ठंडी सांस भरते हुए कहा.

कुंवर एक ज़िन्दा चित्र बन कर मेरे सामने खड़ी हो गई. बीते दिनों की घटनायें एक के बाद दूसरी दिमाग़ में घूमने लगीं. कुंवर मेरे सामने नहीं थी. मुझे उसका पता मालूम नहीं था. मैं उसके पास नहीं जा सकता था, प्यार से उसके अयाल को सहला नहीं सकता था और स्नेह को ज़ाहिर करने के लिये वह आँखें झुका कर अपना सर मेरे कपड़ों से नहीं रगड़ सकती थी. फिर भी हम दोनों एक साथ थे. कुछ क्षणों के लिये उसकी वेदना से भरी हिनहिनाहट मुझे सुनाई देने लगी और मैं कुंवर को उसी दुनिया में तसल्ली देने लगा.

“क़िस्मत मर गई, कुंवर बिक गई.” मैंने एक लम्बी ठंडी सांस ली—“आपाजान कहाँ हैं?”

रामअधीन रो पड़ा. आंसू के दो क़तरे उसकी आँखों से निकल कर गालों पर बह चले. मैं कुछ नहीं समझा. मैंने फिर पूछा—“आपाजान कहाँ हैं, क्या कहीं घूमने गई हैं?”

रामअधीन सवाल करते करते वहाँ से चला गया.

मैं व्याकुल था ही दिल की धड़कन और तेज़ हो गई. दूर से मैं उसे जाते हुए देखता रहा. [illegible] में मैं कुछ [illegible] की कोशिश करने लगा. मैं कुछ देर वहीं खड़ा रहा. [illegible] वहां काफ़ी

اس کے ساتھ رہتا ہوں [illegible] ہیں، وہ ہمارا ان داتا ہے پھر بھی ہم سے چھوٹا ہے' یہی ہے یہی تو اس یگ کی ریتی ہے۔ میں نے پھر بھی اس کا کچھ نہیں پوچھا۔ جھٹ سے بولا — " کنور کا کیا حال ہے؟"

" آپکے جاتے ہی وہ بے قابو ہو گئی۔ سری آپ ہی بنوا کر دی تھی۔ جب آپ چلے گئے میں سری پلانے گیا۔ وہ بھڑک اٹھی۔ سری کو اس نے منھ نہیں لگایا۔ دانا بھی اس نے نہیں کھایا۔ کئی دن تک بھوکی اور پیاسی بندھی رہی۔ ایک روز رسی تڑا کر خود ہی بھاگ گئی۔ بہت کوشش ہوئی پر کسی کے قبضے میں نہیں آئی۔ کیول شام کو گھر آتی تھی' چاروں طرف چکر لگاتی تھی اور زور زور سے ہنہناتی تھی۔ بڑے بھیا کے کہنے پر آپکی آپا جان نے ایک دن کھڑکی سے اسے چمکارا۔ وہ پاس آ گئی۔ جو گھوڑی کسی کے پکڑ میں نہ آئی' جس پر ہاتھ رکھتے بڑے بڑے سوار کانپتے تھے' وہ آپا جان کے بغل میں کھڑی ہوگئی۔ سچ میں کہتا ہوں وہ اس سمے رو رہی تھی۔ آپا جان کو بھی آپکی یاد ہو آئی' کنور کو پکڑ لیا گیا۔ تین چار روز میں وہ بک گئی۔ جاتے جاتے ہنہنا رہی تھی اور مڑ مڑ کر دیکھتی جاتی تھی۔ آپا جان بعد میں بہت روئیں لیکن جو کچھ ہونا تھا وہ ہو کر رہا۔"

" کنور بک گئی' میری ہر چیز سے نفرت ہے۔" میں نے ٹھنڈی سانس بھرتے ہوئے کہا۔

کنور ایک زندہ چتر بن کر میرے سامنے کھڑی ہوگئی۔ بیتے دنوں کی گھٹنائیں ایک کے بعد دوسری دماغ میں گھومنے لگیں۔ کنور میرے سامنے نہیں تھی۔ مجھے اس کا پتہ معلوم نہیں تھا۔ میں اس کے پاس نہیں جا سکتا تھا' پیار سے اس کے ایال کو سہلا نہیں سکتا تھا اور اسنیہ کو ظاہر کرنے کے لئے وہ آنکھیں جھکا کر اپنا سر میرے کپڑوں سے نہیں رگڑ سکتی تھی۔ پھر بھی ہم دونوں ایک ساتھ تھے۔ کچھ چھنوں کے لئے اس کی ویدنا سے بھری ہنہناہٹ مجھے سنائی دینے لگی اور میں کنور کو اسی دنیا میں تسلی دینے لگا۔

" قسمت مر گئی' کنور بک گئی۔" میں نے ایک لمبی ٹھنڈی سانس لی — " آپا جان کہاں ہیں؟"

رام ادھین رو پڑا۔ آنسو کے دو قطرے اسکی آنکھوں سے نکل کر گالوں پر بہ چلے۔ میں کچھ نہیں سمجھا۔ میں نے پھر پوچھا — " آپا جان کہاں ہیں' کیا کہیں گھومنے گئیں ہیں؟"

رام ادھین سوال کرتے کرتے وہاں سے چلا گیا۔

میں بیاکل تھا ہی دل کی دھڑکن اور تیز ہوگئی۔ حیرت سے میں اسے جاتے ہوئے دیکھتا رہا۔ [illegible] میں میں کچھ اٹکلنے کی کوشش کرنے لگا۔ میں کچھ دیر وہیں کھڑا رہا' پھر بھاگتا ہوا اپنی ماں کے کمرے میں گیا۔ وہاں گئی

"नीलम को सांप ने डस लिया!"

"हां, नीलम को सांप ने डस लिया!" मैंने इस वाक्य को इस तरह दोहराया जैसे मैं दाढ़ें मार कर रो पड़ूंगा. मैं रोया नहीं.

"किस तरह, कहां, किस सांप ने?" मैंने अपने को ठंडा करते हुए कहा.

"बड़े कमरे में एक सांप रहता था न. आप को याद तो होगा. आपने ही उसे दूध पिलाना शुरू किया था. मैंने तो कई बार मना किया. खतरनाक जनावर है. कौन भरोसा. लेकिन आप नहीं माने थे. काले को दूध पिलाने से कहीं उसका कालापन चला जाता है. आप के बाद आपाजान भी रोज़ उसको दूध भिजवाती थीं...........उसी कमरे में नीलम ने बच्चा दिया था. बड़े सुन्दर से बच्चे थे. मैंने भी एक पालने की इच्छा की थी. भला करे उस सांप का ...."

अगर मैं पूरी तरह आपे में न आ गया होता तो रामअधीन की बात को ठंडे दिल से नहीं सुन सकता था और उसे खरी खरी सुना भी देता. लेकिन मैंने पूछा—"सांप ने इस से पहले तो किसी को नहीं डसा. तुम्हारे पैर के नीचे भी कई बार पड़ गया था. वह तो घर का पालतू हो गया था. उसने नीलम को फिर कैसे डस लिया."

"उसे पछतावा तो बहुत हुआ. उसकी फुफकार कमरे में कई दिन तक सुनी गई. वह भैंसे के समान हांपता था. हम सब डर गए थे. तीन चार दिन तक ऐसा ही हुआ. मेरा विचार है कि वह रो रहा था. उसके बाद आज तक वह दिखाई नहीं पड़ा. जहां रोज़ दिखाई पड़ता था अब सालों से सूरत नहीं दिखाई·········जान बूझ कर तो उसने काटा नहीं होगा. कुछ न कुछ ग़लती हो गई है. उसका दूध भी तो बन्द हो गया था······"

रामअधीन अपनी कहे जा रहा था. और मैं कहीं और खो गया था. इनसानों की दुनिया से अलग जानवरों की दुनिया में—नीलम, सांप, कुंवर, सब मेरे सामने लाखों की तादाद में इकट्ठा हो गए. यह मानव के दुख के साथ हैं, उसके सुख के साथ हैं. वह ग़लती पर रोते हैं, सर पटकते हैं······पर इनसान!

रामअधीन मेरे सामने खड़ा था. उसकी कमाई से ही इस घर की रौनक़ है. पर उसका कोई घर हमने बनने नहीं दिया. वह बे खेत किसान है, इस घर का जन्म जन्म से हलवाह. उसकी कमाई खा कर हम सब जवान हुए हैं. पर-उसकी जवानी और बुढ़ापे में कोई फ़र्क़ नहीं हुआ. जैसा वह पैदा हुआ था वैसा ही आज भी है—हाड़ मांस का ठठ्ठर. वही रामअधीन मेरे सामने खड़ा था. मैं न कभी

"نیلم کو سانپ نے ڈس لیا"

"ہاں، نیلم کو سانپ نے ڈس لیا!" میں نے اِس واکیہ کو اِس طرح دہرایا جیسے میں دھاڑیں مار کر رو پڑوں گا۔ میں رویا نہیں۔

"کس طرح، کہاں، کس سانپ نے؟" میں نے اپنے کو ٹھنڈا کرتے ہوئے کہا۔

"بڑے کمرے میں ایک سانپ رہتا تھا نہ۔ آپکو یاد تو ہوگا۔ آپ نے ہی اُسے دودھ پلانا شروع کیا تھا۔ میں نے تو کئی بار منع کیا۔ خطرناک جانور ہے۔ کون بھروسہ۔ لیکن آپ نہیں مانے تھے۔ کالے کو دودھ پلانے سے کہیں اُس کا کالا پن چلا جاتا ہے۔ آپکے بعد آپا جان بھی روز اُس کو دودھ بھجواتی تھیں۔ .... اُسی کمرے میں نیلم نے بچہ دیا تھا۔ بڑے سندر سے بچے تھے۔ میں نے بھی ایک پالنے کی اچھا کی تھی۔ بھلا کرے اُس سانپ کا..........."

اگر میں پوری طرح آپے میں نہ آ گیا ہوتا تو رام ادھین کی بات کو ٹھنڈے دل سے نہیں سن سکتا تھا اور اُسے کھری کھری سنا بھی دیتا۔ لیکن میں نے پوچھا—"سانپ نے اِس سے پہلے تو کسی کو نہیں ڈسا۔ تمہارے پیر کے نیچے بھی کئی بار پڑ گیا تھا۔ وہ تو گھر کا پالتو ہو گیا تھا۔ اُس نے نیلم کو پھر کیسے ڈس لیا۔"

"اُسے پچھتاوا تو بہت ہوا۔ اُسکی پھونکار کمرے میں کئی دن تک سنی گئی۔ وہ بھینسے کے سمان ہانپتا تھا۔ ہم سب ڈر گئے تھے۔ تین چار دن تک ایسا ہی ہوا۔ میرا وچار ہے کہ وہ رو رہا تھا۔ اُس کے بعد آج تک وہ دکھائی نہیں پڑا۔ جہاں روز دکھائی پڑتا تھا اب سالوں سے صورت نہیں دکھائی.................جان بوجھکر تو اُس نے کاٹا نہیں ہوگا۔ کچھ نہ کچھ غلطی ہو گئی ہے۔ اُس کا دودھ بھی تو بند ہو گیا تھا......"

رام ادھین اپنی کہے جا رہا تھا۔ اور میں کہیں اور کھو گیا تھا۔ انسانوں کی دنیا سے الگ جانوروں کی دنیا میں—نیلم، سانپ، کنور، سب میرے سامنے لاکھوں کی تعداد میں اکٹھا ہو گئے۔ یہ مانو کے دکھ کے ساتھی ہیں، اُس کے سکھ کے ساتھی ہیں۔ یہ غلطی پر روتے ہیں، سر پٹکتے ہیں..........پر انسان!

رام ادھین میرے سامنے کھڑا تھا۔ اُسکی کمائی سے ہی اِس گھر کی رونق ہے پر اُس کا کوئی گھر ہم نے بننے نہیں دیا۔ وہ بے کھیت کسان ہے، اِس گھر کا جنم جنم سے ہلواہا۔ اُسکی کمائی کھا کر ہم سب جوان ہوئے ہیں۔ اُسکی جوانی اور بڑھاپے میں کوئی فرق نہیں ہوا۔ جیسا وہ پیدا ہوا تھا ویسا ہی آج بھی ہے—ہاڑ ماس [illegible] میرے سامنے کھڑا تھا۔ میں نہ کبھی

[illegible]

[illegible] समझेंगी. या मेरा मुंह चूमेंगी—
...बुरा लगता है. सारा मुंह खराब हो जाता है. पहले मेरी उनकी इस बारे में झड़प हो चुकी थी. मैंने कहा —"अब मैं बच्चा नहीं हूं जो तुम इस तरह मुंह चूम ली हो." और उन्होंने कहा था—"वह दिन तो आया कि ...लाल अपने को जवान समझने लगा. तू कितना ही ...हो जाय, बूढ़ा भी हो जाय, तो भी मेरे लिये बच्चा ही ...गा." इस हठ धर्मी का कोई उत्तर नहीं है—बार बार ...ती से लगायेंगी, मैं अब की बार मुंह चूमने पर एतराज़ ...करूंगा. मैं उनकी तरफ़ देखूंगा, उनकी आंखों में आंसू ..., मेरे देखते ही आंखों ही आंखों उन्हें वह पी जायेंगी.

मुस्करा देंगी, फिर मुझे छाती से लगायेंगी और ...गी—"खाने को नहीं मिलता क्या, बहुत दुबला हुआ है." और मैं कहूंगा—"यह तुम्हारी आदत है आपाजान ...कितना ही मोटा हो जाऊं पर तुम्हारी नज़र में सदा ...ला ही रहूंगा." और फिर हम दोनों हंस देंगे. आपाजान ...घर को सर पर उठा लेंगी. आज वह दुनिया की सारी ...ें मुझे खिला देना चाहेंगी.

हर क़दम पर एक नया चित्र सामने खिंचता चला जा ...था,

पर वह सारा सपना था. घर में सन्नाटा था. नीलम ...थी, कुंवर नहीं थी, आपाजान भी नहीं थीं.

मेरे दिमाग़ में हथौड़े चलने लगे, दिल की धड़कन तेज़ ...गई. चेहरे पर एक उदासी छाने लगी. मैंने आवाज़ें ...ाईं. नीलम को पुकारा, कुंवर को पुकारा, हर छन की ...ायक मां को पुकारा. कोई जवाब नहीं मिला. जैसे मैं ...मशान में खड़ा था. पर यह श्मशान नहीं था. यह मेरा ...था, मेरी मां का घर. यहां मैंने जीवन के क़ीमती दिन ...ताये थे. मैं न जाने किस सोच में खो गया. दिल क़ाबू ...आया तो देखा रामअधीन सामने खड़ा है. मैंने बरबस पहला प्रश्न यही किया—

"नीलम कहां है, उसकी क्या हालत है ?"

वह भौचक्का रह गया. मुझे अपनी मां के बारे में पूछना ...हिये था, घर वालों के बारे में पूछना चाहिये था, ...मअधीन की ख़ैरियत पूछनी चाहिये थी, इस भयानक ...नाटे के सम्बन्ध में पूछ ताछ करनी चाहिये थी. पर मैंने ...वल नीलम के विषय में ही पूछा. रामअधीन को मेरे ...व्यवहार से अचम्भा हुआ. उस ने तेज़ निगाहों से मुझे घूर ...र फिर आंखें नीची कर लीं. मैं उतावला हो रहा था. मुझे ...र बहुत से सवालों का उत्तर चाहिये था. मैंने फिर ...ा—

"[illegible] है, [illegible] क्यों नहीं."

رہی ہونگی" وہ تعجب سے کبھی میرا منہ دیکھیں گی پھر لپک کر سینے سے چمٹا لیں گی۔ یا میرا منہ چومیں گی—مجھے برا برا لگتا ہے۔ سارا منہ خراب ہو جاتا ہے۔ پہلے بھی میری اُن کی اِس بارے میں جھڑپ ہو چکی تھی۔ میں نے کہا تھا—"اب میں بچہ نہیں ہوں جو تم اِس طرح سے منہ چوم لیتی ہو۔" اور اُنہوں نے کہا تھا—"وہ دن تو آیا کہ میرا لال اپنے کو جوان سمجھنے لگا۔ تو کتنا ہی بڑا ہو جائے، بوڑھا بھی ہو جائے تو بھی میرے لئے بچہ ہی رہے گا۔" اِس ہٹ دھرمی کا کوئی اُتر نہیں ہے—بار بار چھاتی سے لگائیں گی۔ میں اب کی بار منہ چومنے پر اعتراض نہیں کروں گا۔ میں اُن کی طرف دیکھوں گا۔ اُن کی آنکھوں میں آنسو ہونگے۔ میرے دیکھتے ہی آنکھوں ہی آنکھوں اُنہیں وہ پی جائیں گی۔ وہ مسکرا دیں گی۔ پھر مجھے چھاتی سے لگائیں گی اور کہیں گی—"کھانے کو نہیں ملتا کیا۔ بہت دبلا ہوا جا رہا ہے۔" اور میں کہوں گا—"یہ تمہاری عادت ہے آپا جان، میں کتنا ہی موٹا ہو جاؤں پر تمہاری نظر میں سدا دبلا ہی رہوں گا۔" اور پھر ہم دونوں ہنس دیں گے۔ آپا جان سارے گھر کو سر پر اٹھالیں گی۔ آج وہ دنیا کی ساری چیزیں مجھے کھلا دینا چاہیں گی۔

ہر قدم پر ایک نیا چتر سامنے کھنچتا چلا جا رہا تھا۔

پر یہ سارا سپنا تھا۔ گھر میں سناٹا تھا۔ نیلم نہیں تھی، کنور نہیں تھی، آپا جان بھی نہیں تھیں۔

میرے دماغ میں ہتھوڑے چلنے لگے، دل کی دھڑکن تیز ہوگئی، چہرے پر ایک اداسی چھانے لگی۔ میں نے آوازیں لگائیں۔ نیلم کو پکارا، کنور کو پکارا، ہر چھن کی سہایک ماں کو پکارا۔ کوئی جواب نہیں ملا۔ جیسے میں شمشان میں کھڑا تھا۔ پر یہ شمشان نہیں تھا۔ یہ میرا گھر تھا، میری ماں کا گھر۔ یہاں میں نے جیون کے قیمتی دن بتائے تھے۔ میں نہ جانے کس سوچ میں کھو گیا۔ دل قابو میں آیا تو دیکھا رام ادھین سامنے کھڑا ہے۔ میں نے اُلجھن میں پہلا پرشن یہی کیا—

"نیلم کہاں ہے، اُس کی کیا حالت ہے؟"

وہ بھوچکا رہ گیا۔ مجھے اپنی ماں کے بارے میں پوچھنا چاہئے تھا، گھر والوں کے بارے میں پوچھنا چاہئے تھا، رام ادھین کی خیریت پوچھنی چاہئے تھی، اس بھیانک سناٹے کے سمبندھ میں پوچھ تاچھ کرنی چاہئے تھی۔ پر میں نے کیول نیلم کے وشے میں ہی پوچھا۔ رام ادھین کو میرے بیوہار سے اچنبھا ہوا۔ اُس نے تیز نگاہوں سے مجھے گھورا اور پھر آنکھیں نیچی کرلیں۔ میں اُتاولا ہو رہا تھا۔ مجھے اور بہت سے سوالوں کا اُتر چاہئے تھا۔ میں نے پھر پوچھا—

"نیلم کہاں ہے، چپ کیوں کھڑے ہو، بولتے کیوں نہیں۔"

भी मैं था. कुंवर के सम्बन्ध में सोचते सोचते मुझे चार बरस पुरानी घटना याद पड़ गई—मैं धर्म द्रोही था. समाज द्रोही था. मैं नीच था क्योंकि मैं 'नीचों' को अपने बराबर का समझता था. मैं नापाक था क्योंकि मैंने अछूत के घर का पक्का खाना खाया था. मैं कुल का कलंक था क्योंकि मैं "नीचों" के बीच में रहता था. मेरे जन्म से मेरे पिता लज्जित थे क्योंकि मैं धर्म के ढोंगा पन्थियों की सख्त आलोचना करता था. मैं निकम्मा था क्योंकि मैं किसी पर अत्याचार नहीं कर सकता था क्योंकि मैं झूट बोल कर, घूस दे कर अफ़सरों की जूती चाट कर किसानों पर रोब नहीं जमा सकता था. और यही बातें मेरा साहस थीं, मेरा आदर्श थीं. लेकिन पिता जी ! एक ज़मींदार थे, केवल एक ज़मींदार, सैकड़ों "नीच असामियों" के स्वामी. मैं उनका बेटा था और वह मेरे पिता. पर हमारे विचार अलग अलग थे, राहें अलग अलग थीं, जीवन के आदर्श अलग अलग थे. जब भी विचार और नाते की टक्कर होती है, अगर वह सही अर्थों में टक्कर होती है तो सदा नाते की हार होती है. नाता भी एक विचार ही है. जब तक देव समझो तो देव नहीं तो पत्थर ! मेरे पिता ने मुझे घर से निकाल दिया. मैं घर छोड़ कर जा रहा था. कुंवर थान पर बंधी थी. भाशाएं चाहे अलग अलग हों पर भावना वह भाशा है जिसे हर मानव समझ लेता है, जानवर भी समझ लेते हैं, शायद मनुश्य से अधिक उन्हें भावना का आदर है. मुझे गुस्से में जाने देख कर कुंवर सब कुछ समझ गई थी वह ज़ोर ज़ोर से हिनहिनाने लगी थी, वह मुझे पुकार रही थी, गुस्से का कारन मालूम करना चाहती थी. मैंने ध्यान नहीं दिया. उसने टाप मारने शुरू कर दिये, यह इस बात की मांग थी कि मुझे सारी घटना उसे समझानी चाहिये. मैं आवेश में था, मुझे उस समय किसी बात का ख्याल नहीं था. कोमल भावनायें दब गईं थीं और क्रोध की जीत हो गई थी. मैं उसे हिनहिनाता, टाप मारता छोड़ कर चला आया था. उसने मुझे क्या समझा होगा ? आज वह मुझ से शिकायत करेगी.

नीलम की भौंक और कुंवर की हिनहिनाहट सुन कर आपाजान अपने कमरे से निकल आयेंगी. मां भी कितना प्यारा शब्द है. दुख में साथ, मुसीबत में सहारा देने वाला. पर इस सहायक को बहुत लोग भूल जाते हैं लेकिन मां ! कभी नहीं भूलती. मुझे विश्वास था कि मेरी मां मेरी याद में पहरों रोई होगी. मैं ही उसका एकलौता बेटा हूँ. जाते ही शिकायत का पिटारा खोल कर कर बैठ जायगी. ऐसा कोई मां नहीं करती. वह तो शिकायत को खून के घूंट पी जाने वाली होती हैं. मेरी मां ऐसा कैसे कर सकती है नहीं, वह आवाज़ पाते ही बाहर आयेंगी. नीलम मेरे साथ खेल

بھی میں تھا ۔ کنور کے سمبندھ میں سوچتے سوچتے مجھے چار برس پرانی گھٹنا یاد پڑ گئی — میں دھرم دروھی تھا' سماج دروھی تھا. میں نیچ تھا کیونکہ میں 'نیچوں' کو اپنے برابر کا سمجھتا تھا ۔ میں ناپاک تھا کیونکہ میں نے اچھوت کے گھر کا پکا کھانا کھایا تھا ۔ میں کل کا کلنک تھا کیونکہ میں "نیچوں" کے بیچ میں رہتا تھا ۔ میرے جنم سے میرے پتا لجت تھے کیونکہ میں دھرم کے ڈھونگا پنتھیوں کی سخت آلوچنا کرتا تھا ۔ میں نکما تھا کیونکہ میں کسی پر اتیاچار نہیں کرسکتا تھا ۔ میں ناکارا تھا کیونکہ میں جھوٹ بول کر' گھوس دے کر افسروں کی جوتی چاٹ کر کسانوں پر رعب نہیں جما سکتا تھا ۔ اور یہی باتیں میرا ساہس تھیں' میرا آدرش تھیں ۔ لیکن پتا جی ! ایک زمیندار تھے' کیول ایک زمیندار' سیکڑوں "نیچ آسامیوں" کے سوامی ۔ میں اُن کا بیٹا تھا اور وہ میرے پتا. پر ہمارے وچار الگ الگ تھے' راہیں الگ الگ تھیں' جیون کے آدرش الگ الگ تھے. جب بھی وچار اور ناتے کی ٹکر ہوتی ہے' اگر وہ صحیح ارتھوں میں ٹکر ہوتی ہے تو سدا ناتے کی ہار ہوتی ہے. ناتا بھی ایک وچار ہی ہے ۔ جب تک دیو سمجھو تو دیو نہیں پتھر ! میرے پتا نے مجھے گھر سے نکال دیا. میں گھر چھوڑ کر جا رہا تھا ۔ کنور تھان پر بندھی تھی ۔ بھاشائیں چاہے الگ الگ ہوں پر بھاونا وہ بھاشا ہے جسے ہر مانو سمجھ لیتا ہے' جانور بھی سمجھ لیتے ہیں' شائد منش سے ادھک اُنہیں بھاونا کا آدر ہے. مجھے غصے میں جاتے دیکھکر کنور سب کچھ سمجھ گئی تھی. وہ زور زور سے ہنہنانے لگی تھی' وہ مجھے پکار رہی تھی' غصے کا کارن معلوم کرنا چاہتی تھی ۔ میں نے دھیان نہیں دیا ۔ اُس نے ٹاپ مارنے شروع کردئیے. یہ اِس بات کی مانگ تھی کہ مجھے ساری گھٹنا اُسے سمجھانی چاہئیے. میں آویش میں تھا' مجھے اُس سمے کسی بات کا خیال نہیں تھا. کومل بھاونائیں دب گئیں تھیں اور کرودھ کی جیت ہوگئی تھی ۔ میں اُسے ہنہناتا' ٹاپ مارتا چھوڑ کر چلا آیا تھا ۔ اُس نے مجھے کیا سمجھا ہوگا ؟ آج وہ مجھسے شکایت کرے گی ۔

نیلم کی بھونک اور کنور کی ہنہناہٹ سن کر آپا جان اپنے کمرے سے نکل آئیں گی ۔ ماں بھی کتنا پیارا شبد ہے ۔ دکھ میں ساتھ' مصیبت میں سہارا دینے والا ۔ پر اِس سہایک کو بہت لوگ بھول جاتے ہیں ۔ لیکن ماں ! کبھی نہیں بھولتی ۔ مجھے وشواس تھا کہ میری ماں میری یاد میں پہروں روئی ہوگی ۔ میں ہی اُس کا اکلوتا بیٹا ہوں. جاتے ہی شکایت کا پٹارہ کھول کر بیٹھ جائے گی. ایسا کوئی ماں نہیں کرتی. وہ شکایت کو خون کے گھونٹ پی جانے والی ہوتی ہیں. میری ماں ایسا کیسے کرسکتی ہے. نہیں' وہ آواز پاتے ہی باہر آئیں گی. نیلم میرے ساتھ کھیل

चार बरस बाद

(मुजीब रिज़वी)

मैं खिड़की की तरफ़ से घर में घुसा. भयानक सन्नाटा छाया हुआ था. कोई घर में नहीं था. नीलम नहीं थी, कुंवर नहीं थी, आपाजान भी नहीं थीं—बिलकुल सन्नाटा था. आदम न आदमज़ाद. मैं भौंचक्का सा रह गया. चार बरस बाद मैं घर गया था—जहां मैं पैदा हुआ था, बढ़ा था, खेला था. जहां की धूल मेरे रोएं रोएं में मली हुई थी. घर जाने से इनसान खुश क्यों होता है मैं नहीं जानता. जहां आदमी रहने लगे वहीं घर है, वहीं सब कुछ है. परन्तु अपने जन्मस्थान को जाते समय जो खुशी होती है वह दूसरी जगह जाते समय क्यों नहीं? मेरा दिल गद गद था. मैं फूला नहीं समा रहा था. मैं अपने घर जा रहा था. अपनी मां से मिलने. नीलम से. कुंवर से भेंट करने. मुझे इन सब की यादें सदा आती रहती थीं लेकिन इस समय न जाने क्यों याद ने कौतूहलता पैदा कर के मेरे मन में बेचैनी पैदा कर दी थी. मैं चाहता था कि ज़मीन खिंच जाय और मैं तुरन्त घर पहुंच जाऊं. रास्ते भर मैं तरह तरह के सपने देखता जा रहा था. आशा और ताज्जुब के हज़ारों रंगीन महल मैंने बना डाले थे. मैं सोच रहा था—घर पहुंच कर चुपके से खिड़की के रास्ते अन्दर घुस जाऊंगा. अन्दर पहुंचते ही नीलम की भौंक शुरू हो जायगी. वह फटी फटी आंखों से मेरी तरफ़ देखेगी और रह रह कर भौंक पड़ेगी. ठहरेगी, चारों तरफ़ चक्कर लगायेगी और फिर भौंकेगी. मैं कहूंगा—"नीलम, नीलम, पहचाना नहीं तूने. मैं हूं, अरे मैं हूं." वह रुक कर जैसे मेरी बात सुनने और समझने की कोशिश करेगी, मैं चुमकारूंगा. फिर वह मेरे पास आयगी, पर डरते डरते, सहमे सहमे और बीच बीच में भौंकते हुए. वह बहुत ही नज़दीक आ जायगी. पूंछ फटकने लगेगी. मेरा पैर चाटने लगेगी. वह मुझे पहचान जायगी. मैं उसकी तरफ़ देखूंगा. उसकी आंखों में आंसू होंगे, शिकायत के आंसू. मैं कहूंगा—"बिगड़ गई पगली, मैं अब तुझे अकेला नहीं छोड़ूंगा, साथ ले चलूंगा." वह उछल पड़ेगी. अपने दोनों पैर मेरे ऊपर रख कर मेरे हाथ चाटने की कोशिश करेगी—नीलम की भौंक सुनकर कुंवर ज़ोर ज़ोर से हिनहिनायगी. मैं आवाज़ दूंगा—"कुंवर, कुंवर." और कुंवर टाप मारना शुरू कर देगी. वह मेरी आवाज़ पहचान जायगी. वह मुझे कभी नहीं भूल सकती. मैंने बचपन से उसे पाला था. उसको रोटियां खिलाई थीं, उसे दाना खिलाया था. उसका मालिक भी मैं था, सवार भी मैं था और साईस

چار برس بعد

(مجیب رضوی)

میں کھڑکی کی طرف سے گھر میں گھسا . بھیانک سناٹا چھایا ہوا تھا . کوئی گھر میں نہیں تھا . نیلم نہیں تھی، کنور نہیں تھی، آپا جان بھی نہیں تھیں— بالکل سناٹا تھا. آدم نہ آدمزاد . میں بھونچکا سا رہ گیا . چار برس بعد میں گھر گیا تھا—جہاں میں پیدا ہوا تھا، بڑھا تھا، کھیلا تھا . جہاں کی دھول میرے روئیں روئیں میں ملی ہوئی تھی. گھر جانے سے انسان خوش کیوں ہوتا ہے میں نہیں جانتا . جہاں آدمی رہنے لگے وہیں گھر ہے، وہیں سب کچھ ہے . پر اپنے جنم استھان کو جاتے سمے جو خوشی ہوتی ہے وہ دوسری جگہ جاتے سمے کیوں نہیں؟ میرا دل گد گد تھا، میں پھولا نہیں سما رہا تھا . میں اپنے گھر جا رہا تھا، اپنی ماں سے ملنے، نیلم سے، کنور سے بھینٹ کرنے . مجھے اِن سب کی یادیں سدا آتی رہتی تھیں . لیکن اِس سمے نہ جانے کیوں یاد نے کوتوہلتا پیدا کرکے میرے من میں بےچینی پیدا کردی تھی. میں چاہتا تھا کہ زمین کھنچ جائے اور میں ترنت گھر پہنچ جاؤں . راستے بھر میں طرح طرح کے سپنے دیکھتا جا رہا تھا . آشا اور تعجب کے ہزاروں رنگین محل میں نے بنا ڈالے تھے . میں سوچ رہا تھا—گھر پہنچ کر چپکے سے کھڑکی کے راستے اندر گھس جاؤں گا . اندر پہنچتے ہی نیلم کی بھونک شروع ہو جائے گی. وہ پھٹی پھٹی آنکھوں سے میری طرف دیکھے گی اور رہ رہ کر بھونک پڑے گی . ٹھہرے گی، چاروں طرف چکر لگائے گی اور پھر بھونکے گی . میں کہوں گا—''نیلم، نیلم، پہچانا نہیں تونے، میں ہوں، ارے میں ہوں۔'' وہ رک کر جیسے میری بات سننے اور سمجھنے کی کوشش کرے گی. میں چمکاروں گا. پھر وہ میرے پاس آئے گی، پر ڈرتے ڈرتے، سہمے سہمے اور بیچ بیچ میں بھونکتے ہوئے . وہ بہت ہی نزدیک آ جائے گی، پونچھ پھٹکنے لگے گی، میرا پیر چاٹنے لگے گی . وہ مجھے پہچان جائے گی . میں اُس کی طرف دیکھوں گا. اُس کی آنکھوں میں آنسو ہونگے، شکایت کے آنسو . میں کہونگا—''بگڑ گئی پگلی، میں اب تجھے اکیلا نہیں چھوڑوں گا، ساتھ لے چلوں گا۔'' وہ اُچھل پڑے گی. اپنے دونوں پیر میرے اوپر رکھکر میرے ہاتھ چاٹنے کی کوشش کرے گی—نیلم کی بھونک سن کر کنور زور زور سے ہنہنائے گی. میں آواز دوں گا—''کنور، کنور۔'' اور کنور ٹاپ مارنا شروع کر دے گی . وہ میری آواز پہچان جائے گی. وہ مجھے کبھی نہیں بھول سکتی . میں نے بچپن سے اُسے پالا تھا . اس کو روٹیاں کھلائی تھیں، اُسے دانا کھلایا تھا . اس کا مالک بھی میں تھا، سوار بھی میں تھا اور سائیس

Phrenology और Phrenological से खोपिड़यात और खोपिड़याती

Semantics और Semantic से अर्थयात और अर्थयाती

Semasialogy और Semasiological से अर्थयात और अर्थयाती

Sexological और Sexology से जिन्सयात और जिन्सयाती

Technology और Technological से टैकनिकियात और टैकनिकियाती

Teratology और Teratological से मोजज़ियाता और मोजज़ियाता

Thermological और Thermology से गरमियात और गरमियाती

Tricology और Tricological से बालियात और बालियाती

Zoology और Zoological से जानवरयात और जानवरयाती

इन मिसालों ही से हम समझ सकते हैं कि इस लेख माला में भाशा का मसला और हिन्दुस्तानी शब्दियात के क्या मानी हैं ? शब्द यानी लफ़्ज़ के साथ 'यात' लगाने से शब्दयात बनता है जिस से मुराद इल्म है जिसमें शब्दों को बनाने, संवारने, ढालने, गढ़ने और समझने समझाने से बहस की जाती है.

जो लोग हिन्दुस्तानी से कपट रखते हों, हिन्दुस्तानी को ज़िन्दा रहने और पनपने का मौक़ा ही न देना चाहते हों, जो मन माने तौर पर हिन्दुस्तानी को हिन्दी या उरदू समझते हों या जो मुख़तलिफ़ ज़बानों से ताल्लुक़ रखने वाले लफ़्ज़ों या लफ़्ज़ी जोड़ों से मिलवां और जुड़वां लफ़्ज़ों के ख़िलाफ़ हों वह शब्दियात का यह अर्थ समझ लें. वह इल्म जिस में लफ़्ज़ों को बिगाड़ने, उनके मानी मतलब को तोड़ कर भयानक इस्तलाहें बनाने, उनको उल्टा सीधा समझा कर दिया की आड़ लेने से बहस की जाती है. अगर इस से हमारे मुख़ालिफ़ों का दिल ठंडा हो सकता है तो उन्हें ख़ुश हो लेने दीजिये. मैं जानता हूँ कि मेरे कारन बाज़ उरदू के हामियों और हिन्दी प्रेमियों को दुख पहुंचा है. मेरी बदौलत वह थोड़े बहुत ख़ुश हो लें तो मेरे मन का बोझ कुछ तो हलका होगा.

Phrenology اور Phrenological سے کھوپڑیات اور کھوپڑیاتی

Semantics اور Semantic سے ارتھیات اور ارتھیاتی

Semasiology اور Semasiological سے ارتھیات اور ارتھیاتی

Sexology اور Sexological سے جلسیات اور جلسیاتی

Technology اور Technological سے ٹیکنیکیات اور ٹیکنیکیاتی

Teratology اور Teratological سے موجزیات اور موجزیاتی

Thermology اور Thermological سے گرمیات اور گرمیاتی

Tricology اور Tricological سے بالیات اور بالیاتی

Zoology اور Zoological سے جانوریات اور جانوریاتی

ان مسالوں ھی سے ہم سمجھ سکتے ھیں کہ اِس لیکھ مالا میں بھاشا کا مسئلہ اور ھندستانی شبدیات کے کیا مانی ھیں ؟ شبد یانی لفظ کے ساتھ 'یات' لگانے سے شبدیات بنتا ھے جس سے مراد وہ اِلم ھے جس میں شبدوں کو بنانے، سنوارنے، ڈھالنے، گڑھنے اور سمجھنے سمجھانے سے بحث کی جاتی ھے ۔

جو لوگ ھندستانی سے کپٹ رکھتے ھوں، ھندستانی کو زندہ رھنے اور پنپنے کا موقا ھی نہ دینا چاھتے ھوں، جو من مانے تور پر ھندستانی کو ھندی یا اُردو سمجھتے ھوں یا جو دو مختلف زبانوں سے تالق رکھنے والے لفظوں یا لفظی جوڑوں سے ملواں اور جڑواں لفظوں کے خلاف ھوں وہ شبدیات کا یہ ارتھ سمجھ لیں ۔ وہ اِلم جس میں لفظوں کو بگاڑنے، اُن کے مانی مطلب کو توڑ کر بھیانک اِستلاحیں بنانے، اُن کو اُلٹا سیدھا سمجھا کر دنیا کی آڑ لینے سے بحث کی جاتی ھے ۔ اگر اِس سے ھمارے مخالفوں کا دل ٹھنڈا ھو سکتا ھے تو اُنھیں خوش ھو لینے دیجئے ۔ میں جانتا ھوں کہ میرے کارن باز اُردو کے حامیوں اور ھندی پریمیوں کو دکھ پہنچا ھے ۔ میری بدولت وہ تھوڑے بہت خوش ھو لیں تو میرے من کا بوجھ کچھ تو ھلکا ھوگا ۔

Ichthyological के लिये मछलियाती	Ichthyological کے لئے مچھلیاتی
Linguistics ,, भाशियाती	Linguistics ,, بھاشیاتی
Ornithological ,, पंछियाती	Ornithological ,, پنچھیاتی
Orthographic ,, लिखाइयाती	Orthographic ,, لکھائیاتی
Sociologial ,, समाजियाती	Sociological ,, سماجیاتی
Statistical ,, गिनतियाती	Satistical ,, گنتیاتی
इसी तरीक़े पर	اسی ترکیب پر
Acousutic और Acosustics से आवाज़ियात और आवाज़ियाती	Acoustics اور Acoustic سے آوازیات اور آوازیاتی
Aesthetic और Aesthetics से सुन्दरियात और सुन्दरियाती	Aesthetics اور Aesthetic سے سندریات اور سندریاتی
Bacteriologoy और Bacteriological से जरासीमियात और जरासीमियाती	Bacteriology اور Bacteriological سے جراثیمیات اور جراثیمیاتی
Biology और Biological से जीवनयात और जीवनयाती	Biology اور Biological سے جیونیات اور جیونیاتی
Cosmalogy और Cosmologicol से संसारियात और संसारियाती	Cosmology اور Cosmological سے سنساریات اور سنساریاتی
Genealogy और Genealogical से कुटुम्बियात और कुटुम्बियाती	Genealogy اور Genealogical سے کٹمبیات اور کٹمبیاتی
Herpetology और Herpetological से रींगियात और रींगयाती	Herpetology اور Herpetological سے رینگیات اور رینگیاتی
Mineralogy और Mineralogical से धातियात और धातियाती	Mineralogy اور Mineralogical سے دھاتیات اور دھاتیاتی
Mythology और Mythological से देवताइयात और देवताइयाती.	Mythology اور Mythological سے دیوتائیات اور دیوتائیاتی
Odontology और Odontological से दांतियात और दांतियाती	Odontology اور Odontological سے دانتیات اور دانتیاتی
Ophiology और Ophiological से सांपियात और सांपियाती	Ophiology اور Ophiological سے سانپیات اور سانپیاتی
Orology और Orological से पहाड़ियात और पहाड़ियाती	Orology اور Orological سے پہاڑیات اور پہاڑیاتی
Orthopaedics और Orthopaedic से हड्डियात और हड्डियाती	Orthopaedics اور Orthopaedic سے ہڈئیات اور ہڈئیاتی
Otorhinolaryngology और Otorhinolaryngological से कान नाक हलक़ियात और कान नाक हलक़ियाती	Otorhinolaryngology اور Otorhinolaryngological سے کاناکہلقیات اور کاناکہلقیاتی
Pathology और Pathological से रोगयात और रोगयाती	Pathology اور Pathological سے روگیات اور روگیاتی
Petrology और Petrological से पत्थरयात और पत्थरयाती	Petrology اور Petrological سے پتھریات اور پتھریاتی

के लिये इस्तलाहों के दो अलग अलग Set बन गये हैं. अगर आप इल्मी ज़बान की हैसियत से उरदू को हिन्दी से या हिन्दी को उरदू से अलग रखना चाहते हैं तो इस्तलाहों को संस्कृति हिन्दी या अरबियाना उरदू में तरजुमा करने का मौजूदा झुकाव ठीक है. मगर दोनों भाशाओं को एक करना या ज़ियादा क़रीब लाना है या इन दोनों ज़बानों के होते हुए हमें एक और मिलवां भाशा की ज़रूरत है जो विद्याई ज़बान की हैसियत से काम भी आ सके तो कोई न कोई तरकीब करनी पड़ेगी जिस की वजह से हिन्दी और उरदू दोनों में इस्तेमाल हो सकने वाली इस्तलाहों की तैदाद हज़ारों की हो सके और उसके लिये सब से सफल तरकीब यही है कि हिन्दुस्तानी के संजोगी शब्द बनाये जायें यानी ऐसे शब्द जो न तो सोल्हों आने संस्कृति हों और न सोल्हों आने अरबियाना और या फ़ारसियाना, जैसे—

'Astronomy को आकाश + ईयात के संजोग से आकाशयात
Electrology को बिजली + ईयात „ बिजलीयात
Ichthyology को मछली + ईयात „ मछलीयात
Linguistics को भाशा + ईयात „ भाशाईयात
Ornithology को पंछी + ईयात „ पंछीयात
Orthography को लिखाई + ईयात „ लिखाईयात
Sociology को समाज + ईयात „ समाजीयात
Statistics को गिनती + ईयात „ गिनतीयात

अगर उरदू में आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले लफ़्ज़ों ही से इस्लाहें बनाई जायें तब भी आसानी रहती जैसे—

'Astronomy को आसमानियात कहा जाता न कि फ़लकियात
Linguistics को ज़बानियात „ लस्सानियात
Phonetics को आवाज़ियात „ सौतियात

क्योंकि करोड़ों हिन्दी दां आसमान, ज़बान और आवाज़ जैसे शब्द समझते हैं. जो लोग कम समझे जाने वाले लफ़्ज़ों से इस्तलाहें बनाते हैं और फ़लकियात या समकियात जैसे लफ़्ज़ों के ज़रिये उरदू को "हिन्दुस्तान की वाहिद क़ौमी ज़बान" बनाने का अरमान रखते हैं, वह बड़ी भारी ग़लती करते हैं.

हिन्दी और उरदू के झगड़े को जाने दीजिये, अगर हमें सचमुच हिन्दुस्तानी को विद्याई भाशा बनाना है तो हमें बहुत से संजोगी शब्द बनाने पड़ेंगे यह असूल इसलिये भी ठीक लगता है कि उसके आधार पर बनाये हुए लफ़्ज़ों की सिफ़्ती शकलें या गुन रूप बहुत ही आसानी से बनते हैं जैसे—

'Astronomical के लिये आसमानियाती
Electrological „ बिजलियाती

کے لئے اسطلاحوں کے دو الگ الگ set بن گئے ہیں . اگر آپ علمی زبان کی حیثیت سے اُردو کو ہندی سے یا ہندی کو اُردو سے الگ رکھنا چاہتے ہیں تو اسطلاحوں کو سنسکرتی ہندی یا اربیانہ اُردو میں ترجما کرنے کا مرجودا جھکاؤ ٹھیک ہے . مگر دونوں بھاشاؤں کو ایک کرنا زیادا یا قریب لانا ہے یا ان دونوں زبانوں کے ہوتے ہوئے ہمیں ایک اور ملواں بھاشا کی ضرورت ہے جو ودیای زبان کی حیثیت سے کام بھی آسکے تو کوئی نہ کوئی ترکیب کرنی پڑیگی جس کی وجہ سے ہندی اور اُردو دونوں میں استعمال ہو سکنے والی اسطلاحوں کی تعداد ہزاروں کی ہو سکے اور اس کے لئے سب سے سپھل ترکیب یہی ہے کہ ہندستانی کے سنجوگی شبد بنائے جائیں یانی ایسے شبد جو نہ تو سولہوں آنے سنسکرتی ہوں اور نہ سولہوں آنے اربیانہ اور یا فارسیانہ' جیسے—

Astronomy کو آکاش + ئیات کے سنجوگ سے آکاشیات
Electroloyg کو بجلی + ئیات „ بجلیات
Ichthyology کو مچھلی + ئیات „ مچھلیات
Linguistics کو بھاشا + ئیات „ بھاشا ئیات
Ornithology کو پنچھی + ئیات „ پنچھیات
Orthography کو لکھائی + ئیات „ لکھا ئیات
Sociology کو سماج + ئیات „ سماجیات
Statistics کو گنتی + ئیات „ گنتیات

اگر اُردو میں آم تور پر استعمال ہونے والے لفزوں ہی سے اسطلاحیں بنائی جائیں تب بھی آسانی رہتی جیسے—

Astronomy کو آسمانیات کہا جاتا نہ کہ فلکیات
Linguistics کو زبانیات „ لسانیات
Phonetics کو آوازیات „ صوتیات

کیونکہ کروڑوں ہندی‌داں آسمان' زبان اور آواز جیسے شبد سمجھتے ہیں . جو لوگ کم سمجھے جانے والے لفزوں سے اسطلاحیں بناتے ہیں اور فلکیات یا سمکیات جیسے لفزوں کے زریعہ اُردو کو "ہندستان کی واحد قومی زبان" بنانے کا ارمان رکھتے ہیں' وہ بڑی بھاری غلطی کرتے ہیں.

ہندی اور اُردو کے جھگڑے کو جانے دیجئے' اگر ہمیں سچ مچ ہندستانی کو ودیائی بھاشا بنانا ہے تو ہمیں بہت سے سنجوگی شبد بنانے پڑینگے . یہ اسول اِس لئے بھی ٹھیک لگتا ہے کہ اس کے آدھار پر بنائے ہوئے لفزوں کی صفتی شکلیں یا گن روپ بہت ہی آسانی سے بنتے ہیں جیسے—

'Astronomical کے لئے آسمانیاتی
Electrological „ بجلیاتی

(ii) [illegible] आम तौर पर "इस्लामी ज़बानें"※ कहा जाता है.

(iii) तीसरा सर चश्मा पुरानी और नई योरपी भाषायें ख़ास कर उनके अंगरेज़ी रूप, क्योंकि योरप की नई और पुरानी भाषाओं के लफ़्ज़ों से हमें अंगरेज़ी के ज़रिये ही जानकारी हुई है और हम भूल से हज़ारों लातीनी, यूनानी (और कम तैदाद में) फ़्रानसीसी और पुर्तगाली लफ़्ज़ों को अंगरेज़ी समझते हैं.

इन सर चश्मों को ध्यान में रखते हुए ऐसे लफ़्ज़ और इस्तलाहें बनानी चाहिये जिनका सम्बन्ध भांत भांत की भाषाओं से होः नई और पुरानी देसी और परदेसी ताकि भाषा में हर रंगीपन और हिन्दुस्तानियत मौजूद हो.

इसीलिये हिन्दुस्तानी परिभाशा या इस्तलाहयात का एक असूल तो यह समझा जा सकता है कि अलग अलग भाषाओं से ताल्लुक़ रखने वाले लफ़्ज़ों या लफ़्ज़ी जोड़ों से नये नये शब्द बनाये जायें.

हिन्दुस्तानी शब्दयात का पहला असूलः अलग अलग लफ़्ज़ी जोड़ों से नए शब्द

इसी असूल के आधार पर मैंने इतने नये नये लफ़्ज़ बनाये हैं कि उनकी तैदाद बीसियों से ज़ियादा गुज़र चुकी है. मिसलन उर्दू में "ईयात" योरपी ज़बानों के Logy या Tics के लिये चल पड़ा है. चुनांचे Statistics को शुमारयात, Geology को अर्ज़ियात, Sociology को उम्रानियात कहते हैं. इन इस्तलाहों के आख़ीरिये यानी Suffixes और असल लफ़्ज़ शुमार, अर्ज़ इम्रान वग़ैरा चूंकि ख़ालिस अरबियाना और उरदूआना हैं, इसीलिये यह इस्तलाहें सोल्हों आने उर्दू हो गई हैं. इनही को संस्कृती हिन्दी में गनित शास्त्र, भूमि शास्त्र, समाज शास्त्र कहा जाता है.

'गनितशास्त्र' का उरदू में चलना ऐसे ही नामुमकिन है जैसे 'अर्ज़ीयात' का हिन्दी में चलना. हिन्दी उरदू की फूट इसी वजह से बढ़ती जा रही है क्योंकि हिन्दी और उरदू

※ बिचाई नज़र कोने से यह नाम—इस्लामी ज़बानें—न तो अच्छा है और न ठीक है. जो भाषायें इस्लाम से सैकड़ों बरस पहले की हों और जिसमें इस्लाम के पहले का भारी साहित्य मौजूद हो, उसे "इस्लामी" क्यों कर कहा जा सकता है ? "शरा शरीफ़" इस्लामी है, "क़ुरान मजीद" इस्लामी है, फ़िक़ा और हदीस इस्लामी हैं. मगर "इस्लाम" से पहले की बनी हुई ज़बानें क्यों कर "इस्लामी" हो सकती हैं ? अरबी के अलावा जब फ़ारसी को इस्लामी ज़बान कहा जाने लगा तो कल पश्तो, सिन्धी और पंजाबी को भी इस्लामी ज़बानें कहा जायेगा.

(ii) دکھن پچھم ایشیا کی وہ بھاشائیں جنہیں عام طور پر "اسلامی زبانیں"٭ کہا جاتا ہے .

(iii) تیسرا سرچشمہ پرانی اور نئی یورپی بھاشائیں خاص کر اُن کے انگریزی روپ' کیوں کہ یورپ کی نئی اور پرانی بھاشاؤں کے لفظوں سے ہمیں انگریزی کے ذریعے ہی جانکاری ہوئی ہے اور ہم بھول سے ہزاروں لاتینی' یونانی (اور کم تعداد میں) فرانسیسی اور پرتگالی لفظوں کو انگریزی سمجھتے ہیں .

اِن سرچشموں کو دھیان میں رکھتے ہوئے ایسے لفظ اور اِصطلاحیں بنانی چاہئیں جن کا سمبندھ بھانت بھانت کی بھاشاؤں سے ہو: نئی اور پرانی دیسی اور پردیسی تاکہ بھاشا میں ہر رنگی پن اور ہندستانیت موجود ہو .

اسی لئے ہندستانی پری بھاشا یا اصطلاحیات کا ایک اصول تو یہ سمجھا جا سکتا ہے کہ الگ الگ بھاشاؤں سے تعلق رکھنے والے لفظوں یا لفظی جوڑوں سے نئے نئے شبد بنائے جائیں .

ہندستانی شبدیات کا پہلا اصول : الگ الگ لفظی جوڑوں سے نئے شبد

اسی اصول کے آدھار پر میں نے اتنے نئے نئے لفظ بنائے ہیں کہ اُن کی تعداد بیسیوں سے زیادہ گزر چکی ہے . مثلاً اُردو میں "یات" یورپی زبانوں کے Logy یا Tics کے لئے چل پڑا ہے . چنانچہ Statistics کو شماریات' Geology کو ارضیات' Sociology کو عمرانیات کہتے ہیں . اِن اصطلاحوں کے آخریئے یعنی Suffixes اور اصل لفظ شمار' ارض' عمران وغیرہ چوں کہ خالص عربیانہ اور اُردوانہ ہیں اس لئے یہ اصطلاحیں سولہوں آنے اُردو ہوگئی ہیں . اِن ہی کو سنسکرتی ہندی میں گنت شاستر' بھومی شاستر' سماج شاستر کہا جاتا ہے .

'گنت شاستر' کا اُردو میں چلنا ایسے ہی ناممکن ہے جیسے 'ارضیات' کا ہندی میں چلنا . ہندی اُردو کی پھوٹ اِسی وجہ سے بڑھتی جا رہی ہے کیونکہ ہندی اور اُردو

٭ وِدیائی نظر کونے سے یہ نام—اسلامی زبانیں—نہ تو اچھا ہے اور نہ ٹھیک ہے . جو بھاشائیں اسلام سے سیکڑوں برس پہلے کی ہوں اور جس میں اسلام سے پہلے کا بھاری ساہتیہ موجود ہو' اُسے "اسلامی" کیوں کر کہا جاسکتا ہے؟ "شرع شریف" اسلامی ہے' "قرآن مجید" اسلامی ہے' فقہ اور حدیث اسلامی ہیں مگر "اسلام" سے پہلے کی بنی ہوئی زبانیں کیوں کر "اسلامی" ہو سکتی ہیں ؟ عربی کے علاوہ جب فارسی کو اسلامی زبان کہا جانے لگا تو کل پشتو' سندھی اور پنجابی کو بھی اسلامی زبانیں کہا جائے گا .

हिन्दुस्तानी शब्दियात

(डाक्टर जाफ़र हसन)

हिन्दुस्तानी शब्दयात के असूल मुक़र्रर करने और उन्हें अच्छी तरह समझने के लिये यह जानना और ठीक ठीक महसूस करना ज़रूरी है कि हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीन अलग ज़बानें हैं.

"उर्दू यानी हिन्दुस्तानी" कहना और बहरे अहमर, अहदे सासानियां, उल्मा, जोहला, क़सस, मलल, काग़ज़ अबैज़, हेमये सोख़्तनी और अकाबिर सलासा जैसी इस्ताहें, तरकीबें, लफ़्ज़ और नाम इस्तेमाल बल्कि गवारा करना और उसे हिन्दुस्तानी कहना मुश्रिक को मुसलमान या पोप को सूफ़ी (वेदान्ती) कहना है !

शनिवार, रविवार, सोमवार, चन्द्रवार, मंगलवार, बुधवार, ब्रहस्पतिवार, गुरुवार और शुक्रवार कहना और पहले, दूसरे, तीसरे पर प्रथम, तृतीय, तृतिय को हमेशा तरजीह देते रहना. फिर भी हिन्दी को हिन्दुस्तानी कहना काले और सफ़ेद या पीले और हरे को एक ठहराना है.

हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीन अलग अलग रास्ते हैं. जैसे किसी तिराहे से तीन सड़कें, तीन अलग अलग दिशाओं में जाती हैं, उसी तरह अदबी, साइन्सी और विद्याई भाशा की हैसियत से हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीन अलग अलग रास्ते हैं और हमें तिराहे पर पहुंचते ही फ़ैसला करना होगा कि हम कौनसा रास्ता अख़्तियार करें. ख़ास कर इसलिये कि इन तीनों का फ़र्क़ बराबर बढ़ता जा रहा है.

दावों और असूलों को छोड़ कर हिन्दी प्रेमी सिर्फ़ संस्कृत से या क़रीब क़रीब सौ फ़ी सैकड़ा संस्कृत से इस्तलाहें ले रहे और हिन्दी अपने आप संस्कृतिया रही है. उर्दू के सरचश्मे क़रीब क़रीब सौ फ़ी सैकड़ा अरबी और फ़ारसी हैं. इसके बरअक्स (ख़िलाफ़) हिन्दुस्तानी के तीन बड़े बड़े सर चश्मे हैं.

हिन्दुस्तानी के सर चश्मे

(i) पुरानी और नई हिन्दुस्तानी भाशायें जैसे संस्कृत, प्राकृत, बंगला, पंजाबी, दकनी, गुजराती और सब से बढ़ कर उर्दू और उससे भी ज़ियादा हिन्दी.

ھندستانی شبدیات

(ڈاکٹر جافر حسن)

ھندستانی شبدیات' کے اسول مقرر کرنے اور انھیں اچھی ترہ سمجھنے کے لئے یہ جاننا اور ٹھیک ٹھیک مھسوس کرنا ززوری ھے کہ ھندی' اُردو اور ھندستانی تین الگ الگ زبانیں ھیں .

"اُردو یانی ھندستانی" کہنا اور بھراحمر' عہد ساسانیاں' علما' جہلا' قصص' ملل' کاغذابیض' ھیمئہ سوختنی' اور اکابرثلاثہ جیسی اسطلاحیں' ترکیبیں' لفز اور نام استعمال بلکہ گوارا کرنا اور اسے ھندستانی کہنا مشرک کو مسلمان یا پوپ کو سوفی (ویدانتی) کہنا ھے !

شنیوار' رویوار' سوموار' چندروار' منگلوار' بدھوار' برھسپتی وار' گرووار اور شکروار کہنا اور پہلے' دوسرے' تیسرے پر پرتھم' دوتیہ' ترتیہ کو ھمیشا ترجیہ دیتے رھنا پھر بھی ھندی کو ھندستانی کہنا کالے اور سفید یا پیلے اور ھرے کو ایک ٹھہرانا ھے .

ھمیں اچھی ترہ سمجھ لینا چاھئے کہ ھندی' اُردو اور ھندستانی تین الگ الگ راستے ھیں . جیسے کسی تراھے سے تین سڑکیں' تین الگ الگ دشاؤں میں جاتی ھیں' اُسی ترہ ادبی' سائنسی اور ودیائی بھاشا کی ھیسیت سے ھندی اُردو اور ھندستانی تین الگ الگ راستے ھیں اور ھمیں تراھے پر پہنچتے ھی فیصلا کرنا ھوگا کہ ھم کونسا راستہ اختیار کریں . خاس کر اِس لئے کہ اِن تینوں کا فرق برابر بڑھتا جا رھا ھے .

داؤں اور اسولوں کو چھوڑ کر ھندی پریمی سرف سنسکرت سے یا قریب قریب سو فی سیکڑہ سنسکرت سے سطلاحیں لے رھے اور ھندی اپنے آپ سنسکرتیا رھی ھے . اُردو کے سرچشمے قریب قریب سو فی سیکڑہ اربی اور فارسی ھیں . اس کے براکس (خلاف) ھندستانی کے تین بڑے بڑے سرچشمے ھیں .

ھندستانی کے سرچشمے

(i) پرانی اور نئی ھندستانی بھاشائیں جیسے سنسکرت' پراکرت' بنگلہ' پنجابی' دکنی' گجراتی اور سب سے بڑھ کر اُردو اور اُس سے بھی زیادہ ھندی .

उपानिषद् का असर भी दिखाई पड़ता है. तमिल संत कवियों का प्रभाव कई पदों पर है. अंगरेजी के कवि शैली का प्रभाव भी भारती पर पड़ा. महा कवि रवीन्द्र की कुछ कविताओं का अनुवाद भारती ने तमिल में किया था. बंकिम बाबू के वंदे मातरम गीत का उन्होंने पद्य रूप में तमिल में अनुवाद किया है.

महरिशी अरविंद के साथ रहने के कारन उनका प्रभाव भारती पर अधिक पड़ा. एक आलोचक जो भारती के समय के ही थे और जिन्हें भारती और अरविंद के साथ रहने का सौभाग्य मिला था, लिखते हैं कि भारती या तो बोलते थे, या कविता बनाते थे. पर अरविंद मौन रहते थे और बहुत सोचते थे. भारती के वचन चमेली की महक के समान दिमाग़ में घुसने वाले थे, और अरविन्द के वचन कमल के समान खिले हुए और सुन्दर थे. दोनों उदार थे पर संकोची. दोनों में नये विचार फूट पड़ते थे. दोनों की भाषा कविता थी. दोनों खुल कर और ज़ोरों से हंसते थे.

दूसरे एक लेखक के शब्दों में—भारती वीर बनकर पांडेचरी गए और अरविंद के पास रह कर वेदान्ती बनकर बाहर आए.

भारती को पूरी तरह समझने के लिये उनकी रचनाओं को पूरा पढ़ना चाहिये. उनके कई पद्य ऐसे हैं जो धर्म, देश और काल के घेरे को लांघ कर विश्व साहित्य में जगह पाने के लायक़ हैं.

[illegible] ہوتا ہے . تمل سنت کویوں کا [illegible] انگریزی کے کوی شیلی کا پربھاو [illegible] کچھ کویتاؤں [illegible] بنکم بابو کے بندے [illegible] پد روپ میں تمل [illegible] انوواد کیا ہے

مہا رشی اروند کے ساتھ رہنے کے کارن اُن کا پربھاؤ بھارتی پر ادھک پڑا . ایک آلوچک جو بھارتی کے سمے کے ہی تھے اور جنھیں بھارتی اور اروند کے ساتھ رہنے کا سوبھاگ ملا تھا' لکھتے ہیں کہ بھارتی یا تو بولتے تھے' یا کویتا بناتے تھے . پر آروند مون رہتے تھے اور بہت سوچتے تھے . بھارتی کے وچن چمیلی کی مہک کے سمان دماغ میں گھسنے والے تھے' آروند کے وچن کمل کے سمان کھلے ہوئے اور سندر تھے . دونوں اُدار تھے پر سنکوچی . دونوں میں نئے وچار پھوٹ پڑتے تھے . دونوں کی بھاشا کویتا تھی . دونوں کھل کر اور زوروں سے ہنستے تھے.

دوسرے ایک لیکھک کے شبدوں میں—بھارتی ویر بن کر پانڈیچری گئے اور اروند کے پاس رہکر ویدانتی بنکر باہر آئے .

بھارتی کو پوری طرح سمجھنے کے لئے اُن کی رچناؤں کو پورا پڑھنا چاہئے . اُن کے کئی پد ایسے ہیں جو دھرم' دیش اور کال کے گھیرے کو لانگھ کر وشو ساہتیہ میں جگہ پانے کے لائق ہیں .

"कलाकार जब कला को कल्यानकारी (सबके भले की) बनावेंगे और आम जनता के लिये सुलभ (मोहैया) कर देंगे तभी उस कला को जीवन में स्थान मिलेगा. जब कला सब लोगों की न रह कर थोड़े लोगों की रह जाती है तब मैं मानता हूं कि उसका महत्व (अहमियत) कम हो जाता है."

— महात्मा गांधी

"کلاکار جب کلا کو کلیان کاری (سب کے بھلے کی) بناویں گے اور عام جنتا کے لئے سلبھ (مہیا) کر دیں گے تبھی اُس کلا کو جیون میں استھان ملے گا. جب کلا سب لوگوں کی نہ رہ کر تھوڑے لوگوں کی رہ جاتی ہے تب میں مانتا ہوں کہ اُس کا مہتو (اہمیت) کم ہوجاتا ہے ."

—مہاتما گاندھی

"हम भारत वासी सब एक ही कुल के हैं, एक जाति के हम सब बराबर हैं. कोई बड़ा या छोटा नहीं है. हम सब इस देश के राजा हैं. हां हम सब इस देश के राजा हैं...... भारत की जय हो."

भारती की नज़र भारत तक ही सीमित नहीं रही. विदेशों में होने वाली घटनाओं पर भी उसका ध्यान जाता था. मेजिनी की प्रतिज्ञा, बेलजियम का पतन, ज़ार का पतन जैसी घटनाओं पर भी उन्होंने कविता लिखी है.

समाज की बुराइयों का भी खंडन भारती ने किया था. खुद ब्राह्मण होते हुए भी वह जात पात को नहीं मानते थे. इस वजह से उन्हें समाज में तकलीफ़ें सहनी पड़ीं. औरतों की तरक्की के बारे में भी उन्होंने कविता लिखी है.

अंगरेज़ी तालीम से जो नुक़सान हुए उसके बारे में अपने खुद के अनुभव के आधार पर भारती कहते हैं— "मेरे पिता के हज़ारों रुपये खर्च हुए, हज़ारों बुराइयों ने मुझे घेर लिया. तिल भर भी मेरी भलाई नहीं हुई. इसकी शिकायत मैं किस भगवान से करूँ ?"

अपनी मां बोली के साहित्य में नई बातों की कमी देख कर कवि कहने लगा—"लोगो ! पच्छिम की तरफ़ देखो, वह लोग अपने साहित्य का विकास किस तरह कर रहे हैं. आप लोग भी तमाम ज़बानों के अच्छे अच्छे और नये नये विषयों से अपने साहित्य को माला माल कीजिये."

भारती ने इस तरह राजकाजी, समाजी और साहित्य के मैदान में तबदीली करके अमिट नाम पा लिया. भारती समय के रुख को मोड़ने वाले थे. गद्य (नसर) और पद्य (नज़्म) में सरल और नई शैली को चला कर उन्होंने सबों की रहनुमाई की. उन्होंने बच्चों की ज़बान में बच्चों के लिये आसान से आसान कवितायें लिखीं. बोल चाल की भाषा में कवितायें लिख कर उन्होंने अपनी रचनाओं को लोकप्रिय बना दिया. "पांचाली शपथम", "कोयल पाट्टु" (कोयल गीत) सुर्खी से खंड काव्य भी लिखे हैं जो अपनी शैली, नये पन, प्रकृति के वर्णन वगैरा के लिये मशहूर हैं. 'कोयल पाट्टु' में रहस्यवाद (मारफ़त) की भावना है. क़ुदरत की ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसका वर्णन भारती ने न किया हो. मुहावरे, लोकोक्तियां (लोगों की कहावतों) की भी उनकी कविताओं में कमी नहीं हैं. भारती के कई ऐसे पद्य भी मिलते हैं जिनमें खूब राग रंग भी है. उन्होंने वेदान्त (सूफ़ीमत) सम्बन्धी कई कहानियां और लेख भी लिखे हैं. एक उपन्यास लिख रहे थे जो अधूरा रह गया.

भारती संस्कृत, तमिल और अंगरेज़ी तीनों भाषायें अच्छी तरह जानते थे. तीनों के पुराने और नये साहित्य का अच्छा अध्ययन भी उन्होंने किया था. उनके कई पदों में

"ہم بھارت واسی سب ایک ہی کل کے ہیں، ایک جات کے ہیں۔ ہم سب برابر ہیں۔ کوئی بڑا یا چھوٹا نہیں ہے۔ ہم سب اس دیش کے راجہ ہیں۔ ہاں ہم سب اس دیش کے راجہ ہیں......بھارت کی جے ہو۔"

بھارتی کی نظر بھارت تک ہی سمیت نہیں رہی۔ ودیشوں میں ہونے والی گھٹناؤں پر بھی اس کا دھیان جاتا تھا۔ میزنی کی پرتگیا' بلجیم کا پتن' زار کا پتن جیسی گھٹناؤں پر بھی انہوں نے کویتا لکھی ہے۔

سماج کی برائیوں کا بھی کھنڈن بھارتی نے کیا تھا۔ خود برہمن ہوتے ہوئے بھی وہ جات پات کو نہیں مانتے تھے۔ اس وجہ سے انہیں سماج میں تکلیف سہنی پڑی۔ عورتوں کے ترقی کے بارے میں بھی انہوں نے کویتا لکھی ہے۔

انگریزی تعلیم کے جو نقصان ہوئے اس کے بارے میں اپنے خود کے انوبھو کے آدھار پر بھارتی کہتے ہیں—" میرے پتا کے ہزاروں روپے خرچ ہوئے' ہزاروں برائیوں نے مجھے گھیر لیا۔ تل بھر بھی میری بھلائی نہیں ہوئی۔ اسکی شکایت میں کسی بھگوان سے کروں ؟"

اپنی ماں بولی کے ساہتیہ میں نئی باتوں کی کمی دیکھکر کوی کہنے لگا—" لوگو ! پچھم کی طرف دیکھو' وہ لوگ اپنے ساہتیہ کا وکاس کس طرح کر رہے ہیں۔ آپ لوگ بھی تمام زبانوں کے اچھے اچھے اور نئے نئے وشیوں سے اپنے ساہتیہ کو مالا مال کیجئے۔"

بھارتی نے اس طرح راج کاجی' سماجی اور ساہتیہ کے میدان میں تبدیلی کر کے امٹ نام پا لیا۔ بھارتی سمے کے رخ کو موڑنے والے تھے۔ گد (نثر) پد (نظم) میں سرل اور نئی شیلی کو چلا کر انہوں نے سبھوں کی رہنمائی کی۔ انہوں نے بچوں کی زبان میں بچوں کے لئے آسان سے آسان کویتائیں لکھیں۔ بول چال کی بھاشا میں کویتائیں لکھکر انہوں نے اپنی رچناؤں کو لوک پریہ بنا دیا۔ " پانچالی شپتھم "، "کوئل پاٹو" (کوئل گیت) سرخی سے کھنڈ کاویہ لکھے ہیں جو اپنی شیلی' نئے پن' پرکرتی کے ورنن وغیرہ کے لئے مشہور ہیں۔ کوئل پاٹو میں رہسیہ واد (معرفت) کی بھاونا ہے۔ قدرت کی ایسی کوئی چیز نہیں ہے جس کا ورنن بھارتی نے نہ کیا ہو۔ محاورے' لوکوتیاں (لوگوں کی کہاوتوں) کی بھی ان کی کویتاؤں میں کمی نہیں ہے۔ بھارتی کے کئی ایسے پد بھی ملتے ہیں جن میں خوب راگ رنگ بھی ہے۔ انہوں نے ویدانت سمبندھی کئی (صوفی مت) کہانیاں اور لیکھ بھی لکھے ہیں۔ ایک اپنیاس لکھ رہے تھے جو ادھورا رہ گیا۔

بھارتی سنسکرت' تمل اور انگریزی تینوں بھاشائیں اچھی طرح جانتے تھے۔ تینوں کے پرانے اور نئے ساہتیہ کا اچھا [illegible] بھی انہوں نے کیا تھا۔ ان کے کئی پدوں میں

[illegible] 'आजादी' [illegible] ... मां की [illegible] कसूर है. तुम दिन भर मैं [illegible] रहो, हम चुप चाप देखा करें! क्या तीस करोड़ ... मं कुत्ते और सूअर हैं? तुम्हीं लोग मनुष्य हो? तुम चाहे हमारे बदन के टुकड़े कर दो, लेकिन हम ज़रा भी परेशान नहीं होंगे.'

भारती के गीतों ने सोई हुई जनता को जगा दिया. एक तरफ़ नेताओं ने लड़ाई के लिये सिपाही तैयार किये तो दूसरी तरफ़ भारती के गीतों ने उनमें उत्साह और जोश भर कर उन्हें लड़ाई के मैदान में डटे रहने की ताक़त दी.

कवि की मज़बूत धारना थी कि आज़ादी बहुत जल्दी मिलने वाली है. आज़ादी मिलने पर जो गाना गाना चाहिये उसकी रचना भारती पहले ही कर चुके थे. उस गीत का सार यह है—"आज हम नाचें और गावें, हमें आज़ादी मिल गई. ब्राह्मन को पंडित कहने का ज़माना चला गया. गोरों को बाबू कहने का ज़माना लद गया, किसी से मांगने और धोके बाज़ों की ख़िदमत करने का ज़माना भी चला गया.

"अब सब जगह आज़ादी की ही धूम मची है. यह निश्चित हो गया है कि हम सब समान हैं. हम शंख बजा कर सारी दुनियां से यह कहेंगे—

"खेती बारी और उद्योग धंधों का हम मान करेंगे. निकम्मे और मेहनत न करने वालों की निंदा करेंगे.

"हम जिस देश में रहते हैं वह हमारा देश है. इस पर हमारा ही पूरा हक़ है. भगवान को छोड़ हम किसी और की गुलामी नहीं करेंगे."

दूसरी जगह पर वह लिखते हैं—"भारतवर्ष अमर हो, भारत की जय हो. यह आज़ाद हिन्दुस्तान तीस करोड़ लोगों का है. यह नया राष्ट्र दूसरों के लिये मिसाल बनेगा.

"आज से यह बात नहीं रहेगी कि कोई एक आदमी दूसरे आदमी का खाना छीन कर खावे, एक आदमी दुख भोगे और दूसरा देखा करे? ऐसी ज़िन्दगी नहीं हो सकती.

"हमारे देश में किस चीज़ की कमी है? सुन्दर सुन्दर बग़ीचों और लम्बे चौड़े खेतों से भरे इस देश में अनाज, कंद, मूल, फल बेहद मिलते हैं. ऐसे भारतवर्ष की जय हो. भारतवर्ष अमर हो.

"हम यह नियम बनायेंगे कि ऐसे समाज का निर्माण [illegible] हर आदमी को खाना मिले. किसी एक को भी [illegible] न मिलने पर सारी दुनिया को बरबाद कर देंगे. [illegible]

سکتی۔ ہم آخری دم تک بغیر مظلوم کہیں گے کیا اپنی بھارت ماتا کی وندنا کرنا قصور ہے. تم دن بھر ہمیں لوٹتے رہو' ہم چپ چاپ دیکھا کریں! کیا تیس کروڑ لوگ کتے اور سور ہیں؟ تمہیں لوگ منش ہو؟ تم چاہے ہمارے بدن کے ٹکڑے کر دو لیکن ہم ذرا بھی پریشان نہیں ہونگے.'

بھارتی کے گیتوں نے سوئی جنتا کو جگا دیا. ایک طرف نیتاؤں نے لڑائی کے لئے سپاہی تیار کئے تو دوسری طرف بھارتی کے گیتوں نے ان میں اتساہ اور جوش بھر کر انہیں لڑائی کے میدان میں ڈٹے رہنے کی طاقت دی.

کوی کی مضبوط دھارنا تھی کہ آزادی بہت جلدی ملنے والی ہے. آزادی ملنے پر جو گانا گانا چاہئے اس کی رچنا بھارتی پہلے ہی کر چکے تھے. اس گیت کا سار یہ ہے—" آج ہم ناچیں اور گائیں' ہمیں آزادی مل گئی. برہمن کو پنڈت کہنے کا زمانہ چلا گیا' گوروں کو بابو کہنے کا زمانہ لد گیا' کسی سے مانگنے کا اور دھوکے بازوں کی خدمت کرنے کا زمانہ بھی چلا گیا.

"اب سب جگہ آزادی کی ہی دھوم مچی ہے. یہ نشچت ہو گیا ہے کہ ہم سب سمان ہیں. ہم شنکھ بجا کر ساری دنیا سے یہ کہیں گے—

"کھیتی باڑی اور ادیوگ دھندوں کا ہم مان کریں گے. نکمے اور محنت نہ کرنے والوں کی نندا کریں گے.

"ہم جس دیش میں رہتے ہیں وہ ہمارا دیش ہے. اس پر ہمارا ہی پورا حق ہے. بھگوان کو چھوڑ کر ہم کسی اور کی غلامی نہیں کریں گے."

دوسری جگہ پر وہ لکھتے ہیں—" بھارت ورش امر ہو' بھارت کی جے ہو. یہ آزاد ہندستان تیس کروڑ لوگوں کا ہے. یہ نیا راشٹر دوسروں کے لئے مثال بنے گا.

"آج سے یہ بات نہیں رہے گی کہ کوئی ایک آدمی دوسرے آدمی کا کھانا چھین کر کھاوے' ایک آدمی دکھ بھوگے اور دوسرا دیکھا کرے؟ ایسی زندگی اب نہیں ہو سکتی.

" ہمارے دیش میں کس چیز کی کمی ہے؟ سندر سندر باغ بغیچوں اور لمبے چوڑے کھیتوں سے بھرے اس دیش میں اناج' کند' مول' پھل بے حد ملتے ہیں. ایسے بھارت ورش کی جے ہو. بھارت ورش امر ہو.

" ہم یہ نیم بنائیں گے کہ ایسے سماج کا نرمان ہو جہاں ہر آدمی کو کھانا ملے. کسی ایک کو بھی کھانا نہ ملنے پر ساری دنیا کو برباد کر دیں گے. بھارت کی جے ہو.

[illegible] से मिलकर रह सकती भारत माता की जय, आपसी मेल बढ़े, का वर्णन भी भारती ने सुन्दर ढंग से किया है.

भारती जब कमजोर और बुजदिल लोगों को देखते थे तो उनका मन यह उठता था कि ऐसे लोग अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकते. वह प्रार्थना करते थे कि 'हे देवी, इनके जिस्म और दिमाग को बल दो जिससे यह इस समाज में अपना फर्ज ठीक तरह से अदा कर सकें. समाज का बोझ बन कर रहना ठीक नहीं है.' संसार के लोगों में जो वासनायें और तुच्छ इच्छायें भरी हैं उन्हें देख कर कवि का दिल रो पड़ता है. वह भगवान से कहता है—'या तो मुझे इन इच्छाओं से अलग कर दो, नहीं तो जीवन ही छीन लो.' कवि बेकार जीवन बिताना नहीं चाहता. वह पराशक्ति (देवी) से आरजू करता है कि 'मुझे एक "कनी" (क़रीब 7 एकड़) जमीन दो. उसी में एक मकान बना कर रहूँगा. चारों तरफ बगीचा लगाऊंगा, जिसमें एक कुआं भी रहेगा. बगीचे के चारों तरफ नारियल के पेड़ लगाऊंगा. इनके अलावा और भी पेड़ रहेंगे जहां कोयल आ कर बैठेंगी और अपने मीठे गानों से मुझे खुश करेंगी. यहीं मैं अपना घरेलू जीवन बिताऊंगा.' साहित्य सेवा के साथ वह हाथ से मेहनत भी करना चाहता है.

समय समय पर देश की जो हालत रही उसका वर्णन असरदार ढंग से करके भारती ने लोगों में जोश और देश प्रेम पैदा किया. गोखले, लाजपतराय, नौरोजी, तिलक, महात्मा गांधी जैसे नेताओं के बारे में समय समय पर गीतों के रूप में बहुत कुछ उन्होंने लिखा है. भारत माता की वन्दना, झंडा गीत, स्वतंत्रता की अहमियत, भारत की उस समय की बुरी हालत और उससे छुटकारा पाने के तरीके वगैरा उनके गीतों के विषय थे. "वन्दे मातरम" वाले गीत में वह लिखते हैं—"हम जाति पाति का फ़र्क नहीं मानेंगे. ब्राह्मण हो या हरिजन हो सब भारत माता की औलाद हैं. हम आपस में आज झगड़ा करते हैं तो कल मिल जायंगे. यहां तीसरे को आ कर बीच बचाव करने की जरूरत नहीं है." आगे अपने देश वासियों से कवि कहता है—"हमें याद रखना चाहिये एकता में ही ताक़त है. भला हो या बुरा सब में बराबर हिस्सा हम सब का है. हम कभी भी इस गुलामी के जीवन को बरदाश्त नहीं करेंगे. हम तीस करोड़ लोग या तो जीयेंगे, नहीं तो देश के लिये लड़ते लड़ते मर जायंगे." कभी कवि देश वासियों में पुराना गौरव याद दिलाकर उत्साह भरता है, कभी भारत के दुखी जीवन पर रोता है. कभी अपने देश वासियों को उनकी कायरता और आलस्य पर उलाहना देता है, कभी उनको आगे चलने के लिये उकसाता है. अंगरेजों ने देश के कई नेताओं को क़ैद किया. यह देखकर कवि चुप नहीं रह सका, वह कह उठा— "हम अपने ही देश में दूसरों के गुलाम बनकर नहीं रह

کے ملنے [illegible] کی بات بھارت ماتا کی جے، آپسی میل بڑھے وغیرہ کا ورنن بھی بھارتی نے سندر ڈھنگ سے کیا ہے۔

بھارتی جب کمزور اور بزدل لوگوں کو دیکھتے تھے تو ان کا من یہ اٹھتا تھا کہ ایسے لوگ اپنے جیون میں کچھ نہیں کر سکتے۔ وہ پرارتھنا کرتے تھے کہ 'ہے دیوی' ان کے جسم اور دماغ کو بل دو جس سے یہ اس سماج میں اپنا فرض ٹھیک طرح سے ادا کر سکیں۔ سماج کا بوجھ بن کر رہنا ٹھیک نہیں ہے'۔ سنسار کے لوگوں میں جو واسنائیں اور تچھ اچھائیں بھری ہیں انہیں دیکھکر کوی کا دل رو پڑتا ہے۔ وہ بھگوان سے کہتا ہے—'یا تو مجھے ان اچھاؤں سے الگ کر دو، نہیں تو جیون ہی چھین لو' کوی بیکار جیون بتانا نہیں چاہتا۔ وہ پراشکتی (دیوی) سے آرزو کرتا ہے کہ 'مجھے ایک "کنی" (قریب 7 ایکڑ) زمین دو۔ اسی میں ایک مکان بنا کر رہونگا۔ چاروں طرف باغیچہ لگاؤں گا' جس میں ایک کنواں بھی رہے گا۔ باغیچہ کے چاروں طرف ناریل کے پیڑ لگاؤنگا۔ ان کے علاوہ اور بھی پیڑ رہیں گے جہاں کوئل آکر بیٹھیں گی اور اپنے میٹھے گانوں سے مجھے خوش کریں گی۔ یہیں میں اپنا گھریلو جیون بتاؤں گا۔' ساہتیہ سیوا کے ساتھ وہ ہاتھ سے محنت بھی کرنا چاہتا ہے۔

سمے سمے پر دیش کی جو حالت رہی اس کا ورنن اثر دار ڈھنگ سے کر کے بھارتی نے لوگوں میں جوش اور دیش پریم پیدا کیا۔ گوکھلے' لاجپت رائے' نورو جی' تلک' مہاتما گاندھی جیسے نیتاؤں کے بارے میں سمے سمے پر گیتوں کے روپ میں بہت کچھ انہوں نے لکھا ہے۔ بھارت ماتا کی وندنا' جھنڈا گیت' سوتنترتا کی اہمیت' بھارت کی اس سمے کی بری حالت اور اس سے چھٹکارا پانے کے طریقے وغیرہ ان کے گیتوں کے وشے تھے۔ "بندے ماترم" والے گیت میں وہ لکھتے ہیں—" ہم جات پات کا فرق نہیں مانیں گے۔ برہمن ہو یا ہریجن ہو سب بھارت ماتا کی اولاد ہیں۔ ہم آپس میں آج جھگڑا کرتے ہیں تو کل مل جائینگے۔ یہاں تیسرے کو آ کر بیچ بچاؤ کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔" آگے اپنے دیش واسیوں سے کوی کہتا ہے—"ہمیں یاد رکھنا چاہئے ایکتا میں ہی طاقت ہے۔ بھلا ہو یا برا سب میں برابر حصہ ہم سب کا ہے۔ ہم کبھی بھی اس غلامی کے جیون کو برداشت نہیں کریں گے۔ ہم تیس کروڑ لوگ یا تو جئیں گے' نہیں تو دیش کے لئے لڑتے لڑتے مر جائیں گے۔" کبھی کوی دیش واسیوں میں پرانا گورو یاد دلا کر اتساہ بھرتا ہے' کبھی بھارت کے دکھی جیون پر روتا ہے۔ کبھی اپنے دیش واسیوں کو ان کی کاترتا اور آلسیتا پر الہنا دیتا ہے' کبھی ان کو آگے چلنے کے لئے اکساتا ہے۔ انگریزوں نے دیش کے کئی نیتاؤں کو قید کیا۔ یہ دیکھکر کوی چپ نہیں رہ سکا' وہ کہہ اٹھا— [illegible]

[illegible] पांडेचरी चले गए. वहीं इनकी मुलाकात अरविंद से भेंट हुई. उन्हीं के साथ वह "दिव्यवेद" जैसे ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे. अरविंद के "कर्मयोगी" का तमिल में अनुवाद भारती ही करते थे. अरविंद के प्रभाव के कारन वह वेदान्त की बातों से भरी कवितायें और भजन लिखने लगे. "कर्मयोगी" नाम की पत्रिका में पतंजली के योग सूत्र का अनुवाद भी निकलता था.

भारती को पैसे की तकलीफ़ बहुत सताती थी उन्हें पांडेचरी का जीवन नागवार मालूम हुआ. वहां दस साल तक रहने के बाद वह फिर 1918 में मद्रास आए. सरकार ने पहले उन्हें क़ैद किया, पर बाद को छोड़ दिया. वह फिर से "स्वदेश मित्रन" दफ्तर में काम करने लगे. बड़े अफ़सोस की बात है कि इसके तीन साल बाद ही उनकी मौत हो गई. 1921 में चालीस बरस की उमर में वह इस दुनिया से चल बसे.

भारती कागज़ और क़लम लेकर कविता लिखने नहीं बैठते थे. समुन्दर के किनारे टहलते वक़्त, दोस्तों से बात करते वक़्त, उनके मन में जो ख़्याल आते थे. वह कविता के रूप में फूट पड़ते थे ऐसा कोई विशय नहीं है जिस के बारे में उन्होंने न लिखा हो. स्तुति (प्रार्थना) गीतों में गनेश स्तुति, महेश स्तुति, कार्तिकेय स्तुति, लक्ष्मी, सरस्वती वग़ैरा स्तुति गीत मशहूर हैं उन्होंने ख़ास कर शक्ति की वन्दना ज़ियादा की है. कृश्न की उन्होंने कई रूप में वन्दना की है. तमिल देश के वैश्नव संतों के ग्रन्थों की शैली और भावों का असर इन गीतों में है. श्री कृश्न को कवि ने माँ, बाप, दोस्त, नौकर, राजा, गुरु, चेला, बालक, प्रियतम, प्रियतमा वग़ैरा रूपों में देखा है. बालक कृश्न की कथा पढ़ते समय हमारे सामने बाल कृश्न की लुभावनी और ख़ूबसूरत तस्वीर खिंच जाती है. लड़कपन में उनकी शरारत, खेल वग़ैरा पर भारती के गीत पढ़ते ही बनते हैं. उन्होंने प्रियतम और प्रियतमा के रूप में कई गीतों में कृश्न का वर्नन किया है. प्रियतम की जुदाई में कभी प्रियतमा कांटे में फंसे कीड़े की तरह तड़पती है, कभी पिंजड़े में बन्द तोते की तरह बेचैन है. चारपाई पर लेटती है तो उसे नींद नहीं आती. माता और प्यारी सखियों की बात चीत भी उसे बुरी लगती है. ख़ुशबूदार फूल उसे पसन्द नहीं आते. उसकी यह हालत देखकर लोग क्यों चुप रहते. वह इस प्रेम रोग को नहीं समझ सके. हकीम और ज्योतिशी बुलाये गए. वह कुछ का कुछ बता कर चले गए. इसी तरह कई दिन कट गये. एक दिन उसने सपने में देखा कोई सुन्दर रूप उसके सामने खड़ा है. वह उसके पास आता है और उसे छूता है. वह ख़ुशी से फूल उठती है. इतने में नींद टूट जाती है. उसे चारों तरफ़ वही रूप दिखाई देता है. सभी चीज़ें ख़ूबसूरत दिखाई देने लगती हैं. प्रियतम और प्रियतमा

بھارتی کو چھوڑ کر پانڈیچری چلے گئے ۔ یہیں ان کی ملاقات اروند سے ہوئی ۔ انہیں کے ساتھ یہ رگ وید جیسے گرنتھوں کا ادھیین کرنے لگے ۔ اروند کے "کرمیوگی" کا تمل میں انوواد بھارتی ہی کرتے تھے ۔ اروند کے پربھاؤ کے کارن وہ ویدانت کی باتوں سے بھری کویتائیں اور بھجن لکھنے لگے ۔ "کرمیوگی" نام کی پتریکا میں پتنجلی کے یوگ سوتر کا انوواد بھی نکلتا تھا ۔

بھارتی کو پیسے کی تکلیف بہت ستاتی تھی۔ انہیں پانڈیچری کا جیون ناگوار معلوم ہوا ۔ وہاں دس سال تک رہنے کے بعد وہ پھر 1918 میں مدراس آئے ۔ سرکار نے پہلے انہیں قید کیا' پر بعد کو چھوڑ دیا ۔ وہ پھر سے "سودیش مترن" دفتر میں کام کرنے لگے۔ بڑے افسوس کی بات ہے کہ اس کے تین سال بعد ہی ان کی موت ہو گئی۔ 1921 میں' چالیس برس کی عمر میں وہ اس دنیا سے چل بسے ۔

بھارتی کاغذ اور قلم لے کر کویتا لکھنے نہیں بیٹھتے تھے ۔ سمندر کے کنارے ٹہلتے وقت' دوستوں سے بات کرتے وقت' ان کے من میں جو خیال آتے تھے' وہ کویتا کے روپ میں پھوٹ پڑتے تھے ۔ ایسا کوئی وشے نہیں ہے جس کے بارے میں انہوں نے نہ لکھا ہو ۔ استتی (پرارتھنا) گیتوں میں گنیش استتی مہیش استتی' کارتی کے استتی' لکشمی' سرسوتی وغیرہ کے استتی گیت مشہور ہیں۔ انہوں نے خاص کر شکتی کی وندنا زیادہ کی ہے۔ کرشن کی انہوں نے کئی روپ میں وندنا کی ہے ۔ تمل دیش کے وشنو سنتوں کے گرنتھوں کی شیلی اور بھاؤں کا اثر ان گیتوں میں ہے۔ شری کرشن کو کوی نے ماں' باپ' دوست' نوکر' راجہ' گرو' چیلا' بالک' پریتم' پریتما وغیرہ روپوں میں دیکھا ہے۔ بالک کرشن کی کتھا پڑھتے سمے ہمارے سامنے بال کرشن کی لبھاونی اور خوبصورت تصویر کھنچ جاتی ہے ۔ لڑکپن میں ان کی شرارت' کھیل وغیرہ پر بھارتی کے گیت پڑھتے ہی بنتے ہیں۔ انہوں نے پریتم اور پریتما کے روپ میں کئی گیتوں میں کرشن کا ورنن کیا ہے ۔ پریتم کی جدائی میں کبھی پریتما کانٹے میں پھنسے کیڑے کی طرح تڑپتی ہے۔ کبھی پنجرے میں بند طوطے کی طرح بے چین ہے۔ چارپائی پر لیٹتی ہے تو اسے نیند نہیں آتی۔ ماتا اور پیاری سکھیوں کی بات چیت بھی اسے بری لگتی ہے ۔ خوشبودار پھول اسے پسند نہیں آتے ۔ اس کی یہ حالت دیکھ کر لوگ کیوں چپ رہتے۔ وہ اس پریم روگ کو نہیں سمجھ سکے۔ حکیم اور جوتشی بلائے گئے ۔ وہ کچھ کا کچھ بتا کر چلے گئے۔ اسی طرح کئی دن کٹ گئے۔ ایک دن اس نے سپنے میں دیکھا کوئی سندر روپ اس کے سامنے کھڑا ہے ۔ وہ اس کے پاس آتا ہے اور اسے چھوتا ہے ۔ وہ خوشی سے پھول اٹھتی ہے ۔ اتنے میں نیند ٹوٹ جاتی ہے ۔ اسے چاروں طرف وہی روپ دکھائی دیتا ہے ۔ سبھی چیزیں خوبصورت دکھائی دینے لگتی ہیں ۔ پریتم اور پریتما

तमिल भाषा के महान कवि सुब्रह्मन्य भारती

(एम. सुब्रह्मण्यम)

श्री सुब्रह्मन्य भारती का जन्म तमिलनाद के तिरुनेलवेली जिले में सन 1882 में हुआ था. पिता एक छोटी रियासत में नौकरी करते थे. वह तमिल, संस्कृत और अंगरेजी के विद्वान थे. वह चाहते थे कि उनका पुत्र ऊंची शिक्षा पाकर अच्छी नौकरी करे. लेकिन उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई. एक तो 15 बरस की उम्र में ही भारती के पिता का स्वर्गवास हो गया और दूसरे भारती को अंगरेजी ढंग की शिक्षा पसन्द भी नहीं थी. पिताजी के स्वर्गवास के बाद वह अपनी बुआ के घर, बनारस आए. यहां उन्होंने संस्कृत, हिन्दी और अंगरेजी सीखी. इलाहाबाद बोर्ड का एन्ट्रन्स (Entrance) का इम्तहान उन्होंने पहली श्रेणी में पास किया. काफी दिन उत्तर में रहने के कारन वह हिन्दी स्वाभाविक ढंग से और तेजी से बोल लेते थे.

भारती 1901 में फिर दक्खिन आए और एक स्कूल में अध्यापक रहे. कुछ ही महीनों में वहां से निकल कर मशहूर तमिल अखबार "स्वदेश मित्रन" के सहायक सम्पादक बने. वह दफ्तर के बंधन को पसन्द नहीं करते थे. जब चाहते दफ्तर आते और जब चाहते लेख लिखते. पर जब लिखने बैठते तब सुन्दर अक्षर में चन्द मिनटों ही में पन्ने के पन्ने लिख डालते. वहां ढाई बरस ही रहे. इसके बाद खुद "इन्डिया" नाम का हफ्तेवारी अखबार निकालने लगे. अब उनकी प्रतिभा (जहन) को लोग समझने लगे थे.

जैसे वह एक सफल कवि और लेखक थे वैसे ही भाषण देने में भी वह सफल थे. यह जमाना ऐसा था जब सारे देश में आजादी का आन्दोलन जोरों से चल रहा था. इसका असर भारती पर पड़े बिना कैसे रह सकता था. देश भक्ति के भावों से भरी कविताओं, जज़बे से भरे लेखों, व्यंगात्मक चित्रों के लिये उन दिनों उनका अखबार मशहूर था. यह अखबार पढ़ कर कई लोग जो शासकों के भक्त थे आजादी आन्दोलन में भाग लेने लगे. उन दिनो लोगों में जो जागृति पैदा हुई उसका सेहरा कवि भारती के सर है. बंगाल के बटवारे, लाला लाजपत राय के देश से निकाले जाने, विपिन चन्द्रपाल के जेल जाने जैसी घटनाओं के खिलाफ आवाज उठाना इस अखबार की नीति थी. ब्रिटिश सरकार इसे कैसे बरदाश्त कर सकती थी. पहले 'इन्डिया' के प्रकाशक को सरकार ने क़ैद किया. उसके बाद भारती का नम्बर था. दोस्तों के कहने सुनने पर वह ब्रिटिश

تمل بھاشا کے مہان کوی سبرامنیہ 'بھارتی'

(ایم . سبرامنیم)

شری سبرامنیہ بھارتی کا جنم تمل ناڈ کے ترنیل ویلی ضلع میں سن 1882 میں ہوا تھا. پتا ایک چھوٹی ریاست میں نوکری کرتے تھے . وہ تمل' سنسکرت اور انگریزی کے ودوان تھے . وہ چاہتے تھے کہ اُنکا پتر اونچی شکشا پاکر اچھی نوکری کرے . لیکن اُن کی اِچھا پوری نہیں ہوئی . ایک تو 15 برس کی عمر میں ہی بھارتی کے پتا کا سورگ واس ہو گیا اور دوسرے بھارتی کو انگریزی ڈھنگ کی شکشا پسند بھی نہیں تھی . پتا جی کے سورگ واس کے بعد وہ اپنی بوا کے گھر بنارس آئے . یہاں انہوں نے سنسکرت' ہندی اور انگریزی سیکھی . الہ آباد بورڈ کا انٹرنس (Entrance) کا اِمتحان اُنہوں نے پہلی شرینی میں پاس کیا. کافی دن اتر میں رہنے کے کارن وہ ہندی سوبھاوک ڈھنگ سے اور تیزی سے بول لیتے تھے .

بھارتی 1901 میں پھر دکھن آئے اور ایک اسکول میں ادھیاپک رہے . کچھ ہی مہینوں میں وہاں سے نکل کر مشہور تمل اخبار ''سودیش مترن'' کے سہایک سمپادک بنے . وہ دفتر کے بندھن کو پسند نہیں کرتے تھے . جب چاہتے دفتر آتے اور جب چاہتے لیکھ لکھتے . پر جب لکھنے بیٹھتے تب سندر اکشر میں چند منٹوں ہی میں پنے کے پنے لکھ ڈالتے . یہاں ڈھائی برس ہی رہے . اس کے بعد خود 'اِنڈیا' نام کا ہفتےواری اخبار نکالنے لگے. اب اُن کی پرتبھا (ذہن) کو لوگ سمجھنے لگے تھے .

جیسے وہ ایک سپھل کوی اور لیکھک تھے ویسے ہی بھاشن دینے میں بھی وہ سپھل تھے . یہ زمانہ ایسا تھا جب سارے دیش میں آزادی کا آندولن زوروں سے چل رہا تھا . اِس کا اثر بھارتی پر پڑے بنا کیسے رہ سکتا تھا. دیش بھکتی کے بھاؤوں سے بھری کویتاؤں' جذبے سے بھرے لیکھوں' ویانگ آتمک چتروں کے لئے اُن دنوں ان کا اخبار مشہور تھا . یہ اخبار پڑھ کر کئی لوگ جو شاسکوں کے بھکت تھے آزادی آندولن میں بھاگ لینے لگے . اُن دنوں لوگوں میں جو جاگرتی پیدا ہوئی اس کا سہرا کوی بھارتی کے سر ہے . بنگال کے بٹوارے' لالہ لاجپت رائے کے دیش سے نکالے جانے' بپن چندر پال کے جیل جانے جیسی گھٹناؤں کے خلاف آواز اٹھانا اِس اخبار کی نیتی تھی . برٹش سرکار اسے کیسے برداشت کر سکتی تھی . پہلے 'انڈیا' کے پرکاشک کو سرکار نے قید کیا . اُس کے بعد بھارتی [illegible] سننے پر وہ برٹش

की [illegible]. अगर जेलखानों में ऊंचे दर्जे के आदमी न पहुंच पाएं तो जेलखाने की शान चौपट हो जाए. यह छोटी छोटी बातें आपके वर्धा ग्रुप की क्यों समझ में नहीं आतीं.

बापू, आपके ज़माने में जेलों की जो शान थी आज कांग्रेसी सरकार की कृपा से वह शान बढ़ी नहीं तो घटी भी नहीं है. बापू हम अन्दाज़े से कह रहे हैं. हो सकता है पहले से बढ़ गई हो.

बापू, आप जिस जगह हैं वहां तो नींद का सवाल नहीं. पर हमें तो आपको कहानी सुनाते सुनाते नींद आने लगी है, सारी बात हमने कह भी दी है. बस अन्त में हम यह कह कर अपनी कहानी ख़त्म करते हैं कि आप जहां भी हों बेफ़िक्र रहिये. आपके चेली चेलों के हाथ में हिन्दुस्तान इतना सुरक्षित है और इतना जन धन वाला हो गया है कि चाहे अंग्रेज़ आ कर हमारे यहां से आदमी बटोरें, चाहे और कोई दूसरा मुल्क हमारे यहां से धन बटोरे, हमारे जन धन के भंडार में कमी नहीं हो सकती ! जगह तो हमारे यहां इतनी पड़ी है कि कोई बाहर से आ कर पच्चीस बरस के पट्टे पर मुफ़्त ले ले !

बापू, अब विदा लेते हैं.

—भगवानदीन

کی شان خاک میں کیسے لوگوں کی شان ایسی ہوگی۔ اگر جیل خانوں میں اونچے درجے کے آدمی نہ پہنچ پائیں تو جیل خانے کی شان نہ گھٹ جائے۔ یہ چھوٹی چھوٹی باتیں جانے وردھا گروپ کی کیوں سمجھ میں نہیں آتیں۔

باپو، آپ کے زمانے میں جیلوں کی جو شان تھی آج کانگریسی سرکار کی کرپا سے وہ شان بڑھی نہیں تو گھٹی بھی نہیں ہے۔ باپو ہم اندازے سے کہہ رہے ہیں۔ ہوسکتا ہے پہلے سے بڑھ گئی ہو۔

باپو، آپ جس جگہ ہیں وہاں تو نیند کا سوال نہیں۔ پر ہمیں تو آپ کو کہانی سناتے سناتے نیند آنے لگی ہے، ساری بات ہم نے کہہ بھی دی ہے۔ بس انت میں ہم یہ کہہ کر اپنی کہانی ختم کرتے ہیں کہ آپ جہاں بھی ہوں بے فکر رہئے۔ آپ کے چیلی چیلوں کے ہاتھ میں ہندستان اتنا سرکشت ہے اور اتنا جن دھن والا ہوگیا ہے کہ چاہے انگریز آکر ہمارے یہاں سے "آدمی بٹوریں" چاہے اور کوئی ملک ہمارے یہاں سے دھن بٹورے، ہمارے جن دھن کے بھنڈار میں کمی نہیں ہوسکتی! جگہ تو ہمارے یہاں اتنی پڑی ہے کہ کوئی باہر سے آکر پچیس برس کے پٹے پر مفت لے لے!

باپو، اب بدا لیتے ہیں۔

—بھگوان دین

"ग़रीबों पर ख़ुदा का यह बड़ा एहसान बाक़ी है
कि दुनिया में अभी तक उनका क़ब्रिस्तान बाक़ी है
नचा जाते हैं लेकर ख़ुदा का नाम इनसां को
धरम के ठेकेदारों का मगर ईमान बाक़ी है
बहा ले जाए जो ज़ुल्मो सितम को सारी दुनिया से
ज़माने में अभी आने को वह तूफ़ान बाक़ी है
जहां बिकती है रोटी के एवज़ इनसानियत नाज़ुक
सितम है अन्नदाताओं की वह दूकान बाक़ी है
ग़रीबों से मिलेगा भोग क्या भगवान को नाज़ुक
जहां रोटी के बदले सिर्फ़ उनकी जान बाक़ी है"

—नाज़ुक इलाहाबादी

"غریبوں پر خدا کا یہ بڑا احسان باقی ہے
کہ دنیا میں ابھی تک اُن کا قبرستان باقی ہے
نچائے جاتے ہیں لے کر خدا کا نام انسان کو
دھرم کے ٹھیکیداروں کا مگر ایمان باقی ہے
بہالے جائے جو ظلم و ستم کو ساری دنیا سے
زمانے میں ابھی آنے کو وہ طوفان باقی ہے
جہاں بکتی ہے روٹی کے عوض انسانیت نازک
ستم ہے اُن داتاؤں کی وہ دوکان باقی ہے
غریبوں سے ملیگا بھوگ کیا بھگوان کو نازک
جہاں روٹی کے بدلے صرف اُن کی جان باقی ہے"

—نازک الہ آبادی

[illegible] रक्षा के लिये जाने वाली फ़ौज को आशीर्वाद भी दिया था. फिर हम खद्दर पहन कर या चर्खा कात कर या गाय के घी दूध की प्रतिज्ञा कर के या 'रघुपति राघव राजाराम' गा कर शिकार खेल लिया करें तो इसमें बुराई क्या है ?

बापू, हमने अपनी आंखों आपको देखा है. आपने ऐसे ऐसों को अपने साथ लिया जो आपका कोई भी धर्म न निभाते थे. पर जब उनमें से एक ने भी आपका कोई एक भी धर्म अपनाया तो आपने उसको नीचे से उठा कर इतना ऊंचा कर दिया कि अनेकों धर्म के धारी उसे ईर्षा की नज़र से देखने लगे. बापू जैसे आप लोगों की परवाह नहीं करते थे वैसी ही हम क्यों परवाह करने लगे. जब हम सुबह सुबह 'रघुपति राघव राजा राम' बोल चुके, तो और क्या चाहिये. फिर हम उन लोगों को कहां रोकते हैं जो कोई चार धर्म निभा रहा है, कोई पांच, कोई दस, कोई ग्यारह. हां, हम यह ज़रूर समझते हैं 'कि ईश्वर के दरबार में यह अनेकों धर्म अपनाने वाले भी वैसे ही अपराधी की तरह खड़े होंगे जैसे हम एक धर्म अपनाने वाले. उस वक़्त आप उन अनेक धर्म निभाने वालों की ईश्वर से ऐसी ही सिफ़ारिश करेंगे जैसे हम एक धर्म निभाने वाले की. फिर हम ज़ियादा दांत किट किट क्यों करें ! बापू, हमें आप पर पूरा भरोसा है. शायद इन अनेक धर्मों के भूखों को आपका भरोसा नहीं. अपने बल का भरोसा है.

बापू, आप तो हमें आगे लिये चले जा रहे थे. आपके सच्चे साथी, सच्चे चेले, यह कांगरेस वाले भी आज हमें दुनिया की दौड़ में आगे ले जाने की कोशिश में हैं. इसमें भी क्या बुरा है अगर वह अमरीका से पैसे की, औज़ारों की और समझदारी की भीख मांग लेते हैं. वह मांगते तो हमें आगे बढ़ाने के लिये ही हैं. आप भी तो बापू कभी कभी खद्दर का काम बढ़ाने के लिये लाट साहब से कह सुन कर अंगरेज़ी सरकार से किसी किसी को बाउन्टी दिलवा दिया करते थे. फिर न जाने क्यों यह बर्धा ग्रुप आए दिन जवाहरलाल और कांगरेसी सरकार के पीछे पड़ा रहता है और कहता है—हमको ट्रैक्टर नहीं चाहिये, हमको बिजली के कारख़ाने नहीं चाहिये, हमको अमरीका की मदद नहीं चाहिये, हमको बड़ी बड़ी तनख़ाहें नहीं चाहिये, हमको बड़े बड़े महल नहीं चाहिये. तब फिर क्या वीरान हिन्दुस्तान चाहिये !! रही दौड़ में आगे बढ़ने की बात. दौड़ में आगे पीछे का सिलसिला तो लगा ही रहता है. जो कमज़ोर होते हैं वह गिर कर मर भी जाते हैं. उन कमज़ोरों की परवाह की जाय तो जीत चुके दौड़ की बाज़ी. पैदावारी की दौड़ में कमज़ोर किसानों को मरना ही पड़ेगा. रोज़गार की दौड़ में [illegible] आदमियों को बेकार रहना ही पड़ेगा. हुकूमत

آپ نے کشمیر رکشا کے لئے جانے والی فوج کو آشیرواد بھی دیا تھا. پھر ہم کھدر پہن کر یا چرخہ کات کر یا گئو کے گھی دودھ کی پرتگیا کر کے یا 'رگھوپتی راگھو راجا رام' گا کر شکار کھیل لیا کریں تو اس میں برائی کیا ہے ؟

باپو، ہم نے اپنی آنکھوں آپ کو دیکھا ہے . آپ نے ایسے ایسوں کو اپنے ساتھ لیا جو آپ کا کوئی بھی دھرم نہ نبھاتے تھے . پر جب ان میں سے ایک نے بھی آپ کا کوئی ایک بھی دھرم اپنایا تو آپ نے اس کو نیچے سے اٹھا کر اتنا اونچا کر دیا کہ انیکوں دھرم کے دھاری اسے ایرشا کی نظر سے دیکھنے لگے . باپو جیسے آپ لوگوں کی پرواہ نہیں کرتے تھے ویسی ہی ہم کیوں پرواہ کرنے لگے . جب ہم صبح صبح 'رگھوپتی راگھو راجا رام' بول چکے تو اور کیا چاہئے . پھر ہم ان لوگوں کو کہاں روکتے ہیں جو کوئی چار دھرم نبھا رہا ہے، کوئی پانچ کوئی دس، کوئی گیارہ. ہاں، ہم یہ ضرور سمجھتے ہیں کہ ایشور کے دربار میں یہ انیکوں دھرم اپنانے والے بھی ویسے ہی اپرادھی کی طرح کھڑے ہونگے جیسے ہم ایک دھرم اپنانے والے . اس وقت آپ ان انیک دھرم نبھانے والوں کی ایشور سے ایسی ہی سفارش کرینگے جیسے ہم ایک دھرم نبھانے والے کی . پھر ہم زیادہ دانت کٹ کٹ کیوں کریں ! باپو، ہمیں آپ پر پورا بھروسہ ہے . شاید ان انیک دھرموں کے بھوکوں کو آپ کا بھروسہ نہیں، اپنے بل کا بھروسہ ہے .

باپو، آپ تو ہمیں آگے لئے چلے جا رہے تھے. آپ کے سچے ساتھی، سچے چیلے، یہ کانگریس والے بھی آج ہمیں دنیا کی دوڑ میں آگے لے جانے کی کوشش میں ہیں. اس میں بھی کیا برا ہے اگر وہ امریکہ سے پیسے کی، اوزاروں کی اور سمجھداری کی بھیک مانگ لیتے ہیں. وہ مانگتے تو ہمیں آگے بڑھانے کے لئے ہی ہیں . آپ بھی تو باپو کبھی کبھی کھدر کا کام بڑھانے کے لئے لاٹ صاحب سے کہہ سن کر انگریزی سرکار سے کسی کسی کو باؤنٹی دلوا دیا کرتے تھے . پھر نہ جانے کیوں یہ وردھا گروپ آئے دن جواہر لال اور کانگریس سرکار کے پیچھے پڑا رہتا ہے اور کہتا ہے ''ہم کو ٹریکٹر نہیں چاہئیے، ہم کو بجلی کے کارخانے نہیں چاہئیے، ہم کو امریکہ کی مدد نہیں چاہئیے، ہم کو بڑی بڑی تنخواہیں نہیں چاہئیں، ہم کو بڑے بڑے محل نہیں چاہئیے. تب پھر کیا ویران ہندستان چاہئیے!! رہی دوڑ میں آگے بڑھنے کی بات . دوڑ میں آگے پیچھے کا سلسلہ تو لگا ہی رہتا ہے . جو کمزور ہوتے ہیں وہ گر کر مر بھی جاتے ہیں . ان کمزوروں کی پرواہ کی جائے تو [illegible] . پیداواری کی دوڑ میں کمزور [illegible] . روزگار کی دوڑ میں [illegible] . حکومت

[illegible] किसी की [illegible]. [illegible] के धर्म का [illegible] कैसा ? [illegible] कातने का धर्म ब हमने अपने सिर पर ओढ़ लिया तब यह जरूरी नहीं हम अपने सिर पर खद्दर पहनने का धर्म भी लादें. यह दो बोझ तो बापू हमसे न निभेंगे.

बापू क्या हम एक धर्म से न तरेंगे ! सुना है हजरत मोहम्मद सिर्फ एक कलमा पढ़ने वाले को, फिर चाहे वह मुसलमान हो या हिन्दू, ईश्वर से कुछ कह सुन कर माफ़ करवा देते हैं. तो क्या आप हमें माफ़ न करवा देंगे !

ओ हो बापू ! आप तो नाराज़ हो कर यह बेकार ही कह रहे हैं—"हम तुम्हारी हरगिज़ सिफारिश नहीं करेंगे, हम तुम्हारी हरगिज़ सिफ़ारिश नहीं करेंगे." हम आपकी आदत से वाक़िफ़ हैं. यह तो सब आप प्यार में बिगड़ कर कह रहे हैं. जब हम सचमुच आपके सामने होंगे तो आपको दया आ ही जायगी. इस दुनिया की किसी सज़ा से हम नहीं डरते. हम तो सिर्फ़ ईश्वर की सज़ा से डरते हैं. जब आपने अपने पर गोली चलाने वाले तक को माफ़ कर दिया तो हमारे लिये आप कुछ न करें यह हम मान ही नहीं सकते ! आप यह पूछेंगे कि यह हमें कैसे मालूम हुआ कि आपने अपने गोली मारने वाले को ईश्वर की सज़ा से बचा लिया. इसका जवाब सीधा सादा है. इस दुनिया में जब आपके बेटे ने उसे माफ़ कर दिया, यह दूसरी बात है कि आप के चेलों ने भले ही उसे माफ़ न किया हो, तो हम कैसे मान सकते हैं कि आपने उसको ईश्वर की सज़ा से न बचवा दिया हो.

बापू, आपके अनेकों धर्म हैं. आप के ग्यारह धर्मों को तो आपके जीते जी ही संस्कृत की श्लोक नामी सुन्दर [illegible]ली में शायद विनोबा जी ने बांध कर धर दिया था. कुछ इधर उधर बिखरे भी रह गए थे. हो सकता है उनको भी किसी ने थैली में बांधा हो. वह ग्यारह ही एक साथ उठाना हमारे क़ाबू से बाहर है. सब के उठाने की बात ही कौन करे ?

बापू, बस आपको तो इतने में ही हमसे खुश हो जाना चाहिये कि हम खद्दर पहन कर चाहे कुछ करें, रिश्वत लेना चाहें रिश्वत लें, बड़े बड़े महलों में रहना चाहें महलों में रहें, बड़े बड़े कारखाने खोलना चाहें कारखाने खोलें और अगर कभी मौज आ जाय तो शिकार भी खेल लिया करें. आखिर बापू यह भी तो सोचिये कि आप हमारे सुपुर्द हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त का काम कर गए हैं. क्या वह बग़ैर फ़ौजों की मदद के हो सकता है ? जब उसके लिये हमें फ़ौज में भरती [illegible] ही होगा तो शिकार में उसकी [illegible] थे ते [illegible] हैं. बापू, कश्मीर की लड़ाई तो [illegible] थी. [illegible] के हाथों में

لیا کریں . چاہے وہ کسی بھی پہلو میں کیوں نہ آوے . دھرم نبھانے میں دام کا سوال کیسا ؟ چرخہ کاتنے کا دھرم جب ہم نے اپنے سر پر اوڑھ لیا تب یہ ضروری نہیں کہ ہم اپنے سر پر کھدر پہننے کا دھرم بھی لادیں . یہ دو دو بوجھ تو باپو ہم سے نہ نبھیں گے .

باپو کیا ہم ایک دھرم سے نہ تریں گے ! سنا ہے حضرت محمد صرف ایک کلمہ پڑھنے والے کو، پھر چاہے وہ مسلمان ہو یا ہندو ایشور سے کچھ کہہ سن کر معاف کروا دیتے ہیں، تو کیا آپ ہمیں معاف نہ کروا دیں گے !

او ہو باپو ! آپ تو ناراض ہو کر یہ بیکار ہی کہہ رہے ہیں—" ہم تمہاری ہرگز سفارش نہیں کرینگے، ہم تمہاری ہرگز سفارش نہیں کرینگے ." ہم آپ کی عادت سے واقف ہیں . یہ تو سب آپ پیار میں بگڑ کر کہہ رہے ہیں. جب ہم سچ مچ آپ کے سامنے ہونگے تو آپکو دیا آ ہی جائے گی . اس دنیا کی کسی سزا سے ہم نہیں ڈرتے . ہم تو صرف ایشور کی سزا سے ڈرتے ہیں جب آپ نے اپنے پر گولی چلانے والے تک کو معاف کر دیا تو ہمارے لئے آپ کچھ نہ کریں یہ ہم مان ہی نہیں سکتے ! آپ یہ پوچھیں گے کہ یہ ہمیں کیسے معلوم ہوا کہ آپ نے اپنے گولی مارنے والے کو ایشور کی سزا سے بچا لیا . اس کا جواب سیدھا سادا ہے . اس دنیا میں جب آپ کے بیٹے نے اسے معاف کر دیا، یہ دوسری بات ہے کہ آپکے چیلوں نے بھلے ہی اسے معاف نہ کیا ہو، تو ہم کیسے مان سکتے ہیں کہ آپ نے اس کو ایشور کی سزا سے نہ بچوا دیا ہو .

باپو، آپ کے انیکوں دھرم ہیں . آپ کے گیارہ دھرموں کو تو آپ کے جیتے جی ہی سنسکرت کی اشلوک نامی سندر تھیلی میں شاید ونوبا جی نے باندھ کر دھر دیا تھا . کچھ ادھر ادھر بکھرے بھی رہ گئے تھے . ہوسکتا ہے ان کو بھی کسی نے تھیلی میں باندھا ہو . وہ گیارہ ہی ایک ساتھ اٹھانا ہمارے قابو سے باہر ہے . سب کے اٹھانے کی بات ہی کون کرے ؟

باپو، بس آپ کو تو اتنے میں ہی ہم سے خوش ہو جانا چاہئے کہ ہم کھدر پہن کر چاہے کچھ کریں، رشوت لینا چاہیں رشوت لیں، بڑے بڑے محلوں میں رہنا چاہیں محلوں میں رہیں، بڑے بڑے کارخانے کھولنا چاہیں کارخانے کھولیں اور اگر کبھی موج آ جائے تو شکار بھی کھیل لیا کریں . آخر باپو یہ بھی تو سوچئے کہ آپ ہمارے سپرد ہندستان کی حفاظت کا کام کر گئے ہیں . کیا وہ بغیر فوجوں کی مدد کے ہوسکتا ہے ؟ جب اسکے لئے ہمیں فوج میں بھرتی ہونا ہی پڑیگا تو شکار میں اس کی ابھیاس بھی آ گئی کیوں نہ سیکھ لیں . باپو، کشمیر کی لڑائی تو آپ کے جیتے جی چھڑ گئی تھی . سردار پٹیل کے شبدوں میں

अगर अमरीका वाले अपने तरीक़े की खेती हमारे हिन्दुस्तान में फैला कर हमारे लिये गाय और गोवंश की बिल्कुल ज़रूरत न रहने दें और फिर कहीं चिड़िया घरों में ही देखने के लिये ही गाय बैल रह जायं तो भी हम अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने वाले नहीं. बापू गाय का और ख़ालिस गाय का दूध पिये बग़ैर भी हम रहने वाले नहीं, क्योंकि हमको मालूम है कि 'किम' नाम से आने वाले विदेशी डिब्बों में ख़ालिस गाय का दूध रहता है. कहिये बापू सूझ में हम आप से बढ़ गए या नहीं? अब ज़रा ठोक दीजिये हमारी पीठ.

हम ऐसी मूर्खता कभी नहीं करेंगे कि गाय पालें और रात भर अपनी नींद हराम करें. दस रुपये सेर क्या पचीस रुपये सेर गाय का घी क्यों न मिले हम वर्धा की डेरी से ही मंगा कर खाया करेंगे, क्योंकि वर्धा आप के चरन कमल से पवित्र हो चुका है. मुसलमान मक्का से मंगा कर ज़मज़म नामी कुएँ का 'आबे ज़मज़म' यानी 'ज़मज़म जल' और मैसौर मद्रास में रहने वाले हिन्दू गंगोत्री, हरिद्वार, प्रयाग से मंगा कर गंगा जल पीते हैं. तो क्या हम गांधी वादी ऐसे गये बीते हैं कि परमधाम के पास वर्धा से हम घी मंगा कर भी न खा सकें. रही बापू खद्दर पहनने की बात. देखिये यह दो दो बोझ हमारे सिर पर न डालिये. एक ही के मारे चांद गंजी हुई जा रही है और थैली हल्की होती जा रही है. यह खद्दर पहनने का धर्म तो बापू आपके जीते जी जनरल अवारी ने अपने सिर ले लिया था. उन्हीं जनरल अवारी ने जिन्होंने आपके सिर 108 इल्ज़ाम लगाए थे, और जिन इल्ज़ामों की बाक़ायदा एक किताब भी छाप दी थी. वह जनरल अवारी हर तरह वैसा करने के योग्य थे, और आज भी आप पर इल्ज़ाम लगाना चाहें तो वह हर तरह समर्थ हैं. बापू जितने ज़ोर से उन्होंने खद्दर धर्म निभाया उतनी हिम्मत के साथ क्या कोई दूसरा निभा सकता है? इस खद्दर धर्म के भारी बोझ से जनरल अवारी की खोपड़ी के बाल उड़ गए हो सकता है और भी कई धर्म उनके सिर पर हों. पर उनका खद्दर धर्म तो दुनिया में मशहूर है. खद्दर न पा सकने की वजह से वह महीनों जेल में नंगे रहे और खद्दर ही लेकर छोड़ा. खद्दर के मामले में बापू आप जनरल अवारी से बहुत पीछे रहे. आप ने तो अपनी अपेन्डी-साइटिस की बीमारी में पूना के ससून अस्पताल में मिल की नहीं विलायती कपड़े की पट्टी बांध ली थी.

ओ हो बापू! अब पता चला आप कभी कभी अपना कोई कोई बोझ सिर पर से उतार कर सुस्ता लेते थे. पर हम आपकी इस चाल को मानने वाले नहीं हम तो जिस धर्म को अपनायेंगे उसको पूरी तरह अपनायंगे देखिये बापू हम चर्खा कातते हैं, रुई धुनना हमको नहीं आता. तो क्यों न हम तीर्थ स्थान वर्धा से पारसल के ज़रिये पूनी मंगा

اگر امریکہ والے اپنے طریقے کی کھیتی ہمارے ہندستان میں پھیلا کر ہمارے لئے گائے اور گوونش کی بالکل ضرورت نہ رہنے دیں اور پھر کہیں چڑیا گھروں میں ہی دیکھنے کے لئے ہی گائے بیل رہ جائیں تو بھی ہم اپنی پرتگیا توڑنے والے نہیں. باپو گائے کا اور خالص گائے کا دودھ پئے بغیر بھی ہم رہنے والے نہیں' کیونکہ ہم کو معلوم ہے کہ 'کم' نام سے آنے والے ودیشی ڈبوں میں خالص گائے کا دودھ رہتا ہے. کہئے باپو سوجھ میں ہم آپ سے بڑھ گئے یا نہیں؟ اب ذرا ٹھوک دیجئے ہماری پیٹھ!

ہم ایسی مورکھتا کبھی نہیں کرینگے کہ گائے پالیں اور رات بھر اپنی نیند حرام کریں. دس روپے سیر کیا پچیس روپے سیر گائے کا گھی کیوں نہ ملے ہم وردھا کی ڈیری سے ہی منگا کر کھایا کریں گے. کیونکہ وردھا آپ کے چرن کمل سے پوتر ہو چکا ہے. مسلمان مکہ سے منگا کر زم زم نامی کوئیں کا 'آب زم زم' یعنی زم زم جل اور میسور مدراس میں رہنے والے ہندو گنگوتری ' ہردوار ' پریاگ سے منگا کر گنگا جل پیتے ہیں. تو کیا ہم گاندھی وادی ایسے گئے بیتے ہیں کہ پرمدھام کے پاس وردھا سے ہم گھی منگا کر بھی نہ کھا سکیں. رہی باپو کھدر پہننے کی بات. دیکھئے یہ دو دو بوجھ ہمارے سر پر نہ ڈالئے. ایک ہی کے مارے چاند گنجی ہوئی جا رہی ہے اور تھیلی ہلکی ہوتی جا رہی ہے. یہ کھدر پہننے کا دھرم تو باپو آپ کے جیتے جی جنرل اواری نے اپنے سر لے لیا تھا. انہیں جنرل اواری نے جنہوں نے آپ کے سر 108 الزام لگائے تھے اور جن الزاموں کی باقاعدہ ایک کتاب بھی چھاپ دی تھی وہ جنرل اواری ہر طرح ویسا کرنے کے یوگ تھے اور آج بھی آپ پر الزام لگانا چاہیں تو وہ ہر طرح سمرتھ ہیں. باپو جتنے زور سے انہوں نے کھدر دھرم نبھایا اتنی ہمت کے ساتھ کیا کوئی دوسرا نبھا سکتا ہے؟ اس کھدر دھرم کے بھاری بوجھ سے جنرل اواری کی کھوپڑی کے بال اڑ گئے. ہو سکتا ہے اور بھی کئی دھرم ان کے سر پر ہوں. پر ان کا کھدر دھرم تو دنیا میں مشہور ہے. کھدر نہ پا سکنے کی وجہ سے وہ مہینوں جیل میں ننگے رہے اور کھدر ہی لیکر چھوڑا. کھدر کے معاملے میں باپو آپ جنرل اواری سے بہت پیچھے رہے. آپ نے تو اپنی اپنڈیسائٹس کی بیماری میں پونا کے سسون اسپتال میں مل کی نہیں ولایتی کپڑے کی پٹی باندھ لی تھی.

اوہو باپو! اب پتہ چلا. آپ کبھی کبھی اپنا کوئی کوئی بوجھ سر سے اتار کر سستا لیتے تھے. پر ہم آپکی اس چال کو ماننے والے نہیں. ہم تو جس دھرم کو اپنائینگے اس کو پوری طرح اپنائیں گے. دیکھئے باپو ہم چرخہ کاتتے ہیں. روئی دھننا ہم کو نہیں آتا. تو کیوں نہ ہم تیرتھ ستھان وردھا سے پارسل کے ذریعے پونی منگا

बापू से

बापू जिस बोझ को आप अकेले संभाल लेते थे वह आज हम सब मिल कर भी ठीक ठीक संभाल नहीं पाते. क़दम क़दम पर ठोकर खाते हैं, पांव लड़खड़ाने लगते हैं. ज़रा ज़रा देर में कमर में लचक आने लगती है. गरदन तो ऐसी मालूम होती है मानो बोझ से पिच पिच कर रहने ही न पायगी और खोपड़ी के बाल चाहे अभी ख़त्म न हुए हों पर ज़रूर जल्दी ख़त्म हो जायंगे. और बालों की तो कोई बात नहीं. इस दुनिया भर के बोझ से बाल तो आपके सिर के भी उड़ गए थे. पर यहां तो बाल उड़ने के साथ खोपड़ी ऐसी पिलपिली हुई जा रही है जैसे पाल का पका आम. इस पिलपिलेपन को भी भुगत लेते, पर बापू यह तो दुखती भी है और बुरी तरह पिराती है.

'बैस्नव जन तो तैने कहिये जे पीर पराई जाने रे.'

इस गीत में भी जो आपको बेहद प्यारा था, लिखने वाले को यह भी न सूझा जो इसमें अपनी पीर जानने की बात भी लिख देता. पीर पराई जानने से तो लिखने वाले का यही मतलब था ना, कि दूसरे की तकलीफ़ देख कर उसकी तकलीफ़ दूर करने में लग जाना. और बापू, जो हमारी तकलीफ़ दूसरा जाने ही नहीं और हम भी अपनी न जानें तब तो हम मरे बुरी मौत.

यह तो है हमारी खोपड़ी की पीर का हाल. और यह जब है जब इस खोपड़ी पर सिर्फ़ एक ही बोझ है. कहीं हम आपकी देखा देखी अनगिनत बोझ सिर पर लाद बैठें तो न जाने हमारा क्या हाल हो. हम तो समझते हैं कि हमारा और भी अजब तरह का हाल हो. थोड़ी मुसीबत ज़ाहिर तो हो सकती है.

'मुसीबत हद से जब गुज़री तो ज़ाहिर हो नहीं सकती.'

यह जो पुराने लोग कह गए हैं तो क्या कोई झूठ कह गए हैं? तजरबा करके ही तो बात कही होगी. इसलिये बापू हमारी हिम्मत नहीं होती कि हम बहुत सा बोझ अपने सिर पर लें. बापू, आप भी तो भूल कर गए कि इस दुनिया को छोड़ने से पहले हमें यह सफल पल्लेदारी की कला न सिखा गए.

सुनिये हमारी मुसीबत. हमने क़सम खा ली है कि हम गाय का ही दूध पियेंगे, उसी का दही, मट्ठा और घी खायेंगे. बन पड़ा तो अपने बच्चे को उसकी मां के पेट से बाहर आने के बाद उसकी मां का दूध नहीं पीने देंगे. पैदा होने के दिन ही हम उसके सिर गाय के दूध पीने रूपी प्रतिज्ञा की पगड़ी बांध देंगे. हम दुनिया के सामने यह साबित कर देंगे कि बापू हम आपके बताए धर्म पर इतने पक्के टिके हुए हैं जितने शायद आप भी न रहे होंगे.

باپو سے

باپو جس بوجھ کو آپ اکیلے سنبھال لیتے تھے وہ آج ہم سب مل کر بھی ٹھیک ٹھیک سنبھال نہیں پاتے۔ قدم قدم پر ٹھوکر کھاتے ہیں، پاؤں لڑکھڑانے لگتے ہیں۔ ذرا ذرا دیر میں کمر میں لچک آنے لگتی ہے۔ گردن تو ایسی معلوم ہوتی ہے مانو بوجھ سے پچ پچ کر رہنے ہی نہ پائیگی اور کھوپڑی کے بال چاہے ابھی ختم نہ ہوئے ہوں پر ضرور جلدی ختم ہو جائینگے۔ خیر بالوں کی تو کوئی بات نہیں۔ اس دنیا بھر کے بوجھ سے بال تو آپ کے سر کے بھی اڑ گئے تھے۔ پر یہاں تو بال اڑنے کے ساتھ کھوپڑی ایسی پل پلی ہوئی جا رہی ہے جیسے پال کا پکا آم۔ اس پل پلے پن کو بھی بھگت لیتے، پر باپو یہ تو دکھتی بھی ہے اور بری طرح پراتی ہے۔

'ویشنو جن تو تے نے کہئے جے پیر پرائی جانے رے'

اس گیت میں بھی جو آپ کو بے حد پیارا تھا، لکھنے والے کو یہ بھی نہ سوجھا جو اس میں اپنی پیر جاننے کی بات بھی لکھ دیتا۔ پیر پرائی جاننے سے تو لکھنے والے کا یہی مطلب تھا نہ، کہ دوسرے کی تکلیف دیکھکر اس کی تکلیف دور کرنے میں لگ جانا۔ اور باپو، جو ہماری تکلیف دوسرا جانے ہی نہیں اور ہم بھی اپنی نہ جانیں تب تو ہم مرے بری موت۔

یہ تو ہے ہماری کھوپڑی کی پیر کا حال۔ اور یہ جب ہے جب اس کھوپڑی پر صرف ایک ہی بوجھ ہے۔ کہیں ہم آپ کی دیکھا دیکھی انگنت بوجھ سر پر لاد بیٹھیں تو نہ جانے ہمارا کیا حال ہو۔ ہم تو سمجھتے ہیں کہ ہمارا اور بھی عجب طرح کا حال ہو۔ تھوڑی مصیبت ظاہر تو ہو سکتی ہے۔

'مصیبت حد سے جب گزری تو ظاہر ہو نہیں سکتی'

یہ جو پرانے لوگ کہہ گئے ہیں تو کیا کوئی جھوٹ کہہ گئے ہیں؟ تجربہ کر کے ہی تو بات کہی ہوگی۔ اس لئے باپو ہماری ہمت نہیں ہوتی کہ ہم بہت سا بوجھ اپنے سر پر لیں۔ باپو، آپ بھی تو بھول کر گئے کہ اس دنیا کو چھوڑنے سے پہلے ہمیں یہ سپھل پلے داری کی کلا نہ سکھا گئے۔

سنئے ہماری مصیبت۔ ہم نے قسم کھا لی ہے کہ ہم گائے کا ہی دودھ پئینگے، اسی کا دہی، مٹھا اور گھی کھائینگے۔ بن پڑا تو اپنے بچے کو اس کی ماں کے پیٹ سے باہر آنے کے بعد اسکی ماں کا دودھ نہیں پینے دیں گے۔ پیدا ہونے کے دن ہی ہم اس کے سر گائے کے دودھ پینے روپی پرتگیاں کی پگڑی باندھ دیں گے۔ ہم دنیا کے سامنے یہ ثابت کر دیں گے کہ باپو ہم آپ کے بتائے دھرم پر اتنے پکے ٹکے ہوئے ہیں جتنے شاید آپ بھی نہ رہے ہوں گے۔

स्कूलों में ऊपर की क्लास से नीचे की क्लास में लड़के बहुत कम गिराये जाते हैं. यही हाल तनासुख में है. आगे के क्लास में तरक़्क़ी कुछ ज़ियादा लड़कों की रोकी जाती है. तनासुख में भी ऐसा ही होता है. आम सिलसिला लड़कों के नीचे से ऊपर तक तरक़्क़ी मिलते रहने का ही है. बीज इन्सान में सब हालतों के मौजूद हैं क्योंकि सब हालतें भी सब जगह सब के अन्दर मौजूद हैं. अल्लाह हर जगह और हर हाल में है. इसीलिये हर हालत अल्लाह में है.

जिन सूफ़ी आलिमों ने तनासुख को माना है उनमें अहमदबिन साबित, अहमद बिन यबूस, अबु मुस्लिम ख़ुरासानी और शैख़ुल इशराक़ के नाम ख़ास हैं. इन सबने क़ुरान की आयतों पर ही अपनी दलीलों को क़ायम किया है. ख़ास कर सूरतुलबक़र आयत 61 से 92 तक और सूरतुल-मायदा आयत 55 वग़ैरा.

ग़रज़ यह है पुनर्जन्म या तनासुख के मामले में भी किसी न किसी शक्ल में सब मज़हबों की तालीम मिलती जुलती है.

اسکولوں میں اوپر کی کلاس سے نیچے کی کلاس میں لڑکے بہت کم گرائے جاتے ہیں۔ یہی حال تناسخ میں ہے۔ آگے کے کلاس میں ترقی کچھ زیادہ لڑکوں کی روکی جاتی ہے۔ تناسخ میں بھی ایسا ہی ہوتا ہے۔ عام سلسلہ لڑکوں کے نیچے سے اوپر تک ترقی ملتے رہنے کا ہی ہے۔ بیج انسان میں سب حالتوں کے موجود ہیں کیونکہ سب حالتیں بھی سب جگہ سب کے اندر موجود ہیں۔ اللہ ہر جگہ اور ہر حال میں ہے۔ اسی لئے ہر حالت اللہ میں ہے۔

جن صوفی عالموں نے تناسخ کو مانا ہے ان میں احمد بن ثابت، احمد بن یبوث، ابومسلم خراسانی اور شیخ الاشراق کے نام خاص ہیں۔ ان سب نے قرآن کی آیتوں پر ہی اپنی دلیلوں کو قائم کیا ہے۔ خاص کر سورۃ البقرہ آیت 61 سے 92 تک اور سورۃ المائدہ آیت 55 وغیرہ۔

غرض یہ ہے پنرجنم یا تناسخ کے معاملہ میں بھی کسی نہ کسی شکل میں سب مذہبوں کی تعلیم ملتی جلتی ہے۔

●●●●

"तरक़्क़ी—धोके की जड़, ख़ुद को भूल भुलैइयां में रखना. जीवन का कोई अर्थ नहीं है, इसके पीछे कोई तर्क नहीं है. बिना ग़ुलामी के तरक़्क़ी नहीं हो सकती. इने गिने कुछ लोगों के हाथ से जब समाज की बागडोर छूट जाती है, लोग उनके चंगुल से आज़ाद होने लगते हैं, तब समाज की तरक़्क़ी रुक जाती है. हम आराम की कोशिश करते हैं, कम से कम मेहनत करने की तरकीबें निकालते हैं. लेकिन अपनी कठिनाइयां और बढ़ा लेते हैं, हमें अधिक मेहनत करनी पड़ती है. हम कारख़ाने खोलते हैं, मशीनें बनाते हैं ताकि और मशीनें पैदा कर सकें और कारख़ाने खोल सकें—मूर्खता की हद है! दिन पर दिन कारख़ानों में काम करने वालों की तादाद बढ़ती जाती है जब कि दूसरी तरफ़ दुनिया को ज़रूरत है किसानों की, अनाज पैदा करने वालों की. रोटी—यही एक चीज़ है जिसे मनुष्य को अपनी मेहनत से प्रकृति के चंगुल से छीन कर अपने क़ब्ज़े में करना है. जिसकी ज़रूरतें जितनी कम हैं वह उतना ही ख़ुश है. ज़रूरतें जितनी बढ़ती जायेंगी आज़ादी का घेरा उतना ही कम होता जायगा."—(मैकसिम गोर्की की किताब 'मेरी यूनीवर्सिटियां' से)

"ترقی—دھوکے کی جڑ، خود کو بھول بھلیاں میں رکھنا۔ جیون کا کوئی ارتھ نہیں ہے، اس کے پیچھے کوئی ترک نہیں ہے۔ بنا غلامی کے ترقی نہیں ہوسکتی۔ اِنے گِنے کچھ لوگوں کے ہاتھ سے جب سماج کی باگڈور چھوٹ جاتی ہے، لوگ اُن کے چنگل سے آزاد ہونے لگتے ہیں، تب سماج کی ترقی رک جاتی ہے۔ ہم آرام کی کوشش کرتے ہیں، کم سے کم محنت کرنے کی ترکیبیں نکالتے ہیں۔ لیکن اپنی کٹھنائیاں اور بڑھا لیتے ہیں ہمیں ادھک محنت کرنی پڑتی ہے۔ ہم کارخانے کھولتے ہیں، مشینیں بناتے ہیں تاکہ اور مشینیں پیدا کرسکیں اور کارخانے کھول سکیں—مورکھتا کی حد ہے! دن دن کارخانوں میں کام کرنے والوں کی تعداد بڑھتی جاتی ہے جب کہ دوسری طرف دنیا کو ضرورت ہے کسانوں کی، اناج پیدا کرنے والوں کی۔ روٹی—یہی ایک چیز ہے جسے منشیہ کو اپنی محنت سے پرکرتی کے چنگل سے چھین کر اپنے قبضے میں کرنا ہے۔ جس کی ضرورتیں جتنی کم ہیں وہ اتنا ہی خوش ہے۔ ضرورتیں جتنی بڑھتی جائیں گی آزادی کا گھیرا اتنا ہی کم ہوتا جائے گا۔"—(میکسم گورکی کی کتاب 'میری یونیورسٹیاں' سے)

●●●●

मुहम्मद साहब की एक हदीस है—"रहमान यानी (अल्ल)ाह ने इन्सान को अपनी शक्ल पर पैदा किया."

ठीक यही बात इन्हीं शब्दों में इंजील में कही गई है.

यहूदियों की किताब "क़बाला" में लिखा है—"पत्थर (पौधा) हो जाता है, पौधा जानवर हो जाता है, जानवर आदमी (हो ज)ाता है, आदमी रूह और रूह ख़ुदा."

एक और यहूदी किताब 'ज़ुहर' में लिखा है—'सब (रूहें) फिर फिर जन्म लेने की मुसीबतों में से निकलती हैं. (आद)मी यह नहीं जानता कि कितनी अजीब अजीब मुसीबतों (और) नये नये जन्मों में से उसे निकलना है. सब रूहों को (उसी) अल्लाह में लौट कर मिल जाना है जिससे वह निकली (हैं. ल)ेकिन इस काम को पूरा करने के लिये सब रूहों को (अप)ने अन्दर वह कमाल पैदा करने होंगे जिनके बीज उनके (अन्द)र मौजूद हैं. अगर यह बात एक ज़िन्दगी में नहीं होती (तो उ)न्हें फिर दूसरी ज़िन्दगी शुरू करनी होगी और फिर (तीस)री और इसी तरह सिलसिला चलता रहेगा. यहां (तक) कि वह इस क़ाबिल हो जायं कि फिर से अल्लाह में (मिल) सकें."

मज़हब और साइन्स दोनों कहते हैं कि एक ही (अस)लियत हक़ीक़त या जान सब हालतों में से निकलती है. (यही) बात सब मज़हबों में कही गई है.

पारसी मज़हब की किताब 'गाथा' में एक जगह लिखा (है)—"जो आदमी नेक काम करके अल्लाह को ख़ुश करता (है उ)से अल्लाह हर नये जन्म में ज़ियादा ज़ियादा आत्म (ज्ञान) (मारफ़त) और अपने ऊपर ज़ियादा ज़ियादा क़ाबू (अता) करता है. पर जो आदमी नेकी की जगह बदी करता (है उ)से अल्लाह हर नये जन्म में ज़ियादा बुरी हालत में पैदा (करता) है. जो लोग ज़ुल्म करते हैं वह बुरी योनियों में जा (कर) बार बार जन्म लेते हैं जब तक कि वह फिर लौट कर (नेकी) की तरफ़ न मुड़ें."

आदमी को अरबी में 'अशरफ़ुल मख़लूक़ात' संस्कृत में (श्रेष्)ठतम्' और अंगरेज़ी में 'क्राउन आफ़ क्रियेशन' इसीलिये (कहा) गया है क्योंकि आदमी की शक्ल में आने पर ही रूह (अप)ने असली रूप को यानी अपने अन्दर के ईश्वर अल्लाह (को) पहचानना शुरू करती है.

सूफ़ी लोग आम तौर पर तनासुख़ को मानते हैं. उसे 'हरतका' या 'रजत' भी कहते हैं. किसी किसी बात में (व)ह हिन्दुओं से भी कहीं ज़ियादा बारीकियां बयान करते (हैं.) (म)सलन रूह के इन्सान के जिस्म में फिर से पैदा होने को 'नुस्ख़' कहते हैं, जानवर के जिस्म में फिर से पैदा होने (को) 'मस्ख़' कहते हैं. सब्ज़ी या बनस्पती की सूरत में पैदा (होने) को 'फ़स्ख़' कहते हैं और मिट्टी पत्थर की सूरत में फिर (पैद)ा होने को 'रस्ख़' कहते हैं.

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے—" رحمان یعنی اللہ نے انسان کو اپنی شکل پر پیدا کیا ."

ٹھیک یہی بات انہیں شبدوں میں انجیل میں کہی گئی ہے .

یہودیوں کی کتاب "قبالہ" میں لکھا ہے—"پتھر پودا ہو جاتا ہے، پودا جانور ہو جاتا ہے، جانور آدمی ہو جاتا ہے، آدمی روح اور روح خدا."

ایک اور یہودی کتاب 'زہر' میں لکھا ہے—"سب روحیں پھر پھر جنم لینے کی مصیبتوں میں سے نکلتی ہیں . آدمی یہ نہیں جانتا کہ کتنی عجیب عجیب مصیبتوں اور نئے نئے جنموں میں سے اسے نکلنا ہے. سب روحوں کو اسی اللہ میں لوٹ کر مل جانا ہے جس سے وہ نکلی ہیں . لیکن اس کام کو پورا کرنے کے لئے سب روحوں کو اپنے اندر وہ کمال پیدا کرنے ہونگے جن کے بیج ان کے اندر موجود ہیں . اگر یہ بات ایک زندگی میں نہیں ہوتی تو انہیں پھر دوسری زندگی شروع کرنی ہوگی اور پھر تیسری اور اسی طرح سلسلہ چلتا رہے گا . یہاں تک کہ وہ اس قابل ہو جائیں کہ پھر سے اللہ میں مل سکیں."

مذہب اور سائنس دونوں کہتے ہیں کہ ایک ہی اصلیت حقیقت یا جان سب حالتوں میں سے نکلتی ہے . یہی بات سب مذہبوں میں کہی گئی ہے .

پارسی مذہب کی کتاب 'گاتھا' میں ایک جگہ لکھا ہے—"جو آدمی نیک کام کرکے اللہ کو خوش کرتا ہے اسے اللہ ہر نئے جنم میں زیادہ زیادہ آتم گیان (معرفت) اور اپنے اوپر زیادہ زیادہ قابو عطا کرتا ہے . پر جو آدمی نیکی کی جگہ بدی کرتا ہے اسے اللہ ہر نئے جنم میں زیادہ بری حالت میں پیدا کرتا ہے . جو لوگ ظلم کرتے ہیں وہ بری یونیوں میں جاکر بار بار جنم لیتے ہیں جب تک کہ وہ پھر لوٹ کر نیکی کی طرف نہ مڑیں."

آدمی کو عربی میں 'اشرف المخلوقات' سنسکرت میں 'شریشٹتم' اور انگریزی میں 'کراؤن آف کریئیشن' اسی لئے کہا گیا ہے کیونکہ آدمی کی شکل میں آنے پر ہی روح اپنے اصلی روپ کو یعنی اپنے اندر کے ایشور اللہ کو پہچاننا شروع کرتی ہے

صوفی لوگ عام طور پر تناسخ کو مانتے ہیں . اسے وہ 'لوٹنا' یا 'رجعت' بھی کہتے ہیں . کسی کسی بات میں تو وہ ہندوؤں سے بھی کہیں زیادہ باریکیاں بیان کرتے ہیں . مثلاً روح کے انسان کے جسم میں پھر سے پیدا ہونے کو وہ 'نسخ' کہتے ہیں، جانور کے جسم میں پھر سے پیدا ہونے کو 'مسخ' کہتے ہیں سبزی یا بنسپتی کی صورت میں پیدا ہونے کو 'فسخ' کہتے ہیں اور مٹی پتھر کی صورت میں پھر سے پیدا ہونے کو 'رسخ' کہتے ہیں .

[illegible] कर सकते हो. तुम मर चुके थे उसने तुम्हें फिर से ज़िन्दा किया वही तुम्हें फिर से मुर्दा कर देगा और फिर ज़िन्दा कर देगा. यहाँ तक कि आख़ीर में तुम फिर उसके पास लौट जाओगे."

जो आयतें हमने ऊपर नक़ल की हैं उन पर सब से अच्छी टीका मौलाना रूम के वह मशहूर शेर हैं जिनके लफ़्ज़ी माने हम नीचे देते हैं. मौलाना लिखते हैं:—

"घास की तरह मैं बार बार पैदा हो चुका हूं. मैं सात सौ सत्तर जिस्म देख चुका हूं. पहले मैं जमादात (पत्थर वग़ैरा) की शक्ल में था. वहाँ से मरा तो मैं नबातात (वनस्पति) बन गया. फिर मैं नबातात से मरा तो जानवर बन गया. जानवर से मैं मरा तो इन्सान बन गया. इसलिये मुझे मौत से क्या डर है, मैं मरने से कभी कम नहीं हुआ. अब अगली मरतबा मैं इन्सान से मरूँगा ताकि फ़रिश्तों के बाल व पर मुझ में निकल आवें. फिर फ़रिश्ते से भी मैं जल्दी से और ऊपर निकल जाऊँगा. सिवाए उस अल्लाह के वजूद के बाक़ी सब चीज़ें मिटती और फिर से बनती रहती हैं. फिर जब मैं फ़रिश्ते की हालत से उड़ कर बाहर निकलूंगा तो वह हो जाऊँगा जो वहम और गुमान में भी नहीं आ सकता."

मौलाना रूम की मसनवी में यह ख़याल बार बार आता है कि—"रूह जमादात (मिट्टी पत्थर) की हालत से निकल कर नबातात (वनस्पती) की हालत में जाती है और बरसों वहां गुज़ारती है जब कि वह अपनी पहली हालत को भूल जाती है. फिर नबातात से निकल कर वह जानवरों की शक्ल में जन्म लेती है. उस हालत में वह अपनी नबाताती हालत को भूले रहती है. इस तरह एक जिस्म से दूसरे जिस्म में गुज़रती हुई वह इन्सान की शक्ल में अक़्लमन्द और दाना बनती है. यहां भी उसे पहली हालतें याद नहीं आतीं. फिर इस हालत से निकल कर उसे ऊपर जाना है ताकि इस हिर्स और तलब (लोभ और लालच) से बाहर निकल कर असली अक़्ल हासिल करे जो इस वक़्त इसके गुमान से भी बाहर है. यूं वह एक दूसरे के बाद जैसे ख़्वाब से निकल कर जागी हुई हालत में आती है और फिर आख़ीर में वह अपनी सब पिछली हालतों को फिर से जान जाती है और अपने असल आपे को पा लेती है."

मसनवी के कुछ शेरों का यह क़रीब क़रीब लफ़्ज़ी तरजुमा है.

पुरानों में और भागवत में भी जगह जगह यही बात कही गई है कि "आत्मा मिट्टी पत्थर, वनस्पती, जानवर और इन्सान चारों हालतों में से एक दूसरे के बाद निकलती है और इस तरह ऊपर को जाती हुई ब्रह्म यानी अपने आपे को पाती है."

[illegible] اس نے تمہیں [illegible] تمہیں پھر سے مردہ کر دیگا . اور پھر زندہ کر دیگا یہاں تک کہ آخیر میں تم پھر اس کے پاس لوٹ جاؤگے ."

جو آیتیں ہم نے اوپر نقل کی ہیں ان پر سب سے اچھی ٹیکا مولانا روم کے وہ مشہور شعر ہیں جن کے لفظی معنے ہم نیچے دیتے ہیں. مولانا لکھتے ہیں :—

" گھاس کی طرح میں بار بار پیدا ہو چکا ہوں. میں سات سو ستر جسم دیکھ چکا ہوں . پہلے میں جمادات (پتھر وغیرہ) کی شکل میں تھا . وہاں سے مرا تو میں نباتات (بنسپتی) بن گیا . پھر میں نباتات سے مرا تو جانور بن گیا . جانور سے میں مرا تو انسان بن گیا . اس لئے مجھے موت سے کیا ڈر ہے' میں مرنے سے کبھی کم نہیں ہوا . اب اگلی مرتبہ میں انسان سے مرونگا تاکہ فرشتوں کے بال و پر مجھ میں نکل آویں . پھر فرشتے سے بھی میں جلدی سے اور اوپر نکل جاؤنگا . سوائے اس اللہ کے وجود کے باقی سب چیزیں مٹتی اور پھر سے بنتی رہتی ہیں . پھر جب میں فرشتے کی حالت سے اڑ کر باہر نکلونگا تو وہ ہو جاؤنگا جو وہم اور گمان میں بھی نہیں آ سکتا ."

مولانا روم کی مثنوی میں یہ خیال بار بار آتا ہے کہ—" روح جمادات (مٹی پتھر) کی حالت سے نکل کر نباتات (بنسپتی) کی حالت میں جاتی ہے اور برسوں وہاں گذارتی ہے جبکہ وہ اپنی پہلی کو بھول جاتی ہے. پھر نباتات سے نکل کر وہ جانوروں کی شکل میں جنم لیتی ہے . اس حالت میں وہ اپنی نباتاتی حالت کو بھولے رہتی ہے . اس طرح ایک جسم سے دوسرے جسم میں گذرتی ہوئی وہ انسان کی شکل میں عقلمند اور دانا بنتی ہے . یہاں بھی اسے پہلی حالتیں یاد نہیں آتیں . پھر اس حالت سے نکلکر اسے اوپر جانا ہے تاکہ اس حرص اور طلب (لوبھ اور لالچ) سے باہر نکل کر اصلی عقل حاصل کرے جو اس وقت اس کے گمان سے بھی باہر ہے. یوں وہ ایک دوسرے کے بعد جیسے خواب سے نکل کر جاگی ہوئی حالت میں آتی ہے اور پھر آخیر میں وہ اپنی سب پچھلی حالتوں کو پھر سے جان جاتی ہے اور اپنے اصل آپے کو پالیتی ہے ."

مثنوی کے کچھ شعروں کا یہ قریب قریب لفظی ترجمہ ہے .

پرانوں میں اور بھاگوت میں بھی جگہ جگہ یہی بات کہی گئی ہے کہ " آتما مٹی پتھر' بنسپتی' جانور اور انسان چاروں حالتوں میں سے ایک دوسرے کے بعد نکلتی ہے اور اس طرح اوپر کو جاتی ہوئی برہم یعنی اپنے آپے کو پاتی ہے ."

[illegible] पुनर्जन्म [illegible] में तनासुख कहते हैं. हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिख धर्मों के मुताबिक रूह बहुत से निचले जिस्मों में से [illegible] के बाद इन्सान के जिस्म में आती है और फिर इन्सान की शक्ल में भी कई मरतबा पैदा होती है. इंजील और कुरान में तनासुख की बाबत कोई साफ़ साफ़ बात शायद नहीं मिलती. लेकिन इन पाक किताबों में कहीं इस से इनकार भी नहीं है. हज़रत ईसा ने कई जगह यह कहा है कि इलयास यानी एलीजाह नबी ही जान दी बैपटिस्ट की शक्ल में आये थे. इंजील में यह बात कई जगह आई है.

कुरान में एक जगह लिखा है—"ऐ इन्सान! तुझे फिर अपने रब की तरफ़ जाना है. वही तेरा अल्लाह है. तुझे मेहनत और तकलीफ़ के साथ दरजे बदरजे चढ़ कर उस तक पहुँचना है."

कृष्ण ने गीता में कहा है—"बहुत से जन्मों में से धीरे धीरे कमाल को पहुँचता हुआ इन्सान परम गति को प्राप्त करता है और बहुत से जन्मों के बाद ज्ञानी ईश्वर को पाता है."

महाभारत में लिखा है—"एक दूसरे के बाद बेशुमार दुनियाएँ बनती और बिगड़ती रहती हैं. वही एक परमेश्वर उन्हें बार बार बनाता और बिगाड़ता रहता है."

कुरान में बहुत सी आयतें हैं जिन से यह माने निकल सकते हैं कि इन्सान बार बार पैदा होता और बार बार मरता है उसी तरह जिस तरह यह दुनिया बार बार बनती और बार बार बिगड़ती है—इन में से कुछ आयतें यह हैं—

"अल्लाह मख़लूक़ को बनाता है और फिर दोबारा बनाता है ताकि वह इन्साफ़ के साथ उनको बदला दे सके जो अल्लाह के हुक्म को मानते हैं और बन्दों के साथ नेकी करते हैं. अल्लाह कहता है जिस तरह हमने पहले ख़िलक़त बनाई थी उसी तरह हम फिर बनाते हैं. अल्लाह ही तुम्हारी माँ के पेट में तुम्हें गढ़ता है और फिर फिर गढ़ता है."

"हमने तुम्हें ज़मीन में से पैदा किया है और हम तुम्हें उसी ज़मीन में भेज देंगे और फिर उसी में से तुम्हें पैदा करेंगे, फिर फिर, आख़ीर तक."

"तुम मर चुके थे और हमने फिर तुम्हें पैदा किया ताकि तुम हमें याद करो और हमारा शुक्र करो."

"अल्लाह ने तुम्हारे मरने के बाद फिर तुम्हें ज़िन्दा किया. जिसने तुम्हें पहले ज़िन्दा किया था, वह तुम्हें फिर ज़िन्दा कर सकता है. वह ज़िन्दों को मुर्दा और मुर्दों को ज़िन्दा करता है."

کو دوسری طرح بیان کرتے ہیں۔ سنسکرت اسے پنر جنم اور عربی میں تناسخ کہتے ہیں۔ ہندو، جین، بودھ اور سکھ دھرموں کے مطابق روح بہت سے نچلے جسموں میں سے گزرنے کے بعد انسان کے جسم میں آتی ہے اور پھر انسان کی شکل میں بھی کئی مرتبہ پیدا ہوتی ہے۔ انجیل اور قرآن میں تناسخ کی بابت کوئی صاف صاف بات شاید نہیں ملتی۔ لیکن ان پاک کتابوں میں کہیں تناسخ سے انکار بھی نہیں ہے۔ حضرت عیسیٰ نے کئی جگہ یہ کہا ہے کہ الیاس یعنی ایلیجاہ نبی ہی جان دی بیپٹسٹ کی شکل میں آئے تھے۔ انجیل میں یہ بات کئی جگہ آئی ہے۔

قرآن میں ایک جگہ لکھا ہے— "اے انسان! تجھے پھر اپنے رب کی طرف جانا ہے۔ وہی تیرا اللہ ہے۔ تجھے محنت اور تکلیف کے ساتھ درجہ بدرجہ چڑھکر اس تک پہونچنا ہے۔"

کرشن نے گیتا میں کہا ہے— "بہت سے جنموں میں سے دھیرے دھیرے کمال کو پہونچتا ہوا انسان پرم گتی کو پراپت کرتا ہے اور بہت سے جنموں کے بعد گیانی ایشور کو پاتا ہے۔"

مہا بھارت میں لکھا ہے— "ایک دوسرے کے بعد بےشمار دنیائیں بنتی اور بگڑتی رہتی ہیں۔ وہی ایک پرمیشور انہیں بار بار بناتا اور بگاڑتا رہتا ہے۔"

قرآن میں بہت سی آیتیں ہیں جن سے یہ معنی نکل سکتے ہیں کہ انسان بار بار پیدا ہوتا اور بار بار مرتا ہے اسی طرح جس طرح یہ دنیا بار بار بنتی اور بار بار بگڑتی ہے— ان میں سے کچھ آیتیں یہ ہیں:—

"اللہ مخلوق کو بناتا ہے اور پھر دوبارا بناتا ہے تاکہ وہ انصاف کے ساتھ ان کو بدلا دے سکے جو اللہ کے حکم کو مانتے ہیں اور بندوں کے ساتھ نیکی کرتے ہیں۔ اللہ کہتا ہے جس طرح ہم نے پہلے خلقت بنائی تھی اسی طرح ہم پھر بناتے ہیں۔ اللہ ہی تمہاری ماں کے پیٹ میں تمہیں گڑھتا ہے اور پھر پھر گڑھتا ہے۔"

"ہم نے تمہیں زمین میں سے پیدا کیا ہے اور ہم تمہیں پھر اسی زمین میں بھیج دینگے اور پھر اسی میں سے تمہیں پیدا کرینگے، پھر پھر، آخیر تک۔"

"تم مر چکے تھے اور ہم نے پھر تمہیں پیدا کیا تاکہ تم ہمیں یاد کرو اور ہمارا شکر کرو۔"

"اللہ نے تمہارے مرنے کے بعد پھر تمہیں زندہ کیا۔ اس نے، تمہیں پہلے زندہ کیا تھا، وہ تمہیں پھر زندہ کر سکتا ہے۔ وہ زندوں کو مردہ اور مردوں کو زندہ کرتا ہے۔"

पुनर्जन्म या तनासुख

(डाक्टर भगवानदास)

पिछले लेखों में हमने यह बताने की कोशिश की है कि इस सारी खिलक़त या सृष्टि के और इन सब जानदारों के पीछे एक ही हक़ीक़त और एक ही जान है जो सब जगह मौजूद और सब जगह रमी हुई है. उसी से सब ज़िन्दा हैं. उसी से सब चलते फिरते, सोचते और बोलते हैं, वही ख़ुदा ईश्वर है, वही इस दुनिया का बनाने वाला है, वही इसका क़ायम रखने वाला और वही इसे ख़त्म करने वाला है. वही सब आत्माओं की आत्मा और सब रूहों की रूहे कुल है. सब नाम उसके नाम हैं. सब सूरतें उसकी सूरतें हैं. यह जो हमारे सब के अन्दर 'मैं' बोलता है यह वह ही है. उसके नामों में 'मैं' सब से नज़दीकी नाम है. यह 'मैं' सब जानदारों में है लेकिन इन्सान में यह सब से ज़ियादा चमकता है. सब नाम उसके नाम होते हुए भी हर मज़हब और हर बोली में उसके कुछ ख़ास अलग अलग नाम भी हैं. संस्कृत में वह परमात्मा, आत्मा या ब्रह्म कहलाता है. अरबी में अल्लाह, रब, मालिक या मौला. फ़ारसी में ख़ुदा. अंगरेज़ी में 'गाड'. 'गाड' शब्द 'ख़ुदा' ही से बना है. पारसी धर्म में उसी को 'अहुरमज़्द,' यहूदियों में 'यहुवा' और सिक्खों में 'सत्यश्री अकाल' कहा जाता है. बौद्ध धर्म वाले उसे आत्मा, ब्रह्म, शून्य या अमिताभ कह कर पुकारते हैं. जैनी उसी को 'आत्मा' 'प्रतिमा' या 'निरंजन' कहते हैं. चीन के पुराने मज़हब में उसी का नाम 'ताओ' है. उसका वजूद ही दुनिया की सब से बड़ी सच्चाई है. दुनिया एक लगातार घूमता हुआ चक्कर है जो सुख दुख जैसे जोड़ों के सहारे चलता है जिसमें परमात्मा इन्सान के अन्दर अपने को लगातार भूलता रहता है और इन्सान परमात्मा के अन्दर अपने असली रूप को लगातार याद करता और पहचानता रहता है. यही इस दुनिया का उतार चढ़ाव है.

इस उतार चढ़ाव का नाम ही संसार चक्र है. इसी को चर्ख़ गरदूं कहते हैं. सवाल होता है कि यह संसार चक्र क्या है. हर चक्र या पहिये के दो हिस्से होते हैं. एक उतार और एक चढ़ाव. रूह के इस उतार और चढ़ाव को संस्कृत किताबों में 'अवरोह' और 'आरोह' कहा गया है. सूफ़ी किताबों में इसे 'ज़वाल' और 'इरतक़ा' कहते हैं. साइन्स की बोली में इसे एवोल्युशन और फ़ाइलोजेनिसस (Phylogenesis) कहा जा सकता है. कुछ मज़हब मानते हैं कि एक ही रूह या आत्मा एक दूसरे के बाद कई जिस्म अख़्तियार करती है. दूसरे मज़हब इसी सिलसिले

پنرجنم یا تناسخ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

پچھلے لیکھوں میں ہم نے یہ بتانے کی کوشش کی ہے کہ اس ساری خلقت یا سرشٹی کے اور ان سب جانداروں کے پیچھے ایک ہی حقیقت اور ایک ہی جان ہے جو سب جگہ موجود اور سب جگہ رمی ہوئی ہے۔ اسی سے سب زندہ ہیں۔ اسی سے سب چلتے پھرتے، سوچتے اور بولتے ہیں، وہی خدا ایشور ہے، وہی اس دنیا کا بنانے والا ہے، وہی اس کا قائم رکھنے والا اور وہی اسے ختم کرنے والا ہے۔ وہی سب آتماؤں کی آتما اور سب روحوں کی روح کل ہے۔ سب نام اس کے نام ہیں۔ سب صورتیں اسکی صورتیں ہیں۔ یہ جو ہمارے سب کے اندر 'میں' بولتا ہے یہ وہ ہی ہے۔ اس کے ناموں میں 'میں' سب سے نزدیکی نام ہے۔ یہ 'میں' سب جانداروں میں ہے لیکن انسان میں یہ سب سے زیادہ چمکتا ہے۔ سب نام اس کے نام ہوتے ہوئے بھی ہر مذہب اور ہر بولی میں اسکے کچھ خاص الگ الگ نام بھی ہیں۔ سنسکرت میں وہ 'پرماتما' آتما یا برہمہ کہلاتا ہے۔ عربی میں 'اللہ' 'رب' مالک یا مولا۔ فارسی میں خدا۔ انگریزی میں 'گاڈ'۔ 'گاڈ' شبد 'خدا' ہی سے بنا ہے۔ پارسی دھرم میں اسی کو 'ہرمزد' یہودیوں میں 'یہوا' اور سکھوں میں 'ستیہ سری اکال' کہا جاتا ہے۔ بودھ دھرم والے اسے 'آتما' 'برہمہ' شونیہ یا امیتابھ کہکر پکارتے ہیں۔ جینی اسی کو 'آتما' 'پرتیما' یا 'نرنجن' کہتے ہیں۔ چین کے پرانے مذہب میں اسی کا نام 'تاؤ' ہے۔ اس کا وجود ہی دنیا کی سب سے بڑی سچائی ہے۔ دنیا ایک لگاتار گھومتا ہوا چکر ہے جو سکھ دکھ جیسے جوڑوں کے سہارے چلتا ہے جس میں پرماتما انسان کے اندر اپنے کو لگاتار بھولتا رہتا ہے اور انسان پرماتما کے اندر اپنے اصلی روپ کو لگاتار یاد کرتا اور پہچانتا رہتا ہے۔ یہی اس دنیا کا اتار چڑھاؤ ہے۔

اس اتار چڑھاؤ کا نام ہی سنسار چکر ہے۔ اسی کو چرخ گردوں کہتے ہیں سوال ہوتا ہے کہ یہ سنسار چکر کیا ہے۔ ہر چکر یا پہیے کے دو حصے ہوتے ہیں۔ ایک اتار اور ایک چڑھاؤ۔ روح کے اس اتار اور چڑھاؤ کو سنسکرت کتابوں میں 'اوروہ' اور 'آروہ' کہا گیا ہے۔ صوفی کتابوں میں اسے 'زوال' اور 'ارتقا' کہتے ہیں۔ سائنس کی بولی میں اسے ایولیوشن اور فائلوجینیسس (Phylogenesis) کہا جا سکتا ہے۔ کچھ مذہب مانتے ہیں کہ ایک ہی روح یا آتما ایک دوسرے کے بعد کئی جسم اختیار کرتی ہے۔ دوسرے مذہب اس سلسلے

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द 13 — सितम्बर, सन '52 — नम्बर 3

جلد 13 — ستمبر، سن '52 — نمبر 3

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

लालच

क्या हुई शान्ति हम जिसे जीत कर लाए
वह विश्व मित्रता कहां ? कोई बतलाए
फिर लगी पनपने नफ़रत और लड़ाई
हथियार फ़रोशी करने लगी सिपाही
दुनिया पर छाकर कमा रहे धन भारी
भय दुख अकाल के जो पक्के व्यापारी

दावतें उड़ाओ, गिद्ध बने तुम खाओ
जूझ मरे लाशों को खाओ खाओ !
खा मुरदारों को तुम मोटे हो जाओ
दाने दाने को लाखों को तरसाओ
काटो काटो, वह लगी खड़ी है खेती
बेवा चीखों की और यतीम आंसू की

लालच कारन सब से पहला है होता
युद्धों का, यही जंग नदी का सोता
तोड़ो तलवारें तभी होगा ठंडा
ये सितम और ये सारा झगड़ा टंटा
पागलपन छाया तो फिर दुनिया सारी
दुख भुगते, तड़पे मानवता बेचारी

मिस्र की मशहूर कवियत्री
[illegible] तलअत के गीत से.

—भगवानदीन

لالچ

کیا ہوئی شانتی ہم جسے جیت کر لائے
وہ وشومترتا کہاں ؟ کوئی بتلائے
پھر لگی پنپنے نفرت اور لڑائی
ہتھیار فروشی کرنے لگی سپاہی
دنیا پر چھاکر کما رہے دھن بھاری
بھے دکھ اکال کے جو پکے بیوپاری

دعوتیں اڑاؤ، گدھ بنے تم کھاؤ
جوجھ مرے لاشوں کو کھاؤ کھاؤ !
کھا مرداروں کو تم موٹے ہو جاؤ
دانے دانے کو لاکھوں کو ترساؤ
کاٹو کاٹو وہ لگی کھڑی ہے کھیتی
بیوہ چیخوں کی اور یتیم آنسو کی

لالچ کارن سب سے پہلا ہے ہوتا
یدھوں کا یہی جنگ ندی کا سوتا
توڑو تلواریں تبھی ہوگا ٹھنڈا
یہ ستم اور یہ سارا جھگڑا ٹنٹا
پاگل پن چھایا تو پھر دنیا ساری
دکھ بھگتے، تڑپے مانوتا بیچاری

مصر کی مشہور کوئتری
[illegible] طلعت کے گیت سے۔

—بھگوان دین

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

सितम्बर 1952

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

ستمبر 1952

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द / نیا ہند

*

नम्बर के खास लेख

[illegible]

نمبر کے خاص لیکھ

[illegible]

हमारी राय

- [illegible]
- [illegible]
- भाई किशोरलाल मशरूवाला [illegible]
- [illegible]

ہماری رائے

[illegible]

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

सितम्बर 1952 ستمبر

Registered No. A—210.

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक— सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक सद्भावना मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आप को मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से रंडी-बाज़ी, भिकमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया, किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल कारख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया, किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़त्म की, देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक़्शों के साथ दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शिलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता—

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک سدبھاؤنا مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے۔

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور آج کا چین کیسا ہے، کس طرح وہاں سے رنڈی بازی، بھکمنگی اور بیروزگاری کو ختم کیا گیا، کس طرح وہاں کے بے زمین والے کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے ان داتا بن گیا، کس طرح امریکہ کی ناکےبندی کے باوجود اس نے اپنے ادیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سوا لمبی بنا لیا، کس طرح اپنی تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی، کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی، کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری، کام چوری اور سینہ زوری ختم کی، دیش کے آرتھک سنگٹھن کو ٹھیک کیا، وغیرہ وغیرہ۔

اگر آپ وستار کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہیں اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی۔ ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے

700 سے زیادہ صفحے، بڑھیا کاغذ، کپڑے کی جلد، ایک ترنگی اور تیس ایک رنگی تصویریں، دو رنگین نقشوں کے ساتھ—دام صرف ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ۔

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھئے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر، نیا ہند، 145، مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वगैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा. वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास. सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار او شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیںگے۔

(ii) राजीनामे में कहा गया है कि पहले तीन साल में हर साल कम से कम 100 आदमियों को स्विटज़रलैंड ट्रेनिंग के लिये भेजेगी. लेकिन राजीनामे के दो साल बाद सरकार ने सिर्फ तीन ड्राफ्ट्समैन भेजे. इसके माने हैं कि कुछ भी फ़ायदा न उठा पाई.

(iii) आर्डर के साथ आधे दाम दे देने की शर्त बहुत ग़ैरमामूली है. ऐसी पेशगियों के साथ कोई ज़मानत होनी चाहिये.

(iv) जब विदेशी कम्पनी ने पहले साल वाले डिब्बे नहीं पहुंचाये तो आगे आर्डर देना और उसका दाम पहुंचा देना ग़लत बात है.

(v) राज़ीनामे में लिखा है कि 25 डिब्बों की तैयारी में जो खर्च बैठेगा उस पर दस फ़ीसदी मुनाफ़ा जोड़ कर जो दाम पड़ेंगे उसी हिसाब से कुल डिब्बों की क़ीमत लगाई जायगी. इस तरह की शर्त करना एक नामुनासिब बात है और फिर जब कोई कारखाना अपने को एक्सपर्ट बताता है तो उसे तो माल का ठीक ठीक भाव पहले से बताना ही चाहिये.

हमारा ख्याल है कि अगर रेलवे मिनिस्ट्री का बस चले और आडिट वाले बीच में टांग न अड़ायें तो उस कम्पनी को रेलवे वाले पैसा भेजते रहते, चाहे डिब्बा एक भी बनता या न बनता और नई दिल्ली के रेलवे मिनिस्टर इतमिनान दिलाते रहते कि हम जल्दी ही स्वावलम्बी बन कर तीसरे दर्जे की मुसीबत काफ़ूर कर देने वाले हैं. ईश्वर ही जानता है कि रेलवे जो लाखों और करोड़ें रुपया बात की बात में खर्च कर देती है उसमें कितना वाजिब तौर पर और ईमानदारी से खर्च करती है. मद्रास के 'हिन्दू' जैसे ठंडे अख़बार ने यह लिखा है कि अगर रेलवे मिनिस्ट्री या सरकार अपनी नई स्कीमों में पैसा इस तरह बे-एहतियाती, लापरवाही और ग़ैर समझदारी के साथ बहायेगी तो जल्दी ही वह वक़्त आने वाला है जब जनता यह आवाज़ उठायेगी कि बाबा — [illegible] ओजनाओं से हमें बख्शो.

—सुरेश रामभाई

(ii) راضی نامے میں کہا گیا ہے کہ پہلے تین سال میں ہر سال کم سے کم سو آدمیوں کو سوئٹزرلینڈ ٹریننگ کے لئے بھیجیگی۔ لیکن راضی نامے کے دو سال بعد سرکار نے صرف تین ڈرافٹس مین بھیجے۔ اس کے معنی ہیں کہ وہ کچھ بھی فائدہ نہ اُٹھا پائی۔

(iii) آرڈر کے ساتھ آدھے دام دے دینے کی شرط بہت ہی غیر معمولی ہے۔ ایسی پیشگیوں کے ساتھ کوئی ضمانت ہونی چاہئے۔

(vi) جب ودیشی کمپنی نے پہلے سال ڈبے نہیں پہونچائے تو آگے آرڈر دینا اور اس کا دام پہونچا دینا غلط بات ہے۔

راضی نامے میں لکھا ہے کہ 25 ڈبوں کی تیاری میں جو خرچ بیٹھیگا اُس پر دس فیصدی منافع جوڑ کر جو دام پڑینگے اُسی حساب سے کل ڈبوں کی قیمت لگائی جائیگی۔ اِسی طرح کی شرط کرنا ایک نا مناسب بات ہے اور پھر جب کوئی کارخانہ اپنے کو ایکسپرٹ بتا تا ہے تو اُسے تو مال کا ٹھیک ٹھیک بھاؤ پہلے سے بتانا ہی چاہئے۔

ہمارا خیال ہے کہ اگر ریلوے منسٹری کا بس چلے اور آڈیٹ والے بیچ میں ٹانگ نہ اڑائیں تو اُس کمپنی کو ریلوے والے پیسہ بھیجتے رہتے، چاہے ڈبہ ایک بھی بنتا یا نہ بنتا اور نئی دلی کے ریلوے منسٹر اطمینان دلاتے رہتے کہ ہم جلدی ہی سوآولمبی بن کر تیسرے درجے کی مصیبت کافور کر دینے والے ہیں۔ ایشور ہی جانتا ہے کہ ریلوے جو لاکھوں اور کروڑوں روپیہ بات کی بات میں خرچ کر دیتی ہے اُس میں کتنا واجب طور پر اور ایمانداری سے خرچ کرتی ہے۔ مدراس کے 'ہندو' جیسے ٹھنڈے اخبار نے یہ لکھا ہے کہ اگر ریلوے منسٹری یا سرکار اپنی نئی اسکیموں میں پیسہ اس طرح بے احتیاطی، لاپرواہی اور غیر سمجھداری کے ساتھ بہائیگی تو جلدی ہی وہ وقت آنے والا ہے جب جنتا یہ آواز اٹھائیگی کہ بابا اِن وکاس یوجناؤں سے ہمیں بخشو۔

—سریش رام بھائی

[illegible] कोई लिखित वजह नहीं दी गई.

(4) बिना पहले इजाज़त लिये माल खरीद लेना. हमने ऊपर आसाम रेल लिंक की चर्चा की है जिसमें 14 करोड़ खर्च हुए. आडिट रिपोर्ट में कहा गया है कि एक करोड़ का सामान चीफ़ इन्जिनियर की इजाज़त लिये बिना ही खरीद लिया गया. लोकल आडिट में एतराज़ किया गया पर कोई ध्यान नहीं दिया गया. इसके अलावा तरह एक करोड़ सत्तर लाख (170 लाख रुपये) का काम इस आसाम रेल लिंक में बिना टेन्डर के दिया गया इस तरह चौदह करोड़ में तीन पौने तीन करोड़ तो यों ही खर्च हो गये !

(5) विदेशी फ़र्मों से जो सौदे किये जाते हैं वह बिला सोचे समझे और उन पर भी बाद में कोई तवज्जेह नहीं दी जाती. इस बारे में आडिट रिपोर्ट ने जो लिखा है उससे तो हमें शक होने लगता है कि रेलवे बोर्ड या रेलवे मिनिस्टर शायद एक दम सोये हुए रहते हैं. 28 मई 1949 को रेलवे बोर्ड ने स्विटज़रलैन्ड की एक कम्पनी से 12 साल के लिये एक राज़ी नामा किया ताकि सिर्फ़ धातु के और हलके वज़न के रेल के डिब्बे तैयार करने का कारखाना लगाने में उससे तकनीकी मदद मिले. हिन्द सरकार ने तय किया था कि शुरू के दो साल तक तीन लाख फ्रैन्क (स्विटज़रलैन्ड का सिक्का) सालाना उस कम्पनी को दिये जायेंगे और बाद में यह रकम कम होती जायगी. लेकिन रेलवे बोर्ड यह तय ही नहीं कर सका कि कारखाना किस जगह खोला जायगा. इसलिये इस राज़ीनामे से पूरा फ़ायदा न उठाया जा सका. मगर उस कम्पनी को पैसा लगातार दिया जाता रहा. इस तरह 8,80,000 फ्रैंक 1951 तक उस कम्पनी को मिले. मगर इसके बदले में कम्पनी ने सिर्फ़ यह काम किया कि डिब्बों के नमूने का नक़्शा भेज दिया और उस नक़्शे को बनाने के लिये छै 'एक्सपर्ट' भेजे. यह छै आदमी कोई 13 महीने तक हिन्द सरकार के खर्चे पर रहे जिनके ऊपर दो लाख रुपया और खर्च हो गया !

इसी राज़ीनामे में यह भी तय हुआ था कि सरकार इस कम्पनी से चार साल तक 50 डिब्बे हर साल खरीदेगी. 1950 और 1951 में हिन्द सरकार ने 100 डिब्बों का आर्डर दे भी दिया. लेकिन 1952 के शुरू तक एक भी डिब्बा बरामद नहीं हुआ. मगर हमारी सरकार ने आधे डिब्बों के दाम पेशगी के तौर पर 61·87 लाख रुपया कम्पनी को अदा भी कर दिया. आडिट रिपोर्ट ने इस राज़ीनामे और सरकारी खर्च पर जो एतराज़ उठाये हैं वह हम नीचे देते हैं :—

(i) बिना यह तय किये कि फैक्ट्री कहां खड़ी की जायगी और उसमें कितना खर्च बैठेगा सरकार ने राज़ीनामा करके पैसा देने का वायदा कर लिया.

[illegible] کو نہ دی گئی کو فوجوں کو [illegible] کی لکھی وجہ نہیں دی گئی ۔

(4) بنا پہلے اجازت لئے مال خرید لینا ۔ ہم نے اوپر آسام ریل لنک کی چرچا کی ہے جس میں 14 کروڑ خرچ ہوئے ۔ آڈٹ رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ ایک کروڑ کا سامان چیف انجینیر کی اجازت لئے بنا ہی خرید لیا گیا ۔ لوکل آڈٹ میں اعتراض کیا گیا پر کوئی دھیان نہیں دیا گیا ۔ اس کے علاوہ ایک کروڑ ستر لاکھ (170 لاکھ روپئے) کا کام اس آسام ریل لنک میں بنا ٹینڈر کے دے دیا گیا ۔ اس طرح چودہ کروڑ میں تین پونے تین کروڑ تو یوں ہی خرچ ہوگئے !

(5) ودیشی فرموں سے جو سودے کئے جاتے ہیں وہ بنا سوچے سمجھے اور ان پر بھی بعد میں کوئی توجہ نہیں دی جاتی ۔ اس بارے میں آڈٹ رپورٹ جو لکھا ہے اس سے تو ہمیں شک ہونے لگتا ہے کہ ریلوے بورڈ کا ریلوے منسٹر شاید ایک دم سوئے ہوئے رہتے ہیں ۔ 28 مئی 1949 کو ریلوے بورڈ نے سوئٹزرلینڈ کی ایک کمپنی سے 12 سال کے لئے ایک راضی نامہ کیا تاکہ صرف دھاتو کے اور ہلکے وزن کے ریل کے ڈبے تیار کرنے کا کارخانہ لگانے میں اس سے تکنیکی مدد ملے ۔ ہند سرکار نے طے کیا تھا کہ شروع کے دو سال تک تین ساکھ فرینک (سوئٹزرلینڈ کا سکہ) سالانہ اس کمپنی کو دیئے جائینگے اور بعد میں یہ رقم کم ہوتی جائیگی ۔ لیکن ریلوے بورڈ یہ طے نہیں کر سکا کہ کارخانہ کس جگہ کھولا جائے گا اسلئے اس راضی نامے سے پورا فائدہ نہ اٹھایا جا سکا ۔ مگر اس کمپنی کو پیسہ لگاتار دیا جاتا رہا ۔ اس طرح 8,80,000 فرینک 1951 تک کمپنی کو ملے ۔ مگر اس کے بدلے میں کمپنی نے صرف یہ کام کیا کہ ڈبوں کے نمونے کا نقشہ بھیج دیا اور اس نقشے کو بنانے کے لئے چھ ' ایکسپرٹ ' بھیجے ۔ یہ چھ آدمی کوئی 13 مہینے تک ہند سرکار کے خرچے پر رہے جنکے کے اوپر دو لاکھ روپیہ اور خرچ ہوگیا !

اسی راضی نامے میں یہ بھی طے ہوا تھا کہ سرکار اس کمپنی سے چار سال تک 50 ڈبے ہر سال خریدے گی 1950 اور 1951 میں ہند سرکار نے 50 ڈبوں کا آرڈر دے بھی دیا ۔ لیکن 1952 کے شروع تک ایک بھی ڈبہ برآمد نہیں ہوا ۔ مگر ہماری سرکار نے آدھے ڈبوں کے دام پیشگی کے طور پر 16.87 لاکھ روپیہ کمپنی کو ادا بھی کر دیا ۔ آڈٹ رپورٹ نے اس راضی نامے اور سرکاری خرچ پر جو اعتراض اٹھائے ہیں وہ ہم نیچے دیتے ہیں :—

(i) بنا یہ طے کئے کہ فیکٹری کہاں کھڑی کی جائے گی اور اسمیں کتنا خرچا بیٹھیگا سرکار نے راضی نامہ کر کے پیسہ دینے کا وعدہ کر لیا ۔

अब हम जब इसी साल की आडिट रिपोर्ट को देखें जो अभी निकली है. उसमें बतलाया गया है कि रेलवे के हिसाब किताब में जो गड़बड़ी है उसकी तह में पांच बातें हैं—

(1) जो नये काम किये जाते हैं उनके तख़मीने ठीक से नहीं बनाये जाते और बाद में उन कामों के लिये ज़ियादा से ज़ियादा पैसे की ग्रान्टें मांगी जाती हैं. यह ख़र्च ग्रान्टों से कहीं ज़ियादा कर दिया जाता है. मिसाल के तौर पर "काग़ज़ क़लम, फ़ार्म और टिकट" के लिये 70 लाख रुपये की ग्रान्ट थी. बाद में उसे बढ़ा कर 92 लाख की ग्रांट मांगी गई, मगर ख़र्च हुआ एक करोड़ चार लाख (104 लाख).

(2) माल जो ख़रीदा जाता है उस पर कोई निगरानी नहीं रहती—उस में चोरी होती है और वह ग़ायब किया जाता है. मिसाल के तौर पर "हरजाने" की मद में ग्रांट थी 130 लाख रुपये की—भला सोचिये सवा करोड़ हरजाने में दे दिया जाये—मगर ख़र्च हुआ 371 लाख यानी पौने चार करोड़ के क़रीब. रेलवे के गोदामों का दरवाज़ा खुला है जो चाहे गोल कर दे. रिपोर्ट में बताया गया है कि सिमेन्ट लोहा, फ़र्नीचर, टीन वग़ैरा के हिसाब ख़ास तौर से ठीक ठीक नहीं मिलते. क्या यह मुमकिन नहीं है कि यह चीज़ें रेलवे के गोदामों से ग़ायब कर दी गई हों और क्योंकि इन दिनों इनकी कमी थी ही इसलिये चोरबाज़ार में ठाठ से बेची गई हों? रिपोर्ट में लिखा है कि सिमेन्ट के बोरे के बोरे अनजाने आदमियों को दे दिये गये. एक आदमी ने लोहा बुक कराया, रेलवे की किताबें कहती हैं कि उसे "डेलिवरी" दे दी गई पर उसे रत्ती भर भी लोहा न मिला और फिर रेलवे ने उसे हरजाना अदा किया. इसी को कहते हैं माले मुफ़्त दिले बेरहम.

हम लोग चितरंजन के इन्जिन बनाने के कारख़ाने का बड़ा नाम सुनते हैं. वहां के बारे में आडिट रिपोर्ट का कहना है कि खाते का हिसाब कहीं था कहीं नहीं था और क्योंकि उसके सिर पैर नहीं मिलते थे इसलिये उसे जांचा ही नहीं जा सका. मुबारक हो हमारी रेलवे मिनिस्ट्री को जो इस तरह कारख़ानों को खोल खोल कर रुपये बहा कर देश को स्वावलम्बी बनाने चली है!

(3) ठेके जिन नियम या शर्तों पर दिये जाते हैं उनकी कोई पाबन्दी नहीं की जाती. मिसाल के लिये सिलीगुरी नार्थ स्टेशन (आसाम) बनाया गया. इस काम के लिये रेट तब तय किये गये जब काम शुरू हो गया! और क्या रेट तय हुए इसकी ख़बर चीफ़ इन्जीनियर को भी नहीं! और न कोई टेन्डर ही लिये गये!! ज़ाहिर है कि तब तो रेलवे के ठेकेदारों ने जो चाहा होगा वही पाया होगा. ऐसी भी मिसालें मिलती हैं कि टेन्डर लिये गये लेकिन सबसे

[illegible] میں بتلایا گیا ہے کہ ریلوے کے حساب کتاب میں جو گڑبڑی ہے اس کی تہہ میں پانچ باتیں ہیں—

(1) جو نئے کام کئے جاتے ہیں ان کے تخمینے ٹھیک سے نہیں بنائے جاتے اور بعد میں ان کاموں کے لئے زیادہ سے زیادہ پیسے کی گرانٹیں مانگی جاتی ہیں یہ خرچ گرانٹوں سے کہیں زیادہ کر دیا جاتا ہے۔ مثال کے طور پر "کاغذ قلم، فارم اور ٹکٹ" کے لئے 70 لاکھ روپئے کی گرانٹ تھی۔ بعد میں اسے بڑھا کر 92 لاکھ کی گرانٹ مانگی گئی، مگر خرچ ہوا ایک کروڑ چار لاکھ (104 لاکھ).

(2) مال جو خریدا جاتا ہے اس پر کوئی نگرانی نہیں رہتی—اس میں چوری ہوتی ہے اور وہ غائب کیا جاتا ہے۔ مثال کے طور پر "ہرجانے" کی مد میں گرانٹ تھی 130 لاکھ روپئے کی—بھلا سوچئے سوا کروڑ ہرجانے میں دے دیا جائے—مگر خرچ ہوا 371 لاکھ یعنی پونے چار کروڑ کے قریب۔ ریلوے کے گوداموں کا دروازہ کھلا ہے جو چاہے گول کر دے۔ رپورٹ میں بتایا گیا ہے کہ سیمنٹ، لوہا، فرنیچر، ٹین وغیرہ کے حساب خاص طور سے ٹھیک ٹھیک نہیں ملتے۔ کیا یہ ممکن نہیں ہے کہ یہ چیزیں ریلوے کے گوداموں سے غائب کر دی گئی ہوں اور چونکہ ان دنوں ان کی کمی تھی ہی اس لئے چور بازار میں ٹھاٹھ سے بیچی گئی ہوں؟ رپورٹ میں لکھا ہے کہ سیمنٹ کے بورے کے بورے انجانے آدمیوں کو دے دئے گئے۔ ایک آدمی نے لوہا بک کرایا، ریلوے کی کتابیں کہتی ہیں کہ اسے "ڈیلیوری" دے دی گئی پر اسے رتی بھر بھی لوہا نہ ملا اور پھر ریلوے نے اسے ہرجانہ ادا کیا۔ اسی کو کہتے ہیں مال مفت دل بے رحم۔

ہم لوگ چترنجن کے انجن بنانے کے کارخانے کا بڑا نام سنتے ہیں۔ وہاں کے بارے میں آڈٹ رپورٹ کا کہنا ہے کہ کھاتے کا حساب کہیں تھا کہیں نہیں تھا اور چونکہ اس کے سر پیر نہیں ملتے تھے اس لئے اسے جانچا ہی نہیں جا سکا۔ مبارک ہو ہماری ریلوے منسٹری کو جو اس طرح کارخانوں کو کھول کھول کر روپئے بہا کر دیش کو سوا لمبی بنانے چلی ہے۔

(3) ٹھیکے جن نیم یا شرطوں پر دئے جاتے ہیں ان کی کوئی پابندی نہیں کی جاتی۔ مثال کے لئے سلی گوڑی نارتھ اسٹیشن (آسام) بنایا گیا۔ اس کام کے لئے ریٹ تب طے کئے گئے جب کام شروع ہو گیا تھا! اور کیا ریٹ طے ہوئے اس کی خبر چیف انجینئر کو بھی نہیں! اور نہ کوئی ٹینڈر ہی لئے گئے!! ظاہر ہے کہ تب تو ریلوے کے ٹھیکیداروں نے جو چاہا ہوگا وہی پایا ہوگا۔ ایسی مثالیں بھی ملتی ہیں کہ ٹینڈر لئے گئے لیکن سب سے

कीं न थीं कर दूसरों को दिये गये, पर इसकी कोई लिखित वजह नहीं दी गई.

(4) बिना पहले इजाजत लिये माल खरीद लेना. हमने ऊपर आसाम रेल लिंक की चर्चा की है जिसमें 14 करोड़ खर्च हुए. आडिट रिपोर्ट में कहा गया है कि एक करोड़ का सामान चीफ इन्जिनियर की इजाजत लिये बिना ही खरीद लिया गया. लोकल आडिट में एतराज किया गया पर कोई ध्यान नहीं दिया गया. इसके अलावा तरह एक करोड़ सत्तर लाख (170 लाख रुपये) का काम इस आसाम रेल लिंक में बिना टेन्डर के दिया गया इस तरह चौदह करोड़ में तीन पौने तीन करोड़ तो यों ही खर्च हो गये !

(5) विदेशी फ़र्मों से जो सौदे किये जाते हैं वह बिना सोचे समझे और उन पर भी बाद में कोई तवज्जेह नहीं दी जाती. इस बारे में आडिट रिपोर्ट ने जो लिखा है उससे तो हमें शक होने लगता है कि रेलवे बोर्ड या रेलवे मिनिस्टर शायद एक दम सोये हुए रहते हैं. 28 मई 1949 को रेलवे बोर्ड ने स्विटज़रलैन्ड की एक कम्पनी से 12 साल के लिये एक राज़ीनामा किया ताकि सिर्फ़ धातु के और हलके वज़न के रेल के डिब्बे तैयार करने का कारखाना लगाने में उससे तकनीकी मदद मिले. हिन्द सरकार ने तय किया था कि शुरू के दो साल तक तीन लाख फ्रैंक (स्विटज़रलैन्ड का सिक्का) सालाना उस कम्पनी को दिये जायेंगे और बाद में यह रकम कम होती जायगी. लेकिन रेलवे बोर्ड यह तय ही नहीं कर सका कि कारखाना किस जगह खोला जायगा. इसलिये इस राज़ीनामें से पूरा फ़ायदा न उठाया जा सका. मगर उस कम्पनी को पैसा लगातार दिया जाता रहा. इस तरह 8,80,000 फ्रैंक 1951 तक उस कम्पनी को मिले. मगर इसके बदले में कम्पनी ने सिर्फ़ यह काम किया कि डिब्बों के नमूने का नक़्शा भेज दिया और उस नक़्शे को बनाने के लिये छै 'एक्सपर्ट' भेजे. यह छै आदमी कोई 13 महीने तक हिन्द सरकार के खर्च पर रहे जिनके ऊपर दो लाख रुपया और खर्च हो गया !

इसी राज़ीनामें में यह भी तय हुआ था कि सरकार इस कम्पनी से चार साल तक 50 डिब्बे हर साल खरीदेगी. 1950 और 1951 में हिन्द सरकार ने 100 डिब्बों का आर्डर दे भी दिया. लेकिन 1952 के शुरू तक एक भी डिब्बा बरामद नहीं हुआ. मगर हमारी सरकार ने आधे डिब्बों के दाम पेशगी के तौर पर 61·87 लाख रुपया कम्पनी को अदा भी कर दिया. आडिट रिपोर्ट ने इस राज़ीनामे और सरकारी खर्च पर जो एतराज़ उठाये हैं वह हम नीचे देते हैं :—

(i) बिना यह तय किये कि फैक्ट्री कहां खड़ी की जायगी और उसमें कितना खर्च बैठेगा सरकार ने राज़ीनामा करके पैसा देने का वायदा कर लिया.

کم والے کو ٹھیکے دے کر دوسروں کو دئے گئے پر اس کی کوئی لکھت وجہ نہیں دی گئی۔

(4) بنا پہلے اجازت لئے مال خرید لینا۔ ہم نے اوپر آسام ریل لنک کی چرچا کی ہے جس میں 14 کروڑ خرچ ہوئے۔ آڈٹ رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ ایک کروڑ کا سامان چیف انجینیر کی اجازت لئے بنا ہی خرید لیا گیا۔ لوکل آڈٹ میں اعتراض کیا گیا پر کوئی دھیان نہیں دیا گیا۔ اس کے علاوہ ایک کروڑ ستر لاکھ (170 لاکھ روپئے) کا کام اس آسام ریل لنک میں بنا ٹھیکدار کے دے دیا گیا۔ اس طرح چودہ کروڑ میں تین پونے تین کروڑ تو یوں ہی خرچ ہوگئے!

(5) ودیشی فرموں سے جو سودے کئے جاتے ہیں وہ بنا سوچے سمجھے اور ان پر بھی بعد میں کوئی توجہ نہیں دی جاتی۔ اس بارے میں آڈٹ رپورٹ جو لکھا ہے اس سے تو ہمیں شک ہونے لگتا ہے کہ ریلوے بورڈ کا ریلوے منسٹر شاید ایک دم سوئے ہوئے رہتے ہیں۔ 28 مئی 1949 کو ریلوے بورڈ نے سوئٹزرلینڈ کی ایک کمپنی سے 12 سال کے لئے ایک راضی نامہ کیا تاکہ صرف دھاتو کے اور ہلکے وزن کے ریل کے ڈبے تیار کرنے کا کارخانہ لگانے میں اس سے تکنیکی مدد ملے۔ ہند سرکار نے طے کیا تھا کہ شروع کے دو سال تک تین لاکھ فرینک (سوئٹزرلینڈ کا سکہ) سالانہ اس کمپنی کو دئے جائینگے اور بعد میں یہ رقم کم ہوتی جائیگی۔ لیکن ریلوے بورڈ یہ طے نہیں کر سکا کہ کارخانہ کس جگہ کھولا جائے گا اسلئے اس راضی نامے سے پورا فائدہ نہ اٹھایا جا سکا۔ مگر اس کمپنی کو پیسہ لگاتار دیا جاتا رہا۔ اس طرح 8,80,000 فرینک 1951 تک کمپنی کو ملے۔ مگر اس کے بدلے میں کمپنی نے صرف یہ کام کیا کہ ڈبوں کے نمونے کا نقشہ بھیج دیا اور اس نقشے کو بنانے کے لئے چھ 'ایکسپرٹ' بھیجے۔ یہ چھ آدمی کوئی 13 مہینے تک ہند سرکار کے خرچے پر رہے جنکے اوپر دو لاکھ روپیہ اور خرچ ہوگیا!

اسی راضی نامے میں یہ بھی طے ہوا تھا کہ سرکار اس کمپنی سے چار سال تک 50 ڈبے ہر سال خریدے گی 1950 اور 1951 میں ہند سرکار نے 50 ڈبوں کا آرڈر دے بھی دیا۔ لیکن 1952 کے شروع تک ایک بھی ڈبہ برآمد نہیں ہوا۔ مگر ہماری سرکار نے آدھے ڈبوں کے دام پیشگی کے طور پر 16.87 لاکھ روپئے کمپنی کو ادا بھی کر دیا۔ آڈٹ رپورٹ نے اس راضی نامے اور سرکاری خرچ پر جو اعتراض اٹھائے ہیں وہ ہم نیچے دیتے ہیں :—

(i) بنا یہ طے کئے کہ فیکٹری کہاں کھڑی کی جائے گی اور اسمیں کتنا خرچا بیٹھیگا' سرکار نے راضی نامہ کر کے پیسہ دینے کا وعدہ کر لیا۔

पर हम अब इसी साल की आडिट रिपोर्ट को देखें जो अभी निकली है. उसमें बताया गया है कि रेलवे के हिसाब किताब में जो गड़बड़ी है उसकी तह में पांच बातें हैं—

(1) जो नये काम किये जाते हैं उनके तख़मीने ठीक से नहीं बनाये जाते और बाद में उन कामों के लिये ज़ियादा से ज़ियादा पैसे की ग्रान्टें मांगी जाती हैं. यह ख़र्च ग्रान्टों से कहीं ज़ियादा कर दिया जाता है. मिसाल के तौर पर "काग़ज़ क़लम, फ़ार्म और टिकट" के लिये 70 लाख रुपये की ग्रान्ट थी. बाद में उसे बढ़ा कर 92 लाख की ग्रांट मांगी गई, मगर ख़र्च हुआ एक करोड़ चार लाख (104 लाख).

(2) माल जो ख़रीदा जाता है उस पर कोई निगरानी नहीं रहती—उस में चोरी होती है और वह ग़ायब किया जाता है. मिसाल के तौर पर "हरजाने" की मद में ग्रांट थी 130 लाख रुपये की—भला सोचिये सवा करोड़ हरजाने में दे दिया जाये—मगर ख़र्च हुआ 371 लाख यानी पौने चार करोड़ के क़रीब. रेलवे के गोदामों का दरवाज़ा खुला है जो चाहे गोल कर दे. रिपोर्ट में बताया गया है कि सिमेन्ट लोहा, फ़र्नीचर, टीन वग़ैरा के हिसाब ख़ास तौर से ठीक ठीक नहीं मिलते. क्या यह मुमकिन नहीं है कि यह चीज़ें रेलवे के गोदामों से ग़ायब कर दी गई हों और क्योंकि उन दिनों इनकी कमी थी ही इसलिये चोरबाज़ार में ठाठ से बेची गई हों? रिपोर्ट में लिखा है कि सिमेन्ट के बोरे के बोरे अनजाने आदमियों को दे दिये गये. एक आदमी ने लोहा बुक कराया, रेलवे की किताबें कहती हैं कि उसे "डेलीवरी" दे दी गई पर उसे रत्ती भर भी लोहा न मिला और फिर रेलवे ने उसे हरजाना अदा किया. इसी को कहते हैं माले मुफ़्त दिले बेरहम.

हम लोग चित्तरंजन के इन्जिन बनाने के कारख़ाने का बड़ा नाम सुनते हैं. वहां के बारे में आडिट रिपोर्ट का कहना है कि खाते का हिसाब कहीं था कहीं नहीं था और क्योंकि उसके सिर पैर नहीं मिलते थे इसलिये उसे जांचा ही नहीं जा सका. मुबारक हो हमारी-रेलवे मिनिस्ट्री को जो इस तरह कारख़ानों को खोल खोल कर रुपये बहा कर देश को स्वावलम्बी बनाने चली है!

(3) ठेके जिन नियम या शर्तों पर दिये जाते हैं उनकी कोई पाबन्दी नहीं की जाती. मिसाल के लिये सिलीगुरी नार्थ स्टेशन (आसाम) बनाया गया. इस काम के लिये रेट तब तय किये गये जब काम शुरू हो गया! और क्या रेट तय हुए इसकी ख़बर चीफ़ इन्जीनियर को भी नहीं! और न कोई टेन्डर ही लिये गये!! ज़ाहिर है कि तब तो रेलवे के ठेकेदारों ने जो चाहा होगा वही चला होगा. ऐसी भी मिसालें मिलती हैं कि टेन्डर लिये गये लेकिन सबसे

پر ہم اب اسی سال کی آڈٹ رپورٹ کو دیکھیں جو ابھی نکلی ہے. اس میں بتایا گیا ہے کہ ریلوے کے حساب کتاب میں جو گڑبڑی ہے اس کی تہہ میں پانچ باتیں ہیں—

(1) جو نئے کام کئے جاتے ہیں اُن کے تخمینے ٹھیک سے نہیں بنائے جاتے اور بعد میں اُن کاموں کے لئے زیادہ سے زیادہ پیسے کی گرانٹیں مانگی جاتی ہیں یا خرچ گرانٹوں سے کہیں زیادہ کر دیا جاتا ہے۔ مثال کے طور پر "کاغذ—قلم' فارم اور ٹکٹ" کے لئے 70 لاکھ روپئے کی گرانٹ تھی۔ بعد میں اسے بڑھا کر 92 لاکھ کی گرانٹ مانگی گئی' مگر خرچ ہوا ایک کروڑ چار لاکھ (104 لاکھ).

(2) مال جو خریدا جاتا ہے اس پر کوئی نگرانی نہیں رہتی—اس میں چوری ہوتی ہے اور وہ غائب کیا جاتا ہے۔ مثال کے طور پر "ہرجانے" کی مد میں گرانٹ تھی 130 لاکھ روپئے کی—بھلا سوچئے سوا کروڑ ہرجانے میں دے دیا جائے—مگر خرچ ہوا 371 لاکھ یعنی پونے چار کروڑ کے قریب۔ ریلوے کے گوداموں کا دروازہ کھلا ہے جو چاہے گول کر دے۔ رپورٹ میں بتایا گیا ہے کہ سیمنٹ' لوہا' فرنیچر' ٹین وغیرہ کے حساب خاص طور سے ٹھیک ٹھیک نہیں ملتے۔ کیا یہ ممکن نہیں ہے کہ یہ چیزیں ریلوے کے گوداموں سے غائب کر دی گئیں ہوں اور کیونکہ اُن دنوں انکی کمی تھی ہی اس لئے چور بازار میں ٹھاٹھ سے بیچی گئیں ہوں؟ رپورٹ میں لکھا ہے کہ سیمنٹ کے بورے کے بورے انجانے آدمیوں کو دے دئے گئے۔ ایک آدمی نے لوہا بک کرایا' ریلوے کی کتابیں کہتی ہیں کہ اُسے "ڈیلیوری" دے دی گئی پر اُسے رتی بھر بھی لوہا نہ ملا اور پھر ریلوے نے اُسے ہرجانہ ادا کیا۔ اسی کو کہتے ہیں مالے مفت دلے بے رحم۔

ہم لوگ چترنجن کے انجن بنانے کے کارخانے کا بڑا نام سنتے ہیں۔ وہاں کے بارے میں آڈٹ رپورٹ کا کہنا ہے کہ کھاتے کا حساب کہیں تھا کہیں نہیں تھا اور کیونکہ اس کے سر پیر نہیں ملتے تھے اس لئے اُسے جانچا ہی نہیں جاسکا۔ مبارک ہو ہماری ریلوے منسٹری کو جو اس طرح کارخانوں کو کھول کھول کر روپئے بہا کر دیش کو سوابلمبی بنانے چلی ہے۔

(3) ٹھیکے جن نیم یا شرطوں پر دئے جاتے ہیں اُن کی کوئی پابندی نہیں کی جاتی۔ مثال کے لئے سلی گوری نارتھ اسٹیشن (آسام) بنایا گیا۔ اس کام کے لئے ریٹ تب طے کئے گئے جب کام شروع ہوگیا تھا! اور کیا ریٹ طے ہوئے اس کی خبر چیف انجینئر کو بھی نہیں! اور نہ کوئی ٹینڈر ہی لئے گئے!! ظاہر ہے کہ تب تو ریلوے کے ٹھیکے داروں نے جو چاہا ہوگا وہی چلا ہوگا۔ ایسی بھی مثالیں ملتی ہیں کہ ٹینڈر لئے گئے لیکن سبسے

खर्च	करोड़ रुपये में	کروڑ روپے میں	
वर्किंग खर्च	181·53	181·53	کنگ خرچ
डेपरिसियेशन	11·58	11·58	یری سی ایشن
दूसरी लैनों को दी गई आमदनी	1·80	1·80	سری لینوں کو دی
	194·91	194·91	ی آمدنی
फुटकर खर्च	3·67	3·67	
कुल खर्च	198·58	198·58	ل خرچ
बचत			
आमदनी में बचत	37·77	37.77	مدنی میں بچت
सूद में खर्च	23·18	23·18	ود میں خرچ
ठोस बचत	14·59	14·59	ٹھوس بچت
जनरल रेवीन्यू	7·59	7·59	نرل ریونو
डेपरिसियेशन फंड,	7·00	7·00	یری سی ایشن
	14·59	14·59	

इस तरह 37·77 करोड़ रुपये की आमदनी का हिसाब बराबर कर दिया गया.

यह आंकड़े फ़रवरी 1951 में जब रेलवे मिनिस्टर साहब ने पेश किये थे तो उन्होंने कहा था कि रेलवे में जो सुधार वग़ैरा हमें करना है उसके लिये या तो खर्च कम करें या आमदनी बढ़ावें. खर्च घटाने की कोशिश तो हमारी है मगर "खर्च में कितनी कमी हो सकेगी ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता. लेकिन जितनी भी हो आमदनी तो हमें बढ़ानी ही पड़ेगी और इसके लिये 1950–51 का बजट पेश करते वक़्त उन्होंने किराये इस हिसाब से बढ़ाये थे—

पहले दर्जे में	12 1/2 फ़ी सदी
दूसरे में	14 3/7 „
ड्योढ़े में	16 2/3 से 20 „
तीसरे में	20 से 25 „

ज़ाहिर है कि सब में ज़ियादा चोट तीसरे दर्जे वाले को ही पहुंचाई गई जिसके बल पर रेलवे को करोड़ों की आमदनी होती है.

1949–50 वाले साल में ही चौदह करोड़ रुपये खर्च कर के आसाम को उत्तर बंगाल से रेल द्वारा जोड़ा गया. इस साल की रिपोर्ट में रेलवे मिनिस्ट्री ने अपने कारनामों के और बहुत से राग अलापे हैं.

س طرح 37·77 کی آمدنی کا حساب برابر کر
ا .

آنکڑے فروری 1951 میں ریلوے منسٹر صاحب
ش کئے تھے تو انہوں نے کہا تھا کہ ریلوے میں جو
وغیرہ ہمیں کرنا ہے اسکے لئے یا تو خرچ کم کریں
نی بڑھائیں . خرچ گھٹانے کی کوشش تو ہماری
گر " خرچ میں کتنی کمی ہو سکیگی ٹھیک ٹھیک
کہا جا سکتا . لیکن جتنی بھی ہو آمدنی تو ہمیں
ہی پڑے گی اور اس کے لئے

لے درجے میں	12 1/2 فی صدی
وسرے میں	„ 14 3/7
یوڑھے میں	„ 16 2/3 سے 20
سرے میں	„ 20 سے 25

ظاہر ہے کہ سب میں زیادہ چوٹ تیسرے درجے والے
پہونچائی گئی جس کے بل پر ریلوے کو کروڑوں کی
ہوتی ہے .

1949-50 والے سال میں ہی چودہ کروڑ روپئے خرچ
سام کو اتر بنگال سے ریل دوارا جوڑا گیا . اس سال
پورٹ میں ریلوے منسٹری نے اپنے کارناموں کے اور
سے راگ الاپے ہیں .

[illegible]

खाने पीने का सुबीता रहे. इसके अलावा स्लीपिंग कार होती है ताकि वह आराम से लेट सकें, वाइस वेन्डर का डिब्बा होता है ताकि उन्हें जब चाहे ठंढा पानी मिल सके. अगर किसी को यह जानना हो कि किस तरह ज़ियादा आदमियों को चूस कर थोड़ों को ख़ुश रखा जाता है तो हिन्दुस्तान की रेलवे सब से सीधी मिसाल है. यह देख कर हैरत और भी बढ़ जाती है कि जब रेलवे मिनिस्टर से बाला साहब खेर (जो आज कल इंगलैन्ड में हमारे हाई कमिश्नर हैं)जैसे भोले भाले आदमी ने कहा कि रेलों में से दर्जे ही उड़ा दीजिये तो शास्त्री जी ने फ़रमाया कि ख़याल तो अच्छा है मगर "नई दिशा में जल्द बाज़ी में मैं कोई क़दम नहीं उठा सकता !" इसके साफ़ माने हैं कि 31 मई को शास्त्री जी ने जो इतमिनान दिलाया था वह केवल दिखावे का था जिस पर अमल करने की वह कोई ज़रूरत नहीं महसूस करते.

हमने ऊपर कहा है कि कुछ जानकारी हासिल करने के बाद शास्त्री जी ने बताया कि पांच साल तक डिब्बों वग़ैरा की कमी के कारन तीसरे दर्जे वालों की मुसीबत बनी रहने वाली है. बड़े अदब के साथ हम शास्त्री जी से अपील करेंगे कि वह अपने महकमे की और ज़ियादा जानकारी हासिल करें. हमें उम्मीद है कि ऐसा करने पर उन्हें पता चलेगा कि अगर रेलवे इन्तज़ाम की हालत यही बनी रही तो जो सब्ज़ बाग़ शास्त्री जी पांच बरस बाद दिखाने का वादा करते हैं उसे वह पांच सौ बरस बाद भी नहीं बना सकेंगे. हमें यह दुख भरी बात रेलवे की आडिट रिपोर्ट जो हाल ही में छपी है, उसे देख कर कहना पड़ता है.

यह आडिट रिपोर्ट साल 1949–50 की बाबत है. इस रिपोर्ट को तो देख कर आंखें खुल जाती हैं और ऐसा महसूस होता है कि हमारे पुराने रेलवे मिनिस्टर साहब जो आजकल डिफ़ेन्स मिनिस्टर हैं महज़ किराया बढ़ा बढ़ा कर रेलवे की आमदनी में इज़ाफ़ा कर के यह डींगें मारना जानते थे कि रेलवे में कितनी तरक़्क़ी है. पर उनको इस की कोई परवाह नहीं थी—या वह इतने बे ख़बर रहते थे या उन्हें इन बातों की इत्तला ही नहीं थी—कि रेलवे महकमे में अन्दर ही अन्दर क्या मनमाना स्वांग चल रहा है.

साल 1949–50 में रेलवे की माली हालत की सूरत यह थी—

आमदनी	करोड़ रुपये में
मुसाफ़िरों से	86·35
मालगाड़ी से	122 62
पार्सल, लगेज वग़ैरा से	27·38
कुल आमदनी	236·35

...ہوتا ہے ./اس کے علاوہ سلیپنگ کار ہوتی ہے تاکہ وہ آرام سے لیٹ سکیں ' آئس وینڈر کا ڈبہ ہوتا ہے تاکہ انہیں جب چاہیں ٹھنڈا پانی مل سکے . اگر کسی کو یہ جاننا ہو کہ کسطرح زیادہ آدمیوں کو چوس کر تھوڑوں کو خوش رکھا جاتا ہے تو ہندستان کی ریلوے سب سے سیدھی مثال ہے . یہ دیکھکر حیرت اور بھی بڑھ جاتی ہے کہ جب ریلوے منسٹر سے بالا صاحب کھیر (جو آجکل انگلینڈ میں ہمارے ہائی کمشنر ہیں) جیسے بھولے بھالے آدمی نے کہا کہ ریلوں میں سے درجے ہی اڑا دیجئے تو شاستری جی نے فرمایا کہ خیال تو اچھا ہے مگر ' نئی دشا میں جلد بازی میں میں کوئی قدم نہیں اٹھا سکتا !" اس کے صاف معنی ہیں کہ 31 مئی کو شاستری جی نے جو اطمینان دلایا تھا وہ کیول دکھاوے کا تھا جس پر عمل کرنے کی وہ کوئی ضرورت نہیں محسوس کرتے .

ہم نے اوپر کہا ہے کہ کچھ جانکاری حاصل کرنے کے بعد شاستری جی نے بتایا کہ پانچ سال تک ڈبوں وغیرہ کی کمی کے کارن تیسرے درجے والوں کی مصیبت بنی رہنے والی ہے . بڑے ادب کے ساتھ ہم شاستری جی سے اپیل کرینگے کہ وہ اپنے محکمے کی اور زیادہ جانکاری حاصل کریں . ہمیں امید ہے کہ ایسا کرنے پر انہیں پتہ چلے گا کہ اگر ریلوے انتظام کی حالت یہی بنی رہی تو جو سبز باغ شاستری جی پانچ برس بعد دکھانے کا وعدہ کرتے ہیں اسے وہ پانچ سو برس بعد بھی نہیں بنا سکیں گے . ہمیں یہ دکھ بھری بات ریلوے کی آڈٹ رپورٹ جو حال ہی میں چھپی ہے ' اسے دیکھکر کہنا پڑتا ہے .

یہ آڈٹ رپورٹ سال 1949–50 کی بابت ہے . اس رپورٹ کو تو دیکھکر آنکھیں کھل جاتی ہیں اور ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ہمارے پرانے ریلوے منسٹر صاحب جو آجکل ڈفنس منسٹر ہیں محض کرایہ بڑھا بڑھا کر ریلوے کی آمدنی میں اضافہ کر کے یہ ڈینگیں مارنا جانتے تھے کہ ریلوے میں کتنی ترقی ہے . پر ان کو اس کی کوئی پرواہ نہیں تھی—یا وہ اتنے بے خبر رہتے تھے یا انہیں ان باتوں کی اطلاع ہی نہیں تھی—کہ ریلوے محکمے میں اندر ہی اندر کیا من مانا سوانگ چل رہا ہے .

سال 1949–50 میں ریلوے کی مالی حالت کی صورت یہ تھی—

آمدنی	کروڑ روپے میں
مسافروں سے	86·35
مال گاڑی سے	122·62
پارسل لگیج وغیرہ سے	27·38
آمدنی	236·35

[illegible] हमारी रेलों के पास इस वक्त डिब्बों और इंजनों वगैरा की इतनी कमी है कि पांच साल तक जब तक हमारे देश में काफ़ी डिब्बे वगैरा बनने न लग जायें यह शिकायत दूर नहीं हो सकती.

इसके बाद जुलाई के दूसरे हफ़्ते में दिल्ली की एक अदालत में रेलवे की तरफ़ से एक 'मुलज़िम' के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दायर किया गया क्योंकि उसने ज़ंजीर खींच कर गाड़ी रोक ली थी अदालत ने मुक़द्दमे को ख़ारिज कर दिया और यह फ़ैसला दिया कि किसी डिब्बे में लिखी हुई तादाद से ज़ियादा सवारियां हों और अगर कोई मुसाफ़िर ज़ंजीर खींच कर डिब्बे से बेशी मुसाफ़िर हटवा देना चाहे तो वह कोई ग़ैर क़ानूनी या नामुनासिब बात न होगी क्योंकि रेलवे एक्ट की धारा नम्बर 63 के अनुसार डिब्बे में मुसाफ़िरों की तादाद दी हुई हद से ज़ियादा नहीं बढ़नी चाहिये.

जिस 'मुलज़िम' ने दिल्ली से मुरादाबाद जाने वाली गाड़ी पर ज़ंजीर खींची थी और जिसके ख़िलाफ़ रेलवे ने ने मुक़द्दमा दायर किया था उसको रिहा करते हुये मजिस्ट्रेट ने कहा—

"अगर मेले का दिन था और भीड़ इतनी ज़ियादा थी तो रेलवे को एक एक्सट्रा ट्रेन का इन्तज़ाम करना चाहिये था. अगर 16 सीटों के डिब्बे में 48 मुसाफ़िर बैठेंगे तो उनको तकलीफ़ होना लाज़मी है. इस मुसाफ़िर ने रेलवे वालों को जब यह इत्तला दे दी थी कि मेरी तबियत ख़राब है और मेरे डिब्बे में से मुसाफ़िर कम कर दीजिये, तो उसका ज़ंजीर खींच लेना ज़ंजीर का बेजा इस्तेमाल नहीं था."

हम जानना चाहेंगे कि ऐसी हालत में वह मुसाफ़िर क्या करे जिसे इलाहाबाद से चल कर प्रतापगढ़ पर पंजाब मेल पकड़ कर अमृतसर जाना हो या इटारसी पर ग्रांड ट्रंक पकड़ कर मद्रास जाना हो. यह रेलें भरी हुई तो रहती ही हैं. इनमें अगर सवार होना है तो फिर ज़ंजीर खिंचवाइये या धक्के खाइये या इस इन्तज़ार में रहिये कि कब देश में काफ़ी डिब्बे होने लगेंगे और कब 16 सीटों के डिब्बे में 16 ही मुसाफ़िर बैठेंगे.

हर कोई जानता है कि आज कल हमारी रेलवे को आमदनी बहुत होती है. सवारी गाड़ी से आमदनी जो हर साल बढ़ रही है उसमें सबसे ज़ियादा हाथ तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों का ही है. लेकिन रेलवे का जो उस के साथ सौतेले पन का और दूसरों दर्जों के साथ सगेपन का जैसा व्यवहार था वैसा ही जारी है. आजकल हमारी रेलों की ख़ास कर डाक गाड़ियों की हालत क्या है? उनमें तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों के वास्ते 4 या 6 डिब्बे रहते हैं तो पहले दूसरे और ड्योढ़े दर्जे वालों के लिये 12-14. फिर एक बड़ी लम्बी रेस्टोरेन्ट कार होती है जिससे ऊंचे दर्जे के मुसाफ़िरों को

یہ بھی کہا کہ ہماری ریلوں کے پاس اس وقت انجنوں وغیرہ کی اتنی کمی ہے کہ پانچ سال تک جب تک ہمارے دیش میں کافی ڈبے وغیرہ بننے نہ لگ جائیں یہ شکایت دور نہیں ہوسکتی۔

اسکے بعد جولائی کے دوسرے ہفتے میں دلی کی ایک عدالت میں ریلوے کی طرف سے ایک 'ملزم' کے خلاف مقدمہ دائر کیا گیا کیونکہ اس نے زنجیر کھینچ کر گاڑی روک لی تھی۔ عدالت نے مقدمے کو خارج کر دیا اور یہ فیصلہ دیا کہ کسی ڈبے میں لکھی ہوئی تعداد سے زیادہ سواریاں ہوں اور اگر کوئی مسافر زنجیر کھینچ کر ڈبے سے بیشی مسافر ہٹوا دینا چاہے تو وہ کوئی غیر قانونی یا نا مناسب بات نہ ہوگی کیونکہ ریلوے ایکٹ کی دھارا نمبر 63 کے انوسار ڈبے میں مسافروں کی تعداد دی ہوئی حد سے زیادہ نہیں بڑھنی چاہئے۔

جس 'ملزم' نے دلی سے مرادآباد جانے والی گاڑی پر زنجیر کھینچی تھی اور جس کے خلاف ریلوے نے مقدمہ دائر کیا تھا اس کو رہا کرتے ہوئے مجسٹریٹ نے کہا—

"اگر میلے کا دن تھا اور بھیڑ اتنی زیادہ تھی تو ریلوے کو ایک ایکسٹرا ٹرین کا انتظام کرنا چاہئے تھا۔ اگر 16 سیٹوں کے ڈبے میں 48 مسافر بیٹھیں گے تو ان کو تکلیف ہونا لازمی ہے۔ اس مسافر نے ریلوے والوں کو جب یہ اطلاع دے دی تھی کہ میری طبیعت خراب ہے اور میرے ڈبے میں سے مسافر کم کر دیجئے' تو اس کا زنجیر کھینچ لینا زنجیر کا بیجا استعمال نہیں تھا۔"

ہم جاننا چاہیں گے کہ ایسی حالت میں وہ مسافر کیا کرے جسے الہ آباد سے چل کر پرتاپگڈھ پر پنجاب میل پکڑ کر امرت سر جانا ہو یا اٹارسی پر گرانڈ ٹرنک پکڑ کر مدراس جانا ہو۔ یہ ریلیں بھری ہوئی تو رہتی ہی ہیں۔ ان میں اگر سوار ہونا ہے تو پھر زنجیر کھنچوائیے یا دھکے کھائیے یا اس انتظار میں رہئے کہ کب دیش میں کافی ڈبے ہونے لگیں گے اور کب 16 سیٹوں کے ڈبے میں 16 ہی مسافر بیٹھیں گے۔

ہر کوئی جانتا ہے کہ آج کل ہماری ریلوے کو آمدنی بہت ہوتی ہے۔ سواری گاڑی سے آمدنی جو ہر سال بڑھ رہی ہے اس میں سب سے زیادہ ہاتھ تیسرے درجے کے مسافروں کا ہی ہے۔ لیکن ریلوے کا جو اس کے ساتھ سوتیلے پن کا اور دوسروں درجوں کے ساتھ سگے پن کا جیسا بیوہار تھا ویسا ہی جاری ہے۔ آجکل ہماری ریلوں کی خاص کر ڈاک گاڑیوں کی حالت کیا ہے؟ ان میں تیسرے درجے کے مسافروں کے واسطے 4 یا 6 ڈبے رہتے ہیں تو پہلے دوسرے اور ڈیوڑھے درجے والوں کے لئے 12-14۔ پھر ایک بڑی لمبی ریسٹورنٹ کار ہوتی ہے جس سے اونچے درجے کے مسافروں کو

नहीं कि हम अपनी सरकार के लिये एक सवापति चुन सकें क्योंकि यह तो हमारा अन्दरूनी मामला है. और फिर हम शेख साहब से यही कहेंगे कि इसमें तो कश्मीर की हार ही है.

यह बात हमने मिसाल के तौर पर कह दी. जो जो बातें कश्मीर और भारत सरकार के बीच तय हुई हैं, उन सब पर इसी तरह दो निगाहों से नज़र डाली जाय तो हमारा ख़याल है हर आदमी इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि कश्मीर में इस वक़्त जो हो रहा है वह ठीक हो रहा है और फिर यह बात भी साफ़ समझ में आ जायगी कि शेख साहब कोई चाल नहीं चल रहे हैं. वह वही कर रहे हैं और करना चाहते हैं जिसमें कश्मीर की अगर एक भलाई हो तो भारत की डेढ़ भलाई हो.

कश्मीर का सवाल नाज़ुक सवाल है. इसे इस नज़र से सोचना ही नहीं चाहिये कि वहां राजा हिन्दू है या मुसलमान. आज कल राजाओं कि कुछ न पूछिये, हमें तो मिस्र के फ़ारूक शाह की बात ही ठीक मालूम होती है कि बस दुनिया में पांच ही राजा रहेंगे—इंगलिस्तान का राजा, हुक्म का राजा, पान का राजा, ईंट का राजा और चिड़ी का राजा. और क्या कुछ दिन हुये नैपाल के राजा को दिल्ली भाग कर आते दुनिया नहीं देख चुकी है ? वह क्या हिन्दू राजा नहीं था ? जूनागढ़ का नवाब मुसलमान था, पर अब वह कहां है ? और कहां है भोपाल के नवाब ?

—भगवानदीन

نہیں کہ ہم اپنی سرکار کے لئے ایک سبھاپتی چن سکیں کیونکہ یہ تو ہمارا اندرونی معاملہ ہے اور پھر ہم شیخ صاحب سے یہی کہیں گے کہ اس میں تو کشمیر کی ہار ہی ہے۔

یہ بات ہم نے مثال کے طور پر کہہ دی۔ جو جو باتیں کشمیر اور بھارت سرکار کے بیچ طے ہوئی ہیں، اُن سب پر اسی طرح دو نگاہوں سے نظر ڈالی جائے تو ہمارا خیال ہے ہر آدمی اسی نتیجے پر پہنچے گا کہ کشمیر میں اس وقت جو ہو رہا ہے وہ ٹھیک ہو رہا ہے اور پھر یہ بات بھی صاف سمجھ میں آ جائیگی کہ شیخ صاحب کوئی چال نہیں چل رہے ہیں۔ وہ وہی کر رہے ہیں اور کرنا چاہتے ہیں جس میں کشمیر کی اگر ایک بھلائی ہو تو بھارت کی ڈیڑھ بھلائی ہو۔

کشمیر کا سوال نازک سوال ہے۔ اسے اس نظر سے سوچنا ہی نہیں چاہئیے کہ وہاں راجہ ہندو ہے یا مسلمان۔ آج کل راجاؤں کی کچھ نہ پوچھئے، ہمیں تو مصر کے فاروق شاہ کی بات ہی ٹھیک معلوم ہوتی ہے کہ بس دنیا میں پانچ ہی راجہ رہیں گے—انگلستان کا راجہ، حکم کا راجہ، پان کا راجہ، اینٹ کا راجہ اور چڑی کا راجہ۔ اور کیا کچھ دن ہوئے نیپال کے راجہ کو دلی بھاگ کر آتے دنیا نہیں دیکھ چکی ہے؟ وہ کیا ہندو راجہ نہیں تھا؟ جوناگڈھ کا نواب مسلمان تھا پر اب وہ کہاں ہے؟ اور کہاں ہیں بھوپال کے نواب؟

—بھگوان دین

हमारी रेलें किधर ?

मसल मशहूर है कि नया मुल्ला ज़ोर से अज़ान देता है. इसी तरह नई दिल्ली की नई हुकूमत के नये रेलवे मिनिस्टर लाल बहादुर शास्त्री जी ने कौंसिल आफ़ स्टेट में बड़े ज़ोरों के साथ 31 मई को कहा कि "तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों की जो आज हालत है उसे अज़-सरे-नौ बदल ने के लिये मैं जितनी दूर तक जा सकूंगा जाऊँगा." और उन्होंने इतमिनान दिलाया कि इस चीज़ को सब में ज़ियादा अहमियत दी जायगी. यह ख़बर सुन कर देश को कुछ भरोसा हुआ था कि वाक़ई अब हालत कुछ बेहतर हो जायेगी. मगर एक पखवाड़ा भी नहीं बीता था कि इन्दौर में शास्त्री जी ने 12 जून को कहा कि हालांकि रेलवे मिनिस्टर होने के पहले ही मैंने तय कर लिया था कि रेलवे के तीसरे दर्जे में जो जगह की शिकायत रहती है उसे रफ़ा कर दूँगा पर रेलवे महकमे की चीज़ों को देख कर मेरी उम्मीदों पर पानी फिर गया और मैं समझ गया कि तीसरे दर्जे की मुसीबत हल कर लेना कोई आसान काम नहीं है. उन्होंने

ہماری ریلیں کدھر؟

مثل مشہور ہے کہ نیا ملا زور سے اذان دیتا ہے۔ اسی طرح نئی دلی کی نئی حکومت کے نئے ریلوے منسٹر لال بہادر شاستری جی نے کونسل آف اسٹیٹ میں بڑے زوروں کے ساتھ 31 مئی کو کہا کہ "تیسرے درجے کے مسافروں کی جو آج حالت ہے اسے از سرے نو بدلنے کے لئے میں جتنی دور تک جا سکوں گا جاؤنگا۔" اور انہوں نے اطمینان دلایا کہ اس چیز کو سب میں زیادہ اہمیت دی جائے گی۔ یہ خبر سن کر دیش کو کچھ بھروسہ ہوا تھا کہ واقعی اب حالت کچھ بہتر ہو جائے گی۔ مگر ایک پکھواڑا بھی نہیں بیتا تھا کہ اندور میں شاستری جی نے 12 جون کو کہا کہ حالانکہ ریلوے منسٹر ہونے کے پہلے ہی میں نے طے کر لیا تھا کہ ریلوے کے تیسرے درجے میں جو جگہ کی شکایت رہتی ہے اسے رفع کروں گا پر ریلوے محکمے کی چیزوں کو دیکھ کر میری امیدوں پر پانی پھر گیا اور میں سمجھ گیا کہ تیسرے درجے کی مصیبت حل کرنا کوئی آسان کام نہیں ہے۔ انہوں نے

शेख अब्दुल्ला इस तरह की कोशिश करते रहते हैं कि पाकिस्तानी हिस्सा भड़क उठे और उन्हीं को अपना लीडर मानने लगे. यह पहेली भी ऐसा पहलू है जो कश्मीर के बारे में कोई राय बनाने में बड़ा मददगार साबित हो सकती है.

(4) भारत की सरकार अगर इस पोज़ीशन में होती कि जो इसने आज किया है इससे ज़ियादा कुछ कर सकती तो क्या वह उसे करने में कोई कसर उठा रखती. दूसरी तरफ़ अगर शेख़ अब्दुल्ला और कश्मीरी सरकार आज से ज़ियादा मज़बूत होती तो क्या वह इतने पर राज़ी होती जितने पर अब हो गई है ? यह पहलू ऐसा नहीं है जो किसी तरह छोड़ा जा सके.

कश्मीर के मामले में अगर हम बिल्कुल भारतीय नज़र से देखेंगे तो नतीजे पर न पहुंच सकेंगे और अगर कश्मीर सरकार की नज़र से देखेंगे तो भी ठीक नतीजे पर न पहुंच सकेंगे. आज के फ़ैसले की गहराई तो जब ही समझ में आ सकती है जब हम भारतीय सरकार और कश्मीरी सरकार दोनों की मिली हुई नज़र से इस मामले पर नज़र डालें.

भारतीय की हैसियत से हम भारतीय सरकार पर यह टीका कर सकते हैं कि उसने क्या किया जो अपने झंडे के साथ एक दूसरे झंडे, लगने की और इजाज़त दे दी फिर हम यह थोड़े ही सोचेंगे कि वहां एक झंडा पहले से ही मौजूद था या यह कि दो झंडे भी एक रियासत में रह सकते हैं और कहीं कहीं रह रहे हैं.

रही दो झंडों की बात, वह तो जो चाहे दिल्ली में जा कर देख ले. प्रेसीडेन्ट का झंडा अलग है और सरकारी तिरंगा अलग है, और कभी कभी तो यूनियन जैक भी दर्शन दे जाता है. यह ठीक है कि यूनियन जैक को लेकर हाल ही में शोर मचा था और अब वह दर्शन देना बन्द कर देगा. पर जैक के पार्लियामेन्ट भवन पर खड़े हो जाने से न कोई बिजली गिरी न आसमान टूटा.

यह सब हम भले ही करें पर भारतीय की हैसियत से यह हम बर्दाश्त नहीं कर सकते कि कश्मीर के सरकारी भवन पर दो झंडे लगें.

यह तो रही हमारी भारतीय हैसियत, अब हम इसी बात को कश्मीरी हैसियत से सोचते हैं. कश्मीरी हैसियत भी हमारी दो हो सकती हैं—एक राज नेता की हैसियत और दूसरी मामूली आदमी की हैसियत, मामूली आदमी की हैसियत से तो हम कश्मीरी झंडा कश्मीर सरकारी भवन पर लगने को काश्मीरी की बड़ी जीत समझेंगे और शेख़ साहब के गले में हार डाल देंगे. पर राज नेता की हैसियत से तो हम शेख़ साहब से यही कहेंगे कि इस कश्मीरी झंडे को लेकर क्या हम करें जब हमें इतनी भी आज़ादी

شیخ عبداللہ اس طرح کی کوشش کرتے رہتے ہیں کہ پاکستانی حصہ بھڑک اٹھے اور انہیں کو اپنا لیڈر ماننے لگے. یہ پہیلی بھی ایسا پہلو ہے جو کشمیر کے بارے میں کوئی رائے بنانے میں بڑا مددگار ثابت ہو سکتی ہے .

(4) بھارت کی سرکار اگر اس پوزیشن میں ہوتی کہ جو اس نے آج کیا ہے اس سے زیادہ کچھ کر سکتی تو کیا وہ اسے کرنے میں کوئی کسر اٹھا رکھتی . دوسری طرف اگر شیخ عبداللہ اور کشمیری سرکار آج سے زیادہ مضبوط ہوتی تو کیا وہ اتنے پر راضی ہوتی جتنے پر اب ہوگئی ہے ؟ یہ پہلو ایسا نہیں ہے جو کسی طرح چھوڑا جا سکے .

کشمیر کے معاملے میں اگر ہم بالکل بھارتی نظر سے دیکھیں گے تو نتیجے پر نہ پہنچ سکیں گے اور اگر کشمیر سرکار کی نظر سے دیکھیں گے تو بھی ٹھیک نتیجے پر نہ پہنچ سکیں گے . آج کے فیصلہ کی گہرائی تو جب ہی سمجھ میں آ سکتی ہے جب ہم بھارتی سرکار اور کشمیری سرکار دونوں کی ملی ہوئی نظر سے اس معاملے پر نظر ڈالیں.

بھارتیہ کی حیثیت سے ہم بھارتیہ سرکار پر یہ ٹیکا کر سکتے ہیں کہ اس نے کیا کیا جو اپنے جھنڈے کے ساتھ ایک دوسرے جھنڈے لگنے کی اور اجازت دے دی. پھر ہم یہ تھوڑے ہی سوچیں گے کہ وہاں ایک جھنڈا پہلے سے ہی موجود تھا یا یہ کہ دو جھنڈے بھی ایک ریاست میں رہ سکتے ہیں اور کہیں کہیں رہ رہے ہیں .

رہی دو جھنڈوں کی بات' وہ تو جو چاہے دلی میں جاکر دیکھ لے . پریسیڈنٹ کا جھنڈا الگ ہے اور سرکاری ترنگا الگ ہے' اور کبھی کبھی تو یونین جیک بھی درشن دے جاتا ہے . یہ ٹھیک ہے کہ یونین جیک کو لیکر حال ہی میں شور مچا تھا اور اب وہ درشن دینا بند کر دیگا . پر جیک کے پارلیامنٹ بھون پر کھڑے ہو جانے سے نہ کوئی بجلی گری نہ آسمان ٹوٹا .

یہ سب ہم بھلے ہی کریں پر بھارتیہ کی حیثیت سے یہ ہم برداشت نہیں کر سکتے کہ کشمیر کے سرکاری بھون پر دو جھنڈے لگیں .

یہ تو رہی ہماری بھارتیہ حیثیت, اب ہم اسی بات کو کشمیری حیثیت سے سوچتے ہیں . کشمیری حیثیت بھی ہماری دو ہو سکتی ہیں—ایک راج نیتا کی حیثیت اور دوسری معمولی آدمی کی حیثیت معمولی آدمی کی حیثیت سے تو ہم کشمیری جھنڈا کشمیری سرکاری بھون پر لگنے کو کشمیر کی بڑی جیت سمجھیں گے اور شیخ صاحب کے گلے میں ہار ڈال دیں گے . پر راج نیتا کی حیثیت سے تو ہم شیخ صاحب سے یہی کہیں گے کہ اس کشمیری جھنڈے کو لیکر کیا ہم چاٹیں جب ہمیں اتنی بھی آزادی

सारा हिन्दुस्तान यह चिल्ला उठा था कि पाकिस्तान भारत से बढ़ कर रहा कि उसने किसी अंगरेज को अपना गवर्नर जनरल नहीं माना और इन्डिया यानी भारत घटिया रहा कि उसे गवर्नर जनरली के लिये एक भारती नसीब न हुआ. पर कांगरेस इस बदनामी की घूंट को चुपचुप पी गई. यह कांगरेस की बेवक़ूफ़ी नहीं थी, गहरी राजीकाजी चाल थी. आज पाकिस्तान पर बरतानिया का जितना पंजा है उतना इन्डिया यानी भारत पर नहीं. कश्मीर हिन्दुस्तान के हाथ पड़ा इसमें माउन्ट बेटेन का कुछ भी हिस्सा नहीं है, यह मानने से इन्कार करना असलियत से दूर रहना होगा. कश्मीर के हिन्दुस्तान से मिलने के मौक़े पर माउन्ट बेटन की गवर्नर जनरली का हिन्दुस्तान ने पूरा पूरा फ़ायदा उठाया और जिन्ना साहब ही नहीं सैकड़ों पाकिस्तानी तड़प कर रह गये.

माउन्ट बेटेन मुफ़्त में ही पंडित माउन्ट बेटेन नहीं बन गये और विदाई के वक़्त उन्हें कुछ यों ही जय जय के नारे नहीं मिल गये. कुछ बात तो थी. हो सकता है कि पंडित की पदवी माउन्टबेटेन को जवाहरलाल जी ने ऐसे ही दी हो जैसे पहले हिन्दुस्तान में पगड़ी पलट कर यार बना करते थे. तभी तो जवाहरलाल जी ने अपने नाम के पीछे से पंडित हटा दिया क्योंकि वह पंडिताई की पगड़ी तो उन्होंने उतार कर माउन्टबेटेन के सिर बांध दी.

कश्मीर के मामले को समझने के लिए कश्मीर को कई पहलू से देखना पड़ेगा.

(1) कश्मीर का मामला अभी सुरक्षा कौंसिल के सामने है यानी कश्मीर अभी खींचा तानी की हालत में है. पाकिस्तान कभी भड़क उठता है और कह उठता है कि सारा कश्मीर हमारा. ठीक इसी तरह हिन्दुस्तान आये दिन दावा कर बैठता है सारा कश्मीर हमारा. और हाल यह है कि अभी आधा कश्मीर पाकिस्तान के हाथ में है और आधा भारत के हाथ में. भारत और पाकिस्तान दोनों की फ़ौजें अपने अपने हिस्से में डटी पड़ी हैं. आये दिन छोटी मोटी मुठभेड़ भी हो जाती है. इस उलझन को सामने रख कर ही हम कश्मीर की राजनीति को ठीक ठीक समझ सकते हैं.

(2) एक से ज़ियादा बार पत्रों में यह ख़बर उड़ चुकी है कि सुलह कराने वालों की तरफ़ से कश्मीर के बंटवारे का सवाल आया. इसके जवाब में भारत ने यह कहा 'पहले पाकिस्तान से पूछो' यह जवाब राज नेता गिरी और मानने लगे. यह पहेली भी ऐसा पहलू है डिपलोमेसी से भरा हुआ है. मगर कश्मीर के मामले को समझने में बड़े मार्के का है.

(3) कश्मीर की जनता यानी दोनों हिस्सों के लीडर जी जान से यही चाहते हैं कि कुछ भी हो' कश्मीर के टुकड़े न होने पायें. और इसके लिये श्री नगर के शेख़ साहब यानी

سارا ہندستان یہ چلا اُٹھا تھا کہ پاکستان بھارت سے بڑھکر رہا کہ اُس نے کسی انگریز کو اپنا گورنر جنرل نہیں مانا اور انڈیا یعنی بھارت گھٹیا رہا کہ اُسے گورنر جنرلی کے لئے ایک بھارتی نصیب نہ ہوا ۔ پر کانگریس اس بدنامی کی گھونٹ کو چپ چپ پی گئی ۔ یہ کانگریس کی بیوقوفی نہیں تھی گہری راج کاجی چال تھی ۔ آج پاکستان پر برطانیہ کا جتنا پنجہ ہے اُتنا انڈیا یعنی بھارت پہیں ۔ کشمیر ہندستان کے ہاتھ پڑا اِس میں ماؤنٹ بیٹن کا کچھ بھی حصہ نہیں ہے ۔ یہ ماننے سے انکار کرنا اصلیت سے دور رہنا ہوگا. کشمیر کے ہندستان سے ملنے کے موقعے پر ماؤنٹ بیٹن کی گورنر جنرلی کا ہندستان نے پورا پورا فائدہ اُٹھایا ۔ اور جناح صاحب ہی نہیں سینکڑوں پاکستانی تڑپ کر رہ گئے ۔

ماؤنٹ بیٹن مفت میں ہی پنڈت ماؤنٹ بیٹن نہیں بن گئے اور وداعی کے وقت اُنہیں کچھ یونہی جے جے کے نعرے نہیں مل گئے کچھ بات تو تھی ۔ ہوسکتا ہے کہ پنڈت کی پدوی ماؤنٹ بیٹن کو جواہر لال جی نے ایسے ہی دی ہو جیسے پہلے ہندستان میں پگڑی پلٹکر یار بنا کرتے تھے ۔ تبھی تو جواہر لال جی نے اپنے نام کے پیچھے سے پنڈت ہٹا دیا ۔ کیونکہ وہ پنڈتائی کی پگڑی تو اُنہوں نے اُتار کر ماؤنٹ بیٹن کے سر باندھ دی ۔

کشمیر کے معاملے کو سمجھنے کے لئے کشمیر کو کئی پہلو سے دیکھنا پڑیگا ۔

(1) کشمیر کا معاملہ ابھی سرکشا کونسل کے سامنے ہے یعنی کشمیر ابھی کھینچا تانی کی حالت میں ہے ۔ پاکستان کبھی بھڑک اُٹھتا ہے اور کہہ اُٹھتا ہے کہ سارا کشمیر ہمارا ۔ ٹھیک اسی طرح ہندستان آئے دن دعوی کر بیٹھتا ہے سارا کشمیر ہمارا ۔ اور حال یہ ہے کہ ابھی آدھا کشمیر پاکستان کے ہاتھ میں ہے اور آدھا بھارت کے ہاتھ میں ۔ بھارت اور پاکستان دونوں کی فوجیں اپنے اپنے حصے میں ڈٹی پڑی ہیں ۔ آئے دن چھوٹی موٹی مٹھ بھیڑ بھی ہو جاتی ہے ۔ اِس اُلجھن کو سامنے رکھکر ہی ہم کشمیر کی راج نیتی کو ٹھیک ٹھیک سمجھ سکتے ہیں ۔

(2) ایک سے زیادہ بار پتروں میں یہ خبر اُڑ چکی ہے کہ صلح کرانے والوں کی طرف سے کشمیر کے بٹوارے کا سوال آیا ۔ اس کے جواب میں بھارت نے یہی کہا ' پہلے پاکستان سے پوچھو ' یہ جواب نیتاگری اور ڈپلومیسی سے بھرا ہوا ہے مگر کشمیر کے معاملے کو سمجھنے میں بڑے مارکے کا ہے ۔

(3) کشمیر کی جنتا یعنی دونوں حصوں کے لیڈر جی جان سے یہی چاہتے ہیں کہ کچھ بھی ہو کشمیر کے ٹکڑے نہ ہونے پائیں اور اسکے لئے شری نگر کے شیخ صاحب یعنی

सरकार के बीच यह झगड़ा भी एक तरह से वहीं का वहीं रह गया. ईरानी मजलिस के बारे में जो खबरें मिल रही हैं वह इतनी भली नहीं जिनसे यह नतीजा निकाला जा सके कि मुसादिक़ साहब की राह ख़तरों से ख़ाली है.

अमरीकी फ़ौजी सलाहकार हेग के फ़ैसले के बाद से ईरानियों की नज़रों में गिर गया है और अब उसके साथ कैसे बीतेगी इसे भी एक तरह की उलझन ही समझना चाहिये.

इसमें कोई शक नहीं कि डाक्टर मुसादिक़ ने बहुत सोच समझ कर ही ईरान की हकूमत की बागडोर अपने हाथ में ली है. और शायद अब उनके हाथ में इतनी ताक़त ज़रूर है जितनी उन्होंने शाह से मांगना चाही थी और न मिलने पर वह छोड़ कर चल दिये थे. अगर यही बात है तो ज़रूर ईरान में जोर की काया पलट होगी. और जल्दी ही दुनिया को ईरान से नई नई खबरें सुनने को मिलेंगी.

इस वक़्त हर मुल्क को ज़िन्दा रहने के लिये यह ज़रूरी है कि वह दुनिया के सब मुल्कों का दोस्त रहे और सीधे ना सीधे किसी गुट में शामिल होने की कोशिश न करे. इसमें यह नीति ईरान अपनाने वाला है. इसमें शक नहीं कि वह बहुत ख़तरों से बच जायगा पर देखना यह है कि वह पैसे के सवाल को किस तरह हल करता है. जहां अमरीकन सलाहकार हों वहां कम ख़र्चे की बात किसी सरकार को सूझ ही नहीं सकती. और इस वक़्त ईरान की भलाई इसी में है कि वह खुशख़र्ची से कम ले. फ़िज़ूल ख़र्ची से बचे. और इसके लिये डाक्टर मुसादिक़ से अच्छा कोई आदमी नहीं हो सकता.

—भगवानदीन

سرکار کے بیچ ہے یہ جھگڑا بھی ایک طرح سے وہیں کا وہیں رہ گیا ۔ ایرانی مجلس کے بارے میں جو خبریں مل رہی ہیں وہ اتنی بھلی نہیں ہیں جن سے یہ نتیجہ نکالا جاسکے کہ مصادق صاحب کی راہ خطروں سے خالی ہے ۔

امریکی فوجی صلاح کار ہیگ کے فیصلے کے بعد سے ایرانیوں کی نظروں میں گر گیا ہے اور اب اس کے ساتھ کیسی بیتے گی اُسے بھی ایک طرح کی اُلجھن ہی سمجھنا چاہئے ۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ ڈاکٹر مصادق نے بہت سوچ سمجھکر ہی ایران کی حکومت کی باگ ڈور اپنے ہاتھ میں لی ہے. اور شائد اب اُن کے ہاتھ میں اتنی طاقت ضرور ہے جتنی اُنہوں نے شاہ سے مانگنا چاہی تھی اور نہ ملنے پر وہ چھوڑ کر چل دے تھے ۔ اگر یہی بات ہے تو ضرور ایران میں زور کی کایا پلٹ ہوگی اور جلدی ہی دنیا کو ایران سے نئی نئی خبریں سننے کو ملینگی ۔

اس وقت ہر ملک کو زندہ رہنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ وہ دنیا کے سب ملکوں کا دوست رہے اور سیدھے نہ سیدھے کسی گٹ میں شامل ہونے کی کوشش نہ کرے ۔ شائد یہ نیتی ایران اپنانے والا ہے ۔ اسمیں شک نہیں کہ وہ بہت خطروں سے بچ جائیگا پر دیکھنا یہ ہے کہ وہ پیسے کے سوال کو کس طرح حل کرتا ہے. جہاں امریکن صلاح کار ہو وہاں کم خرچ کی بات کسی سرکار کو سوجھ ہی نہیں سکتی ۔ اور اس وقت ایران کی بھلائی اِسی میں ہے کہ وہ خوش خرچی سے کم لے فضول خرچی سے بچے ۔ اور اِس کے لئے ڈاکٹر مصادق سے اچھا کوئی آدمی نہیں ہوسکتا ۔

—بھگوان دین

कश्मीर

अंगरेज़ों के यहां रहते अगर रियासतों का बंटवारा हुआ होता तो हम ख़ुशी न ख़ुशी उस पर ज़रूर राज़ी हो गये होते. और फिर काश्मीर का सवाल हमारे सामने ही न होता हां फिर हैदराबाद में पुलिस कारवाई करने की ज़रूरत न पड़ती. पर अंगरेज़ी राज नेता और पक्के डिप्लोमेट माउन्ट बेटेन ने यह ठीक नहीं समझा और यह रियासतों पर ही छोड़ दिया गया कि वह जिसके साथ मिलना चाहें मिल जायं.

इंडिया यानी भारत ने यह बदनामी कुछ यों ही नहीं अपने सिर ओढ़ ली थी कि पाकिस्तान के सबसे पहले गवर्नर जनरल थे जिन्ना साहब और इंडिया यानी भारत के पहले गवर्नर जनरल थे श्रीमान माउन्ट बेटेन. उस वक़्त तो

کشمیر

انگریزوں کے یہاں رہتے اگر ریاستوں کا بٹوارہ ہوا ہوتا تو ہم خوشی نہ خوشی اُس پر ضرور راضی ہو گئے ہوتے اور پھر کشمیر کا سوال ہمارے سامنے ہی نہ ہوتا ۔ ہاں پھر حیدرآباد میں پولیس کاروائی کرنے کی ضرورت نہ پڑتی۔ پر انگریزی راج نیتا اور پکے ڈپلومیٹ ماؤنٹ بیٹن نے یہ ٹھیک نہیں سمجھا اور یہ ریاستوں پر ہی چھوڑ دیا گیا کہ وہ جسکے ساتھ ملنا چاہیں مل جائیں ۔

انڈیا یعنی بھارت نے یہ بدنامی کچھ یونہی نہیں اپنے سر اوڑھ لی تھی کہ پاکستان کے سب سے پہلے گورنر جنرل تھے جناح صاحب انڈیا بھارت کے پہلے گورنر جنرل تھے شریمان ماؤنٹ بیٹن اُس وقت تو

मिस्र में यह सब हो तो गया पर हिनोज़ दिल्ली दूरस्त और जब तक मालटा में और साइप्रस में और स्वेज़ में अंगरेज़ मौजूद हैं तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि मिस्र में कब क्या हो जाय.

इसमें कोई शक नहीं कि मिस्र के सिपहसालार को अपने दिल पर बेहद क़ाबू है और जिस को अपने दिल पर क़ाबू है वह सचमुच भारी से भारी दुश्मन पर क़ाबू पा सकता है. पर मुश्किल यही है कि यह क़ाबू पाने का काम सुपुर्द होगा उन कुछ आदमियों पर जिनके हाथ में हुकूमत की बागडोर होगी और उनके बारे में यह कहना ज़रा मुश्किल है कि—उनको भी अपने दिलों पर उतना ही क़ाबू है जितना हुकूमत करने के लिये ज़रूरी है.

मिस्रियों के लिये यह बड़ा अच्छा मौक़ा हाथ आया है. उन्हें चाहिये कि वह कम से कम बाहर के लिये हर मामले में एक राय हो जायें और सूडान के मामले को ऐसे ही सुलझा लें जैसे हिन्दुस्तान कश्मीर के मामले को सुलझाये हुए है. इस काया पलट का असर सूडान पर न पड़ा हो यह नहीं हो सकता. यूँ तो सूडान जी से हमेशा मिस्र का साथी रहा है. पर क्या वेल्स इंगलैंड का हिस्सा नहीं रहा और उसे किस ख़ूबी से इंगलैंड वालों ने अपना बनाये रक्खा. इस वक़्त वैसी ही राजकाजी होशियारी की मिस्रियों को ज़रूरत है और सब को यही उम्मीद है कि वह ऐसे मौक़े पर इतने होशियार ज़रूर साबित होंगे कि सूडानियों की भावनाओं का ख़्याल रख कर ऐसी कोई तरकीब ज़रूर निकाल लेंगे जिससे सूडान और मिस्र दो जिस्म रहते हुए एक जान बने रहें.

—भगवानदीन

मुसादिक़ और ईरान

ईरान में मुसादिक़ साहब के हाथ में फिर से ताक़त आते हुए देख कर दाँतों तले उंगली दाब कर रह जाना पड़ता है. ईरानी जवानों का वही जोश और वलवला बना हुआ है. आर्थिक सवाल वहीं का वहीं है. जिस राष्ट्रीकरन पर इतना तूफ़ान उठा था, वह भी वहीं का वहीं है. ईरान की राष्ट्रीकरन नीति ने दुनिया को दो भागों में बांट दिया है. कुछ उसे बिल्कुल ठीक समझते हैं, दूसरे उसे ठीक तो समझते हैं पर कुछ शर्तों के साथ.

तेल का मामला हेग की अदालत के सामने पेश था. उस अदालत ने जो कुछ दिया उसे फ़ैसला नहीं कहा जा सकता. वह तो फ़ैसला देने से इन्कार है. पर वह इन्कारी फ़ैसला भी कुछ कम मार्के की चीज़ नहीं. उससे कम से कम यह तो साफ़ हो ही जाता है कि झगड़ा ईरान और बरतानिया के बीच. में नहीं है बल्कि एक स्वदेशी-विदेशी कम्पनी और

مصر میں یہ سب ہو تو گیا پر ہنوز دلی دوراست اور جب تک مالٹا میں اور سائپرس میں اور سوئز میں انگریز موجود ہیں تب تک یہ نہیں کہا جاسکتا کہ مصر میں کب کیا ہو جائے ۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ مصر کے سپہ سالار کو اپنے دل پر بےحد قابو ہے اور جسکو اپنے دل پر قابو ہے وہ سچ مچ بھاری سے بھاری دشمن پر قابو پاسکتا ہے ۔ پر مشکل یہی ہے کہ یہ قابو پانے کا کام سپرد ہوگا اُن کچھ آدمیوں پر جن کے ہاتھ میں حکومت کی باگڈور ہوگی اور اُن کے بارے میں یہ کہنا ذرا مشکل ہے کہ اُنکو بھی اپنے دلوں پر اُتنا ہی قابو ہے جتنا حکومت کرنے کے لئے ضروری ہے ۔

مصریوں کے لئے یہ بڑا اچھا موقعہ ہاتھ آیا ہے. اُنہیں چاہئے کہ وہ کم سے کم باہر کے لئے ہر معاملے میں ایک رائے ہو جائیں اور سوڈان کے معاملے کو ایسے ہی سلجھا لیں جیسے ہندستان کشمیر کے معاملے کو سلجھائے ہوئے ہے ۔ اس کایا پلٹ کا اثر سوڈان پر نہ پڑا ہو یہ نہیں ہوسکتا ۔ یوں تو سوڈان جی سے ہمیشہ مصر کا ساتھی رہا ہے پر کیا ویلس انگلینڈ کا حصہ نہیں رہا اور اُسے کس خوبی سے انگلینڈ والوں نے اپنا بنائے رکھا ۔ اس وقت ویسے ہی راجکاجی ہوشیاری کی مصریوں کو ضرورت ہے اور سب کو یہی اُمید ہے کہ وہ ایسے موقعے پر اتنے ہوشیار ضرور ثابت ہونگے کہ سوڈانیوں کی بھاوناؤں کا خیال رکھ کر ایسی کوئی ترکیب ضرور نکال لیں گے جس سے سوڈان اور مصر دو جسم رہتے ہوئے ایک جان بنے رہیں۔

—بھگوان دین

مصادق اور ایران

ایران میں مصادق صاحب کے ہاتھ میں پھر سے طاقت آتے ہوئے دیکھکر دانتوں تلے اُنگلی دبا کر رہ جانا پڑتا ہے ۔ ایرانی جوانوں کا وہی جوش اور ولولہ بنا ہوا ہے آرتھک سوال وہیں کا وہیں ہے ۔ جس راشٹریہ کرن پر اتنا طوفان اُٹھا تھا وہ بھی وہیں کا وہیں ہے ۔ ایران کی راشٹریہ کرن نیتی نے دنیا کو دو بھاگوں میں بانٹ دیا ہے. کچھ اسے بالکل ٹھیک سمجھتے ہیں پر کچھ شرطوں کے ساتھ ۔

تیل کا معاملہ ہیگ کی عدالت کے سامنے پیش تھا ۔ اُس عدالت نے جو کچھ دیا اُسے فیصلہ نہیں کہا جا سکتا. وہ تو فیصلہ دینے سے انکار ہے پر وہ انکاری فیصلہ بھی کچھ کم مارکے کی چیز نہیں ۔ اُس سے کم سے کم یہ تو صاف ہو ہی جاتا ہے کہ جھگڑا ایران اور برطانیہ کے بیچ میں نہیں ہے بلکہ ایک سودیشی ودیشی کمپنی اور

भागा जाय और उसकी पकड़ से बाहर हो जाय और कहीं उसका बरस डेढ़ बरस का भाई वहीं मौजूद हो तो थप्पड़ खाने वाली लड़की थप्पड़ मारने वाली लड़की के भाई को पीट कर अपनी यह तसल्ली कर लेती है कि उसने लड़की को ही मारा. दलील यह देती है कि वह भी तो इसका भाई है. कुछ ऐसी ही बात और कुछ ऐसी ही दलीलें अमरीकी बहादुर से सुन कर हंसी भी आती है और दुख भी होता है.

यह अमरीकी गये थे कोरिया, कोरिया को आज़ाद करने और लगे हुए हैं उसे बरबाद करने.

अमरीकन रिपोर्टर में ऐसी पोच दलीलें पढ़ कर यही अन्दाज़ा होता है कि अमरीकी कोरिया के मैदान में तंग आ कर बिखर पड़े हैं और अब आगा पीछा सोचे बिना सब कुछ करने पर उतारू हो गये हैं.

बीमारी बम के बारे में अमरीकियों की नज़र में दुनिया भर के वह सब आदमी झूठ फिर चाहे वह दीन जितने धर्मात्मा ही क्यों न हों जो यह कहें कि अमरीकियों ने कोरिया में बीमारी बम फेंके. हां अमरीकियों की नज़र में वह सब सच्चे और क़ाबिल क़द्र हैं. फिर चाहे वह कितने ही पापी क्यों न हों जो यह कहें कि कोरिया पर कोई बीमारी बम नहीं फेंके गये.

देखते हैं कोरिया आज़ाद होता है या उसका नाम ही एशिया के नक़शे से मिट जाता है.

—भगवानदीन

بھاگ جائے اور اُس کی پکڑ سے باہر ہو جائے اور کہیں اُسکا برس ڈیڑھ برس کا بھائی وہیں موجود ہو تو تھپڑ کھانیوالی لڑکی تھپڑ مار نیوالی لڑکی کے بھائی کو پیٹ کر اپنی یہ تسلی کرلیتی ہے کہ اُس نے لڑکی کو ہی مارا . دلیل یہ دیتی ہے کہ وہ بھی تو اِسکا بھائی ہے . کچھ ایسی ہی بات اور کچھ ایسی ہی دلیلیں امریکی بہادر سے سنکر ہنسی بھی آتی ہے اور دکھ بھی ہوتا ہے .

یہ امریکی گئے تھے کوریا' کوریا کو آزاد کرنے اور لگے ہوئے ہیں اُسے برباد کرنے . امریکن ریپورٹر میں ایسی پوچ دلیلیں پڑھ کر یہی اندازہ ہوتا ہے کہ امریکی کوریا کے میدان میں تنگ آکر بکھر پڑے ہیں اور اب آگا پیچھا سوچے بنا سب کچھ کرنے پر اُتارو ہوگئے ہیں .

بیماری بم کے بارے میں امریکیوں کی نظر میں دنیا بھر کے وہ سب آدمی جھوٹ پھر چاہیں وہ دین جتنے دھرماتما ہی کیوں نہ ہوں جو یہ کہیں کہ امریکیوں نے کوریا میں بیماری بم پھینکے. ہاں امریکیوں کی نظر میں وہ سب سچے اور قابل قدر ہیں پھر چاہے وہ کتنے ہی پاپی کیوں نہ ہوں جو یہ کہیں کہ کوریا پر کوئی بیماری بم نہیں پھینکے گئے .

دیکھتے ہیں کوریا آزاد ہوتا ہے یا اُس کا نام ہی ایشیا کے نقشے سے مٹ جاتا ہے .

— بھگوان دین

मिस्र की क्रांति

जुलाई ख़त्म होते होते मिस्र में एक दम काया पलट हो गई. दुनिया अचरज में पड़ गई क्योंकि न एक बन्दूक़ चली न कोई आदमी मरा. तलवारें कमर से बांध कर सिक्खों ने नानकाना में अपनी जानें दी थीं और तलवार की मूठ पर हाथ नहीं जाने दिया था. यह काम मार्के का था. गुरू के बाग़ के सत्याग्रह में छै छै फिट लम्बे सिक्ख जवानों ने उन गोरों के बूट की ठोकरें खाईं थीं जिन्हें अगर वह चाहते तो बग़ल में दबा कर ले जा सकते थे. पर न कभी बदले में हाथ उठाया न कभी उंगली दिखाई. यह काम भी कुछ कम मार्के का न था. इन कामों ने हिन्दुस्तानियों को अचरज में डाला था. पर मिस्र में तो मिस्र के सिपहसालार ने मिस्र की हुकूमत का तख़्ता ही पलट दिया और एक बूंद ख़ून न गिरने दिया. यह बीसवीं सदी का कमाल नहीं तो क्या है? और फिर उस सिपहसालार की नम्रता को देखिये, हर सवाल का जवाब यही कि यह राजकाजी लोग जानें. आज गांधी जी जीते होते तो न जाने इस बदलाव के बारे में क्या कहते.

مصر کی کرانتی

جولائی ختم ہوتے ہوتے مصر میں ایک دم کایا پلٹ ہوگئی . دنیا اچرج میں پڑ گئی کیونکہ نہ ایک بندوق چلی نہ کوئی آدمی مرا . تلواریں کمر سے باندھ کر سکھوں نے ننکانا میں اپنی جانیں دے دی تھیں اور تلوار کی موٹھ پر ہاتھ نہیں جانے دیا تھا . یہ کام مارکے کا تھا. گرو کے باغ کے ستیہ گرہ میں چھ چھ فٹ سکھ جوانوں نے اُن گوروں کے بوٹ کی ٹھوکریں کھائیں تھیں جنھیں اگر وہ چاہتے تو بغل میں دبا کر لے جاسکتے تھے پر نہ کبھی بدلے میں ہاتھ اُٹھایا نہ کبھی اُنگلی دکھائی. یہ کام بھی کچھ کم مارکے کا نہ تھا. اِن کاموں نے ہندستانیوں کو اَچرج میں ڈالا تھا . پر مصر میں تو مصر کے سپہ سالار نے مصر کی حکومت کا تختہ ہی پلٹ دیا اور ایک بوند خون نہ گرنے دیا. یہ بیسویں صدی کا کمال نہیں تو کیا ہے ؟ اور پھر اُس سپہ سالار کی نمرتا کو دیکھئے ہر سوال کا جواب یہی کہ یہ راج کاجی لوگ جانیں آج گاندھی جی جیتے ہوتے تو نہ جانے اس بدلاؤ کے بارے میں کیا کہتے .

अमरीकियों की सूझ बड़ी दूर की है. और अब वह दिन दूर नहीं है जब वह पीकिंग पर बमबारी कर देंगे और दलील उनकी यह होगी कि यह पीकिंग की सरकार ही तो है जो उत्तर कोरिया के लोगों की पीठ ठोकती रहती है और जिसकी वजह से अनगिनत अमरीकियों की जान जा रही है. और फिर चर्चिल साहब कह देंगे कि हां यह बात कुछ ठीक तो मालूम होती है.

अमरीका को यह नहीं मालूम कि यह तोपें नहीं हैं जो अमरीकी जवानों को धराशाई कर रही हैं. यह तो वह उत्तर कोरिया के जवान हैं जो उन तोपों को चलाते हैं. और यह उत्तरी कोरिया के जवान नहीं हैं यह तो वह गेहूँ की रोटियां हैं जो उनके अन्दर काम कर रही हैं. इसलिये जो मुल्क उत्तर कोरिया को अनाज भेजता है उनमें से हर एक इस क़ाबिल है कि उस पर जब चाहे अमरीका बमबारी कर दे. चर्चिल साहब पीठ ठोकने के लिये तैयार ही हैं. वह भेड़िया क्या लड़ाई के क़ायदों के अन्दर काम नहीं कर रहा था जिसने छै महीने से कम उम्र वाले मेमने को यह कह कर खा लिया था कि अगर छै महीने पहले वह नहीं रहा होगा तो उस का बाप रहा होगा ? और क्या इसी न्याय के मुताबिक़ अमरीका यह कहकर मास्को पर बमबारी नहीं कर सकता कि यह रूस ही था कि जिसने उत्तर कोरिया के लोगों को इस तरह क़ौमी तालीम दी कि आज वह बे-धड़क अमरीका के जवानों को ऐसे काटरहे हैं जैसे किसान खेत में गेहूँ के पौधों को काट रहा हो. और क्या यह दलील चर्चिल साहब को कमज़ोर मालूम होगी ?

अगर कहीं चीन और रूस छोटे छोटे और कमज़ोर मुल्क होते तो क्या वह कोरिया की लड़ाई की ज़द में आने से बचे होते ? इस लड़ाई में भी क्या कभी चीन और रूस की सरहद में अमरीका के बम से आदमी नहीं मरे ?

अमरीकन रिपोर्टर ऐसी नई नई दलीलें दे कर यह समझता है कि वह हिन्दुस्तानी जनता को भुलावा दे सकेगा. यह वह भूल है, हिन्दुस्तानी जनता इस तरह भुलावे में नहीं आ सकती. अमरीकन रिपोर्टर का कहना है कि सुलह की बात चीत में यालू बमबारी से ही क्यों धक्का पहुंचा ? इस बात से क्यों नहीं धक्का पहुंचा कि कम्युनिस्टों ने बड़े तोप खाने लेकर पैदल फ़ौजों के ज़रिये यूनो की फ़ौजों पर धावा बोल दिया. यह भी तो कोरिया में हुआ.

बड़ी अच्छी दलील है. यालू बमबारी से बहुत खूब मेल बिठाया है. फ़ौजों का लड़ना और औरतों बच्चों को मार डालना, अगर यह एक बात हो सकती है तो बेशक अमरीका की दलील दमदार समझी जा सकती है. हमने बच्चों में तो यह देखा है कि जब दो बारह बारह बरस की लड़कियां लड़ रही हों और एक लड़की दूसरी को चपत जमा कर

امریکیوں کی سوجھ بڑی دور کی ہے ۔ اور اب وہ دن دور نہیں ہے جب وہ پیکنگ پر بمباری کر دیں گے اور دلیل اُن کی یہ ہوگی کہ یہ پیکنگ کی سرکار ہی تو ہے جو اُتر کوریا کے لوگوں کی پیٹھ ٹھونکتی رہتی ہے اور جس کی وجہ سے اَنگنت امریکیوں کی جان جا رہی ہے اور پھر چرچل صاحب کہہ دیں گے کہ ہاں یہ بات کچھ ٹھیک تو معلوم ہوتی ہے ۔

امریکہ کو یہ نہیں معلوم کہ یہ توپیں نہیں ہیں جو امریکی جوانوں کو دھراشائی کر رہی ہیں۔ یہ تو وہ اُتر کوریا کے جوان ہیں جو اُن توپوں کو چلاتے ہیں ۔ اور یہ اُتر کوریا کے جوان نہیں ہیں یہ تو وہ گیہوں کی روٹیاں ہیں جو اُن کے اندر کام کر رہی ہیں۔ اس لئے جو ملک اُتر کوریا کو اناج بھیجتا ہے اُن میں سے ہر ایک اِس قابل ہے کہ اُس پر جب چاہے امریکہ بمباری کر دے ۔ چرچل صاحب پیٹھ ٹھونکنے کے لئے تیار ہی ہیں ۔ وہ بھیڑیا کیا لڑائی کے قاعدوں کے اندر کام نہیں کر رہا تھا جس نے چھ مہینے سے کم عمر والے میمنے کو یہ کہہ کر کھا لیا تھا کہ اگر چھ مہینے پہلے وہ نہیں رہا ہوگا تو اُس کا باپ رہا ہوگا؟ اور کیا اِسی نیائے کے مطابق امریکہ یہ کہہ کر ماسکو پر بمباری نہیں کر سکتا کہ یہ روس ہی تھا کہ جس نے اُتر کوریا کے لوگوں کو اس طرح قومی تعلیم دی کہ آج وہ بےدھڑک امریکہ کے جوانوں کو ایسے کاٹ رہے ہیں جیسے کسان کھیت میں گیہوں کے پودوں کو کاٹ رہا ہو ۔ اور کیا یہ دلیل چرچل صاحب کو کمزور معلوم ہوگی ؟

اگر کہیں چین اور روس چھوٹے چھوٹے اور کمزور ملک ہوتے تو کیا وہ کوریا کی لڑائی کی زد میں آنے سے بچے ہوتے ؟ اس لڑائی میں بھی کیا کبھی چین اور روس کی سرحد میں امریکہ کے بم سے آدمی نہیں مرے ؟

امریکن رپورٹر ایسی نئی نئی دلیلیں دے کر یہ سمجھتا ہے کہ وہ ہندستانی جنتا کو بھلاوا دے سکے گا ۔ یہ وہ بھول ہے، ہندستانی جنتا اس طرح بھلاوے میں نہیں آ سکتی ۔ امریکن رپورٹر کا کہنا ہے کہ صلح کی بات چیت میں یالو بمباری سے ہی کیوں دھکا پہنچا ؟ اس بات سے کیوں نہیں دھکا پہنچا کہ کمیونسٹوں نے بڑے توپ خانے لیکر پیدل فوجوں کے ذریعہ یونو کی فوجوں پر دھاوا بول دیا ۔ یہ بھی تو کوریا میں ہوا ۔

بڑی اچھی دلیل ہے ۔ یالو بمباری سے بہت خوب میل بٹھایا ہے فوجوں کا لڑنا اور عورتوں بچوں کو مار ڈالنا، اگر یہ ایک بات ہوسکتی ہے تو بیشک امریکہ کی دلیل دمدار سمجھی جاسکتی ہے ۔ ہم نے بچوں میں تو یہ دیکھا ہے کہ جب دو بارہ بارہ برس کی لڑکیاں لڑ رہی ہوں اور ایک لڑکی دوسری کو چپت جماکر

हमारी राय — ہماری رائے

अमरीका और यालू

सारी दुनिया ऊक रही है कि अमरीका ने यालू नदी के कारखाने पर बमबारी कर के ऐसा काम किया है जो लड़ाई के क़ायदे के खिलाफ़ है और अमरीका है कि अपने ऐटम बम और हाइड्रोजन बम के ज़ोम में किसी की परवाह नहीं करता. सुरक्षा कौंसिल में उसने अपनी ऐसी गुट बना रक्खी है कि वह कोरिया में कुछ भी करे उसके खिलाफ़ कोई ठहराव नहीं आ सकता. उधर चर्चिल साहब ने यह कहकर तो कमाल ही कर दिया कि यालू नदी की बमबारी में लड़ाई के क़ायदों के खिलाफ़ कुछ नहीं किया गया है.

हाल ही में कलकत्ता हाई कोर्ट का एक फ़ैसला हुआ है कि अगर चाय में चाय के डंठल या चाय की कलियां मिली हुई हों तो इससे बेजा मिलावट का क़ानून नहीं टूटता. और इस दलील पर उन्होंने मिलावट करने वाले को अपने यहां से रिहाई दे दी. क्या अब इसका नतीजा यह नहीं होगा कि चाय में अब डंठल ज़ियादा रहा करेंगे और पत्तियां कम ? ठीक इसी तरह से चर्चिल साहब के फ़ैसले के मुताबिक़ नेशनल हेराल्ड का दफ़्तर और बहुत से उन अखबारों के दफ़्तर जो यालू बमबारी के खिलाफ़ लिखते हैं बमबारी के क़ाबिल हो जाते हैं, क्योंकि उनके लेखों से उत्तरी कोरिया के लोगों को अखलाक़ी मदद पहुंचती है और उनमें लड़ने के लिये दम आता है.

अमरीकियों की यही तो दलील है कि उन्होंने उन कारखानों पर इसलिये बमबारी की कि उन कारखानों की मदद से हवा मार तोपें तैयार होती थीं और उन तोपों से अमरीकी जहाज़ गिराये जाते थे और अमरीकी और वह लोग मार डाले जाते थे जो उन हवाई जहाज़ों को चलाते थे. और उन्हीं कारखानों की मदद से रूसी साख्त के जेट जहाज़ उड़ कर यूनो की फ़ौजों पर धावा बोल देते थे. उन्हीं कारखानों से वह तोपें बनती थीं जो यूनो के जहाज़ों पर गोलाबारी कर के उन्हें समुन्दर में डुबा देती थीं और उन्हीं कारखानों की मदद से वह गोला बारूद तैयार होता था जिसकी मदद से आयोवा और ग्लूसेस्टर शायर के जवान धराशाई कर दिये जाते थे.

امریکہ اور یالو

ساری دنیا اوک رهی هے که امریکه نے یالو ندی کے کارخانے پر بمباری کرکے ایسا کام کیا هے جو لڑائی کے قاعدے کے خلاف هے اور امریکه هے که اپنے ایٹم بم اور هائیڈروجن بم کے زوم میں کسی کی پرواہ نہیں کرتا ۔ سرکشا کونسل میں اس نے اپنی ایسی گٹ بنا رکھی هے که وہ کوریا میں کچھ بھی کرے اس کے خلاف کوئی ٹھہراؤ نہیں آ سکتا. ادھر چرچل صاحب نے یہ کہ کر تو کمال هی کر دیا که یالو ندی کی بمباری میں لڑائی کے قاعدوں کے خلاف کچھ نہیں کیا گیا هے ۔

حال هی میں کلکته هائی کورٹ کا ایک فیصله هوا هے که اگر چائے میں چائے کے ڈنٹھل یا چائے کی کلیاں ملی هوئی هوں تو اس سے بیجا ملاوٹ کا قانون نہیں ٹوٹتا ۔ اور اس دلیل پر انہوں نے ملاوٹ کرنے والے کو اپنے یہاں سے رهائی دے دی ۔ کیا اب اس کا نتیجه یه نہیں هوگا که چائے میں اب ڈنٹھل زیادہ رها کریں گے اور پتیاں کم ؟ ٹھیک اسی طرح سے چرچل صاحب کے فیصلے کے مطابق نیشنل هیرلڈ کا دفتر اور بہت سے ان اخباروں کے دفتر جو یالو بمباری کے خلاف لکھتے هیں بمباری کے قابل هو جاتے هیں، کیونکه ان کے لیکھوں سے اتری کوریا کے لوگوں کو اخلاقی مدد پہنچتی هے اور ان میں لڑنے کے لئے دم آتا هے ۔

امریکیوں کی یہی تو دلیل هے که انہوں نے ان کارخانوں پر اس لئے بمباری کی که ان کارخانوں کی مدد سے هوا مار توپیں تیار هوتی تھیں اور ان توپوں سے امریکی جہاز گرائے جاتے تھے اور امریکی اور وہ لوگ مار ڈالے جاتے تھے جو ان هوائی جہازوں کو چلاتے تھے. اور انہیں کارخانوں کی مدد سے روسی ساخت کے جیٹ جہاز اڑ کر یونو کی فوجوں پر دھاوا بول دیتے تھے ۔ انہیں کارخانوں سے وہ توپیں بنتی تھیں جو یونو کے جہازوں پر گولہ باری کرکے انہیں سمندر میں ڈبا دیتی تھیں اور انہیں کارخانوں کی مدد سے وہ گولہ بارود تیار هوتا تھا جس کی مدد سے آیووا اور گلوسیسٹر شائر کے جوان دھراشائی کر دئے جاتے تھے ۔

5. ईरान में डाक्टर मुसाद्दिक़ की सरकार ने स्तीफ़ा दे दिया. हिन्द सरकार नये नये कारख़ाने शुरू करेगी—मिनिस्टर रेड्डी का बयान.

6. यालू बमबारी से दुनिया का अमन ख़तरे में पड़ गया है—पंडित नेहरू का एलान.

7. पार्लियामेन्ट में भाशा वार सूबों पर बहस. हिन्दुस्तान की फ़िल्मों का स्तर बहुत नीचे है—केसकर का बयान.

8. कीड़ा बीमारी बम फेंके जाने के सबूत मेरे पास हैं—डाक्टर जानसन का बयान. सारे देश में एक सा सेल्स टैक्स लगाने की कोशिश की जायेगी— देशमुख का बयान.

9. त्युनीशिया में हज़ारों आदमी जेल में बन्द हैं—एक अंगरेज़ी अख़बार नवीस का बयान. बीमारी बम के इल्ज़ाम को झूटा बताने वाले अमरीकी ठहराव को सुरक्षा कौन्सिल में रूस ने नहीं पास होने दिया. हिन्द सरकार खादी और बुनकर काम के लिये अलग अलग बोर्ड बनाने की सोच रही है.

10. अंगरेज़ी सिपाहियों को कोरिया से हटाने को मैं तैयार नहीं हूँ—चर्चिल. पेप्सू में किसान और ज़मींदारों में बलवा—368 किसान और 45 ज़मींदार गिरफ़्तार.

11. उत्तर कोरिया में ज़बरदस्त हमला. पार्लियामेन्ट में क्रिमिनल प्रोसीजर कोड बिल पास हो गया.

12. अमरीकी चुनाव में हिस्सा लेने की वजह से जनरल आईज़न होवर ने फ़ौज से स्तीफ़ा दिया.

13. मिल मालिकों को चीनी पर से दाम कम कर देना चाहिये—क़िदवाई की अपील.

14. एशिया और दूर पूरब का अमन ख़तरे में है—चू. एन लाई का एलान. श्री जय प्रकाश नरायन ने अपना अनशन ख़त्म किया. जालपाग़िरी में पानी की बाढ़ ने रास्ता रोक दिया.

15. शेख़ अब्दुल्ला और पंडित नेहरू में कशमीर के मसले पर बात चीत हुई. पार्लियामेन्ट ने क्रिमनल ला एमेन्ड बिल पास किया.

5. ایران میں ڈاکٹر مصادق کی سرکار نے استعفیٰ دے دیا . ہند سرکار نئے نئے کارخانے شروع کریگی—منسٹر ریڈی کا بیان .

6. یالو بمباری سے دنیا کا امن خطرے میں پڑ گیا ہے . پنڈت نہرو کا اعلان .

7. پارلیامنٹ میں بھاشا وار صوبوں پر بحث . ہندستان کے فلموں کا اسٹر بہت نیچا ہے—کیسکر کا بیان .

8. کیڑا بیماری بم پھینکے جانے کے ثبوت میرے پاس ہیں—ڈاکٹر جانسن کا بیان . سارے دیش میں ایک سا سیلس ٹیکس لگانے کی کوشش کی جائے گی—دیش مکھ کا بیان .

9. ٹیونیشیا میں ہزاروں آدمی جیل میں بند ہیں—ایک انگریزی اخبار نویس کا بیان . بیماری بم کے الزام کو جھوٹا بتانے والے امریکی ٹھہراؤ دو سرکشا کونسل میں روس نے نہیں پاس ہونے دیا . ہند سرکار کھادی اور بنکر کام کے لئے الگ الگ بورڈ بنانے کی سوچ رہی ہے .

10. انگریزی سپاہیوں کو کوریا سے ہٹانے کو میں تیار نہیں ہوں—چرچل . پیپسو میں کسان اور زمینداروں میں بلوا—368 کسان اور 45 زمیندار گرفتار .

11. اتر کوریا میں زبردست حملہ . پارلیامنٹ میں کرمنل پروسیجر کوڈ بل پاس ہوگیا .

12. امریکی چناؤ میں حصہ لینے کی وجہ سے جنرل آئزن ہور نے فوج سے استعفیٰ دیا .

13. مل مالکوں کو چینی پر سے دام کم کر دینا چاہئے—قدوائی کی اپیل .

14. ایشیا اور دور پورب کا امن خطرے میں ہے—چو . این لائی کا اعلان . شری جے پرکاش نرائن نے اپنا انشن ختم کیا . جالپاگری میں پانی کی باڑھ نے راستہ روک دیا .

15. شیخ عبداللہ اور پنڈت نہرو میں کشمیر کے مسئلے پر بات چیت ہوئی . پارلیامنٹ نے کرمنل لا امینڈ منٹ بل پاس کیا .

24. शेख़ अब्दुल्ला ने ईद के दिन कश्मीर सरकार का नया फ़ैसला लोगों को बताया.

25. कोरिया की लड़ाई जारी रहने से दुनिया का अमन ख़तरे में है—सेक्रेट्री ट्रिगवेली का बयान. अमरीका ने यालू बमबारी के मामले में इंगलिस्तान से सलाह नहीं ली—ईडन का एलान. विनोबा पैदल यात्रा करते हुए इलाहाबाद पहुंचे.

26. पच्छिमी अफ़्रीक़ा में सत्याग्रह शुरू. फ़ौजी कमान्डर कोरिया में लड़ाई को क़रीब ला रहे हैं—बेवन का बयान. पच्छिमी बंगाल में अनाज की भारी कमी है—क़िदवाई का बयान.

27. हिन्दुस्तान रेल के इंजिनों के बारे में पांच साल में स्वावलम्बी हो जायेगा—रेल मिनिस्टर का बयान.

28. पहली जुलाई से उत्तर प्रदेश में राशनिंग ख़त्म. बनारस में रेशम का काम करने वाले तीस हज़ार से ज़ियादा लोग बेकार.

29. हिलाल पाशा की सरकार ने स्तीफ़ा दे दिया. सिरे पाशा ने दूसरी सरकार बनाई. बम्बई में समाजवादी पार्टी ने नये टेक्सों के ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया.

30. मद्रास असेम्बली ने राजा जी के अन्दर अपना विश्वास ज़ाहिर किया. कांग्रेस पार्लियामेन्टरी पार्टी की स्टेन्डिंग कमेटी ने कोआपरेटिव तरीक़े पर ज़मीन बंटवारे का फ़ैसला किया.

जुलाई

1. यालू बमबारी का जनरल क्लार्क को कुछ पता नहीं—चर्चिल का बयान. उत्तर प्रदेश में ज़मींदारी प्रथा का अन्त. आजकल कन्ट्रोल का सिस्टम ठीक नहीं है—क़िदवाई का पार्लियामेन्ट में एलान. ज़मींदारी अन्त ही सिर्फ़ लोगों को ख़ुश नहीं बना सकता—विनोबा का भाशन.

2. यालू बमबारी की तैयारियां महीनों पहले कर ली गई थीं—अंगरेज़ सरकार को जानबूझ कर ख़बर नहीं दी गई—एक अमरीकी अख़बार का बयान. पच्छिमी अफ़्रीक़ा में सत्याग्रह ज़ोरों पर जारी.

3. अमरीका को यूनो की मदद करते रहना चाहिये—ट्रूमैन का बयान. आसाम में अनाज की भारी कमी.

4. क़ाहिरा और अलेगज़ेन्डिरया में हालत ख़तरनाक. हिन्दुस्तान और नैपाल के सम्बन्ध मित्रता पूर्न हैं—नैपाल के राजा का एलान. ज़मींदारी अन्त से मुझे कोई ख़ुशी नहीं—बेज़मीन वाले की हालत वैसी की वैसी है—विनोबा का एलान.

دنیا کا حال

24. شیخ عبداللہ نے عید کے دن کشمیر سرکار کا نیا فیصلہ لوگوں کو بتایا۔

25. کوریا کی لڑائی جاری رہنے سے دنیا کا امن خطرے میں ہے—سکریٹری ٹرگوےلی کا بیان۔ امریکہ نے یالو بمباری کے معاملے میں انگلستان سے صلاح نہیں لی—ایڈن کا اعلان۔ ونوبا پیدل یاترا کرتے ہوئے الہ آباد پہونچے۔

26. پچھمی افریقہ میں ستیاگرہ شروع۔ فوجی کمانڈر کوریا میں لڑائی کو قریب لا رہے ہیں—بیون کا بیان۔ پچھمی بنگال میں اناج کی بھاری کمی ہے—قدوائی کا بیان۔

27. ہندستان ریل کے انجنوں کے بارے میں پانچ سال میں سواولمبی ہوجائے گا—ریل منسٹر کا بیان۔

28. پہلی جولائی سے اتر پردیش میں راشننگ ختم۔ بنارس میں ریشم کا کام کرنے والے تیس ہزار سے زیادہ لوگ بیکار۔

29. حلال پاشا کی سرکار نے استعفیٰ دے دیا۔ سرے پاشا نے دوسری سرکار بنائی۔ بمبئی میں سماج وادی پارٹی نے نئے ٹکسوں کے خلاف پردرشن کیا۔

30. مدراس اسمبلی نے اند اپنا وشواس ظاہر کیا۔ کانگریس پارلیامنٹری پارٹی کی اسٹینڈنگ کمیٹی نے کوآپریٹو طریقے پر زمین بٹوارے کا فیصلہ کیا۔

جولائی۔

1. یالو بمباری کا جنرل کلرک کو کچھ پتہ نہیں—چرچل کا بیان۔ اترپردیش میں زمینداری پرتھا کا انت آجکل کنٹرول کا سسٹم ٹھیک نہیں ہے—قدوائی کا پارلیامنٹ میں اعلان۔ زمینداری انت ہی صرف لوگوں کو خوش نہیں بنا سکتا—ونوبا کا بھاشن۔

2. یالو بمباری کی تیاریاں مہینوں پہلے کر لی گئی تھیں—انگریز سرکار کو جان بوجھ کر خبر نہیں دی گئی—ایک امریکی اخبار کا بیان۔ پچھمی افریقہ میں ستیاگرہ زوروں پر جاری۔

3. امریکہ کو یونو کی مدد کرتے رہنا چاہئے—ترومین کا بیان۔ آسام میں اناج کی بھاری کمی۔

4. قاہرہ اور الگزینڈریہ میں حالت خطرناک۔ ہندستان اور نیپال کے سمبندھ مترتا پورن ہیں—نیپال کے راجہ کا اعلان۔ زمینداری انت سے مجھے کوئی خوشی نہیں—بے زمین والے کی حالت ویسی کی ویسی ہے—ونوبا کا اعلان۔

दुनिया का हाल  دنیا کا حال

जून

16. अमरीका की जर्मनी और जापान वाली पालिसी इंगलिस्तान के लिये खतरनाक है—बेवन का बयान. वर्ल्ड बैंक स्टील मिशन के नेता नई दिल्ली पहुंचे. तालीम मिनिस्ट्री का काम पैसा न होने की वजह से ठप हो रहा है—मौलाना आज़ाद का बयान.

17. आठ लाख काम करने वालों ने जापान में अपनी सरकार के खिलाफ़ हड़ताल कर दी. 31 मार्च 1952 तक अमरीका ने कोरिया में 900 मिलयन डालर खर्च किये. हिन्दुस्तान विदेशी इन्डस्ट्रीज़ पर रोक नहीं लगायेगा—कृष्णमचारी का एलान.

18. बिहार सरकार ने अनाज पर से कन्ट्रोल हटा लिया.

19. हिन्दुस्तान को अमरीका हर तरह की मदद देने के लिये तैयार है—हिन्दुस्तान के अमरीकी राजदूत का अमरीका में बयान. हमें विदेशी मदद से चिढ़ नहीं है—श्री के. सी. रेड्डी का बयान. देश में अनाज की कमी साल भर के लिये न होगी—क़िदवाई का नैनीताल में एलान.

20. अरब-एशिया के मुल्कों ने त्युनिशिया के मसले पर यूनो के बड़े वज़ीर के नाम चिट्ठी भेजी जिसमें एक सम्मेलन करने पर ज़ोर दिया. करोड़ों रुपया पन बिजली की स्कीमों पर बरबाद किया गया है—मुख़ालिफ़ पार्टी के मेम्बरों का पार्लियामेन्ट में बयान.

21. हिन्दुस्तान ने कनाडा से गेहूं की मांग की. कोई आम ख्याल कन्ट्रोल तोड़ने का नहीं है—नेहरू का बयान. मौरूसी हकूमत का कश्मीर में खात्मा—कश्मीर कन्सेम्बली का फ़ैसला—नेहरू का बयान.

22. अरब-इसराईल में शान्ति की कोई उम्मीद नहीं है—आज़म पाशा. मध्य भारत में पुलिस की ज़ियादतियां. भारत सरकार ने भारत सेवक समाज पैम्फ़लेट जारी किया.

23. अमरीकियों ने यालू में पन बिजली के कल कारखानों पर हमला किया. कलकत्ता पुलिस ने भूक मार्च करने वाले जलूस पर लाठी चार्ज किया.

جون

16. امریکہ کی جرمنی اور جاپان والی پالیسی انگلستان کے لئے خطرناک ہے—بیون کا بیان. ورلڈ بینک اسٹیل مشن کے نیتا نئی دلی پہونچے. تعلیم منسٹری کا کام پیسہ نہ ہونے کی وجہ سے ٹھپ ہو رہا ہے—مولانا آزاد کا بیان.

17. آٹھ لاکھ کام کرنے والوں نے جاپان میں اپنی سرکار کے خلاف ہڑتال کر دی. 31 مارچ 1952 تک امریکہ نے کوریا میں 900 ملین ڈالر خرچ کئے. ہندستان ودیشی انڈسٹریز پر روک نہیں لگائے گا—کرشنامچاری کا اعلان.

18. بہار سرکار نے اناج پر سے کنٹرول ہٹا لیا.

19. ہندستان کو امریکہ ہر طرح کی مدد دینے کے لئے تیار ہے—ہندستان کے امریکی راجدوت کا امریکہ میں بیان. ہمیں ودیشی مدد سے چڑھ نہیں ہے—شری کے. سی. ریڈی کا بیان. دیش میں اناج کی کمی سال بھر کے لئے نہ ہوگی—قدوائی کا نینی تال میں اعلان.

20. عرب ایشیا کے ملکوں نے تیونیشیا کے مسئلے پر یونو کے بڑے وزیر کے نام چٹھی بھیجی جس میں ایک سمیلن کرنے پر زور دیا. کروڑوں روپیہ پن بجلی کی اسکیموں پر برباد کیا گیا ہے—مخالف پارٹی کے ممبروں کا پارلیامنٹ میں بیان.

21. ہندستان نے کناڈا سے گیہوں کی مانگ کی. کوئی عام خیال کنٹرول توڑنے کا نہیں ہے—نہرو کا بیان. موروثی حکومت کا کشمیر میں خاتمہ—کشمیر کانسمبلی کا فیصلہ—نہرو کا بیان.

22. عرب اسرائیل میں شانتی کی کوئی امید نہیں ہے—اعظم پاشا. مدھیہ بھارت میں پولیس کی زیادتیاں. بھارت سرکار نے بھارت سیوک سماج پمفلیٹ جاری کیا.

23. امریکیوں نے یالو میں پن بجلی کے کل کارخانوں پر حملہ کیا. کلکتہ پولیس نے بھوک مارچ کرنے والے جلوس پر لاٹھی چارج کیا.

काका साहब की गिनती गुजराती और मराठी के बड़े से बड़े लेखकों में की जाती है. और अक्सर लोग उन्हें गांधी जी के आश्रमी हलक़े वालों में सब से ज़ियादा तहज़ीब या सभ्यता के सबसे ऊंचे विचारियों में मानते हैं. घूमने का उन्हें बहुत काफ़ी शौक़ है और घूमने का हाल बयान करने की कला में वह कहीं ज़ियादा माहिर हैं. इसलिये उनकी यह किताब भी अपने ढंग की अनोखी और ला जवाब है.

पूरबी अफ़्रीक़ा को अब तक जंगलियों और वहशियों की बस्ती की निगाह से देखा गया है जिसके लिये बहुत कुछ ज़िम्मेवार अंगरेज़ हैं. लेकिन काका साहब ने अफ़्रीक़ा को अपने पड़ोस के मोहल्ले वालों की निगाह से देखा जिसकी वजह से पूरबी अफ़्रीक़ा में बहुत प्रेम के साथ उनका स्वागत किया गया. और पड़ोसी के नाते देखना ही सच्चा देखना है.

हमें उम्मीद है कि इस किताब की मदद से हमारे देश वालों को अफ़्रीक़ा में रहने वाले हमारे पड़ोसी भाई बहनों को समझने में ज़ियादा मदद मिलेगी और हम एक दूसरे के ज़ियादा नज़दीक आयेंगे.

यह किताब काका साहब की लिखी मराठी किताब का हिन्दी तरजुमा है. जिस पर हम भाई राम नरायन चौधरी को मुबारक बाद देते हैं.

—सुरेश रामभाई

सोने की कला

लेखक—डाक्टर हीरालाल; निकालने वाले—निरोगी ग्रंथ माला, मगरवारा, ज़िला उन्नाव, यू. पी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 56; दाम बारह आने.

नींद एक निआमत है. जिसके पास सब सुख हों लेकिन नींद नहीं आती हो तो उसकी ज़िन्दगी एक बला हो जाती है. इसलिये नींद की इन्सान की ज़िन्दगी में बहुत ज़ियादा अहमियत है और हर किसी पढ़े लिखे को जानना चाहिये कि अच्छी नींद कैसे हासिल की जाय. इस काम के लिये डाक्टर हीरालाल की यह किताब अकसीर है जो उनके ज़ाती और दूसरों पर आज़माये हुए तजरबों से भरी है. रोगियों के तो यह ख़ास काम की चीज़ है.

—सुरेश रामभाई

کاکا صاحب کی گنتی گجراتی اور مراٹھی کے بڑے سے بڑے لیکھکوں میں کی جاتی ہے ۔ اور اکثر لوگ انہیں گاندھی جی کے آشرمی حلقے والوں میں سب میں زیادہ تہذیب یا سبھیتا کے سب سے اونچے وچارکوں میں مانتے ہیں ۔ گھومنے کا انہیں بہت کافی شوق ہے اور گھومنے کا حال بیان کرنے کی کلا میں وہ کہیں زیادہ ماہر ہیں ۔ اسلئے ان کی یہ کتاب بھی اپنے ڈھنگ کی انوکھی اور لاجواب ہے ۔

پوربی افریقہ کو اب تک جنگلیوں اور وحشیوں کی بستی کی نگاہ سے دیکھا گیا ہے جس کے لئے بہت کچھ ذمےدار انگریز ہیں ۔ لیکن کاکا صاحب نے افریقہ کو اپنے پڑوس کے محلے والوں کی نگاہ سے دیکھا جس کی وجہ سے پوربی افریقہ میں بہت پریم کے ساتھ ان کا سواگت کیا گیا ۔ اور پڑوسی کے ناتے دیکھنا ہی سچا دیکھنا ہے ۔

ہمیں امید ہے کہ اس کتاب کی مدد سے ہمارے دیش والوں کو افریقہ میں رہنے والے ہمارے پڑوسی بھائی بہنوں کو سمجھنے میں زیادہ مدد ملے گی اور ہم ایک دوسرے کے زیادہ نزدیک آئیں گے ۔

یہ کتاب کاکا صاحب کی لکھی مراٹھی کتاب کا ہندی ترجمہ ہے ۔ جس پر ہم بھائی رام نرائن چودھری کو مبارکباد دیتے ہیں ۔

—سریش رامبھائی

سونے کی کلا

لیکھک—ڈاکٹر ہیرا لال؛ نکالنے والے—نروگی گرنتھ مالا، مگروارا، ضلع اناؤ، یو ۔ پی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 56؛ دام بارہ آنے ۔

نیند ایک نعمت ہے ۔ جس کے پاس سب سکھ ہوں لیکن نیند نہیں آتی ہو تو اس کی زندگی ایک بلا ہو جاتی ہے ۔ اس لئے نیند کی انسان کی زندگی میں بہت زیادہ اہمیت ہے اور ہر کسی پڑھے لکھے کو جاننا چاہئے کہ اچھی نیند کیسے حاصل کی جائے ۔ اس کام کے لئے ڈاکٹر ہیرا لال کی یہ کتاب اکسیر ہے جو ان کے ذاتی اور دوسروں پر آزمائے ہوئے تجربوں سے بھری ہے ۔ روگیوں کے تو یہ خاص کام کی چیز ہے ۔

—سریش رامبھائی

इससे जाहिर है कि पथिक जी के दिल के अन्दर कैसी आग जल रही है. हमें उम्मीद है कि उनका अखबार नेताओं को राह पर लावेगा, सच्ची नागरिकता की हिफाजत करेगा और एक नगर में एक ही नगरी बसवायेगा.

हम इतना और कहेंगे कि अखबार का दाम जरूरत से ज़ियादा है और इसका वक्त से निकलना बहुत जरूरी है.

—सुरेश रामभाई

ड्रिंक, ड्रग्ज़ एन्ड गेम्बलिंग

(महात्मा गांधी के लेखों का अंगरेज़ी संग्रह.)

सम्पादक—भारतन कुमारप्पा; निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; सफ़े 175; दाम ढाई रुपये, पहली बार 1952.

कहते हैं कि आदमी तजुरबे के बाद सीखता है. इसी तरह हुकूमतें या सरकारें भी तजुरबे के बाद सीखती हैं. हमारे देश के ज़ियादा तर अखबार खासकर अंगरेज़ी और चमकदार अखबार यह बताते हैं कि कांगरेस की सरकारों ने तजुरबे के बाद यह सीखा कि न तो शराब बन्दी में फ़ायदा है, न अंगरेज़ी अफ़ीमची दवाइयां बन्द करने में कोई तुक है और न जुआ, सट्टेबाज़ी या घुड़ दौड़ बन्द कर देना अक़्लमन्दी है. हमारी नई दिल्ली की सरकार के ज़ियादातर मिनिस्टर और सूबों के हाकिम भी अकसर निजी तौर पर इसी ख्याल के हैं. ऐसी सूरत में कुछ कहने की गुंजायश नहीं रह जाती. लेकिन हमारा जी नहीं मानता यह कहे बिना कि ऊपर की तीनों बातें सोलह आना बारह मासे और छियानवे रत्ती ग़लत हैं और हिन्दुस्तान के लिहाज़ से तो हमेशा ही ग़लत रहेगा. बड़े अदब के साथ हम यह सिफ़ारिश करते हैं कि अपने को तहज़ीब याफ़्ता, शरीफ़ और नई रोशनी के समझने वाले भाई बहन इस किताब को इधर से उधर को पलट जायें. हमें उम्मीद है कि इससे उनके ख्यालात में कुछ सफ़ाई पैदा होगी और दिल को कुछ शान्ति नसीब होगी.

रचनात्मक काम करने वालों और दूसरे मामूली पढ़े लिखे भाई बहनों के लिए यह किताब बहुत ही फ़ायदे मन्द साबित होगी.

—सुरेश रामभाई

उस पार के पड़ोसी

लेखक—काका कालेलकर; अनुवादक—राम नरायन चौधरी; निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; लिखावट हिन्दी; दाम साढ़े तीन रुपये; सफ़े 311; पहली बार दिसम्बर 1951.

1950 के मई, जून और जुलाई के महीने काका साहब कालेलकर ने पूरबी अफ़रीक़ा में बिताये. उनके साथ में यह किताब उस सफ़र की एक बहुत ही मनोहर और दिल चस्प कहानी है.

اِس سے ظاہر ہے کہ پتھک جی کے دل کے اندر کیسی آگ جل رہی ہے . ہمیں اُمید ہے کہ اُن کا اخبار نیتاؤں کو راہ پر لائے گا' سچی ناگرکتا کی حفاظت کرے گا اور ایک نگر میں ایک ہی نگری بسوائے گا.

ہم اتنا اور کہیں گے کہ اخبار کا دام ضرورت سے زیادہ ہے اور اِسکا وقت سے نکلنا بہت ضروری ہے .

—سریش رام بھائی

ڈرنک' ڈرگز اینڈ گیمبلنگ

(مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا انگریزی سنگرہ)

سمپادک—بھارتن کمارپا؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر' احمدآباد؛ صفحے 175؛ دام ڈھائی روپیہ' پہلی بار 1952.

کہتے ہیں کہ آدمی تجربے کے بعد سیکھتا ہے . اِسی طرح حکومتیں یا سرکاریں بھی تجربے کے بعد سیکھتی ہیں . ہمارے دیش کے زیادہ تر اخبار خاص کر انگریزی اور چمکدار اخبار یہ بتاتے ہیں کہ کانگریس کی سرکاروں نے تجربے کے بعد یہ سیکھا کہ نہ تو شراب بندی میں فائدہ ہے' نہ انگریزی افیمچی دوائیاں بند کرنے میں کوئی تک ہے اور نہ جوا' سٹےبازی یا گھوڑدوڑ بند کر دینا عقل مندی ہے. ہماری نئی دلی کی سرکار کے زیادہ تر منسٹر اور صوبوں کے حاکم بھی اکثر نجی طور پر اِسی خیال کے ہیں. ایسی صورت میں کچھ کہنے کی گنجائش نہیں رہ جاتی . لیکن ہمارا جی نہیں مانتا یہ کہے بنا کہ اُوپر کی تینوں باتیں سولہ آنہ بارہ ماشے اور چھیانوے رتی غلط ہیں اور ہندستان کے لحاظ سے تو ہمیشہ ہی غلط رہے گا . بڑے ادب کے ساتھ ہم یہ سفارش کرتے ہیں کہ اپنے کو تہذیب یافتہ' شریف اور نئی روشنی کے سمجھنے والے بھائی بہن اِس کتاب کو اِدھر سے اُدھر کو پلٹ جائیں. ہمیں اُمید ہے کہ اِس سے اُن کے خیالات میں کچھ صفائی پیدا ہوگی اور دل کو کچھ شانتی نصیب ہوگی .

رچناتمک کام کرنے والوں اور دوسرے معمولی پڑھے لکھے بھائی بہنوں کے لئے یہ کتاب بہت ہی فائدے مند ثابت ہوگی .

—سریش رام بھائی

اُس پار کے پڑوسی

لیکھک—کاکا کالیلکر؛ انوادک—رام نرائن چودھری؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر' احمدآباد؛ لکھاوٹ ہندی؛ دام ساڑھے تین روپئے؛ صفحے 311؛ پہلی بار دسمبر 1951 .

1950 کے مئی' جون اور جولائی کے مہینے کاکا صاحب کالیلکر نے پوربی افریقہ میں بتائے. اُن کے ساتھ میں یہ کتاب اُس سفر کی ایک بہت ہی منوہر اور دلچسپ کہانی ہے.

एक बात हमें ज़रूर कहनी है. वह यह कि नई तालीम का काम करना देश के अन्दर सच्चे, ठोस और शान्ति इन्क़लाब का काम करना है और जब हम यह देखते हैं कि हिन्द सरकार अमरीका से तालीमी एक्सपर्ट मंगाती है तो हम समझ जाते हैं कि वह नई तालीम की कितनी बड़ी और गहरी दुश्मन है. इसलिये हम आशा दी और मार्जरी बहन से अपील करते हैं कि उन्हें हमेशा निडर रह कर 'नई तालीम' चलानी होगी और हर संकट का सामना करने के लिये हमेशा तैयार रहना होगा.

—सुरेश रामभाई

ایک بات ہمیں ضرور کہنی ہے ۔ وہ یہ کہ نئی تعلیم کا کام کرنا دیش کے اندر سچے، ٹھوس اور شانتی انقلاب کا کام کرنا ہے اور جب ہم یہ دیکھتے ہیں کہ ہند سرکار امریکہ سے تعلیمی ایکسپرٹ مانگتی ہے تو ہم سمجھ جاتے ہیں کہ وہ نئی تعلیم کی کتنی بڑی اور گہری دشمن ہے ۔ اس لئے ہم آشا دی اور مارجری بہن سے اپیل کرتے ہیں کہ انہیں ہمیشہ نڈر رہکر ' نئی تعلیم ' چلانی ہوگی اور ہر سنکٹ کا سامنا کرنے کے لئے ہمیشہ تیار رہنا ہوگا ۔

—سریش رام بھائی

शिक्षा बदले—समाज बदले (माहवारी पर्चा)

सम्पादक—शालिग्राम 'पथिक'; लिखावट हिन्दी; निकालने वाले—श्री शालिग्राम 'पथिक'; 11 मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद; सालाना चन्दा दो रुपये, एक पर्चा तीन आने.

प्रौढ़ शिक्षा या तालीम बालेग़ान के नामी माहिर भाई सालिगराम जी 'पथिक' लोगों के दिल में घर कर जाने वाले नारे खोजने में अपना सानी नहीं रखते. 'शिक्षा बदले समाज बदले' उनकी इस ख़ूबी का एक लाजवाब नमूना है. बिना शिक्षा या तालीम के बदले समाज नहीं बदला जा सकता. इसलिये पथिक जी की आवाज़ है कि शिक्षा बदले, समाज बदले.

पथिक जी स्वभाव से ही खरी और दो टूक सुनाने वालों में से हैं. हम उनके इस अख़बार के ऊपर वाले सफ़ों की सुर्ख़ियां देते हैं. एक नगर में दो नागरी (एक रईसों की एक ग़रीबों की); सरासर धोका भयंकर भूल (आज की हमारी तालीम सरासर धोका है और एक भयंकर भूल है जिसको अगर जल्दी ठीक नहीं किया गया तो हिन्दुस्तान उजड़ जायगा); 'नागरिकता' का सत्यानाश (रईसों वाली नागरिकता का जो ग़रीबों को चूस चूस कर ज़िन्दा रहती है उसका नाश ही); शर्म नहीं आती है (छोटे बड़े चौराहों पर सिनेमा की नंगी भद्दी तस्वीरें टांगे जाने पर, आल इन्डिया रेडियो के गन्दे गन्दे गानों पर, नेताओं के झूट और धोका धड़ी पर, अख़बारों का पूंजीपतियों के हाथ का खिलौना बन जाने पर, वग़ैरा वग़ैरा); अपने पैर कुल्हाड़ी न मारे सरकार —यही हमारी सलाह है; आप नेता हैं या गुमराह करने वाले (आपने इस चुनाव का नाजायज़ फ़ायदा उठाया है और यह मौक़ा हमें गुमराह करने और लोक तन्त्र के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया है.)

شکشا بدلے—سماج بدلے (ماہواری پرچہ)

سمپادک—شالگ رام ' پتھک '؛ لکھاوٹ ہندی؛ نکالنے والے—شالگ رام ' پتھک '؛ 11 موتی لال نہرو روڈ، الہ آباد؛ سالانہ چندہ دو روپئے، ایک پرچہ تین آنے ۔

پروڑھ شکشا یا تعلیم بالغاں کے نامی ماہر بھائی سالگ رام جی ' پتھک ' لوگوں کے دل میں گھر کر جانے والے نارے کھوجنے میں اپنا ثانی نہیں رکھتے۔ ' شکشا بدلے سماج بدلے ' اُن کی اِس خوبی کا ایک لاجواب نمونہ ہے ۔ بنا شکشا یا تعلیم کے بدلے سماج نہیں بدلا جا سکتا۔ اِس لئے پتھک جی کی آواز ہے کہ شکشا بدلے، سماج بدلے ۔

پتھک جی سوبھاؤ سے ہی کھری اور دو ٹوک سنانے والوں میں سے ہیں ۔ ہم اُن کے اِس ' اخبار کے اوپر والے صفحوں کی سرخیاں دیتے ہیں ۔ ایک نگر میں دو نگری (ایک رئیسوں کی ایک غریبوں کی) ؛ سراسر دھوکا بھیانکر بھول (آج کی ہماری تعلیم سراسر دھوکا ہے اور ایک بھیانکر بھول ہے جسکو اگر جلدی ٹھیک نہیں کیا گیا تو ہندستان اُجڑ جائے گا) ؛ ' ناگرکتا ' کا ستیا ناش (رئیسوں والی ناگرکتا کا جو غریبوں کو چوس چوس کر زندہ رہتی ہے اُسکا ناش ہو) ؛ شرم نہیں آتی ہے (چھوٹے بڑے چوراہوں پر سنیما کی ننگی بھدی تصویریں ٹانگیں جانے پر، آل انڈیا ریڈیو کے گندے گندے گانوں پر، نیتاؤں کے جھوٹ اور دھوکا دھڑی پر، اخباروں کا پونجی پتیوں کے ہاتھ کا کھلونا بن جانے پر، وغیرہ وغیرہ) ؛ اپنے پیر کلہاڑی نہ مارے سرکار—یہی ہماری صلاح ہے؛ آپ نیتا ہیں یا گمراہ کرنے والے (آپ اِس چناؤ کا ناجائز فائدہ اُٹھایا ہے اور یہ موقع ہمیں گمراہ کرنے اور لوک تنتر کے خلاف اِستعمال کیا ہے.)

कुछ किताबें کتابیں



नई तालीम (माहवारी परचा)

सम्पादक—आशादेवी और मार्जरी साइक्स; लिखावट हिन्दी; निकालने वाले—हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा; सलाना चन्दा—तीन रुपये; एक परचा चार आना.

जिस तरीक़े से बैरोमीटर नाम के आले से हवा की हालत मालूम हो जाती है उसी तरह किसी देश की तालीम और तालीमी ढंग से वहां की असली हालत का पता चल जाता है. हिन्दुस्तान आज आज़ाद है लेकिन कुछ ही मानों में देखने के लिये आज़ाद है क्योंकि यहां की तालीम का ढंग वैसा ही दक़ियानूसी, क्लर्क या ग़ुलाम पैदा करने वाला, जनता को चूसने वाला और हाथ के काम से नफ़रत सिखाने वाला है जैसा कि अंगरेज़ों ने अपने मतलब के लिये बनाया था. और जब तक तालीम का यह ढंग बना रहता है तब तक हिन्दुस्तान में जनता स्वराज नहीं क़ायम हो सकता. देश की नाव के अचूक खेवनहार बापू यह चीज़ जानते थे इसीलिये उन्होंने नई 'तालीम नाम' से तालीम का एक नया ढंग देश को सिखाया और हिन्दुस्तानी तालीमी संघ नाम की एक नई संस्था सन 1938 में क़ायम की.

यह अख़बार हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का माहवारी परचा है जो पिछले जुलाई के महीने से निकलना शुरू हुआ है. शिक्षा सम्बन्धी और अख़बार एक तरफ़, यह 'नई तालीम' दूसरी तरफ़ क्योंकि इसके अन्दर पढ़े लिखे 'विद्वानों' के ख़्याली लेख नहीं हैं जो अपनी विदेशी तालीम और ऊंची तनख़ा वाली नौकरी के बल पर उन लाखों करोड़ों बच्चों की तरफ़ कभी निगाह ही नहीं डाल सकते जिन्हें भर पेट रोटी भी नसीब नहीं होती. इसके अन्दर तो मैदान में काम करने वालों के निजी तजुरबे रहते हैं जिनको देख कर हर कोई काम करने वाला कुछ सबक़ सीख सकता है. इसलिये इस 'नई तालीम' का महत्व बहुत ही बढ़ जाता है. हमें उम्मीद है कि तालीम में दिलचस्पी रखने वाले—चाहे वह पुरानी तालीम ही क्यों न हो—सेवाग्राम से निकलने वाले इस परचे से पूरा फ़ायदा उठायेंगे. देश के हाई स्कूलों, कालेजों या युनिवर्सिटियों की लायब्रेरियों को इसे मंगाना चाहिये.

نئی تعلیم (ماہواری پرچہ)

سمپادک—آشا دیوی اور مارجری سائکس؛ لکھاوٹ ی؛ نکالنے والے—ہندستانی تعلیمی سنگھ' سیوا گرام' ا؛ سالانہ چندہ تین روپیہ؛ ایک پرچہ چار آنہ .

جس طریقے سے بیرومیٹر نام کے آلے سے ہوا کی حالت م ہو جاتی ہے اسی طرح کسی دیش کی تعلیم اور ی ڈھنگ سے وہاں کی اصلی حالت کا پتہ چل جاتا ہے . ستان آج آزاد ہے لیکن کچھ ہی معنوں میں دیکھنے کے آزاد ہے کیونکہ یہاں کی تعلیم کا ڈھنگ ویسا ہی نوسی' کلرک یا غلام پیدا کرنے والا' جنتا کو چوسنے ور ہاتھ کے کام سے نفرت سکھانے والا ہے جیسا کہ انگریزوں مطلب کے لئے بنایا تھا . اور جب تک تعلیم کا یہ ب بنا رہتا ہے تب تک ہندستان میں جنتا سوراج قائم ہوسکتا . دیش کی ناؤ کے اچوک کھیون ہار یہ چیز جانتے تھے اسی لئے انہوں نے "نئی تعلیم" نام علیم کا ایک نیا ڈھنگ دیش کو سکھایا اور ہندستانی م سنگھ نام کی ایک نئی سنستھا سن 1938 میں کی .

یہ اخبار ہندستانی تعلیمی سنگھ کا ماہواری پرچہ جو پچھلے جولائی کے مہینے سے نکلنا شروع ہوا ہے . ا سمبندھی اور اخبار ایک طرف' یہ ' نئی تعلیم ' طرف کیونکہ اس کے اندر پڑھے لکھے ' ودوانوں ' کے لیکھ نہیں ہیں جو اپنی ودیشی تعلیم اور اونچی واہ والی نوکری کے بل پر ان لاکھوں کروڑوں بچوں کی کبھی نگاہ ہی نہیں ڈال سکتے جنہیں بھر پیٹ بھی نصیب نہیں ہوتی . اس کے اندر تو میدان کام کرنے والوں کے نجی تجربے رہتے ہیں جن کو دیکھ کوئی کام کرنے والا کچھ سبق سیکھ سکتا ہے . اس "نئی تعلیم" کا مہتو بہت ہی بڑھ جاتا ہے . امید ہے کہ تعلیم میں دلچسپی رکھنے والے—چاہے انی تعلیم ہی کیوں نہ ہو—سیوا گرام سے نکلنے والے پرچے سے پورا فائدہ اٹھائیں گے . دیش کے ہائی اسکولوں وں یا یونیورسٹیوں کی لائبریریوں کو اسے منگانا چاہئے.

का ठिकाना न रहा. वह तीनों के तीनों चोरी करना भूल गये. पास पड़ी खाली चारपाई पर बैठ गये. तालियों का गुच्छा उनके हाथ में था. थोड़ी देर में दोनों बच्चे सो गये. चोर बच्चों के मां बाप के आने की राह तकने लगे! घंटे डेढ़ घंटे बाद हंसमुख हंसमुखी की मां आ पहुँची! आते ही उसने डरे झिझके बिना चोरों से पूछा, आप किस लिये बैठे हैं, क्या बच्चों के बाप से मिलने आये हैं?

चोरों का सरदार बोला, हां, उनसे मिलना है. आप से भी मिलना था, बच्चों के बाप आ जायें तब बात होगी, यह बात हो ही रही थी कि बच्चों का बाप आ पहुंचा, आते ही उसने हंसमुख की मां से पूछा, क्या यह लोग तुम्हारे घर से आये हैं?

हंसमुखी की मां के जवाब देने से पहले चोरों का सरदार बोल उठा, भाई साहब, हम किसी के रिश्तेदार नहीं, हम चोर हैं, चोरी करने आये थे, यह आपके घर की तालियां हैं, आपकी बच्ची ने जिस शान के साथ हमें चाबियां थमाईं और जिस प्यार भरे निर्भीक ढंग से उसने हमसे पूछा, चोर किसे कहते हैं? हम चोरी करना भूल गये, और ऐसे निर्भीक और सच्चे बच्चों के मां बाप को देखने की चाह हम में पैदा हो गई, आपकी इस बच्ची ने हमारी आंखें खोल दीं, हमारा डर भगा दिया, हम इसके अहसानमन्द हैं और आपके भी, यह लीजिये अपनी तालियां, हम आपके बच्चों के हाथ चूम कर जाते हैं अपने घर. अब हमें डर नहीं, कल आयेंगे और आपके दोनों बच्चों को जागते और खेलते देखेंगे, जुहार!

चुटकुले

एक लाला जी ने अपने किसी नातेदार के यहां अपने मित्र के हाथ एक टोकरी आम भेजे. मित्र ला परवाह से थे. रास्ते में आमों की टोकरी गुम हो गई, यह देख उन्होंने लाला जी को लिखा—"मुझे बड़ा खेद है कि आपकी दी हुई आमों की टोकरी खो गई. मैं माफी चाहता हूं."

लाला जी ने खत का जवाब देते हुए लिखा—"टोकरी खो जाने का खेद मत करो क्योंकि आम तो पहुंच ही गये होंगे."

× × ×

एक कुम्हार ने अपना गधा खो जाने पर दावत दी. दावत में एक मित्र ने पूछा—"भाई, आज यह दावत क्यों दी जा रही है?"

कुम्हार—"आज मेरा गधा खो गया है. कहीं उस पर मैं बैठा होता तो मैं भी खो जाता."

کا ٹھکانہ نہ رہا ۔ وہ تینوں کے تینوں چوری کرنا بھول گئے ۔ پاس پڑی خالی چارپائی پر بیٹھ گئے ۔ تالیوں کا گچھا اُن کے ہاتھ میں تھا ۔ تھوڑی دیر میں دنوں بچے سو گئے ۔ چور بچوں کے ماں باپ کے آنے کی راہ تاکنے لگے! گھنٹے ڈیڑھ گھنٹے بعد ھنس مکھ ھنس مکھی کی ماں آ پہونچی! آتے ہی اُس نے ڈرے جھجکے بنا چوروں سے پوچھا، آپ کس لئے بیٹھے ھیں ۔ کیا بچوں کے باپ سے ملنے آئے ھیں؟

چوروں کا سردار بولا، ھاں اُن سے ملنا ھے ۔ آپ سے بھی ملنا تھا ۔ بچوں کے باپ آ جائیں تب بات ہوگی ۔ یہ بات ہو ہی رہی تھی کہ بچوں کا باپ آ پہونچا ۔ آتے ہی اُس نے ھنس مکھ کی ماں سے پوچھا، کیا یہ لوگ تمہارے گھر سے آئے ھیں؟

ھنس مکھی کی ماں کے جواب دینے سے پہلے چوروں کا سردار بول اُٹھا، بھائی صاحب، ہم کسی کے رشتے دار نہیں، ہم چور ھیں، چوری کرنے آئے تھے. یہ آپ کے گھر کی تالیاں ھیں ۔ آپ کی بچی نے جس شان کے ساتھ ھمیں چابیاں تھمائیں اور جس پیار بھرے نربھیک ڈھنگ سے اُس نے ہم سے پوچھا، چور کسے کہتے ھیں؟ ہم چوری کرنا بھول گئے ۔ اور ایسے نربھیک اور سچے بچوں کے ماں باپ کو دیکھنے کی چاہ ہم میں پیدا ہوگئی ۔ آپ کی اس بچی نے ھماری آنکھیں کھول دیں، ھمارا ڈر بھگا دیا ۔ ہم اس کے احسان مند ھیں اور آپ کے بھی ۔ یہ لیجئے اپنی تالیاں، ہم آپ کے بچوں کے ہاتھ چوم کر جاتے ھیں اپنے گھر ۔ اب ھمیں ڈر نہیں، کل آئینگے اور آپ کے دونوں بچوں کو جاگتے اور کھیلتے دیکھیں گے ۔ جہار!

چٹکلے

ایک لالہ جی نے اپنے کسی ناتے دار کے یہاں اپنے متر کے ہاتھ ایک ٹوکری آم بھیجے ۔ متر لاپرواہ سے تھے ۔ راستے میں آموں کی ٹوکری گم ہوگئی، یہ دیکھ اُنہوں نے لالہ جی کو لکھا—"مجھے بڑا کھید ھے کہ آپ کی دی ہوئی آموں کی ٹوکری کھو گئی ۔ میں معافی چاہتا ہوں۔"

لالہ جی نے خط کا جواب دیتے ہوئے لکھا—"ٹوکری کھو جانے کا کھید مت کرو کیونکہ آم تو پہنچ ہی گئے ہونگے۔"

× × ×

ایک کمہار نے گدھا کھو جانے پر دعوت دی ۔ دعوت میں ایک متر نے پوچھا—"بھائی، آج یہ دعوت کیوں دی جا رہی ھے!"

کمہار—"آج میرا گدھا کھو گیا ھے ۔ کہیں اُس پر میں بیٹھا ہوتا تو میں بھی کھو جاتا ۔"

साथी की अम्मा ने साथी से पूछा, तुमको सच बोलना आ गया ?

साथी बोला, हां अम्मा, आ गया.

यह सुनते ही साथी की अम्मा ने साथी को गले लगा लिया.

साथी का सब डर भाग गया. कुछ दिनों बाद उसका नाम सचबहादुर पड़ गया.

(3)

हंसमुख और सचबहादुर अब दोनों दोस्त हो गये. सचबहादुर की अम्मा और हंसमुख की अम्मा आपस में ऐसी सखी बन गईं मानो मां जाई बहनें हों.

इन्हीं दिनों हंसमुख के घर में हंसमुख की बहन ने जन्म लिया. पैदा होते सबने हंसमुख के नाम पर उसका नाम हंसमुखी रख लिया.

हंसमुख और सचबहादुर दोनों हंसमुखी पर खूब प्यार उड़ेलने लगे. हंसमुखी ने तीन साल की होते होते हंसमुख की सारी आदतें अपना लीं और अपने दोनों भाइयों के साथ खेलने लगी.

एक रात हंसमुख हंसमुखी घर के आंगन में अकेले सोये हुए थे. अकेले सोने की उन्हें आदत थी. पड़ोस में कोई ब्याह था, हंसमुख की मां वहां गई हुई थी. हंसमुख के पिता पास के गांव में किसी बीमार को देखने गये थे. घर एकदम खाली था.

रात को उसी घर में तीन चोर आ धमके. दो बच्चों को अकेले सोते देख उन्हें थोड़ा अचरज हुआ. चोरी की धुन में अचरज दब गया. मकान के दरवाज़े का ताला लगा था. कुछ देर इधर उधर ताले की ताली खोजी, पर ताली न न मिली. बड़े बच्चे को जगाया. वह जाग गया. उसके जागने से पास सोई बच्ची भी जाग गई. चोरों ने देखा, दोनों बच्चे जागे, पर दोनों में से डरा कोई नहीं. चोरों को अचरज हुआ. चोरी की धुन में अचरज दब गया. चोरों ने बच्चों से पूछा, ताले की ताली कहां है ? हंसमुख बोला, मुझे नहीं मालूम. झट हंसमुखी बोल पड़ी, अम्मा मुझे दे गई थी. जेब में हाथ डाल कर बोली, यह रही मेरी जेब में, चाबी निकाल कर हंसमुखी ने चोरों को ऐसे थमा दी मानो चोर उसके जाने पहचाने रिश्तेदार हों. चोरों का अचरज और बढ़ा, पर दब न पाया. चोर बोल पड़े, हम चोर हैं. बच्चे न डरे. हंसमुख बोला, किसलिये आये हो ?

चोर बोले, माल चुराने.

हंसमुख बोला, चुराना क्या होता है ? साथ में हंसमुखी बढ़ बोली हां, चुराना क्या होता है ? अब चोरों के अचरज

ساتھی کی اماں نے ساتھی سے پوچھا، تم کو سچ بولنا آ گیا ؟

ساتھی بولا، ہاں اماں، آ گیا ۔

یہ سنتے ہی ساتھی کی اماں نے ساتھی کو گلے لگا لیا۔

ساتھی کا سب ڈر بھاگ گیا ۔ کچھ دنوں بعد اُسکا نام سچ بہادر پڑ گیا ۔

(3)

ہنس مکھ اور سچ بہادر اب دونوں دوست ہوگئے۔ سچ بہادر کی اماں اور ہنس مکھ کی اماں آپس میں ایسی سکھی بن گئیں مانو ماں جائی بہنیں ہوں ۔

اِنہیں دنوں ہنس مکھ کے گھر میں ہنس مکھ کی بہن نے جنم لیا ۔ پیدا ہوتے سب نے ہنس مکھ کے نام پر اُسکا نام ہنس مکھی رکھ لیا ۔

ہنس مکھ اور سچ بہادر دونوں ہنس مکھی پر خوب پیار اُنڈیلنے لگے۔ ہنس مکھی نے تین سال کی ہوتے ہوتے ہنس مکھ کی ساری عادتیں اپنا لیں اور اپنے دونوں بھائیوں کے ساتھ کھیلنے لگی ۔

ایک رات ہنس مکھ ہنس مکھی گھر کے آنگن میں اکیلے سوئے ہوئے تھے ۔ اکیلے سونے کی اُنہیں عادت تھی۔ پڑوس میں کوئی بیاہ تھا، ہنس مکھ کی ماں وہاں گئی ہوئی تھی ۔ ہنس مکھ کے پتا پاس کے گاؤں میں کسی بیمار کو دیکھنے گئے تھے ۔ گھر ایک دم خالی تھا ۔

رات کو اُسی گھر میں تین چور آدھمکے ۔ دو بچوں کو اکیلے سوتے دیکھ اُنہیں تھوڑا اچرج ہوا ۔ چوری کی دھن میں اچرج دب گیا ۔ مکان کے دروازے کا تالا لگا تھا ۔ کچھ دیر اِدھر اُدھر تالے کی تالی کھوجی، پر تالی نہ ملی۔ بڑے بچے کو جگایا ۔ وہ جاگ گیا ۔ اُس کے جاگنے سے پاس سوئی بچی بھی جاگ گئی ۔ چوروں نے دیکھا، دونوں بچے جاگے، پر دونوں میں سے ڈرا کوئی نہیں ۔ چوروں کو اچرج ہوا ۔ چوری کی دھن میں اچرج دب گیا ۔ چوروں نے بچوں سے پوچھا، تالے کی تالی کہاں ہے ؟ ہنس مکھ بولا، مجھے نہیں معلوم، جھٹ ہنس مکھی بول پڑی، اماں مجھے دے گئی تھی ۔ جیب میں ہاتھ ڈالکر بولی، یہ رہی میری جیب میں، چابی نکال کر ہنس مکھی نے چوروں کو ایسے تھمادی مانو چور اُس کے جانے پہچانے رشتے دار ہوں ۔ چوروں کا اچرج اور بڑھا، پر دب نہ پایا ۔ چور بول پڑے، ہم چور ہیں ۔ بچے نہ ڈرے ۔ ہنس مکھ بولا، کس لئے آئے ہو؟

چور بولے، مال چرانے ۔

ہنس مکھ بولا، چرانا کیا ہوتا ہے؟ ساتھ میں ہنس مکھی بھی بولی ہاں، چرانا کیا ہوتا ہے؟ اب چوروں کے اچرج

हंसमुख बोला, सच से डरते हैं ?

साथी बोला, सच बोलें तो पिटें नहीं ?

हंसमुख बोला, मैं रोज़ सच बोलता हूँ. कभी नहीं पिटता, कल भी नहीं पिटा. कभी नहीं पिटा. सच बोलने से कौन डरता है ? अम्मा से कौन डरता है ? काका से कौन डरता है ?

साथी बोला, तुम अकेले में नहीं डरते ? अन्धेरे में नहीं डरते ?

हंसमुख बोला, अकेले में किसका डर ? अंधेरे में किसका डर ? तुम हमारी अम्मा के पास चलो, वह तुम्हारा सब डर दूर कर देंगी. हमारी अम्मा बड़ी अच्छी अम्मा हैं.

हंसमुख, सचमुच तुम्हारी अम्मा बड़ी अच्छी अम्मा हैं. कल मैं जब डर कर भागा, उन्होंने कुछ नहीं कहा, अब मुझे उनसे डर नहीं, चलो, तुम्हारे साथ चलता हूँ.

हंसमुख और उसका साथी जैसे ही हंसमुख की अम्मा के पास पहुँचे उन्होंने दोनों को बड़े प्यार से थपथपाया, और हंसमुख के साथी से बोलीं—

तुम मुझसे डरते हो?

हंसमुख का साथी बोला, नहीं जी. कल डरता था, आज नहीं. तुम तो हंसमुख की बड़ी अच्छी अम्मा हो, मेरी अम्मा इतनी अच्छी नहीं.

हंसमुख की अम्मा बोली, तुम्हारी अम्मा को अच्छी कर दें

साथी बोला, मेरी अम्मा अच्छी अम्मा बन जायगी.? बना दीजिये ?.

हंसमुख की अम्मा बोली, मैं नहीं बनाऊंगी, तुम बनाओगे.

साथी बोला, मैं कैसे बनाऊंगा ?

हंसमुख की अम्मा बोली, सच बोलकर.

साथी बोला, सच बोलूंगा तो वह पीटेंगी नहीं ?

हंसमुख की अम्मा बोली, एक दिन कुछ पीटेंगी, फिर नहीं पीटेंगी..

साथी बोला, हां मैं सच, सच बोला तो तुमने भी मुझे कुछ नहीं कहा, मैं अब सच बोला करूंगा. सच बोलने से मेरा डर भाग जायगा ?

हंसमुख की अम्मा बोली, हां, डर भाग जायगा.

अब हंसमुख बोल पड़ा, मुझको डर नहीं लगता. अब तुमको भी डर नहीं लगा करेगा.

हंसमुख अपने साथी को लेकर उसके घर गया. और उसकी अम्मा से बोला, हमारी अम्मा ने इसको सच बोलना सिखा दिया है, इसको सच बोलना आ गया.

ھنس مکھ بولا' سچ سے ڈرتے ھیں ؟

ساتھی بولا' سچ بولیں تو پٹیں نہیں ؟

ھنس مکھ بولا' میں روز سچ بولتا ھوں . کبھی نہیں پٹتا' کل بھی نہیں پٹا. کبھی نہیں پٹا. سچ بولنے سے کون ڈرتا ھے ؟ اماں سے کون ڈرتا ھے ؟ کاکا سے کون ڈرتا ھے ؟

ساتھی بولا' تم اکیلے میں نہیں ڈرتے؟ اندھیرے میں نہیں ڈرتے ؟

ھنس مکھ بولا' اکیلے میں کسکا ڈر ؟ اندھیرے میں کسکا ڈر ؟ تم ھماری اماں کے پاس چلو' وہ تمہارا سب ڈر دور کردینگی. ھماری اماں بڑی اچھی اماں ھیں .

ھنس مکھ' سچ مچ تمہاری اماں بڑی اچھی اماں ھیں. کل میں جب ڈر کر بھاگا' اُنھوں نے کچھ نہیں کہا' اب مجھے اُن سے ڈر نہیں' چلو' تمہارے ساتھ چلتا ھوں .

ھنس مکھ اور اُس کا ساتھی جیسے ھی ھنس مکھ کی اماں کے پاس پہونچے اُنھوں نے دونوں کو بڑے پیار سے تھپتھپایا' اور ھنس مکھ کے ساتھی سے بولیں—

تم مجھ سے ڈرتے ھو ؟

ھنس مکھ کا ساتھی بولا' نہیں جی . کل ڈرتا تھا' آج نہیں . تم تو ھنس مکھ کی بڑی اچھی اماں ھو' میری اماں اِتنی اچھی نہیں .

ھنس مکھ کی اماں بولی' تمہاری اماں کو اچھی کر دیں؟

ساتھی بولا' میری اماں اچھی اماں بن جائے گی ؟ بنا دیجئے ؟

ھنس مکھ کی اماں بولی' میں نہیں بناؤں گی' تم بناؤ گے .

ساتھی بولا' میں کیسے بناؤنگا ؟

ھنس مکھ کی اماں بولی' سچ بول کر .

ساتھی بولا' سچ بولوں گا تو وہ پیٹینگی نہیں ؟

ھنس مکھ کی اماں بولی' ایک دن کچھ پیٹینگی' پھر نہیں پیٹینگی.

ساتھی بولا' ھاں میں سچ سچ بولا تو تم نے بھی مجھے کچھ نہیں کہا' میں اب سچ بولا کروں گا. سچ بولنے سے میرا ڈر بھاگ جائے گا ؟

ھنس مکھ کی اماں بولی' ھاں' ڈر بھاگ جائیگا .

اب ھنس مکھ بول پڑا' مجھکو ڈر نہیں لگتا . اب تجھکو ڈر نہیں لگا کریگا .

ھنس مکھ اپنے ساتھی کو لیکر اُس کے گھر گیا . اور اسکی اماں سے بولا' ھماری اماں نے اِسکو سچ بولنا سکھا دیا ھے اِسکو سچ بولنا آ گیا .

हंसमुख बोला, अम्मा मैं खाने का बर्तन उतारता था, वह भारी निकला, हाथ से गिर गया और उसका सब सामान यह बिखरा पड़ा है.

मां ने बड़े प्यार से कहा, बेटा कुछ नहीं ! लाओ बिखरे सामान को उठा लें ! कहो, तुमने बर्तन को इस वक़्त क्यों निकाला था ? यह खाने का समय नहीं.

अम्मा ! साथी भूका था, उसके लिए निकाला था, वह भाग गया. अम्मा वह बहुत डर रहा था, क्यों डर रहा था ? डर की क्या बात थी ?

बेटा डर की बात से कोई नहीं डरता, मन की बात से सब डरते हैं. तुम्हारा साथी अपनी अम्मा से डरता है.

अम्मा से डरता है ? अम्मा तो प्यारी होती है ! अम्मा से क्यों डरता है ?

तुम्हारा साथी सच नहीं बोलता, सच बोलने से डरता है. जो सच बोलने से डरता है वह सब से डरता है.

यहां वह किस से डरा ?

मुझ से.

तुम से ? प्यारी अम्मा से ?

हां मुझ से. हां, वह अपनी अम्मा से डरता है. वह अपनी अम्मा को अपना जैसा समझता है. मुझको अपना जैसा समझता है; अपने आप डरता है अपनी अम्मा से डरता है. मुझसे डरता है. तुमसे डरता होगा.

सच से डरना छोड़ दे तो उसका डर छूट जायगा ?

हां ज़रूर छूट जायगा. फिर उसके चेहरे पर ऐसी हंसी छाई रहा करेगी जैसी तुम्हारे चेहरे पर.

अम्मा कल मैं उसको तुम्हारे पास लाऊँगा.

(2)

दूसरे दिन हंसमुख अपने साथी के घर गया और उसको अपने साथ ले आया. रास्ते में उसने पूछा, तुम कल भूके थे खाना खाया नहीं, भाग आये.

साथी बोला, हंसमुख मैं तुम्हरी अम्मा की आहट सुनकर डर गया इसलिये भाग आया. तुम्हें तुम्हारी अम्मा ने खूब पीटा होगा ?

हंसमुख बोला, मेरी अम्मा मुझे क्यों पीटती ? अम्मा प्यारी होती है, चलो अम्मा याद करती है.

साथी अचरज से बोला, तुम्हारी अम्मा ने तुम्हें नहीं पीटा ? मैं बखेर देता तो मेरी अम्मा मुझको बहुत पीटती.

हंसमुख बोला, अम्मा नहीं पीटती, तुम डरते होगे.

साथी बोला, हां डरता हूं, सब बालक डरते हैं. अम्मा से डरते हैं, काका से डरते हैं.

ھنس مکھ بولا‘ اماں میں کھانے کا برتن اُتارتا تھا‘ وہ بھاری نکلا‘ ھاتھ سے گر گیا اور اُس کا سب سامان یہ بکھرا پڑا ھے .

ماں نے بڑے پیار سے کہا‘ بیٹا کچھ نہیں! لاؤ بکھرے سامان کو اُٹھالیں ! کہو‘ تم نے برتن کو اِس وقت کیوں نکالا تھا ؟ یہ کھانے کا سمے نہیں .

اماں ! ساتھی بھوکا تھا‘ اُس کے لئے نکالا تھا‘ وہ بھاگ گیا ۔ اماں وہ بہت ڈر رہا تھا‘ کیوں ڈر رہا تھا ؟ ڈر کی کیا بات تھی ؟

بیٹا ڈر کی بات سے کوئی نہیں ڈرتا‘ من کی بات سے سب ڈرتے ھیں . تمہارا ساتھی اپنی اماں سے ڈرتا ھے .

اماں سے ڈرتا ھے ؟ اماں تو پیاری ھوتی ھے ! اماں سے کیوں ڈرتا ھے ؟

تمہارا ساتھی سچ نہیں بولتا‘ سچ بولنے سے ڈرتا ھے . جو سچ بولنے سے ڈرتا ھے وہ سب سے ڈرتا ھے .

یہاں وہ کس سے ڈرا ؟

مجھ سے .

تم سے؟ پیاری اماں سے ؟

ھاں مجھ سے. ھاں‘ وہ اپنی اماں سے ڈرتا ھے. وہ اپنی ماں کو اپنا جیسا سمجھتا ھے . مجھ کو اپنا جیسا سمجھتا ھے؛ اپنے آپ ڈرتا ھے. اپنی اماں سے ڈرتا ھے مجھ سے ڈرتا ھے. تم سے ڈرتا ھے. تم سے ڈرتا ھوگا .

سچ سے ڈرنا چھوڑ دے تو اُس کا ڈر چھوٹ جائیگا ؟

ھاں ضرور چھوٹ جائیگا . پھر اُس کے چہرے پر ایسی ھنسی چھائی رھا کریگی جیسی تمہارے چہرے پر .

اماں کل میں اُسکو تمہارے پاس لاؤنگا .

(2)

دوسرے دن ھنس مکھ اپنے ساتھی کے گھر گیا اور اُسکو اپنے ساتھ لے آیا . راستے میں اس نے پوچھا‘ تم کل بھوکے تھے کھانا کھایا نہیں‘ بھاگ آئے .

ساتھی بولا‘ ھنس مکھ میں تمہاری اماں کی آھٹ سنکر ڈر گیا اس لئے بھاگ آیا . تمہیں تمہاری اماں نے خوب پیٹا ھوگا ؟

ھنس مکھ بولا‘ میری اماں مجھے کیوں پیٹتی ؟ اماں پیاری ھوتی ھے‘ چلو اماں یاد کرتی ھے .

ساتھی اچرج سے بولا‘ تمہاری اماں نے تمہیں نہیں پیٹا؟ میں بکھیر دیتا تو میری اماں مجھکو بہت پیٹتی .

ھنس مکھ بولا‘ اماں نہیں پیٹتی‘ تم ڈرتے ھوگے .

ساتھی بولا‘ ھاں ڈرتا ھوں‘ سب بالک ڈرتے ھیں . اماں سے ڈرتے ھیں کاکا سے ڈرتے ھیں .

बच्चों की दुनिया

सच के बीज

(1)

एक था लड़का, उसका नाम था कबीर. उसके मां बाप ने उसको बड़े जतन से पाला पोसा था. 'कैसे पाला पोसा' यह बात तुमको दूसरी किताब में पढ़ने को मिलेगी.

कबीर को सब कबीर कहकर नहीं बोलते थे. उसके मुखड़े पर हमेशा हंसी खेलती रहती थी. इसलिए उसका नाम हंसमुख पड़ गया था.

हंसमुख सदा सच बोलता था. उसके मां बाप भी सच बोलते थे. सच बोलना हंसमुख की आदत थी. सच बोलने से वह खुश रहता था. खुशी हरदम उस पर खेलती रहती, ़सी से हंसमुख उसका नाम था.

घर में किसी चीज़ को छूने, देखने, खोलने, निकालने, खाने पीने में उसके मां बाप उसको कभी न रोकते. ऐसी भूल वह कम करता जिससे उसके मां बाप को उसे समझाने की ज़रूरत पड़े. हंसमुख के सच बोलने से मां बांप को उसकी बहुत कम देख भाल करनी पड़ती. कोई नुक़सान हो जाता तो वह दौड़ा दौड़ा जाता और अपनी मां को बता देता.

एक दिन वह अपने एक साथी के साथ घर में खेल रहा था. मां बाप घर पर न थे. साथी को भूक लगी. हंसमुख चौके में गया. साथी उसके साथ गया, जहां खाना रखा था. हंसमुख का हाथ वहां नहीं पहुँच सकता था. उसने चौके में रखी चौकी ली और उसको उस जगह रखा जहां खाना रखा था. चौकी पर खड़े होकर उसने वह बर्तन उतारा जिसमें खाना था. बर्तन भारी था, ठीक ठीक न संभल सका, गिर गया, और खाने का सब सामान बिखर गया.

इतने में उसकी मां आ गई. मां के पांव की आहट सुनकर उसका साथी बुरी तरह घबराया. हंसमुख अपने साथी की घबराहट को न समझ पाया. हंसमुख अपने साथी से कुछ पूछे कि साथी भाग गया. इतने में मां चौके में आ गयी, हंसमुख से पूछा—

बेटा क्या बात है ?

بچوں کی دنیا

سچ کے بیج

(1)

ایک تھا لڑکا' اُس کا نام تھا کبیر . اُس کے ماں باپ نے اُس کو بڑے جتن سے پالا پوسا تھا. 'کیسے پالا پوسا' یہ بات تم کو دوسری کتاب میں پڑھنے کو ملے گی .

کبیر کو سب کبیر .کہکر نہیں بولتے تھے. اُس کے مکھڑے پر ہمیشہ ہنسی کھیلتی رہتی تھی . اس لئے اُس کا نام ہنسمکھ پڑ گیا تھا .

ہنس مکھ سدا سچ بولتا تھا. اُس کے ماں باپ بھی سچ بولتے تھے . سچ بولنا ہنس مکھ کی عادت تھی . سچ بولنے سے وہ خوش رہتا تھا . خوشی ہر دم اُس پر کھیلتی رہتی' اِسی سے ہنس مکھ اُس کا نام تھا .

گھر میں کسی چیز کو چھونے' دیکھنے' کھولنے' نکالنے' کھانے پینے میں اُس کے ماں باپ اُس کو کبھی نہ روکتے. ایسی بھول وہ کم کرتا جس سے اُس کے ماں باپ کو اسے سمجھانے کی ضرورت پڑے . ہنس مکھ کے سچ بولنے سے ماں باپ کو اُس کی بہت کم دیکھ بھال کرنی پڑتی. کوئی نقصان ہو جاتا تو وہ دوڑا دوڑا جاتا اور اپنی ماں کو بتا دیتا .

ایک دن وہ اپنے ایک ساتھی کے ساتھ گھر میں کھیل رہا تھا . ماں باپ گھر پر نہ تھے. ساتھی کو بھوک لگی . ہنس مکھ چوکے میں گیا . ساتھی اُس کے ساتھ گیا' جہاں کھانا رکھا تھا. ہنس مکھ کا ہاتھ وہاں نہیں پہنچ سکتا تھا . اُس نے چوکے میں رکھی چوکی لی اور اس کو اُس جگہ رکھا جہاں کھانا رکھا تھا. چوکی پر کھڑے ہوکر اُس نے وہ برتن اُتارا جس میں کھانا تھا. برتن بھاری تھا' ٹھیک ٹھیک نہ سنبھل سکا' گر گیا' اور کھانے کا سب سامان بکھر گیا .

اتنے میں اُس کی ماں آ گئی . ماں کے پاؤں کی آہٹ سنکر اُس کا ساتھی بری طرح گھبرایا . ہنس مکھ اپنے ساتھی کی گھبراہٹ کو نہ سمجھ پایا . ہنس مکھ اپنے ساتھی سے کچھ پوچھے کہ ساتھی بھاگ گیا . اتنے میں ماں چوکے میں آ پہنچی' ہنس مکھ سے پوچھا—

بیٹا کیا بات ہے ؟

सरदार शिव मंगल सिंह कपूर, श्री हयातुल्ला अन्सारी, श्री पद्म नाथ सिंह, श्री यशपाल और श्री अक्षय ब्रह्मचारी ने मिलकर इस सम्मेलन का बन्दोबस्त किया था और राष्ट्र सिरमौर पंडित जवाहर लाल नेहरू, आचार्य किशोर लाल मशरूवाला, आन्ध्र देश के बड़े बड़े नेताओं ने सम्मेलन की ताईद करते हुए कामयाबी की शुभ कामनायें भेजी थीं. इस सम्मेलन में क़ौमी एकता सम्बन्धी मसलों पर गंभीर चर्चा के बाद कुछ उसूल-सिद्धान्त और कार्य क्रम तय हुए और इनकी बिना पर देश में काम करने के लिये "भारतीय क़ौमी एकता मंडल" क़ायम किया गया. हमें अफ़सोस है कि अनेक अड़चनों की वजह से 'मंडल' का काम अभी ज्यादा आगे नहीं बढ़ सका है.

देश के भाइयों और बहनों से अपील है "भारतीय क़ौमी एकता मंडल" का मेम्बर बन कर और उसे मदद देकर देश के सब से बड़े और पहले रचनात्मक काम "क़ौमी एकता" को मज़बूत, पक्का और मुस्तक़िल बनाने में मदद करें.

अक्षय ब्रह्मचारी
संयोजक, भारतीय क़ौमी एकता मंडल

"......अगर भारत तलवार के उसूल को अपनाता है तो उसे आरज़ी विजय हासिल हो सकती है. पर तब भारत मेरे दिल का गौरव न रह जायगा. भारत के लिये मेरी इतनी भक्ति इसलिए है कि मेरे पास जो कुछ है वह सब मैंने उसी से पाया है. मेरा पक्का विश्वास है कि उसे दुनिया को एक सन्देश देना है. उसे अन्धा बनकर योरप की नक़ल नहीं करनी है. जिस दिन भारत तलवार का उसूल अपनायेगा वह मेरी परीक्षा का दिन होगा और मुझे यक़ीन है कि मैं अपने काम में हलका न उतरूंगा. मेरा धर्म भूगोल की सीमाओं में बंधा हुआ नहीं है. अगर मुझे इसमें जानदार श्रद्धा होगी तो वह मेरे भारत प्रेम को भी पार कर जायेगी. मैं अहिंसा के ज़रिये, जिसे मैं हिन्दू धर्म का मूल समझता हूँ, भारत सेवा के लिये अपनी ज़िंदगी अर्पित कर चुका हूँ."

—महात्मा गांधी

سردار شیو منگل سنگھ کپور' شری حیات اللہ انصاری' شری پدم ناتھ سنگھ' شری یش پال اور شری اکشے برہمچاری نے ملکر اس سمیلن کا بندوبست کیا تھا اور راشٹر سرمور پنڈت جواہر لال نہرو' آچاریہ کشور لال مشروالا' آندھر دیش کے بڑے بڑے نیتاؤں نے سمیلن کی تائید کرتے ہوئے کامیابی کی شبھ کامنائیں بھیجی تھیں ۔ اس سمیلن میں قومی ایکتا سمبندھی مسئلوں پر گمبھیر چرچا کے بعد کچھ اصول سدھانت اور کاریہ کرم طے ہوئے اور ان کی بنا پر دیش میں کام کرنے کے لئے "بھارتیہ قومی ایکتا منڈل" قائم کیا گیا ۔ ہمیں افسوس ہے کہ انیک اڑچنوں کی وجہ سے 'منڈل' کا کام ابھی زیادہ آگے نہیں بڑھ سکا ہے ۔

دیش کے بھائیوں اور بہنوں سے اپیل ہے "بھارتیہ قومی ایکتا منڈل" کا ممبر بنکر اور اسے مدد دیکر دیش کے سب سے بڑے اور پہلے رچناتمک کام "قومی ایکتا" کو مضبوط پکا اور مستقل بنانے میں مدد کریں ۔

اکشے برہمچاری
سنیوجک' بھارتیہ قومی ایکتا منڈل

"......اگر بھارت تلوار کے اصول کو اپناتا ہے تو اسے عارضی وجے حاصل ہوسکتی ہے ۔ پر تب بھارت میرے دل کا گورو نہ رہ جائیگا ۔ بھارت کے لئے میری اتنی بھکتی اس لئے ہے کہ میرے پاس جو کچھ ہے وہ سب میں نے اسی سے پایا ہے ۔ میرا پکا وشواس ہے کہ اسے دنیا کو ایک سندیش دینا ہے ۔ اسے اندھا بن کر یورپ کی نقل نہیں کرنی ہے ۔ جس دن بھارت تلوار کا اصول اپنائیگا وہ میری پریکشا کا دن ہوگا اور مجھے یقین ہے کہ میں اپنے کام میں ہلکا نہ اتروںگا ۔ میرا دھرم بھوگول کی سیماؤں سے بندھا ہوا نہیں ہے ۔ اگر مجھے اس میں جاندار شردھا ہوگی تو وہ میرے بھارت پریم کو بھی پار کر جائیگی ۔ میں اہنسا کے ذریعے' جسے میں ہندو دھرم کا مول سمجھتا ہوں' بھارت سیوا کے لئے اپنی زندگی ارپت کر چکا ہوں۔"

—مہاتما گاندھی

और सोचने के ढंगों के दो अलग नज़रिये हो गये हैं, और दोनों के दिल में बदले की आग भड़क रही है. जगह, वक़्त वगैरा के मेल या बेमेल से ऊपरी शान्ति दीख पड़ रही है लेकिन आज दोनों फ़िरक़ों के लोगों में फ़िरक़ेवाराना झुकाव के खिलाफ़ चेतना पैदा कर क़ौमी एकता की भावना को मज़बूत बनाने की सख़्त ज़रूरत है.

छूत की बीमारी

फ़िरक़ेवाराना भावना का ख़तरनाक रोग हिन्दू-मुसलमानों के अलावा दूसरे हिस्सों में भी फैलता जा रहा है. देश में क़रीब क़रीब सभी जगह तमाम हिन्दुओं और हरिजनों का सम्बन्ध बिगड़ता जा रहा है और कटुता की बहुत मिसालें सामने आ रही हैं. पंजाब में हिन्दुओं और सिक्खों का सम्बन्ध ख़राब हो रहा है. सिक्ख नेता मास्टर तारासिंह ने अलग राज की मांग को फिर से दुहराया है. इनके अलावा द्राविड़ों, आदिवासियों वग़ैरा में भी असंतोश और अलहदगी की भावना दीख पड़ने लगी है. भाशा, कलचर, जाति, धर्म वग़ैरा के नाम पर इनके अन्दर ज़हरीली हवा घर करती जा रही है. इस तरह हर नज़रिये से हम देखते हैं कि देश में फ़िरक़ेवाराना पागलपन और उसकी ज़हरीली हवा फैली हुई है और क़ौमी एकता का रास्ता धुंदला हो रहा है.

हमारा फ़र्ज़

आज़ादी के लिए क़ौमी एकता की जितनी ज़रूरत थी क़ौम के फिर बनाव और तरक़्क़ी के लिए वह ज़रूरत सौगुनी ज़ियादा हो गई है. बदक़िस्मती की बात है कि राश्ट्र पिता के बलिदान के बाद जहां हमने क़ौमी एकता की ख़ातिर काम करने के लिए एकसूपन की ज़रूरत थी वहां हम इस सवाल की तरफ़ से बग़लें झांकने लगे हैं. हम फ़िरक़ेवाराना पागलपन के बरबाद कर देने वाले नतीजों को देख चुके हैं. इसलिये आज ज़िन्दगी के हर दायरे से तंग नज़री और साम्प्रदायिकता के भावों को उखाड़ कर क़ौमी एकता को मज़बूत बनाने के लिए ज़बरदस्त जनमत और जन आन्दोलन की ज़रूरत है जिससे लोगों के सोचने और काम करने का नज़रिया एकता के मुताबिक़ हो. आज यही हमारा पाक पवित्र फ़र्ज़ है.

भारतीय क़ौमी एकता मंडल

साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ापरस्ती को उखाड़ कर क़ौमी एकता को मज़बूत बनाने के मक़सद से जुदा जुदा विचार धारा के विद्वानों, नेताओं और काम करने वालों का एक सम्मेलन पिछले साल लखनऊ में पंडित सुन्दरलाल जी की सदारत में हुआ था. आचार्य नरेन्द्र देव, आचार्य जुगुल किशोर, श्री श्रीकृश्न दत्त पालीवाल, श्री गोविंद सहाय, श्री गंगा सहाय चोबे, श्री ई० एम० फिलिप्स,

اور سوچنے کے ڈھنگوں کے دو الگ نظریئے ہو گئے ہیں' اور دونوں کے دل میں بدلے کی آگ بھڑک رہی ہے ۔ جگہ' وقت وغیرہ کے میل یا بے میل سے اوپری شانتی دیکھ پڑ رہی ہے لیکن آج دونوں فرقوں کے لوگوں میں فرقے وارانہ جھکاؤ کے خلاف چیتنا پیدا کر قومی ایکتا کی بھاونا کو مضبوط بنانے کی سخت ضرورت ہے ۔

چھوت کی بیماری

فرقےوارانہ بھاونا کا خطرناک روگ ہندو مسلمانوں کے علاوہ دوسرے حصوں میں بھی پھیلتا جا رہا ہے ۔ دیش میں قریب قریب سبھی جگہ تمام ہندوؤں اور ہریجنوں کا سمبندھ بگڑتا جا رہا ہے اور کٹوتا کی بہت مثالیں سامنے آ رہی ہیں ۔ پنجاب میں ہندوؤں اور سکھوں کا سمبندھ خراب ہو رہا ہے ۔ سکھ نیتا ماسٹر تارا سنگھ نے الگ راجکی مانگ کو پھر سے دھرایا ہے ۔ ان کے علاوہ دراوڑوں' آدیواسیوں وغیرہ میں بھی اسنتوش اور علیحدگی کی بھاونا دیکھ پڑنے لگی ہے ۔ بھاشا' کلچر' جاتی' دھرم وغیرہ کے نام پر ان کے اندر زہریلی ہوا گھر کرتی جا رہی ہے ۔ اسطرح ہر نظریئے سے ہم دیکھتے ہیں کہ دیش میں فرقے وارانہ پاگل پن اور اسکی زہریلی ہوا پھیلی ہوئی ہے اور قومی ایکتا کا راستہ دھندلا ہو رہا ہے ۔

ہمارا فرض

آزادی کے لئے قومی ایکتا کی جتنی ضرورت تھی قوم کے پھر بناؤ اور ترقی کے لئے وہ ضرورت سو گنی زیادہ ہو گئی ہے ۔ بدقسمتی کی بات ہے کہ راشٹر پتا کے بلیدان کے بعد جہاں ہم میں قومی ایکتا کی خاطر کام کرنے کے لئے ایکسو پن کی ضرورت تھی وہاں ہم اس سوال کی طرف سے بغلیں جھانکنے لگے ہیں ۔ ہم فرقے وارانہ پاگل پن کے برباد کر دینے والے نتیجوں کو دیکھ چکے ہیں ۔ اس لئے آج زندگی کے ہر دائرے سے تنگ نظری اور سامپردائکتا کے بھاؤں کو اکھاڑ کر قومی ایکتا کو مضبوط بنانے کے لئے زبردست جن مت اور جن آندولن کی ضرورت ہے جس سے لوگوں کے سوچنے اور کام کا نظریہ ایکتا کے مطابق ہو ۔ آج یہی ہمارا پاک پوتر فرض ہے ۔

بھارتیہ قومی ایکتا منڈل

سامپردائکتا یا فرقہ پرستی کو اکھاڑ کر قومی ایکتا کو مضبوط بنانے کے مقصد سے جدا جدا وچار دھارا کے ودوانوں' نیتاؤں اور کام کرنے والوں کا ایک سمیلن پچھلے سال لکھنؤ میں پنڈت سندر لال جی کی صدارت میں ہوا تھا ۔ آچاریہ نریندر دیو' آچاریہ جگل کشور' شری کرشن دت پالیوال' شری گوبند سہائے' شری گنگا سہائے چوبے' شری ای ایم فلپس'

शक दूर कर सकने की लायक़ी अपने में नहीं महसूस करते हैं. नतीजा यह है कि इन सवालों और इन से पैदा होने वाले झगड़े के लिए हम पाकिस्तान के दोषों और इतिहास के गन्दे सफ़ों की तरफ़ देखने लगते हैं. हमारी समझ के फेर या दिमाग़ के रोगी होने की यही साफ़ पहचान है.

पिछले चुनाव

पिछले चुनाव के मौक़े पर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने देश में साम्प्रदायिक या फ़िरके बन्दी की भावना के फैलाव और उसके नुक़सानदे नतीजों को साफ़ साफ़ कह दिया था और उसे जड़ से उखाड़ डालने की अपील की थी. चुनाव ख़त्म हुए. कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की कलकत्ते वाली बैठक में फ़िरके बन्दी के ख़िलाफ़ कांगरेस की शानदार जीत पर ख़ुशी ज़ाहिर की. लेकिन इससे क्या यह पहचाना जा सकता है कि देश से फ़िरक़े वारियत उठ गई या उसका ज़ोर कम हो रहा है ?

दो नज़रिये

पंडित नेहरू के पुराने व लायक़ दोस्त डाक्टर सम्पूर्नानन्द ने अभी अभी कहा है कि देश के मुसलमानों में साम्प्रदायिक तंगनज़री के भाव मौजूद हैं और इस चुनाव में उन्होंने इस को ज़ाहिर किया हैं. श्री सम्पूर्नानन्द पर चुनाव का गहरा असर दीख पड़ता है. दूसरी तरफ़ शेरे काश्मीर शेख़ अब्दुल्ला के लफ़्ज़ों में, हिन्दुस्तान में फ़िरक़े वारियत का ज़ोर कम नहीं है और अगर पंडित नेहरू नहीं रहे तो कम गिनती वालों को काफ़ी ख़तरा व डर है. यहां इन नेताओं के ख़्यालों की गहरी छानबीन करने को ज़रूरत नहीं है. इनसे देश की आम हवा और सोचने और करने वग़ैरा के नज़रिये की झलक मिलती है. अगर सम्पूर्नानन्द जी आम हिन्दू भाइयों के विचारों को ज़ाहिर करते हों तो उनकी बातों से पता चलता है कि हिन्दुओं में मुसलमानों के अविश्वास की भावना अभी मौजूद है और उसी तरह अगर शेख़ साहब आम मुसलमान भाइयों के विचारों के अलमबरदार हों तो मानना होगा कि मुसलमानों में भी हिन्दुओं के लिये कहीं कहीं विश्वास के भाव चले आते हैं. इन नेताओं की बातों का भेद जो कुछ भी हो लेकिन आज इन दोनों फ़िरक़ों के आपसी अविश्वास की भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है. अगर पिछले चुनावों की छान बीन की जाय तो यह ज़ियादा साफ़ दिखाई पड़ेगा और मालूम होगा कि इस चुनाव के ज़रिये दोनों फ़िरक़ों (हिन्दू-मुसलमान) में साम्प्रदायिक तंग नज़री को ज़ियादा बल मिला है. आपस के शक-शुबे और अविश्वास की वजह से आज दोनों की एक दूसर में नहीं पटती और न दिमाग़ मिलते हैं. सवालों को समझने

ے دور کر سکنے کی لائقی اپنے میں نہیں محسوس
، ہیں۔ نتیجہ یہ ہے کہ اِن سوالوں اور اِن سے
ا ہونے والے جھگڑے کے لئے ہم پاکستان کے دوشوں
اتہاس کے گندے صفحوں کی طرف دیکھنے لگتے
ں ۔ ہماری سمجھ کے پھیر یا دماغ کے روگی ہونے کی
ی صاف پہچان ہے ۔

پچھلے چناؤ

پچھلے چناؤ کے موقعہ پر پنڈت جواہر لال نہرو نے
ش میں سامپردائک یا فرقے بندی کی بھاؤنا کے پھیلاؤ
اس نقصان دہ نتیجوں کو صاف صاف کہدیا تھا اور
جڑ سے اُکھاڑ ڈالنے کی اپیل کی تھی ۔ چناؤ ختم ہوئے۔
ہند کانگریس کمیٹی کی کلکتے والی بیٹھک میں
، بندی کے خلاف کانگریس کی شاندار جیت پر خوشی
ہر کی ۔ لیکن اُس سے کیا یہ پہچانا جا سکتا ہے کہ
ں سے فرقے واریت اٹھ گئی یا اُس کا زور کم ہو رہا ہے؟

دو نظریئے

پنڈت نہرو کے پرانے و لائق دوست ڈاکٹر سمپورنا نند
ابھی ابھی کہا ہے کہ دیش کے مسلمانوں میں سامپردائک
ے نظری کے بھاؤ موجود ہیں اور اِس چناؤ میں اُنہوں
اس کو ظاہر کیا ہے ۔ شری سمپورنا نند پر چناؤ کا گہرا
دیکھ پڑتا ہے ۔ دوسری طرف شیر کاشمیر شیخ عبداللہ
لوں میں' ہندستان میں فرقےواریت کا زور کم نہیں ہے
اگر پنڈت نہرو نہیں رہے تو کم گنتی والوں کو کافی
طرہ و ڈر ہے ۔ یہاں ان نیتاؤں کے خیالوں کی گہری
ان بین کرنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ اِن سے دیش کی
ہوا اور سوچنے غور کرنے وغیرہ کے نظریئے کی جھلک
تی ہے ۔ اگر سمپورنانند جی عام ہندو بھائیوں کے
اروں کو ظاہر کرتے ہوں تو اُن کی باتوں سے پتہ چلتا
کہ ہندوؤں میں مسلمانوں کے اوشواس کی بھاونا ابھی
جود ہے اور اسی طرح اگر شیخ صاحب عام مسلمان
ئیوں کے وچاروں کے علمبردار ہوں تو ماننا ہوگا کہ
لمانوں میں بھی ہندوؤں کے لئے کہیں کہیں اوشواس
بھاؤ چلے آتے ہیں ۔ اِن نیتاؤں کی باتوں کا بھید جو
ہ بھی ہو لیکن آج اِن دونوں فرقوں کے آپسی اوشواس
بھونا سے انکار نہیں کیا جا سکتا ہے ۔ اگر پچھلے
ناؤں کی چھان بین کی جائے تو یہ زیادہ صاف دکھائی
ا اور معلوم ہوگا کہ اِس چناؤ کے ذریعے دونوں فرقوں
ہندو مسلمان) میں سامپردائک تنگ نظری کو
دہ بل ملا ہے ۔ آپس کے شک شبہ اور اوشواس
وجہ سے آج دونوں کی ایک دوسرے میں نہیں
ی اور نہ دماغ ملتے ہیں ۔ سوالوں کو سمجھنے

भाषा के नाम पर जिस तरह काम हुए हैं उससे साम्प्रदायिक ..फ़िरक़े वाराना भेद भाव फैलाने वाली ताक़तों को मदद मिली है. नतीजा यह है कि आज हिन्दी और उरदू के नाम र तंग नज़र वाले भाषा मुल्लों के फिर से दो अलग अलग खाड़े क़ायम होते दीख पड़ रहे हैं. उनका झगड़ा सामने आने लगा है और आगे ख़तरे का पूरा डर है.

हिन्दुस्तानी कलचर

हमारा देश बहुत पुराना और बड़ा है. इसमें बहुत से र्म, फ़िरक़े और जात के लोग बरसों से साथ साथ रहा ते हैं और सदियों के मेल से इनमें एक सी कलचर का कास हुआ है. अनेकता में एकता हिन्दुस्तानी कलचर की नियादी चीज़ है. पर आज कलचर के नाम पर जो न्दोलन चलाये जा रहे हैं उसमें आपसी अविश्वास, जलन, रत बदले वग़ैरा के भाव जियादा ज़ोर मार रहे हैं. चर के सवाल ने लोगों को बेचैन कर दिया है और ज विरोधी पिछ घसीटू ताक़तें इससे बेजा फ़ायदा उठा हैं. अफ़सोस की बात है कि कलचर के सवाल को क़ेवारियत के तंग अखाड़े में घसीटा जा रहा है जिससे क़े अच्छे वातावरन और क़ौमी एकता की भावना पर ी चोट पड़ रही है.

पुरानी या तारीख़ी जगहों में तबदीली

भाषा और कलचर के अलावा कुछ और भी सवाल र देश की हवा को ज़हरीला किया जा रहा है. ऐसे लों में पुरानी घटनाओं की बिना पर तारीख़ी जगहों का दायिक या फ़िरक़े वाराना शक्ल बदलने का सवाल है जिससे लोगों के जज़बे बहुत उभर आते हैं. देखा है कि इस सवाल ने समझदार लोगों के ऊपर भी जमा रखा है और इस जान लेवा और पिछ घसीटू लन को उन्होंने मदद पहुँचाई है. तारीख़ी जगहों को रह से ज़बरदस्ती बदल देने का बहुत ही गहरा सवाल के ज़रिये हज़ारों बरसों के गड़े मुर्दे उखाड़े जायेंगे बदबू से सारे समाज की हवा गंदी हो जायेगी. वाल हिन्दुओं और मुसलमानों तक सीमित नहीं लेकिन इसके ज़रिये हिन्दू, मुसलमान, आर्य, अनार्य, न, वैशनव, शैव, सिक्ख, अवर्न, सवर्न, आदिवासी के बहुत से झगड़े पैदा होंगे और यदुवंशियों की तरह लू के जोश में लड़ने मरने को मजबूर होंगे.

झ का फेर

ज इस तरह के बहुत से सवाल हमारे सामने हैं. जिनसे क़ौमी एकता के रास्ते की पेचीदगी ती है. लोगों का दिमाग़ी ताल बिगड़ता जा रहा कोशिश कर के भी इन सवालों को सुलझा कर

بھاشا کے نام پر جس طرح کام ہوئے ہیں اس سے سامپردایک یا فرقہ‌وارانہ بھید بھاؤ پھیلانے والی طاقتوں کو مدد ملی ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ آج ہندی اور اردو کے نام پر تنگ نظر والے بھاشا ملاؤں کے پھر سے دو الگ الگ اکھاڑے قائم ہوتے دیکھ پڑ رہے ہیں۔ انکا جھگڑا سامنے بھی آنے لگا ہے اور آگے خطرے کا پورا ڈر ہے۔

ہندستانی کلچر

ہمارا دیش بہت پرانا اور بڑا ہے۔ اسمیں بہت سے دھرم، فرقے اور جات کے لوگ برسوں سے ساتھ ساتھ رہا کرتے ہیں اور صدیوں کے میل سے انمیں ایک سی کلچر کا وکاس ہوا ہے۔ انیکتا میں ایکتا ہندستانی کلچر کی بنیادی چیز ہے۔ پر آج کلچر کے نام پر جو آندولن چلائے جا رہے ہیں اسمیں آپسی اوشواس، جلن، نفرت بدلے وغیرہ کے بھاؤ زیادہ زور مار رہے ہیں۔ کلچر کے سوال نے لوگوں کو بےچین کر دیا ہے اور سماج وِرودھی پچھ گھسیٹو طاقتیں اس سے بیجا فائدہ اٹھا رہی ہیں۔ افسوس کی بات ہے کہ کلچر کے سوال کو فرقہ‌واریت کے تنگ اکھاڑے میں گھسیٹا جا رہا ہے جس سے دیش کے اچھے واتاورن اور قومی ایکتا کی بھاونا پر گہری چوٹ پڑ رہی ہے۔

پرانی یا تاریخی جگہوں میں تبدیلی

بھاشا اور کلچر کے علاوہ کچھ اور بھی سوال اٹھا کر دیش کی ہوا کو زہریلا کیا جا رہا ہے۔ ایسے سوالوں میں پرانی گھٹناؤں کی بنا پر تاریخی جگہوں کا سامپردایک یا فرقہ‌وارانہ شکل بدلنے کا سوال ہوتا ہے جس سے لوگوں کے جذبے بہت ابھر آتے ہیں دیکھا گیا ہے کہ اس سوال نے سمجھدار لوگوں کے اوپر بھی اثر جما رکھا ہے اور اس جان لیوا اور پچھ گھسیٹو آندولن کو انہوں نے مدد پہنچائی ہے۔ تاریخی جگہوں کو اس طرح سے زبردستی بدل دینے کا بہت ہی گہرا سوال ہے۔ اس کے ذریعے ہزاروں برسوں کے گڑے مردے اکھاڑے جائینگے جن کی بدبو سے سارے سماج کی ہوا گندی ہو جائیگی۔ یہ سوال ہندوؤں اور مسلمانوں تک سیمت نہیں رہیگا لیکن اسکے ذریعے ہندو، مسلمان، آریہ، اناریہ، بودھ، جین، ویشنو، شیو، سکھ، اورن، سورن، آدیواسی وغیرہ بہت سے جھگڑے پیدا ہونگے اور یدونشیوں کی طرح لوگ غالبو کے جوش میں لڑنے مرنے کو مجبور ہونگے۔

سمجھ کا پھیر

آج اسطرح کے بہت سے سوال ہمارے سامنے موجود ہیں جن سے قومی ایکتا کے راستے کی پیچیدگی بڑھتی جاتی ہے۔ لوگوں کا دماغی تال بگڑتا جا رہا ہے اور کوشش کر کے بھی ان سوالوں کو سلجھا کر

आज की दर्दनाक हालत

30 जनवरी सन 1948 को एक पागल ने महात्मा गांधी के ऊपर गोली चलाकर उनकी जान ली. महात्मा जी हिन्दू भाइयों को फ़िरक़ेवाराना पागलपन के ख़िलाफ़ समझा रहे थे. उन दिनों क़रीब क़रीब सभी हिन्दू भाइयों में फ़िरक़ेवाराना ज़हर घर कर गया था और बड़े दंगे-झगड़े चल रहे थे. ज़्यादातर जनता का दिमाग़ बहक सा गया था, और मेल की बात उसे नागवार थी. देश के बड़े लोग भी इस रोग के शिकार हो गये थे. इससे गांधीजी को बेहद तकलीफ़ होती थी और उन्होंने उसे कई बार ज़ाहिर भी किया.

क़ब्रिस्तान के जैसी शान्ति

गांधी जी के बलिदान से देश को एक चोट पहुँची. उसकी नींद में ख़लल पड़ गया. मार-काट का सिलसिला टूटा. नेताओं ने अपनी ज़िम्मेदारी का एलान किया और देश की तंग नज़री और साम्प्रदायिक या फ़िरक़े वाराना भावनाओं को जड़ से उखाड़ देने की बातें सुनाई पड़ने लगीं. राष्ट्र में समझ और अमन के आसार दिखाई पड़े. पर बदक़िस्मती से यह समझ और शान्ति के निशान क़ब्रिस्तान के जैसे साबित हुए और थोड़े ही दिनों बाद फिर वही बवंडर और तूफ़ान देश में फैल गया. फ़िरक़ेवाराना झगड़ों का तांता जारी हो गया. पाकिस्तान के झगड़ों और बेजा कामों को सामने रख कर इन झगड़ों को किसी तरह भी ठीक नहीं ठहराया जा सकता है.

आज़ादी की लड़ाई के वक़्त बिरादराना और लोकराजी समाज का एक आदर्श और मक़सद हमारे सामने था. उसके लिये ग़ैर फ़िरक़ेवाराना लोकराजी निज़ाम और क़ौमी एकता का होना बहुत लाज़मी है. हमें अपने आदर्शों में पूरा पूरा यक़ीन रखने की ज़रूरत है. बाहरी चोटों से अपने रास्ते से भटक जाना बेजा और ग़लत चीज़ है. हमारा भविश्य हमारे ही कामों और भरोसे पर खड़ा किया जा सकता है.

भाशा का सवाल

भाशा का सवाल क़ौमी एकता के साथ काफ़ी अहम रहा है. महात्मा जी ने इस पर अपना इन्साफ़-भरा सुझाव राष्ट्र के सामने पेश किया था. वह देश की आम जनता की समझ में आने वाली सीधी सरल हिन्दुस्तानी भाशा के मानने वाले थे और इस तरह भाशा के ज़रिये देश की एकता को मज़बूत और मुस्तक़िल बनाना चाहते थे.

कहने की ज़रूरत नहीं है कि महात्मा जी के बाद हमने उनके भाशा वाले सुझाव को एकदम ठुकरा दिया और इस भाशा के सवाल ने हमें मीलों पीछे ढकेल दिया है. राष्ट्र

آج کی دردناک حالت

30 جنوری سن 1948 کو ایک پاگل نے مہاتما گاندھی
اوپر گولی چلا کر اُن کی جان لی. مہاتما جی ہندو
ائیوں کو فرقےوارانہ پاگل پن کے خلاف سمجھا رہے تھے .
ن دنوں قریب قریب سبھی ہندو بھائیوں میں فرقےوارانہ
ہر گھر کر گیا تھا اور بڑے دنگے جھگڑے چل رہے تھے. زیادہ
جنتا کا دماغ بہک سا گیا تھا' اور میل کی بات اُسے
گوار تھی. دیش کے بڑے لوگ بھی اِس روگ کے شکار
بن گئے تھے . اِس سے گاندھی جی کو بےحد تکلیف ہوتی
ی اور اُنہوں نے اُسے کئی بار ظاہر بھی کیا .

قبرستان کے جیسی شانتی

گاندھی جی کے بلیدان سے دیش کو ایک چوٹ
ہونچی. اُسکی نیند میں خلل پڑ گیا. مار کاٹ کا سلسلہ
ٹا . نیتاؤں نے اپنی ذمہ داری کا اعلان کیا اور دیش کی
نگ نظری اور سامپردایک یا فرقےوارانہ بھاوناؤں کو جڑ
اُکھاڑ دینے کی باتیں سنائی پڑنے لگیں . راشٹر میں
سمجھ اور امن کے آثار دکھائی پڑے . پر بدقسمتی سے یہ
سمجھ اور شانت کے نشان قبرستان کے جیسے ثابت ہوئے
ر تھوڑے ہی دنوں بعد پھر وہی بونڈر اور طوفان دیش
میں پھیل گیا . فرقےوارانہ جھگڑوں کا تانتا جاری ہو گیا .
پاکستان کے جھگڑوں اور بیجا کاموں کو سامنے رکھ کر اِن
جھگڑوں کو کسی طرح بھی ٹھیک نہیں ٹھہرایا جا
سکتا ہے .

آزادی کی لڑائی کے وقت برادرانہ اور لوک راجی
سماج کا ایک آدرش اور مقصد ہمارے سامنے تھا . اُسکے
لیے غیر فرقےوارانہ لوک راجی نظام اور قومی ایکتا کا ہونا
بہت لازمی ہے. ہمیں اپنے آدرشوں میں پورا پورا یقین
رکھنے کی ضرورت ہے . باہری چوٹوں سے اپنے راستے سے
بھٹک جانا بیجا اور غلط چیز ہے . ہمارا بھوشیہ ہمارے
ہی کاموں اور بھروسے پر کھڑا کیا جا سکتا ہے .

بھاشا کا سوال

بھاشا کا سوال قومی ایکتا کے ساتھ کافی اہم رہا ہے .
مہاتما جی نے اِس پر اپنا اِنصاف بھرا سجھاؤ راشٹر کے سامنے
پیش کیا تھا . وہ دیش کی عام جنتا کی سمجھ میں
آنے والی سیدھی سرل ہندستانی بھاشا کے ماننے والے تھے
اور اِس طرح بھاشا کے ذریعے دیش کی ایکتا کو مضبوط
اور مستقل بنانا چاہتے تھے .

کہنے کی ضرورت نہیں ہے کہ مہاتما جی کے بعد ہم
نے اُنکے بھاشا والے سجھاؤ کو ایک دم ٹھکرا دیا اور اِس
بھاشا کے سوال نے ہمیں میلوں پیچھے دھکیل دیا ہے. راشٹر

सारा देश एका एक धधक उठा. बापू ने अपना दर्द सबके सामने रख दिया. सहयोग के लिये चारों तरफ़ देखा और वह जिस काम को सबसे बड़ा और पहला रचनात्मक काम समझते थे उस क़ौमी एकता के लिये अकेले ही निकल पड़े.

क़ौमी एकता में रुकावट

तंग नज़री और उसके कारन साम्प्रदायिकता की भावना क़ौमी एकता के रास्ते में ज़बरदस्त रुकावट है. छूत छात और ऊंच नीच का भाव, अन्ध विश्वास, धर्म व इतिहास सम्बन्धी अज्ञान, असलियत की सुई से फावड़ा और कुछ से कुछ बना कर कहना, फ़ालतू और लालच से भरा जोश, बदले का जज़्बा, दिमाग़ की चूल का ढीला होना, वग़ैरा बातों के कारन नज़रिये में तंगी और भावना में साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ा बन्दी पैदा होती है. साथ ही साथ जात, ख़ानदान, रीतिरिवाज कलचर, और संस्कृति वग़ैरा की ओट में इसे बढ़ावा मिलता है. इस गन्दी भावना को जड़ से उखाड़े बिना क़ौमी एकता और बिरादराना लोक शाही समाज का क़ायम करना नामुमकिन है. देश की हर पहलू तरक़्क़ी के लिए महात्मा जी ने चौदह काम वाला रचनात्मक प्रोग्राम सामने रखा था और उसमें क़ौमी एकता के सवाल को सबसे महत्व की व ख़ास जगह दी थी.

महात्मा जी शरीर रूप से आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन वह सवाल हमारे सामने साफ़ साफ़ मौजूद है जिसके लिए उन्होंने ज़िन्दगी भर काम किया और आख़ीर दम उसी को करते करते 'हे राम'! कह कर आंख मीच ली और इस तरह हमेशा के वास्ते देश को सबक़ दे गये. सवाल की गम्भीरता हमें देखनी होगी और फ़ैसला करना होगा कि बापू के बलिदान के बाद भी क्या हमारे दिल के अन्दर वह मैल मौजूद है जिसे धोने के लिए उन्होंने अपनी क़ुर्बानी कर दी और अगर है तो इस बारे में हमारा कर्त्तव्य क्या है हमारा फ़र्ज़ क्या है.

हिन्दू मुस्लिम सवाल

क़ौमी एकता के रास्ते में देश में बहुत से छोटे बड़े साम्प्रदायिक या फ़िरक़ेवाराना सवाल खड़े होते रहे हैं. लेकिन उनमें हिन्दुओं और मुसलमानों के साम्प्रदायिक या फ़िरक़ेवाराना झगड़े ख़ास हैं. क्या राष्ट्र पिता के बलिदान के बाद यह झगड़े ख़त्म हुए? क्या हम में से आपसी अविश्वास, शक, डर और बदले की भावनायें निकल गईं और आगे की ज़िन्दगी में साथ साथ एक दिल से काम करने के लिए समाजी, कलचरी वग़ैरा दायरों में वह सरज़मीन तैयार हुई जो क़ौमी एकता का बुनियाद है. इस पर इस बीड़े में हम यहां विचार करेंगे.

سارا دیش ایکا ایک دھدھک اُٹھا. باپو نے اپنادرد سب کے سامنے رکھ دیا ۔ سہیوگ کے لئے چاروں طرف دیکھا اور وہ جس کام کو سب سے بڑا اور پہلا رچناتمک کام سمجھتے تھے اس قومی ایکتا کے لئے اکیلے ہی نکل پڑے ۔

قومی ایکتا میں رکاوٹ

تنگ نظری اور اُس کے کارن سامپردایکتا کی بھاونا قومی ایکتا کے راستے میں زبردست رکاوٹ ہے ۔ چھوت چھات اور اُونچ نیچ کا بھاؤ' اندھ وشواس' دھرم و اتہاس سمبندھی اگیان' اصلیت کو سوئی سے پھاوڑا اور کچھ سے کچھ بناکر کہنا' فالتو اور لالچ سے بھرا جوش' بدلے کا جذبہ' دماغ کی چول کا ڈھیلا ہونا' وغیرہ باتوں کے کارن نظریئے میں تنگی اور بھاونا میں سامپردایکتا یا فرقہ بندی پیدا ہوتی ہے ۔ ساتھ ہی ساتھ جات' خاندان' ریت رواج کلچر' اور سنسکرت وغیرہ کی اوٹ میں اسے بڑھاوا ملتا ہے ۔ اِس گندی بھاونا کو جڑ سے اُکھاڑے بنا قومی ایکتا اور برادرانہ لوک شاہی سماج کا قائم کرنا ناممکن ہے. دیش کی ہر پہلو ترقی کے لئے مہاتما جی نے چودہ کام والا رچناتمک پروگرام سامنے رکھا تھا اور اُسمیں قومی ایکتا کے سوال کو سب سے مہتو کی و خاص جگہ دی تھی ۔

مہاتما جی شریر روپ سے آج ہمارے بیچ نہیں ہیں لیکن وہ سوال ہمارے سامنے صاف صاف موجود ہے جسکے لئے اُنہوں نے زندگی بھر کام کیا اور آخیر دم اُسی کو کرتے کرتے 'ہے رام'! کہکر آنکھ میچ لی اور اِس طرح ہمیشہ کے واسطے دیش کو سبق دے گئے ۔ سوال کی گمبھیرتا ہمیں دیکھنی ہوگی اور فیصلہ کرنا ہوگا کہ باپو کے بلیدان کے بعد بھی کیا ہمارے دل کے اندر وہ میل موجود ہے جسے دھونے کے لئے اُنہوں نے اپنی قربانی کر دی اور اگر ہے تو اِس بارے میں ہمارا کرتویہ کیا ہے ہمارا فرض کیا ہے ۔

ہندو مسلم سوال

قومی ایکتا کے راستے میں دیش میں بہت سے چھوٹے بڑے سامپردایک یا فرقےوارانہ سوال کھڑے ہوتے رہے ہیں ۔ لیکن اُن میں ہندوؤں اور مسلمانوں کے سامپردایک یا فرقہوارانہ جھگڑے خاص ہیں ۔ کیا راشٹر پتا کے بلیدان کے بعد یہ جھگڑے ختم ہوئے؟ کیا ہم میں سے آپسی اوشواس' شک' ڈر اور بدلے کی بھاونائیں نکل گئیں اور آگے کی زندگی میں ساتھ ساتھ ایک دل سے کام کرنے کے لئے سماجی' کلچری وغیرہ دائروں میں وہ سرزمین تیار ہوئی جو قومی ایکتا کا بنیاد ہے. اِس پر ہم تھوڑے میں یہاں وچار کرینگے ۔

हर तरह सोचने विचारने के बाद हमें यही महसूस होता है कि "भारत सेवक समाज" हिन्द सरकार की एक नई फुलझड़ी है जिसका तमाशा सरकार हमें दिखाना चाहती है. ऐसी फुलझड़ियां छुड़वा कर पंडित जवाहरलाल जी यह चाहें कि जनता उनका साथ दे तो कैसे मुमकिन हो सकता है ? हमारी अपनी राय है कि "भारत सेवक समाज" वग़ैरा खोलने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं है, यही हुकूमत भारत सेवक समाज की शक्ल ले सकती है बशर्ते कि उसके छोटे बड़े—ख़ास कर बड़े बड़े नई दिल्ली वाले—अहलकार इन्सान बन जायें और ऊंची ऊंची तनख़ाहें लेना बन्द करके, नवाबों राजों जैसे ठाठ से न रह कर सादगी, ईमान और सच्चाई के साथ जनता की सेवा करें.

—सुरेश रामभाई

ہر طرح سوچنے وچارنے کے بعد ہمیں یہی محسوس ہوتا ہے کہ "بھارت سیوک سماج" ہند سرکار کی ایک نئی پھلجھڑی ہے جس کا تماشہ سرکار ہمیں دکھانا چاہتی ہے. ایسی پھلجھڑیاں چھڑوا کر پنڈت جواہر لال جی یہ چاہیں کہ جنتا اُن کا ساتھ دے تو کیسے ممکن ہوسکتا ہے؟ ہماری اپنی رائے یہ ہے کہ "بھارت سیوک سماج" وغیرہ کھولنے کی ذرا بھی ضرورت نہیں ہے' یہی حکومت بھارت سیوک سماج کی شکل لے سکتی ہے شرطیکہ اُس کے چھوٹے بڑے—خاص کر بڑے بڑے نئی دلی والے—عہلکار اِنسان بن جائیں اور اونچی اونچی تنخواہیں لینا بند کرکے' نوابوں راجوں جیسے ٹاٹھ سے نہ رہ کر سادگی' ایمان اور سچائی کے ساتھ جنتا کی سیوا کریں .

—سریش رام بھائی

क़ौमी एकता का सवाल

"आज देश में सब से बड़ा और सब से पहला रचनात्मक काम है, दोनों जातियों की एकता"—इन लफ़्ज़ों के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'क़ौमी एकता' के महान व शानदार रचनात्मक काम को पूरा करने के लिए क़दम बढ़ाया और इस एकता की पाक-पवित्र वेदी पर अपनी क़ुर्बानी दे कर उन्होंने हमारे लिये हमेशा को रास्ता खोल दिया.

बापू के दिल की आग

क़ौमी एकता का सवाल नया नहीं है. इस पर बरसों सोच विचार हुआ है और इसे हल करने के लिये कोशिश की गई है. अंगरेज़ी ज़माने में कहा जाता था कि अंगरेज़ी शासन के हटने पर इसका हल आप से आप हो जायगा. अंगरेज़ी शासन ख़त्म हो गया. साथ ही साथ दुनिया में जो न देखा था न सुना वह हुआ और साम्प्रदायिक या फ़िरक़े वाराना बहुमत के आधार पर देश का बटवारा हुआ. उसके बाद जो मुल्क भर में दिल को दहलाने वाली घटनायें हुईं उन्हें यहां याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है.

राष्ट्र की आज़ादी की ख़ुशी में 15 अगस्त को बड़े बड़े जलसे किये गये लेकिन राष्ट्र पिता की फ़िकर और उनके दिल का दर्द बढ़ता गया. उन्होंने साफ़ देखा कि इस आज़ादी के बाद भी एकता का सवाल हल नहीं हो सका बल्कि वह और भी गम्भीर बन गया. भाई का दिल भाई से दूर होता गया और विरोध की आग तेज़ होती गई.

قومی ایکتا کا سوال

"آج دیش میں سب سے بڑا اور سب سے پہلا رچناتمک کام ہے' دونوں جاتیوں کی ایکتا"—اِن لفظوں کے ساتھ راشٹر پتا مہاتما گاندھی نے 'قومی ایکتا' کے مہان و شاندار رچناتمک کام کو پورا کرنے کے لئے قدم بڑھایا اور اِس ایکتا کی پاک پوتر ویدی پر اپنی قربانی دے کر اُنہوں نے ہمارے لئے ہمیشہ کو راستہ کھول دیا .

باپو کے دل کی آگ

قومی ایکتا کا سوال نیا نہیں ہے . اِس پر برسوں سوچ وچار ہوا ہے اور اِسے حل کرنے کے لئے کوشش کی گئی ہے . انگریزی زمانے میں کہا جاتا تھا کہ انگریزی شاسن کے ہٹنے پر اِسکا حل آپ سے آپ ہو جائیگا . انگریزی شاسن ختم ہوگیا . ساتھ ہی ساتھ دنیا میں جو نہ دیکھا تھا نہ سنا وہ ہوا اور سامپردایک یا فرقہ وارانہ بہومت کے آدھار پر دیش کا بٹوارا ہوا . اُسکے بعد جو ملک بھر میں دل کو دہلانے والی گھٹنائیں ہوئیں اُنہیں یہاں یاد دلانے کی ضرورت نہیں ہے .

راشٹر کی آزادی کی خوشی میں 15 اگست کو بڑے بڑے جلسے کئے گئے لیکن راشٹر پتا کی فکر اور اُنکے دل کا درد بڑھتا گیا . اُنہوں نے صاف دیکھا کہ اِس آزادی کے بعد بھی ایکتا کا سوال حل نہیں ہوسکا بلکہ وہ اور بھی گمبھیر بن گیا . بھائی کا دل بھائی سے دور ہوتا گیا اور ورودھ کی آگ تیز ہوتی گئی .

पाकिस्तान पर चढ़ाई कर उसे मुंह की खिलाने में विश्वास करे वग़ैरा वग़ैरा—यह साम्प्रदायिक या फ़िरक़ेवाराना दोस्ती के अलमबरदार समझे जायेंगे या दुश्मनी के. ज़ाहिर ऐसा होता है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस और उसी का "भारत सेवक समाज".

(8) "सियासी या निजी मुनाफ़ा" "उठाने के भी तरीक़े होते हैं. कौन कह सकता है कि हिन्दुस्तान को आर्थिक मदद करने के बहाने अमरीका "सियासी या निजी मुनाफ़ा" नहीं उठा रहा है ? सवाल मुनाफ़े का नहीं है, वह तो हर कोई उठा ही लेगा. सवाल इस बात का है कि "समाज" जनता को कहां तक आज़ाद और ख़ुद मुख़्तार बनाती है. पर यह "समाज" तो सरकार की जड़ें मज़बूत करती है—यानी इससे सरकार को, और ज़ाहिर है कांगरेस सरकार को "सियासी या निजी मुनाफ़ा" होगा. इस शर्त के लिहाज़ से "समाज" कहां तक सच्ची साबित होगी उसके कर्ता धर्ता ही जानें.

(9) ज़ाहिर है कि जिस "समाज" की सरपरस्त प्लानिंग कमीशन हो उसमें सरकारी अफ़सर मदद देंगे ही. और ग़ैर सरकारी लोगों में भी वही मदद देंगे जो नन्दा जी की भाषा में न तो आलसी काहिली हैं और न बरबाद कुन कस सरकार की तरफ़ रहते हैं. यानी 'जी हुज़ूर' लोग हुज़ूर लोगों का साथ देंगे. सो क़ुदरती बात है. पर ज़रूरत तो उनका साथ लेने की है जो साथ इस वक़्त नहीं दे रहे हैं, इसकी कोई परवाह "भारत सेवक समाज" को नहीं मालूम पड़ती.

(10) हमने ऊपर बताया है कि "समाज" कम्यूनिटी सेन्टर खुलवाने में ज़रूर काम आ सकती है. इन कम्यूनिटी सेन्टर का सूरज—इटावा सेन्टर—हम देख चुके हैं, उसके ऊपर पूरी रोशनी इन सफ़ों में डाल चुके हैं. थोड़े में कहें तो यह कम्यूनिटी सेन्टर वह अड्डे हैं जिनके ज़रिये अमरीकी या अंगरेज़ी लोग अपना पैसा, अपना असर और अपनी जगह हिन्दुस्तान में बना कर हिन्दुस्तान को अपने मतलब के लिये इस्तेमाल करना चाहते हैं. इन घर फूंक तमाशों से देश का कुछ भला होगा सो छदाम का भी नहीं. कम्यूनिटी सेन्टरों को "भारत शोषक समाज" सेन्टर कहना सोलह आने सही है. फिर इस चीज़ में "भारत सेवक समाज" से मदद न मिलना ही ताज्जुब होगा. रही सहयोग के उसूल को अमल में लाने की बात करना सो जले पर नमक छिड़कने का काम करना है, क्योंकि हुकूमत में जब आज अपन-योग का बोल बाला हो और लाखों करोड़ों रुपये पानी की तरह बहा दिये जाते हों, तो उस हुकूमत के नौकर सहयोग का पाठ किस तरह पढ़ा सकते हैं. भला बबूल के पेड़ से नन्दा जी को आम का फल मिल सकता है ?

پاکستان پر چڑھائی کر اُسے منھ کی کھلانے میں وشواس کرے وغیرہ وغیرہ—یہ سامپردائک یا فرقہ‌وارانہ دوستی کے علمبردار سمجھے جائیں گے یا دشمنی کے. ظاہر ایسا ہوتا ہے کہ جس کی لاٹھی اُس کی بھینس اور اُسی کا "بھارت سیوک سماج."

(8) "سیاسی یا نجی منافع" اُٹھانے کے بھی طریقے ہوتے ہیں. کون کہہ سکتا ہے کہ ہندوستان کو آرتھک مدد کرنے کے بہانے امریکہ "سیاسی یا نجی منافع" نہیں اُٹھا رہا ہے ؟ سوال منافعے کا نہیں ہے، وہ تو ہر کوئی اُٹھا ہی لے گا. سوال اِس بات کا ہے کہ "سماج" جنتا کو کہاں تک آزاد اور خود مختار بناتی ہے. پر یہ "سماج" تو سرکار کی جڑیں مضبوط کرتی ہے—یعنی اِس سے سرکار کو، اور ظاہر ہے کانگریس سرکار کو "سیاسی یا نجی منافع" ہوگا. اِس شرط کے لحاظ سے "سماج" کہاں تک سچی ثابت ہوگی اُسکے کرتا دھرتا ہی جانیں.

(9) ظاہر ہے کہ جس "سماج" کی سرپرست پلاننگ کمیشن ہو اُس میں سرکاری افسر مدد دیں گے ہی. اور غیر سرکاری لوگوں میں بھی وہی مدد دیں گے جو نندا جی کی بھاشا میں نہ تو آلسی کاہلی ہیں اور نہ بربادکن دم سرکار کی طرف رہتے ہیں، یعنی 'جی حضور' لوگ حضور لوگوں کا ساتھ دیں گے. سو قدرتی بات ہے. پر ضرورت تو اُن کا ساتھ لینے کی ہے جو ساتھ اِس وقت نہیں دے رہے ہیں، اِس کی کوئی پرواہ "بھارت سیوک سماج" کو نہیں معلوم پڑتی.

(10) ہم نے اوپر کہا ہے کہ "سماج" کمیونٹی سینٹر کھلوانے میں ضرور کام آسکتی ہے. اِن کمیونٹی سینٹر کا سورج—اٹاوہ سینٹر—ہم دیکھ چکے ہیں، اُس کے اوپر پوری روشنی اِن صفحوں میں ڈال چکے ہیں. تھوڑے میں کہیں تو یہ کمیونٹی سینٹر وہ اڈے ہیں جن کے ذریعے امریکی یا انگریزی لوگ اپنا پیسہ، اپنا اثر اور اپنی جگہ ہندوستان میں بناکر ہندوستان کو اپنے مطلب کے لئے اِستعمال کرنا چاہتے ہیں. اِن گھر پھونک تماشوں سے دیش کا کچھ بھلا ہوگا سو چھدام کا بھی نہیں. کمیونٹی سینٹروں کو "بھارت شوشک سماج" سینٹر کہنا سولہ آنا صحیح ہے. پھر اِس چیز میں "بھارت سیوک سماج" سے مدد نہ ملنا ہی تعجب ہوگا. رہی سہیوگ کے اُصول کو عمل میں لانے کی بات کرنا سو جلے پر نمک چھڑکنے کا کام کرنا ہے، کیونکہ حکومت میں جب آج اپن یوگ کا بول بالا ہو اور لاکھوں کروڑوں روپئے پانی کی طرح بہا دیئے جاتے ہیں، تو اُس حکومت کے نوکر سہیوگ کا پاٹھ کس طرح پڑھا سکتے ہیں. بھلا ببول کے پیڑ سے نندا جی کو آم کا پھل مل سکتا ہے ؟

हल नहीं कर सकते. हां, कम्यूनिटी सेन्टर बनवाने का काम यह "समाज" जरूर कर सकता है क्योंकि यह सेन्टर भी देश को चूसने के लिये ही बनाये जा रहे हैं. इस पर हम तफ़सील के साथ आगे चल कर चर्चा करेंगे.

(5) 'विकेन्द्री करन' लफ़्ज़ बड़ा सुन्दर है. लेकिन गांव में "भारत सेवक समाज" की शाखा खोल देने से विकेन्द्रीकरन नहीं हो जाता. वरना तो कांगरेस में भी विकेन्द्रीकरन है, सरकार में भी है, हर जगह है. हम विकेन्द्रीकरन का मतलब आर्थिक मानों में लेते हैं. जब तक देहात की जरूरत की सब चीजें देहात में ही, देहात के सामान से ही, देहात के लोग ही न बनायें तब तक विकेन्द्री करन का लफ़्ज़ कोई माने नहीं रखता.

(6) "समाज" मेम्बरों से सेवा मुफ़्त लेगी. उसे शायद कुछ हद तक मिल भी जाय. पर अगर न मिले तो हमें ताज्जुब न होगा क्योंकि सरकार की निगाह में वह आदमी बेवक़ूफ़ या निकम्मा है जो ठाठ-बाठ से रहना न जानता हो, या पार्टियों या जलसों में ढंग से धुंआ उड़ाना न जानता हो, विदेश में शराफ़त से नाचना न जानता हो, वग़ैरा वग़ैरा. हमारे हुक्काम और ऊंचे से ऊंचे अफ़सर जब यह आदर्श पेश करते हैं तो "भारत सेवक समाज" कहां तक मुफ़्त सेवा लेने की हिम्मत करेगा या इसमें आबरू समझेगा हम नहीं कह सकते. फिर, जब तनख़्वा देने का सिलसिला चला—तो पैसा पूंजीपति देगा तो उसे किसी न किसी तरह वसूल कर लेगा, सरकार देगी तो अपना मतलब हल करा लेगी—उसका बोझ देहात के करोड़ों नंगों भूकों पर ही पड़ने वाला है, और फ़ायदा किसका होगा—सरकार का, क्योंकि यह "समाज" उसकी जड़ें मज़बूत करने के लिये है.

(7) "भारत सेवक समाज" की मेम्बरी हर किसी के लिये खुली है, पर हमें नहीं मालूम कि जो डिफ़ेन्स मिनिस्टर देश की आमदनी का आधे से ज़ियादा हिस्सा फ़ौज काम में खर्च कर दे वह हिंसा का पैरोकार समझा जायेगा या अहिंसा का, जो फ़ाइनैन्स मिनिस्टर देश में विदेशी पूंजी आने दे कर देश में बे रोज़गारी बढ़वाये वह समाजी इन्साफ़ का पैरोकार समझा जायेगा या नहीं, जो क़ानून मिनिस्टर क़ानून बना बना कर वकीलों को मौक़ा दे कि झूट को सच और सच को झूट साबित कर दें वह समाजी वेलफ़ेयर का पैरोकार समझा जायेगा या नहीं, वग़ैरा वग़ैरा. और यह सब "भारत सेवक समाज" में आ सकते हैं या नहीं. न हमें यही मालूम कि जो तौर फ़िरक़ेवाराना-पन या असाम्प्रदायिकता परखने की इनकी कसौटी क्या है, पार्लियामेन्ट का मेम्बर जो जबड़ा तोड़ फ़ारसी या संस्कृत मय उरदू या हिन्दी बोलने की ज़िद करे, वह नेता जो

حل نہیں کر سکتے۔ ہاں، کمیونٹی سینٹر بنوانے کا کام یہ "سماج" ضرور کر سکتا ہے کیونکہ یہ سینٹر بھی دیش کو چوسنے کے لئے ہی بنائے جا رہے ہیں۔ اس پر ہم تفصیل کے ساتھ آگے چل کر چرچا کریں گے۔

(5) 'وکیندری کرن' لفظ بڑا سندر ہے۔ لیکن گاؤں میں "بھارت سیوک سماج" کی شاخا کھول دینے سے وکیندری کرن نہیں ہو جاتا۔ ورنہ تو کانگریس میں بھی وکیندری کرن ہے، سرکار میں بھی ہے، ہر جگہ ہے۔ ہم وکیندری کرن کا مطلب آرتھک معنوں میں لیتے ہیں۔ جب تک دیہات کی ضرورت کی سب چیزیں دیہات میں ہی، دیہات کے سامان سے ہی، دیہات کے لوگ ہی نہ بنائیں تب تک وکیندری کرن کا لفظ کوئی معنی نہیں رکھتا۔

(6) "سماج" ممبروں سے سیوا مفت لیگی۔ اسے شاید کچھ حد تک مل بھی جائے۔ پر اگر نہ ملے تو ہمیں تعجب نہ ہوگا کیونکہ سرکار کی نگاہ میں وہ آدمی بیوقوف یا نکما ہے جو ٹھاٹھ باٹھ سے رہنا نہ جانتا ہو، یا چائے پارٹیوں یا جلسوں میں ڈھنگ سے دھواں اڑانا نہ جانتا ہو، ودیش میں شرافت سے ناچنا نہ جانتا ہو، وغیرہ وغیرہ۔ ہمارے حکام اور اونچے سے اونچے افسر جب یہ آدرش پیش کرتے ہیں تو "بھارت سیوک سماج" کہاں تک مفت سیوا لینے کی ہمت کرے گا یا اس میں آبرو سمجھے گا ہم نہیں کہہ سکتے۔ پھر، جب تنخواہ دینے کا سلسلہ چلا—تو پیسہ پونجی پتی دے گا تو اسے کسی نہ کسی طرح وصول کرلے گا، سرکار دے گی تو اپنا مطلب حل کرا لے گی—اس کا بوجھ دیہات کے کروڑوں ننگوں بھوکوں پر ہی پڑنے والا ہے، اور فائدہ کس کا ہوگا—سرکار کا، کیونکہ یہ "سماج" اس کی جڑیں مضبوط کرنے کے لئے ہے۔

(7) "بھارت سیوک سماج" کی ممبری ہر کسی کے لئے کھلی ہے، پر ہمیں نہیں معلوم کہ جو ڈفنس منسٹر دیش کی آمدنی کا آدھے سے زیادہ حصہ فوج کام میں خرچ کر دے وہ ہنسا کا پیروکار سمجھا جائے گا یا اہنسا کا، جو فائننس منسٹر دیش میں ودیشی پونجی آنے دے کر دیش میں بیروزگاری بڑھوائے وہ سماجی انصاف کا پیروکار سمجھا جائے گا یا نہیں، قانون منسٹر قانون بنا بنا کر وکیلوں کو موقع دے کہ جھوٹ کو سچ اور سچ کو جھوٹ ثابت کردیں وہ سماجی ویلفیر کا پیروکار سمجھا جائے گا یا نہیں، وغیرہ وغیرہ۔ اور یہ سب "بھارت سیوک سماج" میں آسکتے ہیں یا نہیں۔ نہ ہمیں یہی معلوم کہ جو غیر فرقہ وارانہ پن یا اسامپردائیکتا پرکھنے کی انکی کسوٹی کیا ہے، پارلیامنٹ کا ممبر جو جبڑا توڑ فارسی یا سنسکرت مے اردو یا ہندی بولنے کی ضد کرے، وہ نیتا جو

के आज आज़ाद हिन्दुस्तान में जितनी विदेशी पूंजी और माल है उतनी पहले कभी नहीं थी ? तो क्या इस सरमायेदारी, कारखानेदारी और फ़ौजियाना को बढ़ाने के लिये सरकार जनता का सहयोग चाहती है ? आज केरल में चटाई काम, बिहार व तामिल नाद में बुनकर काम, राजस्थान में पत्थर काम, बनारस में रेशमी काम, वग़ैरा वग़ैरा देश के देहाती धन्दे मिटते जा रहे हैं और सरकार मिटवा रही है. आज असली घी, दूध और तेल ना पैद होते जा रहे हैं और सरकार ना पैद करा रही है. क्या हम इसमें मदद कर अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने की अक़्लमन्दी करें ? क्या वह चाहती है कि बेरोज़गारी बढ़ाने और देहात तबाही के ़ारोबार में जनता उसकी मदद करे ?

जनता को आलसी कहने का हक़ वही सरकार रखती है जो जनता को कोई काम दे और फिर भी जनता उसे न करे. वह सरकार जो जनता के धन्दे उल्टे छीन कर उनको रोटी दाने के लिये तरसाती है वह अगर यह दोश लगाये तो उल्टा चोर कोतवाल को डांटने जैसी बात हुई. प्लानिंग कमीशन अगर ईमान का सचा है तो जनता को—हर मर्द औरत को ़ाम दे करने के वास्ते. जब तक काम नहीं देता तब तक लानिंग मिनिस्टर सेक्रेट्रियेट में बैठ कर उसे आलसी कह रपनी बुलन्दी का रोब भले जमाते रहें पर दिलों में ़ड़वाहट पैदा करने के अलावा और कुछ न कर सकेंगे.

(3) "भारत सेवक समाज" सरकार की जड़ें मज़बूत करने के लिये है यानी सरकार को हमेशा क़ायम रखने के लेये है. पर जैसा विनोबा जी ने सेवापुरी में कहा था सर्वोदय समाज का मक़सद है कि धीरे धीरे सरकार की जड़ें कमज़ोर कर के और जनता की जड़ें मज़बूत कर के ़सन हीन समाज बनाना. इसलिये "भारत सेवक समाज" रकार के आढ़ती का ही काम कर सकती है जिसकी ़ुतरी सेठ-सरकार के बने रहने में है. ऐसी हालत में वह ़रकार और जनता के बीच पुल का काम किस तरह दे ़केगी हम नहीं समझ पाते हैं. जिस तरह यूनो धीरे धीरे ़म्राजशाहों का अड्डा बन गई है उसी तरह "भारत सेवक ़माज" भी सरकारी अफ़सरों और पैसे वालों का अड्डा ़न कर "भारत शोशक समाज" बन जायेगी.

(4) 'नया हिन्द' के पाठक जानते हैं कि आज जो ़श में अनाज की कमी है उसकी ज़िम्मेवार सरकारी ़शीनरी है, उसके अफ़सर, उसका निज़ाम और हमारे ़जीपति व व्योपारी. हम यहां तक कहने को तैयार हैं कि ़नकी दिलचस्पी ही यह है कि अनाज के भूत से डरा डरा ़र जनता के साथ मनमाना व्योहार करते रहें या क़ानून ़नाते जायें. जब तक यह निज़ाम बदस्तूर है और व्योपारियों ़ रंग बना रहता है एक भारत सेवक समाज नहीं एक ़ज़ार मिल कर भी देश के अनाज के सवाल को रत्ती भर

کہ آج آزاد ہندستان میں جتنی ودیشی پونجی اور مال ہے اُتنی پہلے کبھی نہیں تھی؟ تو کیا اِس سرمائےداری، کارخانےداری اور فوجیانہ کو بڑھانے کے لئے سرکار جنتا کا سہیوگ چاہتی ہے؟ آج کیرل میں چٹائی کام، بہار و تامل ناد میں بنکر کام، راجستھان میں پتھر کام، بنارس میں ریشمی کام، وغیرہ وغیرہ دیش کے دیہاتی دھندے مٹتے جا رہے ہیں اور سرکار مٹوا رہی ہے. آج اصلی گھی، دودھ اور تیل ناپید ہوتے جا رہے ہیں اور سرکار ناپید کرا رہی ہے. کیا ہم اِس میں مدد کر اپنے پیروں میں کلہاڑی مارنے کی عقلمندی کریں؟ کیا وہ چاہتی ہے کہ بے روزگاری بڑھانے اور دیہات تباہی کے کاروبار میں جنتا اُسکی مدد کرے؟

جنتا کو آلسی کہنے کا حق وہی سرکار رکھتی ہے جو جنتا کو کوئی کام دے اور پھر بھی جنتا اُسے نہ کرے. وہ سرکار جو جنتا کے دھندے اُلٹے چھین کر اُن کو روٹی دانے کے لئے ترساتی ہے وہ اگر یہ دوش لگائے تو اُلٹا چور کوتوال کو ڈانٹنے جیسی بات ہوئی. پلاننگ کمیشن اگر ایمان کا سچا ہے تو جنتا کو—ہر مرد عورت کو کام دے کرنے کے واسطے. جب تک کام نہیں دیتا تب تک پلاننگ منسٹر سکریٹریٹ میں بیٹھکر اُسے آلسی کہکر اپنی بلندی کا رعب بھلے جماتے رہیں پر دلوں میں کڑوہٹ پیدا کرنے کے علاوہ اور کچھ نہ کرسکینگے.

(3) "بھارت سیوک سماج" سرکار کی جڑیں مضبوط کرنے کے لئے ہے. پر جیسا ونوبا جی نے سیواپوری میں کہا تھا—سروودے سماج کا مقصد ہے کہ دھیرے دھیرے سرکار کی جڑیں کمزور کر کے اور جنتا کی جڑیں مضبوط کر کے شاسن ہین سماج بنانا. اِس لئے "بھارت سیوک سماج" سرکار کے آڑھتی کا ہی کام کر سکتی ہے جس کی بہتری سیٹھ سرکار کے بنے رہنے میں ہے. ایسی حالت میں وہ سرکار اور جنتا کے بیچ پل کا کام کسطرح دے سکیگی ہم نہیں سمجھ پاتے ہیں. جسطرح یونو دھیرے دھیرے سامراج شاہوں کا اڈا بن گئی ہے اُسی طرح "بھارت سیوک سماج" بھی سرکاری افسروں اور پیسے والوں کا اڈا بنکر "بھارت شوشک سماج" بن جائیگی.

(4) 'نیا ہند' کے پاٹھک جانتے ہیں کہ آج جو دیش میں اناج کی کمی ہے اُسکی ذمے دار سرکاری مشینری ہے، اُس کے افسر، اُس کا نظام اور ہمارے پونجی پتی و بیوپاری. ہم یہاں تک کہنے کو تیار ہیں کہ ان کی دلچسپی ہی یہ ہے کہ اناج کے بھوت سے ڈرا ڈرا کر جنتا کے ساتھ من مانا ویوہار کرتے رہیں یا قانون بناتے جائیں. جب تک بدستور ہے اور بیوپاریوں کا رنگ بنا رہتا ہے ایک سیوک سماج یہ نظام نہیں ایک ہزار ملکر بھی دیش کے اناج کے سوال کو رتی بھر

करने वाले संगठनों से उसका कोई ताल्लुक़ हो. वह संस्थायें भी जो समाज सेवा का रचनात्मक काम कर रही हैं इसमें शामिल हो सकती हैं.

(viii) अगर कोई भी "समाज" से सियासी या निजी मुनाफ़ा उठाना चाहेगा उसे निकाल बाहर कर दिया जायेगा.

(ix) जिस इलाक़े में "समाज" काम करती होगी वहां की सभी सरकारी और ग़ैर सरकारी एजन्सियों से वह पूरी मदद लेने की कोशिश करेगी.

(x) "समाज" अपने काम में सहयोग के उसूल पर जहां तक होगा अमल करेगी इसलिये जहां जहां मुमकिन होगा कम्यूनिटी सेन्टर खुलवायेगी और पैदाकारों व ख़र्च-कारों की जमायतें भी इस उसूल के प्रचार के लिये बनवायेगी.

इन दसों बातों से हम जिन नतीजों पर पहुंचते हैं वह हम सिलसिलेवार नीचे देते हैं :—

(1) रहन सहन का दर्जा अंगरेज़ी चाल का लफ़्ज़ है. इसको ऊंचा उठाने के माने हैं कि हमारे देश में फ़ी कस साबुन का, बिजली का, मिट्टी के तेल का, चिकने कपड़े का, मोटर जहाज़ का, सिनेमा का, वग़ैरा वग़ैरा ख़र्च बढ़े और इनमें से ज़ियादातर चीज़ों को या तो विदेश से मंगाइये या अपने यहां बड़े बड़े कारख़ाने खोलकर बनाइये. इसलिये रहन सहन का दर्जा जितना ऊंचा उठेगा उतना ही विदेशी माल की खपत बढ़ेगी या देश के चन्द पूंजीपतियों की आमदनी में इज़ाफ़ा होगा. पर रहन सहन ऊंचा उठाने का यह मतलब कि आदमी अपनी ज़रूरतें अपने हाथ पैर की मेहनत से, अपने आस पड़ोस के कच्चे माल की मदद से, ख़ुद पूरी कर ले और स्वावलम्बी हो जाय, इसका इशारा हमें नहीं नहीं मिलता. लिहाज़ा "भारत सेवक समाज" की कोशिश यह मालूम होती है कि देश की जनता जो अब तक पूरे मानों में परावलम्बी या मिल अवलम्बी नहीं है उसे रहन सहन या तहज़ीब के नाम पर सोलह आने दूसरों का मोहताज बनाया जाय.

(2) नन्दा जी ने जनता के जो दो हिस्से बता कर उसको नीचा दिखाने की कोशिश की है, वह कोई शोभा का काम नहीं मालूम पड़ता है. क्या उन्होंने कभी यह जानने की कोशिश की कि जनता सरकार को सहयोग क्यों नहीं देती और क्यों इनकार किया करती है और क्यों बरबादी का रुख़ रखती है ? क्या नन्दा जी को यह नहीं मालूम कि आज आज़ाद हिन्दुस्तान में जितने अंगरेज़ हैं उतने पहले कभी नहीं थे, जितने अमरीकन हैं उसके दसवां हिस्सा भी ग़ुलाम हिन्दुस्तान में नहीं थे ? क्या नन्दा जी को यह नहीं मालूम

والے سنگٹھنوں سے اُسکا کوئی تعلق ہو۔ وہ
سنستھائیں بھی جو سماج سیوا کا یا رچناتمک کام کر رہی
ں اسمیں شامل ہو سکتی ہیں۔

(viii) اگر کوئی بھی "سماج" سے سیاسی یا نجی منافع
نا چاہیگا اُسے نکال باہر کر دیا جائیگا۔

(ix) جس علاقے میں " سماج " کام کرتی ہوگی
ں کی سبھی سرکاری اور غیر سرکاری ایجنسیوں سے وہ
ی مدد لینے کی کوشش کریگی۔

(x) " سماج " اپنے کام میں سہیوگ کے اُصول پر
اں تک ہوگا عمل کریگی اس لئے جہاں جہاں ممکن
؛ کمیونٹی سینٹر کھلوائیگی اور پیدا کاروں و خرچ کاروں
جماعتیں بھی اِس اُصول کے پرچار کے لئے بنوائیگی۔

اِن دسوں باتوں سے ہم جن نتیجوں پر پہونچتے ہیں
ہم سلسلے وار نیچے دیتے ہیں:—

(1) رہن سہن کا درجہ انگریزی چال کا لفظ ہے۔
سو اُونچا اُٹھانے کے معنے ہیں کہ ہمارے دیش میں
کس صابن کا' بجلی کا' مٹی کے تیل کا' چکنے کپڑے
موٹر جہاز کا' سنیما کا' وغیرہ وغیرہ خرچ بڑھے اور اِن
ں سے زیادہ تر چیزوں کو یا تو بدیش سے منگایئے یا اپنے
ں بڑے بڑے کارخانے کھول کر بنایئے۔ اِس لئے رہن
ن کا درجہ جتنا اُونچا اُٹھیگا اتنا ہی ودیشی مال کی
پت بڑھے گی یا دیش کے چند پونجی پتیوں کی آمدنی
ں اضافہ ہوگا۔ پر رہن سہن اونچا اُٹھانے کا یہ مطلب
آدمی اپنی ضرورتیں اپنے ہاتھ پیر کی محنت سے اپنے
ں پڑوس کے کچے مال کی مدد سے' خود پوری کر لے اور
ولمبی ہوجائے' اِسکا اشارا ہمیں کہیں نہیں ملتا۔
ا " بھارت سیوک سماج " کی کوشش یہ معلوم ہوتی ہے
دیش کی جنتا جو اب تک پورے معنوں میں پراولمبی
مل اولمبی نہیں ہے اُسے رہن سہن یا تہذیب کے نام
ہ آنے دوسروں کا محتاج بنایا جائے۔

(2) نندا جی نے جنتا کے جو دو حصے بتا کر اُسکو نیچا
ھانے کی کوشش کی ہے' وہ کوئی شوبھا کا کام نہیں
لوم پڑتا ہے۔ کیا اُنھوں نے کبھی یہ جاننے کی کوشش
کہ جنتا سرکار کو سہیوگ کیوں نہیں دیتی اور کیوں
ر کیا کرتی ہے اور کیوں بربادی کا رخ رکھتی ہے ؟ کیا
ا جی کو یہ نہیں معلوم کہ آج آزاد ہندستان میں
لے انگریز ہیں اُتنے پہلے کبھی نہیں تھے' جتنے
یکن ہیں اُس کے دسواں حصہ بھی غلام ہندستان
ں نہیں تھے؟ کیا نندا جی کو یہ نہیں معلوم

नी होनी चाहिये पर सरकार के पास साधन इतने कम हैं कि बरसों तक यह मुमकिन नहीं है. इसलिये जनता का दरवाज़ा खट खटा कर उसकी ही मुश्तरका कोशिश से कुछ करने की ज़रूरत है.

(ii) जनता के अन्दर दो हिस्से हैं—फुर्तीला हिस्सा जो ज़ियादातर इनकार में बात करता है, सरकार के साथ सहयोग नहीं देता और हमेशा बरबादी का रुख़ बनाये रखता है. दूसरा हिस्सा है जिस पर ग़ैर जानकारी या जेहालत और काहिली छाये हुए हैं. इस वजह से बधिया बैठ गई है. पर अगर जनता के छोटे बड़े काम और उसकी मेहनत को और देश में जो संस्थायें मौजूद हैं उनके काम और मेहनत को एक क़ौमी रुझान देकर क़ौमी फिर-बनाव की सुन्दर तस्वीर का हिस्सा बना दिया जाय तो इन छोटे बड़े कामों और मेहनत का नतीजा कुछ से कुछ दिखाई देगा.

(iii) "भारत सेवक समाज" ग़ैर सियासी जमायत होगी, पर क्योंकि यह जो कुछ करेगी उससे सरकार की जड़ें ही मज़बूत पड़ेंगी इसलिये देश की सरकारें इसको पूरी अहमियत और सहारा देंगी. हो सकता है कि आगे चल कर यह जनता और सरकार के बीच एक पुल बांधने का काम करे, पर इस संस्था को सरकार के आसरे नहीं रहना चाहिये और जनता के ही बूते पर खड़े रहने को तैयार रहना चाहिये.

(iv) "समाज" का काम होगा जीवन की बेहतरी के सभी पहलुओं पर ध्यान देना पर सब तरफ़ अपनी ताक़त खो कर यह ज़ियादा ज़ोर देगी अनाज उपजाने पर. इसके अलावा इसका काम होगा देहातों में विकास के केन्द्र या कम्युनिटी सेन्टर बनवाना, जनता और सरकार का सम्बन्ध अच्छा बनाना, बीमारियां रोकना वग़ैरा वग़ैरा.

(v) "समाज" के काम का ख़ास पहलू होगा ज़ियादा से ज़ियादा विकेन्द्रीकरण. बुनियादी इकाई गांव होगा और ऊपर की कड़ियां हकूमत की जो कड़ियां हैं उनकी तरह की होंगी.

(vi) "समाज" अपना काम मेम्बरों की मुफ़्त सेवाओं के ज़रिये करेगी. पर क़ायम इन्तज़ाम के लिहाज़ से कुछ कार्यकर्ताओं को तनख़ा पर भी रखा जायेगा जिसके लिये—पैसा निजी या पबलिक साधनों से—जमा करना होगा.

(vii) अठारह साल से ऊपर उमर का हर मर्द-औरत "समाज" में आ सकता है बशर्ते कि वह हिंसात्मक तोड़ फोड़, फ़िरक़ेवाराना या साम्प्रदायिक नफ़रत के कामों में शिरकत या विश्वास न करता हो और न इस तरह के काम

گئی ہونی چاہئے پر سرکار کے پاس سادھن اِتنے کم ہیں کہ برسوں تک یہ ممکن نہیں ہے. اس لئے جنتا کا دروازہ کھٹکھٹا کر اُسکی ہی مشترکہ کوشش سے کچھ کرنے کی ضرورت ہے.

(ii) جنتا کے اندر دو حصے ہیں—پھرتیلا حصہ جو زیادہ تر انکار میں بات کرتا ہے' سرکار کے ساتھ سہیوگ نہیں دیتا اور ہمیشہ بربادی کا رخ بنائے رکھتا ہے . دوسرا حصہ ہے جس پر غیر جانکاری یا جہالت اور کاہلی چھائے ہوئے ہیں . اس وجہ سے بدھیا بیٹھ گئی ہے . پر اگر جنتا کے چھوٹے بڑے کام اور اُسکی محنت کو اور دیش میں جو سنستھائیں موجود ہیں اُن کے کام اور محنت کو ایک قومی رجحان دے کر قومی پھر بناؤ کی سندر تصویر کا حصہ بنا دیا جائے تو ان چھوٹے بڑے کاموں اور محنت کا نتیجہ کچھ سے کچھ دکھائی پڑیگا .

(iii) "بھارت سیوک سماج" غیر سیاسی جماعت ہوگی' کیونکہ یہ جو کچھ کریگی اُس سے سرکار کی جڑیں ہی مضبوط پڑینگی اس لئے دیش کی سرکاریں اس کو پوری اہمیت اور سہارا دینگی . ہوسکتا ہے کہ آگے چلکر یہ جنتا اور سرکار کے بیچ ایک پل باندھنے کا کام کرے ' پر اس سنستھا کو سرکار کے آسرے نہیں رہنا چاہئے اور جنتا کے ہی بوتے پر کھڑے رہنے کو تیار رہنا چاہئے .

(iv) "سماج" کا کام ہوگا جیون کی بہتری کے سبھی پہلوؤں پر دھیان دینا پر سب طرف اپنی طاقت نہ کھو کر یہ زیادہ زور دیگی اناج اُپجانے پر . اس کے علاوہ اسکا کام ہوگا دیہاتوں میں وکاس کے کیندر یا کمیونٹی سینٹر بنوانا' جنتا اور سرکار کا سمبندھ اچھا بنانا' بیماریاں روکنا وغیرہ وغیرہ .

(v) "سماج" کے کام کا خاص پہلو ہوگا زیادہ سے زیادہ وکیندریکرن. بنیادی اکائی گاؤں ہوگا اور اوپر کی کڑیاں حکومت کی جو کڑیاں ہیں اُن کی طرح ہی ہونگی .

(vi) "سماج" اپنا کام ممبروں کی مفت سیواؤں کے ذریعے کریگی . پر قائم انتظام کے لحاظ سے کچھ کاریہ کرتاؤں کو تنخواہ پر بھی رکھا جائیگا جس کے لئے پیسہ —نجی یا پبلک سادھنوں سے—جمع کرنا ہوگا .

(vii) اٹھارہ سال سے اوپر عمر کا ہر مرد عورت "سماج" میں آ سکتا ہے بشرطیکہ وہ ہنساتمک توڑ پھوڑ' فرقے وارانہ یا سامپردائک نفرت کے کاموں میں شرکت یا وشواس نہ کرتا ہو اور نہ اسطرح کے کام

ख्वाहिश है—इसमें ऊंचे अरमान वाले भाई बहन शरीक हों, अरमान निजी और छोटी छोटी बातों के लिए नहीं बल्कि खुद को भूल कर बड़े बड़े कामों को अन्जाम देने के लिये और ऊंची ऊंची मंज़िलों पर पहुंचने के लिये.

पंडित जवाहरलाल की इस दिल भरी अपील पर किसे शिकायत हो सकती है. पर हिन्दुस्तान की कल कुछ इस तरह बिगड़ी है जो यह अपील अखबारों में छप कर कह जाती है और दिल पर कोई असर नहीं कर पाती. क्यों—इस पर हम अभी आयेंगे. पर इसके पहले "भारत सेवक समाज" की असलियत समझ लेना ज़ियादा ज़रूरी है.

प्लानिंग कमीशन का कहना है कि कोई भोजना तभी सफल हो सकती है जब उसके पीछे 'मिला जुला समाजी नज़रिया' हो जो देश की तरक़्क़ी को समाजी इन्साफ़ और जनता की आर्थिक और समाजी बेहतरी के रूप में पेश कर सके. ज़रूरत इस बात की है कि इस 'मिले जुले समाजी नज़रिये' को एक 'जानदार बल' की शकल दी जाय ताकि इसे रचनात्मक कामों में इस्तेमाल किया जा सके. प्लानिंग कमीशन का ख़्याल है कि यह 'जानदार बल' तभी कारगर होगा जब इसको छितरने न देकर बांध दिया जाय और इस मक़सद के लिये एक संगठन की ज़रूरत है जो स्वयं सेवक ढंग का संगठन हो. इसी ख़्याल को अमली जामा पहनाने के लिये यह "भारत सेवक समाज" बनाया गया है.

प्लानिंग कमीशन की इस ख़ूबसूरत दलील को हम लचर और वकीली मानते हैं. 'मिला जुला नज़रिया', 'जानदार बल', 'स्वयं सेवक संगठन' वगैरा ऐसे लफ़्ज़ हैं जिन को गढ़ने की कला हमारे हुक्कामों ने अंगरेज़ी सरकार से सीखी है. ऐसे लफ़्ज़ों की ख़सूसियत यह होती है कि सब कुछ कह कर भी कुछ नहीं कहते, और जो जैसा चाहे उससे मतलब निकाल ले. अगर सरकार को सचमुच जनता का सहयोग चाहिये तो सीधा-सा रास्ता वह अपना सकती है—जनता की सेवक या सरपरस्त बन जाय, जो उससे कराना चाहे वह ख़ुद करे और देश को अपना घर समझ कर उसके दुख दर्द में शिरकत करे. पर अगर यह न करके वह 'संगठन' बनाने लग जायेगी तो केवल काग़ज़ वालों, छापे घरों, डाकख़ाने की आमदनी बढ़ाने और कुछ क्लर्कों व चपरासियों को हैरान करने के अलावा कुछ नहीं कर सकती. "भारत सेवक समाज" की जो तफ़सील प्लानिंग मिनिस्टर ने दी है उससे हमारा यह ख़्याल और भी पक्का हो जाता है.

"भारत सेवक समाज" की ख़ास बातें हमें यह बताई गई हैं :

(i) अगर देश के रहन सहन का दर्जा मामूली तह तक उठना है तो हमारी क़ौमी आमदनी आज से तीन

ہش ھے—اِس میں اُونچے ارمان والے بھائی ن شریک ھوں' ارمان نجی اور چھوٹی چھوٹی باتوں لئے نہیں بلکہ خود کو بھول کر بڑے بڑے کاموں کو جام دینے کے لئے اور اُونچی اونچی منزلوں پر پہونچنے لئے .

پنڈت جواہر لال کی اِس دل بھری اپیل پر کسے کایت ہو سکتی ھے . پر ھندستان کی کل کچھ اِسطرح ی ھے جو یہ اپیل اخباروں میں چھپ کر رہ جاتی ھے دل پر کوئی اثر نہیں کر پاتی . کیوں—اس پر ھم ۔ آئیں گے . پر اس کے پہلے " بھارت سیوک سماج " ، اصلیت سمجھ لینا زیادہ ضروری ھے .

پلاننگ کمیشن کا کہنا ھے کہ کوئی یوجنا تبھی سپھل سکتی ھے جب اُس کے پیچھے ' ملا جلا سماجی ظریہ ' ھو جو دیش کی ترقی کو سماجی اِنصاف اور نتا کی آرتھک اور سماجی بہتری کے روپ میں پیش سکے . ضرورت اس بات کی ھے کہ اس ' ملے جلے سماجی ظریئے' کو ایک ' جاندار بل ' کی شکل دی جائے تاکہ ، رچناتمک کاموں میں اِستعمال کیا جا سکے . پلاننگ یشن کا خیال ھے کہ یہ 'جان دار بل' تبھی کارگر ہوگا ب اس کو چھترنے نہ دے کر باندھ دیا جائے اور اِس قصد کے لئے ایک سنگٹھن کی ضرورت ھے جو سوئم سیوک ھنگ کا سنگٹھن ھو . اسی خیال کو عملی جامہ پہنانے لئے یہ " بھارت سیوک سماج " بنایا گیا ھے .

پلاننگ کمیشن کی اِس خوبصورت دلیل کو ھم لچر اور کیلی مانتے ھیں . ' ملا جلا نظریہ ' ' جاندار بل ' ' سوئم یوک سنگٹھن ' وغیرہ ایسے لفظ ھیں جنکو گڑھنے کی ھمارے حکاموں نے انگریزی سرکار سے سیکھی ھے . یسے لفظوں کی خصوصیت یہ ھوتی ھے کہ سب کچھ کہ بھی کچھ نہیں کہتے' اور جو جیسا چاہے اُس سے طلب نکال لے . اگر سرکار کو سچ مچ جنتا کا سہیوگ اھئے تو سیدھا سا راستہ وہ اپنا سکتی ھے—جنتا کی یوک یا سرپرست بن جائے' جو اس سے کرانا چاھے وہ ود کرے اور دیش کو اپنا گھر سمجھکر اُس کے دکھ درد میں رکت کرے . پر اگر یہ نہ کر کے وہ ' سنگٹھن ' بنانے لگ جائیگی تو کیول کاغذ والوں' چھاپے گھروں' ڈاک خانے ی آمدنی بڑھانے اور کچھ کلرکوں و چپراسیوں کو حیران نے کے علاوہ کچھ نہیں کر سکتی . " بھارت سیوک سماج " جو تفصیل پلاننگ منسٹر نے دی ھے اُس سے ھمارا خیال اور بھی پکا ھو جاتا ھے .

" بھارت سیوک سماج " کی خاص باتیں ھمیں یہ تائی گئی ھیں :

(i) اگر دیش کے رھن سہن کا درجہ معمولی تک اُٹھانا ھے تو ھماری قومی آمدنی آج سے تین

मैं बोला—ठीक. दूसरी शर्त यह कि अब तुम में से ोई कभी नीचे न आये.

सब बोल पड़े—हम में से कोई अब क्यों आयेगा ?

मैं बोला—तीसरी शर्त यह है कि पन्द्रह से तुम्हारी नती बढ़ने न पाये और नीचे से कोई चीज़ हमारी जाने पाये.

अब उनमें से एक बोला—बिल्कुल मंज़ूर. और हमारे ते चीज़ कोई कैसे जायगी ?

यह तय कर के मैं नीचे चला आया. और यह है उन द्रह भूतों के साथ हमारा सुलहनामा.

—भगवानदीन

میں بولا—ٹھیک. دوسری شرط یہ کہ اب تم میں سے کوئی کبھی نیچے نہ آئے .

سب بول پڑے—ہم میں سے کوئی اب کیوں آئیگا ؟

میں بولا—تیسری شرط یہ ہے کہ پندرہ سے تمہاری گنتی بڑھنے نہ پائے اور نیچے سے کوئی چیز ہماری جانے نہ پائے .

اب اُن میں سے ایک بولا—بالکل منظور . اور ہمارے رہتے چیز کوئی کیسے جائیگی ؟

یہ طے کرکے میں نیچے چلا آیا . اور یہ ہے اُن پندرہ بھوتوں کے ساتھ ہمارا صلحنامہ .

—بھگوان‌دین

ारत सेवक समाज—क्या और किधर ?

जून के चौथे हफ्ते में नई दिल्ली के प्लानिंग कमीशन ने क छोटी-सी किताब निकाली जिसका नाम है "भारत वक समाज". इस किताब में प्लानिंग कमीशन की पंच-ाला रिपोर्ट का कुछ हिस्सा उतार कर "भारत सेवक समाज" ी ज़रूरत समझाई गई है. साथ में प्लानिंग मिनिस्टर लज़ारीलाल नन्दा जी के कई नोट हैं जिनमें "भारत सेवक माज" की तफ़सील दी गई है और किताब का वज़न बढ़ाने लिये उसके शुरू में हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहर ल नेहरू का फ़ोरवर्ड या दो लफ़्ज़ हैं.

पंडित जवाहरलाल ने अपने फ़ोरवर्ड में कहा है कि ाज के ज़माने में प्लानिंग या योजना बन्दी की ज़रूरत कोई महसूस करता है ताकि अपने साधनों का हम पयोग कर सकें. लेकिन देश में आदमी नाम का साधन हमारे पास है उसकी ताक़त को आंकना आसान नहीं है. ब तक हम इसका ठीक ठीक इस्तेमाल न करें और लोगों अन्दर ऐसी तबियत न पैदा कर दें जो मुसीबतों को हंसते ए झेल कर, वाक़यात और घटनाओं के बावजूद, अपना म कर ले जायें, तब तक हम कोई बड़ी चीज़ नहीं हासिल र सकते. आगे चल कर पंडित जी ने कहा है कि लोगों पास हम जो जायें तो अक़ल के ग़रूर में चूर हो कर न यें बल्कि नम्रता के साथ जायें ताकि मिल कर काहिली पहाड़ को फोड़ सकें. "भारत सेवक समाज" नाम की संस्था चलाने का यही मक़सद है और प्रधान मंत्री की

بھارت سیوک سماج—کیا اور کدھر ؟

جون کے چوتھے ہفتے میں نئی دلی کے پلاننگ کمیشن نے ایک چھوٹی سی کتاب نکالی جس کا نام ہے " بھارت سیوک سماج ." اِس کتاب میں پلاننگ کمیشن کی پنچ سالا رپورٹ کا کچھ حصہ اُتار کر "بھارت سیوک سماج" کی ضرورت سمجھائی گئی ہے . ساتھ میں پلاننگ منسٹر گلزاری لال نندا جی کے کئی نوٹ ہیں جن میں "بھارت سیوک سماج" کی تفصیل دی گئی ہے اور کتاب کا وزن بڑھانے کے لئے اُس کے شروع میں ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو کا فورورڈ یا دو لفظ ہیں .

پنڈت جواہر لال نے اپنے فورورڈ میں کہا ہے کہ آج کے زمانے میں پلاننگ یا یوجنا بندی کی ضرورت ہر کوئی محسوس کرتا ہے تاکہ اپنے سادھنوں کا ہم اُپیوگ کرسکیں. لیکن دیش میں آدمی نام کا جو سادھن ہمارے پاس ہے اس کی طاقت کو آنکنا آسان نہیں ہے . جب تک ہم اِس کا ٹھیک ٹھیک استعمال نہ کریں اور لوگوں کے اندر ایسی طبیعت نہ پیدا کر دیں جو مصیبتوں کو ہنستے ہوئے جھیل کر، واقعات اور گھٹناؤں کے باوجود، اپنا کام کرلے جائیں، تب تک ہم کوئی بڑی چیز نہیں حاصل کر سکتے. آگے چل کر پنڈت جی نے کہا ہے کہ لوگوں کے پاس ہم جو جائیں تو عقل کے غرور میں چور ہو کر نہ جائیں بلکہ نمرتا کے ساتھ جائیں تاکہ مل کر کاہلی کے پہاڑ کو پھوڑ سکیں . " بھارت سیوک سماج " نام کی سنستھا چلانے کا یہی مقصد ہے اور پردھان منتری کی

और तुम्हारे भूतों का क्या हाल है !

भाई उनके साथ तो सुलहनामा हो गया.

यह सुलहनामा कैसा ?

भाई रनवीर, हुआ यह एक रात भूत रात भर नाचते गाते रहे मैं तो सो गया पर मेरे चारों साथियों में से किसी को नींद न आई. वह दिन टल गया और इसी वास्ते टल गया. कि छत पर गाते बजाते हैं, हमारा क्या लेते हैं. जब वह नीचे दखलअंदाज़ी करेंगे तब देखा जायगा.

दूसरे दिन भूत आगे बढ़े और सफ़ेद कपड़े में लिपटी हुई आदमी जितनी लम्बी कोई चीज़ हम चारों की चारपाई का चक्कर काट कर चार ज़ीनों में से एक के रास्ते ऊपर चली गई. उस रात दो घंटे मुझे भी नींद नहीं आई. इसलिये नहीं कि मैं डर गया पर इसलिये कि इस दस्तदराज़ी का अब इलाज क्या किया जाय ?

दूसरे दिन इलाज सूझ गया.

दूसरे दिन हमारी चारपाइयों पर हम न थे. हमारी जगह कोई चीज़ें ओढ़े लेटी थीं और जैसे ही वह सफ़ेद चीज़ एक ज़ीने से उतरी कि हमारे साथी हमीद ने उसको झोंपी में भर लिया और ज़ोर की चीख़ मारी. हम चारों आ मौजूद हुए. उस सफ़ेद चीज़ की चादर खोली. उसके अन्दर से एक जवान लड़का निकला. हम उसे पकड़ कर बैठ गये और मैंने उससे पूछा—बताओ, तुम कौन हो और क्या चाहते हो और क्यों हमको बेकार दिक़ करते हो ?

वह बोला—देखिये जी, हम पन्द्रह आदमी हैं. मज़दूरी का काम करते हैं. हमारे रहने के लिये कोई जगह नहीं. आपका यह मकान पीछे की तरफ़ छाती छाती ऊंचा है हम सब आसानी से उसके ऊपर चढ़ जाते हैं. आपकी तीसरी मंज़िल पर एक टीन का छप्पर पड़ा है. उसी के नीचे हम सो बैठ लेते हैं. अब यह मकान अगर किराये पर उठ जाये तो वहां हमें कौन रहने देगा. यही सब बात है कि हम हर किरायेदार को इस तरह डराते हैं और मकान को किराये पर नहीं उठने देते.

मैं उस लड़के को लेकर तीसरी मंज़िल पर पहुंचा. और सचमुच वहां चौदह आदमी और मिले. पर सब बुरी तरह घबराये हुए थे. मैंने उनकी घबराहट दूर की और उन्हें समझाया—

देखो भाई, जब तक हम यहां किरायेदार हैं तुम ख़ुशी से ऊपर रहो. पर हमारी कुछ शर्तें हैं. एक यह कि तुम लोगों का गाना बजाना एक घंटे से ज़ियादा न चले.

वह बीच में बात काट कर बोल उठे—अजी हम काहे को गाते बजाते हैं. कभी घड़ी दो घड़ी भले ही गा बजा लें. नहीं तो नींद के मारे कहां गाना बजाना सूझता है.

اور تمہارے بھوتوں کا کیا حال ہے !

بھئی اُن کے ساتھ تو صلح‌نامہ ہوگیا .

یہ صلح‌نامہ کیسا ؟

بھائی رنبیر' ہوا یہ ایک رات بھوت رات بھر ناچتے
ہ رہے . میں تو سو گیا پر میرے چاروں ساتھیوں میں
کسی کو نیند نہ آئی . وہ دن ٹل گیا اور اِسی واسطے
ں گیا کہ چھت پر گاتے بجاتے ہیں' ہمارا کیا لیتے ہیں.
ب وہ نیچے دخل‌اندازی کرینگے تب دیکھا جائیگا .

دوسرے دن بھوت آگے بڑھے اور سفید کپڑے میں لپٹی
ئی آدمی‌جتنی لمبی کوئی چیز ہم چاروں کی چارپائی
چکر کاٹ کر چار زینوں میں سے ایک کے راستے اوپر چلی
ی . اُس رات دو گھنٹے مجھے بھی نیند نہیں آئی. اِس
ہ نہیں کہ میں ڈر گیا. پر اِس لئے کہ اِس دست‌درازی
اب علاج کیا کیا جائے؟

دوسرے دن علاج سوجھ گیا .

دوسرے دن ہماری چارپائیوں پر ہم نہ تھے . ہماری
گہ کوئی چیزیں اوڑھے لیٹی تھیں اور جیسے ہی وہ
فید چیز ایک زینے سے اُتری کہ ہمارے ساتھی حمید نے
سکو کھونچی میں بھر لیا اور زور کی چیخ‌ماری . ہم
اروں آ موجود ہوئے . اُس سفید چیز کی چادر کھولی.
س کے اندر سے ایک جوان لڑکا نکلا . ہم اُسے پکڑ کر بیٹھ
ے اور میں نے اُس سے پوچھا—بتاؤ' تم کون ہو اور کیا
اہتے ہو اور کیوں ہم کو بیکار دق کرتے ہو؟

وہ بولا—دیکھئے جی' ہم پندرہ آدمی ہیں . مزدوری
کام کرتے ہیں . ہمارے رہنے کے لئے کوئی جگہ نہیں .
پ کا یہ مکان پیچھے کی طرف چھاتی چھاتی اونچا ہے.
م سب آسانی سے اُس کے اوپر چڑھ جاتے ہیں . آپ کی
سری‌منزل پر ایک ٹین کا چھپر پڑا ہے . اُسی کے نیچے ہم
و بیٹھ لیتے ہیں . اب یہ مکان اگر کرائے پر اُٹھ جائے تو
اں ہمیں کون رہنے دیگا . یہی سب بات ہے کہ ہم ہر
ائےدار کو اس طرح ڈراتے ہیں اور مکان کو کرائے پر نہیں
ھنے دیتے .

میں اُس لڑکے کو لےکر تیسری منزل پر پہونچا . اور
چ مچ وہاں چودہ آدمی اور ملے . پر سب بری طرح
براِئے ہوئے تھے . میں نے اُن کی گھبراہٹ دور کی اور
یں سمجھایا—

دیکھو بھائی' جب تک ہم یہاں کرائےدار ہیں تم
وشی سے اوپر رہو . پر ہماری کچھ شرطیں ہیں. ایک یہ
تم لوگوں کا گانا بجانا ایک گھنٹے سے زیادہ نہ چلے .

وہ بیچ میں بات کاٹ کر بول اُٹھے—اجی ہم کاہے کو
تے بجاتے ہیں . کبھی گھڑی‌دو گھڑی بھلے ہی گا بجالیں .
ہیں تو نیند کے مارے کہاں گانا بجانا سوجھتا ہے .

कोई नहीं रह पाया. अब मैं यह नहीं चाहता कि खुद तंग होऊं और दूसरों को दिक़ करूं. अब खुली बात है. मेरा मकान भुतहा मकान है. जो कोई इसमें रहे साल भर का केराया माफ़. शुरू में चाहे तो मकान की सफ़ाई के लिये चार रुपये मुझ से और ले ले, बताओ और क्या रियायत चाहिये ?

मैं आगे बढ़ कर बोला—सेठ जी, कोई रियायत नहीं चाहिये. चाभी दीजिये. हम पांच आदमी हैं और पांचों हीरे. हम आपके मकान का भूत भगा कर रहेंगे.

जितने आये सबने यही कहा. पर मैंने भी अब तय कर लिया है किसी को चाभी देने से इन्कार न करूंगा.

× × ×

कहो सदीक़ी, भूतों का क्या हाल है ?

यार रनवीर, दो तीन दिन तो कोई भूत आये नहीं. कल रात तीसरी मंज़िल पर दस बजे के बाद से दो घंटे तक घुंघरुओं के बजने की आवाज़ आती रही. हम सब ने यह तय किया कि भूत जब दो घंटे तीसरी मंज़िल पर घुंघरू बजा कर चले जाते हैं तो उन्हें क्यों छेड़ा जाय. वह हमें नहीं छेड़ते. छत पर रहते हैं, रहें. आज देखें क्या होता है ?

तो तुम लोगों को डर बिल्कुल नहीं लगा ?

घुंघरू की आवाज़ से कौन डरता है ?

तो आज रात मैं भी यहीं रह जाऊं ?

बख़ुशी !

× × ×

देखिये, शुरू हो गया न बाजा बजना. आज पन्द्रह मिनट लेट हैं और आज तो चिकारे की आवाज़ भी सुनाई देती है.

सदीक़ आधे घंटे के बाद सो गया. रनवीर और दूसरे चार विद्यार्थी बारह बजे तक जागते रहे और बाजा बन्द होने पर ही सोये.

× × ×

सदीक़ उठो. तुम जल्दी सोते हो और देर से उठते हो.

रनवीर, मुझे जवानी की नींद आती है और बेख़ौफ़ी की भी. कहो रात फिर भूत तो नहीं आये थे ?

हम सब बारह बजे बाद सो गये और अब आंख खुली है. अच्छा, तुम उठो या न उठो, मैं चला.

× × ×

कहो सदीक़ मियां, क्या ख़रीद फ़रोख़्त हो रही है ?

कुछ नहीं, एक डिबकरी ख़रीदनी थी.

کوئی نہیں رہ پایا. اب میں یہ نہیں چاھتا کہ خود تنگ ھوں اور دوسروں کو دق کروں. اب کھلی بات ھے. میرا مکان بھتہا مکان ھے . جو کوئی اِس میں رھے سال بھر کا کرایہ معاف. شروع میں چاھے تو مکان کی صفائی کے لئے دو چار روپئے مجھ سے اور لے لے' بتاؤ اور کیا رعایت چاھئے ؟

میں آگے بڑھکر بولا—سیٹھ جی' کوئی رعایت نہیں چاھئے چابی دیجئے. ہم پانچ آدمی ھیں اور پانچوں جوہیرے . ہم آپ کے مکان کا بھوت بھگا کر رھیں گے .

جتنے آئے سب نے یہی کہا . پر میں نے بھی اب طے کر لیا ھے کہ کسی کو چابی دینے سے انکار نہ کرونگا .

× × ×

کہو صدیقی' بھوتوں کا کیا حال ھے !

یار رنبیر' دو تین دن تو کوئی بھوت آئے نہیں . کل رات تیسری منزل پر دس بجے کے بعد سے دو گھنٹے تک گھنگھروؤں کے بجنے کی آواز آتی رھی. ہم سب نے یہ طے کیا کہ بھوت جب دو گھنٹے تیسری منزل پر گھنگھرو بجا کر چلے جاتے ھیں تو انھیں کیوں چھیڑا جائے . وہ ھمیں نہیں چھیڑتے . چھت پر رھتے ھیں' رھیں . آج دیکھیں کیا ھوتا ھے ؟

تو تم لوگوں کو ڈر بالکل نہیں لگا ؟

گھنگھرو کی آواز سے کون ڈرتا ھے ؟

تو آج رات میں بھی یہیں رہ جاؤں ؟

بہ خوشی !

× × ×

دیکھئے' شروع ھوگیا نہ باجا بجنا . آج پندرہ منٹ لیٹ ھیں اور آج تو چکارے کی آواز بھی سنائی دیتی ھے .

صدیق آدھے گھنٹے کے بعد سو گیا . رنبیر اور دوسرے چار ودیارتھی بارہ بجے تک جاگتے رھے اور باجا بند ھونے پر ھی سوئے .

× × × ×

صدیق اٹھو. تم جلدی سوتے ھو اور دیر سے اٹھتے ھو .

رنبیر' مجھے جوانی کی نیند آتی ھے اور بے خوفی کی بھی . کہو رات پھر بھوت تو نہیں آئے تھے ؟

ہم سب بارہ بجے بعد سو گئے اور اب آنکھ کھلی ھے . اچھا' تم اٹھو یا نہ اٹھو' میں چلا .

× × × ×

کہو صدیق میاں' کیا خرید فروخت ھو رھی ھے؟

کچھ نہیں' ایک ڈبکری خریدنا تھی .

भूतों से सुलहनामा

भाई रनवीर, बताओ, होटल में कितने दिन रहें, और इतना खर्चा कैसे बर्दाश्त करें ! कालेज की फ़ीस तो यहां नाम के लिए है. यहां जो दिक़्क़त है वह मकान के किराये की और मकान किसी किराये पर नहीं मिल रहा. पांच विद्यार्थी और मेरे साथ हैं, होटल में दिवाला निकला जा रहा है. जल्दी कोई मकान बताओ, नहीं तो हम सब को पढ़ाई छोड़ अपने अपने घर भागना पड़ेगा. खाली मकान मिलते नहीं, जिन मकानों में जगह है उनमें मुसलमान होने की वजह से जगह नहीं मिल रही. अब तुम ही बताओ क्या किया जाय ?

भाई सदीक़ी, आजकल जयपुर में मकानों का बेहद तोड़ा है. किसी दर्जे तक यह ठीक है कि अगर तुम लोग हिन्दू होते तो एक-एक दो-दो इधर उधर खप जाते पर हिन्दू विद्यार्थियों का कम बुरा हाल नहीं. हिन्दू होने से ही जगह नहीं मिल जाती. हिन्दुओं में भी फिर कहीं वैशनव होना ज़रूरी है, कहीं कायस्थ और कहीं जैनी, और न जाने क्या क्या.

भाई रनवीर, बात न बढ़ाओ, दलीलें न दो, मकान ढूंढ़ कर दो, मकान ! नहीं तो हम सब तुम्हारे घर में घुस पड़ेंगे.

अच्छा तो कल इसी वक़्त आना.

मैं चल पड़ा. थोड़ी दूर ही गया होऊंगा कि मेरे कान में रनवीर की आवाज़ पड़ी, सदीक़, सदीक़.

मैं लौट कर उसके पास पहुंचा और पूछा—कहो, क्या कहते हो ?

कहता क्या हूं यार, यहां से एक फ़र्लांग पर ही एक ख़ासा बड़ा मकान बिल्कुल खाली है, और कई बरस से खाली है.

किसका है ? उसे जानते हो ? फिर दिलवाओ न.

मिल तो फ़ौरन जायगा, पर सदीक़, है वह भुतहा मकान !

हम पांच जवान भुगत लेंगे उस भूत को. तुम मकान दिलवाओ हम रहने को तैयार हैं.

चलो फिर अभी.

× × ×

देखिये सेठजी, आपके मकान के लिये मैं एक किरायेदार लाया हूं.

बेटे रनवीर, किरायेदार लाये यह तो अच्छा किया. पर मैं तो दसियों किरायेदारों को भुगत चुका. कोई दो दिन रहकर चल देता है कोई चार छे दिन से ज़्यादा अभी तक

بھوتوں سے صلحنامہ

بھائی رنبیر، بتاؤ، ہوٹل میں کتنے دن رہیں، اور اتنا خرچہ کیسے برداشت کریں ! کالج کی فیس تو یہاں نام کے لئے ہے. یہاں جو دقت ہے وہ مکان کے کرائے کی اور مکان کسی کرائے پر نہیں مل رہا . پانچ ودیارتھی اور میرے ساتھ ہیں، ہوٹل میں دیوالہ نکلا جا رہا ہے. جلدی کوئی مکان بتاؤ، نہیں تو ہم سب کو پڑھائی چھوڑ اپنے اپنے گھر بھاگنا پڑے گا . خالی مکان ملتے نہیں، جن مکانوں میں جگہ ہے اُن میں مسلمان ہونے کی وجہ سے جگہ نہیں مل رہی . اب تم ہی بتاؤ کیا کیا جائے ؟

بھائی صدیقی، آجکل جےپور میں مکانوں کا بے حد توڑا ہے . کسی درجے تک یہ ٹھیک ہے کہ اگر تم لوگ ہندو ہوتے تو ایک ایک دو دو اِدھر اُدھر کھپ جاتے پر ہندو ودیارتھیوں کا کم برا حال نہیں . ہندو ہونے سے ہی جگہ نہیں مل جاتی . ہندوؤں میں بھی پھر کہیں ویشنو ہونا ضروری ہے، کہیں کائستھ اور کہیں جینی، اور نہ جانے کیا کیا .

بھائی رنبیر، بات نہ بڑھاؤ، دلیلیں نہ دو، مکان ڈھونڈ کر دو، مکان! نہیں تو ہم سب تمہارے گھر میں گھس پڑیں گے .

اچھا تو کل اِسی وقت آنا .

میں چل پڑا. تھوڑی دور ہی گیا ہوؤں گا کہ میرے کان میں رنبیر کی آواز پڑی 'صدیق' صدیق .

میں لوٹ کر اُس کے پاس پہونچا اور پوچھا—کہو، کیا کہتے ہو ؟

کہتا کیا ہوں یار، یہاں سے ایک فرلانگ پر ہی ایک خاصہ بڑا مکان بالکل خالی ہے، اور کئی برس سے خالی ہے .

کس کا ہے ؟ اُسے جانتے ہو ؟ پھر دلواؤ نہ .

مل تو فوراً جائے گا، پر صدیق ہے وہ بھتہا مکان !

ہم پانچ جوان بھگت لیں گے اُس بھوت کو . تم مکان دلواؤ ہم رہنے کو تیار ہیں .

چلو پھر ابھی .

× × ×

دیکھئے سیٹھ جی، آپ کے مکان کے لئے میں ایک کرائے دار لایا ہوں .

بیٹے رنبیر، کرائے دار لائے یہ تو اچھا کیا . پر میں تو دسیوں کرائے داروں کو بھگت چکا . کوئی دو دن رہکر چل دیتا ہے کوئی چار چھ دن سے زیادہ ابھی تک

सवेरे सूरज निकलने के पहले ही हम लोग उठ बैठे. नाश्ता करते वक़्त आपने कहा कि मुझे अपने ज़िले में ज़रूरी काम है इसलिये मैं अब जाऊंगा.

मैं कहने लगी—"मेरे प्यारे भाई, जाओ, ज़रूर जाओ! अपने बंगलों और महलों में जाओ! मोटरों में जाओ, हवाई जहाज़ों में जाओ, हवा कन्ट्रोल रेल के डिब्बों में जाओ, जाओ ज़रूर जाओ! लेकिन यह चौबीस घंटे जो आपने मेरे साथ बिताये हैं उन्हें मत भूलियेगा क्योंकि इन घन्टों में आपका असलियत या सच्चाई से सीधा सीधा वास्ता पड़ा है. वैसे आपका ज़ियादातर जीवन माया के जाल में फंसा रहता है. ज़रा आज की संगीन हालत को तो देखिये. चोटी पर बैठे बैठे आप लोग समझते हैं आप जनता की मर्ज़ी के अनुकूल चल रहे हैं. और लोकशाही नेता होने के नाते आप कुछ दूसरी चीज़ कर भी नहीं सकते. लेकिन क्या आपको यह नहीं महसूस होता कि जिसे आप "जनता की मर्ज़ी" कहते हैं वह शहर में रहने वाले उन चन्द लोगों की आवाज़ है जो शोर करना जानते हैं और जिनका कुछ असर है—बल्कि मैं तो यह कहूँगी कि उन गिने चुने लोगों की आवाज़ है जिन्होंने इन्सानी समाज को चूसना अपना पेशा बना लिया है? देहात की लाखों करोड़ों जनता की—जो हमारी बुनियादी ज़रूरत की हर चीज़ पैदा करती है और पिछले चौबीस घंटे जिसका दर्शन आपको मिला—न कहीं सुनवाई है और न उनका कोई पुरसाने हाल है. अब आप मुझसे यह मत कहियेगा कि आप और आपकी सरकार जनता की मर्ज़ी के नुमाइन्दे हैं—आप जनता की मर्ज़ी के नुमाइन्दे नहीं हैं, मेरे प्यारे भाई, नहीं हैं!"

थोड़ी देर ठहर कर मैं फिर कहने लगी—

"अगर देहात की जनता एक हो कर बापू राज की पुकार करती है तो क्या कांगरेस में इतनी हिम्मत होगी कि उनकी पुकार को मन्ज़ूर करे? बस सारे सवाल का निचोड़ यही है. क्या आप चन्द चूसने वाले आदमख़ोरों की बात सुनेंगे या उन करोड़ों की जो हर चीज़ ख़ुद पैदा करते हैं? मेरी आपसे बिनती है, पुरानी दोस्ती की वह सब मोहब्बत जो मेरे दिल में है उस सब के साथ मेरी आप से बिनती है कि मेरे इस ख़्याल को अपने अन्दर जगह दीजिये और इसे अपने भीतर की आख़री तह तक जाने दीजिये. यह वही तह है जिस से इन्सान को वक़्त वक़्त पर इलहाम या अनुभूति होती है और वही इन्सान की सबसे सच्ची, ऊंची और आला रहबर या पथ प्रदर्शक है." —मीरा बहन

गोपाल आश्रम, P. O पिलखी, ज़िला टेहरी-गढ़वाल.

('हिन्दुस्तान टाइम्स' से)

سویرے سورج نکلنے کے پہلے ہی ہم لوگ اُٹھ بیٹھے. ناشتہ کرتے وقت آپ نے کہا کہ مجھے اپنے ضلعے میں ضروری کام ہے اس لئے میں اب جاؤنگا.

میں کہنے لگی—"میرے پیارے بھائی، جاؤ، ضرور جاؤ! اپنے بنگلوں اور محلوں میں جاؤ! موٹروں میں جاؤ، ہوائی جہازوں میں جاؤ، ہوا کنٹرول ریل کے ڈبوں میں جاؤ، جاؤ ضرور جاؤ! لیکن یہ چوبیس گھنٹے جو آپ میرے ساتھ بتائے ہیں انہیں مت بھولئیے گا کیونکہ ان گھنٹوں میں آپ کا اصلیت یا سچائی سے سیدھا سادھا واسطہ پڑا ہے. ویسے آپکا زیادہ تر جیون مایا کے جال میں پھنسا رہتا ہے. ذرا آج کی سنگین حالت کو تو دیکھئے. چوٹی پر بیٹھے بیٹھے آپ لوگ سمجھتے ہیں آپ جنتا کی مرضی کے انوکول چل رہے ہیں. اور لوک شاہی نیتا ہونے کے ناتے آپ کچھ دوسری چیز کر بھی نہیں سکتے. لیکن کیا آپ کو یہ نہیں محسوس ہوتا کہ جسے آپ "جنتا کی مرضی" کہتے ہیں وہ شہر میں رہنے والے اُن چند لوگوں کی آواز ہے جو شور کرنا جانتے ہیں اور جنکا کچھ اثر ہے—بلکہ میں تو یہ کہونگی کہ اُن گنے چنے لوگوں کی آواز ہے جنہوں نے انسانی سماج کو چوسنا اپنا پیشہ بنا لیا ہے؟ دیہات کی لاکھوں کروڑوں جنتا کی—جو ہماری بنیادی ضرورت کی ہر چیز پیدا کرتی ہے اور پچھلے چوبیس گھنٹے جسکا درشن آپ کو ملا—نہ کہیں سنوائی ہے اور نہ ان کا کوئی پرسان حال ہے. اب آپ مجھ سے یہ مت کہئے گا کہ آپ اور آپ کی سرکار جنتا کی مرضی کے نمائندے ہیں—آپ جنتا کی مرضی کے نمائندے نہیں ہیں، میرے پیارے بھائی، نہیں ہیں!"

تھوڑی دیر ٹھہر کر میں پھر کہنے لگی—

"اگر دیہات کی جنتا ایک ہوکر باپو راج کی پکار کرتی ہے تو کیا کانگریس میں اتنی ہمت ہوگی کہ اُنکی پکار کو منظور کرے؟ بس سارے سوال کا نچوڑ یہی ہے. کیا آپ چند چوسنے والے آدم خوروں کی بات سنیں گے یا اُن کروڑوں کی جو ہر چیز خود پیدا کرتے ہیں؟ میری آپ سے بنتی ہے، پرانی دوستی کی وہ سب محبت جو میرے دل میں ہے اس سب کے ساتھ میری آپ سے بنتی ہے کہ میرے اس خیال کو اپنے اندر جگہ دیجئے اور اِسے اپنے بھیتر کی آخری تہ تک جانے دیجئے. یہ وہی تہ ہے جس سے انسان کو وقت وقت پر الہام یا انوبھوتی ہوتی ہے اور وہی انسان کی سب سے سچی، اونچی اور اعلیٰ رہبر یا پتھ پردرشک ہے." —میرا بہن

گوپال آشرم، P. O. پلکھی ضلع ٹہری گڈھوال

('ہندستان ٹائمس' سے)

मैंने कहा—"अगर यही हालत रही तो फिर तुम बैल कैसे पालोगे ? और इसके बाद फिर क्या सोचा है ?"

ठंडी सांस ले कर किसान ने कहा—"भगवान जाने क्या होगा ! और हालत तो यह हो रही है कि गंगा खादर वाला इलाक़ा भी जोत दिया गया है. हर साल वहां पर सैकड़ों हज़ारों जानवर पंजाब से आते थे और हमें उनसे अपने मतलब के लिए अच्छे अच्छे ढोर मिल जाते थे, लेकिन अब यह सब बन्द हो गया और हम लोगों की तबाही आ गई है."

मैं आपकी तरफ़ देखने लगी यह जानने के लिए कि आप किसानों की इस मुसीबत को कुछ समझ रहे हैं या नहीं.

एक नौजवान ने हमारे मेज़मान के कान में धीरे से कहा—"गन्ने की मिल वाली बात इन्हें बताओ, शायद यह कुछ कर सकें."

मैंने पूछा—"कहो, वह क्या बात है ?"

"पिछले दो महीने से हमें अपनी ईख का कोई पैसा नहीं मिला. हालांकि तरीक़ा यह है कि मिल वालों को चाहिये कि ईख पाने के चौबीस घंटे के अन्दर उसका दाम चुका दें."

"आप लोगों ने उसके लिये कुछ कहा सुना ?"

"कहा तो, मगर माता जी ! हम ग़रीबों की बात सुनता कौन है ? पैसे वाले लोग जो हैं वह अपने गन्ने का दाम मज़े में वसूल कर लेते हैं लेकिन हमें और हमारे बच्चों को फ़ाक़ा करना पड़ता है."

मैंने उनसे एक अर्ज़ी लिख कर देने को कहा और आपकी तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहने लगी—

"इस सफ़र में मुझे गांव वालों से शिकायतें आये दिन मिल रही हैं और वह इतनी दर्दनाक हैं कि कुछ कहा नहीं जा सकता. पानी की तकलीफ़, सड़क की तकलीफ़, चरागाह ख़त्म हो गये सो अलग मुसीबत, और तरह तरह की मुसीबतें अलग. यह ऐसी बातें हैं जिनका हर गांव और गांव वाले के जीवन से बड़ा गहरा सम्बन्ध है. लेकिन आप की सरकार तो बड़ी बड़ी योजनाओं और मशीनों द्वारा खेती के चक्कर में इतनी ज़ियादा फंसी हुई है कि किसानों की शिकायतों और उनकी अर्ज़ियों की सुनने की उसे फ़ुरसत नहीं. यह अर्ज़ियां दफ़्तरों की फ़ायलों के जाल में अटक जाती हैं और उन्हें सिर्फ़ वही लोग निकाल पाते हैं जिनका कुछ असर है या जो हाथ गर्म करना जानते हों. आपके सरकारी अफ़सर हों या कांगरेस के कार्यकर्ता हों, पार्लियामेन्ट के मेम्बर हों या असेम्बली के, आप चीज़ों को किसान की निगाह से देखते ही नहीं. मेरे दिल की जो आग है उसे मैं बहुत ही ठंडे शब्दों में आपको बता रही हूँ."

फिर हमने अपने घोड़े-बैलों को ज़रा देखा और चारपाई पर आ कर पड़ गये क्योंकि यह तय हुआ था कि मीटिंग सवेरे भोर में ही होगी.

میں نے کہا—"اگر یہی حالت رہی تو پھر تم بیل کیسے پالوگے؟ اور اس کے بعد پھر کیا سوچا ہے؟"

ٹھنڈی سانس لے کر کسان نے کہا—"بھگوان جانے کیا ہوگا! اور حالت تو یہ ہو رہی ہے کہ گنگا کھادر والا علاقہ بھی جوت دیا گیا ہے. ہر سال وہاں پر سیکڑوں ہزاروں جانور پنجاب سے آتے تھے اور ہمیں اُن سے اپنے مطلب کے لئے اچھے اچھے ڈھور مل جاتے تھے، لیکن اب یہ سب بند ہوگیا اور ہم لوگوں کی تباہی آ گئی ہے."

میں آپ کی طرف دیکھنے لگی یہ جاننے کے لئے کہ آپ کسانوں کی اِس مصیبت کو کچھ سمجھ رہے ہیں یا نہیں.

ایک نوجوان نے ہمارے میزبان کے کان میں دھیرے سے کہا—"گنے کی مل والی بات انہیں بتاؤ، شاید یہ کچھ کرسکیں."

میں نے پوچھا—"کہو، وہ کیا بات ہے؟"

"پچھلے دو مہینے سے ہمیں اپنی ایکھ کا کوئی پیسہ نہیں ملا. حالانکہ طریقہ یہ ہے کہ مل والوں کو چاہئے کہ ایکھ پانے کے چوبیس گھنٹے کے اندر اِسکا دام چکادیں."

"آپ لوگوں نے اس کے لئے کچھ کہا سنا؟"

"کہا تو، مگر ماتا جی! ہم غریبوں کی بات سنتا کون ہے؟ پیسے والے لوگ جو ہیں وہ اپنے گنے کا دام مزے میں وصول کرلیتے ہیں لیکن ہمیں اور ہمارے بچوں کو فاقہ کرنا پڑتا ہے."

میں نے اُن سے ایک عرضی لکھ کر دینے کو کہا اور آپ کی طرف مخاطب ہوکر کہنے لگی—"اس سفر میں مجھے گاؤں والوں سے شکایتیں آئے دن مل رہی ہیں اور وہ اتنی دردناک ہیں کہ کچھ کہا نہیں جاسکتا. پانی کی تکلیف، سڑک کی تکلیف، چراگاہ ختم ہوگئے سو الگ مصیبت، اور طرح طرح کی مصیبتیں الگ. یہ ایسی باتیں ہیں جنکا ہر گاؤں اور گاؤں والے کے جیون سے بڑا گہرا سمبندھ ہے. لیکن آپ کی سرکار تو بڑی بڑی یوجناؤں اور مشینوں دوارا کھیتی کے چکر میں اتنی زیادہ پھنسی ہوئی ہے کہ کسانوں کی شکایتوں اور اُن کی عرضیوں کی سننے کی اُسے فرصت نہیں. یہ عرضیاں دفتروں کی فائلوں کے جال میں اٹک جاتی ہیں اور انہیں صرف وہی لوگ نکال پاتے ہیں جن کا کچھ اثر ہے یا جو ہاتھ گرم کرنا جانتے ہوں. آپ کے سرکاری افسر ہوں یا کانگریس کے کاریہ کرتا ہوں، پارلیمنٹ کے ممبر ہوں یا اسمبلی کے، آپ چیزوں کو کسان کی نگاہ سے دیکھتے ہی نہیں. میرے دل کی جو آگ ہے اُسے میں بہت ہی ٹھنڈے شبدوں میں آپ کو بتا رہی ہوں."

پھر ہم نے اپنے گھوڑے بیلوں کو ذرا دیکھا اور چارپائی پر آکر پڑ گئے کیونکہ یہ طے ہوا تھا کہ میٹنگ سویرے بھور میں ہی ہوگی.

मैं कुछ मिनट के लिये ज़रा लेट गई. देखती क्या हूं कि थोड़ी ही देर में दो बूढ़े बूढ़े किसान चले आ रहे हैं. उनके चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई थीं और सर पर खद्दर के बड़े साफ़े ढके हुये थे. वह ज़मीन पर बैठ गये और हाथ जोड़ते हुए बोले—

"माताजी, हम बापू राज चाहते हैं और बहुत जल्दी चाहते हैं. हमारे पास न इलम है न पैसा. बड़े बड़े लोगों की बातें हमारी समझ में तनिक नहीं आतीं. वह लोग तो अपनी योजनाओं में ही पड़े रहते हैं. लेकिन आप बापू जी की बात लेकर आई हैं और हमारा आपमें पूरा विश्वास है. बताइये हम कैसे मदद करें, क्या हम मेम्बर बन सकते हैं ?"

मैंने जवाब दिया—"इसमें मेम्बरी का कोई सवाल नहीं है. यह तो इतनी बड़ी चीज़ है कि इसमें अलग अलग मेम्बर नहीं बनाये जाते. ज़रूरत सिर्फ़ आपके विश्वास और आपकी हिम्मत की है. और जब वक़्त आयेगा तो मैं आपको बताऊंगी कि हम क्या करें."

"हम ग़रीबों को मत भूल जाइयेगा. बापू राज ! बापू राज !! बस यही बापू राज हमें चाहिये."

हमारी बैलगाड़ी चल चुकी है और अब हम भी रवाना हो पड़े. इस इलाक़े में एक बड़े ज़मींदार का बोलबाला है जिसने 'खुद काश्त' के नाम पर चरागाह के लिए बित्ता भर ज़मीन भी नहीं छोड़ी है और सारी ज़मीन पर ट्रैक्टर चलवा रक्खा है. जैसे हम चलते जाते हैं ट्रैक्टर की ऊपरी जुताई साफ़ साफ़ पता चलती है.

मैं यह सब आपको दिखाती जाती हूं और कहती हूं—"यह देखिये, यह देखिये." इस उम्मीद में कि शायद इस सारे तमाशे की बदमाशी भरी नाइन्साफ़ी का कुछ बोध आपको हो जाय.

अब हम अपने रात वाले मुक़ाम पर पहुंच गये. यह एक बहुत ही छोटा गांव है जहाँ हम एक प्यारे बूढ़े किसान के यहां ठहर गये. घोड़ों की ज़ीन खोल कर और उनके दाना पानी का ठीक ठाक कर के बरामदे में पड़ी हुई चारपाइयों पर पड़ गये. उस किसान के मोटे तगड़े बैल जुगाली कर रहे थे. धीरे धीरे किसान लोग आना शुरू हो गये और हमारे चारों तरफ़ बैठ गये.

मैंने पूछा—"तुम्हारी बैल जोड़ी तो बड़ी सुन्दर है लेकिन यह ढोर जो चरने जाते हैं वह क्यों दुबले मालूम पड़ते हैं."

बूढ़े किसान ने दुखी हो कर जवाब दिया—"हमारे चरागाह सब चले गये. जहां पहले दो सौ गायें थीं अब पचास ही रह गईं और यह लगातार कम होती जा रही हैं."

میں کچھ منٹ کے لئے ذرا لیٹ گئی. دیکھتی کیا ہوں کہ تھوڑی دیر میں دو بوڑھے بوڑھے کسان چلے آ رہے ہیں. اُن کے چہرے پر جھریاں پڑی ہوئی تھیں اور سر پر کھدر کے بڑے صافے ڈھکے ہوئے تھے. وہ زمین پر بیٹھ گئے اور ہاتھ جوڑتے ہوئے بولے—

"ماتا جی' ہم باپو راج چاہتے ہیں اور بہت جلدی چاہتے ہیں. ہمارے پاس نہ علم ہے نہ پیسہ. بڑے بڑے لوگوں کی باتیں ہماری سمجھ میں تنک نہیں آتیں. وہ لوگ تو اپنی یوجناؤں میں ہی پڑے رہتے ہیں. لیکن آپ باپو جی کی بات لیکر آئی ہیں اور ہمارا آپ میں پورا وشواس ہے. بتائیے ہم کیسے مدد کریں' کیا ہم ممبر بن سکتے ہیں؟"

میں نے جواب دیا—"اس میں ممبری کا کوئی سوال نہیں ہے. یہ تو اِتنی بڑی چیز ہے کہ اس میں الگ الگ ممبر نہیں بنائے جاتے. ضرورت صرف آپ کے وشواس اور آپ کی ہمت کی ہے. اور جب وقت آئیگا تو میں آپ کو بتاؤں گی کہ ہم کیا کریں."

"ہم غریبوں کو مت بھول جائیگا. باپو راج ! باپو راج!! بس یہی باپو راج ہمیں چاہئیے."

ہماری بیل گاڑی چل چکی ہے اور اب ہم بھی روانہ ہو پڑے. اس علاقے میں ایک بڑے زمیندار کا بول بالا ہے جس نے 'خود کاشت' کے نام پر چراگاہ کے لئے بتا بھر زمین بھی نہیں چھوڑی ہے اور ساری زمین پر ٹریکٹر چلوا رکھا ہے. جیسے ہم چلتے جاتے ہیں ٹریکٹر کی اوپری جتائی صاف صاف پتہ چلتی ہے.

میں یہ سب آپ کو دکھاتی جاتی ہوں اور کہتی ہوں—"یہ دیکھئے' یہ دیکھئے." اس اُمید میں کہ شاید اِس سارے تماشے کی بدمعاشی بھری ناانصافی کا کچھ بودھ آپ کو ہوجائے.

اب ہم اپنے رات والے مقام پر پہنچ گئے. یہ ایک بہت ہی چھوٹا گاؤں ہے جہاں ہم ایک پیارے بوڑھے کسان کے یہاں ٹھہر گئے. گھوڑوں کی زین کھول کر اور اُن کے دانا پانی کا ٹھیک ٹھاک کرکے برآمدے میں پڑی ہوئی چارپائیوں پر پڑ گئے. اُس کسان کے موٹے تگڑے بیل جگالی کر رہے تھے. دھیرے دھیرے کسان لوگ آنا شروع ہوگئے اور ہمارے چاروں طرف بیٹھ گئے.

میں نے پوچھا—"تمہاری بیل جوڑی تو بڑی سندر ہے لیکن یہ ڈھور جو چرنے جاتے ہیں وہ کیوں دبلے معلوم پڑتے ہیں."

بوڑھے کسان نے دکھی ہوکر جواب دیا—"ہمارے چراگاہ سب چلے گئے. جہاں پہلے دو سو گائیں تھیں اب پچاس ہی رہ گئیں اور یہ لگاتار کم ہوتی جارہی ہیں."

गांव वालों ने बहुत प्रेम से हमें बैठाया और आदर सत्कार किया. पानी पड़ने लगा जिसके कारन ठंड बहुत बढ़ गई. गांव वाले भी काफ़ी जमा हो गये. उनमें से एक जना हमारे लिये गरमा गरम चाय ले आया. अब गप शुरू हुई. जिसे देखिये उसी बुड्ढे महन्त की बात करता था कि वह किस बे-रहमी से गांव वालों के साथ व्योहार करता है और उसकी यही कोशिश रहती है कि ज़ियादा से ज़ियादा ज़मीन हड़प करके उसमें ट्रैक्टर चलवा दे.

मैंने आपसे कहा—"यह बूढ़ा उन्हीं ज़मींदारों जैसा है जो इन गावों में अक्सर मिला करते हैं. बड़ा अच्छा हुआ के उसने हमें अपनी आसामियों के बीच पहुंचा दिया."

आप कुछ परेशान से नज़र आने लगे इसलिये मैं चुप हो गई.

मैंने गांव वालों से कहा—"अब तो बादल साफ़ हो गया, हम लोगों को चलना चाहिये." घोड़े पर सवार हो कर जैसे हम चले, गांव वालों ने हम से दर्द भरी आवाज़ में कहा—"हमें भूलना मत."

दस बजते बजते हम लोग अपने ठिकाने पहुँच गये.

यहां पर हमारे पहुंचने की ख़बर लोगों को थोड़ी देर पहले हमारी बैलगाड़ी के आने से ही लगी थी. हमारे इस दौरे में रोज़ ऐसा ही होता है क्योंकि कोई ख़ास कारिन्दे या प्रचार के साधन हमारे पास नहीं हैं. आम के एक बग़ीचे में हमारा डेरा डाला गया है. गांव वाले हमारी रसोई के लिये इंधन, घोड़े और बैलों के लिए घास प्रेम के साथ दे गये. दो तीन चारपाइयां भी पहुंच गईं.

हमारी मीटिंग दो बजे होने वाली है क्योंकि रात वाले पड़ाव तक पहुँचने के लिए हमें चार मील और चलना है. थोड़ी देर बाद पता चला कि मीटिंग शायद न हो सकेगी क्योंकि ठीक से सबको ख़बर नहीं भेजी जा सकी और न किसी मुनासिब जगह कहीं इन्तज़ाम ही हो सका. जल्दी ही यह मालूम हो गया कि यह सारी मुसीबत एक बड़े ज़मींदार साहब और उनके जी हुज़ूरों ने कर रक्खी है जो यहां रहते हैं. लेकिन हमारे आने की ख़बर किसी तरह फैल ही गई और किसान भाई जमा होना शुरू हो गये. पर उनके चेहरों पर घबराहट और परेशानी नज़र आती थी.

उन्होंने कुछ अचरज के साथ पूछा—"हमने सुना है के कोई मीटिंग होने जा रही है? कहां किस जगह होगी?"

मैंने कहा—"यहां इन्हीं पेड़ों के नीचे और अभी अभी कर ली जाय."

छोटी सी मीटिंग हुई जिसमें क़रीब सौ आदमी थे. लेकिन उन्होंने सब बातें बड़े ध्यान से सुनीं. मीटिंग के बाद

گاؤں والوں نے بہت پریم سے ہمیں بیٹھایا اور آدر ستکار کیا. پانی پڑنے لگا جس کے کارن ٹھنڈ بہت بڑھ گئی. گاؤں والے بھی کافی جمع ہوگئے. اُن میں سے ایک جنا ہمارے لئے گرماگرم چائے لے آیا. اب گپ شروع ہوئی. جسے دیکھئے اسی بڈھے مہنت کی بات کرتا تھا کہ وہ کس بے رحمی سے گاؤں والوں کے ساتھ ویوہار کرتا ہے اور اسکی یہی کوشش رہتی ہے کہ زیادہ سے زیادہ زمین ہڑپ کر کے اس میں ٹریکٹر چلوا دے.

میں نے آپ سے کہا—"یہ بوڑھا انہیں زمینداروں جیسا ہے جو ان گاؤں میں اکثر ملا کرتے ہیں. بڑا اچھا ہوا کہ اس نے ہمیں اپنی آسامیوں کے بیچ پہنچا دیا."

آپ کچھ پریشان سے نظر آنے لگے اسلئے میں چپ ہوگئی.

میں نے گاؤں والوں سے کہا—"اب تو بادل صاف ہوگیا ہم لوگوں کو چلنا چاہئے." گھوڑے پر سوار ہوکر جیسے ہم چلے گاؤں والوں نے ہم سے درد بھری آواز میں کہا—"ہمیں بھولنا مت."

دس بجتے بجتے ہملوگ اپنے ٹھکانے پہنچ گئے.

یہاں پر ہمارے پہنچنے کی خبر لوگوں کو تھوڑی دیر پہلے ہماری بیل گاڑی کے آنے سے ہی لگی تھی. ہمارے اس دورے میں روز ایسا ہی ہوتا ہے کیونکہ کوئی خاص کارندے یا پرچار کے سادھن ہمارے پاس نہیں ہیں. آم کے ایک باغیچے میں ہمارا ڈیرہ ڈالا گیا ہے. گاؤں والے ہماری رسوئی کے لئے ایندھن، گھوڑے اور بیلوں کے لئے گھاس پریم کے ساتھ دے گئے. دو تین چارپائیاں بھی پہنچ گئیں.

ہماری میٹنگ دو بجے ہونے والی ہے کیونکہ رات والے پڑاؤ تک پہنچنے کے لئے ہمیں چار میل اور چلنا ہے. تھوڑی دیر بعد پتہ چلا کہ میٹنگ شاید نہ ہوسکے کی کیونکہ ٹھیک سے سب کو خبر نہیں بھیجی جاسکی اور نہ کسی مناسب جگہ کہیں انتظام ہی ہوسکا. جلدی ہی یہ معلوم ہوگیا کہ یہ ساری مصیبت ایک بڑے زمیندار صاحب اور اُن کے جی حضوروں نے کر رکھی ہے جو یہاں رہتے ہیں. لیکن ہمارے آنے کی خبر کسی طرح پھیل ہی گئی اور کسان بھائی جمع ہونا شروع ہوگئے. پر اُن کے چہروں پر گھبراہٹ اور پریشانی نظر آتی تھی.

انہوں نے کچھ اچرج کے ساتھ پوچھا—"ہم نے سنا ہے کہ کوئی میٹنگ ہونے جارہی ہے؟ کہاں کس جگہ ہوگی؟"

میں نے کہا—"یہاں انہیں پیڑوں کے نیچے اور ابھی ابھی کرلی جائے."

چھوٹی سی میٹنگ ہوئی جس میں قریب سو آدمی تھے. لیکن انہوں نے سب باتیں بڑے دھیان سے سنیں. میٹنگ کے بعد

चाहिये क्योंकि हम इस तरह की चीजें ज़ियादा देर तक नहीं बरदाश्त कर सकते."

अब हम अपने घोड़े पर सवार हुए और गांव वालों से प्रेम के साथ विदा ले कर चल पड़े. चारों तरफ़ खेत ही खेत नज़र आते हैं, कहीं कहीं इक्का दुक्का पेड़ हैं. हमारे घोड़े "पर्रर्रर........" करते हुए चले जा रहे हैं. कैसी प्यारी भीनी भीनी हवा चल रही है. ऊपर से कोयल कूक रही है और आम के पड़ोस वाले बग़ीचे में बत्तखें बोल रही हैं. बहुत ही सुहावना मौसम है और बड़ा आनन्द आ रहा है.

चलते चलते हम एक ऐसी जगह पहुंच गये जहां से दो रास्ते कटते थे. हम कोई अन्दाज़ नहीं लगा सकते थे कि हमारा गांव किधर पड़ेगा. लेकिन ओह हो ! एक बैलगाड़ी चली आ रही है और गाड़ी वाले से हमने अपना रास्ता मालूम कर लिया. पता चला कि हमारा गांव यहां से आठ मील पर है.

यह लीजिये हम एक नदी किनारे पहुंच गये जो कि पहाड़ियों में घूमती फिरती चली जा रही है. अच्छा ही हुआ क्योंकि हमारे घोड़े भी प्यासे हो रहे हैं. इस नदी के आस पास भी वही हाल था जो मैंने अपने सफ़र में इस इलाक़े में कई जगह देखा. किनारे के आस पास की ज़मीन पर जहां ढोर चरा करते थे वहां हल चलवा दिये गये हैं. ज़रा यहां के गाय बैल तो देखिये, मानो उन्हें कब से खाना न मिला हो. बेचारे बालू पर नदी किनारे खड़े हुए हैं. और इस बे मौज़ूं ज़मीन पर जो काश्त की गई है ज़रा उसे देखिये—एक दम छोटी, ठुन्ठ और बेकार. क्या अनाज उपजाने का यही तरीक़ा है ? घोड़ों ने पानी पिया और इस बीच मैंने आपको दिल की लगी बात कही कि सरकार के खेती और पशुपालन के महकमे कितने निकम्मे हैं. और फिर हम चल पड़े.

आसमान पर काली घटायें छाने लग गईं और यह देखिये बिजली भी चमकने लगी. रास्ते में जो एक गांव पड़ा तो हमने सहारा ढूंढा.

दूर से किसी ने आवाज़ दी—"बढ़िये तेज़ी से बढ़िये."

हमने देखा कि क़िले जैसा कोई पुराना मकान है जिसके दरवाज़े पर लम्बी दाढ़ी वाला एक महन्त बैठा हुआ है.

मैंने अपील करते हुए चीख कर कहा—"जो यह तूफ़ान आ रहा है उससे बचने के लिए हमें ठिकाना चाहिये. इतमीनान रखिये कि हम आपकी किसी चीज़ को नुक़सान नहीं पहुंचायेंगे."

शान के साथ अपने हाथ से इशारा देते हुए उसने जवाब दिया—"बढ़िये बढ़िये."

तब मैंने आप से कहा—"चलिये, इस गांव में चलें और हमें इस बूढ़े की बाबत कुछ बातें पता चलेंगी."

چاہئے کیوں کہ ہم اس طرح کی چیزیں زیادہ دیر تک نہیں برداشت کر سکتے."

اب ہم اپنے گھوڑے پر سوار ہوئے اور گاؤں والوں سے پریم کے ساتھ ودا لیکر چل پڑے. چاروں طرف کھیت ہی کھیت نظر آتے ہیں' کہیں کہیں اکا دکا پیڑ ہیں . ہمارے گھوڑے "پر..........." کرتے ہوئے چلے جا رہے ہیں . کیسی پیاری بھینی بھینی ہوا چل رہی ہے. اوپر سے کوئل کوک رہی ہے اور آم کے پڑوس والے باغیچے میں بطخیں بول رہی ہیں. بہت ہی سہاونا موسم ہے اور بڑا آنند آ رہا ہے.

چلتے چلتے ہم ایک ایسی جگہ پہنچ گئے جہاں سے دو راستے کٹتے تھے . ہم کوئی انداز نہیں لگا سکتے تھے کہ ہمارا گاؤں کدھر پڑیگا . لیکن اوہ او ! ایک بیل گاڑی چلی آرہی ہے اور گاڑی والے سے ہم نے اپنا راستہ معلوم کر لیا . پتہ چلا کہ ہمارا گاؤں یہاں سے آٹھ میل پر ہے .

یہ لیجئے ہم ایک ندی کنارے پہنچ گئے جو کہ پہاڑیوں میں گھومتی پھرتی چلی جا رہی ہے . اچھا ہی ہوا کیونکہ ہمارے گھوڑے بھی پیاسے ہو رہے ہیں . اس ندی کے آس پاس بھی وہی حال تھا جو میں نے اپنے سفر میں اس علاقے میں کئی جگہ دیکھا . کنارے کے آس پاس کی زمین پر جہاں ڈھور چرا کرتے تھے وہاں ہل چلوا دیئے گئے ہیں. ذرا یہاں کے گائے بیل تو دیکھئے' مانو انہیں کب سے کھانا نہ ملا ہو. بیچارے بالو پر ندی کنارے کھڑے ہوئے ہیں . اور اس بے موضوں زمین پر جو کاشت کی گئی ہے ذرا اسے دیکھئے—ایک دم چھوٹی' ٹھنٹھ اور بیکار . کیا اناج اپجانے کا یہی طریقہ ہے ؟ گھوڑوں نے پانی پیا اور اس بیچ میں نے آپ کو دل کی لگی بات کہی کہ سرکار کے کھیتی اور پشو پالن کے محکمے کتنے نکمے ہیں . اور پھر ہم چل پڑے .

آسمان پر کالی گھٹائیں چھانے لگ گئیں اور یہ دیکھئے بجلی بھی چمکنے لگی . راستے میں جو ایک گاؤں پڑا تو ہم نے سہارا ڈھونڈھا .

دور سے کسی نے آواز دی—" بڑھئے تیزی سے بڑھئے."

ہم نے دیکھا کہ قلعے جیسا کوئی پرانا مکان ہے جس کے دروازے پر لمبی داڑھی والا ایک مہنت بیٹھا ہوا ہے .

میں نے اپیل کرتے ہوئے چیخ کر کہا—" جو یہ طوفان آ رہا ہے اس سے بچنے کے لئے ہمیں ٹھکانا چاہئے . اطمینان رکھئے کہ ہم آپ کی کسی چیز کو نقصان نہیں پہنچائیں گے .

شان کے ساتھ اپنے ہاتھ سے اشارہ دیتے ہوئے اس نے جواب دیا—" بڑھئے بڑھئے."

تب میں نے آپ سے کہا—" چلئے' اس گاؤں میں چلیں اور ہمیں اس بوڑھے کی بابت کچھ باتیں پتہ چلیں گی."

सब चीज़ें पैदा करते हैं—सरकार से अपना हाथ खींच लेंगे तो वह क्या कर सकती है ? उसे आपकी बात माननी ही पड़ेगी."

"हां मानेगी, ज़रूर मानेगी." एक उम्मीद भरे ने कहा.

"ठीक यही बात है, बहन जी सच कहती हैं. मैं आपसे कहता हूँ कि हमें उनके साथ दिल्ली जाना है और इस काम में कोई कोताही नहीं करनी है," दूसरे ने कहा.

इतनी देर में गांव का मुखिया आ पहुँचा. वह पढ़ा लिखा आदमी है और राजकाज भी थोड़ा बहुत समझता है. वह हम से अलग में बात करना चाहता है.

हम उसको साथ ले कर ज़रा दूसरी तरफ़ चले गये और फिर पूछा—"कहो क्या बात है ?"

उसने कहा—"एक ज़माना था मैं बड़ा पक्का कांगरेसी था. लेकिन एक साल से ज़ियादा हुआ कि मैंने कांगरेस छोड़ दी और अब इसी उधेड़बुन में हूँ कि कौन सी पार्टी में शरीक होऊं. कांगरेस से तो मेरी तबियत एकदम ऊब गई है. जहां देखिये बेईमानी और रिश्वत. हमारा क्या हशर होने जा रहा है ? बिना रिश्वत के ज़रा सा भी काम नहीं होता. अगर चुंगी पर से बैलगाड़ी ले जानी हो तो चुंगी वालों को कुछ झुकाइये, चीनी मिल में अपना गन्ना देना हो या उसका पैसा लेना हो तो कुछ झुकाइये, सरकारी दफ़्तरों में, जब तक कुछ हाथ न गरम कीजिये वह आपकी कुछ सुनते ही नहीं. और तोबा तोबा, अदालतों तक में रिश्वत चलती है ! ओफ़ ओ ! रिश्वत ही रिश्वत ! रिश्वत का ही बोल बाला है और यह कमबख़्त कन्ट्रोल तो बेईमान अफ़सरों और व्योपारियों के हाथ की कठपुतली है. क्या इसी का नाम आज़ादी है ?" यह कह कर वह ठंडी सांस लेने लगा और फिर कहने लगा—"मैंने कम्युनिस्ट पार्टी को चिट्ठी भेजी है देखूं वहां से क्या जवाब आता है."

मैंने जवाब दिया—"तुम्हारे मन की हालत मैं समझ रही हूँ. लेकिन तुम इस पार्टी या उस पार्टी के फेर में मत पड़ो. सब पार्टियां गुलाबी बातें कहती हैं. मगर तुम्हारे मन का किसान राज इनमें से कोई नहीं देने वाला है. यह तो तुम्हें अपनी ताक़त से हासिल ही करना होगा."

इसके बाद वह कुछ सोचने लगा और फिर थोड़ी देर में ही कांगरेस सरकार को गाली देने लगता है.

"यही वजह है जो मैं बापू राज के साथ आपके पास आई हूं. लेकिन अब हमें चलना चाहिये क्योंकि देर काफ़ी हो गई है."

मुखिया ने कहा—"अगर आप इस सरकार को सुधार सकती हैं तो मैं आपके साथ हूं. लेकिन आपको जल्दी करनी

ب چیزیں پیدا کرتے ہیں—سرکار سے اپنا ہاتھ کھینچ
لیں گے تو وہ کیا کر سکتی ہے ؟ اسے آپ کی بات ماننی
ہی پڑیگی ."
" ہاں مانے گی ' ضرور مانے گی ." ایک امید
بھرے نے کہا .
" ٹھیک یہی بات ہے ' بہن جی سچ کہتی ہیں .
میں آپ سے کہتا ہوں کہ ہمیں ان کے ساتھ دلی جانا
ہے اور اس کام میں کوئی کوتاہی نہیں کرنی ہے ' " دوسرے
نے کہا .
اتنی دیر میں گاؤں کا مکھیا آپہنچا . وہ پڑھا لکھا
آدمی ہے اور راج کاج بھی تھوڑا بہت سمجھتا ہے . وہ
ہم سے الگ میں بات کرنا چاہتا ہے .
ہم اسکو ساتھ لے کر ذرا دوسری طرف چلے گئے اور پھر
پوچھا—" کہو کیا بات ہے؟"
اس نے کہا—" ایک زمانہ تھا میں بڑا پکا کانگریسی
تھا . لیکن ایک سال سے زیادہ ہوا کہ میں نے کانگریس
چھوڑ دی اور اب اسی ادھیڑ بن میں ہوں کہ کون سی پارٹی
میں شریک ہوؤں . کانگریس سے تو میری طبیعت ایک
دم اوب گئی ہے . جہاں دیکھئے بے ایمانی اور رشوت . ہمارا
کیا حشر ہونے جا رہا ہے ؟ بنا رشوت کے ذرا سا بھی کام
نہیں ہوتا . اگر چنگی پر سے بیل گاڑی لے جانی ہو تو
چنگی والوں کو کچھ جھکایئے ' چینی مل میں اپنا گنا
دینا ہو یا اس کا پیسہ لینا ہو تو کچھ جھکایئے ' سرکاری
دفتروں میں جب تک کچھ ہاتھ نہ گرم کیجئے وہ آپ
کی کچھ سنتے ہی نہیں . اور توبہ توبہ ' عدالتوں تک میں
رشوت چلتی ہے ! اوف او ! رشوت ہی رشوت ! رشوت کا
ہی بول بالا ہے اور یہ کمبخت کنٹرول تو بے ایمان
افسروں اور بیوپاریوں کے ہاتھ کی کٹھ پتلی ہے . کیا اسی
کا نام آزادی ہے ؟" یہ کہکر وہ ٹھنڈی سانس لینے لگا اور
پھر کہنے لگا—" میں نے کمیونسٹ پارٹی کو چٹھی
بھیجی ہے دیکھوں وہاں سے کیا جواب آتا ہے ."
میں نے جواب دیا—" تمہارے من کی حالت میں
سمجھ رہی ہوں . لیکن تم اس پارٹی یا اس پارٹی کے پھیر
میں مت پڑو . سب پارٹیاں گلابی باتیں کرتی ہیں .
مگر تمہارے من کا کسان راج ان میں سے کوئی نہیں دینے
والا ہے . یہ تو تمہیں اپنی طاقت سے حاصل ہی کرنا
ہوگا ."
اس کے بعد وہ کچھ سوچنے لگا اور پھر تھوڑی دیر میں
ہی کانگریس سرکار کو گالی دینے لگتا ہے .
" یہی وجہ ہے جو میں باپو راج کے ساتھ آپ کے پاس
آئی ہوں . لیکن اب ہمیں چلنا چاہئے کیونکہ دیر کافی
ہو گئی ہے ."
مکھیا نے کہا—" اگر آپ اس سرکار کو سدھار سکتی
ہیں تو میں آپ کے ساتھ ہوں . لیکن آپ کو جلدی کرنی

(नीचे जो मैं कहानी कहने जा रही हूं उसकी सब घटनायें और चीज़ें सच्ची हैं और ऐसी हैं जिन्हें मैंने अपने हाल के दौरे में अनुभव किया था. अलबत्ता मैंने इतना ज़रूर किया है कि सारी घटनाओं को चौबीस घंटे के अन्दर रख देने के लिए उनका सिलसिला कुछ इधर उधर कर दिया है या उन्हें कम करके उनका निचोड़ रख दिया है. जो कोई इस चिट्ठी को पढ़े वही अपने को घोड़े पर सवार मेरा साथी समझ ले.)

बसन्त का मौसम है, सुबह का वक़्त, उत्तर भारत का एक गांव और ठंडी हवा चल रही है. हम लोग तड़के ही उठे, घोड़ों को खिलाया और उनका खुर हरा किया. हमने भी कुछ नाश्ता किया और फिर अपने सफ़र का सब सामान जैसे बिस्तर बर्तन वग़ैरा एक बैलगाड़ी में लाद दिया और अपनी टोली के दो तीन आदमियों को उसके साथ कर दिया और गाड़ी हमारे अगले मुक़ाम के लिए रवाना हो गई. हम लोग ज़रा ठहर जायें क्योंकि हमारा घोड़ा हमें बहुत जल्दी पहुंचा सकता है. आइये हम ज़रा इस गांव के स्कूल में चलें, जहां हम रात को ठहरे थे. इससे हमें गांव वालों से बात करने का मौक़ा मिलेगा और कल रात जो हमने मीटिंग की थी उसका उन पर क्या असर पड़ा यह भी मालूम हो जायगा. हमारी कल रात की मीटिंग में कोई पांच सौ लोग आये थे जिसमें हमने बापू राज की ख़ास ख़ास बातें बताई थीं. और जब हमने उनसे यह कहा कि यह चीज़ें हमने परचे पर छपवा ली हैं तो उस पर्चे की इतनी मांग हुई कि हम पूरी भी न कर सके.

हां तो हम स्कूल में आ गये. एक दो चारपाई पड़ी हैं, एक दो तख़्त. धीरे धीरे किसान भाई आने लगे.

उनमें से एक कहता है—"कल रात की सभा तो बड़ी अच्छी रही."

दूसरे ने कहा—"हां, बहन जी सच तो कहती हैं. हम सब को मिल जाना चाहिये और तभी हम इस सरकार को बदल सकते हैं. दिल्ली को कूच करने की बात मुझे बहुत पसन्द है. अगर हम हज़ारों की तादाद में जायेंगे तो सरकार को हमारी बात सुननी पड़ेगी."

इस बीच एक बूढ़ा किसान बोल उठा—"इतना कैसे मान लिया? बिना सत्याग्रह के वह नहीं सुनने वाली है."

"नहीं नहीं, सुनेगी कैसे नहीं."

"मैं तुमसे कहता हूं कि हमें सत्याग्रह करना पड़ेगा." बूढ़े किसान ने ज़ोर देकर कहा.

"हमें यही उम्मीद रखनी चाहिये कि वह सुनेगी." मैं बोली—"लेकिन आप सबको इस पक्के इरादे के साथ आना चाहिये कि अगर उन्होंने बात नहीं सुनी तो हम सत्याग्रह करेंगे, जब आप लोग—जो जीवन की बुनियादी ज़रूरत की

(نیچے جو میں کہانی کہنے جا رہی ہوں اسکی سب گھٹنائیں اور چیزیں سچی ہیں اور ایسی ہیں جنہیں میں نے اپنے حال کے دورے میں انوبھو کیا تھا. البتہ میں نے اتنا ضرور کیا ہے کہ ساری گھٹناؤں کو چوبیس گھنٹے کے اندر رکھ دینے کے لئے انکا سلسلہ کچھ ادھر ادھر کر دیا ہے یا انہیں کم کر کے ان کا نچوڑ رکھ دیا ہے. جو کوئی اس چٹھی کو پڑھے وہی اپنے کو گھوڑے پر سوار میرا ساتھی سمجھ لے.)

بسنت کا موسم ہے، صبح کا وقت، اتر بھارت کا ایک گاؤں اور ٹھنڈی ہوا چل رہی ہے. ہم لوگ تڑکے ہی اٹھے، گھوڑوں کو کھلایا اور انکا کھر ہرا کیا. ہم نے بھی کچھ ناشتہ کیا اور پھر اپنے سفر کا سب سامان جیسے بستر برتن وغیرہ ایک بیل گاڑی میں لاد دیا اور اپنی ٹولی کے دو تین آدمیوں کو اس کے ساتھ کر دیا اور گاڑی ہمارے اگلے مقام کے لئے روانہ ہو گئی. ہم لوگ ذرا ٹھہر جائیں کیونکہ ہمارا گھوڑا ہمیں بہت جلدی پہنچا سکتا ہے. آئیے ہم ذرا اس گاؤں کے اسکول میں چلیں، جہاں ہم رات کو ٹھہرے تھے. اس سے ہمیں گاؤں والوں سے بات کرنے کا موقعہ ملیگا اور کل رات جو ہم نے میٹنگ کی تھی اسکا ان پر کیا اثر پڑا یہ بھی معلوم ہو جائیگا. ہماری کل رات کی میٹنگ میں کوئی پانچ سو لوگ آئے تھے جس میں ہم نے باپو راج کی خاص خاص باتیں بتائی تھیں اور جب ہم نے ان سے یہ کہا کہ یہ چیزیں ہم نے پرچے پر چھپوا لی ہیں تو اس پرچے کی اتنی مانگ ہوئی کہ ہم پوری بھی نہ کر سکے.

ہاں تو ہم اسکول میں آگئے. ایک دو چار پائی پڑی ہیں، ایک دو تخت. دھیرے دھیرے کسان بھائی آنے لگے.

انمیں سے ایک کہتا ہے—"کل رات کی سبھا تو بڑی اچھی رہی."

دوسرے نے کہا—"ہاں، بہن جی سچ تو کہتی ہیں. ہم سب کو مل جانا چاہئے اور تبھی ہم اس سرکار کو بدل سکتے ہیں. دلی کو کوچ کرنے کی بات مجھے بہت پسند ہے. اگر ہم ہزاروں کی تعداد میں جائینگے تو سرکار کو ہماری بات سننی پڑے گی."

اس بیچ ایک بوڑھا کسان بول اٹھا—"اتنا کیسے مان لیا؟ بنا ستیاگرہ کے وہ نہیں سننے والی ہے."

"نہیں نہیں، سنے گی کیسے نہیں."

"میں تم سے کہتا ہوں کہ ہمیں ستیاگرہ کرنا پڑیگا." بوڑھے کسان نے زور دیکر کہا.

"ہمیں یہی امید رکھنی چاہئے کہ وہ سنے گی." میں بولی—"لیکن آپ سب کو اس پکے ارادے کے ساتھ آنا چاہئے کہ اگر انہوں نے بات نہیں سنی تو ہم ستیاگرہ کرینگے. جب آپ لوگ—جو جیون کی بنیادی ضرورت کی

कांगरेस नेताओं के नाम खुली चिट्ठी

मेरे प्यारे भाइयो !

हाथ जोड़ कर मेरी आपसे बिनती है कि अपना पूरा ध्यान मेरी तरफ़ दीजिये. और सुनिये इस कहानी को जो मैं कहना चाहती हूं. एक ज़माना था कि हम सब साथ साथ, कंधे से कंधा मिलाकर, एक ही मक़सद के लिए लड़ते थे. इसलिये मेरी तरफ़ टेढ़ी निगाह से न देख कर मुझे अपनी साथिन समझिये जिसकी यह कोशिश है कि देहात की जो असली हालत है उसको आप कुछ महसूस कर सकें और उससे वाक़िफ़ होकर आपके अन्दर—आप जो चोटी पर हैं और कुल काम धाम की बागडोर जिनके हाथ में है—यह चेतना पैदा हो जाय कि आप अपनी नीति और अमल में एक बेलाग और इन्क़लाबी तबदीली कर सकें. बिना इसके कांगरेस ज़रूर ही ख़त्म हो जायगी क्योंकि देहात की आम जनता में—जो इसके हज़ारों लाखों की तदाद में वोटर हैं—इसका जो एक ज़माने में असर था वह ख़त्म सा हो गया है.

मैं कोई हल्की बात नहीं कह रही हूं, न आप इसे ऐसी चीज़ ही समझें जैसी कि राजनीति वाले विरोधी पार्टियों से कहा करते हैं. सच यह है अगर कांगरेस को अपना पिछला नाम रोशन रखना है तो उसे किसी मामूली राज काजी या सियासी पार्टी की तरह नहीं होना चाहिये बल्कि उसे जनता का निडर रहबर और सेवक होना चाहिये. इसी भावना से मैं आपको यह चिट्ठी लिख रही हूँ क्योंकि उम्मीद न हो कर भी मुझे यह उम्मीद है कि आप बापू के बताये रास्ते पर ख़ुद ब ख़ुद चलेंगे और चल सकते हैं.

मेरा यक़ीन है कि हिन्दुस्तान के किसानी समाज को आज की हालत से बहुत गहरा और ख़तरनाक असन्तोष है. मैं यह इस आधार पर कह रही हूँ कि यहां के देहाती जीवन और उसके नज़रिये से मेरा बहुत पुराना परिचय है. हाल ही में पच्छिम यू पी. के गांव में जो मैं घोड़े पर घूमी तो उससे मेरा यह विश्वास सोलह आने और भी पक्का हो गया. मैं इस चिट्ठी में यही कोशिश करूंगी कि आपकी आंखों के सामने वह तस्वीर पेश करूं जो मैंने ख़ुद देखी है और आपके कानों में उस आवाज़ की गूंज पहुँचा दूँ जो मैंने सुनी है.

आइये, मेरे साथ आइये, हम दोनों घोड़े पर सवार हो लें और फिर देहात की हालत देखें. आप में से जो लोग घोड़े की सवारी सचमुच नहीं जानते हैं वह दिमाग़ी तौर से मेरे साथ बैठ सकते हैं और इत्मिनान रखिये कि आपको काफ़ी मज़ा आयगा'

کانگریس نیتاؤں کے نام کھلی چٹھی

میرے پیارے بھائیو !

ہاتھ جوڑ کر میری آپ سے بنتی ہے کہ اپنا پورا دھیان میری طرف دیجئے . اور سنیئے اس کہانی کو جو میں کہنا چاہتی ہوں . ایک زمانہ تھا کہ ہم سب ساتھ ساتھ کندھے سے کندھا ملا کر ایک ہی مقصد کے لئے لڑتے تھے . اس لئے میری طرف ٹیڑھی نگاہ سے نہ دیکھکر مجھے اپنی ساتھن سمجھئے جس کی یہ کوشش ہے کہ دیہات کی جو اصلی حالت ہے اسکو آپ کچھ محسوس کر سکیں اور اس سے واقف ہوکر آپ کے اندر—آپ جو چوٹی پر ہیں اور کل کام دھام کی باگڈور جن کے ہاتھ میں ہے—یہ چیتنا پیدا ہوجائے کہ آپ اپنی نیتی اور عمل میں ایک بے لاگ اور انقلابی تبدیلی کر سکیں. بنا اس کے کانگریس ضرور ہی ختم ہو جائیگی کیونکہ دیہات کی عام جنتا میں—جو اس کے ہزاروں لاکھوں کی تعداد میں ووٹر ہیں—اس کا جو ایک زمانے میں اثر تھا وہ ختم سا ہو گیا ہے .

میں کوئی ہلکی بات نہیں کہہ رہی ہوں' نہ آپ اسے ایسی چیز ہی سمجھیں جیسی کہ راج نیت والے ورودھی پارٹیوں سے کہا کرتے ہیں . سچ یہ ہے اگر کانگریس کو اپنا پچھلا نام روشن رکھنا ہے تو اسے کسی معمولی راجکاجی یا سیاسی پارٹی کی طرح نہیں ہونا چاہئے بلکہ اسے جنتا کا نڈر رہبر اور سیوک ہونا چاہئے . اسی بھاونا سے میں آپ کو یہ چٹھی لکھ رہی ہوں کیونکہ امید نہ ہو کر بھی مجھے یہ امید ہے کہ آپ باپو کے بتائے راستے پر خود بخود چلیں گے اور چل سکتے ہیں .

میرا یقین ہے کہ ہندستان کے کسانی سماج کو آجکی حالت سے بہت گہرا اور خطرناک اسنتوش ہے. میں یہ اس آدھار پر کہہ رہی ہوں کہ یہاں کے دیہاتی جیون اور اس کے نظریئے سے میرا بہت پرانا پریچے ہے . حال ہی میں پچھم یو . پی کے گاؤں میں جو میں گھوڑے پر گھومی تو اس سے میرا یہ وشواس سولہ آنے اور بھی پکا ہوگیا. میں اس چٹھی میں یہی کوشش کرونگی کہ آپ کی آنکھوں کے سامنے وہ تصویر پیش کروں جو میں نے خود دیکھی ہے اور آپ کے کانوں میں اس آواز کی گونج پہنچا دوں جو میں نے سنی ہے .

آیئے' میرے ساتھ آیئے' ہم دونوں گھوڑے پر سوار ہو لیں اور پھر دیہات کی حالت دیکھیں . آپ میں سے جو لوگ گھوڑے کی سواری سچ مچ نہیں جانتے ہیں وہ دماغی طور سے میرے ساتھ بیٹھ سکتے ہیں اور اطمینان رکھیئے کہ آپ کو کافی مزہ آئے گا .

हैसियत को समझेंगे. इतना मैं ज़रूर जानता हूँ कि सारे भारत की भाषा न उर्दू हो सकती थी न हिन्दी हो सकेगी, क्योंकि इनमें वह मैलान या झुकाव नहीं है जो इन्हें सारे मुल्क की भाषा बना सके. सारे मुल्क की भाषा सिर्फ़ हिन्दुस्तानी हो सकती है जिस को तरक़्क़ी देने या फैलाने के लिए मुख़्तलिफ़ लोग कोशिश कर रहे हैं. ज़रूरत इस बात की है कि इन कोशिशों को यकजा किया जाय, आम किया जाय और विद्याई सांचे में ढाल कर इस क़ाबिल बनाया जाय कि वह अपने बल बूते पर सफल हों"

अगर हम हिन्दी और उर्दू के मुक़ाबले में हिन्दुस्तानी को बढ़ाना चाहते हैं और हिन्दुस्तानी को भी बड़े कारोबार, ऊंचे समाज की ज़बान बनाना चाहते हैं तो हमारे लिए हज़ारों की तैदाद में नये लफ़्ज़ों और इस्तलाहों का बनाना, ढालना और गढ़ना लाज़मी है. इसके लिए ऐसे शब्द बनाना पड़ेंगे जिन का रंग व रूप और आत्मा या भीतरी सांचा हिन्दुस्तानी हो.

इन ही विचारों से मुतास्सिर हो कर मैं भी हिन्दुस्तानी के सेवा दल में शरीक हो गया हूँ और अपनी हैसियत के मुआफ़िक़ हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने के लिए भांत भांत के उपायों पर ग़ौर करता रहता हूँ. इस बारे में कोई तजवीज़ें सुनने और हिन्दी और उर्दू रिसालों के लेख पढ़ने के अलावा मैंने ख़ुद भी ग़ौर किया है. मुझे बार बार यह एहसास हुआ कि हिन्दी और उर्दू में यकसां तौर पर चल सकने वाले लफ़्ज़ बनाने के असूल साफ़ और सही तौर पर नहीं मुक़र्रर किये गये, और इन असूलों पर बहुत कम लफ़्ज़ बनाये गये हैं. इसलिये हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने या हिन्दी और उर्दू में यकसां तौर पर चल सकने वाले लफ़्ज़ों की तैदाद बढ़ाने के लिए हिन्दुस्तानी शब्दयात के असूल साफ़ लफ़्ज़ों में मुक़र्रर करने चाहियें और निडर हो कर उन असूलों के मुताबिक़ सैकड़ों लफ़्ज़ और कई हज़ार इस्तलाहें बनानी चाहियें ताकि हिन्दुस्तानी में नये नये लफ़्ज़ और इस्तलाहें बनाने की बुनियाद क़ायम हो जाय और धीरे धीरे हिन्दुस्तानी में हर क़िस्म के लफ़्ज़ चलना पा कर हिन्दुस्तानी को कारोबारी, समाजी, राजकाजी और विद्याई भाषा बना सकें.

इन ही बातों को जिन में से कुछ अपनी हैं, कुछ पराई हैं, कुछ अपनाई हैं, मैं आगे पेश कर रहा हूँ. हर असूल को समझाने के लिए जो मिसालें दी गई हैं उनमें भी कई दूसरों की और बाज़ अपनी हैं. दूसरों के और अपने बनाये हुए शब्दों को ज़ाहिर करना बेकार था. भाषा के जौहरी उनको ख़ुद ही अलग कर सकेंगे और असल में यह देखना चाहिये कि लफ़्ज़ कैसे हैं न यह कि किसके बनाये हैं.

(बाक़ी फिर)

اہمیت کو سمجھینگے ۔ اتنا میں ضرور جانتا ہوں کہ سارے بھارت کی بھاشا نہ اُردو ہوسکتی تھی نہ ہندی ہوسکیگی‘ کیوں کہ ان میں وہ میلان یا جھکاو نہیں ہے جو انہیں سارے ملک کی بھاشا بنا سکے ۔ سارے ملک کی بھاشا صرف ہندستانی ہوسکتی ہے جس کو ترقی دینے یا پھیلانے کے لئے مختلف لوگ کوشش کر رہے ہیں۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ان کوششوں کو یکجا کیا جائے‘ آم کیا جائے اور ودیائی سانچے میں ڈھال کر اس قابل بنایا جائے کہ وہ اپنے بل بوتے پر سپھل ہوں ۔

اگر ہم ہندی اور اُردو کے مقابلے میں ہندستانی کو بڑھانا چاہتے ہیں اور ہندستانی کو بھی بڑے کاروبار‘ اونچے سماج کی زبان بنانا چاہتے ہیں تو ہمارے لئے ہزاروں کی تعداد میں نئے لفظوں اور اصطلاحوں کا بنانا‘ ڈھالنا اور گڑھنا لازمی ہے ۔ اس کے لئے ایسے شبد بنانا پڑینگے جن کا رنگ و روپ اور آتما یا بھیتری سانچا ہندستانی ہو ۔

ان ہی بچاروں سے متاثر ہوکر میں بھی ہندستانی کے سیوا دل میں شریک ہوگیا ہوں اور اپنی حیثیت کے موافق ہندستانی کو ترقی دینے کے لئے بھانت بھانت کے اُپایوں پر غور کرتا رہتا ہوں ۔ اس بارے میں کئی تجویزیں سننے اور ہندی اور اُردو رسالوں کے لیکھ پڑھنے کے علاوا میں نے خد بھی غور کیا ہے ۔ مجھے بار بار یہ احساس ہوا کہ ہندی اور اُردو میں یکساں طور پر چل سکنے والے لفظ بنانے کے اصول صاف اور صحیح طور پر نہیں مقرر کئے گئے‘ اور ان اصولوں پر بہت کم لفظ بنائے گئے ہیں۔ اس لئے ہندستانی کو ترقی دینے یا ہندی اور اُردو میں یکساں طور پر چل سکنے والے لفظوں کی تعداد بڑھانے کے لئے ہندستانی شبدیات کے اصول صاف لفظوں میں مقرر کرنے چاہئیں اور نڈر ہوکر اُن اصولوں کے مطابق سیکڑوں لفظ اور کئی ہزار اصطلاحیں بنانی چاہئیں تاکہ ہندستانی میں نئے نئے لفظ اور اصطلاحیں بنانے کی بنیاد قائم ہو جائے اور دھیرے دھیرے ہندستانی میں ہر قسم کے لفظ چلن پاکر ہندستانی کو کاروباری‘ سماجی‘ راج کاجی اور ودیائی بھاشا بنا سکیں ۔

ان ہی باتوں کو جن میں سے کچھ اپنی ہیں‘ کچھ پرائی ہیں‘ کچھ اپنائی ہیں‘ میں آگے پیش کر رہا ہوں۔ ہر اصول کو سمجھانے کے لئے جو مثالیں دی گئی ہیں اُن میں بھی کئی دوسروں کی اور باز اپنی ہیں ۔ دوسروں کے اور اپنے بنائے ہوئے شبدوں کو ظاہر کرنا بیکار تھا۔ بھاشا کے جوہری اُن کو خد ہی الگ کرسکینگے اور اصل میں یہ دیکھنا چاہئے کہ لفظ کیسے ہیں نہ یہ کہ کس کے بنائے ہیں۔

(باقی پھر)

मुल्कों के तजुरबों और बड़े बड़े माहिरों का पक्का फ़ैसला है कि तालीम का ज़रिया वह भाषा होनी चाहिये जो लोगों की मादरी ज़बान यानी क़ुदरती तौर पर सीखी हुई भाषा हो. क़ुदरती तौर पर सीखी और समझी जा सकने वाली भाषा हम लोगों की हद तक न तो कठियल उर्दू है और न कठिन हिन्दी, बल्कि आसान और सबके समझ में आने वाली हिन्दुस्तानी है. इसलिये तालीम का ज़रिया हमारे लिए हिन्दुस्तानी मुनासिब है.

सभ्याताई क़द्रों के बदलने से लोगों के ख़्याल भी बदल रहे हैं. हर आदमी ज़ियादा से ज़ियादा आराम से, सुख चैन की ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है और सुख चैन के लिए धन दौलत का हासिल करना ज़रूरी समझता है. आज कल ख़ुशी और ठाठ चैन और मौज की क़द्रें बढ़ रही हैं. इनको हासिल करने के लिए तालीम ज़रूरी है और तालीम के लिये भाषा लाज़मी है. ग़रज़ नये ज़माने की सभ्यता में ज़बान असल चीज़ नहीं रही बल्कि असल चीज़ तक पहुँचने का ज़रिया हो गई है. धन दौलत की क़द्र बढ़ गई. निजी हैसियत से भाषा की क़द्र कम हो गई है.

जब तक तालीम से कम लोगों को सरोकार था यह ज़ियादा हरज की बात न थी कि भाषा मुश्किल होती. जब से तालीम सबके सरोकार की चीज़ हो गई है यह सवाल बहुत अहम हो गया है कि ज़बान को आसान किया जाय और मजबूरन मुश्किल ज़बान इस्तेमाल करना पड़े तो मुश्किल ज़बान कम से कम मुश्किल हो. मौजूदा ज़माने में लोगों पर धन दौलत तालीम और कलचर का इतना बार है कि वह इनके अलावा भाषा के बार को उठाना नहीं चाहते. ख़ास कर जब कि उन्हें मालूम होता है कि भाषा के बार को हल्का किया जा सकता है.

दुर्भाग्य से हिन्दी वाले और उर्दू प्रेमी दोनों अपने अपने भाशाई बार को बढ़ा रहे हैं. इसलिये मजबूर हो कर हिन्दुस्तानी के पक्षपाति सब के फ़ायदे और सहूलत के लिए इस मिलवां भाषा को तरक़्क़ी देना चाहते हैं, जिसे और कुछ नहीं तो सिर्फ़ इसलिये पनपाना और बचाना हमारा फ़र्ज़ है कि वह महात्मा गांधी के रचनात्मक कामों यानी क़ौमी तामीरी प्रोग्राम का जुज़ थी. अगर आप मानते हैं कि हिन्दी और उर्दू की फूट को कम करना चाहिये और हिन्दी उर्दू में यकसां तौर पर चल सकने वाले शब्दों की तैदाद बढ़ानी चाहिये तो सिवाय हिन्दुस्तानी अख़्तयार करने के और कोई चारा नहीं !

मैं नहीं जानता कि हिन्दुस्तानी को इस क़दर तरक़्क़ी होगी कि वह हिन्दी और उर्दू से ज़ियादा बलवान हो जायेगी; मैं नहीं जानता कि हमारे देस के हज़ारों लाखों लोग सच्चे दिल से हिन्दुस्तानी को अपनायेंगे और राज काजी बंटवारे के होते हुए सारे भारत के लिए एक भाषा की ज़रूरत और

ملکوں کے تجربوں اور بڑے بڑے ماہروں کا پکا فیصلہ ہے کہ تالیم کا ذریعہ وہ بھاشا ہونی چاہئے جو لوگوں کی مادری زبان یانی قدرتی تور پر سیکھی ہوئی بھاشا ہو۔ قدرتی تور پر سیکھی اور سمجھی جا سکنے والی بھاشا ہم لوگوں کی حد تک نہ تو کٹھل اردو ہے اور نہ کٹھن ہندی، بلکہ آسان اور سب کے سمجھ میں آنے والی ہندستانی ہے۔ اس لئے تالیم کا ذریعہ ہمارے لئے ہندستانی مناسب ہے۔

سبھیتائی قدروں کے بدلنے سے لوگوں کے خیال بھی بدل رہے ہیں۔ ہر آدمی زیادا سے زیادا آرام سے، سکھ چین کی زندگی گزارنا چاہتا ہے اور سکھ چین کے لئے دھن دولت کا حاصل کرنا ضروری سمجھتا ہے۔ آج کل خوشی اور ٹھاٹھ چین اور موج کی قدریں بڑھ رہی ہیں۔ ان کو حاصل کرنے کے لئے تالیم ضروری ہے اور تالیم کے لئے بھاشا لازمی ہے۔ غرض نئے زمانے کی سبھیتا میں زبان اصل چیز نہیں رہی بلکہ اصل چیز تک پہنچنے کا ذریعہ ہوگئی ہے۔ دھن دولت کی قدر بڑھ گئی۔ نجی حیثیت سے بھاشا کی قدر کم ہوگئی ہے۔

جب تک تالیم سے کم لوگوں کو سروکار تھا یہ زیادہ حرج کی بات نہ تھی کہ بھاشا مشکل ہوتی۔ جب سے تالیم سب کے سروکار کی چیز ہوگئی ہے یہ سوال بہت اہم ہوگیا ہے کہ زبان کو آسان کیا جائے اور مجبوراً مشکل زبان استعمال کرنا پڑے تو مشکل زبان کم سے کم مشکل ہو۔ موجودہ زمانے میں لوگوں پر دھن دولت تالیم اور کلچر کا اتنا بار ہے کہ وہ ان کے علاوہ بھاشا کے بار کو اٹھانا نہیں چاہتے۔ خاص کر جب کہ انہیں معلوم ہوتا ہے کہ بھاشا کے بار کو ہلکا کیا جاسکتا ہے۔

دربھاگیہ سے ہندی والے اور اردو پریمی دونوں اپنے اپنے بھاشائی بار کو بڑھا رہے ہیں۔ اس لئے مجبور ہوکر ہندستانی کے پکش پاتی سب کے فائدے اور سہولت کے لئے اس ملواں بھاشا کو ترقی دینا چاہتے ہیں، جسے اور کچھ نہیں تو صرف اس لئے پنپانا اور بچانا ہمارا فرض ہے کہ وہ مہاتما گاندھی کے رچناتمک کاموں یانی قومی تامیری پروگرام کا جز تھی۔ اگر آپ مانتے ہیں کہ ہندی اور اردو کی پھوٹ کو کم کرنا چاہئے اور ہندی اردو میں یکساں تور پر چل سکنے والے شبدوں کی تعداد بڑھانی چاہئے تو سوائے ہندستانی اختیار کرنے کے اور کوئی چارا نہیں!

میں نہیں جانتا کہ ہندستانی کو اس قدر ترقی ہوگی کہ وہ ہندی اور اردو سے زیادہ بلوان ہو جائیگی؛ میں نہیں جانتا کہ ہمارے دیس کے ہزاروں لاکھوں لوگ سچے دل سے ہندستانی کو اپنائینگے اور راجکاجی بٹوارے کے ہوتے ہوئے سارے بھارت کے لئے ایک بھاشا کی ضرورت اور

मामेले में पड़ जाता. जहां जहां उर्दू बोलने वाले हैं वह ...दियों से हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं और आज भी वही वराने गैर हिन्दी इलाक़ों में हिन्दी के मुस्तक़िल अड्डे या मोहरे हैं. इस बात को मुकरना हक़ीक़त को झुटलाना है. आधी उर्दू और तीन चौथाई हिन्दुस्तानी हिन्दी है. इसलिये उर्दू की तरक़्क़ी और हिन्दुस्तानी के पनपने से लाज़मी तौर ...र हिन्दी भी फैलती है. तमाम गैर हिन्दी इलाक़ों में उर्दू ...ौर हिन्दुस्तानी बोलने वालों की वजह से हिन्दुस्तानी का ...ादर बढ़ा. चाहे हिन्दी वाले इस बात से इनकार करें और ...हिन्दुतानी के एहसान को न मानें मगर सिर्फ़ इनकार करने ...े हक़ीक़त नहीं बदलती.

जब हिन्दुस्तानी से हिन्दी की अहमियत बढ़ी तो आज ...हिन्दी की मुख़ालफ़त क्यों की जा रही है और हिन्दुस्तानी ...ा प्रचार क्यों किया जा रहा है? इसका जवाब यह है कि ...न्दी की मुख़ालफ़त नहीं हो रही बल्कि शुद्ध हिन्दी को ...लत समझ कर और शुद्ध हिन्दी को आख़ीर में ना काम ...ने वाली तहरीक समझ कर आसान हिन्दी यानी हिन्दु-...नानी का प्रचार किया जा रहा है, जो जनता की भाशा और ...म तौर पर बोली जाने वाली हिन्दी ही है. अलबत्ता हिन्दु-...तानी अब तक बोल चाली भाशा थी और आम कामों और ...मलों के निबटाने में बोली जाती थी. जैसे जैसे जीवन ...यार बढ़ता जा रहा है, कारोबार फैलते जा रहे हैं, कारख़ाने ...यम हो रहे हैं, तालीम फैल रही है. विद्या से सभ्यताई ...ुले हल करने में मदद ली जा रही है, यह ज़रूरत बढ़ ...ी है और ज़ियादा गहराई से महसूस हो रही है कि देसी ...शाओं को विद्याई, सनअती, कारबारी, समाजी, ब्योपारी ...र साइन्सी कामों में काम आ सकने के क़ाबिल बनाया ...य. इसी सिलसिले में हिन्दुस्तानी को भी काम काजी ...ने की ज़रूरत आ पड़ी है. ख़ास कर इसलिये कि जिन ...सूलों पर हिन्दी और उरदू को तरक़्क़ी दी जा रही है वह ...न्दुस्तानी प्रेमियों के नज़दीक ठीक नहीं हैं.

क्यों ठीक नहीं हैं? इसलिये कि जीवन मेयार के साथ ...भ्यता भी बदल रही है और नई पुरानी चीज़ों की क़दरें ... बढ़ रही हैं. तालीम आम हो रही है. पहले तालीम सिर्फ़ ...द लोगों के काम आती थी, आज कल बहुत सों के काम ...ी है. दो चार देहाइयों बाद वह सबके लिए ज़रूरी हो ...गी. जब तक तालीम चन्द आदमियों का दिल बहलावा ...काम काजी ज़रिया थी यह सवाल कम अहम था कि ...म की ज़बान कैसी होनी चाहिये और क्या होनी ...िये? जब से तालीम बहुत सों के लिए ज़रूरी हो गई है ...र उसको सौ फ़ीसदी आबादी के लिए लाज़मी करना ...ज और राजकाज का मक़सद ठहरा है तालीम की ...मियत के साथ साथ इस सवाल की अहमियत बढ़ गई ...तालीम की ज़बान क्या और कैसी होनी चाहिये. कई

جھمیلے میں پڑجاتا. جہاں جہاں اُردو بولنےوالے ہیں وہ سدیوں سے ہندی کا پرچار کر رہے ہیں اور آج بھی یہی گھرانے غیر ہندی علاقوں میں ہندی کے مستقل اڈے یا مہرے ہیں ۔ اس بات کو مکرنا حقیقت کو جھٹلانا ہے ۔ آدھی اُردو اور تین چوتھائی ہندستانی ہندی ہے ۔ اس لئے اُردو کی ترقی اور ہندستانی کے پنپنے سے لازمی طور پر ہندی بھی پھیلتی ہے ۔ تمام غیر ہندی علاقوں میں اُردو اور ہندستانی بولنے والوں کی وجہ سے ہندستانی کا آدر بڑھا ۔ چاہے ہندی والے اِس بات سے انکار کریں اور ہندستانی کے احسان کو نہ مانیں مگر صرف انکار کرنے سے حقیقت نہیں بدلتی۔

جب ہندستانی سے ہندی کی اہمیت بڑھی تو آج ہندی کی مخالفت کیوں کی جا رہی ہے اور ہندستانی کا پرچار کیوں کیا جا رہا ہے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ ہندی کی مخالفت نہیں ہو رہی بلکہ شدھ ہندی کو غلط سمجھکر اور شدھ ہندی کو آخر میں ناکام ہونے والی تحریک سمجھکر آسان ہندی یانی ہندستانی کا پرچار کیا جا رہا ہے، جو جنتا کی بھاشا اور آم طور پر بولی جانے والی ہندی ہی ہے ۔ البتہ ہندستانی اب تک بول چالی بھاشا تھی اور آم کاموں اور معاملوں کے نپٹانے میں بولی جاتی تھی ۔ جیسے جیسے جیون میار بڑھتا جا رہا ہے، کاروبار پھیلتے جا رہے ہیں، کارخانے قائم ہو رہے ہیں ۔ تعلیم پھیل رہی ہے ۔ ودیا سے سبھیتائی مسئلے حل کرنے میں مدد لی جا رہی ہے، یہ ضرورت بڑھ رہی ہے اور زیادہ گہرائی سے محسوس ہو رہی ہے کہ دیسی بھاشاؤں کو ودیائی، صنعتی، کاروباری، سماجی، بیوپاری اور سائنسی کاموں میں کام آ سکنے کے قابل بنایا جائے ۔ اسی سلسلے میں ہندستانی کو ترقی دینے اور ہندستانی کو بھی کام کاجی بنانے کی ضرورت آ پڑی ہے ۔ خاص کر اِس لئے کہ جن اصولوں پر ہندی اور اُردو کو ترقی دی جا رہی ہے وہ ہندستانی پریمیوں کے نزدیک ٹھیک نہیں ہیں ۔

کیوں ٹھیک نہیں ہیں؟ اس لئے کہ جیون میار کے ساتھ سبھیتا بھی بدل رہی ہے اور نئی پرانی چیزوں کی قدریں بھی بڑھ رہی ہیں ۔ تعلیم عام ہو رہی ہے ۔ پہلے تعلیم صرف چند لوگوں کے کام آتی تھی، آجکل بہت سوں کے کام آتی ہے ۔ دو چار دہائیوں بعد وہ سب کے لئے ضروری ہو جائیگی ۔ جب تک تعلیم چند آدمیوں کا دل بہلاوا یا کام کاجی ذریعہ تھی یہ سوال کم اہم تھا کہ تعلیم کی زبان کیسی ہونی چاہئے اور کیا ہونی چاہئے؟ جب سے تعلیم بہت سوں کے لئے ضروری ہوگئی ہے اور اس کو سوفی صدی آبادی کے لئے لازمی کرنا سماج اور راج کاج کا مقصد ٹھہرا ہے تعلیم کی اہمیت کے ساتھ ساتھ اِس سوال کی اہمیت بڑھ گئی کہ تعلیم کی زبان کیا اور کیسی ہونی چاہئے۔ کئی

सूफ़ी कहता है—

बावजूदे कि वह मुज़दा तेरा 'नहनो अक़रब'
सफ़े मसहफ़ पै लिखा था मुझे मालूम न था.

अर्थ—अगरचे क़ुरान के पन्ने पर तेरी बाबत यह ख़ुशख़बरी लिखी हुई थी कि तू इनसान की गरदन की रग से भी उनके ज़ियादा पास है, फिर भी मुझे तेरा पता न था, यानी मेरी ख़ुदी ने मुझे अन्धा कर रखा था.

इसलाम का कलमा यानी महावाक्य 'लाइलाह इल्लल्लाह'—सिवाय उस एक ख़ुदा के और कोई ख़ुदा नहीं है—अल्लाह को अपने से अलग समझ कर कहा गया है. सूफ़ी कहता है कि यह केवल उनके लिये है जो अभी अन्दर के ज्ञान नहीं पा सके.

भागवत में भगवान कहते हैं कि—"मेरे सिवा और कोई दूसरा नहीं है, यह सचाई अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये."

यही बात अल्लाह ने क़ुरान में कही है—"लाइलाह इल्ला अना." यही बात गीता में बार बार साफ़ साफ़ शब्दों में दोहराई गई है.

सब पैग़म्बरों, रिशियों, नबियों, रसूलों, तीर्थंकरों और अवतारों ने यही उपदेश दिया है.

यह उपदेश सच्चे खोजियों, अहलेदिल, भिक्शुओं, फ़क़ीरों और दरवेशों, दीक्शितों और मिस्कीनों को दिया जाता है. यही इल्म सीना या पराविद्या है, दूसरे सब इल्म इल्मसफ़ीना या अपरा विद्या हैं—यह इल्मसफ़ीना नीचे का ज्ञान है जो अहले दील, श्रावकों, उपासकों और मामूली गृहस्थों के लिये है, उनके लिये जो दुनिया की खोज में हैं.

जिस तरह ईसाई किताबों में कहीं कहीं 'प्राफ़ेट' यानी नबियों और 'प्रीस्ट' यानी पुरोहितों में फ़रक़ किया गया है, उसी तरह इसलाम में 'सूफ़ी औलियाओं' और 'शरा के पाबन्द मुल्लाओं' में फ़रक़ किया गया है. ऐसे ही वैदिक धर्म में ज्ञानी भक्तों और करम काण्डियों में. हज़रत ईसा ने इस तरह के रस्म परस्तों को 'क़ानूनी' कह कर उन्हें इन शब्दों में डांटा है—"ऐ क़ानूनियों, तुम पर अफ़सोस है! तुमने ज्ञान की कुंजी लेली है, पर ज्ञान का दरवाज़ा खोल कर तुम उसके अन्दर नहीं गए, और जो अन्दर जाना चाहते थे उन्हें भी तुमने रोक दिया." बुद्ध ने सच्चे ब्राह्मन में और झूटे नाम के ब्राह्मन में फ़रक़ किया. इसी से लोग उनके ख़िलाफ़ हो गए. असली ज्ञान की कुंजी आदमी ख़ुद ही अपने अन्दर घुमा सकता है.

मोहम्मद साहब कहते थे—"मैं इल्म रूहानी का शहर हूं और अली उस शहर में जाने का दरवाज़ा है."

صوفی کہتا ہے—

باوجودیکہ وہ مژدہ ترا 'نحن و اقرب'
صفحۂ مصحف پہ لکھا تھا مجھے معلوم نہ تھا۔

ارتھ—اگرچہ قرآن کے پنّے پر تیری بابت یہ خوش خبری لکھی ہوئی تھی کہ تو انسان کی گردن کی رگ سے بھی ان کے زیادہ پاس ہے، پھر بھی مجھے تیرا پتہ نہ تھا، یعنی میری خودی نے مجھے اندھا کر رکھا تھا۔

اسلام کا کلمہ یعنی مہاواکیہ 'لاالٰہ الاللہ'—سوائے اُس ایک خدا کے اور کوئی خدا نہیں ہے—اللہ کو اپنے سے الگ سمجھ کر کہا گیا ہے۔ صوفی کہتا ہے کہ یہ کیول اُن کے لئے ہے جو ابھی اندر کے گیان نہیں پاسکے۔

بھاگوت میں بھگوان کہتے ہیں کہ—"میرے سوا اور کوئی دوسرا نہیں ہے، یہ سچائی اچھی طرح سمجھ لینی چاہئے۔"

یہی بات اللہ نے قرآن میں کہی ہے—"لاالٰہ الاانا۔" یہی بات گیتا میں بار بار صاف صاف شبدوں میں دوہرائی گئی ہے۔

سب پیغمبروں، رشیوں، نبیوں، رسولوں، تیرتھنکروں اور اوتاروں نے یہی اُپدیش دیا ہے۔

یہ اُپدیش سچے کھوجیوں، اہل دل، بھکشوؤں، فقیروں اور درویشوں، دیکشتوں اور مسکینوں کو دیا جاتا ہے۔ یہی علم سینہ یا پراودیا ہے، دوسرے سب علم علم سفینہ یا اپرا ودیا ہیں—یہ علم سفینہ نیچے کا گیان ہے جو اہل دول، شراوکوں، اُپاسکوں اور معمولی گرہستوں کے لئے ہے، اُن کے لئے جو دنیا کی کھوج میں ہیں۔

جس طرح عیسائی کتابوں میں کہیں کہیں 'پرافٹ' یعنی نبیوں اور 'پریسٹ' یعنی پروہتوں میں فرق کیا گیا ہے، اُسی طرح اسلام میں 'صوفی اولیاؤں' اور 'شرع کے پابند ملاؤں' میں فرق کیا گیا ہے۔ ایسے ہی ویدک دھرم میں گیانی بھکتوں اور کرم کانڈیوں میں۔ حضرت عیسیٰ نے اِس طرح کے رسم پرستوں کو 'قانونی' کہکر اُنہیں اِن شبدوں میں ڈانٹا ہے—"اے قانونیو، تم پر افسوس ہے! تم نے گیان کی کنجی لے لی ہے، پر گیان کا دروازہ کھول کر تم اُس کے اندر نہیں گئے، اور جو اندر جانا چاہتے تھے اُنہیں بھی تم نے روک دیا۔" بدھ نے سچے براہمن میں اور جھوٹے نام کے براہمن میں فرق کیا۔ اِسی سے لوگ اُن کے خلاف ہوگئے۔ اصلی گیان کی کنجی آدمی خود ہی اپنے اندر گھما سکتا ہے۔

محمد صاحب کہتے تھے—"میں علم روحانی کا شہر ہوں اور علی اس شہر میں جانے کا دروازہ ہے۔"

इस क़िस्म की ज़हनियत रखने वाले महा कट्टर हिन्दू परस्त, मुसलमानों और उरदू दोनों को देस निकाला देना चाहते हैं. वह सोचते हैं कि करोड़ों को देस निकाला नहीं दिया जा सकता तो कम से कम उरदू को देस निकाला ज़रूर मिलना चाहिये. यही लोग हिन्दुस्तानी को जान बूझ कर उरदू कहते हैं और उरदू के साथ हिन्दुस्तानी के भी विरोधी हो गये हैं. पाकिस्तान में उरदू को तरक़्क़ी देने की जो कोशिशें हो रही हैं उनमें फ़ारसियत, अरबियत और धर्मियत का बड़ा दख़ल है. इसके तोड़ पर और इसकी ज़िद में यहां भी संस्कृतयावने को बड़ी अहमियत हासिल हो गई है. भाशा और लिखावट के मसले राजकाज से मिला दिये गये हैं. राजकाजी बंटवारे की वजह से आपसी अख़्तलाफ़ बहुत उभर आये हैं और उन में सब से ज़ियादा नुक़सान हिन्दुस्तानी को पहुँचा और पहुंच रहा है. खुल्लम खुल्ला पाक बाज़ी की तहरीक पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में चलाई जा रही है और बड़े ज़ोरों पर है. इस तहरीक से राजकाजी ओहदेदारों, क़ौमी नेताओं और भाशाई विद्वानों की बहुत बड़ी तैदाद हमदर्दी रखती और इत्तफ़ाक़ करती है. इन तीनों से ज़ियादा नुक़सान पहुँचानें वाला वह अध पढ़ा लिखा तबक़ा (वर्ग) है जिस के लोक राज और समाज के मुख़तलिफ़ दरजों पर फ़ाएज़ (नियुक्त) हैं. यही लोग मौक़ा बे मौक़ा अपनी जाहिलाना वाक़फ़ियत का प्रचार कर के आम उच्चारन और जनताई ज़बान की तरक़्क़ी और फैलाव में रोड़े अटकाते हैं. यही लोग कोशिश करते हैं कि सरकारी रूदादें, रेडियाई ब्राडकास्ट, दरसी किताबें, विद्याई भाशन, अध इलमी रिसाले और नाम की इलमी बहसें इसी ज़बान में हों. इस कोशिश के बावजूद यही लोग बार बार आम उच्चारन के मुताबिक़ बोलते हैं और जनता के चलन दिये ये लफ़्ज़ लिखते बोलते हैं. इन ही मौक़ों पर हिन्दुस्तानी की जीत होती है और इन ही बातों से सबूत मिलता है कि हिन्दुस्तानी ज़िन्दा है और ज़िन्दा रहेगी. ख़ुद पाक बाज़ों की तहरीर और बोल चाल में, इससे ज़ियादा घरेलू बात चीत और बे तकल्लुफ़ाना तहरीर में, भाशा और अदब के काले आसमान पर अंधियारा है. गरजने वाले बादलों की कड़क आ आ कर लोगों को सहमा रही है, बार बार बिजली की चमक से दिल दहल रहे हैं—साथ ही जा बजा बादल के छटने के आसार दिखाई देते हैं, और रह रह कर उम्मीद की किरनें भी दिखाई देती हैं जिन से ढारस बंधता और दिल दिमाग़ को ताज़गी बख़्शने वाली याद आती है कि तूफ़ान संसार का मामूल नहीं है वह थोड़ी देर की बात है, चन्द दिनों के बाद सकून का होना अटल है.

इसमें शक नहीं कि बंटवारे से हिन्दुस्तानी की राजकाजी हैसियत गिर जाने से उसको बड़ा नुक़सान पहुंचा मगर केवल बंटवारे की वजह से आपसी सम्बन्ध तो कमज़ोर हुए और

اِس قسم کی ذہنیت رکھنے والے مہا کٹر ہندو پرست، مسلمانوں اور اُردو دونوں کو دیس نکالا دینا چاہتے ہیں، وہ سوچتے ہیں کہ کروڑوں کو دیس نکالا نہیں دیا جا سکتا تو کم سے کم اُردو کو دیس نکالا ضرور ملنا چاہئے۔ یہی لوگ ہندستانی کو جان بوجھ کر اُردو کہتے ہیں اور اُردو کے ساتھ ہندستانی کے بھی وِرودھی ہوگئے ہیں۔ پاکستان میں اُردو کو ترقی دینے کی جو کوششیں ہو رہی ہیں اُن میں فارسیت، عربیت اور دھرمیت کا بڑا دخل ہے۔ اِس کے توڑ پر اور اِس کی ضد میں یہاں بھی سنسکرتیانے کو بڑی اہمیت حاصل ہو گئی ہے۔ بھاشا اور لکھاوٹ کے مسئلے راج کاج سے ملا دیئے گئے ہیں۔ راج کاجی بٹوارے کی وجہ سے آپسی اختلاف بہت اُبھر آئے ہیں اور اُن میں سب سے زیادہ نقصان ہندستانی کو پہنچا اور پہنچ رہا ہے۔ کھلم کھلا پاک بازی کی تحریک پاکستان اور ہندستان میں چلائی جا رہی ہے اور بڑے زوروں پر ہے۔ اس تحریک سے راجکاجی عہدے داروں، قومی نیتاؤں اور بھاشائی وِدوانوں کی بہت بڑی تعداد ہمدردی رکھتی اور اتفاق کرتی ہے۔ اِن تینوں سے زیادہ نقصان پہنچانے والا وہ ادھ پڑھا لکھا طبقہ (ورگ) ہے جس کے لوگ راج اور سماج کے مختلف درجوں پر فائز (نیُکت) ہیں۔ یہی لوگ موقع بے موقع اپنی جاہلانہ واقفیت کا پرچار کر کے عام اُچارن اور جنتائی زبان کی ترقی اور پھیلاؤ میں روڑے اٹکاتے ہیں۔ یہی لوگ کوشش کرتے ہیں کہ سرکاری روئیدادیں، ریڈیائی براڈکاسٹ، درسی کتابیں، ودیائی بھاشن، ادھ علمی رسالے اور نام کی علمی بحثیں اسی زبان میں ہوں۔ اِس کوشش کے باوجود یہی لوگ بار بار عام اُچارن کے مطابق بولتے ہیں اور جنتا کے چلن دیئے ہوئے لفظ لکھتے بولتے ہیں۔ اِن ہی موقعوں پر ہندستانی کی جیت ہوتی ہے اور اِن ہی باتوں سے ثبوت ملتا ہے کہ ہندستانی زندہ ہے اور زندہ رہے گی۔ خود پاک بازوں کی تحریر اور بول چال میں، اس سے زیادہ گھریلو بات چیت اور بے تکلفانہ تحریر میں، بھاشا اور ادب کے کالے آسمان پر اندھیارا ہے۔ گرجنے والے بادلوں کی کڑک آ آ کر لوگوں کو سہما رہی ہے، بار بار بجلی کی چمک سے دل دہل رہے ہیں—ساتھ ہی جا بجا بادل کے چھٹنے کے آثار دکھائی دیتے ہیں، اور رہ رہ کر اُمید کی کرنیں بھی دکھائی دیتی ہیں جن سے ڈھارس بندھتا اور دل دماغ کو تازگی بخشنے والی یاد آتی ہے کہ طوفان سنسار کا معمول نہیں ہے وہ تھوڑی دیر کی بات ہے، چند دنوں کے بعد سکون کا ہونا اٹل ہے۔

اِس میں شک نہیں کہ بٹوارے سے ہندستانی کی راجکاجی حیثیت گر جانے سے اُس کو بڑا نقصان پہنچا مگر صرف بٹوارے کی وجہ سے آپسی سمبندھ نہ تو ختم ہوئے اور

बंटवारे के बावजूद हिन्दुस्तानी की ज़रूरत

(जारी)

(डाक्टर जाफ़र हसन)

यह एक हक़ीक़त है कि हिन्दी और उरदू एक दूसरे के बरअक्स (उलटे) रास्तों पर बढ़ती और एक दूसरे से दूर होती जा रही हैं. क्या यह झुकाव ख़ुद हिन्दी और उरदू के हक़ में नुक़सान पहुँचाने वाला नहीं ? क्या इस फूट को दूर या कम नहीं किया जा सकता ? क्या हम इतना भी नहीं कर सकते कि हिन्दी और उरदू की दो धाराओं को अलग अलग बहने दें मगर बड़ी बड़ी नहरें इस तरह बनायें कि बड़े बड़े इलाक़े दोनों के पानी से सेराब हों (सींचे जावें) ? क्या हम हिन्दी को कठिन और उरदू को मुश्किल बनता हुआ देखते रहें और इतनी भी कोशिश न करें कि कठिन हिन्दी की जगह सरल हिन्दी और मुश्किल उरदू की जगह आसान उरदू तरक़्क़ी करे ? कठिन हिन्दी और मुश्किल उरदू की जगह न सही दोनों के साथ साथ क्या हिन्दुस्तानी को ज़िन्दा रहने का हक़ नहीं ? हमारे बाप दादा जो मिलवां ज़बान हमें तरके में मिली है, क्या उसको मिलवां रखनेकी कोशिश करना हमारा हक़ और फ़र्ज़ नहीं है ?

मैं उन लोगों में हूँ जिनका यह पूरा, पक्का और सच्चा विश्वास है कि हिन्दुस्तानी को ज़िन्दा सलामत रखने में चाहे हम जीतें चाहे हारें, हर हाल में हमें पूरी पूरी कोशिश करनी चाहिये कि हिन्दी और उरदू को क़रीब लाया जाय. दोनों में चलने और चल सकने वाले लफ़्ज़ों की तैदाद बढ़ाई जाय. दोनों को आम बोल चाल के मुताबिक़ ढलने में मदद दी जाय. मैं जानता हूँ कि यह काम बहुत मुश्किल और निरासी है. विधान ने हिन्दी को राज भाशा का दरजा दे दिया है. सन 1964 तक हिन्दी को अंगरेज़ी की जगह लाने का फ़ैसला भी हो चुका है. हिन्दी की तरक़्क़ी और फैलाव उन लोगों के हाथ में है जो जनताई हिन्दी के सख़्त विरोधी हैं, और विद्वानी हिन्दी चलाने में सरकार का रुपया और अपने साथियों की जान्दारी सर्फ़ कर रहे हैं. बंटवारे की वजह से उरदू को पहले से ज़ियादा सिर्फ़ मुसलमानों की ज़बान कहा जाता है, और बहुत से लोग सोचते और बाज़ कहते भी हैं कि:—

"जब पाकिस्तान बन गया और उरदू वहां की क़ौमी ज़बान ठहराई जा चुकी तो फिर भारत में उरदू का क्या ठिकाना है."

بٹوارے کے باوجود ہندستانی کی ضرورت

(جاری)

(ڈاکٹر جافر حسن)

یہ ایک حقیقت ہے کہ ہندی اور اردو ایک دوسرے کے برعکس (الٹے) راستوں پر بڑھتی اور ایک دوسرے سے دور ہوتی جا رہی ہیں۔ کیا یہ جھکاؤ خود ہندی اور اردو کے حق میں نقصان پہنچانے والا نہیں ؟ کیا اِس پھوٹ کو دور یا کم نہیں کیا جا سکتا؟ کیا ہم اِتنا بھی نہیں کر سکتے کہ ہندی اور اردو کی دو دھاراؤں کو الگ الگ بہنے دیں مگر بڑی بڑی نہریں اِس طرح بنائیں کہ بڑے بڑے علاقے دونوں کے پانی سے سیراب ہوں (سینچے جاویں) ؟ کیا ہم ہندی کو کٹھن اور اردو کو مشکل بنتا ہوا دیکھتے رہیں اور اتنی بھی کوشش نہ کریں کہ کٹھن ہندی کی جگہ سرل ہندی اور مشکل اردو کی جگہ آسان اردو ترقی کرے ؟ کٹھن ہندی اور مشکل اردو کی جگہ نہ سہی دونوں کے ساتھ ساتھ کیا ہندستانی کو زندہ رہنے کا حق نہیں ؟ ہمارے باپ دادا سے جو ملواں زبان ہمیں ترکے میں ملی ہے، کیا اُس کو ملواں رکھنے کی کوشش کرنا ہمارا حق اور فرض نہیں ہے ؟

میں اُن لوگوں میں ہوں جن کا یہ پورا، پکا اور سچا وشواس ہے کہ ہندستانی کو زندہ سلامت رکھنے میں چاہے ہم جیتیں چاہے ہاریں، ہر حال میں ہمیں پوری پوری کوشش کرنی چاہئے کہ ہندی اور اردو کو قریب لایا جائے. دونوں میں چلنے اور چل سکنے والے لفظوں کی تعداد بڑھائی جائے ۔ دونوں کو عام بول چال کے مطابق ڈھلنے میں مدد دی جائے ۔ میں جانتا ہوں کہ یہ کام بہت مشکل اور نراسی ہے ۔ ودھان نے ہندی کو راج بھاشا کا درجا دے دیا ہے ۔ سن 1964 تک ہندی کو انگریزی کی جگہ لانے کا فیصلہ بھی ہو چکا ہے ۔ ہندی کی ترقی اور پھیلاؤ اُن لوگوں کے ہاتھ میں ہے جو جنتائی ہندی کے سخت ورودھی ہیں، اور ودوانی ہندی چلانے میں سرکار کا روپیا اور اپنی اور اپنے ساتھیوں کی جاندار‌ی صرف کر رہے ہیں ۔ بٹوارے کی وجہ سے اردو کو پہلے سے زیادہ صرف مسلمانوں کی زبان کہا جاتا ہے، اور بہت سے لوگ سوچتے اور باز کہتے بھی ہیں کہ :—

"جب پاکستان بن گیا اور اردو وہاں کی قومی زبان ٹھہرائی جا چکی تو پھر بھارت میں اردو کا کیا ٹھکانا

जिनका कोई क़ायम असर नहीं रहने वाला है. मगर यह हिन्द-अमरीकी समझौता तो एक क़ायम रहने वाला सिलसिला है. यह असल में अमरीका के वास्ते एक पट्टा है जिससे वह अपने को हिन्दुस्तान में जमा सके, पहले एक ब्योपारी के भेस में और बाद में हिन्दुस्तान के राज-नीतिक या सियासी आक़ा के भेस में. हिन्द सरकार ने अपनी सारी इन्तज़ामी मशीनरी अमरीका के सुपुर्द करने और उसकी इश्तहार बाज़ी या प्रोपेगन्डा करने के लिए रज़ामन्दी दे दी है. अमरीका के अफ़सरों हाकिमों वग़ैरा को हिन्दुस्तान में रहने घूमने, फिरने और यहां के लोगों से मिलने जुलने की पूरी इजाज़त बख़्शी गई है लेकिन हिन्दुस्तान का रत्ती भर क़ानून भी उन पर लागू नहीं हो सकता. फिर कौन है जो उन्हें मन चाहे राजकाजी या समाजी विचारों का प्रचार करने और हिन्दुस्तान में झगड़े टंटे या गुट्ट खड़े करने से रोक सके? बहुत मुमकिन है कि अगले चुनाव में कुछ लोग अमरीका की तरफ़ से खड़े हों, कुछ लोग रूस की तरफ़ से और कुछ ख़ालिस हिन्दुस्तानी पार्टियों की तरफ़ से, और फिर इनमें ख़ूब गुत्थमगुत्था हो.

मैं इस उसूल से पूरी तरह सहमत हूं कि सारी दुनिया एक है, और न इसमें ही कोई हर्ज है, बल्कि यह इन्सानियत और क़ुदरत के मुताबिक़ है कि ज़रूरत के वक़्त एक जगह के लोग दूसरी जगह वालों के काम आयें. मैं यह भी ठीक समझता हूं कि जिसके पास ज़रूरत से ज़ियादा चीज़ है वह उसमें उन को भी शरीक करे जिनके पास कम है. और क्या देनदार क्या लेनदार दोनों की ही इसमें बरक्कत है. बड़े बड़े कारनामे और विज्ञान की तरक़्क़ी इस तरह नहीं अंजाम देनी चाहिये कि उनसे अमन शान्ति ख़तरे में पड़ जाय. लेकिन यह साफ़ ज़ाहिर है कि योरप और एशिया की मदद देने में अमरीका के इरादे उतने परोपकार के नहीं हैं जितना कि ऐसी चीज़ के लिये होना चाहिये. उसका खुले आम मक़सद कम्युनिस्ट विरोधी मोर्चा खड़ा करना है और कम्युनिस्टों का रुख़ भी उतना ही रोशन है. इन दोनों में कुत्ते बिल्ली का सा बैर है और दोनों इसी फ़िराक़ में रहते हैं कि किस तरह अपने स्वार्थ के लिए दूसरे लोगों को अपने फंजे में फांस लें. उन्हें दूसरों से कोई भाई चारा या प्रेम नहीं है. जब तक इन दोनों लालची देशों या उनके हमजोलियों का यह रुख़ रहता है तब तक तो हमें अपने देश को अपनी ही कोशिश से खड़ा करना या बनाना चाहिये. बेहतर तो यह है कि हमारी उन्नति धीरे धीरे हो न कि यह कि हम उसका कोई स्वांग रचें. और स्वांग भी कैसा कि जिसके पीछे सिर्फ़ दीवालिये पन का दौर दौरा हो और जिससे घरेलू लड़ाई या अन्तर क़ौमी जंग कभी भी हो सकती हो.

वर्धा, 9 जून 1952

ہندستان کو امریکی مدد

جن کا کوئی قائم اثر نہیں رہنے والا ہے. مگر یہ ہند امریکی سمجھوتہ تو ایک قائم رہنے والا سلسلہ ہے. یہ اصل میں امریکہ کے واسطے ایک پٹہ ہے جس سے وہ اپنے کو ہندستان میں جما سکے، پہلے ایک بیوپاری کے بھیس میں اور بعد میں ہندستان کے راج نیتک یا سیاسی آقا کے بھیس میں. ہند سرکار نے اپنی ساری انتظامی مشینری امریکہ کے سپرد کرنے اور اُس کی اشتہار بازی یا پروپیگنڈا کرنے کے لئے رضامندی دے دی ہے. امریکہ کے افسروں حاکموں وغیرہ کو ہندستان میں رہنے، گھومنے پھرنے اور یہاں کے لوگوں سے ملنے جلنے کی اجازت بخشی گئی ہے لیکن ہندستان کا رتی بھر قانون بھی اُن پر لاگو نہیں ہو سکتا. پھر کون ہے جو اُنہیں من چاہے راج کاجی یا سماجی وچاروں کا پرچار کرنے اور ہندستان میں جھگڑے ٹنٹے یا گٹ کھڑے کرنے سے روک سکے؟ بہت ممکن ہے کہ اگلے چناؤ میں کچھ لوگ امریکہ کی طرف سے کھڑے ہوں، کچھ لوگ روس کی طرف سے اور کچھ خالص ہندستانی پارٹیوں کی طرف سے، اور پھر ان میں گتھم گتھا ہو.

میں اِس اصول سے پوری طرح سہمت ہوں کہ ساری دنیا ایک ہے، اور نہ اِس میں ہی کوئی حرج ہے بلکہ یہ اِنسانیت اور قدرت کے مطابق ہے کہ ضرورت کے وقت ایک جگہ کے لوگ دوسرے جگہ والوں کے کام آئیں. میں یہ بھی ٹھیک سمجھتا ہوں کہ جس کے پاس ضرورت سے زیادہ چیز ہے وہ اُس میں اُن کو بھی شریک کرے جن کے پاس کم ہے. اور کیا دینے دار کیا لینے دار دونوں کی ہی اِس میں برکت ہے. بڑے بڑے کارنامے اور وگیان کی ترقی اِس طرح نہیں انجام دینی چاہئے کہ اُن سے امن شانتی خطرے میں پڑ جائے. لیکن یہ صاف ظاہر ہے کہ یورپ اور ایشیا کی مدد دینے میں امریکہ کے ارادے اُتنے پرو پکار کے نہیں ہیں جتنا کہ ایسی چیز کے لئے ہونا چاہئے. اُس کا کھلے عام مقصد کمیونسٹ ورودھی مورچہ کھڑا کرنا ہے اور کمیونسٹوں کا رخ بھی اُتنا ہی روشن ہے. اِن دونوں میں کتے بلی کا سا بیر ہے اور دونوں اسی فراق میں رہتے ہیں کہ کس طرح اپنے سوارتھ کے لئے دوسرے لوگوں کو اپنے پنجے میں پھانس لیں. اُنہیں دوسروں سے کوئی بھائی چارا یا پریم نہیں ہے. جب تک اِن دونوں لالچی دیشوں یا اُن کے ہمجولیوں کا یہ رخ رہتا ہے تب تک تو ہمیں اپنے دیش کو اپنی ہی کوشش سے کھڑا کرنا یا بنانا چاہئے. بہتر تو یہ ہے کہ ہماری اُنتی دھیرے دھیرے ہو نہ کہ یہ کہ ہم اُس کا کوئی سوانگ رچیں. اور سوانگ بھی کیسا کہ جس کے پیچھے صرف دیوالیئے پن کا دور دورا ہو اور جس سے گھریلو لڑائی یا انتر قومی جنگ کبھی بھی ہو سکتی ہو.

وردھا، 9 جون 1952

मुंह ही मोड़ा जा सकता है. इसके यह माने नहीं होते कि वह इस बात का इक़रार करते हैं कि जंगी सामान को ज़ियादा बरबाद कारी बनाने और उसका ढेर जमा करने से शान्ति की हिफ़ाज़त हो सकती है. लेकिन इस वजह से कि उन्हें अपने उसूलों में ढिलाई करनी पड़ती है या जो उनका अपना विश्वास है उसके सब पहलुओं को वह पूरी तरह नहीं निभा पाते हैं, वह यह भी नहीं चाहते कि जो अपना फ़र्ज़ है उससे बच कर भागा जाय.

सच पूछा जाय तो मेरा ख़्याल यह है कि आर्थिक प्रोग्राम के बारे में पंडित जी के सोचने का ढंग साफ़ साफ़ समझ में नहीं आता. उन्हें केन्द्रीकरन और जमाबन्दी से कोई मोहब्बत नहीं है, लेकिन मुझे यह महसूस होता है कि मशीन की ताक़त में, साइन्सी साधनों की ताक़त में और बड़े पैमाने वाली पैदावार की अर्थनीति की ताक़त में उन्हें गहरा अन्ध विश्वास है. शायद उनको यह भी महसूस होता है कि चर्खे, ग्रामोद्योग और हल बैल के तरीक़े से जो पैदावार की जाती है वह इतने अदना पाये की है कि 36 करोड़ की आबादी वाली बड़े प्रजातन्त्र की सरकार उस पर विचार करके अपना वक़्त नहीं ख़राब कर सकती. इसलिये वह दिल से चाहते हैं कि देश में कारख़ाने फैलाये जायें और देश का उद्योगीकरन किया जाय. यह भी मालूम होता है कि पंडित जवाहरलाल की राय उन लोगों से मेल नहीं खाती जो यह सोचते हैं कि जंग और बड़े पैमाने के उद्योगीकरन का चोली दामन का जैसा साथ है.

अपने इस रुख़ की वजह से जवाहरलाल जी का बड़ी बड़ी योजनाओं की तरफ़ रुझान दिन दुगना रात चौगुना बढ़ता जाता है और उन्होंने बहुत सी योजनायें चला भी रक्खी हैं. उनमें से कुछ तो बुरी तरह निकम्मी साबित हुई हैं और उनका काफ़ी ख़मयाज़ा देश को भुगतना पड़ा है. कुछ योजनाओं में सरकार को उसके ही अफ़सरों, सलाहकारों, तकनीकियों और दूसरों ने ख़ूब धोका दिया है. इन ही स्कीमों का एक सब से बड़ा और सब से मंहगा सबक़ यही रहा कि नैतिक चाल चलन में हम लोग बहुत ही गिरे हुए साबित हुए और हमारे अन्दर देश का दर्द रत्ती भर भी नहीं है. दूसरी बातों को जाने दीजिये हमारा क़ौमी पुनर्उद्धार केवल भारी भारी फिर बनाव के कामों से नहीं किया जा सकता. आर्थिक फिर-बनाव के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा महत्व की और बुनियाद की चीज़ है नैतिक फिर-बनाव और जिसकी जड़ें बहुत ही ठोस होनी चाहियें. अगर नैतिक फिर-बनाव ठीक ठीक चले तो आर्थिक फिर-बनाव धीरे धीरे होता ही जायगा.

माना कि इन योजनाओं की नाकामयाबी और उनमें बेईमानी का बोल बाला होने से मुल्क को बहुत नुक़सान हुआ लेकिन इनमें से ज़ियादातर सिर्फ़ छुट्टा मामले हैं

ھی موڑا جا سکتا ھے ۔ اِس کے یہ معنے نہیں
کہ وہ اِس بات کا اقرار کرتے ھیں کہ جنگی سامان
زیادہ برباد کاری بنانے اور اُس کا ڈھیر جمع کرنے سے
نتی کی حفاظت ھوسکتی ھے ۔ لیکن اِس وجہ سے کہ
ھیں اپنے اُصولوں میں ڈھیلائی کرنی پڑتی ھے یا جو اُن
اپنا وشواس ھے اُن کے سب پہلوؤں کو وہ پوری طرح
ں نبھا پاتے ھیں، وہ یہ بھی نہیں چاھتے
جو اپنا فرض ھے اُس سے بچ کر بھاگا جائے ۔

سچ پوچھا جائے تو میرا خیال یہ ھے کہ آرتھک
گرام کے بارے میں پنڈت جی کے سوچنے کا ڈھنگ
ف صاف سمجھ میں نہیں آتا. اُنھیں کیندری کرن اور
مع بندی سے کوئی محبت نہیں ھے، لیکن مجھے یہ
حسوس ھوتا ھے کہ مشین کی طاقت میں، سائنسی
دھنوں کی طاقت میں اور بڑے پیمانے والی پیداوار کی
نیتی کی طاقت میں اُنھیں گہرا اندھ وشواس ھے ۔
ید اُن کو یہ بھی محسوس ھوتا ھے کہ چرخے، گرام اُدیوگ
ھل بیل کے طریقے سے جو پیداوار کی جاتی ھے وہ
نے ادنیٰ پائے کی ھے کہ 36 کروڑ کی آبادی والی بڑے
جاتنتر کی سرکار اُس پر وچار کرکے اپنا وقت نہیں
راب کرسکتی ۔ اِس لئے وہ دل سے چاھتے ھیں کہ دیش
ں کارخانے پھیلائے جائیں اور دیش کا اُدیوگی کرن کیا
ئے. یہ بھی معلوم ھوتا ھے کہ پنڈت جواھر لال کی رائے
ں لوگوں سے میل نہیں کھاتی جو یہ سوچتے ھیں کہ
نگ اور بڑے پیمانے کے اُدیوگی کرن کا چولی دامن کا
یسا ساتھ ھے ۔

اپنے اِس رخ کی وجہ سے جواھر لال جی کا بڑی بڑی
جناؤں کی طرف رجحان دن دوگنا رات چوگنا بڑھتا
تا ھے اور اُنھوں نے بہت سی یوجنائیں چلا بھی رکھی
یں ۔ اُن میں سے کچھ تو بری طرح نکمی ثابت ھوئیں
ر اُن کا کافی خمیازہ دیش کو بھگتنا پڑا ھے. کچھ یوجناؤں
یں سرکار کو اُس کے ھی افسروں، صلاح کاروں، تکنیکیوں
ر دوسروں نے خوب دھوکا دیا ھے. اِن ھی اسکیموں کا ایک
ب سے بڑا اور سب سے مہنگا سبق یہی رھا کہ نیتک
ال چلن میں ھم لوگ بہت ھی گرے ھوئے ثابت ھوئے اور
مارے اندر دیش کا درد رتی بھر بھی نہیں ھے ۔ دوسری
توں کو جانے دیجئے ھمارا قومی پنر اُدھار کیول بھاری
اری پھر بناؤ کے کاموں سے نہیں کیا جا سکتا ۔ آرتھک
بناؤ کے مقابلے کہیں زیادہ مہتو کی اور بنیاد کی چیز
نیتک پھر بناؤ اور جس کی جڑیں بہت ھی ٹھوس
نی چاھئیں ۔ اگر نیتک پھر بناؤ ٹھیک ٹھیک چلے تو
تھک پھر بناؤ دھیرے دھیرے ھوتا ھی جائے گا ۔

مانا کہ اِن یوجناؤں کی ناکامیابی اور اُن میں بے
مانی کا بول بالا ھونے سے ملک کو بہت نقصان ھوا
کن اِن میں سے زیادہ تر صرف چھٹا معاملے ھیں

इसके बाद आनेवाली कोई दूसरी हुकूमत भी उतनी आज़ादी के साथ काम नहीं करेगी? ज़रूर इसमें थोड़ी जोखिम है लेकिन बिना जोखिम के तो दुनिया में कोई कुछ नहीं कर सकता.

उसूली तौर पर यह एक सही बहस है लेकिन लोगों की निजी ज़िन्दगी में या क़ौमों के राजकाजी इतिहास में जो असली अनुभव आते हैं उनसे मेल नहीं खाती. बल्कि सच तो यह है कि आम तौर से यह देखा जाता है कि लेने वाला देने वाले का हर तरह से मोहताज बन जाता है. अपना काम न फिर वह आज़ादी से कर पाता है और न अपनी सूझ बूझ ही इस्तेमाल कर पाता है. देने वाले या उपकार करने वाले की मरज़ी के ख़िलाफ़ जाने के नतीजे इतने भयानक होते हैं कि लेने वाले में यह जोखिम उठाने की हिम्मत नहीं होती.

अगर 5 जनवरी 1952 वाले समझौते को और उसी के कारन होने वाले बाद के छोटे समझौतों को ध्यान से देखा जाय तो पता चलता है कि हिन्दुस्तान इनके ज़रिये जिन जोखिमों में फंस गया है वह इतनी ज़बरदस्त और दर्दनाक हैं कि यह समझौता गुलामी का एक पक्का पट्टा साबित हो सकता है. मुझे इन जोखिमों को दोहराने की ज़रूरत नहीं है. क्योंकि श्री सुरेश रामभाई ने अपनी इस किताब में उन्हें बहुत अच्छी तरह से बयान किया है. यह जोखिम केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि राजकाज और मन से भी इनका वास्ता है. मन से सम्बन्ध रखने वाली जोखिम जिसकी तरफ़ मैं ध्यान खींचना चाहता हूँ वह यह है कि कम से कम दो विरोधी तरह के ख़्याल लोगों के दिल में घर कर जायेंगे—पहला यह कि अमरीका की दोस्ती और मदद के बिना हम जी नहीं सकते और दूसरा यह (जो पहले ख़्याल का करारा जवाब है) कि अमरीका के चंगुल से निकलने के लिये हमको कम्युनिस्टों की शरन लेनी चाहिये इस तरह के समझौते का यह नतीजा हो सकता है कि वही चीज़ ज़ोर शोर से हो जाय जो अमरीका बचाना चाहता है. चीन और कोरिया का नाटक हिन्दुस्तान में भी सामने आ सकता है.

पंडित जवाहरलाल जी की सच्चाई और नेकी में किसी को रत्ती भर भी शक नहीं हो सकता. उन्हें अपने अन्दर विश्वास है और हमारी जनता की बुनियादी लायक़ी में विश्वास है. और उन्हें इस बात का भी पूरा भरोसा है कि हिन्दुस्तान आगे चल कर दुनिया की एक बड़ी क़ौम बन कर रहेगा. वह दुनिया के एक होने में भरोसा रखते हैं. जंग के ख़ात्मे में और अमन शान्ति में भी उनका भरोसा है और वह मानते हैं कि यह चीज़ हथियारों वग़ैरा से नहीं बल्कि अहिंसा से ही मुमकिन है. लेकिन वह यह भी जानते हैं कि दुनिया की इस वक़्त जो हालत है इसमें उसूल की लकीर के फ़क़ीर नहीं हुआ जा सकता और न जंग के सरंजाम वग़ैरा से

اس کے بعد آنے والی کوئی دوسری حکومت بھی اتنی آزادی کے ساتھ کام نہیں کریگی؟ ضرور اس میں تھوڑی جوکھم ہے لیکن بنا جوکھم کے تو دنیا میں کوئی کچھ نہیں کر سکتا۔

اصولی طور پر یہ ایک صحیح بحث ہے لیکن لوگوں کی نجی زندگی میں یا قوموں کے راجکاجی اتہاس میں جو اصلی انوبھو آتے ہیں اُن سے میل نہیں کھاتی۔ بلکہ سچ تو یہ ہے کہ عام طور سے یہ دیکھا جاتا ہے کہ لینے والا دینے والے کا ہر طرح سے محتاج بن جاتا ہے۔ اپنا کام نہ پھر وہ آزادی سے کر پاتا ہے اور نہ اپنی سوجھ بوجھ ہی استعمال کر پاتا ہے۔ دینے والے یا اپکار کرنے والے کی مرضی کے خلاف جانے کے نتیجے اتنے بھیانک ہوتے ہیں کہ لینے والے میں یہ جوکھم اُٹھانے کی ہمت نہیں ہوتی۔

اگر 5 جنوری 1952 والے سمجھوتے کو اور اُسی کے کارن ہونے والے بعد کے چھوٹے سمجھوتوں کو دھیان سے دیکھا جائے تو پتہ چلتا ہے کہ ہندستان ان کے ذریعے جن جوکھموں میں پھنس گیا ہے وہ اتنی زبردست اور دردناک ہیں کہ یہ سمجھوتہ غلامی کا ایک پکا پٹہ ثابت ہوسکتا ہے۔ مجھے اُن جوکھموں کو دہرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ کیونکہ شری سریش رام بھائی نے اپنی اس کتاب میں اُنہیں بہت اچھی طرح سے بیان کیا ہے۔ یہ جوکھم کیول آرتھک ہی نہیں بلکہ راجکاج اور من سے بھی ان کا واسطہ ہے۔ من سے سمبندھ رکھنے والی جوکھم جس کی طرف میں دھیان کھینچنا چاہتا ہوں وہ یہ ہے کہ کم سے کم دو ورودھی طرح کے خیال لوگوں کے دل میں گھر کر جائیں گے—پہلا یہ کہ امریکہ کی دوستی اور مدد کے بنا ہم جی نہیں سکتے اور دوسرا یہ (جو پہلے خیال کا کرارا جواب ہے) کہ امریکہ کے چنگل سے نکلنے کے لئے ہمکو کمیونسٹوں کی شرن لینی چاہئے۔ اس طرح کے سمجھوتے کا یہ نتیجہ ہوسکتا ہے کہ وہی چیز زور شور سے ہو جائے جو امریکہ بچانا چاہتا ہے۔ چین اور کوریا کا ناٹک ہندستان میں بھی سامنے آ سکتا ہے۔

پنڈت جواہر لال جی کی سچائی اور نیکی میں کسی کو رتی بھر بھی شک نہیں ہوسکتا۔ اُنہیں اپنے اندر وشواس ہے اور ہماری جنتا کی بنیادی لائقی میں وشواس ہے۔ اور اُنہیں اس بات کا بھی پورا بھروسہ ہے کہ ہندستان آگے چل کر دنیا کی ایک بڑی قوم بن کر رہے گا۔ وہ دنیا کے ایک ہونے میں بھروسہ رکھتے ہیں۔ جنگ کے خاتمے میں اور امن شانتی میں بھی اُن کا بھروسہ ہے اور وہ مانتے ہیں کہ یہ چیز ہتھیاروں وغیرہ سے نہیں بلکہ اہنسا سے ہی ممکن ہے۔ لیکن وہ یہ بھی جانتے ہیں کہ دنیا کی اس وقت جو حالت ہے اس میں اُصول کی لکیر کے فقیر نہیں ہوا جاسکتا اور نہ جنگ کے سرانجام وغیرہ سے

फिर-बनाव का काम जल्दी से जल्दी अंजाम दिया जाय. उन्हें उन काहिलों या सुस्त लोगों से बहुत घबराहट होती है जो तरक़्क़ी के छोटे मोटे कामों पर सहज में सन्तोश कर लेते हैं. पंडित जी को आजकल के तकनीकी विज्ञान में बहुत गहरा विश्वास है और वह चाहते हैं कि हिन्दुस्तान की आर्थिक बेहतरी के लिए इससे पूरा पूरा फ़ायदा उठाया जाय. वह चाहते हैं कि हिन्दुस्तान में इतनी बड़ी बड़ी योजनायें चलाई जायें जितनी कि दुनिया के किसी हिस्से में भी न चली हों. इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान यह सब कर दिखाने की लायक़ी रखता है. उसके पिछले कारनामे कौन नहीं जानता ? क्या सदियों तक जीवन के हर किसी भी दायरे में वह संसार का अगुआ नहीं था ? हम उन्हीं लोगों की औलाद हैं, हमारा दिमाग़ भी काफ़ी अच्छी तरह काम करता है और अगर हमें मुनासिब मौक़ा रहबरी और साधन मिलें तो कोई वजह नहीं कि हम फिर पहले की जैसी तरक़्क़ी न कर लें.

पिछली दो सदियों से ज़ियादा अरसा बीता हिन्दुस्तान की बेइन्तहा दौलत विदेशों ने हड़प ली है और चूस चूस कर उसका मानो ख़ून ही निकाल लिया गया है. पंडित जवाहर लाल और दूसरे बहुत से लोगों का शायद यह ख़्याल है कि अपने ही साधनों के ज़रिये हिन्दुस्तान को अपने को फिर से ख़ुशहाल बना लेना मुमकिन नहीं है. और अगर है भी तो बहुत ही धीमी चींटी जैसी रफ़्तार के साथ. वह यह सोचते हैं कि अगर अपने देश के विकास की ख़ातिर हमें कहीं से पैसा या सामान उधार या दान की शक्ल में मिल सकता है—बशर्ते कि हमारी क़ौमी आज़ादी और शान बदस्तूर बनी रहे—तो उसे मांगने, उसके लिये बात चीत करने या उसे मंज़ूर करने में किसी डर या घबराहट या घमंड की वजह से हमें बिदकना नहीं चाहि येऐसी मदद लेने में दुनियावी तौर पर न कोई ग़लती है न उसमें अनैतिकता ही है. अपनी निजी ज़िन्दगी में लोग रोज़ाना शिरकत और लेन देन के समझौते करते हैं और फिर भी उनकी अपनी शख़्सियत और दर्जे या पदवी में बाल बराबर भी फ़र्क़ नहीं आता. पर यह बात कि कोई समझौता करके उसके बाहर के दायरे के मामलों में कोई आदमी दूसरी पार्टी से दबेगा या नहीं इस बात पर मुनहसिर है कि उसके अन्दर आत्म विश्वास किस पाये या बुलन्दी का है. पंडित जवाहरलाल नेहरू शायद यह महसूस करते हैं कि हिन्दुस्तान की यह बुज़दिली होगी कि वह अपने लिए ज़रूरी और बाहर से मिलने वाली मदद को सिर्फ़ इस डर से इन्कार कर दे कि इसके क़बूल करने से क़ौमी या अन्तर क़ौमी मामलों में वह अपनी आज़ादी क़ायम नहीं रख सकेगा. पंडित जवाहरलाल कई बार यह दिखला चुके हैं कि हम आज़ाद हैं और किसी दूसरे के असर में नहीं फंसते. इसलिये पंडित जवाहरलाल यह कैसे मान लें कि

ر بناؤ کا کام جلدی سے جلدی انجام دیا جائے. انہیں اُن ہلوں یا سست لوگوں سے بہت گھبراہٹ ہوتی ہے جو ی کے چھوٹے موٹے کاموں پر سہج میں سنتوش کرلیتے ں . پنڈت جی کو آجکل کے تکنیکی وگیان میں بہت را وشواس ہے اور وہ چاہتے ہیں کہ ہندستان کی تھک بہتری کے لئے اس سے پورا پورا فائدہ اٹھایا جائے . چاہتے ہیں کہ ہندستان میں اتنی بڑی بڑی وجنائیں چلائی جائیں جتنی کہ دنیا کے کسی حصے یں بھی نہ چلی ہوں . اس میں کوئی شک نہیں کہ ندستان یہ سب کر دکھانے کی لائقی رکھتا ہے . اسکے چھلے کارنامے کون نہیں جانتا؟ کیا صدیوں تک جیون کے ر کسی بھی دائرے میں وہ سنسار کا اگوا نہیں تھا ؟ م انہیں لوگوں کی اولاد ہیں، ہمارا دماغ بھی فی اچھی طرح کام کرتا ہے اور اگر ہمیں مناسب موقع ہبری اور سادھن ملیں تو کوئی وجہ نہیں کہ ہم پھر ہلے کی جیسی ترقی نہ کرلیں .

پچھلی دو صدیوں سے زیادہ عرصہ بیتا ہندستان کی انتہا دولت ودیشوں نے ہڑپ لی ہے اور چوس چوس ر اُسکا مانو خون ہی نکال لیا گیا ہے . پنڈت جواہر لال ور دوسرے بہت سے لوگوں کا شاید یہ خیال ہے کہ اپنے ہی سادھنوں کے ذریعے ہندستان کو اپنے کو پھر سے خوشحال نا لینا ممکن نہیں ہے. اور اگر ہے بھی تو بہت ہی دھیمی یونٹی جیسی رفتار کے ساتھ. وہ یہ سوچتے ہیں کہ اگر اپنے یش کے وکاس کی خاطر ہمیں کہیں سے پیسہ یا سامان دھار یا دان کی شکل میں مل سکتا ہے—بشرطیکہ ہماری قومی آزادی اور شان بدستور بنی رہے—تو اسے مانگنے، اُس کے لئے بات چیت کرنے یا اُسے منظور کرنے یں کسی ڈر یا گھبراہٹ یا گھمنڈ کی وجہ سے ہمیں بدکنا نہیں چاہئے. ایسی مدد لینے میں دنیاوی طور پر نہ کوئی غلطی ہے نہ اُس میں انیتکتا ہی ہے . اپنی نجی زندگی میں لوگ روزانہ شرکت اور لین دین کے سمجھوتے کرتے ہیں اور پھر بھی اُن کی اپنی شخصیت اور درجے یا پدوی میں بال برابر بھی فرق نہیں آتا . پر یہ بات کہ کوئی سمجھوتہ کرکے اُس کے باہر کے دائرے کے معاملوں میں کوئی آدمی دوسری پارٹی سے دبیگا یا نہیں اس بات پر منحصر ہے کہ اس کے اندر آتم وشواس کس پائے یا بلندی کا ہے . پنڈت جواہر لال نہرو شاید یہ محسوس کرتے ہیں کہ ہندستان کی یہ بزدلی ہوگی کہ وہ اپنے لئے ضروری اور باہر سے ملنےوالی مدد کو صرف اس ڈر سے انکار کردے کہ اس کے قبول کرنے سے قومی یا انترقومی معاملوں میں وہ اپنی آزادی قائم نہیں رکھ سکیگا . پنڈت جواہر لال کئی بار یہ دکھلا چکے ہیں کہ ہم آزاد ہیں اور کسی دوسرے کے اثر میں نہیں پھنستے . اس لئے پنڈت جواہر لال یہ کیسے مان لیں کہ

हिन्दुस्तान को अमरीकी मदद

(किशोरलाल मशरूवाला)

[5 जनवरी 1952 को हिन्द सरकार और ...ीकी सरकार में जो "सममौता" हुआ है उस पर अपनी राय फ़रवरी के परचे में दे चुके हैं. कुछ और ...े के साथ श्री सुरेश रामभाई का वह लेख 3 और ...ई के 'हरिजन' में भी छप चुका है. उसी को अब एक छोटी सी किताब की शकल में जिस का नाम ...मेन्ट आर सेलेवरी बान्ड ?" (Agreement or ...very Bond ?) है, निकाला है. इस किताब में ...केशोर लाल भाई मशरूवाला की एक बहुत ही ...र और विचार पूर्ण भूमिका है. हम उसी का ...ाद इस लेख में दे रहे हैं—एडीटर]

...ष्ट्रों के इ...ास में अकसर ऐसी घटनायें मिलती हैं ... होते दिखाई देते हैं जिनका न कोई फ़ौरी असर मालूम ...े न उनसे जनता में कोई बड़ी सनसनी ही फैलती ... क्या राज काजी नेता क्या अर्थशास्त्री लोग सभी ...तरफ़ से लापरवाह रहते हैं. लेकिन वह घटनायें या ...े होते हैं जिनका राष्ट्र की काया पलटने में आगे ... काफ़ी बड़ा हाथ होना साबित होता है. यह घटनायें ... एक तरह का बीज बोने का काम करते हैं जो कुछ ...द बड़े ज़ोर शोर से बढ़कर चारों तरफ़ फैल जाता ... धरती के भी अन्दर बहुत दूर जाकर अपने आस ... हर चीज़ को झुलसा देता है. शुरू शुरू में तो यह ... भोला भाला ही नहीं बल्कि खुशनुमा भी मालूम ... लेकिन बाद में जब यह अपना असर दिखलाना ... देता है तब ऐसा महसूस होता है कि—'का बरसा ...ी सुखानी' और तब उसके जाल से भी निकलना ...न मालूम होता है.

...नवरी 1952 को अमरीका और हिन्दुस्तान के ... सममौता हुआ है वह श्री सुरेश रामभाई और हममें ... को इस तरह की चीज़ महसूस होती है.

...द सरकार ने यह सममौता बहुत सोच समझने के ... अपने एक्सपर्टों या जानकारों की सलाह के बाद ... और इसलिये उसे अपने इस कारनामे पर पूरा ...तोष है. एक नहीं बल्कि देश के बहुत से नामी ...ने और ब्योपारी कारख़ानेदारों के आर्थिक आवाज़ ...भी इस सममौते की दुहाई दी है.

सब जानते हैं कि पंडित जवाहरलाल नेहरू को ... की कितनी ज़ियादा फ़िकर है कि देश के आर्थिक

ھندستان کو امریکی مدد

(کشور لال مشروالا)

[5 جنوری 1952 کو ھند سرکار اور امریکی سرکار میں جو "سمجھوتہ" ھوا ھے اُس پر ھم اپنی رائے فروری کے پرچے میں دے چکے ھیں . کچھ اور اضافے کے ساتھ شری سریش رامبھائی کا وہ لیکھ 3 اور 10 مئی کے "ھریجن" میں بھی چھپ چکا ھے . اُسی کو اب ھم نے ایک چھوٹی سی کتاب کی شکل میں جسکا نام "ایگری مینٹ آر سلیوری بانڈ؟" (Agreement or Slavery Bond?) ھے، نکالا ھے . اس کتاب میں شری کشور لال بھائی مشروالا کی ایک بہت ھی گمبھیر اور وچار پورن بھومکا ھے . ھم اُسی کا انوواد اِس لیکھ میں دے رھے ھیں—ایڈیٹر]

راشٹروں کے اتہاس میں اکثر ایسی گھٹنائیں ملتی ھیں یا سودے ھوتے دکھائی دیتے ھیں جنکا نہ کوئی فوری اثر معلوم پڑتا ھے نہ اُنسے جنتا میں کوئی بڑی سنسنی ھی پھیلتی ھے، اور کیا راجکاجی نیتا کیا ارتھ شاستری لوگ سبھی اُنکی طرف سے لاپرواہ رھتے ھیں . لیکن وہ گھٹنائیں یا سودے ایسے ھوتے ھیں جنکا راشٹر کی کایا پلٹنے میں آگے چلکر کافی بڑا ھاتھ ھونا ثابت ھوتا ھے . یہ گھٹنائیں یا سودے ایک طرح کا بیج بونے کا کام کرتے ھیں جو کچھ عرصے بعد بڑے زور شور سے بڑھکر چاروں طرف پھیل جاتا ھے اور دھرتی کے بھی اندر بہت دور جاکر اپنے آس پاس کی ھر چیز کو جھلسا دیتا ھے . شروع شروع میں تو یہ دیکھنے میں بھولا بھالا ھی نہیں بلکہ خوشنما بھی معلوم ھوتا ھے . لیکن بعد میں جب یہ اپنا اثر دکھلانا شروع کر دیتا ھے تب ایسا محسوس ھوتا ھے کہ—'کا برسا جب کرشی سکھانی' اور تب اُسکے جال سے بھی نکلنا ناممکن معلوم ھوتا ھے .

5 جنوری 1952 کو امریکہ اور ھندستان کے بیچ جو سمجھوتا ھوا ھے وہ شری سریش رامبھائی اور ھم میں سے بہتوں کو اس طرح کی چیز محسوس ھوتی ھے .

ھند سرکار نے یہ سمجھوتا بہت سوچ سمجھنے کے بعد اور اپنے ایکسپرٹوں یا جانکاروں کی صلاح کے بعد کیا ھے اور اِس لئے اُسے اپنے اُس کارنامے پر پورا پورا سنتوش ھے . ایک نہیں بلکہ دیش کے بہت سے نامی اخباروں نے اور بیوپاری کارخانے داروں کے آرتھک آواز پتروں نے بھی اِس سمجھوتے کی دھائی دی ھے .

ھم سب جانتے ھیں کہ پنڈت جواھر لال نہرو کو اس بات کی کتنی زیادہ فکر ھے کہ دیش کے آرتھک

"हां हां, ज़रूर." उन्होंने मिल कर जवाब दिया और फिर बड़े शौक़ से मलंग साहब क्या फ़रमायेंगे उसकी इन्तज़ार करने लगे.

फिर मलंग साहब ने फ़रमाया—"ख़ुशबू लफ़्ज़ दो लफ़्ज़ों का बना हुआ है—ख़ुश और बू. तो ख़ुशबू का मतलब हुआ उसकी बू जो हमेशा ख़ुश रहता है और हमेशा ख़ुश तो ख़ुदा ही रहता है. उपनिशदों में क्या एक जगह ऐसा नहीं लिखा हुआ है कि ईश्वर आनन्द है ?"

फिर कुछ देर के लिए वह ख़ामोश रहे. उनके मित्र उनकी तरफ़ अचरज से देखने लगे. मगर उनमें से एक से रहा ही न गया. वह बोल उठा—"ख़ूब कही मलंग मियां, मगर कुछ और भी तो कहो."

मलंग मियां ने अपनी विचार तरंग जारी रखी. "हर एक में ईश्वर बसता है. और वह आनन्द मय है. मगर ईश्वर का एक और भी तो नाम है. वह है प्रेम. और जहां लोग आपस में प्रेम से मिलते हैं वहां ख़ुशी की ख़ुशबू ख़ुद बख़ुद लोगों के दिलों से एक अगरबत्ती की सुगन्ध की तरह ऊपर निकल उठती है."

मलंग साहब फिर कुछ ख़ामोश रहे. उनके मित्रों ने क्योंकि अब उनका मकान नज़दीक ही आ पहुंचा था उन्हें नमस्कार की और कहा—"आज तो मलंग साहब आपने अपनी पंडिताई का जौहर ख़ूब दिखाया."

जवाब में मलंग साहब ज़रा हंस दिये और कहने लगे—"भाई, पंडिताई से तो मैं हज़ारों कोस दूर रहने की हमेशा कोशिश करता आया हूँ. फिर मेरे में पंडिताई कहां ? हां, इतना ज़रूर कहूँगा कि मैं ख़ुशबूदार बनने की ख़्वाहिश बरसों से रखता आया हूँ."

मेरे मत से कम्युनिज़्म कोई बुरी चीज़ हो ऐसी बात नहीं है. बुरी चीज़ यह है कि वह हिंसा से लादा जाता है. मुझे कम्युनिज़्म से डर बिलकुल नहीं लगता, क्योंकि हिन्दुस्तान की हज़ारों बरसों की कलचर हिंसा विरोधी है. और गांधीजी ने हमारे देश को अहिंसा की ताक़त दी है. मुझे यक़ीन है कि हिन्दुस्तान उसी की बदौलत बचने वाला है. मुझे यह भी विश्वास है कि अमरीका जैसा देश डर को छोड़ कर अगर अहिंसा की ताक़त को आज़मा कर देखेगा, तो वह सारी दुनिया को निडर करेगा और ख़ुद भी निडर बनेगा.

—विनोबा

" ہاں ہاں، ضرور ." اُنہوں نے مل کر جواب دیا اور پھر بڑے شوق سے ملنگ صاحب کیا فرمائینگے اُس کی انتظار کرنے لگے .

پھر ملنگ صاحب نے فرمایا—" خوشبو لفظ دو لفظوں کا بنا ہوا ہے—خوش اور بو تو خوشبو کا مطلب ہوا اُس کی بو جو ہمیشہ خوش رہتا ہے اور ہمیشہ خوش تو خدا ہی رہتا ہے . اُپنشدوں میں کیا ایک جگہ ایسا نہیں لکھا ہوا ہے کہ ایشور آنند ہے ؟"

پھر کچھ دیر کے لئے وہ خاموش رہے . اُن کے مِتر اُن کی طرف اچرج سے دیکھنے لگے . مگر اُن میں سے ایک سے رہا ہی نہ گیا . وہ بول اُٹھا—"خوب کہی ملنگ میاں، مگر کچھ اور بھی تو کہو ."

ملنگ میاں نے اپنی وچار ترنگ جاری رکھی. " ہر ایک میں ایشور بستا ہے . اور وہ آنند مے ہے مگر ایشور کا ایک اور بھی تو نام ہے . وہ ہے پریم . اور جہاں لوگ آپس میں پریم سے ملتے ہیں وہاں خوشی کی خوشبو خود بہ خود لوگوں کے دلوں سے ایک اگر بتی کی سوگندھ کی طرح اوپر نکل اُٹھتی ہے ."

ملنگ صاحب پھر کچھ خاموش رہے. اُن کے مِتروں نے کیونکہ اب اُن کا مکان نزدیک ہی آ پہونچا تھا اُنہیں نمسکار کی اور کہا—" آج تو ملنگ صاحب آپ نے اپنی پنڈتائی کا جوہر خوب دکھایا ."

جواب میں ملنگ صاحب ذرا ہنس دیئے اور کہنے لگے—" بھائی، پنڈتائی سے تو میں ہزاروں کوس دور رہنے کی ہمیشہ کوشش کرتا آیا ہوں . پھر میرے میں پنڈتائی کہاں ؟ ہاں، اتنا ضرور کہونگا کہ میں خوشبودار بننے کی خواہش برسوں سے رکھتا آیا ہوں ."

میرے مت سے کمیونزم کوئی بری چیز ہو ایسی بات نہیں ہے . بری چیز یہ ہے کہ وہ ہنسا سے لادا جاتا ہے . مجھے کمیونزم سے ڈر بالکل نہیں لگتا، کیونکہ ہندستان کی ہزاروں برسوں کی کلچر ہنسا ورودھی ہے اور گاندھی نے ہمارے دیش کو اہنسا کی طاقت دی ہے . مجھے یقین ہے کہ ہندستان اُسی کی بدولت بچنے والا ہے. مجھے یہ بھی وشواس ہے کہ امریکہ جیسا دیش ڈر کو چھوڑ کر اگر اہنسا کی طاقت کو آزما کر دیکھیگا، تو وہ ساری دنیا کو نڈر کریگا اور خود بھی نڈر بنیگا .

—ونوبا

को बचाता है. उसी तरह आज भी दुनिया में विचारों वचन से, ब्योपार से, शास्त्रार्थों से, ऐटम बम से हर से भरसक कोशिशें हो रही हैं. उस प्रलय की सारी J पर जो देश मारकन्डे की तरह अकेला तैरेगा, उसके दुनिया की लीडरशिप आने वाली है. मैं यह घमंड मैं बोल रहा हूँ, बल्कि नम्रता के साथ बोल रहा हूँ. नम्र बनें, तभी ऊंचे उठ सकेंगे. मनु महाराज ने य लिख रखा है :

इस देश में जो महान पुरुश पैदा होंगे, उनमें सी शक्ति होगी कि उसके ज़रिये सारी दुनिया लोग अपने जीवन के लिए आदर्श सीखेंगे.

कहता हूं कि वह ताक़त, वह सत्ता आपके हाथों में पको एक नेता मिला था, जिसकी लीडरशिप में आपका अहिंसा के तरीक़े से आज़ाद हो सका. आज भी इस ऐसे लोग हैं जिनके दिल में सदभाव मौजूद हैं. थोड़ी हिम्मत रक्खो और थोड़ी कल्पना शक्ति रक्खो प देखेंगे कि आपके हाथ में वह ताक़त है, जिससे दुनिया को आकार दे सकते हैं. यह हमला नहीं है दुनिया को बचाना है. यह एक ऐसी दिली तमन्ना है खने लायक़ है.

(लखनऊ में बुद्ध जयन्ती के दिन एक स्पीच से)

دنیا کو بچاتا ہے . اسی طرح آج بھی دنیا میں وچاروں سے' وچن سے' بیوپار سے' شاسترارتھوں سے' ایٹم بم سے ہر طرح سے بھرسک کوششیں ہو رہی ہیں . اس پرلے کی ساری کوشش پر جو دیش مارکنڈے کی طرح اکیلا تیریگا' اسکے ہاتھ میں دنیا کی لیڈرشپ آنے والی ہے . میں یہ گھمنڈ سے نہیں بول رہا ہوں' بلکہ نمرتا کے ساتھ بول رہا ہوں . ہم ونمر بنیں' تبھی اونچے اٹھ سکینگے . منومہاراج نے بھوشیہ لکھ رکھا ہے :

اس دیش میں جو مہان پرش پیدا ہونگے' ان میں ایسی شکتی ہوگی کہ اس کے ذریعے ساری دنیا کے لوگ اپنے جیون کے لئے آدرش سیکھینگے .

میں کہتا ہوں کہ وہ طاقت' وہ ستا آپکے ہاتھوں میں ہے . آپ کو ایک نیتا ملا تھا' جسکی لیڈرشپ میں آپ کا دیش اہنسا کے طریقے سے آزاد ہوسکا. آج بھی اس دیش میں ایسے لوگ ہیں جنکے دل میں سدبھاؤ موجود ہیں . آپ تھوڑی ہمت رکھو اور تھوڑی کلپنا شکتی رکھو تو آپ دیکھینگے کہ آپ کے ہاتھ میں وہ طاقت ہے' جس سے آپ دنیا کو آکار دے سکتے ہیں . یہ حملہ نہیں ہے بلکہ دنیا کو بچانا ہے . یہ ایک ایسی دلی تمنا ہے' جو رکھنے لائق ہے .

(لکھنؤ میں بدھ جینتی کے دن ایک اسپیچ سے)

खुशबू

(गु० म०)

एक दिन वर्धा में काका कालेलकर जी से कुछ दोस्त गये. जब सब उन्हें प्रेम पूर्वक "राम रहीम" नमस्कार के तो उन्होंने उनमें से एक से जो ज़रा मुहब्बत मस्त ज़िन्दा दिल थे हंसते हंसते पूछा—"मगर यह ख़ुशबू से ?"

काका जी के यह शब्द सुनकर पहले तो सब लोग कुछ हुए. और इसका एक कारन भी था. उस वक़्त उस डली में किसी ने भी अपने जिस्म पर या कपड़ों पर ख़ुशबूदार तेल या इतर का इस्तेमाल नहीं किया हुआ . फिर यह ख़ुशबू कहां से ?

जब बातचीत ख़त्म हो चुकी और मित्र मंडल घर लौटा तो रास्ते में एक मित्र ने जो कुछ मलंग तबियत अपने मित्रों को कहा—"मैं तुम्हें बताऊं वह ख़ुशबू आ रही थी ?"

خوشبو

(گ . م .)

ایک دن وردھا میں کاکا کالیلکر جی سے کچھ دوست ملنے گئے . جب سب انہیں پریم پوروک " رام رحیم " نمسکار کر چکے تو انہوں نے ان میں سے ایک جو ذرا محبت مست اور زندہ دل تھے ہنستے ہنستے پوچھا—"مگر یہ خوشبو کہاں سے ؟"

کاکا جی کے یہ شبد سن کر پہلے تو سب لوگ کچھ حیران ہوئے اور اس کا ایک کارن بھی تھا . اس وقت اس پریم منڈلی میں کسی نے بھی اپنے جسم پر یا کپڑوں پر کسی خوشبو دار تیل یا عطر کا استعمال نہیں کیا ہوا تھا . تو پھر یہ خوشبو کہاں سے ؟

جب بات چیت ختم ہو چکی اور متر منڈل گھر واپس لوٹا تو راستے میں ایک متر نے جو کچھ ملنگ طبیعت کا تھا اپنے متروں کو کہا—" میں تمہیں بتاؤں وہ خوشبو کہاں سے آ رہی تھی ؟"

दीवारें ख़्यालात के आवागमन को रोक नहीं सकतीं

और मैं जनता हूँ कि यह काम धर्म चक्र परिवर्तन का काम है. यह मेरी सिंह गर्जना है. ज़मीन तो मेरे पास कब पहुंच चुकी है. आप जिस तरीक़े से चाहो उस तरीक़े से यह समस्या हल कर सकते हो. आपको तय करना है कि घी के डिब्बे को आग लगानी है, या वेद मंत्रों के साथ यज्ञ में उसकी आहुति देनी है. आप यह मत समझिये कि बाहर से हमारे इस देश में सिर्फ़ मानसून ही आते हैं. क्रान्तिकारी विचार भी बाहर से आते हैं और जिस तरह से हवा बे रोक टोक आती है उसी तरह क्रान्तिकारी विचार भी बिना रोक टोक, बिना किसी तरह के पास पोर्ट के आते रहते हैं. लोगों ने, जहां दीवारें नहीं थीं, वह बनाईं. चीन की वह बड़ी दीवार देख लीजिये. भगवान ने जरमनी और फ्रान्स के बीच कोई दीवार नहीं खड़ी की थी, लेकिन उन्होंने सिगफ्रीड और मेजिनो लाइनें बना कर क्षेत्र छोटा कर दिया. मगर यह दीवारें लोगों को सिर्फ़ इधर से उधर जाने आने से ही रोक सकती हैं, लेकिन वह विचारों के आवा गमन को नहीं रोक सकतीं. उसी तरह यहां भी दुनिया के हर एक देश से विचार आयेंगे और यहाँ से बाहर भी जायेंगे. इसलिये हमें तय करना चाहिये कि भूमि की समस्या हमें शान्ति से हल करनी है या हिंसा से? मेरे मन में इस बारे में सन्देह नहीं है कि यह समस्या शान्ति से हल हो सकती है. इस बारे में इतना साफ़ दर्शन मेरे मन में है, इसीलिये मैं बे ख़ौफ़ हो कर बोल रहा हूँ और कहता हूँ कि भाइयो, वन में पन्छी बोल रहे हैं, इसलिये अब जाग जाओ. आप उसे सुनते हैं या नहीं? आप जागते हैं या नहीं? हे मेरे अन्तर यामी भगवान! सुबह का समय हो गया है, तुम जाग जाओ और दीनन को दान दो! जिस तरह तुलसी दास जी भगवान को समझा रहे थे, उसी तरह मैं अपने भगवान को यानी आपको कहता हूँ कि जाग जाओ. अगर आप सब दान दोगे तो आपकी इज़्ज़त होगी.

आज की जरूरत

ज़रूरत इस बात की है कि भू-दान यज्ञ का सन्देश दूर दूर फैलाने के लिए हम उसी निश्ठा से काम करें, जिस निश्ठा से भगवान बुद्ध के चेलों ने किया. वह बाहर के देशों में गये और वहां प्रेम से प्रचार किया. उसी निश्ठा से हमें इस नये धर्म चक्र परिवर्तन में लग जाना चाहिये. ऐसा होगा, तब आप भी दुनिया को एक नया रूप दे सकेंगे. मैंने कहा कि जब प्रलय के समय सारी दुनिया जलमय हो जाती है तो अकेला मारकन्डे रिशी तैरता रहता है और फिर वही

دیواریں خیالات کے آواگمن کو روک نہیں سکتیں

اور میں جانتا ہوں کہ یہ کام دھرم چکر پریورتن کا کام ہے۔ یہ میری سنگھ گرجنا ہے۔ زمین تو میرے پاس کب کی پہونچ چکی ہے۔ آپ جس طریقے سے چاہو' اس طریقے سے یہ سمسیا حل کرسکتے ہو۔ آپ کو طے کرنا ہے کہ گھی کے ڈبے کو آگ لگانی ہے' یا وید منتروں کے ساتھ یگیہ میں اس کی آہوتی دینی ہے۔ آپ یہ مت سمجھئے کہ باہر سے ہمارے اِس دیش میں صرف مانسون ہی آتے ہیں۔ کرانتکاری وچار بھی باہر سے آتے ہیں اور جس طرح سے ہوا بے روک ٹوک آتی ہے' اسی طرح کرانتی کاری وچار بھی بنا روک ٹوک' بنا کسی طرح کے پاس پورٹ کے آتے رہتے ہیں۔ لوگوں نے' جہاں دیواریں نہیں تھیں' وہ بنائیں۔ چین کی وہ بڑی دیوار دیکھ لیجئے۔ بھگوان نے جرمنی اور فرانس کے بیچ کوئی دیوار نہیں کھڑی کی تھی' لیکن انہوں نے زگ‌فرید اور میزنو لائنیں بناکر چھیتر چھوٹا کردیا۔ مگر یہ دیواریں لوگوں کو صرف اِدھر سے اُدھر جانے آنے سے ہی روک سکتی ہیں' لیکن وہ وچاروں کے آواگمن کو نہیں روک سکتیں۔ اسی طرح یہاں بھی دنیا کے ہر ایک دیش سے وچار آئینگے اور یہاں سے باہر بھی جائینگے۔ اس لئے ہمیں طے کرنا چاہئے کہ بھومی کی سمسیا ہمیں شانتی سے حل کرنی ہے یا ہنسا سے؟ میرے من میں اس بارے میں سندیہہ نہیں ہے کہ یہ سمسیا شانتی سے حل ہوسکتی ہے۔ اِس بارے میں اِتنا صاف درشن میرے من میں ہے' اِسی لئے میں بےخوف ہوکر بول رہا ہوں اور کہتا ہوں کہ بھائیو' بن میں پنچھی بول رہے ہیں' اس لئے اب جاگ جاؤ۔ آپ اُسے سنتے ہیں یا نہیں؟ آپ جاگتے ہیں یا نہیں؟ ہے میرے انتریامی بھگوان! صبح کا سمے ہوگیا ہے' تم جاگ جاؤ اور دینن کو دان دو! جس طرح تلسی داس جی بھگوان کو سمجھا رہے تھے' اسی طرح میں اپنے بھگوان کو یعنی آپ کو کہتا ہوں کہ جاگ جاؤ۔ اگر آپ سب دان دوگے تو آپ کی عزت ہوگی۔

آج کی ضرورت

ضرورت اس بات کی ہے کہ بھودان یگیہ کا سندیش دور دور پھیلانے کے لئے ہم اسی نشٹھا سے کام کریں' جس نشٹھا سے بھگوان بدھ کے چیلوں نے کیا۔ وہ باہر کے دیشوں میں گئے اور وہاں پریم سے پرچار کیا۔ اسی نشٹھا سے ہمیں اِس نئے دھرم چکر پریورتن میں لگ جانا چاہئے۔ ایسا ہوگا' تب آپ بھی دنیا کو ایک نیا روپ دے سکینگے۔ میں نے کہا کہ جب پرلے کے سمے ساری دنیا جل مے ہو جاتی ہے تو اکیلا مارکنڈے رشی تیرتا رہتا ہے اور پھر وہی

तुम्हारी मंजूर करनी चाहिये, क्योंकि हिन्दुस्तान खुद एक पंच रंगी दुनिया है. इसमें कई धर्म, कई भाषायें, कई सूबे और उनके बहुत से रस्म व रिवाज हैं. इसका एक एक सूबा योरप के बड़े बड़े देश की बराबरी का है. क्या ऐसी बहुत सी दूसरी जमाअतों को हम हिंसक तरीक़े से एक रस रख सकते हैं ? एक एक मसला रोज़ हमारे सामने मौजूद होता जा रहा है. आन्ध्र वाले चाहते हैं कि हमें एक आज़ाद प्रदेश मिले. वह भारत भूमि से अलग नहीं रहना चाहते हैं, लेकिन उनकी अलग प्रदेश की मांग ग़ैर वाजिब नहीं है. तो क्या उनकी यह मांग हिंसक तरीक़े से पूरी हो सकती है ? अगर हिंसात्मक तरीक़े को हम ठीक मानते हैं तो हमें यह मानना होगा कि गांधी का हत्यारा पुन्यवान था. उसके विचार भले ही ग़लत हों, पर वह पक्का था. अगर हम अच्छे और सच्चे विचार के वास्ते हिंसात्मक तरीक़े अख़्त्यार कर सकते हैं, तो मैं आप से कहना चाहता हूँ कि फिर हिन्दुस्तान के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे, वह मज़बूत नहीं रह सकेगा. हिंसा से एक मसला तय होता दिखाई देगा, लेकिन दूसरा मसला पैदा होगा. मसले कम होने के बजाय नये नये मसले पैदा होते ही रहेंगे. आज भी हरिजनों को मंदिरों में आने जाने को नहीं मिलता छूआ छूत का यह भेद नहीं मिट पाया तो क्या हरिजन अपने हाथ में हथियार लें ? अगर अच्छे काम के लिए हिंसा जायज़ है तो हरिजन भाई हथियार उठायें, यह भी जायज़ मानना होगा. यह दूसरी बात है कि वह हथियार न उठायें.

बुद्ध का काम इन कमज़ोर कन्धों पर !

इसलिये आज यह सब बातें ध्यान में रख कर तय करना होगा कि जो महत्व के मसले हमारे सामने आज हैं, उनको हल करने के लिए कौन से तरीक़े जायज़ हैं और कौन से नाजायज़? अगर हम अच्छे मक़सद के वास्ते ख़राब साधन इस्तेमाल करते हैं, तो हिन्दुस्तान के सामने मसले पैदा ही होते रहने वाले हैं लेकिन अगर हम अहिंसक तरीक़े से अपने मसले तय करेंगे तो दुनिया में मसले रहेंगे ही नहीं. यही वजह है कि मैं भूमि की समस्या शान्ति के साथ हल करना चाहता हूँ. भूमि की समस्या छोटी समस्या नहीं है. मैं लोगों से दान में भूमि मांग रहा हूँ, भीक नहीं मांग रहा हूँ. एक ब्राह्मण के नाते मैं भीक मांगने का अधिकारी तो हूँ, लेकिन यह भीक मैं निजी तौर पर ही मांग सकता हूँ. पर जहां दरिद्र नारायन के प्रतिनिधि के तौर पर मांगता हूँ, वहां मुझे भीक नहीं मांगनी है, दीक्षा देनी है. इसलिये मैं इस नतीजे पर पहुंच चुका हूँ कि भगवान जो काम बुद्ध के ज़रिये कराना चाहते थे, वह काम उन्होंने मेरे इन कमज़ोर कन्धों पर डाला है.

دامی منظور کرنی چاہئے' کیونکہ ہندستان خود ایک پنچ رنگی دنیا ہے. اس میں کئی دھرم' کئی بھاشائیں' کئی صوبے اور ان کے بہت سے رسم و رواج ہیں۔ اس کا ایک ایک صوبہ یورپ کے بڑے بڑے دیش کی برابری کا ہے. کیا ایسی بہت سی دوسری جماعتوں کو ہم ہنسک طریقے سے ایک رس رکھ سکتے ہیں؟ ایک ایک مسئلہ روز ہمارے سامنے موجود ہوتا جا رہا ہے. آندھر والے چاہتے ہیں کہ ہمیں ایک آزاد پردیش ملے . وہ بھارت بھومی سے الگ نہیں رہنا چاہتے ہیں' لیکن ان کی الگ پردیش کی مانگ غیر واجب نہیں ہے. تو کیا ان کی یہ مانگ ہنسک طریقے سے پوری ہوسکتی ہے؟ اگر ہنساتمک طریقے کو ہم ٹھیک مانتے ہیں تو ہمیں یہ ماننا ہوگا کہ گاندھی کا ہتیارا پنیہ وان تھا. اس کے وچار بھلے ہی غلط ہوں پر وہ پکا تھا . اگر ہم اچھے اور سچے وچار کے واسطے ہنساتمک طریقے اختیار کرسکتے ہیں' تو میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ پھر ہندستان کے ٹکڑے ٹکڑے ہوجائینگے' وہ مضبوط نہیں رہ سکیگا. ہنسا سے ایک مسئلہ طے ہوتا دکھائی دیگا' لیکن دوسرا مسئلہ پیدا ہوگا . مسئلے کم ہونے کے بجائے نئے نئے مسئلے پیدا ہوتے ہی رہینگے . آج بھی ہریجنوں کو مندروں میں آنے جانے کو نہیں ملتا . چھوا چھوت کا یہ بھید نہیں مٹ پایا تو کیا ہریجن اپنے ہاتھ میں ہتھیار لیں ؟ اگر اچھے کام کے لئے ہنسا جائز ہے تو ہریجن بھائی ہتھیار اٹھائیں' یہ بھی جائز ماننا ہوگا . یہ دوسری بات ہے کہ وہ ہتھیار نہ اٹھائیں.

بدھ کا کام ان کمزور کندھوں پر !

اس لئے آج یہ سب باتیں دھیان میں رکھ کر طے کرنا ہوگا کہ جو مہتو کے مسئلے ہمارے سامنے آج ہیں' ان کو حل کرنے کے لئے کون سے طریقے جائز ہیں اور کون سے ناجائز ؟ اگر ہم اچھے مقصد کے واسطے خراب سادھن استعمال کرتے ہیں' تو ہندستان کے سامنے مسئلے پیدا ہی ہوتے رہنے والے ہیں. لیکن اگر ہم اہنسک طریقے سے اپنے مسئلے طے کرینگے تو دنیا میں مسئلے رہینگے ہی نہیں. یہی وجہ ہے کہ میں بھومی کی سمسیا شانتی کے ساتھ حل کرنا چاہتا ہوں . بھومی کی سمسیا چھوٹی سمسیا نہیں ہے. میں لوگوں سے دان میں بھومی مانگ رہا ہوں' بھیک نہیں مانگ رہا ہوں. ایک براہمن کے ناتے میں بھیک مانگنے کا ادھیکاری تو ہوں' لیکن یہ بھیک میں نجی طور پر ہی مانگ سکتا ہوں. پر جہاں دردرنارائن کے پرتی ندھی کے طور پر مانگتا ہوں' وہاں مجھے بھیک نہیں مانگنی ہے' دیکھشا دینی ہے . اس لئے میں اس نتیجے پر پہونچ چکا ہوں کہ بھگوان جو کام بدھ کے ذریعے کرانا چاہتے تھے' وہ کام انہوں نے میرے ان کمزور کندھوں پر ڈالا ہے .

हिंसा का तरीक़ा चुन सकते हैं, चाहें तो अहिंसा का चुन सकते हैं. चाहें तो फ़ौज में आदमी बढ़ा सकते हैं, नौका दल और हवाई दल भी बढ़ा सकते हैं और देश को खाना कपड़ा चाहे न मिले, लेकिन देश वासियों को इस सेना के लिए त्याग करने को कह सकते हैं. और चाहें तो अहिंसा के रास्ते भी जा सकते हैं. चुनाव करने की यह ताक़त आज हमारे हाथ में है. पहले लाचारी थी, आज ऐसी लाचारी नहीं है.

ग़ुलाम बनिये या ख़तरा मोल लीजिये

और फिर आज, जब कि गांधी जी चले गये हैं, हम लोग मुक्त मन से और खुले दिल से बिना किसी दबाव के फ़ैसला कर सकते हैं. मानो इसीलिये गांधी जी को भगवान हमारे बीच से उठा ले गया है! अब उनका दबाव हम पर नहीं है. अगर हम हिंसा के तरीक़े को मानते हैं तो हमें रूस या अमरीका को गुरु मानना होगा. किसी एक गुरु को मान कर उसके शागिर्द बन कर आज़ादी के साथ उनमें से किसी का ग़ुलाम बनना होगा. सवाल यह है कि क्या आज़ाद इच्छा से हम उनके शागिर्द बनना चाहते हैं? क्या उनके "कैम्प फ़ालोअर" बन कर उनके पीछे पीछे जाकर हमारी ताक़त बढ़ने वाली है? उनकी ताक़त से ताक़त लेने में हमें पचासों साल लग जायेंगे और मुमकिन है फिर भी हम उनसे ज़ियादा ताक़तवर न हो सकें. नतीजा यह होगा कि हिन्दुस्तान को फिर से ग़ुलाम हो कर रहना पड़ेगा. और अगर हम अमरीका और रूस दोनों से भी ताक़तवर बन जायें तो दुनिया के लिए एक ख़तरा साबित होंगे. अब सवाल हमारे सामने यह है कि आज़ादी के नाम पर क्या हम ग़ुलाम बनना चाहते हैं या दुनिया के लिये ख़तरा बनना चाहते हैं? हमें गहराई से इस पर सोचना होगा.

हिंसा से नई मुसीबतें

आज हिन्दुस्तान आज़ाद है, फिर भी कपड़ा बाहर से मंगाना पड़ता है. आज हिन्दुस्तान आज़ाद है, तब भी हमें "एक्सपर्ट" लोग बाहर से मंगाने पड़ते हैं. आज हिन्दुस्तान आज़ाद है लेकिन हमें हथियार और फ़ौजी बाहर से ही मंगाने पड़ते हैं. आज हिन्दुस्तान आज़ाद है, लेकिन तालीम के लिए भी हमें बाहर के मुल्कों पर निर्भर रहना पड़ता है. तो क्या आज़ादी के साथ साथ हम आज़ादी के साथ ग़ुलाम बने रहना चाहते हैं? आज यह सवाल हम लोगों के सामने मौजूद है. भगवान ने हिन्दुस्तान का नसीब ऐसा बनाया है कि या तो उसे अहिंसा के रास्ते से श्रद्धा के साथ चलना चाहिये, या जो लोग हिंसा में पंडित हैं उनकी

ہنسا کا طریقہ چن سکتے ہیں' چاہیں تو اہنسا کا چن سکتے ہیں. چاہیں تو فوج میں آدمی بڑھا سکتے ہیں' نوکا دل اور ہوائی دل بھی بڑھا سکتے ہیں اور دیش کو کھانا کپڑا چاہے نہ ملے' لیکن دیش واسیوں کو اس سینا کے لئے تیاگ کرنے کو کہہ سکتے ہیں. اور چاہیں تو اہنسا کے راستے بھی جا سکتے ہیں. چناؤ کرنے کی یہ طاقت آج ہمارے ہاتھ میں ہے. پہلے لاچاری تھی' آج ایسی لاچاری نہیں ہے.

غلام بنئے یا خطرہ مول لیجئے

اور پھر آج' جبکہ گاندھی جی چلے گئے ہیں' ہم لوگ مکت من سے اور کھلے دل سے بنا کسی دباؤ کے فیصلہ کر سکتے ہیں. مانو اسی لئے گاندھی جی کو بھگوان ہمارے بیچ سے اٹھا لے گیا ہے! اب اُن کا دباؤ ہم پر نہیں ہے. اگر ہم ہنسا کے طریقے کو مانتے ہیں تو ہمیں روس یا امریکہ کو گرو ماننا ہوگا. کسی ایک گرو کو مان کر اس کے شاگرد بن کر آزادی کے ساتھ اُن میں سے کسی کا غلام بننا ہوگا. سوال یہ ہے کہ کیا آزاد اچھا سے ہم اُن کے شاگرد بننا چاہتے ہیں؟ کیا اُن کے " کیمپ فالوئر " بنکر اُن کے پیچھے پیچھے جا کر ہماری طاقت بڑھنے والی ہے؟ اُن کی طاقت سے طاقت لینے میں ہمیں پچاسوں سال لگ جائیں گے اور ممکن ہے پھر بھی ہم اُن سے زیادہ طاقتور نہ ہو سکیں. نتیجہ یہ ہوگا کہ ہندستان کو پھر سے غلام ہو کر رہنا پڑیگا. اور اگر ہم امریکہ اور روس دونوں سے بھی طاقتور بن جائیں تو دنیا کے لئے ایک خطرہ ثابت ہونگے. اب سوال ہمارے سامنے یہ ہے کہ آزادی کے نام پر کیا ہم غلام بننا چاہتے ہیں یا دنیا کے لئے خطرہ بننا چاہتے ہیں؟ ہمیں گہرائی سے اس پر سوچنا ہوگا.

ہنسا سے نئی مصیبتیں

آج ہندستان آزاد ہے' پھر بھی کپڑا باہر سے منگانا پڑتا ہے. آج ہندستان آزاد ہے' تب بھی ہمیں "ایکسپرٹ" لوگ باہر سے منگانے پڑتے ہیں. آج ہندستان آزاد ہے لیکن ہمیں ہتھیار اور فوجی باہر سے ہی منگانے پڑتے ہیں آج ہندستان آزاد ہے' لیکن تعلیم کے لئے بھی ہمیں باہر کے ملکوں پر نربھر رہنا پڑتا ہے. تو کیا آزادی کے ساتھ ساتھ ہم آزادی کے غلام بنے رہنا چاہتے ہیں؟ آج یہ سوال ہم لوگوں کے سامنے موجود ہے. بھگوان نے ہندستان کا نصیب ایسا بنایا ہے کہ یا تو اُسے اہنسا کے راستے سے شردھا کے ساتھ چلنا چاہئے' یا جو لوگ ہنسا میں پنڈت ہیں اُن کی

है, उतनी ही महिमा इस बात की भी है कि अंगरेज़ों निश्चित तारीख़ को यहां से हुकूमत उठा ली. इतिहास ने वाले मानेंगे कि यह भी नैतिकता की अजीब जीत एक और चमत्कार जो ऊपर के चमत्कारों से भी दा ज़ोर का है वह हुआ कि जहां माउन्टबेटेन ने स्तान का कारोबार हिन्दुस्तान के लोगों को सौंप दिया, मारे लोगों ने उसे ही गवरनर जनरल के तौर पर लेया. नैतिक जीत की इससे बड़ी मिसाल कोई हो सकती थी. नैतिक तरीक़े की ख़ूबी यह होती है कि जो जीतते हैं वह जीतते ही हैं, लेकिन जो नहीं जीतते, ी जीतते हैं, एक की हार के आधार पर दूसरे की जीत होती. और आप देखते हैं कि बावजूद इस बात के में इंगलैंड से कई तरह का दुख पहुँचा और मुसीबतें पड़ीं, हम लोगों के मन में आज इंगलैंड के बारे में नी के भाव नहीं हैं. दूसरी जगह किसी भी लड़ाई के ऐसा सद्भाव प्रगट नहीं हुआ है.

हिंसा या अहिंसा में चुनाव

अब जब कि एक राज जा कर दूसरा राज आया है, यह सोचने का समय है कि हमें किस तरह अपनी ज रचना करनी है. यानी यह शाम का समय है, ध्यान समय है. हमारे सामने आज पच्चीसों रास्ते खुले हैं. सा रास्ता लें, यह हमें तय करना है. यह तय करने में हमें वाक़ये को नहीं भूलना चाहिये जिसका हमने आदर के अभी ज़िक्र किया. आज हम एक बड़ी भारी सल्तनत बोझ उठा रहे हैं. इसलिये हम सब के सामने यह बड़ा सवाल है कि हमारी आर्थिक और समाजी रचना करने न सा तरीक़ा मंज़ूर करें. गांधी जी के ज़माने में हमने सा का तरीक़ा आज़माया था, लेकिन उसमें हमारी ख़ासियत नहीं थी, क्योंकि तब हम लाचार थे. अगर स रास्ते नहीं जाते तो मार खाते. दूसरा कोई अहिंसक हमारे लिए खुला नहीं था. इसलिये जो रास्ता हम ने त्यार किया, वह अशरन का शरन था, अनाज का था. इसीलिये हमने अहिंसा का रास्ता अपनाया गांधी जी की लीडरशिप हमें मिली. हमने सोचा कि रीक़ा हम आज़मायें. हिंसा में हम जितने ताक़तवर थे, ज़ियादा ताक़तवर हमारे दुश्मन थे. लेकिन अहिंसा उससे ज़ियादा ताक़तवर थे. इसलिये हमारे सामने ी रास्ता था—या तो आज़ादी हासिल करने की छोड़ कर चुप चाप ग़ुलामी को मान लें या अहिंसक के लिए तैयार हो जायें. उस समय हमारे सामने गी या ख़्वाहिश का सवाल नहीं था. लेकिन अब बात है. अब हम चुनाव कर सकते हैं. अगर हम चाहें तो

مہیما ہے، اتنی ہی مہیما اس بات کی بھی ہے کہ انگریزوں نے ایک نشچت تاریخ کو یہاں سے حکومت اٹھالی. اتہاس لکھنے والے مانینگے کہ یہ بھی نیتکتا کی عجیب جیت ہوئی . ایک اور چمتکار جو اوپر کے چمتکاروں سے بھی زیادہ زور کا ہے وہ یہ ہوا کہ جہاں ماونٹ بیٹن نے ہندستان کا کاروبار ہندستان کے لوگوں کو سونپ دیا، وہاں ہمارے لوگوں نے اسے ہی گورنر جنرل کے طور پر رکھ لیا . نیتک جیت کی اس سے بڑی مثال کوئی ہو نہیں سکتی تھی. نیتک طریقے کی خوبی یہ ہوتی ہے کہ اس میں جو جیتتے ہیں وہ جیتتے ہی ہیں، لیکن جو نہیں جیتتے، وہ بھی جیتتے ہیں، ایک کی ہار کے آدھار پر دوسرے کی جیت نہیں ہوتی . اور آپ دیکھتے ہیں کہ باوجود اس بات کے کہ ہمیں انگلینڈ سے کئی طرح کا دکھ پہونچا اور مصیبتیں سہنی پڑیں، ہم لوگوں کے من میں آج انگلینڈ کے بارے میں دشمنی کے بھاؤ نہیں ہیں . دوسری جگہ کسی بھی لڑائی کے بعد ایسا سدبھاؤ پرگٹ نہیں ہوا ہے .

ہنسا یا اہنسا میں چناؤ

اب جبکہ ایک راج جاکر دوسرا راج آیا ہے، تو یہ سوچنے کا سمے ہے کہ ہمیں کس طرح اپنی سماج رچنا کرنی ہے . یعنی یہ شام کا سمے ہے، دھیان کا سمے ہے . ہمارے سامنے آج پچیسوں راستے کھلے ہیں . کون سا راستہ لیں، یہ ہمیں طے کرنا ہے. یہ طے کرنے میں ہمیں اس واقعے کو نہیں بھولنا چاہئے جس کا ہم نے آدر کے ساتھ ابھی ذکر کیا. آج ہم ایک بڑی بھاری سلطنت کا بوجھ اٹھا رہے ہیں . اس لئے ہم سب کے سامنے یہ بڑا بھاری سوال ہے کہ ہماری آرتھک اور اور سماجی رچنا کرنے میں کون سا طریقہ منظور کریں . گاندھی جی کے زمانے میں ہم نے اہنسا کا طریقہ آزمایا تھا، لیکن اس میں ہماری کوئی خاصیت نہیں تھی، کیونکہ تب ہم لاچار تھے . اگر ہم اس راستے نہیں جاتے تو مار کھاتے . دوسرا کوئی اہنسک راستہ ہمارے لئے کھلا نہیں تھا . اس لئے جو راستہ ہم نے اختیار کیا، وہ اشرن کا شرن تھا، اناج کا آشرے تھا . اسی لئے ہم نے اہنسا کا راستہ اپنایا اور گاندھی جی کی لیڈرشپ ہمیں ملی . ہم نے سوچا کہ یہ طریقہ ہم آزمائیں . ہنسا میں ہم جتنے طاقتور تھے، اس سے زیادہ طاقتور ہمارے دشمن تھے. لیکن اہنسا میں ہم اس سے زیادہ طاقتور تھے. اس لئے ہمارے سامنے ایک ہی راستہ تھا . یا تو آزادی حاصل کرنے کی تمنا چھوڑ کر چپ چاپ غلامی کو مان لیں یا اہنسک بدلے کے لئے تیار ہوجائیں . اس سمے ہمارے سامنے پسندگی یا چوائس کا سوال نہیں تھا—لیکن اب بات دوسری ہے. اب ہم چناؤ کرسکتے ہیں. اگر ہم چاہیں تو

में सिद्ध होता है तब उसके व्यापक अमल के बारे में सोचा जाता है इन्सान का निजी जीवन भी एक प्रयोग शाला ही है. निर्वैरता का उसूल सब को जीतने वाला है और संतों ने यह उसूल निजी जीवन में साबित कर दिया है.

अहिंसा के मुश्तरका अमल की कामयाबी

इस बीच दुनिया में विज्ञान आगे बढ़ा. उस विज्ञान की ताक़त से लोगों ने बहुत से मुल्कों पर क़ब्ज़ा किया, अंगरेज़ यहां आए और वह यहां के मालिक बने. उन्होंने एक चमत्कार यहां किया. उन्होंने हिन्दुस्तान के सब लोगों के हाथ से हथियार छीन लिये. यह एक ऐसी घटना थी कि अगर इसे ऐसे ही बरदाश्त किया जाता तो देश को हमेशा के लिए गुलामी माननी पड़ती. लेकिन जिस देश के पीछे हजारों सालों का अनुभव हो, वह क़ायम के लिए ग़ुलाम नहीं रह सकता था. तो बावजूद निहत्थे होने के, हम उठ सकें और गुलामी को तोड़ सकें ऐसा कोई हथियार हमारे लिये ज़रूरी था. इसलिये जो उसूल संतों ने अपने निजी जीवन में कामयाब किया, उसका अमल समाजी जीवन में किया गया. नतीजा यह हुआ कि हमें आज़ादी मिली.

हमारी आज़ादी की लड़ाई का अनोखापन

मैं यह दावा नहीं करता कि हमें जो आज़ादी मिली वह अहिंसा के सबब से ही मिली. क्योंकि यह दावा ठीक नहीं होगा. गीता ने बताया है, कोई भी काम पांच कारनों से बनता है. इसलिये सिर्फ़ हमारे अहिंसक प्रयोग से ही आज़ादी मिली, यह कहना अहंकार होगा. लेकिन अहिंसात्मक लड़ाई एक बड़ा कारन है, ऐसा हम कह सकते हैं. दुनिया का इतिहास लिखने वालों को लिखना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान का राजकाजी मसला नैतिक तरीक़े से हल हुआ था और हिन्दुस्तान में क़ौमी आज़ादी की कोशिश करने वालों को जो बड़ाई या यश मिला वह इतना अनोखा और ऐसा अजीब है कि उसने दुनिया का ध्यान अपनी तरफ़ खींच लिया है.

इस तरह हमने देखा कि हम ने एक बहुत मज़बूत क़ौम से आज़ादी हासिल की है.

नैतिकता में एक की जीत से दूसरे की हार नहीं

दूसरा एक चमत्कार इस देश में यह हुआ कि इतनी बड़ी सल्तनत, जिसके बारे में यह कहा जाता था कि उस पर सूरज कभी नहीं डूबता, यहां से अपना सारा कारोबार खत्म कर के चली गई. उसने एक तारीख़ मुक़र्रर की और ठीक उस तारीख़ के पहले वह यहां से कूच कर गई. इसलिये मेरा मानना है कि हमने जो अहिंसक तरीक़ा अपनी आज़ादी हासिल करने के लिए अख़्तियार किया था, उसकी जितनी

میں سدھ ہوتا ہے تب اُسکے ویاپک عمل کے بارے میں سوچا جاتا ہے۔ انسان کا نجی جیون بھی ایک پریوگ شالا ہی ہے۔ نروَیرتا کا اصول سب کو جیتنے والا ہے اور سنتوں نے یہ اصول نجی جیون میں ثابت کر دیا ہے۔

اہنسا کے مشترکہ عمل کی کامیابی

اس بیچ دنیا میں وگیان آگے بڑھا۔ اس وگیان کی طاقت سے لوگوں نے بہت سے ملکوں پر قبضہ کیا۔ انگریز یہاں آئے اور وہ یہاں کے مالک بنے۔ انہوں نے ایک چمتکار یہاں کیا۔ اُنہوں نے ہندستان کے سب لوگوں کے ہاتھ سے ہتھیار چھین لئے۔ یہ ایک ایسی گھٹنا تھی کہ اگر ایسے ہی برداشت کیا جاتا تو دیش کو ہمیشہ کے لئے غلامی ماننی پڑتی۔ لیکن جس دیش کے پیچھے ہزاروں سالوں کا انوبھو ہو، وہ قائم کے لئے غلام نہیں رہ سکتا تھا۔ تو باوجود نہتے ہونے کے، ہم اُٹھ سکیں اور غلامی کو توڑ سکیں ایسا کوئی ہتھیار ہمارے لئے ضروری تھا۔ اس لئے جو اصول سنتوں نے اپنے نجی جیون میں کامیاب کیا، اُس کا عمل سماجی جیون میں کیا گیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ہمیں آزادی ملی۔

ہماری آزادی کی لڑائی کا انوکھاپن

میں یہ دعویٰ نہیں کرتا کہ ہمیں جو آزادی ملی وہ ہماری اہنسا کے سبب سے ہی ملی۔ کیونکہ یہ دعویٰ ٹھیک نہیں ہوگا۔ گیتا نے بتایا ہے، کوئی بھی کام پانچ کارنوں سے بنتا ہے۔ اس لئے صرف ہمارے اہنسک پریوگ سے ہی آزادی ملی، یہ کہنا اہنکار ہوگا۔ لیکن اہنساتمک لڑائی ایک بڑا کارن ہے، ایسا ہم کہہ سکتے ہیں۔ دنیا کا اتہاس لکھنے والوں کو لکھنا پڑیگا کہ ہندستان کا راج کاجی مسئلہ نیتک طریقے سے حل ہوا تھا اور ہندستان میں قومی آزادی کی کوشش کرنے والوں کو جو بڑائی یا یش ملا وہ اتنا انوکھا اور ایسا عجیب ہے کہ اُس نے دنیا کا دھیان اپنی طرف کھینچ لیا ہے۔

اس طرح ہم نے دیکھا کہ ہم نے ایک بہت مضبوط قوم سے آزادی حاصل کی ہے۔

نیتکتا میں ایک کی جیت سے دوسرے کی ہار نہیں

دوسرا ایک چمتکار اِس دیش میں یہ ہوا کہ اتنی بڑی سلطنت، جس کے بارے میں یہ کہا جاتا تھا کہ اس پر سورج کبھی نہیں ڈوبتا، یہاں سے اپنا سارا کاروبار ختم کر کے چلی گئی۔ اُس نے ایک تاریخ مقرر کی اور ٹھیک اُس تاریخ کے پہلے وہ یہاں سے کوچ کر گئی۔ اس لئے میرا ماننا ہے کہ ہم نے جو اہنسک طریقہ اپنی آزادی حاصل کرنے کے لئے اختیار کیا تھا، اُس کی جتنی

ता है और फिर उसमें से वह अंकुराता है, उसी तरह ज़माने में बुद्ध की शिक्षा का बीज कुछ ढका सा रहा ब वह अंकुराता दिखाई दे रहा है. बुद्ध भगवान ने ाब्दों में कहा था कि भाईयो ! 'नहि वयीरैन शमंतीह कदाचन'—वैर से वैर कभी बुझता नहीं. भी कोशिश करो, आग के दमन के लिए घी नहीं चाहिये, अदावत से अदावत मिट नहीं सकती. वैर शान्त नहीं हो सकता, दुश्मनी से दुश्मनी बढ़ती ही उनकी तालीम का निचोड़ है. उनके शब्दों में जो ी, उसका भान आज लोगों को हो रहा है. सारी के जीवन में आज कश मकश और असंतोश का हो रहा है. बहुत से कठिन सवाल हमारे सामने . समाज के नेता उन सवालों के हल करने का वते हैं तब उन्हें बुद्ध भगवान के तरीक़े का ख्याल और वह सोचते हैं कि अगर मुमकिन हुआ तो का आज चलाना चाहिये. एटम बम और हाईड्रोजन दुनिया की शक्ति का ख़ात्मा होगा. वह तो शक्ति ही कार्य क्रम होगा. इसका कुछ भान इस समय को हो रहा है. दुनिया महसूस कर रही है कि हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे, जहां के तहां ही रह जायेंगे. ी ने तो यही साबित कर दिया है. लेकिन अम्बेद- और नास्तिक वादी लोग भी बुद्ध में विश्वास रखते ससे बुद्ध की शिक्षा का इससे जियादा और क्या ाहिये ? हमको उन्होंने जो तालीम दी, उसकी इन्सानी समाज को महसूस हो रही है. बीच में सौ साल बुद्ध भगवान गर्भ अवस्था में थे. लेकिन का जन्म हो रहा है. आज बुद्ध भगवान के विचारों आ रहे हैं

के सवाल

र के तौर पर बुद्ध भगवान की बातें सब तरफ़ ाई, लेकिन सारे समाज में जो सवाल मौजूद हैं कैसे हल हों ? सवाल कई हैं. तालीम का सवाल, सवाल, कपड़े का सवाल वग़ैरा कई सवाल हैं समाजी सवालों को हल करने के लिए अक्रोध री पन का तत्व कैसे लागू हो सकता है, इस बारे समाज को शंका बनी रही. लेकिन बीच के लोगों ने साबित कर दिया कि हम अक्रोध से रता से वर और प्रेम से द्वेश को जीत सकते हैं. सब प्रयोग निजी जीवन में हुए उनका समाजी मी बाक़ी था.

वन की प्रयोग शालायें

स के जितने प्रयोग होते हैं वह पहले छोटे पैमाने शाला में होते हैं. जब कोई उसूल प्रयोग शाला

ڈھک جاتا ہے اور پھر اُس میں سے وہ انکوراتا ہے' اُسی طرح بیچ کے زمانے میں بدھ کی شکشا کا بیج کچھ ڈھکا سا رہا اور اب وہ انکوراتا دکھائی دے رہا ہے . بدھ بھگوان نے صاف شبدوں میں کہا تھا کہ بھائیوں ! 'نہ ہی ویرین ویرانی شمن تیہ کداچن'—ویر سے ویر کبھی دبتا نہیں . کتنی بھی کوشش کرو' آگ کے دمن کے لئے گھی نہیں پانی ہی چاہئے' عداوت سے عداوت مٹ نہیں سکتی. ویر سے ویر شانت نہیں ہوسکتا' دشمنی سے دشمنی بڑھتی ہی ہے . یہ اُن کی تعلیم کا نچوڑ ہے . اُن کے شبدوں میں جو طاقت تھی' اُس کا بھان آج لوگوں کو ہو رہا ہے . ساری دنیا کے جیون میں آج کشمکش اور اسنتوش کا انوبھو ہو رہا ہے . بہت سے کٹھن سوال ہمارے سامنے موجود ہیں. سماج کے نیتا اُن سوالوں کے حل کرنے کا جب سوچتے ہیں تب اُنھیں بدھ بھگوان کے طریقے کا خیال آتا ہے اور وہ سوچتے ہیں کہ اگر ممکن ہوا تو وہی طریقہ آج چلانا چاہئے . ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم سے دنیا کی شکتی کا خاتمہ ہوگا . وہ تو شکتی ناش کا ہی کاریہ کرم ہوگا . اس کا کچھ بھان اِس سمے دنیا کو ہو رہا ہے . دنیا محسوس کر رہی ہے کہ ہم اسطرح آگے نہیں بڑھ سکینگے' جہاں کے تہاں ہی رہ جائینگے . گاندھی جی نے تو یہی ثابت کر دیا ہے لیکن امبیدکرجی اور ناستک وادی لوگ بھی بدھ میں وشواس رکھتے ہیں تب اس سے بدھ کی شکشا کا اس سے زیادہ اور کیا ثبوت چاہئے؟ ہمکو اُنہوں نے جو تعلیم دی' اُسکی اہمیت انسانی سماج کو محسوس ہو رہی ہے . بیچ میں پچیس سو سال بدھ بھگوان گربھ اوستھا میں تھے . لیکن آج اُن کا جنم ہو رہا ہے . آج بدھ بھگوان کے وچاروں کو انکر آ رہے ہیں .

سماج کے سوال

وچار کے طور پر بدھ بھگوان کی بات سب طرف پھیل ہی گئی' لیکن سارے سماج میں جو سوال موجود ہیں وہ سب کیسے حل ہوں؟ سوال کئی ہیں . تعلیم کا سوال' اناج کا سوال' کپڑے کا سوال وغیرہ کئی سوال ہیں . ان سبھی سماجی سوالوں کو حل کرنے کے لئے اکرودھ اور نربیری پن کا تتو کیسے لاگو ہو سکتا ہے' اس بارے میں انسانی سماج کو شنکا بنی رہی . لیکن بیچ کے زمانے میں لوگوں نے ثابت کر دیا کہ ہم اکرودھ سے کرودھ' نکرتا سے ڈر اور پریم سے دویش کو جیت سکتے ہیں . لیکن یہ سب پریوگ نجی جیون میں ہوئے . اُن کا سماجی عمل ابھی باقی تھا .

نجی جیون کی پریوگ شالائیں

سائنس کے جتنے پریوگ ہوتے ہیں وہ پہلے چھوٹے پیمانے پر پریوگ شالا میں ہوتے ہیں . جب کوئی اصول پریوگ شالا

भगवान बुद्ध और नया ज़माना

(विनोबा)

महापुरुशों की पुन्य भूमि

किसी दूध की जब जांच की जाती है तब साइन्स वाले उसमें मक्खन की तादाद देख लेते हैं. उस पर से दूध का कस नापा जाता है. किसी समाज की लायक़ी का जहां नाप लिया जाता है वहां उस समाज में कितने ऊँचे महापुरुश पैदा हुए, यह देखा जाता है. समाज के महापुरुश दूध के मक्खन की तरह होते हैं. भारत का जो ज़माना तरक़्क़ी का और गिरावट का माना गया है दोनों समय महापुरुश दर्शन देते ही गये हैं. इतना ही नहीं, यह सौ डेढ़ सौ साल जब कि हम ग़ुलामी में थे और जब एक विदेशी ताक़त हमें दबाये हुए थी और हमारी हालत बहुत ही कमज़ोर थी, ऐसी गिरावट के ज़माने में भी यहां राम मोहन राय, दयानन्द, राम क्रशन परमहंस, लोकमान्य तिलक, रवि ठाकुर और महात्मा गांधी जैसे पचासों पुरुशों के नाम, जो ऊंचाई में दुनिया के दूसरे महापुरुशों से कम नहीं हैं, गिनाये जा सकते हैं. यानी भारत भूमि ने साबित कर दिया कि उसकी पुरुशार्थ शक्ति अब भी क़ायम है और पुराने ज़माने से यहां ऐसी एक अन्तर यामी शक्ति काम कर रही थी जिसकी वजह से ख़िलाफ़ हालत के होते हुए भी यहां महापुरुश होते रहे हैं.

बुद्ध के विचार अब अंकुरा रहे हैं

कल हमने जिस महापुरुश की याद की उसे अब ढाई हज़ार बरस होते हैं. आज बैसाख की पूरन मासी है, लेकिन जहां बुद्ध धर्म चलता है वहां यह उत्सव एक रोज़ पहले ही मनाया जाता है. आज बुद्ध भगवान की शोहरत दुनिया में फैल गई है. और दुनिया के बहुत से लोगों को उनके जीवन और उपदेशों की तरफ़ खिचाव हो गया है. ख़ास कर जिस तरीक़े से उन्होंने काम किया, उस तरीक़े की तरफ़ लोग खिचे हैं. लेकिन हम देखते हैं कि जिस ज़माने में बुद्ध थे उस ज़माने में लोग उनका नाम भी नहीं लेते थे, मगर आज उन्हीं की सालगिरह या जन्म दिन मनाया जाता है. जिस शख़्स की सालगिरह उसके जन्म के ढाई हज़ार बरस के बाद मनाई जाती है उसकी उम्र कितनी बड़ी होनी चाहिये. आज हिन्दू लोग किसी धर्म कार्य को शुरू करते समय "बुद्धावतारे वेवस्वते मनवंतरे, कलयुगे" वग़ैरा मंत्र पढ़ा करते हैं, यानी आज भी हम बुद्ध के ज़माने में ही काम कर रहे हैं. बुद्ध युग मानो अब शुरू हो रहा है. मिट्टी से जैसे बीज

بھگوان بدھ اور نیا زمانہ

(ونوبا)

مہاپرشوں کی پنیہ بھومی

کسی دودھ کی جب جانچ کی جاتی ہے تب سائنس لے اُس میں مکھن کی تعداد دیکھ لیتے ہیں . اُس پر . دودھ کا کس ناپا جاتا ہے . کسی سماج کی لائقی کا ہاں ناپ لیا جاتا ہے وہاں اُس سماج میں کتنے اُونچے ہا پرش پیدا ہوئے' یہ دیکھا جاتا ہے . سماج کے مہاپرش ودھ کے مکھن کی طرح ہوتے ہیں . بھارت کا جو زمانہ رقی کا اور گراوٹ کا مانا گیا ہے دونوں سمے مہاپرش درشن یتے ہی گئے ہیں . اِتنا ہی نہیں' یہ سو ڈیڑھ سو سال بکہ ہم غلامی میں تھے اور جب ایک ودیشی طاقت ہمیں دبائے ہوئے تھی اور ہماری حالت بہت ہی کمزور ی' ایسی گراوٹ کے زمانے میں بھی یہاں رام موہن رائے' یانند' رام کرشن پرم ہنس' لوک مانیہ تلک' روی ٹاکر اور مہاتما گاندھی جیسے پچاسوں پرشوں کے نام' جو نچائی میں دنیا کے دوسرے مہاپرشوں سے کم نہیں ہیں' نائے جا سکتے ہیں . یعنی بھارت بھومی نے ثابت کر یا کہ اُسکی پروشارتھ شکتی اب بھی قائم ہے اور پرانے مانے سے یہاں ایسی ایک انتر یامی شکتی کام کر رہی ی جسکی وجہ سے خلاف حالت کے ہوتے ہوئے بھی یہاں ہاپرش ہوتے رہے ہیں .

بدھ کے وچار اب انکرا رہے ہیں

کل ہم نے جس مہاپرش کی یاد کی اُسے اب ڈھائی زار برس ہوتے ہیں . آج بیساکھ کی پورن ماسی ہے' یکن جہاں بودھ دھرم چلتا ہے وہاں یہ اُتسو ایک روز ہلے ہی منایا جاتا ہے . آج بدھ بھگوان کی شہرت دنیا یں پھیل گئی ہے اور دنیا کے بہت سے لوگوں کو اُن کے یون اور اُپدیشوں کی طرف کھینچاؤ ہوگیا ہے . خاصکر س طریقے سے اُنہوں نے کام کیا' اُس طریقے کی طرف وگ کھنچے ہیں . لیکن ہم دیکھتے ہیں کہ جس زمانے یں بدھ تھے اُس زمانے میں لوگ اُن کا نام بھی نہیں یتے تھے' مگر آج اُنہیں کی سالگرہ یا جنم دن منایا جاتا . . جس شخص کی سالگرہ اُس کے جنم کے ڈھائی ہزار رس کے بعد منائی جاتی ہے اُسکی عمر کتنی بڑی ہونی اہئے. آج ہندو لوگ کسی دھرم کاریہ کو شروع کرتے سمے بدھا وتارے ویوسوتے منونترے' کلیگے" وغیرہ منتر پڑھا کرتے یں . یعنی آج بھی ہم بدھ کے زمانے میں ہی کام کر رہے یں. بدھ یگ مانو اب [illegible] ہے. مٹی سے جیسے بیج

नया हिन्द | نیا ہند

13 | अगस्त, सन '52 | नम्बर 2

نمبر 2 | اگست' سن '52 | جلد 13

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ھندستانی بولی'
'نیا ھند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی ۔

लोकशाही फ़ौजी कूच

है हमें याद वह जंग लड़ी जो हमने
वह वीर जिन्होंने प्रान दिये थे रन में
वह लाल खून ऊदा होता जो छन में
वह अटल दोस्ती जो थी सबके मन में
जिन जिन को उसका ध्यान
उन्होंने ठानी है यह ठान
करेंगे कोशिश जब तक जान
फले फूले वह अमनो अमान
कि हिलमिल रहने लगे जहान
न्याय हो सबका धर्म ईमान
करें यह अहद जवान तमाम
उठाया है जो हमने काम
रहेगी उससे पूरी भक्ति
लगेगी उसको पूरी शक्ति
हमी ने छांटा उसको जान
हमें उसका पूरा अभिमान
आदमियत का वह क़ानून
उसी पर बहे पसीना खून
करे जो बदी अगर कुछ ढेट
करेंगे उसको मटियामेट
बिना मतलब के कोई एक
न मरने देंगे यह है टेक
जियेंगे जीने देंगे खूब
बनेगी सब दुनिया महबूब
हम सब के
सब हमारे
हमें सब प्यारे
सबों के प्यारे, हम सबों के प्यारे, हम सबों के प्यारे.

(चीनी गीत से) —भगवानदीन

لوک شاھی فوجی کوچ

ہے ھمیں یاد وہ جنگ لڑی جو ہم نے
وہ ویر جنہوں نے پران دئے تھے رن میں
وہ لال خون اودا ھوتا جو چھن میں
وہ اٹل دوستی جو تھی سب کے من میں
جن جن کو اُس کا دھیان
اُنھوں نے ٹھانی ہے یہ ٹھان
کریں گے کوشش جب تک جان
پھلے پھولے وہ امن و امان
کہ ھل مل رھنے لگے جہان
نیائے ھو سب کا دھرم ایمان
کریں یہ عہد جوان تمام
اُٹھایا ہے جو ہم نے کام
رہے گی اُس سے پوری بھکتی
لگے گی اُس کو پوری شکتی
ھمیں نے چھانٹا اُس کو جان
ھمیں اُس کا پورا ابھیمان
آدمیت کا وہ قانون
اُسی پر بہے پسینہ خون
کرے جو بدی اگر کچھ ٹھیٹ
کریں گے اُس کو مٹیا میٹ
بنا مطلب کے کوئی ایک
نہ مرنے دیں گے یہ ہے ٹیک
جئیں گے جینے دیں گے خوب
بنے گی سب دنیا محبوب
ہم سب کے
سب ہمارے
ھمیں سب پیارے
ہم سبھوں کے پیارے' ہم سبھوں کے پیارے' ہم سبھوں کے پیارے

(چینی گیت سے) —بھگوان دین

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अगस्त 1952

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اگست 1952

अमरीका और यालू ; मुसादिक़ और ईरान; मिस्र की क्रान्ति; कश्मीर – भगवानदीन; हमारी रेलें किधर ? – सुरेश रामभाई.

امریکہ اور یالو؛ مصادق اور ایران؛ مصر کی کرانتی؛ کشمیر — بھگوان دین؛ ہماری ریلیں کدھر ؟ — سریش رام بھائی .

क़ीमत – हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

قیمت — ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

नया हिन्द

نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر— تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر— سریش رام بھائی' مجیب رضوی

* * * * *

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی' الہ آباد

अगस्त 1952 اگست

क़ीमत दस आना قیمت دس آنہ

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौके पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से रंडी-बाज़ी, भिक्समंगी और बेरोज़गारी को खत्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्धे और कल कारखाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया. किस तरह अपनी तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत खोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी खत्म की, देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया, वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक़्शों के साथ दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शीलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता

मेनेजर, नया हिन्द, 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے ۔

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور آج چین کیسا ہے' کس طرح وہاں سے رنڈی بازی' بھیکمنگی اور بیروزگاری کو ختم کیا گیا' کس طرح وہاں کے بے زمین کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے انداتا بن گیا' کس طرح امریکہ کی ناکےبندی کے باوجود اس نے اپنے اُدیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سواولمبی بنا لیا' کس طرح اپنی تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی' کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی' کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری' سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری' کام چوری اور سینہ زوری ختم کی' دیش کے آرتھک سنگٹھن کو ٹھیک کیا' وغیرہ وغیرہ ۔

اگر آپ وستار کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہیں اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی ۔ ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے

700 سے زیادہ صفحے' بڑھیا کاغذ' کپڑے کی جلد' ایک ترنگی اور تیس ایک رنگی تصویریں' دو رنگین نقشوں کے ساتھ—دام صرف ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ ۔

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھئے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر' نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد ۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

क़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना ौर प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों ग़ैरा का छापना .

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों सभाओं, कानफ़रेन्सों, क्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में ापस का मेल बढ़ाना .

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; इस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल क़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; केटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद लेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख्ता, श्री बी० जी० र, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम न्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम काश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज,इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी ी फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" े जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया न्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से म्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई ताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम र सकेंगे .

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هیں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے –

سندر لال

سکریٹری، هندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا هند" کے جو گاهک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر هی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی هوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال .

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں، گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھیانکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—
[illegible] ' 145 [illegible] الہ آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी 1920 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे सी कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायेगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा जी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा-सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

هندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوودت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے۔ سی۔ کماریپا۔

انوادک—سریش رام بھائی۔

اس کتا میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے۔

مہاتما جی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے........"

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

सरकार भले ही किसी वजह से अमरीका से कुछ दबी हुई हो और वह यालू बमबारी को लेकर चुपचाप बैठे रहना पसन्द करती हो, तो क्या हिन्दुस्तान की पैंतीस करोड़ जनता नैतिक बल और आत्म बल का सबूत नहीं दे सकती. जब चीन की सरकार की परवाह किये बिना चीनी जवान अपने रिश्तेदारों को कोरिया में पिटते हुए देख कर न रुक सके थे और दौड़ कर उनकी मदद के लिये पहुंच गये थे तो क्या आज हिन्दुस्तान की जनता अमरीकी माल का बायकाट करके अपनी नाराज़गी को नहीं बता सकती.

यालू बमबारी देखने में कितनी ही छोटी बात क्यों न हो पर इसके अन्दर अन्याय और एशिया की ग़ुलामी के बीज छिपे हुये हैं. इसलिए इसे यों ही नहीं उड़ा देना चाहिये. इसको लेकर सारे हिन्दुस्तान में इसका एक ख़ास दिन मनाकर गांव गांव को यह समझा देना चाहिये कि कोरिया और चीन से हमारा क्या रिश्ता है और समुद्र पार का अमरीका किस तरह फ़ारमूसा, जापान और कोरिया में उत्तरी कोरिया के अग्रेशन के बहाने अपने अड्डे बनाना चाहता है.

—भगवानदीन

سرکار بھلے ہی کسی وجہ سے امریکہ سے کچھ دبی ہوئی ہو اور وہ یالو بمباری کو لے کر چپ چاپ بیٹھے رہنا پسند کرتی ہو؛ تو کیا ہندستان کی پینتیس کروڑ جنتا نیتک اور آتم بل کا ثبوت نہیں دے سکتی۔ جب چین کی سرکار کی پرواہ کئے بنا چینی جوان اپنے رشتہ داروں کو کوریا میں پٹتے ہوئے دیکھ کر نہ رک سکے تھے اور دوڑ کر اُن کی مدد کے لئے پہنچ گئے تھے تو کیا آج ہندستان کی جنتا امریکی مال کا بائی کاٹ کر کے اپنی ناراضگی کو نہیں بتا سکتی۔

یالو بمباری دیکھنے میں کتنی ہی چھوٹی بات کیوں نہ ہو پر اس کے اندر انیائے اور ایشیا کی غلامی کے بیج چھپے ہوئے ہیں۔ اس لئے اِسے یونہی نہیں اُڑا دینا چاہئے۔ اس کو لے کر سارے ہندستان میں اِسکا ایک خاص دن منا کر گاؤں گاؤں کو یہ سمجھا دینا چاہئے کہ کوریا اور چین سے ہمارا کیا رشتہ ہے اور سمندر پار کا امریکہ کس طرح فارموسا، جاپان اور کوریا میں اُتری کوریا کے اگریشن کے بہانے اپنے اڈے بنانا چاہتا ہے۔

— بھگوان دین

सारे नये नये हथियारों की कोरिया ही जांच भूमि बनेगी ? क्या यह बरतानिया, अमरीका और यूनो में शामिल बड़े बड़े देशों के लिए शर्म की बात नहीं है कि जिस कोरिया को कल ही जापानियों के हाथों से आज़ाद किया था उसको आज आग बरसा कर राख में तबदील किया जा रहा है.

यालू बमबारी को अगर मामूली बात समझ कर उड़ा दिया जाय तो फिर कोरिया पर ऐटम बम गिरा ही समझिये. और अगर यालू बमबारी का अमरीका का सोचा हुआ यह नतीजा ठीक निकला कि पान मुन जौन में दब दबा कर एक पार्टी ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिये तो चीन को फ़ारमूसा की तरफ़ से हमले के लिए तैयार रहना पड़ेगा.

समुन्दर पार कर अमरीका कोरिया का मोरचा छोड़ने के लिए कभी भी तैयार नहीं हो सकता. जापान और कोरिया के अड्डे अगर उसके हाथ से निकल जाते हैं तो अमरीका कमज़ोर पड़ जाता है. पिछली लड़ाई का तजुरबा उसे यह बता रहा है कि जापान और कोरिया के बग़ैर फ़िलीपाइन उसका मज़बूत अड्डा नहीं हो सकता. वह कोरिया के अड्डे को किन्हीं दामों पर कभी भी छोड़ने को तैयार नहीं होगा.

यालू बमबारी को लेकर यूनो में शामिल मुल्कों को यह साफ़ साफ़ कह देना चाहिये कि अमरीका उनके क़ाबू से बाहर है. कोरिया के मैदान में अमरीका के जनरल मनमानी करते हैं या अपने साथी जनरलों से मिल कर काम नहीं करते और न पूरी तरह से यूनो के मातहत रहते हैं. उन्हीं मुल्कों को अब यह भी साफ़ साफ़ कह देना चाहिये कि अब उनकी फ़ौजें कोरिया में नहीं रहेंगी और अमरीका जिस तरह चाहे कोरिया में लड़े. शुरू से आज तक का तजुरबा साफ़ बता रहा है कि यह लड़ाई कोरिया और यूनो के बीच इतनी नहीं है, कोरिया और अमरीकियों के बीच है. चीन कोरिया की तरफ़ से लड़ाई में तब शामिल हुआ जब अमरीका, न कि यूनो, चीन पर ही चढ़ने को तैयार हो गया. अमरीका एक से ज़ियादा बार ऐसे काम कर चुका है जिसे साथी मुल्कों ने अच्छा नहीं समझा पर क्या उसने कोई सबक़ लिया. वह तो हमेशा वही करता रहा जो उसके जी में आता रहा. ऐसी हालत में और देशों का उसका साथ दिये जाना उन मुल्कों की कमज़ोरी का सबूत ही हो सकता है. प्रकृति किसी को कमज़ोर नहीं बनाती. आंख से न दिखाई देने वाले छोटे छोटे कीड़े अपनी गिनती की वजह से इतने ताक़तवर होते हैं कि आदमी जितना उनसे डरता है उतना ऐटम बम से नहीं, वह कीड़े तो एटम बम से भी नहीं मरते. जो मुल्क अमरीका से हथियारों में कमज़ोर हैं वह नैतिक बल और आत्म बल में और कहीं कहीं गिनती में इतने बढ़े चढ़े हैं कि उसको अच्छी सीख दे सकते हैं. आज हिन्दुस्तानी

سارے نئے نئے ہتھیاروں کی کوریا ہی جانچ بھومی بنے گی؟ کیا یہ برطانیہ، امریکہ اور یونو میں شامل بڑے بڑے دیشوں کے لئے شرم کی بات نہیں ہے کہ جس کوریا کو کل ہی جاپانیوں کے ہاتھوں سے آزاد کیا تھا اسکو آج آگ برساکر راکھ میں تبدیل کیا جا رہا ہے۔

یالو بمباری کو اگر معمولی بات سمجھکر اڑا دیا جائے تو پھر کوریا پر ایٹم بم گرا ہی سمجھئے۔ اور اگر یالو بمباری کا امریکہ کا سوچا ہوا یہ نتیجہ ٹھیک نکلا کہ پان من جون میں دب دبا کر ایک پارٹی نے صلح نامے پر دستخط کر دیئے تو چین کو فارموسا کی طرف سے حملے کے لئے تیار رہنا پڑے گا۔

سمندر پار کر امریکہ کوریا کا مورچہ چھوڑنے کے لئے کبھی بھی تیار نہیں ہو سکتا۔ جاپان اور کوریا کے اڈے اگر اس کے ہاتھ سے نکل جاتے ہیں تو امریکہ کمزور پڑ جاتا ہے۔ پچھلی لڑائی کا تجربہ اسے یہ بتا رہا ہے کہ جاپان اور کوریا کے بغیر فلپائن اس کا مضبوط اڈا نہیں ہوسکتا۔ وہ کوریا کے اڈے کو کنہیں داموں پر کبھی بھی چھوڑنے کو تیار نہیں ہوگا۔

یالو بمباری کو لے کر یونو میں شامل ملکوں یہ صاف صاف کہدینا چاہئے کہ امریکہ ان کے قابو سے باہر ہے۔ کوریا کے میدان میں امریکہ کے جنرل من مانی کرتے ہیں یا اپنے ساتھی جنرلوں سے ملکر کام نہیں کرتے اور نہ پورے طرح سے یونو کے ماتحت رہتے ہیں۔ انہیں ملکوں کو اب یہ بھی صاف صاف کہدینا چاہئے کہ اب ان کی فوجیں کوریا میں نہیں رہیں گی اور امریکہ جس طرح چاہے کوریا میں لڑے۔ شروع سے آج تک کا تجربہ صاف بتا رہا ہے کہ یہ لڑائی کوریا اور یونو کے بیچ نہیں ہے، کوریا اور امریکیوں کے بیچ ہے۔ چین کوریا کی طرف سے لڑائی میں تب شامل ہوا جب امریکہ، نہ کہ یونو چین پر ہی چڑھنے کو تیار ہو گیا۔ امریکہ ایک سے زیادہ بار ایسے کام کر چکا ہے جسے ساتھی ملکوں نے اچھا نہیں سمجھا پر کیا اس سے اس نے کوئی سبق لیا۔ وہ تو ہمیشہ وہی کرتا رہا جو اس کے جی میں آتا رہا۔ ایسی حالت میں اور دیشوں کا اس کا ساتھ دیئے جانا ان ملکوں کی کمزوری کا ثبوت ہی ہو سکتا ہے۔ پرکرتی کسی کو کمزور نہیں بناتی۔ آنکھ سے دکھائی دینے والے چھوٹے چھوٹے کیڑے اپنی گنتی کی وجہ سے اتنے طاقتور ہوتے ہیں کہ آدمی جتنا ان سے ڈرتا ہے اتنا ایٹم بم سے نہیں، وہ کیڑے تو ایٹم بم سے بھی نہیں مرتے۔ جو ملک امریکہ سے ہتھیاروں میں کمزور ہیں وہ نیتک بل اور آتم بل میں اور کہیں کہیں گنتی میں اتنے بڑھے چڑھے ہیں کہ اسکو اچھی سیکھ دے سکتے ہیں۔ آج ہندستانی

अब जब बरतानिया को पता न था तब फ्रांस को भी पता न होना चाहिये और नक़ली गुड़े चीन को तो पता ही कैसे हो सकता था ? इस मामले में यूनो में रूस तो न होने के बराबर है. जब इन चार बड़े मुल्कों में से किसी को पता नहीं तब यह कैसे कहा जा सकता है कि यालू बमबारी यूनो की बमबारी थी. कम से कम बरतानिया के लिए यह शर्म की बात होनी चाहिये कि कोरिया के मैदान में इतनी बड़ी बात हो जाय और उसके जनरलों को खबर भी न हो.

क्या बरतानिया अब इतना बेदम हो गया है कि इस तरह की बेइज़्ज़ती बर्दाश्त कर लेता है और चूं नहीं करता. इतना ही नहीं चर्चिल साहब अब भी अमरीका के काम को ग़लत समझते हुए दोस्ती के नाते समर्थन कर रहे हैं.

यालू बमबारी बरतानिया की अनचाही नहीं हुई. बरतानिया को जो इस बात से इनकार है कि उसे कोई खबर न थी वह ऐसा ही टेकनिकल इनकार है यानी राजकाजी और चालाकी से भरा इनकार है जैसा हाल में हिन्दुस्तानी पार्लियामेन्ट में स्पीकर ने यालू बमबारी की बहस को इस बिना पर रोका कि उसे पार्लियामेन्ट हन्सर्ड नहीं मिला.

दुनिया का कोई मुल्क अब इतना बेवक़ूफ़ नहीं रहा जो बरतानिया की इस चाल में आ जाय कि अगर बरतानिया को खबर होती तो वह यालू बमबारी न होने देता. कोरिया पर एक न एक दिन ऐटम बम गिरेगा और तब बरतानिया यह कह कर न बच सकेगा कि उससे इस काम में सलाह नहीं ली गई.

अगर हम भूलते नहीं हैं तो रूस यह खुले आम कह चुका है कि कोरिया के मैदान में जो पहले ऐटम बम गिरायेगा वह लड़ाई का मुजरिम समझा जायगा. रूस की इस बात को क मैकआर्थर की तरह ऐसे ही खिलवाड़ समझना जैसे मैक आर्थर ने चीन की धमकी को खिलवाड़ समझा था, बहुत बड़ी भूल होगी. अगर कोरिया पर ऐटम बम गिरा तो दुनिया की नज़रों में जितना अमरीका मुजरिम होगा उतना ही बरतानिया. फ्रांस को हम यों शामिल नहीं करते कि कहा जाता है फ्रांस के पास ऐटम बम नहीं हैं. हम नहीं मान सकते कि बरतानिया की सलाह के बग़ैर अमरीका कभी भी कोरिया पर एटम बम गिराये.

बरतानिया की इस बात का मतलब हमारी समझ में बिलकुल नहीं आता कि वह लड़ाई को सिर्फ़ कोरिया के अन्दर महदूद रखना चाहता है. क्या वह कोरिया को उसी तरह लड़ाई की कला सिखाने का मदरसा बनाना चाहता है, जिस तरह उसने हिन्दुस्तान में वज़ीरिस्तान को बना रखा था ? क्या

اب جب برطانیہ کو پتہ نہ تھا تب فرانس کو بھی پتہ نہ ہونا چاہئے اور نقلی گڈے چین کو تو پتہ ہی کیسے ہو سکتا تھا ؟ اِس معاملے میں یونو میں روس تو نہ ہونے کے برابر ہے ۔ جب اِن چار بڑے ملکوں میں سے کسی کو پتہ نہیں تب یہ کیسے کہا جاسکتا ہے کہ یالو بمباری یونو کی بمباری تھی ۔ کم سے کم برطانیہ کے لئے یہ شرم کی بات ہونی چاہئے کہ کوریا کے میدان میں اِتنی بڑی بات ہو جائے اور اُس کے جنرلوں کو خبر بھی نہ ہو ۔

کیا برطانیہ اب اتنا بیدم ہوگیا ہے کہ اِس طرح کی بے عزتی برداشت کر لیتا ہے اور چوں نہیں کرتا ۔ اتنا ہی نہیں چرچل صاحب اب بھی امریکہ کے کام کو غلط سمجھتے ہوئے دوستی کے ناتے سمرتھن کر رہے ہیں ۔

یالو بمباری برطانیہ کی اَن چاہی نہیں ہوئی ۔ برطانیہ کو جو اس بات سے انکار ہے کہ اُسے کوئی خبر نہ تھی وہ ایسا ہی ٹیکنیکل انکار ہے یعنی راج کاجی اور چالاکی سے بھرا انکار ہے جیسا حال میں ہندستانی پارلیامنٹ میں اسپیکر نے یالو بمباری کی بحث کو اس بنا پر روکا کہ اُسے پارلیامنٹ ہنسرڈ نہیں ملا ۔

دنیا کا کوئی ملک اب اتنا بیوقوف نہیں رہا جو برطانیہ کی اس چال میں آ جائے کہ اگر برطانیہ کو خبر ہوتی تو وہ یالو بمباری نہ ہونے دیتا ۔ کوریا پر ایک نہ ایک دن ایٹم بم گرے گا اور تب برطانیہ یہ کہکر نہ بچ سکے گا کہ اُس سے اِس کام میں صلاح نہیں لی گئی ۔

اگر ہم بھولتے نہیں ہیں تو روس یہ کھلے عام کہ چکا ہے کہ کوریا کے میدان میں جو پہلے ایٹم بم گرائے گا وہ لڑائی کا مجرم سمجھا جائے گا ۔ روس کی اس بات کو میکارتھر کی طرح ایسے ہی کھلواڑ سمجھنا اور میکارتھر نے چین کی دھمکی کو کھلواڑ سمجھا تھا، بہت بڑی بھول ہوگی ۔ اگر کوریا پر ایٹم بم گرا تو دنیا کی نظروں میں جتنا امریکہ مجرم ہوگا اتنا ہی برطانیہ ۔ فرانس کو ہم یوں شامل نہیں کرتے کہ کہا جاتا ہے فرانس کے پاس ایٹم بم نہیں ہیں ۔ ہم نہیں مان سکتے کہ برطانیہ کی صلاح کے بغیر امریکہ کبھی بھی کوریا پر ایٹم بم گرائے ۔

برطانیہ کی اِس بات کا مطلب ہماری سمجھ میں بالکل نہیں آتا کہ وہ لڑائی کو صرف کوریا کے اندر محدود رکھنا چاہتا ہے ۔ کیا وہ کوریا کو اُسی طرح لڑائی کی کلا کا مدرسہ بنانا چاہتا ہے، جسطرح اُس نے ہندستان میں وزیرستان کو بنانا رکھا تھا ؟ کیا

बम, नेपम बम यानी आग बरसाने वाले बम जैसी नई नई चीजें उसके सिवा और किसी मुल्क के पास नहीं. एटम ताक़त से चलने वाली पनडुब्बी भी, उसका ख्याल है, सिर्फ़ उसी के पास है. और भी कुछ ऐसे हथियार हो सकते हैं जो उसे आये दिन तीसरी लड़ाई के लिए उकसाते रहते हों.

उसके रास्ते में दो रुकावट हैं. एक यह कि गिनती के लिहाज़ से दुनिया के ज़ियादा आदमी उसकी "जिसकी लाठी उसकी भैंस" नीति के तरफ़दार नहीं. दूसरी यह कि न एशिया न सारा योरप, न सारा अमरीका न यूनाइटेड स्टेटस की सारी आबादी उसकी इस ढींगा ढींगी में साथ है.

अमरीका जितनी कोशिश दुनिया को अपनी तरफ़ करने की करता है उतनी ही नाकामयाबी उसके हाथ पड़ती है. इसे वक़्त की देन ही मानना चाहिये. पहली लड़ाई सन 1918 में ख़त्म हुई. दूसरी लड़ाई इक्कीस बरस बाद सन 1939 में छिड़ी, 1945 में ख़त्म हुई. तीसरी के लिए शायद अभी ेर लगे. और फिर उसको ख़त्म हुए अभी सात बरस बीते हैं. अमरीका की बेवाओं और उसके अनाथों को अभी तक उसकी याद है. और कोरिया की लड़ाई नई बेवाएं और नये ानाथ पैदा कर के उस याद को अमरीका में ज्यों त्यों हरी ानाये हुए हैं. यही वजह है कि अमरीका को तीसरी लड़ाई ड़ देने के लिए इतनी आवाज़ें नहीं मिलतीं जितनी आवाज़ों ी ज़रूरत है. यालू नदी की बमबारी हमें यह कहने के लिए जबूर करती है कि अब अमरीका न अपने घर की आवाज़ ी परवा करेगा और न दुनिया की आवाज़ की तरफ़ ध्यान गा. वह जिस तरह मैकआर्थर के हाथों चीन को मैदान ं लाकर रहा वैसे ही किसी दूसरे जनरल के हाथों रूस को ैदान में लाकर रहेगा. और फिर यही कहलाने लगेगी ीसरी लड़ाई.

है तो यह अख़बारी ख़बर कि कोरिया के मैदान में ऐटम म पहुंच चुके पर विश्वास के क़ाबिल है यालू बमबारी इस च्चाई पर दस्तख़त करती मालूम होती है. वह इस बात ो भी पूरी तसदीक़ करती हुई मालूम होती है कि कोरिया अमरीकियों ने बीमारी बम गिराये. बीमारी बमों का ोरिया की जनता पर क्या असर हुआ, इस बात को जानने लिए अमरीका तड़प तड़प कर रह गया पर न जान पाया. सकी असफलता ने ही यालू बमबारी का रूप लिया.

अमरीकी अख़बारों ने यह साफ़ कर दिया है कि यालू मबारी की बात महीनों पहले सोची गई और सोच समझ र पूरी तैयारी के साथ की गई. जो बात कभी भेद थी ाज अमरीका में उसके खुले खुले गीत गाये जा रहे हैं.

यालू बमबारी के बारे में बरतानिया का कहना है कि को इस बमबारी से पहले इस बमबारी का पता न था.

بم، نیپم بم یعنی آگ برسانے والے بم جیسی نئی نئی چیزیں اُس کے سوا اور کسی ملک کے پاس نہیں. ایٹم طاقت سے چلنے والی پنڈبی بھی، اُس کا خیال ہے، صرف اسی کے پاس ہے. اور بھی کچھ ایسے ہتھیار ہوسکتے ہیں جو اُسے آئے دن تیسری لڑائی کے لئے اُکساتے رہتے ہیں.

اُس کے راستے میں دو رکاوٹ ہیں. ایک یہ کہ گنتی کے لحاظ سے دنیا کے زیادہ آدمی اُس کی "جس کی لاٹھی اُس کی بھینس" نیتی کے طرف دار نہیں. دوسری یہ کہ نہ ایشیا نہ سارا یورپ، نہ سارا امریکہ، نہ یونائیٹیڈ اسٹیٹس کی ساری آبادی اُس کی اِس ڈھینگا ڈھینگی میں ساتھ ہے.

امریکہ جتنی کوشش دنیا کو اپنی طرف کرنے کی کرتا ہے اُتنی ناکامیابی اُس کے ہاتھ پڑتی ہے. اِسے وقت کی دین ہی ماننا چاہئے. پہلی لڑائی سن 1918 میں ختم ہوئی. دوسری لڑائی اکیس برس بعد سن 1939 میں چھڑی، 1945 میں ختم ہوئی. تیسری کے لئے شاید ابھی دیر لگے. اور پھر اُس کو ختم ہوئے ابھی سات برس بیتے ہیں. امریکہ کی بیواؤں اور اُس کے اناتھوں کو ابھی تک اُس کی یاد ہے. اور کوریا کی لڑائی کی نئی بیوائیں اور نئے اناتھ پیدا کرکے اس یاد کو امریکہ میں جیوں تیوں ہری بنائے ہوئے ہیں. یہی وجہ ہے کہ امریکہ کو تیسری لڑائی چھیڑ دینے کے لئے اِتنی آوازیں نہیں ملتیں جتنی آوازوں کی ضرورت ہے. یالو ندی کی بمباری ہمیں یہ کہنے کے لئے مجبور کرتی ہے کہ اب امریکہ نہ اپنے گھر کی آواز کی پرواہ کرے گا اور نہ دنیا کی آواز کی طرف دھیان دیگا. وہ جس طرح میک آرتھر کے ہاتھوں چین کو میدان میں لاکر رہا ویسے ہی کسی دوسرے جنرل کے ہاتھوں روس کو میدان میں لاکر رہے گا. اور پھر یہی کہلانے لگیگی تیسری لڑائی.

ہے تو یہ اخباری خبر کہ کوریا کے میدان میں ایٹم بم پہونچ چکے پر وشواس کے قابل ہے. یالو بمباری اِس سچائی پر دستخط کرتی معلوم ہوتی ہے. وہ اِس بات کی بھی پوری تصدیق کرتی ہوئی معلوم ہوتی ہے کہ کوریا میں امریکیوں نے بیماری بم گرائے. بیماری بموں کا کوریا کی جنتا پر کیا اثر ہوا، اِس بات کو جاننے کے لئے امریکہ تڑپ تڑپ کر رہ گیا پر نہ جان پایا. اس کی ناکامیابی نے ہی یالو بمباری کا روپ لیا.

امریکی اخباروں نے یہ صاف کردیا ہے کہ یالو بمباری کی بات مہینوں پہلے سوچی گئی اور سوچ سمجھ کر پوری تیاری کے ساتھ کی گئی. جو بات کبھی بھید تھی آج امریکہ میں اُس کے کھلے کھلے گیت گائے جا رہے ہیں.

یالو بمباری کے بارے میں برطانیہ کا کہنا ہے کہ اس کو اِس بمباری سے پہلے اس بمباری کا پتہ نہ تھا.

के कारनों और कीड़ों को खतम करें उल्टा इस तरह के कीड़ों को पैदा करने, उनकी नसलें बढ़ाने और इन्सानी क़ौम के ऊपर उन्हें इस्तेमाल करने में लग जायें तो इस धरती के ऊपर कहीं किसी भी आदमी की जान सुरक्षित नहीं है. हर देश के मर्दों और औरतों का यह फ़र्ज़ है कि मानव सदाचार और अन्तर क़ौमी व्योहार के ख़िलाफ़ इस जुर्म पर अपनी आवाज़ ऊंची करें ताकि उनके बच्चे इस तबाही से बच सकें."

हमें विश्वास है कि दुनिया के सब सच्चे और इन्साफ़ पसन्द आदमी चीन की सब से बड़ी महिला मैडम सुनयात सेन की इस अपील का दि से साथ देंगे.

19. 7. 52. —सुन्दरलाल

यालू बमबारी

कोरिया में यालू नदी बने बिजली घरों पर अमरीकियों ने पांच सौ हवाई जहाज़ ले कर नव्वे मिनट तक 24 जून को बहुत ज़ोर की बमबारी की. अमरीकियों का कहना है कि उन्होंने इतने बम गिराये कि पांच कारख़ानों में से चार एक दम बरबाद हो गये.

इस बमबारी को लेकर बरतानिया की पार्लियामेन्ट में एक हलका सा तूफ़ान उठ खड़ा हुआ. विरोधी दल, जिसके नेता को पार्लियामेन्ट में कभी कभी तूफ़ान उठाने की ही तनख़ा मिलती है इतना भी न करता तो क्या करता.

बरतानिया की पार्लियामेन्ट की देखा देखी हिन्दुस्तान पार्लियामेन्ट में भी विरोधी दल की तरफ़ से इस बमबारी के बारे में कुछ सवाल पूछे गये. पर स्पीकर ने यह कह कर उनको रोक दिया कि उनको अभी तक कोई पार्लियामेन्ट हन्सर्ड यानी बरतानिया पार्लियामेन्ट की तरफ़ से कोई रिपोर्ट नहीं मिली. लाल फ़ीताशाही का किसी बात के टालने का यह पुराना रवैया है कि वह इसी तरह के जवाब सोच निकालती है. हो सकता है स्पीकर साहब किसी ख़ास मौक़े पर किसी जगह अपनी आंखों ख़ुद आग लगते हुए देखकर भी इस बिना पर आग लगने से इन्कार कर दें कि वहां के अफ़सर से उनको अभी कोई रिपोर्ट नहीं मिली.

यालू बमबारी को लेकर आख़िर यह बरतानिया और हिन्दुस्तान की पार्लियामेन्ट में सवाल उठे क्यों? इसका जवाब सीधा सादा है. अमरीका इस बात पर तुला हुआ है कि तीसरी लड़ाई जल्द से जल्द छेड़ी जाय. और बरतानिया चाहता वह जब तक रुकी रहे अच्छा. ग़लत या सही अमरीका समझे हुए है कि इस वक़्त उसका पल्ला रूस चीन ही नहीं, एशिया के सारे मिले देशों से भी भारी है. वह समझता है उसके पास सबसे ज़ियादा ऐटम बम का ज़ख़ीरा है. बीमारी

کے کارنوں اور کیڑوں کو ختم کریں الٹا اسطرح کے کیڑوں کو پیدا کرنے، اُن کی نسلیں بڑھانے اور اِنسانی قوم کے اوپر اُنہیں استعمال کرنے میں لگ جائیں تو اس دھرتی کے اوپر کہیں کسی بھی آدمی کی جان سرکشت نہیں ہے ۔ ہر دیش کے مردوں اور عورتوں کا یہ فرض ہے کہ مانو سداچار اور انترقومی بیوہار کے خلاف اِس جرم پر اپنی آواز اونچی کریں تاکہ اُنکے بچے اس تباہی سے بچ سکیں۔"

ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کے سب سچے اور انصاف پسند آدمی چین کی سب سے بڑی مہیلا میڈم سن یات سین کی اِس اپیل کا دل سے ساتھ دینگے ۔

سندرلال - 19-7-52

یالو بمباری

کوریا میں یالو ندی پر بنے بجلی گھروں پر امریکیوں نے پانچ سو ہوائی جہاز لے کر نوے منٹ تک 24 جون کو بہت زور کی بمباری کی۔ امریکیوں کا کہنا ہے کہ انہوں نے اِتنے بم گرائے کہ پانچ کارخانوں میں سے چار ایک دم برباد ہوگئے ۔

اِس بمباری کو لے کر برطانیہ کی پارلیامنٹ میں ایک ہلکا سا طوفان اُٹھ کھڑا ہوا۔ ورودھی دل، جس کے نیتا کو پارلیامنٹ میں کبھی کبھی طوفان اُٹھانے کی ہی تنخواہ ملتی ہے اتنا بھی نہ کرتا تو کیا کرتا ۔

برطانیہ کی پارلیامنٹ کی دیکھا دیکھی ہندستان پارلیامنٹ میں بھی ورودھی دل کی طرف سے اِس بمباری کے بارے میں کچھ سوال پوچھے گئے ۔ پر اسپیکر نے یہ کہکر اُن کو روک دیا کہ ان کو ابھی تک کوئی پارلیامنٹ ہنسرڈ یعنی برطانیہ پارلیامنٹ کی طرف سے کوئی رپورٹ نہیں ملی۔ لال فیتا شاہی کا کسی بات کے ٹالنے کا یہ پرانا رویہ ہے کہ وہ اِسی طرح کے جواب سوچ نکالتی ہے۔ ہوسکتا ہے اسپیکر صاحب کسی خاص موقعے پر کسی جگہ اپنی آنکھوں خود آگ لگتے ہوئے دیکھکر بھی اِس بنا پر آگ لگنے سے انکار کر دیں کہ وہاں کے افسر سے اُن کو ابھی کوئی رپورٹ نہیں ملی ۔

یالو بمباری کو لیکر آخر یہ برطانیہ اور ہندستان کی پارلیامنٹ میں سوال اُٹھے کیوں؟ اِس کا جواب سیدھا سادہ ہے۔ امریکہ اِس بات پر تلا ہوا ہے کہ تیسری لڑائی جلد سے جلد چھیڑی جائے اور برطانیہ چاہتا وہ جب تک رکی رہے اچھا۔ غلط یا سہی امریکہ سمجھے ہوئے ہیں کہ اِس وقت اُس کا پلہ روس چین ہی نہیں، ایشیا کے سارے دیشوں سے بھی بھاری ہے ۔ وہ سمجھتا ہے اُس کے پاس سب سے زیادہ ایٹم بم کا ذخیرہ ہے ۔ بیماری

मैडम सुनयात सेन ने यह भी सवाल किया है कि 'दूसरी बड़ी जंग में जिन लोगों को नाज़ियों के हाथों इतना नुक़सान पहुँचा उन्हें यह पता लगाना चाहिये कि जरमनी और जापान के वह फ़ौजी अफ़सर जो बीमारी के कीड़ों के ज़रिये जंग करने की खोज में लगे हुए थे अब अमरीका की साइन्सी प्रयोग शाला में बैठे क्या कर रहे हैं. उन्हें यह भी पता लगाना चाहिये कि 13 अप्रैल सन 1951 के 'न्यूयार्क टाईम्स' में जापान और पच्छिम जरमनी की जिन बम प्रयोग शालाओं का ज़िक्र है उन में क्या काम हो रहा है ?"

आख़ीर में मैडम सुनयात सेन ने लिखा है :—

"चीनी जनता इन हमलों से नहीं डरती. नये चीन ने जिस तरह क़ुदरती भूक और बीमारियों को अपने यहां से निकाल दिया उसी तरह वह आदमी की फैलाई हुई बीमारियों को भी बढ़ने से रोक देगा. हमारे किनारों की नाका बन्दी की गई. हमारा माली और तिजारती बायकाट किया गया. हमने उससे फ़ायदा उठाया और अपनी खेती और दस्तकारियों को इतना बढ़ाया कि हम अपने पैरों पर खड़े हो गए और जो हमारे साथ दोस्ती और बराबरी की शर्तों पर तिजारत करने को तैयार हैं उनके साथ हम तिजारत कर रहे हैं जिससे दोनों को फ़ायदा है. अब इन बीमारी बमों के ज़हरीले असर को मिटाने में चीनी जनता सफ़ाई और तन्दुरुस्ती की नई ऊंचाईयों को पहुँच रही है. 17 जून 1925 को जिनेवा में एक अहद नामा लिखा गया था कि लड़ाई में बीमारी बमों और ज़हरीली गैसों को न बर्ता जाय. सब बड़े बड़े मुल्कों की सरकारों ने उसे मान लिया. केवल अमरीका और जापान की सरकारों ने दस्तख़त करने से इनकार कर दिया था. अब भी अमरीका की सरकार इस तरह के अहद नामे पर दस्तख़त करने से इनकार कर रही है. दुनिया की शान्ति कौन्सिल ने सारी दुनिया के लोगों से यह मांग की है कि वह अपनी अपनी सरकारों पर यह ज़ोर डालें कि वह आपस में इस तरह का अहद नामा कर लें और सब उस पर अमल करें. नागासाकी और हीरोशीमा के बाद अगर अब तक ऐटम बम इस्तेमाल नहीं हुआ तो उसकी एक वजह यह भी है कि दुनिया भर ने इस बात की आवाज़ उठाई कि ऐटम बम के इस्तेमाल को अन्तर क़ौमी जुर्म ठहराया जाय. बीमारी बमों के इस्तेमाल से दुनिया भर के मर्दों, औरतों और बच्चों को जो ख़तरा है उसे हम इसी तरह की आवाज़ उठा कर रोक सकते हैं. किसी देश में हुकूमत का ढंग चाहे कुछ भी हो और वहां की सरकार या वहां के लोग चाहे किसी भी माली ढांचे को ठीक मानते हों हम सब को मिल कर इस मामले में अपने इनसानी फ़र्ज़ को पूरा करना चाहिये. जब साइन्स के बड़े बड़े विद्वान का काम यह होना चाहिये था कि दुनिया से बीमारियों

مهڈم سن‌یات سین نے یہ بھی سوال کیا ہے کہ "دوسری بڑی جنگ میں جن لوگوں کو نازیوں کے ہاتھوں اتنا نقصان پہونچا انہیں یہ پتہ لگانا چاہئے کہ جرمنی اور جاپان کے وہ فوجی افسر جو بیماری کے کیڑوں کے ذریعے جنگ کرنے کی کھوج میں لگے ہوئے تھے اب امریکہ کی سائنسی پریوگ شالا میں بیٹھے کیا کر رہے ہیں. انہیں یہ بھی پتہ لگانا چاہئے کہ 13 اپریل سن 1951 کے 'نیویارک ٹائمس' میں جاپان اور پچھم جرمنی کی جن بیماری بم پریوگ شالاؤں کا ذکر ہے اُن میں کیا کام ہو رہا ہے؟"

آخیر میں مہڈم سن‌یات سین نے لکھا ہے کہ :—

"چینی جنتا اِن حملوں سے نہیں ڈرتی. نئے چین نے جس طرح قدرتی بھوک اور بیماریوں کو اپنے یہاں سے نکالدیا اُسی طرح وہ آدمی کی پھیلائی ہوئی بیماریوں کو بھی بڑھنے سے روک دیگا. ہمارے کناروں کی ناکہ بندی کی گئی. ہمارا مالی اور تجارتی بائیکاٹ کیا گیا. ہم نے اُس سے فائدہ اُٹھایا اور اپنی کھیتی اور دستکاریوں کو اتنا بڑھایا کہ ہم اپنے پیروں پر کھڑے ہوگئے اور جو ہمارے ساتھ دوستی اور برابری کی شرطوں پر تجارت کرنے کو تیار ہیں اُن کے ساتھ ہم تجارت کر رہے ہیں جس سے دونوں کو فائدہ ہے. اب اِن بیماری بموں کے زہریلے اثر کو مٹانے میں چینی جنتا صفائی اور تندرستی کی نئی اونچائیوں کو پہونچ رہی ہے. 17 جون 1925 کو جنیوا میں ایک عہدنامہ لکھا گیا تھا کہ لڑائی میں بیماری بموں اور زہریلی گیسوں کو نہ برتا جائے. سب بڑے بڑے ملکوں کی سرکاروں نے اُسے مان لیا. کیول امریکہ اور جاپان کی سرکاروں نے دستخط کرنے سے انکار کر دیا تھا. اب بھی امریکہ کی سرکار اس طرح کے عہدنامے پر دستخط کرنے سے انکار کر رہی ہے. دنیا کی شانتی کونسل نے ساری دنیا کے لوگوں سے یہ مانگ کی ہے کہ وہ اپنی اپنی سرکاروں پر یہ زور ڈالیں کہ وہ آپس میں ایک اسطرح کا عہدنامہ کرلیں اور سب اُس پر عمل کریں. ناگاساکی اور ھیروشیما کے بعد اگر اب تک ایٹم بم استعمال نہیں ہوا تو اُس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ دنیا بھر نے اس بات کی آواز اُٹھائی کہ ایٹم بم کے استعمال کو انترقومی جرم ٹھہرایا جائے. بیماری بموں کے استعمال سے دنیا بھر کے مردوں، عورتوں اور بچوں کو جو خطرہ ہے اُسے ہم اسی طرح کی آواز اُٹھاکر روک سکتے ہیں. کسی دیش میں حکومت کا ڈھنگ چاہے کچھ بھی ہو اور وہاں کی سرکار یا وہاں کے لوگ چاہے کسی بھی مالی ڈھانچے کو ٹھیک مانتے ہوں ہم سب کو مل کر اِس معاملے میں اپنے انسانی فرض کو پورا کرنا چاہئے. جب سائنس کے بڑے بڑے ودوان جن کا کام یہ ہونا چاہئے تھا کہ دنیا سے بیماریوں

बीमारियों के कीड़ों को पैदा करके अपने पास तैयार रखना चाहिये. जहां तक हो सके कोई आदमी जो कीड़ों के असर में आ जाय बच न सके.' इसके क्या मानी हैं ?

"8 जुलाई सन 1950 को अमरीकी अखबार 'साइन्स न्यूज़ लेटर' ने साफ़ साफ़ लिखा था—'अगर कोरिया में लड़ाई जारी रही तो हमें बहुत जल्दी बीमारी के कीड़ों के ज़रिये जंग करके नतीजा देखना होगा.' इस का क्या मतलब होता है ?

"जब कोरिया और चीन पर बीमारी बमों के फेंके जाने की खबर दुनिया में फैली तो अमरीका के कुछ ज़िम्मेदार नेताओं ने इस खबर को झूट ठहराते हुए एक बड़ी दलील यह दी कि 'इन बीमारी बमों के जो फ़ोटो छपे हैं वह ऐसे बमों के फ़ोटो हैं जो प्रोपेगन्डा पेम्फ़लेट बरसाने के काम में लाये जाते हैं और जिन्हें बीमारी के कीड़ों को फैलाने के काम में लाया ही नहीं जा सकता'. यह बात 3 अप्रैल सन '52 के 'न्यूयार्क टाइम्स' में छपी है. इसके दो दिन बाद 5 अप्रैल को एसोसियेटेड प्रेस ने अमरीका से खबर दी कि अमरीकी आरमी केमिकल कोर के जनरल बोलीन ने कहा है कि 'दुश्मन के इलाक़े पर बीमारी बम फेंकने में उसी तरह के बम काम में आते हैं जो आजकल प्रोपेगन्डा पम्फ़लेट गिराने में काम में लाये जाते हैं.' फिर दुनिया की आंखों में धूल डालने की कोशिश क्यों है ?"

मैडम सुनयात सेन ने अपने लेख में बताया है कि अमरीका के अलावा दूसरे देशों में भी इस तरह की तैयारियां जारी हैं. उनका कहना है कि :—

"जनवरी सन 51 को 'रीडर्स डायजेस्ट' में छप चुका है कि—'कनेडा के मुक़ाम दक्खिन अलबर्टा में लगभग एक हज़ार मुरब्बा मील के एक बहुत बड़े ज़मीन के टुकड़े पर नये तजुरबे हो रहे हैं जिन की वजह से यह जगह दुनिया भर में मशहूर हो गई है. इस जगह को शेफ़ील्ड एक्सपेरीमेन्टल स्टेशन कहते हैं. यहां दवाओं और बीमारी के कीड़ों के ज़रिये जंग करने के अमली तजुरबे किये जा रहे हैं.' हमें याद रखना चाहिये कि इस तरह के अमली तजुरबे किसी हथियार के बन जाने के बाद और उसके अलग इस्तेमाल से पहले किये जाते हैं.

"दिसम्बर सन 1950 के इंगलैन्ड के एक अखबार 'डिसकवरी' में चैपमैन पिंचर ने एक लेख लिखा है जिस में उसने बताया है कि इंगलैन्ड के 'सेल्सबरी प्लेन' में पोटन नामी मुक़ाम पर बीमारी के कीड़ों का एक रिसर्च महकमा काम कर रहा है जिस में यह खोज की जा रही है कि गिल्टी वाली प्लेग किस तरह पैदा की जा सकती है और किस तरह फैलाई जा सकती है. यह खोज उस खोज के साथ पूरी तरह मिल कर की जा रही है जो इसी काम के लिए अमरीका में हो रही है."

بیماریوں کے کیڑوں کو پیدا کر کے اپنے پاس تیار رکھنا چاہئے۔ جہاں تک ہو سکے کوئی آدمی جو کیڑوں کے اثر میں آ جائے . بچ نہ سکے.' اس کے کیا معنی ہیں ؟

"8 جولائی سن 1950 کو امریکی 'اخبار سائنس نیوز لیٹر' نے صاف صاف لکھا تھا—' اگر کوریا میں لڑائی جاری رہی تو ہمیں بہت جلدی بیماری کے کیڑوں کے ذریعے جنگ کر کے نتیجہ دیکھنا ہوگا .' اس کا کیا مطلب ہوتا ہے ؟

" جب کوریا اور چین پر بیماری بموں کے پھینکے جانے کی خبر دنیا میں پھیلی تو امریکہ کے کچھ ذمہ دار نیتاؤں نے اس خبر کو جھوٹ ٹھہراتے ہوئے ایک بڑی دلیل یہ دی کہ 'ان بیماری بموں کے جو فوٹو چھپے ہیں وہ ایسے بموں کے فوٹو ہیں جو پروپیگنڈا پمفلٹ برسانے کے کام میں لائے جاتے ہیں اور جنہیں بیماری کے کیڑوں کو پھیلانے کے کام میں لایا ہی نہیں جا سکتا .' یہ بات 13 اپریل سن 1952 کے 'نیویارک ٹائمس' میں چھپی ہے . اس کے دو دن بعد 5 اپریل کو ایسوسی ایٹیڈ پریس نے امریکہ سے خبر دی کہ امریکی آرمی کیمیکل کور کے جنرل بولین نے کہا ہے کہ دشمن کے علاقے پر بیماری بم پھینکنے میں اسی طرح کے بم کام میں آتے ہیں جو آجکل پروپیگنڈا پمفلٹ گرانے میں کام میں لائے جاتے ہیں .' پھر دنیا کی آنکھوں میں دھول ڈالنے کی کوشش کیوں ہے ؟"

میڈم سن یات سین نے اپنے لیکھ میں بتایا ہے کہ امریکہ کے علاوہ دوسرے دیشوں میں بھی اس طرح کی تیاریاں جاری ہیں . ان کا کہنا ہے کہ :—

" جنوری سن 1951 کے 'ریڈرس ڈائجسٹ' میں چھپ چکا ہے کہ—'کنیڈا کے مقام دکھن البرٹا میں لگ بھگ ایک ہزار مربع میل کے ایک بہت بڑے زمین کے ٹکڑے پر نئے تجربے ہو رہے ہیں جن کی وجہ سے یہ جگہ دنیا بھر میں مشہور ہوگئی ہے . اس جگہ کو شیفیلڈ اکسپیریمنٹل اسٹیشن کہتے ہیں . یہاں دواؤں اور بیماری کیڑوں کے ذریعے جنگ کرنے کے عملی تجربے کئے جا رہے ہیں .' ہمیں یاد رکھنا چاہئے کہ اس طرح کے عملی تجربے کسی ہتھیار کے بن جانے کے بعد اور اس کے اصل استعمال سے پہلے کئے جاتے ہیں .

"دسمبر سن 1950 کے انگلینڈ کے ایک اخبار 'ڈسکوری' میں چیپ مین پنچر نے ایک لیکھ لکھا ہے جس میں اس نے بتایا ہے کہ 'انگلینڈ کے 'سلسبری پلین' میں پورٹن نامی مقام پر بیماری کے کیڑوں کا ایک ریسرچ محکمہ کام کر رہا ہے جس میں یہ کھوج کی جا رہی ہے کہ گلٹی والی پلیگ کس طرح پیدا کی جاسکتی ہے اور کس طرح پھیلائی جاسکتی ہے . یہ کھوج اس کھوج کے ساتھ پوری طرح مل کر کی جا رہی ہے جو اسی کام کے لئے امریکہ میں ہو رہی ہے ."

न और कोरिया की लाखों जनता को भूक और बीमारी खत्म कर देने की कोशिश में लगी हुई हैं. चीन और रिया की बस्तियों पर इस तरह की जहरीली चीज़ें भी की गई हैं जिनसे बस्ती के सब जानवर मर जायें और ड़ी फसलें जल कर खत्म हो जायें.

जो लोग अभी तक आंखों देखी शहादतों और खुले बूतों के बावजूद बीमारी बमों के फेंके जाने से इनकार रते हैं या इनकार करने वालों पर एतबार करते हैं उन का ान मैडम सुनयात सेन ने नीचे लिखी बातों की तरफ़ लाया है :—

"पहले भी अमरीकी फ़ौजें कोरिया के गांव और शहरों इस तरह के बम बरसाती रही हैं जिनसे गांव के गांव ल जायें और खड़ी फ़सलें और पूरी आबादियां खत्म हो यें और अमरीकी जनरल फ़ख्र के साथ यह कहते रहे कि हमने इतनी आबादियों को मिटा दिया. फिर उनके ए बीमारी बमों का फेंकना कौन अजीब बात है ?

"अमरीका के राज काजी नेता मानते हैं कि वह सों से अमरीका में चार जगह यानी कैम्प डेट्रिक में, केगोला में, वीगो में और डिगवे में बहुत बड़े पैमाने पर ग के लिए बीमारी के कीड़ों (Biological Warfare gents) को पैदा करने और बढ़ाने के काम में लगे हैं. अगर इन बीमारी बमों को कहीं काम में नहीं लाना तो यह तैयार क्यों किये जा रहे थे और अब भी क्यों ये जा रहे हैं ?

"सन 1946 में अमरीका की बायलाजिकल वारफ़ेयर टी के मुखिया जी. डब्लू. मर्ग ने अमरीकी सरकार को रिपोर्ट दी थी जिसमें 'बहुत बड़े पैमाने पर बीमारी के ड़ों और उनकी पैदावारों को पैदा करने और बढ़ाने के ीक़ों और आसानियों' की चर्चा की गई थी और वह कहा गया था कि 'इस तरह के कीड़ों के जहरीले असर बढ़ाने के तरीक़ों पर तजुरबे किये जा रहे हैं और ारी के कीड़ों और कीड़ों की पैदावारों को फैलाने के र जानवरों के इस्तेमाल पर भी तजुरबे किये जा रहे हैं.' तजुरबे काहे के लिए हो रहे हैं ?

"इसके तीन साल बाद 13 मार्च 1949 के 'न्युयार्क म्स' में छपा कि अमरीकी आरमी केमिकलवार फ़ेयर सि के मुखिया जनरल इल्डन ऐवेट ने बड़े फ़ख्र के कहा कि—'मैं समझता हूं कि दुनिया के अच्छे से छे साइन्सदां हमारे यहां बीमारी के कीड़ों के जरिये करने के इस मसले पर काम कर रहे हैं.' यह क्या थी ?

"अमरीका के सरकार अखबारी 'मिलिट्री रेव्यू' में अप्रैल 50 में निकला था कि—'हमें बहुत बड़ी बड़ी तादादों में

چین اور کوریا کی لاکھوں جنتا کو بھوک اور بیماری سے ختم کر دینے کی کوشش میں لگی ہوئی ہیں۔ چین اور کوریا کی بستیوں پر اس طرح کی زہریلی چیزیں بھی پھینکی گئی ہیں جن سے بستی کے سب جانور مر جائیں اور کھڑی فصلیں جلکر ختم ہو جائیں۔

جو لوگ ابھی تک آنکھوں دیکھی شہادتوں اور کھلے ثبوتوں کے باوجود بیماری بموں کے پھینکے جانے سے انکار کرتے ہیں یا انکار کرنے والوں پر اعتبار کرتے ہیں اُن کا دھیان میڈم سن یات سین نے نیچے لکھی باتوں کی طرف دلایا ہے :—

" پہلے بھی امریکی فوجیں کوریا کے گاؤں اور شہروں پر اس طرح کے بم برساتی رہی ہیں جن سے گاؤں کے گاؤں جل جائیں اور کھڑی فصلیں اور پوری آبادیاں ختم ہو جائیں اور امریکی جرنیل فخر کے ساتھ یہ کہتے رہے ہیں کہ ہم نے اتنی آبادیوں کو مٹا دیا۔ پھر اُن کے لئے بیماری بموں کا پھینکنا کون عجیب بات ہے ؟

" امریکہ کے راج کاجی نیتا مانتے ہیں کہ وہ برسوں سے امریکہ میں چار جگہ یعنی کیمپ ڈیٹرک میں، پھسکے گولا میں، ویگو میں اور ڈگوے میں بہت بڑے پیمانے پر جنگ کے لئے بیماری کے کیڑوں (Biolgical Warfare Agents) کو پیدا کرنے اور بڑھانے کے کام میں لگے ہوئے ہیں۔ اگر اِن بیماری بموں کو کہیں کام میں نہیں لانا تھا تو یہ تیار کیوں کئے جا رہے تھے اور اب بھی کیوں کئے جا رہے ہیں ؟

" سن 1946 میں امریکہ کی بایولاجیکل وارفیر کمیٹی کے مکھیا جی۔ ڈبلو۔ مرگ نے امریکی سرکار کو ایک رپورٹ دی تھی جس میں 'بہت بڑے پیمانے پر بیماری کے کیڑوں اور اُن کی پیداواروں کو پیدا کرنے اور بڑھانے کے طریقوں اور آسانیوں' کی چرچا کی گئی تھی اور یہ بھی کہا گیا تھا کہ 'اس طرح کے کیڑوں کے زہریلے اثر کو بڑھانے کے طریقوں پر تجربے کئے جا رہے ہیں اور بیماری کے کیڑوں اور کیڑوں کی پیداواروں کو پھیلانے کے لئے جانوروں کے استعمال پر بھی تجربے کئے جا رہے ہیں'۔ یہ تجربے کا ہے کے لئے ہو رہے ہیں ؟

" اس کے تین سال بعد 13 مارچ سن 1949 کے 'نیویارک ٹائمس' میں چھپا کہ امریکی آرمی کیمیکل وار فیئر سروس کے مکھیا جنرل ایلڈن ایچ ویٹ نے بڑے فخر کے ساتھ کہا کہ—'میں سمجھتا ہوں کہ دنیا کے اچھے سے اچھے سائنسداں ہمارے یہاں بیماری کے کیڑوں کے ذریعے جنگ کرنے کے اس مسئلے پر کام کر رہے ہیں۔' یہ کیا بات تھی ؟

"امریکہ کے سرکاری اخبار 'ملٹری ریویو' میں اپریل 1950 میں نکلا تھا کہ—'ہمیں بہت بڑی بڑی تعدادوں میں

बढ़ायेंगी और उस दिन के लाने में मदद देंगी जिस दिन हम सारी इन्सानी क़ौम को एक कुनबे का रूप दे सकें और अलग अलग धर्म मज़हबों की जगह एक मानव धर्म या एक मज़हबे इन्सानियत को फलता फूलता देख सकें. इसमें किसी के साथ ज़बरदस्ती नहीं. जिन लोगों के विचार इस बारे में हमारे साथ नहीं मिलते उनसे हम केवल इतनी भीक मांगते हैं कि वह ज़िन्दा रहें और दूसरों को भी ज़िन्दा रहने दें. उनका दीन धर्म उनके साथ हमारा दीन धर्म हमारे साथ. दीन धर्म के मामले में ज़बरदस्ती कोई किसी के साथ न करे.

हम इस बात को भी नहीं मानते कि इस तरह की शादी करने वालों को कोई ख़ास जलसा नहीं करना चाहिये था, चुपचाप शादी कर लेनी चाहिये थी. यह बात भी ग़लत है जिसके यहां शादी हो वह ख़ुशी क्यों न मनाये और जो किसी उसूल को ठीक मानते हों वह उस पर जलसा क्यों न करें. इसमें दूसरे क्यों नाराज़ हों.

यह बहाना भी बे मानी है कि किसी शादी में लड़का नेक चलन है या बद चलन या लड़की कैसी है. लड़का और लड़की या ज़ियादा से ज़ियादा दोनों के घर वालों या ख़ास दोस्तों को छोड़ कर किसी और को उन मामलों में दख़्ल देने का हक़ नहीं है. फिर इस बात को बहाना बना कर किसी मज़हब के लोगों पर हमले कर बैठना तो वह महान पाप है जिसे कोई क़ानून माफ़ नहीं कर सकता और न जिससे किसी देश या धर्म का मान बढ़ सकता है. इस तरह की शादियां और अंतर क़ौमी और अंतर राष्ट्री शादियां तो बढ़ेंगी ही. फिर घड़ी की सुईयों को उलटा चलाने की बेकार कोशिश में हम आपस में कड़ुवा पन क्यों पैदा करें.

जो लोग हम से सहमत हैं और इस तरह की शादियों के हक़ में हैं उन से हम कहेंगे कि वह बिना अपने विरोधियों पर ग़ुस्सा किये या बदले की भावना मन में लाये धीरज और हिम्मत के साथ अपने असूलों पर डटे रहें. देश हमारे असूलों की सच्चाई की परख, हमारे धीरज, हमारे कष्टों और हमारी क़ुरबानियों से ही कर सकता है.

12-7-'52 —सुन्दरलाल

मैडम सुनयात सेन की अपील

1911 की चीनी क्रान्ति और चीनी जनराज के जन्म दाता डाक्टर सुनयात सेन की पत्नी मैडम सुनयात सेन जिन का चीनी नाम सुंग चिंग लिंग है, एक लेख चीन के पत्रवारी अंगरेज़ी अख़बार "चायना रीकन्सट्रक्टस" में निकला है. इस लेख में मैडम सुनयात सेन ने बड़े दर्द के साथ बताया है कि अमरीका और यूनो की फ़ौजें किस तरह

بڑھائینگی اور اُس دن کے لانے میں مدد دینگی جس دن ہم ساری اِنسانی قوم کو ایک کنبے کا روپ دے سکیں اور الگ الگ دھرم مذہبوں کی جگہ ایک مانو دھرم یا ایک مذہب انسانیت کو پھلتا پھولتا دیکھ سکیں۔ اِس میں کسی کے ساتھ زبردستی نہیں۔ جن لوگوں کے وچار اس بارے میں ہمارے ساتھ نہیں ملتے اُن سے ہم کیول اِتنی بھیک مانگتے ہیں کہ وہ زندہ رہیں اور دوسروں کو بھی زندہ رہنے دیں۔ اُن کا دین دھرم اُن کے ساتھ ہمارا دین دھرم ہمارے ساتھ۔ دین دھرم کے معاملے میں زبردستی کوئی کسی کے ساتھ نہ کرے۔

ہم اس بات کو بھی نہیں مانتے کہ اس طرح کی شادی کرنے والوں کو کوئی خاص جلسہ نہیں کرنا چاہئے تھا، چپ چاپ شادی کر لینی چاہئے تھی۔ یہ بات بھی غلط ہے۔ جس کے یہاں شادی ہو وہ خوشی کیوں نہ منائے اور جو کسی اُصول کو ٹھیک مانتے ہوں وہ اُس پر جلسہ کیوں نہ کریں۔ اِس میں دوسرے کیوں ناراض ہوں۔

یہ بہانہ بھی بے معنی ہے کہ کسی شادی میں لڑکا نیک چلن ہے یا بد چلن یا لڑکی کیسی ہے۔ لڑکا اور لڑکی یا زیادہ سے زیادہ دونوں کے گھر والوں یا خاص دوستوں کو چھوڑ کر کسی اور کو اِن معاملوں میں دخل دینے کا حق نہیں ہے۔ پھر اس بات کو بہانا بنا کر کسی مذہب کے لوگوں پر حملے کر بیٹھنا تو وہ مہان پاپ ہے جسے کوئی قانون معاف نہیں کر سکتا اور نہ جس سے کسی دیش یا دھرم کا مان بڑھ سکتا ہے۔ اِس طرح کی شادیاں اور انتر قومی اور انتر راشٹری شادیاں تو بڑھینگی ہی۔ پھر گھڑی کی سوئیوں کو اُلٹا چلانے کی بیکار کوشش میں ہم کڑواپن کیوں پیدا کریں۔

جو لوگ ہم سے سہمت ہیں اور اس طرح کی شادیوں کے حق میں ہیں اُن سے ہم کہینگے کہ وہ بنا اپنے ورودھیوں پر غصہ کئے یا بدلے کی بھاونا من میں لائے دھیرج اور ہمت کے ساتھ اپنے اُصولوں پر ڈٹے رہیں۔ دیش ہمارے اُصولوں کی سچائی کی پرکھ ہمارے دھیرج، ہمارے کشٹوں اور ہماری قربانیوں سے ہی کر سکتا ہے۔

— سندرلال 12-7-52'

میڈم سن یات سین کی اپیل

سن 1911 کی چینی کرانتی اور چینی جن راج کے جنم داتا ڈاکٹر سن یات سین کی پتنی میڈم سن یات سین، جن کا چینی نام سونگ چنگ لنگ ہے، ایک لیکھ چین کے پکھواری انگریزی اخبار "چائنا ریکنسٹرکٹس" میں نکلا ہے۔ اِس لیکھ میں میڈم سن یات سین نے بڑے درد کے ساتھ بتایا ہے کہ امریکہ اور یونو کی فوجیں کس طرح

सीधे या सीधे एक पैसा रिश्वत लेनाह राम समझें और नौकर की तरह मेहनत करें. आज किसे इस चीज़ के ठीक ठीक पता लगाने की चिन्ता है कि रिश्वत का रिवाज मुल्क में उतना ही है जितना पांच साल पहले था या उससे कई गुना और ग़बन के मुक़दमे एक एक सूबे में कितने चल रहे हैं. ज़रूरत है हकूमत के तमाम ख़र्चों को बेहद कम करने की, ज़रूरत है पूरी पूरी ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा की. जब तक यह नहीं होता यानी जब तक हकूमत का पूरा ढांचा और उसके बुनियादी उसूल नहीं बदलते तब तक कोई योजना अच्छी या बुरी इस देश को नहीं फल सकती.

जवाहरलाल जी ने यह भी कहा कि पिछले चार साल में भारत ने जो "आर्थिक उन्नति" की है उसे देख कर कुछ विदेशों ने ख़ूब सराहा है. हमारी और जनता की नज़रों में न वह उन्नति उन्नति है और न सरकारी गवाहों की कोई ख़ास क़द्र.

हिन्दू मुस्लिम शादी और दिल्ली के दंगे.

आख़ीर में जवाहरलाल जी ने उन दंगों की चर्चा की जो हाल में एक मुसलमान नौ जवान की एक हिन्दू लड़की के साथ शादी की तजवीज़ के सिलसिले में दिल्ली में हुए थे. जवाहरलाल जी ने इन दंगों पर दुख प्रगट करते हुए कहा कि इस तरह की मनमानी और हुल्लड़ बाज़ी बर्दाश्त नहीं की जा सकती. इस मामले में भी हम पूरी तरह जवाहर लाल जी से सहमत हैं. इस सिलसिले में जो कुछ दिल्ली में हुआ और जिस तरह बे गुनाह मुसलमानों पर जिनका इस शादी से कोई सम्बन्ध तक नहीं था हमले हुए वह किसी भी देश, या किसी भी धर्म के लिए बड़ी शर्म की बात है. हमें ख़ुद उसका गहरा दुख है. मालूम नहीं फ़िरक़ेवाराना तंग नज़री का यह भूत कब हमारे देश का पीछा छोड़ेगा. अचरज यह है कि जो लोग कश्मीर को भारत में मिलाये रखने के लिए अपने को बेचैन ज़ाहिर करते हैं वही अपने पड़ोसियों और शहर वालों के साथ इस तरह की बेइन्साफ़ी की और लज्जा जनक हरकतें करते है.

हम ख़ुद हिन्दू मुस्लिम शादियों के पूरी तरह हक़ में हैं. जो हिन्दू इसे अपने धर्म के विरुद्ध समझते हैं या जो मुसलमान इसे शरह के ख़िलाफ़ समझते हैं उन से इत्तफ़ाक़ न रखते हुए भी हमें कोई झगड़ा नहीं. हम दूसरों को भी इनके विचारों के अनुसार अमल करने की पूरी आज़ादी देना चाहते हैं और यही आज़ादी उनसे अपने या उन हिन्दू मुसलमानों के लिए चाहते हैं जो इस तरह की शादियों को धर्म या शरम के ख़िलाफ़ नहीं मानते और चाहे लड़का मुसलमान और लड़की हिन्दू हो हमारी निगाह में कोई फ़र्क़ नहीं. इस तरह की शादियां यानी सब जातों, सब धर्मों और सब प्रान्तों के बीच शादियां देश में प्रेम और एकता को

سیدھے یا سیدھے ایک پیسہ رشوت لینا حرام سمجھیں اور نوکر کی طرح محنت کریں ۔ آج کسے اس چیز کے ٹھیک ٹھیک پتہ لگانے کی چنتا ہے کہ رشوت کا رواج ملک میں اتنا ہی ہے جتنا پانچ سال پہلے تھا یا اس سے کئی گنا اور غبن کے مقدمے ایک ایک صوبے میں کتنے چل رہے ہیں ۔ ضرورت ہے حکومت کے تمام خرچوں کو بےحد کم کرنے کی، ضرورت ہے پوری پوری ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کی ۔ جب تک یہ نہیں ہوتا یعنی جب تک حکومت کا پورا ڈھانچا اور اسکے بنیادی اصول نہیں بدلتے تب تک کوئی یوجنا اچھی یا بری اس دیش کو نہیں پھل سکتی ۔

جواہر لال جی نے یہ بھی کہا کہ پچھلے چار سال میں بھارت نے جو " آرتھک انتی " کی ہے اسے دیکھکر کچھ ودیشوں نے خوب سراہا ہے ۔ ہماری اور جنتا کی نظروں میں نہ وہ انتی انتی ہے اور نہ سرکاری گواہوں کی کوئی خاص قدر ۔

ہندو مسلم شادی اور دلی کے دنگے ۔

آخیر میں جواہر لال جی نے ان دنگوں کی چرچا کی جو حال میں ایک مسلمان نوجوان کی ایک ہندو لڑکی کے ساتھ شادی کی تجویز کے سلسلے میں دلی میں ہوئے تھے ۔ جواہر لال جی نے ان دنگوں پر دکھ پرگٹ کرتے ہوئے کہا کہ اس طرح کی من مانی اور ہلڑ بازی برداشت نہیں کی جا سکتی ۔ اس معاملے میں بھی ہم پوری طرح جواہر لال جی سے سہمت ہیں ۔ اس سلسلے میں جو کچھ دلی میں ہوا اور جس طرح بے گناہ مسلمانوں پر جن کا اس شادی سے کوئی سمبندھ تک نہیں تھا حملے ہوئے وہ کسی بھی دیش یا کسی بھی دھرم کے لئے بڑی شرم کی بات ہے ۔ ہمیں خود اس کا گہرا دکھ ہے ۔ معلوم نہیں فرقہ وارانہ تنگ نظری کا یہ بھوت کب ہمارے دیش کا پیچھا چھوڑیگا ۔ اچرج یہ ہے کہ جو لوگ کشمیر کو بھارت میں ملائے رکھنے کے لئے اپنے کو بےچین ظاہر کرتے ہیں وہی اپنے پڑوسیوں اور شہر والوں کے ساتھ اس طرح کی بے انصافی کی اور لجا جنک حرکتیں کرتے ہیں ۔

ہم خود ہندو مسلم شادیوں کے پوری طرح حق میں ہیں ۔ جو ہندو اسے اپنے دھرم کے وردھ سمجھتے ہیں یا جو مسلمان اسے شرع کے خلاف سمجھتے ہیں ان سے اتفاق نہ رکھتے ہوئے بھی ہمیں کوئی جھگڑا نہیں ۔ ہم دوسروں کو بھی ان کے وچاروں کے انوسار عمل کرنے کی پوری آزادی دینا چاہتے ہیں اور یہی آزادی ان سے اپنے یا ان ہندو مسلمانوں کے لئے چاہتے ہیں جو اس کی طرح شادیوں کو دھرم یا شرع کے خلاف نہیں مانتے ۔ اس میں چاہے لڑکا ہندو اور لڑکی مسلمان ہو اور لڑکا مسلمان اور لڑکی ہندو ہو ہماری نگاہ میں کوئی فرق نہیں ۔ اس طرح کی شادیاں یعنی سب جاتوں، سب دھرموں اور سب پرانتوں کے بیچ شادیاں دیش میں پریم اور ایکتا کو

सरकार से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वह ऐसे जत्थों के जाने में हर तरह की मदद दे और उनके लिए आसानियां पैदा कर दे.

सरकार की योजनायें.

जवाहरलाल जी ने उस भाशन में अपनी 'पांच साला योजना' और 'भारत सेवक समाज' की भी चर्चा की. यह सवाल भी लम्बे सवाल हैं. यहां हम फिर इतना कह देना चाहते हैं कि जब तक हमारी योजनाओं में हमारे सामने आदर्श अमरीकी नमूना रहेगा, महात्मा गांधी का बताया हुआ हिन्दुस्तानी ढांचा नहीं या पड़ोसी चीन का भी नमूना नहीं और जब तक हमारे काम करने वालों को ठोस सेवा की जगह ढिंढोरों और फुलझड़ियों की आदत रहेगी तब तक इस तरह की चीज़ों से देश के ग़रीबों को कोई लाभ नहीं हो सकता. योजनाओं से कहीं बढ़ कर और इनसे कहीं पहला सवाल नीचे से ऊपर तक हकूमत के सारे ढांचे को बदलने का है. हमारे आज कल के हाकिमों को नये चीन का तरीक़ा बहुत पसन्द नहीं आता. आवे भी क्यों ? नये चीन के तीन सब से बड़े उसूल जो उनके 'कामन प्रोग्राम' यानी विधान में दर्ज हैं—ईमानदारी (Honesty), सादगी (Simplicity) और जनता की सेवा (Service of the People) हैं. इन ही के ज़रिये उन्होंने अपनी मुसीबतों को हल किया है और मुल्क को ऊपर उठाया है. इनके ख़िलाफ़ हमारी आज कल की सरकारों के तीन सब से बड़े उसूल मालूम होते हैं—क़ाबिलियत (Efficiency), शान (Dignity) और रहन सहन को बढ़ाना (Raising of the Standard). बातें तीनों अच्छी हैं. पर जब क़ाबिल आदमी की ईमानदारी में थोड़ी सी कमी दिखाई देती है तो हम उसकी क़ाबिलियत की क़द्र करते हुए ईमानदारी की तरफ़ से आखें फेर लेने पर मजबूर हो जाते हैं. शान का ख़्याल हम को तन्खाहें कम नहीं करने देता और हकूमत के ख़र्चों को बेतहाशा बढ़ाए रखता है. रहन सहन को ऊंचा ले जाने की फ़िकर में हम गांव में विदेशी रेडियो और विदेशी टार्च तो फैला देना चाहते हैं और जब उससे बेकारी बढ़ती है तो यह सोच कर सन्तोश मान लेते हैं कि अगर हम सारी जनता के रहन सहन को ऊंचा न ले जा सके तो कम से कम हमने कुछ लोगों के रहन सहन को तो ऊंचा कर ही लिया ! देश को जरूरत है ऐसे हाकिमों और मिनिस्ट्रों की जो जनता के रहन सहन को ऊंचा करने के लिए पहले अपने रहन सहन को नीचा करने को तैयार हों. जो मामूली मकानों में रह सकें, कम तन्खाहों में गुज़र कर सकें और जनता के मेम्बर जनता की तरह रहते सहते चलते फिरते दिखाई दें. ऐसे अफ़सरों और सरकारी नौकरों की जो सचमुच अपने को जनता का नौकर समझें, जनता के साथ उसे मालिक मान कर बरताव करें,

سرکار سے ہماری ونمر پرارتھنا ہے کہ وہ ایسے جتھوں کے جانے میں ہر طرح کی مدد دے اور اُن کے لئے آسانیاں پیدا کر دے ۔

سرکار کی یوجنائیں ۔

جواہر لال جی نے اُس بھاشن میں اپنی 'پانچ سالہ یوجنا' اور 'بھارت سیوک سماج' کی بھی چرچا کی ۔ یہ سوال بھی لمبے سوال ہیں ۔ یہاں ہم پھر اِتنا کہ دینا چاہتے ہیں کہ جب تک ہماری یوجناؤں میں ہمارے سامنے آدرش امریکی نمونہ رہیگا' مہاتما گاندھی کا بتایا ہوا ہندستانی ڈھانچہ نہیں یا پڑوسی چین کا بھی نمونہ نہیں اور جب تک ہمارے کام کرنے والوں کو ٹھوس سیوا کی جگہ ڈھنڈوروں اور پھلجھڑیوں کی عادت رہیگی تب تک اس طرح کی چیزوں سے دیش کے غریبوں کو کوئی لابھ نہیں ہوسکتا ۔ یوجناؤں سے کہیں بڑھکر اور اِن سے کہیں پہلا سوال نیچے سے اوپر تک حکومت کے سارے ڈھانچے کو بدلنے کا ہے ۔ ہمارے آجکل کے حاکموں کو نئے چین کا طریقہ بہت پسند نہیں آتا. آوے بھی کیوں؟ نئے چین کے تین سب سے بڑے اُصول جو اُن کے 'کامن پروگرام' یعنی ودھان میں درج ہیں—ایمانداری (Honesty)' سادگی (Simplicity) اور جنتا کی سیوا (Service of the People) ہیں ۔ اِن ہی کے ذریعے اُنہوں نے اپنی مصیبتوں کو حل کیا ہے اور ملک کو اوپر اُٹھایا ہے. اِن کے خلاف ہماری آجکل کی سرکاروں کے تین سب سے بڑے اُصول معلوم ہوتے ہیں—قابلیت (Efficiency)' شان (Dignity) اور رہن سہن کو بڑھانا (Raising of the Standard) باتیں تینوں اچھی ہیں ۔ پر جب قابل آدمی کی ایمانداری میں تھوڑی سی کمی دکھائی دیتی ہے تو ہم اُس کی قابلیت کی قدر کرتے ہوئے ایمانداری کی طرف سے آنکھیں پھیر لینے پر مجبور ہو جاتے ہیں. شان کا خیال ہم کو تنخواہیں کم نہیں کرنے دیتا اور حکومت کے خرچوں کو بےتحاشا بڑھائے رکھتا ہے ۔ رہن سہن کو اونچا لے جانے کی فکر میں ہم گاؤں گاؤں میں ودیشی ریڈیو اور ودیشی ٹارچ تو پھیلا دینا چاہتے ہیں اور جب اُس سے بیکاری بڑھتی ہے تو یہ سوچ کر سنتوش مان لیتے ہیں کہ اگر ہم ساری جنتا کے رہن سہن کو اُونچا نہ لے جاسکے تو کم سے کم ہم نے کچھ لوگوں کے رہن سہن کو تو اُونچا کر ہی لیا ! دیش کو ضرورت ہے ایسے حاکموں اور منسٹروں کی جو جنتا کے رہن سہن کو اُونچا کرنے کے لئے پہلے اپنے رہن سہن کو نیچا کرنے کو تیار ہوں، جو معمولی مکانوں میں رہ سکیں' کم تنخواہوں میں گذر کر سکیں اور جنتا کے ممبر جنتا کی طرح رہتے سہتے چلتے پھرتے دکھائی دیں ۔ ایسے افسروں اور سرکاری نوکروں کی جو سچ مچ اپنے کو جنتا کا نوکر سمجھیں' جنتا کے ساتھ اُسے مالک مان کر برتاؤ کریں'

हद के अन्दर अच्छी चीज़ है पर चीन में कोआप-व फ़ारमिंग अभी रुपए में एक पाई भी नहीं. वहां के मझदार हाकिमों ने इसे बिल्कुल किसानों की मरज़ी पर ड़ दिया है. हम ज़बरदस्ती और जल्द बाज़ी के साथ पने विचारों और वहमों को मुल्क पर थोपना चाहते हैं. लूम नहीं जवाहरलाल जी को झांसी के कोआपरेटिव के ुरबे का और किसानों के उसकी बाबत ख़्याल का तना पता है.

सच यह है कि यू. पी. का किसान मिटता जा रहा है, की ग़रीबी तेज़ी से बढ़ रही है, उसकी चरागाहें कम हो हैं. उसे ढगरों को थान पर बांध कर खिलाने का ग़ल्त देश दिया जा रहा है और उसके ढंगर मर रहे हैं. कारी नौकरों का दबदबा और उनके बढ़े हुए अधिकार हें नये क़ानून ने और बढ़ा दिया है उसे शेर के सामने बकरी की तरह सुखा रहे हैं. इलाज था सरकारी ींदारी के वहम को छोड़ कर हर खेती करने वाले को के टुकड़े का मालिक बना देना और लगान को असल वार के मुनासिब हिस्से यानी ज़ियादा से ज़ियादा बीस सदी पर पैदावार की शक्ल में बांध देना. बाक़ी तफ़सीलें तय हो सकती हैं और जो करना चाहे उसके लिए तय पड़ी हैं. ज़मींदारी अन्त क़ानून से न किसानों की हालत र हुई है न हो सकती है और न गांव वालों की ग़रीबी हो सकती है.

र और भारत.

हाल में जो इंडियन कलचरल डेलीगेशन चीन से लौटा सकी चर्चा करते हुए जवाहरलाल जी ने एक बहुत छा सुझाव रक्खा है. वह यह कि कुछ होशियार आदमियों त्थे भारत से चीन जायें और कुछ चीन से भारत आयें. ने यह भी कहा कि अगर हिन्दुस्तान के कुछ इन्जीनियर दिनों जा कर चीन रहें और चीन के कुछ इंजीनियर दिनों आ कर यहां रहें तो इससे दोनों का फ़ायदा हो ा है क्योंकि "हमारी और चीन की समस्यायें बहुत सी ी जुलती हैं. दोनों मुल्कों की आबादी बहुत बड़ी है दोनों में मशीनों की कमी है." हम जवाहरलाल जी के ुझाव का दिल से स्वागत करते हैं. अगर इस पर हुआ तो मुमकिन है कि करोड़ों बल्कि अरबों रुपया म अमरीका की ग़ल्त नक़ल में ख़र्च कर रहे हैं और वाले हैं बच जाय. हम चाहते हैं कि जिस तरह नयरों की उसी तरह विद्यार्थियों की, प्रोफ़ेसरों की, मास्टरों की, मज़दूरों की, किसानों की और कारख़ाने-की भी छोटी छोटी पार्टियां दो दो चार चार महीने के हां से चीन और रूस जायें और वहां के सच्चे हालात देखें और समझें, और ऐसे ही वहां से यहां आयें.

ایک حد کے اندر اچھی چیز ہے ۔ پر چین میں کوآپریٹو فارملگ ابھی روپئے میں ایک پائی بھی نہیں ۔ وہاں کے سمجھدار حاکموں نے اِسے بالکل کسانوں کی مرضی پر چھوڑ دیا ہے۔ ہم زبردستی اور جلد بازی کے ساتھ اپنے وچاروں اور وہموں کو ملک پر تھوپنا چاہتے ہیں۔ معلوم نہیں جواہرلال جی کو جھانسی کے کوآپریٹو کے تجربے کا اور کسانوں کے اُس کی بابت خیال کا کتنا پتہ ہے ۔

سچ یہ ہے کہ یو۔ پی۔ کا کسان مٹتا جا رہا ہے٬ اُسکی غریبی تیزی سے بڑھ رہی ہے٬ اُسکی چراگاہیں کم ہو رہی ہیں۔ اُسے ڈنگروں کو تھان پر باندھ کر کھلانے کا غلط اُپدیش دیا جا رہا ہے اور اُس کے ڈنگر مر رہے ہیں ۔ سرکاری نوکروں کا دبدبہ اور اُن کے بڑھے ہوئے ادھیکار جنہیں نئے قانون نے اور بڑھا دیا ہے اُسے شیر کے سامنے بندھی بکری کی طرح سکھا رہے ہیں ۔ علاج تھا سرکاری زمینداری کے وہم کو چھوڑ کر ہر کھیتی کرنے والے کو اُس کے ٹکڑے کا مالک بنا دینا اور لگان کو اصل پیداوار کے مناسب حصے یعنی زیادہ سے زیادہ بیس فیصدی پر پیداوار کی شکل میں باندھ دینا باقی تفصیلیں سب طے ہوسکتی ہیں اور جو کرنا چاہے اُس کے لئے طے ہوئی پڑی ہیں۔ زمینداری انت قانون سے نہ کسانوں کی حالت بہتر ہوئی ہے نہ ہوسکتی ہے اور نہ گاؤں والوں کی غریبی دور ہوسکتی ہے۔

چین اور بھارت ۔

حال میں جو انڈین کلچرل ڈیلی گیشن چین سے لوٹا ہے اُس کی چرچا کرتے ہوئے جواہر لال جی نے ایک بہت اچھا سجھاؤ رکھا ہے۔ وہ یہ کہ کچھ ہوشیار آدمیوں کے جتھے بھارت سے چین جائیں اور کچھ چین سے بھارت آئیں ۔ اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ اگر ہندستان کے کچھ انجینیر تھوڑے دنوں جاکر چین رہیں اور چین کے کچھ انجینیر تھوڑے دنوں آکر یہاں رہیں تو اِس سے دونوں کو فائدہ ہوسکتا ہے کیونکہ "ہماری اور چین کی سمسیائیں بہت سی ملتی جلتی ہیں ۔ دونوں ملکوں کی آبادی بہت بڑی ہے اور دونوں میں مشینوں کی کمی ہے۔" ہم جواہر لال جی کے اِس سجھاؤ کا دل سے سواگت کرتے ہیں۔ اگر اِس پر عمل ہوا تو ممکن ہے کہ کروڑوں بلکہ اربوں روپیہ جو ہم امریکہ کی غلط نقل میں خرچ کر رہے ہیں اور کرنے والے ہیں بچ جائے ۔ ہم چاہتے ہیں کہ جس طرح انجینیروں کی اُسی طرح ودیارتھیوں کی٬ پروفیسروں کی٬ اِسکول ماسٹروں کی٬ مزدوروں کی٬ کسانوں کی اور کارخانے داروں کی بھی چھوٹی چھوٹی پارٹیاں دو دو چار چار مہینے کے لئے یہاں سے چین اور روس جائیں اور وہاں کے سچے حالات کو خود دیکھیں اور سمجھیں٬ اور ایسے ہی وہاں سے یہاں آئیں ۔

नये जमींदार के लाखों हाकिम, अफ़सर और नौकर इस गिरोह के हक़ में पुराने जमींदार के कारिन्दों और सिपाहियों से बदतर हैं बेहतर नहीं. रहा तीसरा गिरोह जो सबसे ज़ियादा ग़रीब है और जिसकी गिनती हर गांव में सबसे ज़ियादा है और कुल प्रान्त में शायद दो करोड़ से कम नहीं, नये क़ानून का उसकी क़ीमत पर ज़रा भी असर नहीं हुआ. वह सब वैसे ही नादार और बे-ज़मीन हैं जैसे पहले थे, सिवाय इसके कि पिछले चार पांच बरस में इन अभागों की गिनती और बढ़ गई है और बढ़ती जा रही है. अकसर ज़मींदारों ने यह देख कर कि ज़मींदारियां जा रही हैं हज़ारों नहीं लाखों बेबस किसानों को किसी तरह बे दख़्ल करा कर अपनी 'सीर' को बढ़ाया है. नये क़ानून से एक एक गांव के अन्दर मुक़द्दमे बाज़ी, वकील बाज़ी, गुन्डागर्दी और जातों और बिरादरियों के नाम पर दल बन्दी इन सब बुराइयों को बढ़ने फूलने और फलने का बेहद मौक़ा मिल गया है और यह सब बुराइयां बढ़ी हैं. जवाहरलाल जी की यह बात भी केवल एक कहने की बात है कि—"ज़मीन सुधार केवल जादू की लकड़ी फेरने से नहीं हो सकता. इसके लिए सख़्त मेहनत, लगातार कोशिशों और समय की ज़रूरत है. मुझे अफ़सोस है कि आज हमारे गांव में ग़रीबी इतनी ज़ोरों के साथ फैली हुई है." जवाहरलाल जी के भेजे हुए लोग चीन से लौट चुके हैं. इसी मज़मून पर उनमें से कुछ के लेख भी अख़बारों में निकल रहे हैं. चीन ने दो साल के अन्दर लगभग पैंतीस करोड़ खेती पेशा लोगों को अपने टुकड़े का मालिक बना दिया. और इस सुधार के ज़रिये उनकी और देश की ख़ुशहाली को चौगुना कर दिया. कश्मीर ने चन्द महीने के अन्दर अपने यहां के लाखों बे-ज़मीन खेती पेशा लोगों को अपनी अपनी ज़मीन का मालिक बना दिया. हम आज़ादी के पांच बरस बीत जाने के बाद अपने गांवों की ग़रीबी पर रो रहे हैं, बाहर से नाज मंगा मंगा कर मुल्क को खिला रहे हैं और ढिंढोरे पिटवा कर और फुलझड़ियां छोड़ कर लोगों के पेट की आग को तेल चुपड़ कर छिपाने की कोशिश करते हैं.

हम फिर कहते हैं कि हमें जवाहरलाल जी या उनके साथियों या उन लोगों की जिनके हाथों में फ़िलहाल इस प्रान्त की क़िस्मत है नेकनियति में शक नहीं. लेकिन जब तक ज़मीन के छोटे टुकड़ों की अलग अलग काश्त से ग़ल्त डर और ट्रेक्टरों और बड़ी मशीनों के ज़रिये हज़ारों एकड़ की एक साथ काश्त पर ग़ल्त और बरबाद कुन विश्वास और बे-वक़्त का शौक़ हमारे दिलों से नहीं निकलेगा तब तक हम इस देश के ज़मीन के सवाल को हल नहीं कर सकते और न करोड़ों गांव वालों की ग़रीबी को दूर कर सकते हैं.

जवाहरलाल जी ने अपने भाशन में कोआपरेटिव फ़ारमिंग का भी राग अलापा है. कोआपरेटिव फ़ारमिंग

نئے زمیندار کے لاکھوں حاکم، افسر اور نوکر اس گروہ کے حق میں پرانے زمیندار کے کارندوں اور سپاہیوں سے بدتر ہیں بہتر نہیں۔ رہا تیسرا گروہ جو سب سے زیادہ غریب ہے اور جس کی گنتی ہر گاؤں میں سب سے زیادہ ہے اور کل پرانت میں شاید دو کروڑ سے کم نہیں نئے قانون کا اُس کی قسمت پر ذرا بھی اثر نہیں ہوا۔ وہ سب ویسے ہی نادار اور بےزمین ہیں جیسے پہلے تھے، سوائے اِس کے کہ پچھلے چار پانچ برس میں اِن ابھاگوں کی گنتی بڑھ گئی ہے اور بڑھتی جا رہی ہے۔ اکثر زمینداروں نے یہ دیکھ کر کہ زمینداریاں جا رہی ہیں ہزاروں نہیں لاکھوں بے بس کسانوں کو کسی طرح بے دخل کراکر اپنی 'سیر' کو بڑھایا ہے۔ نئے قانون سے ایک ایک گاؤں کے اندر مقدمے بازی، وکیل بازی، غنڈا گردی اور جاتوں اور برادریوں کے نام پر دل بندی اِن سب برائیوں کو بڑھنے پھولنے اور پھلنے کا بے حد موقع مل گیا ہے اور یہ سب برائیاں بڑھی ہیں۔ جواہر لال جی کی یہ بات بھی کیول ایک کہنے کی بات ہے کہ—"زمین سدھار کیول جادو کی لکڑی پھیرنے سے نہیں ہوسکتا۔ اِس کے لئے سخت محنت، لگاتار کوششوں اور سمے کی ضرورت ہے۔ مجھے افسوس ہے کہ آج ہمارے گاؤں میں غریبی اتنی زوروں کے ساتھ پھیلی ہوئی ہے۔" جواہر لال جی کے بھیجے ہوئے لوگ چین سے لوٹ چکے ہیں۔ اِسی مضمون پر اُن میں سے کچھ کے لیکھ بھی اخباروں میں نکل رہے ہیں۔ چین نے دو سال کے اندر لگ بھگ پینتیس کروڑ بےزمین کھیتی پیشہ لوگوں کو اپنے ٹکڑے کا مالک بنا دیا اور اِس سدھار کے ذریعے اُن کی اور دیش کی خوشحالی کو چوگنا کر دیا۔ کشمیر نے چند مہینے کے اندر اپنے یہاں کے لاکھوں بےزمین کھیتی پیشہ لوگوں کو اپنی اپنی زمین کا مالک بنا دیا۔ ہم آزادی کے پانچ برس بیت جانے کے بعد بھی اپنے گاؤں کی غریبی پر رو رہے ہیں، باہر سے ناج منگا منگا کر ملک کو کھلا رہے ہیں اور ڈھنڈورے پٹوا کر اور پھلجھڑیاں چھوڑ کر لوگوں کے پیٹ کی آگ کو تیل چپڑ کر چھپانے کی کوشش کرتے ہیں۔

ہم پھر کہتے ہیں کہ ہمیں جواہر لال جی یا اُن کے ساتھیوں کی یا اُن لوگوں کی جن کے ہاتھوں میں فی الحال اس پرانت کی قسمت ہے نیک نیتی میں شک نہیں۔ لیکن جب تک زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں کی الگ الگ کاشت سے غلط ڈر اور ٹریکٹروں اور بڑی مشینوں کے ذریعے ہزاروں ایکڑ کی ایک ساتھ کاشت پر غلط اور برباد کن وشواس اور بے وقت کا شوق ہمارے دلوں سے نہیں نکلے گا تب تک ہم اِس دیش کے زمین کے سوال کو حل نہیں کرسکتے اور نہ کروڑوں گاؤں والوں کی غریبی کو دور کرسکتے ہیں۔

جواہر لال جی نے اپنے بھاشن میں کوآپریٹو فارمنگ کا بھی راگ الاپا ہے۔ کوآپریٹو فارمنگ

स और असन्तोष में डूबे हुए हैं." लेकिन हमें फ़सोस है कि इस मामले में भी हमारी और जवाहरलाल की निगाह में फ़र्क़ है. ज़मींदार प्रथा का अंत होने का यद सिवाय थोड़े से ज़मींदारों के मुल्क भर में किसी भी अफ़सोस न होगा. वह एक ग़लत और बे-वक़्त की ज़ थी जिसका ख़ातमा ज़रूरी था. हम यह भी मानते हैं केवल इस हवा बंध ाने से कि ज़मींदारी का अन्त हो प्रान्त की और ख़ास कर गांव वालों की दिमाग़ी हालत फ़ायदा पहुंचा है. आम तौर से किसान पर ज़मींदार और का दबदबा, उसकी झूटी शान और ग़लत हरकतें एक बोझ जो गांव वालों के दिलों और दिमाग़ों को दबाये रखता था. एक दर्जे तक हमेशा के लिए हट गया. यहां तक जो ा अच्छा हुआ. लेकिन इसके बाद जवाहरलाल जी का कहना कि, "इस ज़मींदारी प्रथा के अन्त से किसानों हक़ मिल जायगा और ख़ुशहाली का एक नया दौर शुरू हो यगा" केवल एक सुन्दर लेकिन झूटा सपना है.

जवाहरलाल जी इसी प्रान्त के रहने वाले हैं. शायद उन्हें मालूम न हो कि पहली जुलाई को प्रान्त भर में बिरला कोई किसान ऐसा होगा जिसके चेहरे पर किसी तरह के ी, जोश या उम्मीद के आसार दिखाई दिये हों. हमने गांव के बहुत से लोगों से बात की. सब की एक ही वाज़ हमने बहत्तर बरस के एक किसान लीडर से जो गरेस के ख़ास और पुराने काम करने वाले हैं और जिन्हें ाहरलाल जी अच्छी तरह जानते और उनकी इज़्ज़त ते हैं नये क़ानून के बारे में आम गांव वालों की राय ी तो उन्होंने जवाब दिया—"ज़मींदार गालियां देते हैं र किसान सौ फ़ी सदी इस सारी चीज़ को तमाशा और ा समझते हैं, कोई ख़ुश नहीं, किसानों की मुसीबतें इससे द बढ़ गई हैं." हमने उनसे और तफ़सील से समझने कोशिश की जिसका ज़िकर हम फिर किसी जगह करेंगे. बिल्कुल सच है कि नये क़ानून से किसानों की मुसीबतें ी ही नहीं हैं "बेहद बढ़ गई हैं."

मुट्ठी भर भूमिधरों को छोड़ कर जो ख़ुद काफ़ी परेशान और ज़ियादातर ठोक पीट कर बैश राज बनाये गये हैं. न्त भर के खेती पेशा लोगों को हम तीन हिस्सों में बांट ते हैं. एक ज़मींदार, दूसरे वह किसान जो अपनी ज़मीन टुकड़े पर किसी तरह का मौरूसी या मिल्कियत या नीम ल्कियत का हक़ रखते थे, और तीसरे वह बिला ज़मीन मज़दूर जो या तो सिर्फ़ दूसरों की ज़मीन पर मज़दूरी ते थे या थोड़ी बहुत ज़मीन लगान या अधियाई पर रों से लेकर जोतते थे लेकिन जिनका उस ज़मीन में कोई गऊ हक़ नहीं था. इनमें पहला गिरोह ख़त्म हो गया. दूसरे ोह के लिए शख़्सी ज़मींदरों की जगह सरकार ज़मींदार गई और अब तक का तजुर्बा उन्हें बता रहा है कि इस

مصیبت اور اسنتوش میں ڈوبے ہوئے ہیں۔" لیکن ہمیں افسوس ہے کہ اِس معاملے میں بھی ہمارے اور جواہر لال جی کی نگاہ میں فرق ہے۔ زمینداری پرتھا کا انت ہونے کا شائد سوائے تھوڑے سے زمینداروں کے ملک بھر میں کسی کو بھی افسوس نہ ہوگا۔ وہ ایک غلط اور بے وقت کی چیز تھی جس کا خاتمہ ضروری تھا۔ ہم یہ بھی مانتے ہیں کہ کیول اس ہوا بندھ جانے سے کہ زمینداری کا انت ہوگیا پرانت کی اور خاص کر گاؤں والوں کی دماغی حالت کو فائدہ پہونچا ہے۔ عام طور پر زمیندار اور اُس کا دبدبہ، اُسکی جھوٹی شان اور غلط حرکتیں ایک بوجھ تھا جو گاؤں والوں کے دلوں اور دماغوں کو دبائے رکھتا تھا وہ ایک درجے تک ہمیشہ کے لئے ہٹ گیا۔ یہاں تک جو ہوا اچھا ہوا۔ لیکن اِس کے بعد جواہر لال جی کا یہ کہنا کہ "اِس زمینداری پرتھا کے انت سے کسانوں کو اُن کا حق مل جائیگا اور خوش حالی کا ایک نیا دور شروع ہو جائیگا" کیول ایک سندر لیکن جھوٹا سپنا ہے۔

جواہر لال جی اِسی پرانت کے رہنے والے ہیں۔ شائد اُنہیں یہ معلوم نہ ہو کہ پہلی جولائی کو پرانت بھر میں برلا ہی کوئی کسان ایسا ہوگا جس کے چہرے پر کسی طرح کی خوشی جوش یا اُمید کے آثار دکھائی دیئے ہوں۔ ہم نے خود گاؤں کے بہت سے لوگوں سے بات کی۔ سب کی ایک ہی آواز۔ ہم نے بہتّر برس کے ایک کسان لیڈر سے جو کانگریس کے خاص اور پرانے کام کرنے والے ہیں اور جنہیں جواہر لال جی اچھی طرح جانتے اور اُن کی عزت کرتے ہیں نئے قانون کے بارے میں عام گاؤں والوں کی رائے پوچھی تو اُنہوں نے جواب دیا—"زمیندار گالیاں دیتے ہیں اور کسان سو فیصدی اس ساری چیز کو تماشا اور ڈھونگ سمجھتے ہیں، کوئی خوش نہیں، کسانوں کی مصیبتیں اِس سے بے حد بڑھ گئی ہیں۔" ہم نے اُن سے اور تفصیل سے سمجھنے کی کوشش کی جسکا ذکر ہم پھر کسی اور جگہ کرینگے۔ یہ بالکل سچ ہے کہ نئے قانون سے کسانوں کی مصیبتیں بڑھی ہی نہیں ہیں "بے حد بڑھ گئی ہیں۔"

مٹھی بھر بھومی دھروں کو چھوڑ کر جو خود کافی پریشان ہیں اور زیادہ تر ٹھوک پیٹ کر ویدراج بنائے گئے ہیں پرانت بھر کے کھیتی پیشہ لوگوں کو ہم تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں۔ ایک زمیندار، دوسرے وہ کسان جو اپنی زمین کے ٹکڑے پر کسی طرح کا موروثی یا ملکیت یا نیم ملکیت کا حق رکھتے تھے اور تیسرے وہ بلا زمین کے مزدور جو یا تو صرف دوسروں کی زمین پر مزدوری کرتے تھے یا تھوڑی بہت زمین لگان یا ادھیائی پر دوسروں سے لیکر جوتتے تھے لیکن جن کا اُس زمین میں کوئی ٹکاؤ حق نہیں تھا۔ اِن میں پہلا گروہ ختم ہوگیا۔ دوسرے گروہ کے لئے شخصی زمینداروں کی جگہ سرکار زمیندار آ گئی اور اب تک کا تجربہ اُنہیں بتا رہا ہے کہ اِس

लोग हिन्दू पूंजीपति और मुसलमान पूंजीपति में फ़र्क़ करते हैं या जिनके दिली में किसी हिन्दू राजा के गद्दी से उतारे जाने और किसी मुसलमान नवाब के उतार जाने में दो तरह के भाव पैदा होते हैं वह इस बीसवीं सदी में न इस तरह के सवालों को समझ सकते हैं और न उनके हल करने में मदद दे सकते हैं. हम शेख़ अब्दुल्ला और उनके कुछ साथियों से अच्छी तरह परिचित हैं. कश्मीर के चारों तरफ़ की अन्तरक़ौमी हालत को निगाह में रखते हुए हमें इसमें ज़रा भी शक़ नहीं कि इस मुल्क का भला चाहने वाला, फ़िरक़ा परस्ती के ज़हर से पाक, भारत और भारतवासियों का दोस्त और अपने चारों तरफ़ के पड़ोसियों के साथ अमन से रहने का ख्वाहिश मन्द शेख़ अब्दुल्ला से बढ़ कर नहीं मिल सकता. हम अगर साम्प्रदायिकता और पार्टीबन्दी की ऐनक को अपने आंखों से उतार सकें और दुनियां की अन्तर क़ौमी हालत को थोड़ा बहुत भी समझ सकें तो शेख़ अब्दुल्ला हमें देश और विदेश के करोड़ों आदमियों में एक सच्चा और काम का इन्सान दिखाई देगा. इतिहास की बहुत सी बातें समय बीत जाने के बाद ही समझ में आती हैं. इसमें शक नहीं कि हिन्दू महासभा जन-संघ या किसी भी पार्टी की तरफ़ से जितनी भी आवाज़ें कश्मीर के मामले में भारत सरकार की नीति या शेख़ अब्दुल्ला के ख़िलाफ़ उठाई जाती हैं उनसे इस देश की अन्तर क़ौमी उलझनें बढ़ने के साथ साथ एक तरफ़ तो देशी और विदेशी स्वार्थी पूंजीपत्तियों रईसों और ज़मीदारों को ग़रीब जनता के ख़िलाफ़ बल मिलता है और दूसरी तरफ़ कश्मीर निवासियों के दिल हम से और फटते हैं जिस से भारत और कश्मीर के मेल की जड़ें कमज़ोर होती हैं. ऐसे नाज़ुक मामलों में हमें बहुत संभल कर क़दम उठाना चाहिये. जनता को राज काजी पार्टियों और उनके लीडरों की आवाज़ पर बहक नहीं जाना चाहिये और हम सब को अपने दिल फ़िरक़ापरस्ती और दलबन्दी के ज़हर से पाक रखने चाहिंये. नहीं तो हमारी हरकतों का नतीजा ठीक उसका उल्टा होता है जो हम दिल से चाहते हैं.

यू. पी. ज़मींदारी अन्त.

अपने उसी भाशन में जवाहरलाल जी ने यू. पी. के उस ज़मींदारी अन्त क़ानून की भी काफ़ी सराहना की जिसका इसी पहली जुलाई को इस प्रान्त भर में ख़ूब ढिंडोरा पीटा गया है. हम जवाहरलाल जी के साथ इस बात में सहमत हैं कि "ज़मींदारी प्रथा पुराने ज़माने की एक ऐसी यादगार है जिसे हमें सारे देश के अन्दर से ख़तम करना होगा." हम उनकी इस राय से भी इत्तफ़ाक़ करते हैं कि "ज़मीन सुधार का सवाल देश के सामने सबसे बड़ा सवाल है और सरकार का यह सबसे पहला फ़र्ज़ है कि इन किसानों की हालत को बेहतर करे जो कई सदी से ज़बरदस्त ग़रीबी,

لوگ ہندو پونجی پتی اور مسلمان پونجی پتی میں فرق کرتے ہیں یا جن کے دلوں میں کسی ہندو راجا کے گدی سے اُتارے جانے اور کسی مسلمان نواب کے اُتارے جانے میں دو طرح کے بھاؤ پیدا ہوتے ہیں وہ اس بیسویں صدی میں نہ اس طرح کے سوالوں کو ٹھیک سمجھ سکتے ہیں اور نہ اُن کے حل کرنے میں مدد دے سکتے ہیں۔ ہم شیخ عبداللہ اور اُن کے کچھ ساتھیوں سے اچھی طرح پریچت ہیں۔ کشمیر کے چاروں طرف کی انترقومی حالت کو نگاہ میں رکھتے ہوئے ہمیں اِس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اُس ملک کی جنتا کا بھلا چاہنے والا، فرقہ‌پرستی کے زہر سے پاک، بھارت اور بھارت واسیوں کا دوست اور اپنے چاروں طرف کے پڑوسیوں کے ساتھ امن سے رہنے کا خواہشمند شیخ عبداللہ سے بڑھ کر نہیں مل سکتا۔ ہم سامپردائکتا اور پارٹی بندی کی عینک کو اپنی آنکھوں سے اُتار سکیں اور دنیا کی انترقومی حالت کو تھوڑا بہت بھی سمجھ سکیں تو شیخ عبداللہ ہمیں دیش اور بدیش کے کروڑوں آدمیوں میں ایک سچا اور کام کا اِنسان دکھائی دیگا۔ اتہاس کی بہت سی باتیں سمے بیت جانے کے بعد ہی سمجھ میں آتی ہیں۔ اِس میں بھی شک نہیں کہ ہندو مہاسبھا' جن سنگھ یا کسی بھی پارٹی کی طرف سے جتنی آوازیں کشمیر کے معاملے میں بھارت سرکار کی نیتی یا شیخ عبداللہ کے خلاف اُٹھائی جاتی ہیں اُن سے اس دیش کی انترقومی اُلجھن بڑھنے کے ساتھ ساتھ ایک طرف تو دیشی اور بدیشی سوارتھی پونجی پتیوں' رئیسوں اور زمینداروں کو غریب جنتا کے خلاف بل ملتا ہے اور دوسری طرف کشمیر نواسیوں کے دل ہم سے اور پھٹتے ہیں جس سے بھارت اور کشمیر کے میل کی جڑیں کمزور ہوتی ہیں۔ ایسے نازک معاملوں میں ہمیں بہت سنبھل کر قدم اُٹھانے چاہئیں۔ جنتا کو راج کاجی پارٹیوں اور اُن کے لیڈروں کی آواز پر بہک نہیں جانا چاہئے اور ہم سب کو اپنے دل فرقہ‌پرستی اور دل بندی کے زہر سے پاک رکھنے چاہئیں۔ نہیں تو ہماری حرکتوں کا نتیجہ ٹھیک اُسکا اُلٹا ہوتا ہے جو ہم دل سے چاہتے ہیں۔

یو۔ پی۔ زمینداری انت۔

اپنے اُسی بھاشن میں جواہر لال جی نے یو۔ پی کے اُس زمینداری انت قانون کی بھی کافی سراہنا کی جس کا اِسی پہلی جولائی کو اس پرانت بھر میں خوب ڈھنڈورا پیٹا گیا ہے۔ ہم جواہر لال جی کے ساتھ اس بات میں سہمت ہیں کہ "زمینداری پرتھا پرانے زمانے کی ایک ایسی یادگار ہے جسے ہمیں اپنے سارے دیش کے اندر سے ختم کرنا ہوگا۔" ہم اُن کی اس رائے سے بھی اتفاق کرتے ہیں کہ "زمین سدھار کا سوال دیش کے سامنے سب سے بڑا سوال ہے اور سرکار کا یہ سب سے پہلا فرض ہے کہ اِن کسانوں کی حالت کو بہتر کرے جو کئی صدی سے زبردست غریبی

पर दुनिया को दे कर उन पर गोलियां बरसाना भी इतनी और ओछी हरकत है कि उस पर हमारी सरकार की वाज़ साफ़ साफ़ सुनाई न देना मुल्क के मान को नहीं ाता. रही यालू नदी के कारखानों की बमबारी उसे तो लैंड और खुद अमरीका के बहुत से लोगों ने भी बुरा है. इंगलैंड और हिन्दुस्तान दोनों के इतिहास में हमें तमाशा खूब देखने को मिलता है कि जो आदमी एक केम के किसी काम को सख्त बुरा कहता है जब वह री जगह पर आजाता है तो खुद वही करता है.

कश्मीर का सवाल.

कश्मीर की चर्चा करते हुए जवाहर लाल जी ने कहा —"कश्मीर का सवाल अब एक मुक़ामी सवाल नहीं है. अब दुनिया भर का सवाल है. अगर हमने ज़ोर-ज़बर्दस्ती दबाव या डर दिखा कर इस सवाल को हल करने की ा सी भी कोशिश की, तो हम गहरी अन्तरक़ौमी उलझनों फँस जायेंगे. मुझे कश्मीर से ख़ास दिलचस्पी है. कश्मीर बाप दादा का देश है. कश्मीर की आज़ादी की तहरीक बीस बरस से मैंने पूरी दिलचस्पी ली है. स्टेट पीपुल्स फ़रेन्स के सदर की हैसियत से मेरी शेख़ अब्दुल्ला और के साथियों से जानकारी हुई. उन सबने आज़ादी की ाई में खूब हिस्सा लिया सन 1945 में जब मैंने कश्मीर ना चाहा तो महाराजा की फ़ौज ने मुझे रोक दिया. मैं नता हूँ कि अगर कश्मीर हिन्दुस्तान के साथ रह सकता तो प्रेम और भाई चारे ही से रह सकता है. इसके लिए वह हवा पैदा करनी चाहिए जिससे कश्मीर की जनता समझे कि उसे किसी दूसरे देश के साथ मिलने में ना लाभ नहीं है जितना भारत के साथ मिलने में. लेकिन मू प्रजा परिशद के साम्प्रदायिक कामों से हमारे इस बन्ध को बहुत नुक़सान पहुँच रहा है और हमारे ख़िलाफ़ केस्तान के प्रोपेगेन्डा को मदद मिल रही है. जम्मू प्रजा शद की सारी कार्रवाइयां पाकिस्तान के अख़बारों में ो बड़ी सुर्ख़ियां दे कर तफ़सील के साथ छापी जाती हैं. तरह हिन्दुस्तान के अन्दर जन संघ और हिन्दू महासभा तरफ़ से जो बातें कश्मीर के बारे में कही जा रही हैं, से कश्मीर के लोगों को यह शक होने लगा है कि दुस्तान के साथ मिलने से उन्हें लाभ होगा या हानि. इन कतों से कश्मीर और हिन्दुस्तान दोनों को नुक़सान च रहा है. आख़ीर में कश्मीर के लोगों का जो भी खुद ना फ़ैसला होगा चाहे वह हमारे हक़ में हो या ख़िलाफ़ हमें उसे ख़ुशी से मानना चाहिए और हम उसे मानेंगे."

कश्मीर का सवाल भी इस वक़्त हमारे देश के नाज़ुक नाज़ुक सवालों में से है. जवाहरलाल जी की राय से हम मामले में पूरी तरह से सहमत हैं. हम मानते हैं कि जो

ھیر دنیا کو دے کر ان پر گولیاں برسانا بھی اتنی گندی اور اوچھی حرکت ہے کہ ہماری سرکار کی آواز کا صاف صاف سنائی نہ دینا ملک کے مان کو نہیں بڑھاتا ۔ رہی یالو ندی کے کارخانوں کی بمباری اسے تو انگلینڈ اور خود امریکہ کے بہت سے لوگوں نے بھی برا کہا ہے ۔ انگلینڈ اور ہندستان دونوں کے اتہاس میں ہمیں یہ تماشہ خوب دیکھنے کو ملتا ہے کہ جو آدمی ایک حاکم کے کسی کام کو سخت برا کہتا ہے جب وہ اسی جگہ پر آ جاتا ہے تو خود وہی کرتا ہے ۔

کشمیر کا سوال ۔

کشمیر کی چرچا کرتے ہوئے جواہر لال جی نے کہا کہ— " کشمیر کا سوال اب صرف ایک مقامی سوال نہیں ہے ۔ وہ اب دنیا بھر کا سوال ہے ۔ اگر ہم نے زور زبردستی سے' دباؤ سے یا ڈر دکھا کر اس سوال کو حل کرنے کی ذرا سی بھی کوشش کی تو ہم گہری انترقومی الجھنوں میں پھنس جائینگے ۔ مجھے کشمیر سے خاص دلچسپی ہے ۔ کشمیر میرے باپ دادا کا دیش ہے ۔ کشمیر کی آزادی کی تحریک میں بیس برس سے میں نے پوری دلچسپی لی ہے ۔ اسٹیٹ پیپلس کانفرنس کے صدر کی حیثیت سے میری شیخ عبداللہ اور ان کے ساتھیوں سے جانکاری ہوئی ۔ ان سب نے آزادی کی لڑائی میں خوب حصہ لیا ۔ سن 1945 میں جب میں نے کشمیر جانا چاہا تو مہاراجا کی فوج نے مجھے روک دیا ۔ میں جانتا ہوں کہ اگر کشمیر ہندستان کے ساتھ رہ سکتا ہے تو پریم اور بھائی چارے سے ہی رہ سکتا ہے ۔ اس کے لئے ہمیں وہ ہوا پیدا کرنی چاہئے جس سے کشمیر کی جنتا یہ سمجھے کہ اسے کسی دوسرے دیش کے ساتھ ملنے میں اتنا لابھ نہیں ہے جتنا بھارت کے ساتھ ملنے میں ۔ لیکن جمو پرجا پریشد کے سامپردائک کاموں سے ہمارے اس سمبندھ کو بہت نقصان پہونچ رہا ہے اور ہمارے خلاف پاکستان کے پروپیگنڈا کو مدد مل رہی ہے ۔ جمو پرجا پریشد کی ساری کاروائیاں پاکستان کے اخباروں میں بڑی بڑی سرخیاں دے کر تفصیل کے ساتھ چھاپی جاتی ہیں ۔ اسی طرح ہندستان کے اندر جن سنگھ اور ہندو مہا سبھا کی طرف سے جو جو باتیں کشمیر کے بارے میں کہی جا رہی ہیں' ان سے کشمیر کے لوگوں کو یہ شک ہونے لگا ہے کہ ہندستان کے ساتھ ملنے سے انہیں لابھ ہوگا یا ہانی ۔ ان حرکتوں سے کشمیر اور ہندستان دونوں کو نقصان پہونچ رہا ہے ۔ آخیر میں کشمیر کے لوگوں کا جو بھی خود اپنا فیصلہ ہوگا چاہے وہ ہمارے حق میں ہو یا خلاف ہو ہمیں اسے خوشی سے ماننا چاہئے اور ہم اسے مانینگے ۔"

کشمیر کا سوال بھی اس وقت ہمارے دیش کے نازک سے نازک سوالوں میں سے ہے ۔ جواہرلال جی کی رائے سے اس معاملے میں ہم پوری طرح سہمت ہیں ۔ ہم مانتے ہیں کہ جو

तरह की चीज़ों की मांग, हिन्दुस्तान में लगी हुई इंगलैंड और अमरीका की अरबों की पूंजी, हमारी अरबों की पौन्ड्स जो अमरीका की त्योरी बदलने के साथ मटयामेट हो सकती हैं, और आख़ीर में हमारा कामनवेल्थ से रिश्ता और भारत की ज़मीन पर से अंगरेज़ी फ़ौज के लिये गोरखों की भरती कर के ले जाने की इजाज़त, यह सब और इसी तरह की चीज़ें किसी भी नाज़ुक समय में हमारी सरकार को कहां तक ग़ैर जानिबदार रहने देंगी. हमें हिन्द सरकार की नेकनियती में ज़रा सा भी शक नहीं. हम सिर्फ़ यह कह रहे हैं कि जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं वह वहां नहीं जाता जहां हम जाना चाहते हैं. अभी तो हम अपनी ज़िन्दगी की बहुत सी ज़रूरी चीज़ों तक के लिये अमरीका और इंगलैंड के दस्तनगर बने हुए हैं. यह राह ग़ैर जानिबदारी की राह नहीं है. ग़ैर जानिबदारी की राह थी और अब भी है करोड़ों जनता की सोई हुई ताक़त को जगाना, उस पर भरोसा करना और उससे काम लेना, दान या क़र्ज़ा किसी रूप में भी बाहर से एक पैसा लेने का हराम समझना और इन तरीक़ों से मुल्क को अपने पैरों पर खड़ा करना जो गांधी जी हमें इतनी तफ़सील के साथ बता गये हैं. गांधी जी की तालीम को बिना जाने उनके बताए हुए तरीक़ों से मिलते जुलते तरीक़ों पर चल कर ही माओ और उनके साथियों ने चीन के अन्दर अमरीकी ब्लाकेड (तिजारती बाइकाट) को निकम्मा कर दिया और चन्द साल के अन्दर उस मुल्क को अपने पैरों पर खड़ा करके धन धान्य से लहलहा दिया. पर हमारी सरकार को गांधी जी की उस तरह की बातों में विश्वास कहां! रहा चीन सो हमारी सरकार तो अब भी यह समझती है कि उसके साइन्सदां और इंजीनियर चीन के साइंसदानों और इंजीनियरों से ज़ियादा होशियार हैं! हम मानते हैं हमारे शब्दों में ताना आ गया पर हम यह शब्द बड़े दर्द भरे दिल और दुख के साथ लिख रहे हैं. भारत सरकार में हमारे पुराने कई साथी हैं जिन से हमें सच्चा प्रेम है. लेकिन काश कि हमारे रुख़ दूर पच्छिम की तरफ़ न हो कर पास पूरब और उत्तर की तरफ़ होते! काश कि हमें अपने लोगों, अपनी चीज़ों और अपने उसूलों पर भरोसा होता!

इस सब के अलावा भारत के प्रधान मंत्री की ज़िम्मेदार पोज़ीशन को समझते हुए भी हम कोरिया के ऊपर बार बार बीमारी बमों के फेंके जाने जैसी मुजरिमाना हरकत के ऊपर भारत सरकार की चुप्पी को न अपनी सरकार के लिए शान की चीज़ समझते हैं और न इस मुल्क के लिए. कोरिया की लड़ाई के क़ैदियों को पहले यह कह कर भेजने से इनकार करना कि वह अपने अमरीकी जेलरों से इतने ख़ुश हैं कि अपने घर वापिस जाना नहीं चाहते और फिर क़ैद की हालत में ही उनकी बग़ावत की

طرح کی چیزوں کی مانگ، ہندستان میں لگی ہوئی انگلینڈ اور امریکہ کی اربوں کی پونجی، ہماری اربوں کی پونڈ اسٹرلنگ جو امریکہ کی تیوری بدلنے کے ساتھ ساتھ ملیا میٹ ہو سکتی ہیں، اور آخیر میں ہمارا کامن ویلتھ سے رشتہ اور بھارت کی زمین پر سے انگریزی فوج کے لئے گورکھوں کے بھرتی کر کے لے جانے کی اجازت، یہ سب اور اسی طرح کی چیزیں کسی بھی نازک سمے میں ہماری سرکار کو کہاں تک غیر جانب دار رہنے دینگی۔ ہمیں ہند سرکار کی نیک نیتی میں ذرا سا بھی شک نہیں۔ ہم صرف یہ کہہ رہے ہیں کہ جس راستے پر ہم چل رہے ہیں وہ وہاں نہیں جاتا ہم جانا چاہتے ہیں۔ ابھی تو ہم اپنی زندگی کی بہت سی ضروری چیزوں تک کے لئے امریکہ اور انگلینڈ کے دست نگر بنے ہوئے ہیں۔ یہ راہ غیر جانب داری کی راہ نہیں ہے۔ غیر جانب داری کی راہ تھی اور اب بھی ہے۔ کروڑوں جنتا کی سوئی ہوئی طاقت کو جگانا اس پر بھروسہ کرنا اور اس سے کام لینا، دان یا قرضہ کسی روپ میں بھی باہر سے ایک پیسہ لینے کو حرام سمجھنا اور ان طریقوں سے ملک کو اپنے پیروں پر کھڑا کرنا جو گاندھی جی ہمیں اتنی تفصیل کے ساتھ بتا گئے ہیں۔ گاندھی جی کی تعلیم کو بنا جانے ان کے بتائے ہوئے طریقوں سے ملتے جلتے طریقوں پر چلکر ہی ماؤ اور ان کے ساتھیوں نے چین کے اندر امریکی بلاکیڈ (تجارتی بائیکاٹ) کو نکما کر دیا اور چند سال کے اندر اس ملک کو اپنے پیروں پر کھڑا کر کے دھن دھانیہ سے لہلہا دیا۔ پر ہماری سرکار کو گاندھی جی کی اس طرح کی باتوں میں وشواس کہاں! رہا چین سو ہماری سرکار تو اب بھی یہ سمجھتی ہے کہ اس کے سائنسداں اور انجینیر چین کے سائنسدانوں اور انجینیروں سے زیادہ ہوشیار ہیں! ہم مانتے ہیں کہ ہمارے شبدوں میں طعنہ آ گیا۔ پر ہم یہ شبد بڑے درد بھرے دل اور دکھ کے ساتھ لکھ رہے ہیں۔ بھارت سرکار میں ہمارے پرانے کئی ساتھی ہیں جن سے ہمیں سچا پریم ہے۔ لیکن کاش کہ ہمارے رخ دور پچھم کی طرف نہ ہو کر پاس پورب اور اتر کی طرف ہوتے۔ کاش کہ ہمیں اپنے لوگوں، اپنی چیزوں اور اپنے اصولوں پر بھروسہ ہوتا!

اس سب کے علاوہ بھارت کے پردھان منتری کی ذمہ دار پوزیشن کو سمجھتے ہوئے بھی ہم کوریا کے اوپر بار بار بیماری بموں کے پھینکے جانے جیسی مجرمانہ حرکت کے اوپر بھارت سرکار کی چپی کو نہ اپنی سرکار کے لئے شان کی چیز سمجھتے ہیں اور نہ اس ملک کے لئے۔ کوریا کی لڑائی کے قیدیوں کو پہلے یہ کہکر بھیجنے سے انکار کرنا کہ وہ اپنے امریکی جیلروں سے اتنے خوش ہیں کہ اپنے گھر واپس جانا نہیں چاہتے اور پھر قید کی حالت میں ہی ان کی بغاوت کی

सरकार से हुक्म पाए कर सकते थे. इसकी साफ़ साफ़ तरदीद भी अखबारों में आ चुकी है. कोरिया के ज़िम्मेवार अमरीकी फ़ौजी अफ़सर खुद यह कह चुके हैं कि उन्हें बमबारी से डेढ़ महीना पहले अपने वाशिंगटन के मालिकों से बमबारी का हुक्म मिल चुका था. फिर भी मुमकिन है जवाहर लाल जी जिस जगह से खड़े होकर बात कर रहे हैं वहां उन्हें यह कहना ही शोभा देता हो. यह भी मुमकिन है कि ऐसा कहने से उन्हें अपनी सुलह समझौते की कोशिशों में मदद मिले, फिर चाहे उन कोशिशों का कोई नतीजा निकल सके या न निकल सके और दोनों में से कोई पारटी दिल से उन कोशिशों की क़दर करे या न करे.

जहां तक हिन्दुस्तान का सवाल है जवाहर लाल जी ने कहा कि—"हम यह एलान कर चुके हैं कि अगर दुनिया की जंग शुरू हो गई तो भी हिन्दुस्तान इस से बाहर रहेगा. लेकिन अगर दुनिया भर में आग लगी तो कोई भी देश उसकी लपटों से बच नहीं सकता. फिर भी चूंकि हिन्दुस्तान का सब दलों के साथ अच्छा सम्बन्ध है इसलिये अपनी ख़ास स्थिति से फ़ायदा उठाते हुए हिन्दुस्तान सुलह और अमन की कोशिशों को बराबर जारी रखेगा. हमारी किसी दल में शामिल न होने और ग़ैर जानिबदारी की पालिसी ने हमें दूसरे देशों के साथ दोस्ती और अच्छे सम्बन्ध क़ायम करने में बहुत मदद दी है. जो देश आज एक दूसरे के दुश्मन हैं हिन्दुस्तान उन सब का दोस्त है. कभी कभी हमें ग़लत भी समझा गया. लेकिन आख़ीर में हमारी बात की क़द्र की गई. इस पालिसी की वजह से क़ौमों की बिरादरी में हिन्दुस्तान का रुतबा और बढ़ा है. आज हम देखते हैं कि हमारी बात का वज़न है."

हम जवाहर लाल जी के इन शब्दों पर दिल से 'आमीन'! कहते हैं. अगर जंग की आग फैल जावे तो जहां तक जंग में इधर या उधर हिस्सा न लेने का सवाल है वहां तक सारा हिन्दुस्तान जवाहर लाल जी के साथ है. हिन्दुस्तान की जनता या सरकार दोनों में से कोई भी किसी दल की तरफ़ हो कर जंग में हिस्सा लेना नहीं चाहता.

पर भारत सरकार के हाल के कुछ कामों ने बहुत से लोगों के दिलों में यह खटका पैदा कर दिया है कि दिल से चाहते हुए भी ऐन संकट के समय भारत सरकार इस ग़ैरजानिबदारी को कहां तक और कब तक निबाह सकेगी. जवाहर लाल जी के हज़ार तसल्ली देने पर भी हम यह नहीं समझ सकते कि अमरीका के साथ तरह तरह के माली, उद्योगी और व्योपारी समझौते, मुल्क में बड़े बड़े अमरीकी माहिरों और उनके स्टाफ़ की जगह जगह मौजूदगी, ट्रैक्टरों, फ़र्टीलाइज़रों और बड़ी बड़ी मशीनों की हमारी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती हुई भूक, अमरीका और इंगलैंड से इस

سرکار سے حکم پاکر کر سکتے تھے. اسکی صاف صاف تردید بھی اخباروں میں آ چکی ہے . کوریا کے ذمہ دار امریکی فوجی افسر خود کہہ چکے ہیں کہ انہیں بمباری سے ڈیڑھ مہینہ پہلے اپنے واشنگٹن کے مالکوں سے بمباری کا حکم مل چکا تھا. پھر بھی ممکن ہے جواہر لال جی جس جگہ سے کھڑے ہو کر بات کر رہے ہیں وہاں انہیں یہ کہنا ہی شوبھا دیتا ہو . یہ بھی ممکن ہے کہ ایسا کہنے سے انہیں اپنی صلح سمجھوتے کی کوششوں میں مدد ملے' پھر چاہے ان کوششوں کا کوئی نتیجہ نکل سکے یا نہ نکل سکے اور دونوں میں سے کوئی پارٹی دل سے ان کوششوں کی قدر کرے یا نہ کرے.

جہاں تک ہندستان کا سوال ہے جواہر لال جی نے کہا کہ—" ہم یہ اعلان کر چکے ہیں کہ اگر دنیا کی جنگ شروع ہوگئی تو بھی ہندستان اس سے باہر رہے گا . لیکن اگر دنیا بھر میں آگ لگی تو کوئی بھی دیش اس کی لپٹوں سے بچ نہیں سکتا. پھر بھی چونکہ ہندستان کا سب دلوں کے ساتھ اچھا سمبندھ ہے اس لئے اپنی خاص استھتی سے فائدہ اٹھاتے ہوئے ہندستان صلح اور امن کی کوششوں کو برابر جاری رکھیگا. ہماری کسی دل میں شامل نہ ہونے اور غیر جانب داری کی پالیسی نے ہمیں دوسرے دیشوں کے ساتھ دوستی اور اچھے سمبندھ قائم کرنے میں بہت مدد دی ہے . جو دیش آج ایک دوسرے کے دشمن ہیں ہندستان ان سب کا دوست ہے . کبھی کبھی ہمیں غلط بھی سمجھا گیا . لیکن آخیر میں ہماری بات کی قدر کی گئی . اس پالیسی کی وجہ سے قوموں کی برادری میں ہندستان کا رتبہ اور بڑھا ہے. آج ہم دیکھتے ہیں کہ ہماری بات کا وزن ہے ."

ہم جواہر لال جی کے ان شبدوں پر دل سے 'آمین !' کہتے ہیں . اگر جنگ کی آگ پھیل جاوے تو جہاں تک جنگ میں ادھر یا ادھر حصہ نہ لینے کا سوال ہے وہاں تک سارا ہندستان جواہر لال جی کے ساتھ ہے . ہندستان کی جنتا یا سرکار دونوں میں سے کوئی بھی کسی دل کی طرف ہو کر جنگ میں حصہ لینا نہیں چاہتا .

پر بھارت سرکار کے حال کے کچھ کاموں نے بہت سے لوگوں کے دلوں میں یہ کھٹکا پیدا کر دیا ہے کہ دل چاہتے ہوئے بھی عین سنکٹ کے سمے بھارت سرکار اس غیرجانب داری کو کہاں تک اور کب تک نباہ سکیگی. جواہرلال جی کے ہزار تسلی دینے پر بھی ہم یہ نہیں سمجھ سکتے کہ امریکہ کے ساتھ طرح طرح کے مالی' ادیوگی اور بیوپاری سمجھوتے' ملک میں بڑے بڑے امریکی ماہروں اور ان کے اسٹاف کی جگہ جگہ موجودگی' ٹریکٹروں' فرٹیلائزروں اور بڑی بڑی مشینوں کی ہماری دن دونی رات چوگنی بڑھتی ہوئی بھوک' امریکہ اور انگلینڈ سے اس

और बरबादी हुई है वह बयान से बाहर है. सारा कोरिया जमीन से मिला दिया गया है और फिर भी लड़ाई अभी जारी है. हिन्दुस्तान औरों के साथ इस बात की कोशिश कर रहा था कि कोरिया की लड़ाई बन्द हो और शान्ति के साथ कोरिया के सवाल का फ़ैसला हो जाय. पर ठीक इस समय जब सुलह की बातचीत कामयाब होती मालूम होती थी यालू नदी के कारखानों की बम बारियों की खबर पढ़कर मुझे बड़ा धक्का लगा. मैं हैरान रह गया. मुझे दुख हुआ इसलिए कि इन बम बारियों से सुलह की बात चीत को नुक़सान पहुंचा. अगर यूनो इसी तरह के क़दम उठाती रही तो मुमकिन है लड़ाई और दूर तक यानी चीन तक फैल जाय. ऐसी सूरत में यह भी डर है कि सीधे या ना साधे रूस भी लड़ाई में शामिल हो जाय और फिर दुनिया भर में एक आग लग जावे. इस तरह इन बमबारियों ने दुनिया के अमन को खतरे में डाल दिया है. तीसरी जंग का भूत अन्तर क़ौमी आसमान पर हमारी आंखों के सामने नाच रहा है."

हमने यह शब्द जवाहर लाल जी के भाशन की अंगरेज़ी रिपोर्ट से तरजुमा कर के दिये हैं. इस सारे मामले में दुनिया के हर अमन पसन्द और इन्साफ़ पसन्द आदमी को कोरिया और चीन से दिली हमदर्दी है, अमरीका और यूनो की ग़लतकारियों से तीसरी जंग का डर सबकी आंखों के सामने नाच रहा है. यह भी साफ़ है कि अगर यह आग फैली और इसने तीसरी जंग का रूप ले लिया तो इसकी पूरी ज़िम्मेवारी अमरीका और यूनो पर होगी.

यालो नदी की बमबारी से जवाहर लाल जी को धक्का लगने की एक वजह यह भी है जो जवाहर लाल जी के ही शब्दों से मालूम होती है और जिसकी चर्चा अख़बारों में भी आ चुकी है कि कोरिया में सुलह समझौते के लिये जवाहर लाल जी खुद कोशिश कर रहे थे, उन कोशिशों को धक्का कोरिया और चीन से नहीं पहुंचा, बल्कि अमरीका और यूनो से पहुंचा है.

इसी भाशन में जवाहर लाल जी ने यह भी कहा कि—
"इस तरह के बड़े बड़े फ़ैसले जैसे यालू नदी पर बम बरसाने का फ़ैसला जिनसे दुनिया का अमन खतरे में पड़ सकता है फ़ौजी कमान्डरों के हाथों में नहीं छोड़ने चाहिये, क्योंकि फ़ौजी कमान्डरों जैसा उनका पेशा है सबसे जियादा इसी फ़िक्र में रहते हैं कि जहां भी होसके किसी लड़ाई में विजय प्राप्त कर लें."

इसमें यह इशारा है कि शायद यालू नदी की बमबारी की ज़िम्मेवारी मुक़ामी फ़ौजी अफ़सरों पर है अमरीकी सरकार या यूनो पर नहीं. कोई आदमी जो इस तरह की चीज़ों को थोड़ा बहुत भी समझता है यह नहीं मान सकता कि इतना बड़ा काम मुक़ामी अमरीकी अफ़सर बिना अपनी

اور بربادی ہوئی ہے وہ بیان سے باہر ہے ۔ سارا کوریا زمین سے ملا دیا گیا ہے اور پھر بھی لڑائی ابھی جاری ہے ۔ ہندستان اوروں کے ساتھ اس بات کی کوشش کر رہا تھا کہ کوریا کی لڑائی بند ہو اور شانتی کے ساتھ کوریا کے سوال کا فیصلہ ہو جائے ۔ پر ٹھیک اس سمے جب صلح کی بات چیت کامیاب معلوم ہوتی تھی یالو ندی کے کارخانوں کی بمباریوں کی خبر پڑھکر مجھے بڑا دھکا لگا ۔ میں حیران رہ گیا ۔ مجھے دکھ ہوا اس لئے کہ ان بمباریوں سے صلح کی بات چیت کو نقصان پہونچا ۔ اگر یونو اسی طرح کے قدم اٹھاتی رہی تو ممکن ہے کہ لڑائی اور دور تک یعنی چین تک پھیل جائے ۔ ایسی صورت میں یہ بھی ڈر ہے کہ سیدھے یا نا سیدھے روس بھی لڑائی میں شامل ہوجائے اور پھر دنیا بھر میں ایک آگ لگ جاوے ۔ اس طرح ان بمباریوں نے دنیا کے امن کو خطرے میں ڈال دیا ہے تیسری جنگ کا بھوت انتر قومی آسمان پر ہماری آنکھوں کے سامنے ناچ رہا ہے ۔"

ہم نے یہ شبد جواہر لال جی کے بھاشن کی انگریزی رپورٹ سے ترجمہ کر کے دیئے ہیں ۔ اس سارے معاملے میں دنیا کے ہر امن پسند اور انصاف پسند آدمی کو کوریا اور چین سے دلی ہمدردی ہے ' امریکہ اور یونو کی غلط کاریوں سے تیسری جنگ کا ڈر سب کے آنکھوں کے سامنے ناچ رہا ہے ۔ یہ بھی صاف ہے کہ اگر یہ آگ پھیلی اور اس نے تیسری جنگ کا روپ لے لیا تو اسکی پوری ذمہ واری امریکہ اور یونو پر ہوگی ۔

یالو ندی کی بمباریوں سے جواہر لال جی کو دھکا لگنے کی ایک وجہ یہ بھی ہے جو جواہر لال جی کے ہی شبدوں سے معلوم ہوتی ہے اور جسکی چرچا اخباروں میں بھی آ چکی ہے کہ کوریا میں صلح سمجھوتے کے لئے جواہر لال جی خود کوششیں کر رہے تھے ' ان کوششوں کو دھکا کوریا اور چین سے نہیں پہونچا بلکہ کسی امریکہ اور یونو سے پہونچا ہے ۔

اسی بھاشن میں جواہر لال جی نے یہ بھی کہا کہ —" اس طرح کے بڑے بڑے فیصلے جیسے یالو ندی پر بم برسانے کا فیصلہ جن سے دنیا کا امن خطرے میں پڑ سکتا ہے فوجی کمانڈروں کے ہاتھوں میں نہیں چھوڑنے چاہئیں ' کیونکہ فوجی کمانڈر جیسا ان کا پیشہ ہے سب سے زیادہ اسی فکر میں رہتے ہیں کہ جہاں بھی ہوسکے کسی لڑائی میں وجے پراپت کر لیں ۔"

اس میں یہ اشارہ ہے کہ شاید یالو ندی کی بمباری کی ذمہ داری مقامی فوجی افسروں پر ہے امریکی سرکار یا یونو پر نہیں ۔ کوئی آدمی جو اسطرح کی چیزوں کو تھوڑا بہت بھی سمجھتا ہے یہ نہیں مان سکتا کہ اتنا بڑا کام مقامی امریکی افسر بنا اپنی

हमारी राय

ہماری رائے

जवाहर लाल जी का एक भाशन

लगभग सब मुल्कों की सरकारें आज जनता की सरकारें ने का दावा करती हैं. पचास या सौ बरस पहले की दुनिया सरकारों के मुक़ाबले में उनका यह दावा एक दर्जे तक भी है. राजकाज के मामले में जितनी जन जाग्रति नेया में इस समय है उतनी पहले शायद कभी नहीं थी. र भी लगभग हर देश के अन्दर वहां की हकूमत किसी न सी एक आदमी या एक छोटे से गिरोह के ही हाथ में है. न यह है कि जाग्रति के होते हुए भी अधिकतर देशों की ता में अभी संघटन और चरित्र की कमी है. इसी कमी कारन जनता अभी अपनी ज़बरदस्त शक्ति को नहीं चान पाई.

भारत की हकूमत की बाग इस समय प्रधान मंत्री पंडित ाहर लाल नेहरू के हाथों में है. बहुत सी बातों में हम के विचारों से सहमत हैं, कई बातों में हमारा उनसे गहरा भेद है. जवाहर लाल जी की देश भक्ति, उनके त्याग, की ज़बरदस्त लगन, उनकी बहादुरी और उनके दिल की चाई में किसी को शक नहीं हो सकता. इसमें भी शक कि पांच बरस के इस नाज़ुक अरसे में अपने विचारों र आदर्शों के अनुसार जिस सुन्दरता और सफलता के थ उन्होंने देश की नाव को खेया है और देश के मान को ाया है यह उन्हीं का हिस्सा था.

छै जुलाई को दिल्ली में जवाहरलाल जी ने देश के न्दर और बाहर की हालत पर एक आम जलसे में भाशन या. अपनी आदत के अनुसार उन्होंने आजकल के लगभग सवालों पर अपने विचार प्रकट किये. उनमें से कुछ स बातें यह हैं :—

कोरिया की लड़ाई और यालू नदी की बमबारी.

कोरिया की बरबादी की ओर हाल में अमरीका और ने यालू नदी के पन बिजली के कारख़ानों पर जो बम साये हैं उनकी चर्चा करते हुए जवाहर लाल जी ने कहा —"पिछले डेढ़ साल के अन्दर कोरिया में जो तबाही

جواھر لال جی کا ایک بھاشن

لگ بھگ سب ملکوں کی سرکاریں آج جنتا کی سرکاریں ہونے کا دعویٰ کرتی ھیں . پچاس یا سو برس پہلے کی دنیا کی سرکاروں کے مقابلے میں اُن کا یہ دعویٰ ایک درجے تک ٹھیک بھی ھے . راج کاج کے معاملے میں جتنی جن جاگرتی دنیا میں اِس سمے ھے اُتنی پہلے شاید کبھی نہیں تھی . پھر بھی لگ بھگ ھر دیش کے اندر وھاں کی حکومت کسی نہ کسی ایک آدمی یا ایک چھوٹے سے گروہ کے ھی ھاتھ میں ھے . کارن یہ ھے کہ جاگرتی کے ھوتے ھوئے بھی ادھک تر دیشوں کی جنتا میں ابھی سنگھٹن اور چرتر کی کمی ھے . اِسی کمی کے کارن جنتا ابھی اپنی زبردست شکتی کو نہیں پہچان پائی .

بھارت کی حکومت کی باگ اِس سمے پردھان منتری پنڈت جواھر لال نہرو کے ھاتھوں میں ھے . بہت سی باتوں میں ھم اُن کے وچاروں سے سہمت ھیں . کئی باتوں میں ھمارا اُن سے گہرا بھید ھے . جواھر لال جی کی دیش بھکتی ، اُن کے تیاگ ، اُن کی زبردست لگن ، اُن کی بہادری اور اُن کے دل کی سچائی میں کسی کو شک نہیں ھو سکتا . اِس میں بھی شک نہیں کہ پانچ برس کے اس نازک عرصہ میں اپنے وچاروں اور آدرشوں کے انوسار جس سندرتا اور سپھلتا کے ساتھ اُنھوں نے دیش کی ناؤ کو کھیا ھے اور دیش کے مان کو بڑھایا ھے یہ اُنھیں کا حصہ تھا .

چھ جولائی کو دلی میں جواھر لال جی نے دیش کے اندر اور باھر کی حالت پر ایک عام جلسہ میں بھاشن دیا . اپنی عادت کے انوسار اُنھوں آجکل کے لگ بھگ سب سوالوں پر اپنے وچار پرکٹ کئے . اُن میں سے کچھ خاص باتیں یہ ھیں :—

کوریا کی لڑائی اور یالو ندی کی بمباری .

کوریا کی بربادی کی اور حال میں امریکہ اور یو . این . او نے یالو ندی کے پن بجلی کے کارخانوں پر جو بم برسائے ھیں اُن کی چرچا کرتے ھوئے جواھر لال جی نے کہا کہ—"پچھلے ڈیڑھ سال کے اندر کوریا میں جو تباھی

4. हिन्द सरकार विदेसी नौआबादियों को शान्ति के तरीक़े से अपनाने का बन्दोबस्त करेगी—पंडित नेहरू का बयान.

5. 6000 लोगों ने डाक्टर मलान के नये काले क़ानून के ख़िलाफ़ इज़हार किया. हिन्दुस्तान की रेलों से पहले दरजे को ख़त्म कर दिया जायेगा. 'पख़्तूनिस्तान छोड़ो'—एक बड़े असरदार पख़्तून की पाकिस्तान को चुनौती.

6. मदरास में राशनिंग ख़त्म. अनाज की क़ीमत बढ़ जाने पर बम्बई में 30,000 काम करने वालों ने हड़ताल कर दी. बद्रीनाथ में गेहूँ 70 रुपये मन, चावल 60 रुपये और दूध 5 रुपये सेर.

7. जापान में सात लाख लोग अपने काम पर नहीं गये; कई लाख ने सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया. चीन गया हुआ हिन्दुस्तान का कलचरी मिशन वापस. कांगरेस सरकार कम्युनिस्टों को बढ़ावा दे रही है—आचार्य कृपालानी का बयान.

8. इंगलिस्तान के डिफ़ेन्स मिनिस्टर एलेक्ज़न्डर नई दिल्ली में पंडित जवाहरलाल से मिले.

9. डाक्टर मुसादिक़ ने हेग अदालत में अपना बयान दिया. हिन्दुस्तान और जापान ने एक सुलहनामे पर दस्तख़त किये.

10. कोजे जेल में ख़ून ख़राबी—32 क़ैदी कूच कर गये, 136 ज़ख़्मी हुए. रूस ने पच्छिमी ताक़तों के सुझाव को रद्द कर दिया. चीन में 'फिर बनाओ' आन्दोलन ज़ोरों पर है—श्रीमती पंडित का बयान.

11. जोरडन के बादशाह को गद्दी नहीं मिलेगी. पच्छिमी बंगाल की नई केबिनेट बनी—14 मिनिस्टर और 16 सहायक मिनिस्टर बने.

12. जापान को फिर से 'हथियार बन्द' करने की कोशिश ज़ोरों पर जारी है. यूनो साम्राजशाहों का गुट बनती जा रही है—पंडित नेहरू का बयान.

13. चीन को यूनो में जगह मिलनी चाहिये, मलाया आज़ाद होना चाहिये—अंगरेज़ी लेबर पार्टी का बयान. हिन्दुस्तान में कम्युनिस्ट ज़ोर पकड़ रहे हैं—अमरीकी राजदूत का अमरीका में बयान.

14. हिन्द अमरीकी आख़िरी अमली राज़ीनामे पर नई दिल्ली में दस्तख़त हुए. मुख़तलिफ़ पार्टी के 62 लोगों ने हैदराबाद एसेम्बली में 'वाक आउट' कर दिया. वर्ल्ड बैंक स्टील मिशन नई दिल्ली पहुंचा. अगर कंट्रोल फिर से जारी किया जायेगा तो मैं स्तीफ़ा दे दूँगा—राजाजी का एलान.

15. पाकिस्तान ने मिस्र के बादशाह फ़ारूक़ को सूडान का भी बादशाह मान लिया.

.4 ہند سرکار بدیسی نوآبادیوں کو شانتی کے طریقے سے اپنانے کا بندوبست کریگی—پنڈت نہرو کا بیان۔

.5 6000 لوگوں نے ڈاکٹر ملان کے نئے کالے قانون کے خلاف اظہار کیا ۔ ہندستانی ریلوں سے پہلے درجے کو ختم کر دیا جائیگا ۔ انگلستان سے ایک جانچ پڑتال کرنے والا مشن کوریا جائیگا۔ 'پختونستان چھوڑو'—ایک بڑے اثردار پختون کی پاکستان کو چنوتی ۔

.6 مدراس میں راشننگ ختم ۔ اناج کی قیمت بڑھ جانے پر بمبئی میں 30,000 کام کرنے والوں نے ہڑتال کر دی ۔ بدری ناتھ میں گیہوں 70 روپئے من' چاول 60 روپئے اور دودھ 5 روپئے سیر ۔

.7 جاپان میں سات لاکھ لوگ اپنے کاموں پر نہیں گئے؛ کئی لاکھ نے سرکار کے خلاف پردرشن کیا ۔ چین گیا ہوا ہندستان کا کلچرل مشن واپس ۔ کانگریس سرکار کمیونسٹوں کو بڑھاوا دے رہی ہے—آچاریہ کرپلانی کا بیان ۔

.8 انگلستان کے ڈفینس منسٹر الیکزینڈر نئی دلی میں پنڈت جواہر لال سے ملے ۔

.9 ڈاکٹر مصادق نے ہیگ عدالت میں اپنا بیان دیا ۔ ہندستان اور جاپان نے ایک صلحنامے پر دستخط کئے ۔

.10 کوجے جیل میں خون خرابی—32 قیدی مار گئے' 136 زخمی ہوئے ۔ روس نے پچھمی طاقتوں کے سجھاؤ کو رد کر دیا ۔ چین میں 'پھر بناؤ' آندولن زوروں پر ہے—شریمتی پنڈت کا بیان ۔

.11 جورڈن کے بادشاہ کو گدی نہیں ملیگی ۔ پچھمی بنگال کی نئی کیبنٹ بنی—14 منسٹر اور 16 سہائک منسٹر بنے ۔

.12 جاپان کو پھر سے 'ہتھیار بند' کرنے کی کوشش زوروں پر جا رہی ہے ۔ یونو سامراج شاہوں کا گٹ بنتی جا رہی ہے—پنڈت نہرو کا بیان ۔

.13 چین کو یونو میں جگہ ملنی چاہئے' ملایا آزاد ہونا چاہئے—انگریزی لیبر پارٹی کا بیان ۔ ہندستان میں کمیونسٹ زور پکڑ رہے ہیں—امریکی راجدوت کا امریکہ میں بیان ۔

.14 ہند امریکی آخری عملی راضی نامے پر نئی دلی میں دستخط ہوئے ۔ مختلف پارٹی کے 62 لوگوں نے حیدرآباد اسمبلی میں 'واک آؤٹ' کر دیا ۔ ورلڈ بینک اسٹیل مشن نئی دلی پہونچا ۔ اگر کنٹرول پھر سے جاری کیا جائیگا تو میں استعفیٰ دے دونگا—راجہ جی کا اعلان ۔

.15 پاکستان نے مصر کے بادشاہ فاروق کو سوڈان کا بھی بادشاہ مان لیا ۔

में शामिल हो जायेगा—जनरल रिजवे का एलान. तान की समाजवादी पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्लियामेन्ट में मिल कर काम करेंगी. कांगरेसी रकार की पालिसी पर शान्ति मय तरीक़ों से टीका ते हैं—बम्बई के कांगरेस-सद्र पाटिल का बयान.

. पच्छिम जरमनी में अंग-अमरीकी फ्रांसीसी ल खत्म—शान्ति राज़ीनामे पर दस्तखत. नई दिल्ली हिन्दू लड़की और एक मुसलमान लड़के की शादी के र दंगा और मार पीट.

. 'योरप्यिन बचाव' के लिए छै ताक़तों ने एक मे पर दस्तखत किये. चीन हिन्दुस्तान को एक लाख बल देगा. कम्युनिटी प्रोजेक्ट का का काम अक्तूबर से शुरू होगा—प्लानिंग मिनिस्टर नन्दा का एलान.

. अमरीका, इंगलैंड और फ्रान्स के विदेश मिनिस्ट्रों बैठक पैरिस में हुई. डाक्टर मुसाद्दिक़ हेग के ना.

. रेलवे के निचले दर्जों में ख़ास सहूलियतें दी —रेलवे मिनिस्टर शास्त्री का बयान. समाजवादी पार्टी सान मजदूर प्रजा पार्टी में समझौता हो गया.

. योरप कमान का चार्ज जनरल आयज़न होवर ने रेजवे को दिया. 25,000 कम्युनिस्टों ने टोकियो र के खिलाफ़ प्रदर्शन किया. चीनी पर से कन्ट्रोल प्सू के गांवों में अनाज की भारी कमी—बड़े वजीर न.

. कांगरेस का अगला इजलास हैदराबाद में होगा—वरकिंग कमेटी की दिल्ली में बैठक. हिन्द अमरीकी ' के मातहत पांच अमली राज़ी नामों पर नई दिल्ली त. पटामाटा (ज़िला-बैजवाड़ा) में डाक्टर कुमारप्पा त में देश के रचनात्मक कार्यकर्ताओं की एक स हुई.

दक्खिन कोरिया की सरकार ने यूनो को उसके मलों में दख़ल न देने के लिए आगाह किया. डाक . साढ़े छै लाख रुपये का ग़बन.

पच्छिमी जरमनी से कोई छिपी सुलह नहीं की गई रिका सेक्रेटरी आफ़ स्टेट एचेसन का बयान. श्री लाल मुंशी ने यू. पी. के नये गवर्नर होने की शपथ स्तान की विदेसी नीति में कोई बदलाव नहीं किया —पाकिस्तान के विदेस मिनिस्टर का बयान.

अगर हिन्दुस्तान कम्युनिस्ट बन गया तो एशिया का को हाथ धो बैठना पड़ेगा—हिन्द के अमरीकी अमरीका में एलान.

لڑائی میں شامل ہو جائیگا—جنرل رجوے کا اعلان ہندستان کی سماج وادی پارٹی اور کسان مزدور پرجا پارٹی مل کر کام کرینگی کانگریسی لوگ سرکار کی پالیسی پر شانتی مئے طریقو سے ٹیکہ کر سکتے ہیں . بمبئی کے کانگریس صدر پاٹل کا بیان .

26 پچھم جرمنی میں انگریزی امریکی فرانسیسی ردے عمل ختم—شانتی راضی نامے پر دستخط . نئی دلی میں ایک ہندو لڑکی اور ایک مسلمان لڑکے کی شادی کے موقعے پر دنگا اور مار پیٹ .

27. یوروپین بچاؤ کے لئے چھ طاقتوں نے ایک راضی نامے پر دستخط کئے . چین ہندستان کو ایک لاکھ ٹن چاول دے گا . کمیونٹی پروجکٹ کا کام اکتوبر مہینے سے شروع ہوگا—پلاننگ منسٹر نندا کا اعلان .

28. امریکہ' انگلینڈ اور فرانس کے ودیش منسٹروں کی ایک بیٹھک پیرس میں ہوئی. ڈاکٹر مصادق ہیگ کے لئے روانہ .

29. ریلوے کے نیچلے درجوں میں خاص سہولتیں دی جائیں گی—ریلوے منسٹر شاستری کا بیان . سماج وادی پارٹی اور کسان مزدور پرجا پارٹی میں سمجھوتہ ہو گیا .

30. یورپ کمان کا چارج آئزن ہور نے جنرل رجوے کو دیا. 25,000 کمیونسٹوں نے ٹوکیو میں سرکار کے خلاف پردرشن کیا . چینی پر سے کنٹرول ختم . پیپسو کے گاؤں میں اناج کی بھاری کمی—بڑے وزیر کا اعلان .

31. کانگریس کا اگلا اجلاس حیدرآباد میں ہوگا . کانگریس ورکنگ کمیٹی کی دلی میں بیٹھک . ہند امریکی 'سمجھوتے' کے ماتحت عملی راضی ناموں پر نئی دلی میں دستخط. پٹا ماٹا (ضلع بیجواڑا) میں ڈاکٹر کماریپا کی صدارت میں دیش کے رچناتمک کاریہ کرتاؤں کی ایک کانفرنس ہوئی .

جون .

1. دکھن کوریا کی سرکار نے یونو کو اسکے گھریلو معاملوں میں دخل نہ دینے کے لئے آگاہ کیا . ڈاکخانہ محکمے میں ساڑھے چھ لاکھ روپیہ کا غبن .

2. پچھمی جرمنی سے کوئی چھپی صلح نہیں کی گئی ہے—ایچے سن کا بیان . شری کنھیا لال منشی نے یو . پی . کے نئے گورنر ہونے کی شپتھ لی . پاکستان کی بدیسی نیتی میں کوئی بدلاو نہیں کیا جائیگا—پاکستان کے بدیس منسٹر کا بیان .

3. اگر ہندستان کمیونسٹ بن گیا تو ایشیا سے امریکہ کو ہاتھ دھو بیٹھنا پڑیگا—ہند کے امریکی راجدوت کا امریکہ میں اعلان .

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

मई

16. राजपति ने नई दिल्ली में नई पार्लियामेन्ट के सामने भाषन दिया. यू. पी. सरकार रिहन्द डाम बनाने में क़रीब 33 करोड़ रुप्या ख़र्च करेगी.

17. जापान को कोरिया के ख़िलाफ़ एक पड़ाव की तरह काम में लाया जायेगा—जापान और यूनो कमान्ड में समझौता. हिन्दुस्तान आई हुई अमरीकी रुई की दो लाख गाठें ख़राब पाई गईं. मौलाना आज़ाद ने मिस्र के मुफ़्ती के विचारों पर कि औरतें पार्लियामेन्ट वग़ैरा की मेम्बर नहीं बन सकतीं 'अचरज' ज़ाहिर किया.

18. सुन्दरबन के इलाक़े में अनाज की भारी कमी—डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी का एलान.

19. बीकानेर के क़रीब रेल दुर्घना—45 आदमी कूच कर गये.

20. यू. पी. में नई सरकार बनी. नौ रियासतों में अनाज की हालत ठीक करने की कोशिश जारी है—अनाज मिनिस्टर क़िदवाई का पार्लियामेन्ट में एलान.

21. यू. पी के गवर्नर ने एसेम्बली के सामने भाशन दिया. हिन्दुस्तान की समाजवादी पार्टी की कानफ़्रेन्स पंचमढ़ी में शुरू हुई. यू. पी. में 1000 के क़रीब ट्यूबवेल बनेंगे.

22. पार्लियामेन्ट में रेलवे बजट पेश—22 47 करोड़ की बचत. हिन्दुस्तान को साढ़े बारह करोड़ डालर की मदद अमरीका और देगा—अमरीकी राजदूत का बयान.

23. गोरखपुर गोली कान्ड की सरकारी जांच की कोई ज़रूरत नहीं है—होम मिनिस्टर सम्पूर्नानन्द का बयान.

24. हिन्दुस्तान की पालिसी दुनिया में शान्ति बनाये रखना है—मिस्टर बेविन का बयान. मध्य प्रदेश में कोयले की खानें मौजूद हैं—सर्वे करने वालों का एलान. सुन्दरबन में लोग जंगली फूल पत्ती पर गुज़र कर रहे हैं.

25. दोनों जरमनियों के मिलाने के लिए रूस ने नये सुझाव रखे. अगर यूनो के बम मंचूरिया में पड़े तो रूस

مئی۔

16. راج پتی نے نئی دلی میں پارلیامنٹ کے سامنے بھاشن دیا۔ یوپی سرکار رہند ڈام بنانے میں قریب 33 کروڑ روپیہ خرچ کرے گی۔

17. جاپان کو کوریا کے خلاف ایک پڑاؤ کی طرح کام میں لیا جائے گا—جاپان اور یونو کمانڈ میں سمجھوتا۔ ہندستان آئی ہوئی امریکی روئی کی دو لاکھ گانٹھیں خراب پائی گئیں۔ مولانا آزاد نے مصر کے مفتی کے وچاروں پر کہ عورتیں پارلیامنٹ وغیرہ کی ممبر نہیں بن سکتیں—'اچرج' ظاہر کیا۔

18. سندر بن کے علاقے میں اناج کی بھاری کمی—ڈاکٹر شیاما پرشاد مکرجی کا اعلان۔

19. بیکانیر کے قریب ریل درگھٹنا—45 آدمی کوچ کر گئے۔

20. یوپی میں نئی سرکار بنی نو ریاستوں میں اناج کی حالت ٹھیک کرنے کی کوشش جاری ہے—اناج منسٹر قدوائی کا پارلیامنٹ میں اعلان۔

21. یوپی کے گورنر نے اسمبلی کے سامنے بھاشن دیا۔ ہندستان کی سماج وادی پارٹی کی کانفرنس پچمڑھی میں شروع ہوئی۔ یوپی میں 1000 کے قریب ٹیوب ویل بنیں گے۔

22. پارلیامنٹ میں ریلوے بجٹ پیش—22 کروڑ اوپر کی بچت۔ ہندستان کو ساڑھے بارہ کروڑ ڈالر کی مدد امریکہ اور دے گا—امریکی راج دوت کا بیان۔

23. گورکھپور گولی کانڈ کی سرکاری جانچ کی کوئی ضرورت نہیں ہے—ہوم منسٹر سمپورنانند کا بیان۔

24. ہندستان کی پالیسی دنیا میں شانتی بنائے رکھنا ہے—مسٹر بیون کا بیان۔ مدھیہ پردیش میں کوئلے کی کانیں موجود ہیں—سروے کرنے والوں کا اعلان۔ سندر بن میں لوگ جنگلی پھول پتی پر گزر کر رہے ہیں۔

25. دونوں جرمنیوں کے ملانے کے لئے روس نے نئے سجھاؤ رکھے۔ اگر یونو کے بم منچوریا میں پڑے تو روس

लगाये और पहुंचे क़लम नवीसों और समाज सेवकों बेमिसाल ज़िन्दगी की लाजवाब झलक दी गई है. एक पढ़ना शुरू कीजिये तो बिना ख़त्म किये तबियत मानेगी नहीं. क्या ही अच्छा होता कि बनारसी दास जी एक के एक इस तरह की किताबें लिखकर संसार के लेखकों भक्तों, 'राष्ट्र निर्माताओं और जन सेवकों की झांकियां बना कर रखकर हिन्दी पढ़ने वालों पर हमेशा के लिए सान करते. इसके लिए यह ज़रूरी है कि इस किताब का प्रचार हो.

—सुरेश रामभाई

गीत और अंगारे

लिखने वाले—देवेन्द्र इस्सर; निकालने वाले—आज़ाद ताब घर, देहली; लिखावट—उरदू; सफ़ा 156; दाम रुपये.

'गीत और अंगारे' नौजवान कहानी कार देवेन्द्र इस्सर कहानियों का पहला संग्रह है. मुमताज़ हुसैन और सैयद त्शाम हुसैन जैसे उरदू साहित्य के धुरन्धर आलोचकों तारीफ़ और आजकल के महान कहानी कार कृशनचन्द्र सराहना किसी किताब की बहुत ही अच्छी आलोचना र उस किताब के लेखक को पाठकों की नज़र में ऊंचा ाने की मज़बूत सीढ़ी है. इस संग्रह की तीनों ने एक ..न होकर तारीफ़ की है.

'गीत और अंगारे' में देवेन्द्र की आठ कहानियां शामिल —ज़िन्दगी, ख़ला और मौत; पलाज़ुम के जरासीम; मुक्ति; ो तस्वीर; चांदनी रात का दर्द; इन्सान और इन्सान; हुस्न र आईने; गीत और अंगारे. इन में से हर कहानी का रूप ..ग अलग और सजावट अलग अलग है. फिर भी विषय . का एक है—ज़िन्दगी की चिंगारी का बढ़ना, दिन बदिन `श तर होते जाना, तूफ़ानों से टक्कर लेना, जीत की ख़ुशी झूम उठना और अंधियारे के परदे को फाड़ कर एक ा सूरज बनकर दुनिया के आसमान पर चमकना. संघर्ष कहानियां होने पर भी इनमें एक नर्माहट है, एक मलता है. स्त्री पुरुष की चालू वासना भरी दास्तान से सों दूर होते हुए भी इन कहानियों में एक रोमांस है एक ीनियत है जो धीरे धीरे दिल में मलजूम पात्रों के लिये ाह पैदा कर देती है. लेकिन यह असर देर तक नहीं रहता. गर देवेन्द्र यह बात भी अपनी कला में पैदा कर सकें तो `ता के लेखक बनने और ज़िन्दगी के संघर्ष में अपनी ़म से ताक़त पैदा करने में वह कामयाब हो सकेंगे.

—बेनीमाधव प्रसाद

ٹکڑے ٹکڑے اور بھلچھے ہوئے قلم نویسوں اور سماج سیوکوں کی بے مثال زندگی کی لا جواب جھلک دی گئی ہے. ایک بار پڑھنا شروع کیجئے تو بنا ختم کئے طبیعت مانے گی ہی نہیں. کیا ہی اچھا ہوتا کہ بنارسی داس جی ایک کے بعد ایک اِسطرح کی کتابیں لکھکر سنسار کے لیکھکوں' بھکتوں' راشٹر نرماتاؤں اور جن سیواؤں کی جھانکیاں بنا کر ہندی پڑھنے والوں پر ہمیشہ کے لئے احسان کرتے . اِس کے لئے یہ ضروری ہے کہ اِس کتاب کا پرچار ہو .

—سریش رام بھائی

گیت اور انگارے

لکھنے والے—دیویندر اسر؛ نکالنے والے—آزاد کتاب گھر' دہلی ؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحہ 156؛ دام دو روپیہ .

'گیت اور انگارے' نوجوان کہانی کار دیویندر اِسر کی کہانیوں کا پہلا سنگرہ ہے . ممتاز حسین اور سید احتشام حسین جیسے اردو ساہتیہ کے دھرندر آلوچکوں کی تعریف اور آجکل کے مہان کہانی کار کرشن چندر کی سراہنا کسی کتاب کی بہت ہی اچھی آلوچنا اور اُس کتاب کے لیکھک کو پاٹھکوں کی نظر میں اُونچا اُٹھانے کی مضبوط سیڑھی ہے . اِس سنگرہ کی تینوں نے ایک زبان ہوکر تعریف کی ہے .

'گیت اور انگارے' میں دیویندر کی آٹھ کہانیاں شامل ہیں—زندگی' خلا اور موت؛ پلازم کے جراثیم؛ مکتی؛ ننگی تصویر؛ چاندنی رات کا درد؛ انسان اور انسان؛ حسن اور آئینے؛ گیت اور انگارے . اِن میں سے ہر کہانی کا روپ الگ الگ اور سجاوٹ الگ الگ ہے. پھر بھی وشے سب کا ایک ہے—زندگی کی چنگاری کا بڑھنا' دن بدن روشن تر ہوتے جانا' طوفان سے ٹکر لینا' جیت کی خوشی میں جھوم اُٹھنا اور اندھیارے کے پردے کو پھاڑ کر ایک نیا سورج بن کر دنیا کے آسمان پر چمکنا . سنگھرش کی کہانیاں ہونے پر بھی اِن میں ایک نرماہٹ ہے' ایک کوملتا ہے' استری پرش کی چالو واسنا بھری داستان سے کوسوں دور ہوتے ہوئے بھی اِن کہانیوں میں ایک رومانس ہے' ایک رنگینیت ہے جو دھیرے دھیرے دل میں مظلوم پاتروں کے لئے جگہ پیدا کر دیتی ہے . لیکن یہ اثر دیر تک نہیں رہتا . اگر دیویندر یہ بات بھی اپنی کلا میں پیدا کر سکیں تو جنتا کے لیکھک بننے اور زندگی کے سنگھرش میں اپنی قلم سے طاقت پیدا کرنے میں وہ کامیاب ہوسکیں گے .

—بینی مادھو پرساد

इन सभी सेवकों-सेवाओं के काम पर तफ़सील के साथ और अच्छी तरह रोशनी डालते हुए एक या कई किताबों से रचनात्मक कार्यक्रम के काम को मदद पहुंचायें.

ان سبھی سیوکوں' سیواؤں کے کام پر تفصیل کے ساتھ اور اچھی طرح روشنی ڈالتے ہوئے ایک یا کئی کتابوں سے رچناتمک کاریہ کرم کے کام کو مدد پہنچائیں ۔

कपास

लेखक—सत्यन्; निकालने वाले—सर्वोदय साहित्य संघ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 55; दाम आठ आना.

खादी शास्त्री सत्यन् जी ने इस छोटी सी किताब में कपास, उसकी जातियां, उसके रेशों की बनावट, उसकी खेती, उसकी चुनाई वग़ैरा बातें पेश करके मानो कपास की क़लई ही खोल दी है. कपास के बारे में इतनी जानकारी हर पढ़े लिखे आदमियों को होना चाहिये क्योंकि बिना कपास की जानकारी के कताई का काम अच्छा नहीं होगा और बिना अच्छी कताई के हम अपना तन बदन अच्छी तरह नहीं ढक सकते. जैसा कि विनोबा जी ने इस किताब की प्रस्तावना में कहा है—

"हिन्दुस्तान की देहाती जनता का खेती एक फेफड़ा और कपड़े का काम दूसरा फेफड़ा है. इस दूसरे फेफड़े को तपेदिक़ का रोग लग चुका है. सिर्फ़ एक फेफड़े के आधार पर जीवन अच्छी तरह नहीं चल सकता. इसलिये ज़रूरी है कि दूसरे फेफड़े के रोग को हटाया जाय. गांधीजी ने उसके लिए कारगर तरीक़ा सुझाया—नई तालीम और कताई यज्ञ..."

और कताई यज्ञ तभी कामयाब होगा जब कपास से पूरी पूरी वाक़फ़ियत हो. हमें भरोसा है कि रचनात्मक तालीम में दिलचस्पी रखने वाली संस्थाओं और स्कूलों में यह किताब ख़ूब चलेगी.

کپاس

لیکھک ستین؛ نکالنے والے—سروودے ساہتیہ سنگھ، کاشی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 55؛ دام آٹھ آنہ ۔

کھادی شاستری ستین جی نے اس چھوٹی سی کتاب میں کپاس، اسکی جاتیاں، اس کے ریشوں کی بناوٹ، اسکی چنائی وغیرہ باتیں پیش کر کے مانو کپاس کی قلعی ہی کھول دی ہے ۔ کپاس کے بارے میں اتنی جانکاری ہر پڑھے لکھے آدمیوں کو ہونا چاہئے بنا کپاس کی جانکاری کے کتائی کا کام اچھا نہیں ہوگا اور بنا اچھی کتائی کے ہم اپنا تن بدن اچھی طرح نہیں ڈھک سکتے جیسا کہ ونوبا جی نے اس کتاب کی پرستاونا میں کہا ہے—

" ہندستان کی دیہاتی جنتا کا کھیتی ایک پھیپھڑا اور کپڑے کا کام دوسرا پھیپھڑا ہے ۔ اس دوسرے پھیپھڑے تپدق کا روگ لگ چکا ہے ۔ صرف ایک پھیپھڑے کے آدھار پر جیون اچھی طرح نہیں چل سکتا اس لئے ضروری ہے کہ دوسرے پھیپھڑے کے روگ کو ہٹایا جائے ۔ گاندھی جی نے اس کے لئے کارگر طریقہ سجھایا—نئی تعلیم اور کتائی یگیہ........."

اور کتائی یگیہ بھی کامیاب ہوگا جب کپاس سے پوری پوری واقفیت ہو ۔ ہمیں بھروسہ ہے کہ رچناتمک تعلیم میں دلچسپی رکھنے والی سنستھاؤں اور اسکولوں میں یہ کتاب خوب چلے گی ۔

हमारे आराध्य

लेखक—बनारसीदास चतुर्वेदी; निकालने वाले-भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 260; दाम तीन रुपये; पहली बार 1952.

कहा जाता है कि मैडम क्यूरी ने कई मन धातु में से छान बीन करके कुछ रत्ती रेडियम निकाला था और यह विज्ञान का इतना बड़ा कारनामा समझा गया कि उन्हें नोबिल इनाम दिया गया. ठीक इसी तरह के कारनामे हिन्दी भाषा और साहित्य की दुनिया में पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी किया करते हैं. विशाल भारत के ज़रिये से हिन्दुस्तान के काफ़ी घरों और हिन्दुस्तानियों के काफ़ी दिलों में उन्होंने अपनी मुस्तक़िल जगह बना ली है. फिर कमाल यह है कि यह जितने बूढ़े होते जाते हैं इनकी क़लम उतनी ही जवान होती जाती है.

'हमारे आराध्य' नाम की किताब हिन्दी में अपने ढंग की अनोखी किताब है जिसमें हिन्दुस्तान के बाहर के सोलह

ہمارے آرادھیہ

لیکھک—بنارسی داس چترویدی نکالنے والے—بھارتیہ گیان پیٹھ کاشی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 260؛ دام تین روپئے؛ پہلی بار 1952 ۔

کہا جاتا ہے کہ میڈم کیوری نے کئی من دھاتوں میں سے چھان بین کر کے کچھ رتی ریڈیم نکالا تھا اور یہ وگیان کا اتنا بڑا کارنامہ سمجھا گیا کہ انہیں نوبل انعام دیا گیا ٹھیک اسی طرح کے کارنامے ہندی بھاشا اور ساہتیہ کی دنیا میں پنڈت بنارسی داس چترویدی کیا کرتے ہیں ۔ وشال بھارت کے ذریعے سے ہندستان کے کافی گھروں اور دلوں میں انہوں نے اپنی مستقل جگہ بنالی ہے ۔ پھر کمال یہ ہے کہ جتنے بوڑھے ہوتے جاتے ہیں ان کی قلم اتنی ہی جوان ہوتی جاتی ہے ۔

' ہمارے آرادھیہ ' نام کی کتاب ہندی میں اپنے ڈھنگ کی انوکھی کتاب ہے جسمیں ہندستان کے باہر کے سولہ

न्दुस्तान के इतिहास का एक एक सफा या जिसकी सच्ची स्वीर पेश करना देश की सच्ची सेवा करना है.

उन इन्क़लाबी दिनों में महात्मा जी ने पूरब में आसाम से लेकर पच्छिम में गुजरात तक का दौरा किया था. सात महीने तक अगस्त 1921 से मार्च 1922 तक भाई कृश्न दास जी महात्मा जी के साथ रहे थे. यह किताब जो कृश्न दास भाई की डायरी का निचोड़ है सन 1929 में पहली बार छपी थी और जिसके बारे में खुद महात्मा जी ने कहा था कि अगर इन सात महीनों का हाल कहीं मिलता है तो इन सफ़ों में.

भाई कृश्न दास जी की यह किताब बहुत ही दिलचस्प और मनमोहक है. इसे हम उपन्यास, इतिहास, राजनीति और जीवनी से मिलकर बना एक बहुत ही मीठा लड्डू कह सकते हैं जिसको खाते खाते तबियत अघाती ही नहीं. मशहूर हिन्दुस्तान भक्त और ग्रामोद्योगी अर्थशास्त्र रिचर्ड ग्रेग को इसका पसन्द आना क़ुदरती बात है. इसलिये उन्होंने कृश्न दास भाई की दो किताबों का सत निकाल कर एक किताब में खींच कर दुनिया के आगे रख दिया है. उनकी इस कामयाबी पर रिचर्ड भाई को हम मुबारकबाद देते हैं और उम्मीद करते हैं कि उनकी इस किताब से अंगरेज़ी भाषा जानने वाले भाई बहन अपना मन बहलाने के साथ साथ पूरा फ़ायदा उठायेंगे.

गांधी जी के प्रमुख अनुयायी

लेखक—सत्यन; निकालने वाले—सर्वोदय साहित्य संघ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 62; दाम बारह आने.

उत्तरी ट्रावनकोर के एक गांव के हरिजन, सत्यन जी जो चौदह पन्द्रह बरस की उमर में ही अपना घर छोड़ कर 1930-31 में वर्धा आ कर विनोबा जी के चरनों में बैठ गये थे, आज के हमारे रचनात्मक कार्यकर्ताओं में काफ़ी मशहूर और इज़्ज़तदार समझे जाते हैं. आपने वर्धा में रह कर कड़ी तपस्या की और खादी शास्त्र के ज्ञान में तो बहुत ही कमाल पर पहुंच गये.

वर्धा में बरसों तक रहने के कारन गांधी जी के वर्धा वाले अनुयाइयों से, यानी रचनात्मक जगत की ऊंची ऊंची हस्तियों से उनका काफ़ी नज़दीकी सम्बन्ध रहा. इस किताब में उन्होंने उनके—विनोबा जी, किशोरलाल भाई, कुमारप्पा जी, जाजू जी, काका साहब कालेलकर, धीरेन्द्र भाई, भनसाली भाई, आर्यनायकम जी, मनोहर भाई दीवान और बल्लभ स्वामी भाई—जीवन की झलक थोड़े थोड़े में दी है. 62 सफ़ों में इससे ज़ियादा कोई क्या सामग्री दे सकता है. सत्यन जी से हमारी सिफ़ारिश है कि समय निकाल कर वह

هندستان کے اتہاس کا ایک صفحہ یا جسکی سچی تصویر پیش کرنا دیش کی سچی سیوا کرنا ہے ۔

اِن انقلابی دنوں میں مہاتما جی نے پورب میں آسام سے لیکر پچھم میں گجرات تک کا دورا کیا تھا۔ سات مہینے تک اگست 1921 سے مارچ 1922 تک بھائی کرشن داس مہاتما جی کے ساتھ رہے تھے۔ یہ کتاب جو کرشن داس بھائی کی ڈائری کا نچوڑ ہے سن 1929 میں پہلی بار چھپی تھی اور جسکے بارے میں خود مہاتما جی نے کہا تھا کہ اگر ان سات مہینوں کا حال کہیں ملتا ہے تو اِن صفحوں میں ۔

بھائی کرشن داس جی کی یہ کتاب بہت ہی دلچسپ اور من موہک ہے ۔ اِسے ہم اُپنیاس' اتہاس' راج نیتی اور جیونی سے مل کر بنا ایک بہت ہی میٹھا لڈو کہہ سکتے ہیں جسکو کھاتے کھاتے طبیعت اگھاتی ہی نہیں ۔ مشہور ہندستان بھگت اور گرام اُدیوگی ارتھ شاستری بھائی رچرڈ گریگ کو اِسکا پسند آنا قدرتی بات ہے ۔ اس لئے اُنہوں نے کرشن داس بھائی کی دو کتابوں کا ست نکالکر ایک کتاب میں کھینچکر دنیا کے آگے رکھدیا ہے۔ ان کی اِسکامیابی پر رچرڈ بھائی کو ہم مبارکباد دیتے ہیں اور اُمید کرتے ہیں کہ اُنکی اِس کتاب سے انگریزی بھاشا جاننے والے بھائی بہن اپنا من بہلانے کے ساتھ پورا فائدہ اُٹھائیں گے ۔

گاندھی جی کے پرمکھ انویائی

لیکھک—ستین؛ نکالنے والے—سرودے ساہتیہ سنگھ' کاشی؛ لکھاوٹ ہندی' صفحے 62؛ دام بارہ آنے ۔

اُتری ٹراونکور کے ایک گاؤں کے ہریجن' ستین جی جو چودہ پندرہ برس کی عمر میں ہی اپنا گھر چھوڑ کر 1930-31 میں وردھا آکر ونوبا جی کے چرنوں میں بیٹھ گئے' آج کے ہمارے رچناتمک کاریہ کرتاؤں میں کافی مشہور اور عزت دار سمجھے جاتے ہیں ۔ آپ وردھا میں رہکر کڑی تپسیا کی اور کھادی شاستر کے گیان میں تو بہت ہی کمال پر پہنچ گئے ۔ وردھا میں برسوں تک رہنے کے کارن گاندھی جی کے وردھا والے انویائیوں سے' یعنی رچناتمک جگت کی اونچی اونچی ہستیوں سے اُن کا کافی نزدیکی سمبندھ رہا۔ اِس کتاب میں اُنہوں نے اُن کے—ونوبا جی' کشور لال بھائی' کمارپا جی' جاجو جی' کاکا صاحب کالیلکر' دھیریندر بھائی' بھنسالی بھائی' آریہ نائکم جی' منوہر بھائی دیوان اور بلبھ سوامی بھائی—جیون کی جھلک تھوڑے تھوڑے میں دی ہے ۔ 62 صفحوں میں اِس سے زیادہ کوئی کیا سامگری دے سکتا ہے ۔ ستین جی سے ہماری سفارش ہے کہ سمے نکال کر وہ

होती हैं जिनके खुशी खुशी और बड़प्पन के साथ काम लेने वालों की तादाद बढ़ती ही जाती है उस तरह कुछ किताबें ऐसी होती हैं जो दिन दिन ज़ियादा फैलती जाती हैं और जिनके गाहक बढ़ते जाते हैं. महात्मा गांधी की "सत्यना प्रयोग" नाम की आत्मकथा ऐसी ही अमर किताबों में है. इसको जितनी बार पढ़िये ऐसा लगता है कि पहली बार पढ़ रहे हैं और जब भी पढ़िये तो मालूम होगा कि हमारे दिल का चोर कोई पकड़ कर दिखलाता जा रहा है.

महात्मा जी की पूरी किताब बहुत काफ़ी बड़ी है. मामूली आदमी उसको आसानी से नहीं ख़रीद सकता. लिहाज़ा उसके एक मुख़्तसर नमूने की ज़रूरत थी. इसलिये हम नव-जीवन को इस किताब के निकालने पर बधाई देते हैं. दो रुपए में क़रीब तीन सौ सफ़े की, बढ़िया काग़ज़ पर छपी, एक तस्वीर दार किताब मिलना आजकल के ज़माने में एक अनहोनी बात है. फिरभी हम चाहते हैं कि इसका साइज़ चाहेकुछ और छोटा ही क्यों न हो पर एक रुपया का एडीशन निकल आए ताकि यह किताब हर एक की जेब में जा सके.

ए गांधी एन्थालोजी (अंगरेज़ी)

पहला हिस्सा, सम्पादक—बाल जी गोविन्द जी देसाई सफ़े 59; दाम आठ आने; पहलीबार 1952.

ज़िन्दगी का शायद ही कोई ऐसा पहलू हो जिस पर गांधी जी ने कुछ न कुछ रोशनी न डाली हो. इसलिये उनकी लिखी या कही हुई चीज़ों के ढेर में से मोती मोती चुन कर निकाल देना एक बड़ा मुश्किल काम है. अंगरेज़ी में इस तरह की कोशिश गांधी जी के सामने और काफ़ी अच्छी कोशिश प्रोफ़ेसर निर्मल कुमार बसू ने की थी. फिर, आज कल तो बहुत से भाई बहन ऐसे संग्रह निकाल रहे हैं. नव जीवन की यह छोटी सी किताब भी उसी तरह का संग्रह मालूम पड़ता है. यह पहला हिस्सा है और हमें नहीं मालूम कि इसके कितने हिस्से और निकलेंगे. सम्पादक ने जो चीज़ें चुन कर रक्खी हैं उनमें बहुतों के बारे में यह पता ही नहीं चलता कि वह कहां से ली गई हैं और बहुतों के बारे में कुछ किताबों की तरफ़ इशारा है जो ख़ुद ही एक तरह का संग्रह हैं.

सेविन मन्थस विद महात्मा गांधी (अंगरेज़ी)

लेखक—क्रशन दास; सम्पादक—रिचर्ड ग्रेग; सफ़े 272; दाम चार रुपये; पहली बार 1951.

1921-22 के असहयोग की याद अब एक कहानी रह गई है. इसके जानने वालों की तादाद धीरे धीरे छनती जा रही है. उस ज़माने की बापू की ज़िन्दगी का एक एक पल.

ہوتی ہیں جن کے خوشی خوشی اور بڑپن کے ساتھ کام لینے والوں کی تعداد بڑھتی ہی جاتی ہے اسی طرح کچھ کتابیں ایسی ہوتی ہیں جو دن دن زیادہ پھیلتی جاتی ہیں اور جن کے گاہک بڑھتے جاتے ہیں ۔ مہاتما گاندھی کی "ستیہ نا پریوگ" نام کی آتم کتھا ایسی ہی امر کتابوں میں ہے ۔ اس کو جتنی بار پڑھئے ایسا لگتا ہے کہ پہلی بار پڑھ رہے ہیں اور جب بھی پڑھئے تو معلوم ہوگا کہ ہمارے دل کا چور کوئی پکڑ کر دکھلاتا جا رہا ہے ۔

مہاتماجی کی پوری کتاب بہت کافی بڑی ہے معمولی آدمی اسکو آسانی سے نہیں خرید سکتا. لہذا اس کے ایک مختصر نمونے کی ضرورت تھی. اس لئے ہم نوجیون کو اس کتاب پر بدھائی دیتے ہیں ۔ دو روپئے میں قریب 300 صفحے کی' بڑھیا کاغذ پر چھپی' ایک تصویر دار کتاب ملنا آج کل کے زمانے میں ایک انہونی بات ہے ۔ پھر بھی ہم چاہتے ہیں کہ اس کا سائز چاہے کچھ اور چھوٹا ہی کیوں نہ ہو پر ایک روپیہ کا ایڈیشن نکل آئے تاکہ یہ کتاب ہر ایک جیب میں جاسکے ۔

اے گاندھی اینتھو لوجی (انگریزی)

پہلا حصہ' سمپادک—بال جی گوند جی دیسائی؛ صفحے 59 دام آٹھ آنے؛ پہلی بار 1952 .

زندگی کا شائد ہی کوئی ایسا پہلو ہو جس پر گاندھی جی نے کچھ نہ کچھ روشنی نہ ڈالی ہو ۔ اس لئے ان کی لکھی یا کہی ہوئی یا چیزوں کے ڈھیر میں سے موتی موتی چن کر نکال دینا ایک بڑا مشکل کام ہے ۔ انگریزی میں اسطرح کی کوشش گاندھی جی کے سامنے اور کافی اچھی کوشش پروفیسر نرمل کمار بسو نے کی تھی ۔ پھر آجکل تو بہت سے بھائی بہن ایسے سنگرہ نکال رہے ہیں۔ نوجیون کی یہ چھوٹی سی کتاب بھی اسی طرح کا سنگرہ معلوم پڑتا ہے ۔ یہ پہلا حصہ ہے اور ہمیں نہیں معلوم کہ اس کے کتنے حصے اور نکلینگے ۔ سمپادک نے جو چیزیں چن کر رکھی ہیں ان سے بہتوں کے بارے میں یہ پتہ ہی نہیں چلتا کہ وہ کہاں سے لی گئی ہیں اور بہتوں کے بارے میں کچھ کتابوں کی طرف اشارہ ہے جو خود ہی ایک طرح کے سنگرہ ہیں ۔

سیون منتھس ود مہاتما گاندھی (انگریزی)

لیکھک—کرشن داس سمپادک—رچرڈگریگ' صفحے 272؛ دام چار روپئے؛ پہلی بار 1951 .

1921-22 کے اسہیوگ کی یاد اب تک ایک کہانی رہ گئی ہے ۔ اسکے جاننے والوں کی تعداد دھیرے دھیرے چھنتی جارہی ہے. اس زمانے کی باپو کی زندگی کا ایک ایک پل

'बापू राज पत्रिका' को सोलह आने हिन्दुस्तान के देहातों में बसने वाली 80 फ़ी सदी जनता के दिल की आवाज़ मानते हैं. यह अपने ढंग का हिन्दुस्तान में पहला और बे मिसाल परचा है. ज़रूरत इस बात की है कि यह देहातों में पढ़ा जाय, सुना जाय और ग़ौर किया जाय. हमें उम्मीद है कि 'बापू राज पत्रिका' का प्रचार दिन दिन बढ़ेगा और इसके ज़रिये मीरा बहन जी हिन्दुस्तान की जो इस वक़्त विदेशी पूंजीपतियों और ताना शाहों के लिए एक शिकार घर बना जा रहा है, दिन दुगनी रात चौगनी चौकीदारी करेंगी और बहन जी की आवाज़ की भनक नई दिल्ली के कानों में भी पड़ेगी.

—सुरेश रामभाई

नवजीवन (अहमदाबाद) की किताबें.

राश्ट्रभाशा हिन्दुस्तानी—

(महात्मा गांधी के लेखों का संग्रह.)

अनुवादक—काशीनाथ त्रिवेदी; सफ़े 280; दाम डेढ़ रुपया; लिखावट नागरी दूसरी बार, 1952.

अंगरेज़ों की ख़ुशक़िस्मती कहिये या हम हिन्दुस्तानियों की बदक़िस्मती कि हमें एक राश्ट्र या क़ौम का तो शौक़ है लेकिन राश्ट्रीय या क़ौमी बोली के बारे में उससे आधी दिलचस्पी भी नहीं है. आज जब आज़ादी के पांच साल पूरे होते आ रहे हैं तब भी अंगरेज़ी, हिन्दुस्तानी या हिन्दी के झगड़ों में पड़ कर हम फ़िज़ूल में अपना मग़ज़ पिच्ची करते हैं और एक दूसरे पर नये घाव करते हैं सो अलग.

अपने देश के पढ़े लिखे भाई बहिनों से, ख़ास कर पार्लियामेन्ट और एसेम्बलियों के मेम्बरों से हमारी सिफ़ारिश है कि ज़रा दिल खोल कर इस मसले पर ग़ौर करें और अपना क़ीमती वक़्त निकाल कर नवजीवन की इस अनमोल किताब "राश्ट्र भाशा हिन्दुस्तानी" को एक बार इधर से उधर तक ज़रूर पढ़ जायें. विद्यार्थी समाज का भी फ़र्ज़ है कि देश के फिर बनाओ के लिए अमली क़दम उठाने के पहले इस किताब को ध्यान से देख जाये. भाई काशी नाथ जी को उनके अनुवाद पर बधाई.

गांधीजीज़ आटोबायग्राफ़ी (अंग्रेज़ी)

सम्पादक—भारतन कुमारप्पा, 294; दाम दो रुपया; सफ़े पहली बार 1952.

समय गुज़रने के साथ साथ जिस तरह आदमी बूढ़ा हो जाता है और लोग उससे भागने लगते हैं इसी तरह किताबें भी पुरानी होती जाती हैं उसके गाहक कम होते जाते हैं. लेकिन जिस तरह दुनिया में कुछ हस्तियां ऐसी

باپو راج پترکا' کو سوا سولہ آنے ھندستان کے دیہاتوں میں بسنے والی 80 فیصدی جنتا کے دل کی آواز مانتے ھیں. یہ اپنے ڈھنگ کا ھندستان میں پہلا اور بے مثال پرچہ ھے. ضرورت اس بات کی ھے کہ یہ دیہاتوں میں پڑھا' سنا جائے اور غور کیا جائے. ھمیں امید ھے کہ باپو راج 'پترکا' کا پرچار دن دن بڑھے گا اور اس کے ذریعے میرا بہن جی ھندستان کی جو اس وقت ودیشی پونجی پتیوں اور تانا شاھوں کے لئے ایک شکار گھر بنا جا رھا ھے' دن دوگنی رات چوگنی چوکی داری کریں گی اور بہن جی کی آواز کی بھنک نئی دلی کے کانوں میں بھی پڑیگی.

—سریش رام بھائی

نوجیون (احمدآباد) کی کتابیں.

راشٹر بھاشا هندستانی

(مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا سنگرہ)

انوادک—کاشی ناتھ ترویدی؛ صفحے 280؛ دام ڈیڑھ روپیہ؛ لکھاوٹ ناگری دوسری بار' 1952.

انگریزوں کی خوش قسمتی کہئے یا ہم ھندستانیوں کی بدقسمتی کہ ھمیں ایک راشٹر یا قوم کا تو شوق ھے لیکن راشٹریہ یا قومی بول کے بارے میں اس سے آدھی دلچسپی بھی نہیں ھے. آج جب آزادی کے پانچ سال پورے ہونے آ رہے ھیں تب بھی انگریزی' ھندستانی یا ھندی کے جھگڑوں میں پڑ کر ہم فضول میں اپنا مغزپچی کرتے ھیں اور ایک دوسرے پر نئے گھاؤ کرتے ھیں سوالگ.

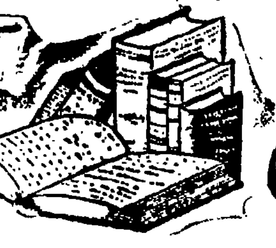
اپنے دیش کے پڑھے لکھے بھائی بہنوں سے' خاص کر پارلیامنٹ اور اسمبلیوں کے ممبروں سے ھماری سفارش ھے کہ ذرا دل کھول کر اس مسئلے پر غور کریں اور اپنا قیمتی وقت نکال کر نوجیون کی اس انمول کتاب "راشٹر بھاشا ھندستانی" کو ایک بار ادھر سے ادھر تک ضرور پڑھ جائیں. ودیارتھی سماج کا بھی فرض ھے کہ دیش کے پھر بناؤ کے لئے عملی قدم اٹھانے کے پہلے اس کتاب کو دھیان سے دیکھ جائے. بھائی کاشی ناتھ جی کو انکے انوواد پر بدھائی.

گاندھی جیز آٹو بائگرافی—(انگریزی)

سمپادک—بھارتن کمارپا؛ صفحے 294؛ دام دو روپیہ؛ لکھاوٹ انگریزی پہلی بار 1952.

سمے گذرنے کے ساتھ ساتھ جس طرح آدمی بوڑھا ہوتا جاتا ھے اور لوگ اس سے بھاگنے لگتے ھیں اسی طرح کتابیں بھی پرانی ہوتی جاتی ھیں اور ان کے گاہک کم ہوتے جاتے ھیں. لیکن جس طرح دنیا میں کچھ ھستیاں ایسی

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

बापू राज पत्रिका (अंगरेजी और हिन्दी.)

सम्पादक—मीरा बहन; माहवारी परचा,

मिलने का पता—पशुलोक, रिशीकेश, ज़िला देहरादून; दाम फ़ी कापी तीन आने; छमाही चन्दा केवल एक रुपया.

मीरा बहन जी दुनिया की उन चन्द हस्तियों में से हैं जिन्होंने अपने ईश्वर को देखा तो बापू (महात्मा गाँधी) के रूप में देखा और जिनकी निगाह में बापू के जाने के माने हैं छोटे से छोटे ज़र्रे से लेकर बड़ी से बड़ी सूरत में बापू का वजूद में आ जाना. बापू के साथ इस भक्ति के नाते मीरा बहन उस मीरा के दरजे को पहुंच जाती हैं जिसका गिरधर गोपाल के अलावा कोई दूसरा नहीं था. लेकिन मीरा बहन की भक्ती महज़ ख़्याली या दिमाग़ी नहीं हैं बल्कि इसने एक ज़बरदस्त अमली शकल भी ले ली है. यही वजह है कि इंगलिस्तान के एक फ़ौजी अफ़सर की यह लड़ैती, ऐश व आराम में पली हुई और परियों जैसी सोहबत पसंद करने वाली बेटी, आज गेरुआ कपड़ा पहने सर मुड़ा कर टट्टू पर सवार हो कर टीहरी गढ़वाल के जैसे वीरान ज़िले में गांव गांव घूमती है और वहां के लाचार और दुखी रहने वालों की तकलीफ़ में रत्ती भर भी अगर हाथ बटा सके तो उसे अपनी ख़ुशनसीबी समझती है. इसी का यह नतीजा है कि मीरा बहन का दिल अपना दिल न रहकर हिन्दुस्तान की ग़रीब से ग़रीब और सब में ज़ियादा चुसी हुई जनता का दिल बन गया है, जिसको अगर ज़रा भी हाथ लगाइये तो सारे देश का दर्द उससे मानो फूट उठता है.

पिछले मई के महीने से 'बापू राज पत्रिका' नाम का एक अठ पेजी परचा बहन जी ने निकालना शुरू किया है. उसे परचा कहना ज़ियादती है बल्कि वह एक डाक्टर का बुलेटीन है जो मरीज़ों की नब्ज़ और सूरत को देख कर उसकी सच्ची तस्वीर दुनिया के आगे रख देता है और डाक्टर भी वैसा नहीं जिसके दांत खाने के और दिखाने के और बल्कि जो ख़ुद ही मरीज़ों के जैसा मरीज़ है और उसी तरह की दवा देने की कोशिश में है जो उन्हें क़बूल हो और उनके अंग अंग को लग जाय. इसलिये हम बहन जी की

باپو راج پتریکا (انگریزی ہندی)

سمپادک—میرا بہن؛ ماہواری پرچہ؛

ملنے کا پتہ— پشو لوک، رشی کیش، ضلع دہرا دون، دام فی کاپی تین آنے، چھ ماہی چندہ کیول ایک روپیہ .

میرا بہن جی دنیا کی اُن چند ہستیوں میں سے ہیں جنہوں نے اپنے ایشور کو دیکھا تو باپو (مہاتما گاندھی) کے روپ میں دیکھا اور جن کی نگاہ میں باپو کے جانے کے معنے ہیں چھوٹے سے چھوٹے ذرے سے لیکر بڑی سے بڑی صورت میں باپو کا وجود میں آجانا . باپو کے ساتھ اِس بھکتی کے ناتے میرا بہن اس میرا کے درجے کو پہنچ جاتی ہیں جس کا گردھر گوپال کے علاوہ کوئی دوسرا نہیں تھا . لیکن میرا بہن کی یہ بھکتی محض خیالی یا دماغی نہیں ہے بلکہ اِسنے ایک زبردست عملی شکل بھی لے لی ہے . یہی وجہ ہے کہ انگلستان کے ایک فوجی افسر کی یہ لڑیتی، عیش و آرام میں پلی ہوئی اور پریوں جیسی صحبت پسند کرنے والی بیٹی، آج گیروا کپڑے پہنے سر مُڑا کر ٹٹو پر سوار ہو کر ٹیہری گڈھوال کے جیسے ویران ضلع میں گاؤں گاؤں گھومتی ہے اور وہاں کے لاچار اور دکھی رہنے والوں کی تکلیف رتی بھی میں بھر اگر ہاتھ بٹا تو اُسے اپنی خوش نصیبی سمجھتی ہے . اِسی کا یہ نتیجہ ہے کہ میرا بہن کا دل اپنا دل نہ رہکر ہندستان کی غریب سے غریب اور سب میں زیادہ چسی ہوئی جنتا کا دل بن گیا ہے جس کو اگر ذرا بھی ہاتھ لگایئے تو سارے دیش کا درد اُس سے مانو پھوٹ اُٹھتا ہے .

پچھلے مئی کے مہینے سے باپو راج پتریکا نام کا ایک اٹھ پیجی پرچہ بہن جی نے نکالنا شروع کیا ہے . اُسے پرچہ کہنا زیادتی ہے بلکہ وہ ایک ڈاکٹر کا بلیٹین ہے جو مریضوں کی نبض اور صورت کو دیکھکر اس کی سچی تصویر دنیا کے آگے رکھ دیتا ہے اور ڈاکٹر بھی ویسا نہیں جس کے دانت کھانے کے اور دکھانے کے اور بلکہ جو خود ہی مریضوں کے جیسا مریض ہے اور اُسی طرح کی دوا دینے کی کوشش میں [illegible] جو انہیں قبول ہو اور اُن کے انگ انگ کو لگ جائے . اِسلئے ہم بہن جی کی

बब है कि अगरचे दुनिया सूरज से नौ करोड़ तीस लाख
ेल के फ़ासले पर है फिर भी सूरज की इस क़दर गर्मी
.र रोशनी धूप के ज़रिये यहां पहुंच आती है. सूरज जो
सा छोटा मालूम होता है इस का भी यह सबब है कि
बहुत ही दूर है. सूरज में तो इतनी गर्मी और
ग है मगर चांद और ही तरह की दुनिया है. चांद
रज की निस्बत दुनिया से बहुत ज़ियादा पास है. क्यों-
चांद का फ़ासला दुनिया से सिर्फ़ दो लाख चालीस
ज़ार मील है. यानी सूरज चांद की निस्बत 386 गुना
यादा दूर है. मगर देखने में चांद और सूरज क़रीब क़रीब
बर मालूम होते हैं. इस का यह सबब है कि चांद बहुत
टा है, यानी इस हमारी ज़मीन से भी छोटा. और
ज में तो सब जगह आग ही आग और गर्मी ही गर्मी
मगर चांद में ज़मीन ऐसी ही है जैसी यहां दुनिया में
मगर चांद में जहां तक अब तक मालूम हुआ है पानी
र हवा बिलकुल नहीं है.

किक्री बंगला
25-6-06

ो,

कल की चिट्ठी में मैंने लिखा था कि खेल किस तरह
होते हैं और हमेशा हंसते रहने या हंसने की शक्ल
ये रखने से भी दिल ख़ुश रखा जा सकता है. असल
स तरह करना चाहिये कि जब कभी कोई ऐसी बात
या ख़याल आये कि जिस से दिल में रंज या उदासी
फ़िक्र या सुस्ती पैदा होती हो तो पहले यह कोशिश
नी चाहिये कि मुंह ज़रा न बिगड़ने पाये बल्कि हंसने
कोशिश पूरी पूरी करनी चाहिये और फिर अक़्ल के
बिक़ सोचना चाहिये कि फ़िक्र करना और रंज करना
र सुस्त और उदास रहना तो बिलकुल ही फ़िज़ूल है.
अगर कोई बात ऐसी हो कि जिस के वास्ते कुछ
र करना ज़रूरी हो तब उस काम को बेशक फ़ौरन
ना चाहिये या उस काम के करने के लिये पूरी पूरी
शिश करनी चाहिये. जो आदमी इस तरह करे और
. ही यह भी अच्छी तरह याद रखे कि असल काम
हम सब को करना है वह यह है कि सब कुछ परमेश्वर
मरज़ी के मुताबिक़ करें तो फिर उस का दिल हमेशा
रहेगा.

سبب ہے کہ اگرچہ دنیا سورج سے نو کروڑ تیئس لکھ
میل کے فاصلے پر ہے پھر بھی سورج کی اِس قدر
گرمی اور روشنی دھوپ کے ذریعے یہاں پہونچ جاتی
ہے . سورج جو ایسا چھوٹا معلوم ہوتا ہے اس کا بھی
سبب ہے کہ وہ بہت ہی دور ہے . سورج میں تو اتنی
گرمی اور آگ ہے مگر چاند اور ہی طرح کی دنیا ہے .
چاند سورج کی نسبت دنیا سے بہت زیادہ پاس ہے .
کیونکہ چاند کا فاصلہ دنیا سے صرف 2 لاکھ چالیس
ہزار میل ہے. یعنی سورج چاند کی نسبت 386 گنا زیادہ
دور ہے . مگر دیکھنے میں چاند اور سورج قریب قریب
برابر معلوم ہوتے ہیں . اِس کا یہ سبب ہے کہ چاند بہت
چھوٹا ہے ' یعنی اِس ہماری زمین سے بھی چھوٹا . اور
سورج میں تو سب جگہ آگ ہی آگ اور گرمی ہی گرمی
ہے . مگر چاند میں زمین ایسی ہی ہے جیسی یہاں
دنیا میں ہے' مگر چاند میں جہاں تک اب تک معلوم
ہوا ہے پانی اور ہوا بالکل نہیں ہے .

ککری بنگلا
25-6-06

رادھے'

کل کی چٹھی میں میں نے لکھا تھا کہ کھیل کس
طرح کے ہوتے ہیں اور ہمیشہ ہنستے رہنے یا ہنسنے کی
شکل بنائے رکھنے سے بھی دل خوش رکھا جا سکتا ہے .
اصل میں اِس طرح کرنا چاہئے کہ جب کبھی کوئی
ایسی بات ہو یا خیال آئے کہ جس سے دل میں رنج
یا اُداسی یا فکر یا سستی پیدا ہوتی ہو تو پہلے یہ
کوشش کرنی چاہئے کہ منہ ذرا نہ بگڑنے پائے بلکہ
ہنسنے کی کوشش پوری پوری کرنی چاہئے اور پھر عقل
کے مطابق سوچنا چاہئے کہ فکر کرنا اور رنج کرنا اور
سست اور اُداس رہنا تو بالکل ہی فضول ہے . ہاں
اگر کوئی بات ایسی ہو کہ جس کے واسطے کچھ کام
کرنا ضروری ہو تب اُس کام کو بے شک فوراً کرنا چاہئے
یا اُس کام کے کرنے کے لئے پوری پوری کوشش کرنی چاہئے.
جو آدمی اِس طرح کرے اور ساتھ ہی یہ بھی اچھی طرح یاد
رکھے کہ اصل کام جو ہم سب کو کرنا ہے وہ یہ ہے کہ سب
کچھ پرمیشور کی مرضی کے مطابق کریں تو پھر اُس کا
دل ہمیشہ خوش رہیگا .

बल्कि हर वक्त हंसते रहें या हंसने की शकल बनाये रखें. राधे! एक बड़े भारी विद्वान ने लिखा है कि असल में रंज और गुस्सा और उदासी पीछे आती है पहिले वह अपना मुँह बिगाड़ना शुरू करती है, इस लिये अगर कोई आदमी हमेशा हंसता रहे और कभी मुँह बुरा न बनाये तो वह कभी दुखी या उदास भी नहीं होगा.

بلکہ ہر وقت ہنستے رہیں یا ہنسنے کی شکل بنائے رکھیں ۔ رادھے! ایک بڑے بھاری ودوان نے لکھا ہے کہ اصل میں رنج اور غصہ اور اداسی پیچھے آتی ہے پہلے وہ اپنا منہ بگاڑنا شروع کرتی ہے' اس لئے اگر کوئی آدمی ہمیشہ ہنستا رہے اور کبھی منہ برا نہ بنائے تو وہ کبھی دکھی یا اداس بھی نہیں ہوگا ۔

कहोड़

26-6-06

राधे,

आज मैं तुम्हें भगवान और दुनिया की बाबत कुछ बताता हूँ. यह तो पहली चिट्ठियों में लिखा जा चुका है कि भगवान ने ही सब जगत को बनाया है और उसी ने आदमी और जानवरों को पैदा किया है. अब यह बताना बाक़ी रहा कि दुनिया और आदमी और जानवर कब और किस तरह पैदा हुये. लेकिन पहिले यह देखना ज़रूरी मालूम होता है कि इस जगत में क्या क्या शामिल है. एक तो इस जगत में यह दुनिया है जिसके एक हिस्से में हम रहते हैं और जिस का नक़्शा जो ग्लोब तुम्हारे पास है उस पर बना हुआ है. इस दुनिया का हाल तो हम जानते हैं और जितना चाहें और मालूम कर सकते हैं, क्योंकि हर जगह जा सकते हैं, देख सकते हैं और मालूम कर सकते हैं. मगर इस दुनिया के सिवाये इस जगत में और भी बहुत सी अनगिनत दुनियायें हैं. कुछ तो इन में उसी तरह की हैं जैसी हमारी दुनिया है कुछ और तरह की. यह जो चांद सूरज और तारे तुम्हें दिखाई देते हैं असल में यह सब के सब बड़ी बड़ी दुनियायें हैं. बहुत से तो इन में से हमारी दुनिया से बड़ी हैं और कुछ छोटी भी हैं. सूरज जो हमें ऐसा चमकदार दिखाई देता है यह असल में दुनिया से बहुत ही ज़ियादा बड़ा है. और दुनिया के ऊपर तो ठोस ज़मीन पानी और हवा है मगर सूरज के ऊपर हर एक चीज़ पिघली हुई या भाप की शकल में है. जिस तरह लोहे को गर्म करने से पहले सुर्ख़ अंगारे की शकल हो जाती है और फिर बिल्कुल सफ़ेद हो कर पिघलने लगती है उसी तरह सूरज में हर एक चीज़ लोहा, पत्थर, कोयला, तांबा सब कुछ इस क़दर तपा हुआ है या पिघला हुआ है या भाप बन जाता है या गर्मी के सबब बिल्कुल सफ़ेद हो जाता है. सारे सूरज के अन्दर बाहर ऊपर नीचे बड़े ज़ोर शोर की आग जल रही है सब चीज़ जिस क़दर है पिघली जाती है. मारे गर्मी के, और जिस तरह हमारी दुनिया के चारों तरफ़ हवा ही है उसी तरह सूरज के चारों तरफ़ हज़ारों मील तक लोहा, तांबा, पत्थर भाप की शकल में फैले हुये हैं. यही

کہوڑ

26-6-06

رادھے،

آج میں تمہیں بھگوان اور دنیا کی بابت کچھ بتاتا ہوں ۔ یہ تو پہلی چٹھیوں میں لکھا جاچکا ہے کہ بھگوان نے ہی سب جگت کو بنایا ہے اور اسی نے آدمی اور جانوروں کو پیدا کیا ہے ۔ اب یہ بتانا باقی رہا کہ دنیا اور آدمی اور جانور کب اور کس طرح پیدا ہوئے ۔ لیکن پہلے یہ دیکھنا ضروری معلوم ہوتا ہے کہ اس جگت میں کیا کیا شامل ہے ۔ ایک تو اس جگت میں یہ دنیا ہے جس کے ایک حصے میں ہم رہتے ہیں اور جس کا نقشہ جو گلوب تمہارے پاس ہے اس پر بنا ہوا ہے ۔ اس دنیا کا حال تو ہم جانتے ہیں اور جتنا چاہیں اور معلوم کرسکتے ہیں' کیونکہ ہر جگہ جاسکتے ہیں' دیکھ سکتے ہیں اور معلوم کرسکتے ہیں ۔ مگر اس دنیا کے سوائے اس جگت میں اور بھی بہت سی انگنت دنیائیں ہیں ۔ کچھ تو ان میں سے اسی طرح کی ہیں جیسی ہماری دنیا ہے کچھ اور طرح کی ۔ یہ جو چاند سورج اور تارے تمہیں دکھائی دیتے ہیں اصل میں یہ سب کی سب بڑی بڑی دنیائیں ہیں ۔ بہت سی تو ان میں سے ہماری دنیا سے بڑی ہیں اور کچھ چھوٹی بھی ہیں ۔ سورج جو ہمیں ایسا چمکدار دکھائی دیتا ہے یہ اصل میں دنیا سے بہت ہی زیادہ بڑا ہے ۔ اور دنیا کے اوپر تو ٹھوس زمین پانی اور ہوا ہے مگر سورج کے اوپر ہر ایک چیز پگھلی ہوئی یا بھاپ کی شکل میں ہے ۔ جس طرح لوہے کو گرم کرنے سے پہلے سرخ انگارے کی شکل ہو جاتی ہے اور پھر بالکل سفید ہوکر پگھلنے لگتی ہے اسی طرح سورج میں ہر ایک چیز لوہا' پتھر' کوئلہ' تانبہ سب کچھ اس قدر تپا ہوا ہے یا پگھلا ہوا ہے یا بھاپ بن جاتا ہے یا گرمی کے سبب بالکل سفید ہو جاتا ہے ۔ سارے سورج کے اندر باہر اوپر نیچے بڑے زور شور کی آگ جل رہی ہے ۔ سب چیز جس قدر ہے پگھلی جاتی ہے ۔ مارے گرمی کے اور جس طرح ہماری دنیا کے چاروں طرف ہوا ہی ہوا ہے اسی طرح سورج کے چاروں طرف ہزاروں میل تک لوہا' تانبہ' پتھر بھاپ کی شکل میں پھیلے ہوئے ہیں ۔ یہی

बच्चों की दुनिया

किक्की
24-6-09

राधे,

कल की चिट्ठी में खेलने की बाबत लिखा गया था. और खेलों का फ़ायदा यह बताया था कि पहले उन से दिल खुश रहे, दूसरे कुछ न कुछ फ़ायदा भी हो. कुछ खेल तो ऐसे होते हैं कि उनसे खून में हरकत बढ़ती है, रग पट्ठे मज़बूत होते हैं और बदन में ताक़त आती है. ऐसे खेल वह होते हैं जिन में भागना दौड़ना, चलना फिरना पड़े. यह उछलना कूदना या छलांगे मारना, वग़ैरा इस तरह के खेल तुम्हारी उस किताब में भी हैं जिसमें तस्वीरें वर्ज़िश और खेलों की बनी हुई हैं और जिस में से तुम्हारी वर्ज़िश की कापी में नक़ल थी. इसी क़िस्म के खेल ऐसे होते हैं कि उन में हाथ से कुछ बनाना पड़े जैसे काठ की छोटी छोटी ईंटों और लकड़ी के टुकड़ों से कभी कुर्सी, कभी मेज़, कभी गिर्जा, कभी पुल, कभी स्टेशन, कभी दुकान और ऐसी ही चीज़ें बन सकती हैं. इन खेलों को किंडरगारटन के खेल कहते हैं. और यह बहुत तरह के होते हैं. और इन में बच्चों का बड़ा मन लगता है और साथ ही अक़्ल भी बढ़ती है. अब तुम झटपट अंगरेज़ी पढ़ लो तो तुम्हें ऐसे खेलों की बहुत सी किताबें मंगा दें और फिर तुम उन के मुताबिक़ तरह तरह के खेल निकाल सकोगी. तीसरी क़िस्म के एक और खेल होते हैं जिन में नये नये तमाशे किये जाते हैं. जैसे एक चाक़ू को दरवाज़े की चौखट में इस तरह लटकाया कि जब गिरे तो उसके ठीक नीचे जो अखरोट रखा हो वह ज़रूर फूट जावे, या किसी सेब या नाशपाती के इस तरह दो टुकड़े किये जावें कि ऊपर का छिलका साबित का साबित रहे. इस तरह के खेलों में भी बड़ा मन लगता है और अक़्ल भी आती है. ऐसे खेलों को साइन्स या हिकमत के खेल कहते हैं. इन के सिवाये और भी कई क़िस्म के खेल होते हैं, जिन की बाबत फिर कभी लिखा जावेगा. अब तुम्हें यह बात भी याद रखनी चाहिये कि सबसे आसान तरीक़ा खुश रहने का यह है कि हमेशा हंस मुख रहें यानी बुरा मुँह या सूरत और उदास शक्ल अपने चेहरे की कभी भी न होने दें, न कभी त्योरी में बल डालें

بچوں کی دنیا

ککری
24-6-09

رادھے'

کل کی چھٹی میں کھیلنے کی بابت لکھا گیا تھا . اور کھیلوں کا فائدہ یہ بتایا تھا کہ پہلے اُن سے دل خوش رہے' دوسرے کچھ نہ کچھ فائدہ بھی ہو . کچھ کھیل تو ایسے ہوتے ہیں کہ اُن سے خون میں حرکت بڑھتی ہے' رگ پٹھے مضبوط ہوتے ہیں اور بدن میں طاقت آتی ہے . ایسے کھیل وہ ہوتے ہیں جن میں بھاگنا دوڑنا' چلنا پھرنا پڑے . یہ اُچھلنا کودنا یا چھلانگیں مارنا' وغیرہ اِس طرح کے کھیل تمہاری اُس کتاب میں بھی ہیں جس میں تصویریں ورزش اور کھیلوں کی بنی ہوئی ہیں اور جس میں تمہاری ورزش کی کاپی میں نقل تھی . اِسی قسم کے کھیل ایسے ہوتے ہیں کہ اُن میں ہاتھ سے کچھ بنانا پڑے جیسے کاٹھ کی چھوٹی چھوٹی اینٹوں اور لکڑی کے ٹکڑوں سے کبھی کرسی' کبھی میز' کبھی گرجا' کبھی پل' کبھی اسٹیشن' کبھی دوکان اور ایسی ہی چیزیں بن سکتی ہیں . اِن کھیلوں کو کنڈر گارٹن کے کھیل کہتے ہیں . اور یہ بہت طرح کے ہوتے ہیں . اور ان میں بچوں کا بڑا من لگتا ہے اور ساتھ ہی عقل بھی بڑھتی ہے . اب تم جھٹ پٹ انگریزی پڑھ لو تو تمہیں ایسے کھیلوں کی بہت سی کتابیں منگادیں اور پھر تم ان کے مطابق طرح طرح کے کھیل نکال سکوگی. تیسری قسم کے ایک اور کھیل ہوتے ہیں جن میں نئے نئے تماشے کئے جاتے ہیں. جیسے ایک چاقو کو دروازے کے چوکھٹ میں اس طرح لٹکایا کہ جب گرے تو اُس کے ٹھیک نیچے جو اخروٹ رکھا ہو وہ ضرور پھوٹ جاوے' یا کسی سیب یا ناشپاتی کے اِس طرح دو ٹکڑے کئے جاویں کہ اوپر کا چھلکا ثابت کا ثابت رہے . اِس طرح کے کھیلوں میں بھی بڑا من لگتا ہے اور عقل بھی آتی ہے . ایسے کھیلوں کو سائنس یا حکمت کے کھیل کہتے ہیں . اِن کے سوائے اور بھی کئی قسم کے کھیل ہوتے ہیں' جن کی بابت پھر کبھی لکھا جائےگا. اب تمہیں یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئے کہ سب سے آسان طریقہ خوش رہنے کا یہ ہے کہ ہمیشہ ہنس مکھ رہیں یعنی برا منہ یا صورت اور اُداس شکل اپنے چہرے کی کبھی بھی نہ ہونے دیں' نہ کبھی تیوری میں بل ڈالیں

पैसिफ़िक की एक शान्ति कान्फ्रेंस सितम्बर के महीने में चीन की राजधानी पेकिंग में की जाय. यह बहुत ही मुनासिब और ज़रूरी काम है. जैसा कि दावत नामे में बतलाया गया है—"हम शान्ति के लिए हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ सकते. अमन पसन्द लोगों को मुश्तरका ज़ोर लगा कर शान्ति हासिल करना होगी. एशिया और पैसिफ़िक में शान्ति उसी वक़्त क़ायम हो सकती है जब एशिया और पैसिफ़िक के लोग इसके लिए कमर कस कर तैयार हो जायें."

यह दावतनामा 21 मार्च को भेजा गया था. इसका जगह जगह स्वागत किया गया. बहुत से देशों ने इस कान्फ्रेंस में शिरकत करने के लिए तैयारी कमेटियां बना ली हैं जिन पर शान्ति के पहुँचे हुए सिपाही और नामी कार्यकर्ता रक्खे गये हैं. साथ ही साथ इन कमेटियों ने कान्फ्रेंस के लिये कार्रवाई शुरू भी कर दी है.

हमें पूरा यक़ीन है कि एशिया और पैसिफ़िक के सब देशों के लोग इस शान्ति सम्मेलन का वही लिहाज़ करेंगे जैसा कि चीन कर रहा है—वही चीन जिसने चेयरमैन माओ-त्से-तुंग की रहनुमाई में दुनिया को एलान कर दिया है (और यह बात चीन के "कामन प्रोग्राम" में भी शामिल है) कि चीन हर देश की जनता के साथ स्थाई अन्तर क़ौमी शान्ति और दोस्ताना सहयोग के सम्बन्ध रखना चाहता है, और जिसके लिए चीन ने पिछले तीन साल की अपनी आज़ाद ज़िन्दगी में हर मुमकिन क़दम उठाया है. हम उम्मीद करते हैं कि शान्ति के दुश्मन हमारे काम में कोई रुकावट लगाने से बाक़ी न रक्खेंगे. लेकिन हमें इतमिनान है कि दुनिया की बहादुर और अमन-पसन्द जनता उनकी हर कोशिश पर पानी फेर देगी और शान्ति क़ायम करने की बड़ी लड़ाई में हमें शानदार जीत हासिल होगी.

[पीकिंग के 'पीपुल्स डेली' अख़बार से]

پیسفک کی ایک شانتی کانفرنس ستمبر کے مہینے میں چین کی راجدھانی پیکنگ میں کی جائے . یہ بہت ہی مناسب اور ضروری کام ہے . جیسا کہ دعوت نامے میں بتلایا گیا ہے—"ہم شانتی کے لئے ہاتھ پر ہاتھ رکھکر نہیں بیٹھ سکتے . امن پسند لوگوں کو مشترکہ زور لگا کر شانتی حاصل کرنا ہوگی . ایشیا اور پیسفک میں شانتی اسی وقت قائم ہوسکتی ہے جب ایشیا اور پیسفک کے لوگ اس کے لئے کمر کس تیار ہوجائیں ."

یہ دعوت نامہ 21 مارچ کو بھیجا گیا تھا . اس کا جگہ جگہ سواگت کیا گیا . بہت سے دیشوں نے اس کانفرنس میں شرکت کرنے کے لئے تیاری کمیٹیاں بنالی ہیں جن پر شانتی کے پہونچے ہوئے سپاہی اور نامی کاریہ کرتا رکھے گئے ہیں . ساتھ ہی ساتھ ان کمیٹیوں نے کانفرنس کے لئے کاریہ‌واہی شروع بھی کر دی ہے .

ہمیں پورا یقین ہے کہ ایشیا اور پیسفک کے سب دیشوں کے لوگ اِس شانتی سمے لن کا وہی لحاظ کرینگے جیسا کہ چین کر رہا ہے—وہی چین جس نے چیرمین ماؤتسے تنگ کی رہنمائی میں دنیا کو اعلان کر دیا ہے (اور یہ بات چین کے "کامن پروگرام" میں بھی شامل ہے) کہ چین ہر دیش کی جنتا کے ساتھ استھائی انترقومی شانتی اور دوستانہ سہیوگ کے سمبندھ رکھنا چاہتا ہے، اور جس کے لئے چین نے پچھلے تین سال کی اپنی آزاد زندگی میں ہر ممکن قدم اُٹھایا ہے . ہم اُمید کرتے ہیں شانتی کے دشمن ہمارے کام میں کوئی رکاوٹ لگانے سے باقی نہ رکھینگے . لیکن ہمیں اطمینان ہے کہ دنیا کی بہادر اور امن پسند جنتا اُن کی ہر کوشش پر پانی پھیر دیگی اور شانتی قائم کرنے کی بڑی لڑائی میں ہمیں شاندار جیت حاصل ہوگی .

[پیکنگ کے 'پیوپلس ڈیلی' اخبار سے]

चीन, कोरिया और जापान के अलावा वीतनाम का जो मुल्क है उसे फ्रांसीसी साम्राजशाही पूरी ताक़त के साथ अपने पैरों तले कुचल रही है. एशिया और पैसिफ़िक के जो बाक़ी देश हैं उनमें भी अमरीकी, अंगरेज़ी या फ्रांसीसी साम्राज्यशाह अपनी उधेड़ बुन में लगे हुए हैं और अपनी जंगी तैयारियों के लिए कोई मौक़ा धोके से भी हाथ आ जाता है तो उसे नहीं जाने देते. डराकर, धमका कर या ललचा कर वह एशिया के देशों को अपने शिकन्जे में कस लेना चाहते हैं. नाके बन्दी वग़ैरा नाम की चालों से उन्होंने उन देशों की आर्थिक हालत में काफ़ी संकट खड़े कर दिये हैं. वहां बे रोज़गारी बढ़ गई है, जनता के रहन सहन का दर्जा गिर गया है और भुकमरी व बीमारी का बोलबाला है. इस सब से पता चलता है कि जंग की तैयारी वाली साम्राजशाही और तानाशाही में इन देशों के सच्चे मानों में आज़ाद होने और अपने संगठन करने में दिन दुगनी रात चौगुनी आफ़तें पेश कर दी हैं और लोगों का चैन से रहना दूभर हो गया है.

लेकिन एशिया और पैसिफ़िक का हर मर्द या औरत, बच्चा बच्चा दिल से शान्ति चाहता है. पिछली लड़ाई में जापानी लुटेरों ने उनके अन्दर जो घाव कर दिये थे वह अभी नहीं भरे हैं और न उनका नुक़सान ही चुकाया गया है. शान्ति के लिए वह इतना ही ज़ियादा व्याकुल हैं जितना योरप के वह लोग जिन पर नाज़ियों ने अपना रेला चलाया था. शान्ति और आज़ादी के लिए यह मांग एशिया ही नहीं सारी दुनिया कर रही है और यह सोलह आने सच्ची और इन्साफ़ की मांग है. अमरीकी शिकन्जों के बावजूद जापानी लोग अपनी आज़ादी, लोकशाही और शान्ति के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं, दिन दिन उनकी ताक़त बढ़ रही है. दक्खिन पूरबी एशिया के सभी देशों में शान्ति का यह आन्दोलन तरक़्क़ी कर रहा है. साम्राजशाही जंग चहेतों के अलावा जो शान्ति आन्दोलन से घबराते हैं और जो इसे दबाने की घात में रहते हैं, सारी दुनिया के लोग शान्ति आन्दोलन को एक पवित्र काम समझते हैं और इसमें पूरी तरह शरीक होना चाहते हैं. शान्ति और इन्साफ़ के सभी चाहने वालों का फ़र्ज़ है इस आन्दोलन में अपनी पूरी ताक़त लगायें और जोश के साथ इसमें मदद दें.

चीन में इस शान्ति आन्दोलन के अगुआ मादाम सुंग चिंग लिंग (श्रीमती सुनयात सेन) और को मो-जो हैं. इनकी रहनुमाई में चीन की ग्यारह नामी हस्तियों ने हिन्दुस्तान और दूसरे देशों के दोस्तों, साथियों को मंज़ूर किया है. इसकी बिना पर उन्होंने एशिया, आस्ट्रेलिया और उत्तर दक्खिन अमरीकाओं के शान्ति और इन्साफ़ प्रेमी लोगों को यह दावत नामा भेजा है कि एशिया और

چین، کوریا اور جاپان کے علاوہ ویت نام کا جو ملک ہے اُسے فرانسیسی سامراج شاہی پوری طاقت کے ساتھ اپنے پیروں تلے کچل رہی ہے۔ ایشیا اور پیسفک کے جو باقی دیش ہیں اُن میں بھی امریکی، انگریزی یا فرانسیسی سامراج شاہ اپنی اُدھیڑبن میں لگے ہوئے ہیں اور اپنی جنگی تیاریوں کے لئے کوئی موقع دھوکے سے بھی ہاتھ آجاتا ہے تو اُسے نہیں جانے دیتے۔ ڈرا کر، دھمکا کر یا للچا کر وہ ایشیا کے دیشوں کو اپنے شکنجے میں کس لینا چاہتے ہیں۔ ناکے بندی وغیرہ نام کی چالوں سے اُنہوں نے اُن دیشوں کی آرتھک حالت میں کافی سنکٹ کھڑے کر دئیے ہیں۔ وہاں بے روزگاری بڑھ گئی ہے، جنتا کے رہن سہن کا درجہ گر گیا ہے اور بھکمری و بیماری کا بول بالا ہے۔ اِس سب سے پتہ چلتا ہے کہ جنگ کی تیاری والی سامراج شاہی اور تانا شاہی میں اِن دیشوں کے سچے معنوں میں آزاد ہونے اور اپنے سنگٹھن کرنے میں دن دوگنی رات چوگنی آفتیں پیش کر دی ہیں اور لوگوں کا چین سے رہنا دوبھر ہوگیا ہے۔

لیکن ایشیا اور پیسفک کا ہر مرد یا عورت، بچہ بچہ دل سے شانتی چاہتا ہے۔ پچھلی لڑائی میں جاپانی لٹیروں نے اُن کے اندر جو گھاؤ کر دئیے تھے وہ ابھی نہیں بھرے ہیں اور نہ اُن کا نقصان ہی چکایا گیا ہے۔ شانتی کے لئے وہ اِتنا ہی زیادہ ویاکل ہیں جتنا یورپ کے وہ لوگ جن پر نازیوں نے اپنا ریلا چلایا تھا۔ شانتی اور آزادی کے لئے یہ مانگ ایشیا ہی نہیں ساری دنیا کر رہی ہے اور یہ سولہ آنے سچی اور انصاف کی مانگ ہے۔ امریکی شکنجوں کے باوجود جاپانی لوگ اپنی آزادی، لوک شاہی اور شانتی کے لئے لگاتار کوشش کر رہے ہیں، دن دن اُن کی طاقت بڑھ رہی ہے۔ دکھن پوربی ایشیا کے سبھی دیشوں میں شانتی کا یہ آندولن ترقی کر رہا ہے۔ سامراج شاہی جنگ چہیتوں کے علاوہ جو شانتی آندولن سے گھبراتے ہیں اور جو اِسے دبانے کی گھات میں رہتے ہیں، ساری دنیا کے لوگ شانتی آندولن کو ایک پوتر کام سمجھتے ہیں اور اِس میں پوری طرح شریک ہونا چاہتے ہیں۔ شانتی اور انصاف کے سبھی چاہنے والوں کا فرض ہے اس آندولن میں اپنی پوری طاقت لگائیں اور جوش کے ساتھ اِس میں مدد دیں۔

چین میں اِس شانتی آندولن کے اگوا مادام سنگ چنگ لنگ (شریمتی سن یات سین) اور کو موجو ہیں۔ اِن کی رہنمائی میں چین کی گیارہ نامی ہستیوں نے ہندستان اور دوسرے دیشوں کے دوستوں، ساتھیوں کو منظور کیا ہے۔ اِس کی بنا پر اُنہوں نے ایشیا، آسٹریلیا اور اُتر دکھن امریکاؤں کے شانتی اور انصاف پریمی لوگوں کو یہ دعوت نامہ بھیجا ہے کہ ایشیا اور

कर रक्खा है. इस तरह उन्होंने पोत्सडाम राज़ीनामे और इसी तरह के दूसरे अन्तर क़ौमी राज़ीनामों को सिर्फ़ काग़ज़ी टुकड़ा समझ कर फाड़ ही नहीं दिया है बल्कि जापानी जनता की ख़ुद मुख़्तारी, आज़ादी और लोकशाही की मांग को ठुकरा दिया है. यह सुलह नामा सचमुच एक जंग एलान नामा है जिसका मक़सद जापानियों को ग़ुलाम बना कर जापान को हमेशा के लिए अमरीकी मनचलों का एक अड्डा बना लेना है. ज़ाहिर है कि इससे एशिया और और पैसिफ़िक को ज़बरदस्त ख़तरा है.

कोरिया में अमरीकियों को काफ़ी मुंह की खानी पड़ी है फिर भी वह अपनी हरकतों से ज़रा भी बाज़ नहीं आते दीखते. दस महीने से कोरिया की लड़ाई बन्दी की बातचीत घिसटती चली आ रही है और फिर भी उसके कामयाब होने के कोई आसार दिखलाई नहीं पड़ते. जिनेवा कनवेन्शन पर अमरीकी सरकार के दस्तख़त हैं फिर भी इस कनवेन्शन की वह रत्ती भर परवा नहीं करते और लड़ाई के क़ैदियों को छोड़ने को तैयार नहीं हैं. 'अपनी मर्ज़ी से जो वापिस जाय वह जायें'—वाले बेतुके उसूल पर ज़िद करके उन्होंने सैकड़ों-हज़ारों चीनी और कोरियाई क़ैदियों को अपने चंगुल में फांस रक्खा है. यही वजह है कि बातचीत अटक अटक कर रह जाती है और कोरिया वालों की तबाही ख़त्म होती नज़र नहीं आती. इस सब के लिये अमरीकी हमलावर पूरी तरह ज़िम्मेवार है.

इन अमरीकी [जंग चहेतों को अपनी करनी पर सब्र न हुआ और तब वह ऐसे ग़ैर इन्सानी और बे उसूली कारनामों पर उतर आये जो कि अन्तर क़ौमी रस्म रिवाज और तौर तरीक़े के सरासर ख़िलाफ़ है. कोरिया और उत्तर पूरब चीन में वह बीमारी बम बे-धड़क गिरा रहे हैं. लड़ाई बन्दी के सिलसिले में बे-सिर पैर की शर्तें मनवाने के लिये उन्होंने क़ैदियों और कोरिया की जनता का क़त्ले आम भी शुरू कर दिया लेकिन उनकी इन ज़ियादतियों का कोरिया की फ़ौज हो या चीन के स्वयं सेवक, कोरिया की जनता हो या चीन की, किसी पर रत्ती भर असर नहीं पड़ने वाला है. हममें इतनी ताक़त मौजूद है कि उनके बीमारी बमों से पैदा होने वाली ख़राबियों का मुक़ाबला करें और उन्हें नेस्तनाबूत करें. फिर भी अमरीकी मनचलों की यह ज़ियादतियां बर्दाश्त के बाहर की चीज़ें हैं. एशिया क्या, सारी दुनिया की जनता के ख़िलाफ़ यह मुजरिमाना हरकतें हैं जिनको तो बन्द ही होना चाहिये. जैसा कि चीनी विदेश मिनिस्टर चू-एन-लेई ने 24 फ़रवरी को कहा था—"अगर दुनिया के लोग ज़ोर शोर के साथ इस जुर्म को नहीं रोकते हैं तो जो अज़ाब आज कोरिया के अमन पसन्द लोगों पर ढाये जा रहे हैं वह कल दुनिया के अमन पसन्द लोगों पर ढाये जायेंगे."

ر رکھا ہے . اِس طرح اُنھوں نے پوٹسڈام راضی ے اور اِسی طرح کے دوسرے انتر قومی راضی ناموں ، صرف کاغذی ٹکڑا سمجھکر پھاڑ ہی نہیں دیا ہے بلکہ جاپانی جنتا کی خود مختاری' آزادی اور لوک شاہی ی مانگ کو ٹھکرا دیا ہے . یہ صلح نامہ سچ مچ ایک جنگ اعلان نامہ ہے جس کا مقصد جاپانیوں کو غلام بناکر جاپان کو ہمیشہ کے لئے امریکی من چلوں کا ایک اڈا ا لینا ہے . ظاہر ہے کہ اِس سے ایشیا اور پیسفک ساگر ، زبردست خطرہ ہے .

کوریا میں امریکیوں کو کافی منھ کی کھانی پڑی ہے ر بھی وہ اپنی حرکتوں سے ذرا بھی باز نہیں آتے دیکھتے. س مہینے سے کوریا کی لڑائی بندی کی بات چیت ھسٹتی چلی آ رہی ہے اور پھر بھی اُس کے کامیاب ہونے ، کوئی آثار دکھائی نہیں پڑتے. جنیوا کنوینشن پر امریکی رکار کے دستخط ہیں پھر بھی اِس کنوینشن کی وہ رتی ر پرواہ نہیں کرتے اور لڑائی کے قیدیوں کو چھوڑنے کو یار نہیں ہیں . 'اپنی مرضی سے جو واپس جائے وہ ائیں'—والے بے تکے اُصول پر ضد کرکے اُنھوں نے سیکڑوں زاروں چینی اور کوریائی قیدیوں کو اپنے چنگل میں ھانس رکھا ہے . یہی وجہ ہے کہ بات چیت اٹک اٹک ر رہ جاتی ہے اور کوریا والوں کی تباہی ختم ہوتی نظر ہیں آتی . اِس سب کے لئے امریکی حملہ ور پوری طرح ے دار ہیں .

اِن امریکی جنگ چہیتوں کو اپنی کرنی پر صبر نہ ہوا ور تب وہ ایسے غیر اِنسانی اور بے اُصولی کارناموں پر اُتر ئے جو کہ انتر قومی رسم رواج اور طور طریقے کے سراسر خلاف ہے . کوریا اور اُتر پورب چین میں وہ بیماری بم بے ھڑک گرا رہے ہیں . لڑائی بندی کے سلسلے میں بے سر ر کی شرطیں منوانے کے لئے اُنھوں نے قیدیوں اور کوریا ی جنتا کا قتلِ عام بھی شروع کر دیا لیکن اُن کی اِن یادتیوں کا کوریا کی فوج ہو یا چین کے سویم سیوک' وریا کی جنتا ہو یا چین کی' کسی پر رتی بھر اثر نہیں ڑنے والا ہے . ہم میں اتنی طاقت موجود ہے کہ اُن کے یماری بموں سے پیدا ہونے والی خرابیوں کا مقابلہ کریں اور نھیں نیست و نابود کریں. پھر بھی امریکی من چلوں کی زیادتیاں برداشت کے باہر کی چیزیں ہیں. ایشیا کیا' ساری دنیا کی جنتا کے خلاف یہ مجرمانہ حرکتیں ہیں ن کو تو بند ہی ہونا چاہئے . جیسا کہ چینی دیش نسٹر چو ان لائی نے 24 فروری کو کہا تھا—"اگر نیا کے لوگ زور شور کے ساتھ اِس جرم کو نہیں روکتے یں تو جو غضب آج کوریا کے امن پسند لوگوں پر ڈھائے ا رہے ہیں وہ کل دنیا کے امن پسند لوگوں پر ڈھائے ائیں گے ."

हुत बड़े बलिदान के बाद जो विदेशी हुकूमत हमने हटाई थी वह पहले ही ऐसी चीजों की खरीदारी में बरबाद कर दी गई है जो या तो इस देश में पैदा की जा रही हैं या की जा सकती थीं और न बहुत जरूरी ही हैं.

गांधीजी ने स्वदेशी का एक नया मतलब हमें बताया. स्वदेशी का मतलब पहले तो गांव में बनी हुई चीजें हैं और केवल उसके बाद ही हिन्दुस्तान में बनी हुई चीजें होना चाहिए. यह सम्मेलन बड़े आग्रह के साथ जनता से अपील करता है कि वह गांव की बनी हुई चीजें खरीदे और जब गांव की बनी हुई चीजें न मिलें तब ही हिन्दुस्तान की बनी हुई चीजें खरीदे; लेकिन विदेशी चीजें तो जब तक उनका खरीदना बिल्कुल लाजमी न हो और हिन्दुस्तान की बनी हुई उसके जोड़ की चीजें मिलती ही न हों, तब तक कभी नहीं खरीदे. आगे यह सम्मेलन हिन्द सरकार से अपील करता है कि वह विदेशी व्योपार पर पाबन्दी लगाए और स्वदेशी माल की हिफ़ाजत करने के लिए जहां तक जरूरी हो रोज के खर्च की चीजों का बाहर से आना बन्द कर दे.

بہت بڑے بلیدان کے بعد جو ودیشی حکومت ہم نے ہٹائی تھی وہ پہلے ہی ایسی چیزوں کی خریداری میں برباد کر دی گئی ہے جو یا تو اس دیش میں پیدا کی جا رہی ہیں یا کی جا سکتی تھیں اور نہ جو بہت ضروری ہی ہیں۔

گاندھی جی نے سودیشی کا ایک نیا مطلب ہمیں بتایا۔ سودیشی کا مطلب پہلے تو گاؤں میں بنی ہوئی چیزیں ہیں اور کیول اسکے بعد ہی ہندوستان میں بنی چیزیں ہونا چاہئے۔ یہ سمیلن بڑے آگرہ کے ساتھ جنتا سے اپیل کرتا ہے کہ وہ گاؤں کی بنی ہوئی چیزیں خریدے اور جب گاؤں کی بنی ہوئی چیزیں نہ ملیں تب ہی ہندوستان کی بنی ہوئی چیزیں خریدے؛ لیکن ودیشی چیزیں تو جب تک ان کا خریدنا بالکل لازمی نہ ہو اور ہندوستان کی بنی ہوئی اسکے جوڑ کی چیزیں ملتی ہی نہ ہوں تب تک کبھی نہیں خریدیں۔ آگے یہ سمیلن ہند سرکار سے اپیل کرتا ہے کہ وہ ودیشی بیوپار پر پابندی لگائے اور سودیشی مال کی حفاظت کرنے کے لئے جہاں تک ضروری ہو روز کے خرچ کی چیزوں کا باہر سے آنا بند کر دے۔

शान्ति कान्फ़्रेंस के लिए अपील

अमरीका के साम्राज शाहों के दिल में सारी दुनिया के ऊपर छा जाने का बड़ा भारी पागल पन सवार है. रोज रोज वह जहां मुमकिन हो सकता है अपने फ़ौजी अड्डे बनाते चले जा रहे हैं. योरप में पच्छिम जरमनी को हथियार बन्द कर रहे हैं और एशिया में जापान को. उनकी यह मराज पिथी सिर्फ़ इसलिए है कि दुनिया को शान्ति से हटा कर दूसरी जंग की भट्टी में झोंक दें.

एशिया में हम देखते हैं कि अमरीकन पूंजीपतियों और लड़ाई के प्यासों ने अपने पंजे जापान में बड़ी मज़बूती से जमा लिए हैं, चीन का वह इलाक़ा जिसे तईवान या फ़ारमूसा कहते हैं, घेर रक्खा है और कोरिया में तो उनकी चढ़ाई चल ही रही है. जापान को और भी जियादा हथियार बन्द कर अपने मनसूबे पूरे करने के लिए उन्होंने दुनिया के लोगों की राय खिलाफ़ होनेके बावजूद, दुनिया के ऊपर जापानी सुलहनामा नाम की एक चीज थोप दी जो गैर क़ानूनी है और एक तरफ़ा है. इस सुलहनामे की चर्चा में चीन, रूस, हिन्दुस्तान, बर्मा जैसे बड़े बड़े मुल्क शरीक भी नहीं हुए. यही नहीं बल्कि इन अमरीकी जंग पसन्दों ने 28 अप्रेल 1952 से इस इस गैर क़ानूनी सुलहनामे को चालू भी

شانتی کانفرنس کے لئے اپیل

امریکہ کے سامراج شاہوں کے دل میں ساری دنیا کے اوپر چھا جانے کا بڑا بھاری پاگل پن سوار ہے۔ روز روز وہ جہاں ممکن ہوسکتا ہے اپنے فوجی اڈے بناتے چلے جا رہے ہیں۔ یورپ میں پچھم جرمنی کو۔ ہتھیار بند کر رہے ہیں اور ایشیا میں جاپان کو ان کی یہ مغز پچی صرف اس لئے ہے کہ دنیا کو شانتی سے ہٹاکر دوسری جنگ کی بھٹی میں جھونک دیں۔

ایشیا میں ہم دیکھتے ہیں کہ امریکن پونجی پتیوں اور لڑائی کے پیاسوں نے اپنے پنجے جاپان میں بڑی مضبوطی سے جما لئے ہیں۔ چین کا وہ علاقہ جسے تئی وان یا فارموسا کہتے ہیں گھیر رکھا ہے اور کوریا میں تو اب بھی ان کی چڑھائی چل ہی رہی ہے۔ جاپان کو اور بھی زیادہ ہتھیار بند کر اپنے منصوبے پورے کرنے کے لئے انہوں نے دنیا کے لوگوں کی رائے خلاف ہونے کے باوجود، دنیا کے اوپر جاپانی صلحنامہ نام کی ایک چیز تھوپ دی جو غیر قانونی ہے اور ایک طرفہ ہے۔ اس صلح نامے کی چرچا میں چین، روس، ہندوستان، برما جیسے بڑے بڑے ملک شریک بھی نہیں ہوئے۔ یہی نہیں بلکہ ان امریکی جنگ پسندوں نے 28 اپریل 1952 سے اس غیر قانونی صلحنامے کو چالو بھی

2. आमदनी ठहराव

"कम से कम आमदनी इतनी होनी चाहिए कि उससे खाना, कपड़ा और रहने की जरूरतें मुनासिब ढंग से पूरी हो जायें. आज की बाजार की दरों को देखते हुए एक औसत परिवार के लिए यह तादाद सौ रुपये माहवारी रखी जा सकती है. ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि इस कम से कम निशान पर हम जल्द से जल्द पहुँच जायें. माली जीवन के सभी पहलुओं में आमदनी की ऊंच-नीच को बराबर कर देना चाहिए. इस तरह की समाज व्यवस्था में कम से कम और ज़ियादा से ज़ियादा आमदनियों का अन्तर इतना नहीं होना चाहिए कि वह जनता की आंखों में चुभता रहे."

"आमदनी की तैशुद ज़ियादा से ज़ियादा हद का पालन सभी माली तबकों से मजबूती के साथ कराया जाना चाहिए और किसी के भी पास इतनी दौलत नहीं रहने देनी चाहिए कि उसे तय की हुई ऊपरी हद से भी ज़ियादा आमदनी हो. इस समय सब आमदनियों की ज़ियादा से ज़ियादा तादाद मौजूदा कम से कम का बीस गुना तय करके, मुनासिब मियाद के भीतर उसे कम से कम के दस गुना पर ले आना चाहिए."

दो बरस से ऊपर हुआ जब सर्वोदय योजना में इन ठहरावों को शामिल किया गया था लेकिन इन पर अमल करने के लिए अभी तक कुछ नहीं किया गया. देश में आमदनी के जो फ़र्क़ आज हैं उसे और ज़ियादा वक़्त तक जारी रहने देना गवारा नहीं किया जा सकता. यह सम्मेलन इसलिए बड़े ज़ोर के साथ सर्व सेवा संघ से इसरार करता है कि वह हिन्दुस्तान के लोगों को पुकार दे कर वह 31 मार्च 1953 तक बिना देर किए सर्वोदय योजना की ऊपर की बातों पर अमल करने के लिए अहिंसात्मक साधनों से काम ले और उसके मुताबिक़ एक आन्दोलन शुरू कर दे.

3. स्वदेशी आन्दोलन

आज़ादी के बाद जिस तादाद में रोज के ख़र्च की चीज़ें देश में बाहर से आ रही हैं उसे देखकर यह सम्मेलन बहुत परेशान है. रोज रोज़ हालत बिगड़ती ही जाती है और छोटे बड़े सभी उद्योगों पर इसका बुरा असर पड़ रहा है. सन 19.5 से जो लोग स्वदेशी के लिए खूब लड़े थे उनकी स्वदेशी भावना भी तेज़ी से ख़त्म होती जा रही है. इतने लम्बे समय की गुलामी के कारन हिन्दुस्तान का माली ढांचा उखड़ गया है और फिर इसे बराबर करने के लिए कोई कोशिश नहीं हो रही है. आज दुनिया के देश अपने अपने देश के लिए जरूरत का सामान बनाने वाले राष्ट्रीय उद्योगों को विदेशों से आने वाली चीज़ों के ख़िलाफ़ बचाने में और स्वदेशी धर्म को ज़िन्दा रखने में लगे हुए हैं, पर हमारी सरकार इस दिशा में कोई ख़ास कोशिश नहीं कर रही है.

2. آمدنی ٹھہراؤ

"کم سے کم آمدنی اتنی ھونی چاھئے کہ اُس سے کھانا، کپڑا اور رھنے کی ضرورتیں مناسب ڈھنگ سے پوری ھو جائیں . آج کی بازار کی دروں کو دیکھتے ھوئے ایک اوسط پریوار کے لئے یہ تعداد سو روپئے ماھواری رکھی جا سکتی ھے. ایسی کوشش کرنی چاھئے کہ اِس کم سے کم نشان پر ھم جلد سے جلد پہنچ جائیں . مالی جیون کے سبھی پہلوؤں میں آمدنی کی اُونچ نیچ کو برابر کر دینا چاھئے. اِس طرح کی سماج ویوستھا میں کم سے کم اور زیادہ سے زیادہ آمدنیوں کا انتر اتنا نہیں ھونا چاھئے کہ وہ جنتا کی آنکھوں میں چبھتا رھے ."

"آمدنی کی طےشدہ زیادہ سے زیادہ حد کا پالن سبھی مالی طبقوں سے مضبوطی کے ساتھ کرایا جانا چاھئے اور کسی کے بھی پاس اتنی دولت نہیں رھنے دینی چاھئے کہ اسے طے کی ھوئی اوپری حد سے بھی زیادہ آمدنی ھو . اِس سمے سب آمدنیوں کی زیادہ سے زیادہ تعداد موجودہ کم سے کم کا بیس گنا طے کر کے، مناسب میعاد کے بھیتر اُسے کم سے کم کے دس گنا پر لے آنا چاھئے ."

دو برس سے اوپر ھوا جب سروودے یوجنا میں اِن ٹھہراؤں کو شامل کیا گیا تھا لیکن اِن پر عمل کرنے کے لئے ابھی تک کچھ نہیں کیا گیا . دیش میں آمدنی کے جو فرق آج ھیں اُسے اور زیادہ وقت تک جاری رکھنے دینا گوارہ نہیں کیا جا سکتا . یہ سمیلن اِس لئے بڑے زور کے ساتھ سرو سیوا سنگھ سے اصرار کرتا ھے کہ وہ ھندستان کے لوگوں کو پکار دے کر وہ 31 مارچ 1953 تک بنا دیر کئے سروودے یوجنا کی اوپر کی باتوں پر عمل کرنے کے لئے اھنساتمک سادھنوں سے کام لے اور اسکے مطابق ایک آندولن شروع کر دے .

3. سودیشی آندولن

آزادی کے بعد دیش میں جس تعداد میں روز کے خرچ کی چیزیں دیش میں باھر سے آ رھی ھیں اُسے دیکھکر یہ سمیلن بہت پریشان ھے . روز روز حالت بگڑتی ھی جاتی ھے اور چھوٹے بڑے سبھی ادیوگوں پر اس کا برا اثر پڑ رھا ھے . سن 1905 سے جو لوگ سودیشی کے لئے خوب لڑے تھے اُن کی سودیشی بھاؤنا بھی تیزی سے ختم ھوتی جا رھی ھے. اتنے لمبے سمے کی غلامی کے کارن ھندستان کا مالی ڈھانچہ اُکھڑ گیا ھے اور پھر اِسے برابر کرنے کے لئے کوئی کوشش نہیں ھو رھی ھے . آج دنیا کے دیش اپنے اپنے دیش کے لئے ضرورت کا سامان بنانے والے راشٹریہ ادیوگوں کو ودیشوں سے آنے والی چیزوں کے خلاف بچانے میں اور سودیشی دھرم کو زندہ رکھنے میں لگے ھوئے ھیں، پر ھماری سرکار اِس دشا میں کوئی خاص کوشش نہیں کر رھی ھے .

ही मौजूदा समाजी व माली ढांचे के कारन समाज में मोटी मोटी दीवारें खड़ी हुई हैं उन्हें दूर करने के लिए उठाया जायेगा. यह उम्मीदें निरी उम्मीदें ही रह

आज दुनिया में सब जगह माली बराबरी की मांग हो है. लेकिन यह बराबरी उसी समय मुमकिन है जब .र के साधनों पर असली पैदाकार की, जो खास कर .न, मज़दूर और कारीगर हैं, साफ़ साफ़ मालिकी होगी. स्तान खास तौर से एक खेती प्रधान देश है और ये ज़मीन ही पैदावार का सब से बड़ा अकेला साधन न्दुस्तान आज अनाज के लिहाज़ से स्वावलम्बी नहीं छले चार बरस से हमारे यहां अनाज संकट चल रहा केन फिर भी भूकमरी के बढ़ते हुए सवाल को हल के वास्ते ज़ियादा अनाज उपजाने के लिए किसानों का बढ़ाने में सरकार नाकामयाब रही है.

स बदक़िसमती का एक ख़ास कारन यह भी रहा है कि सल में ज़मीन पर काम करता है उसे ज़ियादा पैदावार ने के लिए कोई रुजहान नहीं है. ज़मीन आम तौर से ज़ियादातर उन लोगों के हाथ में होती है जो खुद उसे हैं न बोते हैं. इसलिये यह बहुत ज़रूरी हो गया है .गीरदारी की तरह के जितने भी ज़मीन की मालिकी के उन सब को बिना मुआवज़े के रद्द कर दिया जाय और जो लोग खुद जोतते हैं उन में ठीक ठीक बांट य. माली बराबरी क़ायम करने के लिए ज़मीनों की बंटाई पहला बड़ा क़दम होना चाहिये. इस से देश में ऐसी हवा तैयार होगी जिस के कारन लोग माली के इस ज़ाहिर मैदान में देश की बेहतरी के लिए ोर से आगे आयेंगे.

स भारी अनाज संकट और आम माली मुसीबतों और धाओं को ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन सर्व सेवा अपील करता है कि वह सरकार से कहे कि 31 मार्च 953 के पहले विधान में ऐसे मुमकिन बदलाव करने क़दम उठाये जायें जिस से जुदा जुदा सूबों की ज़मीन पर हर तरह की छिपी मालिकी को बिना वे के ख़त्म कर सकें और ज़मीन जोतने बोने वाले नों में उसकी फिर बंटाई कर सकें.

गर सरकार समय पर इस मांग को पूरा करने में रहती है तो यह सम्मेलन सर्व सेवा संघ से बड़े जोश थ अपील करता है कि वह इस मक़सद को पाने सरकार और ज़मींदार के ख़िलाफ़ सारे अहिंसात्मक का उपयोग करने के लिए जनता का संगठन

بلکہ ہی موجودہ سماجی و مالی ڈھانچے کے کارن سماج میں جو موٹی موٹی دیواریں کھڑی ہوئی ہیں انہیں دور کرنے کے لئے قدم اُٹھایا جائے گا . یہ امیدیں نری امیدیں ہی رہ گئیں .

آج دنیا میں سب جگہ مالی برابری کی مانگ ہو رہی ہے . لیکن یہ برابری اُسی سمے ممکن ہے جب پیداوار کے سادھنوں پر اصلی پیداکار کی، جو خاصکر کسان، مزدور اور کاریگر ہیں، صاف صاف مالکی ہوگی . ہندستان خاص طور سے ایک کھیتی پردھان دیش ہے اور اس لئے زمین ہی پیداوار کا سب سے بڑا اکیلا سادھن ہے . ہندستان آج اناج کے لحاظ سے سواولمبی نہیں ہے . پچھلے چار برس سے ہمارے یہاں اناج سنکٹ چل رہا ہے لیکن پھر بھی بھکمری کے بڑھتے ہوئے سوال کو حل کرنے کے واسطے زیادہ اناج اُپجانے کے لئے کسانوں کا اُتساہ بڑھانے میں سرکار نا کامیاب رہی ہے.

اِس بدقسمتی کا ایک خاص کارن یہ بھی رہا ہے کہ جو اصل میں زمین پر کام کرتا ہے اُسے زیادہ پیداوار اُپجانے کے لئے کوئی رجحان نہیں ہے . زمین عام طور سے اور زیادہ تر اُن لوگوں کے ہاتھ میں ہوتی ہے جو خود اُسے جوتتے ہیں نہ بوتے ہیں . اِس لئے یہ بہت ضروری ہوگیا ہے کہ جاگیرداری کی طرح کے جتنے بھی زمین کی مالکی کے حق ہیں اُن سب کو بنا معاوضے کے رد کر دیا جائے اور زمین جو لوگ خود جوتتے ہیں اُن میں ٹھیک ٹھیک بانٹ دی جائے . مالی برابری قائم کرنے کے لئے زمینوں کی پھر بٹائی پہلا بڑا قدم ہونا چاہئے . اس سے دیش میں ایک ایسی ہوا تیار ہوگی جس کے کارن لوگ مالی ترقی کے اس ظاہر میدان میں دیش کی بہتری کے لئے زور شور سے آگے آئیں گے .

اِس بھاری اناج سنکٹ اور عام مصیبتوں اور اسوودھاؤں کو دھیان میں رکھتے ہوئے یہ سمیلن سرو سیوا سنگھ سے اپیل کرتا ہے کہ وہ سرکار سے کہے کہ 31 مارچ سن 1953 کے پہلے ودھان میں ایسے ممکن بدلاؤ کرنے کے لئے قدم اُٹھائے جائیں جس سے جدا جدا صوبوں کی سرکاریں زمین پر ہر طرح کی چھپی مالکی کو بنا معاوضے کے ختم کر سکیں اور زمین جوتنے بونے والے کسانوں میں اسکی پھر بٹائی کر سکیں .

اگر سرکار سمے پر اس مانگ کو پورا کرنے میں ناکام رہتی ہے تو یہ سمیلن سرو سیوا سنگھ سے بڑے جوش کے ساتھ اپیل کرتا ہے کہ وہ اِس مقصد کو پانے کے لئے سرکار اور زمیندار کے خلاف سارے اہنساتمک سادھنوں کا اُپیوگ کرنے کے لئے جنتا کا سنگھٹن کرے .

मैं बोली—फिर.

बोले—फिर क्या, वहां निरंजन शराब पीता मिला.

मैं बोली—फिर आपने क्या किया ?

बोले—मैं क्या करता. मुझे देखते ही उसने आंख बन्द कर ली और सिर झुका लिया. मैं चला आया और अब खाना खा रहा हूं.

मैं बोली—तो आपने उससे कुछ नहीं कहा.

बोले—तो क्या दस दोस्तों में उसकी इज़्ज़त लेता और फिर उस निरंजन की जिसकी शराब न अभी शरम मिटा पाई है न लिहाज़ पर हमला कर पाई है.

मैं आगे कुछ न पूछ पाई और चुप रह गई.

निरंजन बोला—यह बात है ! यह हैं मेरे पिता ! मेरी आबरू का इतना ख़्याल ! तो मां, निरंजन भी ऐसे बाप का ऐसा ही बेटा साबित होगा. पिताजी को निरंजन की आबरू का इतना ख़्याल है तो निरंजन को पिताजी की आबरू का ख़्याल है. अब जीते जी शराब इस हलक़ के नीचे नहीं उतरेगी और निरंजन की सारी भक्ति पिता जी के क़दमों पर निछावर होगी.

मां ने आवेश में आ कर निरंजन को ऐसे गले लगा लिया मानो वह तीन बरस का बच्चा हो और वह एकदम बे होश हो गई.

—भगवानदीन

میں بولی—پھر .

بولے—پھر' وہاں نرنجن شراب پیتا ملا .

میں بولی— پھر آپ نے کیا کیا ؟

بولے—میں کیا کرتا . مجھے دیکھتے ہی اُس نے آنکھ بند کر لی اور سر جھکا لیا . میں چلا آیا اور اب کھانا کھا رہا ہوں .

میں بولی—تو آپ نے اُس سے کچھ نہیں کہا .

بولے—تو کیا دس دوستوں میں اُسکی عزت لیتا اور پھر اُس نرنجن کی جسکی شراب نہ ابھی شرم مٹا پائی ہے اور نہ لحاظ' پر حملہ کر پائی ہے .

میں آگے کچھ نہ پوچھ پائی اور چپ رہ گئی .

نرنجن بولا—یہ بات ہے ! یہ ہیں میرے پتا ! میری آبرو کا اِتنا خیال ! تو ماں' نرنجن بھی ایسے باپ کا ایسا ہی بیٹا ثابت ہوگا . پتا جی کو نرنجن کی آبرو کا اتنا خیال ہے تو نرنجن کو بھی پتاجی کی آبرو کا خیال ہے . اب جیتے جی شراب اِس حلق کے نیچے نہیں اُترے گی اور نرنجن کی ساری بھکتی پتاجی کے قدموں پر نچھاور ہوگی .

ماں نے آویش میں آکر نرنجن کو ایسے گلے لگا لیا مانو وہ تین برس کا بچہ ہو اور وہ ایک دم بیہوش ہو گئی .

—بھگوان دین

आर्थिक समता मंडल के ठहराव

[आंध्र के मशहूर शहर बैजवाड़ा से दो मील के फ़ासले पर पटामाटा नाम का एक गांव है जहां भाई जी. रामचन्द्र राव (गोरा) रचनात्मक काम का एक केन्द्र चला रहे हैं. वहां पर 30–31 मई को डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा की सदारत में रचनात्मक कारकुनों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ और आर्थिक समता मंडल नाम की एक संस्था बनाई गई. उसमें जो ठहराव पास हुए वह हम नीचे देते हैं—एडीटर]

ज़मींदारी अन्त और ज़मीन की फिर—बंटाई.

हिन्दुस्तान को आज़ाद हुए लगभग पांच साल हो गए. आज़ादी में दूसरी चीज़ों के साथ कड़ा श्रम करने वाले मज़दूर तबक़े की माली आज़ादी भी शामिल है. इसलिये यह उम्मीद की जाती थी कि आज़ाद भारत की सरकार

آرتھک سمتا منڈل کے ٹھہراؤ

[آندھر کے مشہور شہر بیجواڑا سے دو میل کے فاصلے پر پٹا ماٹا نام کا ایک گاؤں ہے جہاں بھائی جی. رام چندر راؤ (گورا) رچناتمک کام کا ایک کیندر چلا رہے ہیں . وہاں پر 30–31 مئی کو ڈاکٹر جے . سی . کماریپا کی صدارت میں رچناتمک کارکنوں کا ایک بڑا سمیلن ہوا اور آرتھک سمتا منڈل نام کی ایک سنستھا بنائی گئی . اُس میں جو ٹھہراؤ پاس ہوئے وہ نیچے دیتے ہیں—ایڈیٹر]

زمینداری انت اور زمین کی پھر—بنٹائی .

ہندستان کو آزاد ہوئے لگ بھگ پانچ سال ہوگئے . آزادی میں دوسری چیزوں کے ساتھ کڑا شرم کرنے والے مزدور طبقے کی مالی آزادی بھی شامل ہے . اِس لئے یہ اُمید کی جاتی تھی کہ آزاد بھارت کی سرکار

. मौजूदा समाजी व माली ढांचे के कारन समाज में
.ी मोटी दीवारें खड़ी हुई हैं उन्हें दूर करने के लिए
उठाया जायेगा. यह उम्मीदें निरी उम्मीदें ही रह

ज दुनिया में सब जगह माली बराबरी की मांग हो
. लेकिन यह बराबरी उसी समय मुमकिन है जब
के साधनों पर असली पैदाकार की, जो खास कर
, मजदूर और कारीगर हैं, साफ़ साफ़ मालिकी होगी.
.न खास तौर से एक खेती प्रधान देश है और
ज़मीन ही पैदावार का सब से बड़ा अकेला साधन
स्तान आज अनाज के लिहाज़ से स्वावलम्बी नहीं
ले चार बरस से हमारे यहां अनाज संकट चल रहा
न फिर भी भूकमरी के बढ़ते हुए सवाल को हल
वास्ते ज़ियादा अनाज उपजाने के लिए किसानों का
बढ़ाने में सरकार नाकामयाब रही है.

। बदक़िस्मती का एक खास कारन यह भी रहा है कि
.ल में ज़मीन पर काम करता है उसे ज़ियादा पैदावार
के लिए कोई रुजहान नहीं है. ज़मीन आम तौर से
ियादातर उन लोगों के हाथ में होती है जो खुद उसे
[न बोते हैं. इसलिये यह बहुत ज़रूरी हो गया है
रदारी की तरह के जितने भी ज़मीन की मालिकी के
न सब को बिना मुआवज़े के रद्द कर दिया जाय और
जो लोग खुद जोतते हैं उन में ठीक ठीक बांट
माली बराबरी क़ायम करने के लिए ज़मीनों की
ाई पहला बड़ा क़दम होना चाहिये. इस से देश में
.ी हवा तैयार होगी जिस के कारन लोग माली
के इस ज़ाहिर मैदान में देश की बेहतरी के लिए
. से आगे आयेंगे.

भारी अनाज संकट और आम माली मुसीबतों और
.ओं को ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन सर्व सेवा
अपील करता है कि वह सरकार से कहे कि 31 मार्च
53 के पहले विधान में ऐसे मुमकिन बदलाव करने
क़दम उठाये जायें जिस से जुदा जुदा सूबों की
ज़मीन पर हर तरह की छिपी मालिकी को बिना
' के खत्म कर सकें और ज़मीन जोतने बोने वाले
में उसकी फिर बंटाई कर सकें.

र सरकार समय पर इस मांग को पूरा करने में
हती है तो यह सम्मेलन सर्व सेवा संघ से बड़े जोश
अपील करता है कि वह इस मक़सद को पाने
.रकार और ज़मींदार के खिलाफ़ सारे अहिंसात्मक
का उपयोग करने के लिए जनता का संगठन

ارتھک سمتا سمبندھی ٹھہراو

بلکہ ہی موجودہ سماجی و مالی ڈھانچے کے کارن سماج میں جو موٹی موٹی دیواریں کھڑی ہوئی ہیں انہیں دور کرنے کے لئے قدم اٹھایا جائے گا ۔ یہ امیدیں نری امیدیں ہی رہ گئیں ۔

آج دنیا میں سب جگہ مالی برابری کی مانگ ہو رہی ہے ۔ لیکن یہ برابری اسی سمے ممکن ہے جب پیداوار کے سادھنوں پر اصلی پیداکار کی، جو خاصکر کسان، مزدور اور کاریگر ہیں، صاف صاف مالکی ہوگی ۔ ہندوستان خاص طور سے ایک کھیتی پردھان دیش ہے اور اس لئے زمین ہی پیداوار کا سب سے بڑا اکیلا سادھن ہے ۔ ہندوستان آج اناج کے لحاظ سے سواولمبی نہیں ہے ۔ پچھلے چار برس سے ہمارے یہاں اناج سنکٹ چل رہا ہے لیکن پھر بھی بھکمری کے بڑھتے ہوئے سوال کو حل کرنے کے واسطے زیادہ اناج اپجانے کے لئے کسانوں کا اتساہ بڑھانے میں سرکار ناکامیاب رہی ہے ۔

اس بدقسمتی کا ایک خاص کارن یہ بھی رہا ہے کہ جو اصل میں زمین پر کام کرتا ہے اسے زیادہ پیداوار اپجانے کے لئے کوئی رجحان نہیں ہے ۔ زمین عام طور سے اور زیادہ تر ان لوگوں کے ہاتھ میں ہوتی ہے جو خود اسے جوتتے میں نہ بوتے ہیں ۔ اس لئے یہ بہت ضروری ہو گیا ہے کہ جاگیرداری کی طرح کے جتنے بھی زمین کی مالکی کے حق ہیں ان سب کو بنا معاوضے کے رد کر دیا جائے اور زمین جو لوگ خود جوتتے ہیں ان میں ٹھیک ٹھیک بانٹ دی جائے ۔ مالی برابری قائم کرنے کے لئے زمینوں کی پھر بٹائی پہلا بڑا قدم ہونا چاہئے ۔ اس سے دیش میں ایک ایسی ہوا تیار ہوگی جس کے کارن لوگ مالی ترقی کے اس ظاہر میدان میں دیش کی بہتری کے لئے زور شور سے آگے آئیں گے ۔

اس بھاری اناج سنکٹ اور عام مصیبتوں اور اسودھاؤں کو دھیان میں رکھتے ہوئے یہ سمیلن سرو سیوا سنگھ سے اپیل کرتا ہے کہ وہ سرکار سے کہے کہ 31 مارچ سن 1953 کے پہلے ودھان میں ایسے ممکن بدلاؤ کرنے کے لئے قدم اٹھائے جائیں جس سے جدا جدا صوبوں کی سرکاریں زمین پر ہر طرح کی چھپی مالکی کو بنا معاوضے کے ختم کر سکیں اور زمین جوتنے بونے والے کسانوں میں اسکی پھر بٹائی کر سکیں ۔

اگر سرکار سمے پر اس مانگ کو پورا کرنے میں ناکام رہتی ہے تو یہ سمیلن سرو سیوا سنگھ سے بڑے جوش کے ساتھ اپیل کرتا ہے کہ وہ اس مقصد کو پانے کے لئے سرکار اور زمیندار کے خلاف سارے اہنساتمک سادھنوں کا اپیوگ کرنے کے لئے جنتا کا سنگٹھن کرے ۔

मैं बोली—फिर.

बोले—फिर क्या, वहां निरंजन शराब पीता मिला.

मैं बोली—फिर आपने क्या किया ?

बोले—मैं क्या करता. मुझे देखते ही उसने आंख बन्द कर ली और सिर झुका लिया. मैं चला आया और अब खाना खा रहा हूं.

मैं बोली—तो आपने उससे कुछ नहीं कहा.

बोले—तो क्या दस दोस्तों में उसकी इज्ज़त लेता और फिर उस निरंजन की जिसकी शराब न अभी शरम मिटा पाई है न लिहाज़ पर हमला कर पाई है.

मैं आगे कुछ न पूछ पाई और चुप रह गई.

निरंजन बोला—यह बात है ! यह हैं मेरे पिता ! मेरी आबरू का इतना ख्याल ! तो मां, निरंजन भी ऐसे बाप का ऐसा ही बेटा साबित होगा. पिताजी को निरंजन की आबरू का इतना ख्याल है तो निरंजन को पिताजी की आबरू का ख्याल है. अब जीते जी शराब इस हलक़ के नीचे नहीं उतरेगी और निरंजन की सारी भक्ति पिता जी के क़दमों पर निछावर होगी.

मां ने आवेश में आ कर निरंजन को ऐसे गले लगा लिया मानो वह तीन बरस का बच्चा हो और वह एकदम बे होश हो गई.

—भगवानदीन

میں بولی—پھر .

بولے—پھر' وہاں نرنجن شراب پیتا ملا .

میں بولی— پھر آپ نے کیا کیا ؟

بولے—میں کیا کرتا . مجھے دیکھتے ہی اس نے آنکھ بند کر لی اور سر جھکا لیا . میں چلا آیا اور اب کھانا کھا رہا ہوں .

میں بولی—تو آپ نے اس سے کچھ نہیں کہا .

بولے—تو کیا دس دوستوں میں اسکی عزت لیتا اور پھر اس نرنجن کی جسکی شراب نہ ابھی شرم مٹا پائی ہے اور نہ لحاظ' پر حملہ کر پائی ہے .

میں آگے کچھ نہ پوچھ پائی اور چپ رہ گئی .

نرنجن بولا—یہ بات ہے ! یہ ہیں میرے پتا ! میری آبرو کا اتنا خیال ! تو ماں' نرنجن بھی ایسے باپ کا ایسا ہی بیٹا ثابت ہوگا . پتا جی کو نرنجن کی آبرو کا اتنا خیال ہے تو نرنجن کو بھی پتاجی کی آبرو کا خیال ہے . اب جیتے جی شراب اس حلق کے نیچے نہیں اترے گی اور نرنجن کی ساری بھکتی پتاجی کے قدموں پر نچھاور ہوگی .

ماں نے آویش میں آکر نرنجن کو ایسے گلے لگا لیا مانو وہ تین برس کا بچہ ہو اور وہ ایک دم بیہوش ہو گئی.

—بھگوان دین

आर्थिक समता मंडल के ठहराव

[आंध्र के मशहूर शहर बैजवाड़ा से दो मील के फ़ासले पर पटामाटा नाम का एक गांव है जहां भाई जी. रामचन्द्र राव (गोरा) रचनात्मक काम का एक केन्द्र चला रहे हैं. वहां पर 30–31 मई को डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा की सदारत में रचनात्मक कारकुनों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ और आर्थिक समता मंडल नाम की एक संस्था बनाई गई. उसमें जो ठहराव पास हुए वह हम नीचे देते हैं—एडीटर]

जमींदारी अन्त और जमीन की फिर—बंटाई.

हिन्दुस्तान को आजाद हुए लगभग पांच साल हो गए. आजादी में दूसरी चीजों के साथ कड़ा श्रम करने वाले मजदूर तबक़े की माली आजादी भी शामिल है. इसलिये यह उम्मीद की जाती थी कि आजाद भारत की सरकार

آرتھک سمتا منڈل کے ٹھہراؤ

[آندھر کے مشہور شہر بیجواڑا سے دو میل کے فاصلے پر پٹا ماٹا نام کا ایک گاؤں ہے جہاں بھائی جی. رام چندر راؤ (گورا) رچناتمک کام کا ایک کیندر چلا رہے ہیں . وہاں پر 30-31 مئی کو ڈاکٹر جے . سی . کمارپا کی صدارت میں رچناتمک کارکنوں کا ایک بڑا سمیلن ہوا اور آرتھک سمتا منڈل نام کی ایک سنستھا بنائی گئی . اس میں جو ٹھہراؤ پاس ہوئے وہ نیچے دیتے ہیں—ایڈیٹر]

زمینداری انت اور زمین کی پھر—بنٹائی .

ہندستان کو آزاد ہوئے لگ بھگ پانچ سال ہوگئے . آزادی میں دوسری چیزوں کے ساتھ کڑا شرم کرنے والے مزدور طبقے کی مالی آزادی بھی شامل ہے . اس لئے یہ امید کی جاتی تھی کہ آزاد بھارت کی سرکار

आया कि अब वह जीता न बच पायेगा और फिर उसे अपना ख्याल आया कि इतने दिनों इस बात को छिपाये रक्खा इसके बदले में न जाने मुझे क्या सज़ा दी जायगी ? घर निकाला या इससे भी बढ़कर कोई बात !

× × ×

सेठ जी घर पहुँचे. थोड़ी देर ठहरे और फिर दफ़्तर चले गये.

× × ×

निरंजन ने क्लब छोड़ कर कहीं अकेले में बैठ, मुंह में उंगली डाल कर क़ै की. खूब पानी पिया और फिर क़ै की. घंटे भर इधर उधर घूमता रहा. घर के दरवाज़े पर पहुँच कर नौकर से पूछा—

पिताजी घर आये थे ?

हां, अभी आये तो थे !

अभी अन्दर हैं ?

नहीं, वह तो फ़ौरन ही दफ़्तर चले गये.

निरंजन अब घर के अन्दर गया. छिपकर मां के चेहरे को झांका, मालूम हुआ उसके चेहरे पर कोई उदासी नहीं है. वह आगे बढ़ा, मां ने उसे फ़ौरन देख लिया, बोली—आज तो तुम बड़ी जल्दी आ गये, बेटा !

हां, अम्मा जल्दी आ गया.

आज तो तुम्हारे पिताजी ने तुम्हें देख लिया.

हां, देख तो लिया, क्या कहते थे ?

कुछ नहीं कहते थे.

नहीं अम्मां, एक एक बात बताओ.

अच्छा ले सुन.

मुझे तो जैसे ही मालूम हुआ कि तेरे पिताजी तुझे देखने गये हैं मेरा बुरा हाल हो गया. और जैसे ही तेरे पिता तुझे देख कर आये, मुझसे तेरे बारे में बात किये बग़ैर बोले—लाओ कुछ खाने को दो. मैंने कांपते कांपते हाथों से उन्हें तश्तरी में मिठाई और कुछ नमकीन दिया. उन्होंने रोज़ की तरह हंसते हंसते और इधर उधर की बातें करते खाना शुरू कर दिया. तेरा कोई ज़िक्र ही नहीं किया. आख़िर मैंने ही पूछा—तुम दफ़्तर से आ रहे हो. बोले—दफ़्तर से नहीं, क्लब से. मैंने पूछा—क्लब किसलिये, उस गन्दे क्लब घर ! बोले—हां, उसी गन्दे क्लब घर.

मैंने पूछा—आख़िर किसलिये ?

बोले—वह तुम्हारा एक उपदेशक आया हुआ है न, वह मुझे वहां ले गया यह दिखाने के लिए कि निरंजन शराब पीता है.

آیا کہ اب وہ جیتا نہ بچ پائے گا . پھر اُسے اپنا خیال آیا کہ اتنے دنوں اِس بات کو چھپائے رکھا اِسکے بدلے میں نہ جانے مجھے کیا سزا دی جائے گی ؟ گھر نکالا یا اِس سےبھی بڑھکر کوئی بات !

× × ×

سیٹھ جی گھر پہنچے . تھوڑی دیر ٹھہرے اور پھر دفتر چلے گئے .

× × ×

نرنجن نے کلب چھوڑ کر کہیں اکیلے میں' بیٹھ منہ میں اُنگلی ڈالکر قے کی . خوب پانی پیا اور پھر قے کی . گھنٹے بھر اِدھر اُدھر گھومتا رہا . گھر کے دروازے پر پہنچکر نوکر سے پوچھا—

پتا جی' گھر آئے تھے ؟

ہاں ابھی آئے تو تھے !

ابھی اندر ہیں ؟

نہیں' وہ تو فوراً ہی دفتر چلے گئے .

نرنجن اب گھر کے اندر گیا . چھپ کر ماں کے چہرے کو جھانکا' معلوم ہوا اس کے چہرے پر کوئی اداسی نہیں ہے . وہ آگے بڑھا' ماں نے اُسے فوراً دیکھ لیا' بولی—آج تو تم بڑی جلدی آگئے' بیٹا !

ہاں' اماں جلدی آگیا .

آج تو تمہارے پتاجی نے تمہیں دیکھ لیا .

ہاں' دیکھ تو لیا . کیا کہتے تھے ؟

کچھ نہیں کہتے تھے .

نہیں اماں' ایک ایک بات بتاؤ .

اچھا لے سن .

مجھے تو جیسے ہی معلوم ہوا کہ تیرے پتاجی تجھے دیکھنے گئے ہیں میرا برا حال ہوگیا . اور جیسے ہی تیرے پتا تجھے دیکھکر آئے' مجھ سے تیرے بارے میں بات کئے بغیر بولے—لاؤ کچھ کھانے کو دو . میں نے کانپتے کانپتے ہاتھوں سے انہیں تشتری میں مٹھائی اور کچھ نمکین دیا . انہوں نے روز کی طرح ہنستے ہنستے اور اِدھر اُدھر کی باتیں کرتے کھانا شروع کر دیا . تیرا کوئی ذکر ہی نہیں کیا . آخر میں نے ہی پوچھا—تم دفتر سے آ رہے ہو . بولے—دفتر سے نہیں' کلب سے . میں نے پوچھا—کلب کس لئے' اُس گندے کلب گھر ! بولے—ہاں' اُسی گندے کلب گھر .

میں نے پوچھا—آخر کس لئے ؟

بولے—وہ تمہارا ایک اُپدیشک آیا ہوا ہے نہ' وہ مجھے وہاں لے گیا یہ دکھانے کے لئے کہ نرنجن شراب پیتا ہے .

तीन बरस से लड़का शराब पीता है. उसका कहना है कि अगर उसे शराब न मिले तो वह मर जाय. यह सब तो है मगर न मिल का कोई नौकर न शहर का कोई आदमी सेठ जी के कान तक यह बात पहुँचा सकता है कि आपका लड़का शराब पीता है. हर एक को यह अन्देशा है कि सेठ जी तक खबर पहुँची नहीं कि लड़का खत्म और फिर वह घर से बच कर ही अपनी जान छुड़ा सकता है.

(2)

सेठ जी आपका लड़का और शराब पीये—एक नये धर्मोपदेशक ने बिना सोचे समझे एकदम यह बात सेठ जी से कह डाली.

मेरा लड़का और शराब—बहुत धीरे ज़रा भी आवेश में आये बग़ैर सेठ जी ने जवाब दिया.

जी हां, चलिये मैं आपको अभी आपकी आंखों दिखा दूँ.

सेठ जी फ़ौरन उठ लिये और उस क्लब में जा पहुँचे जहां उपदेशक जी उन्हें ले गये. सेठ जी जैसे ही अन्दर दाखिल हुए सामने ही अपने लड़के पर नज़र पड़ी. वह शराब का पेय मुंह से लगाये पी रहा था. सेठ जी वहीं खड़े हो गये. लड़के की आंख जैसे ही सेठ जी यानी अपने पिता पर पड़ी उसने आंखे बन्द कर लीं और सिर नीचे कर लिया.

सेठ जी उलटे पांव लौट गये. उपदेशक से उन्होंने इतना ही कहा—हां, मेरा लड़का शराब पीता है, बहुतों के लड़के पीते हैं.

उपदेशक ने आगे कुछ उपदेश बघारना चाहा पर सेठ जी का रुख़ देखकर चुप रहने ही में उसने अपना भला समझा.

× × ×

निरंजन, हमने तो सुना था कि तुम्हारे बाप बड़े ग़ुस्सैल हैं, पर आज तो उन्होंने तुमसे कुछ नहीं कहा और उनके साथ जो एक आदमी था, बहरे का यह कहना है, उसको ऐसी तरह फटकारा मानो वह यह कह रहे हों कि मेरा बेटा शराब पीता है तो तुम्हें क्या ?

निरंजन बोला—मैं इसका कुछ जवाब नहीं दे सकता. आप जो चाहें समझें. मैं अब आप से इजाज़त लेता हूँ और मेरा ख़्याल है कि यह आख़िरी इजाज़त है.

× × ×

निरंजन की मां को जैसे ही यह मालूम हुआ कि निरंजन पिता को निरंजन के शराब पीने का पता चल गया है वैसे ही उसका तो दम निकल गया. पहले तो उसे बेटे का ख़्याल

تین برس سے لڑکا شراب پیتا ہے . اُسکا کہنا ہے کہ اگر اسے شراب نہ ملے تو وہ مر جائے. یہ سب تو ہے مگر نہ مل کا کوئی نوکر نہ شہر کا کوئی آدمی سیٹھ جی کے کان تک یہ بات پہنچا سکتا ہے کہ آپ کا لڑکا شراب پیتا ہے . ہر ایک کو یہ اندیشہ ہے کہ سیٹھ جی تک خبر پہنچی نہیں کہ لڑکا ختم اور پھر وہ گھر سے بچکر ہی اپنی جان چھڑا سکتا ہے .

(2)

سیٹھ جی آپ کا لڑکا اور شراب پیئے—ایک نئے دھرم اُپدیشک نے بنا سوچے سمجھے ایک دم یہ بات سیٹھ جی سے کہہ ڈالی .

میرا لڑکا اور شراب—بہت دھیرے ذرا بھی آویش میں آئے بغیر سیٹھ جی نے جواب دیا .

جی ہاں، چلئے میں آپکو ابھی آپکی آنکھوں دکھا دوں .

سیٹھ جی فوراً اُٹھ لیئے اور اُس کلب میں جا پہنچے جہاں اُپدیشک جی انہیں لے گئے . سیٹھ جی جیسے ہی اندر داخل ہوئے سامنے ہی اپنے لڑکے پر نظر پڑی . وہ شراب کا پیگ منہ سے لگائے پی رہا تھا . سیٹھ جی وہیں کھڑے ہوگئے . لڑکے کی آنکھ جیسے ہی سیٹھ جی یعنی اپنے پتا پر پڑی اُس نے آنکھیں بند کر لیں اور سر نیچے کر لیا .

سیٹھ جی اُلٹے پاؤں لوٹ گئے . اُپدیشک سے انہوں نے اتنا ہی کہا—ہاں، میرا لڑکا شراب پیتا ہے، بہتوں کے لڑکے پیتے ہیں .

اُپدیشک نے آگے کچھ اُپدیش بگھارنا چاہا پر سیٹھ جی کا رخ دیکھکر چپ رہنے ہی میں اس نے اپنا بھلا سمجھا .

× × ×

نرنجن، ہم نے تو سنا تھا کہ تمہارے باپ بڑے غصیل ہیں، پر آج تو انہوں نے تم سے کچھ نہیں کہا اور ان کے ساتھ جو ایک آدمی تھا، بہرے کا یہ کہنا ہے، اُسکو ایسی طرح پھٹکارا مانو وہ یہ کہہ رہے ہوں کہ میرا بیٹا شراب پیتا ہے تو تمہیں کیا ؟

نرنجن بولا—میں اِسکا کچھ جواب نہیں دے سکتا . آپ جو چاہیں سمجھیں . میں اب آپ سے اجازت لیتا ہوں اور میرا خیال ہے کہ یہ آخری اجازت ہے .

× × ×

نرنجن کی ماں کو جیسے ہی یہ معلوم ہوا کہ نرنجن کے پتا کو نرنجن کے شراب پینے کا پتہ چل گیا ہے ویسے ہی اس کا تو دم نکل گیا . پہلے تو اسے بیٹے کا خیال

ी शराब से बहुत चिढ़ है. सुना गया है कि सच्चा मुसलमान स कपड़े को जला देगा जिस पर शराब की बूंद पड़ जाय पर मारे सेठ दीपचन्द जी का यह हाल है कि अगर शराब उनके रर में घुस आये तो शायद वह मकान को आग लगा दें. उनके रमें अगर मरता हुआ आदमी शहद देनेसे बच सके तो वह उस आदमी को मरने देंगे पर शहद की एक बूंद वह अपने घर नहीं आने देंगे क्योंकि उनका जैन धर्म शहद खाने की जाज़त नहीं देता.

मिल के नौकरों में सेठ जी सच्चे समझे जाते हैं और सच बोलते भी हैं. हिंसा को जो कुछ उन्होंने समझ रक्खा है उससे पूरी तरह बचते हैं. इसी तरह चोरी से भी दूर रहते हैं. ब्रह्मचर्य के लिहाज़ से लंगोटी के बड़े पक्के हैं और परिग्रह का भी व्रत ले रक्खा है. पर उसमें उन्होंने इतनी ऊँची उड़ान ली है कि शायद ही उनकी ज़िन्दगी में कभी ऐसा मौक़ा आये कि उस हद तक पहुँच सके यानी पच्चीस लाख रुपया. दो सौ रुपया तनख्वा पाने वाले के लिए पच्चीस लाख की रक़म ऐसी है कि जब तक छप्पर फाड़ कर कोई उनके घर न डाल जाय तब तक नहीं मिल सकती.

एक सिफ़त उनमें और जिस के लिए वह मिल के नौकरों में नहीं सारे शहर में मशहूर हैं. और वह यह कि वह दूसरों की आबरू का उतना ध्यान रखते हैं जितना अपनी आबरू का. इस एक गुन की वजह से वह सबके बेहद प्यारे हो गये

न जाने किस तरह उनमें एक ऐब भी जगह पाये हुए है और वह है गुस्सा. और गुस्सा भी अपने ढंग का अनोखा जो सवार हो जाय तो किसी की जान लेकर ही छोड़े. गुस्से पर उनको क़ाबू पूरा है पर क़ाबू अपने क़िस्म का अनोखा है. जिस वक़्त उनको गुस्सा आता है उस वक़्त वह उस गुस्से के क़ाबू में नहीं आते. उस गुस्से को दबा कर कहीं रख लेते हैं और वही गुस्सा फिर कभी निकलता है जो ज्वालामुखी का लावा ही बन कर.

उनकी पत्नी भी उनसे मिलती जुलती हैं. उन्हीं जैसी नेक और उदार हैं.

ऐसे बाप के घर और ऐसी मां के पेट से पैदा लड़का जब बड़ा हो कर बुरी सोहबत में फंस जाय और शराब पीने लगे तो किसे दुख नहीं होगा ?

सेठ जी के लड़के निरंजन का यही हाल है. वह अगर अब तक बाप के गुस्से का शिकार नहीं बना तो इसमें लड़के की होशियारी कोई नहीं है, उसकी मां की होशियारी का हाथ है.

کی شراب سے بہت چڑھ ہے ۔ سنا گیا ہے کہ سچا ملسمان اُس کپڑے کو جلا دے گا جس پر شراب کی بوند پڑ جائے پر ہمارے سیٹھ دیپ چند' جی کا یہ حال ہے کہ اگر شراب اُن کے گھر میں گھس آئے تو شائد وہ مکان کو آگ لگا دیں ۔ اُن کے گھر میں اگر مرتا ہوا آدمی شہد دینے سے بچ سکے تو وہ اُس آدمی کو مرنے دیں گے پر شہد کی ایک بوند وہ اپنے گھر نہیں آنے دینگے کیونکہ اُن کا جین دھرم شہد کھانے کی اجازت نہیں دیتا ۔

مل کے نوکروں میں سیٹھ جی سچے سمجھے جاتے ہیں اور سچ بولتے بھی ہیں ۔ ہنسا کو جو کچھ اُنہوں نے سمجھ رکھا ہے اُس سے پوری طرح بچتے ہیں ۔ اسی طرح چوری سے بھی دور رہتے ہیں ۔ برھمچریہ کے لحاظ سے لنگوٹی کے بڑے پکے ہیں اور پری گرہ کا بھی ورت لے رکھا ہے ۔ پر اُسمیں اُنہوں نے اتنی اونچی اُڑان لی ہے کہ شائد ہی اُنکی زندگی میں کبھی ایسا موقع آئے کہ اُس حد تک پہنچ سکے یعنی پچیس لاکھ روپیہ ۔ دو سو روپیہ تنخواہ پانے والے کے لئے پچیس لاکھ کی رقم ایسی ہے کہ جب تک چھپر پھاڑ کر کوئی اُن کے گھر میں نہ ڈال جائے تب تک نہیں مل سکتی ۔

ایک صفت اُن میں اور ہے جسکے لئے وہ مل کے نوکروں میں نہیں سارے شہر میں مشہور ہیں ۔ اور وہ یہ کہ وہ دوسروں کی آبرو کا اُتنا دھیان رکھتے ہیں جتنا اپنی آبرو کا ۔ اِس ایک گن کی وجہ سے وہ سب کے بے حد پیارے ہوگئے ہیں ۔

نہ جانے کسطرح اُن میں ایک عیب بھی جگہ پائے ہوئے ہے اور وہ ہے غصہ ۔ اور غصہ بھی اپنے ڈھنگ کا انوکھا جو سوار ہو جائے تو کسی کی جان لے کر ہی چھوڑے ۔ غصے پر اُن کو قابو پورا ہے پر قابو اپنے قسم کا انوکھا ہے ۔ جس وقت اُن کو غصہ آتا ہے اُس وقت وہ اُس غصے کے قابو میں نہیں آتے ۔ اُس غصے کو دبا کر کہیں رکھ لیتے ہیں اور وہی غصہ پھر کبھی نکلتا ہے جو جوالا مکھی کا لاوا ہی بن کر ۔

اُنکی پتنی بھی اُن سے ملتی جلتی ہیں ۔ اُنہیں جیسی نیک اور اُدار ہیں ۔

ایسے باپ کے گھر اور ایسی ماں کے پیٹ سے پیدا لڑکا جب بڑا ہو کر بری صحبت میں پھنس جائے اور شراب پینے لگے تو کسے دکھ نہیں ہوگا ؟

سیٹھ جی کے لڑکے نرنجن کا یہی حال ہے ۔ وہ اگر اب تک باپ کے غصے کا شکار نہیں بنا تو اِسمیں لڑکے کی ہوشیاری کا کوئی ہاتھ نہیں ہے' اُسکی ماں کی ہوشیاری کا ہاتھ ہے ۔

पर इस बात पर हर एक को भरोसा था और अब भी है कि इस में विनोबा जी मशरूवाला जी, काका कालेलकर और आप जैसे लोग हैं. पर अब दिन पर दिन इस बात की ज़रूरत महसूस होती जा रही है कि इस तहरीक से दिलचस्पी लेने वाले लोग इस तहरीक को किसी ख़ास मज़हब और जाति के लोगों तक महदूद होने से बचावें.

क्योंकि अगर सर्वोदय तहरीक थोड़े से लोगों तक महदूद हो कर रह गई तो उससे जो देश की भलाई होने वाली है वह न हो सकेगी.

हो सकता है कि आप सर्वोदय सम्मेलनों के ज़रूरत से ज़ियादा हिन्दू रंग के बारे में कहें कि अगर मुसलमान या दूसरे ग़ैर-हिन्दू इन सम्मेलनों में हिस्सा लेने लगें तो हिन्दू रंग आप से आप कम हो जाय. मगर जब तक मुसलमान ऐसे सम्मेलनों में सर्व समाजीपन की फ़िज़ा न पायेंगे वह कैसे शामिल हो सकते हैं. इसलिये तहरीक के अगुवा और दूसरे लोग जो ठीक मानी में उसमें सर्व समाजीपन की फ़िज़ा पैदा करना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि वह ख़ुद एक पल के लिये न ऐसा तरीक़ा अख़तियार करें और न दूसरों को करने दें जिससे ग़ैर हिन्दुओं को यह महसूस करने का मौक़ा मिले कि सर्वोदय सम्मेलन किसी ख़ास जाति या मज़हब के लोगों का ही जलसा है.

आख़िर में मैं आप से उम्मीद करता हूँ कि आप मेरे इस ख़त पर ध्यान देंगे और मेरी इस अपील को 'नया हिन्द' के ज़रिये दूसरों तक भी पहुँचा देंगे.

आपका—

रसूल अहमद 'अबोध'
वर्धा, 2. 6. 52

اِس بات پر ہر ایک کو بھروسہ تھا اور اب بھی ہے کہ
ں میں ونوبا جی، مشروواﻻجی' کاکا کالیلکر اور
پ جیسے لوگ ہیں . پر اب دن پر دن اِس بات کی
رورت محسوس ہوتی جا رہی ہے کہ اِس تحریک سے
چسپی لینے والے لوگ اِس تحریک کو کسی خاص
ہب اور جاتی کے لوگوں تک محدود ہونے سے بچاویں .

کیونکہ اگر سرودے تحریک تھوڑے سے لوگوں تک
محدود ہوکر رہ گئی تو اُس سے جو دیش کی بھلائی ہونے
ی ہے وہ نہ ہوسکیگی .

ہوسکتا ہے کہ آپ سرودے سمیلنوں کے ضرورت سے
ادہ ہندو رنگ کے بارے میں کہیں کہ اگر مسلمان یا
سرے غیر ہندو اِن سمیلنوں میں حصہ لینے لگیں تو
دو رنگ آپ سے آپ کم ہو جائے . مگر جب تک
سلمان ایسے سمیلنوں میں سرو سماجی پن کی فضا نہ
ئینگے وہ کیسے شامل ہوسکتے ہیں . اِس لئے تحریک
اگوا اور دوسرے لوگ جو ٹھیک معنی میں اُس میں
رو سماجی پن کی فضا پیدا کرنا چاہتے ہیں اُنہیں
اہئے کہ وہ خود ایک پل کے لئے نہ ایسا طریقہ اختیار
یں اور نہ دوسروں کو کرنے دیں جس سے غیر ہندوؤں کو
محسوس کرنے کا موقع ملے کہ سرودے سمیلن کسی
اص جات یا مذہب کے لوگوں کا ہی جلسہ ہے .

آخر میں میں آپ سے اُمید کرتا ہوں کہ آپ میرے
س خط پر دھیان دینگے اور میری اِس اپیل کو 'نیا ہند'
ذریعے دوسروں تک بھی پہنچا دینگے .

آپ کا—

رسول احمد 'ابودھ'
وردھا، 2 . 6 . 52

पिताजी के क़दमों पर

दीपचन्द कहलाते तो सेठ हैं पर हैं मिल के मैनेजर. बी. ए. पास हैं. क़ानून की डिगरी हासिल कर रखी है. जैन धर्म को मानते हैं. जैन धर्म के उसूलों की जानकारी उनको नहीं के बराबर है. वह छान कर पानी पीते हैं. मांस से उनको इतनी नफ़रत है कि कभी चिड़िया का बच्चा घोंसले से गिर कर उनके कमरे में आ जाय तो जब तक सारा कमरा न धुले तब तक वह उसमें अन्दर नहीं जा सकते. इस्लाम धर्म

پتاجی کے قدموں پر

دیپ چند کہلاتے تو سیٹھ ہیں پر ہیں مل کے منیجر.
ی . اے . پاس ہیں . قانون کی ڈگری حاصل کر رکھی
. جین دھرم کو مانتے ہیں . جین دھرم کے اُصولوں کی
جانکاری اُن کو نہیں کے برابر ہے . وہ چھان کر پانی پیتے
یں . مانس سے اُن کو اتنی نفرت ہے کہ کبھی چڑیا کا بچہ
ونسلے سے گرکر اُن کے کمرے میں آجائے تو جب تک سارا کمرہ
دھلے تب تک وہ اُسمیں اندر نہیں جاسکتے. اسلام دھرم

है जिसका सम्बन्ध उनके अपने समाज से है. कांगरेस तहरीक के दिनों में जब मुसलमान जमाग्रती तौर पर कांगरेस से अलग मिस्टर जिन्नाह के चारों तरफ़ जमा हो गए तो हमारे नेताओं ने समझा कि इसकी वजह मज़हब है पर इसकी असल वजह कांगरेस की वह फ़िज़ा (हवा) थी जिसमें मुसलमान अपने आपको ग़ैर या बेगाना महसूस करता था. उसी का नतीजा था कि मुसलमान पर एक ऐसा असर हुआ कि वह लीग के झंडे के नीचे जमा होकर उलटी तरफ़ मुड़ गया.

मैं आप से साफ़ साफ़ कह देना चाहता हूँ कि सवाल का सम्बन्ध इससे ज़रा भी नहीं है कि मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी से और क़ुरान से हवाले पेश किये जायें, बल्कि सवाल का सम्बन्ध फ़िज़ा से है. अगर किसी समाज की फ़िज़ा ऐसी है कि किसी मज़हब का आदमी अपने मज़हब और समाज के साथ रहते हुये उसमें अपने को बेगाना नहीं महसूस करता, तो इतना ही बस है. और अगर फ़िज़ा ऐसी नहीं है तो हरगिज़ दूसरों से कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिये.

आप को मालूम है कि मुल्क में कम्युनिस्टों की भी एक तहरीक है. इस तहरीक के बारे में हर एक को यह पता है कि यह तहरीक ग़ैर मज़हबी है, बल्कि उसमें अक्सर लोग मज़हब का मज़ाक़ उड़ाने वाले हैं, फिर भी उसमें मुसलमान ईसाई और दूसरे मज़हब के लोग हिन्दुओं के साथ और हिन्दू दूसरे मज़हब वालों के साथ इस तरह रहते हैं कि किसी को ज़रा भी परायापन महसूस नहीं होता.

पंडित जी, आप के यह कहने से कि विनोबा जी हिन्दू परम्परा में पले हैं, उनकी तालीम और तरबियत हिन्दू शास्त्रों, पुरानों और हिन्दू परम्परा पर हुई है—सवाल की अहमियत कम नहीं हो जाती. मौलाना मदनी की तहरीक में अगर इसलामी रंग ज़रूरत से ज़ियादा हो तो उस में भी हिन्दू नज़र न आयेंगे, फिर मौलाना मदनी गीता के कितने ही श्लोक क्यों न पढ़ के सुनायें.

इसलिये अगर किसी तहरीक में सर्व समाजीपन लाना है तो चाहे किसी भी परम्परा में तालीम और तरबियत हुई हो, ज़रूरत इसकी है कि उस तहरीक में सर्व समाजीपन की फ़िज़ा हो, और यह चीज़ तभी हो सकती है जब उस तहरीक से दिलचस्पी रखने वाले ईमानदारी और गम्भीरता से इसे महसूस करें.

देश की आज़ादी और बंटवारे के बाद देश के संजीदा लोगों को अगर किसी तहरीक से कोई उम्मीद थी तो वह सर्वोदय की तहरीक से थी. सर्वोदय की तहरीक अपने पूरे मानी में क्या है और क्या नहीं इसे तो कम लोग सोचते हैं,

ہے جس کا سمبندھ اُن کے اپنے سماج سے ہے . کانگریس تحریک کے دنوں میں جب مسلمان جماعتی طور پر کانگریس سے الگ مسٹر جناح کے چاروں طرف جمع ہوگئے تو ہمارے نیتاؤں نے سمجھا کہ اس کی وجہ مذہب ہے پر اس کی اصل وجہ کانگریس کی وہ فضا (ہوا) تھی جس میں مسلمان اپنے آپ کو غیر یا بے گانا محسوس کرتا تھا . اُسی کا نتیجہ تھا کہ مسلمان پر ایک ایسا اثر ہوا کہ وہ لیگ کے جھنڈے کے نیچے جمع ہو کر اُلٹی طرف مڑ گیا .

میں آپ سے صاف صاف کہدینا چاہتا ہوں کہ سوال کا سمبندھ اِس سے ذرا بھی نہیں ہے کہ محمد صاحب کی زندگی سے اور قرآن سے حوالے پیش کئے جائیں، بلکہ سوال کا سمبندھ فضا سے ہے . اگر کسی سماج کی فضا ایسی ہے کہ کسی مذہب کا آدمی اپنے مذہب اور سماج کے ساتھ رہتے ہوئے اُس میں اپنے کو بیگانا نہیں محسوس کرتا، تو اتنا ہی بس ہے . اور اگر فضا ایسی نہیں ہے تو ہرگز دوسروں سے کوئی اُمید نہیں رکھنی چاہئیے .

آپ کو معلوم ہے کہ ملک میں کمیونسٹوں کی بھی ایک تحریک ہے . اس تحریک کے بارے میں ہر ایک کو یہ پتہ ہے کہ یہ تحریک غیر مذہبی ہے، بلکہ اُس میں اکثر لوگ مذہب کا مذاق اُڑانے والے ہیں، پھر بھی اُس میں مسلمان عیسائی اور دوسرے مذہب کے لوگ ہندوؤں کے ساتھ اور ہندو دوسرے مذہب والوں کے ساتھ اِس طرح رہتے ہیں کہ کسی کو ذرا بھی پرایاپن محسوس نہیں ہوتا .

پنڈت جی، آپ کے یہ کہنے سے کہ ونوبا جی ہندو پرمپرا میں پلے ہیں، اُن کی تعلیم اور تربیت ہندو شاستروں، پرانوں اور ہندو پرمپرا پر ہوئی ہے—سوال کی اہمیت کم نہیں ہو جاتی . مولانا مدنی کی تحریک میں اگر اسلامی رنگ ضرورت سے زیادہ ہو تو اُس میں بھی ہندو نظر نہ آئینگے، پھر مولانا مدنی گیتا کے کتنے ہی شلوک کیوں نہ پڑھ کے سنائیں .

اِس لئے اگر کسی تحریک میں سرو سماجی پن لانا ہے تو چاہے کسی بھی پرمپرا میں تعلیم اور تربیت ہوئی ہو، ضرورت اِسکی ہے کہ اُس تحریک میں سرو سماجی پن کی فضا ہو، اور یہ چیز تبھی ہو سکتی ہے جب اُس تحریک سے دلچسپی رکھنے والے ایمانداری اور گمبھیرتا سے اِسے محسوس کریں .

دیش کی آزادی اور بٹوارے کے بعد دیش کے سنجیدہ لوگوں کو اگر کسی تحریک سے کوئی اُمید تھی تو وہ سرووُدے کی تحریک سے تھی . سرووُدے کی تحریک اپنے پورے معنی میں کیا ہے اور کیا نہیں اِسے تو کم لوگ سوچتے ہیں،

एक ख़त

[नीचे हम एक सच्चे और परखे हुए देश भक्त, वर्धा की हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के भाई रसूल अहमद 'अबोध' का एक ख़त दे रहे हैं. इस ख़त में उन्होंने जो 'अपील' की है उस से हम पूरी तरह सहमत हैं. हमें आशा है कि 'नया हिन्द' के पढ़ने वाले सर्वोदय प्रेमी इसे पढ़ कर उस पर गम्भीरता से विचार करेंगे और आइन्दा के सर्वोदय सम्मेलनों वग़ैरा में इससे पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश करेंगे—सुन्दरलाल]

मुकर्रमी पंडित सुन्दरलाल जी, बहुत बहुत सलाम.

मई के 'नया हिन्द' के सम्पादकीय नोट को जो सेवापुरी सर्वोदय सम्मेलन के सम्बन्ध में है, और ख़ास कर नोट के उस नवें नुक़्ते को पढ़ कर, जो सर्वोदय सम्मेलन और मुसलमानों से सम्बन्ध रखता है, बार बार जी में आया कि चन्द सतरें आप की सेवा में लिख भेजूं. इसलिये यह चन्द सतरें भेज रहा हूँ.

नोट के नवें नुक़्ते को पढ़ कर कई बातें सामने आईं, यानी आपने और एक भाई ने यह महसूस किया कि 'वहां का रंग ढंग और हवा ज़रूरत से ज़ियादा हिन्दू रंग लिए हुए थे. और कांगरेस की गिरी हुई हालत में भी जितने मुसलमान और ग़ैर हिन्दू उसके जलसों में दिखाई देते हैं सर्वोदय सम्मेलन में उतने भी नहीं दिखाई देते. मगर आप इसके साथ ही यह भी कहते हैं कि 'विनोबा जी का अपना दिल इस बारे में बिल्कुल साफ़ है, वह अपने भाशनों में मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी और क़ुरान और दूसरे धर्मों की किताबों से हवाले भी देते रहते हैं. उन्होंने क़ुरान को अच्छी तरह पढ़ा है, उसका उनके दिल में आदर है.'

इन सतरों को पढ़ कर मुझे लगा कि हमने हिन्दू मुसलिम सवाल को पिछले दिनों जिस ढंग से देखा और जिस तरह हमने उसे हल करने की कोशिश की, जिसकी वजह से कांगरेस जैसी क़ौमी जमाअत पर भी हिन्दू रंग चढ़ गया, वही निगाह और ढंग हमारा आज भी है.

यह निगाह और ढंग जिसे मैं ग़लत मानता हूँ सवाल को मज़हबी रंग में देखना है. पर सवाल की असल हैसियत मज़हबी नहीं बल्कि समाजी है, यानी रहन सहन, तौर तरीक़ा और तहज़ीब जो एक हद तक हिन्दू और मुसलमान में फ़र्क़ पैदा करती है. आज कितने ही हिन्दू और मुसलमान ऐसे हैं जिन्हें सब जानते हैं कि मज़हब और ईश्वर पर उन्हें ज़रा भी विश्वास नहीं है, लेकिन फिर भी उनका रहन सहन तौर तरीक़ा एक ख़ास ढंग का है, और वह ढंग वही

ایک خط

[نیچے ہم ایک سچے اور پرکھے ہوئے دیش بھکت، وردھا کی ہندستانی پرچار سبھا کے بھائی رسول احمد 'ابودھ' کا ایک خط دے رہے ہیں. اِس خط میں اُنہوں نے جو 'اپیل' کی ہے اُس سے ہم پوری طرح سہمت ہیں. ہمیں آشا ہے کہ 'نیا ہند' کے پڑھنے والے سرووِدے پریمی اِسے پڑھکر اِس پر گمبھیرتا سے وچار کرینگے اور آئندہ کے سرووِدے سمیلنوں وغیرہ میں اِس سے پورا فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرینگے—سندرلال]

مکرمی پنڈت سندر لال جی، بہت بہت سلام.

مئی کے 'نیا ہند' کے سمپادکیہ نوٹ کو جو سیوا پوری سرووِدے سمیلن کے سمبندھ میں ہے، اور خاص کر نوٹ کے اُس نویں نقطے کو پڑھکر، جو سرووِدے سمیلن اور مسلمانوں سے سمبندھ رکھتا ہے، بار بار جی میں آیا کہ چند سطریں آپ کی سیوا میں لکھ بھیجوں. اِس لئے یہ چند سطریں بھیج رہا ہوں.

نوٹ کے نویں نقطے کو پڑھکر کئی باتیں سامنے آئیں، یعنی آپ نے اور ایک بھائی نے یہ محسوس کیا کہ 'وہاں کا رنگ ڈھنگ اور ہوا ضرورت سے زیادہ ہندو رنگ لئے ہوئے تھے. اور کانگریس کی گری ہوئی حالت میں بھی جتنے مسلمان اور غیر ہندو اُس کے جلسوں میں دکھائی دیتے ہیں سرووِدے سمیلن میں اُتنے بھی نہیں دکھائی دیتے. مگر آپ اس کے ساتھ ہی یہ بھی کہتے ہیں کہ 'ونوبا جی کا اپنا دل اس بارے میں بالکل صاف ہے، وہ اپنے بھاشنوں میں محمد صاحب کی زندگی اور قرآن اور دوسرے دھرموں کی کتابوں سے حوالے بھی دیتے رہتے ہیں. اُنہوں نے قرآن کو اچھی طرح پڑھا ہے، اُس کا اُن کے دل میں آدر ہے.'

اِن سطروں کو پڑھکر مجھے لگا کہ ہم نے ہندو مسلم سوال کو پچھلے دنوں جس ڈھنگ سے دیکھا اور جس طرح ہم نے اُسے حل کرنے کی کوشش کی، جس کی وجہ سے کانگریس جیسی قومی جماعت پر بھی ہندو رنگ چڑھ گیا، وہی نگاہ اور ڈھنگ ہمارا آج بھی ہے.

یہ نگاہ اور ڈھنگ جسے میں غلط مانتا ہوں سوال کو مذہبی رنگ میں دیکھنا ہے. پر سوال کی اصل حیثیت مذہبی نہیں بلکہ سماجی ہے، یعنی رہن سہن، طور طریقہ اور تہذیب جو ایک حد تک ہندو اور مسلمان میں فرق پیدا کرتی ہے. آج کتنے ہی ہندو اور مسلمان ایسے ہیں جنہیں سب جانتے ہیں کہ مذہب اور ایشور پر اُنہیں ذرا بھی وشواس نہیں ہے، لیکن پھر بھی اُن کا رہن سہن طور طریقہ ایک خاص ڈھنگ کا ہے، اور وہ ڈھنگ وہی

मैंने बार बार कहा है कि न तो चीन की और न रूस की अर्थव्यवस्था हिन्दुस्तान के लिए फ़ायदेमंद होगी और जब तक वहां भी आज के समान राज को ज़ियादा से ज़ियादा से ताक़तवर बनाने का रुझान रहेगा तब तक सच्चा कम्युनिज़्म कभी क़ायम नहीं हो सकेगा.

जब तक यह देश अपनी ज़रूरत की चीज़ें बड़े बड़े कारखानों में पैदा कराते रहेंगे तब तक उन्हें हिंसा का सहारा लेना ही पड़ेगा और लोहे का परदा भी डाले रखना पड़ेगा. अगर अहिंसा की बुनियाद पर इन्सानी भाई चारा क़ायम करना हो तो विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की ही शरन लेनी पड़ेगी. इसलिए हथियारों वग़ैरा से लैस रहने से कभी शांति क़ायम न हो सकेगी.

इन साफ़ ज़ाहिर बातों को दुहराने की मुझे इसलिए ज़रूरत पड़ी क्योंकि गांधीवाद में पगे हुए श्री किशोर लाल भाई मशरूवाला और आचार्य कृपलानी जैसे प्रकांड पंडितों ने मेरी बातों पर एतराज़ उठाये हैं. ऐसा करते हुए उन्होंने यह नहीं देखा कि मैं न तो रूस के तरीक़ों का और न उसके हिंसात्मक उपायों का ही समर्थन कर रहा हूँ. मैंने सिर्फ़ उन लोगों की लगन, स्वार्थ-त्याग, आम जनता की भलाई करने की इच्छा, किसी भी काम को उठा लेने पर उसमें आख़िर तक अड़े रहने की आदत और हर एक मसले को जी तोड़कर हल करने की तबियत वग़ैरा गुनों की तारीफ़ की है. हमारे देश में इन गुनों की भारी कमी है. हिंसा के बारे में अगर हम देखें तो हम एटम बम, नेपम बम इस्तेमाल करने वालों से और बीमारी फैलाने वालों से सहयोग कर रहे हैं. क्या हम अपनी आवाज़ उठाकर उनसे असहयोग ज़ाहिर करते हैं ? फिर रूसी लोग ही हमें अछूत क्यों मालूम होने चाहिये ? क्या वह भी ईश्वर की रचना नहीं हैं ? आज हिन्दुस्तान में जिस हद तक गांधीवाद चालू है, या अमरीका में अहिंसा चालू है, उसी हद तक रूस या चीन में साम्यवाद चालू है. फिर हम एक दूसरे से ज़ियादा पाक होने की डींग क्यों मारें ? हमें तो नम्रता और खुले दिल की उदारता इख़्तयार करनी चाहिये.

میں نے بار بار کہا ہے کہ نہ تو چین کی اور نہ روس کی ہی ارتھ ویوستھا ہندستان کے لئے فائدےمند ہوگی اور جب تک وہاں بھی آج کے سمان راج کو زیادہ سے زیادہ طاقتور بنانے کا رجحان رہے گا تب تک سچا کمیونزم کبھی قائم نہیں ہو سکے گا.

جب تک یہ دیش اپنی ضرورت کی چیزیں بڑے بڑے کارخانوں میں پیدا کراتے رہیں گے تب تک انہیں ہنسا کا سہارا لینا ہی پڑے گا اور لوہے کا پردہ بھی ڈالے رکھنا پڑے گا. اگر اہنسا کی بنیاد پر انسانی بھائی چارہ قائم کرنا ہو تو وکیندرت ارتھ ویوستھا کی ہی شرن لینی پڑے گی. اِس لئے ہتھیاروں وغیرہ سے لیس رہنے سے کبھی شانتی قائم نہ ہوسکے گی.

اِن صاف ظاہر باتوں کو دہرانے کی مجھے اِس لئے ضرورت پڑی کیونکہ گاندھی واد میں پگے ہوئے شری کشور لال بھائی مشرو والا اور آچاریہ کرپلانی جیسے پرکانڈ پنڈتوں نے میری باتوں پر اعتراض اُٹھائے ہیں. ایسا کرتے ہوئے اُنہوں نے یہ نہیں دیکھا کہ میں نہ تو روس کے طریقوں کا اور نہ اُس کے ہنسانمک اُپایوں کا ہی سمرتھن کر رہا ہوں. میں نے صرف اُن لوگوں کی لگن' سوارتھ تیاگ' عام جنتا کی بھلائی کرنے کی اِچھا' کسی بھی کام کو اُٹھا لینے پر اُس میں آخر تک اڑے رہنے کی عادت اور ہر ایک مسئلے کو جی توڑ کر حل کرنے کی طبیعت وغیرہ گنوں کی تعریف کی ہے. ہمارے دیش میں اِن گنوں کی بھاری کمی ہے. ہنسا کے بارے میں اگر ہم دیکھیں تو ہم ایٹم بم' نیپم بم استعمال کرنے والوں سے اور بیماری بم چھوڑنے والوں سے سہیوگ کر رہے ہیں. کیا ہم اپنی آواز اُٹھاکر اُن سے اسہیوگ ظاہر کرتے ہیں؟ پھر روسی لوگ ہی ہمیں اچھوت کیوں معلوم ہونے چاہئیے ؟ کیا وہ بھی ایشور کی رچنا نہیں ہیں ؟ آج ہندستان میں جس حد تک گاندھی واد چالو ہے یا امریکہ میں ہنسا چالو ہے' اُسی حدتک روس یا چین میں سامیہ واد چالو ہے. پھر ہم ایک دوسرے سے زیادہ پاک ہونے کی ڈینگ کیوں ماریں؟ ہمیں تو نمرتا اور کھلے دل کی اُدارتا اختیار کرنی چاہئے.

"सच्चे सुधार का, सच्ची सभ्यता का लक्षन परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार और इच्छा पूर्वक घटाना है. ज्यों ज्यों परिग्रह घटाइये त्यों त्यों सच्चा सुख और सच्चा संतोश बढ़ता है, सेवा शक्ति बढ़ती है."

—बापू

"سچے سدھار کا' سچی سبھیتا کا لکشن پری گرہ بڑھانا نہیں ہے' بلکہ اُس کا وچار اور اِچھا پوروک گھٹانا ہے. جیوں جیوں پری گرہ ہٹائیے تیوں تیوں سچا سکھ اور سچا سنتوش بڑھتا ہے' سیوا شکتی بڑھتی ہے."

—باپو

इतनी फिक्र बाकी नहीं है कि वह योगी राज कृष्ण की तरह एकदम कूद कर इस साड़ी खींचने का अन्त कर दे, और उन खेतों को फिर लहलहाने दे जो घरेलू छीना झपटी में बरबाद हो गये.

4. 7. 52. —भगवानदीन

रूस और चीन

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

मेरे रूस और जापान सम्बन्धी अनुभवों का मेरे पुराने और सच्चे साथी भी जिस तरह जिक्र करते हैं उस से साफ़ दिखाई देता है कि उन देशों की अर्थ व्यवस्था के बारे में मेरा असली रुख वह नहीं समझ पाये हैं.

इन्सान अपनी जरूरतें किस तरीक़े से पूरी करते हैं उसे देख कर उन को पांच दर्जों में किस तरह बांटा जा सकता है इसका मैंने अपनी 'ग्राम आन्दोलन क्यों ?' 'अस्थाई अर्थ व्यवस्था' वग़ैरा किताबों में जिक्र किया है. अपना मतलब सब से ऊपर रखने और हिंसा का इस्तेमाल करने की कम या ज़ियादा जरूरत के मुताबिक़ उनके पांच दर्जे इस तरह किये जा सकते हैं: (1) आदमखोर, (2) लुटेरे, (3) कारोबारी, (4) गिरोह बन्द और (5) सेवा भावी. मैंने वहां यह भी दिखाया है कि पहले दो की मिसाल पूंजी वाद और साम्राज वाद हैं जो फ़ौज, नौदल और हवाई दल के बूते पर अपनी धाक जमाये रहते हैं, तीसरे की मिसाल ब्योपार और खेती हैं, चौथे की मिसाल समाज वाद है और सेवा प्रधान गांधीवाद यह सब से ऊंचे पांचवें दर्जे की मिसाल है. यह किताबें क़रीब बीस बरस पहले लिखी गई थीं और गांधी जी ने उन की प्रस्तावना भी लिखी थी. मेरी चीन और रूस की यात्राओं ने मेरी यह धारनायें और पक्की कर दी हैं. अगर रूसी अर्थ व्यवस्था को हम सरकारी पूंजी वाद भी कहें तो भी वह सच्चे कम्यूनिज़्म से बहुत दूर है, क्योंकि सच्चे कम्यूनिज़्म में सरकार ऐसी कोई चीज़ ही नहीं रह सकती. फिर भी चूंकि वहां की हकूमतों की सरे आम कोशिश ही जनता की भलाई करना है इसलिए वह हकूमतें साम्राजवादी हकूमतों से कहीं बढ़ी चढ़ी हैं और गांधीवाद के लिए ज़ियादा नजदीक हैं.

اتنی فکر باقی نہیں ھے کہ وہ یوگی راج کرشن کی طرح ایک دم کود کر اس ساڑی کھینچنے کا انت کردے' اور ان کھیتوں کو پھر لہلہانے دے جو گھریلو چھینا جھپٹی میں برباد ہوگئے .

4 . 7 . '52 —بھگوان دین

روس اور چین

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپا)

میرے روس اور جاپان سمبندھی انوبھوں کا میرے پرانے اور سچے ساتھی بھی جس طرح ذکر کرتے ھیں اس سے صاف دکھائی دیتا ھے کہ ان دیشوں کی ارتھ ویوستھا کے بارے میں میرا اصلی رخ وہ نہیں سمجھ پائے ھیں .

اِنسان اپنی ضرورتیں کس طریقے سے پوری کرتے ھیں اسے دیکھکر ان کو پانچ درجوں میں کس طرح بانٹا جا سکتا ھے اِس کا میں نے اپنی 'گرام آندولن کیوں؟' 'استھائی ارتھ ویوستھا' وغیرہ کتابوں میں ذکر کیا ھے . اپنا مطلب سب سے اوپر رکھنے اور ہنسا کا استعمال کرنے کی کم یا زیادہ ضرورت کے مطابق ان کے پانچ درجے اِس طرح کئے جاسکتے ھیں: (1) آدم خور' (2) لٹیرے' (3) کاروباری' (4) گروہ بند اور (5) سیوا بھاوی. میں نے وہاں یہ بھی دکھایا ھے کہ پہلے دو کی مثال پونجی واد اور سامراج واد ھیں جو فوج' نو دل اور ہوائی دل کے بوتے پر اپنی دھاک جمائے رہتے ھیں' تیسرے کی مثال بیوپار اور کھیتی ھیں' چوتھے کی مثال سماج واد ھے اور سیوا پردھان گاندھی واد یہ سب سے اونچے پانچویں درجے کی مثال ھے . یہ کتابیں قریب بیس برس پہلے لکھی گئی تھیں اور گاندھی جی نے ان کی پرستاونا بھی لکھی تھی. میری چین اور روس کی یاتراؤں نے میری یہ دھارنائیں اور پکی کردی ھیں . اگر روسی ارتھ ویوستھا کو ھم سرکاری پونجی واد بھی کہیں تو بھی وہ سچے کمیونزم سے بہت دور ھے' کیونکہ سچے کمیونزم میں سرکار ایسی کوئی چیز ہی نہیں رہ سکتی . پھر بھی چونکہ وہاں کی حکومتوں کی سرے عام کوشش ہی جنتا کی بھلائی کرنا ھے اس لئے وہ حکومتیں سامراجوادی حکومتوں سے کہیں بڑھی چڑھی ہیں اور گاندھی واد کے لئے زیادہ نزدیک ھیں .

ाही की गई, पर इससे क्या वह मालिक तो बन
उसे मालिक मानना पड़ेगा. अगर किसी पुलिस
यहां रोज़ साफ़ करने आने वाला मेहतर पार्लिया-
मेम्बर हो जाय और वह बेमतलब ही उस पुलिस
दो गाली दे बैठे तो क्या पुलिस वाला उसे गोली
देगा. वह तो गोली के बदले गाली भी न दे सकेगा,
त भी न कर सकेगा, मुक़द्दमा अदालत में दायर
र भी उसे आसानी से अदालत में आने के लिए
भी न कर सकेगा. अगर पार्लियामेन्ट के मेम्बरों ने
फ़ाज़त इस हद तक कर ली है तो क्या यह उनके
क है कि वह जिनके प्रतिनिधि हैं उन्हें इस तरह
के रहम पर छोड़ दें. अगर चुनाव मंडलों को अपने
धियों को वापस बुला लेने का अधिकार होता तो
ाज हमको 'यू. पी. में तेलंगाना' लेख पढ़ने को

लेया की घटना कितनी ही छोटी क्यो न हो और
रेपोर्ट कितनी ही बढ़ा कर क्यों न लिखी गई हो
रूर है जिसे बड़े से बड़े अन्याय का बीज कहा जा
है.

ा को कम करने और अहिंसा की राह में आगे
 लिए यह बिल्कुल ज़रूरी है कि सरकारी अफ़सर
ो इज़्ज़त की नज़र से देखना शुरू करें और यह
रेकल पाठ नहीं है. किसने अपनी आंखों यह नहीं
 जब किसी के मां बाप या गुरू पागल हो जाते हैं
 बेटे और चेले उनको पकड़ कर बन्द करने और
 से बांधने में भी उनकी इज़्ज़त को धक्का नहीं
 देते. मार खा कर भी हंसते जाते हैं और बांधने
 करते जाते हैं. जब सरकारी अफ़सरों और पुलिस
ता के लिए सच्ची इज़्ज़त जाग जायगी तब भी
लाने का मौक़ा आ सकता है और गोली चलानी
ती है. पर बाक़ी जनता का दिल नहीं दुखेगा. पुलिस
लाफ़ ग़ुस्सा नहीं आवेगा. इज़्ज़त का सबक़ न
और अफ़सरों को टोटे में रक्खेगा न सरकार को.

 लिखने की हमें ज़रूरत नहीं कि जनता को चाहिये
 पुलिस सरकारी अफ़सरों और सरकार को प्यार
र से देखे क्योंकि यह काम तो जनता अपने आप
लगेगी. जिस दिन पुलिस और सरकारी अफ़सर
 को यह महसूस करा देंगे कि जनता मालिक है
 कि वह पुलिस की हैसियत से जो कुछ करते हैं
 एक तरह से उन्हीं का यानी जनता का हुक्म

बरस बीत चुके बलिया के जवान जेलों में हैं. क्या
काफ़ी नहीं है ? और क्या यू. पी. की सरकार

کی ہو نہیں کہو پائی، پر اس سے کیا وہ مالک تو بن گئی
ہے . اُسے مالک ماننا پڑیگا . اگر کسی پولیس والے کے یہاں
روز صاف کرنے آنے والا مہتر پارلیامینٹ کا ممبر ہو جائے
اور وہ بے مطلب ہی اُس پولیس والے کو دو گالی دے بیٹھے
تو کیا پولیس والا اُسے گولی سے مار دیگا. وہ تو گولی کے بدلے
گالی بھی نہ دے سکیگا، شکایت بھی نہ کر سکیگا، مقدمہ
عدالت میں دائر کرنے پر بھی اُسے آسانی سے عدالت میں
آنے کے لئے مجبور بھی نہ کر سکیگا . اگر پارلیامنٹ
کے ممبروں نے اپنی حفاظت اس حد تک کر لی ہے
تو کیا یہ اُن کے لئے ٹھیک ہے کہ وہ جنکے پرتی ندھی
ہیں اُنہیں اس طرح پولیس کے رحم پر چھوڑ دیں .
اگر چناؤ منڈلوں کو اپنے پرتی ندھیوں کو واپس بلا لینے کا
ادھیکار ہوتا تو کیا آج ہم کو، یو پی میں تیلنگانا لیکھ
پڑھنے کو ملتا ؟

بلیا کی گھٹنا کتنی ہی چھوٹی کیوں نہ ہو اور
اُس کی رپورٹ کتنی ہی بڑھا کر کیوں نہ لکھی گئی ہو
ایسی ضرور ہے جسے بڑے سے بڑے انیائے کا بیج کہا جا
سکتا ہے .

ہنسا کو کم کرنے اور اہنسا کی راہ میں آگے بڑھنے کے
لئے یہ بالکل ضروری ہے کہ سرکاری افسر جنتا کو عزت کی
نظر سے دیکھنا شروع کریں . اور یہ کچھ مشکل پاٹھ نہیں
ہے . کسنے اپنی آنکھوں یہ نہیں دیکھا کہ جب کسی کے
ماں باپ یا گرو پاگل ہو جاتے ہیں تو ان کے بیٹے اور
چیلے ان کو پکڑ کر بند کرنے اور زنجیر سے باندھنے میں
بھی ان کی عزت کو دھکا نہیں پہونچنے دیتے . مار کھاکر
بھی ہنستے جاتے ہیں اور باندھنے کا کام کرتے جاتے ہیں .
جب سرکاری افسروں اور پولیس میں جنتا کے لئے سچی
عزت جاگ جائے گی تب بھی گولی چلانے کا موقع آسکتا
ہے اور گولی چلانی پڑ سکتی ہے پر باقی جنتا کا دل نہیں
دکھیگا. پولیس کے خلاف غصہ نہیں آوے گا . عزت کا سبق
نہ پولیس اور افسروں کو ٹوٹے میں رکھیگا نہ سرکار کو .

یہ لکھنے کی ہمیں ضرورت نہیں کہ جنتا کو چاہئے
کہ وہ پولیس سرکاری افسروں اور سرکار کو پیار کی نظر سے
دیکھے کیونکہ یہ کام تو جنتا اپنے آپ کرنے لگیگی. جس دن
پولیس اور سرکاری افسر جنتا کو یہ محسوس کرا دینگے کہ
جنتا مالک ہے اور یہ کہ وہ پولیس کی حیثیت سے جو
کچھ کرتے ہیں وہ بھی ایک طرح سے اُنہیں کا یعنی جنتا
کا حکم ہوتا ہے .

دو برس بیت چکے بلیا کے جوان جیلوں میں ہیں .
کیا اتنی تکلیف کافی نہیں ہے ؟ اور کیا یو . پی کی سرکار

ठीक इसी तरह बलिया कानफ्रेंस को रोकने के लिए हथियार बन्द पुलिस भेजना गोली चलाने से कम नहीं. पर सरकारें आदी हैं कहीं भी हथियार बन्द पुलिस भेज देने की और हिन्दुस्तान की जनता आदी है उसे बर्दाश्त कर लेने की. यही हाल है उन पत्रकारों का जो अपने आपको जनता का वकील समझते हैं और यही हाल है पार्लियामेन्ट के मेम्बरों का जो अपने आपको जनता का प्रतिनिधि मानते हैं.

निहत्थी जनता के खिलाफ़ हथियार बन्द पुलिस या फ़ौज को खड़ी देख कर जनता के दिल में इतनी नफ़रत पैदा होनी लगनी चाहिये कि सब एक साथ छी छी करने लगें. सब हमारा ख्याल है छी छी मन्त्र बन उठेगा हथियार बन्द पुलिस को लौटना पड़ेगा और जनता का बिगड़ा हुआ गिरोह अपने आप अपनी हद के अन्दर आ जायगा और सरकार की बेजा चिन्ता दूर हो जाया करेगी. निहत्थे का मुक़ाबला हथियार से करना न बहादुरी है न बराबरी, वह तो बुज़दिली है, कायरता है और फिर ओछापन तो है ही.

जब यूनो नाम की दुनिया भर की बड़ी पंचायत बीसियों मुल्कों को कोरिया पर चढ़ा कर अपने ओछेपन को नहीं समझ पा रही तो एक जिले की पुलिस ओछेपन को कैसे समझ सकती है.

हिन्दुस्तान अंगरेज़ी ज़माने को छोड़ कर कभी इतना गिरा हुआ नहीं रहा कि निहत्थों पर हाथ उठाये. हिन्दू मुसलमान सब सरकारें अंगरेज़ों से पहले इस बात का बहुत ध्यान रखती थीं. हो सकता है इतिहास जिसे हम झूटी किताब कहते हैं हमारी इस बात के खिलाफ़ दसियों मिसालें पेश कर दे तब हमें यह कहते हुए हिचक नहीं होगी कि अगर वैसा हुआ तो वह ओछापन ही था. फिर चाहे वह अशोक का हो, विक्रमादित्य का हो, अकबर का हो, शिवाजी का हो या औरंगज़ेब का हो.

बलिया में सन 1942 में अंगरेज़ी सरकार ने बलिया वालों से बदला ले कर ओछेपन का सबूत दिया. उस ओछेपन को सारे हिन्दुस्तान ने ओछापन कहा. कांग्रेस ने वकील बन कर कहा. अंगरेज़ी सरकार देखने को तो नहीं शरमाई पर जी में शरमाई. ऐसे ही ओछपन से अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान छोड़ कर जाना पड़ा. पर बलिया से गये तो अंगरेज़ ही हैं, अंगरेज़ियत कहां गई है. अंगरेज़ी ढंग की अफ़सरियत कहां गई है ? अंगरेज़ी ढंग की बदला लेने की स्पिरट कहां गई है ? अभी तक सब जगह की तरह बलिया में भी अंगरेज़ों की अंगरेज़ी ढंग की तालीम पाये हुए अफ़सर हैं और तालीम पाई हुई पुलिस. यह ठीक है बलिया की जनता मालिक बन कर भी अभी तक गुलामी

ٹھیک اسی طرح بلیا کانفرنس کو روکنے کے لئے ہتھیار بند پولیس بھیجنا گولی چلانے سے کم نہیں۔ پر سرکاریں عادی ہیں کہیں بھی ہتھیار بند پولیس بھیج دینے کی اور ہندستان کی جنتا عادی ہے اسے برداشت کر لینے کی۔ یہی حال ہے ان پترکاروں کا جو اپنے آپ کو جنتا کا وکیل سمجھتے ہیں اور یہی حال ہے پارلیامنٹ کے ممبروں کا جو اپنے آپ کو جنتا کا پرتی ندھی مانتے ہیں۔

نہتھی جنتا کے خلاف ہتھیار بند پولیس یا فوج کو کھڑی دیکھ کر جنتا کے دل میں اتنی نفرت پیدا ہونی لگنی چاہئے کہ سب ایک ساتھ چھی چھی کرنے لگیں۔ تب ہمارا خیال ہے وہ چھی چھی منتر بن اٹھیگا اور ہتھیار بند پولیس کو لوٹنا پڑیگا اور جنتا کا بگڑتا ہوا گروہ اپنے آپ اپنی حد کے اندر آ جائیگا اور سرکار کی بیجا چنتا دور ہو جایا کریگی۔ نہتھے کا مقابلہ ہتھیار سے کرنا نہ بہادری ہے نہ برابری، وہ تو بزدلی ہے، کایرتا ہے اور پھر اوچھاپن تو ہے ہی۔

جب یونو نام کی دنیا بھر کی بڑی پنچایت بیسیوں ملکوں کو کوریا پر چڑھا کر اپنے اوچھے پن کو نہیں سمجھ پا رہی تو ایک ضلعے کی پولیس اوچھے پن کو کیسے سمجھ سکتی ہے۔

ہندستان انگریزی زمانے کو چھوڑ کر کبھی اتنا گرا ہوا نہیں رہا کہ نہتھوں پر ہاتھ اٹھائے۔ ہندو مسلمان سب سرکاریں انگریزوں سے پہلے اس بات کا بہت دھیان رکھتی تھیں۔ ہوسکتا ہے اتہاس جسے ہم جھوٹی کتاب کہتے ہیں ہماری اس بات کے خلاف دسیوں مثالیں پیش کردے تب ہمیں یہ کہتے ہوئے ہچک نہیں ہوگی کہ اگر ویسا ہوا تو وہ اوچھاپن ہی تھا۔ پھر چاہے وہ اشوک کا ہو، وکرمادتیہ کا ہو، اکبر کا ہو، شیواجی کا ہو یا اورنگ زیب کا ہو۔

بلیا میں سن 1942 میں انگریزی سرکار نے بلیا والوں سے بدلہ لے کر اوچھے پن کا ثبوت دیا۔ اس اوچھے پن کو سارے ہندستان نے اوچھاپن کہا۔ کانگریس نے وکیل بن کر کہا۔ انگریزی سرکار دیکھنے کو تو نہیں شرمائی پر جی میں شرمائی۔ ایسے ہی اوچھے پن سے انگریزوں کو ہندستان چھوڑ کر جانا پڑا۔ پر بلیا سے گئے تو انگریز ہی ہیں، انگریزیت کہاں گئی ہے۔ انگریزی ڈھنگ کی افسریت کہاں گئی؟ انگریزی ڈھنگ کی بدلہ لینے کی اسپرٹ کہاں گئی ہے؟ ابھی تک سب جگہ کی طرح بلیا میں بھی انگریزوں کی انگریزی ڈھنگ کی تعلیم پائے ہوئے افسر ہیں اور تعلیم پائی ہوئی پولیس۔ یہ ٹھیک ہے بلیا کی جنتا مالک بن کر بھی ابھی تک غلامی

ह है हमारा बलिया. जी में आता है इसे बलिया न कर 'बला लिया' लिखा जाय क्योंकि बलिया की : हमेशा उस पर कोई न कोई बला लाये रखती है. ी के दीवाने बला से बच भी कब पाये हैं ? फिर ऽतने ही भले क्यों न हों. बरनार्ड शा के लफ़्ज़ों में—भला होना भी गुनाह है.

मारी निगाह में बलिया के इतिहास ने बलिया को ऊंचा उठा दिया है कि अगर हम पुलिस की सब यों को एकदम बनावटी बात मान लें और सिर्फ़ र ही एतबार करें कि उसने कानफ्रेंस को ज़बरदस्ती ञ्या तब भी हमें उतना ही बुरा मालूम होगा जितना को यह सारे ज़ुल्म सुन कर बुरा मालूम होता है.

. इस बात में न जा सकते हैं न जाना चाहते हैं न ज़ुल्मों का होना कमेटी को लोगों ने बताया लकुल ठीक हैं, या कुछ घटा बढ़ा कर कहे गए हैं.

न 1947 के बाद से हिन्दुस्तान की जनता अपने ो भले ही रैयत मानती हो पर अब वह किसी की रही नहीं. अब तो विधान की रू से हिन्दुस्तान की मिलकियत है. हिन्दुस्तान की सरकार के लिए : बना कर "जनता ने दिया है." किसने जनता को आंखों उन मेम्बरों को चुनते नहीं देखा जिनसे आज कार बनी है, जिन मम्बरों ने जवाहरलाल नेहरू को बड़ा वज़ीर बनाया है और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जपति की गद्दी पर बिठाया.

नता अपने मालिकपने को जाने या न जाने पर र और सरकारी नौकरों को जनता को ऐसे ही मालिक समझना ज़रूरी है जैसे राजा वाले मुल्क तीन बरस के राजा को भी राजा मानते हैं और साथ राजा का सा बर्ताव करते हैं. यह ठीक है राजा ी से उतारे जाते हैं, देश बाहर किये जाते हैं, मौत ज़ा पाते हैं पर एक तरीक़े के अन्दर, वैसे ही तान की मालिक जनता का अगर एक हिस्सा किसी से ऐसे काम कर बैठे जो मालिक को शोभा नहीं i उसके साथ सख़्ती का बरताव किया जा सकता एक तरीक़े के साथ. और कम से कम ऐसा कोई बलिया के मामले में बरता गया मालूम नहीं होता.

ुओं को पकड़ने के लिए हथियार बन्द पुलिस भेजी . पर किसी शराबी को गिरफ़्तार करने के लिए . बन्द पुलिस भेजना बेवक़ूफ़ी ही नहीं ज़ुल्म भी है. ब डराना ज़ुल्म है क्योंकि डर से मौत हो जाती है. अफ़सर की बाज़ार में टोपी उतार लेना उसका सिर ैसा जैसा है. हो सकता है वही अफ़सर ऐसी ती बर्दाश्त न कर सके और आत्म हत्या कर बैठे.

یہ ہے ہمارا بلیا . جی میں آتا ہے اسے بلیا نہ لکھکر ' بلا لیا ' لکھا جائے کیونکہ بلیا کی قسمت ہمیشہ اس پر کوئی نہ کوئی بلا لئے رکھتی ہے . آزادی کے دیوانے بلا سے بچ بھی کب پائے ہیں ؟ پھر وہ کتنے ہی بھلے کیوں نہ ہوں . برناڈشا کے لفظوں میں—بہت بھلا ہونا بھی گناہ ہے .

ہماری نگاہ میں بلیا کے اتہاس نے بلیا کو اتنا اونچا اٹھا دیا ہے کہ اگر ہم پولیس کی سب سٹوریوں کو ایک دم بناوٹی بات مان لیں اور صرف اتنے پر ہی اعتبار کریں کہ اس نے کانفرنس کو زبردستی بھنگ کیا تب بھی ہمیں اتنا ہی برا معلوم ہوگا جتنا کسی کو یہ سارے ظلم سن کر برا معلوم ہوتا ہے .

ہم اس بات میں نہ جاسکتے ہیں اور نہ جانا چاہتے ہیں کہ جن ظلموں کا ہونا کمیٹی کو لوگوں نے بتایا وہ بالکل ٹھیک ہیں' یا کچھ گھٹا بڑھا کر کہے گئے ہیں .

سن 1947 کے بعد سے ہندستان کی جنتا اپنے آپ کو بھلے ہی رعیت مانتی ہو پر اب وہ کسی کی ' رعیت ' رہی نہیں . اب تو ودھان کی رو سے ہندستان جنتا کی ملکیت ہے . ہندستان کی سرکار کےلئے ودھان بنا کر "جنتا نے دیا ہے ." کس نے جنتا کو اپنی آنکھوں ان ممبروں کو چنتے نہیں دیکھا جن سے آجکی سرکار بنی ہے' جن ممبروں نے جواہر لال نہرو کو اپنا بڑا وزیر بنایا ہے اور ڈاکٹر راجیندر پرساد کو راج پتی کی گدی پر بیٹھایا .

جنتا اپنے مالک پنے کو جانے یا نہ جانے پر سرکار اور سرکاری نوکروں کو جنتا کو ایسے ہی اپنا مالک سمجھنا ضروری ہے جیسے راجہ والے ملک اپنے تین برس کے راجہ کو بھی راجہ مانتے ہیں اور اس کے ساتھ راجہ کا سا برتاؤ کرتے ہیں . یہ ٹھیک ہے راجا بھی گدی سے اتارے جاتے ہیں' دیش باہر کئے جاتے ہیں' موت کی سزا پاتے ہیں پر ایک طریقے کے اندر' ویسے ہی ہندستان کی مالک جنتا کا اگر ایک حصہ کسی وجہ سے ایسے کام کر بیٹھے جو مالک کو شوبھا نہیں دیتے تو اس کے ساتھ سختی کا برتاؤ کیا جا سکتا ہے پر ایک طریقے کے ساتھ . اور کم سے کم ایسا کوئی طریقہ بلیا کے معاملے میں برتا گیا معلوم نہیں ہوتا .

ڈاکوؤں کو پکڑنے کے لئے ہتھیار بند پولیس بھیجی جاتی ہے پر کسی شرابی کو گرفتار کرنے کے لئے ہتھیار بند پولیس بھیجنا بیوقوفی ہی نہیں ظلم بھی ہے . بے مطلب ڈرانا ظلم ہے کیونکہ ڈر سے موت ہو جاتی ہے . کسی افسر کی بازار میں ٹوپی اتار لینا اس کا سر کاٹ لینا جیسا ہے . ہو سکتا ہے وہی افسر ایسی بے عزتی برداشت نہ کر سکے اور آتم ہتیا کر بیٹھے .

इससे पहले कोई ग़ैर सरकारी पूछ ताछ कमेटी वहां गई ऐसा पता नहीं चलता.

बलिया ज़िले का इतिहास अपने ढंग का निराला है. वहां के लोग कुछ ऐसी मिट्टी के बने हुए हैं कि बड़ी जल्दी उनमें आज़ादी की लहर उठ खड़ी होती है और आज़ादी की ख़ातिर बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी कर बैठना उनके लिए मामूली बात है. सन 1857 में अंगरेज़ों को बाहर निकालने में उन्होंने जी जान से कोशिश की और असफल रहने के बाद वह मुसीबतें सहीं जिनको सुनकर फ़ौजी जवान भी कांप उठ सकते हैं.

उन्नीसवीं सदी के ख़त्म होते होते एक से ज़ियादा बार उनमें आज़ादी की लहर आई जिसे अंगरेज़ी सरकार ने दबा दिया.

बलिया की ज़िन्दगी में मुश्किल से कोई दस बरस ऐसे मिलेंगे जब उनमें आज़ादी की लहर नहीं दौड़ जाती. और यह एक ऐसी चीज़ है जिसका हर देश को अभिमान होना चाहिये. बलिया के नाते हर हिन्दुस्तानी को अभिमान होना चाहिये और हिन्दुस्तानी सरकार का यह काम होना चाहिये कि वह उनके इस जज़बे की क़दर करे और देश की भलाई के लिए उसका अच्छे से अच्छा उपयोग करे.

सन 1942 में दिल्ली में बैठे बैठे अंगरेज़ी सरकार के ख़िलाफ़ जब बलिया वालों के कारनामों की ख़बरें हम तक पहुँचती थीं तो हमारी बाछें खिल उठती थीं. फिर सिफ़त यह कि अहिंसा के उसूलों पर वह इतने कारबन्द रहे कि गांधीवादी भी दांतों तले उंगली दबा गए. और क़ाबलियत यह दिखाई कि बलिया ने चीतू पांडे नामी एक सरदार दिया जिसने एक हफ़्ते से ज़ियादा बलिया पर ऐसा राज किया कि ज़िले भर में डकैती तो क्या छोटी से छोटी चोरी भी नहीं हुई. सरकारी अफ़सर जो एक तरह से उनके दुश्मन थे वह भी इतने आराम में रहे और इतने बेफ़िक्री की नींद सो सके जितनी उस राज में उन्हें सोने को न मिली थी जिसके वह नौकर थे.

इसी बलिया पर फिर अंगरेज़ी सरकार के ज़ुल्मों की कहानी हमें दिल्ली बैठे बैठे ही सुनने को मिली. और वह ज़ुल्म भी इतने ज़ोर के थे जिनको सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो जाते थे. उन दिनों कांगरेस नामी एक दिलदार संस्था मौजूद थी जिसके किसी मेम्बर ने उन ज़ुल्मों के फ़ोटो भी लिए थे. वह फ़ोटो जनता और एसेम्बली तक पहुँचे.

यह सब ज़ुल्म बलिया ने सन 1942 में बर्दाश्त किये और कहा जाता है आठ बरस बाद सन 1950 में वही बलिया उन ज़ुल्मों का शिकार हुआ जिनका ऊपर ज़िक्र है.

اس سے پہلے کوئی غیر سرکاری پوچھ تاچھ کمیٹی وہاں گئی ایسا پتا نہیں چلتا .

بلیا ضلعے کا اِتہاس اپنے ڈھنگ کا نرالا ہے . وہاں کے لوگ کچھ ایسی مٹی سے بنے ہوئے ہیں کہ بڑی جلدی اُن میں آزادی کی لہر اٹھ کھڑی ہوتی ہے اور آزادی کی خاطر بڑی سے بڑی قربانی کر بیٹھنا اُن کے لئے معمولی بات ہے . سن 1857 میں انگریزوں کو باہر نکالنے میں انہوں نے جی جان سے کوشش کی اور اسپھل رہنے کے بعد وہ مصیبتیں سہیں جن کو سن کر فوجی جوان بھی کانپ اُٹھ سکتے ہیں .

انیسویں صدی کے ختم ہوتے ہوتے ایک سے زیادہ بار اُن میں آزادی کی لہر آئی جسے انگریزی سرکار نے دبا دیا.

بلیا کی زندگی میں مشکل سے کوئی دس برس ایسے ملینگے جب اُن میں آزادی کی لہر نہیں دوڑ جاتی . اور یہ ایک ایسی چیز ہے جس کا ہر دیش کو ابھیمان ہونا چاہئے . بلیا کے ناتے ہر ہندستانی کو ابھیمان ہونا چاہئے اور ہندستانی سرکار کا یہ کام ہونا چاہئے کہ وہ اُن کے اس جزبے کی قدر کرے اور دیش کی بھلائی کے لئے اسکا اچھے سے اچھا اپیوگ کرے .

سن 1942 میں دلی میں بیٹھے بیٹھے انگریزی سرکار کے خلاف جب بلیا والوں کے کارناموں کی خبریں ہم تک پہنچتی تھیں تو ہماری باچھیں کھل اُٹھتی تھیں . پھر صفت یہ کہ اہنسا کے اُصولوں پر وہ اتنے کاربند رہے کہ گاندھی‌وادی بھی دانتوں تلے انگلی دبا گئے . اور قابلیت یہ دکھائی کہ بلیا نے چیتو پانڈے نامی ایک سردار دیا جسنے ایک ہفتے سے زیادہ بلیا پر ایسا راج کیا کہ ضلعے بھر میں ڈکیتی تو کیا چھوٹی سے چھوٹی چوری بھی نہیں ہوئی . سرکاری افسر جو ایک طرح سے اُن کے دشمن تھے وہ بھی اتنے آرام میں رہے اور اتنے بے فکری کی نیند سو سکے جتنی اُس راج میں انہیں سونے کو نہ ملی تھی جس کے وہ نوکر تھے .

اسی بلیا پر پھر انگریزی سرکار کے ظلموں کی کہانی ہمیں دلی بیٹھے بیٹھے ہی سننے کو ملی . اور وہ ظلم بھی اتنے زور کے تھے جن کو سن کر ہمارے رونگٹے کھڑے ہو جاتے تھے . ان دنوں کانگریس نامی ایک دلدار سنستھا موجود تھی جسکے کسی ممبر نے اُن ظلموں کے فوٹو بھی لئے تھے . وہ فوٹو جنتا اور اسمبلی تک پہونچے .

یہ سب ظلم بلیا نے سن 1942 میں برداشت کئے اور کہا جاتا ہے آٹھ برس بعد سن 1950 میں وہی بلیا اُن ظلموں کا شکار ہوا جن کا اوپر ذکر ہے.

बलिया की तक़दीर

यू. पी. का तेलंगाना' सिरनामे से एक लेख हमें देखने [cut off]ला है जो यू. पी. के बलिया ज़िले से सम्बन्ध रखता [cut off] लेख कई अख़बारों में निकल चुका है. हमारा ख़्याल है [cut off] ग़ौर करने के लिए वह लेख लिखा गया है उनकी [cut off] से ज़रूर गुज़र गया होगा.

[cut off]ने वालों के लिए हम कुछ इशारे नीचे देते हैं जिससे [cut off] नोट को समझने में आसानी हो.

[cut off]ह यह हैं:—

[cut off]. सुर्ख़ी है—यू. पी. का ते[cut off]

[cut off]. बलिया के गांव वालों की दुख भरी ज़िन्दगी.

[cut off]. किसी कानफ़्रेन्स का होना.

[cut off]. पुलिस की नाराज़गी और गोली चलने तक की [cut off]आ जाना.

[cut off]. एक पूछताछ कमेटी का इलाहाबाद से जाना. उस [cut off]छ के नतीजे की ख़ास बातें यह हैं.

[cut off]क) मकानों का पुलिस के हाथों लुटना, और आग [cut off]ना.

[cut off]ख) पुलिस के हाथों औरतों, मर्दों की मार पीट [cut off] इफ़्फ़ाती.

[cut off]ग) पुलिस के बूटों से एक तीन दिन के बच्चे का [cut off] जाना, पुलिस का एक तीन चार बरस की लड़की को [cut off] और उसका बायां हाथ जल कर हमेशा के लिये [cut off]हो जाना. पुलिस की मार से एक दस बरस के बच्चे [cut off]र पांव बेकार हो जाना.

[cut off]घ) एक आदमी का पुलिस की गोली से वहीं पर [cut off]ना, और दसियों का घायल हो जाना.

[cut off] सरकार का इस तरफ़ ध्यान दिलाना और कहना [cut off]ग इस वक़्त कम से कम यह चाहते हैं कि जिनके [cut off] मुक़दमे चल रहे हैं और जो जेल में हैं उनको [cut off]जी क़ैदी माना जाय और उनके बचाव के लिए [cut off] वकील का सुभीता हो और मौक़ा मिले.

[cut off] सब बातों पर कुछ लिखने से पहले हम अपने पढ़ने [cut off]को यह बता देना चाहते हैं कि यह मार्के की घटना [cut off] ज़िले की है और दो बरस से ज़ियादा पुरानी है.

[cut off]ताछ कमेटी इसी गये जून के महीने में वहां पहुँची [cut off]सी के एक मेम्बर मुजीब रिज़वी साहब की क़लम से [cut off] यह लेख है जिसका ख़ुलासा हमने ऊपर दिया है.

بلیا کی تقدیر

'یو پی کا تیلنگانا' سر ہند سے ایک لیکھ ہمیں دیکھنے کو ملا ہے جو یو۔ پی کے بلیا ضلعے سے سمبندھ رکھتا ہے۔ وہ لیکھ کئی اخباروں میں نکل چکا ہے۔ ہمارا خیال ہے جن کے غور کرنے کے لئے وہ لیکھ لکھا گیا ہے اُن کی نظروں سے ضرور گذر گیا ہوگا۔

پڑھنے والوں کے لئے ہم کچھ اِشارے دیتے ہیں جس سے ہمارے نوٹ کو سمجھنے میں آسانی ہو۔

وہ یہ ہیں:—

1. سرخی—ہے یو۔ پی کا تیلنگانا۔
2. بلیا کے گاؤں والوں کی دکھ بھری زندگی۔
3. کسی کانفرنس کا ہونا۔
4. پولیس کی ناراضگی اور گولی چلنے تک کی نوبت آ جانا۔
5. ایک پوچھ تاچھ کمیٹی کا الہ آباد سے جانا۔ اس پوچھ تاچھ کے نتیجے کی خاص باتیں یہ ہیں۔

(ک) مکانوں کا پولیس کے ہاتھوں لٹنا' اور آگ سے جلنا۔

(کھ) پولیس کے ہاتھوں عورتوں' مردوں کی مار پیٹ اور بے عزتی۔

(گ) پولیس کے بوٹوں سے ایک تین دن کے بچے کا کچلا جانا' پولیس کا ایک تین چار برس کی لڑکی کو ڈھکیلنا اور اس کا بایاں ہاتھ جل کر ہمیشہ کے لئے بیکار ہو جانا۔ پولیس کی مار سے ایک دس برس کے بچے کے ہاتھ اور پاؤں بیکار ہو جانا۔

(گھ) ایک آدمی کا پولیس کی گولی سے وہیں پر مرجانا' اور دسیوں کا گھایل ہو جانا۔

6. سرکار کا اس طرف دھیان دلانا اور کہنا کہ لوگ اس وقت کم سے کم یہ چاہتے ہیں کہ جن کے خلاف مقدمے چل رہے ہیں اور جو جیل میں ہیں اِن کو راج کاجی قیدی مانا جائے اور ان کے بچاؤ کے لئے اچھے وکیل کا سبھیتا ہو اور موقع ملے۔

اِن سب باتوں پر کچھ لکھنے سے پہلے ہم اپنے پڑھنے والوں کو یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ یہ مارکے کی گھٹنا بلیا ضلعے کی ہے اور دو برس سے زیادہ پرانی ہے۔

پوچھ تاچھ کمیٹی اِسی گئے جون کے مہینے میں وہاں پہنچی اور اُسی کے ایک ممبر مجیب رضوی صاحب کی قلم سے لکھا ہوا ہے یہ لیکھ ہے جس کا خلاصہ ہم نے اوپر دیا ہے۔

कताई मंडल के मेम्बरों को अगर केन्द्रीय संचालन वादी समाज व्यवस्था के बदले में विकेन्द्रित स्वावलंबी समाज व्यवस्था के आधार पर ग्राम राज क़ायम करना है तो इस काम की सबसे ज़ियादा ज़िम्मेवारी उन्हीं पर आती है. इसलिए उन्हें बालिग़ तालीम के इस हिस्से को अपने हाथ में लेना होगा और गांव के नौजवानों का कैम्प, स्वाध्याय मंडल और आम सभाओं का संगठन करना होगा. उनकी हफ़्तेवारी बैठक में ज़ियादा से ज़ियादा तादाद में ग़ैर मेम्बरों को भी बुला कर इस काम में तेज़ी लानी होगी. जिस क्रांतिकारी प्रोग्राम के फैलाने के लिए कताई मंडल बनाये गए हैं उसे आगे बढ़ाने के लिए इसी तरह के प्रोग्रामों की ख़ास अहमियत है.

चुनाव के कारन जनता में कुछ बुरा और भला दोनों असर हुए हैं. चुनाव के सिलसिले में जहां जुदा जुदा दलों और उम्मीदवारों ने अज्ञान जनता को गुमराह करने की कोशिश की वहां आपस की बहस और चर्चा से उनकी आंखें भी काफ़ी खुल गईं. उनमें अपने आप ही काफ़ी राजकाजी चेतना फैली और जानकारी भी मिली. इतना गन्दा वातावरन होते हुए भी चुनाव का यह एक अच्छा नतीजा हुआ.

उम्मीदवारों और दलों के ज़हरीले प्रचार के कारन जो घातक असर हुआ उसमें जात पातवाद का विकास ख़ास कर हुआ. ब्राह्मन अब्राह्मन, जाट बनिया कायस्थ, भूमिहर, कुर्मी अहीर, वग़ैरा भेद भाव ही नहीं फैला बल्कि गौड़ कान्यकुब्ज वग़ैरा जात दरजात का भी बाज़ार काफ़ी गर्म रहा. प्रांत वार ईर्षा-द्वेश का सिर भी काफ़ी ऊंचा रहा. ऐसी भावनाओं का विकास मुल्क को कहां ले जायगा इसका ख़्याल आते ही कपकपी होती है. इस पर हरएक दल के मेम्बर और रचनात्मक कार्यकर्ता को गम्भीरता से विचार करना होगा.

इसके अलावा चुनाव के कारन जनता के दिल में नेताओं के लिए आस्था भी घटी है. आज गांव गांव और बाज़ार बाज़ार में अच्छे से अच्छे नेताओं के बारे में जिस हलकेपन से चर्चा होती है वह किसी भी मुल्क के नेताओं के लिए शोभा नहीं देता. ऐसी हालत में आज जनता बे-लगाम जैसी हो जाय तो उसमें अचरज ही क्या है?

कताई मंडलों और रचनात्मक कार्यकर्ताओं को इन मसलों पर भी ध्यान देना होगा. उन्हें अपनी जान देकर भी सूबाई और जात पात के ज़हर को मिटाना होगा और इस कश्मकश के बाहर अपने त्याग और तपस्या से देश में आस्थादार रहनुमाई क़ायम करनी होगी.

کتائی منڈل کے ممبروں کو اگر کیندریہ سنچالن وادی سماج ویوستھا کے بدلے میں وکیندرت سوابلمبی سماج ویوستھا کے آدھار پر گرام راج قائم کرنا ہے تو اس کام کی سب سے زیادہ ذمہ واری انہیں پر آتی ہے ۔ اس لئے انہیں بالغ تعلیم کے اِس حصے کو اپنے ہاتھ میں لینا ہوگا اور گاؤں کے نوجوانوں کا کیمپ، سوادھیائے منڈل اور عام سبھاؤں کا سنگھٹن کرنا ہوگا ۔ اُن کی ہفتہ واری بیٹھک میں زیادہ سے زیادہ تعداد میں غیر ممبروں کو بھی بلاکر اِس کام میں تیزی لانی ہوگی ۔ جس کرانتکاری پروگرام کے پھیلانے کے لئے کتائی منڈل بنائے گئے ہیں اسے آگے بڑھانے کے لئے اسی طرح کے پروگراموں کی خاص اہمیت ہے ۔

چناؤ کے کارن جنتا میں کچھ برا اور بھلا دونوں اثر ہوئے ہیں. چناؤ کے سلسلے میں جہاں جدا جدا دلوں اور امیدواروں نے اگیان جنتا کو گمراہ کرنے کی کوشش کی وہاں آپس کی بحث اور چرچا سے اُن کی آنکھیں بھی کافی کھل گئیں. اُن میں اپنے آپ ہی کافی راج کاجی چیتنا پھیلی اور جانکاری بھی ملی. اِتنا گندا واتاورن ہوتے ہوئے بھی چناؤ کا یہ ایک اچھا نتیجہ ہوا ۔

امیدواروں اور دلوں کے زہریلے پرچار کے کارن جو گھاتک اثر ہوا اُس میں جات پات واد کا وکاس خاص کر ہوا ۔ براہمن ابراہمن، جاٹ بنیا، کائستھ بھومی ہر، کرمی اہیر وغیرہ بھید بھاؤ ہی نہیں پھیلا بلکہ گوڑ کانیہ کبج وغیرہ جات درجات کا بھی بازار کافی گرم رہا. پرانت وار ایرشا دویش کا سر بھی کافی اُونچا رہا ۔ ایسی بھاؤناؤں کا وکاس ملک کو کہاں لے جائیگا اِس کا خیال آتے ہی کپکپی ہوتی ہے. اس پر ایک دل کے ممبر اور رچناتمک کاریہ کرتا کو گمبھیرتا سے وچار کرنا ہوگا ۔

اِس کے علاوہ چناؤ کے کارن جنتا کے دل میں نیتاؤں کے لئے آستھا بھی گھٹی ہے ۔ آج گاؤں گاؤں اور بازار بازار میں اچھے سے اچھے نیتاؤں کے بارے میں جس ہلکےپن سے چرچا ہوتی ہے وہ کسی بھی ملک کے نیتاؤں کے لئے شوبھا نہیں دیتا ۔ ایسی حالت میں آج جنتا بےلگام جیسی ہو جائے تو اُس میں اچرج ہی کیا ہے ؟

کتائی منڈلوں اور رچناتمک کاریہ کرتاؤں کو اِن مسئلوں پر بھی دھیان دینا ہوگا ۔ اُنہیں اپنی جان دے کر بھی صوبائی اور جات پات کے زہر کو مٹانا ہوگا اور اِس کشمکش کے باہر رہ کر اپنے تیاگ اور تپسیا سے دیش میں آستھادار رہنمائی قائم کرنی ہوگی ۔

हुए रास्ते से देश की आर्थिक और समाजी संगठन
ीक़ों को नज़र अन्दाज़ करके पश्छिमी तरीक़ों को
ने से क्या वह मुल्क को बचा सकेंगे? इन तमाम
पर विचार करके उन्हें अगले पांच साल का प्रोग्राम
ना होगा.

ांगरेस विरोधी दलों को भी सोचना होगा कि उन्हें
उम्मीद होते हुए भी इस क़दर क्यों हार खानी पड़ी.
ायिक या फ़िरक़ेवाराना नारों पर चलने वालों दलों
ोचना चाहिये कि जनता उनके साथ नहीं है. उन्हें
ना चाहिये कि भारत में गांधी जी के शहीद होने के
ाथ साम्प्रदायिकता की आग बुझ चुकी है. आज
छ दिखाई दे रहा है वह केवल राख ही है. वह फिर
ाई नहीं जा सकती.

ूसरे विरोधी दलों को यह सोचना होगा कि जब
तपस्वी को उसकी तपस्या के फलस्वरूप इन्द्र गद्दी
ो है तो वह इन्द्र पुरी में चाहे जितना ऐश और आराम
रहे उसका आसन तब तक टल नहीं सकता है
क दूसरा कोई आदमी उससे ज़ियादा तपस्या नहीं
ेता. इसलिए उन्हें भी अपने बारे में गंभीर विचार
नता को आज के विकट सवालों के हल करने के
ज़बरदस्त त्याग और जी तोड़ तपस्या करनी होगी.
लिए अपने जीवन की आहुति देनी होगी. तभी
के दरबार में वह अपनी जगह बना कर आगे बढ़
हैं न कि दूसरों की कमज़ोरी बता कर.

ुनाव से देश की और अलग अलग दलों की असली
का पता तो चला ही लेकिन आम जनता की हालत
और उस पर चुनाव का असर क्या हुआ—इन
ातों की भी जानकारी हुई. जगह जगह से जिस तरह
ीब बातों की सूचना मिलती रही उससे जनता के
या जहालत का काफ़ी परिचय मिला. इससे
ात्मक कार्यकर्ता के सोचने के लिए काफ़ी मसाला
है. आम तौर पर जहां रचनात्मक संस्था या
र्ता काम करते रहे वहां की जनता में ख़ास होश
नहीं दिया. इसलिए जहां राजकाजी दलों को देश
के निश्चित मार्गों पर चलने के लिए विचार करना
ां रचनात्मक कार्यकर्ताओं को भी यह सोचना होगा
. बालिग़ वोट तक के कारन पैदा हुई हालत में
भी कोई काम है या नहीं. उन्हें जनता को नागरिकता
और फ़र्ज़ के सिखाने की ज़िम्मेवारी उठानी होगी
सके लिए ठोस प्रोग्राम पर विचार करना होगा.
नात्मक केन्द्र के कार्यकर्ताओं को इस तरह कार्य-क्रम
र काम करना होगा जिससे उनके केन्द्र स्थान के
ास की तमाम जनता बाहोश नागरिक बन सके.

بتائے ہوئے راستے سے دیش کی آرتھک اور سماجی
سنگھٹن کے طریقوں کو نظر انداز کرکے پچھمی طریقوں کو
اپنانے سے کیا وہ ملک کو بچا سکینگے؟ اِن تمام باتوں پر
وچار کرکے اُنھیں اگلے پانچ سال کا پروگرام طے کرنا ہوگا ۔

کانگریسی ورودھی دلوں کو بھی سوچنا ہوگا کہ اُنھیں
اتنی اُمید ہوتے ہوئے بھی اِس قدر کیوں ہار کھانی پڑی۔
سامپردائک یا فرقہ وارانہ نعروں پر چلنے والوں دلوں کو
سوچنا چاہئے کہ جنتا اُن کے ساتھ نہیں ہے ۔ اُنھیں
سمجھنا چاہئے کہ بھارت میں گاندھی جی کے شہید ہونے
کے ساتھ ساتھ سامپردائکتا کی آگ بجھ چکی ہے ۔ آج جو
کچھ دکھائی دے رہا ہے وہ کیول راکھ ہی ہے ۔ وہ پھر سے
جلائی نہیں جاسکتی ۔

دوسرے ورودھی دلوں کو یہ سوچنا ہوگا کہ جب کسی
تپسوی کو اُسکی تپسیا کے پھل سوروپ اِندر گدی ملتی
ہے تو وہ اِندر پوری میں چاہے جتنا عیش اور آرام کرتا
رہے اُس کا آسن تب تک نہیں ٹل سکتا ہے جب تک
دوسرا کوئی آدمی اُس سے زیادہ تپسیا نہیں کرلیتا ۔ اِس
لئے اُنھیں بھی اپنے بارے میں گمبھیر وچار کر جنتا کو
آج کے وکٹ سوالوں کے حل کرنے کے لئے زبردست تیاگ
اور جی توڑ تپسیا کرنی ہوگی ۔ اُس کے لئے اپنے جیون کی
آہوتی دینی ہوگی ۔ تبھی جنتا کے دربار میں وہ اپنی
جگہ بناکر آگے بڑھ سکتے ہیں نہ کہ دوسروں کے کمزوری
بتاکر ۔

چناؤ سے دیش کی اور الگ الگ دلوں کی اصلی
صورت کا پتہ تو چلا ہی لیکن عام جنتا کی حالت کیا
ہے اور اُس پر چناؤ کا اثر کیا ہوا—اِن دونوں باتوں کی
بھی جانکاری ہوئی۔ جگہ جگہ سے جس طرح کی عجیب
باتوں کی سوچنا ملتی رہی اُس سے جنتا کے اگیان یا
جہالت کا کافی پریچے ملا ۔ اِس سے رچناتمک کاریہ کرتا کو
سوچنے کے لئے کافی مسالہ ملتا ہے ۔ عام طور پر جہاں
رچناتمک سنستھا یا کاریہ کرتا کام کرتے رہے وہاں بھی
جنتا میں خاص ہوش دکھائی نہیں دیا ۔ اِس لئے
جہاں راج کاجی دلوں کو دیش سیوا کے نشچت مارگوں پر
چلنے کے لئے وچار کرنا ہے، وہاں رچناتمک کاریہ کرتاؤں کو
بھی یہ سوچنا ہوگا کہ کیا بالغ ووٹ تک کے کارن پیدا
ہوئی حالت میں اُن کا بھی کوئی کام ہے یا نہیں، اُنھیں
جنتا کو ناگرکتا کے حق اور فرض کے سکھانے کی ذمے واری
اُٹھانی ہوگی اور اُس کے لئے ٹھوس پروگرام پر وچار کرنا
ہوگا ۔ ہر رچناتمک کیندر کے کاریہ کرتاؤں کو اِس طرح
کاریہ کرم بناکر کام کرنا ہوگا جس سے اُن کے کیندر استھان
کے آس پاس کی تمام جنتا با ہوش ناگرک بن سکے ۔

आम चुनाव और रचनात्मक कार्यकर्ता

(धीरेन्द्र मजूमदार)

आज़ाद भारत का आम चुनाव पूरा हुआ. जुदा जुदा सूबों में मंत्री मंडल भी बन गए हैं. संसार के इतिहास में इतनी बड़ी संख्या में मतदान से सरकार बनाने की कोई भी मिसाल नहीं मिलती है. सारा संसार चाव के साथ इस बड़े भारी प्रयोग को देख रहा था. लोग कुछ डरते भी थे. वह समझते थे कि इस काम को भारत संभाल नहीं सकेगा. बहुत बड़ी तादाद में मारपीट और क़िस्म क़िस्म की हिंसा की भरमार हो जायगी. लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ. सभी क्षेत्रों के चुनाव की व्यवस्था ठीक-ठीक हो गई. जनता ने भी शांति पूर्वक मतदान किया. इससे भारत के अन्दरूनी आत्मा की सेहत ही ज़ाहिर होती है.

लेकिन जहाँ चुनाव की इस विराट सफलता से हमें खुशी मनाना है वहाँ देश के अलग अलग दलों की असली पोल जिस प्रकार खुली उस पर भी हमें गंभीरता पूर्वक विचार करना है. क्योंकि जब जनतंत्र के आधार पर ही मुल्क को संगठित करना है तो यह ज़रूरी होगा कि उसकी ज़िम्मेवारी किसी न किसी दल पर हो.

पहला और कामयाब दल काँगरेस है. काँगरेस की ऐसी जगह होना क़ुदरती ही था. काँगरेस नाम के पुराने इतिहास को देखते हुए अगर ऐसा न होता तो ताज्जुब की बात होती. लेकिन इस दल को भी चुनाव के नतीजों पर विशेष ध्यान देना होगा. जिस नाम से पिछले 65 बरस तक देश भर में केवल एक ही क़ौमी दल रहा है, जिसके नाम पर लगातार देश के सभी देश भक्त अपने जीवन की आहुति देते रहे हैं. आज़ादी के बाद पहले चुनाव के मौक़े पर जितने फ़ी सदी वोट मिले वह काँगरेस के पिछले इतिहास के लिए शोभा की बात नहीं हैं. उन्हें तो सौ फ़ी सदी वोट मिलने चाहिये थे. लेकिन ऐसा न होकर कुल मिला कर बहुमत भी नहीं मिला. इसलिए उन्हें सोचना होगा कि आखिर बात क्या है कि इतने दिनों से जमा किया हुआ समाज सेवा का "बैंक बैलेन्स" होते हुए भी उन्हें इतना कम वोट मिला. क्या इतने थोड़े दिनों में ही साठ साल से जमा किया हुआ "बैलेन्स" भुना डाला या और कोई बात है? आज जब पाँच साल के लिए मुल्क की बागडोर इस दल के हाथ में आई है तो उन्हें समझना होगा कि यह मौक़ा उनके लिए अग्नि परीक्षा का है. उन्हें अपनी कमज़ोरियों की जाँच करके उन्हें दूर करना होगा. साथ-साथ यह बात भी सोचनी होगी कि जिस युग पुरुष महात्मा गाँधी के मार्ग दर्शन में उन्हें आज़ादी मिली उन्हीं के

عام چناؤ اور رچناتمک کاریہ کرتا

(دھیریندر مزومدار)

آزاد بھارت کا عام چناؤ پورا ہوا . جدا جدا صوبوں میں منتری منڈل بھی بن گئے ہیں. سنسار کے اتہاس میں اتنی بڑی سنکھیا میں متدان سے سرکار بنانے کی کوئی بھی مثال نہیں ملتی ہے . سارا سنسار چاؤ کے ساتھ اِس بڑے بھاری پریوگ کو دیکھ رہا تھا . لوگ کچھ ڈرتے بھی تھے. وہ سمجھتے تھے کہ اِس کام کو بھارت سنبھال نہیں سکے گا . بہت بڑی تعداد میں مارپیٹ اور قسم قسم کی ہنسا کی بھرمار ہو جائے گی . لیکن ایسا کچھ نہیں ہوا . سبھی چھیتروں کے چناؤ کی ویوستھا ٹھیک ٹھیک ہوگئی. جنتا نے بھی شانتی پوروک متدان دیا. اِس سے بھارت کے اندرونی آتما کی صحت ہی ظاہر ہوتی ہے .

لیکن جہاں چناؤ کی اِس وراٹ سپھلتا سے ہمیں خوشی منانا ہے وہاں دیش کے الگ الگ دلوں کی اصلی پول جس پرکار کھلی اُس پر بھی ہمیں گمبھیرتا پوروک وچار کرنا ہے . کیونکہ جب جن تنتر کے آدھار پر ہی ملک کو سنگھٹت کرنا ہے تو یہ ضروری ہوگا کہ اُس کی ذمہ داری کسی نہ کسی دل پر ہو.

پہلا اور کامیاب دل کانگریس ہے . کانگریس کی ایسی جگہ ہونا قدرتی ہی تھا . کانگریس نام کے پرانے اتہاس کو دیکھتے ہوئے اگر ایسا نہ ہوتا تو تعجب کی بات ہوتی . لیکن اِس دل کو بھی چناؤ کے نتیجوں پر وشیش دھیان دینا ہوگا . جس نام سے پچھلے 65 برس تک دیش بھر میں کیول ایک ہی قومی دل رہا ہے' جس کے نام پر لگاتار دیش کے سبھی دیش بھکت اپنے جیون کی آہوتی دیتے رہے ہیں . آزادی کے بعد پہلے چناؤ کے موقعے پر جتنے فیصدی ووٹ ملے وہ کانگریس کے پچھلے اتہاس کے لئے شوبھا کی بات نہیں ہے . اُنہیں تو سو فیصدی ووٹ ملنے چاہئے تھے . لیکن ایسا نہ ہوکر کل ملاکر بہومت بھی نہیں ملا . اس لئے اُنہیں سوچنا ہوگا کہ آخر بات کیا ہے کہ اِتنے دنوں سے جمع کیا ہوا سماج سیوا کا "بینک بیلنس" ہوتے ہوئے بھی اُنہیں اتنا کم ووٹ ملا . کیا اِتنے تھوڑے دنوں میں ہی ساٹھ سال سے جمع کیا ہوا "بیلنس" بھنا ڈالا یا اور کوئی بات ہے ؟ آج جب پانچ سال کے لئے ملک کی باگ ڈور اِس دل کے ہاتھ میں آئی ہے تو اُنہیں سمجھنا ہوگا کہ یہ موقع اُن کے لئے اگنی پریکھشا کا ہے . اُنہیں اپنی کمزوریوں کی جانچ کرکے اُنہیں دور کرنا ہوگا . ساتھ ساتھ یہ بات بھی سوچنی ہوگی کہ جس یگ پرش مہاتما گاندھی کے مارگ درشن میں اُنہیں آزادی ملی اُنہیں کے

रह गेसी भी वस्था ख्याल है कि विधान ने जिस भाषा
कारी भाषा क़रार दिया है वह वही भाषा है जिसे
मा गांधी हिन्दुस्तानी कहा करते थे और जिसे एक
तक कांगरेस क़ौमी ज़बान या राष्ट्र भाषा कहा करती
यह सही है कि दो लिखावटों के बजाय अब सिर्फ़ एक
खावट रहेगी और भाषा का नाम भी हिन्दी होगा
असल भाषा की तारीफ़ और इसको फैलाने, बढ़ाने,
देने और परवान चढ़ाने के लिए जो ख़ास निदेश
rective) दिये गये हैं वह वही हैं जो हम चाहते
चाहते हैं. हम जानते और मानते हैं कि भाषा और
ट में गहरा सम्बन्ध है ज़रूर मगर वह अलग अलग
. एक अनपढ़ मुल्क में तो लिखावट की अहमियत
भी कम होती है. नाम से भी असलियत पर कोई
नहीं पड़ सकता बशरते कि नाम बदलने वाले
यत के बदलने पर न तुले हों. ग़रज़ हिन्दी नाम और
लिखावट से लाज़मी तौर पर हिन्दुस्तानी की
यत में फ़र्क़ आना साबित नहीं हो सकता.

, यह और बात है कि विधान में राज भाषा का नाम
वालों की यह चाल हो कि नाम की टीका तो
तानी की तरह होगी मगर सचमुच जो भाषा इस्तेमाल
वह पंडिताना, संस्कृताना और बनारसीयाना हिन्दी
इस क़िस्म की हिन्दी के हामी विधान बनाते वक़्त
महसूस कर रहे थे कि महात्मा जी के उसूलों की
अपने मुख़ालफ़त कामयाब नहीं होगी और कांगरेस
बड़े नेता अपनी ज़िन्दगी में अपने ही हाथों महात्मा
तमाम असूलों को नहीं छोड़ेंगे. इसलिये वह हिन्दी
स्तानी टीका पर राज़ी हो गये मगर शुरू से वह न
भाषाई निदेश के मुआफ़िक़ थे, इसे न उन्होंने
और न चला रहे हैं, न आयन्दा चलाना चाहते हैं.

सी सूरत में हिन्दुस्तानी पक्ष के पातियों का यह और
र्ज़ है कि वह विधानी हिन्दी को चलाने की कोशिश
कि हिन्दी के नाम से ऐसी भाषा तरक़्क़ी करे जो सच
दुस्तानी हो. इन को पूरा विश्वास है कि हिन्दी
र्दू के होते हुए भी एक और ज़बान की ज़रूरत है.

. (बाक़ी फिर)

کی ترہ میرا بھی یہ خیال ہے کہ ودھان نے جس بھاشا کو
سرکاری بھاشا قرار دیا ہے وہ وہی بھاشا ہے جسے مہاتما
گاندھی ہندستانی کہا کرتے تھے اور جسے ایک مدت تک
کانگریس قومی زبان یا راشٹر بھاشا کہا کرتی تھی ۔ یہ
سہی ہے کہ دو لکھاوٹوں کے بجائے اب صرف ایک ہی لکھاوٹ
رہیگی اور بھاشا کا نام بھی ہندی ہوگا مگر اصل بھاشا
کی تاریف اور اس کو پھیلانے، بڑھانے، ترقی دینے اور پروان
چڑھانے کے لئے جو خاص ندیش (Directive) دیئے گئے ہیں
وہ وہی ہیں جو ہم چاہتے تھے اور چاہتے ہیں ہم جانتے اور
مانتے ہیں کہ بھاشا اور لکھاوٹ میں گہرا سمبندھ ہے ضرور مگر وہ
الگ الگ چیزیں ہیں ۔ ایک انپڑھ ملک میں تو لکھاوٹ
کی اہمیت اور بھی کم ہوتی ہے ۔ نام سے بھی اصلیت پر
کوئی اثر نہیں پڑ سکتا بشرطیکہ نام بدلنے والے اصلیت
کے بدلنے پر نہ تلے ہوں ۔ غرض ہندی نام اور ناگری لکھاوٹ
سے لازمی طور پر ہندستانی کی اصلیت میں فرق آنا
ثابت نہیں ہوسکتا ۔

ہاں، یہ اور بات ہے کہ ودھان میں راج بھاشا کا نام
بدلنے والوں کی یہ چال ہو کہ نام کی ٹیکا تو ہندستانی
کی ترہ ہوگی مگر سچ مچ جو بھاشا استعمال ہوگی وہ
پنڈتانہ، سنسکرتیانہ اور بنارسیانہ ہندی ہوگی ۔ اس
قسم کی ہندی کے حامی ودھان بناتے وقت شاید محسوس
کر رہے تھے کہ مہاتما جی کے اصولوں کی سولہوں آنے
مخالفت کامیاب نہیں ہوگی اور کانگریس کے بڑے بڑے
نیتا اپنی زندگی میں اپنے ہی ہاتھوں مہاتما جی کے تمام
اصولوں کو نہیں چھوڑیں گے ۔ اس لئے وہ ہندی کی
ہندستانی ٹیکا پر راضی ہوگئے مگر شروع سے وہ نہ تو اس
بھاشائی ندیش کے موافق تھے، اسے نہ انہوں نے چلایا اور
نہ چلا رہے ہیں، نہ آیندہ چلانا چاہتے ہیں ۔

ایسی صورت میں ہندستانی پکش کے پاتیوں کا یہ
اور بھی فرض ہے کہ وہ ودھانی ہندی کو چلانے کی کوشش
کریں تاکہ ہندی کے نام سے ایسی بھاشا ترقی کرے جو سچ
مچ ہندستانی ہو ۔ ان کو پورا وشواس ہے کہ ہندی اور
اردو کے ہوتے ہوئے بھی ایک اور زبان کی ضرورت ہے ۔
(باقی پھر)

हिन्दुस्तानी पर बंटवारे का असर.

कुछ लोगों का विचार है कि बंटवारे के बाद राष्ट्र भाषा की हैसियत से उरदू या हिन्दुस्तानी का कोई सवाल बाक़ी ही नहीं रहा. अगर भारत के मुसलमान उरदू को अपनी घरेलू भाषा की हैसियत से रखना चाहें तो और बात है मगर इसकी उम्मीद ही नहीं कि करोड़ों हिन्दू इसको अपनाये रहेंगे. ख़ास कर जब से विधान ने हिन्दी को क़ौमी ज़बान क़रार दे दिया है, उरदू या हिन्दुस्तानी का सवाल उठाना राजद्रोह या बग़ावत है.

इस एतराज़ का यह जवाब है कि पहले तो विधान ने हिन्दी को क़ौमी भाषा नहीं राज भाषा क़रार दिया है. विधान या सरकार के ज़रिये, ख़ास कर इसके हुक्म से, भाषा का मसला हल नहीं हो सकता. क़ौमी भाषा बनाना न बनाना तमामतर जनता की मर्ज़ी है. जनता चाहेगी तो हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाएगी और इसको सरकारी हिन्दी पसन्द न आए, या वह इसके लिए बहुत कठिन या अजनबियाना निकले तो वह भाषा सिर्फ़ दफ़्तरों, रिपोर्टों, विद्याई संस्थाओं में दाख़ला पायेगी. मगर बाज़ारों, मेलों, जात्राओं, उरसों, स्टेशनों, दुकानों, सड़कों, बंकों, गीतों और फ़िल्मों में कोई और ज़बान या सरकारी भाषा से अलग ज़बान बोली जायगी.

भारत की पार्लियामेन्ट ने हिन्दी को राज भाषा का दरजा दिया है और इस हैसियत से भारत के तमाम रहने वाले इसको अपने फ़ायदे के लिये क़बूल करेंगे और जो नहीं क़बूल करेंगे वह ख़ुद ही भुगतेंगे और नुक़्सान उठायेंगे. रहा, हिन्दी के तोड़ पर उरदू को खड़ा करने का सवाल, वह भी बंटवारे के साथ फ़ना हो गया. उरदू के हामी उरदू को भारत में सरकारी ज़बान बनाने का ख़्वाब भी नहीं देखते, वह सिर्फ़ यह चाहते हैं कि विधान में दिये हुए अधिकारों के मुताबिक़ उरदू के हामी अपनी ज़बान को तरक़्क़ी देने, संभालने और फैलाने में माक़ूल मदद और सहूलियतें हासिल कर सकें. वह ज़ियादा से ज़ियादा यह आशा करते हैं कि इसका एक जुज़ हिन्दुस्तानी में बाक़ी रहे. जिस तरह मां बाप अपने बच्चों में अपना जुज़ महसूस करके ख़ुश होते हैं उसी तरह उरदू भी हिन्दुस्तानी की तरक़्क़ी में अपनी तरक़्क़ी महसूस कर के ख़ुश हो सकेगी. हर हालत में उरदू वालों के ख़्यालों और पालीसी से हिन्दुस्तानी के पक्ष पातियों को कुछ सरोकार नहीं.

हिन्दुस्तानी के पक्ष पाती तो भारती विधान में दी हुई टीका को सोलहों आने पसन्द करते हैं, अगर इस पर अमल हो तो वह ख़ुशी से हिन्दुस्तानी शब्द के बजाय हिन्दी शब्द भी क़बूल कर लेंगे. हिन्दुस्तानी के सैकड़ों पक्ष पातियों

ہندستانی پر بٹوارے کا اسر.

بار لوگوں کا وچار ہے کہ بٹوارے کےبعد راشٹر بھاشا کی حیثیت سے اُردو یا ہندستانی کا کوی سوال باقی نہیں رہا. اگر بھارت کے مسلمان اُردو کو اپنی گھریلو بھاشا کی حیثیت سے رکھنا چاہیں تو اور بات ہے مگر اِس کی امید ہی نہیں کہ کروڑوں ہندو اِس کو اپنائے رہیں گے. خاس کر جب سے ودھان نے ہندی کو قومی زبان قرار دے دیا ہے، اُردو یا ہندستانی کا سوال اُٹھانا راج دروہ یا بغاوت ہے.

اِس ایتراز کا یہ جواب ہے کہ پہلے تو ودھان نے ہندی قومی بھاشا نہیں راج بھاشا قرار دیا ہے. ودھان یا سرکار کے ذریعہ، خاس کر اِس کے حکم سے، بھاشا کا مسئلہ حل نہیں ہوسکتا. قومی بھاشا بنانا نہ بنانا تمامتر جنتا کی مرضی ہے. جنتا چاہے گی تو ہندی کو راشٹر بھاشا بنائیگی اور اِس کو سرکاری ہندی پسند نہ آئے، یا وہ اِس کے لئے بہت کٹھن یا اجنبیانہ نکلے تو وہ بھاشا صرف دفتروں، رپورٹوں، ودیای سنستھاؤں میں داخلہ پائیگی. مگر بازاروں، میلوں، جاتراؤں، اُرسوں، اسٹیشنوں، دوکانوں، سڑکوں، بنکوں، گیتوں اور فلموں میں کوی اور زبان یا سرکاری بھاشا سے الگ زبان بولی جائیگی.

بھارت کی پارلیمنٹ نے ہندی کو راج بھاشا کا درجہ دیا ہے اور اس حیثیت سے بھارت کے تمام رہنے والے اِس کو اپنے فایدے کے لئے قبول کرینگے اور جو نہیں قبول کرینگے وہ خود ہی بھگتینگے اور نقصان اُٹھائینگے. رہا، ہندی کے توڑ پر اُردو کو کھڑا کرنے کا سوال، وہ بھی بٹوارے کے ساتھ فنا ہوگیا. اُردو کے حامی اُردو کو بھارت میں سرکاری زبان بنانے کا خواب بھی نہیں دیکھتے، وہ صرف یہ چاہتے ہیں کہ ودھان میں دیئے ہوئے ادھکاروں کے مطابق اُردو کے حامی اپنی زبان کو ترقی دینے، سنبھالنے اور پھیلانے میں معقول مدد اور سہولتیں حاصل کرسکیں. وہ زیادہ سے زیادہ یہ آشا کرتے ہیں کہ اِس کا ایک جز ہندستانی میں باقی رہے. جس طرح ماں باپ اپنے بچوں میں اپنا جز محسوس کر کے خوش ہوتے ہیں. اِسی طرح اُردو بھی ہندستانی کی ترقی میں اپنی ترقی محسوس کر کے خوش ہو سکیگی. ہر حالت میں اُردو والوں کے خیالوں اور پالیسی سے ہندستانی کے پکش پاتیوں کو کچھ سروکار نہیں.

ہندستانی کے پکش پاتی تو بھارتی ودھان میں دی ہوی ٹیکا کو سولھوں آنے پسند کرتے ہیں، اگر اِس پر امل ہو تو وہ خوشی سے ہندستانی شبد کے بجائے ہندی شبد بھی قبول کرینگے. ہندستانی کے سیکڑوں پکش پاتیوں

स्थानों में और सरकारी भाषनों या रिपोर्टों में
: उसूलों के ठीक उलटे उसूलों पर अमल होता है.
विधान में राज भाषा के बारे में लिखा है :—

नेयन का फर्ज़ होगा कि हिन्दी भाषा के फैलाव दे, उसका विकास इस तरह करे कि वह भारत के ल्चर के सब तत्वों (Elements) के ज़ाहिर माध्यम हो सके और इसकी जीनियस में दखल , हिन्दुस्तानी, आसामी, उरदू, ओरिया, बंगाली, तामिल, तेलगू, संस्कृत, कश्मीरी, कनडी, गुजराती, मलयालम और हिन्दी के रूप, स्टायल, और ढब अपनाने से इसको माला माल करवाये और री और पसंददीदा हो, इसके शब्द सागर को बढ़ाने पहले संस्कृत से फिर दूसरी भाषाओं से सहायता

: खुद इस विधान का जो सरकारी हिन्दी तरजुमा वह इतना कढ़ियल और बोझल है कि अच्छे खासे नने वाले भी इसे नहीं समझ सकेंगे.

स्तानी और उरदू से मदद लेना तो अलग रहा, सरकारी हिन्दी तरजुमा करने वाले सज्जनों ने तामिल या बंगाली से भी कुछ मदद नहीं ली. ज़बानों से न तो दिलचस्पी थी और न जानकारी. है कि हिन्दी तरजुमे में खुद हिन्दी शब्दों का किया गया है. मिसाल के तौर पर अछूत पन के र्शियता और पहले, दूसरे, तीसरे, आठवें के लिए तीय, त्रितीय, अष्टम इस्तेमाल किये गये हैं.

वजहों से हिन्दुस्तानी का मसला बहुत उलझ गया न्क़लाबी सुधार करने वाले, राजकाजी ग़रज़ से बनने वाले, धर्म और भाषा को एक मसला बनाने शाई मसले की अहमियत न जानने वाले, मूल लतपत होने वाले, या सच दिली से महरूम ट वहम में मुबतिला होने वाले भारत के भाषाई कठिन से कठिनतर बना रहे हैं.

तों से ज़ाहिर है कि भारत का भाषाई मसला छू की तरह है, जिसके सिर्फ एक डंक होती है प की तरह है जिसके सिर्फ विस की थैली होती भारत का भाषाई मसला कमल के कीड़े की तरह पूरा बदन ज़हरीले बालों से भरा होता है या स की तरह है जिसके कई सिर और कई हाथ थे. कि भारत के भाषाई मसले को हल करना है कई मसलों को हल करना होगा. इन में सब से हम मसला यह है कि बंटवारे से हिन्दुस्तानी की या नहीं ?

ودھانی سنستھاؤں میں اور سرکاری بھاشنوں یا رپورٹوں میں ان سنہرے اُصولوں کے ٹھیک اُلٹے اُصولوں پر امل ہوتا ہے۔ بھارت کے ودھان میں راج بھاشا کے بارے میں لکھا ہے :—

" یونین کا فرض ہوگا کہ ہندی بھاشا کے پھیلاؤ میں مدد دے، اُس کا وکاس اِس ترہ کرے کہ وہ بھارت کے ملواں کلچر کے سب تتووں (Elements) کے ظاہر کرنے کا مادھیم ہو سکے اور اِس کی جینیس میں دخل دیئے بنا، ہندستانی، آسامی، اُردو، اُوڑیا، بنگالی، پنجابی، تامل، تلیگو، سنسکرت، کشمیری، کنڑی، گجراتی، مراٹھی، ملیالم اور ہندی کے روپ، اسٹائل اور اظہاری ڈھب اپنانے سے اِس کو مالا مال کروائے اور جہاں ضروری اور پسندیدہ ہو، اِس کے شبد ساگر کو بڑھانے کے لئے پہلے سنسکرت سے پھر دوسری بھاشاؤں سے سہائتا لے ۔"

مگر خد اِس ودھان کا جو سرکاری ہندی ترجمہ چھپا ہے، وہ اتنا کڑھیل اور بوجھل ہے کہ اچھے خاصے ہندی جاننے والے بھی اِسے نہیں سمجھ سکیں گے ۔

ہندستانی اور اُردو سے مدد لینا تو الگ رہا، ودھان کا سرکاری ہندی ترجمہ کرنے والے سجنوں نے آسامی، تامل یا بنگالی سے بھی کچھ مدد نہیں لی۔ انہیں ان زبانوں سے نہ تو دلچسپی تھی اور نہ جانکاری ۔ انتہا یہ ہے کہ ہندی ترجمے میں خد ہندی شبدوں کا ورودھ کیا گیا ہے ۔ مثال کے طور پر اچھوت پن کی بجائے اَس پرشیتا اور پہلے، دوسرے، تیسرے، آٹھویں کے لئے پرتھم، دوتیہ، ترتیہ، اشٹم استعمال کئے گئے ہیں ۔

اِن ہی وجہوں سے ہندستانی کا مسئلہ بہت اُلجھ گیا ہے ۔ مہا انقلابی سدھار کرنے والے، راجکاجی غرض سے انجان بننے والے، دھرم اور بھاشا کو ایک مسئلہ بنانے والے، بھاشائی مسئلے کی اہمیت جاننے والے، بھول بھلیوں میں لت پت ہونے والے، یا سچ دلی سے محروم کھوٹ یا جھوٹ وہم میں مبتلا ہونے والے بھارت کے بھاشائی مسئلے کو کٹھن سے کٹھن تر بنا رہے ہیں ۔

اِن باتوں سے ظاہر ہے کہ بھارت کا بھاشائی مسئلہ نا تو بچھو کی ترہ ہے، جس کے صرف ایک ڈنک ہوتی ہے اور نا سانپ کی ترہ ہے جس کے صرف بِس کی تھیلی ہوتی ہے بلکہ بھارت کا بھاشائی مسئلہ کمل کے کیڑے کی ترہ ہے، جس کا پورا بدن زہریلے بالوں سے بھرا ہوتا ہے یا راون راکھشس کی ترہ ہے جس کے کئی سر اور کئی ہاتھ تھے۔ مطلب یہ کہ بھارت کے بھاشائی مسئلے کو حل کرنا ہے تو ایک نہیں کئی مسئلوں کو حل کرنا ہوگا ۔ ان میں سب سے زیادہ اہم مسئلہ یہ ہے کہ بٹوارے سے ہندستانی کی ضرورت رہی یا نہیں ؟

हुए हैं और जो खालिस उरदू की तरक्क़ी चाहते हैं वह ख़ुद ख़ुद फ़ारसी और अरबी से मुतासिर हैं. यही लोग हिन्दुस्तान के भाषाई मसले को उलझा रहे हैं. और यही लोग न सिर्फ़ हिन्दुस्तानी के दुश्मन बल्कि ख़ुद उस ज़बान के भी शत्रु हैं, जिसको तरक़्क़ी देने का वह दम भरते हैं.

हिन्दुस्तानी के सबसे बड़े दुश्मन वह लोग हैं जो आसान उरदू का दम भरते हुए कठिन से कठिन अरबी लफ़्ज़ों और फ़ारसियाना तरकीबों का इस्तेमाल करते हैं. जनता के सामने लेक्चर देते हुए, या मिली जुली सभाओं की बैठकों में तक़रीर करते हुए यह लोग आसान भाषा बोलते हैं मगर विद्याई लेखों, अदबी रिसालों और साइन्सी किताबों में न सिर्फ़ मुश्किल भाषा लिखते हैं बल्कि अरबी फ़ारसी का कई पन अरबी फ़ारसी के तरीक़े पर बनाते हैं या संस्कृत व्याकरन और संस्कृत उच्चारन लागू करते हैं.

हिन्दुस्तानी के मसले को उलझाने वालों में वह लोग भी हैं जो आज भी सच्चे दिल से आसान भाषा के मानने वाले नहीं हैं. मुस्लिम लीगी और रज़ाकारी ज़माने में वह ऐसी उरदू लिखते थे जो हज़ारों अच्छे अच्छे पढ़े लिखों की समझ में नहीं आती थी. ख़ुद उरदू में कम इस्तेमाल होने वाले हिन्दी के सुन्दर सुन्दर लफ़्ज़ों को यह लोग पसन्द नहीं करते थे. बटवारे के बाद इन का उरदू प्रेम अरबी का रूप धारन करने लगा. इनका यह यक़ीन "ईमान" बन गया कि हैदराबाद आज़ाद बन चुका. पुलिस कारवाई के बाद यह लोग रातों रात हिन्दुस्तानी के भक्त हो गये और कहना शुरू किया कि भाषा का धर्म से क्या सम्बन्ध है? राज भाषा सीखना राष्ट्र की सब प्रजा का फ़र्ज़ है. इन में से चन्द पाकिस्तान भाग गए. वहां पहुँचते ही यह हिन्दी शत्रु और हिन्दुस्तानी विरोधी न सिर्फ़ फ़ारसी-याना उरदू के पक्के हामी बन गए बल्कि बैनइस्लामी क़ौमियत का संगठन करने के लिए और सारी दुनिया के मुसलमानों को एक दूसरे से क़रीब लाने के लिए अरबी तमाम विद्यार्थियों के लिए लाज़मी करने के मुआफ़िक़ हो गये. इन सज्जनों के ख़ुलूस पर ग़ौर करना चाहिये कि एक इन्तहा से दूसरे इन्तहा तक जाने में न झिझकते हैं, न शरमाते हैं. जहां जो पालीसी अपनी ग़रज़ के लिए मुनासिब समझते हैं, उसी को अख़्तियार करते हैं. इनकी वजह से भी हिन्दुस्तानी का मसला बहुत उलझ गया है.

ख़ुलूस या सच्चे दिल की कमी उरदू वालों की तरह हिन्दी प्रेमियों में पाई जाती है. कहने को वह भी कहते हैं कि भाषा सरल होनी चाहिये, अच्छे अच्छे शब्द सब भाषाओं से ले लेना चाहिये, चलन पाये हुए लफ़्ज़ों का विरोध हरगिज़ नहीं करना चाहिये, मगर अदबी सम्मेलनों में,

ہوئے ہیں اور جو خالص اُردو کی ترقی چاہتے ہیں وہ سم سم فارسی اور اربی سے مراثب ہیں ۔ یہی لوگ هندستانی کے بھاشائی مسئلے کو اُلجھا رہے ہیں۔ اور یہی لوگ نا صرف هندستانی کے دشمن بلکہ خد اُس زبان کے بھی شترو ہیں' جس کو ترقی دینے کا وہ دم بھرتے ہیں ۔

هندستانی کے سب سے بڑے دشمن وہ لوگ ہیں جو آسان اُردو کا دم بھرتے ہوئے کٹھن سے کٹھن اربی لفظوں اور فارسیانہ ترکیبوں کا استعمال کرتے ہیں ۔ جنتا کے سامنے لکچر دیتے ہوئے' یا ملی جلی سبھاؤں کی بیٹھکوں میں تقریر کرتے ہوئے یہ لوگ آسان بھاشا بولتے ہیں مگر ودیائی لیکھوں' ادبی رسالوں اور سائنسی کتابوں میں نا صرف مشکل بھاشا لکھتے ہیں بلکہ اربی فارسی کا کئی پن اربی فارسی کے طریقے پر بناتے ہیں یا سنسکرت ویاکرن اور سنسکرت اُچارن لاگو کرتے ہیں ۔

هندستانی کے مسئلے کو اُلجھانے والوں میں وہ لوگ بھی ہیں جو آج بھی سچے دل سے آسان بھاشا کے ماننے والے نہیں ہیں ۔ مسلم لیگی اور رزاکاری زمانے میں وہ ایسی اُردو لکھتے تھے جو ہزاروں اچھے اچھے پڑھے لکھوں کی سمجھ میں نہیں آتی تھی۔ خد اُردو میں کم استعمال ہونے والے هندی کے سندر سندر لفظوں کو یہ لوگ پسند نہیں کرتے تھے ۔ بٹوارے کے باد اِن کا اُردو پریم اربی کا روپ دھارن کرنے لگا ۔ اِن کا یہ یقین " ایمان " بن گیا کہ حیدرآباد آزاد بن چکا ۔ پولیس کاروائی کے باد یہ لوگ راتوں رات هندستانی کے بھکت ہوگئے اور کہنا شرو کیا کہ بھاشا کا دھرم سے کیا سمبندھ ہے ؟ راج بھاشا سیکھنا راشٹر کی سب پرجا کا فرز ہے ۔ اِن میں سے چند پاکستان بھاگ گئے ۔ وہاں پہونچتے ہی یہ هندی شترو اور هندستانی ورودھی نہ صرف فارسیانہ اُردو کے پکے حامی بن گئے بلکہ بین اِسلامی قومیت کا سنگھٹن کرنے کے لئے اور ساری دنیا کے مسلمانوں کو ایک دوسرے سے قریب لانے کے لئے اربی تمام ودیارتھیوں کے لئے لازمی کرنے کے موافق ہوگئے ۔ اِن سجنوں کے خلوص پر غور کرنا چاہئے کہ ایک انتہا سے دوسرے انتہا تک جانے میں نا جھجھکتے ہیں' نا شرماتے ہیں ۔ جہاں جو پالیسی اپنی غرز کے لئے مناسب سمجھتے ہیں' اُسی کو اختیار کرتے ہیں ۔ اِن کی وجہ سے بھی هندستانی کا مسئلہ بہت اُلجھ گیا ہے ۔

خلوص یا سچے دل کی کمی اُردو والوں کی طرح هندی پریمیوں میں پائی جاتی ہے ۔ کہنے کو وہ بھی کہتے ہیں کہ بھاشا سرل ہونی چاہئے' اچھے اچھے شبد سب بھاشاؤں سے لے لینا چاہئے' چلن پائے ہوئے لفظوں کا ورودھ ہرگز نہیں کرنا چاہئے' مگر ادبی سمیلنوں میں'

([illegible]) उरदू" हो गई थी. ॐ जब अंजुमनी भाषा का यह हाल हुआ तो आप खुद ख्याल कर सकते हैं कि उस्मानिया युनिवर्सिटी में कैसी उरदू चलाने की कोशिश की जा रही थी, और इससे उरदू की तरक़्क़ी में क्या मदद मिल रही थी. वहां की उरदू, उरदू नहीं थी, कुरदू हो गई थी. वहां की किताबें खुद वहां के विद्यार्थी नहीं पढ़ते थे और वहां के तरजुमा घर में सैकड़ों ही नहीं, हजारों इस्तलाहें मरे हुए बच्चे जिस तरह पैदा होते हैं, उसी तरह मरदों की हालत व कैफ़ियत में ढाली गई थीं. हिन्दी जानने वाले इस्तलाही कमेटियों में आम तौर पर होते ही नहीं थे.

आप इस बात को जरूर मानेंगे कि हर शख्स को यह अधिकार हासिल है और होना चाहिये कि वह सब जायेज़ तरीक़ों से अपने अपने धर्म, भाषा और राजकाजी उसूल या कलचर का प्रचार करे. अगर कोई उरदू या हिन्दी अरबी या संस्कृत की तरक़्क़ी या प्रचार की कोशिश करता है तो उसको पूरा हक़ हासिल है.

हैदराबाद में अरसे से "दायरतुल मुआरिफ़" क़ायम है वहां पुलिस कारवाई से दो ढाई बरस पहले अरबी भाषा के प्रचार के लिए एक सभा क़ायम की गई थी जिसकी बैठक हर हफ्ते होती थी. उसूली एतबार से बैठक के दौरान में हर मेम्बर के लिए लाज़मी था कि सिर्फ़ अरबी बोले. यह भी सुना था कि अंजुमन की शाखें सब ज़िलों में बनाई गई थीं.

बड़ोदा रियासत संस्कृत किताबों की खोज, तरतीब और छपाई पर लाखों रुपया खर्च कर चुकी है. हिन्दुस्तान की कई युनिवर्सिटियों और विद्याई संस्थाओं ने संस्कृत, अरबी और फ़ारसी पर लाखों रुपया खर्च किया है. अगर संस्कृत, अरबी और फ़ारसी पर इतना रुपया और मेहनत सर्फ़ करने की बजाये सरल हिन्दी, आसान उरदू या चलती हिन्दुस्तानी के फैलाने की कोशिश की गई होती तो भारत में पढ़े लिखों की तैदाद तिगुनी होती और भारत का भाषाई मसला इतना उलझा हुआ न होता.

फिर भी मैं कहता हूं कि खुल्लम खुल्ला संस्कृत का प्रचार करना या अरबी, फ़ारसी की तरक़्क़ी के लिए बेखटके धन दौलत सर्फ़ करना अच्छा है न यह कि संस्कृत का प्रचार हिन्दी की आड़ में किया जाय और उरदू के सहारे फ़ारसी अरबी फैलाने की कोशिश की जाय. जो लोग शुद्ध हिन्दी का प्रचार करना चाहते हैं वह दरअसल संस्कृत से सहमे

ॐ इस क़िस्म की किताबों में "फरहंग इस्तलाहात इल्मिया" "अमालात पर बायदाद" और कई किताबों के नाम जैसे "ईरान ब अहदे-सासानियान" और इनमें इस्तेमाल की हुई तरकीबें हैं.

بلتی) اُردو" ہوگئی تھی۔* جب انجمنی بھاشا کا یہ حال ہوا تو آپ خد خیال کرسکتے ہیں کہ اُسمانیا یونیورسٹی میں کیسی اُردو چلانے کی کوشش کی جا رہی تھی' اور اس سے اُردو کی ترقی میں کیا مدد مل رہی تھی. وہاں کی اُردو' اُردو نہیں تھی' کردو ہوگئی تھی . وہاں کی کتابیں خد وہاں کے ودیارتھی نہیں پڑھتے تھے اور وہاں کے ترجما گھر میں سیکڑوں ہی نہیں' ہزاروں اسطلاحیں مرے ہوئے بچے جس ترہ پیدا ہوتے ہیں' اُسی ترہ مردوں کی حالت و کیفیت میں ڈھالی گئی تھیں . ہندی جاننے والے اسطلاحی کمیٹیوں میں آم تور پر ہوتے ہی نہیں تھے .

آپ اِس بات کو ضرور مانینگے کہ ہر شخص کو یہ ادھیکار حاصل ہے اور ہونا چاہئے کہ وہ سب جائز طریقوں سے اپنے اپنے دھرم' بھاشا اور راج کاجی اُصول یا کلچر کا پرچار کرے . اگر کوئی اُردو یا ہندی' اربی یا سنسکرت کی ترقی یا پرچار کی کوشش کرتا ہے تو اُس کو پورا حق حاصل ہے .

حیدرآباد میں ارسے سے '' دایرۃالمعارف " قایم ہے وہاں پولیس کاروائی سے دو ڈھائی برس پہلے اربی بھاشا کے پرچار کے لئے ایک سبھا قایم کی گئی تھی جس کی بیٹھک ہر ہفتے ہوتی تھی۔ اُسولی ایتبار سے بیٹھک کے دوران میں ہر ممبر کے لئے لازمی تھا کہ سرف اربی بولے . یہ بھی سنا تھا کہ انجمن کی شاخیں سب ضلعوں میں بنائی گئی تھیں .

بڑودا ریاست سنسکرت کتابوں کی کھوج' ترتیب اور چھپائی پر لاکھوں روپیا خرچ کر چکی ہے . ہندستان کی کئی یونیورسٹیوں اور ودیائی سنستھاؤں نے سنسکرت' اربی اور فارسی پر لاکھوں روپیا خرچ کیا ہے . اگر سنسکرت اربی اور فارسی پر اتنا روپیا اور محنت سرف کرنے کی بجائے سرل ہندی' آسان اُردو یا چلتی ہندستانی کے پھیلانے کی کوشش کی گئی ہوتی تو بھارت میں پڑھے لکھوں کی تعداد تگنی ہوتی اور بھارت کا بھاشائی مسئلہ اتنا اُلجھا ہوا نہ ہوتا .

پھر بھی میں کہتا ہوں کہ کھلم کھلا سنسکرت کا پرچار کرنا یا اربی' فارسی کی ترقی کے لئے بے کھٹکے دھن دولت سرف کرنا اچھا ہے نہ یہ کہ سنسکرت کا پرچار ہندی کی آڑ میں کیا جائے اور اُردو کے سہارے فارسی اربی پھیلانے کی کوشش کی جائے . جو لوگ شدھ ہندی کا پرچار کرنا چاہتے ہیں وہ دراصل سنسکرت سے سہمے

*اِس قسم کی کتابوں میں "فرہنگ اصطلاحات علمیہ" "جنایات پر جائداد" اور کئی کتابوں کے نام جیسے "ایران بہ عہد ساسانیاں" اور اِن میں اِستعمال کی ہوئی ترکیبیں ہیں .

पियारा नहीं थी और इनकी निस्बत जल्दी घट रही थी क्योंकि उरदू से बन्धन रखने वाले बहुत से ख़ानदान उरदू छोड़ते जा रहे थे.

हिन्दुस्तान के भाशाई मसले पर अपने विचार ज़ाहिर करने वालों में ऐसे भी कई लोग थे जो कहते कुछ थे और करते कुछ और थे. इनकी दो अमली की वजह से भी हिन्दुस्तान का भाशाई मसला बहुत उलझ रहा था. मिसाल के तौर पर वह कहते तो यह थे कि हर उरदू जानने वाले को हिन्दी सीखनी चाहिये और हर हिन्दी जानने वाले को उरदू. कई आलिमों का कहना था कि हिन्दी जाने बिना उरदू नहीं आ सकती या हिन्दी अच्छी तरह जानने के लिए उरदू का जानना मुनासिब ही नहीं, लाज़मी है; फिर भी मदरसों में सिर्फ़ एक तरह की भाशा और एक ही लिखावट सिखाई जाती रही.

औरों को जाने दीजिये, ख़ुद वह लोग जो यह कहते थे कि उरदू दानों के लिए हिन्दी सीखना लाज़मी है, मामूली हिन्दी भी नहीं जानते थे. अफ़सोस की बात है कि हमारी यूनिवर्सिटियों में उरदू के ऐसे लेक्चरार, रीडर और प्रोफ़ेसर थे और हैं जो मिडिल क्लास के विद्यार्थियों के बराबर भी हिन्दी नहीं जानते. थोड़ी बहुत हिन्दी जो उन्होंने सिर्फ़ बी. ए. या एम. ए. पास करने के लिए भुगतान के तौर पर सीखी थी, वह कभी के भूल भाल गए थे. ख़ास कर हैदराबाद और पंजाब में तो उरदू के पढ़ाने वालों और उरदू में "रिसर्च" करने वालों को कभी इतनी हिन्दी नहीं आती थी जो बनारस के मैट्रिक पास को आती हो.

ग़रज़ लोगों का दावा कुछ होता है, और असल कुछ इनके सच्चे ख़्याल कुछ होते हैं और करते कुछ हैं. इन लोगों की वजह से भाशाई मसला बहुत पेंचदार होने पर और भी उलझता जा रहा है. कोई हिन्दुस्तानी के नाम से उरदू की तरक़्क़ी चाहता है और कोई हिन्दुस्तानी का नाम निहाद भक्त होते हुए संस्कृताई हिन्दी का प्रचार करता है.

अंजुमन तरक़्क़ी उरदू के नाम से जो काम पिछली दहाईयों में हुआ, उससे बहुत कम फ़ायदा हुआ. कई किताबों से उरदू की तरक़्क़ी होने के बजाये उरदू को नुक़सान पहुँचा. क्योंकि अंजुमन ने जिस भाशा को ख़ास कर जिन इस्तलाहों (परिभाशाओं) को चलाना चाहा, वह बहुत सक़ियल, भारू और परदेसियाना थीं, इनमें कई इतनी सक़ियल होती थीं कि उरदू के हामी इन्हें नहीं समझ सकते थे. इसी वजह से अंजुमन तरक़्क़ी उरदू "अंजुमन तहदीद

ں لبی اور ان کی نسبت بلدی گھٹ رہی تھی
اُردو سے بندھن رکھنے والے بہت سے خاندان اُردو
ما رہے تھے ۔

بھتان کے بھاشای مسئلے پر اپنے وچار ظاہر کرنے
میں ایسے بھی کئی لوگ تھے جو کہتے کچھ تھے
کچھ اور تھے ۔ ان کی دواملی کی وجہ سے بھی
ن کا بھاشای مسئلا بہت الجھ رہا تھا ۔ مسال
پر وہ کہتے تو یہ تھے کہ ہر اُردو جاننے والے کو
سیکھنی چاہئے اور ہر ہندی جاننے والے کو اُردو۔
موں کا کہنا تھا کہ ہندی جانے بنا اُردو نہیں
یا ہندی اچھی ترہ جاننے کے لئے اُردو کا جاننا
ہی نہیں، لازمی ہے؛ پھر بھی مدرسوں میں
یک ترہ کی بھاشا اور ایک ہی لکھاوٹ سکھای
ہی ۔

ں کو جانے دیجئے، خد وہ لوگ جو یہ کہتے تھے
دانوں کے لئے ہندی سیکھنا لازمی ہے، مامولی
بھی نہیں جانتے تھے ۔ افسوس کی بات ہے کہ
یونیورسٹیوں میں اُردو کے ایسے لکچرار، ریڈر اور
تھے اور ہیں جو مڈل کلاس کے ودیارتھیوں کے
ہندی نہیں جانتے ۔ تھوڑی بہت ہندی جو
نے سرف بی ۔ اے ۔ یا ایم ۔ اے ۔ پاس کرنے کے
تاوان کے تور پر سیکھی تھی، وہ کبھی کے بھول
ئے تھے ۔ خاس کر ہیدرآباد اور پنجاب میں تو
پڑھانے والوں اور اُردو میں "رسرچ" کرنے والوں
ی اتنی ہندی نہیں آتی تھی جو بنارس کے
پاس کو آتی ہو ۔

لوگوں کا داوا کچھ ہوتا ہے، اور اسل کچھ ان کے سچے
کچھ ہوتے ہیں اور کرتے کچھ ہیں۔ ان لوگوں کی وجہ
بھای مسئلہ بہت پیچدار ہونے پر اور بھی الجھتا
ہے ۔ کوی ہندستانی کے نام سے اُردو کی ترقی
ہے اور کوئی ہندستانی کا نام نہاد بھکت ہوتے
سنسکرتای ہندی کا پرچار کرتا ہے ۔

من ترقی اُردو کے نام سے جو کام پچھلی دہائیوں
ا، اس سے بہت کم فایدہ ہوا۔ کئی کتابوں سے اُردو
ی ہونے کے بجائے اُردو کو نقصان پہنچا ۔ کیوں کہ
نے جس بھاشا کو خاس کر جن اصطلاحوں (پری
) کو چلانا چاہا، وہ بہت ثقیل، بھارو
دیسیانا تھیں، ان میں کئی اتنی ثقیل ہوتی
کہ اُردو کے حامی انہیں نہیں سمجھ سکتے تھے ۔
ہ سے انجمن ترقی اُردو "انجمن تحدید

मिलता है. उरदू और हिन्दी की धर्मी अहमियत जो कुछ भी है वह ईसाईयों की बदौलत है, जो इन भाषाओं में लिखी हुई इन्जील पढ़ते हैं, बाज़ जगहों और गिरजाओं में ईसाई इबादत इन ही भाषाओं में होती है, इन ही भाषाओं के भजन गाये जाते हैं और दुखी दिलों को दिलासा देने के लिए भी यही भाषायें काम आती हैं. इसके बरअक्स उरदू और हिन्दी हैं जो न तो हमारी सुख की साथी हैं और न दुख की !

बहर हाल, समाज और राजकाज, धर्म और धन काज से भाषा को कितना ही लगाव सही, सबके सब न तो एक हैं और न यकसां हैं. इस फ़र्क़ के होते हुए राजकाज और धर्म को एक समझना भूल है या अंधेर, नादानी है या जहालत. दो सगे भाई ख़ून के नाते से कितने ही मिलते जुलते हों, फिर भी वह अलग अलग होते हैं. उनकी फ़ितरत (प्रकृति) मुख़तलिफ़ होती है, सीरत (चरित्र) जुदागाना होती है, दिल व दिमाग़ के गुन अलग अलग होते हैं. धर्म और राज काज या भाषा और धर्म में गहरा लगाव है ज़रूर मगर उनमें फ़र्क़ भी है. सगे भाई बहन होने पर भी वह न तो एक हैं न यकसां हैं.

भाषाई मसले को उलझाने वालों में वह भी हैं जो अपने देश और वक़्त की सस्ती शोहरत हासिल करने के लिये अनसच बोलते हैं और अनसच बातें बोलते बोलते या सोचते सोचते वह इतने भोले आदमी हो जाते हैं कि वह झूट को सच मानने लगते हैं और एक भोले भाले दोस्त की तरह अपने आप धोका खा कर दूसरों को धोका देते हैं.

मिसाल के लिए, हिन्दी प्रेमी और उरदू के हामी दोनों यकसां दावा करते थे और अब भी कभी कभार करते हैं कि हिन्दी और उरदू बोलने वालों की तैदाद 22 करोड़ है. जहां उरदू बोलने वालों या समझ सकने वालों की गिनती का सवाल होता था, उरदू के माने को इतना फैला दिया जाता था कि उरदू में शुद्ध हिन्दी, बंगारू, मारवाड़ी, राजस्थानी, ब्रज भाषा, बुन्देल खण्डी, कनौजी, पूरबी, भोजपुरी, दक्खनी सब बोलियां बोलने वालों को "उरदू दां" मान लिया जाता था; और जब हिन्दी बोलने वालों की तैदाद ज़ाहिर करनी होती थी, तो हिन्दी में अदबी उरदू रेख़्ता देहलवी या लखनवी उरदू, लाहौरी और हैदराबादी उरदू बल्कि "उरदू मुअल्ला" को (जो ख़ालिस उरदू की क़िस्में हैं) हिन्दी में मिला कर हिन्दी बोलने वालों की तैदाद 22 करोड़ बताई जाती थी.

दोनों को यकसां दावा एक दिल [illegible] सपना था कि हिन्दी ढाके से कोयटा तक और उरदू कश्मीर से रास कुमारी तक समझी जाती है. [illegible] यह थी की उरदू [illegible] वालों की तैदाद [illegible] तीन चार करोड़ से

ملتا ھے. اُردو اور ھندی کی دھرمی اھمیت جو کچھ بھی ھے و ایسائیوں کی بدولت ھے' جو ان بھاشاؤں میں لکھی ہوئی انجیل پڑھتے ھیں' باز جگہوں اور گرجاؤں میں ایسائی اپاسنا ان ھی بھاشاؤں میں ہوتی ھے' ان ھی بھاشاؤں کے بھجن گائے جاتے ھیں اور دکھی دلوں کو دلاسا دینے کیلئے بھی یہی بھاشائیں کام آتی ھیں. اِسکے براکس اُردو اور ھندی ھیں جو نہ تو ھماری سکھ کی ساتھی ھیں اور نہ دکھ کی !

بھر حال' سماج اور راج کاج' دھرم اور دھن کاج سے بھاشا کو کتنا ھی لگاؤ سہی' سب کے سب نہ تو ایک ھیں اور نہ یکساں ھیں. اِس فرق کے ہوتے ہوئے راج کاج اور دھرم کو ایک سمجھنا بھول ھے یا اندھیر' نادانی ھے یا جہالت. دو سگے بھائی خون کے ناتے سے کتنے ھی ملتے جلتے ھوں' پھر بھی وہ الگ الگ ہوتے ھیں. اُن کی فطرت (پرکرتی) مختلف ہوتی ھے' سیرت (چرتر) جدا گانا ہوتی ھے' دل و دماغ کے گن الگ الگ ہوتے ھیں. دھرم اور راج کاج یا بھاشا اور دھرم میں گہرا لگاؤ ھے ضرور مگر اُن میں فرق بھی ھے. سگے بھائی بہن ہونے پر بھی وہ نہ تو ایک ھیں نہ یکساں ھیں.

بھاشائی مسئلے کو اُلجھانے والوں میں وہ بھی ھیں جو اپنے دیش اور وقت کی سستی شہرت حاصل کرنے کے لئے اَن سچ بولتے ھیں اور اَن سچ باتیں بولتے بولتے یا سوچتے سوچتے وہ اتنے بھولے آدمی ہو جاتے ھیں کہ وہ جھوٹ کو سچ ماننے لگتے ھیں اور ایک بھولے بھالے دوست کی طرح اپنے آپ دھوکا کھاکر دوسروں کو دھوکا دیتے ھیں.

مثال کے لئے' ھندی پریمی اور اُردو کے حامی دونوں یکساں داوا کرتے تھے اور اب بھی کبھی کبھار کرتے ھیں کہ ھندی اور اُردو بولنے والوں کی تعداد 22 کروڑ ھے. جہاں اُردو بولنے والوں یا سمجھ سکنے والوں کی گنتی کا سوال ہوتا تھا' اُردو کے معنے کو اتنا پھیلا دیا جاتا تھا کہ اُردو میں شدھ ھندی' بنگارو' مارواڑی' راجستھانی' برج بھاشا' بندیل کھنڈی' کنوجی' پوربی' بھوجپوری' دکھنی سب بولیاں بولنے والوں کو "اُردو داں" مان لیا جاتا تھا؛ اور جب ھندی بولنے والوں کی تعداد ظاہر کرنی ہوتی تھی' تو ھندی میں ادبی اُردو' ریختا' دھلوی یا لکھنوی اُردو' لاھوری اور حیدرآبادی اُردو بلکہ "اُردو معلیٰ" کو (جو خالص اُردو کی قسمیں ھیں) ھندی میں ملاکر ھندی بولنے والوں کی تعداد 22 کروڑ بتائی جاتی تھی.

دونوں کا یکساں داوا ایک دل بہلاؤ سپنا تھا کہ ھندی ڈھاکے سے کوئٹا تک اور اُردو کشمیر سے راس کماری تک سمجھی جاتی ھے. سچ بات تو یہ تھی کہ اُردو جاننے والوں کی تعداد کسی طرح تین چار کروڑ سے

ठीक नहीं क्योंकि धर्म का बदलना फिर भी आसान है, भाषा का बदलना आम तौर पर नामुमकिन और हर सूरत में बेहद मुश्किल है. हज़रत ईसा का धर्म सारे संसार में फैलता जा रहा है, मगर 'नए ईसाईयों' की असली भाषायें कहां बदलती हैं और क्यों कर बदल सकती हैं? इन पर जो कुछ भी असर पड़ता है वह ज़ियादातर पच्छिमयावे के कारन होता है न कि धर्म बदलावे से.

यह भी एक बड़ी भूल है कि बाज़ लोग धर्म और भाषा के मसले को एक समझते हैं. धर्म और भाषा के बन्धनों को बढ़ा चढ़ाकर इस तरह सामने लाते हैं कि भाषाई मसला धर्मी ज़ाहिर होने लगता है. मिसाल के तौर पर उरदू के हामी उरदू से फ़ारसी और अरबी के नातों को बढ़ाने के लिये फ़ारसी और अरबी को "इस्लामी" ज़बानें कहते हैं. हिन्दी प्रेमी संस्कृत के भक्त भी होते हैं और हिन्दी पर संस्कृत को छाया हुआ रखने के लिए हर तरह संस्कृत की अहमियत बढ़ाते हैं. संस्कृत के बड़े शब्द सागर, इसके व्याकरन और विद्याई अहमियत जताने के अलावा इसे "देव बानी" याने देवताओं की भाषा ठहराते हैं ताकि इसका आदर बढ़े और संस्कृत की धाक क़ायम हो जाय. फ़ारसी अरबी परस्तों और संस्कृत के पुजारियों की यह चालाकी है कि वह अपनी अपनी पसन्द की भाषा को धर्म के सहारे क़ायम रखना चाहते हैं. हालांकि धर्म की कोई भाषा नहीं होती. दुनिया भर में सबसे ज़ियादा फैला हुआ धर्म ईसाई धर्म है. हर मुल्क के ईसाई अपनी अपनी भाषा में इन्जील पढ़ते हैं, भजन गाते हैं, धर्मी व्याख्यान सुनते हैं. जो लोग लैटिन भाषा को ईसाईयों की धर्मी भाषा समझते हैं वह उनकी भूल है क्योंकि हज़रत ईसा की भाषा लैटिन नहीं थी. करोड़ों ईसाईयों को मालूम ही नहीं कि पहले पहल ईसाई धर्मी पुस्तक, इन्जील, किस भाषा में लिखी गई थी. इसलिए अकसर ईसाई ख़ुद अपनी ज़बान में ईसाई धर्म की किताबें पढ़ते, सुनते और समझते हैं. शादी और मोता (एक तरह का ब्याह) के मौक़ों पर अकसर मुक़ामी भाषा और आम भाषा का चलन होता है. इसके बरअक्स (ख़िलाफ़) उरदू के हामी और हिन्दी प्रेमी ख़ानदानी रस्मों और समाजी तक़रीबों में संस्कृत या अरबी का इस्तेमाल करते हैं जिसे कोई नहीं समझता. मेरे नज़दीक हिन्दी का सबसे बड़ा अपमान हिन्दी प्रेमियों के हाथों हो रहा है कि इनकी सबसे ज़ियादा चहेती भाषा ज़िन्दगी भर के सबसे अहम नाते को जोड़ते वक़्त बेदख़ल कर दी जाती है और मौत मिट्टी के मौक़े पर भी इससे कुछ फ़ायदा नहीं होता! ठीक इसी तरह उरदू की सबसे बड़ी बेइज़्ज़ती ख़ुद उरदू के हामियों की वजह से हो रही है क्योंकि समाज और ख़ानदान की सबसे ज़ियादा अहम तक़रीबों के वक़्त याने शादी और मोता की रस्मों के वक़्त इसे घर निकाला

ہیک نہیں کیونکہ دھرم کا بدلنا پھر بھی آسان ہے،
ہاشا کا بدلنا آم تور پر ناممکن اور ہر سورت میں بے
حد مشکل ہے . حضرت ایسا کا دھرم سارے سنسار میں
پھیلتا جا رہا ہے، مگر " نوایسائیوں " کی اصلی
بھاشائیں کہاں بدلتی ہیں اور کیونکر بدل سکتی ہیں؟
ان پر جو کچھ بھی اسر پڑتا ہے وہ زیادا تر پچھمیاوے کے
کارن ہوتا ہے نہ کہ دھرم بدلاوے سے .

یہ بھی ایک بڑی بھول ہے کہ باز لوگ دھرم اور
بھاشا کے مسئلے کو ایک سمجھتے ہیں . دھرم اور بھاشا
کے بندھنوں کو بڑھا چڑھا کر اس ترہ سامنے لاتے ہیں کہ
بھاشائی مسئلہ دھرمی ظاہر ہونے لگتا ہے . مثال کے تور پر
اردو کے حامی اردو سے فارسی اور عربی کے ناتوں کو بڑھانے
کیلئے فارسی اور عربی کو " اسلامی " زبانیں کہتے ہیں .
ہندی پریمی سنسکرت کے بھکت بھی ہوتے ہیں اور
ہندی پر سنسکرت کو چھایا ہوا رکھنے کیلئے ہر ترہ
سنسکرت کی اہمیت بڑھاتے ہیں . سنسکرت کے بڑے
شبد ساگر، اسکے ویاکرن اور ودیائی اہمیت جتانے کے الوا
اسے " دیو بانی " یانے دیوتاؤں کی بھاشا ٹھہراتے ہیں
تاکہ اسکا آدر بڑھے اور سنسکرت کی دھاک قائم ہوجائے .
فارسی عربی پرستوں اور سنسکرت کے پجاریوں کی یہ چالاکی
ہے کہ وہ اپنی اپنی پسند کی بھاشا کو دھرم کے سہارے
قائم رکھنا چاہتے ہیں. حالانکہ دھرم کی کوئی بھاشا نہیں
ہوتی . دنیا بھر میں سب سے زیادہ پھیلا ہوا دھرم ایسائی
دھرم ہے . ہر ملک کے ایسائی اپنی اپنی بھاشا میں
انجیل پڑھتے ہیں، بھجن گاتے ہیں، دھرمی وکھیان سنتے
ہیں . جو لوگ لیٹن بھاشا کو ایسائیوں کی دھرمی
بھاشا سمجھتے ہیں وہ اُن کی بھول ہے کیوں کہ حضرت
ایسا کی بھاشا لیٹن نہیں تھی. کروڑوں ایسائیوں کو مالوم
ہی نہیں کہ پہلے پہل ایسائی دھرمی پستک، انجیل،
کس بھاشا میں لکھی گئی تھی . اس لئے اکسر ایسائی
خد اپنی زبان میں ایسائی دھرم کی کتابیں پڑھتے،
سنتے اور سمجھتے ہیں . شادی اور موتا (ایک طرح کا
بیاہ) کے موقوں پر اکسر مقامی بھاشا اور آم بھاشا کا
چلن ہوتا ہے . اسکے برعکس (خلاف) اردو کے حامی
اور ہندی پریمی خاندانی رسموں اور سماجی تقریبوں
میں سنسکرت یا عربی کا استعمال کرتے ہیں جسے کوئی
نہیں سمجھتا . میرے نزدیک ہندی کا سب سے بڑا
اپمان ہندی پریمیوں کے ہاتھوں ہو رہا ہے کہ اِن کی
سب سے زیادا چہیتی بھاشا زندگی بھر کے سب سے اہم
ناتے کو جوڑتے وقت بیدخل کر دی جاتی ہے اور موت
مٹی کے موقعے پر بھی اس سے کچھ فایدا نہیں ہوتا !
ٹھیک اسی ترہ اردو کی سب سے بڑی بے عزتی خد اردو
کے حامیوں کی وجہ سے ہورہی ہے کیوں کہ سماج اور
خاندان کی سب سے زیادہ اہم تقریبوں کے وقت
یانے شادی اور موتا کی رسموں کے وقت اسے گھر نکالا

जिस तरह हिन्दी के पक्ष पातियों को बिना कारन उरदू प्रेमियों पर शक है, उसी तरह बाज़ उरदू के हामियों को हिन्दी प्रेमियों से बदगुमानी है. जब "विदा" (وداع) से विदा (ودا) और विदाई और बिदा और बिदायगी बना, तो उरदू के हामियों ने शोर मचाया कि हिन्दी वाले उरदू को बरबाद करने के लिए बिदागी, गरम और इसी तरह दूसरे लफ़्ज़ जान बूझ कर बिगाड़ रहे हैं. गोया सिर्फ़ हिन्दी प्रेमी ही यह लफ़्ज़ इस तरह बोलते हैं.

यही उरदू के हामियों की बड़ी भारी भूल है, जो वह भाषाई बदलाव को बिगाड़ से ताबीर करते (का नाम लेते) हैं. भाषा का बदलाव, जो जनता के आम झुकाव के मुताबिक़ हो रहा है, सोल्हों आने फ़ितरी (प्राकृतिक) है. इस भाषाई फ़ितरत का विरोधी होना, भाषाई हक़ीक़त से नावाक़िफ़ होना है.

बहुतेरे लोग भाषा के मसले को धर्म और जात का मसला समझते हैं और भाषा पर धर्म या जात के निगाही नुक़्ते से बहस करते हैं. यह भी इनकी बड़ी भूल है. इन के बारे में ग़ुलाम सयैदैन ने ठीक लिखा है:

"भाषा का कोई धर्म नहीं होता. मिस्र में लाखों ईसाई अरबी बोलते हैं, मगर उसे मुसलमानों की नहीं, अपनी भाषा समझते हैं. अल्बानिया और चीन में लाखों मुसलमान उन देशों की भाषा बोलते हैं."

बहुतेरे लोग अपने राजकाजी लगाव के नाते इस सवाल से अनजान बनते हैं, जैसे बाज़ कांगरेसी, सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट नेता अक्सर गम्भीर पन से भाषा के मसले पर सोच बिचार नहीं करते या उसको तोड़ मरोड़ कर पेश करते हैं. वह सचमुच राजकाजी और सभ्यताई मसलों के मुख़्तलिफ़ पहलुओं को भुलाना चाहते हैं या भाषा की अहमियत को जानते ही नहीं. भाषा और धर्म में चाहे कितना ही लगाव रहे, फिर भी भाषा और चीज़ है और धर्म कुछ और धन काज की चाहे कितनी ही अहमियत हो, भाषा और धर्म, समाज और राजकाज भी अपनी अपनी जगह बहुत अहम हैं. सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट जिस तरह भाषा के मसले को ग़ैर अहम समझते हैं और उसे बुर्जुआओं की चालाकी ठहराते हैं कि उन्होंने जनता को अपनी असल मांग से भटकाने और बहकाने के लिए धर्म, भाषा और सभ्यता के मसले खड़े कर दिये हैं, वह सिर्फ़ एक हद तक ठीक है. उन्हें बिल्कुल मन गढ़त समझना, सौ फ़ी सैकड़ा "बुर्जुआ की चालाकी" बताना भाषाई मसले की नावाक़िफ़यत है. इन राज काजी नेताओं का यह ख़्याल भी ठीक नहीं कि धन दौलत के आगे धर्म की तरह भाषा का मसला भी ग़ैर अहम है. इससे यह ग़लत ख़्याल फैलता है कि धर्म और भाषा यकसां अहम हैं. यह ख़्याल इसलिये

جس ترہ هندی کے پکھں پاتیوں کو بنا کارن اُردو پریمیوں پر شک هے، اُسی طرح باز اُردو کے حامیوں کو هندی پریمیوں سے بدگمانی هے . جب " وداع " سے ودا اور ودامی اور بدا اور بدامگی بنا، تو اُردو کے حامیوں نے شور مچایا کہ هندی والے اُردو کو برباد کرنے کے لئے بداگی، گرم اور اِسی ترہ دوسرے لفز جان بوجھ کر بگاڑ رهے هیں . گویا صرف هندی پریمی هی یہ لفز اِس طرح بولتے هیں .

یہی اُردو کے حامیوں کی بڑی بھاری بھول هے، جو وہ بھاشائی بدلاؤ کو بگاڑ سے تابیر کرتے (کا نام لیتے) هیں بھاشا کا بدلاؤ، جو جنتا کے آم جھکاؤ کے مطابق هو رها هے، سولهوں آنے فطری (پراکرتک) هے . اِس بھاشائی فطرت کا وِرودهی هونا، بھاشائی حقیقت سے نا واقف هونا هے .

بہتیرے لوگ بھاشا کے مسئلے کو دهرم اور جات کا مسئلہ سمجھتے هیں اور بھاشا پر دهرم یا جات کے نگاهی نقطے سے بحث کرتے هیں . یہ بھی اِن کی بڑی بھول هے . اِن کے بارے میں غلام سیدین نے ٹھیک لکھا هے :

" بھاشا کا کوئی دهرم نہیں هوتا . مصر میں لاکھوں عیسائی عربی بولتے هیں، مگر اُسے مسلمانوں کی نہیں، اپنی بھاشا سمجھتے هیں . البانیہ اور چین میں لاکھوں مسلمان اُن دیشوں کی بھاشا بولتے هیں ."

بہتیرے لوگ اپنے راج کاجی لگاؤ کے ناتے اِس سوال سے انجان بنتے هیں، جیسے باز کانگریسی، سوشلسٹ اور کمیونسٹ نیتا اکثر گمبھیر پن سے بھاشا کے مسئلے پر سوچ بچار نہیں کرتے یا اُس کو توڑ مروڑ کر پیش کرتے هیں . وہ سچ مچ راج کاجی اور سبھیتائی مسئلوں کے مختلف پہلوؤں کو بھلانا چاهتے هیں یا بھاشا کی اهمیت کو جانتے هی نہیں . بھاشا اور دهرم میں چاهے کتنا هی لگاؤ رهے، پھر بھی بھاشا اور چیز هے اور دهرم کچھ اور دهن کاج کی چاهے کتنی هی اهمیت هو، بھاشا اور دهرم، سماج اور راج کاج بھی اپنی اپنی جگہ بہت اهم هیں . سوشلسٹ اور کمیونسٹ جس ترہ بھاشا کے مسئلے کو غیر اهم سمجھتے هیں اور اُسے برژواؤں کی چالاکی ٹھہراتے هیں کہ اُنہوں نے جنتا کو اپنی اصل مانگ سے بھٹکانے اور بہکانے کے لئے دهرم، بھاشا اور سبھیتا کے مسئلے کھڑے کر دیئے هیں، وہ صرف ایک حد تک ٹھیک هے . اُنہیں بالکل من گھڑت سمجھنا، سو فی سیکڑہ " برژوازی کی چالاکی " بتانا بھاشائی مسئلے کی ناواقفیت هے . اِن راج کاجی نیتاؤں کا یہ خیال بھی ٹھیک نہیں کہ دهن دولت کے آگے دهرم کی ترہ بھاشا کا مسئلہ بھی غیر اهم هے . اِس سے یہ غلط خیال پھیلتا هے کہ دهرم اور بھاشا یکساں اهم هیں . یہ خیال اس لئے

हिन्दुस्तान का भाशाई मसला और हिन्दुस्तानी शब्द विद्या के उसूल

(डाक्टर जाफ़र हसन)

[डाक्टर जाफ़र हसन उस्मानिया यूनिवर्सिटी में एक प्रोफ़ेसर और भाशा विद्या के बहुत बड़े जानकार हैं. हिन्दुस्तानी भाशा के भी वह प्रेमी हैं और हिन्दुस्तानी को रूप देने के बारे में अपने ख़ास विचार रखते हैं. उरदू हरफ़ों को कम करके उरदू हिज्जे आसान करने के वह पुराने हामी हैं. इस नोट और इस लेख में उरदू हिज्जे उन्हीं के उसूल पर किये गये हैं. गांधी जी उनके विचारों की बड़ी क़द्र करते थे. वर्धा की हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के वह एक ख़ास मेम्बर हैं. हम चाहते हैं 'नया हिन्द' के प्रेमी इस लेख माला को जिसका यह पहला लेख है ध्यान से पढ़ें—सुन्दरलाल]

हिन्दुस्तान के भाशाई मसले पर जो लेख, रिसाले, किताबें और अख़बारी बयान मेरी नज़र से गुज़रे हैं उनके देखने से मुझे कई बार ख़्याल हुआ कि बहुतेरे लोग जो हिन्दुस्तान के भाशाई मसले को सुलझाने बैठते हैं इस मसले को उल्टा और उलझा देते हैं. मिसाल के तौर पर डाक्टर सुनीत कुमार चटरजी ने जिस बाज़ारू और गंवारू हिन्दुस्तानी का सुझाव किया है, वह सुधार नहीं इन्क़िलाब है, वह भी महा इन्क़िलाब ! ऐसे लोगों के सामने जो मामूली से सुधार के लिए तैयार न हों, महा इन्क़िलाबी सुझाव पेश करना, हमारे भाशाई मसले को उलझाना नहीं, तो और क्या है ?

बाज़ारू और गंवारू हिन्दी को राश्ट्र भाशा बनाने का सुझाव पेश करना, ऐसी ही बात है, जैसे कोई कट्टर हिन्दुओं और ईसाईयों के सामने जो अपने धर्म ही के लोगों में बैन जात वारी या बैन जुज़ फ़िरक़ाई ब्याह के मुवाफ़िक़ न हों अन्तर धर्मी ब्याह का सुझाव पेश करे. यह मसले को सुलझाना है या उलझाना ?

बहुतेरे लोग भाशाई मसले की हक़ीक़त ही से वाक़िफ़ नहीं. इन्हीं के बारे में डाक्टर तारा चन्द ने बिल्कुल ठीक लिखा है:

"कुछ लोगों का विचार है कि उरदू वाले देश को देस और प्रसाद को प्रशाद हिन्दी को बिगाड़ने के लिए लिखते हैं. ऐसा नहीं है. देश का देस और प्रसाद का प्रशाद उरदू से पहले ही बन चुके थे." ('नया हिन्द' अगस्त 1949)

ھندستان کا بھاشائی مسئلا اور ھندستانی شبد ودیا کے اُسول

(ڈاکٹر جافر حسن)

[ڈاکٹر جافر حسن اُسمانیا یونیورسٹی میں ایک پروفیسر اور بھاشا ودیا کے بہت بڑے جانکار ھیں . ھندستانی بھاشا کے بھی وہ پریمی ھیں اور ھندستانی کو روپ دینے کے بارے میں اپنے خاص وچار رکھتے ھیں. اُردو ھرفوں کو کم کر کے اُردو ھجے آسان کرنے کے وہ پرانے حامی ھیں . اِس نوٹ اور اِس لیکھ میں اُردو ھجے اُنھیں کے اُسول پر کئیے گئے ھیں . گاندھی جی اِن کے وچاروں کی بڑی قدر کرتے تھے . وردھا کی ھندستانی پرچار سبھا کے وہ ایک خاص ممبر ھیں . ہم چاھتے ھیں 'نیا ھند' کے پریمی اِس لیکھ مالا کو جس کا یہ پہلا لیکھ ھے کو دھیان سے پڑھیں—سندرلال]

ھندستان کے بھاشائی مسئلے پر جو لیکھ' رسالے' کتابیں اور اخباری بیان میری نزر سے گذرے ھیں اُن کے دیکھنے سے مجھے کئی بار خیال ھوا کہ بہتیرے لوگ جو ھندستان کے بھاشائی مسئلے کو سلجھانے بیٹھتے ھیں اِس مسئیے کو اُلٹا اور اُلجھا دیتے ھیں . مسال کے توپر ڈاکٹر سنیت کمار چٹر جی نے جس بازارو اور گنوارو ھندستانی کا سجھاؤ کیا ھے' وہ سدھار نہیں انقلاب ھے' وہ بھی مہا اِنقلاب ! ایسے لوگوں کے سامنے جو سامولی سے سدھار کے لئیے تیار نہ ھوں' مہا اِنقلابی سجھاؤ پیش کرنا' ھمارے بھاشائی مسئلے کو اُلجھانا نہیں' تو اور کیا ھے ؟

بازارو اور گنوارو ھندی کو راشٹر بھاشا بنانے کا سجھاؤ پیش کرنا' ایسی ھی بات ھے' جیسے کوئی کٹر ھندوؤں اور ایسائیوں کے سامنے جو اپنے دھرم ھی کے لوگوں میں بین جات واری یا بین جزفرقائی بیاہ کے موافق نہ ھوں' انتر دھرمی بیاہ کا سجھاؤ پیش کرے . یہ مسئلے کو سلجھانا ھے یا اُلجھانا ؟

بہتیرے لوگ بھاشائی مسئلے کی حقیقت ھی سے واقف نہیں . اِن ھی کے بارے میں ڈاکٹر تارا چند نے بلکل ٹھیک لکھا ھے :

" کچھ لوگوں کا وچار ھے کہ اُردو والے دیش کو دیس اور پرساد کو پرشاد ھندی کو بگاڑنے کے لئے لکھتے ھیں . ایسا نہیں ھے . دیش کا دیس اور پرساد کا پرشاد اُردو سے پہلے ھی بن چکے تھے ." ('نیا ھند' اگست 1949)

है. और इस तरह हम में हमारे बाप दादा और नगड़ दादा सब ज़िन्दा रहते हैं. इसी को 'नया जन्म' कहते हैं. नये जन्म में जहां बहुत सी बातें क़ुदरती तौर पर रिवायती और पुरानी होती हैं वहां अनगिनत नई बातें आ जाती हैं और यह नई और पुरानी मिलकर निश्चय ही उन पुरानी धुरानी बातों से बहुत कुछ अलग होती हैं जो हमारी पुरानी तहज़ीब और हमारे पुराने फ़लसफ़े ज़िन्दगी में मिलती हैं. इस क़ुदरती फ़र्क़ को दूर करना क़ुदरत से लड़ना है. अपनी क़ौम को हलाकत की तरफ़ ले जाना है और उल्टी गंगा के बहने का ख़्वाब देखना है. जीवन की इस गुत्थी को सुलझाने के लिये जब बीच पूरब के बासियों से सीधी सादी बात कही जाती है तो वह हुज्जते बंगाला से काम लेने लग जाते हैं. कुछ लोग हिकमते चीन के फ़लसफ़े पर भी अमल करते हैं मगर उनकी आवाज़ नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ होती है. दिल व दिमाग़ की यह हालत, यह विचार धारा बीच पूरब, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और पूरे पूरब में एक सी है.

धुर पूरब की राजकाजी, माली, रोज़गारी, तालीमी, कल्चरी, तिजारती, सनअती और सोशल हालत के बारे में भी बहुत कुछ लिखने को जी चाहता है, इस ख़्याल से कि हमारे भारत के लोग उससे फ़ायदा उठायें. मज़हबी बातों में भी बहुत सी बातें मिलती जुलती हैं क्योंकि सब मज़हबी ख़्यालों की बुनियादें एक ही जड़ से निकली हैं और सारी दुनिया में एक सी हैं.

बीच पूरब का मेरा दौरा अभी अधूरा है. इस वक़्त मैं मक्के में ठहरा हुआ हूँ. मक्के के पन्डों को जिन्हें 'मोअल्लिम' कहते हैं हालात बहुत दिलचस्प हैं. काशी के पंडे तो यात्रियों की सौ पचास मील आगे बढ़ कर रेलों में अगुवाई करते हैं लेकिन मक्का मुअज़्ज़मा के पंडे सात समुन्दर पार हज़ारों कोस दूर जा जा कर अपने अपने जजमानों यानी हाजियों को हज करने का उपदेश देते हैं. धर्म के यह व्योपारी बड़े पक्के होते हैं, और बड़े जानकार भी. दुनिया के दूसरे व्योपारी किसी फ़र्म के एजेन्ट बनकर दुनिया का सैरो-सफ़र करते हैं मगर यहां के 'मोअल्लिम' अल्लाह मियां के एजेन्ट बनकर हर साल दुनिया को नापते रहते हैं. यह दौलत भी हासिल करते हैं और धर्म भी. काशी वालों से यह ज़ियादा लम्बे हाथ मारते हैं और दौड़ धूप भी इनकी ज़ियादा लम्बी होती है. बाक़ी फिर.

आपका भाई

अब्दुल्ला मिस्री

ہے ۔ اور اس طرح ہم میں ہمارے باپ دادا اور نگڑ دادا سب زندہ رہتے ہیں ۔ اسی کو 'نیا جنم' کہتے ہیں ۔ نئے جنم میں جہاں بہت سی باتیں قدرتی طور پر روائتی اور پرانی ہوتی ہیں وہاں اَن‌گنت نئی باتیں آجاتی ہیں اور یہ نئی اور پرانی مل کر نشچے ہی اُن پرانی دھرانی باتوں سے بہت کچھ الگ ہوتی ہیں جو ہماری پرانی تہذیب اور ہمارے پرانے فلسفے زندگی میں ملتی ہیں ۔ اس قدرتی فرق کو دور کرنا قدرت سے لڑنا ہے ۔ اپنی قوم کو ہلاکت کی طرف لے جانا ہے اور اُلٹی گنگا کے بہنے کا خواب دیکھنا ہے ۔ جیون کی اس گتھی کو سلجھانے کے لئے جب بیچ پورب کے باسیوں سے سیدھی سادی بات کہی جاتی ہے تو وہ حجت بنگالہ سے کام لینے لگ جاتے ہیں ۔ کچھ لوگ حکمت چین کے فلسفے پر بھی عمل کرتے ہیں مگر اُن کی آواز نقارخانے میں طوطی کی آواز ہوتی ہے ۔ دل و دماغ کی یہ حالت' یہ وچاردھارا بیچ پورب' ہندستان' پاکستان اور پورے پورب میں ایک سی ہے ۔

دھور پورب کی راج کاجی' مالی' روزگاری' تعلیمی' کلچری' تجارتی' صنعتی اور سوشل حالت کے بارےمیں بھی بہت کچھ لکھنے کو جی چاہتا ہے' اس خیال سے کہ ہمارے بھارت کے لوگ اُس سے فائدہ اُٹھائیں۔ مذہبی باتوں میں بھی بہت سی باتیں ملتی جلتی ہیں کیونکہ سب مذہبی خیالوں کی بنیادیں ایک ہی جڑ سے نکلی ہیں اور ساری دنیا میں ایک سی ہیں ۔

بیچ پورب کا میرا دورا ابھی ادھورا ہے ۔ اس وقت میں مکے میں ٹھہرا ہوا ہوں ۔ مکے کے پنڈوں کو جنہیں 'معلم' کہتے ہیں حالات بہت دلچسپ ہیں ۔ کاشی کے پنڈے تو یاتریوں کی سو پچاس میل آگے بڑھ کر ریلوں میں اگوائی کرتے ہیں لیکن مکہ معظمہ کے پنڈے سات سمندر پار ہزاروں کوس دور جاجا کر اپنے اپنے ججمانوں یعنی حاجیوں کو حج کرنے کا اُپدیش دیتے ہیں ۔ دھرم کے یہ بیوپاری بڑے پکے ہوتے ہیں' اور بڑے جانکار بھی ۔ دنیا کے دوسرے بیوپاری کسی فرم کے ایجنٹ بن کر دنیا کا سیر و سفر کرتے ہیں مگر یہاں کے 'معلم' اللہ میاں کے ایجنٹ بن کر ہر سال دنیا کو ناپتے رہتے ہیں ۔ یہ دولت بھی حاصل کرتے ہیں اور دھرم بھی ۔ کاشی والوں سے یہ زیادہ لمبے ہاتھ مارتے ہیں اور دوڑ دھوپ بھی اِن کی زیادہ لمبی ہوتی ہے ۔ باقی پھر ۔

آپ کا بھائی

عبداللہ مصری

है और अब चीन का आपको तजुर्बा हो गया. दोनों तजुर्बों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं. तीसरा तजुर्बा अब मुझे बीच पूरब (मिडिल ईस्ट) का हो रहा है, अगरचे इसका थोड़ा बहुत तजुर्बा मुझे पहले भी हो चुका है.

मैं देखता हूँ कि दिलों और दिमाग़ों की बनावट के ख़्याल से बीच पूरब, पूरब और धूर पूरब में बहुत सी बातें एक सी पाई जाती हैं. पिछली तारीख़, ज़िन्दगी के फ़लसफ़ा, और क़ौमी ख़ासियतों में भी अचरज भरी यकसानियत है. अगरचे रीत-रिवाज, रहन-सहन, सोचने के ढंग और भांति-भांति की बोलियों की वजह से ज़ाहिर में फ़र्क़ भी बहुत मालूम होते हैं. लेकिन हक़ीक़त में फ़र्क़ बहुत कम हैं. दिमाग़ी एतबार से तुरकों और गिन्ती के और लोगों को छोड़ कर बीच पूरब के सब बासी गाड़ी के पीछे बैल जोतने पर तुले हुए हैं. भारत में उल्टी गंगा बहाने की कहावत कितनी मशहूर है लेकिन क्या सच-मुच उल्टी गंगा बहती है इस पर ध्यान देने वाले लोग कम हैं. लोग चाहते हैं कि जो ज़माना हज़ारों साल हुआ गुज़र चुका उसको धरती के पेट से निकाल कर फिर ले आयें. यानी एक बूढ़ा अपनी जवानी और बचपन को फिर से देखना चाहता है और एक नौजवान हू बहू अपने बाप दादा और नगड़ दादा के रूप में अपने को देखने के लिए बेचैन है.

बीच पूरब वालों का अक़ीदा (विश्वास) है कि अगर वह ठीक-ठीक इस्लाम के "सुनहरे उसूलों" पर कार-बन्द हो जायें तो उनका तेरह सौ साल का बड़प्पन फिर से लौट आएगा. इस्लाम के ठीक-ठीक सुनहरे उसूल क़ुरान शरीफ़ और हदीसों में भरे पड़े हैं और फ़िक़ा (मुस्लिम धर्म शास्त्र) में भी और उल्माए कराम (मौलवियों) की लच्छेदार बातों और उनके कारनामों में भी काफ़ी हैं. इस पर भी लाखों करोड़ों सीधे सादे अनपढ़ और पढ़े लिखे मुसलमान इस्लाम के ठीक ठीक "सुनहरे उसूलों" के समझने के नाक़ाबिल हैं, उसी तरह जैसे भारत के करोड़ों हिन्दू वेदों और पुरानों के ठीक-ठीक सुनहरे उसूलों के समझने के नाक़ाबिल हैं. मगर कुछ लोग हैं कि डंडा लेकर पीछे पड़े हुये हैं कि तुम्हें समझना ही पड़ेगा. तुम जान लो कि गंगा उल्टी बहती है, नहीं बहती तो ज़रूर बहेगी.

इन लोगों से कोई कहे कि भई संसार में हर जानदार की एक उम्र तय होती है, एक कली एक ही बार खिलती है, दूसरे मौसम में दूसरी कलियां खिलती हैं. इन्सान का बचपन और जवानी एक ही मर्तबा रंग लाते हैं. फिर बुढ़ापा आता है और फिर मौत. क़ौमों की ज़िन्दगी का भी एक बचपन होता है, एक जवानी, फिर बुढ़ापा और मौत भी. इस मौत के साथ ही साथ दूसरी ज़िन्दगी भी शुरू होती रहती है, यानी बाप की जगह बेटा और बेटे की जगह पोता लेता रहता

اور اب چین کا آپ کو تجربہ ہوگیا. دونوں تجربوں سے ہم بہت کچھ سیکھ سکتے ہیں. تیسرا تجربہ اب مجھے بیچ پورب (مڈل ایسٹ) کا ہو رہا ہے' اگرچہ اِس کا تھوڑا بہت تجربہ مجھے پہلے بھی ہوچکا ہے .

میں دیکھتا ہوں کہ دلوں اور دماغوں کی بناوٹ کے خیال سے بیچ پورب' پورب اور دھور پورب میں بہت سی باتیں ایک سی پائی جاتی ہیں. پچھلی تاریخ' زندگی کے فلسفہ' اور قومی خاصیتوں میں بھی اچرج بھری یکسانیت ہے . اگرچہ ریت رواج' رہن سہن' سوچنے کے ڈھنگ اور بھانت بھانت کی بولیوں کی وجہ سے ظاہر میں فرق بھی بہت معلوم ہوتے ہیں . لیکن حقیقت میں فرق بہت کم ہیں . دماغی اعتبار سے ترکوں اور گنتی کے اور لوگوں کو چھوڑ کر بیچ پورب کے سب باسی گاڑی کے پیچھے بیل جوتنے پر تلے ہوئے ہیں. بھارت میں الٹی گنگا بہانے کی کہاوت کتنی مشہور ہے . لیکن کیا سچ مچ الٹی گنگا بہتی ہے اس پر دھیان دینے والے لوگ کم ہیں . لوگ چاہتے ہیں کہ جو زمانہ ہزاروں سال ہوا گذر چکا اُس کو دھرتی کے پیٹ سے نکال کر پھر لے آئیں . یعنی ایک بوڑھا اپنی جوانی اور بچپن کو پھر سے دیکھنا چاہتا ہے اور ایک نوجوان ہوبہو اپنے باپ دادا اور لکڑ دادا کے روپ میں اپنے کو دیکھنے کے لئے بےچین ہے.

بیچ پورب والوں کا عقیدہ (وشواس) ہے کہ اگر وہ ٹھیک ٹھیک اسلام کے "سنہرے اُصولوں" پر کاربند ہوجائیں تو اُن کا تیرہ سو سال کا بڑپپن پھر سے لوٹ آئے گا . اسلام کے ٹھیک ٹھیک سنہرے اُصول قرآن شریف اور حدیثوں میں بھرے پڑے ہیں اور فقہ (مسلم دھرم شاستر) میں بھی اور علماء کرام (مولویوں) کی لچھےدار باتوں اور اُن کے کارناموں میں بھی کافی ہیں . اِس پر بھی لاکھوں کروڑوں سیدھے سادے اَن پڑھ اور پڑھے لکھے مسلمان اسلام کے ٹھیک ٹھیک "سنہرے اُصولوں" کے سمجھنے کے ناقابل ہیں' اسی طرح جیسے بھارت کے کروڑوں ہندو ویدوں اور پرانوں کے ٹھیک ٹھیک سنہرے اُصولوں کے سمجھنے کے ناقابل ہیں. مگر کچھ لوگ ہیں کہ ڈنڈا لے کر پیچھے پڑے ہوئے ہیں کہ تمہیں سمجھنا ہی پڑے گا . تم جان لو کہ گنگا الٹی بہتی ہے' نہیں بہتی تو ضرور بہے گی .

اِن لوگوں سے کوئی کہے کہ بھئی سنسار میں ہر جاندار کی ایک عمر طے ہوتی ہے' ایک کلی ایک ہی بار کھلتی ہے' دوسرے موسم میں دوسری کلیاں کھلتی ہیں. انسان کا بچپن اور جوانی ایک ہی مرتبہ رنگ لاتے ہیں . پھر بڑھاپا آتا ہے اور پھر موت . قوموں کی زندگی کا بھی ایک بچپن ہوتا ہے' ایک جوانی' پھر بڑھاپا اور موت بھی . اِس موت کے ساتھ ہی ساتھ دوسری زندگی بھی شروع ہوتی رہتی ہے' یعنی باپ کی جگہ بیٹا اور بیٹے کی جگہ پوتا لیتا رہتا

...ता होता है जो ग़लत समझ या ग़लत समझौते के ...सर में इस देश को भी उसी माली और राज काजी ढांचे ... ढालना चाहते हैं जिसने अमरीकी हकूमत को इस हालत ...क पहुँचा दिया. हम अपने मुल्क को किसी दल बन्दी में ...ालना नहीं चाहते. हम दल बन्दी ही को दुनिया से ख़त्म ...रना चाहते हैं. हम शान्ति के उपासक हैं और जंग को ...रती से मिटाना चाहते हैं. हमें यह भी पूरा यक़ीन है कि ...ो रास्ता महात्मा गांधी ने दुनिया को बताया है दुनिया में ...च्चा अमन और सुख क़ायम करने का वही एक तरीक़ा है. ...र हम दुनिया की चाल को भी ध्यान से देख रहे हैं. ...ोरिया और चीन के लोगों पर जो ज़ुल्म हो चुके हैं और ...जिन ज़ुल्मों की तैयारी है उन में मज़लूमों के साथ साथ ...मदर्दी तो सबका इन्सानी फ़र्ज़ और धर्म है ही, हमें यह भी ...ाफ़ दिखाई दे रहा है कि न केवल एशिया के सब देशों बल्कि ...री दुनिया की दो अरब जनता की क़िस्मत कोरिया और ...ीन की क़िस्मत के साथ बंधी हुई है. बीमारी बम और ...टम बम की जीत दुनिया भर की अख़लाक़ी और रूहानी मौत ...ोगी. हमें अगर ज़िन्दा रहना है और दुनिया में सच्ची ...ज़ादी, सच्ची लोकशाही, सच्ची इन्सानियत, सच्ची कलचर ...ौर सच्चे दीन धर्म को ज़िन्दा रखना है तो सच समझने, ...च कहने और सच के लिये मर मिटने को हमें अपने को ...यार करना होगा. यही अपने और दूसरों के अन्दर उस ...ात्मबल को जगाने का तरीक़ा है जिसके सामने कोई भी बे ...न्साफ़ी हथियारों के बल देर तक नहीं टिक सकती.

5. 7. '52 —सुन्दरलाल

دکھوتاہے جو غلط یا غلط سمجھوتے کے اثر میں اس دیش کو بھی اسی مالی اور راج کاجی ڈھانچے میں ڈھالنا چاہتے ہیں جس نے امریکی حکومت کو اس حالت تک پہونچا دیا. ہم اپنے ملک کو کسی دل بندی میں ڈالنا نہیں چاہتے. ہم دل بندی ہی کو دنیا سے ختم کرنا چاہتے ہیں . ہم شانتی کے اپاسک ہیں اور جنگ کو دھرتی سے مٹانا چاہتے ہیں. ہمیں یہ بھی پورا یقین ہے کہ جو راستہ مہاتما گاندھی نے دنیا کو بتایا ہے دنیا میں سچا امن اور سکھ قائم کرنے کا وہی ایک طریقہ ہے . پر ہم دنیا کی چال کو بھی دھیان سے دیکھ رہے ہیں . کوریا اور چین کے لوگوں پر جو ظلم ہو چکے ہیں اور جن ظلموں کی تیاری ہے ان میں مظلوموں کے ساتھ ساتھ ہمدردی تو سب کا انسانی فرض اور دھرم ہے ہی' ہمیں یہ بھی صاف دکھائی دے رہا ہے کہ نہ کیول ایشیا کے سب دیشوں بلکہ ساری دنیا کی دو ارب جنتا کی قسمت کوریا اور چین کی قسمت کے ساتھ بندھی ہوئی ہے . بیماری بم اور ایٹم بم کی جیت کی دنیا بھر اخلاقی اور روحانی موت ہوگی . ہمیں اگر زندہ رہنا ہے اور دنیا میں سچی آزادی' سچی لوک شاہی' سچی انسانیت' سچی کلچر اور سچے دین دھرم کو زندہ رکھنا ہے تو سچ سمجھنے' سچ کہنے اور سچ کے لئے مر مٹنے کو ہمیں اپنے کو تیار کرنا ہوگا . یہی اپنے اور دوسروں کے اندر اس آتم بل کو جگانے کا طریقہ ہے جس کے سامنے کوئی بھی بے انصافی ہتھیاروں کے بل دیر تک نہیں ٹک سکتی .

—سندر لال 5-7-'52

मक्का से मौलाना अब्दुल्ला मिस्री का एक ख़त

प्यारे पंडित सुन्दरलाल ! सलाम, दुआ व जय हिन्द,

बहुत दिनों के बाद बहुत दूर समुन्दर पार से यह ख़त ...ज रहा हूँ. मालूम हुआ कि आप भी समुन्दर पार गये हुये ... चीन में आपने क्या कुछ देखा इसका पूरा नक़्शा तो अभी ... आपने भारतियों के सामने नहीं रखा लेकिन जो कुछ ...ख़बारों में आया है उससे भी धूर पूरब (फ़ार ईस्ट) के ...सियों के बारे में बहुत कुछ मालूम हो जाता है. भारत की ...नी कहावतों में 'हिकमते चीन और हुज्जते बंगाला' की ...वत तो आपने सुनी होगी. बंगाल का मुझे काफ़ी तजुर्बा

مکہ سے مولانا عبداللہ مصری کا ایک خط

پیارے پنڈت سندرلال ! سلام' دعا و جے ہند '

بہت دنوں کے بعد بہت دور سمندر پار سے یہ خط بھیج رہا ہوں . معلوم ہوا کہ آپ بھی سمندر پار گئے ہوئے تھے . چین میں آپ نے کیا کچھ دیکھا اس کا پورا نقشہ تو ابھی تک آپ نے بھارتیوں کے سامنے نہیں رکھا لیکن جو کچھ اخباروں میں آیا ہے اس سے بھی دھور پورب (فارایسٹ) کے باسیوں کے بارے میں بہت کچھ معلوم ہو جاتا ہے . بھارت کی پرانی کہاوتوں میں 'حکمت چین اور حجت بنگالہ' کی کہاوت تو آپ نے سنی ہوگی . بنگال کا مجھے کافی تجربہ

अपनी हिकमते अमली के कारन जब जो चाहे कहें जनता और उसके सेवकों को अपने आगे पीछे देखना होगा, अपने सच्चे हितों को समझना होगा और साफ़ साफ़ बात करनी होगी. दुनिया के अख़बारों में ख़बर छप चुकी है कि ऐटम बम कोरिया के मैदान में पहुँच चुके. अमरीका की सरकार ने इसकी तरदीद नहीं की और करे भी तो उसकी क्या क़ीमत. एशिया के देशों के बहुत से राज काजी लोग इस लिये इन ग़लत कामों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाने में झिझकते हैं क्योंकि सच बोलने की सज़ा में ऐटम बम का डर उनके सर पर नाचता रहता है. पर कब तक ! आख़िर दुनिया की दबी हुई जनता को इस ख़तरे का सामना करने के लिये तैयार होना ही होगा. बड़े बड़े साइन्सदां पेशीन गोई कर रहे हैं कि अगर ऐटम बम की लड़ाई सच मुच छिड़ गई तो दुनिया की आधी आबादी ख़त्म हो जायेगी और कई बड़े बड़े महादीपों का निशान तक बाक़ी न रहेगा. मिटने का किसी को कोई डर नहीं होना चाहिये. आख़िर हमारी इस छोटी सी धरती को भी एक दिन मिटना ही है. लेकिन ज़ुल्म और शैतानियत के सामने सर झुका देना और अपनी आत्मा की आवाज़ को दबाना मिटने से बदतर है. हमें इन्सानी क़ौम की अख़लाक़ी और रूहानी थाती को बचाना है और लोगों के दिलों को इस सारे ख़तरे का सामना करने के लिये मज़बूत करना है. जिस अमरीकी सरकार के मातहत उसके घर के अन्दर आज तक—सिर्फ़ दक्खिन के हिस्सों में ही नहीं जहां की कठिनाईयां दुनिया को गिनाई जाती हैं बल्कि उत्तर की "उदार" रियासतों में भी—काले हब्शियों के साथ मामूली इन्सानों का सा बर्ताव भी नहीं किया जा सकता. उस से हम दूर के महादीपों में इन्सानी बराबरी और इन्सानी भाई चारे की उम्मीद कैसे कर सकते हैं.

अमरीकी क़ौम के बहुत से गुनों की हमारे दिल में क़द्र है. अमरीकी जनता के साथ हमें उतना ही प्रेम है जितना अपने या किसी भी दूसरे देश की जनता के साथ. हम सारी मनुश्य जाति को एक कुनबा मानते हैं और वह दिन देखने के लिये बेचैन हैं जब सारी दुनिया के इन्सान एक कुनबे की तरह रहने लगें. हमें इस बात का भी पक्का यक़ीन है कि आज कल के यह डरावने बादल छटेंगे और बहुत जल्दी इन बादलों के अन्दर ही से इन्सानी बराबरी और इन्सानी भाई चारे का सूरज अपने पूरे तेज के साथ चमकता हुआ दिखाई पड़ेगा. लेकिन आज कल की हालत में जब अमरीकी राज काजी नेता और उस यूनो के मुखिया जिसके नाम पर कोरिया की लड़ाई लड़ी जा रही है 'इन्सानी भाई चारे' 'लोक शाही' और 'जमहूरियत' की बात करते हैं तो हमें "बग़ल में छुरी और मुंह में राम" की पुरानी कहावत याद आ जाती है हमें अपने मुल्क के उन भाईयों पर भी दया आ जाती है और

حکمت عملی کے کارن جب جو چاہیں کہیں جنتا اور ... سیوکوں کو اپنے آگے پیچھے دیکھنا ہوگا اپنے سچے ہتوں ... سمجھنا ہوگا اور صاف صاف بات کرنی ہوگی . دنیا کے ... باروں میں خبر چھپ چکی ہے کہ ایٹم بم کوریا کے ... دان میں پہنچ چکے . امریکہ کی سرکار نے اسکی ... ید نہیں کی اور کرے بھی تو اسکی کیا قیمت . ... ا کے دیشوں کے بہت سے راج کاجی لوگ اس لئے ان ... ط کاموں کے خلاف اپنی آواز اٹھانے میں جھجھکتے ... ں کیونکہ سچ بولنے کی سزا میں ایٹم بم کا ڈر ان کے ... پر ناچتا رہتا ہے . پر کب تک ! آخر دنیا کی دبی ... جنتا کو اس خطرے کا سامنا کرنے کے لئے تیار ہونا ... ہوگا . بڑے بڑے سائنسداں پیشین گوئی کر رہے ہیں ... ر ایٹم بم کی لڑائی سچ مچ چھڑ گئی تو دنیا کی ... ی آبادی ختم ہوجائے گی اور کئی بڑے بڑے مہادیپوں ... شان تک باقی نہ رہے گا . مٹنے کا کسی کو کوئی ڈر ... ں ہونا چاہئے . آخر ہماری اس چھوٹی سی دھرتی ... بھی ایک دن مٹنا ہی ہے . لیکن ظلم اور شیطانیت ... سامنے سر جھکا دینا اور اپنی آتما کی آواز کو دبانا ... نے سے بدتر ہے . ہمیں انسانی قوم کی اخلاقی اور ... حانی تھاتی کو بچانا ہے اور لوگوں کے دلوں کو اس ... رے خطرے کا سامنا کرنے کے لئے مضبوط کرنا ہے . جس ... یکی سرکار کے ماتحت اسکے گھر کے اندر آج تک— ... ف دکھن کے حصوں میں ہی نہیں جہاں کی کٹھنائیاں ... یا کو گنائی جاتی ہیں بلکہ اتر کی " ادار " ریاستوں ... ں بھی—کالے حبشیوں کے ساتھ معمولی انسانوں کا سا ... ر بھی نہیں کیا جا سکتا . اس سے ہم دور کے مہا ... پوں میں انسانی برابری اور انسانی بھائی چارے کی ... ید کیسے کر سکتے ہیں .

امریکی قوم کے بہت سے گنوں کی ہمارے دل میں قدر ... امریکی جنتا کے ساتھ ہمیں اتنا ہی پریم ہے جتنا اپنے ... کسی بھی دوسرے دیش کی جنتا کے ساتھ . ہم ساری ... شیہ جاتی کو ایک کنبہ مانتے ہیں اور وہ دن دیکھنے ... لئے بے چین ہیں جب ساری دنیا کے انسان ایک ... بے کی طرح رہنے لگیں . ہمیں اس بات کا بھی پکا ... ین ہے کہ آجکل کے یہ ڈراونے بادل چھٹیں گے اور بہت ... لدی ان بادلوں کے اندر ہی سے انسانی برابری اور ... سانی بھائی چارے کا سورج اپنے پورے تیج کے ساتھ ... مکتا ہوا دکھائی پڑے گا . لیکن آجکل کی حالت میں ... ب امریکی راج کاجی نیتا اور اس یونو کے ... ھیا جسکے نام پر کوریا کی لڑائی لڑی جا رہی ہے ' انسانی ... ائی چارے ' ' لوک شاہی ' اور ' جمہوریت ' کی بات ... تے ہیں تو ہمیں " بغل میں چھری اور منہ میں ... " کی پرانی کہاوت یاد آجاتی ہے . ہمیں اپنے ... لک کے ان بھائیوں پر بھی دیا آ جاتی ہے اور

को बरबादी से बचाने के लिये इस तरह के उसूलों पर अमल ज़रूरी है. यह भी सब जानते हैं कि सब देशों की करोड़ों जनता जो दो बड़ी जंगों की बरबादी देख चुकी है और जंगों से उकता चुकी है कम से कम इस तरह की रोक थाम के ज़ोरों के साथ हक़ में है.

ऐसी सूरत में यह मानना पड़ेगा कि इन्सानी क़ौम और उसकी आगे की तरक़्क़ी और भलाई के सबसे बड़े दुश्मन वह लोग हैं जो लड़ाई जीतने के लिये खुले इन उसूलों को ठुकरा देते हैं. ऐसे मौक़ों पर धर्म के पेशवा या कलचर के प्रचारक अगर चुप रहें तो वह धर्म और कलचर को नुक़्सान ही पहुँचा सकते हैं. जापानी क़ौम का चाहे कोई गुनाह रहा हो या न रहा हो जिस हकूमत ने आठ करोड़ की उस क़ौम से घुटने टिकवाने के लिये हिरोशिमा और नागासाकी की कई लाख निहत्थी बे गुनाह जनता पर जिनमें औरतें, बूढ़े, बच्चे, और बे ज़बान जानवर तक शामिल थे ऐटम बंम फेंके और लाखों की ज़िन्दा खालें जला डाले उसे धर्म और कलचर के भक्त या सेवक ऊपर के उसूलों की रोशनी में इन्सानियत से गिरा हुआ और इन्सान और इन्सानी कलचर का दुश्मन न कहें तो कौन कहेगा. सवाल अमरीका या रूस का नहीं और न पूंजीवाद और कम्युनिज़्म का है. गुनाह गुनाह है चाहे करने वाला किसी भी पारटी या देश का हो. जापान की उस दुर्घटना को कई बरस बीत चुके. पर आज भी जो हकूमत अपने पैसे और ताक़त के घमंड में कोरिया की निहत्थी बे गुनाह जनता के ऊपर गन्दी बीमारियों के बम फेंक सकती है, लाखों बे गुनाह मर्द, औरत और बच्चों के तड़प तड़प कर मरने का नज़्ज़ारा देख सकती है, कभी उस दिलेर चोर की तरह जो हाथ पर चिराग़ लेकर चलता है सब को झूटा ठहरा कर दुनिया की आंखों में धूल डालना चाहती है, कभी यह पता लगाने की कोशिश करती है कि उसके बीमारी बमों से जितने वह चाहती थी उतने आदमी क्यों नहीं मरे, और फिर कभी यह कह कर अपने गुनाह को हलका करना चाहती है कि बीमारी बमों से आज कल उतना नुक़्सान नहीं होता, जितना लोग समझते हैं, जो हकूमत दुश्मन के उन बिजली के कारख़ानों को ख़त्म कर के लाखों नहीं करोड़ों ग़रीब जनता के लिये पानी, रोशनी, कपड़े, और खाने के इन्तज़ाम को ख़त्म कर सकती है उसे अगर हम मानव धर्म, इन्सानी तहज़ीब और कलचर के उसूलों के तोड़ने का गुनहगार न कहें तो क्या कहें.

हम ऊपर कह चुके हैं कि जीवन को इस तरह टुकड़े टुकड़े करके नहीं देखा जा सकता. न इस तरह इन्सानी क़ौम या इन्सानी कलचर को बचाया जा सकता है. जीवन एक और अटूट है. दुनिया के राज काजी लोग और हाकिम

کو بربادی سے بچانے کے لئے اسطرح کے اُصولوں پر عمل ضروری ہے ۔ یہ بھی سب جانتے ہیں کہ سب دیشوں کی کروڑوں جنتا جو دو بڑی جنگوں کی بربادی دیکھ چکی ہے اور جنگوں سے اُکتا چکی ہے کم سے کم اسطرح کی روک تھام کے زوروں کے ساتھ حق میں ہے ۔

ایسی صورت میں یہ ماننا پڑے گا کہ انسانی قوم اور اُسکی آگے کی ترقی اور بھلائی کے سب سے بڑے دشمن وہ لوگ ہیں جو لڑائی جیتنے کے لئے کھلے اِن اُصولوں کو ٹھکرا دیتے ہیں ۔ ایسے موقعوں پر دھرم کے پیشوا یا کلچر کے پرچارک اگر چپ رہیں تو وہ دھرم اور کلچر کو نقصان ہی پہنچا سکتے ہیں ۔ جاپانی قوم کا چاہے کچھ بھی گناہ رہا ہو یا نہ رہا ہو جس حکومت نے آٹھ کروڑ کی اُس قوم سے گھٹنے ٹکوانے کے لئے ہیرو شیما اور ناگا ساکی کی کئی لاکھ نہتھی بے گناہ جنتا پر جن میں عورتیں، بوڑھے بچے اور بے زبان جانور تک شامل تھے ۔ ایٹم بم پھینکے اور لاکھوں کی زندہ کھالیں جلا ڈالے اُسے دھرم اور کلچر کے بھگت یا سیوک اوپر کے اُصولوں کی روشنی میں انسانیت سے گرا ہوا اور اِنسان اور اِنسانی کلچر کا دشمن نہ کہیں تو کون کہیگا ۔ سوال امریکہ یا روس کا نہیں اور نہ پونجی واد اور کمیونزم کا ہے ۔ گناہ گناہ ہے چاہے کرنے والا کسی بھی پارٹی یا دیش کا ہو ۔ جاپان کی اُس دُرگھٹنا کو کئی برس بیت چکے ۔ پر آج بھی جو حکومت اپنے پیسے اور طاقت کے گھمنڈ میں کوریا کی نہتھی بے گناہ جنتا کے اوپر گندی بیماریوں کے بم پھینک سکتی ہے، لاکھوں بے گناہ مرد، عورت اور بچوں کے تڑپ تڑپ کر مرنے کا نظارہ دیکھ سکتی ہے، کبھی اُس دلیر چور کی طرح جو ہاتھ پر چراغ لے کر چلتا ہے سب کو جھوٹا ٹھہرا کر دنیا کی آنکھوں میں دھول ڈالنا چاہتی ہے، کبھی یہ پتہ لگانے کی کوشش کرتی ہے کہ اُس کے بیماری بموں سے جتنے وہ چاہتی تھی اتنے آدمی کیوں نہیں مرے، اور پھر کبھی یہ کہکر اپنے گناہ کو ہلکا کرنا چاہتی ہے کہ بیماری بموں سے آج کل اُتنا نقصان نہیں ہوتا، جتنا لوگ سمجھتے ہیں، جو حکومت دشمن کے اُن بجلی کے کارخانوں کو ختم کر کے لاکھوں نہیں کروڑوں غریب جنتا کے لئے پانی، روشنی، کپڑے اور کھانے کے انتظام کو ختم کر سکتی ہے اُسے اگر ہم مانو دھرم، اِنسانی تہذیب اور کلچر کے اُصولوں کے توڑنے کا گنہگار نہ کہیں تو کیا کہیں ۔

ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ جیون کو اِسطرح ٹکڑے ٹکڑے کر کے نہیں دیکھا جا سکتا ۔ نہ اِسطرح انسانی قوم یا اِنسانی کلچر کو بچایا جا سکتا ہے ۔ جیون ایک اور اٹوٹ ہے ۔ دنیا کے راج کاجی لوگ اور حاکم

हैदर अली ने जितनी लड़ाईयां लड़ीं उन सब में लड़ाई खतम होने के बाद वह जब तक मैदान में पड़ी हुई दुश्मन की लाशों की आखरी रसम मरने वाले के मजहबी रिवाज के मुताबिक़ पूरी न कर लेता था तब तक आगे न बढ़ता था. इस आदत के कारन हैदर अली को कई बार नुक़सान उठाना पड़ा. पर उसने अपना उसूल न छोड़ा.

सिराजुद्दौला अंगरेज़ों के साथ अपनी लड़ाईयों में सूरज डूबते ही हमेशा लड़ाई बन्द कर देता था और अंधेरे में अपनी तरफ़ से हमले की कभी इजाज़त न देता था. सिराजुद्दौला ने अपने इस उसूल को आख़िर तक निबाहा.

राजपूतों के इतिहास में तो इस तरह की मिसालें इतनी ज़ियादा और इतनी मशहूर हैं कि इतिहास के पन्ने उनसे रंगे पड़े हैं. राजपूत घरानों की पांच "आन" मशहूर हैं. जो दुश्मन मैदान से भाग जाये उस पर फिर वार नहीं करना, जिसके हाथों से हथियार गिर पड़ें उस पर वार नहीं करना जब तक वह फिर हथियार न संभाल ले, जो अपनी शरन में आ जाये उस पर हथियार नहीं चलाना, किसी औरत पर हथियार नहीं चलाना, और किसी बच्चे पर हथियार नहीं चलाना. हज़ारों राजपूतों ने अपनी जानें ख़तरे में डाल कर भी बड़े से बड़े दुश्मनों के साथ इन 'आनों' को निबाहा है.

इन उसूलों पर अमल करने की वजह से किसी लड़ने वाले को कभी फ़ायदा हुआ हो या नुक़सान इसमें शक नहीं कि इस तरह के उसूल लड़ाई की भयानकता, बर्बरता और बुराई को बहुत कुछ हल्का कर देते हैं और इन्सानी क़ौम को अपनी आख़िरी मक़सद तक पहुँचने में मदद देते हैं. इसलिये इस तरह के उसूल इन्सानी कलचर का एक क़ीमती हिस्सा हैं.

आजकल जब कि लड़ाई के नये नये हथियारों की वजह से लड़ाई की भयानकता और उसी से इन्सानी समाज की बरबादी हज़ारों गुना बढ़ गई है इस तरह के उसूलों की क़ीमत और ज़रूरत और भी ज़ियादा है. इसीलिये पहली जंग के बाद की लीग आफ़ नेशन्स और दूसरी जंग के बाद की यूनो दोनों ने इस तरह की तजवीज़ें पास की हैं कि जंग के अन्दर गांवों या शहरों की निहत्थी जनता पर हमला न किया जावे और गैस बम, बीमारी बम जैसे जन घातक हथियारों से काम न लिया जावे. यूनो की सिक्युरिटी कौंसिल के मातहत एक कमीशन काम करता है जिसका मक़सद बताया जाता है ऐटम शक्ति को अमन के रचनात्मक कामों में लाना और "ऐटम बम और दूसरे ऐसे हथियारों को जिनसे आम जनता की हत्या होती हो ख़त्म करना और यह देखना कि कोई इस नियम को न तोड़े." दुनिया की कोई हकूमत और ख़ुद यूनो के मेम्बर इस नियम पर ईमानदारी से चलें या न चलें इस बात में दो रायें नहीं हो सकतीं कि आज कल की माली और राजकाजी आपा धापी के दिनों में दुनिया

حیدر علی نے جتنی لڑائیاں لڑیں اُن سب میں لڑائی ختم ہونے کے بعد وہ جب تک میدان میں پڑی ہوئی دشمن کی لاشوں کی آخری رسم مرنے والے کے مذہبی رواج کے مطابق پوری نہ کرلیتا تھا تب تک آگے نہ بڑھتا تھا۔ اِس عادت کے کارن حیدر علی کو کئی بار نقصان اُٹھانا پڑا۔ پر اُس نے اپنا اُصول نہ چھوڑا۔

سراج الدولہ انگریزوں کے ساتھ اپنی لڑائیوں میں سورج چھپتے ہی ہمیشہ لڑائی بند کردیتا تھا اور اندھیرے میں اپنی طرف سے حملے کی کبھی اجازت نہ دیتا تھا۔ سراج الدولہ نے اپنے اِس اُصول کو آخیر تک نباہا۔

راجپوتوں کے اتہاس میں تو اس طرح کی مثالیں اتنی زیادہ اور اتنی مشہور ہیں کہ اتہاس کے پنے اُن سے رنگے پڑے ہیں۔ راجپوت گھرانوں کی پانچ "آن" مشہور ہیں۔ جو دشمن میدان سے بھاگ جائے اُس پر پھر وار نہیں کرنا' جسکے ہاتھوں سے ہتھیار گر پڑیں اُس پر وار نہیں کرنا جب تک وہ پھر ہتھیار نہ سنبھال لے' جو اپنی شرن میں آجائے اُس پر ہتھیار نہیں چلانا' کسی عورت پر ہتھیار نہیں چلانا' اور کسی بچے پر ہتھیار نہیں چلانا۔ ہزاروں راجپوتوں نے اپنی جانیں خطرے میں ڈالکر بھی بڑے سے بڑے دشمنوں کے ساتھ ان 'آنوں' کو نباہا ہے۔

اِن اُصولوں پر عمل کرنے کی وجہ سے کسی لڑنے والے کو کبھی فائدہ ہوا ہو یا نقصان اِس میں شک نہیں کہ اِسطرح کے اُصول لڑائی کی بھیانکتا' بربرتا اور برائی کو بہت کچھ ہلکا کر دیتے ہیں اور انسانی قوم کو اپنے آخری مقصد تک پہونچنے میں مدد دیتے ہیں۔ اسی لئے اِسطرح کے اصول انسانی کلچر کا ایک قیمتی حصہ ہیں۔

آجکل جب کہ لڑائی کے نئے نئے ہتھیاروں کی وجہ سے لڑائی کی بھیانکتا اور اُسی سے انسانی سماج کی بربادی ہزاروں گنا بڑھ گئی ہے اُس طرح کے اُصولوں کی قیمت اور ضرورت اور بھی زیادہ ہے۔ اِسی لئے پہلی جنگ کے بعد کی لیگ آف نیشنس اور دوسری جنگ کے بعد کی یونو دونوں نے اِسطرح کی تجویزیں پاس کی ہیں کہ جنگ کے اندر گاؤں یا شہروں کی نہتھی جنتا پر حملہ نہ کیا جائے اور گیس بم' بیماری بم جیسے جن گھاتک ہتھیاروں سے کام نہ لیا جاوے۔ یونو کی سیکیورٹی کونسل کے ماتحت ایک کمیشن کام کرتا ہے جسکا مقصد بتایا جاتا ہے ایٹم شکتی کو امن کے رچناتمک کاموں میں لانا اور "ایٹم بم اور دوسرے ایسے ہتھیاروں کو جن سے عام جنتا کی ہتیا ہوتی ہو ختم کرنا اور یہ دیکھنا کہ کوئی اِس نیم کو نہ توڑے۔" دنیا کی کوئی حکومت اور خود یونو کے ممبر اِس نیم پر ایمانداری سے چلیں یا نہ چلیں اِس بات میں دو رائیں نہیں ہو سکتیں کہ آجکل کی مالی اور راج کاجی آپا دھاپی کے دنوں میں دنیا

ई के दुख ऐसे उसूल सामने इन्सानी समाज क़ायम कर का है जिन से इसके बुरे नतीजे कम से कम दिखाई दें र आदमी की आत्मा पर इसका मैल कम से कम चढ़े र जल्दी से जल्दी उतर सके. यह उसूल बहुत सीधे सादे ूल हैं. हम केवल चन्द मिसालें यहां देंगे.

महाभारत के ज़माने में अगर लड़ते लड़ते दुश्मन के थ से हथियार गिर जाते थे तो सामने का लड़ने वाला पने बढ़े हुए हाथ को फ़ौरन रोक लेता था. बे हथियार दमी पर हथियार चलाना सिपाही की आन के ख़िलाफ़ मझा जाता था. मिसालें हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास में ी पड़ी हैं.

मुहम्मद साहब को अरब के बादशाह की हैसियत से ; लड़ाईयों में हिस्सा लेना पड़ा. वह जब किसी जत्थे को ने के लिये भेजते तो हमेशा उसे इन लफ़्ज़ों में हिदायत ते—"जो हथियार बांध कर तुम्हारे सामने नहीं खड़ा हुआ उस पर कभी हमला न करना. औरतों और बच्चों पर भी हमला न करना. कभी किसी फलदार दरख़्त को न काटना, सी की खड़ी खेती बरबाद न करना, किसी की इबादत गाह मज़हबी बुज़ुर्गों पर हमला न करना, दुश्मन अगर लड़ते ते भी सुलह करना चाहे तो फ़ौरन अपना हाथ रोक लेना. चमुच अल्लाह दूसरों के साथ नेकी करने वालों को प्यार ता है."

हज़रत अली की ज़िन्दगी की एक घटना मशहूर है. एक ाई में वह अपने किसी दुश्मन को जंगल में पकड़ पाए. नों लड़े. आख़िर हज़रत अली उसे गिरा कर उसकी ती पर चढ़ बैठे और क़रीब था कि अपने ख़ंजर से उसका म तमाम कर दें उसने नीचे से पड़े पड़े हज़रत अली मुंह पर थूक दिया. हज़रत अली का हाथ एक दम रुक ा. वह कुछ सोचने लगे. उन्होंने ख़ंजर हाथ से फेंक या और उस आदमी से अलग हट कर खड़े हो गये. मन भी उठ खड़ा हुआ. उसने हैरान हो कर हज़रत अली पूछा—"आपने यह क्या किया, मेरी जान आपके हाथ में , आपने मुझे कैसे छोड़ दिया." हज़रत अली ने जवाब या—"जब मैं तुझ पर वार करने वाला था उस वक़्त मैं दीन का दुश्मन जान कर अल्लाह की राह में वार कर था. लेकिन जब तू ने मेरे मुंह पर थूका तो मुझे गुस्सा गया और अन्दर बदले की आग भड़की. यह दोनों म हैं. गुस्से में जो भी काम किया जाये वह अल्लाह की में नहीं हो सकता. इसलिये मैंने ख़ंजर फेंक दिया. अगर तू चाहे तो मुझे मार सकता है. मैं ऐसी हालत में तुझ पर न करूंगा." कहा जाता है कि दुश्मन पर इसका इतना रा असर हुआ कि वह फ़ौरन हज़रत अली के क़दमों पर पड़ा.

لڑائی کے کچھ ایسے اُصول سمجھ انسانی سماج قائم کرچکا ہے جن سے اِس کے برے نتیجے کم سے کم دکھائی دیں اور آدمی کی آتما پر اِس کا میل کم سے کم چڑھے اور جلدی سے جلدی اُتر سکے . یہ اُصول بہت سیدھے سادے اُصول ہیں . ہم کیول چند مثالیں یہاں دیں گے .

مہابھارت کے زمانے میں اگر لڑتے لڑتے دشمن کے ہاتھ سے ہتھیار گر جاتے تھے تو سامنے کا لڑنے والا اپنے بڑھے ہوئے ہاتھ کو فوراً روک لیتا تھا . بےہتھیار آدمی پر ہتھیار چلانا سپاہی کی آن کے خلاف سمجھا جاتا تھا . مثالیں ہندستان کے پرانے اتہاس میں بھری پڑی ہیں .

محمد صاحب کو عرب کے بادشاہ کی حیثیت سے کئی لڑائیوں میں حصہ لینا پڑا . وہ جب کسی جتھے کو لڑنے کے لئے بھیجتے تو ہمیشہ اُسے اِن لفظوں میں ہدایت کرتے—"جو ہتھیار باندھ کر تمہارے سامنے نہیں کھڑا ہوا ہے اُس پر کبھی حملہ نہ کرنا . عورتوں اور بچوں پر کبھی حملہ نہ کرنا . کبھی کسی پھلدار درخت کو نہ کاٹنا، کسی کی کھڑی کھیتی برباد نہ کرنا، کسی کی عبادت گاہ یا مذہبی بزرگوں پر حملہ نہ کرنا، دشمن اگر لڑتے لڑتے بھی صلح کرنا چاہے تو فوراً اپنا ہاتھ روک دینا. سچ مچ اللہ دوسروں کے ساتھ نیکی کرنے والوں کو پیار کرتا ہے"

حضرت علی کی زندگی کی ایک گھٹنا مشہور ہے . ایک لڑائی میں وہ اپنے کسی دشمن کو جنگل میں پکڑ پائے . دونوں لڑے . آخیر حضرت علی اُسے گرا کر اُس کی چھاتی پر چڑھ بیٹھے اور قریب تھا کہ اپنے خنجر سے اُس کا کام تمام کردیں اُس نے نیچے سے پڑے پڑے حضرت علی کے منہ پر تھوک دیا . حضرت علی کا ہاتھ ایک دم رک گیا . وہ کچھ سوچنے لگے . اُنہوں نے خنجر ہاتھ سے پھینک دیا اور اُس آدمی سے الگ ہٹ کر کھڑے ہوگئے . دشمن بھی اُٹھ کھڑا ہوا . اُس نے حیران ہوکر حضرت علی سے پوچھا—"آپ نے یہ کیا کیا، میری جان آپ کے ہاتھ میں تھی، آپ نے مجھے کیسے چھوڑ دیا." حضرت علی نے جواب دیا—"جب میں تجھ پر وار کرنے والا تھا اُسوقت میں تجھے دین کا دشمن جان کر اللہ کی راہ میں وار کر رہا تھا . لیکن جب تو نے میرے منہ پر تھوکا تو مجھے غصہ آگیا اور اندر بدلے کی آگ بھڑکی . یہ دونوں حرام ہیں. غصے میں جو بھی کام کیا جائے وہ اللہ کی راہ میں نہیں ہوسکتا . اس لئے میں نے خنجر پھینک دیا . اگر اب تو چاہے تو مجھے مارسکتا ہے . میں ایسی حالت میں تجھ پر وار نہ کرونگا." کہا جاتا ہے کہ دشمن پر اِس کا اتنا گہرا اثر ہوا کہ وہ فوراً حضرت علی کے قدموں پر گر پڑا .

'नया हिन्द' के पिछले अंकों में इस पर लिखा भी जा चुका है. ख़ास कर डाक्टर भगवान दास ने अपने लेखों में इस पर काफ़ी रोशनी डाली है. कलचर या संस्कृति एक बड़ी और फैली हुई चीज़ है जो इन्सानी ज़िन्दगी के सब पहलुओं को ढक लेती है. कलचर इन्सानी ज़िन्दगी और सभ्यता का बाहर का रूप भी है और उसके अन्दर की जान भी. जब हम हिन्दुस्तानी कलचर या किसी मुल्क की कलचर की बात करते हैं तो हमारा मतलब यह होता है कि हम उस मुल्क के अलग अलग गिरोहों और अलग अलग हिस्सों के रहन सहन और सोच बिचार के तरीक़ों, उनकी कला, उनकी कारीगरी और उनके आदर्शों में कुछ फ़र्क़ों के रहते हुए भी एकता और एक स्वरूपता लाना चाहते हैं और उसे चमकाना चाहते हैं ताकि एक दूसरे से फ़र्क़ की बातें घटती जायें और मेल की बातें बढ़ती जायें, और जो फ़र्क़ रहें भी वह हम में एक दूसरे से ग़ैरियत पैदा करने के बजाय हमारी मिली जुली मुल्की ज़िन्दगी की शोभा को इस तरह बढ़ाते हुए दिखाई दें जिस तरह बाग़ के अन्दर रंग बिरंगे फूलों की अलग अलग क्यारियां बाग़ की शोभा को बढ़ाती हैं. इसी तरह जब हम मानव संस्कृति, इन्सानी कलचर या एक विश्व कलचर की बात करते हैं तो हमारा मतलब यह होता है कि हम अलग अलग मुल्कों के लोगों में फ़र्क़ों को धीरे धीरे कम होने और मेल और एकता की बातों को बढ़ने का मौक़ा दें और उसमें मदद दें. यही मानव जीवन का सबसे बड़ा मक़सद है. यही सब धर्मों का सार है. इसी रास्ते चल कर हम इन्सानी एकता को सामने ला सकते हैं और सारे इन्सानी समाज को एक कुनबे का रूप दे सकते हैं. यही वह आदर्श है जिसकी तरफ़ हम बढ़ना चाहते हैं और लड़खड़ाते ठोकरें खाते धीरे धीरे बढ़ रहे हैं.

इस आदर्श तक पहुँचने के लिये आदमी ने हज़ारों बरस के तजुरबे के बाद कुछ मोटे मोटे उसूल तय किये हैं. यह उसूल दुनिया के सब मज़हबों, सब मुल्कों और सब सभ्यताओं में पाये जाते हैं. आजकल के भी लगभग सब विचारवान लोग इन उसूलों की सच्चाई को मानते हैं. यह उसूल इन्साफ़, इन्सानी हमदर्दी, नेकी और सदाचार के उसूल हैं.

जब तक आदमी आदमी है तब तक बुराई और भलाई दोनों उसमें रहेंगी ही. पर बुराई के बुरे असर को जहां तक हो कम करना इन उसूलों का एक ख़ास पहलू है. लड़ाई ख़ास कर मुल्कों मुल्कों के बीच की लड़ाई इन्सानी समाज की इसी तरह की एक बुराई है. इस बुराई को ख़त्म करने की कोशिश भी हमेशा होती रही और अब भी हो रही है लेकिन इस के ख़त्म होने के दिन अभी कुछ दूर दिखाई देते हैं. पर

'نیا ہند' کے پچھلے انکوں میں اِس پر لکھا بھی جا چکا ہے۔ خاص کر ڈاکٹر بھگوانداس نے اپنے لیکھوں میں اِس پر کافی روشنی ڈالی ہے۔ کلچر یا سنسکرتی ایک بڑی اور پھیلی ہوئی چیز ہے جو انسانی زندگی کے سب پہلوؤں کو ڈھک لیتی ہے۔ کلچر انسانی زندگی اور سبھیتا کا باہر کا روپ بھی ہے اور اُس کے اندر کی جان بھی۔ جب ہم ہندستانی کلچر یا کسی ملک کی کلچر کی بات کرتے ہیں تو ہمارا مطلب یہ ہوتا ہے کہ ہم اُس ملک کے الگ الگ گروہوں اور الگ الگ حصوں کے رہن سہن اور سوچ وچار کے طریقوں، اُن کی کلا، اُن کی کاریگری اور اُن کے آدرشوں میں کچھ فرقوں کے رہتے ہوئے بھی ایکتا اور ایکسروپتا لانا چاہتے ہیں اور اُسے چمکانا چاہتے ہیں تاکہ ایک دوسرے سے فرق کی باتیں گھٹتی جائیں اور میل کی باتیں بڑھتی جائیں، اور جو فرق رہیں بھی وہ ہم میں ایک دوسرے سے غیریت پیدا کرنے کے بجائے ہماری ملی جلی ملکی زندگی کی شوبھا کو اِس طرح بڑھاتے ہوئے دکھائی دیں جس طرح باغ کے اندر رنگ برنگے پھولوں کی الگ الگ کیاریاں باغ کی شوبھا کو بڑھاتی ہیں۔ اسی طرح جب ہم مانو سنسکرتی، انسانی کلچر یا ایک وشو کلچر کی بات کرتے ہیں تو ہمارا مطلب یہ ہوتا ہے کہ ہم الگ الگ ملکوں کے لوگوں میں فرقوں کو دھیرے دھیرے کم ہونے اور میل اور ایکتا کی باتوں کو بڑھنے کا موقع دیں اور اُس میں مدد دیں۔ یہی مانس جیون کا سب سے بڑا مقصد ہے۔ یہی سب دھرموں کا سار ہے۔ اسی راستے چل کر ہم انسانی ایکتا کو سامنے لا سکتے ہیں اور سارے انسانی سماج کو ایک کنبے کا روپ دے سکتے ہیں۔ یہی وہ آدرش ہے جس کی طرف ہم بڑھنا چاہتے ہیں اور لڑکھڑاتے ٹھوکریں کھاتے دھیرے دھیرے بڑھ رہے ہیں۔

اِس آدرش تک پہونچنے کے لئے آدمی نے ہزاروں برس کے تجربے کے بعد کچھ موٹے موٹے اُصول طے کئے ہیں۔ یہ اُصول دنیا کے سب مذہبوں، سب ملکوں اور سب سبھیتاؤں میں پائے جاتے ہیں۔ آجکل کے بھی لگ بھگ سب وچاروان لوگ اِن اُصولوں کی سچائی کو مانتے ہیں۔ یہ اصول انصاف، انسانی ہمدردی، نیکی اور سداچار کے اُصول ہیں۔

جب تک آدمی آدمی ہے تب تک برائی اور بھلائی دونوں اُس میں رہیں گے ہی۔ پر برائی کے برے اثر کو جہاں تک ہو کم کرنا اِن اُصولوں کا ایک خاص پہلو ہے۔ لڑائی خاص کر ملکوں ملکوں کے بیچ کی لڑائی انسانی سماج کی اسی طرح کی ایک برائی ہے۔ اِس برائی کو ختم کرنے کی کوشش بھی ہمیشہ ہوتی رہی اور اب بھی ہو رہی ہے لیکن اِس کے ختم ہونے کے دن ابھی کچھ دور دکھائی دیتے ہیں۔ پر

से देखा जाये तो जिस तरह लोहे की लाल गेंद एक होती है, जिसकी लाली को गोलाई से या गोलाई को बोझ से बिलकुल अलग नहीं किया जा सकता उसी तरह जीवन भी एक और अटूट है जिसके अलग अलग पहलुओं को पूरी तरह एक दूसरे से जुदा नहीं कर सकते.

किसी भी क़ौम को भुलावे में रखने का एक आसान तरीक़ा यह होता है कि उसे जीवन की इस एकता को अनुभव करने का मौक़ा न दिया जाये. स्वार्थी हकूमतें आदमी आदमी को लड़ा कर या एक गिरोह को दूसरे गिरोह से लड़ा कर जितना अपना काम निकालती हैं उससे कहीं ज़ियादा विचारों की दुनियां में फूट डाल कर और जीवन के अलग अलग पहलुओं को एक दूसरे से बे मेल और बे ताल्लुक़ दिखा कर निकालती .

अंगरेज़ी राज में कुछ दिनों इसी बात पर खूब बहस चली कि धर्म या मज़हब का राजकाज के साथ क्या सम्बन्ध है और दोनों में कौन ज़ियादा ज़रूरी है. बड़ी होशियारी के साथ हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों को बताया गया कि मज़हब का राज काज के साथ कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं है. मज़हब कहीं ज़ियादा ज़रूरी चीज़ है. इस लिये हमें राज काज के चक्कर में न पड़ कर पहले अपनी अपनी इस ख़ास बपौती को संभाले रखने की फ़िक्र करनी चाहिये. हम उस कोशिश की तफ़सील में यहां जाना नहीं चाहते. वह सब अब एक पुरानी कहानी हो चुकी. पर हमें वह दिन याद है जब सत्यार्थ प्रकाश के छटे समुल्लास के वरक़ किताब से फाड़ कर बाक़ी किताब को समाज की अलमारियों में रखा जाता था. उस वक़्त हम में से बहुत से भूल गये थे और देर तक भूले रहे कि किसी भी मज़हब को न राज काज से अलग करके देखा जा सकता है और न मज़हब के बुनियादी उसूलों के मुताबिक़ राज काज दीन धर्म से अलग करके चलाया जा सकता है. जो दीन धर्म इस तरह चलेगा वह धोके की चीज़ होगा और जो राजकाज इस तरह चलने की कोशिश करेगा वह इन्सानी समाज के लिये बरबादी का कारन होगा, हमारे बहुत से देश भाइयों के इस सचाई से भटक जाने का ही नतीजा था मुल्क में फ़िरक़े वाराना जमातों का क़ायम होना. आपसी दंगे, मुल्क का बंटवारा और महात्मा गांधी का क़त्ल. हम मानते हैं कि इस मामले में मुल्क धीरे धीरे अपनी ग़लतियों को समझता जा रहा है और आगे बढ़ रहा है. लेकिन अभी तक हम उस दलदल से पूरी तरह बाहर भी नहीं हुए.

आजकल धर्म मज़हब से भी ज़ियादा कलचर या संस्कृति का सवाल ख़ास तौर से दुनिया के सामने आ रहा है और बड़ा ज़रूरी सवाल है. पर सवाल यह होता है कि आख़िर कलचर या संस्कृति है क्या चीज़ ? हम यहां इस बड़े सवाल की तफ़सील में नहीं जा सकते.

سے دیکھا جائے تو جس طرح لوہے کی لال گیند ایک ہوتی ہے، جس کی لالی کو گولائی سے یا گولائی کو بوجھ سے بالکل الگ نہیں کیا جاسکتا اسی طرح جیون بھی ایک اور اٹوٹ ہے جس کے الگ الگ پہلوؤں کو پوری طرح ایک دوسرے سے جدا نہیں کرسکتے.

کسی بھی قوم کو بھلاوے میں رکھنے کا ایک آسان طریقہ یہ ہوتا ہے کہ اسے جیون کی اس ایکتا کو انوبھو کرنے کا موقع نہ دیا جائے . سوارتھی حکومتیں آدمی آدمی کو لڑا کر یا ایک گروہ کو دوسرے گروہ سے لڑا کر جتنا اپنا کام نکالتی ہیں اس سے کہیں زیادہ وچاروں کی دنیا میں پھوٹ ڈال کر اور جیون کے الگ الگ پہلوؤں کو ایک دوسرے سے بےمیل اور بےتعلق دکھاکر نکالتی ہیں .

انگریزی راج میں کچھ دنوں اس بات پر خوب بحث چلی کہ دھرم یا مذہب کا راج کاج کے ساتھ کیا سمبندھ ہے اور دونوں میں کون زیادہ ضروری ہے . بڑی ہوشیاری کے ساتھ ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں کو بتایا گیا کہ مذہب کا راج کاج کے ساتھ کوئی خاص سمبندھ نہیں ہے . مذہب کہیں زیادہ ضروری چیز ہے . اس لئے ہمیں راج کاج کے چکر میں نہ پڑکر پہلے اپنی اپنی اس خاص بپوتی کو سنبھالے رکھنے کی فکر کرنی چاہئے . ہم اس کوشش کی تفصیل میں یہاں جانا نہیں چاہتے . وہ سب اب ایک پرانی کہانی ہوچکی . پر ہمیں وہ دن یاد ہے جب ستیارتھ پرکاش کے چھٹے سملاس کے ورقے کتاب سے پھاڑ کر باقی کتاب کو سماج کی الماریوں میں رکھا جاتا تھا . اس وقت ہم میں سے بہت سے بھول گئے تھے اور دیر تک بھولے رہے کہ کسی بھی مذہب کو نہ راج کاج سے الگ کرکے دیکھا جا سکتا ہے اور نہ مذہب کے بنیادی اصولوں کے مطابق راج کاج دین دھرم سے الگ کرکے چلایا جاسکتا ہے . جو دین دھرم اس طرح چلے گا وہ دھوکے کی چیز ہوگا اور جو راج کاج اسطرح چلنے کی کوشش کرے گا وہ انسانی سماج کے لئے بربادی کا کارن ہوگا . ہمارے بہت سے دیش بھائیوں کے اس سچائی سے بھٹک جانے کا ہی نتیجہ تھا ملک میں فرقہ‌وارانہ جماعتوں کا قائم ہونا، آپسی دنگے، ملک کا بٹوارا اور مہاتما گاندھی کا قتل. ہم مانتے ہیں کہ اس معاملے میں ملک دھیرے دھیرے اپنی غلطیوں کو سمجھتا جا رہا ہے اور آگے بڑھ رہا ہے . لیکن ابھی تک ہم اس دلدل سے پوری طرح باہر بھی نہیں ہوئے .

آجکل دھرم مذہب سے بھی زیادہ کلچر یا سنسکرتی کا سوال خاص طور سے دنیا کے سامنے آرہا ہے اور بڑا ضروری سوال ہے. پر سوال یہ ہوتا ہے کہ آخر کلچر یا سنسکرتی ہے کیا چیز؟ ہم یہاں اس بڑے سوال کی تفصیل میں نہیں جاسکتے.

एक सूफ़ी ने कहा है—"वह मेरे दिल के अन्दर है और मेरा दिल उसके हाथ में है, जिस तरह आईना मेरे हाथ में होता है और मैं आईने में होता हूँ."

यहूदियों की किताबों में भी यही बात जगह जगह और बार बार और तरह तरह से कही गई है.

उपनिशद में साफ़ कहा गया है—"यस्तु सर्वानि भूतानि आत्मन्ये वानु पश्यते सर्व भूतेशु चात्मानं तत्व न विजुगुप्सते, तत्व न विचिकित्सते." यानी जो सब जानदारों को अपने अन्दर देखता है और सब के अन्दर अपने को देखता है, वह फिर धोका नहीं खा सकता और न किसी से द्वेश या दुश्मनी रख सकता है.

हम किसी और जगह कह आए हैं कि जो आदमी किसी ख़ास मज़हब को अपने ऊपर से उतार कर किसी भी दूसरे मज़हब को उसकी जगह ओढ़ सकता है उसकी आत्मा सब अलग अलग मज़हबों से ऊपर उठ सकती है. वह सबको समझ सकता है.

एक सूफ़ी ने बहुत साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में कहा है—

"चूँ हक़ीक़त रा मुहक़्क़िक़ ख़ुद तुई
ऐन हक़ एनस्त ऐनुलहक़ तुई
हस्तिये रब रा मुजविज़ चूँ तुई
बिल यक़ीं अल्लाह अकबर ख़ुद तुई"

यानी—चूँकि हक़ीक़त को पहचानने वाला तू ही है इसलिये असल हक़ यही है कि हक़ की असलियत भी तू ही है. रब के होने को तय करने वाला चूँकि तू ही है इसलिये इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह अकबर भी तू ही है.

ایک صوفی نے کہا ہے—" وہ میرے دل کے اندر ہے اور میرا دل اس کے ہاتھ میں ہے' جس طرح آئینہ میرے ہاتھ میں ہوتا ہے اور میں آئینے میں ہوتا ہوں ."

یہودیوں کی کتابوں میں بھی یہی بات جگہ جگہ اور بار بار اور طرح طرح سے کہی گئی ہے .

اپنشد میں صاف کہا گیا ہے—" یسکو سروانی بھوتانی آتمنی ایوانو پشیتے سرو بھوتیشو چاتماتم تتونا وجوگپستے' تتونا وچی کتسے یعنی جو سب جانداروں کو اپنے اندر دیکھتا ہے اور سب کے اندر اپنے کو دیکھتا ہے وہ پھر دھوکا نہیں کھا سکتا اور نہ کسی سے ودیش یا دشمنی رکھ سکتا ہے .

ہم کسی اور جگہ کہ آئے ہیں کہ جو آدمی کسی خاص مذہب کو اپنے اوپر سے اتار کر کسی بھی دوسرے مذہب کو اسکی جگہ اوڑھ سکتا ہے اس کی آتما سب الگ الگ مذہبوں سے اوپر اٹھ سکتی ہے . وہ سب کو سمجھ سکتا ہے .

ایک صوفی نے بہت صاف صاف لفظوں میں کہا ہے—

" چوں حقیقت را محقق خود توی
عین حق این است عین الحق توی
ہستی رب را مجوز چوں توی
بیقین اللہ اکبر خود توی "

یعنی—چونکہ حقیقت کو پہچاننے والا تو ہی ہے اس لئے اصل حق یہی ہے کہ حق کی اصلیت بھی تو ہی ہے . رب کے ہونے کو طے کرنے والا چونکہ تو ہی ہے اس لئے اس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ اکبر بھی تو ہی ہے .

धर्म, कलचर और राजकाज

इन्सानी जीवन को ठीक-ठीक समझने और संवारने के लिये यह ज़रूरी हो जाता है कि हम उसके अलग अलग पहलुओं को अलग अलग करके देख सकें. न सब पहलुओं को एक साथ आसानी से समझा जा सकता है और न हर आदमी हर पहलू को समझने की क़ाबलियत रखता है. यही बात दुनिया की और चीज़ों के बारे में कही जा सकती है. हम अलग-अलग क़ौमें देखते हैं, अलग अलग पार्टियां और गिरोह बनाते हैं, मर्दों, औरतों, बच्चों, अमीरों और ग़रीबों की अलग अलग बातें करते हैं. यह सब फ़र्क़ हमारी आसानी, सुभीते और काम चलाने के लिये हैं. इस हद तक यह ज़रूरी और मुफ़ीद भी हैं. लेकिन अगर हक़ीक़त की गहरी निगाह

دھرم' کلچر اور راج کاج

انسانی جیون کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے اور سنوارنے کے لئے یہ ضروری ہو جاتا ہے کہ ہم اس کے الگ الگ پہلوؤں کو الگ الگ کرکے دیکھ سکیں . نہ سب پہلوؤں کو ایک ساتھ آسانی سے سمجھا جا سکتا ہے اور نہ ہر آدمی ہر پہلو کو سمجھنے کی قابلیت رکھتا ہے . یہی بات دنیا کی اور چیزوں کے بارے میں کہی جاسکتی ہے . ہم الگ الگ قومیں دیکھتے ہیں' الگ الگ پارٹیاں اور گروہ بناتے ہیں' مردوں' عورتوں' بچوں' امیروں اور غریبوں کی الگ الگ باتیں کرتے ہیں. یہ سب فرق ہماری آسانی' سبھیتے اور کام چلانے کے لئے ہیں . اس حد تک یہ ضروری اور مفید بھی ہیں. لیکن اگر حقیقت کی گہری نگاہ

हज़रत ईसा ने कहा है—"मेरी इस बात पर विश्वास ्रो कि मैं पिता के अन्दर हूँ और पिता मेरे अन्दर है. जसने मुझे देख लिया उसने पिता को देख लिया. अगर म मुझे जान जाते तो मेरे पिता को भी जान जाते." (इन्जील)

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीसें हैं—

"अहमद का मीम निकाल दो तब भी मैं ही हूँ, यानी ! ही अहद (एक अल्लाह) हूँ."

"जिस ने मुझे देख लिया उसने अल्लाह को देख लिया."

"जिसने अपने नफ़्स को पहचान लिया उसने अपने ब को पहचान लिया."

क़ुरान की एक आयत है—"जो अल्लाह को भूल जाता . वह अपने को भूल जाता है."

चीनी महात्मा कन्फ़ूशियस का कहना है—"अनजान प्रादमी दूसरों को ढूंढता है, जानकार अपने को खोजता :."

एक और चीनी महात्मा ने कहा है—"आसमान ख़ामोश :. कोई आवाज़ नहीं आती. फिर मैं अल्लाह को कहां ढूंढू ? ्र के आसमानों में मत ढूंढो अल्लाह यहीं आदमी के दिल ऽ अन्दर है."

यही बात जापान के शिन्तो धर्म की किताबों में बार ..र मिलती है.

वेदान्त में जो फ़र्क़ परमात्मा और जीव आत्मा में बताया ाया है वही सूफ़ी किताबों में रूह उल अरवाह और रूह में ताया गया है. वही फ़र्क़ 'ख़ुदा' और 'ख़ुदा के बेटे' में है. ..त एक है कहने का ढंग अलग अलग.

हज़रत ईसा ने एक जगह कहा है—"मैं और मेरा पिता ्क हैं. फिर भी मेरा पिता मुझसे बड़ा है. मैं अपने पिता में ; और तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूँ."

स्वामी शंकराचार्य ने परमात्मा और जीव आत्मा के ाम्बन्ध को समुन्द्र और लहर का सम्बन्ध बताया है.

उस अनन्त की हक़ीक़त को शब्दों में बयान करना बहुत ्ठिन है. इसी लिये उसे समझना कठिन है. इसी लिये बुद्ध ःसे बहुत से महात्मा जब उनसे असल हक़ीक़त या हक़ की ाबत सवाल किये जाते थे तो चुप हो जाते थे क्योंकि सवाल ्रने वाले शब्दों के पीछे की हक़ीक़त को समझने के ाक़ाबिल थे.

मुहम्मद साहब की एक हदीस है—"जो ख़ुदा को जान ााला है, उस का बोलना बन्द हो जाता है."

गुरु गीता में लिखा है—"गुरु की ख़ामोशी कभी कभी व्याख्यान का काम देती है और उसी से शागिर्दों के शक ़ हो जाते हैं."

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے—"میری اس بات پر وشواس کرو کہ میں پتا کے اندر ہوں اور پتا میرے اندر ہے ۔ جس نے مجھے دیکھ لیا اُس نے پتا کو دیکھ لیا ۔ اگر تم مجھے جان جاتے تو میرے پتا کو بھی جان جاتے ۔" (انجیل)

محمد صاحب کی مشہور حدیثیں ہیں—

" احمد کا میم نکال دو تب بھی میں ہی ہوں' یعنی میں ہی احد (ایک اللہ) ہوں ۔"

" جس نے مجھے دیکھ لیا اُس نے اللہ کو دیکھ لیا ۔"

" جس نے اپنے نفس کو پہچان لیا اُس نے اپنے رب کو پہچان لیا ۔"

قرآن کی ایک آیت ہے—" جو اللہ کو بھول جاتا ہے وہ اپنے کو بھول جاتا ہے ۔"

چینی مہاتما کنفوشیس کا کہنا ہے—" انجان آدمی دوسروں کو ڈھونڈھتا ہے' جانکار اپنے کو کھوجتا ہے ۔"

ایک اور چینی مہاتما نے کہا ہے—" آسمان خاموش ہے ۔ کوئی آواز نہیں آتی ۔ پھر میں اللہ کو کہاں ڈھونڈھوں؟ دور کے آسمانوں میں مت ڈھونڈھو اللہ یہیں آدمی کے دل کے اندر ہے ۔"

یہی بات جاپان کے شنتو دھرم کی کتابوں میں بار بار ملتی ہے ۔

ویدانت میں جو فرق پرماتما اور جیو آتما میں بتایا گیا ہے وہی صوفی کتابوں میں روح الارواح اور روح میں بتایا گیا ہے ۔ وہی فرق ' خدا ' اور ' خدا کے بیٹے ' میں ہے ۔ بات ایک ہے کہنے کا ڈھنگ الگ الگ ۔

حضرت عیسیٰ نے ایک جگہ کہا ہے—" میں اور میرا پتا ایک ہیں ۔ پھر بھی میرا پتا مجھ سے بڑا ہے ۔ میں اپنے پتا میں ہوں اور تم مجھ میں ہو اور میں تم میں ہوں ۔"

سوامی شنکراچاریہ نے پرماتما اور جیو آتما کے سمبندھ کو سمندر اور لہر کا سمبندھ بتایا ہے ۔

اُس اننت کی حقیقت کو شبدوں میں بیان کرنا بہت کٹھن ہے ۔ اسی لئے اُسے سمجھنا کٹھن ہے ۔ اسی لئے بدھ جیسے بہت سے مہاتما جب اُن سے اصل حقیقت یا حق کی بابت سوال کئے جاتے تھے تو چپ ہو جاتے تھے کیونکہ سوال کرنے والے شبدوں کے پیچھے کی حقیقت کو سمجھنے کے ناقابل تھے ۔

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے—" جو خدا کو جان جاتا ہے' اُس کا بولنا بند ہو جاتا ہے ۔"

گرو گیتا میں لکھا ہے—" گرو کی خاموشی کبھی کبھی ویاکھیان کا کام دیتی ہے اور اُسی سے شاگردوں کے شک دور ہو جاتے ہیں ۔"

सब कुछ खुदा है

(डाक्टर भगवानदास)

आदमी का मन, यक़ीन और शक, विश्वास और अविश्वास के बीच टक्कर खाता रहता है. कभी कभी उसके दिल को इससे बड़ी घबराहट और तकलीफ़ होती है. एक तरफ़ उसे परमेश्वर, अल्लाह ताला के रहम, उसकी दयालुता पर भरोसा होता है. दूसरी तरफ़ अपने अन्दर के और अपने चारों तरफ़ के दुखों और मुसीबतों को देख कर उसे शक होने लगता है. यह शक या अविश्वास तब ही जाकर मिटता है जब आदमी इस बात को समझ ले और जान जाय कि मेरे अन्दर का 'मैं' ही सब के अन्दर का 'मैं' है, और यह सब में रमा हुआ 'मैं' ही ईश्वर, अल्लाह या खुदा है. भलाई और बुराई सुख और दुख सब उसी के अन्दर हैं. सब मेरे अन्दर हैं. सब सब के अन्दर हैं क्योंकि सब उसी एक अल्लाह के अन्दर हैं. भलाई बुराई और सुख दुख का यह मेल ही दुनिया है. यही ज़िन्दगी है. इन दोनों तरह के गुनों की टक्कर जिसे द्वंद्व यानी ज़ौजैन या ज़िद्दैन कहते हैं, उसी एक वजूद यानी एक अल्लाह में जाकर ख़त्म होती है और मिट जाती है. लेकिन मामूली आदमी जिनके दिमाग़ अभी बच्चों के दिमाग़ों की तरह हैं इस हक़ीक़त को नहीं समझ सकते. इसे समझने के लिये दिमाग़ को बालिग़ होना होगा. अपने पैरों पर खड़ा होना होगा यानी अपने अन्दर अन्तर दृष्टि यानी चश्म बसीरत पैदा करनी होगी. इसी को अन्दर की आंख या तीसरी आंख भी कहा जाता है. उस आंख के खुलने पर ही मैं, तू, या 'मैं' 'तू' और 'वह' का फ़र्क़ मिट सकता है. जब तक वह आंख न खुले तब तक लोगों के दिमाग़ों को बच्चों की तरह गोदी में रखना या हाथों हाथ संभालना होगा.

'मैं' ही से तो दुनिया है. 'मैं' नहीं यानी आत्मा नहीं तो दुनिया नहीं. फिर ज्ञान या मारफ़त कहां और साइन्स कहां? हर चीज़ के बारे में शक हो सकता है पर 'मैं हूं' इस पर शक नहीं हो सकता. शक करने वाला ख़ुद अपने वजूद पर शक कैसे कर सकता है? दुनिया के बड़े बड़े साइन्सदानों ने अब इस बात को समझ लिया है. साइन्स की शुरू की जवानी के पागलपन में जिस माद्दीयत यानी जड़ वाद की तरफ़ वह तेज़ी से बढ़ रहे थे अब वह उससे बहुत दूर हट गए हैं. हम एक पिछले लेख में दिखा चुके हैं कि आजकल के बड़े बड़े साइन्सदानों के मुताबिक़ यह दुनिया रूह या आत्मा यानी स्प्रिट की दुनिया है, माद्दे या मिट्टी की नहीं. यह दूसरी बात है कि हम माद्दे या मिट्टी में ही वह सब गुन समझने लगें जो रूह या आत्मा में हैं, तब बहस सिर्फ़ लफ़्ज़ों की रह जाती है जो सब के अन्दर रमी हुई आत्मा है वही मेरे अन्दर भी है, वही मैं हूं.

سب کچھ خدا ہے

(ڈاکٹر بھگوان داس)

آدمی کا من، یقین اور شک، وشواس اور اوشواس کے بیچ ٹکر کھاتا رہتا ہے. کبھی کبھی اس کے دل کو اس سے بڑی گھبراہٹ اور تکلیف ہوتی ہے ۔ ایک طرف اسے پرمیشور، اللہ تعالیٰ کے رحم، اس کی دیالوتا پر بھروسہ ہوتا ہے ۔ دوسری طرف اپنے اندر کے اور اپنے چاروں طرف کے دکھوں اور مصیبتوں کو دیکھکر اسے شک ہونے لگتا ہے. یہ شک یا اوشواس تب ہی جا کر مٹتا ہے جب آدمی اس بات کو سمجھ لے اور جان جائے کہ میرے اندر کا 'میں' ہی سب کے اندر کا 'میں' ہے، اور یہ سب میں رما ہوا 'میں' ہی ایشور، اللہ یا خدا ہے ۔ بھلائی یا برائی سکھ اور دکھ سب اسی کے اندر ہیں، سب میرے اندر ہیں. سب سب کے اندر ہیں کیونکہ سب اسی ایک اللہ کے اندر ہیں ۔ بھلائی برائی اور سکھ دکھ کا یہ میل ہی دنیا ہے. یہی زندگی ہے. ان دونوں طرح کے گنوں کی ٹکر جسے دوند یعنی زوجین یا ضدین کہتے ہیں، اسی ایک وجود یعنی ایک اللہ میں جا کر ختم ہوتی ہے اور مٹ جاتی ہے ۔ لیکن معمولی آدمی جن کے دماغ ابھی بچوں کے دماغوں کی طرح ہیں اس حقیقت کو نہیں سمجھ سکتے ۔ اسے سمجھنے کے لئے دماغ کو بالغ ہونا ہوگا ۔ اپنے پیروں پر کھڑا ہونا ہوگا یعنی اپنے اندر انتر درشٹی یعنی چشم بصیرت پیدا کرنی ہوگی ۔ اسی کو اندر کی آنکھ یا تیسری آنکھ بھی کہا جاتا ہے ۔ اس آنکھ کے کھلنے پر ہی میں' تو' یا 'میں' 'تو' اور 'وہ' کا فرق مٹ سکتا ہے ۔ جب تک وہ آنکھ نہ کھلے تب تک لوگوں کے دماغوں کو بچوں کی طرح گودی میں رکھنا یا ہاتھوں ہاتھ سنبھالنا ہوگا ۔

'میں' ہی سے تو دنیا ہے ۔ 'میں' نہیں یعنی آتما نہیں تو دنیا نہیں ۔ پھر گیان یا معرفت کہاں اور سائنس کہاں؟ ہر چیز کے بارے میں شک ہو سکتا ہے پر 'میں ہوں' اس پر شک نہیں ہو سکتا ۔ شک کرنے والا خود اپنے وجود پر شک کیسے کر سکتا ہے؟ دنیا کے بڑے بڑے سائنسدانوں نے اب اس بات کو سمجھ لیا ہے ۔ سائنس کی شروع کی جوانی کے پاگل پن میں جس مادیت یعنی جڑواد کی طرف وہ تیزی سے بڑھ رہے تھے اب وہ اس سے بہت دور ہٹ گئے ہیں ۔ ہم ایک پچھلے لیکھ میں دکھا چکے ہیں کہ آج کل کے بڑے بڑے سائنسدانوں کے مطابق یہ دنیا روح یا آتما یعنی اسپرٹ کی دنیا ہے، مادے یا مٹی کی نہیں ۔ یہ دوسری بات ہے کہ ہم مادے یا مٹی میں ہی وہ سب گن سمجھنے لگیں جو روح یا آتما میں ہیں، تب بحث صرف لفظوں کی رہ جاتی ہے جو سب کے اندر رمی ہوئی آتما ہے وہی میرے اندر بھی ہے، وہی میں ہوں ۔

नया हिन्द / نیا ہند

13 जुलाई, सन् '52 नम्बर 1

جلد 13 جولائی' سن 52' نمبر 1

ात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند ' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی ۔

़ोकशाही जवानों का फ़ौजी कूच

हैं देश हमारे अलग, दूर, यह माना
हैं एक, एक जब बड़ा काम है ठाना
डांटे मारे कर ले दुश्मन मन माना
है इसी ज़मीं पर हमें अमन फैलाना

क़ौम का या मुल्कों का रंग
बदलतीं सदा जवान उमंग
जवानों का जोशीला गान
बुला कर रहता अमनो अमान
कूक उठता इक साथ जहान
यार हम, यारी हो ईमान

ऽता हरेक जवान सच्ची आज़ादी के गान
पड़ने लगती जान सच की बढ़ने लगती शान

फ़तेह का होता खड़ा निशान
किसका ?

अमन का, शान्ति का पीस का, शान्ति का अमन का.

ी गीत से] —भगवानदीन

لوک شاهی جوانوں کا فوجی کوچ

ھیں دیش ھمارے الگ' دور' یہ مانا
ھیں ایک' ایک جب بڑا کام ہے ٹھانا
ڈانٹے مارے کر لے دشمن من مانا
ہے اِسی زمیں پر ھمیں امن پھیلانا

قوم کا یا ملکوں کا رنگ
بدلتیں سدا جوان اُمنگ
جوانوں کا جوشیلا گان
بلا کر رھتا امن و امان
کوک اُٹھتا اک ساتھ جہان
یار ھم' یاری ھی ایمان

ٗا اُٹھتا ھر ایک جوان سچّی آزادی کے گان
سب میں پڑنے لگتی جان سچ کی بڑھنے لگتی شان

فتح کا ھوتا کھڑا نشان
کس کا ؟

شانتی کا امن کا' شانتی کا پیس کا' شانتی کا امن کا ۔

—بھگوان دین [ایک جرمنی گیت سے]

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

जुलाई 1952

" نیا ھند "

ھندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماھواری پرچا

جولائی 1952

क्या किससे — सफ़ा

کیا کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने.

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مینیجر
'نیا ھند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

नया हिन्द   نیا ہند

एडीटर — ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر — تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर — सुरेश रामभाई   نائب اڈیٹر — سریش رام بھائی

* * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख

اس نمبر کے خاص لیکھ

हमारी राय

ہماری رائے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद   ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

जुलाई 1952 جولائی

क़ीमत दस आना   قیمت دس آنہ

Registered No. A—210.

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से रंडी-बाज़ी, भिकमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल कारख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया, किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सोना चोरी ख़त्म की, देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया, वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 के क़रीब सफ़े, बढ़िया काग़ज़, पक्की जिल्द, 28 तस्वीरोंदार किताब, दाम लागत बराबर, सिर्फ़ साढ़े छै रुपया.

जल्दी ही इस किताब का हिन्दी एडीशन भी निकल रहा है, दाम सिर्फ़ चार रुपया. अभी से अपना आर्डर बुक करा लीजिये.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद—3.

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے۔

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور آج کا چین کیسا ہے، کس طرح وہاں سے رنڈی بازی، بھکمنگی اور بیروزگاری کو ختم کیا گیا، کس طرح وہاں کے بے زمین والے کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے ان داتا بن گیا، کسطرح امریکہ کی ناکےبندی کے باوجود اس نے اپنے ادیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سواولمبی بنا لیا، کس طرح اپنے تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی، کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی۔ کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری، کام چوری اور سونا چوری ختم کی، دیش کے آرتھک سنگٹھن کو ٹھیک کیا، وغیرہ وغیرہ۔

اگر آپ وستار کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہیں اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی۔ ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے

700 کے قریب صفحے، بڑھیا کاغذ، پکی جلد 28 تصویروں دار کتاب، دام لاگت برابر، صرف ساڑھے چھ روپیہ۔

جلدی ہی اس کتاب کا ہندی ایڈیشن بھی نکل رہا ہے۔ دام صرف چار روپیہ۔ ابھی سے اپنا آرڈر بک کرالیجئے۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد—3.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा: वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالے وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی۔ جی۔ کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے –

سندر لال

سکریٹری' ھندستانی کلچر سوسائٹی،

145' مٹھی گنج' الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ھے۔ "نیا ھند" کے جو گاھک ممبر بننا چاھیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے۔

गई है. और आज जिस तरह से देशी या विदेशी पैसा हमारे देश के अखबारों को हथियाने की कोशिश कर रहा है सो कौन नहीं जानता ?

'हरिजन', 'नया हिन्द', 'लोक सेवक' और 'सर्वोदय' एक ही पेड़ की शाखें जैसी हैं. 'लोक सेवक' के जाने पर हमें उतना ही दुख हो रहा है जितना अपना क़रीबी से क़रीबी ख़ानदानी के जाने पर. हमें उम्मीद यह है कि जल्दी ही हवा बदलेगी, जिस चीज़ की जितनी क़द्र होनी चाहिये उतनी होगी, और 'लोक सेवक' दोबारा खड़ा हो कर पहले के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा शान से चल निकलेगा.

—सुरेश रामभाई

विनोबा जी का ख़त

अप्रैल के नम्बर में 'यू. पी. सरकार और भूमिदान' नाम से एक नोट हमने दिया था. उस बारे में हमें विनोबा जी का एक ख़त मिला है. उसका ज़रूरी हिस्सा हम नीचे दे रहे हैं.

"भूमि दान यज्ञ में मैं सबकी मदद ले रहा हूँ. उसमें गांव सभा और ग्राम सभा पंचायत के लोगों का भी मैंने समावेश किया है. वह सब लोग लखनऊ में इकट्ठा हुये थे. उनको मैंने भू दान यज्ञ का स्वरूप समझाया था और केवल प्रेम से लोगों की ख़ुद काश्त ज़मीन में से कुछ ज़मीन हासिल करने की कोशिश करें ऐसी मांग मैंने की थी. इसमें किसी तरह के कोई दबाव की गुँजायश नहीं, यह भी अच्छी तरह समझा दिया. 'नया हिन्द' के एक लेख में आपने शंका प्रगट की थी उसके सिलसिले में मैं यह लिख रहा हूँ. एक जन आन्दोलन में हमें सबका सहयोग लेना चाहिये, और काम की मर्यादायें समझा कर सावधानी से और विश्वास पूर्वक सबसे काम लेना चाहिये यह मेरी वृत्ति है."

3. 6, 1952. कैम्प (पहाड़ी, ज़िला बांदा)

विनोबा जी की राय से हम पूरी तरह से इत्तफ़ाक़ करते हैं. हमें यक़ीन है कि आत्म विश्वास के साथ चलते हुये वह दिन दुगनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करेंगे और उनके इस जन आन्दोलन से जनता के अन्दर वह जागृति पैदा हो सकेगी जिससे वह अपने हक़ों को अपने ही बल से हासिल कर लेगी.

लेकिन यू. पी. सरकार का जो रवैया इस भूमि दान यज्ञ आन्दोलन की तरफ़ हमें दिखाई दिया उसके बारे में हमारी पिछली राय रत्ती भर नहीं बदली है. हमारा ख़याल है कि उसकी दो घोड़ों पर सवारी ज़ोरों से जारी है.

12. 6. '52. —सुरेश रामभाई

تک گر ہو بیٹھے ہیں . اور آج جس طرح سے دیشی یا ودیشی پیسہ ہمارے دیش کے اخباروں کو ہتھیانے کی کوشش کر رہا ہے سو کون نہیں جانتا ؟

'ہریجن' 'نیا ہند' 'لوک سیوک' اور 'سروودے' ایک ہی پیڑ کی شاخیں جیسی ہیں . 'لوک سیوک' کے جانے پر ہمیں اتنا ہی دکھ ہو رہا ہے جتنا اپنا قریبی سے قریبی خاندانی کے جانے پر . ہمیں امید یہ ہے کہ جلدی ہی ہوا بدلے گی' جس چیز کی جتنی قدر ہونی چاہئے اتنی ہوگی' اور 'لوک سیوک' دوبارہ کھڑا ہوکر پہلے کے مقابلے کہیں زیادہ شان سے چل نکلے گا .

—سریش رام‌بھائی

ونوبا جی کا خط

اپریل کے نمبر میں 'یو . پی سرکار اور بھومی‌دان' نام سے ایک نوٹ ہم نے دیا تھا . اس بارے میں ہمیں ونوبا جی کا ایک خط ملا ہے . اس کا ضروری حصہ ہم نیچے دے رہے ہیں .

''بھومی دان یگیہ میں میں سب کی مدد لے رہا ہوں . اِس میں گاؤں سبھا اور گرام سبھا پنچایت کے لوگوں کا بھی میں نے سماویش کیا ہے . وہ سب لوگ لکھنؤ میں اِکٹھا ہوئے تھے. اُنکو میں نے بھودان یگیہ کا سروپ سمجھایا تھا اور کیول پریم سے لوگوں کی خود کاشت زمین میں سے کچھ زمین حاصل کرنے کی کوشش کریں ایسی مانگ میں نے کی تھی . اِسمیں کسی طرح کے کوئی دباؤ کی گنجائش نہیں' یہ بھی اچھی طرح سمجھا دیا . 'نیا ہند' کے ایک لیکھ میں آپ نے شنکا پرکٹ کی تھی اس کے سلسلے میں میں یہ لکھ رہا ہوں. ایک جن آندولن میں ہمیں سب کا سہیوگ لینا چاہئے' اور کام کی مریادائیں سمجھا کر ساودھانی سے اور وشواس پوروک سب سے کام لینا چاہیے یہ میری ورتی ہے.''

3 . 6 . 1952 کیمپ (پہاڑی' ضلع باندہ)

ونوبا جی کی رائے سے ہم پوری طرح سے اتفاق کرتے ہیں . ہمیں یقین ہے کہ آتم وشواس کے ساتھ چلتے ہوئے وہ دن دوگنی رات چوگنی ترقی کریں گے اور اُن کے اِس جن آندولن سے جنتا کے اندر وہ جاگرتی پیدا ہو سکے گی جس سے وہ اپنے حقوں کو اپنے ہی بل سے حاصل کرلے گی.

لیکن یو . پی سرکار کا جو رویہ اِس بھومی دان یگیہ آندولن کی طرف ہمیں دکھائی دیا اُس کے بارے میں ہماری پچھلی رائے رتی بھر نہیں بدلتی ہے . ہمارا خیال ہے کہ اُس کی دو گھوڑوں پر سواری بڑے زوروں سے جاری ہے .

12 . 6 . '52 —سریش رام‌بھائی

है—'कुदरत की कोई मदद लिए बिना, सिर्फ अपने अनुभव के बल पर, सदियों के दौरान में उसने खेती करने के ऐसे तरीक़े निकाल लिए हैं कि धरती का कस बदस्तूर क़ायम रखने में उसे लाजवाब कामयाबी मिली है......वह न ज़मीन की बिसात के बाहर काश्त करता है, न ग़लत वक़्त पर काश्त करता है. उसके पास जो अनमोल नाइट्रोजन का भंडार है उसे वह नहीं जलने देता और उसके पास जो Humus की पूँजी है उसे भी नहीं बरबाद करता. चीन को छोड़ कर शायद ही दुनिया में किसी और जगह ऐसा किसान हो जो इतनी कम नाइट्रोजन से अपना काम निकाल लेता हो. यही वजह है कि अन-गिनती सदियों से वह धरती का उपजाऊ पन लगातार क़ायम रख सका है.

इससे ज़ियादा सर्टीफ़िकेट क्या चाहिये. हमने माना कि थोड़े अरसे से हमारा किसान अपनी खेती में उतना कामयाब नहीं रहा है और हमारे गांव की हालत पहले से बिगड़ गई है. लेकिन इसके पीछे बहुत सी राजकाजी और आर्थिक वजहें भी हैं. हमारे किसान को आज जिस चीज़ की ज़रूरत है वह विलायती खाद है न बाहर का पैसा, न बाहर का एक्सपर्ट, न बाहर का दिमाग़. ज़रूरत इस बात की है कि किसान को इत्मिनान दिलाया जाय कि उसका भला चाहने वाले सचमुच उसका भला चाहते हैं.

बड़े अफ़सोस की बात है कि हिन्द-अमरीकी समझौते के अन्दर पहला अमली समझौता जो किया गया वह एक ऐसी चीज़ के लिए किया गया जिसके बिना हमारा काम ख़ूब अच्छी तरह चल सकता है. इस समझौते को देख कर हमारे दिल में शक ज़ोर पकड़ जाते हैं जिसकी वजह से हमने हिन्द अमरीकी समझौते को ग़ुलामी का पट्टा कहा है.

10. 6. 52 —सुरेश रामभाई

'लोक सेवक' बन्द

पिछले पौने चार बरस से इन्दौर से 'लोक सेवक' नाम का अख़बार श्री बैजनाथ महोदय की देख रेख में निकल रहा है. इस अरसे में अपनी लगन, समझ और सेवा के ज़रिये उसने हिन्दी जगत और रचनात्मक काम के दायरे में अपनी ख़ास जगह बना ली थी. लेकिन आर्थिक मजबूरी के कारन पिछले 3 मई के बाद से इसका निकलना बन्द हो गया.

हमें यक़ीन है कि अगर 'लोक सेवक' भी दूसरे बाज़ारू अख़बारों की तरह इश्तहार लेता होता तो जारी रह सकता था. मगर इश्तहारों के सहारे ज़िन्दा रहना दूसरों के कन्धों पर खड़ा रहना है. हमें अफ़सोस होता है राष्ट्र भाषा के बहुत से ऐसे अख़बारों को देख कर जो इश्तहारों के कारन अपनी आत्मा

...سائنس کی کوئی مدد لئے بنا، صرف اپنے انُبھو کے بل پر، صدیوں کے دوران میں اس نے کھیتی کرنے کے ایسے طریقے نکال لئے ہیں کہ دھرتی کا کس بدستور قائم رکھنے میں اسے لاجواب کامیابی ملی ہے.........وہ نہ زمین کی بساط کے باہر کاشت کرتا ہے، نہ غلط وقت پر کاشت کرتا ہے۔ اس کے پاس جو انمول نائٹروجن کا بھنڈار ہے اسے وہ نہیں جلنے دیتا اور اسکے پاس جو Humus کی پونجی ہے اسے بھی نہیں برباد کرتا۔ چین کو چھوڑ کر شاید ہی دنیا میں کسی اور جگہ ایسا کسان ہو جو اتنی کم نائٹروجن سے اپنا کام نکال لیتا ہو۔ یہی وجہ ہے کہ ان گنتی صدیوں سے وہ دھرتی کا اپجاؤپن لگاتار قائم رکھ سکا ہے۔

اس سے زیادہ سرٹیفیکیٹ کیا چاہئے. ہم نے مانا کہ تھوڑے عرصے سے ہمارا کسان اپنی کھیتی میں اتنا کامیاب نہیں رہا ہے اور ہمارے گاؤں کی حالت پہلے سے بگڑ گئی ہے۔ لیکن اِسکے پیچھے بہت سی راج کاجی اور آرتھک وجہیں بھی ہیں۔ ہمارے کسان کو آج جس چیز کی ضرورت ہے وہ ولایتی کھاد ہے نہ باہر کا پیسہ، نہ باہر کا ایکسپرٹ، نہ باہر کا دماغ. ضرورت اس بات کی ہے کہ کسان کو اطمینان دلایا جائے کہ اس کا بھلا چاہنے والے سچ مچ اسکا بھلا چاہتے ہیں۔

بڑے افسوس کی بات ہے کہ ہند امریکی سمجھوتے کے اندر پہلا عملی سمجھوتہ جو کیا گیا وہ ایک ایسی چیز کے لئے کیا گیا جس کے بنا ہمارا کام خوب اچھی طرح چل سکتا ہے۔ اس سمجھوتے کو دیکھ کر ہمارے دل میں وہ شک زور پکڑ جاتے ہیں جسکی وجہ سے ہم نے ہند امریکی سمجھوتے کو غلامی کا پٹہ کہا ہے۔

—سریش رام بھائی 10-6-52

'لوک سیوک' بند

پچھلے پونے چار برس سے اندور سے 'لوک سیوک' نام کا اخبار شری بیجناتھ مہودئے کی دیکھ ریکھ میں نکل رہا ہے۔ اس عرصے میں اپنی لگن، سمجھ اور سیوا کے ذریعہ اس نے ہندی جگت اور رچناتمک کام کے دائرے میں اپنی خاص جگہ بنا لی تھی. لیکن آرتھک مجبوری کے کارن پچھلے 3 مئی کے بعد سے اس کا نکلنا بند ہوگیا.

ہمیں یقین ہے کہ اگر 'لوک سیوک' بھی دوسرے بازارو اخباروں کی طرح اشتہار لیتا ہوتا تو جاری رہ سکتا تھا. مگر اشتہاروں کے سہارے زندہ رہنا دوسروں کے کندھوں پر کھڑا رہنا ہے. ہمیں افسوس ہوتا ہے راشٹر بھاشا کے بہت سے ایسے اخباروں کو دیکھکر جو اشتہاروں کے کارن اپنی آتما

देकर पूरा करने कोशिश की जाती है. लोग समझते यह हैं कि मिट्टी में कोई भी कमी क्यों न हो तरह तरह की विलायती खाद देकर उसे पूरा किया जा सकता है. लेकिन इस ख्याल का पौधों की खुराक और उनके असली जरूरत से कोई वास्ता नहीं है. यह ख्याल बुनियादी तौर पर ग़लत और ओछा है. इसमें इस बात का कोई लिहाज नहीं रखा जाता कि मिट्टी की जिन्दगी कैसी होती है. नक़ली खाद देने से पौधों को नक़ली खुराक पहुँचेगी. उससे नक़ली काश्त तैयार होगी, नक़ली जानवर बनेंगे और आखिर में उसका नतीजा होगा नक़ली इनसान."

दूर जाने की जरूरत नहीं. न्यूज़ीलैंड में विलायती खाद बहुत कसरत से इस्तेमाल की जाती है. पर उसका नतीजा क्या है? अपनी किताब में "The Living Soil" Miss E. B. Balfour का कहना है :—

"धरती को हम क्या चीज़ देते हैं और क्या चीज़ नहीं देते इसका ज़बरदस्त असर उसकी बनावट, असलियत और उसके गुन पर पड़ता है. ऐसी ज़मीन पर खाना उगने से उसकी तासीर में फ़र्क़ पैदा हो जाता है और इसका नतीजा होता है जनता की सेहत और ताक़त पर असर पड़ना. यह मानी हुई बात है हमारे खाने में बहुत सी कमियां हैं और इनमें से ज़ियादातर कमियों का कारन यही है.

"यह कमियां क्या हैं?" कहा जाता है कि आंकड़े आप से आप बोलते हैं लेकिन न्यूज़ीलैंड में तो चीख़ चीख़ कर सुनने वाले का मानो सिर फाड़ते हैं. सन 1914 और 1939 की लड़ाइयों के दौरान के बीस साल में न्यूज़ीलैंड की आबादी 36 फ़ी सदी पैदायश से और बाहर की आमद से बढ़ी. लेकिन इसी अरसे में पैदायश की रफ़्तार औसत आबादी के 23 फ़ी हज़ार से गिर कर 17 पर आ गई, दिमाग़ की खराबी के केस 100 फ़ी सदी बढ़ गए और अस्पतालों में भरती 126 फ़ी सदी बढ़ी. दो और पांच साल के उम्र के बीच के बच्चों में अस्सी फ़ी सदी हर साल किसी न किसी रोग के शिकार पाए जाने लगे."

बड़ी नम्रता के साथ हम जानना चाहते हैं कि क्या हमारी सरकार हिन्दुस्तान में दूसरा न्यूज़ीलैंड बनाना चाहती है? हमने जो ऊपर एक्सपर्टों (माहिरों) की राय दी है क्या उससे हम कोई सबक़ नहीं सीख सकते? क्या हमारी सरकार दावे के साथ यह कह सकती है कि विलायती खाद का नतीजा हर सूरत में अच्छा ही होगा? नहीं, हरगिज़ नहीं. हिन्दुस्तान के किसान को विलायती खाद नहीं चाहिये. वह सिर्फ़ एक चीज़ चाहता है—ज़मीन. जहां तक उसकी [illegible] की बात है सर एलबर्ट हावर्ड का कहना

دیکر پورا کرنے کی کوشش کی جاتی ہے . لوگ سمجھتے یہ ہیں کہ مٹی میں کوئی بھی کمی کیوں نہ ہو طرح طرح کی ولایتی کھاد دیکر اسے پورا کیا جاسکتا ہے . لیکن اس خیال کا پودھوں کی خوراک اور اُنکے اصلی ضرورت سے کوئی واسطہ نہیں ہے . یہ خیال بنیادی طور پر غلط اور اوچھا ہے . اسمیں اس بات کا کوئی لحاظ نہیں رکھا جاتا کہ مٹی کی زندگی کیسی ہوتی ہے. نقلی کھاد دینے سے پودھوں کو نقلی خوراک پہونچیگی . اس سے نقلی کاشت تیار ہوگی' نقلی جانور بنینگے اور آخر میں اُسکا نتیجہ ہوگا نقلی انسان ."

دور جانے کی ضرورت نہیں . نیوزیلینڈ میں ولایتی کھاد بہت کثرت سے استعمال کی جاتی ہے. پر اُسکا نتیجہ کیا ہے ؟ اپنی کتاب "The Living Soil" میں Miss E. B. Belfour کا کہنا ہے :—

"دھرتی کو ہم کیا چیز دیتے ہیں اور کیا چیز نہیں دیتے اِسکا زبردست اثر اُسکی بناوٹ' اصلیت اور اُسکے گن پر پڑتا ہے . ایسی زمین پر کھانا اُگنے سے اسکی تاثیر میں فرق پیدا ہو جاتا ہے اور اسکا نتیجہ ہوتا ہے جنتا کی صحت اور طاقت پر اثر پڑنا . یہ مانی ہوئی بات ہے کہ ہمارے کھانے میں بہت سی کمیاں ہیں اور اُنمیں سے زیادہ تر کمیوں کا کارن یہی ہے .

"یہ کمیاں کیا ہیں ؟" کہا جاتا ہے کہ آنکڑے آپ سے آپ بولتے ہیں لیکن نیوزیلینڈ میں تو چیخ چیخ کر سننے والے کا مانو سر پھاڑتے ہیں . سن 1914 اور 1939 کی لڑائیوں کے دوران کے بیس سال میں نیوزیلینڈ کی آبادی 36 فیصدی پیدائش سے اور باہر کی آمد سے بڑھی . لیکن اسی عرصے میں پیدائش کی رفتار اوسط آبادی سے 23 فی ہزار سے گر کر 17 پر آگئی' دماغ کی خرابی کے کیس 100 فیصدی بڑھ گئے اور اسپتالوں میں بھرتی 126 فیصدی بڑھی . دو اور پانچ سال کے عمر کے بیچ کے بچوں میں 80 فیصدی ہر سال کسی نہ کسی روگ کے شکار پائے جانے لگے ."

بڑی نمرتا کے ساتھ ہم جاننا چاہتے ہیں کہ کیا ہماری سرکار ہندستان میں دوسرا نیوزیلینڈ بنانا چاہتی ہے ؟ ہم نے جو اوپر ایکسپرٹوں (ماہروں) کی رائے دی ہے کیا اس سے ہم کوئی سبق نہیں سیکھ سکتے ؟ کیا ہماری سرکار دعوے کے ساتھ یہ کہ سکتی ہے کہ ولایتی کھاد کا نتیجہ ہر صورت میں اچھا ہی ہوگا ؟ نہیں' ہرگز نہیں . ہندستان کے کسان کو ولایتی کھاد نہیں چاہئے . وہ صرف ایک چیز چاہتا ہے — زمین . جہانتک [illegible] سر البرٹ ہاورڈ کا کہنا

क़र्म किया जा रहा है. लार्ड नार्थ बोर्न ने अपनी किताब "Look To The Land" में कहा है :—

"सन 1919 के बाद से धरती की जितनी मिट्टी बरबाद की गई है उतनी दुनिया के पिछले इतिहास में कभी नहीं की गई………इन्सान की करतूतों का का नतीजा यह है कि जिस धरती पर उसने सभ्यताएँ खड़ी करने की कोशिश की वह धरती ग़ायब होती जा रही है, पानी उसकी मिट्टी को बहा ले जा रहा है और हवा उड़ा दे रही है. धरती के ऊपर की पतली तह जिस तेज़ी के साथ बरबाद हो रही है वैसा इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ ……वाक़्या यह है कि इस अरसे में दस लाख मील के रक़बे में नये रेगिस्तान बन गए हैं और कहीं ज़ियादा बड़े इलाक़े में रेगिस्तान बनते जा रहे हैं."

किस रफ़्तार के साथ यह काम हो रहा है इसका अन्दाज़ा हम नीचे देते हैं :—

ब्रिटेन के ख़ुराक के सवाल पर बोलते हुए ब्रिटिश एसोसिएशन के सदर सर जान रसल ने कहा है कि हमारी 45 लाख एकड़ ज़मीन खेती के लायक़ नहीं रही है और हर साल क़रीब क़रीब 88 हज़ार एकड़ ज़मीन बरबाद होती जा रही है.

अमरीका की Soil Conservation Service का कहना है कि अमरीका में हर साल तीन बिलियन टन मिट्टी बेकार हो जाती है या उड़ जाती है. इस मिट्टी को रेल के डिब्बों में भरा जाय तो इन डिब्बों की इतनी ज़ियादा तादाद हो जाएगी कि अगर इन्हें धरती के बीच की लकीर पर फैलाया जाय तो उसके अट्ठारह चक्कर हो जाएंगे. इस Consravation Service के मुखिया डाक्टर ह्यू ग बेनेट का कहना है कि अपनी थोड़ी ज़िन्दगी में अमरीका ने अपनी बेहतरीन ज़मीन में से 2,00,000 एकड़ ज़मीन खो दी और 775,00,000 एकड़ ज़मीन का नम्बर आ रहा है.

साथ ही साथ ब्रिटेन के नामी खेती एक्सपर्ट सर अल्बर्ट हावर्ड ने अपनी मशहूर किताब "An Agricultural Testament" में कहा है :—

"पच्छिमी देशों में जो खेती हो रही है उनके अन्दर ख़ास दोष यह है कि हैवानात और नबातात से मिलने वाला कचरा या मैला है वह या तो पूरा का पूरा या तो बरबाद जाता है या बहुत कम काम में आता है. इसका नतीजा है कि फ़सल के उगाने में जो Humus (सड़ी पत्तियों का जन्तु) ख़र्च हो जाते हैं और खाद की शक्ल में जो Humus मिल जाते हैं दोनों की तादाद में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ हो रहा है. इस फ़र्क़ को मिटाने [illegible]

کوکرم کیا جا رہا ہے۔ لارڈ نارتھ بورن نے اپنی کتاب "Look To The Land" میں کہا ہے :—

"سن 1919 کے بعد سے دھرتی کی جتنی مٹی برباد کی گئی اُتنی دنیا کے پچھلے اتہاس میں کبھی نہیں کی گئی……. انسان کی کرتوتوں کا نتیجہ یہ ہے کہ جس دھرتی پر اُس نے سبھیتائیں کھڑی کرنے کی کوشش کی وہ دھرتی غائب ہوتی جا رہی ہے، پانی اُس کی مٹی کو بہا لے جا رہا ہے اور ہوا اُڑا دے ڈال رہی ہے۔ دھرتی کے اُوپر کی پتلی تہ جس تیزی کے ساتھ برباد ہو رہی ہے ویسا اِتہاس میں پہلے کبھی نہیں ہوا…… واقعہ یہ ہے کہ اس عرصے میں دس لاکھ میل کے رقبے میں نئے ریگستان بن گئے ہیں اور کہیں زیادہ بڑے علاقے میں ریگستان بنتے جا رہے ہیں۔"

کس رفتار کے ساتھ یہ کام ہو رہا ہے اِسکا اندازہ ہم نیچے دیتے ہیں :—

برٹن کے خوراک کے سوال پر بولتے ہوئے برٹش ایسوسئیشن کے صدر سر جان رسل نے کہا ہے کہ ہماری 45 لاکھ ایکڑ زمین کھیتی کے لائق نہیں رہی ہے اور ہرسال قریب قریب 88 ہزار ایکڑ زمین برباد ہوتی جا رہی ہے۔

امریکہ کی Soil Conservation Service کا کہنا ہے کہ امریکہ میں ہر سال تین ملین ٹن مٹی بیکار ہو جاتی ہے یا اُڑ جاتی ہے۔ اس مٹی کو ریلوے کے ڈبوں میں بھرا جائے تو ان ڈبوں کی اتنی زیادہ تعداد ہو جائیگی کہ اگر انہیں دھرتی کے بیچ والی لکیر پر پھیلایا جائے تو اسکے اٹھارہ چکر پورے ہوجائینگے۔ اِس Conservation Service کے مکھیا ڈاکٹر ہیوگ بینٹ کا کہنا ہے کہ اپنی تھوڑی سی زندگی میں امریکہ نے اپنی بہترین زمین میں سے 282,00,000 ایکڑ زمین کھو دی اور 775,00,000 ایکڑ زمین کا نمبر آ رہا ہے۔

ساتھ ہی ساتھ برٹن کے نامی کھیتی ایکسپرٹ سر ایلبرٹ هاورڈ نے اپنی مشہور کتاب "An Agricultural Testament" میں کہا ہے :—

"پچھمی دیشوں میں جو کھیتی ہو رہی ہے اُنکے اندر خاص دوش یہ ہے کہ حیوانات اور نباتات سے ملنے والا جو کچرا یا میلا ہے وہ یا تو پورا کا پورا یا تو برباد ہو جاتا ہے یا بہت کم کام میں آتا ہے۔ اِسکا نتیجہ یہ ہے کہ فصل کے اُگانے میں جو (Humus) (سڑی پتیوں کا ایک جنتو) خرچ ہو جاتے ہیں اور کھاد کی شکل میں جو Humus لگ جاتے ہیں دونوں کی تعداد میں زمین آسمان کا فرق ہوتا جا رہا ہے۔ اس فرق کو [illegible]

किसानों के पास पहुंचाई जायगी जिसकी मदद से वह ज्यादा अनाज पैदा कर सकें और हिन्द सरकार अपनी पंचसाला योजना में कामयाब हो सके.

अखबारों में खबर छपी है कि इस समझौते की तरह सात समझौते अब तक और किये जा चुके हैं. इन पर हम अगले नम्बर में विचार करेंगे. इस वक्त सिर्फ विलायती खाद वाले समझौते को ले रहे हैं.

इस समझौते से साफ जाहिर है कि हिन्द-अमरीकी विकास फन्ड (फन्ड ए) पांचवें हिस्से से ज्यादा की रकम विलायती खाद खरीदने में खत्म कर दी गई. अमरीका की हर लगी न फिटकरी, रंग चोखा बना रहा. इसी तरह पूरा फन्ड हिन्दुस्तान के मत्थे मढ़ दिया जाएगा और जैसा हमको डर था अमरीकी कारखानों और उद्योग धन्धों को हिन्दुस्तान के किसानों की बदौलत बढ़ावा मिलता रहेगा.

विलायती खाद का इस्तेमाल हमारे देश के लिए नई चीज है हालांकि पिछले कुछ अरसे से सरकार इसका रिवाज फैलाने की कोशिश कर रही है. कौन नहीं जानता कि जिस मिट्टी को विलायती खाद दी जाती है उसे देशी खाद वाले मिट्टी के मुकाबले कहीं ज्यादा पानी की जरूरत पड़ती है. और फिर हमारे देश में तो करोड़ों एकड़ जमीन ऐसी है जिसके बारे में सरकार खुद ही कहती है कि पानी काफी नहीं बरसता और सिंचाई के दूसरे साधन भी नहीं हैं. इसलिये सरकार का पानी का इन्तजाम किये बिना किसानों के सर पर विलायती खाद जबरदस्ती थोप देना उनके रही सही फसलों को जला देने का काम करेगा और जो कुछ थोड़ी बहुत काश्त हो जाती है उसे भी चौबे गये थे छब्बे होने रह गए दुबे, वाली हालत को पहुँचा देगा.

साथ ही साथ एक बड़ा सवाल यह है कि हिन्दुस्तान की खेती में विलायती खाद को क्या जगह मिलनी चाहिये. जिस देश में खेती का काम दूसरे कामों की तरह एक इन्डस्ट्री या धन्धा हो और जहां बड़े-बड़े कारखानों, मशीनों और फौजों का बोलबाला हो वहां पर विलायती खाद जरूरत की चीज या बरकत की चीज भी समझी जा सकती है, लेकिन क्या हिन्दुस्तान जैसे देश में भी उनका वही महत्व है जहां बेरोजगारी या बेकारी का रोग सारी जनता पर हावी हो और जो अपनी जरूरत के बुनियादी चीजों के लिए तरसता हो?

जाने दीजिए इन बातों को. हम यह देखें कि पश्चिम के जानकार और अनुभवी आदमी इस बारे में क्या कहते हैं. उनकी राय है कि मशीनों से और विलायती खाद के जरिये खेती करने के कारन धरती के साथ बलात्कार जैसा

کسانوں کے پاس پہنچائی جائیگی جس کی مدد سے وہ زیادہ اناج پیدا کر سکیں اور ہند سرکار اپنی پنچ سالہ یوجنا میں کامیاب ہو سکے ۔

اخباروں میں خبر چھپی ہے کہ اس سمجھوتے کی طرح سات سمجھوتے ابتک اور کئے جا چکے ہیں ۔ ان پر ہم اگلے نمبر میں وچار کرینگے ۔ اس وقت صرف ولایتی کھاد والے سمجھوتے کو لے رہے ہیں ۔ اس سمجھوتے سے صاف ظاہر ہے کہ ہند امریکی وکاس فنڈ (فنڈ اے) کے پانچویں حصے سے زیادہ کی رقم ولایتی کھاد خریدنے میں ختم کردی گئی ۔ امریکہ کی ہر لگی نہ پھٹکری' رنگ چوکھا بنا رہا ۔ اسی طرح پورا فنڈ ہندستان کے متھے مڈھ دیا جائیگا اور جیسا ہم کو ڈر تھا امریکی کارخانوں اور ادیوگ دھندھوں کو ہندستان کے کسانوں کی بدولت بڑھاوا ملتا رہیگا ۔

ولایتی کھاد کا استعمال ہمارے دیش کے لئے نئی چیز ہے حالانکہ پچھلے کچھ عرصے سے سرکار اسکا رواج پھیلانے کی کوشش کر رہی ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ جس مٹی کو ولایتی کھاد دی جاتی ہے اسے دیشی کھاد والی مٹی کے مقابلے کہیں زیادہ پانی کی ضرورت پڑتی ہے ۔ اور پھر ہمارے دیش میں تو کروڑوں ایکڑ زمین ایسی ہے جسکے بارے میں سرکار خود ہی کہتی ہے کہ پانی کافی نہیں برستا اور سنچائی کے دوسرے سادھن بھی نہیں ہیں۔ اسلئے سرکار کا پانی کا انتظام کئے بنا کسانوں کے سر پر ولایتی کھاد زبردستی تھوپ دینا ان کی رہی سہی فصلوں کو جلا دینے کا کام کریگا اور جو کچھ تھوڑی بہت کاشت ہو جاتی ہے اسے بھی چوبے گئے تھے چھبے ہونے رہ گئے دوبے' والی حالت کو پہونچا دیگا ۔

ساتھ ہی ساتھ ایک بڑا سوال یہ ہے کہ ہندستان کی کھیتی میں ولایتی کھاد کو کیا جگہ ملنی چاہئے۔ جس دیش میں کھیتی کا کام دوسرے کاموں کی طرح ایک انڈسٹری یا دھندا ہو اور جہاں بڑے بڑے کارخانوں' مشینوں اور فوجوں کا بول بالا ہو وہاں پر ولایتی کھاد ضرورت کی چیز یا برکت کی چیز بھی سمجھی جاسکتی ہے ۔ لیکن کیا ہندستان جیسے دیش میں بھی اس کا وہی مہتو ہے جہاں بیروزگاری یا بیکاری کا روگ ساری جنتا پر حاوی ہو اور جو اپنی ضرورت کے بنیادی چیزوں کے لئے ترستا ہو ؟

جانے دیجئے ان باتوں کو ۔ ہم یہ دیکھیں کہ پچھم کے جانکار اور انوبھوی آدمی اس بارے میں کیا کہتے ہیں ۔ ان کی رائے ہے کہ مشینوں سے اور ولایتی کھاد کے ذریعے کھیتی کرنے کے کارن دھرتی کے ساتھ بلاتکار جیسا

है कि जिस तरह रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद' उसी तरह हो सकता है यह सरकार भी पिछले पांच साल के तजुर्बों से कुछ फायदा उठाये, कुछ सीखे और तन-मन-धन से नई बहार लाने की कोशिश में अपने को मिटा देने में कोई कसर न रखे.

हमारा असली आसरा देश की उस जनता पर है जिसने अपने त्याग और क़ुरबानियों से आज़ादी हासिल की और जो हमें पूरा भरोसा है अपने रहे सहे आजकल के दुख को भी जल्दी ही खत्म करेगी.

28. 5. '52. —सुरेश रामभाई

विलायती खाद का समझौता

5 जनवरी 1952 को नई दिल्ली में हिन्द सरकार ने अमरीकी सरकार से जो हिन्द-अमरीकी तकनीकी सहयोग समझौता किया है उसे हम गुलामी नामा या गुलामी का पट्टा कह चुके हैं. हाल की कुछ घटनाओं ने हमारे इस ख्याल को और भी मज़बूत बना दिया है. पहली मई को इस समझौते के मातहत पहला अमली समझौता किया गया. उसके अनुसार अमरीकी सरकार दस लाख आठ हज़ार टन विलायती खाद हिन्दुस्तान को देगी. इसका दाम करीब एक करोड़ साढ़े छै लाख डालर (लगभग पांच करोड़ छै लाख रुपया) होगा, जो अमरीकी सरकार अपने पांच करोड़ डालर वाले फंड ए में से कटा देगी. और फंड बी का क़रीब चवालीस लाख रुपया हिन्द सरकार इन खादों के इधर उधर पहुंचाने में खर्च कर देगी.

अमरीकी सरकार की तरफ़ से नई दिल्ली से निकलने वाले हफ्तेवारी परचे 'अमरीकन रिपोर्टर' के 14 मई 1952 वाले नम्बर में विलायती खाद के इस राज़ीनामे की पूरी तफ़सील दी गई है. उसकी खास बातें हम नीचे देते हैं :—

1. आज हिन्दुस्तान में क़रीब साढ़े चार लाख टन अमोनियम सलफ़ेट बाहर से आता है. बिहार में इस खाद को बनाने वाली सिन्दरी फ़ैक्टरी साढ़े तीन लाख टन से ज़्यादा खाद नहीं तैयार कर सकेगी. इस तरह क़रीब 70,000 हज़ार टन का टोटा रहता है जिसको पूरा करने की सख्त ज़रूरत है. इसलिये उसे बाहर से मंगाना चाहिये.

2. अमरीका से जो खादें आएंगी वह ज़्यादातर देहाती विकास योजना वाले इलाक़ों में भेजी जायेंगी. और किसानों को उनके इस्तेमाल करने के लिये बढ़ावा दिया जायेगा.

3. विलायती खाद के इस समझौते की तरह हिन्द सरकार और अमरीका के बीच दूसरे और समझौते भी [illegible] मातहत कुछ ऐसी चीज़ें हिन्दुस्तान के गांव

کہ جس طرح رنگ لاتی ہے حنا پتھر پہ پس جانے کے بعد' اسی طرح ہوسکتا ہے یہ سرکار بھی پچھلے پانچ سال کے تجربوں سے کچھ فائدہ اٹھائے' کچھ سیکھے اور تن من دھن سے نئی بہار لانے کی کوشش میں اپنے کو مٹا دینے میں کوئی کسر نہ رکھے ۔

ہمارا اصلی آسرا دیش کی اس جنتا پر ہے جس نے اپنے تیاگ اور قربانیوں سے آزادی حاصل کی' اور جو ہمیں پورا بھروسہ ہے اپنے رہے سہے آج کل کے دکھوں کو بھی جلدی ہی ختم کرے گی ۔

—سریش رام بھائی 28 . 5 . '52

ولایتی کھاد کا سمجھوتا

5 جنوری 1952 کو نئی دلی میں ہند سرکار نے امریکی سرکار سے جو ہند امریکی تکنیکی سہیوگ سمجھوتہ کیا ہے اُسے ہم غلامی نامہ یا غلامی کا پٹہ کہہ چکے ہیں ۔ حال کی کچھ گھٹناؤں نے ہمارے اس خیال کو اور بھی مضبوط بنا دیا ہے ۔ پہلی مئی کو اس سمجھوتے کے ماتحت پہلا عملی سمجھوتہ کیا گیا ۔ اُسکے انوسار امریکی سرکار دس لاکھ آٹھ ہزار ٹن ولایتی کھاد ہندستان کو دیگی ۔ اس کا دام قریب ایک کروڑ ساڑھے چھ لاکھ ڈالر (لگ بھگ پانچ کروڑ چھ لاکھ روپیہ) ہوگا' جو امریکی سرکار اپنے پانچ کروڑ ڈالر والے فنڈ اے میں سے کٹا دیگی ۔ اور فنڈ بی کا قریب چوالیس لاکھ روپیہ ہند سرکار ان کھادوں کے اِدھر اُدھر پہونچانے میں خرچ کردیگی ۔

امریکی سرکار کی طرف سے نئی دلی سے نکلنے والے ہفتےواری پرچے 'امریکن رپورٹر' کے 14 مئی 1952 والے نمبر میں ولایتی کھاد کے اس راضی نامے کی پوری تفصیل دی گئی ہے ۔ اسکی خاص باتیں ہم نیچے دیتے ہیں:—

1. آج ہندستان میں قریب ساڑھے چار لاکھ ٹن امونیم سلفیٹ باہر سے آتا ہے ۔ بہار میں اس کھاد کو بنانے والی سندری فیکٹری ساڑھے تین لاکھ ٹن سے زیادہ کھاد نہیں تیار کر سکیگی ۔ اس طرح قریب 70,000 ٹن کا ٹوٹا رہتا ہے جس کو پورا کرنے کی سخت ضرورت ہے ۔ اس لئے اُسے باہر سے منگانا چاہئے ۔

2. امریکہ سے جو کھادیں آئینگی وہ زیادہ‌تر دیہاتی وکاس یوجنا والے علاقوں میں بھیجی جائینگی اور کسانوں کو اُنکے استعمال کرنے کے لئے بڑھاوا دیا جائیگا ۔

3. ولایتی کھاد کے اس سمجھوتے کی طرح ہند سرکار اور امریکہ کے بیچ دوسرے اور سمجھوتے بھی ہونگے جنکے ماتحت کچھ ایسی چیزیں ہندستان کے گاؤں

ुआ कर भी सरकार जनता के ऊपर करोड़ों बराकर भी नता की हालत बेहतर नहीं बना सकी. जिला इटावे में मरीकी देख रेख में जो विकास योजना चल रही है सको हमने घर फूंक तमाशा कहा है क्योंकि उसमें सरकार पया लगातार फूंकती जाती है मगर जनता का सहयोग ा हमदर्दी रत्ती भर भी नहीं मिलता.

सोचने की बात है कि आखिर इस दर्दनाक सूरत का लाज क्या है ? सरकार और जनता में क्यों नहीं पटती. सकी बहुत सी वजहें हो सकती हैं लेकिन एक बहुत ही ास वजह है—हमारे मिनिस्टरों की निजी ऐश की िन्दगी. सूबों में जहां मिनिस्टरों की तनखाहें डेढ़ हजार े करीब हैं वहां नई दिल्ली में चार और पांच हजार तक ुहुँचती हैं और राजपति की दस हजार तक. नई केन्द्री ैबिनेट में कम से कम, तीन मिनिस्टर ऐसे हैं जो कुछ रसा पहले सूबों में मिनिस्टर थे. आप से आप खयाल ोता है कि केन्द्री कैबिनेट में आने पर उन्हें इतनी जियादे नखा की जरूरत क्यों पड़ी? और अगर डेढ़ हजार के रीब में वह रह सकते हैं तो केन्द्र के दूसरे मिनिस्टर क्यों हीं रह सकते ? और अगर मिनिस्टर लोग डेढ़ हजार में ह सकते हैं तो उन मिनिस्टरों के I. C. S. या I. A. S. ेक्रेटरियों को क्यों जियादा चाहिये ? या विदेश में जाने ाले हमारे राजदूतों को और गवरनरों को क्यों जियादा ाहिये ? जब बंगाल का गवरनर मुकर्जी पांच सौ रुपये में ाम चला सकता है तो किसी दूसरे गवरनर को क्यों ज़यादा दिया जाय ? और सौ बातों की बात यह कि ऐसी ालत में राजपति क्यों जियादा लें ? क्या यह अफ़सोस ी बात नहीं है कि सूबे के मिनिस्टर से दुगनी तिगनी नखा गवरनर की हो और गवरनर से दूनी राजपति की ? ह ऊंच नीच की सीढ़ी आखिर क्यों ?

यह वह सवाल हैं जो हर वक़्त जनता की जबान पर ाते हैं. इनका कोई जवाब हकूमत के पास न था, न है ौर न होगा. लेकिन हमारे मिनिस्टर, जो किसी जमाने त्यागी से त्यागी साधू को भी, मात करते थे, शायद ाज मजबूर हैं उस मशीन से जिसके शिकंजे में वह फंस ये हैं. और यह मशीन वही है जो वारेन हेस्टिंग्ज ने न्दुस्तान पर अंगरेजी राज जमाने के लिये और हिन्दु- ान की जनता के चूसने के लिये बनाई थी. और जब शीन वही रहती है, तो यह उम्मीद करना कि देश की ालत में सुधार हो जायगा ऐसी बात है जैसे दिन में तारे ेखने की उम्मीद करना. तब फिर नई सरकार भले आ ई हो, बहार वही पुरानी है, वही तबाहकुन है जो पहले ी थी.

इसलिये नई सरकार के आने पर हमें जहां खुशी है ां ना उम्मेदी भी है. इस ना उम्मेदी में भी उम्मीद यह

بھی کر بھی سرکار جنتا کے اوپر کروڑوں برابر بھی جنتا کی حالت بہتر نہیں بنا سکی. ضلع اٹاوہ میں امریکی دیکھ ریکھ میں جو وکاس یوجنا چل رہی ہے اس کو ہم نے گھر پھونک تماشہ کہا ہے کیونکہ اس میں سرکار روپیہ لگاتار پھونکتی جاتی ہے مگر جنتا کا سہیوگ یا ہمدردی رتی بھر بھی نہیں ملتا.

سوچنے کی بات ہے کہ آخر اس دردناک صورت کا علاج کیا ہے ؟ سرکار اور جنتا میں کیوں نہیں پٹتی. اس کی بہت سی وجہیں ہوسکتی ہیں لیکن ایک بہت ہی خاص وجہ ہے—ہمارے منسٹروں کی نجی عیش کی زندگی. صوبوں میں جہاں منسٹروں کی تنخواہیں ڈیڑھ ہزار کے قریب ہے وہاں نئی دلی میں چار اور پانچ ہزار تک پہونچتی ہیں اور راج پتی کی دس ہزار تک. نئی کیندری کیبنٹ میں کم سے کم تین منسٹر ایسے ہیں جو کچھ عرصہ پہلے صوبوں میں منسٹر تھے. آپ سے آپ خیال ہوتا ہے کہ کیندری کیبنٹ میں آنے پر انہیں اتنی زیادہ تنخواہ کی ضرورت کیوں پڑی؟ اور اگر ڈیڑھ ہزار کے قریب میں وہ رہ سکتے ہیں تو کیندر کے دوسرے منسٹر کیوں نہیں رہ سکتے؟ اور اگر منسٹر لوگ ڈیڑھ ہزار میں رہ سکتے ہیں تو ان منسٹروں کے I. C. S. یا I. A. S. سیکریٹریوں کو کیوں زیادہ چاہئے؟ یا ودیش میں جانے والے ہمارے راج دوتوں کو اور گورنروں کو کیوں زیادہ چاہئے؟ جب بنگال کا گورنر مکرجی پانچسو روپئے میں کام چلا سکتا ہے تو کسی دوسرے گورنر کو کیوں زیادہ دیا جائے؟ اور سو باتوں کی بات یہ کہ ایسی حالت میں راج پتی کیوں زیادہ لیں ؟ کیا یہ افسوس کی بات نہیں ہے کہ صوبے کے منسٹر سے دگنی تگنی تنخواہ گورنر کی ہو اور گورنر سے دونی راج پتی کی ؟ یہ اونچ نیچ کی سیڑھی آخر کیوں ؟

یہ وہ سوال ہیں جو ہر وقت جنتا کی زبان پر آتے ہیں. ان کا کوئی جواب حکومت کے پاس نہ تھا، نہ ہے اور نہ ہوگا. لیکن ہمارے منسٹر، جو کسی زمانے میں تیاگی سے تیاگی سادھو کو بھی مات کرتے تھے، شاید آج مجبور ہیں اس مشین سے جس کے شکنجے میں وہ پھنس گئے ہیں. اور یہ مشین وہی ہے جو وارن ہسٹنگز نے ہندوستان پر انگریزی راج جمانے کے لئے اور ہندوستان کی جنتا کو چوسنے کے لئے بنائی تھی. اور جب مشین وہی رہتی ہے تو یہ امید کرنا کہ دیش کی حالت میں سدھار ہو جائے گا ایسی بات ہے جیسے دن میں تارے دیکھنے کی امید کرنا. تب پھر نئی سرکار بھلے آ گئی ہو، بہار وہی پرانی ہے، وہی تباہ کن ہے جو پہلے کبھی تھی.

اس لئے نئی سرکار کے آنے پر ہمیں جہاں خوشی ہے وہاں [illegible] ناامیدی میں بھی امید یہ

कि किसी सल्तनत की तरक्की का माप उसके पीछे के इलाक़े की दौलत और खुशहाली है, बाहर से आने वाले जहाज़ों की गिनती नहीं.

राजपति की तीसरी बातों को हम फिर तीन हिस्सों में बांट सकते हैं—(1) सरकार की तारीफ़ कि सिमेन्ट, लोहा, सन, चीनी और नमक वग़ैरा में खूब पैदावार हुई और इस तरह की चीज़ों के दाम गिरे, (2) इस बात का वादा कि नई सरकार नये व पुराने मसलों पर इस पार्लियामेन्ट के सामने क़ानून पेश करेगी, और (3) अनाज की काश्त व विकास योजनायें.

जहां तक सरकार की तारीफ़ की बात है, अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना कोई तसल्ली देने वाली चीज़ नहीं है. राजपति ने जो वादे किये हैं वह जब पूरे हो जायें तभी कुछ कहा जा सकता है. उनकी कुल स्पीच में जो काम की बात हमें मालूम हुई वह तीन पैरे की है जिसमें उन्होंने अनाज और विकासी योजना के बारे में चर्चा की है. इन दोनों बातों में उन्होंने जो रुख लिया है उससे पता चलता है कि हुकूमत और जनता के बीच में कितनी चौड़ी खाई है.

राजपति ने कहा है कि पानी न होने की वजह से देश में खाने की कमी पड़ती है. हमारे यहां के अकालों का ठीक यही कारन अंगरेज़ सरकार डेढ़ सौ बरस तक बताती थी और हम सच कहते हैं इन्द्र देवता या और किसी पर यह इल्ज़ाम लगाना गुनाह है. हिन्दुस्तान में अनाज की कमी के जो असली कारन हैं वह हम नीचे देते हैं :—

1. हिन्द सरकार का बड़ी बड़ी मशीनों, पूंजी वाद, फ़ौजों और शक्ति-बटोर जैसी रानियों से बेमेल गठबन्धन और डालर की भड़ास.

2. देहाती उद्योग धंदों को धीरे धीरे बरबाद करके उनकी जगह मिलों और बड़े उद्योगों को बढ़ावा देना.

3. देश में दिन दूनी रात चौगुनी बे रोज़गारी बढ़ने देना.

4. सरकारी मुलाज़मों में जिनसे सूबों के या केन्द्र के मिनिस्टर भी बाहर नहीं हैं काम चोरी, रिश्वत ख़ोरी और सीनाज़ोरी का बढ़ना.

5. हुकूमत का देश की जनता की ताक़त में विश्वास न करना.

हम मानते हैं कि जब तक यह पांच कारन रहते हैं तब तक देश के अनाज का सवाल यह सरकार हल नहीं कर सकती और न इसे जनता का सहयोग ही मिल सकता है. सरकारी विकास योजनाओं या उन उपायों को [illegible] जिनमें करोड़ों रुपया पानी की तरह

که کسی سلطنت کی ترقی کا ناپ اُس کے پیچھے کے علاقے کی دولت اور خوش حالی ہے، باہر سے آنے والے جہازوں کی گنتی نہیں .

راج پتی کی تیسری بات کو ہم پھر تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں—(1) سرکار کی تعریف کہ سیمنٹ، لوہا، سن، چینی، اور نمک وغیرہ میں خوب پیداوار ہوئی اور اِس طرح کی چیزوں کے دام گرے، (2) اِس بات کا وعدہ کہ نئی سرکار نئے و پرانے مسئلوں پر اِس پارلیامنٹ کے سامنے قانون پیش کرے گی، اور (3) اناج کی کاشت و وکاس یوجنائیں .

جہاں تک سرکار کی تعریف کی بات ہے، اپنے منہ میاں مٹھو بننا کوئی تسلی دینے والی چیز نہیں ہے . راج پتی نے جو وعدے کئے ہیں وہ جب پورے ہو جائیں تبھی کچھ کہا جاسکتا ہے . اُن کی کل اسپیچ میں جو کام کی بات ہمیں معلوم ہوئی وہ تین پیرے کی ہے جس میں اُنہوں نے اناج اور وکاسی یوجنا کے بارے میں چرچہ کی ہے. اِن دونوں باتوں میں اُنہوں نے جو رخ لیا ہے اُس سے پتہ چلتا ہے کہ حکومت اور جنتا کے بیچ میں کتنی چوڑی کھائی ہے .

راج پتی نے کہا ہے کہ پانی نہ ہونے کی وجہ سے دیش میں کھانے کی کمی پڑتی ہے . یہاں کے اکالوں کا ٹھیک یہی کارن ہمارے انگریز سرکار ڈیڑھ سو برس تک بتاتی تھی اور ہم سچ کہتے ہیں کہ اِندر دیوتا یا اور کسی پر یہ اِلزام لگانا گناہ ہے . ہندستان میں اناج کی کمی کے جو اصلی کارن ہیں وہ ہم نیچے دیتے ہیں:—

1. ہند سرکار کا بڑی بڑی مشینوں، پونجی واد، فوجوں اور شکتی بٹور جیسی رانیوں سے بے میل گٹھ بندھن اور ڈالر کی بھڑاس .

2. دیہاتی ادیوگ دھندوں کو دھیرے دھیرے برباد کرکے اُن کی جگہ ملوں اور بڑے ادیوگوں کو بڑھاوا دینا .

3. دیش میں دن دونی رات چوگنی بےروزگاری بڑھنے دینا .

4- سرکاری ملازموں میں جن سے صوبوں کے یا کیندر کے منسٹر بھی باہر نہیں ہیں کام چوری، رشوت خوری اور سینہ زوری کا بڑھنا .

5. حکومت کا دیش کی جنتا کی طاقت میں وشواس نہ کرنا .

ہم مانتے ہیں کہ جب تک یہ پانچ کارن رہتے ہیں تب تک دیش کے اناج کا سوال یہ سرکار حل نہیں کر سکتی اور نہ اِسے جنتا کا سہیوگ ہی مل سکتا ہے . سرکاری وکاس یوجناؤں یا اُن اُپایوں کو دیکھتے جن میں کروڑوں روپیہ پانی کی طرح

सन 14 की लड़ाई के सबक़ लेकर दूसरी लड़ाई से अमरीका ने फ़ायदा उठाया और अब यूनो में अमरीका ने रूस को एक बेकार साझ बना रक्खा है. बरतानिया और फ़्रांस को मामूली टहनी और चीमंग टाम चीन को एक पत्ता.

भारत सरकार को अमरीका की जीवनी से सबक़ लेना चाहिये. उसे अमरीका की ही नक़ल करना है तो वह मुनरो के अमरीका की नक़ल करे, वुडरो विलसन, रूज़वेल्ट और ट्रूमेन के अमरीका की नहीं।

10. 6. '52 —भगवानदीन

سن 14 کی لڑائی سے سبق لے کر دوسری لڑائی سے امریکہ نے فائدہ اٹھایا اور اب یونو میں امریکہ نے روس کو ایک بیکار ساجھی بنا رکھا ہے . برطانیہ اور فرانس کو معمولی ٹہنی اور چی منگ ٹان چین کو ایک پتا .

بھارت سرکار کو امریکہ کی جیونی سے سبق لینا چاہئے . اسے امریکہ کی ہی نقل کرنا ہے تو وہ منرو کے امریکہ کی نقل کرے . ووڈرو ولسن' روز ویلٹ اور ٹرومین کے امریکہ کی نہیں .

10-6-52. —بھگوان دین

नई सरकार नई बहार

आज़ाद भारत के नये विधान के मुताबिक़ जो चुनाव दिसम्बर 1951 में शुरू हुए थे वह 2 मई 1952 को पूरे हुए, अब राजपति के चुनाव के लिये वोट डाले गये. और आज़ाद भारत की पहली बाक़ायदा हुकूमत 13 मई को बनी जब नये राजपति ने क़सम खाई और बड़े वज़ीर ने उनके आगे नये कैबिनेट की फ़हरिस्त पेश की. दूसरे दिन नये मिनिस्टरों ने भी क़सम खाई. तीसरे दिन 15 मई को राजपति ने नई पार्लियामेन्ट के सामने अपनी पहली स्पीच दी. इस तरह मई के महीने में हमारे देश में नई सरकार क़ायम हुई. इस नई सरकार में हमारे राजपति और बड़े वज़ीर वही हैं जो पहले थे और ज़ियादतर मिनिस्टर भी पुराने हैं. हुकूमत के इन अलमबरदारों को हम मुबारकबाद देते हैं और उम्मीद करते हैं कि देश में नई सरकार के आने का मतलब नई बहार लाना भी होगा.

पर हमें दुख के साथ क़बूल करना पड़ता है कि अगर राजपति की 15 मई वाली स्पीच से नई सरकार के इरादों का अन्दाज़ लगाया जा सकता है तो नई बहार आती नहीं दीखती. राजपति के भाशन को हम तीन हिस्सों में बांट सकते हैं—(1) गांधी जी में श्रद्धा और जग-शान्ति की दुहाई, एका व दोस्ती का पुराना राग, (2) विदेशी नीति में हिन्द सरकार का बेलाग और ग़ैर जानिबदार होना, और (3) देश के भीतरी मामलों में कमाल और कामयाबी का दावा.

इन तीन में पहली बात तो ऐसी है जो हर कोई हर मंच से कह सकता है और जो अंगरेज़ों की क़ायम की हुई, रकेल जैसे पार्लिमेन्ट्री निज़ाम की दर्दनाक देन है. रही दूसरी बात. उसकी कसौटी भीतरी नीति है. अगर भीतरी मामलों में देश सुखी है और जनता आराम से अपने काम पर लगी रहती है तो समझना चाहिये कि देश की विदेशी नीति भी ठीक है. यह वैसी ही बात है जैसे

نئی سرکار نئی بہار

آزاد بھارت کے نئے ودھان کے مطابق جو چناؤ دسمبر 1951 میں شروع ہوئے تھے وہ 2 مئی 1952 کو پورے ہوئے' جب راج پتی کے چناؤ کے لئے ووٹ ڈالے گئے . اور آزاد بھارت کی پہلی باقاعدہ حکومت 13 مئی کو بنی جب راج پتی نے قسم کھائی اور بڑے وزیر نے ان کے آگے نئے کیبنٹ کی فہرست پیش کی. دوسرے دن نئے منسٹروں نے بھی قسم کھائی . تیسرے دن 15 مئی کو راج پتی نے نئی پارلیامنٹ کے سامنے اپنی پہلی اسپیچ دی . اس طرح مئی کے مہینے میں ہمارے دیش میں نئی سرکار قائم ہوئی. اس نئی سرکار میں ہمارے راج پتی اور بڑے وزیر وہی ہیں جو پہلے تھے اور زیادہ تر منسٹر بھی پرانے ہیں . حکومت کے ان علمبرداروں کو ہم مبارک باد دیتے ہیں اور امید کرتے ہیں کہ دیش میں نئی سرکار کے آنے کا مطلب نئی بہار لانا بھی ہوگا .

پر ہمیں دکھ کے ساتھ قبول کرنا پڑتا ہے کہ اگر راج پتی کی 15 مئی والی اسپیچ سے نئی سرکار کے ارادوں کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے تو نئی بہار آتی نہیں دکھتی. راج پتی کے بھاشن کو ہم تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں— (1) گاندھی جی میں شردھا اور جگ شانتی کی دہائی' ایکا و دوستی کا پرانا راگ' (2) ودیشی نیتی میں ہند سرکار کا بے لاگ اور غیر جانب دار ہونا' اور (3) دیش کے بھیتری معاملوں میں کمال اور کامیابی کا دعوا .

ان تین میں پہلی بات تو ایسی ہے جو ہر کوئی ہر منچ سے کہہ سکتا ہے اور جو انگریزوں کی قائم کی ہوئی' رکھیل جیسے پارلیمینٹری نظام کی دردناک دین ہے . رہی دوسری بات . اس کی کسوٹی بھیتری نیتی ہے . اگر بھیتری معاملوں میں دیش سکھی ہے اور جنتا آرام سے اپنے کام پر لگی رہتی ہے تو سمجھنا چاہئے کہ دیش کی ودیشی نیتی بھی ٹھیک ہے . یہ ویسی ہی بات ہے جیسے

की ऐसी चीजें हैं जो अगर कभी ऊपर आईं तो अमरीका की सारी तरक्की धूल में मिल जायगी. वह यह भी देखने की परवाह नहीं करते कि अमरीका सचमुच उस तरक्की से उतना ही सुखी और बे फ़िकर है जितना उसकी तरक्की का शोर मच रहा है. हमने तो यही सुना है और गुरुजनों से यही सीखा है कि वही दुकान पनपती है जिसमें बाहर की पूँजी घर की पूँजी से आधी से ज़ियादा हरगिज़ न हो और जितनी कम उतना ही अच्छा. इसी के सिलसिले में यह भी जाना है कि अगर किसी दुकान की पूँजी आधी से ज़ियादा बाहर की होती है तो या तो वह दुकान बाहर वालों की हो जाती है या फिर धूल में मिल जाती है.

कुछ ऐसी ही बात बल और विद्या के बारे में कही जाती है. वह बल बल नहीं जो दूसरों के सहारे पर हो. वह विद्या विद्या नहीं जो अपनी मेहनत से न सीखी गई हो. बल और विद्या जो जल्दी जल्दी हासिल किये जाते हैं वह जल्दी जल्दी खो भी दिये जाते हैं.

हम नहीं समझते कि हिन्दुस्तानी सरकार की बहुत जल्दी बुद्धिवान, बलवान और मालदार बनने की नीति कहां तक ठीक रहेगी. जब कि वह इन तीनों के लिये उस अमरीका की नक़ल कर रहा है जो उसकी बराबर का नहीं है. और उस अमरीका से मदद ले रहा है जिसकी नियत और चालों से उसकी पूरी पूरी वाकफ़ियत नहीं है, क्योंकि हिन्दुस्तान को अमरीका के साथ रहने का आज से पहले कभी मौक़ा नहीं मिला.

अमरीका डरावनी चीज़ हो या न हो हमें कम से कम यह ज़रूर जानना चाहिये कि अमरीका ने अपने बचपन में उसी तरह अपनी कथा पेशबन्दियां की थीं जिस तरह कोई समझदार माली नये पौधे के लिये करता है. नया पौधा बड़े पेड़ की देखा देखी अगर अपने थांवले को उखाड़ फेंके तो नतीजा यही होगा कि वह चौपायों को अपने मुलायम पत्तों तक बुला लेगा और कभी न पनप पायेगा.

अमरीका ने अपने बचपन में मुनरो जैसे समझदार को जन्म दिया जिसने अमरीका के चारों तरफ़ एक थांवला बनाया जिसका नाम था 'अमरीका अमरीकियों के लिये', यही थांवला मुनरो सिद्धान्त नाम से मशहूर है.

अमरीका ने इस नये सिद्धान्त को मुनासिब वक़्त से पहले तोड़ दिया और वह पहली लड़ाई में शामिल हो गया. जिसका नतीजा यह हुआ कि पहली लड़ाई जीती अमरीका ने. पर उसके बाद जो लीग आफ़ नेशन्स बनी उसमें उसे मुँह की खानी पड़ी और अमरीका की सारी [illegible] अमरीका को लीग [illegible]

هی ایسی چیزیں هیں جو اگر کبھی ابھر آئیں تو امریکہ کی ساری ترقی دھول میں مل جائیگی ۔ وہ یہ بھی دیکھنے کی پرواہ نہیں کرتے کہ امریکہ سچ مچ اس ترقی سے اتنا هی سکھی اور بےفکر هے جتنا اس کی ترقی کا شور مچ رہا هے. هم نے تو یہی سنا هے اور گروجنوں سے یہی سیکھا هے کہ وهی دوکان پنپتی هے جس میں باهر کی پونجی گھر کی پونجی سے آدھی سے زیادہ هرگز نہ هو اور جتنی کم اتنا هی اچھا. اسی کے سلسلے میں یہ بھی جانا هے کہ اگر کسی دوکان کی پونجی آدھی سے زیادہ باهر کی هوتی هے تو یا تو وہ دوکان باهر والوں کی هوجاتی هے یا پھر دھول میں مل جاتی هے ۔

کچھ ایسی هی بات بل اور ودیا کے بارے میں کہی جاتی هے ۔ وہ بل بل نہیں جو دوسرے کے سہارے پر هو ۔ وہ ودیا ودیا نہیں جو اپنی محنت سے نہ سیکھی گئی هو ۔ بل اور ودیا جو جلدی جلدی حاصل کئے جاتے هیں وہ جلدی جلدی کھو بھی دیئے جاتے هیں ۔

هم نہیں سمجھتے کہ هندستانی سرکار کی بہت جلدی بدھیوان، بلوان اور مال‌دار بننے کی نیتی کہاں تک ٹھیک رهیگی، جبکہ وہ ان تینوں کے لئے اس امریکہ کی نقل کر رہا هے جو اس کی برابر کا نہیں هے ۔ اور اس امریکہ سے مدد لے رہا هے جسکی نیت اور چالوں سے اس کی پوری پوری واقفیت نہیں هے، کیونکہ هندستان کو امریکہ کے ساتھ رهنے کا آج سے پہلے کبھی موقع نہیں ملا.

امریکہ ڈراونی چیز هو یا نہ هو همیں کم سے کم یہ ضرور جاننا چاهئے کہ امریکہ نے اپنے بچپن میں اسی طرح اپنی کیا پیش‌بندیاں کی تھیں، جس طرح کوئی سمجھدار مالی نئے پودھے کے لئے کرتا هے ۔ نیا پودھا بڑے پیڑ کی دیکھا دیکھی اگر اپنے تھانولے کو اکھاڑ پھینکے تو نتیجہ یہی هوگا کہ وہ چوپایوں کو اپنے ملائم پتوں تک بلالیگا اور کبھی نہ پنپ پائیگا ۔

امریکہ نے اپنے بچپن میں منرو جیسے سمجھدار کو جنم دیا جس نے امریکہ کے چاروں طرف ایک تھانولا بنایا جس کا نام تھا 'امریکہ امریکیوں کے لئے' یہی تھانولا 'منرو سدھانت' نام سے مشہور هے ۔

امریکہ نے اس نئے سدھانت کو مناسب وقت سے پہلے توڑ دیا اور وہ پہلی لڑائی میں شامل هو گیا، جس کا نتیجہ یہ هوا کہ پہلی لڑائی جیتی امریکہ نے ۔ پر اس کے بعد جو لیگ آف نیشنس بنی اس میں اسے منہ کی کھانی پڑی اور امریکہ کی ساری ناموری کو برطانیہ هڑپ گیا ۔ امریکہ کو لیگ آف نیشنس سے ایسے نکل گیا جیسے دودھ سے مکھی.

बैठी. पर इस बीमारी बम के बारे में बड़ी चुप्पी साध कर उसने सिर्फ़ यही सबूत दिया कि वह हद से ज़ियादे तजुरबेकार हो गई है, फूंक फूंक कर क़दम रखने लगी है और जहां उसे जल्दी फ़ैसला करना चाहिये था वहां मामूल से ज़ियादा सोचने लगी है.

चाहिये तो यह था कि अगर कोई बिलकुल झूठी ख़बर कुछ हफ़्तों ही सब अख़बारों में आए तो सरकार उसकी जांच की फ़ौरन इन्तज़ाम करे और बीमारी बम जैसे बड़े ख़तरनाक मामले की अख़बारों में एक बार ख़बर आने पर भी जांच का इन्तज़ाम करती. पर वह तो महीनों की ख़बर के बाद चुप बैठी है. हो सकता है सरकार ने फ़ौरन ही अपने तरीक़े से उसकी जांच शुरू कर दी हो. पर वैसा करना जनता के लिये काफ़ी नहीं है. जनता की तसल्ली तो इससे हो सकती है कि यह बताये कि वह सचमुच इस मामले में कुछ कर रही है या नहीं.

हिन्दुस्तान एशियाई देश है. हम एशिया, योरप अफ़्रीक़ा, अमरीका में फ़र्क़ नहीं करना चाहते. पर दूसरे जब हमें फ़र्क़ करने के लिये मजबूर करें तो हम क्या करें. जब यूनो के सिर पर अटलान्टिक संघ मौजूद है तब एशियाई संघ क्यों न बने . और हिन्दुस्तान एशियाइयों और अमरीकियों में क्यों न फ़र्क़ करे ? ऐटम बम की बुनियाद योरप में पड़ी, वह पनपा और बड़ा हुआ अमरीका में और उसने नाश किया एशियाई मुल्क जापान के शहर हिरोशीमा को. आज भी बीमारी के बम की जांच के मैदान बने हैं—एशियाई मुल्क कोरिया और चीन. यह मामूली बात नहीं है. हिन्दुस्तान को एशियाई मुल्क की हैसियत से ही बीमारी बम गिराने जैसे ख़तरनाक मामले में कुछ न कुछ बोलना और करना ही चाहिये था.

10. 6. '52. —भगवानदीन

अमरीका की मिसाल

अमरीका की तरक़्क़ी की ख़बरें जब हम तक पहुंचती हैं तो उन्हें सुन सुन कर हम में से बहुतों के मुंह में पानी भर आता है. और जिनके हाथ में हमारे मुल्क की बागडोर है वह तो बारी बारी से पंख लगा कर अमरीका उड़ कर अपनी आंखों उस तरक़्क़ी को देख आते हैं और उसे देख कर वह उस पर इतने लट्टू होते हैं कि घर लौट कर उसी धुन में मस्त उसकी नक़ल करने बैठ जाते हैं. न वक़्त देखते हैं, न जगह देखते हैं, न क़ाबलियत देखते हैं, न जेब टटोल कर देखते हैं.

पंख लगा कर देख आने वाले यह देखने की परवाह नहीं करते कि अमरीका की तरक़्क़ी की तह में कौन कौन

بیٹھی . پر اس بیماری بم کے بارے میں بڑی چپی سادھ کر اُس نے صرف یہی ثبوت دیا کہ وہ حد سے زیادہ تجربہ‌کار ہوگئی ہے ' پھونک پھونک کر قدم رکھنے لگی ہے اور جہاں جہاں اُسے جلدی فیصلہ کرنا چاہئے تھا وہاں معمول سے زیادہ سوچنے لگی ہے .

چاہئے تو یہ تھا کہ اگر کوئی بالکل جھوٹی خبر کچھ ہفتوں ہی سب اخباروں میں آئے تو سرکار اُس کی جانچ کی فوراً انتظام کرے . اور بیماری بم جیسے بڑے خطرناک معاملے کی اخباروں میں ایک بار خبر آنے پر بھی جانچ کا انتظام کرتی . پر وہ تو مہینوں کی خبر کے بعد چپ بیٹھی ہے . ہوسکتا ہے سرکار نے فوراً ہی اپنے طریقے سے اُس کی جانچ شروع کردی ہو . پر ویسا کرنا جنتا کے لئے کافی نہیں ہے . جنتا کی تسلی تو اِس سے ہوسکتی ہے کہ یہ بتائے کہ وہ سچ مچ اِس معاملے میں کچھ کر رہی ہے یا نہیں .

ہندستان ایشیائی دیش ہے. ہم ایشیا' یورپ' افریقہ' امریکہ میں فرق نہیں کرنا چاہتے . پر دوسرے جب ہمیں فرق کرنے کے لئے مجبور کریں تو ہم کیا کریں. جب یونو کے سر پر اِٹلانٹک سنگھ موجود ہے تب ایشیائی سنگھ کیوں نہ بنے. اور ہندستان ایشیائیوں اور امریکیوں میں کیوں نہ فرق کرے ؟

ایٹم بم کی بنیاد یورپ میں پڑی ' وہ پنپا اور بڑا ہوا امریکہ میں اور اُس نے ناش کیا ایشیائی ملک جاپان کے شہر ہیرو شیما کو . آج بھی بیماری کے بم کی جانچ کے میدان بنے ہیں—ایشیائی ملک کوریا اور چین . یہ معمولی بات نہیں ہے . ہندستان کو ایشیائی ملک کی حیثیت سے ہی بیماری بم گرانے جیسے خطرناک معاملے میں کچھ نہ کچھ بولنا اور کرنا ہی چاہئے تھا .

—بھگوان‌دین 10 . 6 . '52

امریکہ کی مثال

امریکہ کی ترقی کی خبریں جب ہم تک پہونچتی ہیں تو اُنہیں سن سن کر ہم میں سے بہتوں کے منھ میں پانی بھر آتا ہے . اور جن کے ہاتھ میں ہمارے ملک کی باگ ڈور ہے وہ تو باری باری سے پنکھ لگا کر امریکہ اُڑکر اپنی آنکھوں اُس ترقی کو دیکھ آتے ہیں اور اُسے دیکھ کر وہ اُس پر اتنے لٹو ہوتے ہیں کہ گھر لوٹ کر اُسی دھن میں مست اُس کی نقل کرنے بیٹھ جاتے ہیں . نہ وقت دیکھتے ہیں' نہ جگہ دیکھتے ہیں' نہ قابلیت دیکھتے ہیں' نہ جیب ٹٹول کر دیکھتے ہیں .

پنکھ لگاکر دیکھ آنے والے یہ دیکھنے کی پرواہ نہیں کرتے کہ امریکہ کی ترقی کی تہ میں کون کون

कार करके वह तो साबित कर ही रहा है कि बीमारी गिराना अन्तर क़ौमी क़ानून के खिलाफ़ है. पर उसका कहना कि बीमारी बम गिराने से न कुछ नुक़सान है न लड़ाई जीती जाती है, इस बात का सबूत है कि गिराये ज़रूर गये.

अमरीका के बम न गिराने की बात को हम उस वक़्त कुछ ठीक समझ सकते हैं जब वह यूनो में पहले यह ाव पास करा ले कि बीमारी बम गिराने वाला मुल्क ई का मुजरिम समझा जायगा और तहक़ीक़ात के बाद मुल्क को सज़ा भी दी जायगी.

कोरिया में बीमारी-बम गिराने के बारे में आये दिन नये भेद खुल रहे हैं. हर भेद खुल कर यही कहता मालूम है कि बीमारी बम गिराये गये और गिराये अमरीका पर ऐसे भेदों का खुलना न खुलना बेकार है जब तक न कह दे कि बम गिराये गये. हां, जब दुनिया की वाज़ यूनो की आवाज़ से ज़ोरदार हो जायगी तब शायद रीका कुछ सोचे तो सोचे. उससे पहले उसे कोई ला नहीं.

10. 6. '52. —भगवानदीन

बीमारी बम और हिन्दुस्तानी सरकार

कहा जाता है हिन्द सरकार जनता की सरकार है हाल के चुनाव में यह बात साबित कर दी है कि च हिन्द सरकार जनता की सरकार है. पर यह बात क में नहीं आती कि हिन्दुस्तान के क़रीब क़रीब सब बारों में कोरिया में बीमारी बम गिराने की ख़बरें चार ने से बराबर निकल रही हैं, कुछ ज़िम्मेदार पत्रों ने पर अपनी राय भी ज़ाहिर की है, लेकिन हिन्दुस्तान जनता की सरकार है कि एक दम चुप्पी मार कर बैठ है.

है तो वह सरकार पांच बरस की, पर बाज़ बाज़ मामलों तना सोचती है मानो अस्सी नब्बे बरस की हो. चीन नई सरकार को अपना कर और बरतानियां से पहले ना कर, अपने गरम ख़ून का सबूत दिया था. और या सही उत्तरी कोरिया को 'अग्रेसर' कह कर भी यही दिया था कि हिन्दुस्तानी सरकार अभी बच्चा है बच्चों ही की तरह उछलना कूदना जानता है उसके भी कई मामलों में हिन्द सरकार ने बड़े जोशीले काम . 38 पट्टी लकीर के मामले में तो उसने जो फ़ैसला उसकी वजह से सारी दुनिया में उसकी धाक जाम उत्तरी कोरिया को अग्रेसर कह कर भूल की थी वह इस फ़ैसले से बुद्धिमानी में बदल गई. और अब [illegible] बच्चा सरकार एक दम जवानी में क़दम रख

اِنکار کرکے یہ تو ثابت کر ہی رہا ہے کہ بیماری بم گرانا انٹر قومی قانون کے خلاف ہے. پر اُس کا یہ کہنا کہ بیماری بم گرانے سے نہ کچھ نقصان ہوتا ہے نہ لڑائی جیتی جاتی ہے' اس بات کا ثبوت ہے کہ بم گرائے ضرور گئے .

امریکہ کے بم نہ گرانے کی بات کو ہم اُس وقت کچھ کچھ ٹھیک سمجھ سکتے ہیں جب وہ یونو میں پہلے یہ ٹھہراؤ پاس کرا لے کہ بیماری بم گرانے والا ملک لڑائی کا مجرم سمجھا جائیگا اور تحقیقات کے بعد اُس ملک کو سزا بھی دی جائیگی .

کوریا میں بیماری بم گرانے کے بارے میں آئے دن نئے نئے بھید کھل رہے ہیں . ہر بھید کھل کر یہی کہتا معلوم ہوتا ہے کہ بیماری بم گرائے گئے اور گرائے امریکہ نے. پر ایسے بھیدوں کا کھلنا نہ کھلنا بیکار ہے جب یونو نہ کہہ دے کہ' بم گرائے گئے . ہاں' ہم جب دنیا کی آواز یونو کی آواز سے زور دار ہوجائیگی تب شائد امریکہ کچھ سوچے تو سوچے . اُس سے پہلے اُسے کوئی چلتا نہیں .

—بھگوان دین 10 . 6 . '52

بیماری بم اور ھندستانی سرکار

کہا جاتا ہے ہند سرکار جنتا کی سرکار ہے اور حال کے چناؤ نے یہ بات ثابت کر دی ہے کہ سچ مچ ہند سرکار جنتا کی سرکار ہے. پر یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ ہندستان کے قریب قریب سب اخباروں میں کوریا میں بیماری بم گرانے کی خبریں چار مہینے سے برابر نکل رہی ہیں' کچھ ذمےدار پتروں نے اِس پر اپنی رائے بھی ظاہر کی ہے' لیکن ہندستان کی جنتا کی سرکار ہے کہ ایک دم چپی مار کر بیٹھ گئی ہے .

ہے تو یہ سرکار پانچ برس کی' پر بعض بعض معاملوں میں اتنا سوچتی ہے مانو اسی نوے برس کی ہو . چین کی نئی سرکار کو اپنا کر اور برطانیہ سے پہلے اپنا کر' اس نے گرم خون کا ثبوت دیا تھا. اور غلط یا صحیح اتری کوریا کو 'اگریسر' کہہ کر بھی یہی ثبوت دیا تھا کہ ہندستانی سرکار ابھی بچہ ہے اور بچوں ہی کی طرح اُچھلنا کودنا جانتی ہے . اُس کے بعد بھی کئی معاملوں میں ہند سرکار نے بڑے جوشیلے کام کئے . 38 پٹی لکیر کے معاملے میں تو اُس نے جو فیصلہ کیا اُس کی وجہ سے ساری دنیا میں اُس کی دھاک جم گئی . اتری کوریا کو اگریسر کہکر بھول کی تھی وہ اِس کے اِس فیصلے سے بدھمانی میں بدل گئی. اور اب ہندستانی بچہ سرکار ایک دم جوانی میں قدم رکھ

कोरिया पर एटम बम गिराने की धमकी यूनो नहीं दे सकता क्योंकि न उसके पास अपनी फौज है न अपने हथियार. एटम बम गिराने की धमकी अमरीका ही दे सकता है क्योंकि उसके पास इतने ज़ियादा एटम बम हो गये हैं जो सड़ते पड़ रहे हैं. अमरीका की इस तरह की धमकी यूनो के लिये है तो गुस्ताखी लेकिन यूनो बरदाश्त कर लेता है क्योंकि वह आजकल इसी तरह अमरीका के हाथ की कठपुतली बना हुआ है; जिस तरह लीग आफ़ नेशन्स बरतानिया के हाथ की चीज़ थी.

कोरिया में लड़ाई जीतने की जितनी ज़ियादा फ़िकर अमरीका को है उतनी किसी दूसरे को नहीं है. अमरीकी जनरल एक से ज़ियादा बार कोरिया की लड़ाई में ऐसे काम कर चुके हैं जिसे बहुत से मुल्कों ने अच्छा नहीं समझा, जैसे 38 पड़ी लाइन को पार कर जाना या रूस या चीन की हद में बम गिराना. कोरिया में जब यूनो की हार होती है तो वह अमरीकियों की हार मानी जाती है, यूनो की नहीं. यूनो एक ऐसी संस्था है जो हार जीत से परे है.

बीमारी बम किसी और मुल्क के पास हैं या नहीं, यह पता नहीं. पर अमरीका के पास ज़रूर हैं. एटम बम की तरह बीमारी बमों के होने का अमरीका खुले मैदान दावा कर चुका है. इसलिये उसे लड़ाई जीतने के ख़ातिर बीमारी बम गिराने की सूझ जाय तो कोई बड़ी बात नहीं.

कहावत है कि सुई का फावड़ा बन जाता है, पर न कुछ का फावड़ा नहीं बना करता. चीन यह तो कर सकता है कि दस बीमारी बम गिराये जाते और वह सौ बताता या एक गिराता और वह दस कहता. पर यह ज़रा समझ से बाहर की बात है कि वह बिना बम गिरे ही बीमारी बम की बात कह डाले. हम यह मानते हैं कि लड़ाई में अनहोनी बातें भी कही जाती हैं पर आज कोरिया की लड़ाई इतने ज़ोरों पर नहीं है जो किसी को अनहोनी बात कहने की सूझे. आज तो सुलह की बातें चल रही हैं. ऐसी हालत में बेसिर पैर का झूट जल्दी पकड़ा जा सकता है. इसलिये आज बात बढ़ा कर कही जा सकती है. बे बात की बात नहीं कही जा सकती.

बीमारी बम की बात कहते ही कोरिया में तहलका शुरू हो गया और एक से ज़ियादा मुल्क के साइन्सदां फ़तवा दे चुके कि कोरिया पर बीमारी बम गिराये गये. पर अमरीका है कि झुटलाता चला आता है और सिर्फ़ इस बल पर कि यूनो में उसका बहुमत है. और कोई बात वहां ऐसी नहीं हो सकती जो उसकी शान को धक्का पहुंचाये.

अमरीका भले ही बीमारी बम गिराने से इन्कार करे और उसे ऐसा करना भी चाहिये. क्योंकि वह गिराने से

کوریا پر ایٹم بم گرانے کی دھمکی یونو نہیں دے سکتا کیونکہ نہ اُس کے پاس اپنی فوج ہے نہ اپنے ہتھیار. ایٹم بم گرانے کی دھمکی امریکہ ہی دے سکتا ہے کیونکہ اُس کے پاس اِتنے زیادہ ایٹم بم ہو گئے ہیں جو اپنے پڑ رہے ہیں. امریکہ کی اِس طرح کی دھمکی یونو کے لئے ہے تو گستاخی لیکن یونو برداشت کر لیتا ہے کیونکہ وہ آجکل اِسی طرح امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی بنا ہوا ہے؛ جس طرح لیگ آف نیشنس برطانیہ کے ہاتھ کی چیز تھی.

کوریا میں لڑائی جیتنے کی جتنی زیادہ فکر امریکہ کو ہے اُتنی کسی دوسرے کو نہیں ہے. امریکی جنرل ایک سے زیادہ بار کوریا کی لڑائی میں ایسے کام کر چکے ہیں جسے بہت سے ملکوں نے اچھا نہیں سمجھا' جیسے 38 پڑی لائن کو پار کر جانا یا روس یا چین کی حد میں بم گرانا. کوریا میں جب یونو کی ہار ہوتی ہے تو وہ امریکیوں کی ہار مانی جاتی ہے' یونو کی نہیں. یونو ایک ایسی سنستھا ہے جو ہار جیت سے پرے ہے.

بیماری بم کسی اور ملک کے پاس ہیں یا نہیں' یہ پتہ نہیں. پر امریکہ کے پاس ضرور ہیں. ایٹم بم کی طرح بیماری بموں کے ہونے کا امریکہ کھلے میدان دعوا کر چکا ہے. اِس لئے اُسے لڑائی جیتنے کے خاطر بیماری بم گرانے کی سوجھ جائے تو کوئی بڑی بات نہیں.

کہاوت ہے کہ سوئی کا پھاوڑا بن جاتا ہے' پر نہ کچھ کا پھاوڑا نہیں بنا کرتا. چین یہ تو کرسکتا تھا کہ دس بیماری بم گرائے جاتے اور وہ سو بتاتا یا ایک گرتا اور وہ دس کہتا. پر یہ ذرا سمجھ سے باہر کی بات ہے کہ وہ بنا بم گرے ہی بیماری بم کی بات کہہ ڈالے. ہم یہ مانتے ہیں کہ لڑائی میں انہونی باتیں بھی کہی جاتی ہیں. پر آج کوریا کی لڑائی اتنے زوروں پر نہیں ہے جو کسی کو انہونی بات کہنے کی سوجھے. آج تو صلح کی باتیں چل رہی ہیں. ایسی حالت میں بے سر پیر کا جھوٹ جلدی پکڑا جا سکتا ہے. اس لئے آج بات بڑھا کر کہی جاسکتی ہے' بے بات کی بات نہیں کہی جاسکتی.

بیماری بم کی بات کہتے ہی کوریا میں تہلکہ شروع ہوگیا اور ایک سے زیادہ ملک کے سائنسداں یہ فتوا دے چکے کہ کوریا پر بیماری بم گرائے گئے. پر امریکہ ہے کہ جھٹلاتا چلا آتا ہے اور صرف اِس بل پر کہ یونو میں اُس کا بہومت ہے. اور کوئی بات وہاں اِیسی نہیں ہوسکتی جو اُس کی شان کو دھکا پہونچائے.

امریکہ بھلے ہی بیماری بم گرانے سے اِنکار کرے اور اُسے ایسا کرنا بھی چاہئے. کیونکہ وہ گرانے سے

गांधी जी की आत्मा उस हिन्दू ब्राह्मन के लिये कितना एहसान मंद होगी जिसने उनको असंख्य बरसों के लिये हिन्दुस्तान का नहीं बल्कि सारी दुनिया का आदमी बना दिया. फिर जिसकी कृपा से मेरा नाम अपने सारे पत्रों में आ गया होता तो क्यों न एहसान मन्द होता ?

हिन्दुस्तान जितना आज आज़ाद है उतना अब से पहले कभी नहीं हुआ. और जितना आज बड़ा है उतना किसी की हकूमत में कभी बड़ा नहीं हुआ. हिन्दुस्तान की हर नारी, आज नर जितनी ही आज़ाद है. यह दूसरी बात है कि कुछ नारी और नर अपनी आज़ादी को समझते ही न हों या अगर समझते हों तो उससे काम लेना न जानते हों. आज की नारी की आज़ादी कुछ लोगों को खटक सकती है पर बहुत लोगों को बहुत सुख देती है. पर आज़ाद हिन्दुस्तान में बहुत लोगों के बहुत सुख का ख़याल रखना ही पड़ेगा.

हिन्दुस्तान एक नेशन बन गया है. जो अपने को हिन्दुस्तानी समझता है उस पर उसका तो दावा है. जो अपने को हिन्दुस्तानी समझता है पर उसका दावा नहीं हो सकता जो अपने आपको हिन्दू, मुस्लिम, सिख, जैन, पारसी और इसाई समझता है.

हिन्दुस्तानी होने के नाते किसी नर या नारी को यह हक़ हासिल है कि वह किसी अपने जानपहचान के लड़के या लड़की को शादी करने या न करने की सलाह दे. लेकिन हिन्दू मुसलमान की हैसियत से यह हक़ बिलकुल नहीं रह जाता और अगर कुछ रह जाता है तो उन पर जो अपने को हिन्दू या मुसलमान समझते हैं.

हमारा तो ख़याल है कि दिल्ली के मामले से हिन्दुस्तानियत को बढ़ने में मदद मिलेगी और हिन्दू मुसलमानियत का ज़ोर कम हो जायेगा.

4. 6. '52. —भगवानदीन

बीमारी बम

चीन का कहना है अमरीकी बमबारों ने कोरिया में और चीन की सरहद में फ़रवरी और मार्च के महीने में कई बार ऐसे बम गिराये जिनमें बीमारी के कीड़े थे और जिनसे ऐसी बीमारी फैल सकती थी जो बहुत आदमियों की जान ले लेती.

कोरिया में कहने के लिये तो यूनो की फ़ौजें लड़ रही हैं पर असल में वहां की कमान है अमरीकियों के हाथ में. जितने शौक़ से कोरिया में अमरीका लड़ रहा है उतने शौक़ से कोई दूसरा मुल्क नहीं लड़ रहा है. दूसरे मुल्क सिर्फ़ इस वजह से साथ दे रहे हैं कि वह यूनो में शामिल हैं और लड़ाई उसी यूनो की छेड़ी हुई समझी जाती है.

گاندھی جی کی آتما اُس ھندو براھمن کے لئے کتنا احسان مند ھوگی جس نے اُنکو اسنکھیہ برسوں کے لئے ھندستان کا نہیں بلکہ ساری دنیا کا آدمی بنا دیا . پھر جس کی کرپا سے میرا نام اپنے سارے پتروں میں آگیا ھوتا تو کیوں نہ احسانمند ھوتا ؟

ھندستان جتنا آج آزاد ھے اُتنا اب سے پہلے کبھی نہیں ھوا. اور جتنا آج بڑا ھے اُتنا کسی کی حکومت میں کبھی بڑا نہیں ھوا . ھندستان کی ھر ناری' آج نر جتنی ھی آزاد ھے . یہ دوسری بات ھے کہ کچھ ناری اور نر اپنی آزادی کو سمجھتے ھی نہ ھوں یا اگر سمجھتے ھوں تو اُس سے کام لینا نہ جانتے ھوں . آج کی ناری کی آزادی کچھ لوگوں کو کھٹک سکتی ھے پر بہت لوگوں کو بہت سکھ دیتی ھے . پر آزاد ھندستان میں بہت لوگوں کے بہت سکھ کا خیال رکھنا ھی پڑیگا .

ھندستان ایک نیشن بن گیا ھے. جو اپنے کو ھندستانی سمجھتا ھے اس پر اس کا تو دعوا ھے. جو اپنے کو ھندستانی سمجھتا ھے پر اُس کا دعوی نہیں ھوسکتا جو اپنے آپ کو ھندو' مسلم' سکھ' جین' پارسی اور عیسائی سمجھتا ھے .

ھندستانی ھونے کے ناتے کسی نر یا ناری کو یہ حق حاصل ھے کہ وہ کسی اپنے جان پہچان کے لڑکے یا لڑکی کو شادی کرنے یا نہ کرنے کی صلاح دے . لیکن ھندو مسلمان کی حیثیت سے یہ حق بالکل نہیں رہ جاتا اور اگر کچھ رہ جاتا ھے تو اُن پر جو اپنے کو ھندو یا مسلمان سمجھتے ھیں .

ھمارا تو خیال ھے کہ دلی کے معاملے سے ھندستانیت کو بڑھنے میں مدد ملیگی اور ھندو مسلمانیت کا زور کم ھوجائیگا .

—بھگوان دین 4 . 6 . '52

بیماری بم

چین کا کہنا ھے امریکی بمباروں نے کوریا میں اور چین کی سرحد میں فروری اور مارچ کے مہینے میں کئی بار ایسے بم گرائے جن میں بیماری کے کیڑے تھے اور جن سے ایسی بیماری پھیل سکتی تھی جو بہت آدمیوں کی جان لے لیتی .

کوریا میں کہنے کے لئے تو یونو کی فوجیں لڑ رھی ھیں پر اصل میں وھاں کی کمان ھے امریکیوں کے ھاتھ میں. جتنے شوق سے کوریا میں امریکہ لڑ رھا ھے اُتنے شوق سے کوئی دوسرا ملک نہیں لڑ رھا ھے . دوسرے ملک صرف اِس وجہ سے ساتھ دے رھے ھیں کہ وہ یونو میں شامل ھیں اور لڑائی اُسی یونو کی چھیڑی ھوئی سمجھی جاتی ھے .

होनी चाहिये. लेकिन हमारे पढ़ने वाले यह खूब समझ लें कि हम सिर्फ़ इस नियत से शोर मचाते कि कमबख्त ले दे कर दो चार काम ही तो हम लोगों के लिये बचे हैं और उसकी भी सारी वाहवाही गांधी टोपी वाले, कांगरेसी और कांगरेसी सरकार लूटे लिये जा रही है. जो काम हमारे हाथों होना चाहिये था वह इनके हाथों हुआ, हम कैसे देख सकते हैं.

या फिर हमने इस नियत से फ़िक़रे कसे होते जिस नियत से नटों के खेल में नटों का बुड्ढा उस्ताद हर खेल के बाद कह उठता है "तो भी कसर रह गई." "तो भी कसर रह गई."

हिन्दू लड़का मुसलमान लड़की शादी का तो बहुत कम ही शोर मचता है. पर कुछ दिनों से तो मुसलमान लड़का और हिन्दू लड़की की शादी का शोर भी कम हो गया है. ईसाई और पारसी भी हिन्दुओं की नज़र में रोटी बेटी व्यवहार के मामले में मुसलमानों के बराबर नहीं, कुछ कम समझे जाते हैं. पर ऐसी शादियां तो इस दिल्ली के मामले के पहले कई हो चुकीं. कभी शोर नहीं मचा. हमारे यहां जहां रुकमनी अरनाडेल मौजूद हैं और इन्द्रा फ़ीरोज़ मौजूद हैं, वहां अरुना आसफ़ अली और श्याम कुमारी खां भी मौजूद हैं. और अभी चार महीने गुज़रे हम फ़ातिमा लखमी चन्द के पति लखमी चन्द से मिले थे. पता चला था फ़ातिमा देवी अपने सास सुसर, नन्द भौजाई से ऐसी एक मेक हो गई हैं कि पता ही नहीं चलता कि उस घर में कोई मुसलमान या हिन्दू है. वहां तो सब हिन्दुस्तानी हैं. नाम से ही आप फ़ातिमा को मुसलमान और लखमी चन्द जी को जैन कह सकते हैं.

बम्बई में भी इसी सन 1952 में एक जैन लड़की ने ईसाई लड़के से शादी की है और एक जैन पत्र में भी लड़की के इस काम को बढ़ावा दिया गया है.

क्या यह सब शादियां इस बात का सबूत नहीं हैं कि हिन्दुस्तानियत छलांगे मारती हुई तेज़ी से आगे चली जा रही है. इसको जो रोकने की कोशिश करता है वह जी से रोकना नहीं चाहता, रोक कर दिखाने की वाह वाही लूटना चाहता है.

दिल्ली के मामले में काश कि मैं लड़की होता और ऐसा ही मामला उठा होता तो मैं अपने जी में बहुत खुश होता और अपने भावी पति को और भी ज़ियादा प्यार करने लगता; क्योंकि शादी के बाद मेरे पास अपनी शादी का ज़िकर करने के लिये एक कहानी होती, एक रोमान्स होता. मैं उन सबके लिये बड़ा एहसान मन्द होता जिन्होंने मेरे खातिर ऐसी बढ़िया ज़िन्दा कहानी खड़ी कर दी.

ہونی چاہئے۔ لیکن ہمارے پڑھنے والے یہ خوب سمجھ لیں کہ ہم صرف اِس نیت سے شور مچاتے کہ کمبخت لے دے کر دو چار کام ہی تو ہم لوگوں کے لئے بچے ہیں اور اُس کی بھی ساری واہ واہی گاندھی ٹوپی والے، کانگریسی اور کانگریسی سرکار لوٹے لئے جا رہی ہے۔ جو کام ہمارے ہاتھوں ہونا چاہئے تھا وہ اِن کے ہاتھوں ہوا، ہم کیسے دیکھ سکتے ہیں۔

یا پھر ہم نے اِس نیت سے فقرے کسے ہوتے کہ جس نیت سے نٹوں کے کھیل میں نٹوں کا بڈھا استاد ہر کھیل کے بعد کہہ اُٹھتا ہے "تو بھی کسر رہ گئی' تو بھی کسر رہ گئی۔"

ہندو لڑکا مسلمان لڑکی کی شادی کا تو بہت کم ہی شور مچتا ہے۔ پر کچھ دنوں سے تو مسلمان لڑکا اور ہندو لڑکی کی شادی کا شور بھی کم ہوگیا ہے۔ عیسائی اور پارسی بھی ہندوؤں کی نظر میں روٹی بیٹی بیوہار کے معاملے میں مسلمانوں کے برابر نہیں' کچھ کم سمجھے جاتے ہیں۔ پر ایسی شادیاں تو اس دلی کے معاملے کے پہلے کئی ہو چکیں۔ کبھی شور نہیں مچا۔ ہمارے یہاں جہاں رکمنی ارناڈیل موجود ہیں اور اندرا فیروز موجود ہیں' وہاں ارونا آصف علی اور شیام کماری خاں بھی موجود ہیں۔ اور ابھی چار مہینے بھی نہیں گذرے ہم فاطمہ لکھمی چند کے پتی لکھمی چند سے ملے تھے۔ پتہ چلا تھا فاطمہ دیوی اپنے ساس سسر' نند بھوجائی سے ایسی ایک میک ہوگئی ہیں کہ پتہ ہی نہیں چلتا کہ اس گھر میں کوئی مسلمان یا ہندو ہے۔ وہاں تو سب ہندستانی ہیں۔ نام سے ہی آپ فاطمہ کو مسلمان اور لکھمی چند کو جین کہہ سکتے ہیں۔

بمبئی میں بھی اِسی سن 1952 میں ایک جین لڑکی نے عیسائی لڑکے سے شادی کی ہے اور ایک جین پتر میں بھی لڑکی کے اِس کام کو بڑھاوا دیا گیا ہے۔

کیا یہ سب شادیاں اس بات کا ثبوت نہیں ہیں کہ ہندستانیت چھلانگیں مارتی ہوئی تیزی سے آگے چلی جا رہی ہے۔ اس کو جو روکنے کی کوشش کرتا ہے وہ جی سے روکنا نہیں چاہتا' روک کر دکھانے کی واہ واہی لوٹنا چاہتا ہے۔

دلی کے معاملے میں کاش کہ میں لڑکی ہوتا اور ایسا ہی معاملہ اُٹھا ہوتا تو میں اپنے جی میں بہت خوش ہوتا اور اپنے بھاوی پتی کو اور بھی زیادہ پیار کرنے لگتا؛ کیونکہ شادی کے بعد میرے پاس اپنی شادی کا ذکر کرنے کے لئے ایک کہانی ہوتی' ایک رومانس ہوتا۔ میں اِن سب کے لئے بڑا احسان مند ہوتا جنہوں نے میری خاطر ایسی بڑھیا زندہ کہانی کھڑی کردی۔

…मे आपको हिन्दू मुसलमान बहुत ज़ियादा मानती थी … हिन्दुस्तानी बिलकुल नहीं. हां, जब सन 1921 में …धी जी ने अंगरेज़ी हकूमत के पेड़ को सारे हिन्दुस्तानियों साथ मिल कर जड़ से हिला दिया तब जनता अपने …पको हिन्दुस्तानी समझने लगी और हिन्दू मुसलमान …मझना भूल गई. धीरे धीरे हिन्दुस्तानियत का ख़याल … होता गया. बिल्कुल कभी नहीं मिटा, हिन्दू मुसलमा-…त बढ़ती रही पर पूरी पूरी कभी नहीं छा पाई. …दुस्तान के आज़ाद होने पर हिन्दुस्तानियत साठ सत्तर …दी हो गई और हिन्दू मुसलमानियत तीस चालीस सदी रह गई.

सन 1952 के चुनाव में सन 1921 की झलक आई … हिन्दुस्तानियत 95 फ़ी सदी तक पहुँच गई. आज 90 फ़ी सदी से कम न होगी. जो हिन्दू मुसलमानियत …ज दिखाई देती है वह ऊपरी है अन्दरूनी नहीं. …दरूनी वाली दस फ़ीसदी तो मुर्झाई हुई हिन्दुस्तान के … उधर कोनों में दम तोड़ रही है.

दिल्ली में जो फुलझड़ी खिली वह हमारी राय में सौ …दी हिन्दुस्तानी थी. और इसी बूते पर हम कृपलानी …से इस बात में हमराह हैं कि इसके लिये मामूली क़ानून …ी था. पर इसे छोड़िये, इससे हमें क्या लेना देना.

आज हिन्दुस्तान की जनता हर चीज़ को हिन्दुस्तानी …गाह से देखती है. अगर ज़रा कांगरेस या कांगरेसी …कार की निगाह हिन्दुस्तानियत की तरफ़ गई होती तो …ज हिन्दू मुसलमानियत सुनने के लिये भी बहुत कम …ती.

…चीन में एक नमाज़ पढ़ते हुए आदमी से नमाज़ पढ़ने …बाद शायद कुमारप्पा जी ने या पंडित सुन्दरलाल जी …छा कि आपका धर्म क्या है उसने जवाब दिया, बौद्ध. …से फिर पूछा गया कि आप यह मस्जिद में नमाज़ क्यों … हैं. तो बोला क्यों क्या बुराई है ? उनसे कहा नमाज़ … मुसलमान पढ़ते हैं. वह बोला मैं भी तो मुसलमान हूं. … पूछा गया अभी तो आपने कहा कि आपका धर्म … हैं. तो वह बोले. हां, बौद्ध तो मेरा बुनियादी धर्म है. मेरा फ़ार्मल धर्म यानी रोज़मर्रा का धर्म तो इस्लाम

सन 1952 का हिन्दुस्तान न सन 1947 का भड़काया … हिन्दुस्तान है और न सन 1858 से 1919 तक का …ज़ों का बहकाया हुआ हिन्दुस्तान.

दिल्ली में जो शादी होने जा रही थी और जिसके … एक ऐसी बेढंगी इमारत खड़ी हो गई जिसे अख़बार …ले दौड़े. उस मौक़े पर अगर हम भी दिल्ली में होते …म भी वहां शोर मचाते कि ऐसी शादी हरगिज़ नहीं

اپنے آپ کو ہندو مسلمان بہت زیادہ مانتی تھی اور ہندستانی بالکل نہیں. ہاں، جب سن 1921 میں گاندھی جی نے انگریزی حکومت کے پیڑ کو سارے ہندستانیوں کے ساتھ مل کر جڑ سے ہلا دیا تب جنتا اپنے آپ کو ہندستانی سمجھنے لگی اور ہندو مسلمان سمجھنا بھول گئی. دھیرے دھیرے ہندستانیت کا خیال کم ہوتا گیا. بالکل کبھی نہیں مٹا، ہندو مسلمانیت بڑھتی رہی پر پوری پوری کبھی نہیں چھا پائی.

ہندستان کے آزاد ہونے پر ہندستانیت ساٹھ ستر فی صدی ہوگئی اور ہندو مسلمانیت تیس چالیس فی صدی رہ گئی.

سن 1952 کے چناؤ میں سن 1921 کی جھلک آئی اور ہندستانیت 95 فی صدی تک پہونچ گئی. آج بھی 90 فی صدی سے کم نہ ہوگی. جو ہندو مسلمانیت آج دکھائی دیتی ہے وہ اوپری ہے اندرونی نہیں. اندرونی والی دس فی صدی تو مرجھائی ہوئی ہندستان کے اِدھر اُدھر کونوں میں دم توڑ رہی ہے.

دلی میں جو پھلجھڑی کھلی وہ ہماری رائے میں سو فی صدی ہندستانی تھی. اور اِسی بوتے پر ہم کرپلانی جی سے اِس بات میں ہمراہ ہیں کہ اِس کے لئے معمولی قانون کافی تھا. پر اِسے چھوڑئیے، اِس سے ہمیں کیا لینا دینا.

آج ہندستان کی جنتا ہر چیز کو ہندستانی نگاہ سے دیکھتی ہے. اگر ذرا کانگریس یا کانگریسی سرکار کی نگاہ ہندستانیت کی طرف گئی ہوتی تو آج ہندو مسلمانیت سننے کے لئے بھی بہت کم ملتی.

چین میں ایک نماز پڑھتے ہوئے آدمی سے نماز پڑھنے کے بعد شاید کمارپا جی نے یا پنڈت سندر لال جی نے پوچھا کہ آپ کا دھرم کیا ہے. اُس نے جواب دیا، بودھ. اُس سے پھر پوچھا گیا کہ آپ یہ مسجد میں نماز کیوں پڑھتے ہیں. تو بولے کیوں کیا برائی ہے؟ ان سے کہا نماز تو مسلمان پڑھتے ہیں. وہ بولا میں بھی تو مسلمان ہوں. اُن سے پوچھا گیا ابھی تو آپ نے کہا کہ آپ دھرم بودھ ہیں. تو وہ بولے. ہاں، بودھ تو میرا بنیادی دھرم ہے. پر میرا فارمل دھرم یعنی روز مرہ کا دھرم تو اسلام ہے.

سن 1952 کا ہندستان نہ سن 1947 کا بھڑکایا ہوا ہندستان ہے اور نہ سن 1858 سے 1919 تک کا انگریزوں کا بہکایا ہوا ہندستان.

دلی میں جو شادی ہونے جا رہی تھی اور جس کے اوپر ایک ایسی بے ڈھنگی عمارت کھڑی ہوگئی جسے اخبار والے لے دوڑے. اُس موقع پر اگر ہم بھی دلی میں ہوتے تو ہم بھی وہیں شور مچاتے کہ ایسی شادی ہرگز نہیں

हमारी राय / ہماری رائے

हिन्दू-मुस्लिम शादी

पढ़ने वाले यह न समझ लें कि हम उस शादी पर कोई राय ज़ाहिर कर रहे हैं जिसको लेकर हाल ही में कुछ मनचलों ने दिल्ली में एक तूफ़ान खड़ा कर दिया और तूफ़ान उठने पर कुछ सिरफिरों ने मनमानी कर डाली. क्योंकि यह मामला तो अदालत के सामने है, उसे अदालत जाने और मुद्दई मुद्दालय.

हम तो किसी और नज़र से ही हिन्दू मुस्लिम शादी को देखते हैं और उस नज़र से हमारे अन्दर क्या क्या ख़याल घूम जाते हैं उन्हीं को क़लम बन्द करना चाहते हैं.

दो साल भी नहीं हुये हम इन्दौर के एक प्लेटफ़ार्म से बोल रहे थे. वहां हमने यही बात कह दी थी कि अब हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया. अब ख़ूब हिन्दू मुस्लिम शादियां होनी चाहियें.

हमारी इस बात पर भरी सभा में एक जवान उठ खड़ा हुआ और सवाल पूछ बैठा कि जब हिन्दू मुसलमान की शादियां होने लगेंगी तब क्या होगा. हमने सीधा सा जवाब दे दिया—तब बच्चे होंगे और ज़रूर ऐसे ही बच्चे होंगे जैसे हिन्दू हिन्दू में और मुसलमान मुसलमान में, शादी होने पर होते हैं. सारी सभा हंस पड़ी और बात हवा में उड़ गई.

एक आर्य समाजी इसी सिलसिले में खान पान की कुछ बात लेकर आगे बढ़े लेकिन वह बात हिन्दू मुस्लिम शादी से सम्बन्ध नहीं रखती, इसलिये हम छोड़े देते हैं.

हिन्दू मुस्लिम शादी से अगर यह मतलब है कि लड़का हिन्दू हो और लड़की मुसलमान तब तो हिन्दुस्तान में बहुत कम मन चले और सिर फिरे मिलेंगे जो ऊधम मचाने और सिर फोड़ने को तैयार हों. और अगर ऐसे कुछ निकल भी आये तो उन्हें हिन्दुस्तान की आज़ाद जनता पुलिस और अदालत की मदद के बग़ैर ही क़ाबू में कर लेगी.

हिन्दुस्तान की जनता है तो वही जनता, जो तब थी जब अंगरेज़ों का राज था. अंगरेज़ों के राज में जनता

ھندو مسلم شادی

پڑھنے والے یہ نہ سمجھ لیں کہ ہم اس شادی پر کوئی رائے ظاہر کر رہے ہیں جس کو لے کر حال ہی میں کچھ من چلوں نے دلی میں ایک طوفان کھڑا کر دیا اور طوفان اٹھنے پر کچھ سر پھروں نے من مانی کر ڈالی. کیونکہ یہ معاملہ تو عدالت کے سامنے ہے، اسے عدالت جانے اور مدعی مدعا علیہ.

ہم تو کسی اور نظر سے ہی ہندو مسلم شادی کو دیکھتے ہیں اور اس نظر سے ہمارے اندر کیا کیا خیال گھوم جاتے ہیں انہیں کو قلم بند کرنا چاہتے ہیں.

دو سال بھی نہیں ہوئے ہم اندور کے ایک پلیٹ فارم سے بول رہے تھے. وہاں ہم نے یہی بات کہہ دی تھی کہ اب ہندستان آزاد ہوگیا. اب خوب ہندو مسلم شادیاں ہونی چاہئیں.

ہماری اس بات پر بھری سبھا میں ایک جوان اٹھ کھڑا ہوا اور سوال پوچھ بیٹھا کہ جب ہندو مسلمان کی شادیاں ہونے لگیں گی تب کیا ہوگا. ہم نے سیدھا سا جواب دے دیا—تب بچے ہونگے اور ضرور ایسے ہی بچے ہونگے جیسے ہندو ہندو میں اور مسلمان مسلمان میں، شادی ہونے پر ہوتے ہیں. ساری سبھا ہنس پڑی اور بات ہوا میں اڑ گئی.

ایک آریہ سماجی اسی سلسلے میں کھان پان کی کچھ بات لے کر آگے بڑھے لیکن وہ بات ہندو مسلم شادی سے سمبندھ نہیں رکھتی، اسلئے ہم چھوڑ دیتے ہیں.

ہندو مسلم شادی سے اگر یہ مطلب ہے کہ لڑکا ہندو ہو اور لڑکی مسلمان تب تو ہندستان میں بہت کم من چلے اور سر پھرے ملیں گے جو اودھم مچانے اور سر پھوڑنے کو تیار ہوں اور اگر ایسے کچھ نکل بھی آئے تو انہیں ہندستان کی آزاد جنتا پولیس اور عدالت کی مدد کے بغیر ہی قابو میں کر لے گی.

ہندستان کی جنتا ہے تو وہی جنتا، جو تب تھی جب انگریزوں کا راج تھا. انگریزوں کے راج میں جنتا

. भूमि-दान-यज्ञ जनता का आन्दोलन है—फ़ैज़ाबाद नोबा जी का एलान. मध्य भारत में पानी की कमी दिन बढ़ती जा रही है.

5. मिस्र नये अंगरेज़ी फ़ारमूले को मानने से इन्कार गा. उत्तर प्रदेश से ज़मींदारी ख़त्म क़ानून को सुप्रीम त ने जायज़ ठहराया. सोशलिस्टों ने पूना में सत्याग्रह किया.

. राजेन्द्र बाबू हिन्दुस्तान से राज पति चुने गये. ाक्टर मेरिया मान्टेसरी 81 साल की उमर में बसीं. मदरास असेम्बली में डेमोक्रेटिक फ़्रन्ट के ों ने 'वाकआउट' किया.

7. पंडित नेहरू ने, नई दिल्ली में डेवलपमेंट या कमिशनरों की बैठक में भाशन दिया.

8. डाक्टर मुसादिक़ तेल के मसले पर दूसरे देशों त चीत कर रहे हैं. ने मिस्टर एडेन के सुझावों को रद्द कर दिया. ियर और इन्दौर दोनों मध्य भारत की राजधानी —नेहरू का फ़ैसला.

. मैं कम्यूनिस्टों का दुश्मन नम्बर एक हूँ—राजा : एलान. हिन्द सरकार बम्बई की सरकार को सस्ते पर अनाज देगी.

10. लड़ाई 1960 से पहले ज़रूर होगी—अमरीकी चीफ़ का एलान. हिन्दुस्तान और अमरीका के द क़रीब क़रीब एक से हैं—अमरीका में हिन्दुस्तानी त सेन का एलान.

11. पंडित नेहरू कांगरेस पारटी के नेता चुने गये. सामने दो ही चीज़ें हैं—गांधीवाद या मार्क्सवाद— र्य कृपलानी.

12. मिस्र ने इंगलिस्तान के फ़ारमूले को रद्द कर श्री को मो-जो ने बीमारी बम्बारी के और सबूत ये.

. राजेन्द्र बाबू ने अपने ओहदे की शपथ ली. नेहरू ने नई केबिनेट बनाई.

14. पच्छिमी ताक़तों ने 'जरमनी' के सवाल पर ड़ों की कानफ़रेन्स बुलाने का इरादा किया. टियू- में हालात फिर ख़तरनाक. ज़मींदारी प्रथा उत्तर में पहली जुलाई से ख़त्म—पंत जी का बयान.

15. राजपति ट्रुमैन ने कहा कि अगर अमरीका के ज़त या विदेशी मदद प्रोग्राम" में कटौती की गई से "ठंडी लड़ाई" में हमारे हार जाने का ख़तरा है. आज़ाद कांगरेस पारटी के नायब लीडर चुने गये. प्रदेश के दाल पर पाबन्दी वाले क़ानून को सुप्रीम ने [illegible] कर दिया.

بیان. بھومی دان یگیہ جنتا کا آندولن ہے—فیض آباد میں ونوبا جی کا اعلان . مدھیہ بھارت میں پانی کی کمی دن دن بڑھتی جا رہی ہے .

5. مصر نئے انگریزی فارمولے کو ماننے سے انکار کر دے گا . اُتر پردیش کے زمینداری ختم قانون کو سپریم عدالت نے جائز ٹھہرایا. سوشلسٹوں نے پونا میں ستیاگرہ شروع کیا .

6. راجیندر بابو ہندستان کے راج پتی چنے گئے . ڈاکٹر میریا مانٹیسری 81 سال کی عمر میں چل بسیں. مدراس اسمبلی میں ڈیموکریٹک فرنٹ کے ممبروں نے 'واک آوٹ' کیا .

7. پنڈت نہرو نے' نئی دلی میں ڈیولپ منٹ یا وکاس کمشنروں کی بیٹھک میں بھاشن دیا .

8. ڈاکٹر مصادق تیل کے مسئلے پر دوسرے دیشوں سے بات چیت کر رہے ہیں . مصر نے مسٹر ایڈین کے سجھاؤ کو رد کردیا. گوالیار اور اندور دونوں مدھیہ بھارت کی راجدھانی رہیں گے—نہرو کا فیصلہ .

9. میں کمیونسٹوں کا دشمن نمبر ایک ہوں—راجاجی کا اعلان . ہند سرکار بمبئی کی سرکار کو سستے داموں پر اناج دے گی .

10. لڑائی 1960 سے پہلے ضرور ہوگی—امریکی نیول چیف کا اعلان . ہندستان اور امریکہ کے مقصد قریب قریب ایک سے ہیں—امریکہ میں ہندستانی راج دوت سین کا اعلان .

11. پنڈت نہرو کانگریس پارٹی کے نیتا چنے گئے . دیش کے سامنے دو ہی چیزیں ہیں—گاندھی واد یا مارکس واد—آچاریہ کرپلانی .

12. مصر نے انگلستان کے فارمولے کو رد کردیا . شری کو مو جو نے بیماری بمباری کے اور ثبوت پیش کئے .

13. راجیندر بابو نے اپنے عہدے کی شپتھ لی. پنڈت نہرو نے نئی کیبنٹ بنائی .

14. پچھمی طاقتوں نے 'جرمنی' کے سوال پر چار بڑوں کی کانفرنس بلانے کا ارادہ کیا. ٹیونیشیا میں حالات پھر خطرناک . زمینداری پرتھا اُتر پردیش میں پہلی جولائی سے ختم—پنت جی کا بیان .

15. راج پتی ٹرومین نے کہا کہ اگر امریکہ کے "حفاظت یا ودیشی مدد پروگرام" میں کٹوتی کی گئی تو اُس سے "ٹھنڈی لڑائی" میں ہمارے ہار جانے کا خطرہ ہے . مولانا آزاد کانگریس پارٹی کے نائب لیڈر چنے گئے . اُتر پردیش کے دال پر پابندی والے قانون کو سپریم عدالت نے خارج کردیا .

25. इंगलिस्तान और मिस्र के बीच बात चीत फ़ेल हो गई. अमरीका ने सरकारी तौर पर दूसरी बड़ी जंग के बन्द होने का एलान किया. पुलिस ने गोरखपुर में गोली चलाई.

26. कोरिया के मामले को सुलझाने के लिये पांच उसूल बनाये गये. हिन्दी भाशा को लोगों पर ज़बरदस्ती न थोपा जाय—मद्रास के गवरनर श्री श्री प्रकाश की स्पीच.

27. फ़ारमूसा की सरकार जापान से एक नया माहेदा करेगी. सरमायादारों को अपना लोभ कम करना चाहिये—इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांगरेस के सद्र का एलान.

28. अंगरेज़ी सरकार ने चीन सरकार से ब्योपार करने की बात चीत शुरू की. लंका में सत्याग्रह शुरू हुआ—41 आदमी गिरफ़्तार. गोरखपुर रेलवे कर्मचारी अपने काम पर वापस आये. हैदराबाद, राजस्थान, मध्य भारत में हिन्द सरकार ने सलाहकार मुक़र्रर किये.

29. 'ग़ैर मुल्कों' के लोगों को शहरी हक़ नहीं दिये जायेंगे—लंका के बड़े वज़ीर का एलान.

30. 'ब्योपारी मनमुटाव' आज़ाद मुल्कों के बीच कम होना चाहिये—एचेसन का बयान. कोलम्बो योजना की कन्सलटेटिव कमेटी की पहली सालाना रिपोर्ट अख़बार वालों को दी गई. हिन्दुस्तान से एक कलचरल डेलीगेशन पीकिंग पहुँचा.

मई.

1. 'मई दिन' मास्को, पीकिंग और भारत में मनाया गया. टोकियो में दंगा—कम्युनिस्टों ने अमन संधि के ख़िलाफ़ नाराज़गी ज़ाहिर की. चीन हिन्दुस्तान को चावल देगा.

2. भारत अमरीकी फ़र्टीलाइज़र समझौता नई दिल्ली में हुआ. बिहार भूमि सुधार क़ानून सुप्रीम अदालत ने जायज़ क़रार दे दिया. राजपति के चुनाव के लिये देश भर में वोट पड़े. देवरिया ज़िले में साढ़े आठ लाख गांव वाले अनाज की कमी से परेशान.

3. मिस्र को पाकिस्तान के 'मुस्लिम ब्लाक' से कोई दिलचस्पी नहीं. लड़ाई का कोई ख़तरा नहीं है—चर्चिल का बयान. देवरिया ज़िले को 'क़हत का इलाक़ा' क़रार दे देना चाहिये—इस सिलसिले में पन्त जी को मेमोरन्डम दिया गया. लंका के सत्याग्रह को हिन्द सरकार ने ठीक बताया.

4. पाकिस्तान भारत के लिये पास पोर्ट का क़ायदा चालू करेगा. अगर पंच साला योजना ठीक से अमल में लाई जाय तो फिर 'कन्ट्रोल' की ज़रूरत न रहेगी—श्री नन्दा का

.25 انگلستان اور مصر کے بیچ بات چیت فیل ہوگئی . امریکہ نے سرکاری طور پر دوسری بڑی جنگ کے بند ہونے کا اعلان کیا . پولیس نے گورکھپور میں گولی چلائی .

.26 کوریا کے معاملے کو سلجھانے کے لئے پانچ اُصول بنائے گئے . ہندی بھاشا کو لوگوں پر زبردستی نہ تھوپا جائے—مدراس کے گورنر شری شری پرکاش کی اسپیچ .

.27 فارموسا کی سرکار جاپان سے ایک نیا معاہدہ کرے گی . سرمایہ داروں کو اپنا لوبھ کم کر دینا چاہئے—انڈین نیشنل ٹریڈیونین کانگریس کے صدر کا اعلان .

.28 انگریزی سرکار نے چین سرکار سے بیوپار کرنے کی بات چیت شروع کی . لنکا میں ستیاگرہ شروع ہوا—41 آدمی گرفتار . گورکھپور ریلوے کرمچاری اپنے کام پر واپس آئے . حیدرآباد، راجستھان، مدھیہ بھارت میں ہند سرکار نے صلاح کار مقرر کئے .

.29 'غیر ملکوں' کے لوگوں کو شہری حق نہیں دئے جائیں گے—لنکا کے بڑے وزیر کا اعلان .

.30 'بیوپاری من موٹاؤ' آزاد ملکوں کے بیچ کم ہو جانا چاہئے—اچے سن کا بیان. کولمبو یوجنا کی کنسلٹیٹو کمیٹی کی پہلی سالانہ رپورٹ اخبار والوں کو دی گئی. ہندستان سے ایک کلچرل ڈیلی گیشن پیکنگ پہونچا .

مئی .

.1 'مئی دن' ماسکو' پیکنگ اور بھارت میں منایا گیا . ٹوکیو میں دنگا—کمیونسٹوں نے امن سندھی کے خلاف ناراضگی ظاہر کی. چین ہندستان کو چاول دے گا .

.2 بھارت امریکی فرٹیلائز سمجھوتا نئی دلی میں ہوا. بہار بھومی سدھار قانون سپریم عدالت نے جائز قرار دے دیا . راج پتی کے چناؤ کے لئے دیش بھر میں ووٹ پڑے. دیوریا ضلع میں ساڑھے آٹھ لاکھ گاؤں والے اناج کی کمی سے پریشان .

.3 مصر کو پاکستان کے 'مسلم بلاک' سے کوئی دلچسپی نہیں . لڑائی کا کوئی خطرہ نہیں ہے—چرچل کا بیان . دیوریا ضلعے کو 'قحط کا علاقہ' قرار دے دینا چاہئے—اِس سلسلے میں پنت جی کو میمورنڈم دیا گیا. لنکا کے ستیاگرہ کو ہند سرکار نے ٹھیک بتایا .

.4 پاکستان بھارت کے لئے پاسپورٹ کا قاعدہ چالو کرے گا. اگر پنچ سالہ یوجنا ٹھیک سے عمل میں لائی جائے تو پھر کنٹرول کی ضرورت نہ رہے گی—شری نندا کا

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

अप्रैल.

16. दूधी और संगरौली में (ज़िला मिर्ज़ापुर) अनाज की कमी, चार लाख आदमियों पर भयानक असर.

17. कांगरेस के बड़े मंत्री ने सूबों की कांगरेस कमेटियों के नाम सरकुलर जारी किये जिसमें नया ख़ून शामिल करने पर ज़ोर दिया.

18. टोकियो में एक लाख से ज़ियादा आदमियों ने अपनी सरकार की 'नाजायज़ हरकतों' के ख़िलाफ़ हड़ताल की. पेप्सू में कांगरेस मिन्सट्री हार गई. 'यूनाएटेड फ़्रन्ट' नई सरकार क़ायम करेगा.

19. अंगरेज़ी फ़ौजों ने बग़ैर इजाज़त कोरिया में जापान की हद के आस पास से हमला किया.

20. अमरीकन कांगरेस में एक रिपब्लिक नुमायन्दे ने कहा कि राष्ट्र पति ट्रूमैन के अमल पर उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई की जा सकती है या नहीं इसकी जांच पड़ताल के लिये एक कमेटी बनाई जाय. लंका शायर में बे रोज़गारी बढ़ रही है.

21. जापान को अपने बचाव की ख़ातिर हथियार बन्दी पूरी तरह करनी चाहिये—जनरल रिजवे का एलान. कोरिया का झगड़ा तय होने की कोई उम्मीद नहीं है पर यूनो कम्यूनिस्टों को हरा सकता है—रिजवे का बयान.

22. सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स कूच कर गये. लंका की सरकार ने, हिन्दुस्तानियों को वोट देने के मामले पर, हिन्द सरकार के सुझाव को ना मंज़ूर कर दिया. देवरिया में अनाज की कमी पर असेम्बली और पारलियामेंट के मेम्बरों ने स्तीफ़ा दिया.

23. शोलापुर में पचास फ़ी सदी आदमी जो हैन्डलूम पर काम करते थे बेकार बैठे हैं. मध्य भारत में अनाज की भारी कमी—आदिवासी लोग पत्तियां और दूसरी चीज़ें इस्तेमाल कर रहे हैं.

24. इलाहाबाद के मशहूर पत्रकार श्री प्रमोद कुमार सेन गुज़र गये. डाक्टर ग्राहम ने कश्मीर के मसले पर यूनो कौंसिल में अपनी रिपोर्ट पेश की.

اپریل۔

16. دودھی اور سنگرولی (ضلع مرزاپور) میں اناج کی کمی، چار لاکھ آدمیوں پر بھیانک اثر.

17. کانگریس کے بڑے منتری نے صوبوں کی کانگریس کمیٹیوں کے نام سرکولر جاری کئے جس میں نیا خون شامل کرنے پر زور دیا .

18. ٹوکیو میں ایک لاکھ سے زیادہ آدمیوں نے اپنی سرکار کی 'ناجائز حرکتوں' کے خلاف ہڑتال کی . پیپسو میں کانگریس منسٹری ہار گئی . 'یونائٹڈ فرنٹ' نئی سرکار قائم کرے گا .

19. انگریزی فوجوں نے بغیر اجازت کوریا میں جاپان کی حد کے آس پاس سے حملہ کیا .

20. امریکن کانگریس میں ایک ریپبلک نمائندے نے کہا کہ راشٹرپتی ٹرومین کے عمل پر انکے خلاف کاروائی کی جا سکتی ہے یا نہیں اسکی جانچ پڑتال کے لئے ایک کمیٹی بنائی جائے. لنکا شائر میں بے روزگاری بڑھ رہی ہے.

21. جاپان کو اپنے بچاؤ کی خاطر ہتھیار بندی پوری طرح کرنی چاہئے—جنرل رجوے کا اعلان . کوریا کا جھگڑا طے ہونے کی کوئی اُمید نہیں ہے پر یونو کمیونسٹوں کو ہرا سکتا ہے—رجوے کا بیان .

22. سر اسٹیفرڈ کرپس کوچ کر گئے . لنکا کی سرکار نے، ہندستانیوں کو ووٹ دینے کے معاملے پر، ہند سرکار کے سجھاؤ کو نامنظور کر دیا . دیوریا میں اناج کی کمی پر اسمبلی اور پارلیامنٹ کے ممبروں نے استعفا دیا .

23. شولاپور میں پچاس فی صدی آدمی جو ہینڈلوم پر کام کرتے تھے بیکار بیٹھے ہیں . مدھیہ بھارت میں اناج کی بھاری کمی—آدی واسی لوگ پتیاں اور دوسری چیزیں استعمال کر رہے ہیں .

24. الہ آباد کے مشہور پترکار شری پرمود کمار سین گزر گئے . ڈاکٹر گراہم نے کشمیر کے مسئلے پر یونو کی کونسل میں اپنی رپورٹ پیش کی .

और किताबें

हिन्दी

1. हमारे आराध्य—लेखक बनारसी दास चतुर्वेदी; प्रकाशक, अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भारतीय ज्ञान पीठ, पोस्ट बाक्स नम्बर 48, बनारस; पहला एडीशन, सफ़े 260; दाम तीन रुपये, मार्च 1952.

2. भारतीय ज्योतिष—लेखक नेमी चन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य; प्रकाशक—अयोध्या प्रसाद गोयलीय; भारतीय ज्ञान पीठ, पोस्ट बाकस नम्बर 48, बनारस; पहला एडीशन; सफ़े 598; अप्रैल 1952; दाम 6 रुपये.

3. अहिंसा वाणी—सम्पादक कामता प्रसाद जैन; छापने वाले, दी इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लिमिटेड, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद; सफ़े 53; दाम दस आने.

4. तारा—लेखक ई. कज़ाकविच; अनुवादक; रणबीर सक्सेना; निकालने वाले-जन साहित्य सदन, 23-24 जेल रोड, इन्दौर; सफ़े 120; दाम दो रुपये.

5. बापू राज पत्रिका—सम्पादिका मीरा बहिन; पशु लोक, डाक खाना रिशी केश, देहरादून; सफ़े 16; दाम तीन आना; छमाही चन्दा एक रुपया.

6. सर्वोदय अर्थ शास्त्र लेखक—भगवान दास केला; निकालने वाले; भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 350; दाम चार रुपये.

7. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था—लेखक—जवाहिरलाल जैन; निकालने वाले—भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 127; दाम डेढ़ रुपया.

8. हमारा अर्थशास्त्र कैसा हो ? सम्पादक—भगवान दास केला; निकालने वाले; भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद; सफ़े 42; दाम चार आना.

अंगरेज़ी

1. कंट्रोल्स-एस्टडी—निकालने वाले फ़ेडरेशन आफ़ इन्डियन चेम्बर्स आफ़ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्री; 28, फ़रोज़ शाह रोड, नई दिल्ली-1. सफ़े 98.

2. सिल्वर जुबली सोविनर—निकालने वाले, फ़ेडरेशन आफ़ इन्डियन चेम्बर्स आफ़ कामर्स एन्ड इन्डस्ट्री (1927-51) 28 फ़ीरोज़ शाह रोड, नई दिल्ली 1.

उरदू

इख़लाक़ी समाजियात—लेखक—डाक्टर जाफ़र हुसैन, निकालने वाले, अंजुमन-तरक़्क़ी उरदू (हिन्द) अलीगढ़, जनवरी 1952, सफ़े 238; दाम चार रुपये आठ आना.

اور کتابیں

ہندی

1. ہمارے آرادھیہ—لیکھک بنارسی داس چترویدی؛ پرکاشک، ایودھیا پرساد گوئیلئہ؛ بھارتیہ گیان پیٹھ، پوسٹ باکس نمبر 48، بنارس؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 260؛ دام تین روپئے، مارچ 1952 .

2. بھارتیہ جوتش—لیکھک نیمی چندر شاستری جوتش آچاریہ؛ پرکاشک—ایودھیا پرساد گوئیلئہ؛ بھارتیہ گیان پیٹھ، پوسٹ باکس نمبر 48، بنارس؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 598، اپریل 1952؛ دام چھ روپئے .

3. اہنساوانی—سمپادک، کامتا پرساد جین؛ چھاپنے والے، دی الہ‌آباد بلاک ورکس لمیٹڈ، زیرو روڈ الہ‌آباد؛ صفحے 53. دام دس آنے .

4. تارا—لیکھک ای . کزا کوچ؛ انوادک—رن‌ویر سکسینہ؛ نکالنے والے—جن ساہتیہ سدن، 23-24 جیل روڈ، اندور؛ صفحے 120؛ دام دو روپئے .

5. باپو راج پتریکا سمپادکا—میرا بہن؛ پشو لوک، ڈاکخانہ رشی کیش، دہرادون؛ صفحے 16؛ دام تین آنہ؛ چھ ماہی چندہ ایک روپیہ .

6. سروودے ارتھ شاستر لیکھک—بھگوان داس کیلا؛ نکالنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا، دارا گنج، الہ‌آباد؛ صفحے 350 دام چار روپئے .

7. سروودے ارتھ وِوستھا لیکھک—جواہر لال جین؛ نکالنے والے بھارتیہ گرنتھ مالا، دارا گنج، الہ‌آباد؛ صفحے 127؛ دام ڈیڑھ روپیہ .

8. ہمارا ارتھ شاستر کیسا ہو سمپادک—بھگوان داس کیلا؛ بھارتیہ گرنتھ مالا دارا گنج، الہ‌آباد؛ صفحے 42؛ دام چار آنہ .

انگریزی

1. کنٹرولس اے اسٹڈی—نکالنے والے—فیڈریشن آف انڈین چیمبرس آف کامرس اینڈ انڈسٹری؛ 28 فیروز شاہ روڈ، نئی دلی-1 صفحے 98 .

2. سلور جبلی سوینر—نکالنے، فیڈریشن آف انڈین چیمبرس آف کامرس اینڈ انڈسٹری (1927-'51) 28 فیروز شاہ روڈ، نئی دلی-1 .

اردو

اخلاقی سماجیات—لیکھک ڈاکٹر جعفر حسین، نکالنے والے—انجمن ترقی اردو (ہند) علی‌گڑھ؛ جنوری 1952؛ صفحے 238؛ دام چار روپیہ آٹھ آنہ .

नवीन-प्राकृतिक चिकित्सा

लेखक, डाक्टर हीरा लाल; निकालने वाले, प्राकृतिक जीवन समिति; 32/97 बगिया मनीराम, कानपुर; सफ़े 228, लिखावट हिन्दी, दूसरा एडीशन, दाम दो रुपये चौदह आने.

ख़ुशी की बात है कि धीरे-धीरे पढ़े लिखों के दिल में भी क़ुदरती इलाज के लिये जगह बनती जा रही है. एलोपैथिक और दूसरे इलाजों में काफ़ी रुपया फूंकने के बाद ही उनका ध्यान क़ुदरती इलाज की तरफ़ जाने लगा है. इसलिये अब सख़्त ज़रूरत इस बात की है कि क़ुदरती इलाज या प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में सही जानकारी देने वाली किताबें हमारे सामने आएं और इसके लिये अच्छा से अच्छा वातावरन तैयार हो.

हीरालाल जी ने पिछले क़रीब दस साल से अपना जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के काम के लिये सौंप रखा है. इस इलाज के नामी जानकारों, अच्छे सेन्टरों के साथ उन्होंने समय बिताया है और देश के क़रीब क़रीब सभी अच्छे क़ुदरती इलाज सेन्टर देखे हैं. उनका अपना अनुभव तो इस दायरे में दिन-दिन बढ़ता जाता है सो अलग. इसलिये उनके तजुर्बे के बल पर लिखी हुई उनकी इस किताब का हम स्वागत करते हैं.

यह किताब शुरू से आख़ीर तक अमली या प्रेक्टीकल बातों से भरी है. तरह तरह के नहान, मिट्टी का इस्तेमाल, व्यायाम या कसरत, तरह तरह के एनीमा, तरह तरह की ख़ुराकें और उनके गुन व इस्तेमाल इस में भरे पड़े हैं. मिट्टी, पानी, हवा, धूप, उपवास वग़ैरा के ज़रिये इलाज करने के ढंग भी बताए हैं. छोटी बड़ी, ख़तरनाक, और लाइलाज बीमारियों का इलाज भी कैसे करें ख़ूबी के साथ दिखाया है. किताब के आख़ीर में जो आंकड़े या मेज़ें दी हैं उनसे इस किताब का महत्व और भी बढ़ जाता है. हर बात मुनासिब तस्वीरों के ज़रिये समझाई गई है जिससे अमल करने में किसी को कोई दिक़्क़त न हो.

किताब के बारे में हम इतना ज़रूर कहेंगे कि इसके सिलसिले और तरतीब में अभी बहुत काफ़ी गुँजायश है. शुरू में जो 'प्रारम्भिक ज्ञान' दिया है उसमें भी ज़ियादा तफ़सील की ज़रूरत है. किताब के आख़ीर में अगर एक क्या कहां (Index) हो तो पढ़ने वाले को और भी आसानी हो. हमें उम्मीद है कि अगले एडीशन में इन बातों के साथ-साथ किताब की छपाई और ब्लाक की सफ़ाई पर भी ध्यान रखा जायेगा. किताब का दाम भी अगर कुछ कम हो सके तो आम लोगों के पास पहुँचने में आसानी होगी.

डाक्टर हीरा लाल को हम इस किताब पर बधाई देते हैं. हमें उम्मीद है कि वह अपने तजुर्बों में और कामयाब होंगे और उनसे हिन्दी संसार को लगातार वाक़िफ़ कराते रहेंगे.

—सुरेश रामभाई

نوین پراکرتک چکتسا

لیکھک، ڈاکٹر ھیرا لال؛ نکالنے والے، پراکرتک جیون سمیتی؛ 32/97 بگیا منی رام، کانپور؛ صفحے 228، لکھاوٹ ھندی، دوسرا ایڈیشن، دام دو روپئے چودہ آنے.

خوشی کی بات ھے کہ دھیرے دھیرے پڑھے لکھوں کے دل میں بھی قدرتی علاج کے لئے جگہ بنتی جا رھی ھے. ایلوپیتھک اور دوسرے علاجوں میں کافی روپیہ پھونکنے کے بعد ھی اُن کا دھیان قدرتی علاج کی طرف جانے لگا ھے. اِس لئے اب سخت ضرورت اِس بات کی ھے کہ قدرتی علاج یا پراکرتک چکتسا کے بارے میں صحیح جانکاری دینے والی کتابیں ھمارے سامنے آئیں اور اِس کے لئے اچھا سے اچھا واتاورن تیار ھو.

ھیرا لال جی نے پچھلے قریب دس سال سے اپنا جیون پراکرتک چکتسا کے کام کے لئے سونپ رکھا ھے. اِس علاج کے نامی جانکاروں، اچھے سینٹروں کے ساتھ اُنھوں نے سمے بتایا ھے اور دیش کے قریب قریب سبھی اچھے قدرتی علاج سینٹر دیکھے ھیں. اُن کا اپنا انوبھو تو اِس دائرے میں دن دن بڑھتا جاتا ھے سو الگ. اِسلئے اُن کے تجربے کے بل پر لکھی ھوئی اُن کی اِس کتاب کا ھم سواگت کرتے ھیں.

یہ کتاب شروع سے آخیر تک عملی یا پریکٹیکل باتوں سے بھری ھے. طرح طرح کے نہان، مٹی کا استعمال، ویایام یا کثرت، طرح طرح کے اینیما، طرح طرح کی خوراکیں اور ان کے گُن و استعمال اِس میں بھرے پڑے ھیں. مٹی، پانی، ھوا، دھوپ اُپواس وغیرہ کے ذریعے علاج کرنے کے ڈھنگ بھی بتائے ھیں. چھوٹی بڑی، خطرناک، اور لا علاج بیماریوں کا علاج بھی کیسے کریں خوبی کے ساتھ دکھایا ھے. کتاب کے آخیر میں جو آنکڑے یا میزیں دی ھیں اُن سے اِس کتاب کا مہتو اور بھی بڑھ جاتا ھے. ھر بات مناسب تصویروں کے ذریعے سمجھائی گئی ھے جس سے عمل کرنے میں کسی کو کوئی دقت نہ ھو.

کتاب کے بارے میں ھم اتنا ضرور کہینگے کہ اِس کے سلسلے اور ترتیب میں ابھی بہت کافی گنجائش ھے. شروع میں جو 'پرارمبھک گیان' دیا ھے. اُس میں بھی زیادہ تفصیل کی ضرورت ھے. کتاب کے آخیر میں اگر ایک کیا کہاں (Index) ھو تو پڑھنے والے کو اور بھی آسانی ھو. ھمیں اُمید ھے کہ اگلے ایڈیشن میں ان باتوں کے ساتھ ساتھ کتاب کی چھپائی اور بلاک کی صفائی پر بھی دھیان رکھا جائیگا. کتاب کا دام بھی اگر کچھ کم ھو سکے تو عام لوگوں کے پاس پہونچنے میں آسانی ھوگی.

ڈاکٹر ھیرا لال کو ھم اِس کتاب پر بدھائی دیتے ھیں. ھمیں اُمید ھے کہ وہ اپنے تجربوں میں اور کامیاب ھونگے اور اُن سے ھندی سنسار کو لگاتار واقف کراتے رھینگے.

—سریش رامبھائی

लाजवाब और मशहूर नावेल है. इसके अन्दर एक भंगी खानदान की तीन पीढ़ियों की जिन्दगी की झलक दी गई है. दादा, रवी पुराने ख़याल का बूढ़ा भंगी है जिसे दूसरे की जूठन बरकत मालूम होती है. उसका लड़का घूरन एक समझदार, होशियार और मेहनती आदमी है, जिस को यह सवाल परेशान करता है कि भंगी का बेटा भंगी ही क्यों हो, भंगी ही क्यों माना जाय और दूसरे बेटों की तरह समाज उसे सब सहूलियतें क्यों नहीं देता. रवी के मरने के बाद घूरन उसका क़र्ज़ा अदा करके अपनी गाढ़ी कमाई से खासी आमदनी कर लेता है और फिर खजनी से ब्याह करके अपना घर बसाता है. पर इस ख़याल से कि वह भंगी है तो है उसका बेटा मोहन भंगी क्यों समझा जाय. भंगी घूरन जैसे बाप ने मोहन को साथ बैठा कर उसे न कभी खाना खिलाया और न कभी अपनी गोदी में लिया. पर मां कब तक यह मोहन से छिपा सकती थी कि उसका बाप भंगी है. आखिर कार घूरन ने वह काम छोड़ दिया और श्मशान में चौकीदारी करने लगा, और थोड़े दिन बाद हैज़े में मोहन के मां बाप गुज़र गये. लेकिन मोहन इतना जान गया था कि उसके बाप ने दो बार भंगियों का संगठन कराने की कोशिश की थी—एक बार तो वह म्युनिसपल्टी के ओहदेदारों के चक्कर में आकर अपने रास्ते से भटक गया और दूसरी बार भी वह कामयाब न हो सका—लेकिन मोहन खुश क़िस्मत निकला कि श्रम जीवियों के जुलूस की अगुवाई करते करते हकूमत की गोली खा कर शहीद हो गया और हमेशा के लिये बता गया कि भंगी का बेटा भी साफ़ सुथरा रह कर सेवा के ज़रिये समाज में उसी ऊंचे दर्जे को पहुँच सकता है जिस तरह किसी और का बेटा.

थोड़े से लफ़्ज़ों में इस नावेल की यही कहानी है, यही इस नावेल की समाज को 'चुनौती' है.

बहन भारती विद्यार्थी ने ऐसा लाजवाब अनुवाद किया है कि कुछ कहते नहीं बनता. पढ़ने बैठिये तो बिना खत्म किये उठने को दिल नहीं चाहता. हम बहन भारती विद्यार्थी को उनकी इस सेवा के लिये बधाई देते हैं और यक़ीन करते हैं कि मलयालम और हिन्दी के पढ़ने वालों को एक दूसरे के नज़दीक लाने में वह ज़बरदस्त सहारा साबित होगी.

हमें यह भी उम्मीद है कि हिन्दी के आज के कहानी लेखक और उपन्यास कार इस "चुनौती" को देख कर अपना ध्यान इन लाखों करोड़ों ग़रीबों और नीच समझे जाने वालों की तरफ़ लगायेंगे जिनका नाम लेवा और पानी देवा भी कोई नहीं मिलता.

—सुरेश रामभाई

لاجواب اور مشہور ناول ہے۔ اِس کے اندر ایک بھنگی خاندان کے تین پیڑھیوں کی زندگی کی جھلک دی گئی ہے۔ دادا' ربی' پرانے خیال کا بوڑھا بھنگی ہے جسے دوسرے کی جوٹھن برکت معلوم ہوتی ہے۔ اُس کا لڑکا گھورن ایک سمجھدار' ہوشیار اور محنتی آدمی ہے' جس کو یہ سوال پریشان کرتا ہے کہ بھنگی کا بیٹا بھنگی ہی کیوں ہو' بھنگی ہی کیوں مانا جائے اور دوسرے بیٹوں کی طرح اُسے سماج سب سہولیتیں کیوں نہیں دیتا. ربی کے مرنے کے بعد گھورن اُس کا قرضہ ادا کرکے اپنی گاڑھی کمائی سے خاصی آمدنی کرلیتا ہے اور پھر کھجنی سے بیاہ کر کے اپنا گھر بساتا ہے۔ پر اِس خیال سے کہ وہ بھنگی ہے تو ہے اُس کا بیٹا موہن بھنگی کیوں سمجھا جائے. بھنگی گھورن جیسے باپ نے موہن کو ساتھ بیٹھا کر اُسے نہ کبھی کھانا کھلایا اور نہ کبھی اپنی گودی میں لیا. پر ماں کب تک یہ موہن سے چھپا سکتی تھی کہ اُس کا باپ بھنگی ہے. آخر کار گھورن نے وہ کام چھوڑ دیا اور شمشان میں چوکی داری کرنے لگا' اور تھوڑے دن بعد ہیضے میں موہن کے ماں باپ گذرگئے. لیکن موہن اتنا جان گیا تھا کہ اُس کے باپ نے دو بار بھنگیوں کا سنگٹھن کرانے کی کوشش کی تھی— ایک بار تو وہ میونسپلٹی کے عہدے داروں کے چکر میں آکر اپنے راستے سے بھٹک گیا اور دوسری بار بھی وہ کامیاب نہ ہو سکا—لیکن موہن خوش قسمت نکلا کہ شرم جیوؤں کے جلوس کی اگوائی کرتے کرتے حکومت کی گولی کھا کر شہید ہوگیا اور ہمیشہ کے لئے بتا گیا کہ بھنگی کا بیٹا بھی صاف ستھرا رہ کر سیوا کے ذریعے سماج میں اُسی اونچے درجے کو پہنچ سکتا ہے جس طرح کسی اور کا بیٹا.

تھوڑے سے لفظوں میں اِس ناول کی یہی کہانی ہے' یہی اس ناول کی سماج کو 'چنوتی' ہے.

بہن بھارتی ودیارتھی نے ایسا لاجواب انواد کیا ہے کہ کچھ کہتے نہیں بنتا. پڑھنے بیٹھئے تو بنا ختم کئے اُٹھنے کو دل نہیں چاہتا. ہم بہن بھارتی ودیارتھی کو اُن کی اِس سیوا کے لئے بدھائی دیتے ہیں اور یقین کرتے ہیں کہ ملیالم اور ہندی کے پڑھنے والوں کو ایک دوسرے کے نزدیک لانے میں وہ زبردست سہارا ثابت ہونگی.

ہمیں یہ بھی اُمید ہے کہ ہندی کے آج کے کہانی لیکھک اور اُپنیاس کار اِس "چنوتی" کو دیکھکر اپنا دھیان اِن لاکھوں کروڑوں غریبوں اور نیچ سمجھے جانے والوں کی طرف لگائیں گے جن کا نام لیوا اور پانی دیوا بھی کوئی نہیں ملتا.

—سریش رام‌بھائی

कलकत्ते का चमत्कार

लेखक—मनु बहन गांधी; निकालने वाले—नव जीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; पहला एडीशन; लिखावट—हिन्दी; सफ़े 132, दाम एक रुपया चार आना.

कलकत्ते की जलती हुई आग को बापू ने सितम्बर 1947 में किस तरह ठंडा किया उसकी याद इतिहास के पन्ने हमेशा दिलाते रहेंगे. इस किताब में उसी की कहानी है, दर्दनाक कहानी है जिसका पन्ना रोंगटे खड़े कर देने वाला है.

मनु बहन गांधी गांधी जी के पास दिसम्बर 1946 से उनके आखरी दम तक साथ रहीं. इस किताब में उन्होंने पहली अगस्त 1947 से लेकर 8 सितम्बर तक की अपनी डायरी पेश की है. खास बात यह है कि इस डायरी को बापू रोज़ पढ़ लेते थे और साथ ही साथ अपनी सही बना देते थे. इसलिये हम इस किताब को बापू की एक छोटी मोटी डायरी कह सकते हैं. अलावा इसके यह कहानी है, इतिहास है, धर्मकथा है.

इस किताब को पढ़ कर हमारा दिल भर आता है. 15 अगस्त 1947 को जहां हिन्दुस्तान खुशियां मनाता था, बापू उपवास और प्रार्थना करते थे. उन्होंने उस दिन कहा—"आज हमारी ज़िम्मेदारी कितनी बढ़ गई है जिस पर हम शान्ति भाव से मनन करें. चरखे ने यह आज़ादी दिलवाई है उसे हमें नहीं भूलना चाहिये और उपवास करने से हमारा शरीर शुद्ध होता है. इस तरह हम शुद्ध होकर ईश्वर से प्रार्थना करें कि हम आज़ादी के लायक़ बनें." कौन नहीं जानता कि आज चरखे को सरकार तो भूल ही गई है और जनता भी भूलती मालूम पड़ती है. गांधी जी के निजी जीवन, देश के राजकाजी हालात, हिन्दू मुस्लिम समस्या वग़ैरा बातों में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई बहन के लिये यह किताब अनमोल हीरा साबित होगी. मनु बहन को हम इस चमत्कार भरी किताब पर दिल से बधाई देते हैं.

इस किताब का जितना प्रचार हो थोड़ा है.

—चेतन कुमार शर्मा

चुनौती (भंगी का बेटा)

लेखक—तकशी शिवशंकर पिल्लई; अनुवादक—श्रीमती भारती विद्यार्थी; निकालने वाले—आत्मा राम एन्ड संन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली; लिखावट हिन्दी; सफ़े 135; दाम ढाई रुपये; पहली बार 1952.

'टूटी फूटे मकान' मलयालम भाषा का जो मलाबार, कोचीन और ट्रावन्कोर के रहने वालों की भाषा है एक

کلکتے کا چمتکار

لیکھک—منو بہن گاندھی؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ پہلا ایڈیشن؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحے 132، دام ایک روپیہ چار آنہ .

کلکتے کی جلتی ہوئی آگ کو باپو نے ستمبر 1947 میں کس طرح ٹھنڈا کیا اُس کی یاد اتہاس کے پنے ہمیشہ دلاتے رہیں گے . اِس کتاب میں اسی کی کہانی ہے، دردناک کہانی ہے جس کا پنّا رونگٹے کھڑے کر دینے والا ہے.

منو بہن گاندھی گاندھی جی کے پاس دسمبر 1946 سے اُن کے آخری دم تک ساتھ رہیں. اِس کتاب میں اُنہوں نے پہلی اگست 1947 سے لے کر 8 ستمبر تک کی اپنی ڈائری پیش کی ہے . خاص بات یہ ہے کہ اِس ڈائری کو باپو روز پڑھ لیتے تھے اور ساتھ ہی ساتھ اپنی صحیح بنا دیتے تھے. اِس لئے ہم اِس کتاب کو باپو کی ایک چھوٹی موٹی ڈائری کہہ سکتے ہیں . علاوہ اِس کے یہ کہانی ہے، اتہاس ہے، دھرم کتھا ہے .

اِس کتاب کو پڑھکر ہمارا دل بھر آتا ہے. 15 اگست 1947 کو جہاں ہندستان خوشیاں مناتا تھا، باپو اُپواس اور پرارتھنا کرتے تھے . اُنہوں نے اُس دن کہا—"آج ہماری ذمہ داری کتنی بڑھ گئی ہے جس پر ہم شانتی بھاؤ سے منن کریں. چرخے نے یہ آزادی دلوائی ہے اُسے ہمیں نہیں بھولنا چاہئے اور اُپواس کرنے سے ہمارا شریر شدھ ہوتا ہے. اِس طرح ہم شدھ ہوکر ایشور سے پرارتھنا کریں کہ ہم آزادی کے لائق بنیں." کون نہیں جانتا کہ آج چرخے کو سرکار تو بھول ہی گئی ہے اور جنتا بھی بھولتی معلوم پڑتی ہے . گاندھی جی کے نجی جیون، دیش کے راج کاجی حالات، ہندو مسلم سمسیا وغیرہ باتوں میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کے لئے یہ کتاب انمول ہیرا ثابت ہوگی . منو بہن کو ہم اِس چمتکار بھری کتاب پر دل سے بدھائی دیتے ہیں .

اِس کتاب کا جتنا پرچار ہو تھوڑا ہے .

—چیتن کمار شرما

چنوتی (بھنگی کا بیٹا)

لیکھک—تکشی شیو شنکر پلّئی؛ انوادک—شری متی بھارتی ودیارتھی؛ نکالنے والے—آتما رام اینڈ سنس، کشمیری گیٹ، نئی دلی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 135؛ دام ڈھائی روپئے؛ پہلی بار 1952.

'ٹوٹی پھوٹے مکن' ملیالم بھاشا کا جو ملابار، کوچین اور ٹراونکور کے رہنے والوں کی بھاشا ہے ایک

कीड़ों से लेखक का साबक़ा पड़ा उसका बयान विद्वान लेखक ने आसान मिसालों के ज़रिये, सुन्दर ढंग से और व्यंग भरी ज़बान में किया है. कहीं कहीं सुन्दर सुन्दर महावरों का प्रयोग करके शैली में नई जान पैदा की है.

इस किताब में लेखक ने गिलहरी, बन्दर, कबूतर, कौवा, चील, तोता, छिपकली, खटमल, चींटी और तिलचट्टों का ज़िकर किया है. पर लेखक की मुहब्बत गिलहरी के साथ ज़ियादा मालूम होती है. लेखक के खाते वक़्त गिलहरी उनके सामने कैसे बैठती थी, उनके फेंके हुए रोटी के टुकड़े को कैसे खाती थी, कौवों और दूसरी चिड़ियों से बचाकर कैसे गिलहरी को लेखक खिलाते थे और एक दिन कैसे गिलहरी के बच्चे को उसकी मां के पास पहुंचा आये थे, वग़ैरा बातों का ज़िकर बढ़िया ढंग से किया है.

ऊपर ज़िकर किये हुये जानवरों के स्वभाव का बयान अच्छे ढंग से किया गया है. कौन कीड़े या चिड़िया कितना मूर्ख या अक़्लमंद है, कौन सावधान या असावधान है इन बातों की भी जांच लेखक ने बारीकी से की है. चींटियों और दूसरी जीव जन्तुओं के स्वभाव का बयान करते समय इन्सान के स्वभाव के साथ उनके स्वभाव की तुलना व्यंग पूर्न तरीक़े से की है.

राजनैतिक बातों को लेकर भी ख़ूब मिसालें दी गई हैं. नमूने देखिये (1) कौवे गिलहरियों की लड़ाई अंगरेज़ों अरबों के लड़ाई की तरह हैं; अगर अरबों के पास हवाई जहाज़ होते और गिलहरियों के पास पंख होते तो इन दोनों बड़ी लड़ाइयों का रूप ही दूसरा होता. (2) स्पेनिश आरमेडा या मुग़ल फ़ौज की तरह चील धीरे धीरे चलती है, जल्दी दिशा बदलना उसे आता ही नहीं, जब कि कौवा मराठा बारगीरों की तरह तेज़ी से दौड़ सकता है और चाहे जैसे हमला हो अपना बचाव कर सकता है.

जेल की ज़िन्दगी से इस तरह हिल मिल जाने पर कौन शख़्स जेल ख़ाने से बाहर जाने की बात सोचेगा? जब जेल का नियम लेखक को बाहर जाने को मजबूर करने लगा, तो ससुराल जाते समय अपने पाले हुए जानवर और अपने हाथों पानी सींचे हुए पेड़ पौधों को छोड़ते वक़्त शकुंतला को जो सदमा पहुंचा उस से कम सदमा लेखक को नहीं पहुंचा होगा.

इस रचना में न तो उपदेश है, न प्रचार है, केवल अनुभव का, सुख दुख का और कल्पनाओं का आदान प्रदान है और ख़ासकर ख़ुश मिज़ाजी है. इसलिये यह किताब छोटे बड़े, जवान बूढ़े, बच्चे सभी को एक सा रस देगी.

—एम. सुब्रह्मन्यम
(तामिलनाद हिन्दी प्रचार सभा, त्रिचनापल्ली)

کیڑوں سے لیکھک کا سابقہ پڑا اُسکا بیان ودوان لیکھک نے آسان مثالوں کے ذریعے، سندر ڈھنگ سے اور وینگ بھری زبان میں کیا ہے. کہیں کہیں سندر سندر محاوروں کا پریوگ کر کے شیلی میں نئی جان پیدا کی ہے.

اِس کتاب میں لیکھک نے گلہری، بندر، کبوتر، کوا، چیل، طوطا، چھپکلی، کھٹمل، چیونٹی اور تلچٹوں کا ذکر کیا ہے. پر لیکھک کی محبت گلہری کے ساتھ زیادہ معلوم ہوتی ہے. لیکھک کے کھاتے وقت گلہری اُن کے سامنے کیسے بیٹھتی تھی، اُن کے پھینکے ہوئے روٹی کے ٹکڑے کو کیسے کھاتی تھی، کوؤں اور دوسری چڑیوں سے بچاکر کیسے گلہری کو لیکھک کھلاتے تھے اور ایک دن کیسے گلہری کے بچے کو اُس کی ماں کے پاس پہنچا آئے تھے، وغیرہ باتوں کا ذکر بڑھیا ڈھنگ سے کیا ہے.

اوپر ذکر کئے ہوئے جانوروں کے سوبھاؤ کا بیان اچھے ڈھنگ سے کیا گیا ہے. کون کیڑے یا چڑیا کتنا مورکھ یا عقل مند ہے، کون ساودھان یا اساودھان ہے اِن باتوں کی بھی جانچ لیکھک نے باریکی سے کی ہے. چیونٹیوں اور دوسری جیو جنتوؤں کے سوبھاؤ کا بیان کرتے سمے اِنسان کے سوبھاؤ کے ساتھ اُن کے سوبھاؤ کی تلنا وینگ پورن طریقے سے کی ہے.

راج نیتک باتوں کو لیکر بھی خوب مثالیں دی گئی ہیں. نمونے دیکھئے (1) کوے گلہریوں کی لڑائی انگریزوں عربوں کے لڑائی کی طرح ہیں؛ اگر عربوں کے پاس ہوائی جہاز ہوتے اور گلہریوں کے پاس پنکھ ہوتے تو اِن دونوں بڑی لڑائیوں کا روپ ہی دوسرا ہوتا. (2) اسپینش آرمیڈا یا مغل فوج کی طرح چیل دھیرے دھیرے چلتی ہے، جلدی دشا بدلنا اُسے آتا ہی نہیں، جب کہ کوا مراٹھا بارگیروں کی طرح تیزی سے دوڑ سکتا ہے اور چاہے جیسا حملہ ہو اپنا بچاؤ کر سکتا ہے.

جیل کی زندگی سے اِس طرح ہل مل جانے پر کون شخص جیل خانے سے باہر جانے کو سوچیگا؟ جب جیل کا نیم لیکھک کو باہر جانے کو مجبور کرنے لگا، تب سسرال جاتے سمے اپنے پالے ہوئے جانور اور اپنے ہاتھوں پانی سینچے ہوئے پیڑ پودھوں کو چھوڑتے وقت شکنتلا کو جو صدمہ پہنچا اُس سے کم صدمہ لیکھک کو نہیں پہنچا ہوگا.

اِس رچنا میں نہ تو اُپدیش ہے، نہ پرچار ہے، کیول انوبھو کا، سکھ دکھ کا اور کلپناؤں کا آدان پردان ہے اور خاص کر خوش مزاجی ہے. اِس لئے یہ کتاب چھوٹے بڑے، جوان بوڑھے، بچے سبھی کو ایک سا رس دے گی.

—ایم سبرہ منیم
(تامل ناد ہندی پرچار سبھا، ترچناپلی)

हैं, पंजाब में जानवर चारा न पाने की वजह से रोज़ मर रहे हैं, बिहार में ईख की खेती के वास्ते पेड़ पर पेड़ कटते जाने से गांव वाले कह रहे हैं कि 'नील' की खेती की जगह 'मील' की खेती आ गई, राजस्थान में लोग शिकायत कर रहे हैं कि रेगिस्तान दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से बढ़ रहा है, वग़ैरा वग़ैरा.

इस वजह से हम 'कांगरेस सन्देश' को हिन्दुस्तान के उस ख़ुश क़िस्मत या (बदक़िस्मत ?) गिने चुने समाज का नुमाइन्दा सा मानते हैं जो या तो हकूमत में रह कर या बड़े बड़े कारख़ाने चला कर और किसी जा बेजा तरीक़े से अपनी निजी दौलत में बढ़ौती कर कर देश के ग़रीबों को लगातार चूस रहा है. इसलिये 'कांगरेस सन्देश' के दिल में जनता की भावना की न कोई क़दर हो सकती है और न जनता के लिये कोई लिहाज़.

काग़ज़ तस्वीरों और छपाई के लिहाज़ से तो ख़ैर कोई कसर रहने की बात ही नहीं है. क्या हम उम्मीद करें कि 'कांगरेस सन्देश' कुछ करवट बदलेगा और जनता और हकूमत के बीच जो आज मोटी दीवार बनती जा रही है उसको तोड़ने में कंधा लगायेगा ?

—सुरेश रामभाई

उत्तर की दीवारें

लेखक—काका कालेलकर; अनुवादक—शकुन्तला देवी. निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद; सफ़े 84; लिखावट हिन्दी; दाम चौदह आने.

सोकर उठे खाया पिया, काम किया, फिर सो गये, ज़ियादातर शख़्स इसी को ज़िन्दगी का मक़सद समझते हैं. लेकिन ऐसे लोग भी इस दुनिया में मिलेंगे (जिनकी तादाद कम होगी) जिनकी नज़र क़ुदरत की दूसरी चीज़ों पर जैसे पेड़ पौधे, नदी, नाले, टीले पहाड़, जंगल वग़ैरा और तरह तरह के कीड़े, चिड़ियां और जानवरों की तरफ़ भी जाती है. चिड़ियों को रोज़ सब आदमी देखते हैं. लेकिन जब चिड़ियों का चहचहाना सुनते हैं तो यह समझ नहीं पाते और समझने की कोशिश भी नहीं करते कि यह रोती या हँसती हैं या किसी से बात करती हैं. "उत्तर की दीवारें" के लेखक ने इन सबकी जांच बारीकी से की है. 1922 में प्रकृति प्रेमी और पंछी-स्नेही लेखक जब जेल में थे तब उन्हें फ़िकर हुई कि जेल में प्रकृति के नज़ारे तो नहीं मिलेंगे. लेकिन उस छोटी दुनिया के बाशिन्दे कीड़े मकोड़े, चिड़ियां और जानवरों ने उन्हें तसल्ली दी. खाते पीते वक़्त, नहाते-टहलते वक़्त, दातुन तोड़ते वक़्त और सोने की तैयारी करते वक़्त, जिन चिड़ियों, जानवरों और

ھیں' پنجاب میں جانور چارہ نہ پانے کی وجہ سے روز مر رہے ھیں' بہار میں ایکھ کی کھیتی کے واسطے پیڑ پر پیڑ کٹتے جانے سے گاؤں والے کہہ رہے ھیں کہ 'نیل' کی کھیتی کی جگہ 'میل' کی کھیتی آ گئی' راجستھان میں لوگ شکایت کر رہے ھیں کہ ریگستان دن دونی رات چوگنی رفتار سے ھاتھ بڑھ رہا ہے' وغیرہ وغیرہ .

اِس وجہ سے ہم 'کانگریس سندیش' کو ھندستان کے اُس خوش قسمت یا (بدقسمت ؟) گنے چنے سماج کا نمائندہ سا مانتے ھیں جو یا تو حکومت میں رہ کر یا بڑے بڑے کارخانے چلاکر اور کسی جا بیجا طریقے سے اپنی نجی دولت میں بڑھوتی کر کر دیش کے غریبوں کو لگاتار چوس رہا ہے. اِس لئے 'کانگریس سندیش' کے دل میں جنتا کی بھاؤنا کی نہ کوئی قدر ھوسکتی ہے اور نہ جنتا کے لئے کوئی لحاظ .

کاغذ تصویروں اور چھپائی کے لحاظ سے تو خیر کوئی کثر رہنے کی بات ھی نہیں ہے . کیا ہم اُمید کریں کہ 'کانگریس سندیش' کچھ کروٹ بدلے گا اورجنتا اور حکومت کے بیچ جو آج موٹی دیوار بنتی جا رہی ہے اُس کو توڑنے میں کندھا لگئے گا ؟

——سریش رام بھائی

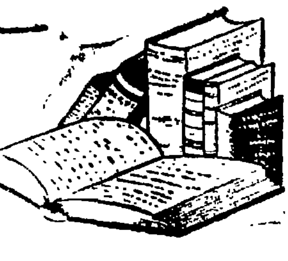
اُتر کی دیواریں

لیکھک——کاکا کالیل کر؛ انوادک——شکنتلا دیوی'

نکالنے والے——نوجیون پرکاشن مندر' احمدآباد؛ صفحے 84؛ لکھاوٹ ھندی؛ دام چودہ آنے .

سوکر اُٹھے کھایا پیا' کام کیا' پھر سو گئے' زیادہ تر شخص اِسی کو زندگی کا مقصد سمجھتے ھیں . لیکن ایسے لوگ بھی اِس دنیا میں ملینگے (جس کی تعداد کم ھوگی) جن کی نظر قدرت کی دوسری چیزوں پر بھی پڑتی ہے . جیسے پیڑ پودھے' ندی نالے' ٹیلے' پہاڑ' جنگل وغیرہ اور طرح طرح کے کیڑے' چڑیاں' اور جانوروں کی طرف بھی جاتی ہے . چڑیوں کو روز سب آدمی دیکھتے ھیں . لیکن جب چڑیوں کا چہچہانا سنتے ھیں تو یہ سمجھ نہیں پاتے اور سمجھنے کی کوشش بھی نہیں کرتے کہ یہ روتی یا ھنستی ھیں یا کسی سے بات کرتی ھیں . " اُتر کی دیواریں " کے لیکھک نے ان سب کی جانچ باریکی سے کی ہے. 1922 میں پرکرتی پریمی اور پنچھی سنیہی لیکھک جب جیل میں تھے تب انہیں فکر ھوئی کہ جیل میں پرکرتی نظارے تو نہیں ملینگے . لیکن اُس چھوٹی دنیا کے باشندے کیڑے مکوڑے' چڑیاں اور جانوروں نے انہیں تسلی دی. کھاتے پیتے وقت' نہاتے ٹہلتے وقت' داتون توڑتے وقت اور سونے کی تیاری کرتے وقت جن چڑیوں' جانوروں اور

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

कांगरेस सन्देश

हफ्ते वारी अखबार, सम्पादक, हर्ष देव मालवीय; निकालने वाले, दफ्तर कुल हिन्द कांगरेस कमेटी; 7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली; लिखावट हिन्दी; सालाना चन्दा नौ रुपये.

पिछले चुनाव के ज़माने में अपने प्रचार के खातिर कुल हिन्द कांगरेस कमेटी के नई दिल्ली वाले दफ्तर से 'कांगरेस सन्देश' नाम का हफ्ते वारी परचा शुरू हुआ. मई के आखीर तक इसके 31 नम्बर निकल चुके हैं. इस वक़्त हमारे सामने इसके तीन परचे 30, 31, 32 मौजूद हैं.

कांगरेस पांच साल पहले क्या थी ?—हिन्दुस्तान की महकूम जनता की अलमबरदार और आवाज़. कांगरेस आज क्या है ? उसी जनता की हाकिम. इसलिये 'कांगरेस सन्देश' इस वक़्त हाकिम कांगरेस के ही नुमायन्दे या दूत यानी मैसैंजर का काम कर सकता है. उससे यह उम्मीद करना कि वह जनता की नुमायन्दगी करे दिन में तारे देखने की उम्मीद करना है.

जब हम 'कांगरेस सन्देश' के सफ़े उलटते हैं तो हमारा यह ख़याल और भी पक्का हो जाता है. शुरू से आखीर तक किसी नम्बर को देख जाइये ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान में अगर कोई अक़्लमंद और देश के हमदर्द हैं तो सिर्फ़ कांगरेसी ओहदेदार और बाक़ी सब के सब—कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, प्रजा पारटी या और कोई क्यों न हो, कम अक़्ल और देश के दुश्मन हैं. और इसके अनुसार केन्द्रीय सरकार हो या सूबे की सरकार हो, सब अपना काम बड़ी ख़ूबसूरती से अंजाम दे रही हैं, जिसके कारन देश में सुख ही सुख छाया हुआ है और शेर बकरी मानों एक ही घाट पानी पी रहे हैं.

अफ़सोस कि 'कांगरेस सन्देश' जनता से कोसों दूर हटा हुआ है. उसे यह नहीं ख़बर कि आंध्र में मर्द, औरत और बच्चे रोटी पानी और काम को तरस रहे

کانگریس سندیش

ھفتہ واری اخبار' سمپادک ھرش دیو مالویہ؛ نکالنے والے' دفتر کل ھند کانگریس کمیٹی؛ 7 جنتر منتر روڈ' نئی دلی؛ لکھاوٹ ھندی؛ سالانہ چندہ 9 روپئے .

پچھلے چناؤ کے زمانے میں اپنے پرچار کے خاطر کل ھند کانگریس کمیٹی کے نئی دلی والے دفتر سے 'کانگریس سندیش' نام کا ھفتے واری پرچہ شروع ھوا . مئی کے آخیر تک اِس کے 31 نمبر نکل چکے ھیں . اس وقت ھمارے سامنے اِس کے تین پرچے 30' 31' 32 موجود ھیں .

کانگریس پانچ سال پہلے کیا تھی ؟—ھندستان کی محکوم جنتا کی علمبردار اور آواز . کانگریس آج کیا ھے ؟ اُسی جنتا کی حاکم . اِس لئے 'کانگریس سندیش' اِس وقت حاکم کانگریس کے ھی نمائندے یا دوت یعنی میسنجر کا کام کرسکتا ھے . اُس سے یہ اُمید کرنا کہ وہ جنتا کی نمائندگی کرے دن میں تارے دیکھنے کی اُمید کرنا ھے .

جب ھم 'کانگریس سندیش' کے صفحے الٹتے ھیں تو ھمارا یہ خیال اور بھی پکا ھو جاتا ھے . شروع سے آخیر تک کسی نمبر کو دیکھ جائیے ایسا لگتا ھے کہ ھندستان میں اگر کوئی عقل مند اور دیش کے ھمدرد ھیں تو صرف کانگریسی عہدےدار اور باقی سب کے سب—کمیونسٹ' سوشلسٹ' پرجا پارٹی یا اور کوئی کیوں نہ ھو' کم عقل ھیں اور دیش کے دشمن ھیں. اور اِس کے انوسار کیندری سرکار ھو یا صوبے کی سرکار' ھو سب اپنا کام بڑی خوبصورتی سے انجام دے رھی ھیں' جس کے کارن دیش میں سکھ ھی سکھ چھایا ھوا ھے اور شیر بکری مانو ایک ھی گھاٹ پانی پی رھے ھیں .

افسوس 'کانگریس سندیش' جنتا سے کوسوں دور ھٹا ھوا ھے . اُسے یہ نہیں خبر کہ آندھر میں مرد' عورت اور بچے روٹی پانی اور کام کو ترس رھے

कि अपने मन का जो काम अक़्ल के मुताबिक़ हो वह तो करे और जो अक़्ल के ख़िलाफ़ हो वह न करे, तो फिर थोड़े अर्से में उस का मन संभल जाता है और अक़्ल के ख़िलाफ़ कोई बात कहता ही नहीं. कुछ आदमी समझते हैं कि अक़्ल के मुताबिक़ काम करने के यह माने हैं कि न खेलें, न कूदें, यों ही चुपचाप बैठे रहें, या हमेशा हर वक़्त पढ़ते या और कोई काम करते रहें. मगर यह बिल्कुल ग़लत है. असल में सबसे बड़ी बात जो अक़्ल बतलाती है वह यह है कि दिल को हमेशा बिल्कुल और पूरा ख़ुश रखें. और कोई भी काम इस तरह न करें जिस से उदासी या सुस्ती पैदा हो, सब कुछ हंसी ख़ुशी से करना चाहिये. ऐसा होने ही न देना चाहिये कि कोई काम ज़बरदस्ती करना पड़े. लड़के लड़कियों और बच्चों को खेलना ज़रूर चाहिये और ख़ूब खेलना चाहिये. मगर साथ ही यह ख़याल रखना चाहिये कि ऐसा कोई खेल न खेलें जिस से नुक़सान हो या जिस को कोई बड़ा देख ले तो बुरा कहे. खेल बीसियों तरह के होते हैं मगर सबसे अच्छे खेल वह होते हैं जिन से कुछ अक़्ल आये या नई बात मालूम हो और साथ ही दिल भी ख़ुश हो और हंसी भी ख़ूब आये. राधे, अब के मुलतान आकर एक किताब में से देख कर दो एक खेल ऐसे लिखूंगा जिन से फ़ायदा का फ़ायदा हो और दिल का दिल ख़ुश हो. राधे, तुम ने अब तक एक भी चिट्ठी का जवाब नहीं दिया है, ख़बर नहीं तुम से बग़ैर जवाब दिये रहा क्यों कर जाता है. मेरे पास तो अगर किसी का जवाब देने वाला ख़त थोड़े दिन भी पड़ा रहे तो बड़ा ही बुरा मालूम होता है. अच्छा अब इस चिट्ठी के पहुँचते ही इन बातों का जवाब देना.

(1) अब तुम रोज़ उस्तानी से पढ़ती हो या नहीं. (2) क्या क्या चीज़ पढ़ती हो. (3) वह जो एक सफ़ा अंगरेज़ी, एक हिन्दी, एक रोमन का मैंने तुम्हें लिखने को बताया था वह तुम रोज़ लिखती हो या नहीं. (4) डायरी तुम रोज़ लिखती हो या नहीं. (5) वरज़िश रोज़ करनी शुरू की या नहीं. (6) हवा ख़ोरी को रोज़ जाती हो या कभी कभी और किस के साथ और कौन कौन जाया करते हैं.

کہ اپنے من کا جو کام عقل کے مطابق ہو وہ تو کرے اور جو عقل کے خلاف ہو وہ نہ کرے، تو پھر تھوڑے عرصے میں اُسکا من سنبھل جاتا ہے اور عقل کے خلاف کوئی بات کہتا ہی نہیں. کچھ آدمی سمجھتے ہیں کہ عقل کے مطابق کام کرنے کے یہ معنی ہیں کہ نہ کھیلیں، نہ کودیں، یوں ہی چپ چاپ بیٹھے رہیں، یا ہمیشہ ہر وقت پڑھتے یا کوئی اور کام کرتے رہیں. مگر یہ بالکل غلط ہے. اصل میں سب سے بڑی بات جو عقل بتلاتی ہے وہ یہ ہے کہ دل کو ہمیشہ بالکل اور پورا خوش رکھیں. اور کوئی بھی کام اِس طرح نہ کریں جس سے اُداسی یا سستی پیدا ہو، سب کچھ ہنسی خوشی سے کرنا چاہئے. ایسا ہونے ہی نہ دینا چاہئے کہ کوئی کام زبردستی کرنا پڑے. لڑکے لڑکیوں اور بچوں کو کھیلنا ضرور چاہئے اور خوب کھیلنا چاہئے. مگر ساتھ ہی یہ خیال رکھنا چاہئے کہ ایسا کوئی کھیل نہ کھیلیں جس سے نقصان ہو یا جس کو کوئی بڑا دیکھ لے تو برا کہے. کھیل بیسیوں طرح کے ہوتے ہیں مگر سب سے اچھے کھیل وہ ہوتے ہیں جن سے کچھ عقل آئے یا نئی بات معلوم ہو اور ساتھ ہی دل بھی خوش ہو اور ہنسی بھی خوب آئے. رادھے، اب کے ملتان جاکر ایک کتاب میں سے دیکھکر دو ایک کھیل ایسے لکھوں گا جن سے فائدہ کا فائدہ ہو اور دل کا دل خوش ہو. رادھے، تم نے اب تک ایک بھی چٹھی کا جواب نہیں دیا ہے، خبر نہیں تم سے بغیر جواب دیئے رہا کیونکر جاتا ہے. میرے پاس تو اگر کسی کا جواب دینے والا خط تھوڑے دن بھی پڑا رہے تو بڑا ہی برا معلوم ہوتا ہے. اچھا اب اِس چٹھی کے پہونچتے ہی اِن باتوں کا جواب دینا.

(1) اب تم روز اُستانی سے پڑھتی ہو یا نہیں. (2) کیا کیا چیز پڑھتی ہو. (3) وہ جو ایک صفحہ انگریزی، ایک ہندی، ایک رومن کا میں نے تمہیں لکھنے کو بتلایا تھا وہ تم روز لکھتی ہو یا نہیں. (4) ڈائری تم روز لکھتی ہو یا نہیں. (5) ورزش روز کرنی شروع کی یا نہیں. (6) ہوا خوری کو روز جاتی ہو یا کبھی کبھی اور کس کے ساتھ اور کون کون جایا کرتے ہیں.

मियां जुगनू कहते—"हम थके जा रहे हैं. इतना तेज़ नहीं चल सकते."

मैना और कौवा कहते—"भाई ज़रा हिम्मत से काम लो और फिर हमारा काम बना जाता है."

सुबह होते होते काला मैदान भी पार हो गया.

लाल मोर ने हकीम के दरवाज़े पर पहुंच कर कहा—

"मैं आऊं, मैं आऊं."

अन्दर से हकीम साहब का कुत्ता निकला उसने कहा—

"भाग ! भाग ! मैं तुझे अन्दर नहीं घुसने दूंगा. तेरे पर नहीं हैं. तू कोढ़ी है."

यह कह कर कुत्ता भौंकने लगा—"भों. भों. भों. भों."

इतने में किसी ने ऊपर से कहा—

"भाई लाल मोर ! तुम कहा ?"

ऊपर एक पिंजरे में भाई तोते मिट्ठू मियां बने बैठे थे. लाल मोर ने उनको अपनी बिपता कह सुनाई. तोता बोला—

"भाई लाल मोर, घबराओ नहीं. मैं आदमी की बोली जानता हूँ. अभी हकीम साहब से दवा दिलवाता हूँ."

फिर तोते ने "दुत दुत" करके कुत्ते को भगा दिया. जब हकीम साहब बाहर आए तो तोते ने लाल मोर को दवा दिलवा दी. दवा खाते ही लाल मोर के पर और दुम निकल आई. जो पहले से ज़ियादा ख़ूबसूरत और चमकदार हो गया.

लाल मोर के अच्छे होने की मैना, कौवे, जुगनू और तोते चारों ने बड़ी ख़ुशी मनाई. फिर मैना, कौवा, जुगनू और लाल मोर तोते से छुट्टी कर जंगल आए.

मोरनी ने लाल मोर का जो सारा क़िस्सा सुना तो वह भी इस पर आशिक़ हो गई. दिल में चुहिया के इम्तहान की तारीफ़ करने लगी. जिस से पता चल गया कि कौन. कौन मोर अच्छा था कौन बुरा.

फिर बड़ी धूम धाम से लाल मोर और मोरनी की शादी हो गई.

کانپور
23-6-09

राधे,

कल की चिट्ठी में भी यही लिखा गया था कि सब काम अक़्ल के मुताबिक़ करने चाहिये न कि मन के. और अगर कोई आदमी बराबर शुरू ही से यह आदत डाले

میاں جگنو کہتے—"ہم تھکے جا رہے ہیں. اتنا تیز نہیں چل سکتے."

مینا اور کوا کہتے—"بھائی ذرا ہمت سے کام لو اور ہمارا کام بنا جاتا ہے."

صبح ہوتے ہوتے کالا میدان بھی پار ہوگیا.

لال مور نے حکیم کے دروازے پر پہنچ کر کہا—

"میں آؤں. میں آؤں."

اندر سے حکیم صاحب کا کتا نکلا. اس نے کہا—

"بھاگ! بھاگ! میں تجھے اندر نہیں گھسنے دوں گا. تیرے پر نہیں ہیں. تو کوڑھی ہے."

یہ کہکر کتا بھونکنے لگا—"بھوں بھوں. بھوں بھوں."

اتنے میں کسی نے اوپر سے کہا—

"بھائی لال مور! تم کہاں؟"

اوپر ایک پنجرے میں بھائی طوطے مٹھو میاں بنے بیٹھے تھے. لال مور نے ان کو اپنی بپتا کہہ سنائی. طوطا بولا—

"بھائی لال مور، گھبراؤ نہیں. میں آدمی کی بولی جانتا ہوں. ابھی حکیم صاحب سے دوا دلواتا ہوں."

پھر طوطے نے "دت دت" کرکے کتے کو بھگا دیا. جب حکیم صاحب باہر آئے تو طوطے نے لال مور کو دوا دلوادی. دوا کھاتے ہی لال مور کے پر اور دم نکل آئی. جو پہلے سے زیادہ خوبصورت اور چمکدار ہوگیا.

لال مور کے اچھے ہونے کی مینا، کوے، جگنو اورطوطے چاروں نے بڑی خوشی منائی. پھر مینا، کوا، جگنو اور لال مور طوطے سے چھٹی لےکر جنگل آئے.

مورنی نے لال مور کا سارا قصہ جو سنا تو وہ بھی اس پر عاشق ہوگئی. دل میں چوہیا کے امتحان کی تعریف کرنے لگی. جس سے صاف پتہ چل گیا کہ کون مور اچھا تھا کون برا.

پھر بڑی دھوم دھام سے لال مور اور مورنی کی شادی ہوگئی.

خان پور
23-6-09

رادھے،

کل کی چٹھی میں بھی یہی لکھا گیا تھا کہ سب کام عقل کے مطابق کرنے چاہئے نہ کہ من کے. اور اگر کوئی آدمی برابر شروع ہی سے یہ عادت ڈالے

मैना बोली—"भाई कौवे, चलो हम दोनों भी लाल मोर के साथ साथ चलें. जहां सांप निकला मैं तुम को बता दूंगी. फिर दोनों मिल कर उसको मार डालेंगे."

तीनों ने दूसरे दिन चलने की ठान ली.

उसी दिन लाल मोर, कौवा और मैना भी हकीम के घर को चले. लाल मोर नीचे नीचे भाग रहा था और कौवा और मैना उसी के ऊपर ऊपर उड़ रहे थे.

सांप एक झाड़ी में बैठा था कि उसको लाल मोर नज़र आया. उसने कहा—

"अहा हा ! कैसी अच्छी बोटी भागी जा रही है. मैं अभी इसको खाता हूँ."

सांप लाल मोर पर झपटा. लेकिन उसको इसकी सख्त सज़ा मिली.

मैना ने टें टें करके कौवे को खबर दी कि सांप आ रहा है. कौवे ने पीछे से आकर एक चोंच सांप की दुम पर मारी. सांप जो पलटा कौवे की तरफ़ तो मैना ने पीछे से एक चोंच रसीद की उसकी दुम पर. फिर तो दोनों ने मिल कर सांप के इतनी चोंचें मारीं, इतनी चोंचें मारीं कि उसका कचूमर निकल गया. और वह मर गया.

सांप को मार कर फिर तीनों अपनी मंज़िल की तरफ़ चल खड़े हुए, और सूरज डूबते डूबते पीला मैदान पार हो गया और काला मैदान आ गया. एक तो मैदान काला, उस पर रात का घुप अंधेरा. लाल मोर घबरा कर कहने लगा—

"बहन मैना और भाई कौवे, मुझे तो रास्ता नहीं सूझता."

मैना बोली—"भैया ! घबराओ नहीं. वह सामने जो रोशनी दिखाई दे रही है, यह मियां जुगनू का घर है. चलो उनसे कहें कि हमको रोशनी दिखा दें."

तीनों पहुंचे जुगनू के घर. उसने इन तीनों की बड़ी ख़ातिर की. चाय पिलाई, खाना खिलाया और फिर रोशनी दिखाने चल खड़े हुए.

काला मैदान सायं सायं कर रहा था. हर तरफ़ भयानक अंधेरा छाया हुआ था. उसमें आगे आगे मियां जुगनू रोशनी दिखा रहे थे. पीछे ज़मीन पर लाल मोर भाग रहा था और उसके ऊपर मैना और कौवा उड़ रहे थे.

चारों भागते रहे, भागते रहे. जैसे जैसे सुबह क़रीब आती आती मैना और कौवा जुगनू से कहते—

"भाई जुगनू—और तेज़—और तेज़-नहीं तो अगर सुबह हो गई तो ओले पड़ने लगेंगे और हम लोगों का सर फट जायगा."

مینا بولی—"بھائی کوے' چلو ہم دونوں بھی لال مور کے ساتھ ساتھ چلیں. جہاں سانپ نکلا میں تم کو بتا دوں گی . پھر دونوں ملکر اس کو مار ڈالیں گے ."

تینوں نے دوسرے دن چلنے کی ٹھان لی .

اسی دن لال مور' کوا اور مینا بھی حکیم کے گھر کو چلے . لال مور نیچے نیچے بھاگ رہا تھا اور کوا اور مینا اسی کے اوپر اوپر اڑ رہے تھے .

سانپ ایک جھاڑی میں بیٹھا تھا کہ اس کو لال مور نظر آیا . اس نے کہا—

"اہا ہا! کیسی اچھی بوٹی بھاگی جا رہی ہے. میں ابھی اس کو کھاتا ہوں."

سانپ لال مور پر جھپٹا. لیکن اس کو اس کی سخت سزا ملی .

مینا نے ٹیں ٹیں کرکے کوے کو خبر دی کہ سانپ آ رہا ہے . کوے نے پیچھے سے آکر ایک چونچ سانپ کی دم پر ماری . سانپ جو پلٹا کوے کی طرف تو مینا نے پھر پیچھے سے ایک چونچ رسید کی اس کی دم پر. پھر دونوں نے مل کر سانپ کے اتنی چونچیں ماریں' اتنی چونچیں ماریں کہ اس کا کچومر نکل گیا . اور وہ مر گیا .

سانپ کو مار کر پھر تینوں اپنی منزل کی طرف چل کھڑے ہوئے . اور سورج ڈوبتے ڈوبتے پیلا میدان پار ہوگیا اور کالا میدان آ گیا . ایک تو میدان کالا' اس پر رات کا گھپ اندھیرا. لال مور گھبرا کر کہنے لگا—

"بہن مینا اور بھائی کوے' مجھے تو راستہ نہیں سوجھتا."

مینا بولی—"بھیا ! گھبراؤ نہیں. وہ سامنے جو روشنی دکھائی دے رہی ہے' یہ میاں جگنو کا گھر ہے . چلو ان سے کہیں کہ ہم کو روشنی دکھادیں."

تینوں پہنچے جگنو کے گھر . اس نے ان تینوں کی بڑی خاطر کی . چائے پلائی' کھانا کھلایا اور پھر روشنی دکھانے چل کھڑے ہوئے .

کالا میدان سائیں سائیں کر رہا تھا. ہر طرف بھیانک اندھیرا چھایا ہوا تھا. اس میں آگے آگے میاں جگنو روشنی دکھا رہے تھے . پیچھے زمین پر لال مور بھاگ رہا تھا اور اس کے اوپر مینا اور کوا اڑ رہے تھے .

چاروں بھاگتے رہے ' بھاگتے رہے . جیسے جیسے صبح قریب آتی جاتی مینا اور کوا جگنو سے کہتے—

"بھائی جگنو—اور تیز—اور تیز—نہیں تو اگر صبح ہوگئی تو اولے پڑنے لگیں گے اور ہم لوگوں کا سر پھٹ جائے گا ."

बच्चों की दुनिया

दुम कट गई पर झड़ गए फिरते हैं लंडूरे

(हयात उल्ला अन्सारी)

दूसरी रात चुहिया ने लाल मोर के पर भी काट डाले. लाल मोर ने जब देखा कि मेरे सब पर ग़ायब हैं तो रोने लगा कि भला अब मोरनी मेरे साथ शादी क्यों करने लगी.

मैना और कौवा उस दिन जो अपने दोस्त लाल मोर से मिलने आए तो उनको उसकी मुसीबत का पता चला. वह दोनों उसे समझाने लगे कि ऐसी बीमारियां आती रहती हैं. घबराओ नहीं कोई राह निकल ही आयेगी.

मैना जाकर कहीं से दाने बटोर लाई. कौवा एक चपाती उठा लाया. फिर तीनों ने मज़े से बैठ कर खाना खाया. और आपस में ऐसी हंसी की बातें हुईं कि लाल मोर अपनी मुसीबत भूल गया. जब तीनों खा पी चुके और लाल मोर की ढारस बंध गई तब मैना और कौवा बैठ कर सोचने लगे कि क्या किया जाय जो लाल मोर के पर फिर से निकल आयें.

कौवे ने कहा—"हकीम की दवा से पर निकल सकते हैं. मगर उसके घर का रास्ता बहुत मुश्किल है. राह में दो बड़े भयानक मैदान पड़ते हैं. पीला मैदान और काला मैदान. पीले मैदान में रात को ओले पड़ते हैं और काले में दिन को. इसलिये पीला मैदान दिन भर में पार कर लेना होगा. नहीं तो ओलों से सर फट जायगा. फिर बिना दम लिये रात भर में काला मैदान पार करना होगा."

लाल मोर ने कहा—"मैं पैदल बड़ा तेज़ भाग सकता हूं. पार कर लूंगा."

कौवे ने कहा—"एक मुश्किल और है. ज़मीन पर एक बड़ा भारी सांप रहता है जो पैदल जाने वालों को निगल जाता है."

लाल मोर ने कहा—"मैं तो जाऊंगा. सांप निगल जाय, निगल जाय. मोरनी के बग़ैर जीने से मर जाना ———."

بچوں کی دنیا

دم کٹ گئی پر جھڑ گئے پھرتے ہیں لنڈورے

(حیات اللہ انصاری)

دوسری رات چوہیا نے لال مور کے پر بھی کاٹ ڈالے ۔ لال مور نے جب دیکھا کہ میرے سب پر غائب ہیں تو رونے لگا کہ بھلا اب مورنی میرے ساتھ شادی کیوں کرنے لگی۔

مینا اور کوا اس دن جو اپنے دوست لال مور سے ملنے آئے تو ان کو اس کی مصیبت کا پتہ چلا ۔ وہ دونوں اسے سمجھانے لگے کہ ایسی بیماریاں آتی رہتی ہیں ۔ گھبراؤ نہیں کوئی راہ نکل ہی آئے گی ۔

مینا جاکر کہیں سے دانے بٹور لائی۔ کوا ایک چپاتی اٹھا لایا ۔ پھر تینوں نے مزے سے بیٹھ کر کھانا کھایا۔ اور آپس میں ایسی ہنسی کی باتیں ہوئیں کہ لال مور اپنی مصیبت بھول گیا۔ جب تینوں کھا پی چکے اور لال مور کی ڈھارس بندھ گئی تب مینا اور کوا بیٹھ کر سوچنے لگے کہ کیا کیا جائے جو لال مور کے پر پھر سے نکل آئیں ۔

کوے نے کہا—"حکیم کی دوا سے پر نکل سکتے ہیں ۔ مگر اس کے گھر کا راستہ بہت مشکل ہے ۔ راہ میں دو بڑے بھیانک میدان پڑتے ہیں۔ پیلا میدان اور کالا میدان۔ پیلے میدان میں رات کو اولے پڑتے ہیں اور کالے میں دن کو ۔ اس لئے پیلا میدان دن بھر میں پار کرلینا ہوگا ۔ نہیں تو اولوں سے سر پھٹ جائیگا ۔ پھر بنا دم لئے رات بھر میں کالا میدان پار کرنا ہوگا ۔"

لال مور نے کہا—"میں پیدل بڑا تیز بھاگ سکتا ہوں ۔ پار کرلوں گا ۔"

کوے نے کہا—"ایک مشکل اور ہے ۔ زمین پر ایک بڑا بھاری سانپ رہتا ہے جو پیدل جانے والوں کو نگل جاتا ہے ۔"

لال مور نے کہا—"میں تو جاؤں گا۔ سانپ نگل جائے نگل جائے ۔ مورنی کے بغیر جینے سے مر جانا اچھا ۔"

जब हर आदमी, फिर वह चाहे मजदूर हो या मालिक, प्रोफेसर हो या पढ़ता हो, मिनिस्टर हो या मैनेजर और प्लानिंग कमीशन का मेम्बर हो या उस दफ्तर का चपरासी, सब घंटा दो घंटा खेती में काम करें और देश की पैदावार बढ़ाने में मदद करें. मेरा मानना है कि इन्सानी मेहनत में इस विश्वास से देश का कल्याण ही होने वाला है और आज के भेद भाव मिटने वाले हैं. बहुत मुमकिन है कि इसके लिये हमें अपने आज के शहरों को खतम कर के उनको फिर से बसाना पड़े. श्री टंडन जी ने सेवापुरी के अपने भाशन में इसका ज़िकर किया था और मैंने कहा था कि यह चीज़ वैदिक ख्याल के मुताबिक़ है, क्योंकि इन्द्र को पुरन्दर यानी शहरों को छिन्न भिन्न करने वाला कहा गया है. मैं मानता हूं कि यह वैदिक भावना किसी न किसी रोज़ पूरी होकर रहेगी."

جب ہر آدمی، پھر وہ چاہے مزدور ہو یا مالک، پروفیسر ہو یا پڑھتا ہو، منسٹر ہو یا منیجر اور پلاننگ کمیشن کا ممبر ہو یا اس دفتر کا چپراسی، سب گھنٹہ دو گھنٹہ کھیتی میں کام کریں اور دیش کی پیداوار بڑھانے میں مدد کریں. میرا ماننا ہے کہ انسانی محنت میں اس وشواس سے دیش کا کلیان ہی ہونے والا ہے اور آج کے بھید بھاؤ مٹنے والے ہیں. بہت ممکن ہے کہ اس کے لئے ہمیں اپنے آج کے شہروں کو ختم کر کے ان کو پھر سے بسانا پڑے. شری ٹنڈن جی نے سیوا پوری کے اپنے بھاشن میں اس کا ذکر کیا تھا اور میں نے کہا تھا کہ یہ چیز ویدک خیال کے مطابق ہے، کیونکہ اندر کو پرندر یعنی شہروں کو چھن بھن کرنے والا کہا گیا ہے. میں مانتا ہوں کہ یہ ویدک بھاونا کسی نہ کسی روز پوری ہو کر رہے گی."

भूदान यज्ञ आन्दोलन मजदूर आन्दोलन है

मैंने यह जो चीज़ उठाई है, वह मजदूरों की चीज़ है. मेरा आन्दोलन मज़दूरों का आन्दोलन है. जो सबसे कमज़ोर हैं और जो बे ज़बान और बे ज़मीन हैं, उनका यह आन्दोलन है. मज़दूरों के आन्दोलन यहाँ अकसर शहरों में होते हैं और वहीं उनका संगठन होता है. योरप में खेतिहर मज़दूरों के आन्दोलन हुए भी हैं, मगर हिन्दुस्तान में ज़ियादातर शहरी मज़दूरों के ही आन्दोलन हुए हैं. उनके पास सिवा खेती के और कोई धन्धा नहीं है. जो सबसे नीचे के स्तर के हैं, उनका सवाल उठाना ही सर्वोदय और अहिंसा का तरीक़ा है, क्योंकि जो सबसे आखिर का है, उसे ऊपर उठाने से बाक़ी के भी ऊपर उठ ही जाते हैं. मेरे आन्दोलन की कई नज़रें हो सकती हैं, पर एक खास नज़र यह कि यह मज़दूर आन्दोलन है. मैं खुद बरसों मज़दूर भी रहा हूं. मैंने खेती, रसोई, बुनाई, कताई, भंगी काम वग़ैरा सब में मज़दूरी कर के सालों बिताये हैं. मैं मज़दूरों की बात और उन्हीं का काम आज कर रहा हूँ.

—विनोबा

بھودان یگیہ آندولن مزدور آندولن ہے

میں نے یہ جو چیز اٹھائی ہے، وہ مزدوروں کی چیز ہے. میرا آندولن مزدوروں کا آندولن ہے. جو سب سے کمزور ہیں اور جو بے زبان اور بے زمین ہیں، ان کا یہ آندولن ہے. مزدوروں کے آندولن یہاں اکثر شہروں میں ہوتے ہیں اور وہیں ان کا سنگھٹن ہوتا ہے. یورپ میں کھیتی ہر مزدوروں کے آندولن ہوئے بھی ہیں، مگر ہندستان میں زیادہ تر شہری مزدوروں کے ہی آندولن ہوئے ہیں. ان کے پاس سوا کھیتی کے اور کوئی دھندا نہیں ہے. جو سب سے نیچے کے استر ہیں، ان کا سوال اٹھانا ہی سرودے اور اہنسا کا طریقہ ہے، کیونکہ جو سب سے آخر کا ہے، اسے اوپر اٹھانے سے باقی کے بھی اوپر اٹھ ہی جاتے ہیں. میرے آندولن کی کئی نظریں ہوسکتی ہیں، پر ایک خاص نظر یہ کہ یہ مزدور آندولن ہے. میں خود برسوں مزدور بھی رہا ہوں. میں نے کھیتی، رسوئی، بنائی، کتائی، بھنگی کام وغیرہ سب میں مزدوری کرکے سالوں بتائے ہیں. میں مزدوروں کی بات اور انہیں کا کام آج کر رہا ہوں.

—ونوبا

हैं—कि देहातों में जो कच्चा माल होता है, उसी से देहात की जरूरत का सारा जरूरी पक्का माल तैयार होना चाहिये. अगर इस उसूल को मान लेते हैं—जिसे मानने के लिये अभी तक प्लानिंग कमीशन हिम्मत नहीं कर रहा है, और करता भी है तो अगर मगर की शर्तों के साथ करना चाहता है—तो सारा मसला हल हो जाता है.

"श्री पाटिल ने अपने बयान में फिर से इकनोमिक होल्डिंग (Economic Holding) की बात उठाई है. किसी मसले की बार बार चर्चा करने से वह मसला और साफ़ हो जाता है. इस लिहाज़ से उनके इस सवाल का मैं स्वागत करता हूँ. मुझे उनकी याददाश्त में अविश्वास नहीं है. यह मैंने इसलिये कहा कि न सिर्फ़ सर्वोदय सम्मेलन में, बल्कि दिल्ली में की गई प्लानिंग कमीशन की सारी चर्चा में और वहाँ पर अखबार वालों साथ हुई बात चीत में मैंने इस बारे में अपनी राय साफ़ साफ़ बतादी थी. इकनोमिक होल्डिंग क्या हो सकता है, क्या नहीं हो सकता है, यह बहस का सवाल है. आज तो सवाल यही है कि पांच एकड़ सूखी या एक एकड़ तरी जमीन पांच आदमियों के परिवार के लिये काफ़ी है या नहीं ? हैदराबाद में तो इतनी तादाद काफ़ी मानी गई है. इधर उत्तर प्रदेश में पूरब के ज़िलों में मैंने कई जगहों पर किसानों को सीधा सवाल पूछा है और उन्होंने इससे आधी जमीन पर भी अच्छी तरह गुज़र बसर कर सकना मुमकिन बताया है. जापान और चीन में जमीन का बंटवारा जिस तरह हो रहा है, उससे श्री पाटिल को अपनी शंका का जवाब मिलना चाहिये. लेकिन वहां तक जाने की ज़रूरत नहीं. थोड़ी जमीन से कितनी अच्छी फ़सल ली जा सकती है, यह वह चाहें तो परंधाम (पौनार, ज़िला वर्धा) आश्रम में आकर देख सकते हैं.

"उन्होंने बैल जोड़ी का सवाल भी उठाया है. इस बारे में मेरा इतना ही कहना है कि अगर एक बैल जोड़ी बीस एकड़ के लिये काफ़ी होती है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि हर आदमी के पास कम से कम बीस एकड़ जमीन हो. अगर पाटिल साहब इतनी जमीन देने का जादू कर सकें तो मुझे इनकार नहीं है. लेकिन देश में इतनी जमीन है ही नहीं. इसलिये हो यही सकता है कि चार पांच काश्तकार मिलकर एक बैल जोड़ी रखें और इस तरह पार्शियल कोआपरेशन यानी थोड़ी थोड़ी शिरकत से खेती करें. यह पार्शियल कोआपरेशन न सिर्फ़ बैल जोड़ी की हद तक हो, बल्कि हिफ़ाज़त, सिंचाई वग़ैरा बातों में भी हो सकता है.

"श्री पाटिल के और मेरे विचारों में एक बुनियादी फ़र्क़ दिखाई देता है. मैं चाहता हूँ कि एक रोज़ ऐसा आये

ھیں—کہ دیہاتوں میں جو کچا مال ہوتا ہے، اُسی سے دیہات کی ضرورت کا سارا ضروری پکا مال تیار ہونا چاہئیے. اگر اِس اصول کو مان لیتے ھیں—جسے ماننے کے لئے ابھی تک پلاننگ کمیشن ہمت نہیں کر رہا ہے، اور کرتا بھی ہے تو اگر مگر کی شرطوں کے ساتھ کرنا چاہتا ہے—تو سارا مسئلہ حل ہو جاتا ہے .

"شری پاٹل نے اپنے بیان میں پھر سے ایکونامک ہولڈنگ (Economic Holdnig) کی بات اُٹھائی ہے . کسی مسئلہ کی بار بار چرچا کرنے سے وہ مسئلہ اور صاف ہوجاتا ہے . اِس لحاظ سے اُن کے اِس سوال کا میں سواگت کرتا ہوں. مجھے اُن کی یادداشت میں اوشواس نہیں ہے؛ یہ میں نے اِس لئے کہا کہ نہ صرف سرودے سمیلن میں، بلکہ دلی میں کی گئی پلاننگ کمیشن کی ساری چرچا میں اور وہیں پر اخبار والوں کے ساتھ ہوئی بات چیت میں میں نے اِس بارے میں اپنی رائے صاف صاف بتا دی تھی . ایکونامک ہولڈنگ کیا ہوسکتا ہے، کیا نہیں ہو سکتا ہے، یہ بحث کا سوال ہے . آج تو سوال یہی ہے کہ پانچ ایکڑ سوکھی یا ایک ایکڑ تری زمین پانچ آدمیوں کے پریوار کے لئے کافی ہے یا نہیں ؟ حیدرآباد میں تو اتنی تعداد کافی مانی گئی ہے . اِدھر اُتر پردیش میں پورب کے ضلعوں میں میں نے کئی جگہوں پر کسانوں کو سیدھا سوال پوچھا ہے اور اُنہوں نے اِس سے آدھی زمین پر بھی اچھی طرح گذر بسر کر سکنا ممکن بتایا ہے . جاپان اور چین میں زمین کا بٹوارہ جس طرح ہو رہا ہے، اُس سے شری پاٹل کو اپنی شنکا کا جواب ملنا چاہئے. لیکن وہاں تک جانے کی ضرورت نہیں . تھوڑی زمین سے کتنی اچھی فصل لی جا سکتی ہے، یہ وہ چاہیں تو پرم دھام (پونار—ضلع وردھا) آشرم میں جا کر دیکھ سکتے ھیں .

" اُنہوں نے بیل جوڑی کا سوال بھی اُٹھایا ہے . اِس بارے میں میرا اتنا ہی کہنا ہے کہ اگر ایک بیل جوڑی بیس ایکڑ کے لئے کافی ہوتی ہے، تو اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ ہر آدمی کے پاس کم سے کم بیس ایکڑ زمین ہو . اگر پاٹل صاحب اتنی زمین دینے کا جادو کر سکیں تو مجھے انکار نہیں ہے . لیکن دیش میں اتنی زمین ہے ہی نہیں . اِس لئے ہو یہی سکتا ہے کہ چار پانچ کاشتکار مل کر ایک بیل جوڑی رکھیں اور اِس طرح پارشیل کوآپریشن یعنی تھوڑی تھوڑی شرکت سے کھیتی کریں . یہ پارشیل کوآپریشن نہ صرف بیل جوڑی کی حد تک ہو، بلکہ حفاظت، سینچائی وغیرہ باتوں میں بھی ہو سکتا ہے .

"شری پاٹل کے اور میرے وچاروں میں ایک بنیادی فرق دکھائی دیتا ہے . میں چاہتا ہوں کہ ایک روز ایسا آئے

सेवापुरी सर्वोदय सम्मेलन से लौटने पर श्री राम
पाटिल ने भूदान यज्ञ के बारे में दिल्ली से जो बयान
बारों को दिया है, उस सम्बन्ध में पूछने पर विनोबा
ने श्री पाटिल को बधाई दी कि उन्होंने भूदान यज्ञ के
ही क्यों न हो, ग्रामोद्योग की इतनी हिमायत की है.

"अगर प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट में इसकी झांकी
आती, तो मुझे जो उसकी सख्त आलोचना करनी
वह नहीं करनी पड़ती. देरी से ही क्यों न हो, श्री
ल ग्रामोद्योग का ही महत्व समझ गये हैं, इसमें मैं
के लिहाज़ से फ़ायदा ही देखता हूँ.

"अब रहा भूदान यज्ञ के आन्दोलन के बारे में. उन्होंने
आन्दोलन को समय के लायक़ मौज़ूँ चीज़ बता कर
ो जो इज्ज़त दी है, उसके लिये मैं उनका अहसान
ता हूँ. लेकिन मुझे डर है कि वह शायद आन्दोलन की
यादी कल्पना को ठीक ठीक नहीं समझ सके. वरना
ी रामयन सुनकर आखिर में राम की सीता कौन है,
सवाल वह नहीं उठाते. इसमें शक नहीं कि मैं चाहता
ह जो भी ज़मीन पर मेहनत करके अपनी रोटी कमाना
, उसे ज़मीन दी जाये. इन्सानी मेहनत में विश्वास के
बीज से ही सर्वोदय का फल हासिल होने वाला है.
न फ़िलहाल ज़मीन तक़सीम करने के बारे में सेवापुरी
ने अपने पहले रोज़ के भाशन में ही यह साफ़ किया
के गांव में जो बढ़ई, बुनकर, लोहार या दूसरे ऐसे
जिन के पास रोज़ी कमाने का कुछ न कुछ ज़रिया
है, उन्हें हम ज़मीन नहीं देने वाले हैं. भूदान यज्ञ
मीन तो उन्हें ही मिलेगी, जो बेज़मीन हैं, खेती
ी तरह जोतना जानते हैं. लेकिन आज जिन्हें मज़दूरी
रोसे ज़िन्दगी बसर करनी पड़ती है—मज़दूरी जो
मिलती है, कभी नहीं मिलती. मैंने यह भी साफ़
था कि ऐसी तमीज़ किये बिना अगर हर किसी
ीन को हम ज़मीन देना चाहें तो हमारे प्रधान मंत्री
ज़मीन मांग सकते हैं.

"जो ठहराव सर्व सेवा संघ ने मंज़ूर किया है और
के कारन सारे देश को पच्चीस लाख एकड़ ज़मीन
ीनों के लिये हासिल करने की प्रेरना मिलने वाली है,
ठहराव ही कहता है कि सिर्फ़ ज़मीन देने से देश का
हल नहीं होगा. ज़मीन के साथ साथ ग्रामोद्योग
े होने चाहियें, और इसलिये उस ठहराव में निजी
की हद तक खाने पीने और पहनने ओढ़ने की
के लिये मिल धंधों के बाईकाट की बात कही गई है.
ोग के बारे में मैंने इसरार के साथ प्लानिंग कमीशन
भा में भी समझाया था—और जहां जाता हूँ वहां भी
सम्बन्ध में अपना ख्याल लोगों के सामने रख देता

سیواپوری سروودے سمیلن سے لوٹنے پر شری رام‌کرشن
پاٹل نے بھودان یگیہ کے بارے میں دلی سے جو بیان
اخباروں کو دیا ہے' اُس سمبندھ میں پوچھنے پر ونوبا
جی نے شری پاٹل کو بدھائی دی کہ اُنہوں نے بھودان
یگیہ کے واسطے ہی کیوں نہ ہو' گرام اُدیوگ کی اتنی
حمایت کی ہے.

''اگر پلاننگ کمیشن کی رپورٹ میں اِس کی
جھانکی نظر آتی' تو مجھے جو اسکی سخت آلوچنا
کرنی پڑی وہ نہیں کرنی پڑتی . دیری سے ہی کیوں نہ
ہو' شری پاٹل گرام اُدیوگ کا مہتو سمجھ گئے ہیں' اِس
میں میں دیش کے لحاظ سے فائدہ ہی دیکھتا ہوں .

''اب رہا بھودان یگیہ کے آندولن کے بارے میں .
اُنہوں نے اِس آندولن کو سمے کے لائق موضوں چیز بتاکر
اسکو جو عزت دی ہے' اُس کے لئے میں اُن کا احسان
مانتا ہوں . لیکن مجھے ڈر ہے کہ وہ شاید آندولن کی
بنیادی کلپنا کو ٹھیک ٹھیک نہیں سمجھ سکے . ورنہ
ساری رامائن سن‌کر آخیر میں رام کی سیتا کون ہے' ایسا
سوال وہ نہیں اُٹھاتے . اِس میں شک نہیں کہ میں
چاھتا ہوں کہ جو بھی زمین پر محنت کرکے اپنی روٹی
کمانا چاہے' اُسے زمین دی جائے . انسانی محنت میں
وشواس کے اس بیج سے ہی سروودے کا پھل حاصل ہونے
والا ہے . لیکن فی‌الحال زمین تقسیم کرنے کے بارے میں
سیواپوری میں میں نے اپنے پہلے روز کے بھاشن میں ہی
یہ صاف کہا تھا کہ گاؤں میں جو بڑھئی' بنکر' لوہار یا
دوسرے ایسے لوگ جن کے پاس روزی کمانے کا کچھ نہ
کچھ ذریعہ موجود ہے' اُنہیں ہم زمین نہیں دینے والے
ہیں . بھو دان یگیہ کی زمین تو اُنہیں ہی ملے گی' جو
بےزمین ہیں' کھیتی اچھی طرح جوتنا جانتے ہیں.
لیکن آج جنہیں مزدوری کے بھروسے زندگی بسر کرنی‌پڑتی
ہے—مزدوری جو کبھی ملتی ہے' کبھی نہیں ملتی. میں
نے یہ بھی صاف کہا تھا کہ ایسی تمیز کئے بنا اگر ہر
کسی بےزمین کو ہم زمین دینا چاہیں تو ہمارے پردھان
منتری بھی زمین مانگ سکتے ہیں .

''جو ٹھہراؤ سرو سیواسنگھ نے منظور کیا ہے اور جس
کے کارن سارے دیش کو پچیس لاکھ ایکڑ زمین بےزمینوں
کے لئے حاصل کرنے کی پریرنا ملنے والی ہے' وہ ٹھہراو ہی
کہتا ہے کہ صرف زمین دینے سے دیش کا مسئلہ حل نہیں
ہوگا . زمین کے ساتھ ساتھ گرام اُدیوگ بھی جڑے ہونے
چاہئیں' اور اِس لئے اُس ٹھہراو میں نجی جیون کی
حد تک کھانے پینے اور پہننے اوڑھنے کی چیزوں کے لئے
مل‌دھندوں کے بائی کاٹ کی‌بات کہی‌گئی ہے. گرام‌اُدیوگ
کے بارے میں نے اصرار کے ساتھ پلاننگ کمیشن کی سبھا
میں بھی سمجھایا تھا—اور جہاں جاتا ہوں وہاں بھی
اِس سمبندھ میں اپنا خیال لوگوں کے سامنے رکھ دیتا

ने ही उसको रोक दिया और कहा "नहीं, दीदी आप बड़ी आदमन हैं. हम लोगों को तो हमेशा ही गाली खानी पड़ती है. अगर उन्होंने आपको कुछ कह दिया तो आपकी इज्जत उतर जायेगी. पुलिस वाले इनकी मुट्ठी में हैं, रहना मुश्किल कर देंगे." इन सब बातों से लखिया, मुन्नी के और भी नजदीक आ गई है. कल मैंने जो उससे कहा कि—"चलो इस नरक से निकल कर फिर शहर चलें. ए. जी. आफिस के साहब तो मुझे मानते ही हैं, नौकरी मिलने में मुश्किल नहीं होगी." तो मुन्नी ने कड़ा रुख करके जवाब दिया—"शरम नहीं आती, इस बेचारी को इस मुसीबत में छोड़ कर कायरों की तरह भागने को कहते हो."

मैंने कहा—"अगर लखिया का इतना खयाल है तो उसको भी साथ ले चलो."

मुन्नी इस पर राजी हो गई. उसने कहा—"ठीक है एक समय भोजन करेंगे, दूसरे वक़्त चने चबायेंगे. उस वक़्त तक जब तक लखिया को मिल में नौकरी न मिल जाये." लेकिन जब उसने इसका प्रस्ताव लखिया से किया तो उसने साफ कहा "मगर दीदी, वह बौखल कहां जायेगा, उसे कैसे छोड़ सकती हूँ.'' मुन्नी ने उसे फिर समझाया तुम्हारी जाति में तो छोड़ने छाड़ने का रिवाज है. तो उसने कहा--"यह सब तो ठीक है दीदी, मगर जाने क्यों उसे छोड़ने का जी नहीं चाहता.'' अजीब बात है मैं दुविधा में हूँ क्या करूं.

श्री पाटिल को विनोबा जी का जवाब

(दामोदर दास मूंदड़ा)

[कुछ पढ़े लिखे जानकारों को और सरकारी हलक़ों में यह शिकायत है कि विनोबा जी अपने भूदान यज्ञ के ज़रिये ज़मीन के टुकड़े टुकड़े करके उसे किसी काम का नहीं रहने देंगे. इस बारे में खास तौर से शिकायत श्री राम कृष्न पाटिल को है जो प्लानिंग कमीशन के मेम्बर हैं. विनोबा जी ने इसका जो आसानी जवाब दिया है वह हम उनके सेक्रेटरी भाई दामोदार दास मूँदड़ा के क़लम से लेकर नीचे दे रहे हैं. हमें उम्मीद है कि हिन्द सरकार का प्लानिंग कमीशन और प्लानिंग मिनिस्टर जो सहयोगी खेती के नाम पर लट्टू हो कर ट्रैक्टरों, मशीनों और विलायती खाद को देश के लाचार किसानों के मत्थे जबरदस्ती मढ़ रहे हैं इस पर गहराई से सोच कर मुनासिब क़दम उठायेंगे—एडीटर]

نے ہی اُس کو روک دیا اور کہا—"نہیں، دی دی آپ بڑی آدمن ہیں۔ ہم لوگوں کو تو ہمیشہ ہی گالی کھانی پڑتی ہے۔ اگر اُنہوں نے آپ کو کچھ کہہ دیا تو آپ کی عزت اُتر جائے گی۔ پولیس والے اِن کی مٹھی میں ہیں، رہنا مشکل کر دیں گے۔" اِن سب باتوں سے لکھیا، منی کے اور بھی نزدیک آ گئی ہے۔ کل میں نے جو اُس سے یہ کہا—"چلو اس نرک سے نکل کر پھر شہر چلیں۔ اے۔ جی آفس کے صاحب تو مجھے مانتے ہی ہیں، نوکری ملنے میں مشکل نہیں ہوگی۔" تو منی نے کڑا رخ کر کے جواب دیا—"شرم نہیں آتی، اِس بیچاری کو اِس مصیبت میں چھوڑ کر کائروں کی طرح بھاگنے کو کہتے ہو۔"

میں نے کہا—"اگر لکھیا کا اتنا خیال ہے تو اُس کو بھی ساتھ لے چلو۔"

منی اِس پر راضی ہوگئی۔ اس نے کہا—"ایک سمے بھوجن کریں گے، دوسرے وقت چنے چبائیں گے اُس وقت تک جب تک لکھیا کو مل میں نوکری نہ مل جائے۔" لیکن جب اُس نے اِس بات کا پرستاؤ لکھیا سے کیا تو اُس نے صاف کہا—"مگر دی دی، وہ بوکھل کہاں جائے گا، اُسے کیسے چھوڑ سکتی ہوں۔" منی نے اُسے پھر سمجھایا تمہاری جاتی میں تو چھوڑنے چھاڑنے کا رواج ہے۔ تو اس نے کہا—"یہ سب تو ٹھیک ہے دی دی، مگر جانے کیوں اُسے چھوڑنے کا جی نہیں چاہتا۔"

عجیب بات ہے میں دبدھا میں ہوں کہ کیا کروں۔

شری پاٹل کو ونوبا جی کا جواب

(دامودر داس موندڑا)

[کچھ پڑھے لکھے جانکاروں کو اور سرکاری حلقوں میں یہ شکایت ہے کہ ونوبا جی اپنے بھودان یگہ کے ذریعے زمین کے ٹکڑے ٹکڑے کرکے اُسے کسی کام کا نہیں رہنے دیں گے۔ اِس بارے میں خاص طور سے شکایت شری رام کرشن پاٹل کو ہے جو پلاننگ کمیشن کے ممبر ہیں۔ ونوبا جی نے اِس کا جو آسانی جواب دیا ہے وہ ہم اُن کے سکریٹری بھائی دامودر داس موندڑا کے قلم سے لیکر نیچے دے رہے ہیں۔ ہمیں اُمید ہے کہ ہند سرکار کا پلاننگ کمیشن اور پلاننگ منسٹر جو سہیوگی کھیتی کے نام پر لٹو ہوکر ٹریکٹروں، مشینوں اور ولایتی کھاد کو دیش کے لاچار کسانوں کے متھے زبردستی مڑھ رہے ہیں اِس پر گہرائی سے سوچ کر مناسب قدم اُٹھائیں گے—ایڈیٹر]

ते और जुआ खेलते थे, उन्होंने उससे अपने पचास
के बदले डेढ़ सौ रुपया वसूल करने के फेर में,
गन्दे नाले में डुबो दिया था, खाली उसका हाथ, जिसे
कड़े थे, ऊपर था और इस तरह उसे दो मिनट तक
रहे.

लखिया सुन्दर सच्चरित्र औरत है. यह अचरज की
है कि इस गांव की हवा उसे नहीं लगी है. अपने काम
के अलावा वह किसी से कोई रिश्ता नहीं रखती.
चार बच्चे हैं, जिनमें सब से बड़े की उम्र दस साल
ज़्यादा नहीं है. घरेलू काम काज से खाली होने पर
बान बंटा करती है, जिससे सात आठ आना रोज़ तो
पैदा कर ही लेती है. किसी के मकान पर बिना ज़रूरत
औरतों की तरह गप्पें लड़ाना, बात बात में लड़ना
ना, गाली गलौज करना, चुग़ली खाना, दूसरे मर्दों
आंखें लड़ाना वग़ैरा उसकी आदत में दाखिल नहीं है.
मानों में वह एक पति व्रता औरत है. इधर जब से मैंने
के पड़ोस में अपना मकान लिया है तब से जाने
समझ कर उसने मेरी बीवी के साथ मेल कर लिया
और अक्सर वह उससे मिलती है. अपनी दर्द भरी
नी सुना कर ऐसी हमदर्दी की भीक मांगती है जिसके
हमारे परिवार में साधन भी नहीं हैं.

आज वह हमदर्दी अपनी आखिरी सीमा तक पहुँच
है. बुद्धू अपना दो सौ रुपये का एक्का पचास रुपये में
कर उसे जुआ में हार कर भागा है. इसके अलावा
क़र्ज़ भी कर चुका है. इसकी वसूली के लिये उसके
पर तीन चार दिन से गुन्डों का जमाव लगा रहता
ख़बर है कि बुद्धू ने उनसे कहा था कि क्यों घबराते
मकान बेच कर पैसा पैसा चुका दूंगे. अब गुन्डे
की बीवी को गालियां देते हैं. अब उन्हें लखिया को खुले
छेड़ने का मौक़ा मिल गया है. अक्सर जब मैं घर
होता हूँ तो आंगन से तरह तरह की बातें सुनाई देती
और कानों को क्या करूँ ? न भी सुनाई देतीं तो
या तो मुन्नी से सब कुछ बता जाती है. उसकी कड़ी
र शर्म वालों के लिये काफ़ी थी, मगर इन बेशर्मों के
तो वे आग में घी का काम करती है. रोती हुई
या मेरी बीवी से कहती है,—"दीदी मेरी इन गुन्डों से
करो, नहीं तो मैं अपने बच्चों सहित कुएँ में डूब
." मुन्नी या मैं करें तो क्या करें ? मुन्नी के जी में
कि अपने कड़े बेच कर लखिया को दूसरा एक्का
वा दे, पर न मालूम किस वजह से वह रुक गई. पर
लखिया से बेहद प्यार करने लगी है और उसके संकट
अपना संकट समझती है. उसके जी में कई बार आया
खुद निकल कर गुन्डों को फटकारे. मगर लखिया

پلنے اور جوا کھیلتے تھے' اُنہوں نے اُس سے اپنے پچاس
روپے کے بدلے ڈیڑھ سو روپیہ وصول کرنے کے پھیر
میں' اُسے گندے نالے میں ڈبو دیا تھا' خالی اُس کا
ہاتھ' جسے وہ پکڑے تھے' اوپر تھا اور اِس طرح اُسے دو
منٹ رکھے رہے ۔

لکھیا سندر سچرتر عورت ہے ۔ یہ اچرج کی بات
ہے کہ اِس گاؤں کی ہوا اُسے نہیں لگی ہے ۔ اپنے کام کاج کے
علاوہ وہ کسی سے کوئی رشتہ نہیں رکھتی ۔ اُس کے چار
بچے ہیں' جن میں سب سے بڑے کی عمر دس سال سے زیادہ
نہیں ہے ۔ گھریلو کام کاج سے خالی ہونے پر وہ بان بٹا
کرتی ہے ۔ جس سے سات آٹھ آنہ روز تو وہ پیدا کر ہی
لیتی ہے ۔ کسی کے مکان پر بنا ضرورت دوسری عورتوں
کی طرح گپیں لڑانا' بات بات میں لڑنا جھگڑنا گالی گلوچ
کرنا' چغلی کھانا' دوسرے مردوں سے آنکھیں لڑانا وغیرہ اُس
کی عادت میں داخل نہیں ہے ۔ سچے معنوں وہ ایک پتی
ورتا عورت ہے ۔ اِدھر جب سے میں نے بدھو کے پڑوس
میں اپنا مکان لیا ہے تب سے جانے کیا سمجھکر اُس
نے میری بیوی کے ساتھ میل کر لیا ہے اور اکثر وہ اُس
سے ملتی ہے ۔ اپنی درد بھری کہانی سنا کو ایسی
ہمدردی کی بھیک مانگتی ہے جس کے لئے ہمارے
پریوار میں سادھن بھی نہیں ہیں ۔

آج وہ ہمدردی اپنی اخری سیما تک پہنچ چکی
ہے ۔ بدھو اپنا دو سو روپئے کا یکہ پچاس روپئے میں
بیچ کر اُسے جوا میں ہار کر بھاگا ہے ۔ اِس کے علاوہ دو
سو روپے قرض بھی کر چکا ہے ۔ اِس کی وصولی کے لئے
اُس کے مکان پر تین چار دن سے گنڈوں کا جماؤ لگا رہتا
ہے ۔ خبر ہے کہ بدھو نے اُن سے کہا تھا کہ کیوں گھبراتے ہو
مکان بیچ کر پیسہ پیسہ چکا دینگے ۔ اب گنڈے اُسکی
بیوی کو گالیاں دیتے ہیں ۔ اب اُنہیں لکھیا کو کھلے
عام چھیڑنے کا موقع مل گیا ہے ۔ اکثر جب میں گھر پر
ہوتا ہوں تو آنگن سے طرح طرح کی باتیں سنائی دیتی
ہیں اور کانوں کو کیا کروں ؟ نہ بھی سنائی دیتی تو
لکھیا تو منی سے سب کچھ بتا جاتی ہے ۔ اُسکی کڑی
پھٹکار شرم والوں کے لئے کافی تھی' مگر اِن بے شرموں
کے لئے تو وہ آگ میں گھی کا کام کرتی ہے ۔ روتی ہوئی
لکھیا میری بیوی سے کہتی ہے—'' دی دی میری اِن
گنڈوں سے رکشا کرو' نہیں تو میں اپنے بچوں سمیت کنوئیں
میں ڈوب مروں گی ۔'' منی یا میں کریں تو کیا کریں ؟
منی کے جی میں آیا کہ اپنے کڑے بیچ کر لکھیا کو دوسرا
یکہ خریدوا دے' پر نہ معلوم کس وجہ سے وہ رک گئی ۔
پر وہ لکھیا سے بے حد پیار کرنے لگی ہے اور اُس کے سنکٹ
کو اپنا سنکٹ سمجھتی ہے ۔ اُس کے جی میں کئی بار
آیا کہ وہ خود نکل کر گنڈوں کو پھٹکارے ۔ مگر لکھیا

लोग उंगलियों पर गिनाये जा सकते हैं. मिल के क्लर्क वगैरा ज़ियादातर शहर के हैं, जो ड्यूटी ख़त्म होने पर वापस चले जाते हैं. उनके और दूसरे मज़दूरों के क्वार्टरों में सौ से ज़ियादा लोग न रहते हैं, न उनके रहने की जगह है. हाई स्कूल में पढ़ने वाले लड़के आस पास के गांव से आते हैं और शाम को चले जाते हैं. और बोरडिंग हाउस में स्कूल के स्टाफ़ के लोगों और दस पांच लड़कों के अलावा कोई नहीं रहता.

हां शहर की सभी बुराइयां यहां मौजूद हैं. शराब पीना, जुआ खेलना, बदमाशी, गुन्डा शाही, मेरे शहर के उस मुहल्ले से यहां दस गुना है. शराब पीने वालों से, नाल निकालने वालों से, औरतें भगाने वालों से, एक लफ़्ज़ में सभी जरायम पेशा वालों से पुलिस को अपना हिस्सा घर बैठे मिल जाता है. अभी उस दिन, उस राही की गठरी लूटने वाले सुक्खू पासी को उसके भाई ने बड़े तपाक से पुलिस हवालात से छुड़ाते हुये कहा "जब तक दीवान जी सलामत हैं और मेरे भाई का दम है सत्तर रुपयों के बदले कई सत्तर सौ आते रहेंगे." अगर मुझे यह सब मालूम होता तो डेढ़ सौ रुपये क्या पांच सौ रुपय पर भी इस नौकरी को लात मारता. घनी बस्ती के बीच मेरे मकान के सामने से कौन ऐसा वक़्त होता है, जब दो चार गुन्डे कन्धे पर लाठी रक्खे, माथे पर रोली का टीका लगाये, बनियाइन या क़मीज़ और तहमद पहिने न गुज़रते हों. सामने रहने वाले बुद्धू नामक एक्केवान की बीबी, लखिया पर उनकी निगाह है.

बुद्धू दर असल बुद्धू है. जब उसे शराब पीने को नहीं मिलती तो उसकी बात चीत और व्यौहार से उसे ख़राब आदमी नहीं कहा जा सकता. मगर शराब के नशे में मैंने उसे कई बार दरवाज़े पर लाठी चमकाते, पैंतरा घुमाते हुये अपने धोबी पड़ोसी को ललकार कर यह कहते हुये सुना है—"देख, बुद्धू गुन्डे की शान, मेरे रुपयों का ब्याज दे नहीं तो तेरे सर की ख़ैर नहीं." यह दो जुमले शराब पीने पर उसे ख़ास तौर से याद आते हैं. मगर सभी जानते हैं कि उसी धोबी से वह बार बार क़र्ज़ लेता और उसके यहां अपनी स्त्री के कड़े वग़ैरा गिरवी रखता रहा है. अक्सर जब वह मुझ से मिलता है तो मैं उसे शराब पीने, जुआ खेलने के ख़िलाफ़ ज़ोर दिया करता हूँ और तब उस समय वह बार बार क़सम खाता है कि बाबू जी अब मुझे ऐसा करते देख लें, तो सौ जूते गिन कर मारना. मगर लखिया ने मेरी बीबी को बतलाया है कि उसकी बातों का कोई विश्वास नहीं. एक बार तो ऐसा हुआ था कि जो गुन्डे उसे बहका कर उसके साथ शराब पीते

ـ انگلیوں پر گنائے جاسکتے ہیں. مل کے کلرک وغیرہ زیادہ تر شہر کے ہیں، جو ڈیوٹی ختم ہونے پر واپس چلے جاتے ہیں. اُن کے اور دوسرے مزدوروں کے کوارٹروں میں سو سے زیادہ لوگ نہ رہتے ہیں، نہ اُن کے رہنے کی جگہ ہے. ہائی اسکول میں پڑھنے والے لڑکے آس پاس کے گاؤں سے آتے ہیں اور شام کو چلے جاتے ہیں. اور بورڈنگ ہاؤس میں اسکول کے اسٹاف کے لوگوں اور دس پانچ لڑکوں کے علاوہ کوئی نہیں رہتا.

ہاں شہر کی سبھی برائیاں یہاں موجود ہیں. شراب پینا، جوا کھیلنا، بدمعاشی، گنڈا شاہی، میرے شہر کے اس محلے سے یہاں دس گنا ہے. شراب پینے والوں سے، نال نکالنے والوں سے، عورتیں بھگانے والوں سے، ایک لفظ میں سبھی جرائم پیشہ والوں سے پولیس کو اپنا حصہ گھر بیٹھے مل جاتا ہے. ابھی اُس دن، اُس راہی کی گٹھری لوٹنے والے سکھو پاسی کو اُس کے بھائی نے بڑے تپاک سے پولیس حوالات سے چھڑاتے ہوئے کہا—"جب تک دیوان جی سلامت ہیں اور میرے بھائی کا دم ہے ستر روپیوں کے بدلے کئی ستر سو آتے رہیں گے." اگر مجھے یہ سب معلوم ہوتا تو ڈیڑھ سو کیا پانچسو روپیہ پر بھی اس نوکری کو لات مارتا. گھنی بستی کے بیچ میرے مکان کے سامنے سے کون ایسا وقت ہوتا ہے، جب دو چار گنڈے کندھے پر لاٹھی رکھے، ماتھے پر رولی کا ٹیکہ لگائے، بنیائن یا قمیز اور تہمد پہنے نہ گذرتے ہوں. سامنے رہنے والے بدھو نامک یکہ وان کی بیوی، لکھیا پر اُن کی نگاہ ہے.

بدھو دراصل بدھو ہے. جب اُسے شراب پینے کو نہیں ملتی، تو اُس کی بات چیت اور بیوہار سے اُسے خراب آدمی نہیں کہا جاسکتا. مگر شراب کے نشے میں میں نے اُسے کئی بار دروازے پر لاٹھی چمکاتے، پینترا گھوماتے ہوئے اپنے دھوبی پڑوسی کو للکار کر یہ کہتے ہوئے سنا ہے—"دیکھ، بدھو گنڈے کی شان، میرے روپیوں کا بیاج دے نہیں تو تیرے سر کی خیر نہیں." یہ دو جملے شراب پینے پر اُسے خاص طور سے یاد آتے ہیں. مگر سبھی جانتے ہیں کہ اُسی دھوبی سے وہ بار بار قرض لیتا اور اُس کے یہاں اپنی بیوی کے کڑے وغیرہ گروی رکھتا رہا ہے. اکثر جب وہ مجھ سے ملتا ہے، تو میں اُسے شراب پینے، جوا کھیلنے کے خلاف زور دیا کرتا ہوں اور تب اُس سمے وہ بار بار قسم کھاتا ہے کہ بابوجی اب مجھے ایسا کرتے دیکھ لیں، تو سو جوتے گن کر مارنا. مگر لکھیا نے میری بیوی کو بتلایا ہے کہ اُس کی باتوں کا کوئی وشواس نہیں. ایک بار تو ایسا ہوا تھا کہ جو گنڈے اُسے بہکا کر اُسکے ساتھ شراب پیتے

मेरी दुविधा

(ओंकार नाथ शास्त्री)

कुछ दिन पहले मैं ए. जी. आफ़िस में काम करता था. तब मुझे मंहगाई लगा कर सौ रुपये मासिक पड़ते थे. मेरी बीवी मुन्नी और तीन बच्चों के छोटे परिवार को भी इतनी आमदनी से पालना मुश्किल था. दो पढ़ने वाले लड़कों की फ़ीस, किताब काग़ज़ का प्रबन्ध, किराया मकान, राशन, कपड़ा, धोबी, नाई वग़ैरा ख़र्चों के मदों में से कोई न कोई मुझे क़र्ज़ लेने के लिये मजबूर करता रहा. यहां तक कि जब पिता जी की मृत्यु के बाद डेढ़ साल के भीतर मेरे ऊपर पांच सौ रुपये का क़र्ज़ हो गया तो मैं ज़रा डर सा गया.

मुन्नी ख़र्चीली औरत नहीं है, न गृहस्थी के चलाने में कभी मेरी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ एक पैसा भी बाहरी टीम टाम में ख़र्च करती है. हां, उसे शहरी ज़िन्दगी बहुत प्यारी है. इसलिये आज से छै महीने पहले जब मैंने इस गांव की चीनी मिल की डेढ़ सौ रुपये की क्लर्की स्वीकार की तो उसने बहुत चाहा था कि मैं देहात न आऊं. उसने साफ़ कहा था कि "मैं गांव की ज़िन्दगी से ऊब गई हूं, वहां के आपसी झगड़े, मुक़दमे बाज़ी, बेपढ़ी जनता की संगति, हर तरह से मुरदा ज़िन्दगी मुझे पसन्द नहीं है." उसने इतिहास की अपनी सी थोड़ी जानकारी की आड़ लेते हुये कहा था कि "यह वह गांव का जीवन नहीं है जिसकी सादगी सच्चाई, और ऊंचाई की तारीफ़ करते करते विदेशी यात्रियों का मुँह सूखता था. आज के भारत में तो सिर्फ़ झगड़ा फ़साद ही दीखता है." गांव के जीवन से उसकी चिढ़ इतनी गहरी हो गई थी, कि शादी ब्याह के मौक़े पर जब वह मैके जाती तो तीन चार दिन से ज़ियादा उसका वहां ठहरना मुश्किल हो जाता. फिर भी वह मेरे कहने का साफ़ साफ़ विरोध न कर सकी और उसे यहां आने के लिये मजबूर होना पड़ा.

शहर से तीन मील दूर यह गांव एक दम गांव ही नहीं कहा जा सकता. बच्चों के पढ़ने के लिये हाई स्कूल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का एक छोटा सा अस्पताल तो यहां हैं ही. शहर जाने के लिये गांव के दक्खिन से पचास क़दम के फ़ासले पर पक्की सड़क भी है, जिसके दूसरी तरफ़ चीनी मिल, स्कूल और अस्पताल हैं. लेकिन यहां शहरी ज़िन्दगी की अच्छी बातों में से इसके अलावा और कुछ नहीं है. बस्ती बहुत बड़ी होते हुये भी पढ़े लिखे

میری دبدھا

(اونکار ناتھ شاستری)

کچھ دن پہلے میں اے . جی . آفس میں کام کرتا تھا . تب مجھے مہنگائی لگاکر سو روپئے ماسک پڑتے تھے. میری بیوی منی اور تین بچوں کے چھوٹے پریوار کو بھی اتنی آمدنی سے پالنا مشکل تھا. دو پڑھنے والے لڑکوں کی فیس' کتاب کاغذ کا پربندھ' کرایہ مکان' راشن' کپڑا' دھوبی' نائی وغیرہ خرچوں کے مدوں میں سے کوئی نہ کوئی مجھے قرض لینے کے لئے مجبور کرتا رہا . یہاں تک کہ پتاجی کی مرتیو کے بعد ڈیڑھ سال کے بھیتر میرے اوپر پانچ سو روپیہ کا قرض ہوگیا تو میں ذرا ڈر سا گیا .

منی خرچیلی عورت نہیں ہے' نہ گرہستی کے چلانے میں کبھی میری مرضی کے خلاف ایک پیسہ بھی باہری ٹیم ٹام میں خرچ کرتی ہے. ہاں' اسے شہری زندگی بہت پیاری ہے . اس لئے آج سے چھ مہینے پہلے' جب میں نے اس گاؤں کی چینی مل کی ڈیڑھ سو روپئے کی کلرکی سویکار کی' تو اس نے بہت چاہا تھا کہ میں دیہات نہ آؤں . اس نے صاف کہا تھا کہ ''میں گاؤں کی زندگی سے اوب گئی ہوں' وہاں کے آپسی جھگڑے' مقدمے بازی' بے پڑھی جنتا کی سنگتی' ہر طرح سے مردہ زندگی' مجھے پسند نہیں ہے.'' اس نے اتہاس کی اپنی تھوڑی سی جانکاری کی آڑ لیتے ہوئے کہا تھا کہ '' یہ وہ گاؤں کا جیون نہیں ہے' جس کی سادگی' سچائی اور اونچائی کی تعریف کرتے کرتے ودیشی یاتریوں کا منہ سوکھتا تھا . آج کے بھارت میں تو صرف جھگڑا فساد ہی دیکھتا ہے.'' گاؤں کے جیون سے اس کی چڑھ اتنی گہری ہوگئی تھی کہ شادی بیاہ کے موقعے پر جب وہ میکے جاتی تو تین چار دن سے زیادہ اس کا وہاں ٹھہرنا مشکل ہو جاتا. پھر بھی وہ میرے کہنے کا صاف صاف وِرودھ نہ کر سکی اور اسے یہاں آنے کے لئے مجبور ہونا پڑا .

شہر سے تین میل دور یہ گاؤں ایک دم گاؤں ہی نہیں کہا جاسکتا . بچوں کے پڑھنے کے لئے ہائی اسکول اور ڈسٹرکٹ بورڈ کا ایک چھوٹا سا اسپتال تو یہاں ہیں ہی. شہر جانے کے لئے گاؤں کے دکھن سے پچاس قدم کے فاصلے پر پکی سڑک بھی ہے' جس کے دوسری طرف چینی مل' اسکول اور اسپتال ہیں . لیکن یہاں شہری زندگی کی اچھی باتوں میں اس کے علاوہ اور کچھ نہیں ہے . بستی بہت بڑی ہوتے ہوئے بھی پڑھے لکھے

बापू, वह मश्रुवाला जो ख़ूबसूरती नुमायश से इतने घबरा उठे हैं, इन्हें अगर राष्ट्रपति के आशीर्वाद पाये हुये श्री सोमनाथ जी के दर्शन करा लिये जायें, और जगन्नाथ पुरी का तीर्थ करा दिया जाय,, तो यह विरोध करने की जगह, ख़ूबसूरती नुमायश का समर्थन करने लगे, तो हमारा क़लम झूटा समझा जाये.

बापू, सुन्दरता या ख़ूबसूरती एक सच्चाई है, फिर चाहे वह तन की हो मन की हो, मूरत की हो, गुन की हो या और किसी चीज़ की हो उसकी नुमायश होनी ही चाहिये.

बापू, कुछ रिशियों ने प्रानों की हिंसा को हिंसा माना. उनके धर्म की रूह से किसी को अच्छा गाना न सुनने देना हिंसा है, किसी को अच्छा रूप न देखने देना हिंसा है. फिर क्या यह हिंसा न होगी कि ख़ूबसूरती नुमायश को रोका जाये, या रोके जाने का आन्दोलन किया जाये. हमारी राय में ख़ूबसूरती नुमायश को रोकना असत्य और हिंसक व्यवहार है. बापू, अगर आप आज जीवित होते, तो हम ज़रूर आपकी अदालत में, मश्रुवाला के ख़िलाफ़, असत्वादी और हिंसक होने का दावा दायर करते. अब किसके पास जायें.

बापू, जब स्वयम्बर प्रथा हमारे यहा थी, तब मर्द पूरे आज़ाद थे. स्वयं बधू प्रथा के जारी किये बिना, औरतों की पूरी आज़ादी साबित नहीं की जा सकती.

बापू, अब राजा तो रहे नहीं, तो यह काम नगरों में नगरपाल के साहब ज़ादों से शुरू किया जा सकता है कि वह अपना स्वयं बधू यज्ञ करें. इसी तरह राज में राजपाल पुत्रों से. और भारत में राष्ट्रपति के साहब ज़ादे से किया जाना इस तरह की बहादुरी का सबूत है.

यह ठीक है कि रह रिवाज का अंकुर अभी जल्दी नहीं फूट सकता. तब तक यह काम तो शुरू हो जाना ही चाहिये कि नगर कुमारियों को, नगरपाल पुत्र ताज पहनाया करें. इसी तरह राज कुमारियों को राजपाल पुत्र वग़ैरा.

बम्बई के मेयर ने सचमुच ज़ियादती की कि ताज पहनाने का काम ज़बरदस्ती अपने हाथ ले लिया. बापू क्या आप की राय में यह ठीक न होगा कि बम्बई के मेयर के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा चलाया जाये ?

बापू के भारत की जय.

बापू, आप तो कुछ बोलते नहीं, ज़रा मुस्करा ही दीजिये.

—भगवानदीन

باپو' یہ مشروواؒلا جو خوبصورتی نمائش سے اتنے گھبرا اٹھے ہیں' انہیں اگر راشٹر پتی کے آشیرواد پائے ہوئے شری سومناتھ جی کے درشن کرا لئے جائیں' اور جگناتھ پوری کا تیرتھ کرادیا جائے' تو یہ وروده کرنے کی جگہ' خوبصورتی نمائش کا سمرتھن نہ کرنے لگے' تو ہمارا قلم جھوٹا سمجھا جائے .

باپو' سندرتا یا خوبصورتی ایک سچائی ہے' پھر چاہے وہ تن کی ہو' من کی ہو' مورت کی ہو' گن کی ہو یا اور کسی چیز کی ہو اُس کی نمائش ہونی ہی چاہئے.

باپو' کچھ رشیوں نے پرانوں کی ہنسا کو ہنسا مانا. اُن کے دھرم کی روح سے کسی کو اچھا گانا نہ سننے دینا ہنسا ہے' کسی کو اچھا روپ نہ دیکھنے دینا ہنسا ہے . پھر کیا یہ ہنسا نہ ہوگی کہ خوبصورتی نمائش کو روکا جائے' یا روکے جانے کا آندولن کیا جائے. ہماری رائے میں خوبصورتی نمائش کو روکنا استیہ اور ہنسک ویوہار ہے باپو' اگر آپ آج جیوت ہوتے' تو ہم ضرور آپ کی عدالت میں' مشروواؒلا کے خلاف' استیہ‌وادی اور ہنسک ہونے کا دعوی دائر کرتے . اب کس کے پاس جائیں .

باپو' جب سوئمبر پرتھا ہمارے یہاں تھی' تب مرد پورے آزاد تھے . سوئم بدھو پرتھا کے جاری کئے بنا' عورتوں کی پوری آزادی ثابت نہیں کی جاسکتی .

باپو' اب راجہ تو رہے نہیں' تو یہ کام نگروں میں نگرپال کے صاحب زادوں سے شروع کیا جاسکتا ہے کہ وہ اپنا سوئم بدھو یگیہ کریں . اسی طرح راج میں راجپال پتروں سے. اور بھارت میں راشٹر پتی کے صاحب زادے سے کیا جانا اِس طرح کی بہادری کا ثبوت ہے .

یہ ٹھیک ہے کہ اس رواج کا انکر ابھی جلدی نہیں پھوٹ سکتا. تب تک یہ کام تو شروع ہو جانا ہی چاہئے کہ نگر کماریوں کو' نگر پال پتر تاج پہنایا کریں . اِسی طرح راج کماریوں کو راج پال پتر وغیرہ .

بمبئی کے میئر نے سچ مچ زیادتی کی کہ تاج پہنانے کا کام زبردستی اپنے ہاتھ لے لیا . باپو کیا آپ کی رائے میں ٹھیک نہ ہوگا کہ بمبئی کے میئر کے خلاف مقدمہ چلایا جائے ؟

باپو کے بھارت کی جے .

باپو' آپ تو کچھ بولتے نہیں' ذرا مسکرا ہی دیجئے.

—بھگوان‌دین

ऐसी कोई बात करने में तो उसे कोई झिझक नहीं होनी चाहिये, जो किसी न किसी रूप में भारत में होती चली आई है, जो किसी न किसी रूप में भारती संस्कृति का हिस्सा बनी हुई है.

बापू, यों तो अगर देखा जाये, तो हमारे देश में, नगर कन्यायें हमेशा से होती आई हैं. यह ठीक है कि उनके रिवाज आज से अलग थे, पर यही तो इस बात का सबूत है कि आज हम उसी बात को धो पोंछ कर नया रूप दे रहे हैं.

दिल्ली कुमारी, कलकत्ता कुमारी, मद्रास या बम्बई कुमारी, या भारत कुमारी, मौर्य और गुप्त काल की नगर कन्याओं का दूध में धुला रूप हैं.

बापू, कल ही किसी लड़की ने हमसे व्यंग में कहा था, "मर्दों को घबड़ाने की क्या ज़रूरत, वह मियां दिल्ली, मियां कलकत्ता, मियां बम्बई, मद्रास, या मियां भारत की नुमाइशें क्यों नहीं शुरू कर देते ?" तब हमने यह जवाब दे दिया था कि सलाह तो तुम्हारी ठीक है, पर यह तो भारत के लिये आगे बढ़ना नहीं पीछे हटना होगा. लड़की बोली, "कैसे ?" हमने जवाब दिया, "स्वयम्बर प्रथा में और होता ही क्या था, लड़की ही तो सैकड़ों में से सबसे ख़ूबसूरत को छांट लेती थी. अगर उन दिनों हर को ख़ूबसूरत थोड़ा बहुत बहादुरी का हाल भी बताना पड़ता था, तो आज भी सुन्दरी कुमारियों को, दाख़ला टिकट मिलने में यह ज़रूरी है कि वह किसी कालेज में पढ़ी हो, और अठारह और बाईस के बीच में हो.

बापू, स्वयम्बर पुरानी चीज़ हो चुकी, उससे आगे बढ़ना हमारा काम है. वह आगे बढ़ना ही होगा कि स्वयंबर की प्रथा को जन्म दिया जाये. ख़ूबसूरती नुमायश उसी तरफ़ बढ़ने का पहला क़दम है. फिर न जाने क्यों कुछ लोगों को इसमें दुराचार के कांटे दिखाई देते हैं, व्यभिचार की गंध आती है, या अनाचार का ख़तरा दिखाई देता है ?

बापू, भारत के जिस पूज्य ग्रंथ महा भारत ने, भीष्म पितामा जैसे परम ब्रह्मचारी अम्बा और अम्बालिका को, अपने भाई के लिये उड़ा ले जाते हैं. वहां ख़ूबसूरती नुमायश पर इतना शोर मचाने की हिम्मत लोग कैसे करते हैं ?

बापू, जिस देश में ख़ूबसूरती नुमायश से भी आगे की नुमायश पूजा की चीज़ें बनी हों, वहां जिनको ख़ूबसूरती नुमायश में ख़तरा दिखाई दे, तो यही समझना चाहिये कि उन्हें अपने मन पर पूरा क़ाबू नहीं है.

ایسی کوئی بات کرنے میں تو اُسے کوئی جھجھک نہیں ہونی چاہئیے' جو کسی نہ کسی روپ میں بھارت میں ہوتی چلی آئی ہے' جو کسی نہ کسی روپ میں بھارتی سنسکرتی کا حصہ بنی ہوئی ہے ۔

باپو' یوں تو اگر دیکھا جائے' تو ہمارے دیش میں' نگر کنیائیں ہمیشہ سے ہوتی آئی ہیں ۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُن کے رواج آج سے الگ تھے' پر یہی تو اس بات کا ثبوت ہے کہ آج ہم اُسی بات کو دھو پونچھکر نیا روپ دے رہے ہیں ۔

دلی کماری' کلکتہ کماری' مدراس یا بمبئی کماری' یا بھارت کماری' موریہ اور گپت کال کی' نگر کنیاؤں کا دودھ میں دھلا روپ ہیں ۔

باپو' کل ہی کسی لڑکی نے ہم سے ویئنگ میں کہا تھا' "مردوں کو گھبرانے کی کیا ضرورت' وہ میاں دلی' میاں کلکتہ' میاں بمبئی' مدراس یا میاں بھارت کی نمائشیں کیوں نہیں شروع کر دیتے ؟" تب ہم نے یہ جواب دے دیا تھا' کہ صلاح تو تمہاری ٹھیک ہے' پر یہ تو بھارت کے لئے آگے بڑھنا نہیں پیچھے ہٹنا ہوگا ۔ لڑکی بولی' "کیسے ؟" ہم نے جواب دیا' "سوئمبر پرتھا میں اور ہوتا ہی کیا تھا ؟ لڑکی ہی تو سینکڑوں میں سے سب سے خوبصورت کو چھانٹ لیتی تھی ۔ اگر اُن دنوں ہر خوبصورت کو تھوڑا بہت بہادری کا حال بھی بتانا پڑتا تھا' تو آج بھی سندری کماریوں کو' داخلہ ٹکٹ ملنے میں یہ ضروری ہے کہ وہ کسی کالج میں پڑھی ہو' اور اٹھارہ اور بائیس کے بیچ میں ہو ۔

باپو' سوئمبر پرانی چیز ہو چکی' اُس سے آگے بڑھنا ہمارا کام ہے ۔ وہ آگے بڑھنا یہی ہوگا کہ اس سوئمبر کی پرتھا کو جنم دیا جائے ۔ خوبصورتی نمائش اُسی طرف بڑھنے کا پہلا قدم ہے ۔ پھر نہ جانے کیوں کچھ لوگوں کو اس میں دراچار کے کانٹے دکھائی دیتے ہیں' ویابھیچار کی گندھ آتی ہے' یا اناچار کا خطرہ دکھائی دیتا ہے؟

باپو' بھارت کے جس پوجیہ گرنتھ مہا بھارت نے بھیشم پتاما جیسے پرم برہمچاری امبا اور امبالکا کو' اپنے بھائی کے لئے اُڑا لے جاتے ہیں ۔ وہاں خوبصورتی نمائش پر اتنا شور مچانے کی ہمت لوگ کیسے کرتے ہیں ؟

باپو' جس دیش میں خوبصورتی نمائش سے بھی آگے کی نمائش پوجا کی چیزیں بنی ہوں' وہاں جن کو خوبصورتی نمائش میں خطرہ دکھائی دے تو یہی سمجھنا چاہئے کہ انہیں اپنے من پر پورا قابو نہیں ہے ۔

बापू से

रेल के डिब्बों मे लिखा मिलता है, "खिड़की से बाहर न झांकना, बड़ी भयानक बात है." इसी के आगे किसी मनचले ने लिख दिया था, 'पर होती है बड़े आनंद की.'

अंगरेज़ी कहावत है: दुख के बिना सुख कैसा, इस तरह की कहावते और भी इकट्ठी की जा सकती हैं, उनको यहां कहना बेकार होगा. यहां तो ख़ूबसूरती नुमायश को लेकर आप से बातें करनी हैं.

मश्रुवाला जैसे, आपके साथ काम करने वालों में से एक ने न जाने क्यों, इस बीसवीं सदी की भरी जवानी में ख़ूबसूरती नुमायश को, भयानक और नीच काम समझ लिया है !

अगर मश्रुवाला जी इलाहाबाद के मशहूर शायर, अकबर के शागिर्द रहे होते तो अजब नहीं उन्होंने आपके औरतों को पर्दे से बाहर लाने के काम पर, कितने छींटे फेंके होते.

यह ठीक है कि ख़ूबसूरती मैच को प्रेरना मिली हिन्दुस्तान की आज़ादी के आन्दोलन से, हुक्म मिला सीधा आप से. इससे क्या हज़ारों आदमी चिल्ला उठे थे कि ग़ज़ब हो गया, हमारी वह नारियां जिन्हें सूरज भी देखने की हिम्मत नहीं करता था, उन्हें सब कोइ देखे.

मुसलमानों में जब हिम्मत करके, कुछ लड़कियों ने अपने बुर्के फेंके नहीं, सिर्फ़ उतार कर ही रखे थे, तब 'अकबर' इलाहाबादी को एक किता लिखना पड़ा जिसका ख़ुलासा था, कि अकबर को जब यह चन्द बे परदा बीबियां नज़र आईं तो वह शर्म से ज़मीन में गड़ गया, जब उसने उन बीबियों से पूछा कि तुम्हारा पर्दा क्या हुआ, तो उन्होंने जवाब दिया, मर्दों की अक़्ल पर पड़ गया.

अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह अमान उल्ला ने अपनी बेग़म सुरैया को, जब पर्दे से बाहर किया, तो उसे अफ़ग़ानिस्तान से बाहर होना पड़ा.

ख़ूबसूरती नुमायश उसी तरह ख़तरों से भरा है, जिस तरह आज़ादी नुमायश, प्रेम या मुहब्बत नुमायश, सत्य नुमायश, या शिव प्रदर्शन या नुमायश.

बापू, अब आपका भारत, आपके समय से बहुत ज़ियादा आज़ाद है. आज वह सच्चे मानों में प्रजा भक्त है. आज उसकी गवर्नमेंट उसकी अपनी चुनी हुई है. आज भारत को यों तो सब कुछ कर डालने का अख़्तियार है, पर

باپو سے

ریل کے ڈبوں میں لکھا ملتا ہے، '' کھڑکی سے باہر نہ جھانکنا، بڑی بھیانک بات ہے .'' اسی کے آگے کسی منچلے نے لکھ دیا تھا، 'پر ہوتی ہے بڑے آنند کی.'

انگریزی کہاوت ہے : دکھ کے بنا سکھ کیسا، اسطرح کی کہاوتیں اور بھی اکٹھی کی جا سکتی ہیں، اُن کو یہاں کہنا بیکار ہوگا . یہاں تو خوبصورتی نمائش کو لے کر آپ سے باتیں کرنی ہیں .

مشروالا جیسے، آپ کے ساتھ کام کرنے والوں میں سے ایک نے، نہ جانے کیوں، اس بیسویں صدی کی بھری جوانی میں خوبصورتی نمائش کو، بھیانک اور نیچ کام سمجھ لیا ہے !

اگر مشروالا جی الہ‌آباد کے مشہور شاعر، اکبر کے شاگرد رہے ہوتے تو عجب نہیں اُنہوں نے آپ کے عورتوں کو پردے سے باہر لانے کے کام پر، کتنے چھینٹے پھینکے ہوتے .

یہ ٹھیک ہے کہ خوبصورتی میچ کو پریرنا ملی ہندستان کی آزادی کے آندولن سے، حکم ملا سیدھا آپ سے . اِس سے کیا ہزاروں آدمی چلا اٹھے تھے کہ غضب ہوگیا، ہماری وہ ناریاں جنہیں سورج بھی دیکھنے کی ہمت نہیں کر سکتا تھا، اُنہیں سب کوئی دیکھے .

مسلمانوں میں جب ہمت کر کے، کچھ لڑکیوں نے اپنے برقعے پھینکے نہیں، صرف اُتار کر رکھے تھے، تب 'اکبر' الہ‌آبادی کو ایک قطعہ لکھنا پڑا جس کا خلاصہ تھا کہ اکبر کو جب یہ چند بے پردہ بیویاں نظر آئیں تو وہ شرم سے زمین میں گڑ گیا، جب اُس نے اُن بیویوں سے پوچھا کہ تمہارا پردہ کیا ہوا، تو اُنہوں نے جواب دیا، مردوں کی عقل پر پڑ گیا .

افغانستان کے بادشاہ امان‌اللہ نے اپنی بیگم ثریا کو، جب پردے سے باہر کیا، تو اُسے افغانستان سے باہر ہونا پڑا .

خوبصورتی نمائش اسی طرح خطروں سے بھرا ہے، جس طرح آزادی نمائش پریم یا محبت نمائش، ستیہ نمائش یا شیو پردرشن یا نمائش .

باپو، اب آپ کا بھارت، آپ کے سمے سے بہت زیادہ آزاد ہے . آج وہ سچے معنوں میں پرجا بھکت ہے . آج اس کی گورنمنٹ اس کی اپنی چنی ہوئی ہے . آج بھارت کو یوں تو سب کچھ کر ڈالنے کا اختیار ہے، پر

: से एक दूसरे से मिल जुल रहे हैं, एक दूसरे की ायें देख रहे हैं, मदद दे रहे हैं, उनमें से स्फूर्ति ले रहे .गवान जाने इस तरह के शानदार प्रयोग को मैं कहां कर सकूंगा." (2 जुलाई 1949)

'साने गुरुजी स्मारक योजना' के कन्वीनर आचार्य वत 'आंतर भारती' के बारे में लिखते हैं :—

"अपनी कल्पना को अमली शकल देने के लिये साने जी कई क़दम उठा चुके थे. महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन ना के अधिवेशन में खुद उन्होंने 'आंतर भारती' के न्ध में ठहराव पेश किया था और महामहोपाध्याय वामन पोतदार जी के समर्थन के साथ सम्मेलन ने बड़े उत्साह से मान भी लिया था.

"गुरु देव की 'विश्व भारती' के सांस्कृतिक या कलचरी ल को महात्मा गांधी ने अपनी सत्याग्रह की राज । में जगह दे ही दी है. सत्याग्रही राजनीति में इनसानी . की बुनियाद पर खड़े होने के कारन द्वेश या : के लिये कभी कोई स्थान नहीं होता. गांधी जी ने ज की साधना के लिये सर्व धर्म समभाव की आवाज़ की थी. उनका अछूतोद्धार आन्दोलन असल मे बोद्धरिका ही आन्दोलन था. हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ ओं का पठन-पाठन करने की योजना को भी उन्होंने पैमाने पर चालना दी थी. गांधी जी के आश्रमों और त्मक काम करने वाली उनकी जुदा जुदा संस्थाओं मात्रा में 'आंतर भारती' के आदर्श को माना हुआ ई देता है. इसीलिये इसमें शक नहीं कि साने गुरुजी आंतर भारती' का काम रवीन्द्र नाथ और गांधीजी के तिक आदर्शों का ही एक स्वरूप है. इस काम में . अलग राजकाजी पक्षों में काम करने वाले कार्य-ओं को कलचरी नज़र से एक साथ आने का मौक़ा गा. हमारे जीवन विकास की नज़र से इसे एक ारी घटना समझा जा सकता है."

ज़ाहिर है कि साने गुरुजी के इस सपने को अमली . अगर पहनाया जा सका तो हिन्दुस्तान को आज बड़े बड़े सवालों का सामना करना पड़ रहा है उन्हें रने में आसानी होगी और अलग अलग फ़िरक़ों, बों और सूबों के लोगों में जो शक शुबहा व बदगुमा-र किये बैठी है वह दूर हो जायेगी. यह काम पहले तो ाष्ट्र शुरू में होगा और फिर धीरे धीरे दूसरे सूबों में . जायेगा. इसके लिये महाराष्ट्र में चंदा इकट्ठा किया हा है और अगर कोई प्रेमी इस काम में दिलचस्पी चाहें तो 'आचार्य भागवत, 12 तिलक रोड, पूना—2 े-पत्री करें.

پیار سے ایک دوسرے سے مل جل رہے ہیں' ایک دوسرے کی سنستھاؤں دیکھ رہے ہیں' مدد دے رہے ہیں' ان میں سے اسپھورتی لے رہے ہیں. بھگوان جانے اسطرح کے شاندار پریوگ کو میں کہاں شروع کرسکوں گا." (2 جولائی 1949)

'سانے گروجی اسمارک یوجنا' کے کنوینر آچاریہ بھاگوت 'آنتر بھارتی' کے بارے میں لکھتے ہیں :—

"اپنی کلپنا کو عملی شکل دینے کے لئے سانے گروجی کئی قدم اٹھا چکے تھے' مہاراشٹر ساہتیہ سمیلن کے پونا ادھیویشن میں خود انہوں نے 'آنتر بھارتی' کے سمبندھ میں ٹھہراؤ پیش کیا تھا اور مہامہو اپادھیائے دتّو وامن پوتدار جی کے سمرتھن کے ساتھ سمیلن نے اسے بڑے اتساہ سے مان بھی لیا تھا .

"گرو دیو کی 'وشو بھارتی' کی سانسکرتک یا کلچری خیال کو مہاتما گاندھی نے اپنی ستیاگرہ کی راجنیتی میں جگہ دے ہی رہی ہے . ستیاگرہی راجنیتی میں انسانی ایکتا کی بنیاد پر کھڑے ہونے کے کارن دویش یا ہنسا کے لئے کبھی کوئی استھان نہیں ہوتا . گاندھی جی نے سوراج کی سادھنا کے لئے سرو دھرم سمبھاؤ کی آواز اونچی کی تھی . ان کا اچھوتو دھار آندولن اصل میں مانو ادھار کا ہی آندولن تھا. ہندستان کی مختلف بھاشاؤں کا پٹھن پاٹھن کرنے کی یوجنا کو بھی انہوں نے بڑے پیمانے پر چالنا دی تھی . گاندھی جی کے آشرموں اور رچناتمک کام کرنے والی ان کی جدا جدا سنستھاؤں میں بہت بڑی ماترا میں 'آنتر بھارتی' کے آدرش کو مانا ہوا دکھائی دیتا ہے. اس لئے اس میں شک نہیں کہ سانے گروجی کی 'آنتر بھارتی' کا کام رویندر ناتھ اور گاندھی جی کے سانسکرتک آدرشوں کا ہی ایک سوروپ ہے . اس کام میں الگ الگ راج کاجی پکشوں میں کام کرنے والے کاریہ کرتاؤں کو کلچری نظر سے ایک ساتھ آنے کا موقع ملیگا . ہمارے جیون وکاس کی نظر سے اسے ایک شبھ کاری گھٹنا سمجھا جاسکتا ہے ."

ظاہر ہے کہ سانے گروجی کے اس سپنے کو عملی جامہ اگر پہنایا جا سکا تو ہندستان کو آج جن بڑے سوالوں کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے انہیں حل کرنے میں آسانی ہوگی اور الگ الگ فرقوں' مذہبوں اور صوبوں کے لوگوں میں جو شک شبہ و بدگمانی گھر کئے بیٹھی ہے وہ دور ہو جائیگی . یہ کام پہلے تو مہاراشٹر میں شروع ہوگا اور پھر دھیرے دھیرے دوسرے صوبوں میں پھیلتا جائیگا . اس کے لئے مہاراشٹر میں چندہ اکٹھا کیا جا رہا ہے اور اگر کوئی پریمی اس کام میں دلچسپی لینا چاہیں تو آچاریہ بھاگوت' 12 تلک روڈ' پونا—2 سے چٹھی پتری کریں .

फ़्रान्सीसी वग़ैरा ज़बानें सिखाने का इन्तज़ाम है, लेकिन ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ सारी हिन्दुस्तानी ज़बानें सीखी जा सकें. इसी वजह से 'आन्तर भारती' की नींव डालने का सपना मैं बरसों से देख रहा हूँ. अच्छी सी जगह हो, वहाँ उन उन सूबाई ज़बानों के अच्छे जानकार हों, वह सब हिन्दी जानते हों, उन उन ज़बानों का साहित्य वहाँ रहे, उस संस्था के साथ ही एक विद्यालय रहे, वहाँ हिन्दुस्तानी ज़बानें सीखने का इन्तज़ाम हो, विद्यार्थियों के कानों पर सब ज़बानें आती रहें, उन उन साहित्यों से मराठी की जानकारी कराई जाये; दूसरी ज़बान में भी माहवारी रिसाले चला कर उन उन सूबों को सारे भारत की पहचान कराई जाये. भारत के सूबे भी एक दूसरे को कहाँ पहचानते हैं? अलग अलग सूबों में चलने वाला बराबर काम, नई नई बातें हमें कहाँ मालूम हैं? 'आन्तर भारती' हिन्दुस्तानियों की एक दूसरे से भक्ति प्रेम से पहचान करा देगी. सेवा संस्कृति, कला, उदारता, ज्ञान विज्ञान एक पायदार काम चलाने की कोशिश 'आन्तर भारती' करती रहेगी, भारत की एकता का जगमगाता मक़सद सिखाने वाली 'आन्तर भारती' प्यारे महा राष्ट्र में खड़ी हो जाये. (7 मई 1949)

"सिर्फ़ ज़बानों की पढ़ाई ही इस संस्था का मक़सद नहीं है. उसके साथ दूसरी भी तहरीकों को जोड़ देने का इरादा है. कला और देहाती जीवन का भी वहाँ अध्ययन होना चाहिये. कलाकार यह बतायेंगे कि देहाती धंदों में कला को कैसे शामिल किया जाये, मामूली चटाईयां भी बुननी हों तो उनमें ख़ूबसूरती कैसे पैदा हो, मामूली बाँस की टोकरियों में हुनर को कैसे ज़ाहिर किया जाये, मामूली मिट्टी के बर्तनों को भी कैसे दिलकश और सुन्दर बनाया जाये, इसकी भी वहाँ खोज और पढ़ाई की जाय. इसलिये ग्रामउद्योगों के जानकारों और कलाकारों को वहाँ इज़्ज़त का दर्जा रहेगा. क़िस्म क़िस्म के नाच जमा कर के उनका प्रचार किया जायेगा. मिल जुल कर ज़िन्दगी बसर करने की तालीम वहां दी जायेगी, अदारे या केन्द्र के आस पास काफ़ी ज़मीन हो तो फल फूलों के पेड़, खेती बाड़ी वग़ैरा के प्रयोग किये जायेंगे. विद्यार्थी मेहनत करेंगे, नई नई चीज़ें पैदा करेंगे. मेरे मन का सपना तो अनंत है, लामहदूद है. उसे मैं काग़ज़ पर कहाँ तक पेश करूँ?

"राष्ट्र की महान एकता को जीवन में महसूस करने की मंगल कोशिशें हों. सारे देश भर ऐसे नज़ारे दिखाई देने चाहियें कि अलग अलग अच्छे अच्छे ख़यालों को अमल में लाने के लिये देश में रहने वाले सब तरह के लोग एक साथ मेहनत कर रहे हैं, हिन्दू, मुसलमान, ऊँची नीची समझी जाने वाली जातों के लोग मिल कर नई नई चीज़ें तैयार कर रहे हैं अलग अलग सूबों के लोग भी बड़े

فرانسیسی وغیرہ زبانیں سکھانے کا انتظام ہے، لیکن ایسی کوئی جگہ نہیں جہاں ساری ہندستانی زبانیں سیکھی جا سکیں. اسی وجہ سے 'آنتر بھارتی' کی نیو ڈالنے کا سپنا میں برسوں سے دیکھ رہا ہوں. اچھی سی جگہ ہو، وہاں ان ان صوبائی زبانوں کے اچھے جان‌کار ہوں، وہ سب ہندی جانتے ہوں، ان ان زبانوں کا ساہتیہ وہاں رہے، اس سنستھا کے ساتھ ہی ایک ودیالیہ رہے، وہاں ہندستانی زبانیں سیکھنے کا انتظام ہو، ودیارتھیوں کے کانوں پر سب زبانیں آتی رہیں، ان ان ساہتیوں سے مراٹھی کی جانکاری کرائی جائے؛ دوسری زبان میں بھی ماہواری رسالے چلاکر ان ان صوبوں کو سارے بھارت کی پہچان کرائی جائے. بھارت کے صوبے بھی ایک دوسرے کو کہاں پہچانتے ہیں؟ الگ الگ صوبوں میں چلنے والا برابر کام، نئی نئی باتیں ہمیں کہاں معلوم ہیں؟ 'آنتر بھارتی' ہندستانیوں کی ایک دوسرے سے بھکتی پریم سے پہچان کرادے گی. سیوا سنسکرتی، کلا، اُدارتا، گیان وگیان ایک پائدار کام چلانے کی کوشش 'آنتر بھارتی' کرتی رہے گی. بھارت کی ایکتا کا جگمگاتا مقصد سکھانے والی 'آنتر بھارتی' پیارے مہاراشٹر میں کھڑی ہو جائے. (7 مئی 1949)

"صرف زبانوں کی پڑھائی ہی اِس سنستھا کا مقصد نہیں ہے. اُس کے ساتھ دوسری بھی تحریکوں کو جوڑ دینے کا اِرادہ ہے. کلا اور دیہاتی جیون کا بھی وہاں ادھین ہونا چاہئے. کلاکار یہ بتائیں گے کہ دیہاتی دھندوں میں کلا کو کیسے شامل کیا جائے، معمولی چٹائیاں بھی بننی ہوں تو اُن میں خوبصورتی کیسے پیدا ہو، معمولی بانس کی ٹوکریوں میں ہنر کو کیسے ظاہر کیا جائے، معمولی مٹی کے برتنوں کو بھی کیسے دلکش اور سندر بنایا جائے، اِس کی بھی وہاں کھوج اور پڑھائی کی جائے. اِس لئے گرام اُدیوگوں کے جانکاروں اور کلاکاروں کو وہاں عزت کا درجہ رہے گا. قسم قسم کے ناچ جمع کرکے اُن کا پرچار کیا جائے گا. مل جل کر زندگی بسر کرنے کی تعلیم وہاں دی جائے گی، اِدارے یا کیندر کے آس پاس کافی زمین ہو تو پھل پھولوں کے پیڑ، کھیتی باڑی وغیرہ کے پریوگ کئے جائیں گے. ودیارتھی محنت کریں گے، نئی نئی چیزیں پیدا کریں گے. میرے من کا سپنا تو اننت ہے، لامحدود ہے. اُسے میں کاغذ پر کہاں تک پیش کروں؟

"راشٹر کی مہان ایکتا کو جیون میں محسوس کرنے کی منگل کوششیں ہوں. سارے دیش بھر ایسے نظارے دکھائی دینے چاہئیں کہ الگ الگ اچھے اچھے خیالوں کو عمل میں لانے کے لئے دیش میں رہنے والے سب طرح کے لوگ ایک ساتھ محنت کر رہے ہیں، ہندو، مسلمان، اونچی نیچی سمجھی جانے والی جاتوں کے لوگ سب مل کر نئی نئی چیزیں تیار کر رہے ہیں. الگ الگ صوبوں کے لوگ بھی بڑے

के लिये नाक़ाबिले बर्दाश्त है और बिगड़ती हुई हवा को सुधारना उनके बस के बाहर है तो उन्होंने जान बूझ कर अपनी ज़िन्दगी के चिराग़ को बुझा लिया और हमेशा के लिये आंखें मींच लीं.

लेकिन जाते जाते वह एक बहुत भारी बोझ हम पर यानी सिर्फ़ महाराष्ट्रियों पर ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तानियों पर छोड़ गये हैं. वह है उनका 'आंतर भारती का सपना' आख़िर तो वह सपना ही ठहरा. उसकी कोई बंधी बंधाई योजना नहीं है, कोई नियम क़ानून नहीं है. लेकिन उसे हम समझ सकते हैं, अपने रोज़ाना जीवन में उस पर अमल कर सकते हैं. साने गुरु जी के शब्दों में उनका यह सपना इस तरह है:—

"आज़ाद भारत की शानदार इमारत अब खड़ी होने वाली है. ज़बान के लिहाज़ से सूबे बनाने की तजवीज़ पहले ही मान लिया गया है लेकिन इस तरह की रचना जब की जा रही हो तब इस बात की एहतियात रखनी चाहिये कि जलन दुश्मनी न फैले, आपसी मुहब्बत बनी रहे, मिल जुल कर काम करने की आदत पड़े. भारत का दिल एक है इसका ध्यान सब को रहे. भगवान को हज़ारों आंख हज़ारों वग़ैरा नामों से हम पुकारते हैं लेकिन दिल हज़ारों कभी नहीं कहते. जिस तरह भगवान का एक ही दिल होता है उसी तरह भारत के कई सूबे होने पर भी उसका दिल एक ही रहे.

"सारे सूबे 'भारती' हों, भारत 'अति भारती' हो. हमें तंग अहाते बनाकर नहीं बैठना चाहिये. अगर आप अपना दायरा चौड़ा करेंगे तो आपकी शोभा बढ़ेगी. तंग दिली को छोड़ दीजिये. सारे सूबे एक दूसरे के साथ प्यार मुहब्बत से बर्ताव करें, भारत का दिल एक हो, सूबे एक जान हों. हमारे दो मक़सद हैं—'आन्तर भारती' और 'विश्व भारती'—यानी प्रान्तों या सूबों का एक दूसरे के साथ और भारत के साथ जानदार ताल्लुक़ रहे—इसे हम 'आन्तर भारती' कहें दूसरा मक़सद है 'विश्व भारती' जिसे रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ज़ाहिर किया था.

(27 अगस्त 1948)

"भारती को मैं दुनिया का (निशान) मानता हूं. भारत की सेवा में इन्सानियत की सेवा आ जाती है. यहां सारे धर्म, सारी संस्कृतियां, कल्चर आ बसी हैं. दिन दिन हम सबको इस एकता की आलमगीरी महसूस करना चाहिये.

"हम अब तक 'अखंड भारत' का राग अलापते आये. मगर हमें इस भारत का ज्ञान नहीं, असली जानकारी नहीं. हमें ऐसा नहीं लगता कि यह सारे सूबे मेरे हैं, यह सारी भाषायें मेरी हैं, यह सब मेरे भाई हैं; मैं सबसे सब कुछ सीखूंगा. बम्बई में रूसी, जर्मन,

اُن کے لئے ناقابل برداشت ہے اور بگڑتی ہوئی ہوا کو سدھارنا اُن کے بس کے باہر ہے تو اُنہوں نے جان بوجھکر اپنی زندگی کے چراغ کو بجھا لیا اور ہمیشہ کے لئے آنکھیں میچ لی .

لیکن جاتے جاتے وہ ایک بہت بھاری بوجھ ہم پر یعنی صرف مہا راشٹریوں پر ہی نہیں بلکہ سارے ہندستانیوں پر چھوڑ گئے ہیں . وہ ہے اُن کا ' آنتر بھارتی کا سپنا ' آخر تو وہ سپنا ہی ٹھہرا . اُسکی کوئی بندھی بندھائی یوجنا نہیں ہے' کوئی نیم قانون نہیں ہے' لیکن اُسے ہم سمجھ سکتے ہیں' اپنے روزانہ جیون میں اُس پر عمل کر سکتے ہیں . سانے گرو جی کے ہی شبدوں میں اُن کا یہ سپنا اِس طرح ہے :—

" آزاد بھارت کی شاندار عمارت اب کھڑی ہونے والی ہے . زبان کے لحاظ سے صوبے بنانے کی تجویز کو پہلے ہی مان لیا گیا ہے لیکن اس طرح کی رچنا جب کی جا رہی ہو تب اس بات کی احتیاط رکھنی چاہئے کہ جلن دشمنی نہ پھیلے' آپسی محبت بنی رہے' مل جل کر کام کرنے کی عادت پڑے . بھارت کا دل ایک ہے اس کا دھیان سب کو رہے . بھگوان کو سر ہزاری آنکھ ہزاری وغیرہ ناموں سے ہم پکارتے ہیں لیکن دل ہزاری کبھی نہیں کہتے . جس طرح بھگوان کے ایک ہی دل ہوتا ہے اسی طرح بھارت کے کئی صوبے ہو جانے پر بھی اُس کا دل ایک ہی رہے .

"سارے صوبے 'بھارتی' ہوں' بھارت 'اتی بھارتی' ہو . ہمیں تنگ احاطے بناکر نہیں بیٹھنا چاہئے . اگر آپ اپنا دائرہ چوڑا کریں گے تو آپ کی شوبھا بڑھے گی . تنگ دلی کو چھوڑ دیجئے . سارے صوبے ایک دوسرے کے ساتھ پیار محبت سے برتاؤ کریں' بھارت کا دل ایک ہو' صوبے ایک جان ہوں . ہمارے دو مقصد ہیں—'آنتر بھارتی' اور 'وشو بھارتی'—یعنی پرانتوں یا صوبوں کا ایک دوسرے کے ساتھ اور بھارت کے ساتھ جاندار تعلق رہے—اِسے ہم 'آنتر بھارتی' کہیں . دوسرا مقصد ہے 'وشو بھارتی' جسے رویندر ناتھ ٹھکور نے ظاہر کیا تھا .

(27 اگست 1948)

"بھارتی کو میں دنیا کا (نشان) مانتا ہوں . بھارت کی سیوا میں انسانیت کی سیوا آ جاتی ہے . یہاں سارے دھرم' ساری سنسکرتیاں' کلچر آ بسی ہیں . دن دن ہم سب کو اِس ایکتا کی عالمگیری محسوس کرنا چاہئے .

"ہم اب تک 'اکھنڈ بھارت' کا راگ الاپتے آئے . مگر ہمیں اِس بھارت کا گیان نہیں' اصلی جانکاری نہیں . ہمیں ایسا نہیں لگتا کہ یہ سارے صوبے میرے ہیں' یہ ساری بھاشائیں میری ہیں' یہ سب میرے بھائی ہیں؛ میں سب سے سب کچھ سیکھونگا . بمبئی میں روسی' جرمن'

का बहुत कुछ हिस्सा सियासी हलचलों से भरा हुआ है, फिर भी उनकी असली बुनियाद समाज-शिक्षा ही थी. 'गुरु जी' उनकी सच्ची उपाधि थी. उन्होंने अपने विचारों को फैलाने की ग़रज़ से मराठी में 'साधना' नाम का एक हफ़्तेवार अख़बार चलाया था जिसे उन्होंने किसी सियासी पार्टी के चंगुल में फंसने नहीं दिया था. आज भी उनकी यादगार के तौर पर 'साधना' चल रहा है और उसके ग़ैरजानिबदार रवैये में कोई फ़र्क़ नहीं आया है. अपने इस अख़बार के ज़रिये उन्होंने मराठी बोलनेवाले लोगों को बराबर यह नसीहत की कि उन्हें फ़िरक़ेवाराना जज़्बात, सूबाई तंगदिली और हिंसा वग़ैरा से आज़ाद हो जाना चाहिये, इसी ख़याल से उन्होंने अपने 'आंतर भारती' के कलचरल सपने को मराठी जनता के सामने रखने की कोशिश की.

हिन्दुस्तान के आज़ाद होने के साथ ही यहां की जनता में तंग सूबाइयत को ज़ोरों से बढ़ते देख साने गुरुजी का उदार मन बीच बीच में उदास हो उठता था. उनकी यह पक्की श्रद्धा थी कि हिन्दुस्तानी जीवन की एकता अलग अलग सूबों के लिये भी ज़रूरी है. इसलिये उन्हें ऐसा लगता था कि भारत के अलग अलग सूबों में प्रेम भाव बढ़ाने की ख़ास कोशिश होना चाहिये. उन्हें पूरा भरोसा था कि 'आंतर भारती' के ज़रिये यह काम हो सकेगा. साने गुरुजी हिन्दू-मुस्लिम इत्तहाद के ज़बरदस्त हिमायती थे जिसकी वजह से महाराष्ट्र के हिन्दू सभाई और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वाले उन्हें 'भूला-भटका देश भक्त' कह कर उनका मज़ाक़ उड़ाया करते थे. लेकिन गुरु जी ने इस मज़ाक़ की ज़रा भी परवाह नहीं की और अपने लेखों, कहानियों और नावेलों में हिन्दू मुस्लिम एकता का बराबर प्रचार करते रहे. जब राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वालों ने सरकार के ख़िलाफ़ क़ानून भंग की कारवाई शुरू की थी तो महाराष्ट्र में साने गुरुजी और आचार्य भागवत ने उन लोगों के ख़िलाफ़ एक ज़ोरदार मोरचा खड़ा करके जनता के सामने उनकी पोल खोल दी थी. इसी तरह जब एक मराठा भाई ने गांधी जी का ख़ून किया तो साने गुरु जी के दिल को इतनी बड़ी ठेस लगी कि उन्होंने महाराष्ट्र के इस पाप के बदले से ख़ुद इक्कीस रोज़ तक उपवास किया. लेकिन उससे भी उनके दिल को शान्ति नहीं मिली. गांधी जी के साथ मानो उनके जीवन का सारा आनन्द, सारी ख़ुशी चली गई और उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया.

फिर भी वह इस अंधेरे में से निकल कर रोशनी की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करते रहे. फ़िरक़ा परस्ती और सूबा परस्ती के ख़िलाफ़ जीवन भर लड़ते रहे और जब उन्हें ऐसा लगा कि अब इस गिरती हालत को देख सकना

بہت کچھ حصہ سیاسی ہلچلوں سے بھرا ہوا ہے، پھر بھی اُن کی اصلی بنیاد سماج شکشا ہی تھی۔ 'گرو جی' ان کی سچی اپادھی تھی۔ انہوں نے اپنے وچاروں کو پھیلانے کی غرض سے مراٹھی میں 'سادھنا' نام کا ایک ہفتے وار اخبار چلایا تھا جسے انہوں نے سیاسی پارٹی کے چنگل میں پھنسنے نہیں دیا تھا۔ آج بھی اُن کی یادگار کے طور پر 'سادھنا' چل رہا ہے اور اُسکے غیر جانبدار رویئے میں کوئی فرق نہیں آیا ہے۔ اپنے اِس اخبار کے ذریعے انہوں نے مراٹھی بولنے والے لوگوں کو برابر یہ نصیحت کی کہ انہیں فرقہ وارانہ جذبات، صوبائی تنگ دلی اور ہنسا وغیرہ سے آزاد ہو جانا چاہئے اسی خیال سے انہوں نے اپنے 'آنتر بھارتی' کے کلچرل سپنے کو مراٹھی جنتا کے سامنے رکھنے کی کوشش کی۔

ہندستان کے آزاد ہونے کے ساتھ ہی یہاں کی جنتا میں تنگ صوبائیت کو زوروں سے بڑھتے دیکھ سانے گروجی کا اُدار من بیچ بیچ میں اُداس ہو اُٹھتا تھا۔ ان کی یہ پکی شردھا تھی کہ ہندستانی جیون کی ایکتا الگ الگ صوبوں کے لئے بھی ضروری ہے۔ اِسلئے انہیں ایسا لگتا تھا کہ بھارت کے الگ الگ صوبوں میں پریم بھاؤ بڑھانے کی خاص کوشش ہونی چاہئے۔ انہیں پورا بھروسہ تھا کہ 'آنتر بھارتی' کے ذریعے یہ کام ہو سکے گا۔ سانے گرو جی ہندو مسلم اتحاد کے زبردست حمایتی تھے۔ جس کی وجہ سے مہا راشٹر کے ہندو سبھائی اور راشٹریہ سویم سیوک سنگھ والے انہیں 'بھولا بھٹکا دیش بھکت' کہکر ان کا مذاق اُڑایا کرتے تھے۔ لیکن گرو جی نے اِس مذاق کی ذرا بھی پرواہ نہیں کی اور اپنے لیکھوں، کہانیوں اور ناولوں میں ہندو مسلم ایکتا کا برابر پرچار کرتے رہے۔ جب راشٹریہ سویم سیوک سنگھ والوں نے سرکار کے خلاف قانون بھنگ کی کاروائی شروع کی تھی تو مہا راشٹر میں سانے گرو جی اور آچاریہ بھاگوت نے ان لوگوں کے خلاف ایک زور دار مورچہ کھڑا کر کے جنتا کے سامنے ان کی پول کھول دی تھی۔ اسی طرح جب ایک مراٹھی بھائی نے گاندھی جی کا خون کیا تو سانے گرو جی کے دل کو اِتنی بڑی ٹھیس لگی کہ انہوں نے مہا راشٹر کے اِس پاپ کے بدلے میں خود اکیس روز تک اُپواس کیا۔ لیکن اُس سے بھی اُن کے دل کو شانتی نہیں ملی۔ گاندھی جی کے ساتھ مانو اُن کے جیون کا سارا آنند، ساری خوشی چلی گئی اور اُن کی ساری اُمیدوں پر پانی پھر گیا۔

پھر بھی وہ اِس اندھیرے میں سے نکل کر روشنی کی طرف بڑھنے کی کوشش کرتے رہے۔ فرقہ پرستی اور صوبہ پرستی کے خلاف جیون بھر لڑتے رہے اور جب انہیں ایسا لگا کہ اب اس گرتی حالت کو دیکھ سکنا

संत साने गुरू जी का

'आंतर भारती' का सपना

(श्रीपाद जोशी)

[साने गुरू जी की गिन्ती महाराष्ट्र के ठोस, चे और गहरे सेवकों में की जाती है. उनकी अचानक ौत ने महाराष्ट्र के जीवन में एक गढ़ा सा खाली छोड़ या. खुशी की बात है कि महाराष्ट्र के भाई बहनों ने सको पाटने के इरादे से साने गुरूजी के 'आन्तर रती' के सपने को अमली जामा पहनाने का फ़ैसला र लिया है. इस सिलसिले में अपने नौजवान भाई । पाद जोशी का एक लेख हम अपने पाठकों के आगे करते हैं—एडीटर]

नये महाराष्ट्र के संत श्री पांडुरंग सदाशिव साने साने गुरू जी ने 11 जून 1950 को इस दुनिया से ली. महाराष्ट्र के जवानों को जगाकर उनमें देश प्रेम : सेवा की धुन भर देने का काम साने गुरू जी ने स बरस तक लगातार किया. लोकमान्य बाल गंगाधर क के बाद महाराष्ट्र की आम जनता और ख़ास कर वान महात्मा गांधी के अलावा किसी दूसरे व्यक्ति रफ़ अगर झुके हैं तो वह साने गुरू जी ही थे. गांधी की बात ही निराली थी—वह तो सारे देश पर लगा तीस बरस तक छाये रहे और अब भी उनकी आत्मा स्तानियों पर राज कर रही है. गांधी जी के विचारों चार करना ही साने गुरू जी का मक़सद था और गी भर वह यही काम करते रहे. इसलिये उन्हें राष्ट्र का गांधी' भी कहा जा सकता है.

आज़ादी के बाद कांगरेस वालों में जो बुराईयां पैदा हो जो फ़िरक़ेवाराना जज़बात उभरे, जो सूबावारी नी की तंग दिली फैली, उससे साने गुरू जी के दिल ख़्त चोट पहुँची. उन्होंने ही तो मराठी-भाशी जनता समझाया था कि 'कांगरेस हमारी मां है. और वह भी कांगरेस से मां की सी मुहब्बत करते थे. लेकिन वही मां एक बाज़ारू औरत बनने लगी, जब देश के नेक व बद रिश्वत ख़ोर या चोर, बाज़ारिया उसमें लगे और दुनिया की सारी गंदगी उसमें जमा होने तो उनका कलेजा फट गया और वह राजनीति से हो गये. उन्होंने कांगरेस से नाता तोड़ लिया और ी व कलचरी कामों में लग गये.

सल में साने गुरू जी कोई राज नेता या ीतिज्ञ थे ही नहीं. हालांकि उनकी आम सेवा

سنت سانے گرو جی کا

آنتر بھارتی کا سپنا

(شری پاد جوشی)

[سانے گرو جی کی گنتی مہا راشٹر کے ٹھوس اونچے اور گہرے سیوکوں میں کی جاتی ہے ۔ اُن کی اچانک موت نے مہا راشٹر کے جیون میں ایک گڈھا سا خالی چھوڑ دیا ۔ خوشی کی بات ہے کہ مہا راشٹر کے بھائی بہنوں نے اُسکو پاٹنے کے اِرادے سے سانے گرو جی کے آنتر بھارتی کے سپنے کو عملی جامہ پہنانے کا فیصلہ کر لیا ہے ۔ اِس سلسلے میں اپنے نوجوان بھائی شری پاد جوشی کا ایک لیکھ ہم اپنے پاٹھکوں کے آگے پیش کرتے ہیں—ایڈیٹر]

نئے مہا راشٹر کے سنت شری پانڈو رنگ سدا شیو سانے عرف سانے گرو جی نے 11 جون 1950 کو اس دنیا سے بِدا لی ۔ مہا راشٹر کے نوجوانوں کو جگا کر اُن میں دیش پریم اور سیوا کی دھن بھر دینے کا کام سانے گرو جی نے پچیس برس تک لگاتار کیا ۔ لوک، مانیہ بال گنگا دھر تلک کے بعد مہا راشٹر کی عام جنتا اور خاص کر نوجوان مہاتما گاندھی کے علاوہ کسی دوسرے ویکتی کی طرف اگر جھکے ہیں تو وہ سانے گرو جی ہی تھے ۔ گاندھی جی کی بات ہی نرالی تھی—وہ تو سارے دیش پر لگاتار تیس برس تک چھائے رہے اور اب بھی اُن کی آتما ہندستانیوں پر راج کر رہی ہے ۔ گاندھی جی کے وچاروں کا پرچار کرنا ہی سانے گرو جی کا مقصد تھا اور زندگی بھر وہ یہی کام کرتے رہے ۔ اِسی لئے اُنہیں ' مہا راشٹر کا گاندھی ' بھی کہا جا سکتا ہے ۔

آزادی کے بعد کانگریس والوں میں جو برائیاں پیدا ہوگئیں' جو فرقہ وارانہ جذبات اُبھرے' جو صوبہ واری دشمنی کی تنگ دلی پھیلی' اُس سے سانے گرو جی کے دل کو سخت چوٹ پہنچی ۔ انہوں نے ہی تو مراٹھی بھاشی جنتا کو سمجھایا تھا کہ کانگریس ہماری ماں ہے ۔ اور وہ خود بھی کانگریس سے ماں کی سی محبت کرتے تھے ۔ لیکن جب وہی ماں ایک بازارو عورت بننے لگی' جب دیش کے سارے نیک و بد رشوت خور یا چور بازاریا اُسمیں گھسنے لگے اور دنیا کی ساری گندگی اُسمیں جمع ہونے لگی تو اُن کا کلیجہ پھٹ گیا اور وہ راج نیتی سے مایوس ہوگئے ۔ اُنہوں نے کانگریس سے ناتا توڑ لیا اور سماجی و کلچری کاموں میں لگ گئے ۔

اصل میں سانے گرو جی کوئی راج نیتا یا سیاسی نیتا تھے ہی نہیں ۔ حالانکہ اُن کی عام سیوا

यही सबसे बड़े खतरे की चीज़ है, क्योंकि जब इनसानियत, हैवानियत के रूप में आजाती है तो अपनी जात पात का रोटी टुकड़ा छीन खाती है. अपने ही भाई बन्दों का खून पी जाती है और अपने ही अज़ीज़ प्यारों को नोच खसोट लेती है.

नेता या लीडर से जनता की रोटी का सवाल उसका वाजबी हक़ और पहला सवाल है.

आज की सियासी और लोक राज पसंद दुनिया में जहाँ अधिकारियों के हाथों में मुल्की और समाजी प्रबन्ध है और जिनकी ज़ात के साथ जनता के जीने मरने का सम्बन्ध है.

उनके बारे में यह बात कितनी तूल पकड़ चुकी है कि उनमें चोर भी हैं और रिश्वत खोर भी हैं.

तो क्या ऐसे चोरों और रिश्वत खोरों से दुनिया की राज नीति चल सकती है और क्या ऐसी राजनीति से जनता पल सकती है ?

राजनीति का चलन और जनता का पालन क्यों निस्वार्थ त्याग में है. केवल इनसानियत और सदाचार में है, लेकिन जब इनसानियत ही का निशान न हो तो सदाचार का नाम लेना ही बेकार.

आज़ादी से राजनीति, आज़ादी के अलमबरदार राजनीति के शहसवार-सब को देखा, समझा और आज़माया,

दोनों चालाक और चालबाज़,

दोनों मतलब परस्त और खुदगरज़.

इस लिये विश्वास उनपर ग़लत !

क्या वक़्त है ?

राजनीति, जनता की रोटी हड़प कर रही है,

जनता रोटी के लिये तड़प रही है—और

हर तरफ़ रोटी ही के लिये आग भड़क रही है.

یہی سب سے بڑے خطرے کی چیز ہے . کیونکہ
، اِنسانیت‘ حیوانیت کے روپ میں آجاتی ہے تو
، جات پات کا روٹی ٹکڑا چھین کھاتی ہے . اپنے ہی
ی بندوں کا خون پی جاتی ہے اور اپنے ہی عزیز پیاروں
چ کھسوٹ لیتی ہے .

نیتا یا لیڈر سے جنتا کی روٹی کا سوال اُس کا واجبی
اور پہلا سوال ہے .

آج کی سیاسی اور لوک راج پسند دنیا میں جہاں
کاریوں کے ہاتھوں میں ملکی اور سماجی پربندھ ہے
جن کی ذات کے ساتھ جنتا کے جینے مرنے کا سمبندھ

اُن کے بارے میں یہ بات کتنی طول پکڑ چکی ہے
اُن میں چور بھی ہیں اور کچھ رشوت خور بھی ہیں.
تو کیا ایسے چوروں اور رشوت خوروں سے دنیا کی
نیتی چل سکتی ہے . اور کیا ایسی راجنیتی سے
تا پل سکتی ہے ؟

راجنیتی کا چلن اور جنتا کا پالن کیوں نسوارتھ
گ میں ہے . کیول اِنسانیت اور سداچار میں ہے .
ن جب انسانیت ہی کا نشان نہ ہو تو سداچار کا نام
ا ہی بیکار .

آزادی سے راجنیتی‘ زادی کے علمبردار سے راجنیتی
شہ سوار—سب کو دیکھا سمجھا آزمایا‘

دونوں چالاک اور چال باز‘

دونوں مطلب پرست اور خود غرض .

اِس لئے وشواس اُن پر غلط !

کیا وقت ہے ؟

راجنیتی‘ جنتا کی روٹی ہڑپ کر رہی ہے‘

جنتا‘ روٹی کے لئے تڑپ رہی ہے—اور

ہر طرف روٹی ہی کے لئے آگ بھڑک رہی ہے .

इसी सवाल और इसी मांग पर दुनिया भर में, छिपे ज़ाहिर, जो ना इन्साफ़ी और ज़ियादती हो रही है वह सामने है. हमको इस बारे में अपनी हकूमत की रहम दिली, अहिंसा परवरी और प्रजा परवरी का एहसास है— हमको यह भी इक़रार है कि हमारी हकूमत बड़ी प्रजा पालक और मेहरबान है. सबूत यह कि वह प्रजा पर कोई बन्दूक़ का उपयोग नहीं करती. कारन यह कि वह अहिंसक है मगर क़ानून की मार ज़रूर देती रहती है. बेशक वह प्रजा का ख़ून तो नहीं करती मगर ख़ून ख़ुश्क ज़रूर कर देती है. जब इनसान के शरीर का सारा ख़ून सूख जाय तो फिर उसमें बाक़ी ही क्या रह जाता है ?

सूखी हड्डियों का एक ढांचा,
या मरी मिट्टी का एक ढेर ?

याद रहे जहां किसी भी नेता या लीडर के मुंह से 'आज़ादी' या राजनीति का लफ़्ज़ निकला कि जनता में नई ज़िन्दगी की लहर दौड़ गई और उसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी भी नेता पर आ जाती है और जनता की चिन्ताओं को दूर करने का दावा भी उसे पूरा करना पड़ जाता है. मगर जल्द ही यह देखने में आता है कि वह बोझ उतार फेंकता है और मुहर तोड़ डालता है.

कितना अफ़सोस और कितना अचरज !

उसको ज़िम्मेदारी और लोभ के अंधेरे में कहीं लिखा हुआ भी दिखाई नहीं देता कि मुहर तोड़ना अख़लाक़ी जुर्म भी है, समाजी जुर्म भी और क़ानूनी भी !

दोश या जुर्म को अपना कर यानी मुजरिम या दोशी बने रहते हुए क्या इनका ज़मीर और आत्मा उन पर मलामत न करती होगी—ज़रूर, मगर आत्मा की बात कौन सुनता और कौन मानता है ?

अगर नैतिक उपदेश मानकर अपना किरदार और सदाचार सुधार लिया जाये तो फिर यह बुराईयां ही क्यों पैदा हों ? इन तमाम बुराईयों का जन्म चालचलन अख़लाक़ की गिरावट और दिल की ख़राबी से है, नियतों के फ़साद और लोभ की चाट से. कितनी ख़ुशी का वह समय होगा और कितना मुबारक वह दिन जब उजले चालचलन और साफ़ सुथरे दिल के लोग हमें देखने को मिलेंगे. सही शकल सूरत और सही दिमाग़ और सिफ़त (गुन) के इनसान हमको देखने को मिलेंगे —बस यही इनसान को बेशक वरदान कहेंगे.

पर आज सूरत क्या है ? इनसान, इनसानियत से जितना दूर है उतना ही बरबरता से नज़दीक.

اِسی سوال اور اِسی مانگ پر دنیا بھر میں چھپے یا ظاہر جو نا انصافی اور زیادتی ہو رہی ہے وہ سامنے ہے ہم کو اس بارے میں اپنی حکومت کی رحم دلی، اہنسا پروری اور پرجا پروری کا احساس ہے—ہم کو یہ بھی اقرار ہے کہ ہماری حکومت بڑی پرجا پالک اور مہربان ہے۔ ثبوت یہ کہ وہ پرجا پر کوئی بندوق کا اپیوگ نہیں کرتی۔ کارن یہ کہ وہ اہنسک ہے مگر قانون کی مار ضرور دیتی رہتی ہے۔ بے شک وہ پرجا کا خون تو نہیں کرتی مگر خون خشک ضرور کر دیتی ہے۔ جب انسان کے شریر کا سارا خون سوکھ جائے تو پھر اُس میں باقی ہی کیا رہ جاتا ہے؟

سوکھی ہڈیوں کا ایک ڈھانچہ،
یا مری مٹی کا ایک ڈھیر؟

یاد رہے جہاں کسی بھی نیتا یا لیڈر کے منھ سے 'آزادی' یا راجنیتی کا لفظ نکلا کہ جنتا میں نئی زندگی کی لہر دوڑ گئی اور اُسکی رکشا کی ذمہ داری بھی اس نیتا پر آجاتی ہے اور جنتا کی چنتاؤں کو دور کرنے کا دعویٰ بھی اسے پورا کرنا پڑ جاتا ہے۔ مگر جلد ہی یہ دیکھنے میں آتا ہے کہ وہ بوجھ اُتار پھینکتا ہے اور مہر توڑ ڈالتا ہے۔

کتنا افسوس اور کتنا اچرج!

اُس کو پھر ذمے داری اور لوبھ کے اندھیرے میں کہیں یہ لکھا ہوا بھی دکھائی نہیں دیتا کہ مہر توڑنا اخلاقی جرم بھی ہے، سماجی جرم بھی اور قانونی جرم بھی!

دوش یا جرم کو اپنا کر یعنی مجرم یا دوشی بنکر رہتے ہوئے کیا ان کا ضمیر اور آتما اُن پر ملامت نہ کرتی ہوگی— ضرور، مگر آتما کی بات کون سنتا اور کون مانتا ہے؟

اگر نیتک اُپدیش مان کر اپنا کردار اور سداچار سدھار لیا جائے تو پھر یہ برائیاں ہی کیوں پیدا ہوں؟ اِن تمام برائیوں کا جنم چال چلن اخلاق کی گراوٹ اور دل کی خرابی میں سے ہے، نیتوں کے فساد میں ہے اور لوبھ کی چاٹ سے۔ کتنی خوشی کا وہ سمے ہوگا اور کتنا مبارک وہ دن جب اُجلے چال چلن اور صاف ستھرے دل کے لوگ ہمیں دیکھنے کو ملیں گے۔ صحیح شکل صورت اور صحیح دماغ اور صفت (گن) کے انسان ہم کو دیکھنے کو ملینگے— اس صحیح انسان کو ہم بےشک وردان کہیں گے۔

پر آج صورت کیا ہے؟ انسان، انسانیت سے جتنا دور ہے اُتنا ہی بربرتا سے نزدیک ہے۔

तमाम लोगों के कान खोल दे जो ऊपर से तो ज़िम्मेवार हैं पर अन्दर से ग़ैर ज़िम्मेवार, अगर उनके कान ग़लत सुनते हों तो उन कानों की बागों को मोड़ देना भी जनता ही का काम है. और अगर उन पर परदे पड़े हों तो उन परदों को नोच लेना भी उसका फ़र्ज़ है।

लोकराज का मतलब और लोकराज के अन्दर अपनी ताक़त, यह दोनों बातें जनता को समझनी चाहिये. जब तक वह ऐसा नहीं करेगी चालाक राजनीति कार उसके साथ खिलवाड़ करता रहेगा और उसको बेवक़ूफ़ बना कर अपना घर व पेट भरता रहेगा.

हर ज़माने में, हर मिनिस्टर और राज पति से जवाब तलब करना जमहूरियत के मतलब और इनसानी आज़ादी की स्प्रिट को पूरा करना है. इसलिये यह जुरअत और यह हिम्मत जनता के हर व्यक्ति में होनी चाहिये. और दिलेरी मगर सच्चाई और नेक नियती के साथ उनको बरतने का आदी हर देस वासी को बनना चाहिये ताकि वह ख़ुद अपने को भी समझ सके और विधान के मन्शा को पूरा करने में उसकी इज़्ज़त में फ़र्क़ न आने दे और अपने फ़र्ज़ के पालन में कमी न होने दे.

इसका बड़ा सबब है उसकी जहालत या उसका कुमज़ोरपन और उसके ऊपर एक अजीब व सियासी क़िस्म का बोझ या दबाव.

हम देख रहे हैं कि इस बोझ से ज्ञानी और अज्ञानी, सियासी है और ग़ैर सियासी, सभी प्रकार के लोग दबे हुए हैं. इस की वजह से देस और देसवासियों के पनपने और ऊपर उठने के निशान नहीं मिलते. अधिक-तर गिरावट ही गिरावट की तरफ़ हैं.

× × ×

रोटी और राजनीति का एक दूसरे के साथ ऐसा नाता है जो किसी तरह तोड़ा नहीं जा सकता. जहाँ उसमें कोई दरार पड़ी उसी समय जनता के अन्दर से ग़ुस्से का माद्दा फूट पड़ता है और सारी हवा में असन्तोष छा जाता है. इसी रोटी कपड़े के सवाल पर जो जनता का पहला हक़ और राजनीति का पहला वचन है दुनिया भर मे झगड़े क़िस्से चल रहे हैं और एक दूसरे में तनाव खिंचाव हो रहा है. कारन यह कि राजनीति अपनी आदत के मुताबिक़ अपने वचन से फिर फिर जाती है. इसका नतीजा यह होता है कि झगड़े क़िस्से चलते हैं जो चलते चलते जंग के मैदान तक पहुंच जाते हैं.

क्या रोटी का सवाल पाप है ?

क्या कपड़े लत्ते की मांग गुनाह है ?

م لوگوں کے کان کھولدے جو اوپر سے تو ذمےدار ھیں پر اندر غیر ذمےدار، اگر اُن کے کان غلط سنتے ھوں تو اُن کانوں کی ں کو موڑ دینا بھی جنتا ھی کا کام ھے . اور اگر اُن پر دے پڑے ھوں تو اُن پردوں کو نوچ لینا بھی اُس کا ض ھے !

لوک راج کا مطلب اور لوک راج کے اندر ی طاقت، یہ دنوں باتیں جنتا کو سمجھنی ھئیں . جب تک وہ ایسا نہیں کریگی چالاک جنیت کار اسکے ساتھ کھلواڑ کرتا رھے گا اور اسکو وقوف بنا کر اپنا گھر و پیٹ بھرتا رھے گا .

ھر زمانے میں، ھر منسٹر اور راج پتی سے جواب لب کرنا جمہوریت کے مطلب اور انسانی آزادی کی پرٹ کو پورا کرنا ھے . اِس لئے یہ جرءت اور یہ ھمت نتا کے ھر ویکتی میں ھونی چاھئے . اور دلیری مگر چائی اور نیک نیتی کے ساتھ اُن کو برتنے کا عادی ھر یس واسی کو بننا چاھئے تاکہ وہ خود اپنے کو بھی سمجھ سکے اور ودھان کے منشا کو پورا کرنے میں اسکی زت میں فرق نہ آنے دے اور اپنے فرض کے پالن میں می نہ ھونے دے .

اِس کا بڑا سبب ھے اُسکی جہالت یا اُس کا کمزورپن اور س کے اوپر ایک عجیب و سیاسی قسم کا بوجھ یا دباؤ .

ھم دیکھ رھے ھیں کہ اس بوجھ سے گیانی اور اگیانی، سیاسی اور غیر سیاسی، سبھی پرکار کے لوگ دبے ھوئے ھیں . اس وجہ سے دیش اور دیش واسیوں کے پنپنے اور اوپر اُٹھنے کے نشان نہیں ملتے . ادھک تر گراوٹ ھی راوٹ کی طرف ھیں .

× × × ×

روٹی اور راجنیتی کا ایک دوسرے کے ساتھ ایسا ناتا ھے جو کسی طرح توڑا نہیں جا سکتا . جہاں اُس میں کوئی دراڑ پڑی اُسی سمے جنتا کے اندر سے غصے کا مادہ پھوٹ پڑتا ھے اور ساری ھوا میں اسنتوش چھا جاتا ھے . اِسی روٹی کپڑے کے سوال پر جو جنتا کا پہلا حق اور راج نیتی کا پہلا وچن ھے دنیا بھر میں جھگڑے قصے چل رھے ھیں اور ایک دوسرے میں تناؤ کھنچاؤ ھو رھا ھے . کارن یہ کہ راجنیتی اپنی عادت کے مطابق اپنے وچن سے پھر پھر جاتی ھے . اس کا نتیجہ یہ ھوتا ھے کہ جھگڑے قصے چلتے ھیں جو چلتے چلتے جنگ کے میدان تک پہونچ جاتے ھیں .

کیا روٹی کا سوال پاپ ھے ؟

کیا کپڑے لتے کی مانگ گناہ ھے ؟

मन की कोशिशें.

मलाया के अन्दर भी शान्ति का आन्दोलन चल रहा जदूर और जनता इसमें एक साथ हैं. उन्होंने जापान से हथियार बन्द कर देने के खिलाफ़ आवाज़ है. इस सवाल पर मलाया के आम लोगों की कोई दूसरी राय नहीं है.

स और चीन के साथ मलाया के आम लोगों में हमदर्दी की भावना है. इन मुल्कों की आम जनता के उनके दिलों में बेहद प्रेम और इज़्ज़त है. वह उनको का निशान और मजबूर क़ौमों की आज़ादी का बरदार मानते हैं.

अमन, आज़ादी और ख़ुशहाली के लिये कोशिशें, मलाया के पुलिस राज में ऐसा नारा है जिसको ा मना है. लेकिन वहां के मज़दूर इसके लिये बराबर कर रहे हैं और उनकी यह कोशिश लगातार जारी

امن کی کوششیں ۔

ملایا کے اندر بھی شانتی کا آندولن چل رہا ہے. مزدور اور جنتا اِس میں ایک ساتھ ہیں ۔ اُنہوں نے جاپان کو پھر سے ہتھیار بند کر دینے کے خلاف آواز اُٹھائی ہے ۔ اِس سوال پر ملایا کے عام لوگوں کی کوئی اور دوسری رائے نہیں ہے ۔

روس اور چین کے ساتھ ملایا کے عام لوگوں میں گہری ہمدردی کی بھاونا ہے ۔ اِن ملکوں کی عام جنتا کے اوپر اُن کے دلوں میں بے حد پریم اور عزت ہے ۔ وہ اُن کو امن کا نشان اور مجبور قوموں کی آزادی کا علمبردار مانتے ہیں ۔

امن، آزادی اور خوش حالی کے لئے کوششیں کرنا ملایا کے پولیس راج میں ایسا نعرہ ہے جسکو لگانا منع ہے ۔ لیکن وہاں کے مزدور اِس کے لئے برابر کام کر رہے ہیں اور اُن کی یہ کوشش لگاتار جاری رہے گی ۔

रोटी और राजनीति

(अब्दुल हलीम अन्सारी)

ोटी का सम्बन्ध राजनीति के साथ ऐसा ही है जैसे ीति का नाता जनता के साथ. जिस तरह बिना जनता क्ति और सहयोग के राजनीति को सफलता नहीं तरह रोटी का इन्तज़ाम किये बिना राजनीति का रहना कठिन.

नता के साथ राज नीति का सम्बन्ध क़ायम रखने के सले में किसी भी प्रकार उसके लिये रोटी का प्रबंध ज़रूरी है. क्योंकि उसी की ज़िन्दगी से वह ज़िन्दगी और मंज़िल को पहुँचती है.

अगर राज की नीति या नेता ने इस फ़र्ज़ और कर्त्तव्य समझा, या अगर समझा मगर पूरा न किया तो सूरत में राज और नेता दोनों ग़ैर ज़िम्मेदार क़रार जायेंगे. और ग़ैर ज़िम्मेदारी के दोश में जनता के वह जवाब देने के ज़िम्मेदार होंगे.

म्हूरी या लोकराज में समाज के हर मर्द और को यह हक़ और अधिकार है कि वह पुकार कर उन

روٹی اور راجنیتی

(عبدالحلیم انصاری)

روٹی کا سمبندھ راجنیتی کے ساتھ ایسا ہی ہے جیسے راجنیتی کا ناتا جنتا کے ساتھ ۔

جس طرح بنا جنتا کی شکتی اور سہیوگ کے راجنیتی کو سپھلتا نہیں اسی طرح روٹی کا انتظام کئے بنا راجنیتی کا زندہ رہنا کٹھن ۔

جنتا کے ساتھ راجنیتی کا سمبندھ قائم رکھنے کے سلسلے میں کسی بھی پرکار اُس کے لئے روٹی کا پربندھ رکھنا ضروری ہے. کیونکہ اُسی کی زندگی سے وہ زندگی پاتی اور منزل کو پہونچتی ہے ۔

اگر راج کی نیتی یا نیتا نے اِس فرض اور کرتویہ کو نہ سمجھا، یا اگر سمجھا مگر پورا نہ کیا تو ایسی صورت میں راج اور نیتا دونوں غیر ذمے دار قرار دیئے جائینگے ۔ اور غیر ذمے داری کے دوش میں جنتا کے سامنے وہ جواب دینے کے ذمے دار ہوں گے ۔

جمہوری یا لوک راج میں سماج کے ہر مرد اور عورت کو یہ حق اور ادھکار ہے کہ وہ پکار کر اُن

उन्हें कुछ कुछ देर चौकीदार की ड्यूटी बजानी पड़ती है. दूसरे लोगों को स्पेशल कान्सटेब्लरी और मदद करने वाली पुलिस के साथ लगाया गया है. सिंगापुर में ले जस्लेटिव कौंसल के जलसे में 20 सितम्बर को मलाया में इंगलिस्तान के मंत्री ने बताया कि पुलिस स्टेशनों और चौकियों की तादाद बढ़ा दी गई है. इसके अलावा तीन लाख अस्सी हजार स्पेशल कान्सटेबिल और इस से कहीं जियादा तादाद इमदादी पुलिस और केम्पांग गार्ड्स यानी पहरेदारों की है.

इस सच्चाई को निगाह में रखते हुए कि मलाया स्वेज नहर के पूरब में अंगरेजी साम्राजियों का सब से बड़ा फ़ौजी अड्डा है, मलाया की आजादी के लिये लड़ने वालों की साबित क़दमी की जितनी तारीफ़ की जाये थोड़ी है. वह साढ़े तीन साल से बराबर मुक़ाबला कर रहे हैं. कम होने की बजाये उनकी डिवीज़न आदमी या आजाद फ़ौज के हमले महीने में कुल मिला कर आठ सौ से भी ज़ियादा हो जाते हैं.

"आज़ादी" की नई चाल.

यह समझ कर मलाया के आम लोग किसी तरह भी उनके साथ नहीं आयेंगे सरकारी पिट्ठू 'आज़ाद' पारटी क़ायम करने की चालबाज़ी पर उतर आए. पारटी (मलाया के लिये आज़ादी की जमाअत) 12 सितम्बर 1951 को क़ायम की गई थी और "दस साल में आज़ादी" का नारा लगाया. साम्राजी हकूमत का पल्ला पकड़ कर वह जनता को धोके में डालने के लिये खींचा तानी करती रहती है.

लेकिन इस बात में कोई शक नहीं कि मलाया के आम लोग इस चालबाज़ी के फेर में नहीं आयेंगे. वह इस धोके की टट्टी को खूब अच्छी तरह समझते हैं. रबर के जंगलों और कानों में काम करने वाले मज़दूरों को मालूम है कि इस पारटी के दस मेम्बर तो ऐसे हैं जो कि आज़ादी और ऊंचे रहन सहन के लिये खून पसीना एक कर देने का दावा करते हैं. लेकिन सचमुच रबर के जंगलों और टीन की कानों के मालिक या जागीरदार और बैंकर हैं, उनमें से एक तो करोड़ पति है. कौन नहीं जानता कि हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और ?

मज़दूरों की कोशिशें ज़ियादा सख्त होती जाती हैं. मलाया के समुन्द्री, फ़ौजी और हवाई अड्डों को शामिल करने के लिये अंगरेज़ी साम्राज पर अमरीका का दबाव कुछ महीनों से बहुत बढ़ गया है. यह एक खतरनाक चीज़ है जिस पर मलाया के ईमानदार लोग यह शक करते हैं और ठीक शक करते हैं कि "ज़ियादा क़रीबी ताल्लुक़" से अमरीका का मक़सद मलाया के कच्चे माल को अपने क़ब्ज़े में करना है.

چوکیدار کی ڈیوٹی بجانی پڑتی ہے ۔ لوگوں کو اسپیشل کانسٹیبلری اور مدد کرنے والی پولیس ساتھ لگایا گیا ہے ۔ سنگاپور میں لیجسلیٹیو کونسل کے میں 20 ستمبر کو ملایا میں انگلستان کے منتری بتایا کہ پولیس اسٹیشنوں اور چوکیوں کی تعداد بڑھا گئی ہے ۔ اس کے علاوہ تین لاکھ اسی ہزار اسپیشل ٹیبل اور اس سے کہیں زیادہ تعداد امدادی پولیس کیمپانگ گارڈز یعنی پہرے داروں کی ہے ۔

اس سچائی کو نگاہ میں رکھتے ہوئے کہ ملایا سوئز نہر کے میں انگریزی سامراجیوں کا سب سے بڑا فوجی اڈا ملایا کی آزادی کے لئے لڑنے والوں کی ثابت قدمی جتنی تعریف کی جائے تھوڑی ہے ۔ وہ ساڑھے تین سے برابر مقابلہ کر رہے ہیں ۔ کم ہونے کی بجائے اُن ڈیویژن آدمی یا آزاد فوج کے حملے مہینے میں کل آٹھ سو سے بھی زیادہ ہو جاتے ہیں ۔

" آزادی " کی نئی چال ۔

یہ سمجھکر ملایا کے عام لوگ کسی طرح بھی اُن کے نہیں آئینگے سرکاری پٹھو ' آزاد ' پارٹی قائم کرنے چال بازی پر اُتر آئے ۔ پارٹی (ملایا کے لئے آزادی جماعت) 12 ستمبر 1951 کو قائم کی گئی تھی اور س سال میں آزادی " کا نعرہ لگایا ۔ سامراجی حکومت پکڑ کر وہ جنتا کو دھوکے میں ڈالنے کے لئے کھینچا کرتی رہتی ہے ۔

لیکن اس بات میں کوئی شک نہیں کہ ملایا کے عام اس چال بازی کے پھیر میں نہیں آئیں گے ۔ وہ اس کے کی ٹٹی کو خوب اچھی طرح سمجھتے ہیں ۔ ربر کے جنگلوں اور کانوں میں کام کرنے والے مزدوروں کو معلوم ہے اس پارٹی کے دس ممبر تو ایسے ہیں جو کہ آزادی اونچے رہن سہن کے لئے خون اور پسینہ ایک کر دینے دعوی کرتے ہیں ۔ لیکن سچ مچ ربر کے جنگلوں اور کی کانوں کے مالک جاگیر دار اور بینکر ہیں ۔ اُن ایک تو کروڑ پتی ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ ہاتھی کے کھانے کے اور دکھانے کے اور ؟ ۔

مزدوروں کی کوششیں زیادہ سخت ہوتی جاتی ہیں ۔ کے سمندری، فوجی اور ہوائی اڈوں کو شامل کرنے کے انگریزی سامراج پر امریکہ کا دباؤ کچھ مہینوں سے بڑھ گیا ہے ۔ یہ ایک خطرناک چیز ہے جس پر ملایا ایماندار لوگ یہ شک کرتے ہیں اور ٹھیک شک کہ " زیادہ قریبی تعلق " سے امریکہ کا مقصد کچے مال کو قبضہ میں کرنا ہے ۔

सन् 1951 में सिंगापुर म्युनिसिपैलिटी के बारह हज़ार नौकरों ने महीने में एक दिन की छुट्टी की मांग की. इतनी मामूली मांग भी ठुकरा दी गई. इससे पता चलता है कि अंगरेज़ों ने मज़दूरों की क्या दुर्गत बना रखी है.

ऊपर लिखी मांग की पैरवी में अगस्त में सिंगापुर वरकर्स यूनियन ने अल्टीमेटम दे दिया. यूनियन ने अपने मेम्बरों से कहा कि अगर उनकी मांगें पूरी न की गईं तो वह आगे क़दम बढ़ायेगी. इसी तरह फ़ेडरेशन आफ़ क्लैरिकल एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ़, माइनिंग सेक्शन, सिंगापुर टुंग सान ब्रिक वर्क्स, सिंगापुर ट्रेड यूनियन कांग्रेस, मलाया रेलवे ट्रैफ़िक आपरेटिंग यूनियन और दूसरी मज़दूर जमाअतों ने इस तरह की मांगें हुकूमत के सामने रक्खीं. मज़दूरों की लगातार कोशिशों के कारन हुकूमत को हार मानना पड़ा और मलाया के आजकल की हालत में मज़दूरों की यह ज़बरदस्त जीत है.

हुकूमत ने जो छटनी की उसका नतीजा यह हुआ कि रबर के जंगलों में हड़ताल फैल गई. लेकिन हुकूमत ने फ़ौरन ही फ़ौज और पुलिस दौड़ा कर सख़्ती से मज़दूरों को दबा दिया. मलाया के मज़दूरों ने ऐंगलो-अमरीकी हिमायत से क़ायम हुई आई. सी. एफ़. टी. यूनियन में शामिल होने से इनकार कर दिया. इस यूनियन की घटती हुई तादाद से पता चलता है कि मलाया के मज़दूर बराबर बेदार होते चले जा रहे हैं.

इंगलिस्तान के ख़ुदग़रज़ हाकिमों ने वर्ल्ड फ़ैडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन्स से मलाया की मज़दूर जमाअतों के मिलने या उसके नुमायन्दों के मलाया में आने पर पाबन्दी लगा रखी है. लेकिन इसके बावजूद अपनी तमाम कोशिशों में मलाया के मज़दूरों को कुचलने में अंगरेज़ लोग नाकाम रहे हैं. और उनकी नाकामी का कारन यह है कि उन्हें मज़दूरों की हिमायत हासिल नहीं हो सकी है. अंगरेज़ों ने उन्हें डराया, धमकाया, पूरे पूरे गावों पर जुरमाना किया और उन्हें तबाह करके वहां की आबादी को नज़रबन्द कैम्पों में डाल दिया. उन्होंने रूसी पनडुब्बियों को मलाया के समुन्द्र में घुसने और चीन की तरफ़ से कम्युनिस्ट हमले की भी मन गढ़न्त ख़बरें उड़ाईं. लेकिन मज़दूरों और मलाया के आम लोगों ने एक न सुनी और अपनी आन पर डटे रहे जिस से गोरे और ज़ियादा आग बबूला हो गये.

हाकिमों ने अब भरती का दूसरा रास्ता शुरू किया. वह यह कि 22 से 40 साल की उमर वाले तमाम लोगों को ज़बरदस्ती भरती करते हैं. कारख़ानों और रबर के जंगलों के मज़दूरों को भी तरह तरह से तंग करते हैं.

سن 1951 میں سنگاپور میونسپلٹی کے بارہ ہزار نوکروں نے مہینے میں ایک دن کی چھٹی کی مانگ کی۔ اِتنی معمولی مانگ بھی ٹھکرا دی گئی۔ اِس سے پتہ چلتا ہے کہ انگریزوں نے مزدوروں کی کیا درگت بنا رکھی ہے۔

اوپر لکھی مانگ کی پیروی میں اگست میں سنگاپور ورکرز یونین نے الٹی میٹم دے دیا۔ یونین نے اپنے ممبروں سے کہا کہ اگر اُن کی مانگیں پوری نہ کی گئیں تو وہ آگے قدم بڑھائے گی۔ اِسی طرح فیڈریشن آف کلیریکل ایڈمنسٹریٹو اسٹاف، مائننگ سیکشن، سنگاپور ٹنگ سان برک ورکس کے سنگاپور ٹریڈیونین کانگریس، ملایا ریلوے ٹریفک آپریٹنگ یونین اور دوسری مزدور جماعتوں نے اِس طرح کی مانگیں حکومت کے سامنے رکھیں۔ مزدوروں کی لگاتار کوششوں کے کارن حکومت کو ہار ماننی پڑی اور ملایا کے آجکل کے حالات میں مزدوروں کی یہ زبردست جیت ہے۔ حکومت نے جو چھٹنی کی اُسکا نتیجہ یہ ہوا کہ ربر کے جنگلوں میں ہڑتال پھیل گئی۔ لیکن حکومت نے فوراً ہی فوج اور پولیس دوڑا کر سختی سے مزدوروں کو دبا دیا۔ ملایا کے مزدوروں نے اینگلو امریکی حمایت سے قائم ہوئی آئی۔ سی۔ ایف۔ ٹی یونین میں شامل ہونے سے انکار کر دیا۔ اِس یونین کی گھٹتی ہوئی تعداد سے پتہ چلتا ہے کہ ملایا کے مزدور برابر بیدار ہوتے چلے جا رہے ہیں۔

انگلستان کے خود غرض حاکموں نے ورلڈ فیڈریشن آف ٹریڈیونین سے ملایا کی مزدور جماعتوں کے ملنے یا اُس کے نمائندوں کے ملایا میں جانے پر پابندی لگا رکھی ہے۔ لیکن اِس کے باوجود اپنی تمام کوششوں میں ملایا کے مزدوروں کو کچلنے میں انگریز لوگ ناکام رہے ہیں۔ اور اُن کی ناکامی کا کارن یہ ہے کہ اُنہیں مزدوروں کی حمایت حاصل نہیں ہو سکی ہے۔ انگریزوں نے اُنہیں ڈرایا، دھمکایا، پورے پورے گاؤں پر جرمانہ کیا اور اُنہیں تباہ کر کے وہاں کی آبادی کو نظر بند کیمپوں میں ڈال دیا۔ اُنھوں نے روسی پن ڈبیوں کو ملایا کے سمندر میں گھسنے اور چین کی طرف سے کمیونسٹ حملے کی بھی من گھڑت خبریں اُڑائیں۔ لیکن مزدوروں اور ملایا کے عام لوگوں نے ایک نہ سنی اور اپنی آن پر ڈٹے رہے جس سے گورے اور زیادہ آگ بھولا ہو گئے۔

حاکموں نے اب بھرتی کا دوسرا راستہ شروع کیا۔ وہ یہ کہ 22 سے 40 سال کی عمر والے تمام لوگوں کو زبردستی بھرتی کرتے ہیں۔ کارخانوں اور ربر کے جنگلوں کے مزدوروں کو بھی طرح طرح سے تنگ کرتے ہیں۔

लेकिन जंग रुकने के बाद भी मालिकों ने मज़दूरी की वही दर रखी जो 1947 से चली आती थी और इसकी कोई परवाह नहीं की कि मंहगाई में मज़दूर लोग अपना पेट पाल सकेंगे या नहीं. उल्टे 1950 के नये क़ानून के आधार पर जिसमें हड़ताल पर पाबन्दी लगा दी गई है मज़दूरों को और भी सताना शुरू कर दिया.

फिर मिस्र में एक नई जंग की आशा में, मलाया के बड़े बड़े कारोबारी अभी से अपने होंट चाटने लगे हैं.

× × ×

लेकिन मज़दूरों का ख़ून और पसीना निचोड़ने की यह पालिसी बहुत मंहगी पड़ी. मज़दूरों ने भी जवाबी हमले किये. पिछले चार महीनों में मज़दूरों की बे-इत्मिनानी अधिक बढ़ गई है. हकूमत के ज़ुल्म और हिंसा के कारन पूरे मुल्क में असन्तोष बढ़ता और फैलता जा रहा है. 1951 के शुरू से मज़दूरों की बढ़ती हुई तादाद ने कारख़ानों और रबर के जंगलों में "ग़ैर क़ानूनी हड़ताल" की है. उन्होंने 'वाक आउट' किया. रबर के जंगलों में हड़ताल का काम ख़ूब ज़ोरों से हुआ. इस पर हकूमत और कारोबारी लोगों ने आदमियों की कमी का शोर मचाना शुरू कर दिया.

आजकल सब से ख़ास बात यह है कि तमाम बड़ी बड़ी और वफ़ादार यूनियनों ने या तो हड़ताल की धमकी दी है या अपनी मांग को इतने ज़ोरदार तरीक़े से पेश किया कि एक साल पहले अगर ऐसा हुआ होता तो न जाने लोग उनके बारे में क्या समझते.

आर्मी सिविल सर्विस यूनियन (मलाया के अंगरेज़ी फ़ौजी नौकरों की यूनियन) ने भी बड़ी तगड़ी मांग पेश की. शुरू में यूनियन अपनी मांग मंज़ूर कराने में नाकाम रही. लेकिन बाद में इससे ज़ियादा ज़ोरदार तरीक़े से चुनौती दे कर अपनी मांग को रखा. मलाया के अंगरेज़ी अख़बार 'स्ट्रेटस टाइम्स' के 22 जून 1951 वाले परचे में यूनियन की मांग के बारे में यह रिपोर्ट दी गई थी:—

"यूनियन ने ज़ियादा उजरत, मंहगाई भत्ता, प्रावीडेंट फ़न्ड, बुढ़ापा पेंशन, इलाज और मुलाज़मत की ज़मानत की मांग की है."

इन मांगों से ज़ाहिर होता है कि मलाया में मुलाज़िमों की कितनी बुरी हालत थी और उन्हें डाक्टरी सहूलियतें, बुढ़ापा पेंशन और नौकरी की गारन्टी तक हासिल न थी. इस पर भी ट्रान्सपोर्ट हाउस के हाकिम मलाया में सरकारी असर वाले ट्रेड यूनियनों की कामयाबी की डींगें मार रहे हैं.

لیکن جنگ رکنے کے بعد بھی مالکوں نے مزدوری کی وہی در رکھی جو 1947 سے چلی آتی تھی اور اس کی کوئی پرواہ نہیں کی کہ مہنگائی میں مزدور لوگ اپنا پیٹ پال سکیں گے یا نہیں. الٹے 1950 کے نئے قانون کے آدھار پر جس میں ہڑتال پر پابندی لگادی گئی ہے مزدوروں کو بھی ستانا شروع کردیا.

پھر مصر میں ایک نئی جنگ کی آشا میں، ملایا کے بڑے بڑے کاروباری ابھی سے اپنے ہونٹ چاٹنے لگے ہیں.

× × ×

لیکن مزدوروں کا خون اور پسینہ نچوڑنے کی یہ پالیسی بہت مہنگی پڑی. مزدوروں نے بھی جوابی حملے کئے. پچھلے چار مہینوں میں مزدوروں کی بے اطمینانی ادھک بڑھ گئی ہے. حکومت کے ظلم اور ہنسا کے کارن پورے ملک میں اسنتوش بڑھتا اور پھیلتا جا رہا ہے. 1951 کے شروع سے مزدوروں کی بڑھتی ہوئی تعداد نے کارخانوں اور ربر کے جنگلوں میں "غیر قانونی ہڑتال" کی ہے. انہوں نے 'واک آوٹ' کیا. ربر کے جنگلوں میں ہڑتال کا کام خوب زوروں سے ہوا. اور اس پر حکومت اور کاروباری لوگوں نے آدمیوں کی کمی کا شور مچانا شروع کر دیا.

آجکل سب سے خاص بات یہ ہے کہ تمام بڑی بڑی اور وفادار یونینوں نے یا تو ہڑتال کی دھمکی دی ہے یا اپنی مانگ کو اتنے زور دار طریقے سے پیش کیا کہ ایک سال پہلے اگر ایسا ہوا ہوتا تو نہ جانے لوگ اُن کے بارے میں کیا سمجھتے.

آر ی سول سروس یونین (ملایا کے انگریزی فوجی نوکروں کی یونین) نے بھی بڑی تگڑی مانگ پیش کی. شروع میں یونین اپنی مانگ منظور کرانے میں ناکام رہی. لیکن بعد میں اس سے زیادہ زور دار طریقے سے چنوتی دے کر اپنی مانگ کو رکھا. ملایا کے انگریزی اخبار 'اسٹریٹس ٹائمس' کے 22 جون 1951 والے پرچے میں یونین کی مانگ کے بارے میں یہ رپورٹ دی گئی تھی:—

"یونین نے زیادہ اُجرت، مہنگائی بھتا، پراوی ڈینٹ فنڈ، بڑھاپا پینشن، علاج اور ملازمت کی ضمانت کی مانگ کی ہے."

ان مانگوں سے ظاہر ہوتا ہے کہ ملایا میں ملازموں کی کتنی بری حالت تھی اور انہیں ڈاکٹری سہولتیں، بڑھاپا پینشن اور نوکری کی گارنٹی تک حاصل نہ تھی. اس پر بھی ٹرانسپورٹ ہاوس کے حاکم ملایا میں سرکاری اثر والے ٹریڈ یونینوں کی کامیابی کی ڈینگیں مار رہے ہیں.

पीली मज़दूर सभायें.

पी. एम. एफ. टी. यू. के काम करने वाले मज़दूरों को कुचलने के बाद हकूमत ने 'पीली यूनियनें' क़ायम कीं. इनका नाम ट्रेड यूनियन एडवाईज़र्स रखा गया. इनका मक़सद आम मज़दूर जमाअतों को कुचलना और उनकी जगह "ग़ैर सियासी" और हड़ताल न करने वाली जमाअतें क़ायम करना था जो कि क़ौमी तहरीक को गड़बड़ा दें.

इन ट्रेड यूनियन एडवाइज़रों ने अंगरेज़ी नई बस्ती के साथ मिल कर काम किया. लेकिन जब वह आये थे तो उन्होंने क़बूल किया था कि वह लन्दन के नई बस्ती दफ़्तर के नौकर नहीं हैं बल्कि "ट्रांसपोर्ट हाउस" के भेजे हुए हैं. फिर भी इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता. क्योंकि नई आबादी दफ़्तर ट्रेड यूनियन से ताल्लुक़ रखने वाले तमाम मसलों के बारे में ट्रांसपोर्ट हाउस से ही सलाह मशवरा लिया करता है.

मलाया के मज़दूरों को बेवक़ूफ़ बनाने की यह कोशिश नाकाम हो गई. जनवरी सन 1950 में हकूमत की मदद से क़ायम होने वाली जमाअतों के मेम्बरों की तादाद सिर्फ़ सत्तर हज़ार थी, और ग़ैर क़ानूनी पी. एम. एफ. टी. यू. के मेम्बरों की तादाद उस समय भी तीन लाख थी. इसी के ख़त्म होने तक "पीली यूनियनों" के मेम्बर हकूमत की चालबाज़ी से परेशान हो कर उसे छोड़ने लगे और हकूमत को यह मानना पड़ा कि उसके पिट्ठू यूनियनों के मुश्किल से चालीस हज़ार मेम्बर हैं.

अंगरेज़ी सरकार ने छोटी छोटी यूनियनें बना कर अपनी कामयाबी के दावे को कम से कम काग़ज़ पर सच्चा साबित कर दिया. ऐसे यूनियन गिनती में तो बढ़े पर उनके मेम्बरों की तादाद घटती चली गई.

हकूमत की बनाई जमाअतों की असलियत मज़दूर लोग समझ चुके थे. इसलिये इन क़ानूनी जमाअतों के आम मेम्बरों में भी एक सख़्त खींचा तानी शुरू हो गई और उन्होंने अपने दग़ाबाज़ लीडरों की पोल खोलना शुरू कर दी.

क़ानूनी मज़दूर जमाअतों की तरफ़ से पहली मुठभेड़ कोरिया की लड़ाई छिड़ने पर शुरू हुई. रबर और टीन के कारोबार में लड़ाई की वजह से काफ़ी फ़ायदा हुआ और उनकी क़ीमतें इतनी चढ़ गईं कि पहले कभी नहीं चढ़ी थीं.

रबर की खेती करने वाले अंगरेज़ों और टीन की कानों के मालिकों ने मज़दूरों को और ज़ियादा कसना शुरू कर दिया. उन्होंने रबर की कमी का ढोंग रचा कर रोज़ाना [illegible] की चीज़ों के दाम आसमान पर चढ़ा दिये. इस [illegible] के [illegible] का कोई ओर-छोर ही नहीं था.

پیلی مزدور سبھائیں

پی . ایم . ایف . ٹی . یو . کے کام کرنے والے مزدوروں کو کچلنے کے بعد حکومت نے 'پیلی یونینیں' قائم کیں. ان کا نام ٹریڈ یونین ایڈوائزرس رکھا گیا . ان کا مقصد عام مزدور جماعتوں کو کچلنا اور ان کی جگہ "غیر سیاسی" اور ہڑتال نہ کرنے والی جماعتیں قائم کرنا تھا کہ قومی تحریک کو گڑبڑا دیں .

ان ٹریڈ یونین ایڈوائزروں نے انگریزی نئی بستی کے ساتھ مل کر کام کیا . لیکن جب وہ آئے تھے تو انہوں نے قبول کیا تھا کہ وہ لندن کے نئی بستی دفتر کے نوکر نہیں ہیں بلکہ "ٹرانسپورٹ ہاوس" کے بھیجے ہوئے ہیں. پھر بھی اس سے کوئی فرق نہیں پڑتا . کیونکہ نئی آبادی دفتر ٹریڈ یونین سے تعلق رکھنے والے تمام مسئلوں کے بارے میں ٹرانس پورٹ ہاوس سے ہی صلاح مشورہ لیا کرتا ہے .

ملایا کے مزدوروں کو بیوقوف بنانے کی یہ کوشش ناکام ہوگئی . جنوری سن 1950 میں حکومت کی مدد سے قائم ہونے والی جماعتوں کے ممبروں کی تعداد صرف ستر ہزار تھی اور غیر قانونی پی . ایم . ایف . ٹی . یو . کے ممبروں کی تعداد اس سمے بھی تین لاکھ تھی . اسی سال کے ختم ہونے تک "پیلی یونینوں" کے ممبر حکومت کی چال بازی سے پریشان ہوکر اسے چھوڑنے لگے اور حکومت کو یہ ماننا پڑا کہ اس کے پٹھو یونینوں کے مشکل سے چالیس ہزار ممبر ہیں .

انگریزی سرکار نے چھوٹی چھوٹی یونینیں بناکر اپنی کامیابی کے دعوے کو کم سے کم کاغذ پر سچا ثابت کردیا . ایسے یونین گنتی میں تو بڑھے پر ان کے ممبروں کی تعداد گھٹتی چلی گئی .

حکومت بنائی جماعتوں کی اصلیت مزدور لوگ سمجھ چکے تھے . اس لئے قانونی جماعتوں کے عام ممبروں میں بھی ایک سخت کھینچاتانی شروع ہوگئی اور انہوں نے اپنے دغاباز لیڈروں کی پول کھولنا شروع کر دی۔

قانونی مزدور جماعتوں کی طرف سے پہلی مٹھ بھیڑ کوریا کی لڑائی چھڑنے پر شروع ہوئی . ربر اور ٹین کے کاروبار میں لڑائی کی وجہ سے کافی فائدہ ہوا اور ان کی قیمتیں اتنی چڑھ گئیں کہ پہلے کبھی نہیں چڑھی تھیں.

ربر کی کھیتی کرنے والے انگریزوں اور ٹین کی کانوں کے مالکوں نے مزدوروں کو اور زیادہ کسنا شروع کردیا . انہوں نے ربر کی کمی کا ڈھونگ رچا کر روزانہ ضرورت کی چیزوں کے دام آسمان پر چڑھا دیئے . اس وجہ سے مالکوں کے فائدے کا کوئی اور چھور ہی نہیں تھا .

डंडे की हकूमत.

अक्तूबर 1945 से लेकर अक्तूबर 1947 तक नई के अंगरेज़ी हाकिमों की कोशिशें मज़दूरों को परेशान और हिन्सा के ज़रिये उनमें फूट डालने पर ख़र्च रहीं. जब वह इन कोशिशों में कामयाब नहीं हुए तो फिर बहाल करने के दावे भी हवा हो गये. जून 1948 अंगरेज़ी हकूमत ने इन तमाम राज काजी दलों को जो ज़ादी चाहती थीं डंडे के ज़ोर से कुचल कर रख दिया कुल मलाया फ़ैडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन को दबाने लिये अपनी फ़ौजी ताक़त से काम लिया. लोग भी नी आज़ादी और ज़िन्दगी बचाने के लिये हथियारों मुक़ाबले पर उतर आये.

अंगरेज़ी हकूमत ने बहुत जल्द अपने इस अमल को ाई में बदल दिया. और एक पुलिस हकूमत बना डाली वक़्त के बाद से पांच आदमी इकट्ठे होने को पुलिस नी ताक़त से रोक सकती थी. सिर्फ़ वही राज काजी या मज़दूर सभा काम कर सकती थी जिसको नई बस्ती किमों ने क़ायम कराया हो. जो थोड़ा बहुत बोलने आज़ादी थी वह भी छीन ली गई.

लड़ाई के क़ानून.

अंगरेज़ी हकूमत मलाया में पुलिस राज की मौजूदगी नकार करने की कोशिश नहीं कर करती बल्कि वह मलाया की जनता पर, डाकू और डरे हुओं का कलंक कर अपनी ज़ियादतियां सही साबित करने की शिश करती है. आज तक मलाया में जमहूरी राज लोक शाही सरकार जैसी कोई चीज़ नज़र नहीं आती.

अंगरेज़ी नई बस्ती हकूमत ने सन 1950 में ब्रिग्ज़ न (Briggs Plan) चालू किया. इस मंसूबे का चोड़ यह था कि मज़दूरों और किसानों को 'बहालयाबी ाक़ों' (फिर बसाये गये इलाक़ों) में बदला जा सकता . अंगरेज़ी हकूमत ने निहायत ही धोके बाज़ तरीक़े र पागलपन से इसका प्रचार किया था. सच्चाई यह थी देहाती इलाक़ों के नौ लाख मज़दूरों और किसानों को ज और पुलिस के पहरे में घेर कर उससे मन चाहा म लेना इस मंसूबे का असली मक़सद था. कुछ अरसे लन्दन में अंरेज़ी हकूमत इस बात से इनकार करती ी कि बहालयाबी केम्प असल में "नज़र बन्दी केम्प" न कुछ लोग तो बेशरमी से यहां तक कहने लगे कि इन केम्पों में काम और खेल की बेमिसाल आसानियां हासिल किन आख़िर में सच्चाई ज़ाहिर हो गई. और जब की रेडक्रास जमाअत ने मार्च 1951 में इन केम्पों में नी मज़दूरों के साथ जो सलूक किया गया था उसकी च की तो अंगरेज़ी हाकिमों ने बहुत नाक भौं सिकोड़ी.

ڈنڈے کی حکومت .

اکتوبر 1945 سے لیکر اکتوبر 1947 تک نئی بستی کے انگریزی حاکموں کی کوششیں مزدوروں کو پریشان کرنے اور ہنسا کے ذریعے اُن میں پھوٹ ڈالنے پر خرچ ہوتی رہیں . جب وہ اِن کوششوں میں کامیاب نہیں ہوئے تو اُن کے پھر بحال کرنے کے دعوے بھی ہوا ہو گئے . جون 1948 میں انگریزی حکومت نے اِن تمام راج کاجی دلوں کو جو آزادی چاہتی تھیں ڈنڈے کے زور سے کچل کر رکھ دیا اور کل ملایا فیڈریشن آف ٹریڈ یونین کو دبانے کے لئے. اپنی فوجی طاقت سے کام لیا . لوگ بھی اپنی آزادی اور زندگی بچانے کے لئے ہتھیاروں سے مقابلے پر اُتر آئے .

انگریزی حکومت نے بہت جلد اپنے اِس عمل کو لڑائی میں بدل دیا . اور ایک پولیس حکومت بنا ڈالی. اِس وقت کے بعد پانچ آدمی اِکٹھے ہونے کو پولیس اپنی طاقت سے روک سکتی تھی . صرف وہی راج کاجی دل یا مزدور سبھا کام کرسکتی تھی جس کو نئی بستی کے حاکموں نے قائم کرایا ہو . جو تھوڑا بہت بولنے کی آزادی تھی وہ بھی چھین لی گئی .

لڑائی کے قانون .

انگریزی حکومت ملایا میں پولیس راج کی موجودگی سے اِنکار کرنے کی کوشش نہیں کرتی بلکہ وہ صرف ملایا کی جنتا پر' ڈاکو اور ڈرے ہوؤں کا کلنک لگا کر اپنی زیادتیاں صحیح ثابت کرنے کی کوشش کرتی ہے. آج تک ملایا میں جمہوری راج یا لوک شاہی سرکار جیسی کوئی چیز نظر نہیں آتی .

انگریزی نئی بستی حکومت نے سن 1950 میں برگز پلان (Briggs Plan) چالو کیا . اِس منصوبے کا نچوڑ یہ تھا کہ مزدوروں اور کسانوں کو بحالیاتی علاقوں (پھر بسائے گئے علاقوں) میں بدلا جاسکتا تھا . انگریزی حکومت نے نہایت ہی دھوکے باز طریقے اور پاگل پن سے اس کا پرچار کیا تھا . سچائی یہ تھی کہ دیہاتی علاقوں کے نو لاکھ مزدوروں اور کسانوں کو فوج اور پولیس کے پہرے میں گھیر کر اُن سے من چاہا کام لینا اِس منصوبے کا اصلی مقصد تھا . کچھ عرصے تک لندن میں انگریزی حکومت اس بات سے انکار کرتی رہی کہ بحالیاتی کیمپ اصل میں "نظر بندی کیمپ" نہ تھے. کچھ لوگ تو بےشرمی سے یہاں تک کہنے لگے کہ اِن کے کیمپوں میں کام اور کھیل کی وہ آسانیاں حاصل ہیں' لیکن آخر میں سچائی ظاہر ہوگئی . اور جب چین کی ریڈکراس جماعت نے مارچ 1951 میں اِن کیمپوں میں چینی مزدوروں کے ساتھ جو سلوک کیا گیا تھا اُس کی جانچ کی تو انگریزی حاکموں نے بہت ناک بھوں

मलाया में अंगरेज़ी साम्राज का नंगा नाच

(हांग बी-लिम, एडीटर 'मलायन मानीटर',)

['नया हिन्द' के पाठक जानते हैं कि पूर्वी एशिया में अमरीका की दिलचस्पी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है. उसकी दिलचस्पी के दो अड्डे हैं—वीत नाम और मलाया. पिछले नम्बर में "हो-ची-मिन्ह और वीत नाम" नाम के लेख में वीत नाम की झलक दी जा चुकी है. इस लेख में हम मलाया की असलीयत दे रहे हैं. यह 'मलायन मानीटर' के क़ाबिल एडीटर के लेख का आज़ाद अनुवाद है—एडीटर]

जब अंगरेज़ी साम्राज ने 1945 के आख़िर में मलाया पर फिर से क़ब्ज़ा किया तो उसका मक़सद यह था कि इस मुल्क को एक नई बस्ती की हैसियत दे दे. लेकिन इस मक़सद को हासिल करने के लिये उसे एक नई जागी हुई क़ौम को भी इत्मिनान दिलाना था जिसने तय कर लिया था कि वह अब 1939 के ज़माने में वापिस नहीं लौटेगी. इस चुनौती के जवाब में साम्राजियों के पास सिवाय हिन्सा और ज़ुल्म के कोई चारा न था.

अपनी तरक़्क़ी के ज़माने में मलाया फ़ैडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन के चार लाख मेम्बर थे. इस फ़ेडरेशन को नई बस्ती क़ानून ने बाक़ायदा नहीं माना था. फिर भी अंगरेज़ी फ़ौजी हकूमत ब्योपारी झगड़ों में उसके प्रतिनिधियों को क़बूल करने पर मजबूर थी. अंगरेज़ी हाकिम कम से कम उसूली तौर पर मज़दूरों के इन्तज़ाम करने की मांग को मानने पर मजबूर थे. यह और बात है कि इस वक़्त क़ानूनी ट्रेड यूनियन के बारे में अंगरेज़ी हाकिमों का कुछ और ख़याल रहा हो. मज़दूरों की लगातार कोशिश ने नई बस्ती के हाकिमों से कुछ रिआयतें हासिल कर ली थीं.

देश के हर हिस्से में आज़ादी, चावल, कपड़े और ठीक इन्तज़ाम की मांग का बन्दूक़ों के कुन्दों और गोलियों से जवाब दिया गया.

आम जनता की कोशिशों से इसी ज़माने में मलाया के इतिहास में मज़दूरों की सबसे बड़ी फ़ैडरेशन बनी. इसका नाम था आम लेबर यूनियन. बाद में इसी का नाम कुल मलाया फ़ैडरेशन आफ़ ट्रेड यूनियन पड़ा.

मज़दूरों की इस कोशिश को किसानों, मछेरों और यहां तक कि हकूमत और अंगरेज़ी दफ़्तर के सफ़ेद कालर [illegible] हिमायत भी हासिल हो गई.

ملایا میں انگریزی سامراج کا ننگا ناچ

(هانگ بی . لم، ایڈیٹر 'ملاین مانیٹر'۔)

['نیا ہند' کے پاٹھک جانتے ہیں کہ پوربی ایشیا میں امریکہ کی دلچسپی دن دونی رات چوگنی بڑھ رہی ہے ۔ اُس کی دلچسپی کے دو اڈے ہیں— ویت نام اور ملایا ۔ پچھلے نمبر میں "ہوچی منہ اور ویت نام" نام کے لیکھ میں ویت نام کی جھلک دی جا چکی ہے ۔ اِس لیکھ میں ہم ملایا کی اصلیت دے رہے ہیں ۔ یہ 'ملاین مانیٹر' کے قابل ایڈیٹر کے لیکھ کا آزاد انوواد ہے—ایڈیٹر]

جب انگریزی سامراج نے 1945 کے آخر میں ملایا پر پھر سے قبضہ کیا تو اس کا مقصد یہ تھا کہ اِس ملک کو ایک نئی بستی کی حیثیت دے دے ۔ لیکن اِس مقصد کو حاصل کرنے کے لئے اُسے ایک نئی جاگی ہوئی قوم کو بھی اطمینان دلانا تھا ۔ جس نے طے کر لیا تھا کہ وہ اب 1939 کے زمانے میں واپس نہیں لوٹے گی۔ اِس چنوتی کے جواب میں سامراجیوں کے پاس سوائے ہنسا اور ظلم کے کوئی چارہ نہ تھا ۔

اپنی ترقی کے زمانے میں ملایا فیڈریشن آف ٹریڈ یونین کے چار لاکھ ممبر تھے ۔ اِس فیڈریشن کو نئی بستی قانون نے باقاعدہ نہیں مانا تھا ۔ پھر بھی انگریزی فوجی حکومت بیوپاری جھگڑوں میں اُس کے پرتی ندھیوں کو قبول کرنے پر مجبور تھی ۔ انگریزی حاکم کم سے کم اُصولی طور پر مزدوروں کے انتظام کرنے کی مانگ کو ماننے پر مجبور تھے ۔ یہ اور بات ہے کہ اِس وقت قانونی ٹریڈ یونین کے بارے میں انگریزی حاکموں کا کچھ اور خیال رہا ہو ۔ مزدوروں کی لگاتار کوشش نے نئی بستی کے حاکموں سے کچھ رعایتیں حاصل کرلی تھیں ۔

دیش کے ہر حصے نے آزادی، چاول، کپڑے اور ٹھیک انتظام کی مانگ کا بندوقوں کے کندوں اور گولیوں سے جواب دیا گیا ۔

عام جنتا کی کوششوں سے اِسی زمانے میں ملایا کے اِتہاس میں سب سے بڑی مزدوروں کی فیڈریشن بنی ۔ اِس کا نام تھا عام لیبر یونین ۔ بعد میں اِسی کا نام کل ملایا فیڈریشن آف ٹریڈ یونین پڑا ۔

مزدوروں کی اِس کوشش کو کسانوں، مچھیروں اور یہاں تک کہ حکومت اور انگریزی دفتر کے سفید کالر والے لوگوں کی حمایت بھی حاصل ہوگئی ۔

[illegible] की बहुत जल्दी [illegible] सकते हैं.

रूस के लोग जब एक बार कोई मक़सद अपने सामने रख लेते हैं तो पूरी ताक़त से और एक दिल हो कर उसे पूरा करने में जुट जाते हैं. उनमें संगठन शक्ति भी कमाल की है. हमें यह चीज़ें उनसे सीखनी हैं.

दूसरी तरफ़ लोहे की जिस दीवार के पीछे रूस ने यह सब तरक़्क़ी की है उसका क़ुदरती नतीजा रूस की लड़ाई की तैयारियां हैं. यह तैयारियां केवल अपने बचाव के लिये हैं, दूसरे को नुक़सान पहुंचाने के लिये नहीं. फिर भी सारे इनसानी समाज को एक कुटुम्ब मानते हुए हम हमेशा के लिये लोहे की दीवारों के पीछे नहीं रह सकते. एक दूसरे पर शक और नफ़रत से सब क़ौमें एक कुन्बा नहीं बन सकतीं. इस तरह की लोहे की दीवार को बनाये रखने के लिये जो ख़र्च होगा वह साइन्स की सारी तरक़्क़ी के असली फ़ायदों को खा जायेगा. और आम जनता फिर ग़रीब और जहां थी वहां रह जायेगी. नये नये हथियारों में मुक़ाबले की जो दौड़ इस समय हो रही है वह सब को बरबाद कर देने वाली है. इसका हल सिर्फ़ एक है. वह यह कि हर क़ौम और हर मुल्क की जनता हर तरह अपने पैरों पर खड़ी हो. रूस ने लोहे की दीवार के पीछे इसकी भी काफ़ी कोशिश की है. लेकिन यह चीज़ असल में तभी पैदा होगी जब हुकूमत की सारी ताक़त आम जनता के हाथ में बिखरी हुई हो. और जनता की ज़रूरत की सब चीज़ें ऐसे तरीक़ों से पैदा की जायें जिनमें ताक़त और अधिकार थोड़े से लोगों के हाथों में न आने पाये. असली शान्ति और तरक़्क़ी का यही एक रास्ता है.

इतना कुछ कर लेने पर भी रूस वैसे ही ख़तरे में है जैसे ख़तरे में अमरीका है. दोनों को अपनी जान बचाने के लिये हिंसा के बड़े बड़े क़िले खड़े करने पड़ रहे हैं. इन दोनों में से कोई भी सब क़ौमों को एक करके सच्ची शान्ति और सब की भलाई की तरफ़ नहीं ले जा सकता. रूस जहां है वहीं वह रुक भी नहीं सकता. उसे आगे का रास्ता बनाना होगा. दुनिया में शान्ति क़ायम करने और क़ायम रखने की रूस की ज़बरदस्त इच्छा अगर पूरी होनी है तो रूस को अपना तरीक़ा बदलना और सुधारना होगा. हो सकता है कि मास्को में जो अन्तर क़ौमी आर्थिक कानफ़्रेंस हुई है वह इस मक़सद के पूरा करने में मदद दे.

रूस की जनता और वहां के लीडर दोनों सच्चे मानों में खोजी हैं. वह ऊंचे दरजे के खोजी हैं. इसमें शक नहीं कि वह सारी दुनिया का भला चाहते हैं. हमारी सब की यही प्रार्थना होनी चाहिये कि उनकी खोज कामयाब हो.

[illegible] تو بہت جلدی ہم ان سے [illegible]
سکتے ہیں۔

روس کے لوگ جب ایک بار کوئی مقصد اپنے سامنے رکھ لیتے ہیں تو پوری طاقت سے اور ایک دل ہوکر اسے پورا کرنے میں جٹ جاتے ہیں۔ اُن میں سنگھٹن شکتی بھی کمال کی ہے۔ ہمیں یہ چیزیں اُن سے سیکھنی ہیں۔

دوسری طرف لوہے کی جس دیوار کے پیچھے روس نے یہ سب ترقی کی ہے اس کا قدرتی نتیجہ روس کی لڑائی کی تیاریاں ہیں۔ یہ تیاریاں کیول اپنے بچاؤ کے لئے ہیں، دوسرے کو نقصان پہونچانے کے لئے نہیں۔ پھر بھی سارے انسانی سماج کو ایک کٹمب مانتے ہوئے ہم ہمیشہ کے لئے لوہے کی دیواروں کے پیچھے نہیں رہ سکتے۔ ایک دوسرے پر شک اور نفرت سے سب قومیں ایک کنبہ نہیں بن سکتیں۔ اِس طرح کی لوہے کی دیوار کو بنائے رکھنے کے لئے جو خرچ ہوگا وہ سائنس کی ساری ترقی کے اصلی فائدوں کو کھا جائے گا۔ اور عام جنتا پھر غریب اور جہاں تھی وہاں رہ جائے گی۔ نئے نئے ہتھیاروں میں مقابلے کی جو دوڑ اِس سمے ہو رہی ہے وہ سب کو برباد کردینے والی ہے۔ اِس کا حل صرف ایک ہے وہ یہ کہ ہر قوم اور ہر ملک کی جنتا ہر طرح اپنے پیروں پر کھڑی ہو۔ روس نے لوہے کی دیوار کے پیچھے اِس کی بھی خاصی کوشش کی ہے۔ لیکن یہ چیز اصل میں تبھی پیدا ہوگی جب حکومت کی ساری طاقت عام جنتا کے ہاتھ میں بکھری ہوئی ہو۔ اور جنتا کی ضرورت کی سب چیزیں ایسے طریقوں سے پیدا کی جائیں جن میں طاقت اور ادھیکار تھوڑے سے لوگوں کے ہاتھوں میں نہ آنے پائے۔ اصلی شانتی اور ترقی کا یہی ایک راستہ ہے۔

اتنا کچھ کرلینے پر بھی روس ویسے ہی خطرے میں ہے جیسے خطرے میں امریکہ ہے۔ دونوں کو اپنی جان بچانے کے لئے ہنسا کے بڑے بڑے قلعے کھڑے کرنے پڑ رہے ہیں۔ ان دونوں میں سے کوئی بھی سب قوموں کو ایک کرکے سچی شانتی اور سب کی بھلائی کی طرف نہیں لے جاسکتا۔ روس جہاں ہے وہاں وہ رک بھی نہیں سکتا۔ اُسے آگے کا راستہ بنانا ہوگا۔ دنیا میں شانتی قائم کرنے اور قائم رکھنے کی زبردست اِچھا اگر پوری ہونی ہے [illegible] روس کو اپنا طریقہ بدلنا اور سدھارنا ہوگا۔ ہوسکتا ہے کہ ماسکو میں جو انٹر قومی آرتھک کانفرنس ہوئی ہے وہ اس مقصد کے پورا ہونے میں مدد دے۔

روس کی جنتا اور وہاں کے لیڈر دونوں سچے معنوں میں کھوجی ہیں۔ وہ اونچے درجے کے کھوجی ہیں۔ اِس میں شک نہیں کہ وہ ساری دنیا کا بھلا چاہتے ہیں۔ ہماری سب کی یہی پرارتھنا ہونی چاہئے کہ اُن کی کھوج کامیاب ہو۔

मज़दूर को उसे सीखने के लिये भेजा जाता है. अमरीका में इस तरह के मज़दूर को फ़ौरन बरख़ास्त कर दिया जाता है. रूस वाले कभी किसी मज़दूर को बरख़ास्त करना नहीं जानते क्यों कि उन्हें जितनी फ़िकर अपनी पैदावार बढ़ाने का है उससे ज़ियादा मुहब्बत अपने आदमियों से है.

आख़ीर में मैं जिस नतीजे पर पहुँचा वह यह है कि रूस ने जो कुछ किया वह उस मुल्क की हालत में उसके लिये सबसे अच्छी चीज़ हो सकती है. हमारे मुल्क के हालात, हमारा पिछला इतिहास और हमारी ज़रूरतें कुछ अलग हैं. इसलिये हम इस मुल्क में रूसी नमूने की नक़ल नहीं कर सकते हैं. सारे समाज को एक नमूने पर ढालने, इनसानी समाज को एक मशीन बना देने और सारी ताक़त को ऊपर के कुछ आदमियों के हाथों में दे देने का नतीजा अंत में जा कर सिवाये हिंसा और समाज की बरबादी के और कुछ नहीं हो सकता.

रूस से हम बहुत सी अच्छी बातें ले सकते हैं. रूस के अंदर वहां के लीडरों की जो ताक़त और उनका जो असर है वह बहुत तारीफ़ की चीज़ है. वहां के लीडर जनता के हो कर उसे राह दिखाते हैं. जनता के ऊपर रोब नहीं जमाते. रूस के लीडरों की देश भक्ति, मुल्क को उसके पैरों पर खड़ा करने की कोशिश और स्वदेशी की ज़बरदस्त भावना हम नक़ल कर सकते हैं. मिल कर काम करने की आदत भी हम उन से सीख सकते हैं. उनकी कोआपरेटिव सोसाइटियां बहुत ही अच्छा काम कर रही हैं और सराहने की चीज़ें हैं. आम जनता के भले के लिये बड़ी नहरें खोदना और इसी तरह के दूसरे काम वह बिल्कुल समाज सेवा की निगाह से करते हैं. यह समाज सेवा का भाव हम में उन से बहुत कम है. यह सब हम उनसे सीख सकते हैं.

रूस की ताक़त का सब से बड़ा भेद यह है कि वहां की जनता को अपने लीडरों पर पूरा भरोसा है अगर हम अपने यहां यह पैदा कर लें तो हमारे आधे सवाल ख़ुद बख़ुद हल हो जायें. हम यह कर सकते हैं अगर हम जनता की सच्ची ज़रूरतों और उनके दिल और दिमाग़ को समझ सकें, उसके साथ अपने अन्दर हमदर्दी पैदा कर सकें और अपनी सारी प्लानों को उसके मुताबिक़ ढाल सकें तो आसानी से देश का दुःख दूर हो सकता है. हमारी आजकल की सरकार इससे बहुत दूर है.

रूस से और चीन से हम ऐसे ही बहुत से उसूल सीख सकते हैं. इस मुल्क के इनसान किसी तरह रूस या चीन के इनसानों से घटिया नहीं हैं. हम अगर अपनी पूरी समझ, होशियारी और पूरी शक्ति से काम लें और रूस और चीन से फ़ायदा उठाते हुए अपने सवाल अपनी

وأسے سیکھنے کے لئے بھیجا جاتا ہے. امریکہ میں اس
کے مزدور کو فوراً برخاست کردیا جاتا ہے . روس والے
ی کسی مزدور کو برخاست کرنا نہیں جانتے کیونکہ
ں جتنی فکر اپنی پیداوار بڑھانے کا ہے اُس سے زیادہ
بت اپنے آدمیوں سے ہے .

آخیر میں میں جس نتیجے پر پہونچا وہ یہ ہے کہ روس
جو کچھ کیا وہ اُس ملک کی حالات میں اُس کے لئے
ب سے اچھی چیز ہوسکتی ہے. ہمارے ملک کے حالات'
ا پچھلا اتہاس اور ہماری ضرورتیں کچھ الگ ہیں .
لئے ہم اِس ملک میں روسی نمونے کی نقل نہیں
سکتے ہیں . سارے سماج کو ایک نمونے پر ڈھالنے
نی سماج کو ایک مشین بنا دینے اور ساری طاقت
اوپر کے کچھ آدمیوں کے ہاتھوں میں دے دینے کا
جہ انت میں جاکر سوائے ہنسا اور سماج کی بربادی
اور کچھ نہیں ہوسکتا .

روس سے ہم بہت سی اچھی باتیں لے سکتے ہیں .
ں کے اندر وہاں کے لیڈروں کی جو طاقت اور اُن کا
اثر ہے وہ بہت تعریف کی چیز ہے . وہاں کے لیڈر
نتا کے ہوکر اُسے راہ دکھاتے ہیں . جنتا کے اوپر رعب نہیں
ماتے . روس کے لیڈروں کی دیش بھکتی' ملک کو اُس
یروں پر کھڑا کرنے کی کوشش اور سودیشی کی زبردست
ونا ہم نقل کرسکتے ہیں . مل کر کام کرنے کی عادت
ی ہم اُن سے سیکھ سکتے ہیں . اُن کی کوآپریٹو
سائٹیاں بہت ہی اچھا کام کر رہی ہیں اور سراہنے
. چیزیں ہیں . عام جنتا کے بھلے کے لئے بڑی بڑی
ہریں کھودنا اور اسی طرح کے دوسرے کام وہ بالکل
ماج سیوا کی نگاہ سے کرتے ہیں . یہ سماج سیوا کا
. ہم میں اُن سے بہت کم ہے . یہ سب ہم اُن سے
یکھ سکتے ہیں .

روس کی طاقت کا سب سے بڑا بھید یہ ہے کہ وہاں
ی جنتا کو اپنے لیڈروں پر پورا بھروسہ ہے . اگر
اپنے یہاں یہ پیدا کرلیں تو ہمارے آدھے سوال
د بخود حل ہو جائیں . ہم یہ کرسکتے ہیں اگر ہم
نتا کی سچی ضرورتوں اور اُن کے دل اور دماغ
سمجھ سکیں' اُس کے ساتھ اپنے اندر ہمدردی پیدا
سکیں اور اپنی ساری پلینوں کو اُس کے مطابق
ال سکیں تو آسانی سے دیش کا دکھ دور ہوسکتا ہے .
ماری آج کل کی سرکار اِس سے بہت دور ہے .

روس سے اور چین سے ہم ایسے ہی بہت سے اصول
یکھ سکتے ہیں . اِس ملک کے انسان کسی طرح روس
چین کے انسانوں سے گھٹیا نہیں ہیں . ہم اگر اپنی
ری سمجھ' ہوشیاری اور پوری شکتی سے کام لیں اور
س اور چین سے فائدہ اُٹھاتے ہوئے اپنے سوال اپنی طرح

है कि हम [illegible] में बांस गाड़ कर उसकी दीवारें बनाते हैं और उस पर मिट्टी थोप देते हैं. और रूसी लकड़ी के तख़्तों की दीवारें बना कर उस पर मिट्टी थोप देते हैं. हमारे यहां लोगों के पास खाने को नहीं है लेकिन फिर भी हम अपने हवाई अड्डों की इमारतें बनाने में अमरीका की नक़ल करना चाहते हैं.

रूस के हवाई जहाज़ चलाने वाले वाले पाइलट बहुत होशियार होते हैं. जिन ज़मीनों पर वह अपने जहाज़ उतारते हैं वह बढ़िया सिमेन्ट की नहीं होतीं लेकिन यह पाइलट इतने होशियार होते हैं कि आसानी से और बिना किसी ख़तरे के घास के मैदान के ऊपर हवाई जहाज़ों को उतार लेते हैं और चला लेते हैं. पैसे की कमी को वह अपनी अक़्ल और हाथ की होशियारी से पूरा करते हैं.

रूसी समाज की बुनियाद घरेलू ज़िंदगी यानी कुटम्बी जीवन पर रखी जा रही है. मियां बीवी, मां बाप और बच्चों के आपसी सम्बंध की वह बहुत क़दर करते हैं. तलाक़ के ख़िलाफ़ वह अपने क़ायदे कसते जा रहे हैं. वेश्याओं के पेशे को उन्होंने क़ानून के ख़िलाफ़ क़रार दिया है. मैंने सुना कि इससे बहुत सी बीमारियां वहां पहले से बहुत कम हो गई हैं. अमरीका या इंगलिस्तान में किसी भी छुट्टी के दिन बाग़ों और पार्कों में तरह तरह के इनसानी जोड़े ज़लील हरकतें करते हुये दिखाई देते हैं. रूस में पहली मई के जलसों और जलूसों में लड़कियों के ठट के ठट अलग जाते हुये दिखाई देते थे और लड़कों के जत्थे के जत्थे अलग घूमते नज़र आते थे. सब में एक सलीक़ा, और तरीक़ा था. और कहीं कोई बात दिखाई नहीं दी जिसे सदाचार से गिरा हुआ कहा जा सके. घरेलू ज़िन्दगी की आज वहां बड़ी इज़्ज़त है, और यारप के मुल्कों से बहुत ज़ियादा.

रूस के लोग बड़ी बड़ी मशीनों से बड़े पैमाने पर माल पैदा करना चाहते हैं. फिर भी ज़ियादा माल पैदा करने का वह बेजा जोश उनमें नहीं है जो अमरीका में दिखाई देता है. मिसाल के लिये मैं एक कारख़ाने में गया जिस में मोटरें और ट्रैक्टर तैयार किये जाते हैं. मैंने देखा कि मशीनों के ऊपर चमड़े के पट्टे इतने धीरे धीरे घूमते थे कि एक आदमी आसानी से पांच या छै पहियों की देख रेख कर सकता था. उसी तरह के कारख़ाने में अमरीका में पट्टे इतनी तेज़ी से घूमते हैं कि एक आदमी दो या तीन से ज़ियादा पहियों की देख रेख नहीं कर सकता. अमरीका वाले मुमकिन है इन कामों में ज़ियादा होशियार हों, मुमकिन है उनकी मशीनें भी बढ़िया हों. लेकिन अमरीका की तेज़ी वहां के लोगों के रग-पट्ठों को बरबाद कर देती है. रूस में अगर कोई मज़दूर बहुत अच्छा काम नहीं कर

ہے کہ ہم مٹی والی میں بانس گاڑ کر اُس کی دیواریں بناتے ہیں اور اُس پر مٹی تھوپ دیتے ہیں اور روسی لکڑی کے تختوں کی دیواریں بناکر اُن پر مٹی تھوپ دیتے ہیں۔ ہمارے یہاں لوگوں کے پاس کھانے کو نہیں ہے لیکن پھر بھی ہم اپنے ہوائی اڈوں کی عمارتیں بنانے میں امریکہ کی نقل کرنا چاہتے ہیں۔

روس کے ہوائی جہاز چلانے والے پائلٹ بہت ہوشیار ہوتے ہیں۔ جن زمینوں پر وہ اپنے جہاز اُتارتے ہیں وہ بڑھیا سمنٹ کی نہیں ہوتیں لیکن یہ پائلٹ اتنے ہوشیار ہوتے ہیں کہ آسانی سے اور بنا کسی خطرے کے گھاس کے میدان کے اوپر ہوائی جہازوں کو اُتار لیتے ہیں اور چلا لیتے ہیں۔ پیسے کی کمی کو وہ اپنی عقل اور ہاتھ کی ہوشیاری سے پورا کرتے ہیں۔

روسی سماج کی بنیاد پھر سے گھریلو زندگی یعنی کٹمبی جیون پر رکھی جا رہی ہے۔ میاں بیوی، ماں باپ اور بچوں کے آپسی سمبندھ کی وہ بہت قدر کرتے ہیں۔ طلاق کے خلاف وہ اپنے قاعدے کستے جا رہے ہیں۔ ویشیاؤں کے پیشے کو اُنہوں نے قانون کے خلاف قرار دے دیا ہے۔ میں نے سنا کہ اِس سے بہت سی بیماریاں وہاں پہلے سے بہت کم ہوگئی ہیں۔ امریکہ یا انگلستان میں کسی بھی چھٹی کے دن باغوں اور پارکوں میں طرح طرح کے انسانی جوڑے ذلیل حرکتیں کرتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں۔ روس میں پہلی مئی کے جلسوں اور جلوسوں میں لڑکیوں کے ٹھٹ کے ٹھٹ الگ جاتے ہوئے دکھائی دیتے تھے اور لڑکوں کے جتھے کے جتھے الگ گھومتے پھرتے نظر آتے تھے۔ سب میں ایک سلیقہ اور طریقہ تھا۔ اور کہیں کوئی بات دکھائی نہیں دی جسے سداچار سے گرا ہوا کہا جاسکے۔ گھریلو زندگی کی آج وہاں بڑی عزت ہے، اور یورپ کے ملکوں سے بہت زیادہ۔

روس کے لوگ بڑی بڑی مشینوں سے بڑے پیمانے پر مال پیدا کرنا چاہتے ہیں۔ پھر بھی زیادہ مال پیدا کرنے کا وہ بیجا جوش اُن میں نہیں ہے جو امریکہ میں دکھائی دیتا ہے۔ مثال کے لئے میں ایک کارخانے میں گیا جس میں موٹریں اور ٹریکٹر تیار کئے جاتے ہیں۔ میں نے دیکھا کہ مشینوں کے اوپر چمڑے کے پٹے اتنے دھیرے دھیرے گھومتے تھے کہ ایک آدمی آسانی سے پانچ چھ پہیوں کی دیکھ ریکھ کرسکتا تھا۔ اُسی طرح کے کارخانے میں امریکہ میں پٹے اتنی تیزی سے گھومتے ہیں کہ ایک آدمی دو یا تین سے زیادہ پہیوں کی دیکھ ریکھ نہیں کرسکتا۔ امریکہ والے ممکن ہے اِن کاموں میں زیادہ ہوشیار ہوں، ممکن ہے اُن کی مشینیں بھی بڑھیا ہوں۔ لیکن امریکہ کی تیزی وہاں کے لوگوں کے رگ پٹھوں کو برباد کردیتی ہے۔ روس میں اگر کوئی مزدور بہت اچھا کام نہیں کر

…ता है. लेकिन वहां के एक रूबल से उतनी चीज़ …रीदी जा सकती जितनी हिन्दुस्तान में एक रुपये से. …ससे भी बहुत ज़ियादा है. यह समझिये कि यहां … सामान हम सौ रुपये में ख़रीद सकते हैं उतना … डेढ़ हज़ार रूबल में मिलेगा. एक प्याला कोको क़रीब तीन रुपये में मिलता है. रूस वाले जहां तक …ता है मुल्क की दौलत बराबर बांटना चाहते हैं. …और मालिक दोनों को लगभग एक सा खाना और कपड़े मिलते हैं.

…न्दुस्तान में हमारे गांव वाले जो चीज़ें बनाते और …ते हैं उनको मुनासिब क़ीमत भी उन्हें नहीं मिलती. …लों को अपनी चीज़ें सस्तों बेचनी पड़ती हैं ताकि …ाले उससे फ़ायदा उठा सकें.

…र हर चीज़ में यही सोचते हैं कि इस से मुझे अपने … में क्या फ़ायदा होगा या वह चीज़ विलायती के … में बिक सकेगी या नहीं. इसके ख़िलाफ़ रूस में हर … यह सोचता है कि इस चीज़ की जो क़ीमत मैं दे … उससे बनाने वाले का पेट भरेगा या नहीं. उन …में अपने देश और देश वालों की भलाई का ख़्याल … ज़बरदस्त है और उनको इसका अभिमान है.

…व की बनी हुई चीज़ों पर हमारे यहां की कम … गांव वालों को भूका रखती हैं. हमारे यहां का …लोगों में बराबर नहीं बंटता. रूस में इस बराबर के … की कोशिश की जा रही है और बहुत दरजे …न्हें कामयाबी मिली है. उनका सारा ध्यान इस … कि आम जनता के रहन सहन को ऊँचा से ऊंचा …ा जावे.

…हरों में बड़े मकान और पुराने महल भी हैं. लेकिन … मकान भी कम से कम ऐसे ही हैं जैसे हमारे …ड़ी के मकान. यह लोग जो फ़ौज और हथियार पर … ख़र्च करते हैं उसका नतीजा यह है कि यहां की … का रहन सहन अमरीका के जनता का रहन सहन … है लेकिन हिन्दुस्तान की जनता के रहन सहन से ऊँचा है. बड़ी बड़ी सड़कें बहुत अच्छी हालत में हैं. … सड़कें क़रीब क़रीब वैसी ही हैं जैसे हमारे मुल्क …रों में कोई कोई सड़क न्युयार्क और लंदन की …से भी ज़ियादा चौड़ी हैं.

…व के लोगों की हालत इतनी अच्छी नहीं है जितनी … की जा सकती है. यानी साइन्स वग़ैरा में जितनी … तरक़्क़ी की है उस हिसाब से गांव की हालत ने … नहीं की. रूस के हवाई अड्डे हमारे यहां के हवाई … बहुत ज़ियादा सादा है. हवाई अड्डों की इमारतें … हैं. [illegible] की इमारतों में और उनमें फ़र्क़ यह

کچھ زیادہ ہے ۔ لیکن وہاں کے ایک روبل سے اتنی چیز نہیں خریدی جاسکتی جتنی ہندستان میں ایک روپئے سے۔ فرق اس سے بھی بہت زیادہ ہے یہ سمجھئے کہ یہاں جتنا سامان ہم سو روپیہ میں خرید سکتے ہیں اتنا روس میں ڈیڑھ ہزار روبل میں ملے گا ۔ ایک پیالہ کوکو قریب قریب تین روپیہ میں ملتا ہے ۔ روس والے جہاں تک ہوسکتا ہے ملک کی دولت برابر برابر بانٹنا چاہتے ہیں ۔ نوکر اور مالک دونوں کو لگ بھگ ایک سا کھانا اور ایک سے کپڑے ملتے ہیں ۔

ہندستان میں ہمارے گاؤں والے جو چیزیں بناتے اور پیدا کرتے ہیں ان کی مناسب قیمت بھی انہیں نہیں ملتی ۔ گاؤں والوں کو اپنی چیزیں سستی بیچنی پڑتی ہیں تاکہ شہر والے اس سے فائدہ اٹھاسکیں ۔

ہم ہر چیز میں یہی سوچتے ہیں کہ اس سے مجھے اپنے بیوپار میں کیا فائدہ ہوگا یا یہ چیز ولایتی کے مقابلے میں بک سکے گی یا نہیں ۔ اس کے خلاف روس میں ہر آدمی یہ سوچتا ہے کہ اس چیز کی جو قیمت میں دے رہا ہوں اس سے بنانے والے کا پیٹ بھرے گا یا نہیں۔ ان لوگوں میں اپنے دیش اور دیش والوں کی بھلائی کا خیال سب سے زبردست ہے اور ان کو اس کا ابھیمان ہے ۔

گاؤں کی بنی ہوئی چیزوں پر ہمارے یہاں کی کم قیمتیں گاؤں والوں کو بھوکا رکھتی ہیں ۔ ہمارے یہاں کا پیسہ لوگوں میں برابر نہیں بٹتا ۔ روس میں اس برابر کے بٹوارے کی کوشش کی جا رہی ہے اور بہت درجے تک انہیں کامیابی ملی ہے ۔ ان کا سارا دھیان اس طرف ہے کہ عام جنتا کے رہن سہن کو اونچے سے اونچا لے جایا جائے ۔

شہروں میں بڑے مکان اور پرانے محل بھی ہیں ۔ لیکن گاؤں کے مکان بھی کم سے کم ایسے ہی ہیں جیسے ہمارے مکن واڑی کے مکان ۔ یہ لوگ جو فوج اور ہتھیار پر اتنا خرچ کرتے ہیں اس کا نتیجہ یہ ہے کہ یہاں کی جنتا کا رہن سہن امریکہ کی جنتا کے رہن سہن سے تو نیچا ہے لیکن ہندستان کی جنتا کے رہن سہن سے کافی اونچا ہے ۔ بڑی بڑی سڑکیں بہت اچھی حالت میں ہیں ۔ گاؤں کی سڑکیں قریب قریب ویسی ہی ہیں جیسے ہمارے ملک میں۔ شہروں میں کوئی کوئی سڑک نیویارک اور لندن کی سڑکوں سے بھی زیادہ چوڑی ہیں ۔

گاؤں کے لوگوں کی حالت اتنی اچھی نہیں ہے جتنی امید کی جاسکتی ہے۔ یعنی سائنس وغیرہ میں جتنی روس نے ترقی کی ہے اس حساب سے گاؤں کی حالت نے ترقی نہیں کی۔ روس کے ہوائی اڈے ہمارے یہاں کے ہوائی اڈوں سے بہت زیادہ سادہ ہیں ۔ ہوائی اڈوں کی عمارتیں کچھ … ہیں ۔ مکن واڑی کی عمارتیں ہیں ۔ اور ان میں فرق یہ

हमारे देश में लोग सस्ती चीज़ की तरफ़ जाते हैं चाहे वह जापान की बनी हो और चाहे अमरीका की. रूस में अगर देसी चीज़ के दाम दस गुने भी हों तब भी रूस के लोग सस्ती विदेशी चीज़ न खरीद कर मंहगी देसी चीज़ ही खरीदते हैं. हमारे यहां बड़े वज़ीर से लेकर चपरासी तक सब विदेशी चीज़ों के शौक़ीन हैं. रूसियों को इस बात का घमंड है कि वह अपने मुल्क की बनी चीज़ें ही बरतते हैं चाहे वह चीज़ें घटिया और मंहगी ही क्यों न हों. अगर हमें तरक़्क़ी करना है तो हमें यह स्वदेशी की भावना अपने देश में फिर से जगानी होगी. भारत में किसी वज़ीर के यहां जाइये और उससे क़लम मांगिये तो वह फ़ौरन बड़े इत्मिनान के साथ पारकर क़लम आपके सामने रख देगा. ऐसे लोगों को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल देना चाहिये और उनसे कहना चाहिये कि अमरीका में जा कर कहीं नौकरी करें. जो आदमी देसी चीज़ मिलते हुए विदेशी चीज़ खरीदता है वह देश के साथ दग़ा करता है. वह विदेशों का दलाल है. हिन्दुस्तान में किसी वज़ीर के घर जाइये तो बेल्जियम का बना हुआ शीशा आपको मेज़ पर दिखाई देगा. लेकिन किसी रूसी महल में जाइये तो आपको जो शीशा मिलेगा वह रूस ही का बना हुआ होगा चाहे उसमें चेहरा भी साफ़ दिखाई दे या न दे. रूस की बनी हुई चीज़ें सब घटिया नहीं होतीं. लेकिन उनके यहां की कोई कोई चीज़ें हमारे यहां की बनी चीज़ों से भी घटिया होती हैं. पर हर रूसी बरतेगा अपने यहां की बनी चीज़ ही.

हमारे यहां की कारीगरी रूस की कारीगरी से हरगिज़ घटिया नहीं है. हमारे कारीगर काफ़ी होशियार हैं. इसलिए आख़िर में हमें किसी देश से मुक़ाबले का डर नहीं है. लेकिन आज कल की हालत में अगर हमें अपने उद्योग धन्धों को तरक़्क़ी देना है तो जो इंगलैंड अमरीका और दूसरे देशों का माल यहां आ कर सस्ता बिकता है उस पर ज़बरदस्त रोक ज़रूरी है.

रूस में चीज़ों की क़ीमतें इस तरह नहीं लगाई जातीं जिस तरह हमारे मुल्क में. वहां लागत चाहे कुछ भी आई हो ऐश की चीज़ों की क़ीमत ज़ियादा रखी जाती है और जनता की ज़रूरत की चीज़ों की क़ीमत कम रखी जाती है. इस लिए कोई कोई चीज़ जो हम समझते हैं रूस में सस्ती मिलेगी वहां हमारे यहां से बहुत मंहगी मिलती है. रूस जा कर हमारे क़ीमतों के अन्दाज़े सब उलट पुलट हो जाते हैं.

होटलों में मामूली नौकर को डेढ़ हज़ार रूबल माहवार से लेकर दो हज़ार रूबल माहवार तक मिलता है. हमारे सिक्के में एक रूबल की क़ीमत आज कल एक रुपये से

ہمارے دیش میں لوگ سستی چیز کی طرف جاتے ہیں چاہے وہ جاپان کی بنی ہو اور چاہے امریکہ کی. روس میں اگر دیسی چیز کے دام دس گنے بھی ہوں تب بھی روس کے لوگ سستی ودیشی چیز نہ خرید کر مہنگی دیسی چیز ہی خریدتے ہیں. ہمارے یہاں بڑے وزیر سے لے کر چپراسی تک سب ودیشی چیزوں کے شوقین ہیں. روسیوں کو اِس بات کا گھمنڈ ہے کہ وہ اپنے ملک کی بنی چیزیں ہی برتتے ہیں چاہے وہ چیزیں گھٹیا اور مہنگی ہی کیوں نہ ہوں. اگر ہمیں ترقی کرنا ہے تو ہمیں یہ سودیشی کی بھاونا اپنے دیش میں پھر سے جگانی ہوگی. بھارت میں کسی وزیر کے یہاں جائیے اور اُس سے قلم مانگئے تو فوراً بڑے اطمینان کے ساتھ اپنا پار قلم آپ کے سامنے رکھ دے گا. ایسے لوگوں کو ہندستان سے باہر نکال دینا چاہئے اور اُن سے کہنا چاہئے کہ امریکہ میں جا کر کہیں نوکری کریں. جو آدمی دیسی چیز ملتے ہوئے ودیشی چیز خریدتا ہے وہ دیش کے ساتھ دغا کرتا ہے، وہ بدیشوں کا دلال ہے. ہندستان میں کسی وزیر کے گھر جائیے تو بلجیم کا بنا ہوا شیشہ آپکو میز پر دکھائی دیگا. لیکن کسی روسی محل میں جائیے تو آپکو جو شیشہ ملے گا وہ روس ہی کا بنا ہوا ہوگا چاہے اسمیں چہرہ بھی صاف دکھائی دے یا نہ دے. روس کی بنی ہوئی چیزیں سب گھٹیا نہیں ہوتیں. لیکن اُن کے یہاں کی کوئی کوئی چیزیں ہمارے یہاں کی بنی چیزوں بھی گھٹیا ہوتی ہیں. پر ہر روسی برتے گا اپنے یہاں کی بنی چیز ہی.

ہمارے یہاں کی کاریگری روس کی کاریگری سے ہرگز گھٹیا نہیں ہے. ہمارے کاریگر کافی ہوشیار ہیں. اِسلئے آخر میں ہمیں کسی دیش سے مقابلے کا ڈر نہیں ہے. لیکن آجکل کی حالت میں اگر ہمیں اپنے ادیوگ دھندوں کو ترقی دینا ہے تو جو انگلینڈ امریکہ اور دوسرے دیشوں کا مال یہاں آکر سستا بکتا ہے اسپر زبردست ضروری ہے.

روس میں چیزوں کی قیمتیں اِس طرح نہیں لگائی جاتیں جس طرح ہمارے ملک میں. وہاں لاگت چاہے کچھ بھی آئی ہو عیش کی چیزوں کی قیمت زیادہ رکھی جاتی ہے اور جنتا کی ضرورت کی چیزوں کی قیمت کم رکھی جاتی ہے. اس لئے کوئی کوئی چیز جو ہم سمجھتے ہیں روس میں سستی ملے گی وہاں ہمارے یہاں سے بہت مہنگی ملتی ہے. روس جاکر ہمارے قیمتوں کے اندازے سب اُلٹ پلٹ ہو جاتے ہیں.

ہوٹلوں میں معمولی نوکر کو ڈیڑھ ہزار روبل ماہوار سے لے کر دو ہزار روبل ماہوار تک ملتا ہے. ہمارے سکے میں ایک روبل کی قیمت آجکل ایک روپیہ سے

स की इससे पहले की सरकार तो तमाम साम्राज
थी. उनका मजहब भी उन दिनों उसी तरह का था.
पादरी जो हुक्म या फ़तवा दे दे वही सब के लिये
की लकीर थी. इससे मालूम होता है लोगों को हुक्म
की आदत पड़ गई है. भारत में इसका उल्टा है. हिन्दू
इस तरह का मजहब नहीं है जिसमें एक आदमी
कह दिया वही सबने मान लिया. हिन्दू मजहब
ह तरह के विचार और तरह तरह के रीत रिवाज
तरह चल सकते हैं. मेरा मतलब इससे यह दिखाना
जिस तरह के नतीजे रूस अपने मुल्क में अपने
और अपने संगठन से पैदा कर सके उस तरह के
शायद हम इस देश में उन तरीक़ों से पैदा न कर
सकिये हमारे मुल्क के कम्युनिस्ट जब अपने मुल्क
वायतों और हालतों से निगाह हटा कर रूस के
की नक़ल करना चाहते हैं तो ग़लत रास्ते पर पड़
. रूस और हिन्दुस्तान में एक बात मिलती है—वह
कि दोनों में सामन्त शाही का राज रह चुका है.
यहां रजवाड़े, जमींदार और ताल्लुक़ेदार सब इसी
शाही के जुज़ हैं. लेकिन और बातों में हिन्दुस्तान
रूस में बहुत फ़र्क़ है.

सीलिए रूसी तरीक़ों के नक़ल करने में हमें बहुत
त बरतनी चाहिये. हमारे देश के हालात रूस की
चीन के हालात से बहुत ज़ियादा मिलते जुलते हैं.
जहां कोई हुक्म निकला तो समझ लीजये कि
हो गया. जनता अपने लीडरों पर पूरा भरोसा रखती
तक कि जनता में अपनी सूझ और बूता कम रह
. पर रूस ने जो नतीजे पैदा किये वह बहुत
हैं.

स में रोज़मर्रा के ज़रूरत की चीज़ें खूब पैदा की
उनके यहां खाने, कपड़े और मकान की बहुतात
के लिए सामान काफ़ी से ज़ियादा है. पैदावार
नमूने की और अच्छी है. उनके यहां की बनी
चीज़ें शायद इतनी अच्छी नहीं हैं जितनी
का और इंगलिस्तान की बनी हुई चीज़ें. लेकिन वह
चीज़ें अपने मुल्क में बनाते हैं वही बरतते हैं.
दुकानें माल से लदी पड़ी हैं. ख़रीदने वालों के ठट
लगे रहते हैं क्योंकि कोई अपनी तनख़ाह में से बचा
ना नहीं चाहता. माल तरह तरह का दिखाई देता
ई जहाज़ और जेट प्लेन से लेकर बच्चों की पुराने
खने की रस्म तक सब चीज़ें इस मुल्क में तैयार
. खाना और कपड़ा उनके यहां अपनी ज़रूरत से
है. जिन नेताओं ने मुल्क में यह हालत पैदा कर
न पर जनता को भरोसा क्यों न हो ?

روس کی اس سے پہلے کی سرکار تو تمام سامراج شاہی تھی۔ اُن کا مذہب بھی اُن دنوں اسی طرح کا تھا۔ بڑا پادری جو حکم یا فتویٰ دے دے وہی سب کے لئے پتھر کی لکیر تھی۔ اس سے معلوم ہوتا ہے لوگوں کو حکم ماننے کی عادت پڑ گئی ہے۔ بھارت میں اس کا اُلٹا ہے۔ ہندو مذہب اس طرح کا مذہب نہیں ہے جس میں ایک آدمی نے جو کہہ دیا وہی سب نے مان لیا۔ ہندو مذہب میں طرح طرح کے وچار اور طرح طرح کے ریت رواج اچھی طرح چل سکتے ہیں۔ میرا مطلب اس سے یہ دکھانا ہے کہ جس طرح کے نتیجے روس والے اپنے ملک میں اپنے طریقوں اور اپنے سنگھٹن سے پیدا کر سکے اس طرح کے نتیجے شاید ہم اس دیش میں اُن طریقوں سے پیدا نہ کر سکیں۔ اس لئے ہمارے ملک کے کمیونسٹ جب اپنے ملک کی روایتوں اور حالتوں سے نگاہ ہٹا کر روس کے طریقوں کی نقل کرنا چاہتے ہیں تو غلط راستے پر پڑ جاتے ہیں۔ روس اور ہندستان میں ایک بات ملتی ہے وہ یہ ہے دونوں میں سامنت شاہی کا راج رہ چکا ہے ہمارے یہاں رجواڑے، زمیندار اور تعلقےدار سب اسی سامنت شاہی چیزیں لیکن اور باتوں میں ہندستان اور روس میں بہت فرق ہے۔

اس لئے روسی طریقوں کے نقل کرنے میں ہمیں بہت احتیاط برتنی چاہئے۔ ہمارے دیش کے حالات روس کی نسبت چین کے حالات سے بہت زیادہ ملتے جلتے ہیں۔ روس میں جہاں کوئی حکم نکلا تو سمجھ لیجئے کہ کام ہوگیا۔ جنتا اپنے لیڈروں پر پورا بھروسہ رکھتی ہے۔ وہاں کی جنتا ایک درجہ تک مشین کی طرح ہے یہاں تک کہ جنتا میں اپنی سوجھ اور بوتا کم رہ گیا ہے۔ پر روس نے جو نتیجے پیدا کئے وہ بہت اچھے ہیں۔

روس میں روز مرہ کے ضرورت کی چیزیں خوب پیدا کی گئی ہیں۔ اُن کے یہاں کھانے، کپڑے اور مکان کی بہتات ہے۔ سب کے لئے سامان کافی سے زیادہ ہے۔ پیداوار سب ایک نمونے کی اچھی ہے۔ اُن کے یہاں کی بنی ہوئی سب چیزیں شاید اتنی اچھی نہیں ہیں جتنی امریکہ اور انگلستان کی بنی ہوئی چیزیں۔ لیکن وہ لوگ چیزیں اپنے ملک میں بناتے ہیں وہی برتتے ہیں۔ اُن کی دوکانیں مال سے لدی پڑی ہیں۔ خریدنے والوں کے ٹھٹ لگے رہتے ہیں کیونکہ کوئی اپنی تنخواہ میں بچا کر رکھنا نہیں چاہتا۔ مال طرح طرح کا دکھائی دیتا ہے۔ ہوائی جہاز جیٹ پلین سے لے کر بچوں کی پرانے ٹکٹ رکھنے کی رسم تک سب چیزیں اس ملک میں تیار ہوتی ہیں۔ کھانا اور کپڑا اُن کے یہاں اپنی ضرورت سے زیادہ ہے۔ جن نیتاؤں نے ملک میں یہ حالت پیدا کر دی ہے اُن پر جنتا کو بھروسہ کیوں نہ ہو؟

जनता हमारा [illegible] हो जाता है. इसका एक तरीका यह है कि समाजी और माली यानी आर्थिक ऊंच नीच को मिटा दिया जावे. तभी हमारे हाकिम जनता के दिल तक पहुंच सकते हैं और तब ही यह लोहे की दीवार हट सकती है. रूस की लोहे की दीवार बाहर की दुनिया से अपने को बचाने के लिये है. भारत की यह लोहे की दीवार हमारे ही समाज के अन्दर बड़े छोटे, ऊंच नीच, अमीर, ग़रीब के फ़रक़ को क़ायम रखती है और देश को एक नहीं होने देती.

इसी अपने लोहे की दीवार की मदद से रूस ने अपने हाकिमों की सूझ और मुहब्बत के सहारे एक नया समाजी तजुरबा किया और उसने कामयाबी हासिल की. उनके यहां बड़े और छोटे, अमीर और ग़रीब एक दूसरे में मिल गये. वहां मामूली मज़दूरों और लीडरों के खाने, कपड़े, रहन सहन वग़ैरा में हमें बहुत कम फ़रक़ दिखाई देता है. कम से कम मज़दूरी और बड़ी से बड़ी तनख़ाह में एक और दस का औसत है. सरकारी कारख़ाने के डायरेक्टर को पांच हज़ार रूबल माहवार मिलते हैं तो अन पढ़ मज़दूर औरत को जो झाड़ू देने का काम करती है पांच सौ रूबल माहवार मिलते हैं. अपने यहां हम इस पर अमल करें तो किसी भी मज़दूर या मेहतर को यहां सौ रुपये महीने से कम नहीं मिलना चाहिये और किसी भी बिरला या टाटा को एक हज़ार से ज़ियादा नहीं मिलना चाहिये. जब तक हम यह नहीं कर सकते तब तक न हम जनता को समझ सकते हैं और न जनता हमें, और न मुल्क तरक़्क़ी कर सकता है.

रूस में इसी लोहे की दीवार की बदौलत लोग निडर हो कर रहते हैं. उन्हें अपने लीडरों पर पूरा भरोसा है. वह समझते हैं कि बाहर की दुनिया में चाहे कुछ भी हो वह खुद अपने लीडरों के हाथों में सुरक्षित हैं. हमारे देश में इसका ठीक उल्टा है. इस देश में जनता का हर आदमी सरकारी अफ़सरों को और वज़ीरों को शक की निगाह से देखता है.

रूस में लगभग सब पैदावार सरकार के हाथों में है. डायरेक्टर, अफ़सर, मैनेजर और मज़दूर सब मिलकर काम करते हैं और सब को गुज़ारे के लिए काफ़ी मिलता है. लगभग सत्तर फ़ी सदी सरकारी आमदनी उद्योग धन्दों से है. उसी रक़म से सरकार उद्योग धन्दे चलाती है और आम जनता के भले के तरह तरह के काम करती है. रूस के बजट का पैंतीस फ़ी सदी तालीम और जनता की भलाई के कामों में ख़र्च होता है. चालीस फ़ी सदी देश की आर्थिक दशा सुधारने में ख़र्च होता है. बीस फ़ी सदी फ़ौज और हथियारों पर और बाक़ी पांच फ़ी सदी मुल्क के इन्तज़ाम पर.

[illegible] ہمارا مجرم ہو جاتا ہے۔ اس کا ایک طریقہ یہ ہے کہ سماجی اور مالی یعنی آرتھک اونچ نیچ کو مٹا دیا جائے۔ تب ہی ہمارے حاکم جنتا کے دل تک پہونچ سکتے ہیں اور تب ہی یہ لوہے کی دیوار ہٹ سکتی ہے۔ روس کی لوہے کی دیوار باہر کی دنیا سے اپنے کو بچانے کے لئے ہے۔ بھارت کی یہ لوہے کی دیوار ہمارے ہی سماج کے اندر بڑے چھوٹے، اونچ نیچ، امیر، غریب کے فرق کو قائم رکھتی ہے اور دیش کو ایک نہیں ہونے دیتی۔

اسی اپنی لوہے کی دیوار کی مدد سے روس نے اپنے حاکموں کی سوجھ اور محبت کے سہارے ایک نیا سماجی تجربہ کیا اور اس میں کامیابی حاصل کی۔ ان کے یہاں بڑے اور چھوٹے، امیر اور غریب ایک دوسرے میں مل گئے۔ وہاں معمولی مزدوروں اور لیڈروں کے کھانے، کپڑے، رہن سہن وغیرہ میں ہمیں بہت کم فرق دکھائی دیتا ہے۔ کم سے کم مزدوری اور بڑی سے بڑی تنخواہ میں ایک اور دس کا اوسط ہے۔ سرکاری کارخانے کے ڈائریکٹر کو پانچ ہزار روبل ماہوار ملتے ہیں تو ان پڑھ مزدور عورت کو جو جھاڑو دینے کا کام کرتی ہے پانچ سو روبل ماہوار ملتے ہیں۔ اپنے یہاں ہم اس پر عمل کریں تو کسی بھی مزدور یا مہتر کو یہاں سو روپیہ مہینے سے کم نہیں ملنا چاہئے اور کسی بھی برلا یا ٹاٹا کو ایک ہزار سے زیادہ نہیں ملنا چاہئے۔ جب تک ہم یہ نہیں کر سکتے تب تک نہ ہم جنتا کو سمجھ سکتے ہیں اور نہ جنتا ہمیں، اور نہ ملک ترقی کر سکتا ہے۔

روس میں اسی لوہے کی دیوار کی بدولت لوگ نڈر ہو کر رہتے ہیں۔ انہیں اپنے لیڈروں پر پورا بھروسہ ہے۔ وہ سمجھتے ہیں کہ باہر کی دنیا میں چاہے کچھ بھی ہو وہ خود اپنے لیڈروں کے ہاتھوں میں سرکشت ہیں۔ ہمارے دیش میں جنتا کا ہر آدمی سرکاری افسروں کو اور وزیروں کو شک کی نگاہ سے دیکھتا ہے۔

روس میں لگ بھگ سب پیداوار سرکار کے ہاتھوں میں ہے۔ ڈائریکٹر، افسر، منیجر اور مزدور سب مل کر کام کرتے ہیں اور سب کو گذارے کے لئے کافی ملتا ہے۔ لگ بھگ ستر فی صدی سرکاری آمدنی ادیوگ دھندوں سے ہے۔ اسی رقم سے سرکار ادیوگ دھندے چلاتی ہے اور عام جنتا کے بھلے کے طرح طرح کے کام کرتی ہے۔ روس کے بجٹ کا پینتیس فی صدی تعلیم اور جنتا کی بھلائی کے کاموں میں خرچ ہوتا ہے۔ چالیس فی صدی دیش کی آرتھک دشا سدھارنے میں خرچ ہوتا ہے۔ بیس فی صدی فوج اور ہتھیاروں پر اور باقی پانچ فی صدی ملک کے انتظام پر۔

की [illegible] उसे चट न कर जावें. इसी तरह [illegible] घरों में जहां चाचे भी रहते हैं और मेमने भी [illegible] को बचाने के लिये बीच में लोहे की सलाखें लगा जाती हैं. रूस की लोहे की दीवार केवल अमरीकी [illegible] साम्राज्यशाही के चीतों और भेड़ियों से रूस [illegible] चाने के लिये है. रूस एक नई तरह का समाज क़ायम [illegible] चाह रहा है. बंगलों के गुस्लखानों के पानी से छोटे [illegible] अकसर मर जाते हैं. इसी तरह अमरीका और [illegible]स्तान के गुस्लखानों का पानी अगर रूस में बहने [illegible] गया तो डर है कि वहां के नये समाजी तजुरबे को नुक़सान पहुंच जावे. इसलिये रूस को अपने चारों [illegible] बांध बांधने की ज़रूरत महसूस हुई. इस बांध की [illegible] केवल इतनी है कि जो विदेशी रूस के नये तजुरबे [illegible] दखल देना और उसे बिगाड़ना चाहते हैं उन्हें अलग [illegible] जाये.

[illegible]मारे मुल्क हिन्दुस्तान में भी एक बड़ी लोहे की [illegible] है. यह दीवार है राजा और प्रजा के बीच में, [illegible]मों और महकूम के बीच में. हमारे सरकारी अफ़सर कोट, पैन्ट और बूट पहन कर गांव में जाते हैं. ग़रीब [illegible]न उन्हें देख कर डर जाते हैं. उनसे भागते हैं. डर, [illegible] और बे एतबारी की दीवार और पक्की होती रहती है. [illegible] वाले को यह दीवार गांव के झोंपड़ों से लेकर दिल्ली [illegible]राष्ट्रपति भवन" तक बराबर दिखाई देगी.

[illegible] गांव वालों के बीच रहता हूं. मैं जानता हूं कि [illegible] गांव वाले सरकारी अफ़सरों को भेड़िये और [illegible] समझते हैं जिनसे वह महसूस करते हैं कि अपने [illegible] बचाये रखने की ज़रूरत है/ इस लोहे की दीवार [illegible]टाए के लिये ही गांधी जी ने हमें खादी के [illegible] सादे कपड़े पहनाये थे और रचनात्मक काम करने [illegible] इसी लिये खादी का कुरता धोती पहनते रहे. बाहर [illegible]सी दबाव या बाहर की मदद से भारत अपने पैरों [illegible]खड़ा नहीं हो सकता. इसके लिये हमें इस लोहे की [illegible] को तोड़ कर गांव वालों के से बनकर गांव वालों के [illegible] जाना होगा. हमें उन्हीं की तरह रहना होगा.

[illegible]साल के लिये दिल्ली में जो तड़क भड़क और रोब [illegible] दिखाया जाता है अपनी शान क़ायम रखने के लिये [illegible]("T]o maintain dignity") वही यह लोहे की [illegible] है. हाकिम और महकूम के बीच कोई दीवार नहीं [illegible] चाहिये तभी लोगों को अपने हाकिमों पर भरोसा [illegible] सकता है और बिना इस भरोसे के देश तरक़्क़ी नहीं [illegible] सकता. आज हम सब रचनात्मक काम करने वाले यह [illegible] कर रहे हैं कि सरकार और जनता के बीच में [illegible] लिये [illegible]

[illegible]کی گئی یا بکریاں اُسے چٹ نہ کر جائیں. اسی طرح [illegible]ا گھروں میں جہاں چیتے بھی رہتے ہیں اور میمنے [illegible] میمنوں کو بچانے کے لئے بیچ میں لوہے کی سلاخیں [illegible]ی جاتی ہیں . روس کی لوہے کی دیوار کیول امریکی [illegible] یورپی سامراج شاہی کے چیتوں اور بھیڑیوں سے روس [illegible] بچانے کے لئے ہے . روس ایک نئی طرح کا سماج قائم [illegible] چاہ رہا ہے . بنگلوں کے غسل خانوں کے پانی سے [illegible]ے پودے اکثر مر جاتے ہیں . اسی طرح امریکہ اور [illegible]ستان کے غسل خانوں کا پانی اگر روس میں بہنے [illegible] گیا تو ڈر ہے کہ وہاں کے نئے سماجی تجربے کو بڑا [illegible]ان پہونچ جاوے . اسی لئے روس کو اپنے چاروں طرف [illegible] باندھنے کی ضرورت محسوس ہوئی اِس باندھ [illegible] غرض کیول اتنی ہے کہ جو ودیشی روس کے نئے تجربے [illegible] دخل دینا اور اُسے بگاڑنا چاہتے ہیں اُنہیں الگ [illegible] جائے .

ہمارے ملک ہندستان میں بھی ایک بڑی لوہے [illegible] دیوار ہے . یہ دیوار ہے راجا اور پرجا کے بیچ میں' [illegible] اور محکوموں کے بیچ میں . ہمارے سرکاری [illegible] ہیٹ' کوٹ' پتلون اور بوٹ پہن کر گاؤں میں جاتے [illegible] . غریب کسان اُنہیں دیکھکر ڈر جاتے ہیں . اُن [illegible] بھاگتے ہیں . ڈر' شک اور بے اعتباری کی دیوار اور [illegible] ہوتی رہتی ہے . دیکھنے والے کو یہ دیوار گاؤں کے [illegible]ونپڑوں سے لے کر دلی کے " راشٹر پتی بھون " تک [illegible] دکھائی دے گی .

میں گاؤں والوں کے بیچ رہتا ہوں . میں جانتا [illegible] کہ ہمارے گاؤں والے سرکاری افسروں کو بھیڑیئے اور [illegible] سمجھتے ہیں جن سے وہ محسوس کرتے ہیں کہ [illegible] کو بچائے رکھنے کی ضرورت ہے . اِس لوہے کی دیوار [illegible] ہٹانے کے لئے ہی گاندھی جی نے ہمیں کھادی کے [illegible] سادے کپڑے پہنائے تھے اور رچناتمک کام کرنے [illegible] اسی لئے کھادی کا کرتا دھوتی پہنتے رہے . باہر کے [illegible] دباؤ یا باہر کی مدد سے بھارت اپنے پیروں پر کھڑا [illegible] ہوسکتا . اِسکے لئے ہمیں اِس لوہے کی دیوار کو توڑ [illegible] گاؤں والوں کے سے بن کر گاؤں والوں کے پاس جانا ہوگا . [illegible] اُنہیں کی طرح رہنا ہوگا .

مثال کے لئے دلی میں جو ٹیپ ٹاپ اور رعب داب [illegible]یا جاتا ہے اپنی شان قائم رکھنے کے لئے ("To maintain dignity") وہی یہ لوہے کی دیوار ہے . حاکم [illegible] محکوم کے بیچ کوئی دیوار نہیں ہونی چاہئے . تبھی [illegible] کو اپنے حاکموں پر بھروسہ ہوسکتا ہے اور بنا اِس [illegible] کے دیش ترقی نہیں کر سکتا . آج ہم سب رچناتمک [illegible] کرنیوالے یہ محسوس کر رہے ہیں کہ سرکار اور جنتا کے بیچ [illegible]

लेम गाड देखने गये. फिर तीन दिन उजबक प्रजातंत्र (उजबक रिपब्लिक) की राजधानी ताशक़न्द में गुज़ारे. इसके बाद एक दिन गिलगिट के ऊपर में फ़रग़ना में रहे. तीन दिन स्टालिन ग्राड में रहे. यह सब जगहें अच्छी तरह देखीं और पहली मई के जलसों के लिये मास्को लौट आये. फिर जब मास्को से चले तो ताशक़न्द और काबुल होते हुए 11 मई को अहमदाबाद वापस आ गये. कुल मिला कर हमने क़रीब बारह हज़ार मील हवा का और क़रीब दो हज़ार मील रेल का सफ़र किया.

हम छै हफ़्ते रूस में ठहरे. इन छै हफ़्तों में हमने वहां के कारख़ाने देखे, बड़े बड़े खेत देखे जिनमें लोग मिल कर काम करते हैं, बड़े बड़े सरकारी फ़ार्म देखे जिनमें सरकार की तरफ़ से तजुरबे किये जाते हैं, वहां के कोआपरेटिव देखे, मज़दूरों के कलचरी महल और बच्चों के पानियर महल देखे और 'समाज सुधार' के बड़े बड़े मरकज़ देखे. इसी तरह की और भी बहुत सी चीज़ें देखीं. इन छै हफ़्ते के अन्दर हमें नये नये तजुरबे हुए. चीज़ों की नई नई शक्लें और नये नये अन्दाज़े हमारे सामने आये. कहीं कहीं हम कुछ घबरा जाते थे और समझने में देर लगती थी. जो कुछ हमने देखा और सुना उसमें से कुछ मैं इस लेख में बयान कर रहा हूँ. इस ग़रज़ से नहीं कि लोगों को कुछ नई बातें मालूम हों बल्कि इस ग़रज़ से कि दुनिया की तारीख़ में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर जो अनमोल तजुरबे हो रहे हैं उनसे अपने मुल्क के लिये हम कुछ सबक़ सीख सकें.

रूस ने दुनिया में एक ऐसा समाज क़ायम करने के लिये जिसमें सब इनसान बराबर हों, कोई ऊंच नीच न हो, एक बहुत बड़ा तजुरबा कर डाला. इस तजुरबे में रूस को शायद सोलह आने कामयाबी तो नहीं हुई लेकिन जितनी कामयाबी की उम्मीद की जाती थी उससे बहुत ज़ियादा ज़रूर हुई. और इतनी ज़ियादा हुई कि साम्राज-शाही मुल्कों में तहलका मच गया. इसलिये भी हमें रूस को समझने की कोशिश तो करनी ही चाहिये.

आम तौर पर कहा जाता है कि रूस ने अपने चारों तरफ़ एक लोहे की दीवार खड़ी कर रखी है. यह बात एक दरजे तक सच है. इसकी वजह से लोग और भी जानना चाहते हैं कि इस दीवार के पीछे क्या हो रहा है. सबसे पहली बात मैं यह बता दूं कि रूस की यह दीवार किसी बाहर वाले को नुक़सान पहुंचाने के लिये नहीं है बल्कि बाहर के असरों से अपने को और अपने नये तजुरबे को बचाने के लिये है. हम जब कोई छोटा सा दरख़्त या पौधा लगाते हैं तो उसके चारों तरफ़ बाड़ खड़ी कर देते हैं ताकि

نمائشگاہ دیکھنے گئے ۔ پھر تین دن ازبک جمہوریت (ازبک ریپبلک) کی راجدھانی تاشقند میں گذارے ۔ اسکے بعد ایک دن گلگت کے اتر میں فرغانہ میں رہے ۔ تین دن اسٹالن گراڈ میں رہے ۔ یہ سب جگہیں اچھی طرح دیکھیں اور پہلی مئی کے جلسوں کے لئے ماسکو لوٹ آئے پھر جب ماسکو سے چلے تو تاشقند اور کابل ہوتے ہوئے 11 مئی کو احمدآباد واپس آگئے ۔ کل ملا کر ہم نے قریب بارہ ہزار میل ہوا کا اور قریب دو ہزار میل ریل کا سفر کیا ۔

ہم چھ ہفتے روس میں ٹھہرے ۔ ان چھ ہفتوں میں ہم نے وہاں کے کارخانے دیکھے' بڑے بڑے کھیت دیکھے جن میں لوگ مل کر کام کرتے ہیں" بڑے بڑے سرکاری فارم دیکھے جن میں سرکار کی طرف سے تجربے کئے جاتے ہیں' وہاں کے کوآپریٹو دیکھے' مزدوروں کے کلچری محل اور بچوں کے پانیر محل دیکھے اور 'سماج سدھار' کے بڑے بڑے مرکز دیکھے ۔ اسی طرح کی اور بھی بہت سی چیزیں دیکھیں ۔ ان چھ ہفتے کے اندر ہمیں نئے نئے تجربے ہوئے ۔ چیزوں کی نئی نئی قسمیں اور نئے نئے اندازے ہمارے سامنے آئے ۔ کہیں کہیں ہم کچھ گھبرا جاتے تھے اور سمجھنے میں دیر لگتی تھی ۔ جو کچھ ہم نے دیکھا اور سنا اسمیں سے کچھ میں اس لیکھ میں بیان کر رہا ہوں ۔ اس غرض سے نہیں کہ لوگوں کو کچھ نئی باتیں معلوم ہوں بلکہ اس غرض سے کہ دنیا کی تاریخ میں پہلی بار اتنے بڑے پیمانے پر جو انمول تجربے ہو رہے ہیں اُن سے اپنے ملک کے لئے ہم کچھ سبق سیکھ سکیں ۔

روس نے دنیا میں ایک ایسا سماج قائم کرنے کے لئے جسمیں سب انسان برابر ہوں' کوئی اونچ نیچ نہ ہو' ایک بہت بڑا تجربہ کر ڈالا ۔ اس تجربے میں روس کو شاید سولہ آنے کامیابی تو نہیں ہوئی لیکن جتنی کامیابی کی امید کی جاتی تھی اس سے بہت زیادہ ضرور ہوئی ۔ اور اتنی زیادہ ہوئی کہ سامراج شاہی ملکوں میں تہلکہ مچ گیا ۔ اس لئے بھی ہمیں روس کو سمجھنے کی کوشش تو کرنی ہی چاہئے ۔

عام طور پر کہا جاتا ہے کہ روس نے اپنے چاروں طرف ایک لوہے کی دیوار کھڑی کر رکھی ہے ۔ یہ بات ایک درجہ تک سچ ہے ۔ اسکی وجہ سے لوگ اور بھی جاننا چاہتے ہیں کہ اس دیوار کے پیچھے کیا ہو رہا ہے ۔ سب سے پہلی بات میں یہ بتا دوں کہ روس کی یہ دیوار کسی باہر والے کو نقصان پہونچانے کے لئے نہیں ہے بلکہ باہر کے اثروں سے اپنے کو اور اپنے نئے تجربے کو بچانے کے لئے ہے ۔ ہم جب کوئی چھوٹا سا درخت یا پودا لگاتے ہیں [illegible] کھڑی کر دیتے ہیں تاکہ

इस बात का भी लिहाज रहे कि उस देश के रीति रिवाज और कलचर का क्या तकाजा है. ब्यूरो का यह काम होगा कि ऐसे ज्ञान को फैलाए.

२. ग्रामोद्योग की तरक्की.

चूंकि पिछड़े हुये देशों की आर्थिक बनावट के बारे में खास तौर से विचार करने की जरूरत है,

चूंकि जो उसूल तरक्की-याफ्ता देशों पर लागू होते हैं पिछड़े हुये देशों पर अक्सर लागू नहीं होते,

चूंकि सभी पिछड़े देशों की यह खसूसियत है कि वहां दौलत या धन ग़ैर-बराबर ढंग पर बटा हुआ है,

चूंकि सभी पिछड़े हुये देशों में खेती वाली जमीन पर जरूरत से ज़ियादा बोझ और बेरोजगारी है,

यह कांफ्रेंस सिफारिश करती है कि ऐसे देशों में मिलने वाला कच्चा माल, जहां तक हो सके, खर्च लायक माल की शक्ल में बदल लिया जाय और इस तरह बदला जाय कि सीधे सादे देहाती और घरेलू उद्योग धंधों के जरिये बेरोजगार और अधूरी रोजगार आबादी को मुनासिब काम मिल जाय जिससे जमीन का बोझ हलका हो.

इसलिये यह जरूरी है कि तरक्की-याफ्ता देशों के बड़े बड़े कारखानों में एक दूसरे को मुंह की खिलाने वाले तरीकों से जो माल तैयार किया जाता है वह पिछड़े हुये देशों में इनसानियत के नाते न भेजा जाय. और चाहे कुछ भी हो ऐसे माल को ग्रामोद्योग की जगह छीन कर उन्हें बरबाद न करने दिया जाये. जहां तक मुम्किन हो अन्तर कौमी व्यापार की योजना इस तरह बनाई जाय कि जिन देशों की हालत इस तरह की हो और जहां इस तरह के साधन मौजूद हों कि ग्रामोद्योग पनप सकते हैं, वहां ग्रामोद्योग को मदद मिलनी चाहिये. ऐसे देशों में रहन सहन का दर्जा तभी ऊंचा उठ सकता है जब उनको कारआमद काम मिले और उनकी बनाई चीजें बाहर भेजने से पहले उनके अपने ही खर्च में ले आई जायें.

2. लोहे की दीवार के पीछे

वैराग्यियों की अन्तर कौमी कान्फ्रेंस के एक डेलीगेट की हैसियत से पिछले मार्च के महीने में मैं रूस गया था. मामूली रास्ता काबुल होकर है. लेकिन उस रास्ते में मौसम बहुत खराब था इसलिये हमें ज़्यूरिच और प्राग होकर जाना पड़ा [illegible] १९ अप्रैल से २३ अप्रैल

ساتھ اِسبات کا بھی لحاظ رہے کہ اُس دیش کے ریت رواج اور کلچر کا کیا تقاضہ ہے . بیورو کا کام ہوگا کہ ایسے گیان کو پھیلائے .

2. گرام اُدیوگ کی ترقی .

چونکہ پچھڑے ہوئے دیشوں کی آرتھک بناوٹ کے بارے میں خاص طور سے وچار کرنے کی ضرورت ہے .

چونکہ جو اُصول ترقی یافتہ دیشوں پر لاگو ہوتے ہیں وہ پچھڑے ہوئے دیشوں پر اکثر لاگو نہیں ہوتے .

چونکہ سبھی پچھڑے دیشوں کی یہ خصوصیت ہے . کہ وہاں پر دولت یا دھن غیر برابر ڈھنگ پر بٹا ہوا ہے .

چونکہ سبھی پچھڑے ہوئے دیشوں میں کھیتی والی زمین پر ضرورت سے زیادہ بوجھ اور بے روزگاری ہے'

یہ کانفرنس سفارش کرتی ہے کہ ایسے دیشوں میں ملنے والا کچا مال' جہاں تک ہو سکے' خرچ لائق مال کی شکل میں بدل لیا جائے اور اِس طرح بدلا جائے کہ سیدھے سادے دیہاتی اور گھریلو اُدیوگ دھندوں کے ذریعے بے روزگار اور ادھوری روزگاری آبادی کو مناسب کام مل جائے جس سے زمین کا بوجھا ہلکا ہو .

اِسلئے یہ ضروری ہے کہ ترقی یافتہ دیشوں کے بڑے بڑے کارخانوں میں ایک دوسرے کو منہ کی کھلانے والے طریقوں سے جو مال تیار کیا جاتا ہے وہ پچھڑے ہوئے دیشوں میں انسانیت کے ناتے نہ بھیجا جائے . اور چاہے کچھ بھی ہو مال کو گرام اُدیوگ کی جگہ چھین کر اُنھیں برباد نہ کرنے دیا جائے . جہاں تک ممکن ہو انتر قومی بیوپار کی یوجنا اِس طرح بنائی جائے کہ جن جن دیشوں کی حالت اِس طرح کی ہو اور جہاں اِس طرح کے سادھن موجود ہوں کہ گرام اُدیوگ پنپ سکتے ہیں' وہاں گرام اُدیوگ کو مدد ملنی چاہئے . ایسے دیشوں میں رہن سہن کا درجہ تبھی اُونچا اُٹھ سکتا ہے جب اُن کو کارآمد کام ملے اور اُن کی بنائی چیزیں باہر بھیجنے کے پہلے اُن کے اپنے ہی خرچ میں ہی لگائی جائیں .

2. لوہے کی دیوار کے پیچھے

ویراگیوں کی انتر قومی کانفرنس کے ایک ڈیلیگیٹ کی حیثیت سے پچھلے مارچ کے مہینے میں میں روس گیا تھا. معمولی راستہ کابل ہوکر ہے. لیکن اُس راستے میں موسم بہت خراب تھا اِس لئے ہمیں زیورچ اور [illegible]

मैंने इस कानफ़्रेंस में दो ठहराव पेश किये उनकी नक़लें यहां दे रहा हूँ.

मेरे इन सुझावों को क़रीब क़रीब एक मत से सब ने मान लिया है. ताज्जुब की बात यह है कि अंगरेज़ी पार्लियामेन्ट के दो मेम्बरों ने और पाकिस्तान के 'डान' अख़बार के एडीटर ने इनका समर्थन भी किया. यह सब सुझाव एक मसौदा कमेटी को दे दिये गये हैं और मैं नहीं कह सकता कि इनकी आख़री शकल क्या होगी. हैरत की बात यह है कि मेरे दूसरे ठहराव में यहां बहुत दिलचस्पी ली गई लेकिन हिन्द सरकार और कामर्स व इंडस्ट्री मिनिस्ट्री उस पर बग़लें झांका करती है.

ठहराव

1. योजना-बन्द अन्तरक़ौमी व्योपार.

चूंकि बड़े बड़े और तरक़्क़ी-याफ़्ता देशों और पिछड़े हुए देशों के बीच खुला और आज़ाद व्योपार होने से पिछड़े हुए देश सौदे के लिहाज़ से घाटे में रहते हैं,

चूंकि अन्तर क़ौमी व्योपार की आज जो शकल बन गई है वह यही है कि लोगों के बीच माल की अदला बदली चलती रहे बिना इस लिहाज़ के कि योजना बन्दी और संतोल अर्थनिति के विचार से उस देश की असली ज़रूरतें क्या हैं,

चूंकि जग फैले योजना बन्द निज़ाम क़ायम होने के लिए ज़रूरी है कि उसके लिहाज़ से हर देश की बंधी हुई योजना हो,

चूंकि आज जो अन्तर क़ौमी व्योपार का संगठन है उसमें लेन देन इस तरह चलता है कि नैतिक और इनसानी पहलू ओझल हो जाते हैं और इस लेन देन में पिछड़े हुए देशों के साथ बहुत ना-इन्साफ़ी और ज़ियादती हो जाती है,

चूंकि अन्तर क़ौमी व्योपार के ग़लत राह पर चलने से देश देश में झगड़े खड़े हो जाते हैं,

और चूंकि जग शान्ति के हित में यह ज़रूरी है कि देश देश के बीच चीज़ों या लेन देन सही और वाजिब ढंग से होना चाहिये,

इसलिये यह कान्फ़्रेंस सिफ़ारिश करती है कि सारे अन्तर क़ौमी व्योपार को अच्छी तरह समझा बूझा जाये और फिर हर देश की योजना बन्द आर्थिक ढांचे में उसे ढाला जाये, साथ ही साथ इस बात ख़याल रहे कि लेन देन का असर उसमें शरीक होने वाले लोगों और मुल्कों को नुक़सान देह न साबित हो.

यह कान्फ़्रेंस यह भी सिफ़ारिश करती है कि अन्तर क़ौमी व्योपार का ब्यूरो क़ायम किया जाये जो कि ऊपर दिये हुए मक़सदों को हासिल करे, देस देश के पास जो [illegible] गये मौजूद हैं उनको सोचे समझे साथ ही

میں نے اس کانفرنس میں دو ٹھہراؤ پیش کئے اُن کی نقلیں یہاں دے رہا ہوں ۔

میرے اِن سجھاؤں کو قریب قریب ایک مت سے سب نے مان لیا ہے ۔ تعجب کی بات یہ ہے کہ انگریزی پارلیامنٹ کے دو ممبروں نے اور پاکستان کے 'ڈان' اخبار کے ایڈیٹر نے اِن کا سمرتھن بھی کیا۔ یہ سب سجھاؤ ایک مسودہ کمیٹی کو دے دیئے گئے ہیں اور میں نہیں کہہ سکتا کہ اِن کی آخری شکل کیا ہوگی ۔ حیرت کی بات یہ ہے کہ میرے دوسرے ٹھہراؤ میں یہاں بہت دلچسپی لی گئی لیکن ہند سرکار اور کامرس و انڈسٹری منسٹری اُس پر بغلیں جھانکا کرتی ہے ۔

ٹھہراؤ

1. یوجنا بند انتر قومی بیوپار ۔

چونکہ بڑھے چڑھے اور ترقی یافتہ دیشوں اور پچھڑے ہوئے دیشوں کے بیچ کھلا اور آزاد بیوپار ہونے سے پچھڑے ہوئے دیش سودے کے لحاظ سے گھاٹے میں رہتے ہیں،

چونکہ انتر قومی بیوپار کی آج جو شکل بن گئی ہے وہ یہی ہے کہ لوگوں کے بیچ مال کی ادلا بدلی چلتی رہے بنا اِس لحاظ کے کہ یوجنا بندی اور سنتول ارتھ نیتی کے وچار سے اُس دیش کی اصلی ضرورتیں کیا ہیں،

چونکہ جگ پھیلے یوجنا بند نظام قائم ہونے کے لئے ضروری ہے کہ اُس کے لحاظ سے ہر دیش کی بندھی ہوئی یوجنا ہو،

چونکہ آج جو انتر قومی بیوپار کا سنگھٹن ہے اُس میں لین دین اِس طرح چلتا ہے کہ نیتک اور انسانی پہلو اوجھل ہو جاتے ہیں اور اس لین دین میں پچھڑے ہوئے دیشوں کے ساتھ بہت نا انصافی اور زیادتی ہو جاتی ہے،

چونکہ انتر قومی بیوپار کے غلط راہ پر چلنے سے دیش دیش میں جھگڑے کھڑے ہو جاتے ہیں،

اور چونکہ جگ شانتی کے ہت میں یہ ضروری ہے کہ دیش دیش کے بیچ چیزوں یا لین دین صحیح اور واجب ڈھنگ سے ہونا چاہئے،

اِس لئے یہ کانفرنس سفارش کرتی ہے کہ سارے انتر قومی بیوپار کو اچھی طرح سمجھا بوجھا جائے اور پھر ہر دیش کی یوجنا بند آرتھک ڈھانچے میں اُسے بٹھایا جائے، ساتھ ہی ساتھ اِس بات کا خیال رہے کہ لین دین کا اثر اُس میں شریک ہونے والے لوگوں اور ملکوں کو نقصان دہ نہ ثابت ہو ۔

یہ کانفرنس یہ بھی سفارش کرتی ہے کہ انتر قومی بیوپار کا بیورو قائم کیا جائے جو کہ اوپر دیئے ہوئے مقصدوں کو حاصل کرے، دیش دیش کے پاس جو سادھن [illegible] ۔ ساتھ ہی

मुझे अपना वह ज़माना याद हो आया जब मैं सिराकूज़ (यूनान का एक शहर) में पढ़ता था. तब के बाद से इतना बर्फ़ मैंने पहली बार देखा. ठंड भी बहुत शिद्दत से थी, टम्परेचर क़रीब पच्चीस डिग्री फ़ारन हाईट (यानी ज़ीरो डिग्री सेंटीग्रेड से चार पांच डिग्री कम) पर था.

प्रेग में हमें कोई दिक़्क़त नहीं पड़ी. चक वालों ने बहुत ही बढ़िया इन्तज़ाम कर रखा था जिससे हमारी सारी दिक़्क़तें हवा हो गईं. ज़ूरिच से ही हमने उनको टेलीफ़ोन कर दिया था कि हम आ रहे हैं. इसलिये वह स्टेशन पर मोटर लेकर मौजूद थे और फ़ौरन ही हमें हवाई अड्डे पर पहुँचा दिया. वहां पर दो बजे हम एक रूसी जहाज़ पर सवार हुये और दस घंटे बाद आधी रात को मास्को (रूस की राजधानी) पहुंच गये. रास्ते भर बर्फ़ ही बर्फ़ दीखती थी.

मेरे धोती जामे ने लोगों का ध्यान बहुत खींचा और वह मुझसे हैरत के साथ पूछते थे कि इस कड़ाके के जाड़े में धोती जामे से कैसे काम चला लेता हूँ. मैंने इशारा कर दिया औरतों की तरफ़ जो पास में खड़ी थीं और कहा कि इन की टांगें तो मुझसे भी कम ढकी हुई हैं. वह सब समझ गये और ज़ोर से हंस पड़े. मैं कह सकता हूँ कि मेरा कुल सफ़र मज़ेदार रहा और मैं भला चंगा महसूस करता हूँ.

जिस होटल में हम ठहराये गये हैं वह रूस सरकार के नामी क़िले क्रेमलिन के सामने ही है.

× × ×

मास्को में जो आर्थिक कानफ़्रेंस हो रही है वह एक अजीब व ग़रीब चीज़ है. हिन्दुस्तान में कभी ऐसी चीज़ देखने में नहीं आई. हमारे देश की कानफ़्रेंसें तो बच्चों के क्लास जैसी होती हैं जिन में अर्थशास्त्र के दक़ियानूसी "प्रोफ़ेसरों" को उसूली और किताबी गोलियां घोंट घोंट कर खिलाई जाती हैं. लेकिन इस कानफ़्रेंस के ज़ियादातर डेलीगेट मंजे हुये व्योपारी हैं. इस आर्थिक कानफ़्रेंस में कोई उसूली बहस या झिक झिक नहीं की जाती और न बाल की खाल खींची जाती है. इस कानफ़्रेंस के सामने तो बस यह मक़सद है कि ऐसे रास्ते और ढंग निकाले जायें जिनसे देश देश में आपस का व्योपार और लेन देन बढ़े, चाहे इस व्योपार से कैसा ही उसूल क्यों न टपकता हो.

हमारे हिन्दुस्तान से क़रीब पैंतीस नुमायन्दे आये हैं. इनमें से सिर्फ़ तीन के बारे में कहा जा सकता है कि यह अर्थशास्त्री हैं. बाक़ी सब के सब काम करने वाले आदमी हैं जो कारख़ाने, व्योपार ट्रेड यूनियन या मज़दूर

مجھے اپنا وہ زمانہ یاد ہو آیا جب میں سراکوز (یونان کا ایک شہر) میں پڑھتا تھا۔ تب کے بعد سے اتنا برف میں نے پہلی بار دیکھا۔ ٹھنڈ بھی بہت شدت سے تھی، ٹمپریچر قریب پچیس ڈگری فارن ہائٹ (یعنی زیرو ڈگری سینٹی گریڈ سے چار پانچ ڈگری کم) پر تھا۔

پریگ میں ہمیں کوئی دقت نہیں پڑی۔ چک والوں نے بہت ہی بڑھیا انتظام کر رکھا تھا جس سے ہماری ساری دقتیں ہوا ہوگئیں۔ زورچ سے ہی ہم نے انکو ٹیلیفون کردیا تھا کہ ہم آ رہے ہیں۔ اسلئے وہ اسٹیشن پر موٹر لے کر موجود تھے اور فوراً ہی ہمیں ہوائی اڈے پر پہنچادیا۔ وہاں پر دو بجے ہم ایک روسی جہاز پر سوار ہوئے اور دس گھنٹے بعد آدھی رات کو ماسکو (روس کی راجدھانی) پہونچ گئے۔ راستے بھر برف ہی برف دیکھتی تھی۔

میرے دھوتی جامے نے لوگوں کا دھیان بہت کھینچا اور وہ مجھ سے حیرت کے ساتھ پوچھتے تھے کہ اِس کڑاکے کے جاڑے میں دھوتی جامے سے کیسے کام چلا لیتا ہوں۔ میں نے اشارہ کردیا عورتوں کی طرف جو پاس میں کھڑی تھیں اور کہا کہ اِن کی ٹانگیں تو مجھ سے بھی کم ڈھکی ہوئی ہیں۔ وہ سب سمجھ گئے اور زور سے ہنس پڑے۔ میں کہہ سکتا ہوں کہ میرا کل سفر مزےدار رہا اور میں بھلا چنگا محسوس کرتا ہوں۔

جس ہوٹل میں ہم ٹھہرائے گئے ہیں وہ روس سرکار کے نامی قلعے کریملن کے سامنے ہی ہے۔

× × ×

ماسکو میں جو آرتھک کانفرنس ہو رہی ہے وہ ایک عجیب و غریب چیز ہے۔ ہندستان میں کبھی ایسی چیز دیکھنے میں نہیں آئی۔ ہمارے دیش کی کانفرنسیں تو بچوں کے کلاس جیسی ہوتی ہیں جن میں ارتھ شاستر کے دقیانوسی "پروفیسروں" کو اُصولی اور کتابی گولیاں گھونٹ گھونٹ کر کھلائی جاتی ہیں۔ لیکن اس کانفرنس کے زیادہ تر ڈیلی گیٹ منجھے ہوئے بیوپاری ہیں۔ اِس آرتھک کانفرنس میں کوئی اُصولی بحث یا جھک جھک نہیں کی جاتی اور نہ بال کی کھال کھینچی جاتی ہے۔ اِس کانفرنس کے سامنے تو بس یہ مقصد ہے کہ ایسے راستے اور ڈھنگ نکالے جائیں جن سے دیش دیش میں آپس کا بیوپار اور لین دین بڑھے، چاہے اِس بیوپار سے کیسا ہی اُصول کیوں نہ ٹپکتا ہو۔

ہمارے ہندستان سے قریب پینتیس نمائندے آئے ہیں۔ اِن میں سے صرف تین کے بارے میں کہا جا سکتا ہے کہ یہ ارتھ شاستری ہیں۔ باقی سب کے سب کام کرنے والے آدمی ہیں جو کارخانے، بیوپار ٹریڈیونین یا

अन्तर क़ौमी आर्थिक कानफ़्रेंस

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

[अप्रैल के दूसरे हफ़्ते में मास्को में एक बड़ी भारी अन्तर क़ौमी आर्थिक कानफ़्रेंस हुई थी. इसमें हिन्दुस्तान से भी लोग शरीक हुए थे. उनमें से एक ख़ास नाम डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का है, जिससे 'नया हिन्द' के पाठक अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं. कुमारप्पा जी ने अपने सफ़र के दौरान में ग्रामोद्योग, मगनवाड़ी वर्धा, के मंत्री को जो ख़त लिखे और फिर मई के तीसरे हफ़्ते में हिन्दुस्तान लौटने के बाद "लोहे की दीवार के पीछे" नाम से जो महत्वपूर्ण लेख देश के अख़बारों को दिया, वह हम नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

1. मास्को का सफ़र

बम्बई में हम लोगों को प्रेग (जेकोस्लोवाकिया की राजधानी) ले जाने के लिये ब्रिटिश ओवरसीज़ एअर कारपोरेशन का एक हवाई जहाज़ किराये पर तय किया गया था, लेकिन ख़ास आख़िरी वक़्त पर न जाने क्यों कम्पनी ने इन्कार कर दिया. इसलिये जिस जहाज़ में जगह मिले उसमें जा कर अपनी जगह बनाने का इन्तज़ाम हम सब को करना पड़ा. मैं इतवार 30 मार्च को बम्बई से दोपहर के दो बजे ट्रांस वर्ल्ड एअर लाइन के जहाज़ से रवाना हुआ. हमारा जहाज़ शाम को साढ़े सात बजे तेहरान पहुंचा और उसके एक घंटे बाद बसरा. आधी रात के क़रीब हम लोग क़ाहिरा पहुँच गये. फिर दूसरे दिन 31 तारीख़ की सुबह साढ़े छै बजे रोम में आकर रुके. वहां से हम लोग एल्प पहाड़ों के ऊपर उड़ते चले गये. इन पहाड़ों पर बर्फ़ ही बर्फ़ बिछी हुई थी. हम लोग क़रीब साढ़े अठ्ठारह हज़ार फ़िट ऊंचाई पर उड़ रहे थे. जब हम ज़्यूरिच के पास पहुंच रहे थे तो काली घटायें घिर आई थीं. ज़्यूरिच पर हम उतरे तो पानी बरस रहा था और सारा इन्तज़ाम भी गड़बड़ था. प्रेग के लिये कोई जहाज़ नहीं मिलता था. 5 अप्रैल तक के लिये सब जहाज़ बुक हो चुके थे. हमने कई सफ़र एजन्सियों से कोशिश की पर कोई सूरत नहीं निकल रही थी. आख़िरकार हम रेल पकड़ने के लिये मजबूर हुए लेकिन रेल जर्मनी में होकर जाती थी जहां का विसा हमारे पास नहीं था. विसा के लिये हम जरमन कौंसिलेट तक दौड़े भागे लेकिन 24 घंटे लग ही गये. इस तरह पहली अप्रैल को रेल पर सवार हो कर दूसरी तारीख़ को साढ़े नौ बजे प्रेग पहुंचे.

रास्ते भर ज़ोरों से बर्फ़ पड़ रहा था. चारों तरफ़ मानो बर्फ़ की साफ़ चादर बिछी हुई थी. बहुत ही सुहावना दृश्य था.

انتر قومی آرتھک کانفرنس .

(ڈاکٹر جے . سی . کماریپا)

[اپریل کے دوسرے ہفتے میں ماسکو میں ایک بڑی بھاری انترقومی آرتھک کانفرنس ہوئی تھی . اِس میں ھندستان سے بھی لوگ شریک ہوئے تھے . اُن میں سے ایک خاص نام ڈاکٹر جے . سی . کماریپا کا ہے' جس سے 'نیا ھند' کے پاٹھک اچھی طرح واقف ھیں. کماریپا جی نے اپنے سفر کے دوران میں گرام اُدیوگ' مگن‌واڑی وردھا' کے منتری کو جو خط لکھے اور پھر مئی کے تیسرے ہفتے میں ھندستان لوٹنے کے بعد "لوھے کی دیوار کے پیچھے" نام سے مہتوپورن لیکھ دیش کے اخباروں‌کو دیا' وہ ھم نیچے دے رھے ھیں—ایڈیٹر]

1. ماسکو کا سفر

بمبئی میں ھم لوگوں کو پریگ (زیکوسلوواکیا کی راج دھانی) لے جانے کے لئے برٹش اوورسیز ایئر کارپوریشن کا ایک ھوائی جہاز کرائے پر طے کیا گیا تھا' لیکن خاص آخری وقت پر نہ جانے کیوں کمپنی نے انکار کر دیا . اس لئے جس جہاز میں جگہ ملے اس میں جاکر اپنی جگہ بنانے کا انتظام ھم سب کو کرنا پڑا . میں اتوار 30 مارچ کو بمبئی سے دوپہر کے دو بجے ٹرانس ورلڈ ائر لائن کے جہاز سے روانہ ھوا . ھمارا جہاز شام کو ساڑھے سات بجے طہران پہونچا اور اُس کے ایک گھنٹے بعد بصرا . آدھی رات کے قریب ھم لوگ قاھرہ پہونچ گئے . پھر دوسرے دن 31 تاریخ کی صبح ساڑھے چھ بجے روم میں آکر رکے . وھاں سے ھم لوگ ایلپ پہاڑوں کے اوپر اڑتے چلے گئے. ان پہاڑوں پر برف ھی برف بچھی ھوئی تھی . ھم لوگ قریب ساڑھے اٹھارہ ھزار فٹ اونچائی پر اُڑ رھے تھے . جب ھم زوریچ کے پاس پہونچ رھے تھے تو کالی گھٹائیں گھر آئی تھیں . زوریچ پر ھم اُترے تو پانی برس رھا تھا اور سارا اِنتظام بھی گڑبڑ تھا . پریگ کے لئے کوئی جہاز نہیں ملتا تھا . 5 اپریل تک کے لئے سب جہاز بک ھو چکے تھے . ھم نے کئی سفر ایجنسیوں سے کوشش کی پر کوئی صورت نہیں نکل رھی تھی . آخرکار ھم ریل پکڑنے کے لئے مجبور ھوئے لیکن ریل جرمنی میں ھوکر جاتی تھی جہاں کا ویسا ھمارے پاس نہیں تھا . ویسا کے لئے ھم جرمن کونسلیٹ تک دوڑے بھاگے لیکن 24 گھنٹے لگ ھی گئے . اِس طرح پہلی اپریل کو ریل پر سوار ھوکر دوسری تاریخ کو ساڑھے نو بجے پریگ پہونچے .

راستے بھر زوروں سے برف پڑ رھا تھا . چاروں طرف مانو برف کی صاف چادر بچھی ھوئی تھی . بہت ھی [illegible] تھا .

प अगर घर में भी करे तो यह बुरा समझा जायेगा. ोरप की सही कलचर यहां के लिये एक दम ग़लत ाबित होगी. इन लफ़्ज़ों में न योरप की सारी कलचर पर लज़ाम है न उसके किसी एक हिस्से पर.

पांचवां सवाल शायद इस फ़िक़रे के बल पर उठाया या है कि "लेडी रामा राव से हमारी अपील है कि ज़रा ोश में आएं और याद करें कि किस मिट्टी में पाली पोसी ॅ."

होश में आयें ज़रा भारी पड़ता है. महावरा है—होश रें, जिसके माने होते हैं ख़्याल करें. पर होश में आयें ाने का रिवाज अब काफ़ी चल पड़ा है. पर हम इतने रे क्यों जायें. सचमुच आदमी आन्दोलन के जोश में पने होश खो बैठता है और उसे होश में लाने की बात ना न कोई बहुत बड़ा गुनाह है और न इसका यही तलब होता है कि कहने वाला सबको बेवकूफ़ समझता और फिर क्या बम्बई, क्या दिल्ली सभी जगह तो मैच के ख़िलाफ़ आन्दोलन हुआ, जुलूस निकाले गये र जुलूस में जो नारे लगाए गये उनके मुक़ाबले में होश आयें लफ़्ज़ इतना कमज़ोर पड़ जाता है कि कहीं खाई नहीं देता. और अगर बेहयाई से सोचा जाये तो लूस के नारों पर यह लफ़्ज़ तैरता दिखाई देता है न ि बा और पिचका हुआ.

इन्हीं ख़तों में छोटे मुंह बड़ी बात का भी सीधे ना धे ज़िकर आया है. इसके बारे में हम इतना ही कहेंगे कि आदमियों के मुँह क़रीब क़रीब बराबर होते हैं. रही ी बात की बात उसका यह हाल है कि जो बीज दरख़्त गया वह साया देता है और फल ज़रूर लगता है. जो ग सका वह मर जाता है. पर इसी वजह से बीज नहीं सोचते कि वह ज़मीन में गिरना और उगना भी ें.

—भगवानदीन

باپ اگر گھر میں بھی کرے تو یہ برا سمجھا جائے گا. یورپ کی سہی کلچر یہاں کے لئے ایک دم غلط ثابت ہوگی. اِن لفظوں میں نہ یورپ کی ساری کلچر پر الزام ھے نہ اُس کے کسي ایک حصے پر .

پانچواں سوال شائد اِس فقرے کے بل پر اُٹھایا گیا ھے کہ "لیڈی راما راؤ سے ھماري اپیل ھے کہ ذرا ھوش میں آئیں اور یاد کریں کہ کس مٹی میں پالي پوسی گئی ھیں."

ھوش میں آئیں ذرا بھاري پڑتاھے. محاورہ ھے—ھوش کریں' جسکے معنےھوتےھیں خیال کریں. پر ھوش میں آئیں لکھنے کا رواج اب کافی چل پڑا ھے. پر ھم اتنے گھرے کیوں جائیں. سچ مچ آدمی آندولن کے جوش میں اپنے ھوش کھو بیٹھتا ھے اور اُسے ھوش میں لانے کی بات کہنا نہ کوئی بہت بڑا گناہ ھے اور نہ اِسکا یہی مطلب ھوتا ھے کہ کہنے والا سب کو بیوقوف سمجھتا ھے. اور پھر کیا بمبئی' کیا دلي سبھی جگہ تو اِس میچ کے خلاف آندولن ھوا' جلوس نکالے گئے اور جلوس میں جو نارے لگائے گئے اُن کے مقابلے میں ھوش میں آئیں لفظ اتنا کمزور پڑ جاتا ھے کہ کہیں دکھائی نہیں دیتا. اور اگر بے حیائی سے سوچا جائے تو جلوس کے نعروں پر یہ لفظ تیرتا دکھائي دیتا ھے نہ کہ ڈوبا اور پچکا ھوا .

اِنھیں خطوں میں چھوٹے منھ بڑی بات کا بھی سیدھے نا سیدھے ذکر آیا ھے . اِسکے بارے میں ھم اتنا ھی کہینگے کہ سب آدمیوں کے منھ قریب قریب برابر ھوتے ھیں. رھی بڑي بات کی بات اُسکا یہ حال ھے کہ جو بیج درخت بن گیا وہ سایا دیتا ھے اور پھل ضرور لگتا ھے' جو نہ اُگ سکا وہ مر جاتا ھے. پر اِسی وجہ سے بیج یہ نہیں سوچتے کہ وہ زمین میں گرنا اور اُگنا بھی چھوڑ دیں .

—بھگوان دین

औज़ार गढ़ लिया है. अमरीका के हर आदमी को औरत के सामने आने पर अपनी पूरी टांगें ढकी रखनी ज़रूरी होती हैं. ऐसा न करना बेहयाई समझी जाती है. औरतों की तरह आदमी के वज़ादारी और हयादारी के क़ायदे हैं. और अगर वह उससे बाहर जाते हैं तो बेहया समझे जाते हैं.

तीसरा सवाल अपने ढंग का अनोखा है. अब जब तक किसी से मुख़्तार नामा न मिलेगा तो उनकी तरफ़ से कोई बात नहीं कही जा सकेगी. फिर जानवरों की तरफ़ से कोई कभी अपील न कर सकेगा, क्योंकि वह मुख़्तार नामा नहीं लिख सकते. और न फिर कोई अछूतों और आदिवासियों की 'तरफ़ से बोल सकेंगे. अब जब वह औरतें जो आए दिन अपने शराबी पतियों से मार खाती रहती हैं और घर लुटवाती रहती हैं जब तक किसी लीडर को मुख़्तार नामा लिख कर न दे दें तब तक शराब बन्दी का कोई आन्दोलन नहीं किया जा सकता. हमें ऐसा मालूम होता है कि एतराज़ करने वाले साहब ने ज़रूर इन मिसों से मुख़्तार नामा हासिल कर लिया है तभी वह उनकी तरफ़ से वकालत कर रहे हैं.

हम तो यही समझते आए हैं कि सच्चा पत्रकार वही है जो अपने आपको जनता का सच्चा वकील समझे. अब शायद इस समझ में हमें तब्दीली करनी होगी.

चौथे सवाल के जवाब में हम यही कहेंगे कि 'नया हिन्द' गांधी जी की नाम की आड़ कभी नहीं लेता. हाँ, कभी किसी सिलसिले में उनका ज़िकर ज़रूर आ जाता है. गांधी जी जो कुछ कर गए या जो कुछ लिख कर धर गए 'नया हिन्द' वह सब पुराना समझता है. पर 'नया हिन्द' गांधी जी की स्प्रिट को हमेशा नया समझता है. उसकी नक़ल करने में उसे आनन्द आता है और वह स्प्रिट यही है कि मौक़े पर सच कहने से नहीं चूकना. सच्चाई को जहां तक बने मीठे से मीठे शब्दों में रखने की कोशिश करना और फिर भी किसी को कड़वी लगे तो उसकी गालियों को बरदाश्त कर लेना.

ख़ूबसूरती मैच के सिलसिले में गांधी जी का ज़िकर इन शब्दों में आया है.

"महात्मा गांधी अकसर कहा करते थे कि उन्हें योरप वालों की हकूमत से उतना डर नहीं है जितना उनके रहन सहन और उनकी ग़लत कलचर के इस देश में फैलने से."

इन लाइनों में कोई आड़ नहीं ली गई. कलचर के साथ ग़लत लफ़्ज़ बेशक आ गया है पर वह सिर्फ़ निस्बत बताता है. उनकी कलचर के मुताबिक़ बाप बेटी को प्लेटफ़ार्म पर चूम सकता है. इसकी नक़ल हिन्दुस्तानी

اوزار گھڑ لیا ھے . امریکہ کے ھر آدمی کو عورت کے سامنے آنے پر اپنی پوری ٹانگیں ڈھکی رکھنی ضروری ھوتی ھیں . ایسا نہ کرنا بےحیائی سمجھی جاتی ھے . عورتوں کی طرح آدمي کے وضع‌داری اور حیا داری کے قائدے ھیں . اور اگر وہ اُس سے باھر جاتے ھیں تو بےحیا سمجھے جاتے ھیں .

تیسرا سوال اپنے ڈھنگ کا انوکھا ھے . اب جب تک کسی‌سے مختار نامہ نہ ملے گا تو اُن کی طرف سے کوئي بات نہیں کہی جا سکیگی . پھر جانوروں کی طرف سے کوئی کبھی اپیل نہ کر سکیگا' کیونکہ وہ مختار نامہ نہیں لکھ سکتے . اور نہ پھر کوئی اچھوتوں اور آدیواسیوں کی طرف سے بول سکینگے . اب جب وہ عورتیں جو آئے دن اپنے شرابی پتیوں سے مار کھاتی رھتی ھیں اور گھر لٹواتی رھتی ھیں جب تک کسي لیڈر کو مختار نامہ لکھکر نہ دے دیں تب تک شراب بندي کا کوئی آندولن نہیں کیا جا سکتا . ھمیں ایسا معلوم ھوتا ھے کہ اعتراض کرنے والے صاحب نے ضرور اِن مسوں سے مختار نامہ حاصل کر لیا ھے' تبھی وہ اُن کی طرف سے وکالت کر رھے ھیں .

ھم تو یہی سمجھتے ھیں کہ سچا پترکار وھی ھے جو اپنے آپ کو جنتا کا سچا وکیل سمجھے . اب شائد اِس سمجھ میں ھمیں تبدیلی کرنی ھوگی .

چوتھے سوال کے جواب میں‌ھم یہی‌کہینگے کہ 'نیاھند' گاندھي جی کی نام کی آڑ کبھي نہیں لیتا . ھاں' کبھی کسی سلسلے میں اُن کا ذکر ضرور آجاتا ھے. گاندھی جی جو کچھ کر گئے یا جو کچھ لکھکر دھر گئے 'نیا ھند' وہ سب پرانا سمجھتا ھے . پر 'نیا ھند' گاندھی جی کی اسپرٹ کو ھمیشہ نئی سمجھتا ھے . اُسکی نقل کرنے میں اُسے آنند آتا ھے اور وہ اسپرٹ یہی ھے کہ موقعے پر سچ کہنے سے نہیں چوکنا . سچائی کو جہاں تک بنے میٹھے شبدوں میں رکھنے کي کوشش کرنا اور پھر بھی کسي کو کڑوی لگے تو اُسکی گالیوں کو برداشت کر لینا .

خوبصورتی میچ کے سلسلے میں گاندھی جی کا ذکر اِن شبدوں میں آیا ھے .

"مہاتما گاندھی اکثر کہا کرتے تھے کہ اُنھیں یورپ والوں کي حکومت سے اُتنا ڈر نہیں ھے جتنا اُن کے رھن سہن اور اُنکی غلط کلچر کے اس دیش میں پھیلنے سے ."

اِن لائنوں میں کوئی آڑ نہیں لی گئی . کلچر کے ساتھ غلط لفظ بےشک آگیا ھے پر وہ صرف نسبت بتاتا ھے . اُنکی کلچر کے مطابق باپ بیٹی کو پلیٹ‌فارم پر چوم سکتا ھے . اسکي نقل ھندستانی

म यह मानते हैं कि जिस तरह सँवरना मर्दों का काम ी सिंगार करना औरतों का काम है. पर संवरना सिंगार करना सिर्फ संवरने और सिंगार करने के हो यानी अपनी सज धज सिर्फ दूसरों को दिखाने य हो तो वह बेहयाई और बेशर्मी है.

ब किसी के घर बारात आती है तो दूल्हे को देखने ये हर उम्र की लड़कियाँ सज धज कर बाज़ार में हैं, छतों पर खड़ी होती हैं, अपनी घर की खिड़कियों झांकती हैं, उन्हें बेशर्म और बेहया कोई नहीं कहता के उनकी नियत दूल्हा देखने की होती है. पर उसी का देखने अगर सज धज कर वेश्यायें अपनी कियों से झांकने लगें तो उन्हें सब बेहया कहते हैं उनकी नियत देखने की नहीं अपने को दिखाने ती है.

सिर्फ इसलिये सजना कि मैं सब से ज़ियादा ख़ूबसूरत ी जाऊं वज़ादारी और हयादारी में कैसे शामिल हो है क्योंकि ख़ूबसूरत साबित होने के लिये चेहरे की बनावट और कपड़े ही काफ़ी नहीं होते. इनसे ज़ियादा उन चीज़ों की ज़रूरत होती है जो जवों को रिझाने के काम में आती हैं. तब फिर इस काम ज़ादारी और हयादारी का काम कैसे कहा जा है?

म मिस कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली या मिस इन्डिया किसी एक के भाई, बाप या क़रीबी रिश्तेदार बनकर स खेल की अच्छाई बुराई के ठीक-ठीक नतीजे पर सकते हैं. 'नया हिन्द' के लेख के समझने में और आसानी हो सकती है अगर हमारे पढ़ने वाले यह झ लें कि यह तमाशा कुछ पैसे वालों ने क्यों और ग़रज़ से किया. जिस देश में देवदासियां गुंडा यों का रूप ले सकती हैं उस देश में पैसे के लोभ में कर ख़ूबसूरती मैच खड़ा कर देना हमारी संस्कृति के कितना ख़तरनाक साबित होगा इसका अन्दाज़ा वह लगावें जो 'नया हिन्द' के नायब एडीटर पर अपने में छींटें फेंक रहे हैं और ज़ोर के फ़िक़रे कस रहे हैं.

सरा सवाल कि शर्म लिहाज़ औरत को क़ाबू में के लिये तैयार की गई हैं, पहले सवाल से जो ग़ुस्सा आ है उसी की शाख़ है. बे शर्म और बेहया लफ़्ज़ औरतों के लिए काम में नहीं आते जितने मर्दों के शर्म मर्दों के लिये उतनी ही ज़रूरी है जितनी तों के लिये—अगर यह बात ठीक मान ली जाये कि तों को क़ाबू में करने के लिए आदमी ने शर्म को गढ़ है तब यह बात भी ठीक समझी जानी चाहिये कि ने आदमी को क़ाबू में रखने के लिये शर्म का

ہم یہ مانتے ہیں کہ جس طرح سنورنا مردوں کا کام ہے ویسے ہی سنگار کرنا صرف عورتوں کا کام ہے ۔ پر سنورنا اور سنگار کرنا صرف سنورنے اور سنگار کرنے کے لئے ہو یعنی اپنی سج دھج صرف دوسروں کو دکھانے کے لئے ہو تو وہ بےحیائی اور بے شرمی ہے ۔

جب کسی کے گھر برات آتی ہے تو دولہے کو دیکھنے کے لئے ہر عمر کی لڑکیاں سج دھج کر بازار میں آتی ہیں، چھتوں پر کھڑی ہوتی ہیں، اپنی گھر کی کھڑکیوں میں سے جھانکتی ہیں، انہیں بے شرم اور بے حیا کوئی نہیں کہتا کیونکہ اُن کی نیت دولہا دیکھنے کی ہوتی ہے ۔ پر اُسی برات کو دیکھنے اگر سج دھج کر ویشیائیں اپنی کھڑکیوں سے جھانکنے لگیں تو انہیں سب بے حیا کہتے ہیں کیونکہ اُن کی نیت دیکھنے کی نہیں اپنے کو دکھانے کی ہوتی ہے ۔

صرف اس لئے سجنا کہ میں سب سے زیادہ خوبصورت سمجھی جاؤں وضع داری اور حیا داری میں کیسے شامل ہو سکتا ہے کیونکہ خوبصورت ثابت ہونے کے لئے چہرے مہرے کی بناوٹ اور کپڑے ہی کافی نہیں ہوتے ۔ اِن سے کہیں زیادہ اُن چیزوں کی ضرورت ہوتی ہے جو چیزیں مردوں کو رجھانے کے کام میں آتی ہیں ۔ تب پھر اِس کام کو وضع داری اور حیا داری کا کام کیسے کہا جا سکتا ہے ؟

ہم مس کلکتہ، بمبئی، دلی یا مس انڈیا میں سے کسی ایک کے بھائی، باپ یا قریبی رشتے دار بن کر ہی اس کھیل کے اچھائی برائی کے ٹھیک ٹھیک نتیجے پر پہنچ سکتے ہیں۔ 'نیا ہند' کے لیکھ سمجھنے میں اور بھی آسانی ہو سکتی ہے اگر ہمارے پڑھنے والے یہ سمجھ لیں کہ یہ تماشہ کچھ پیسے والوں نے کیوں اور کس غرض سے کیا ۔ جس دیش میں دیو داسیاں گنڈا داسیوں کا روپ لے سکتی ہیں اُس دیش میں پیسے کے لوبھ میں آ کر خوبصورتی میچ کھڑا کر دینا ہماری سنسکرتی کے لئے کتنا خطرناک ثابت ہوگا اِسکا اندازہ وہ صاحب لگاویں جو 'نیا ہند' کے نائب ایڈیٹر پر اپنے خطوں میں چھینٹیں پھینک رہے ہیں اور زور کے فقرے کس رہے ہیں ۔

دوسرا سوال کہ شرم لحاظ عورت کے قابو میں کرنے کے لئے تیار کی گئی ہیں، پہلے سوال سے جو غصہ پیدا ہوا ہے اُسی کی شاخ ہے ۔ بے شرم اور بےحیا لفظ اِتنے عورتوں کے لئے کام میں نہیں آتے جتنے مردوں کے لئے ۔ شرم مردوں کے لئے اُتنی ہی ضروری ہے جتنی عورتوں کے لئے—اگر یہ بات ٹھیک مان لی جائے کہ عورتوں کو قابو میں کرنے کے لئے آدمی نے شرم کو گڑھ لیا ہے تب یہ بات بھی ٹھیک سمجھی جانی چاہئے کہ عورت نے آدمی کو قابو میں رکھنے کے لئے شرم کا

पहले सवाल की बुनियाद में 296 सफ़े के तीसरे पैरे की शुरू की यह लाइन हो सकती है.

"ख़ूबसूरती के इन बेहयाई भरे तमाशे में हाई कोर्ट के जज, नये मिनिस्टर, पुराने मिनिस्टर, रईस वग़ैरा किसी न किसी रूप में शरीक हुए हैं."

या आप फिर 297 सफ़े के तीसरे पैरे की बीच की यह दो लाइनें हो सकती हैं.

"लेडी रामा राव से हमारी अपील है कि ज़रा होश में आयें और याद करें कि किस मिट्टी में पाली पोसी गई हैं. बहन इन्द्रानी (मिस इन्डिया) से हमारी अपील है कि एक बार ठोकर खाई सो खाई, आगे उसी गढ़े में गिरने से क्या फ़ायदा और कौन ख़ूबसूरती की बात है ?"

अब देखना यह है कि यह मिस बम्बई, मिस कलकत्ता, मिस दिल्ली वग़ैरा छांटने के तमाशे बेहयाई भरे थे या नहीं. कभी कभी जोश में आ कर समझदार से समझदार आदमी बेवकूफ़ी और बेहयाई से भरे काम कर बैठता है. और जब कभी कोई नेशन जोश में आ जाती है या मुक़ाबले के लिये उमड़ उठती है तब तो मुश्किल से ही दो चार दस समझदार रह जाते हैं जो उस बाढ़ में न बह जायें. मिसाल के तौर पर हिन्दुस्तान की आज़ादी से कुछ पहले और ठीक बाद में जो हिन्दू मुसलमान लड़ाईयां हुईं क्या उनमें अनगिनत काम ऐसे नहीं हुये जो बेवकूफ़ी और बेहयाई से भरे हुये थे, और क्या उन कामों में समझदार से समझदार आदमी शामिल नहीं थे ? जोश ठंडा होने के कुछ दिनों बाद ही हिन्दू और मुसलमान यह तय कर पाये कि उनके वह सब काम निहायत बेवकूफ़ी और बेहयाई से भरे हुए थे, जिन्हें वह राजकाजी समझदारी का नाम दे रहे थे. द्रोपदी को भरी सभा में नंगा करने की कोशिश क्या कभी कौरव बेवकूफ़ी और बेहयाई समझ पाए. और सूर्पनखा की नाक कटने का काम तो शायद आज भी कोई हिन्दुस्तानी नासमझी और बेहयाई का काम बताने को तैयार नहीं.

जापान पर एटम बम गिराने के काम के ख़िलाफ़ दुनिया भर में सिर्फ़ एक आवाज़ उठी थी और क्या उस काम को अमरीकी नेशन ने आज तक भी ना-समझी और बेहयाई का काम माना ?

ख़ूबसूरती मैच के लेख पर एतराज़ करने वाले एक दिल्ली के बुज़ुर्ग भी हैं. उनके जवाब में तो हम सिर्फ़ यही कहेंगे कि ख़ुद दिल्ली में इस तरह के मैच के ख़िलाफ़ आवाज़ उठा था और उसका असर मिस दिल्ली पर इतने ज़ोर का हुआ कि वह मिस इन्डिया के मैच में शामिल नहीं हुईं.

پہلے سوال کی بنیاد میں 296 صفحے کے تیسرے پیرے کی شروع کی یہ لائن ہو سکتی ہے .

" خوبصورتی کے ان بے حیائی بھرے تماشے میں ہائی کورٹ کے جج، نئے منسٹر، پرانے منسٹر، رئیس وغیرہ کسی نہ کسی روپ میں شریک ہوئے ہیں ."

یا آپ پھر 297 صفحے کے تیسرے پیرے کی بیچ کی یہ دو لائنیں ہو سکتی ہیں .

" لیڈی راما راؤ سے ہماری اپیل ہے کہ ذرا ہوش میں آئیں اور یاد کریں کہ کس مٹی میں پالی پوسی گئی ہیں . بہن اندرانی (مس انڈیا) سے ہماری اپیل ہے کہ ایک بار ٹھوکر کھائی سو کھائی آگے اسی گڈھے میں گرنے سے کیا فائدہ اور کون خوبصورتی کی بات ہے ؟"

اب دیکھنا یہ ہے کہ یہ مس بمبئی، مس کلکتہ، مس دلی وغیرہ چھانٹنے کے تماشے بےحیائی بھرے تھے یا نہیں . کبھی کبھی جوش میں آکر سمجھدار سے سمجھدار آدمی بیوقوفی اور بےحیائی سے کام کر بیٹھتا ہے. اور جب کبھی کوئی نیشن جوش میں آ جاتی ہے یا مقابلے کے لئے امڈ اٹھتی ہے تب تو مشکل سے ہی دو چار دس سمجھدار رہ جاتے ہیں جو اس باڑھ میں نہ بہ جائیں . مثال کے طور پر ہندستان کی آزادی سے کچھ پہلے اور ٹھیک بعد میں جو ہندو مسلمان لڑائیاں ہوئیں کیا ان میں ان گنت کام ایسے نہیں ہوئے جو بیوقوفی اور بے حیائی سے بھرے ہوئے تھے، اور کیا ان کاموں میں سمجھدار سے سمجھدار آدمی شامل نہیں تھے ؟ جوش ٹھنڈا ہونے کے کچھ دنوں بعد ہی ہندو اور مسلمان یہ طے کر پائے کہ ان کے وہ سب کام نہایت بیوقوفی اور بے حیائی سے بھرے ہوئے تھے، جنہیں وہ راج کاجی سمجھداری کا نام دے رہے تھے . دروپدی کو بھری سبھا میں ننگا کرنے کی کوشش کیا کبھی کورو بیوقوفی اور بے حیائی سمجھ پائے اور سورپنکھا کی ناک، کٹنے کا کام تو شائد آج بھی کوئی ہندستانی نا سمجھی اور بے حیائی کا کام بتانے کو تیار نہیں .

جاپان پر ایٹم بم گرانے کے کام کے خلاف دنیا بھر میں صرف ایک آواز اٹھی تھی اور کیا اس کام کو کو امریکی نیشن نے آج تک بھی نا سمجھی اور بے حیائی کا کام مانا ؟

خوبصورتی میچ کے لیکھ پر اعتراض کرنے والے ایک دلی کے بزرگ بھی ہیں . ان کے جواب میں تو ہم صرف یہی کہینگے کہ خود دلی میں اس طرح کے میچ کے خلاف آواز اٹھی تھی اور اس کا اثر مس دلی پر اتنی زور کا ہوا کہ وہ مس انڈیا کے میچ میں شامل نہیں ہوئیں .

पनी परमार्थ-साधना समझने वाला मैं एक भक्ति की पर चलने वाला एक मुसाफिर हूँ. आज अगर गांधी होते तो इस तरह लोगों के सामने मैं मौजूद नहीं ता. बल्कि वही देहात का भंगी काम और वही कांचन पैसा मुक्त खेती का काम करता हुआ दिखाई पड़ता. किन मजबूरन मुझे बाहर आना पड़ा है. और एक भारी यज्ञ का पुरोहित बनने की ज़ियादती करनी पड़ी यह ज़ियादती या शराफ़त जो कुछ भी हो, परमेश्वर समर्पण करके मैं सब भाई बहनों से सहयोग की मांग ता हूँ.

नकबरपुर (उत्तर-प्रदेश) —विनोबा के
29. 4. '52. प्रनाम

'नया हिन्द' का नज़रिया

'नया हिन्द' के अप्रैल नम्बर में एडीटर की तरफ़ से नोट था—"खूबसूरती मैच-एक कलंक." हमारे पढ़ने ों में से कुछ को वह नोट भला नहीं लगा. उन्होंने से कुछ सवाल किये जो इस क़िस्म के हो सकते हैं.

(1) यह न मर्दानगी है न शराफ़त कि कोई मर्द ी औरत की आबरू पर हाथ डाले.

(2) शर्म, हया, लज्जा नाम के जेवर आदमी ने रत को क़ाबू में रखने के लिये गढ़ लिये हैं.

(3) क्या एडीटर साहब को देहाती बहनों की तरफ़ कोई मुख्तार नामा मिला हुआ है? और फिर वह नें बड़ी बूढ़ी बदसूरत औरतें थीं या जवान खूबसूरत.

एक साहब ने तो जोश में आकर यह भी लिख मारा के हर औरत जिसे खुदा ने खूबसूरत जिस्म दिया है ज़रूर उस पर नाज़ करती है. वह क्यों न उसकी ायश करें. वहीं बुज़ुर्ग अपने तजुरबे के बल पर यह भी ते हैं कि सिर्फ़ बड़ी बूढ़ी औरतें ही अपनी चारदीवारी न्द रह कर नेक चलनी को सराहती हैं. अपने मुँह ां मिट्ठू बनती हैं. ईश्वर जाने वह सच कहती हैं झूट.

(4) एडीटर साहब को यह मुनासिब नहीं है कि गांधी जी के नाम की आड़ लें.

5) एडीटर को यह भी हक़ नहीं है कि गांधी जी के की ओट लेकर लेडी रामा राव, हाई कोर्ट के जजों, पुराने मिनिस्टरों और दूसरे बड़े आदमियों को बेवकूफ़ है.

اپنی پرمارتھ سادھنا سمجھنے والا میں بھگتی کی راہ پر چلنے والا ایک مسافر ہوں . آج اگر گاندھی جی ہوتے تو اس طرح لوگوں کے سامنے میں موجود نہیں ہوتا . بلکہ وہی دیہات کا بھنگی کام اور وہی کانچن یا پیسہ مکت کھیتی کا کام کرتا ہوا دکھائی پڑتا . لیکن مجبوراً مجھے باہر آنا پڑا ہے . اور ایک بڑے بھاری یگیہ کا پروہت بننے کی زیادتی کرنی پڑی ہے . یہ زیادتی یا شرافت جو کچھ بھی ہو' پرمیشور کو سمرپن کرکے میں سب بھائی بہنوں سے سہیوگ کی مانگ کرتا ہوں .

اکبرپور (اتر پردیش) —ونوبا کے
29 . 4 . 52 پرنام

نیا هند' کا نظریه

' نیا هند ' کے اپریل نمبر میں ایڈیٹر کی طرف سے ایک نوٹ تھا--" خوبصورتی میچ - ایک کلنک ." همارے پڑھنے والوں میں سے کچھ کو وہ نوٹ بھلا نہیں لگا . انہوں نے هم سے کچھ سوال کئے جو اس قسم کے هو سکتے هیں .

(1) یہ نہ مردانگی هے نہ شرافت کہ کوئی مرد کسی عورت کی آبرو پر هاتھ ڈالے .

(2) شرم' حیا' لجا نام کے زیور آدمی نے عورت کو قابو میں رکھنے کے لئے گڑھ لئے هیں .

(3) کیا ایڈیٹر صاحب کو دیہاتی بہنوں کی طرف سے کوئی مختار نامہ ملا هوا هے ؟ اور پھر وہ بہنیں بڑی بوڑھی بد صورت عورتیں تھیں یا جوان خوبصورت .

ایک صاحب نے تو جوش میں آ کر یہ بھی لکھ مارا هے کہ هر عورت جسے خدا نے خوبصورت جسم دیا هے وہ ضرور اس پر ناز کرتی هے . وہ کیوں نہ اسکی نمائش کرے . وهی بزرگ اپنے تجربے کے بل پر یہ بھی لکھتے هیں کہ صرف بڑی بوڑھی عورتیں هی اپنی چار دیواری میں بند رہ کر نیک چلنی کو سراهتی هیں . اپنے منہ میاں مٹھو بنتی هیں . ایشور جانے وہ سچ کہتی هیں یا جھوٹ .

(4) ایڈیٹر صاحب کو یہ مناسب نہیں هے کہ وہ گاندھی جی کے نام کی آڑ لیں .

(5) ایڈیٹر کو یہ بھی حق نہیں هے کہ گاندھی جی کے نام کی اوٹ لے کر لیڈی راما راؤ' هائی کورٹ کے ججوں' نئے پرانے منسٹروں اور دوسرے بڑے آدمیوں کو بیوقوف بنائے .

वह जमीन पर मेहनत मशक्कत करेगा, अपना पसीना उसमें मिलायेगा, तब खा सकेगा. इसलिये उसे दीन बनाने का कारन नहीं है. उसका अपना अधिकार हम उसे दिला रहे हैं.

तीन गुर.

हम मिन्नत से, प्रेम से और आज कल की हालत समझ कर मांगते हैं. हमारे तीन गुर हैं :—

1. हमारा विचार समझने पर अगर कोई नहीं देता है, तो उससे हम दुखी नहीं होते ; क्योंकि हम मानते हैं, जो आज नहीं देता है, वह कल देने वाला है. विचार का बीज उगे बिना नहीं रहता.

2. हमारा विचार समझ कर अगर कोई देता है, तो उससे हमें खुशी होती है. क्योंकि उससे सद्‌भावना पैदा होती है.

3. हमारा विचार समझे बिना किसी दबाव के कारन अगर कोइ देगा तो उससे हमें दुख होगा. हमें किसी तरह जमीन बटोरना नहीं है. बल्कि साम्ययोग और सर्वोदय तबियत पैदा करनी है.

सब पारटियों के लिये काम.

मैं मानता हूँ कि यह एक ऐसा प्रोग्राम हमें मिला है जिसमें सब पारटियों के लोगों को एक साथ काम करने का मौक़ा मिलता है. लोग कांगरेस की शुद्धि की बात करते हैं. शुद्धि की तो सब संस्थाओं को जरूरत है. लेकिन कांगरेस का नाम इसलिये लिया जाता है कि वह बड़ी संस्था है. मेरा विश्वास है कि कांगरेस और दूसरी संस्थायें अगर इस प्रोग्राम को अपनायेंगी और सत्य अहिंसा के तरीक़े से उसे चलायेंगी, तो उससे सबकी शुद्धि होगी, सबका बल बढ़ेगा और सब में एकता आयगी.

सहयोग की मांग.

मेरे हिन्दवासी भाईयों, आपसे मेरी प्रार्थना है कि इस जन भलाई के यज्ञ में अपनी शिरकत करें. और इस काम को कामयाब बना कर आर्थिक दायर में अहिंसा क़ायम करें. मेरा इस काम के लिये तिहरा दावा है. एक तो यह कि, हिन्दुस्तान की सभ्यता या तहज़ीब के माफ़िक है; दूसरा, इसमें आर्थिक और समाजी इनक़लाब का बीज है और तीसरा यह कि इससे दुनिया में शान्ति क़ायम करने के लिये मदद मिल सकती है.

मैं जानता हूँ कि सारे हिन्दुस्तान के सामने कोई प्रोग्राम रखने का मेरा हक़ नहीं है. लोगों को हुक्म देने वाला मैं कोई नेता नहीं हूँ. गांव वालों की सेवा को ही

وہ زمین پر محنت مشقت کرے گا، اپنا پسینہ اُس میں ملائے گا، تب کھا سکے گا۔ اِس لئے اُسے دین بنانے کا کارن نہیں ہے۔ اُس کا اپنا ادھیکار ہم اُسے دلا رہے ہیں۔

تین گر۔

ہم منت سے، پریم سے اور آج کل کی حالت سمجھ کر مانگتے ہیں۔ ہمارے تین گر ہیں :—

1. ہمارا وچار سمجھنے پر اگر کوئی نہیں دیتا ہے، تو اُس سے ہم دکھی نہیں ہوتے؛ کیونکہ ہم مانتے ہیں، جو آج نہیں دیتا ہے، وہ کل دینے والا ہے۔ وچار کا بیج اُگے بنا نہیں رہتا۔

2. ہمارا وچار سمجھ کر اگر کوئی دیتا ہے، تو اُس سے ہمیں خوشی ہوتی ہے۔ کیونکہ اُس سے سدبھاونا پیدا ہوتی ہے۔

3. ہمارا وچار سمجھے بنا کسی دباؤ کے کارن اگر کوئی دے گا تو اُس سے ہمیں دکھ ہوگا۔ ہمیں کسی طرح زمین بٹورنا نہیں ہے۔ بلکہ سامیہ یوگ اور سروودے کی طبیعت پیدا کرنی ہے۔

سب پارٹیوں کے لئے کام۔

میں مانتا ہوں کہ یہ ایک ایسا پروگرام ہمیں ملا ہے جس میں سب پارٹیوں کے لوگوں کو ایک ساتھ کام کرنے کا موقع ملتا ہے۔ لوگ کانگریس کی شدھی کی بات کرتے ہیں۔ شدھی کی تو سب سنستھاؤں کو ضرورت ہے۔ لیکن کانگریس کا نام اِس لئے لیا جاتا ہے کہ وہ بڑی سنستھا ہے۔ میرا وشواس ہے کہ کانگریس اور دوسری سنستھائیں اگر اس پروگرام کو اپنائیں گی اور ستیہ اہنسا کے طریقہ سے اُسے چلائیں گی، تو اُس سے سب کی شدھی ہوگی، سب کا بل بڑھے گا اور سب میں ایکتا آئے گی۔

سہیوگ کی مانگ۔

میرے ہند واسی بھائیوں، آپ سے میری پرارتھنا ہے کہ آپ اِس جن بھلائی کے یگیہ میں اپنی شرکت کریں۔ اور اِس کام کو کامیاب بناکر آرتھک دائرے میں اہنسا قائم کریں۔ میرا اِس کام کے لئے تہرا دعویٰ ہے۔ ایک تو یہ کہ، ہندوستان کی سبھیتا یا تہذیب کے موافق ہے؛ دوسرا، اِس میں آرتھک اور سماجی انقلاب کا بیج ہے اور تیسرا یہ کہ اِس سے دُنیا میں شانتی قائم کرنے کے لئے مدد مل سکتی ہے۔

میں جانتا ہوں کہ سارے ہندستان کے سامنے کوئی پروگرام رکھنے کا میرا حق نہیں ہے۔ لوگوں کو حکم دینے والا میں کوئی نیتا نہیں ہوں۔ گاؤں والوں کی سیوا کو ہی

सहयोग अच्छा रहा. एक लाख एकड़ तक हम पहुँच . मैं तो इसमें ईश्वर का हाथ देखता हूँ. मेरे बहुत सारे थियों को भी ऐसा ही लगा. नतीजा यह हुआ कि पुरी के सर्वोदय सम्मेलन में सबने मिल कर सारे स्तान में अगले दो साल के अन्दर कम से कम 25 एकड़ ज़मीन प्राप्त करने का पक्का इरादा किया. बात अब आप लोगों को मालूम हो गयी है.

25 लाख एकड़ से हिन्दुस्तान के बे-ज़मीन वालों का सला हल हो जाता है ऐसी बात नहीं. उसके लिये तो म से कम पांच करोड़ एकड़ ज़मीन चाहिये. लेकिन पहली स्त के तौर पर अगर हम पचीस लाख एकड़ कर लेते और हिन्दुस्तान के पांच लाख गांवों में अहिंसा का देश पहुँचा देते हैं, तो भूमि का ठीक ठीक इन्तज़ाम रने के लिये ज़रूरी हवा तैयार हो जायेगा, ऐसा मेरा ीन है.

देने वालों में शबरी, सुदामा और सब पक्षों लोग.

ज़मीन बड़े काश्तकारों और ज़मींदारों से तो मैं मांगता हूँ, लेकिन छोटे छोटे काश्तकारों से भी इसमें हाथ टाने की मैंने प्रार्थना की है. और मुझे कहने में खुशी ी है कि बड़े दिल वाले इन छोटे लोगों ने बहुत प्रेम से प्रार्थना सुनी है. इस यज्ञ में कई शबरियों ने अपने दिये हैं और कई सुदामाओं ने अपने तंदुल समर्पन ये हैं. यह मेरे लिये एक जीवन भर याद रहने वाली त्व गाथा हुई है. इसमें दरिद्रों को अपनी आत्मा साफ ने की प्रेरना मिली है, और श्रीमानों को आत्म-शुद्धि र मालिकी भाव हटाने की.

मुझे भूमि सब तरह के लोगों ने दी है. हिन्दुओं ने है, मुसलमानों ने दी है, दूसरे धर्म वालों ने दी है. जो तरह से "सब हारा" गिने जायेंगे ऐसे हरिजनों ने दी है. जिनका भूमि पर अधिकार नहीं माना जाता ी स्त्रियों ने भी दी है. देने वालों में सब तबकों और पक्षों के लोग शामिल हैं. दरिद्रनारायन को अपने नदान का हिस्सा एक समझ कर हक के तौर पर दिया य, मैंने मांगा है. और वैसे ही भावना से लोगों ने या है.

'दान' की व्याख्या.

भूमिदान-यज्ञ में 'दान' शब्द आता है. उससे परहेज़ ने की ज़रूरत नहीं है. "दानम् संविभाग" दान यानी राबर की तकसीम. यह है शंकराचार्य के दान का लब. उसी माने में हम उस शब्द का इस्तेमाल करते [illegible] मिलेगी [illegible] ले वाला नहीं [illegible]

کا سہیوگ اچھا رہا . ایک لاکھ ایکڑ تک ہم پہونچ گئے . میں تو اِس میں ایشور کا ہاتھ دیکھتا ہوں . میرے بہت سارے ساتھیوں کو بھی ایسا ہی لگا . نتیجہ یہ ہوا کہ سیواپوری کے سروودیہ سمیلن میں سب نے ملکر سارے ہندستان میں اگلے دو سال کے اندر کم سے کم 25 لاکھ ایکڑ زمین پراپت کرنے کا پکا ارادہ کیا . یہ بات اب آپ لوگوں کو معلوم ہو گئی ہے .

25 لاکھ ایکڑ سے ہندستان کے بےزمین والوں کا مسلہ حل ہو جاتا ہے ایسی بات نہیں . اُس کے لئے تو کم سے کم پانچ کروڑ ایکڑ زمین چاہئے . لیکن پہلی قسط کے طور پر اگر ہم پچیس لاکھ ایکڑ کرلیتے ہیں' اور ہندستان کے پانچ لاکھ گاؤں میں اہنسا کا سندیش پہونچا دیتے ہیں' تو بھومی کا ٹھیک ٹھیک اِنتظام کرنے کے لئے ضروری ہوا تیار ہو جائے گی' ایسا میرا یقین ہے .

دینے والوں میں شبری' سداما اور سب پکشوں کے لوگ .

زمین بڑے کاشتکاروں اور زمیندارں سے تو میں مانگتا ہی ہوں' لیکن چھوٹے چھوٹے کاشتکاروں سے بھی اِس میں ہاتھ بٹانے کی میں نے پرارتھنا کی ہے . اور مجھے کہنے میں خوشی ہوتی ہے کہ بڑے دل والے اِن چھوٹے لوگوں نے بہت پریم سے میری پرارتھنا سنی ہے . اِس یگیہ میں کئی شبریوں نے اپنے بیر دیئے ہیں اور کئی سداماؤں نے اپنے تندل سمرپن کئے ہیں . یہ میرے لئے ایک جیون بھر یاد رہنے والی بھکت گاتھا ہوئی ہے. اِس میں دردروں کو اپنی آتما صاف کرنے کی پریرنا ملی ہے' اور شری‌مانوں کو آتم شدھی اور مالکی بھاؤ ہٹانے کی .

مجھے بھومی سب طرح کے لوگوں نے دی ہے . ہندوؤں نے دی ہے' مسلمانوں نے دی ہے' دوسرے دھرم والوں نے دی ہے . جو سب طرح سے "سب ہارا" گنے جائینگے ایسے ہریجنوں نے بھی دی ہے . جن کا بھومی پر ادھیکار نہیں مانا جاتا ایسی استریوں نے بھی دی ہے. دینے والوں میں سب طبقوں اور سب پکشوں کے لوگ شامل ہیں . دردر نارائن کو اپنے خاندان کا ایک حصہ سمجھکر حق کے طور پر دیا جائے' میں نے مانگا ہے . اور ویسے ہی بھاونا سے لوگوں نے دیا ہے .

'دان' کی ویاکھیا .

بھومی دان یگیہ میں 'دان' شبد آتا ہے . اُس سے پرہیز کرنے کی ضرورت نہیں ہے . "دانم سم وبھاگ" دان یعنی برابر کی تقسیم . یہ ہے شنکرآچاریہ کے دان کا مطلب . اُسی معنی میں ہم اُس شبد کا استعمال کرتے [illegible]

देशवासियों से अपील

भूदान-यज्ञ की गंगोत्री.

गये साल गरमी के दिनों में मैं तेलंगाना में घूमता था. वहाँ जो विकट सवाल खड़ा था, उसके बारे में मेरा चिन्तन रोज चलता था. एक दिन हरिजनों की मांग पर मैंने गांव वालों से भूमि-दान की बात कही. गांव वालों ने वह बात मान ली और मुझे पहला भूमि-दान मिला. अठारह अप्रेल का वह दिन था. उसके बाद भूमिदान-यज्ञ की कल्पना मुझे सूझी. और उसको तेलंगाना के दौरे में मैंने आजमाया. नतीजा अच्छा रहा. दो महीनों में बारह हजार एकड़ जमीन मिली. वहां की हालत सुलझाने में मेरा ख्याल है उससे बहुत मदद मिली. सारे देश पर उसका असर पड़ा. और आज हम देखते हैं कि तेलंगाना का वातावरन काफी शान्त हुआ है.

गांधी जी के जाने के बाद अहिंसा के जरिये काम करने के लिये मैं रास्ता ढूँढता था. मेवात के मुसलमानों को बसाने का सवाल उसी ख्याल से मैंने हाथ में लिया था. उसमें कुछ अनुभव मिला. उसी आधार पर मैंने तेलंगाना में जाने की हिम्मत की थी. वहां भूदान-यज्ञ की शक्ल में मुझे अहिंसा का दर्शन हुआ.

गंगा का बहाव.

तेलंगाना में जो भूदान मिला, उसके पीछे वहां की एक खास हालत थी. उस हालत के न होने में शायद हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों में वह कल्पना चले या न चले, इस बारे में शक हो सकता था. उस शक के दूर करने के लिये दूसरे सूबों में भूदान-यज्ञ का आजमाना जरूरी था. प्लानिंग कमीशन के सामने मेरे विचार रखने के लिये पंडित नेहरू ने मुझे दावत दी. उस मकसद से मैं पैदल यात्रा में निकल पड़ा और दिल्ली तक दो महीने में करीब अठारह हजार एकड़ जमीन मुझे मिली. देखा कि अहिंसा को रास्ता देने के लिये जनता उत्सुक है.

पचीस लाख का पक्का इरादा.

उत्तर प्रदेश के सर्वोदय प्रेमियों की मांग पर मैंने भूमिदान-यज्ञ का उत्तर प्रदेश के व्यापक क्षेत्र में प्रयोग शुरू किया. यहां एक लाख से जियादा देहात हैं. हर गांव में कम से कम एक सर्वोदय परिवार बसाया जाये और एक परिवार को कम या जियादा पांच एकड़ जमीन दी जाये, ऐसे हिसाब से पांच लाख एकड़ जमीन हासिल करने का इरादा किया गया. बावजूद इसके कि बीच में तीन महीने बहुत सारे कार्यकर्ता चुनाव में लगे थे, लोगों

دیش واسیوں سے اپیل

بھودان یگیہ کی گنگوتری .

گئے سال گرمی کے دنوں میں میں تیلنگانہ میں گھومتا تھا . وہاں جو وکٹ سوال کھڑا تھا' اُس کے بارے میں میرا چِنتن روز چلتا تھا . ایک دن ہریجنوں کی مانگ پر میں نے گاؤں والوں سے بھومی دان کی بات کہی . گاؤں والوں نے وہ بات مان لی اور مجھے پہلا بھومی دان ملا . اٹھارہ اپریل کا وہ دن تھا . اُس کے بعد بھومی دان یگیہ کی کلپنا مجھے سوجھی . اور اُس کو تیلنگانہ کےدورے میں میں نے آزمایا. نتیجہ اچھا رہا . دو مہینے میں بارہ ہزار ایکڑ زمین ملی. وہاں کی حالت سلجھانے میں میرا خیال ہے اُس سے بہت مدد ملی . سارے دیش پر اُس کا اثر پڑا . اور آج ہم دیکھتے ہیں کہ تیلنگانہ کا واتاورن کافی شانت ہوا ہے .

گاندھی جی کے جانے کے بعد اہنسا کے ذریعہ کام کرنے کے لئے میں راستہ ڈھونڈھتا تھا . میوات کے مسلمانوں کو بسانے کا سوال اسی خیال سے میں نے ہاتھ میں لیا تھا. اُس میں کچھ انوبھو ملا . اُسی آدھار پر میں نے تیلنگانہ میں جانے کی ہمت کی تھی . وہاں بھودان یگیہ کی شکل میں مجھے اہنسا کا درشن ہوا .

گنگا کا بہاؤ .

تیلنگانہ میں جو بھودان ملا' اُس کے پیچھے وہاں کی ایک خاص حالت تھی . اُس حالت کے نہ ہونے میں شاید ہندستان کے دوسرے حصوں میں وہ کلپنا چلے یا نہ چلے' اِس بارے میں شک ہوسکتا تھا . اُس شک کے دور کرنے کے لئے دوسرے صوبوں میں بھودان یگیہ کو آزمانا ضروری تھا . پلاننگ کمیشن کے سامنے میرے وچار رکھنے کے لئے پنڈت نہرو نے مجھے دعوت دی. اُس مقصد سے میں پیدل یاترا میں نکل پڑا اور دلی تک دو مہینے میں قریب اٹھارہ ہزار ایکڑ زمین مجھے ملی. دیکھا کہ اہنسا کو راستہ دینے کے لئے جنتا اُتسک ہے .

پچیس لاکھ کا پکا ارادہ .

اُتر پردیش کے سروودے پریمیوں کی مانگ پر میں نے بھومی دان یگیہ کا اُتر پردیش کے ویاپک چھیتر میں پریوگ شروع کیا . یہاں ایک لاکھ سے زیادہ دیہات ہیں. ہر گاؤں میں کم سے کم ایک سروودے پریوار بسایا جائے اور ایک پریوار کو کم یا زیادہ پانچ ایکڑ زمین دی جائے' ایسے حساب سے پانچ لاکھ ایکڑ زمین حاصل کرنے کا ارادہ کیا گیا تھا . باوجود اِس کے کہ بیچ میں تین مہینے بہت سارے کاریہ کرتا چناؤ میں لگے تھے' لوگوں

सब रास्ते उसी तक पहुँचते हैं

ऊँच नीच दशा धार, चित प्रमाद को विदार
ऊँचली दिशा से गिरो मत अधो धरनी
भाग चन्द्र, या प्रकार जीवन है सुख अपार
याही के आधार स्याद्वाद की उचरनी.''

यानी दुनिया के सब जानदारों को तीन हालतों में कलना पड़ता है. पहली हालत खुदी और पाप की त है. दूसरी पर सेवा और नेकी की हालत है. तीसरी दोनों से ऊपर उठकर एक रस और एक रंगी की त. इस आखरी हालत में पाप और पुन्य अज़ाब सवाब दोनों के बंधन टूट जाते हैं. तब ही आदमी का हो कर अपने रूप को पहचान कर भव सागर ज़िंदगी के समुन्दर को पार कर सकता है. आदमी चाहिये कि पुन्य या सवाब कमाने की इच्छा को छोड़ र पाप या बुराई करने का ख्याल भी मन में न लाये. सका मन मंज कर सच्ची पाकी उसमें पैदा होगी. के साथ ऊँचनीच की उन सब हालतों को जो उस ीवन में पैदा होती हैं बरदाश्त करता रहे. लेकिन हां ध्यान रखे कि मन सचाई से डिगने न पाये. को किसी तरह नीचे गिरने न दे दिल को क़ाबू खे, बहकने न दे. यही एक रास्ता है जिससे धीरे धीरे ी शान्ति मिल सकती है और ज़िन्दगी सच्चे और सुख की ज़िन्दगी बन सकती है. जैन शास्त्रों में स्याद्वाद धर्म कहा गया है उस का निचोड़ है.

साईयों की इंजील में और यहूदियों की पाक किताबों बार बार और तरह तरह से यही चीज़ कही

न्दू धर्म में ईश्वर के नामों में रुद्र और मायावी, भी मौजूद हैं.

सी तरह इसलाम में अल्लाह को 'क़हहार' 'जब्बार' ' 'मुनतक़िम' भी कहा गया है. सब रूप उसी के और वह सब रूपों से ऊपर है. वह एक रस है, ा है, हर तरह एक है. अपनी अपनी समझ के िक़ उसे ध्यान में रखते हुये और उस पर ध्यान हुये आगे बढ़ते रहना यही उस तक पहुंचने का और तरीक़ा है.

سب راستے اُسی تک پہونچتے ہیں

اونچ نیچ دشا دھار، چت پرماد کو بدار
اونچلی دشا سے گرو مت ادھو دھرنی
بھاگ چندر یا پرکار جیون ہے سکھ اپار
یا ہی کے آدھار سیاد واد کی اچرنی۔''

یعنی دنیا کے سب جانداروں کو تین حالتوں میں سے نکلنا پڑتا ہے۔ پہلی حالت خودی اور پاپ کی حالت ہے۔ دوسری پر سیوا اور نیکی کی حالت ہے۔ تیسری ان دونوں سے اوپر اٹھکر ایک رس اور ایک رنگی کی حالت۔ اس آخری حالت میں پاپ اور پنیہ عذاب اور ثواب دونوں کے بندھن ٹوٹ جاتے ہیں۔ تب ہی آدمی ہلکا ہو کر اپنے روپ کو پہچان کر بھو ساگر یعنی زندگی کے سمندر کو پار کر سکتا ہے۔ آدمی کو چاہئے کہ پنیہ یا ثواب کمانے کی اچھا کو چھوڑ دے پر پاپ یا برائی کرنے کا خیال بھی من میں نہ لائے۔ تب اُسکا من منجھکر سچی پاکی اُسمیں پیدا ہوگی۔ دھیرج کے ساتھ اونچ نیچ کی ان سب حالتوں کو جو اس کے جیون میں پیدا ہوتی ہیں برداشت کرتا رہے۔ لیکن ساتھ ہی دھیان رکھے کہ من سچائی سے ڈگنے نہ پائے۔ اسے کو کسی طرح نیچے گرنے نہ دے' دل کو قابو میں رکھے' بہکنے نہ دے۔ یہی ایک راستہ ہے جس سے دھیرے دھیرے روحانی شانتی مل سکتی ہے اور زندگی سچے اور اپار سکھ کی زندگی بن سکتی ہے۔ جین شاستروں میں جیسے سیاد واد دھرم کہا گیا ہے اُسکا نچوڑ یہی ہے۔

عیسائیوں کی انجیل میں اور یہودیوں کی پاک کتابوں میں بھی بار بار اور طرح طرح سے چیز کہی گئی ہے۔

ہندو دھرم میں ایشور کے ناموں میں رودر اور مایاوی' نام بھی موجود ہیں۔

اسی طرح اسلام میں اللہ کو 'قہار' 'جبار' 'مضل' اور 'ممیت' بھی کہا گیا ہے۔ سب روپ اُسی کے روپ ہیں اور وہ سب روپوں سے اوپر ہے۔ وہ ایک رس ہے' ایک رنگ ہے' ہر طرح ایک ہے۔ اپنی اپنی سمجھ کے مطابق اُسے دھیان میں رکھتے ہوئے اور اُس پر دھیان جمائے ہوئے آگے بڑھتے رہنا یہی اُس تک پہونچنے کا راستہ اور طریقہ ہے۔

.क़ुरान के शब्द "हिसना" का मतलब समझाते हुए .क सूफ़ी ने अच्छा कहा है—

बनामे आं कि ऊ नामे नदारद
बहर नामे कि ख़्वानी सर बर आरद.

यानी उसका कोई नाम नहीं है लेकिन उसे जिस नाम .. भी पुकारो उसी नाम से वह सर ऊंचा करके जवाब)ता है.

.क़ुरान में यह भी साफ़ लिखा है कि "ख़ैर (नेकी) और शर (बदी) दोनों अल्लाह ताला से हैं."

जलाल और तेज दोनों का एक ही मतलब है. ज़ात . 'वहदत' है 'सिफ़ात' में कसरत है. गुन अलग हैं पर क ही ईश्वर आत्मा के आधार पर सब गुन ठहरे हुए हैं ा ख़ुद निर्गुन हैं. सब धर्म अलग अलग हैं पर धर्मी .बका एक है जिसका कोई धर्म नहीं. जो सब अलग अलग धर्मों से ऊपर है.

श्री कृष्ण ने गीता में कहा है—"ओ अर्जुन, मुझसे ऊपर या बाहर और कोई चीज़ नहीं है. यह सब मुझ में स तरह पिरोये हुए हैं जिस तरह सूत में माला के दाने. जितने 'सात्विक' भाव हैं और जितने 'राजस' भाव हैं ौर जितने 'तामस' भाव हैं वह सब मुझ से ही हैं. मैं .में नहीं हूँ, वह मुझ में हैं. सुख दुख, होना या न होना, र, निडरता, नेक नामी, बदनामी, तप और दान सब झ से ही पैदा हुए हैं. आदमी का याददाश्त समझ और :-समझी सब मुझ से ही हैं."

शंकराचार्य ने कहा है— .

"पुन्य और पाप यानी सवाब और अज़ाब दोनों आदमी ! बांधते हैं इसलिये दोनों पाप हैं." ज़ंजीर चाहे लोहे) हो और चाहे सोने की ज़ंजीर ज़ंजीर ही है.

बात ज़रा नाज़ुक है पर नेकी बिना बदी के ठहर नहीं कती. इसलिये आख़ीर में बदी को मिटाने के लिये नेकी : भी मिटाना ही होगा.

जैन महात्मा भाग चन्द्र ने लिखा है—

"परि नति सब जीवन की, तीन भांति बरनी
एक पाप, एक पुन्य, एक राग हरनी
जा में शुभ अशुभ अंध, दोऊ कर कर्म बंध
वीत राग परि नति ही भव समुँद्र तरनी
त्याग शुभ क्रिया कलाप करू मत कदाचे पाप
शुभ में न मगन होई शुद्धता बिसरनी
यावत शुद्ध उपयोग पावत नाहीं मनोग
तावत ही करन जोग कही पुन्य करनी

قرآن کے شبد " حسنا " کا مطلب سمجھاتے ہوئے ایک صوفی نے اچھا کہا ہے—

بنامے آں کہ او نامے ندارد
بہر نامے کہ خوانی سر بر آرد

یعنی اُس کا کوئی نام نہیں ہے لیکن اُسے جس نام سے بھی پکارو اُسی نام سے وہ سر اونچا کر کے جواب دیتا ہے .،

قرآن میں یہ بھی صاف لکھا ہے کہ "خیر (نیکی اور شر (بدی) دونوں اللہ تعالیٰ سے ہیں ."

جلال اور تیج دونوں کا ایک ہی مطلب ہے . ذات میں ' وحدت ' ہے ' صفات ' میں کثرت ہے . گن الگ ہیں پر ایک ہی ایشور آتما کے آدھار پر سب گن ٹھہرے ہوئے ہیں جو خود نرگن ہیں . سب دھرم الگ الگ ہیں پر دھرمی سب کا ایک ہے جس کا کوئی دھرم نہیں . جو سب الگ الگ دھرموں سے اوپر ہے .

شری کرشن نے گیتا میں کہا ہے—" او ارجن' مجھ سے اوپر یا باہر اور کوئی چیز نہیں ہے . یہ سب مجھ میں اس طرح پروئے ہوئے ہیں جس طرح سوت میں مالا کے دانے . جتنے ' ساتوک ' بھاؤ ہیں اور جتنے ' راجس ' بھاؤ ہیں اور جتنے ' تامس ' بھاؤ ہیں وہ سب مجھ سے ہی ہیں . میں اُن میں نہیں ہوں' وہ مجھ میں ہیں . سکھ دکھ' ہونا یا نہ ہونا' ڈر' نڈرتا' نیک نامی' بدنامی' تپ اور دان سب مجھ سے ہی پیدا ہوئے ہیں . آدمی کی یادداشت سمجھ اور ناسمجھی سب مجھ سے ہی ہیں ."

شنکر آچاریہ نے کہا ہے—" پنیہ اور پاپ یعنی ثواب اور عذاب دونوں آدمی کو باندھتے ہیں . اس لئے دونوں پاپ ہیں ." زنجیر چاہے لوہے کی ہو اور چاہے سونے کی زنجیر زنجیر ہی ہے .

بات ذرا نازک ہے پر نیکی بنا بدی کے ٹھہر نہیں سکتی . اس لئے آخیر میں بدی کو مٹانے کے لئے نیکی کو بھی مٹانا ہی ہوگا .

جین مہاتما بھاگ چندر نے لکھا ہے—

"پری نتی سب جیون کی' تین بھانت برنی
ایک پاپ' ایک پن' ایک راگ ہرنی
جا میں شبھ اشبھ اندھ دو اؤ کر کرم بندھ
ویت راگ پری نتی ہی بھو سمندر ترنی
تیاگ شبھ کریا کلاپ کرو مت کداچے پاپ
شبھ میں نہ مگن ہوئی شدھتا بسرنی
یاوت شدھ اپیوگ پاوت نہیں منوگ
تاوت ہی کرن یوگ کہی پنیہ کرنی

गीता में भी भगवान ने साफ़ कहा है—

"जो लोग श्रद्धा यानी ईमान और वफ़ादारी के साथ रे देवताओं की पूजा करते हैं वह भी अनजाने में बे-तरीक़े उन सब रूपों के पीछे असल में मेरी ही करते हैं."

सच यह है कि सब नाम उसी अल्लाह के नाम हैं.

क़ुरान में लिखा है कि "सब अच्छे नाम उसी के हैं." इस आयत के अन्दर जो शब्द "हिसना" यानी च्छे या सुन्दर आया है वह इसलिये है कि उसके बिना भाले कम समझ इनसान घबरा न जायें. मुहम्मद ब ने एक मशहूर हदीस में कहा है—"लोगों से उनकी झ के मुताबिक़ बात करो."

यही बात गीता में कही गई है.

अंगरेज़ी की एक कहावत है—"बच्चों को दूध दो बड़ों को खाना." पर बड़ों को यह भी चाहिये कि और मेहनत के साथ बच्चों को दूध से खाने की तरफ़ ने की कोशिश करते रहें. दुनिया के सब मज़हबों के , प्रोहित, मुल्ला और पादरी इस फ़िकर में रहते हैं कि गी भर सबको दूध ही पिलाते रहें. इससे दुनिया के ना भेद कमज़ोर होते जा रहे हैं.

हर मज़हब में इस तरह के फ़िरक़े मौजूद हैं. जिन क़ों के लोगों को पूरा यक़ीन है कि ईश्वर अल्लाह ने लोगों को यानी उनके अपने फ़िरक़े के लोगों को लिये बनाया है कि वह हमेशा के लिये स्वर्ग या त में रहें, और कुछ लोगों को यानी दूसरे सब फ़िरक़ों मज़हबों के लोगों को इसी लिये बनाया है के वह शा के लिये नरक या दोज़ख़ में रहें. बदक़िस्मती से हालत में से भी हर रूह को निकलना ही पड़ता है. लोगों को प्रेम के साथ समझना चाहिये कि क्या सच का सागर रहमान और रहीम अल्लाह ऐसा कठोर सकता है. वह धीरे धीरे सोचें कि दुनिया की सब ली पिछली क़ौमों और सब इनसानों को एक ही ईश्वर लाह ने बनाया है या अलग अलग ईश्वरों ने बनाया अगर एक ही ने बनाया है तो क्या सब अगले पिछले बों में ईश्वर की बाबत वही बातें, वही सच्चाइयां सब के भले के वही उसूल और वही हुक्म नहीं होने यें ? हां, उनमें इतना फ़रक़ हो सकता है जितना ग अलग क़ौमों के रंगों, लिबासों, बोलियों और अलग ग मुल्कों के हवा पानी और पैदावारों में है. पर यह समझने वाले के लिये ऊपरी फ़रक़ ही होता है, बुनियादी नहीं.

گیتا میں بھی بھگوان نے صاف کہا ہے—

"جو لوگ شردھا یعنی ایمان اور وفاداری کے ساتھ دوسرے دیوتاؤں کی پوجا کرتے ہیں وہ بھی انجانے میں اور بے طریقہ اُن سب روپوں کے پیچھے اصل میں میری ہی پوجا کرتے ہیں."

سچ یہ ہے کہ سب نام اُسی اللہ کے نام ہیں.

قرآن میں لکھا ہے کہ "سب اچھے نام اُسی کے نام ہیں." اِس آیت کے اندر جو شبد "حسنا" یعنی اچھے یا سندر آیا ہے وہ اس لئے ہے کہ اُس کے بنا بھولے بھالے کم سمجھ انسان گھبرا نہ جائیں. محمد صاحب نے ایک مشہور حدیث میں کہا ہے—"لوگوں سے اُن کی سمجھ کے مطابق بات کرو."

یہی بات گیتا میں کہی گئی ہے.

انگریزی کی ایک کہاوت ہے—"بچوں کو دودھ دو اور بڑوں کو کھانا." پر بڑوں کو یہ بھی چاہئیے کہ پریم اور محنت کے ساتھ بچوں کو دودھ سے کھانے کی طرف لانے کی کوشش کرتے رہیں. دنیا کے سب مذہبوں کے پنڈت، پروہت، ملا اور پادری اِس فکر میں رہتے ہیں کہ زندگی بھر سب کو دودھ ہی پلاتے رہیں. اِس سے دنیا کے روحانی میدے کمزور ہوتے جا رہے ہیں.

ہر مذہب میں اس طرح کے فرقے موجود ہیں جن فرقوں کے لوگوں کو پورا یقین ہے کہ ایشور اللہ نے کچھ لوگوں کو یعنی اُن کے اپنے فرقے کے لوگوں کو اسی لئے بنایا ہے کہ وہ ہمیشہ کے لئے سورگ یا جنت میں رہیں، اور کچھ لوگوں کو یعنی دوسرے سب فرقوں اور مذہبوں کے لوگوں کو اسی لئے بنایا ہے کہ وہ ہمیشہ کے لئے نرک یا دوزخ میں رہیں. بدقسمتی سے اِس حالت میں سے بھی ہر روح کو نکلنا ہی پڑتا ہے. ایسے لوگوں کو پریم کے ساتھ سمجھنا چاہئیے کہ کیا سچ سچ دیا کا ساگر رحمان اور رحیم اللہ ایسا کٹھور ہوسکتا ہے. وہ دھیرے دھیرے سوچیں کہ دنیا کی سب اگلی پچھلی قوموں اور سب انسانوں کو ایک ہی ایشور اللہ نے بنایا ہے یا الگ الگ ایشوروں نے بنایا ہے؟ اگر ایک ہی نے بنایا ہے تو کیا سب اگلے پچھلے مذہبوں میں ایشور کی بابت وہی باتیں، وہی سچائیاں اور سب کے بھلے کے وہی اصول اور وہی حکم نہیں ہونے چاہئیں؟ ہاں، اُن میں اتنا فرق ہوسکتا ہے جتنا الگ الگ قوموں کے رنگوں، لباسوں، بولیوں اور الگ الگ ملکوں کے ہوا پانی اور پیداواروں میں ہے پر یہ فرق سمجھنے والے کے لئے سطحی فرق ہی ہوتا ہے، بنیادی نہیں.

सब रास्ते उसी तक पहुंचते हैं

(डाक्टर भगवान दास)

यह सच्चाई सब धर्मों की किताबों में पाई जाती है कि एक अल्लाह ईश्वर तक पहुंचने के लिये अलग अलग लोगों और अलग अलग तबियतों के मुताबिक़ अलग अलग रास्ते हैं. सब धर्मों की किताबों और सब महा पुरुषों की बानी में यह बात भी मिलती है कि एक दूसरे के जिन रास्तों को हम ग़लत कहते रहते हैं वह भी घूम फिर कर आख़िर में एक उसी तक पहुंचते हैं. एक सूफ़ी ने कहा है :—

"कुफ़्र और इसलाम दोनों उसी अल्लाह की राह में दौड़े चले जा रहे हैं. दोनों यही कहते हैं कि अल्लाह एक है. उस जैसा कोई दूसरा नहीं."

एक और सूफ़ी ने और ज़ियादा साफ़ शब्दों में कहा है :—

"मुसलमान और ईसाई और यहूदी भले और बुरे, सबका मुँह उसी एक अल्लाह की तरफ़ है."

मुहम्मद साहब ने एक हदीस में कहा है—"जितने इनसान हैं उतने ही अल्लाह तक पहुँचने के रास्ते हैं."

यह सच्चाई बहुत गहरी सच्चाई है. हर रूह उसी एक अथाह समुन्दर की एक बूंद है. हर बूंद उस के अन्त का एक छोटा सा पहलू लिये हुए है. इसलिये अल्लाह तक लौट कर जाने में भी हर रूह का रास्ता किसी न किसी दरजे तक दूसरों के रास्ते से अपना अलग पहलू लिये हुए होगा.

क़ुरान में साफ़ कहा गया है—"हम सब अल्लाह से आए हैं और सब अल्लाह ही की तरफ़ जा रहे हैं."

इंजील में लिखा है—"आदमी के नथनों में जितने सांस आते हैं उतने ही ख़ुदा तक पहुँचने के रास्ते हैं. पर मंज़िल स ? एक है."

संस्कृत की किताब शिव-महिमा-स्तुति में लिखा है—

"जिस तरह बहुत सी नदियां तरह तरह से घूम घूम कर आख़िर सब समुन्दर में जा गिरती हैं उसी तरह सब आदमी अपने अपने स्वभाव के मुताबिक़ अलग अलग रास्तों से चल कर भी उसी एक ईश्वर तक पहुँचते हैं. किसी का रास्ता सीधा और किसी का पेचदार. किसी का सरल और किसी का कठिन."

سب راستے أسی تک پہونچتے ھیں

(ڈاکٹر بھگوان داس)

یہ سچائی سب دھرموں کی کتابوں میں پائی جاتی ہے کہ ایک اللہ ایشور تک پہونچنے کے لئے الگ الگ لوگوں اور الگ الگ طبیعتوں کے مطابق الگ الگ راستے ھیں. سب دھرموں کی کتابوں اور سب مہاپرشوں کی بانی میں یہ بات بھی ملتی ہے کہ ایک دوسرے کے جن راستوں کو ہم غلط کہتے رہتے ھیں وہ بھی گھوم پھر کر آخیر میں ایک أسی تک پہونچتے ھیں. ایک صوفی نے کہا ہے:—

" کفر اور اسلام دونوں أسی اللہ کی راہ میں دوڑے چلے جا رہے ھیں. دونوں بھی کہتے ھیں کہ اللہ ایک ہے. أس جیسا کوئی دوسرا نہیں."

ایک اور صوفی نے اور زیادہ صاف شبدوں میں کہا ہے:—

" مسلمان اور عیسائی اور یہودی بھلے اور برے، سب کا منہ أسی ایک اللہ کی طرف ہے."

محمد صاحب نے ایک حدیث میں کہا ہے—" جتنے إنسان ھیں أتنے ہی اللہ تک پہونچنے کے راستے ھیں."

یہ سچائی بہت گہری سچائی ہے. ہر روح أسی ایک اتھاہ سمندر کی ایک بوند ہے. ہر بوند أس کے انت کا ایک چھوٹا سا پہلو لئے ہوئے ہے. إس لئے اللہ تک لوٹ کر جانے میں بھی ہر روح کا راستہ کسی نہ کسی درجے تک دوسروں کے راستے سے اپنا الگ پہلو لئے ہوئے ہوگا.

قرآن میں صاف کہا گیا ہے—" ہم سب اللہ سے آئے ھیں اور سب اللہ ہی کی طرف جا رہے ھیں."

إنجیل میں لکھا ہے—" آدمی کے نتھنوں میں جتنے سانس آتے ھیں اتنے ہی خدا تک پہونچنے کے راستے ھیں. پر منزل سب کی ایک ہے."

سنسکرت کی کتاب شیو مہیما استوتی میں لکھا ہے—

" جس طرح بہت سی ندیاں طرح طرح سے گھوم گھوم کر آخیر سب سمندر میں جا گرتی ھیں اسی طرح سب آدمی اپنے اپنے سوبھاؤ کے مطابق الگ الگ راستوں سے چل کر بھی اسی ایک ایشور تک پہونچتے ھیں. کسی کا راستہ سیدھا اور کسی کا پیچدار؛ کسی کا سرل اور کسی کا کٹھن."

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 12 | जून, सन '52 | नम्बर 6

نمبر 6 | جون، سن '52 | جلد 12

जात आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
"نیا ہند" پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

भगवान कहां ?

बसे हैं निर्धन में भगवान
क्योंकि समझते राम रुपये को दुनिया के धनवान

(1)

पाओ कोढ़ी मोहताजों में
पाओ मजदूरों राजों में
मिलें न पंडित के साजों में
राम समझते हैं पोथी को पंडित और विद्वान
बसे हैं निर्धन में भगवान

(2)

यही समझ लो तुम थोड़े में
मिल सकते कुत्ते घोड़े में
रह सकते रोड़े रोड़े में
पर न बसेंगे वह ऐंठू में उनका रब अभिमान
बसे हैं निर्धन में भगवान

(3)

ईश्वर की खातिर तो काशी
के बनना हरगिज मत वासी
मत बनना जोगी सन्यासी
बस सन्यास राम है उनका उनकी जोग दुकान
बसे हैं निर्धन में भगवान

—भगवानदीन

بھگوان کہاں ؟

بسے ہیں نردھن میں بھگوان
کیونکہ سمجھتے رام روپئے کو دنیا کے دھنوان

(1)

پاؤ کوڑھی محتاجوں میں
پاؤ مزدوروں راجوں میں
ملیں نہ پنڈت کے ساجوں میں
رام سمجھتے ہیں پوتھی کو پنڈت اور ودوان
بسے ہیں نردھن میں بھگوان

(2)

یہی سمجھ لو تم تھوڑے میں
مل سکتے کتے گھوڑے میں
رہ سکتے روڑے روڑے میں
پر نہ بسینگے وہ اینٹھو میں اُنکا رب ابھیمان
بسے ہیں نردھن میں بھگوان

(3)

ایشور کی خاطر تو کاشی
کے بننا ہرگز مت باسی
مت بننا جوگی سنیاسی
بس سنیاس رام ہے اُن کا اُن کی جوگ دوکان
بسے ہیں نردھن میں بھگوان

—بھگوان دین

"नया हिन्द"

" نیا ھند "

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

ھندستانی کلچر سوسائٹی

का

کا

माहवारी परचा

ماھواری پرچا

जून 1952

جون 1952

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مینیجر
'نیا ھند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد.

हिन्द

र के ख़ास लेख

اِس نمبر کے خاص لیکھ

कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

जून 1952

جون

Registered No. A-210.

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत से बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इसमें फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्भर नाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है. इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया.

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपा. 160 सफ़े. कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता.—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اِس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا . دیش نے اُس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہو گیا . دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی . پر وہ اب ہی ممکن ہو سکا ہے .

اِس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں . بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سجھاووں سے اِس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے . نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اِس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے .

اِس کتاب سے اِسلام کی اصلی تعلیم اور اُس کے بنیادی اُصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے . اِس سے پتہ لگیگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا .

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اِس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اِس سے فائدہ اُٹھائینگے .

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ .

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press ,145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना .

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ ; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास ; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये -

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिंदुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे .

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑهانا، پهیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں .

(2) ایکتا پهیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چهاپنا .

(3) پڑهائی گهروں، کتاب گهروں، سبهاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دهرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑهانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بهگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بهگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کهیر، پنڈت بشمبهر ناتھ، مهاتما بهگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکهئے -

سندر لال

سکریٹری، هندستانی کلچر سوسائٹی،
145، مٹهی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا هند" کے جو گاهک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چهہ روپیہ چندہ دینے پر هی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی هوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

शेख़ अब्दुल्ला ने ख़ुद यह अच्छी तरह साफ़ कर दिया है कि महात्मा गांधी का उसूल ही वह सुनहरी ज़ंजीर है जो कश्मीर को हिन्दुस्तान के साथ बांधती है और हमेशा बांधे रखेगी.

अख़बारी रिपोर्टों से मालूम होता है कि शेख़ अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि "हिन्दुस्तान से फ़िरक़ेवाराना भावना अभी ख़तम नहीं हुई है और हम कश्मीरियों को सब ऊँच नीच के लिए तैयार रहना है."

शेख़ अब्दुल्ला की इस बात से भी हम इनकार नहीं कर सकते. बदक़िस्मती से हिन्दुस्तान में यह फ़िरक़ेवाराना ताक़तें अब भी काम कर रही हैं. उनको देशी और विदेशी पूँजीपतियों और सरमायादारों का पूरा सहारा है. हकूमत में भी, ऊपर से साफ़ साफ़ न सही लेकिन अन्दर से तो ज़रूर उनका कुछ न कुछ असर है. ख़ुद कांग्रेस के अन्दर यह ताक़तें कितनी नुमायां हैं कहने की ज़रूरत नहीं. पिछले आम चुनाव में और आये दिन हमारी म्युनिसिपलटी और डिस्ट्रिक बोर्ड, युनिवर्सिटी और मिनिस्ट्री वग़ैरा के चुनाव में इनका कितना असर रहता है कौन नहीं जानता. इसी का एक नमूना है "राष्ट्र भाषा" के ठेकेदारों का उरदू भाषा की तरफ़ बेजा रुख़; और उनका जनता की प्यारी बोली से हटकर जबड़ा तोड़ शब्दों का देश पर लादने का प्रयत्न. यह भी ज़ाहिर है कि कश्मीर का धनवान तबक़ा हिन्दुस्तान के धनवान तबक़े से मिल कर इस मामले में साज़िश कर रहा है. इसमें कोई शक नहीं कि कश्मीर ख़ुद मुख़्तारी या सच्चे स्वराज की तरफ़ जितना क़दम बढ़ायेगा वहां के और हिन्दुस्तान के स्वार्थी मालदार हितों को उतना ही ज़ियादा धक्का पहुँचेगा. बदक़िस्मती से कुछ अख़बार और प्रेस भी इन्हीं पैसे वालों के हाथ में हैं जो कश्मीर और हिन्दुस्तान को नज़दीक लाने के बजाय और अलग कर देते हैं.

शेख़ अब्दुल्ला ने न अब तक कभी ऐसा कोई क़दम उठाया है न उठायेंगे जिससे हिन्दुस्तान या कश्मीर की फ़िरक़ेवाराना ताक़तों या सरमायादार हिस्सों को बढ़ावा मिले. जब तक उनके सामने ग़रीब रियाया की भलाई और तरक़्क़ी ही है तब तक उनको कोई चीज़ भी आंच नहीं पहुँचा सकती. साथ ही साथ अपने देश के अख़बार, पैसा और ताक़त वालों से हमारी विनती है कि ज़माने की रफ़्तार को देख कर काम करें. और उन अंगारों को नहीं भड़कावें जिनकी लपटें सारे देश को तबाह कर दे सकती हैं. हम शेख़ अब्दुल्ला को यक़ीन दिलाते हैं कि हर समझदार भारतवासी पूरे दिल से उनके साथ है.

29-4-52 —सुरेश रामभाई

شیخ عبداللہ نے خود یہ اچھی طرح صاف کر دیا ہے کہ مہاتما گاندھی کا اُصول ہی وہ سنہری زنجیر ہے جو کشمیر کو ہندستان کے ساتھ باندھتی ہے اور ہمیشہ باندھے رکھیگی۔

اخباری رپورٹوں سے معلوم ہوتا ہے کہ شیخ عبداللہ نے یہ بھی کہا کہ "ہندستان سے فرقےوارانہ بھاونا ابھی ختم نہیں ہوئی ہے اور ہم کشمیریوں کو سب اونچ نیچ کے لئے تیار رہنا ہے۔"

شیخ عبداللہ کی اِس بات سے بھی ہم اِنکار نہیں کرسکتے۔ بدقسمتی سے ہندستان میں یہ فرقےوارانہ طاقتیں اب بھی کام کر رہی ہیں۔ اُن کو دیشی اور ودیشی پونجی پتیوں اور سرمایہداروں کا پورا سہارا ہے۔ حکومت میں بھی، اوپر سے صاف صاف نہ سہی لیکن اندر سے تو ضرور اُن کا کچھ نہ کچھ اثر ہے۔ خود کانگریس کے اندر یہ طاقتیں کتنی نمایاں ہیں کہنے کی ضرورت نہیں۔ پچھلے عام چناؤ میں اور آئے دن ہماری میونسپلٹی اور ڈسٹرکٹ بورڈ، یونیورسٹی اور منسٹری وغیرہ کے چناؤ میں اِن کا کتنا اثر رہتا ہے کون نہیں جانتا۔ اِسی کا ایک نمونہ ہے "راشٹر بھاشا" کے ٹھیکےداروں کا اردو بھاشا کی طرف بیجا رخ؛ اور اُن کا جنتا کی پیاری بولی سے ہٹکر جبڑا توڑ شبدوں کا دیش پر لادنے کا پریتن۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ کشمیر کا دھنوان طبقہ ہندستان کے دھنوان طبقے سے مل کر اِس معاملے میں سازش کر رہا ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ کشمیر خود مختاری یا سچے سوراج کی طرف جتنا قدم بڑھائےگا وہاں کے اور ہندستان کے سوارتھی مالدار ہتوں کو اُتنا ہی زیادہ دھکا پہونچیگا۔ بدقسمتی سے کچھ اخبار اور پریس بھی اِنہیں پیسے والوں کے ہاتھ میں ہیں جو کشمیر اور ہندستان کو نزدیک لانے کے بجائے اور الگ کردیتے ہیں۔

شیخ عبداللہ نے نہ اب تک کبھی ایسا کوئی قدم اُٹھایا ہے نہ اُٹھائینگے جس سے ہندستان یا کشمیر کی فرقےوارانہ طاقتوں یا سرمایہدار حصوں کو بڑھاوا ملے۔ جب تک اُن کے سامنے غریب رعایا کی بھلائی اور ترقی ہی ہے تب تک اُن کو کوئی چیز بھی آنچ نہیں پہونچا سکتی۔ ساتھ ہی ساتھ اپنے دیش کے اخبار، پیسے اور طاقت والوں سے ہماری ونتی ہے کہ زمانے کی رفتار کو دیکھ کر کام کریں اور اُن انگاروں کو نہیں بھڑکائیں جن کی لپٹیں سارے دیش کو تباہ کر دے سکتی ہیں۔ ہم شیخ عبداللہ کو یقین دلاتے ہیں کہ ہر سمجھدار بھارت واسی پورے دل سے اُن کے ساتھ ہے۔

—سریش رام بھائی 29.4.52

कश्मीर का नया क़दम

पहली अप्रैल को कश्मीर की विधान सभा ने यह क़ानून किया कि सरकार बड़े ज़मींदारों की जो फ़ालतू ज़मीनें ों में बांटने के लिये ज़ब्त करेगी उसके बदले में उन्हें मुआवज़ा नहीं दिया जायगा. इसके ऊपर हमारे तान में काफ़ी चर्चा हुई और यह दलील दी गई कि कश्मीर हिन्दुस्तान के अन्दर है और हिन्दुस्तान में आवज़ा दिये ज़मीन नहीं ली जा सकती तो फिर र में ऐसा क्यों कर हो सकता है. पर भारत के की धारा 370 में साफ़ कहा गया है कि दफ़ा 238 न (जो भारत की 'बी' रियासतों पर लागू हैं) के सम्बन्ध में लागू नहीं होंगे. इसलिए कश्मीर कार ने अपने किसानों के हित में जो क़दम उठाया पर किसी भारतवासी को एतराज़ करने का कोई ़ है.

ः और बात जिसने कश्मीर के खिलाफ़ नाराज़गी ़ी है वह कश्मीर के बड़े वज़ीर शेख़ अब्दुल्ला की ेच है जो उन्होंने दस अप्रैल को रनबीरपुरा में वह स्पीच अख़बारों में छप चुकी है. उनके कहने ोड़ यह है कि कश्मीर का हिन्दुस्तान में शामिल मतलब यह है कि फ़ौजी बचाव, विदेशों के साथ और आना जाई के साधनों में वह हिन्दुस्तान ह पर और हिन्दुस्तान के साथ मिल कर चलेगा की सब मामलों में ख़ुद मुख़्तार रहेगा.

अब्दुल्ला की यह बात सोलह आने सही है. ोर कश्मीर का सम्बन्ध दोनों के लाभ के लिये है साथ ज़बरदस्ती करने के लिये नहीं. यह सम्बन्ध न्दू राज और किसी मुसलमान जनता के बीच ध नहीं है. यह सम्बन्ध है दो सच्चे ईमानदार दार देशों और दो सेकुलर गवरमेन्टों के बीच सम्बन्ध उन असूलों के आधार पर है जो महात्मा हमें सिखाये हैं और जिनके लिये उन्होंने जान तक सम्प्रदायिक तंगनज़री का सवाल है शेख़ और पंडित जवाहर लाल नेहरू दोनों उससे ऊपर नों इस मामलों में महात्मा गांधी के असूलों के . हिन्दू हों या मुसलमान ज़मींदारों और पूँजी फ़ायदे के लिये ग़रीबों मज़दूरों और किसानों की परवाह न करना इन असूलों के बिल्कुल ख़िलाफ़ ोई शक नहीं हो सकता कि ज़मीनों की ज़ब्ती और मामले में शेख़ अब्दुल्ला ने जो कुछ किया है फ़ायदे के लिये किया है. भारत वासियों को . देना चाहिये न कि उसे बुरा कहना. हाल में

کشمیر کا نیا قدم

پہلی اپریل کو کشمیر کی ودھان سبھا نے یہ قانون پاس کیا کہ سرکار بڑے زمینداروں کی جو فالتو زمینیں غریبوں میں بانٹنے کے لئے ضبط کریگی اُس کے بدلے میں انہیں کوئی معاوضہ نہیں دیا جائیگا۔ اِس کے اوپر ہمارے ہندستان میں کافی چرچہ ہوئی اور یہ دلیل دی گئی کہ جب کشمیر ہندستان کے اندر ہے اور ہندستان میں بلا معاوضہ دئے زمین نہیں لی جاسکتی تو پھر کشمیر میں ایسا کیوں کر ہوسکتا ہے۔ پر بھارت کے ودھان کی دھارا 370 میں صاف کہا گیا ہے کہ دفعہ 238 کے بدھان (جو بھارت کی 'بی' ریاستوں پر لاگو ہیں) کشمیر کے سمبندھ میں لاگو نہیں ہونگے۔ اِس لئے کشمیر کی سرکار نے اپنے کسانوں کے ہت میں جو قدم اُٹھایا ہے اُس پر کسی بھارت واسی کو اعتراض کرنے کا کوئی حق نہیں ہے۔

ایک اور بات جس نے کشمیر کے خلاف ناراضگی بھڑکا دی ہے وہ کشمیر کے بڑے وزیر شیخ عبداللہ کی وہ اسپیچ ہے جو اُنہوں نے دس اپریل کو رنبیرپورا میں دی تھی' وہ اسپیچ اخباروں میں چھپ چکی ہے۔ اُن کے کہنے کا نچوڑ یہ ہے کہ کشمیر کا ہندستان میں شامل ہونے کا مطلب یہ ہے کہ فوجی بچاؤ' دیشوں کے ساتھ معاملوں اور آوا جائی کے سادھنوں میں وہ ہندستان کی صلاح پر اور ہندستان کے ساتھ ملکر چلیگا اور باقی سب معاملوں میں خود مختار رہیگا۔

شیخ عبداللہ کی یہ بات سولہ آنے صحیح ہے۔ بھارت اور کشمیر کا سمبندھ دونوں کے لابھ کے لئے ہے کسی کے ساتھ زبردستی کرنے کے لئے نہیں۔ یہ سمبندھ کسی ہندو راج اور کسی مسلمان جنتا کے بیچ کا سمبندھ نہیں ہے۔ یہ سمبندھ ہے دو سچے ایماندار اور روادار دیشوں اور دو سیکولر گورنمنٹ کے بیچ کا۔ یہ سمبندھ اُن اصولوں کے آدھار پر ہے جو مہاتما گاندھی نے ہمیں سکھائے ہیں اور جن کے لئے انہوں نے جان دی۔ جہاں تک سامپردائک تنگ نظری کا سوال ہے شیخ عبداللہ اور جواہر لال دونوں اُس سے اوپر ہیں اور دونوں اِس معاملے میں مہاتما گاندھی کے اُصولوں کے قائل ہیں۔ ہندو ہو یا مسلمان زمینداروں اور پونجی پتیوں کے فائدے کے لئے غریبوں' مزدوروں اور کسانوں کی بھلائی کی پرواہ نہ کرنا اِن اصولوں کے بالکل خلاف ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں ہوسکتا کہ زمینوں کی ضبطی اور بٹوارے کے معاملے میں شیخ عبداللہ نے جو کچھ کیا ہے غریبوں کے فائدے کے لئے کیا ہے۔ بھارت واسیوں کو اُسے [illegible] لینا چاہئے نہ کہ اُسے برا کہنا۔ حال میں

और देश भर में ऊंची तनख़्वाहों का यह अन्याय ख़तम होने की आशा नहीं रहती. जब देशी कम्पनियां अपने काम करने वालों को ऊंची तलब या भत्ते देंगी तो लाज़मी तौर पर उन्हें यह ख़र्चे किसी जायज़ या ना जायज़ तरीक़े से पूरे होंगे.

इस नियुक्ति में जो और भी दुख की बात है वह है 10 साल का ठेका. आजकल की किसी भी सरकार के लिए यह नामुनासिब बात है कि अपनी मियाद से ज़ियादा अरसे का ठेका किसी से करे. इस वक़्त हमें सन 1922 का वह ठहराव याद आ रहा है जिसमें कांगरेस ने अंगरेज़ी सरकार को आगाह किया था कि आज़ाद हिन्दुस्तान अंगरेज़ सरकार के ठेकों या क़र्ज़ों को मानने को मजबूर न किया जा सकेगा. इसी तरह आज़ाद हिन्दुस्तान की आजकल की सरकार विदेश वालों से जो ठेके या राज़ीनामें करेगी उन पर आयन्दा की किसी दूसरी सरकार को अमल दरामद करना लाज़मी न होगा. साथ ही साथ हम मिस्टर स्लोकोम को यह बता देना चाहते हैं कि उनको भी हिन्द सरकार के ठेकों पर उतना ही विश्वास करना चाहिए जितना कि हिन्दुस्तान की मौजूदा बदलती हुई राजकाजी हालत में किया जा सकता है.

हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि इसी तरह के और इससे बड़े बड़े बांध रूस में भी बंध चुके हैं और हाल में चीन में बंधे हैं और बंध रहे हैं.

अगर हिन्द सरकार को बाहर से माहिर बुलाना ही है तो अपने पड़ोसी चीन से सबक़ क्यों नहीं सीखती. चीन में विदेशी माहिर भी हैं पर वह चीन के माहिरों की तरह ही तनख़ा लेते और ज़िन्दगी बसर करते हैं.

हमारी साफ़ राय है कि मिस्टर स्लोकोम का ठेका ग़रीब हिन्दुस्तानियों का मुँह चिढ़ाना है. हम जानते हैं कि हमारी राय की हिन्द सरकार को क्या परवाह हो सकती है. फिर भी हम इस दुखी और ग़रीब देश की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को समझते हुए हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि हिन्द सरकार का फ़र्ज़ है कि फ़ौरन से पेश्तर इस ठेके को रद्द करके मिस्टर स्लोकोम को बिदा दे दे और इसी तरह जिन दूसरे माहिरों या कम्पनियों से इसी तरह के मंहगे ठेके किये हों उनको भी रुख़सत कर दे, और अपने देश की जनता और उसकी शक्ति पर विश्वास करके देश को स्वावलंबी बनाने और बनाये रखने का अहद करे.

26. 4. '52. —सुरेश रामभाई

اور دیش بھر میں اونچی تنخواہوں کا یہ انیائے ختم ہونے کی آشا نہیں رہتی ۔ جب دیشی کمپنیاں اپنے کام کرنے والوں کو اونچی طلب یا بھتے دینگی تو لازمی طور پر انہیں وہ خرچ کسی جائز یا نا جائز طریقے سے پورے ہونگے۔

اس نیکتی میں جو اور بھی دکھ کی بات ہے وہ ہے 10 سال کا ٹھیکہ ۔ آجکل کی کسی بھی سرکار کے لئے یہ نامناسب بات ہے کہ اپنی معیاد سے زیادہ عرصے کا ٹھیکہ کسی سے کرے ۔ اس وقت ہمیں سن 1922 کا وہ ٹھہراؤ یاد آ رہا ہے جس میں کانگریس نے انگریزی سرکار کو آگاہ کیا تھا کہ آزاد ہندستان انگریز سرکار کے ٹھیکوں یا قرضوں کو ماننے کو مجبور نہ کیا جا سکیگا ۔ اسی طرح آزاد ہندستان کی آجکل کی سرکار ودیش والوں سے جو ٹھیکے یا راضی نامے کریگی اُن پہ آئندہ کی کسی دوسری سرکار کو عمل درآمد کرنا لازمی نہ ہوگا ۔ ساتھ ہی ساتھ ہم مسٹر سلوکوم کو یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ اُن کو بھی ہند سرکار کے ٹھیکوں پر اُتنا ہی وشواس کرنا چاہئے جتنا کہ ہندستان کی موجودہ بدلتی ہوئی راج کاجی حالت میں کیا جا سکتا ہے ۔

ہمیں یہ بھی دھیان میں رکھنا چاہئے کہ اسی طرح کے اور اس سے بڑے بڑے باندھ روس میں بھی بندھ چکے ہیں اور حال میں چین میں بھی بندھے ہیں اور بندھ رہے ہیں ۔

اگر ہند سرکار کو باہر سے ماہر بلانا ہی ہے تو اپنے پڑوسی چین سے سبق کیوں نہیں سیکھتی ۔ چین میں ودیشی ماہر بھی ہیں پر وہ چین کے ماہروں کی طرح ہی تنخواہ لیتے اور زندگی بسر کرتے ہیں ۔

ہماری صاف رائے ہے کہ مسٹر سلوکوم کا ٹھیکہ غریب ہندستانیوں کا منھ چڑھاتا ہے ۔ ہم جانتے ہیں کہ ہماری رائے کی ہند سرکار کو کیا پرواہ ہوسکتی ہے ۔ پھر بھی ہم اس دکھی اور غریب دیش کی طرف اپنے فرض کو سمجھتے ہوئے یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ ہند سرکار کا فرض ہے کہ فوراً سے پیشتر اس ٹھیکے کو رد کرکے مسٹر سلوکوم کو ودائع دے دے' اور اسی طرح جن دوسرے ماہروں یا کمپنیوں سے اسی طرح کے مہنگے ٹھیکے کئے ہوں اُن کو بھی رخصت کردے اور اپنے دیش کی جنتا اور اُس کی شکتی پر وشواس کرکے دیش کو سوا ولمبی بنانے اور بنائے رکھنے کا عہد کرے ۔

سریش رام بھائی 26-4-52

…ों को उनके इल्म में सार्टिफ़िकेट दी हैं. हम यह …कहते कि एलोपैथिक इलाज मुल्क से निकाल दिया …लेकिन हम यह ज़रूर कह देना चाहते हैं कि अगर … और डाक्टरों ने मिल कर इस ग़रीब देश में … के दूसरे तरीक़ों का गला घोंटा तो इससे देश को …स्त नुक़सान होगा ही, ख़ुद उनके लिये भी यह … काले विपरीत बुद्धि ही साबित होगा.

…7. 4. 52. —सुरेश रामभाई

ग़रीब भारत और ऊंची तनख़ाहें

…3 अप्रैल के 'स्टेटसमैन' में एक ख़बर छपी है जो … नई दिल्ली वाले ख़ास नुमायन्दे ने भेजी है. वह यह … दुनिया का सबसे ऊंची तनख़ा पाने वाला आदमी … एस. एच. स्लोकोम है जो इमारत बनाने के काम …रीका के तजुर्बेकार इंजीनियरों में गिना जाता है. … सरकार ने इन्हें इन्कमटैक्स माफ़ 28 हज़ार डालर …ना या 10 हज़ार रुपये महीने पर नौकर रखा है. … स्लोकोम पंजाब के भाखरा बांध बनने में मदद … इनकी नौकरी का ठेका दस साल का है. तनख़ा …लावा इन को भत्ता भी मिलेगा जिससे इनका हिन्दु… में रहने सहने का सब ख़र्च निकल जाये.

'स्टेटसमैन' के नुमायन्दे का कहना है कि मिस्टर …ोम की तनख़ा अमरीका के राजपति से भी ज़ियादा …र हिन्दुस्तान के राजपति को इन्कमटैक्स काटने के … जो रक़म मिलती है, उसके दुगने से भी ज़ियादा है. … स्लोकोम के साथ चपरासी से लगा कर डिप्टी या …क तक एक लम्बा चौड़ा स्टाफ़ होगा जिसका ख़र्च … हमारी सरकार बर्दाश्त करेगी. इस तरह मिस्टर …ोम के ऊपर हिन्द सरकार लाखों रुपया ख़र्च करेगी … भाखरा बांध के बनने में करोड़ों रुपया मुलाज़िमों की …ाहों, भत्तों वग़ैरा में साफ़ हो जायगा.

…से तो हिन्द सरकार तनख़ा के मामले में किसी …दी या त्याग की क़ायल नहीं है. फिर भी मिस्टर स्लो… की नियुक्ति हमें अजीब मालूम पड़ती है. इससे पता … है कि किस तरह अमरीका के माहिर हिन्द सरकार …ावी हो गये हैं और सरकार बिना सोचे समझे उनके … रुपया पानी की तरह बहाने को तैयार है. कौन नहीं …ता कि आज का हिन्दुस्तान इतना धनी नहीं है जो … और विदेशी माहिरों की ऊंची तनख़ाहों का बोझ …त कर सके और न यह उसकी ग़रीबी को कम करने …का है. … इसके एक की देखा देखी दूसरों की भी … अच्छा … पाने या पाते रहने की कोशिश रहती है

ڈاکٹروں کو اُن کے علم میں سارٹیفکٹ دیئے ہیں. ہم یہ نہیں کہتے کہ ایلوپیتھک علاج ملک سے نکال دیا جائے لیکن ہم یہ ضرور کہ دینا چاہتے ہیں کہ اگر سرکار اور ڈاکٹروں نے مل کر اس غریب دیش میں علاج کے دوسرے طریقوں کا گلا گھونٹا تو اِس سے دیش کو زبردست نقصان ہوگا ہی خود اُن کے لئے بھی یہ وناش کالے وپریت بدھی ہی ثابت ہوگا۔

27 . 4 . '52 ——سریش رام بھائی

غریب بھارت اور اونچی تنخواہیں

23 اپریل کے 'اسٹیٹس مین' میں ایک خبر چھپی ہے جو اُس کے نئی دلی والے خاص نمائندے نے بھیجی ہے۔ وہ یہ ہے کہ دنیا کا سب سے اونچی تنخواہ پانے والا آدمی مسٹر ایم۔ ایچ۔ سلوکوم ہے جو عمارت بنانے کے کام میں امریکہ کے تجربے کار انجینیروں میں گنا جاتا ہے۔ ہند سرکار نے انہیں انکم ٹیکس معاف 28 ہزار ڈالر سالانہ یا دس ہزار روپئے مہینے پر نوکر رکھا ہے۔ مسٹر سلوکوم پنجاب کے بھاکھرا باندھ بننے میں مدد دینگے۔ ان کی نوکری کا ٹھیکہ دس سال کا ہے۔ تنخواہ کے علاوہ انکو بھتہ بھی ملیگا جس سے انکا ہندستان میں رہنے سہنے کا سب خرچ نکل آئے۔

'اسٹیٹس مین' کے نمائندے کا کہنا ہے کہ مسٹر سلوکوم کی تنخواہ امریکہ کے راج پتی سے بھی زیادہ ہے اور ہندستان کے راج پتی کو انکم ٹیکس کاٹنے کے بعد جو رقم ملتی ہے اُس کے دگنے سے بھی زیادہ ہے۔ مسٹر سلوکوم کے ساتھ چپراسی سے لے کر ڈپٹی یا سب تک ایک لمبا چوڑا اسٹاف ہوگا جس کا خرچ بھی ہماری سرکار برداشت کریگی۔ اِس طرح مسٹر سلوکوم کے اوپر ہند سرکار لاکھوں روپیہ خرچ کریگی اور بھاکھرا باندھ کے بننے میں کروڑوں روپیہ ملازموں کی تنخواہوں، بھتوں وغیرہ میں صاف ہو جائے گا۔

ویسے تو ہند سرکار تنخواہ کے معاملے میں کسی پابندی یا تیاگ کی قائل نہیں ہے۔ پھر بھی مسٹر سلوکوم کی نیکتی ہمیں عجیب معلوم پڑتی ہے۔ اِس سے پتہ چلتا ہے کہ کس طرح امریکہ کے ماہر ہند سرکار پر حاوی ہو گئے ہیں اور سرکار بنا سوچے سمجھے اُن کے اوپر روپیہ پانی کی طرح بہانے کو تیار ہے۔ کون نہیں جانتا کہ آجکا ہندستان اِتنا دھنی نہیں ہے جو دیشی اور ودیشی ماہروں کی اونچی تنخواہوں کا بوجھ برداشت کر سکے اور نہ یہ اسکی غریبی کو کم کرنے کا طریقہ ہے۔ علاوہ اِس کے ایک کی دیکھا دیکھی دوسروں کی بھی اچھا لمبی تنخواہ پانے یا پاتے رہنے کی بڑھتی رہتی ہے

सा बरताव किया जाता है ? क्या वह ठन्डे जी से यह कह सकते हैं कि अमरीका या इंगलैंड से आये दिन आने वाली पेटेंट दवायें हिन्दुस्तान के लोगों को सभी माफ़िक़ आती हैं और जो हैं तो क्या उनकी क़ीमतें ऐसी हैं जो हिन्दुस्तान के लाखों करोड़ों आदमी आसानी से बरदाश्त कर सकें.

कौन नहीं जानता कि पेंसलीन—जिसके बड़े ज़ोर शोर और जिसके बनने का कारख़ाना नई दिल्ली के मिनिस्टर गाडगिल साहब ने 10 मार्च को पूना के पास खोला था और जिसमें 1953 तक हिन्द सरकार क़रीब दो करोड़ रुपया फूँक देगी—आज पच्छिमी डाक्टरों के अनुसार ही निकम्मी बल्कि हानिकर और अनेक नये रोगों को जन्म देने वाली साबित हो चुकी है. एक दूसरी दवा स्ट्रेप्टो माइसीन है जिसके बारे में भी बहुत से डाक्टरों को शक है. अब एक तीसरी दवा और निकली है, नाम है Iso-Niacin Hydrazide जिसकी 50 हज़ार गोलियां एक अमरीकन फ़र्म से हिन्द सरकार ने ख़रीदना तय किया है. यह वही दवा है जिसके बारे में ख़ुद अमरीकन डाक्टरों का कहना है, जैसा 'न्यूयार्क टाइम्स' में छपा है "इसकी ख़ुराक बढ़ाने से या अरसे तक इसके ज़रिये इलाज करने से फेफड़ों के बिगड़ जाने का अन्देशा है... ....और फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि इस दवा से रोग अच्छा हो ही जायेगा."

एक बात और. पिछली 5 अप्रैल को न्युज़ीलैन्ड के उद्योग धन्दे और कामर्स मिनिस्टर (ख़याल रहे कि हेल्थ मिनिस्टर नहीं) ने नई दिल्ली में कुल हिन्द मेडिकल इन्स्टीट्यूट की इमारत का बुनियादी पत्थर रखा. कहा जाता है कि इसके बनने में 160 लाख रुपया ख़र्च होगा जिसमें से 10 लाख पौंड न्यूज़िलैन्ड देगा. कहां हिन्दुस्तान और कहां हिन्दुस्तान को रुपया देने वाला वह छोटा सा टापू न्यूज़िलैन्ड. क्या हमारे डाक्टर लोग बता सकते हैं कि यह चीज़ें हिन्दुस्तान के परों में बेड़ियां नहीं हैं ? हमारी अपने डाक्टर भाईयों से अर्ज़ है कि ज़रा होश में आयें और दूसरे की आंख के तिल को न देख कर अपनी आंख के लट्ठे को देखें. हमारा तो ख़याल है कि अंगरेज़ी ढंग के डाक्टरों और अस्पतालों के बढ़ने से हिन्दुस्तान में बीमारी, गंदगी और बेईमानी बढ़ी है घटी नहीं और इसके ख़िलाफ़ देश की लाखों जनता देसी इलाज से और होम्योपैथी और क़ुदरती इलाज जैसे तरीक़ों से फ़ायदा उठाती है और उठा रही है. हमारे पड़ोसी चीन की सरकार ने एलोपैथी इलाज को अपने यहां बढ़ने का पूरा मौक़ा देते हुए भी अपने हज़ारों बरस पुराने देसी इलाज के तरीक़े को फिर से ज़िन्दा किया है और लाखों पुराने तरीक़े के

سا برتاؤ کیا جاتا ہے ؟ کیا وہ ٹھنڈے جی سے یہ کہ سکتے ہیں کہ امریکہ یا انگلینڈ سے آئے دن آنے والی پیٹنٹ دوائیں ہندستان کے لوگوں کو سبھی موافق رہتی ہیں اور جو ہیں تو کیا اُن کی قیمتیں ایسی ہیں جو ہندستان کے لاکھوں کروڑوں آدمی آسانی سے برداشت کر سکیں ۔

کون نہیں جانتا کہ پینسلین—جس کے بڑے زور شور نے اور جس کے بننے کا کارخانہ نئی دلی کے منسٹر گاڈگل صاحب نے 10 مارچ کو پونا کے پاس کھولا تھا اور جس میں 1953 تک ہند سرکار قریب دو کروڑ روپیہ پھونک دیگی—آج پچھمی ڈاکٹروں کے انوسار ہی نکمی بلکہ ہانی کر اور انیک نئے روگوں کو جنم دینے والی ثابت ہو چکی ہے ۔ ایک دوسری دوا اسٹریپٹو مائی سین ہے جس کے بارے میں بھی بہت سے ڈاکٹروں کو شک ہے ۔ اب ایک تیسری دوا اور نکلی ہے' نام ہے Iso-Niacin Hydrazide جس کی 50 ہزار گولیاں ایک امریکن فرم سے ہند سرکار نے خریدنا طے کیا ہے ۔ یہ وہی دوا ہے جس کے بارے میں خود امریکن ڈاکٹروں کا کہنا ہے' جیسا 'نیویارک ٹائمس' میں چھپا ہے—" اِسکی خوراک بڑھانے سے یا عرصے تک اِس کے ذریعے علاج کرنے سے پھیپھڑوں کے بگڑ جانے کا اندیشہ ہے..........اور پھر بھی یہ نہیں کہا جا سکتا کہ اِس دوا سے روگ اچھا ہو ہی جائیگا ۔"

ایک بات اور ۔ پچھلی 15 اپریل کو نیوزیلینڈ کے اُدیوگ دھندے اور کامرس منسٹر (خیال رہے کہ ہیلتھ منسٹر نہیں) نے نئی دلی میں کل ہند میڈیکل اِنسٹی ٹیوٹ کی عمارت کا بنیادی پتھر رکھا ۔ کہا جاتا ہے کہ اس کے بننے میں 160 لاکھ روپیہ خرچ ہوگا جس میں سے 10 لاکھ پونڈ نیوزیلینڈ دیگا ۔ کہاں ہندستان کو روپیہ دینے والا وہ چھوٹا سا ٹاپو نیوزیلینڈ ۔ کیا ہمارے ڈاکٹر لوگ بتا سکتے ہیں کہ یہ چیزیں ہندستان کے پیروں میں بیڑیاں نہیں ہیں ؟ ہماری اپنے ڈاکٹر بھائیوں سے عرض ہے کہ ذرا ہوش میں آئیں اور دوسرے کی آنکھ کے تل کو نہ دیکھ کر اپنی آنکھ کے لٹھے کو دیکھیں ۔ ہمارا تو خیال ہے کہ انگریزی ڈھنگ کے ڈاکٹروں اور اسپتالوں کے بڑھنے سے ہندستان میں بیماری' گندگی اور بےایمانی بڑھی ہے گھٹی نہیں ۔ اور اِسکے خلاف دیش کی لاکھوں جنتا دیسی علاج سے اور ہومیوپیتھی اور قدرتی علاج جیسے طریقوں سے فائدہ اٹھاتی ہے اور اٹھا رہی ہے ۔ ہمارے پڑوسی چین کی سرکار نے ایلوپیتھی علاج کو اپنے یہاں بڑھنے کا پورا موقعہ دیتے ہوئے بھی اپنے ہزاروں برس پرانے دیسی علاج کے طریقے کو پھر سے زندہ کیا ہے اور لاکھوں پرانے طریقے کے

मारी सरकार का फ़र्ज़ है कि वह न अमरीका से
न रूस से, न जापान से न यूगोस्लेविया से, बल्कि
पैरों पर खड़ी हो और देश को हर माने में स्वावलम्बी

2-3-1952 —सुरेश रामभाई

टरों का घमंड

प्रैल के तीसरे हफ़्ते में नई दिल्ली में मेडिकल कौंसिल
डिया की मीटिंग हुई जिस में यह बात बड़े ज़ोर
कही गई कि हिन्दुस्तान में इलाज का सिर्फ़ एक
का चलना चाहिये यानी मौजूदा एलोपैथिक तरीक़ा.
मतलब यह है कि हमारी सरकार के सलाहकार
यह चाहते हैं कि वैद्यक, यूनानी, होम्यो पैथी और
इलाज जैसे इलाज के सब दूसरे तरीक़े इस
बिलकुल बन्द कर दिये जायें. सरकार क्या करेगी
जानते. पर हम अपने डाक्टर भाइयों की उनकी
नी दीगरे नेस्त अक़्ल पर बधाई देते हैं. अब
-कोकोजम के कारखाने वालों को चाहिये कि अपनी
मीटिंग में वह यह ठहराव पास करें कि हिन्दुस्तान
वनस्पति का इस्तेमाल किया जाना चाहिये. और
दूसरे देसी तेलों का इस्तेमाल बन्द हो जाना
इसी तरह कपड़े के मिल मालिकों और दरज़ियों
ये कि सिर्फ़ मिल का कपड़ा और वह भी अंगरेज़ी
पहने जाने का ठहराव पास करें और हिन्द
की तामीरात मि.नस्टरी की या राज कुमारी अमृत
चाहिये कि पार्लियामेन्ट में एक क़ानून पास
के अब लोग सिर्फ़ स्वीडन के नमूने वाले प्रीफ़ैबरी
ानों में रहा करें.
हारी है इस सूझ की. हमारे डाक्टरों ने न मालूम
की, न मालूम इंगलैंड की या किस की रीस करके
इलाज को अकेले ज़िन्दा रहने का फ़तवा दे
ई ताज्जुब नहीं कि हिन्द सरकार जो अमरीका के
वैसे ही फंसती जा रही है, डाक्टरों के इस फ़तवे
कर ले. लेकिन हम डाक्टर भाइयों से पूछना
कि क्या सचमुच उनके काम में आजकल यही
ट है कि हिन्दुस्तान के कुछ लोग क़ुदरती, देसी
वैद्यी इलाज भी करा लेते हैं और लाखों इन
ज़रिये से अच्छे हो जाते हैं; क्या आज के
अपने दिल पर हाथ रख कर कह सकते हैं कि वह
काम पैसे की ख़ातिर नहीं बल्कि केवल जन
कर रहे हैं ? क्या वह यह दावे के साथ कह
सरकारी और ख़ैराती अस्पतालों में सब काम

ہماری سرکار کا فرض ہے کہ وہ نہ امریکہ سے مدد لے نہ روس سے، نہ جاپان سے نہ یوگوسلاویا سے، بلکہ اپنے پیروں پر کھڑی ہو اور دیش کو ہر معنے میں سواولمبی بنائے۔

22-3-52 —سریش رام بھائی

ڈاکٹروں کا گھمنڈ

اپریل کے تیسرے ہفتے میں نئی دلی میں میڈیکل کونسل آف انڈیا کی میٹنگ ہوئی جس میں یہ بات بڑے زور کے ساتھ کہی گئی کہ ہندستان میں علاج کا صرف ایک ہی طریقہ چلنا چاہئے یعنی موجودہ ایلوپیتھک طریقہ۔ اسکا مطلب یہ ہے کہ ہماری سرکار کے صلاح کار ڈاکٹر یہ چاہتے ہیں کہ ویدک، یونانی، ہومیو پیتھی اور قدرتی علاج جیسے علاج کے سب دوسرے طریقے اس ملک میں بالکل بند کر دیئے جائیں۔ سرکار کیا کریگی ہم نہیں جانتے۔ پر ہم اپنے ڈاکٹر بھائیوں کی ان کی ہم چنیں دیگرے نیست عقل پر بدھائی دیتے ہیں۔ اب بناسپتی کوکوجم کے کارخانے والوں کو چاہئے کہ اپنی اگلی میٹنگ میں وہ یہ ٹھہراؤ پاس کریں کہ ہندستان میں صرف بناسپتی کا استعمال کیا جانا چاہئے اور گھی اور دوسرے دیسی تیلوں کا استعمال بند ہو جانا چاہئے۔ اسی طرح کپڑے کے مل مالکوں اور درزیوں کو چاہئے کہ صرف مل کا کپڑا اور وہ بھی انگریزی پوشاک پہنے جانے کا ٹھہراؤ پاس کریں، اور ہند سرکار تعمیرات منسٹری کی راج کماری امرت کور کو چاہئے کہ پارلیامنٹ میں ایک قانون پاس کرا دیں کہ اب لوگ صرف سوئڈن کے نمونے والے پری فیبری کیٹڈ مکانوں میں رہا کریں۔

بلیہاری ہے اس سوجھ کی۔ ہمارے ڈاکٹروں نے نہ معلوم امریکہ کی، نہ معلوم انگلینڈ کی یا کس کی ریس کر کے ایلوپیتھک علاج کو اکیلے زندہ رہنے کا فتوا دے دیا۔ کوئی تعجب نہیں کہ ہند سرکار جو امریکہ کے چنگل میں ویسے ہی پھنستی جا رہی ہے، ڈاکٹروں کے اس فتوے کو قبول کر لے۔ لیکن ہم ڈاکٹر بھائیوں سے پوچھنا چاہتے ہیں کہ کیا سچ مچ ان کے کام میں آجکل یہی ایک رکاوٹ ہے کہ ہندستان کے کچھ لوگ قدرتی، دیسی یا ہومیوپیتھی علاج بھی کرا لیتے ہیں اور لاکھوں ان علاجوں کے ذریعے سے اچھے ہو جاتے ہیں۔ کیا آج کے ڈاکٹر اپنے دل پر ہاتھ رکھکر کہہ سکتے ہیں کہ وہ سب اپنا کام پیسے کی خاطر نہیں بلکہ کیول جن سیوا کے لئے کر رہے ہیں! کیا وہ یہ دعوے کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ سرکاری اور خیراتی اسپتالوں میں سب کام ایمانداری

और फौज के क्वार्टर जहाज़ से यहाँ पर सारे दिखाई पड़ने लगे हैं. फिर कोलम्बो प्लैन के बहाने कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड ने भी—अमरीका और इंगलैन्ड की देखा देखी—हिन्दुस्तान को मुहब्बत दिखाने का रास्ता निकाल लिया. इतना होता तो हम सबर कर लेते पर आफ़त की मार यह है कि हमारे चाहने वाले दिन दिन नये पैदा होते जा रहे हैं.

पिछले मार्च में अमरीका के शिकंजे में कसे हुए (यानी गुलाम) जापान से बारह आदमियों का एक इन्डस्ट्रीयल मिशन आया जिसने यह जांच की कि हिन्दुस्तान में जापानी माल कितना खप सकता है और जापानी पूंजी कितनी लगाई जा सकती है. यानी जापान के नाम पर अमरीका हिन्दुस्तान में कितना सफ़ाया कर सकता है. मार्च की ही 18 तारीख़ को यूगोस्लेविया की तरफ़ से एक नुमायश नई दिल्ली में लगाई गई जिसका मक़सद था हिन्द-यूगोस्लेविया सनअती सम्बन्ध जमाना जमाना. इसके पहले बम्बई में एक नुमायश लगी थी जिसमें रूस, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी और चीन वग़ैरा की चीज़ें दिखाई गई थीं और रूसी राजदूत ने वादा किया था कि हिन्दुस्तान जो चीज़ चाहे अपने सिक्के में रूस से ख़रीद सकता है. इनके अलावा मार्च में ही कोलम्बो प्लान नुमायश लंका में लगाई गई जिसमें बताया गया कि हिन्दुस्तान के भले की ख़ातिर कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड वग़ैरा क्या क्या करने को तैयार हैं.

सोचने की बात है कि विदेशी व्योपारियों को क्यों हम से इतनी मुहब्बत हो गई है, क्या बात है कि उनके अन्दर हमारे लिये इतना मोह हो रहा है? जवाब साफ़ है—हमारी लम्बी चौड़ी ज़मीन और छत्तीस करोड़ आबादी. बाहर वालों का ख़याल है कि जो माल कहीं न चले उससे हिन्दुस्तान में एक के दो बनाये जा सकते हैं क्योंकि हिन्द सरकार को विदेशी माल में अधिक दिलचस्पी है. सबूत चाहिये तो 1951 के आंकड़े देखिये—बाहर माल गया कम, बाहर से आया कहीं ज़ियादा; यानी यहां की सरकार अपनी दौलत लुटा रही है. तब बाहर वाले क्यों न मज़ा लें?

लेकिन "अभी तो इब्तदाये इश्क़ है." संसार का इतिहास बताता है कि इसका नतीजा क्या होता है. हमें नहीं मालूम कि सरकारी नक़्क़ार ख़ाने में हमारी तूती की आवाज़ पहुँचेगी भी या नहीं—पर हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि सरकार को चाहिये कि इन चहेतों में से किसी को मुंह न लगायें और सबको दरवाज़ा दिखाये. इन में सब से पहले निपटना है अमरीका से क्योंकि उसके जाने से आधे से ज़ियादा दलिद्दर दूर हो जायेंगे. अमरीका के इरादों पर ही हमें शक पैदा हो गया है.

اور فوج کے کوارٹر جہاز سے یہاں پر سارے دکھائی پڑنے لگے ہیں پھر کولمبو پلان کے بہانے کناڈا' آسٹریلیا اور نیوزی لینڈ نے بھی—امریکہ اور انگلینڈ کی دیکھا دیکھی—ہندستان کو محبت دکھانے کا راستہ نکال لیا . اتنا ہوتا تو ہم صبر کر لیتے پر آفت کی مار یہ ہے کہ ہمارے چاہنے والے دن دن نئے پیدا ہوتے جا رہے ہیں .

پچھلے مارچ میں امریکہ کے شکنجے میں کسے ہوئے (یعنی غلام) جاپان سے بارہ آدمیوں کا ایک انڈسٹریل مشن آیا جس نے یہ جانچ کی کہ ہندستان میں جاپانی مال کتنا کھپ سکتا ہے اور جاپانی پونجی کتنی لگائی جا سکتی ہے . یعنی جاپان کے نام پر امریکہ ہندستان میں کتنا صفایا کر سکتا ہے . مارچ کی ہی 18 تاریخ کو یوگوسلاویا کی طرف سے ایک نمایش نئی دلی میں لگائی گئی جس کا مقصد تھا ہند یوگوسلاویا صنعتی سمبندھ جمانا جمانا . اس کے پہلے بمبئی میں ایک نمائش لگی تھی جس میں روس' زیکوسلوواکیا' ہنگری اور چین وغیرہ کی چیزیں دکھائی گئی تھیں اور روسی راجدوت نے وعدہ کیا تھا کہ ہندستان جو چیز چاہے اپنے سکے میں روس سے خرید سکتا ہے . ان کے علاوہ مارچ میں ہی کولمبو پلان نمائش لنکا میں لگائی گئی جس میں بتایا گیا کہ ہندستان کے بھلے کی خاطر کناڈا' آسٹریلیا' نیوزی لینڈ وغیرہ کتنا کرنے کو تیار ہیں .

سوچنے کی بات ہے کہ ودیشی بیوپاریوں کو کیوں ہم سے اتنی محبت ہوگئی ہے' کیا بات ہے کہ ان کے اندر ہمارے لئے اتنا موہ ہو رہا ہے ؟ جواب صاف ہے—ہماری لمبی چوڑی زمین اور چھتیس کروڑ آبادی . باہر والوں کا خیال ہے کہ جو مال کہیں نہ چلے اس سے ہندستان میں ایک کے دو بنائے جا سکتے ہیں کیونکہ ہند سرکار کو ودیشی مال میں ادھک دلچسپی ہے . ثبوت چاہئے تو 1951 کے آنکڑے دیکھئے—باہر مال گیا کم' باہر سے آیا کہیں زیادہ' یعنی یہاں کی سرکار اپنی دولت لٹا رہی ہے . تب باہر والے کیوں نہ مزا لیں ؟

لیکن " ابھی تو ابتدائے عشق ہے ." سنسار کا اتہاس بتاتا ہے کہ اس کا نتیجہ کیا ہوتا . ہمیں نہیں معلوم کہ سرکاری نقار خانے میں ہماری طوطی جیسی آواز پہونچےگی بھی یا نہیں—پر ہم یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے کہ سرکار کو چاہئے کہ ان چہیتوں میں سے کسی کو منھ نہ لگائے اور سب کو دروازہ دکھائے . ان میں سب سے پہلے نپٹنا ہے امریکہ سے کیونکہ اس کے جانے سے آدھے سے زیادہ دلدر دور ہو جائینگے . امریکہ کے ارادوں پر ہی ہمیں شک پیدا ہوگیا ہے .

मिनिस्टरों के इस वेशपरस्त फैसले पर हम उन्हें बाद नहीं दे सकते. लेकिन बलिहारी है उनकी समझ इस फैसले पर पहुंचने के लिये उन्हें अपना वक्त में खर्च करना पड़ा. जहाँ तक हम जानते हैं यू. पी. के मिनिस्टरों में ज़ियादातर ऐसे हैं जिन्होंने मैदानी इलाक़ों में पीढ़ी दर पीढ़ी गर्मियां काटी हैं, ऐसे हैं जिन्होंने अपने क़ीमती जीवन के कई बरस इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, फ़तहगढ़ और आगरे की कैम्प जेलों की कोठरियों और तनहाइयों में बिताये बड़ी खुशी व शान के साथ बिताये हैं. हम यह मानने से इनकार करते हैं कि वह गर्मियों में सिवाय नैनीताल के और कहीं ख़ूबी के साथ अपना फ़र्ज़ अदा नहीं कर सकते. हमें ताज्जुब है कि लखनऊ के बिजली के पंखों और ख़स की टट्टियों में उनका काम क्यों नहीं चल सकता.

ज़ाहिर है कि सरकार के फ़ैसले से पब्लिक का काफ़ी पैसा बेकार जायेगा, काफ़ी वक़्त बरबाद होगा और लखनऊ-नैनीताल के फेर में असली काम भी बहुत कम निकलेगा. यह ऐसी मामूली और साफ़ बातें हैं जो हमारे मिनिस्टर अच्छी तरह समझते हैं. फिर भी, उन्होंने ग़रीब जनता के हित को ठुकरा कर यह फ़ैसला किया. इससे हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि वह जनता से जितना दूर हो सके उतना दूर रहना चाहते हैं और अपने आरज़ी आराम के आगे उस जनता की बिल्कुल परवाह नहीं है जो रात दिन सिर का पसीना एड़ी तक बहा कर उनकी ख़ातिर पिसी जा रही है. जब अपना घर जल रहा हो उस वक़्त घर के मुखिया या ज़िम्मेदार लोगों को उससे बच कर कहीं और चला जाना उन्हें शोभा नहीं दे सकता.

सरकार को नैनीताल का मोह छोड़ देना चाहिये और वहां जाने का सिलसिला हमेशा के लिये तोड़ दिया जाये. यू. पी. की राजधानी हर मौसम में एक जगह ही रहे. अगर किसी मिनिस्टर या ओहदेदार को सचमुच पहाड़ जाने की ज़रूरत है ही तो वह अपने ख़र्चे से जाये. इसमें जनता के ख़ज़ाने की एक पाई भी ख़र्च करना जुर्म समझा जायेगा.

8. 4. 1952 —सुरेश रामभाई

विदेशी व्योपारियों का नया जाल

कुछ अरसे से विदेशी व्योपारियों की दिलचस्पी हमारे देश में फिर बढ़ती हुई नज़र आ रही है. अमरीका ने तो तरह तरह के दान दे दे कर हिन्द सरकार को अपने फन्दे में फांस ही लिया है. इंगलैन्ड का पुराना पंजा चला आ रहा है और आज भी हम लोग 'स्टर्लिंग इलाक़े' में हैं

اپنا منسٹروں کے اس ہمیش پرستت فیصلے پر ہم انہیں کوئی بدھائی نہیں دے سکتے . لیکن بلہاری ہے اُن کی سمجھ کی جو اس فیصلے پر پہنچنے کے لئے انہیں اپنا وقت سوچنے میں خرچ کرنا پڑا . جہاں تک ہم جانتے ہیں یو . پی کے موجودہ منسٹروں میں زیادہ تر ایسے ہیں جنہوں نے نہ صرف میدانی علاقوں میں پیڑھی در پیڑھی گرمیاں کاٹی ہیں' بلکہ ایسے ہیں جنہوں نے اپنے قیمتی جیون کے کئی برس الہ‌آباد' لکھنؤ' بنارس' فتح گڑھ اور آگرہ کے جیلوں' کیمپ جیلوں کی کوٹھریوں اور تنہائیوں میں بتائے ہیں اور بڑی خوشی و شان کے ساتھ بتائے ہیں . ہم یہ ماننے سے انکار کرتے ہیں کہ وہ گرمیوں میں سوائے نینی تال کے اور کہیں خوبی کے ساتھ اپنا فرض ادا نہیں کر سکتے . ہمیں تعجب ہے کہ لکھنؤ کے بجلی کے پنکھوں اور خس کی ٹٹیوں میں اُن کا کام کیوں نہیں چل سکتا .

ظاہر ہے کہ سرکار کے فیصلے سے پبلک کا کافی پیسہ بیکار جائے گا' کافی وقت برباد ہوگا اور لکھنؤ نینی تال کے پھیر میں اصلی کام بھی بہت کم نکلیگا . یہ ایسی معمولی اور صاف باتیں ہیں جو ہمارے منسٹر اچھی طرح سمجھتے ہیں . پھر بھی' انہوں نے غریب جنتا کے ہت کو ٹھکرا کر یہ فیصلہ کیا . اِس سے ہم اسی نتیجے پر پہونچتے ہیں کہ وہ جنتا سے جتنا دور ہوسکے اتنا دور رہنا چاہتے ہیں اور اپنے عارضی آرام کے آگے اُس جنتا کی بالکل پرواہ نہیں ہے جو رات دن سر کا پسینا ایڑی تک بہاکر اُن کی خاطر پسی جا رہی ہے . جب اپنا گھر جل رہا ہو اُس وقت گھر کے مکھیا یا ذمےدار لوگوں کو اُس سے بچکر کہیں اور چلا جانا اُنہیں شوبھا نہیں دے سکتا .

سرکار کو نینی تال کا موہ چھوڑ دینا چاہئے اور وہاں جانے کا سلسلہ ہمیشہ کے لئے توڑ دیا جائے . یو . پی . کی راجدھانی ہر موسم میں ایک جگہ ہی رہے . اگر کسی منسٹر یا عہدےدار کو سچ مچ پہاڑ جانے کی ضرورت ہے ہی تو وہ اپنے خرچے سے جائے . اِس میں جنتا کے خزانے کی ایک پائی بھی خرچ کرنا جرم سمجھا جائے گا .

18-4-1952 —سریش رام‌بھائی .

ودیشی بیوپاریوں کا نیا جال

کچھ عرصے سے ودیشی بیوپاریوں کی دلچسپی ہمارے دیش میں پھر بڑھتی ہوئی نظر آ رہی ہے . امریکہ نے تو طرح طرح کے دان دے دیکر ہند سرکار کو اپنے پھندے میں پھانس ہی لیا ہے . انگلینڈ کا پرانا پنجا چلا آتا ہے اور آج بھی ہم لوگ ' اسٹرلنگ علاقہ ' میں ہیں

काम करने के ढंग और तौर तरीक़ों से गहरा असंतोश लगभग सभी बोलने वालों के भाशनों में ज़ोरों के साथ चमक रहा था. इसका मतलब यह है कि मुल्क को क़ानून के ज़रिये हल की आशा नहीं है. फिर केवल एक ही तरीक़ा रह जाता है. अगर सरकार ने अपना फ़र्ज़ पूरा न किया तो देश के सेवकों को बहुत जल्दी ग़रीबों को उनका हक़ दिलाने के लिये क़ीमत अदा करनी होगी. ग़लत रास्ते पर चलने वाली देशी सरकार हो या विदेशी, दूसरों का हक़ हथियाने वाले देशी पूँजीपति हों या विदेशी, जमींदार हों या साहूकार सब के मुक़ाबले के लिये गांधी जी ने हमें रास्ता बता दिया है. सर्वोदय सम्मेलन में भी यह बात साफ़ दिखाई दे रही थी कि मुल्क बहुत जल्दी इस रास्ते पर क़दम बढ़ाता हुआ दिखाई देगा.

(11) सेवा पुरी सम्मेलन में कोई प्रस्ताव पास नहीं हुआ. यह बात हमें ठीक ही मालूम होती है. इस तरह के सम्मेलन प्रस्ताव पास करने के लिये नहीं होने चाहियें, बल्कि विचारों के लेन देन और एक दूसरे को समझने समझाने के लिये ही होने चाहियें. पर सर्वोदय हमारी राय में ज़िन्दगी की ऐसी मुकम्मिल फ़िलासफ़ी है जो किसी भी दूसरी फ़िलासफ़ी की जगह ले सकती है. समाजी, माली और राजकाजी सब निगाहों से वह पूरी है और उसके बुनियादी उसूलों को सामने रखते हुये हर मैदान में हर सवाल का उससे हल ढूंढा जा सकता है. इसलिये हमारी नम्र राय है कि सर्वोदय सम्मेलन बड़े से बड़े अन्तर क़ौमी मामलों पर चुप नहीं रह सकता. कोरिया की लड़ाई, बीमारी बम का इस्तेमाल, मलाया, ईरान, मिस्र, हिन्द-चीन जैसे सवालों पर भी सर्वोदय सम्मेलनों में वैसे ही खुली और साफ़-साफ़ बातें और विचारों का लेन देन होना चाहिये जैसे देश के अन्दर के समाजी और माली सवालों पर. तभी सर्वोदय आगे चल कर अपना असली रूप धारन कर सकता है.

9-5-52 —सुन्दरलाल

नैनीताल से राजधानी हटाइये

हमारे सूबे के अख़बारों में एक छोटी-सी ख़बर छपी है कि चार मार्च को यू. पी. सरकार की कैबिनेट ने तय किया कि जैसे पुराने वक़्तों में हुआ करता था, इस साल गर्मियों के दौरान में हमारे कांगरेसी मिनिस्टर नैनीताल चले जायेंगे, और उनके साथ साथ ऊँचे ऊँचे अफ़सर भी जायेंगे, सरकारी दफ़्तर भी जायेंगे. दूसरे लफ़्ज़ों में, गर्मियों में हमारे सूबे की राजधानी लखनऊ से हट कर नैनीताल चली आयेगी जैसा कि अंगरेज़ी ज़माने में हुआ करता था.

کام کرنے کے ڈھنگ اور طور طریقوں سے گہرا اسنتوش لگ بھگ سبھی بولنے والوں کے بھاشنوں میں زوروں کے ساتھ چمک رہا تھا ۔ اِس کا مطلب یہ ہے کہ ملک کو قانون کے ذریعہ حل کی آشا نہیں ہے ۔ پھر کیول ایک ہی طریقہ رہ جاتا ہے ۔ اگر سرکار نے اپنا فرض پورا نہ کیا تو دیش کے سیوکوں کو بہت جلدی غریبوں کو اُن کا حق دلانے کے لئے قیمت ادا کرنی ہوگی ۔ غلط راستے پر چلنے والی دیشی سرکار ہو یا ودیشی' دوسروں کا حق ہتھیانے والے دیشی پونجی پتی ہوں یا ودیشی' زمیندار ہوں یا ساہوکار سب کے مقابلے کے لئے گاندھی جی نے ہمیں راستہ بتا دیا ہے ۔ سروودے سمیلن میں بھی یہ بات صاف دکھائی دے رہی تھی کہ ملک بہت جلدی اِس راستے پر قدم بڑھاتا ہوا دکھائی دے گا ۔

(11) سیواپوری سمیلن میں کوئی پرستاؤ پاس نہیں ہوا ۔ یہ بات ہمیں ٹھیک ہی معلوم ہوتی ہے ۔ اِس طرح کے سمیلن پرستاو پاس کرنے کے لئے نہیں ہونے چاہئیں' بلکہ وچاروں کے لین دین اور ایک دوسرے کو سمجھنے سمجھانے کے لئے ہی ہونے چاہئیں ۔ پر سروودے ہماری رائے میں زندگی کی ایسی مکمل فلسفی ہے جو کسی بھی دوسری فلسفی کی جگہ لے سکتی ہے ۔ سماجی' مالی اور راجکاجی سب نگاہوں سے وہ پوری ہے اور اُس کے بنیادی اُصولوں کو سامنے رکھتے ہوئے ہر میدان میں ہر سوال کا اُس سے حل ڈھونڈھا جاسکتا ہے ۔ اِس لئے ہماری نمر رائے ہے کہ سروودے سمیلن بڑے سے بڑے انتر قومی معاملوں پر چپ نہیں رہ سکتا ۔ کوریا کی لڑائی' بیماری بم کا استعمال' ملایا' ایران' مصر' ہند چین جیسے سوالوں پر بھی سروودے سمیلنوں میں ویسے ہی کھلی اور صاف صاف باتیں اور وچاروں کا لین دین ہونا چاہئے جیسے دیش کے اندر کے سماجی اور مالی سوالوں پر ۔ تبھی سروودے آگے چل کر اپنا اصلی روپ دھارن کرسکتا ہے ۔

9-5-52 —سندرلال

نینی تال سے راجدھانی ہٹائیے

ہمارے صوبے کے اخباروں میں ایک چھوٹی سی خبر چھپی ہے کہ چار مارچ کو یو ۔ پی سرکار کی کیبنیٹ نے طے کیا کہ جیسے پرانے وقتوں میں ہوا کرتا تھا' اس سال گرمیوں کے دوران میں ہمارے کانگریسی منسٹر نینی تال چلے جائینگے اور اُن کے ساتھ ساتھ اونچے اونچے افسر بھی جائینگے' سرکاری دفتر بھی جائینگے ۔ دوسرے لفظوں میں' گرمیوں میں ہمارے صوبے کی راجدھانی لکھنؤ سے ہٹکر نینی تال چلی جائیگی جیسا کہ انگریزی زمانے میں ہوا کرتا تھا ۔

की आवाज़ इस तहरीक के पीछे है. जहां तक यह जा सके इससे मुल्क को फ़ायदा ही है. लेकिन दूसरी तरफ़ इस चाल से मुल्क अपने असली मक़सद तक नहीं पहुँच सकता. विनोबा जी को पिछले एक साल के अन्दर कुल एक लाख एकड़ ज़मीन मिली बताई जाती है. वह भी अधिकतर ग़रीब किसानों से, बड़े ज़मींदारों से नहीं. उसमें भी अधिकतर अभी केवल काग़ज़ी कारवाई हो है. और वह भी अधूरी, अगले दो साल में विनोबा जी ने पचीस लाख एकड़ का निशाना अपने सामने रखा हैं. सरकारें अपनी मुश्किलें बता ही रही हैं. अगर यह पचीस लाख किसी तरह पूरा भी हो गया तब भी इस से देश का ज़मीन का सवाल हल नहीं होता. विनोबा जी इसे देख रहे हैं. वह कहते हैं कि उनका काम अगर पांच सौ बरस में भी पूरा हो जाये तो उन्हें संतोश होगा. पर ज़ाहिर है दुनिया को इतना धीरज नहीं हो सकता. चीन जैसे बड़े देश ने एक साल के अन्दर और हमारे पड़ोसी कश्मीर ने कुछ महीनों के अन्दर ही अपने यहां के ज़मीन के सवाल को हल करके ख़त्म कर दिया और उसके नतीजों से फ़ायदा उठाना भी शुरू कर दिया. इनमें भी चीन के तरीक़े में थोड़ी बहुत हिंसा भले हो रहा हो, कश्मीर के तरीक़े में तो हिंसा नाम को भी न थी. यह तरीक़े अमली तरीक़े हैं. इनके मुक़ाबला में बड़े बड़े मुआवज़ों और क़ानूनी बहसों का तरीक़ा ग़लत, लम्बा और ग़रीबों के साथ बेइन्साफ़ी का तरीक़ा है.

सेवापुरी सम्मेलन में जो तक़रीरें हुईं उनसे यह साफ़ ज़ाहिर था कि देश के रचनात्मक काम करने वाले भी इस बारे में काफ़ी बेचैन है और गहराई के साथ सोच रहे हैं. एक भाई ने अपनी तक़रीर में कहा कि ख़ुद विनोबा जी के पोनार आश्रम में कम से कम दो आश्रम वासियों ने यह राय ज़ाहिर की थी कि अगर चीन ने एक साल के अन्दर अपने ज़मीन के सवाल को हल कर लिया और उसमें थोड़ा बहुत अहिंसा के उसूल का उल्लंघन भी हुआ हो तब भी हमें पीढ़ियों इन्तज़ार करने के बजाय उसी तरीक़े पर चलकर एक बार अपने इस सवाल को हल कर लेना चाहिये. इसी तरह की धुन सम्मेलन की और तक़रीरों में भी सुनाई दे रही थी.

आख़िर में ज़मीन के सवाल को हल करने के दो ही अमली तरीक़े हो सकते हैं. एक क़ानून का तरीक़ा और दूसरा गांधी जी का बताया हुआ सत्याग्रह का तरीक़ा. विनोबा जी का काम राह दिखाना और हवा तैयार करना है इससे ज़ियादा नहीं. सम्मेलन की अधिकतर तक़रीरों से यह भी साफ़ ज़ाहिर था कि लोग इस बारे में आज-कल की सरकारों से कोई आशा नहीं रखते. सरकार के

کی آواز اِس تحریک کے پیچھے ہے ۔ جہاں تک یہ جا سکے اِس سے ملک کو فائدہ ہی ہے ۔ لیکن دوسری طرف اِس چال سے ملک اپنے اصلی مقصد تک نہیں پہونچ سکتا ۔ ونوبا جی کو پچھلے ایک سال کے اندر کل ایک لاکھ ایکڑ زمین ملی بتائی جاتی ہے ۔ وہ بھی ادھک تر غریب کسانوں سے، بڑے زمینداروں سے نہیں ۔ اُس میں بھی ادھک تر ابھی کیول کاغذی کاروائی ہی ہے اور وہ بھی ادھوری ۔ اگلے دو سال میں ونوبا جی نے پچیس لاکھ ایکڑ کا نشانہ اپنے سامنے رکھا ہے ۔ سرکاریں اپنی مشکلیں بتا ہی رہی ہیں ۔ اگر یہ پچیس لاکھ کسی طرح پورا بھی ہوگیا تب بھی اِس سے دیش کا زمین کا سوال حل نہیں ہوتا ۔ ونوبا جی اسے دیکھ رہے ہیں ۔ وہ کہتے ہیں کہ اُن کا کام اگر پانچسو برس میں بھی پورا ہو جائے تو انہیں سنتوش ہوگا ۔ پر ظاہر ہے دنیا کو اتنا دھیرج نہیں ہوسکتا ۔ چین جیسے بڑے دیش نے ایک سال کے اندر اور ہمارے پڑوسی کشمیر نے کچھ مہینوں کے اندر ہی اپنے یہاں کے زمین کے سوال کو حل کرکے ختم کر دیا اور اُس کے نتیجوں سے فائدہ اُٹھانا بھی شروع کر دیا ۔ اِن میں بھی چین کے طریقے میں تھوڑی بہت ہنسا بھلے ہی رہی ہو، کشمیر کے طریقے میں تو ہنسا نام کو بھی نہ تھی ۔ یہ طریقے عملی طریقے ہیں ۔ اِن کے مقابلہ میں بڑے بڑے معاوضوں اور قانونی بحثوں کا طریقہ غلط، لمبا اور غریبوں کے ساتھ بےانصافی کا طریقہ ہے ۔

سیواپوری سمیلن میں جو تقریریں ہوئیں اُن سے یہ صاف ظاہر تھا کہ دیش کے رچناتمک کام کرنے والے بھی اِس بارے میں کافی بے چین ہیں اور گہرائی کے ساتھ سوچ رہے ہیں ۔ ایک بھائی نے اپنی تقریر میں کہا کہ خود ونوبا جی کے پونار آشرم میں کم سے کم دو آشرم واسیوں نے یہ رائے ظاہر کی تھی کہ اگر چین نے ایک سال کے اندر اپنے زمین کے سوال کو حل کر لیا اور اُس میں تھوڑا بہت اہنسا کے اصول کا اُلنگھن بھی ہوا ہو تب بھی ہمیں پیڑھیوں کا انتظار کرنے کے بجائے اُسی طریقے پر چل کر ایک بار اپنے اِس سوال کو حل کرلینا چاہئے ۔ اِسی طرح کی دھن سمیلن کی اور تقریروں میں بھی سنائی دے رہی تھی ۔

آخیر میں زمین کے سوال کو حل کرنے کے دو ہی عملی طریقے ہوسکتے ہیں ۔ ایک قانون کا طریقہ اور دوسرا گاندھی جی کا بتایا ہوا ستیاگرہ کا طریقہ ۔ ونوبا جی کا کام راہ دکھانا اور ہوا تیار کرنا ہے اِس سے زیادہ نہیں ۔ سمیلن کی ادھک تر تقریروں سے یہ بھی صاف ظاہر تھا کہ لوگ اِس بارے میں آجکل کی سرکاروں سے کوئی آشا نہیں رکھتے ۔ سرکار کے

अपने भाशन में यह भी कहा कि कांगरेस की गिरी हुई हालत में भी कांगरेस के जल्सों में जितने मुसलमान और दूसरे धर्मों के लोग दिखाई दे जाते हैं सर्वोदय सम्मेलन में उतने भी दिखाई नहीं देते. बात बिल्कुल सच्ची और दुख देने वाली है. हम इस के लिये किसी को दोशी नहीं ठहराते. बिनोबा जी का अपना दिल इस बारे में बिल्कुल साफ़ है. वह अपने भाशनों में मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी और क़ुरान और दूसरे धर्मों की किताबों से हवाले भी देते रहते हैं. उन्होंने क़ुरान को अच्छी तरह पढ़ा है. उसका उनके दिल में आदर है. पर उनकी तालीम और तरबियत अधिकतर हिन्दू शास्त्रों, पुरानों और हिन्दू परम्पराओं पर हुई हैं. उनके भाशनों और उनकी बातों में उस रंग का अधिक होना क़ुदरती है. यह लगभग वैसा ही है जैसा अगर मौलाना हुसेन अहमद मिदनी जैसा सच्चा एकता प्रेमी देश भक्त इस तरह की तहरीक का अगुवा होता तो उसकी बातों में इस्लामी रंग अधिक होता ही. भोजनालय में वेद मंत्र से भोजन का शुरू किया जाना ही उसी तरह का असर पैदा करता है. हमें मा'लूम है कि कुछ फ़िरक़ापरस्त हिन्दुओं ने इससे ग़लत फ़ायदा उठाने की भी कोशिश की है और यह कोशिशें जारी हैं. जिस भाई के भाशन की तरफ़ हमने ऊपर इशारा किया है उसने उसी भाशन में यह भी कहा था कि सम्मेलन में काम आने वाली भाशा न गांधी जी की हिन्दुस्तानी थी, और न उत्तर प्रदेश की जनता की बोली थी. वह थी संस्कृत भरी पंडिताऊ भाशा. हमें विश्वास है कि आस पास के गांव के जो अनपढ़ या कम पढ़े लोग वहां आए थे उनके पल्ले आधे से अधिक भाशनों में कुछ भी नहीं पड़ सका. इन बातों में भी क़सूर हमारी तालीम और तरबियत का है. हमने अभी तक अपने रहन सहन, रंग ढंग, बोली और विचारों तक में एकता की वह लगन, वह सच्चा सर्वधर्म संभाव और वह यगानगत पैदा नहीं की जिसके बिना कोई सच्चा सेकूलर राज नहीं चल सकता और जिस के बिना आज कल का कोई ऐसा देश जिसमें अलग अलग धर्मों के लोग रहते हों सच्चे मानों में आज़ाद और ख़ुशहाल नहीं हो सकता. सच्ची इनसानी एकता का भी यही रास्ता है. गांधी जी इस पर तेज़ी से बढ़ रहे थे. इसी पर चलकर और इसी के लिये उन्होंने अपनी जान दी. हम अभी इस रास्ते से कोसों दूर हैं. हमें कोशिश कर के अपने पैर उधर को मोड़ने हैं.

(10) बिनोबा जी का भूदान यज्ञ एक बेलाग और पाक कोशिश है. हमें यह भी विश्वास है कि सरकारें या फ़िरक़ापरस्त जमाअतें कोशिश करने पर भी इस तहरीक से बेजा फ़ायदा नहीं उठा सकेंगी. आख़िरी नतीजे में यह तहरीक उनकी ग़लत फ़हमियों को भी दूर करेगी. जनता

پے بھاشن میں یہ بھی کہا کہ کانگریس کی گری ہوئی حالت میں بھی کانگریس کے جلسوں میں جتنے مسلمان اور دوسرے دھرموں کے لوگ دکھائی دے جاتے ہیں سروودے سمیلن میں اتنے بھی دکھائی نہیں دیتے . بات بالکل سچی اور دکھ دینے والی ہے . ہم اس کے لئے کسی کو دوشی نہیں ٹھہراتے . ونوبا جی کا اپنا دل اس بارے میں بالکل صاف ہے . وہ اپنے بھاشنوں میں محمد صاحب کی زندگی اور قرآن اور دوسرے دھرموں کی کتابوں سے حوالے بھی دیتے رہتے ہیں . انہوں نے قرآن کو اچھی طرح پڑھا ہے . اس کا ان کے دل میں آدر ہے . پر ان کی تعلیم اور تربیت ادھک تر ہندو شاشتروں' پرانوں اور ہندو پرمپراؤں پر ہوئی ہے . ان کے بھاشنوں اور ان کی باتوں میں اس رنگ کا ادھک ہونا قدرتی ہے . یہ لگ بھگ ویسا ہی ہے جیسا اگر مولانا حسین احمد مدنی جیسا سچا ایکتا پریمی دیش بھکت اس طرح کی تحریک کا اگوا ہوتا تو اس کی باتوں میں اسلامی رنگ ادھک ہوتا ہی . بھوجنالیہ میں ویدمنتر سے بھوجن کا شروع کیا جانا ہی اسی طرح کا اثر پیدا کرتا ہے . ہمیں معلوم ہے کچھ فرقہ پرست ہندوؤں نے اس سے غلط فائدہ اٹھانے کی بھی کوشش کی ہے اور یہ کوششیں جاری ہیں . جس بھائی کے بھاشن کی طرف ہم نے اوپر اشارہ کیا ہے اس نے اسی بھاشن میں یہ بھی کہا تھا کہ سمیلن میں کام آنے والی بھاشا نہ گاندھی جی کی ہندستانی تھی' اور نہ اتر پردیش کی جنتا کی بولی تھی . وہ تھی سنسکرت بھری پنڈتاؤ بھاشا . ہمیں وشواس ہے کہ آس پاس کے گاؤں کے جو ان پڑھ یا کم پڑھے لوگ وہاں آئے تھے ان کے پلے آدھے سے ادھک بھاشنوں میں کچھ بھی نہیں پڑسکا . ان باتوں میں بھی قصور ہماری تعلیم اور تربیت کا ہے . ہم نے ابھی تک اپنے رہن سہن' رنگ ڈھنگ' بولی اور وچاروں تک میں ایکتا کی وہ لگن' وہ سچا سرودھرم سمبھاو اور وہ یگانگت پیدا نہیں کی جس کے بنا کوئی سچا سیکولر راج نہیں چل سکتا اور جس کے بنا آجکل کا کوئی ایسا دیش جس میں الگ الگ دھرموں کے لوگ رہتے ہوں سچے معنوں میں آزاد اور خوشحال نہیں ہوسکتا . سچی انسانی ایکتا کا بھی یہی راستہ ہے . گاندھی جی اس پر تیزی سے بڑھ رہے تھے . اسی پر چل کر اور اسی کے لئے انہوں نے اپنی جان دی . ہم ابھی اس راستے سے کوسوں دور ہیں . ہمیں کوشش کرکے اپنے پیر ادھر کو موڑنے ہیں .

(10) ونوبا جی کا بھودان یگیہ ایک بے لاگ اور پاک کوشش ہے . ہمیں یہ بھی وشواس ہے کہ سرکاریں یا فرقہ پرست جماعتیں کوشش کرنے پر بھی اس تحریک سے بے جا فائدہ نہیں اٹھا سکیں گی . آخری نتیجے میں یہ تحریک ان کی غلط فہمیوں کو بھی دور کرے گی . جنتا

हमारी राय

(6) सरकार जहां तहां विनोबा जी की तहरीक से फ़ायदा उठा कर देश पर अपने असर और अपनी ताक़त को और अधिक मज़बूत कर लेने की भी कोशिश में है. मिसाल के तौर पर उत्तर प्रदेश की सरकार का सूबे भर की पंचायतों को हुक्म देना कि वह हर गांव पीछे पांच-पांच एकड़ ज़मीन विनोबा जी को दिलवाएँ. इसी तरह की एक कोशिश मालूम हुई है. ज़ियादातर पंचायतें सरकारी लोगों के हाथों और असर में हैं. आम जनता उन्हें अपने लिये ऐसा ही समझती है जैसा दूसरे सरकारी महकमों को. इसलिये इस तरह के सरकारी हुक्म का क़ुदरती नतीजा हुआ कि सरकार के असर को मज़बूत करना और ख़िलाफ़ अंसुरों को क़ाबू में रखना.

(7) इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग विनोबा जी को ज़मीन दे रहे हैं उनमें कुछ बहुत ही नेक दिली और त्याग की भावना से ऐसा कर रहे हैं. लेकिन कुछ लोगों के दान में दूसरी भावनाएं भी काम कर रही हैं. विनोबा जी ने ख़ुद अपने एक भाषन में इसका ज़िक्र किया था. बनारस के कुछ लोगों की तरफ़ से जो एक ऐडरस सम्मेलन में पढ़ा गया था उसमें भी यह साफ़ कहा गया था कि इस भूदान में काफ़ी हिस्सा दबाव का है. सरकारी हुक्म के अधीन दान आमतौर पर सच्चा दान नहीं कहा जा सकता. और न इस तरह की तहरीक को फल सकता है.

(8) आज कल की हमारी कुछ सरकारें कम्युनिस्टों से बेहद डरी हुई हैं. हम इस डर को ग़लत, बेबुनियाद और अपने विरोध को दबाने का बहाना मानते हैं. विनोबा जी कभी कभी कुछ असूली बातों को सामने रखते हुये सर्वोदय और कम्युनिज़्म का फ़र्क़ बताते रहते हैं और कहते हैं कि अगर सर्वोदय का यानी अहिंसा का तरीक़ा मुल्क के ग़रीबों को उनका हक़ दिलाने में कामयाब न हुआ तो फिर डर है लोग हिंसा के ग़लत तरीक़े से काम लें. उनके दाएं बायें के कुछ लोग उनके कहने से ग़लत फ़ायदा उठा कर कहीं कहीं जनता को यह डराते हैं कि अगर तुमने विनोबा जी की बात न मानी तो जो गत कोरिया और चीन जैसे मुल्कों की बन चुकी है वही तुम्हारी भी बनेगी. इन तक़रीरों में कम्युनिस्टों से मुल्क को ख़तरा दिखाया जाता है. इस तरह की तक़रीरें अख़बारों तक में आ चुकी हैं. हो सकता है इस तरह की तक़रीरों से सरकार को कम्युनिस्टों के दबाने में कुछ मदद मिलती हो लेकिन विनोबा जी की पाक तहरीक का यह पहलू न सचाई से मेल खाता है और न इस से तहरीक का मान बढ़ता है.

(9) सेवापुरी सम्मेलन में एक बात हमें यह भी दिखाई दे रही थी कि वहां की हवा और रंग ढंग ज़रूरत से ज़ियादा हिन्दू रंग लिये हुये थे. एक समझदार भाई ने

ھماری رائے

(6) سرکار جہاں تہاں ونوبا جی کی تحریک سے فائدہ اُٹھا کر دیش پر اپنے اثر اور اپنی طاقت کو اور ادھک مضبوط کر لینے کی بھی کوشش میں ہے . مثال کے طور پر اُتر پردیش کی سرکار کا صوبے بھر کی پنچائتوں کو حکم دینا کہ وہ ہر گاؤں پیچھے پانچ ایکڑ زمین ونوبا جی کو دلوائیں . اسی طرح کی ایک کوشش معلوم ہوئی ہے . زیادہ تر پنچائتیں سرکاری لوگوں کے ہاتھوں اور اثر میں ہیں . عام جنتا انہیں اپنے لئے ایسا ہی سمجھتی ہے جیسا دوسرے سرکاری محکموں کو . اس لئے اِس طرح کے سرکاری حکم کا قدرتی نتیجہ ہوا کہ سرکار کے اثر کو مضبوط کرنا اور خلاف عنصروں کو قابو میں رکھنا .

(7) اِس میں کوئی شک نہیں کہ جو لوگ ونوبا جی کو زمین دے رہے ہیں ان میں کچھ بہت ہی نیک دلی اور تیاگ کی بھاونا سے ایسا کر رہے ہیں . لیکن کچھ لوگوں کے دان میں دوسری بھاونائیں بھی کام کر رہی ہیں . ونوبا جی نے خود اپنے ایک بھاشن میں اِس کا ذکر کیا تھا . بنارس کے کچھ لوگوں کی طرف سے جو ایک ایڈریس سمیلن میں پڑھا گیا تھا اُسمیں بھی یہ صاف کہا گیا تھا کہ اِس بھودان میں کافی حصہ دباؤ کا ہے . سرکاری حکم کے ادھین دان عام طور پر سچا دان نہیں کہا جا سکتا اور نہ اِس طرح کی تحریک کو پھل سکتا ہے .

(8) آجکل کی ہماری کچھ سرکاریں کمیونسٹوں سے بے حد ڈری ہوئی ہیں . ہم اِس ڈر کو غلط' بے بنیاد اور اپنے وِرودھ کو دبانے کا بہانہ مانتے ہیں . ونوبا جی کبھی کبھی کچھ اُصولی باتوں کو سامنے رکھتے ہوئے سرودے اور کمیونزم کا فرق بتاتے رہتے ہیں اور کہتے ہیں کہ اگر سرودے کا یعنی اہنسا کا طریقہ ملک کے غریبوں کو ان کا حق دلانے میں کامیاب نہ ہوا تو پھر ڈر ہے لوگ ہنسا کے غلط طریقے سے کام لیں . اُن کے دائیں بائیں کے کچھ لوگ اُن کے کہنے سے غلط فائدہ اُٹھا کر کہیں کہیں جنتا کو یہ ڈراتے ہیں کہ اگر تم نے ونوبا جی کی بات نہ مانی تو جو گت کوریا اور چین جیسے ملکوں کی بن چکی ہے وہی تمہاری بھی بنیگی . اِن تقریروں میں کمیونسٹوں سے ملک کو خطرہ دکھایا جاتا ہے . اِس طرح کی تقریریں اخباروں تک میں آ چکی ہیں . ہو سکتا ہے اس طرح کی تقریروں سے سرکار کو کمیونسٹوں کے دبانے میں کچھ مدد ملتی ہو لیکن ونوبا جی کی پاک تحریک کا یہ پہلو نہ سچائی سے میل کھاتا ہے اور نہ اس سے تحریک کا مان بڑھتا ہے .

(9) سیواپوری سمیلن میں ایک بات ہمیں یہ بھی دکھائی دے رہی تھی کہ وہاں کی ہوا اور رنگ ڈھنگ ضرورت
[illegible]

उनके दिल में सबके भलाई की चिन्ता और एक दर्जे तक उनकी सच्ची सूझ बूझ में भी किसी तरह का शक नहीं हो सकता. कम ही सही लेकिन गांधी जी जैसी कर्मठता और सत्य की खोज विनोबा जी में साफ़ चमक रही थी.

(4) अपने और सरकार के फ़र्क़ को भी विनोबा जी ने खास कर अपने आखिरी भाशन में काफ़ी साफ़ कर दिया था. उनके कहने का निचोड़ यह था कि सर्वोदय की बुनियाद अहिंसा पर है और सरकारी योजनाओं की बुनियाद हिंसा पर है. सरकार अपने हाथों में बहुत सी ताक़त रखना चाहती है और हमेशा के लिये रखना चाहती है. इस के खिलाफ़ सर्वोदय चाहता है कि सरकार के हाथ में कम से कम ताक़त हो और जनता के हाथों में ज़ियादा से ज़ियादा ताक़त हो. सरकार की ताक़त दिन-दिन घटती रहनी चाहिये और जनता की ताक़त दिन दिन बढ़ती रहनी चाहिये. यहां तक कि एक दिन राज या सरकार बिल्कुल ख़त्म हो जाए और सारी ताक़त जनता के ही हाथों में आ जाए. यही उन्होंने सर्वोदय का असली और आखिरी मक़सद बताया यानी बिना सरकार और बिना फ़ौज की दुनिया. हमारी सरकार यह सब नहीं मानती और कम से कम इसका उल्टा ही चलती है. विनोबा ने यह भी कहा कि जब तक सरकार अपने हाथों में सब ताक़त रखने पर और फ़ौजों और हथियारों पर विश्वास रखती है और 'अहिंसा' शब्द मुंह से निकालती रहती है तब तक उसकी हालत ऐसी ही है जैसे "बग़ल में छुरी और मुंह में राम-राम."

हमने विनोबा जी के यह विचार अपने शब्दों में दिये हैं. हो सकता है कि अगर यह लेख उनके सामने रखा जाय तो वह ऊपर का कोई शब्द बदलना पसंद करें. पर "बग़ल में छुरी और मुँह में राम राम" उन्हीं का फ़िक़रा है. अपनी शक्ति भर हमने उनके ठीक-ठीक विचार पेश किये हैं. हम ख़ुद भी इन विचारों को ठीक मानते हैं. सर्वोदय का अगर कोई आख़री मक़सद हो सकता है तो वही है जो विनोबा जी ने बताया.

(5) सरकारी लोगों की तक़रीरों से साफ़ ज़ाहिर था कि हमारी सरकार विनोबा जी की इस कोशिश को कि सब बे ज़मीन किसानों को ज़मीनें मिल जायें कड़ी हदों के अन्दर रखना चाहती है. लोगों में ज़मीनों के इस तरह के बंटवारे के वह ख़िलाफ़ है. बड़े से बड़े पैमाने पर बड़ी से बड़ी मशीनों के ज़रिये जिस तरह की चकबन्दी करके सरकार खेती कराना चाहती है उसकी भलाई बुराई की बहस हम यहां नहीं कर रहे हैं. यहां हम सिर्फ़ इतना कहना चाहते हैं कि इस बारे में सरकार की राय और विनोबा जी की राय में फ़र्क़ है और हम ख़ुद सरकार की राय को ग़लत और मुल्क के लिये बुरा समझते हैं.

اُن کے دل میں سب کے بھلائی کی چنتا اور ایک درجے تک اُن کی سچی سوجھ بوجھ میں بھی کسی طرح کا شک نہیں ہو سکتا . کم ہی صحیح لیکن گاندھی جی جیسی کرمٹھتا اور ستیہ کی کھوج ونوبا جی میں صاف چمک رہی تھی .

(4) اپنے اور سرکار کے فرق کو بھی ونوبا جی نے خاص کر اپنے آخری بھاشن میں کافی صاف کر دیا تھا . اُن کے کہنے کا نچوڑ یہ تھا کہ سروودے کی بنیاد اہنسا پر ہے اور سرکاری یوجناؤں کی بنیاد ہنسا پر ہے . سرکار اپنے ہاتھوں میں بہت سی طاقت رکھنا چاہتی ہے اور ہمیشہ کے لئے رکھنا چاہتی ہے . اِس کے خلاف سروودے چاہتا ہے کہ سرکار کے ہاتھ میں کم سے کم طاقت ہو اور جنتا کے ہاتھوں میں زیادہ سے زیادہ طاقت ہو . سرکار کی طاقت دن دن گھٹتی رہنی چاہئے اور جنتا کی طاقت دن دن بڑھتی رہنی چاہئے . یہاں تک کہ ایک دن راج یا سرکار بالکل ختم ہو جائے اور ساری طاقت جنتا کے ہی ہاتھوں میں آ جائے . یہی اُنہوں نے سروودے کا اصلی اور آخری مقصد بتایا یعنی بنا سرکار اور بنا فوج کی دنیا . ہماری سرکار یہ سب نہیں مانتی اور کم سے کم اِسکا اُلٹا ہی چلتی ہے . ونوبا جی نے یہ بھی کہا کہ جب تک سرکار اپنے ہاتھوں میں سب طاقت رکھنے پر اور فوجوں اور ہتھیاروں پر وشواس رکھتی ہے اور 'اہنسا' شبد منھ سے نکالتی رہتی ہے تب تک اُسکی حالت ایسی ہی ہے جیسے " بغل میں چھری اور منھ میں رام رام ."

ہم نے ونوبا جی کے یہ وچار اپنے شبدوں میں دیئے ہیں . ہو سکتا ہے کہ اگر یہ لیکھ اُن کے سامنے رکھا جائے تو وہ اوپر کا کوئی شبد بدلنا پسند کریں . پر " بغل میں چھری اور منھ میں رام رام " اُنہیں کا فقرہ ہے . اپنی شکتی بھر ہم نے اُن کے ٹھیک ٹھیک وچار پیش کئے ہیں . ہم خود بھی اِن وچاروں کو ٹھیک مانتے ہیں . سروودے کا اگر کوئی آخری مقصد ہو سکتا ہے تو وہی ہے جو ونوبا جی نے بتایا .

(5) سرکاری لوگوں کی تقریروں سے صاف ظاہر تھا کہ ہماری سرکار ونوبا جی کی اِس کوشش کو کہ سب بےزمین کسانوں کو زمینیں مل جائیں کڑی حدوں کے اندر رکھنا چاہتی ہے . لوگوں میں زمینوں کے اِس طرح کے بٹوارے کے وہ خلاف ہے . بڑے سے بڑے پیمانے پر بڑی سے بڑی مشینوں کے ذریعہ جس طرح کی چک بندی کر کے سرکار کھیتی کرانا چاہتی ہے اُسکی بھلائی برائی کی بحث ہم یہاں نہیں کر رہے ہیں . یہاں ہم صرف اتنا کہنا چاہتے ہیں کہ اِس بارے میں سرکار کی رائے اور ونوبا جی کی رائے میں فرق ہے اور ہم خود سرکار کی رائے کو غلط اور ملک کے لئے برا سمجھتے ہیں .

...श की जाये. अगले साल एक कुल भारत सम्मेलन ...जो पहला सर्वोदय सम्मेलन कहलाया. उसी सिलसिले ...रकार की पांच साला योजना के जवाब में एक ...य योजना भी मुल्क के सामने रक्खी गई. उसी ...सिले में आगे चल कर विनोबा जी ने अपना 'भूदान ... शुरू किया. हर साल सर्वोदय सम्मेलन भी होते ...न में सेवापुरी सम्मेलन चौथा सम्मेलन था.

...वापुरी सम्मेलन में देश के अलग अलग प्रान्तों से ...र लगभग डेढ़ हज़ार सेवक और लगभग उतने ही ... शामिल हुये थे. सेवकों में अधिकतर ऐसे थे जो ... अपनी जगह गांधी जी के बताये तरह तरह के ...मक कामों में लगे हुये हैं. इन तीन हज़ार के ...वा दो तीन हज़ार स्त्री पुरुश आस पास के गांवों ... जलसों में शरीक होते रहते थे. सम्मेलन में खास विनोबा जी के भूदान यज्ञ पर हुई और अगले साल ...ये उसकी तैयारियां की गईं.

...र्वोदय और विनोबा जी के भूदान यज्ञ के बारे में ... तरह तरह के विचार फैले हुये हैं. तीन दिन तक ...री सम्मेलन में रह कर हम जिन नतीजों पर पहुंचे ...ह हैं :—

1) सम्मेलन में जो सेवक जमा हुये थे उनमें से ...तर सेवक सच्चे, त्यागी और लगन से काम करने ...थे. यह देख कर दिल को कुछ संतोश होता था कि ...जी के बाद देश में अभी तक इतने सच्चे काम करने ...ौजूद हैं. इनमें भी अधिकतर वह थे जिनका कांगरेस ...स सम्बन्ध नहीं है. कुछ कांगरेसी भी थे. दोनों में ...फ़ दिखाई देता था.

2) इन काम करने वालों के अलावा सम्मेलन में सरकार के आदमी भी थे, जिन में दिल्ली सरकार ... वज़ीर और अफ़सर और कुछ प्रान्तीय सरकारों ...र वग़ैरा भी थे. उनमें से कई ने सम्मेलन में हिस्सा ...और बोले भी. यहां भी सरकारी और ग़ैर सरकारी ...में फ़र्क़ साफ़ दिखाई देता था. सरकारी लोग ...जी के भूदान यज्ञ और खास कर उसके असली ... के पूरा होने में तरह तरह की कठिनाइयाँ बताते ...के और विनोबा जी के या सर्वोदय के सोचने के ...में भी फ़र्क़ था. आज कल की अंतरक़ौमी भाशा ...लोग सरकार की तरफ़ से 'आबज़रवर' की तरह ... मुग़ल बादशाहों की बोली में 'ख़बर रसां.'

...) जिस किसी ने सम्मेलन की सारी कार्यवाही ...न से देखा और विनोबा जी की सब तक़रीरों को ... ...जी की सच्चाई, बेग़र्ज़ी, ज़बरदस्त लगन,

کوشش کی جائے . اگلے سال ایک کل بھارت سمیلن ہوا جو پہلا سرودے سمیلن کہلایا . اسی سلسلے میں سرکار کی پانچسالہ یوجنا کے جواب میں ایک سرودے یوجنا بھی ملک کے سامنے رکھی گئی . اسی سلسلے میں آگے چل کر ونوبا جی نے اپنا ' بھودان یگیہ ' شروع کیا . ہر سال سرودے سمیلن بھی ہوتے رہے جن میں سیواپوری سمیلن چوتھا سمیلن تھا .

سیوا پوری سمیلن میں دیش کے الگ الگ پرانتوں سے آ کر لگ بھگ ڈیڑھ ہزار سیوک اور لگ بھگ اتنے ہی درشک شامل ہوئے تھے . سیوکوں میں ادھک تر ایسے تھے جو اپنی اپنی جگہ گاندھی جی کے بتائے طرح طرح کے رچناتمک کاموں میں لگے ہوئے ہیں . ان تین ہزار کے علاوہ دو تین ہزار استری پرش آس پاس کے گاؤں کے بھی جلسوں میں شریک ہوتے رہتے تھے . سمیلن میں خاص چرچا ونوبا جی کے بھودان یگیہ پر ہوئی اور اگلے سال کے لئے اس کی تیاریاں کی گئیں .

سرودے اور ونوبا جی کے بھودان یگیہ کے بارے میں دیش میں طرح طرح کے وچار پھیلے ہوئے ہیں . تین دن تک سیوا پوری سمیلن میں رہ کر ہم جن نتیجوں پر پہنچے وہ یہ ہیں :—

(1) سمیلن میں جو سیوک جمع ہوئے تھے ان میں سے ادھک تر سیوک سچے ' تیاگی اور لگن سے کام کرنے والے تھے . یہ دیکھکر دل کو کچھ سنتوش ہوتا تھا کہ گاندھی جی کے بعد دیش میں ابھی تک اتنے سچے کام کرنے والے موجود ہیں . ان میں بھی ادھک تر وہ تھے جن کا کانگریس سے خاص سمبندھ نہیں ہے . کچھ کانگریسی بھی تھے . دونوں میں فرق صاف دکھائی دیتا تھا .

(2) ان کام کرنے والوں کے علاوہ سمیلن میں کچھ سرکار کے آدمی بھی تھے ' جن میں دلی سرکار کے کچھ وزیر اور افسر اور کچھ پرانتکی سرکاروں کے وزیر وغیرہ بھی تھے . ان میں سے کئی نے سمیلن میں حصہ لیا اور بولے بھی . یہاں بھی سرکاری اور غیر سرکاری لوگوں میں فرق صاف دکھائی دیتا تھا . سرکاری لوگ ونوبا جی کے بھودان یگیہ اور خاصکر اس کے اصلی مقصد کے پورا ہونے میں طرح طرح کی کٹھنائیاں بتاتے تھے . ان کے اور ونوبا جی کے یا سرودے کے سوچنے کے طریقوں میں بھی فرق تھا . آجکل کی انتر قومی بھاشا میں یہ لوگ سرکار کی طرف کے ' آبزرور ' کی طرح تھے اور مغل بادشاہوں کی بولی میں 'خبر رساں' .

(3) جس کسی نے سمیلن کی ساری کاروائی کو دھیان سے دیکھا اور ونوبا جی کی سب تقریروں کو سنا [illegible]

हमारी राय

ہماری رائے

सर्वोदय सम्मेलन

तेरह, चौदह और पन्द्रह अप्रैल सन 52 को सेवापुरी ला बनारस में कुल भारत सर्वोदय सम्मेलन का जलसा आ. हम उसमें शरीक थे. 'सर्वोदय' संस्कृत का शब्द है. धी जी ने इसे अपनी किताबों में बरता है. इसके मानी सब की बढ़ोती, सब की भलाई या सब का विकास.

इस तरह के सर्वोदय सम्मेलन देश में चार साल से शुरू ए हैं. गांधी जी के उठ जाने के कुछ दिन बाद वर्धा में ा के रचनात्मक काम करने वालों की एक कानफ्रेंस हुई ी. गांधी जी उसमें जाने वाले थे. कानफ्रेंस के सामने वह पनी यह तजवीज़ रखने वाले थे कि कांगरेस का काम अब चुका इसलिये कांगरेस को खत्म करके सब कांगरेसियों हकूमत दूसरे देशवासियों के सुपुर्द करके खुद रकारी ओहदों से निकल आना चाहिये और बाहर के ूरे सेवकों के साथ मिलकर गांव गांव की जनता में चे से वह ताक़त पैदा करनी चाहिये जिससे जनता रकार के सहारे न रह कर अपने पैरों पर खड़ी हो सके ौर सरकार को भी अपनी राय के मुताबिक़ चला सके. धी जी की राय में राज काजी आज़ादी के साथ साथ ल्क में समाजी और माली आज़ादी लाने का यही ीक़ा हो सकता था.

गांधी जी की यह भी राय थी कि अगर कांगरेस इस ाम को न करे तो कांगरेस से अलग हो कर रचनात्मक ाम करने वालों को यह काम अपने हाथ में लेना ाहिये.

गांधी जी के बाद कानफ्रेंस वर्धा में हुई. उसमें बहुत ी बातें हुईं. कुछ काम की बातें भी हुईं. पर गांधी जी ी वह तजवीज़ सामने न आई. क्योंकि जिन लोगों के ाथों में उस नई कानफ्रेंस की बाग थी उन्हें गांधी जी ी उस तजवीज़ में विश्वास नहीं था.

कानफ्रेंस के बाद कुछ लोगों को यह सूझा कि गांधी ी की उस तजवीज़ का थोड़ा बहुत अमली रूप देने की

سروودے سمیلن

تیرہ، چودہ اور پندرہ اپریل سن 52 کو سیوا پوری ضلع بنارس میں کل بھارت سروودے سمیلن کا جلسہ ہوا. ہم اس میں شریک تھے. ' سروودے ' سنسکرت کا شبد ہے. گاندھی جی نے اسے اپنی کتابوں میں برتا ہے. اس کے معنی ہیں سب کی بڑھوتی، سب کی بھلائی یا سب کا وکاس.

اس طرح کے سروودے سمیلن دیش میں چار سال سے شروع ہوئے ہیں. گاندھی جی کے اٹھ جانے کے کچھ دن بعد وردھا میں دیش کے رچناتمک کام کرنے والوں کی ایک کانفرنس ہوئی تھی. گاندھی جی اس میں جانے والے تھے. کانفرنس کے سامنے وہ اپنی یہ تجویز رکھنے والے تھے کہ کانگریس کا کام اب ہوچکا اس لئے کانگریس کو ختم کر کے سب کانگریسیوں کو حکومت دوسرے دیش واسیوں کے سپرد کر کے خود سرکاری عہدوں سے نکل آنا چاہئے اور باہر کے دوسرے سیوکوں کے ساتھ مل کر گاؤں گاؤں کی جنتا میں نیچے سے وہ طاقت پیدا کرنی چاہئے جس سے جنتا سرکار کے سہارے نہ رہ کر اپنے پیروں پر کھڑی ہوسکے اور سرکار کو بھی اپنی رائے کے مطابق چلا سکے. گاندھی جی کی رائے میں راج کاجی آزادی کے ساتھ ساتھ ملک میں سماجی اور مالی آزادی لانے کا یہی طریقہ ہو سکتا تھا.

گاندھی جی کی یہ بھی رائے تھی کہ اگر کانگریس اس کام کو نہ کرے تو کانگریس سے الگ ہو کر رچناتمک کام کرنے والوں کو یہ کام اپنے ہاتھ میں لینا چاہئے.

گاندھی جی کے بعد کانفرنس وردھا میں ہوئی. اس میں بہت سی باتیں ہوئیں. کچھ کام کی باتیں بھی ہوئیں. پر گاندھی جی کی وہ تجویز سامنے نہ آئی. کیونکہ جن لوگوں کے ہاتھوں میں اس نئی کانفرنس کی باگ تھی انہیں گاندھی جی کی اس تجویز میں وشواس نہیں تھا.

کانفرنس کے بعد کچھ لوگوں کو یہ سوجھا کہ گاندھی جی کی اس تجویز کو تھوڑا بہت عملی روپ دینے کی

3. मास्को में जग आर्थिक कान्फ्रेंस शुरू हुई. नीशिया में तीन सौ गिरफ़्तारियां. लाल चीन पर ला करने के लिये च्यांगी फ़ौज की तैयारी.

4. यूनो की हिफ़ाज़ती कौन्सिल में फ़्रांस ने नीशिया के मसले को शामिल करने के सुझाव का ोध किया. अमरीकन फ़ौज ने कीड़ों की मदद से यार बनाने के लिये अपनी कांगरेस से पैसा मांगा. टर राधा कृश्नन रूस के सच्चे हमदर्द हैं—रूसी परदेश नेस्टर विशिन्सकी. चीन पच्छिम योरप के सभी देशों योपार को तैयार—मास्को की सभा में चीनी नुमाइन्दे एलान.

5. हिफ़ाज़ती कौन्सिल की बैठक मुल्तवी. कौन्सिल अकसर मेम्बरों की राय रही कि टियूनीशिया तो फ़्रांस घरेलू चीज़ है.

6. दक्खिन अफ़्रीक़ा में काले क़ानून के ख़िलाफ़ दुस्तानियों का सत्याग्रह शुरू. योरप में लड़ाई का ख़तरा हो रहा है—अंगरेज़ी परदेश मिनिस्टर एडिन का ान.

7. चर्चिल ने कहा कि तीन बड़ों की मीटिंग से मुझे ी होगी. हिन्दुस्तान और इटली में ब्योपारी समझौता.

8. अमरीका की 31,000 तारवालों की हड़ताल में ,000 टेलीफ़ोन वालों ने भी शिरकत की. अंगरेज़ व त्र वालों की बात चीत ख़त्म होने का अन्देशा.

9. बड़े लिब्या में फ़ौज और पुलिस ने "बे ख़ूनी ़लाब" के ज़रिये सरकार को उलट दिया. राजा जी ने स की केबिनेट में 15 मिनिस्टर रखे.

10. अमरीका के लोहा ब्योपारियों ने एक "गन्दी ़ काजी हरकत" में शरीक होने का इलज़ाम राजपति न पर लगाया. जर्मनी के बारे में रूस के नये सुझाव.

11. मास्को के अन्दर लड़ाई का वातावरन नहीं— टर राधा कृश्नन. नई चीन सरकार हिन्दुस्तान को ल देगी. हिसार में पानी की कमी, तीस हज़ार लोग र बार.

12. मिस्र के जो चुनाव 18 मई को होने वाले थे ी टाल दिये गये. कलकत्ते में कुल हिन्द अख़बार ाों की फ़ेडरेशन का सालाना इजलास.

13. रूस सचमुच अमन चाहता है—डाक्टर राधा न. कोरिया में "शायद पहली मई तक" समझौता हो . सेवापुरी (ज़िला-बनारस) में सर्वोदय सम्मेलन.

14. टियूनीशिया में गिरफ़्तारी. दक्खिन अफ़्रीक़ा सरकार अपनी गोरी नीति पर अटल.

15. यूनो कौन्सिल में टियूनीशिया के मसले पर न होगी.

.3 ماسکو میں جگ آرتھک کانفرنس شروع ہوئی ۔ تیونیشیا میں تین سو گرفتاریاں ۔ لال چین پر حملہ کرنے کے لئے چیانگی فوج کی تیاری ۔

.4 یونو کی حفاظتی کونسل میں فرانس نے تیونسیا کے مسئلے کو شامل کرنے کے سجھاؤ کا وِرودھ کیا ۔ امریکن فوج نے کیڑوں کی مدد سے ہتھیار بنانے کے لئے اپنی کانگریس سے پیسہ مانگا ۔ ڈاکٹر رادھا کرشنن روس کے سچے ہمدرد ہیں—روسی پردیش منسٹر وشنسکی ۔ چین پچھم یورپ کے دیشوں سے بیوپار کو تیار— ماسکو کی سبھا میں چینی نمائندے کا اعلان ۔

.5 حفاظتی کونسل کی بیٹھک ملتوی ۔ کونسل کے اکثر ممبروں کی رائے رہی کہ تیونشیا تو فرانس کی گھریلو چیز ہے ۔

.6 دکھن افریقہ میں کالے قانون کے خلاف ہندستانیوں کا ستیاگرہ شروع ۔ یورپ میں لڑائی کا خطرہ کم ہو رہا ہے—انگریزی پردیش منسٹر ایڈن کا اعلان ۔

.7 چرچل نے کہا کہ تین بڑوں کی میٹنگ سے مجھے خوشی ہوگی ۔ ہندستان اور اِٹلی میں بیوپاری سمجھوتہ ۔

.8 امریکہ کی 31,000 تاروالوں کی ہڑتال میں 70,000 ٹیلیفون والوں نے بھی شرکت کی ۔ انگریز و مصر والوں کی بات چیت ختم ہونے کا اندیشہ ۔

.9 بڑے لیبیا میں فوج اور پولیس نے "بے خونی انقلاب" کے ذریعے سرکار کو اُلٹ دیا ۔ راجہ جی نے مدراس کی کیبنٹ میں 15 منسٹر رکھے ۔

.10 امریکہ کے لوہا بیوپاریوں نے ایک "گندی راج کاجی حرکت" میں شریک ہونے کا اِلزام راج پتی ٹرومین پر لگایا ۔ جرمنی کے بارے میں روس کے نئے سجھاؤ ۔

.11 ماسکو کے اندر لڑائی کا واتاورن نہیں— ڈاکٹر رادھا کرشنن ۔ نئی چین سرکار ہندستان کو چاول دے گی ۔ حسار میں پانی کی کمی' تیس ہزار لوگ بے گھربار ۔

.12 مصر کے جو چناؤ 18 مئی کو ہونے والے تھے ابھی ٹال دیئے گئے ۔ کلکتے میں کل ہند اخبار نویسوں کی فیڈریشن کا سالانہ اِجلاس ۔

.13 روس سچ مچ امن چاہتا ہے—ڈاکٹر رادھا کرشنن ۔ کوریا میں "شائد پہلی مئی تک" سمجھوتہ ہو جائے ۔ سیوا پوری (ضلع بنارس) میں سرووَدے سمیلن ۔

.14 تیونشیا میں گرفتاری ۔ دکھن افریقہ کی سرکار اپنی گوری نیتی پر اٹل ۔

.15 یونو کونسل میں تیونشیا کے مسلے پر چرچہ نہ ہوگی ۔

23. हैदराबाद असेम्बली में निज़ाम साहब की
रीर के वक़्त मुख़ालिफ़ लोग बाहर चले गये. ट्रावनकोर
चीन सरकार ने कम्युनिस्टों पर से पाबन्दी हटा ली.

24. अंगरेज़ों व सऊदी अरब वालों की बात चीत
हो गई. हिन्दुस्तान को पचास लाख डालर का सामान
ला देगा. कांगरेस ने राजपति और छोटे राजपति के
राजेन्द्र बाबू और डाक्टर राधा कृष्णन के नाम चुने.

25. ग्राहम को कश्मीर का मामला तय हो जाने
आशा—वह जिनेवा को रवाना हुए. जरमनी के मामले
सोवियत रूस के सुझावों को पच्छिमी मुल्कों ने मानने
नकार कर दिया.

26. तियूनिस में ख़तरे की हालत का एलान; मिनिस्टर
फ़्तार, शहर में करफ़्यू. अमरीकी मदद की मातहती
न्दुस्तान में 65 जगह स्कीमें चलाई जायेंगी.

27. तियूनीशिया के लिये फ़्रांस वालों के नये सुझाव.
मीर में ज़मींदारों को कोई मावज़ा नहीं दिया जायेगा.
ड़ा मिल वालों को सरकार ने सहूलियतें कर दीं.

28. अंगरेज़ी पार्लियामेन्ट ने पास किया कि सेरित्से
मा, हमेशा के लिये वामंगवाटो (अफ़्रीक़ा की एक
नी जाति) दल की मुखियागीरी से ख़ारिज. अमरीका
स पांच साल में इतने एटम बम हो जायेंगे कि दुनिया
र आदमी का सफ़ाया कर सके. बम्बई में अनाज के
थोड़े किये जाने का अनाज मिनिस्टर का एलान.

29. कोलम्बो योजना पर करांची में चर्चा ख़त्म हुई.
वज़ीर नेहरू ने व्योपारियों को चेतावनी दी कि जनता
त का ख़याल रखें.

30. राजपति ट्रूमन अगले चुनाव में खड़े नहीं
. तेहरान में मार्शल ला. कश्मीर असेम्बली सोलह आने
मुख़्तार है—शेख़ अब्दुल्ला का एलान.

31. अमरीका को चाहिये कि लाल चीन को एक
था समझे—बेवन की तक़रीर. श्री राजगोपालचारी
स असेम्बली की कांगरेस पार्टी के मुखिया चुने गये.
की पैदावार में आमतौर से कमी हुई है—रिज़र्व बैंक
रेपोर्ट.

अप्रैल.

1. आलमगीर लड़ाई का ख़तरा बड़ा नहीं है—
लिन का अमरीकन अख़बार वालों को जवाब. ख़ान
ल ग़फ़्फ़ार ख़ां लाहौर सेन्ट्रल जेल से मेयो अस्पताल
ाये गये. पाकिस्तान 15 देशों की मदद से तियूनीशिया
सवाल यूनो में पेश करेगा. राजा जी ने मद्रास के बड़े
र का काम संभाला.

2. नई कोलम्बो योजना में 1840 करोड़ रुपये की
2300 करोड़ की तजवीज़. हिन्द सरकार 25,000
चीनी परदेश भेजने का सुभीता करेगी.

23. حیدرآباد اسمبلی میں نظام صاحب کی
تقریر کے وقت مخالف لوگ باہر چلے گئے. ٹراونکور کوچین
سرکار نے کمیونسٹوں پر سے پابندی ہٹالی .

24. انگریزوں و سعودی عرب والوں کی بات چیت
فیل ہوگئی . ہندستان کو پچاس لاکھ ڈالر کا سامان کناڈا
دیگا . کانگریس نے راج پتی اور چھوٹے راج پتی کے لئے راجیندر
بابو اور ڈاکٹر رادھا کرشنن کے نام چنے .

25. گراہم کو کشمیر کا معاملہ طے ہوجانے کی آشا —
وہ جنیوا کو روانہ ہوئے . جرمنی کے معاملے پر سوویت
روس کے سجھاؤوں کو پچھمی ملکوں نے ماننے سے انکار
کر دیا .

26. تیونس میں خطرے کی حالت کا اعلان؛
منسٹر گرفتار، شہر میں کرفیو . امریکی مدد کی ماتحتی
میں . ہندستان میں 65 جگہ اسکیمیں چلائی جائینگی .

27. تیونیسیا کے لئے فرانس والوں کے نئے سجھاؤ .
کشمیر میں زمینداروں کو کوئی معاوضہ نہیں دیا جائے
گا . کپڑا مل والوں کو سرکار نے سہولیتیں کر دیں .

28. انگریزی پارلیامنٹ نے پاس کیا کہ سیرتسے
خاما، ہمیشہ کے لئے وامنگ واٹو (افریقہ کی ایک پرانی
جاتی) دل کی مکھیا گیری سے خارج . امریکہ کے پاس
پانچ سال میں اتنے ایٹم بم ہو جائینگے کہ دنیا میں ہر
آدمی کا صفایا کر سکے . بمبئی میں اناج کے دام تھوڑے
کئے جانے کا اناج منسٹر کا اعلان .

29. کولمبو یوجنا پر کراچی میں چرچہ ختم ہوئی.
بڑے وزیر نہرو نے بیوپاریوں کو چیتاونی دی کہ جنتا کے
ہت کا خیال رکھیں .

30. راج پتی ٹرومین اگلے چناؤ میں کھڑے نہیں
ہونگے . طہران میں مارشل لا . کشمیر اسمبلی سولہ آنے
خود مختار ہے — شیخ عبداللہ کا اعلان .

31. امریکہ کو چاہئے کہ لال چین کو ایک واقعہ
سمجھے — بیون کی تقریر . شری راج گوپالچاری مدراس
اسمبلی کی کانگریس پارٹی کے مکھیا چنے گئے . کھیتی
کی پیداوار میں عام طور سے کمی ہوئی ہے — رزرو بینک
کی رپورٹ .

اپریل .

1. عالم گیر لڑائی کا خطرہ بڑا نہیں ہے — اسٹالن
کا امریکی اخبار والوں کو جواب . خان عبدالغفار خاں
لاہور سینٹرل جیل سے میو اسپتال لے جائے گئے .
پاکستان 15 دیشوں کی مدد سے تیونشیا کا سوال یونو
میں پیش کرے گا . راجہ جی نے مدراس کے بڑے وزیر کا
کام سنبھالا .

2. نئی کولمبو یوجنا میں 1840 کروڑ روپے کی جگہ
2300 کروڑ تجویز . ہند سرکار 25,000 ٹن چینی
پردیش بھیجنے کا سبھیتا کرے گی .

नेया का ाल



دنیا کا ال

जोम्सबर्ग में अफ़्रीक़नों की बग़ावत. पीकिंग रेडियो का जर्म छोड़ने का अमरीका पर फिर लगाया. योरप को अमरीका से ज़ियादा ख़तरा है न कि स्तालिन से—बेविन का बयान.
अमरीकनों के ऊपर लाल कम्यूनिज़्म का हौवा है—श्रीमती रूज़वेल्ट का इलाहाबाद में बयान. जनरल रिजवे ने जापान को हथियार तैयार करने का हुक्म दिया. वर्ल्ड बैंक मिशन ईरान से रवाना हो गया. नेहरू ने बुलसर (ज़िला सूरत) में अंगरेज़ी दवाइयाँ बनाने का एक हिन्द अमरीकी कारख़ाना खोला.
मिस्र के नये बड़े वज़ीर पुराने दो वज़ीरों को नज़र बन्द कर दिया. सुप्रीम कोर्ट ने नायब एडीटर को फ़ौरन छोड़ने का हुक्म दिया.
अमरीकी विदेशी मदद प्रोग्राम के बारे में टीका करने वालों को जवाब दिया. हिन्दुस्तान ने अफ़्रीक़ा के मामले में यूनो कमीशन का मेम्बर होने से इनकार कर दिया. अलीपुर में भी जिन्ना ने एक टकसाल का उद्घाटन किया.
दक्खिन अफ़्रीक़ा की सुप्रीमकोर्ट ने गोरे क़ानून को नाजायज़ ठहराया. हिन्दुस्तान के चुनाव के झुकाव पर अमरीका को परेशानी. डाक्टर मलान सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले को ठुकरा देंगे.
हिन्दुस्तान का बंटवारा एक बड़ी भारी ग़ल्ती थी—तुर्की डेलीगेशन का बयान. जूट और रेशम के मिल मालिकों ने कमी के कारन काम के घंटे कम कर दिये.
अरब 'मिडिल ईस्ट डिफ़ेन्स' स्कीम में हिस्सा नहीं लेंगे—आज़म पाशा का एलान. लंका के बड़े वज़ीर गुज़र गये. फ़रवरी के महीने में हिन्दुस्तान में बाहर से आने वाले की क़ीमत जाने वाले से क़रीब 33 करोड़ रुपये ज़ियादा थी. कलकत्ते में कुल हिन्द कांगरेस की बैठक में चार आने मेम्बरी क़ानून पास हुआ. इलाहाबाद

مارچ ۔

16. جونسبرگ میں افریقنوں کی بغاوت ۔ پیکنگ ریڈیو نے کیڑا یا جرم چھوڑنے کا امریکہ پر پھر الزام لگایا ۔ یوروپ کو امریکہ سے زیادہ خطرہ ہے نہ کہ اسٹالن سے— بیون کا بیان ۔

17. امریکنوں کے اوپر لال کمیونزم کا ہوا چھایا ہوا ہے—شریمتی روزویلٹ کا الہ آباد میں بیان ۔ جنرل رجوے نے جاپان کو ہتھیار تیار کرنے کا حکم دیا ۔ ورلڈ بینک مشن ایران سے روانہ ہوگیا ۔ بڑے منتری نہرو نے بلسر (ضلع صورت) میں انگریزی دوائیں بنانے کا ایک ہند امریکی کارخانہ کھولا ۔

18. مصر کے نئے بڑے وزیر پرانے دو وفد منسٹروں کو نظر بند کر دیا ۔ سپریم کورٹ نے ' بلٹز ' کے نائب ایڈیٹر کو فوراً چھوڑنے کا حکم دیا ۔

19. امریکی ودیشی مدد پروگرام کے بارے میں ایچیسن نے ٹیکہ کرنے والوں کو جواب دیا ۔ ہندستان نے ساؤتھ افریقہ کے معاملے میں یونو کمیشن کا ممبر ہونے سے صاف انکار کر دیا ۔ علی پور میں شری چنتا منی دیش مکھ نے ایک ٹکسال کا اُدگھاٹن کیا ۔

20. دکھن افریقہ کی سپریم کورٹ نے گورے قانون کو ناجائز ٹھہرایا ۔ ہندستان کے چناؤ کے جھکاؤ پر امریکہ پریشانی ۔ ڈاکٹر ملان سپریم کورٹ کے فیصلے کو ٹھکرا دیں گے ۔

21. ہندستان کا بٹوارہ ایک بڑی بھاری غلطی تھی—ترکی ڈیلی گیشن کا بیان ۔ جوٹ اور ریشم کے مل مالکوں نے کمی کے کارن کام کے گھنٹے کم کر دیئے ۔

22. عرب ' مڈل ایسٹ ڈفینس ' سکیم میں حصہ نہیں لے گا— اعظم پاشا کا اعلان ۔ لنکا کے بڑے وزیر سینانائکے گذر گئے ۔ فروری کے مہینے میں ہندستان میں باہر سے آنے والے کی قیمت جانے والے سے قریب 83 کروڑ روپئے زیادہ تھی ۔ کلکتے میں کل ہند کانگریس کی بیٹھک میں چار آنے ممبری قانون پاس ہوا ۔ الہ آباد کے نامی

और किताबें

न्दी.

सर्वोदय साहित्य संघ, काशी.

1. तकली—लेखक—श्री सत्यन, सफ़े 186; दाम आना.

2. कपास—लेखक—श्री सत्यन, सफ़े 55; दाम आठ आना.

3. गांधीजी के प्रमुख अनुयायी—लेखक श्री सत्यन; फ़े 62; दाम बारह आना.

4. कताई शास्त्र—लेखक श्री सत्यन; सफ़े 314; दाम ीन रुपये चार आना.

5. आदर्श स्मारक (उपनाम) अछूत की जीवात्मा—खक—डाक्टर ओम प्रकाश गुप्ता, निकालने वाले—धान हरिजन सेवक संघ, कुमार कुंज, मुरादाबाद; सफ़े 7; दाम आठ आना.

6. सोने की कला—लेखक—डाक्टर हीरालाल; नेकालने वाले—निरोगी ग्रंथ माला, 32/97, बगिया मनीराम, ानपुर; सफ़े 56; दाम बारह आना.

7. हमारा अर्थशास्त्र कैसा हो?—सम्पादक—भगवान ास केला; निकालने वाले—भारतीय ग्रन्थमाला, दारागंज, लाहाबाद; पहली बार; सफ़े 42; दाम चार आने.

8. अन्तर्राष्ट्रवाद और राष्ट्रवाद—लेखक—ल्यू शाओ-ची; अनुवादक—मधुकर बागले; निकालने वाले—जन साहित्य सदन इन्दौर; सफ़े 54, दाम चौदा आना.

ंगरेज़ी.

1. ए गांधी एन्थोलाजी, लेखक—वालजी गोविन्द जी देसाई; निकालने वाले—नव जीवन अहमदाबाद; पहली बार, सफ़े 59; दाम आठ आना.

2. एजूकेशन इन यूनीवर्सिटीज़ इन इंडिया—948-49; सफ़े 177; दाम सात रुपया आठ आने.

3. एजूकेशन स्टेटिक्स इन इंडियन स्टेट्स—सफ़े 51; ाम दो रुपया दस आने.

اور کتابیں

ہندی .

سرودے ساہتیہ سنگھ، کاشی .

1. تکلی—لیکھک—شری ستین، صفحے 186؛ دام چھ آنہ .

2. کپاس—لیکھک—شری ستین، صفحے 55؛ دام آٹھ آنے .

3. گاندھی جی کے پرمکھ انویائی—لیکھک شری ستین؛ صفحے 62؛ دام بارہ آنے .

4. کتائی شاستر—لیکھک شری ستین؛ صفحے 314؛ دام تین روپئے چار آنہ .

5. آدرش اسمارک (اپنام) اچھوت کی جیو آتما—لیکھک—ڈاکٹر اوم پرکاش گپتا، نکالنے والے—پردھان ہریجن سیوک سنگھ، کمار کنج، مرادآباد؛ صفحے 57؛ دام آٹھ آنہ .

6. سونے کی کلا—لیکھک ڈاکٹر ہیرا لال؛ نکالنے والے—نروگی گرنتھ مالا، 97/ 32 بگیا منی رام، کانپور؛ صفحے 56؛ دام بارہ آنہ .

7. ہمارا ارتھ شاستر کیسا ہو؟—سمپادک—بھگوان داس کیلا؛ نکالنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا، دارا گنج، الہ آباد؛ پہلی بار؛ صفحے 42؛ دام چار آنہ .

8. انتر راشٹر واد اور راشٹرواد—لیکھک—لیو شاؤ-چی؛ انوادک—مدھوکر باگلے؛ نکالنے والے—جن ساہتیہ سدن، اندور؛ صفحے 54، دام چودہ آنے .

انگریزی .

1. اے گاندھی انتھولاجی، لیکھک—والجی گووند جی دیسائی؛ نکالنے والے—نوجیون، احمدآباد؛ پہلی بار، صفحے 59؛ دام آٹھ آنہ .

2. ایجوکیشن ان یونیورسیٹیز ان انڈیا 1948-49؛ صفحے—177؛ دام سات روپیہ آٹھ آنے .

3. ایجوکیشنل اسٹیٹکس ان انڈین اسٹیٹس—صفحے 51؛ دام دو روپیہ دس آنے .

चिन्ता रहित जीवन

लेखक, श्री अवध बिहारी लाल वानप्रस्थी, सम्पादक, डाक्टर शांति देव, प्रकाशक, आदर्श स्वास्थ्य प्रकाशन, 17 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ; सफ़े 99, दाम एक रुपया, जिल्द के साथ सवा रुपये.

यों तो आजकल दुनिया में हर कोई दुखी और परेशान दिखाई देता है और उससे बचने की कोशिश भी करता है. लेकिन मर्ज़ बढ़ता गया जितनी दवा की. वजह शायद यह है कि चीज़ की जड़ में बहुत कम लोग जाते हैं, और वह है चिंता या फ़िक्र करना. किसी ने सच कहा है कि चिता शरीर को जलाती है लेकिन चिन्ता मन को जलाती है. इसलिये चिन्ता पर कुल्हाड़ा चलाए बिना कोई कामयाबी नहीं हो सकती. डाक्टर अवध बिहारी लाल वानप्रस्थी ने इस गुर को अपने जीवन में निभाया है और वह हर दम खुश रह कर बिना चिन्ता का जीवन बिताते हैं. इसीलिये वह 'चिन्ता रहित जीवन' लिखने के हक़दार हैं और हम उनकी इस किताब का दिल से स्वागत करते हैं.

इस किताब को किताब कहने में हमें थोड़ी सी झिझक मालूम होती है, क्योंकि यह प्राकृतिक चिकित्सा के पेशेवर डाक्टर का जमा किया हुआ मसाला नहीं है बल्कि एक ईमानदार और नेक आदमी के गाढ़े तजुर्बों का लाजवाब निचोड़ है. सीधी सादी बातें और रोज़ के जीवन की मिसालें जो इस किताब में दी गई हैं उनको देखकर लेखक की इस समझ और पहुँच का कुछ अन्दाज़ा लगता है. इसमें कोई शक नहीं कि जो भी इस किताब को पढ़ेगा उसकी तबियत खिल उठेगी और वह चाहे कितनी ही उदास क्यों न रहता हो, एक बार ज़ोर से हँसेगा और थोड़ी देर के लिये अपनी चिन्ता भूल जायेगा.

किताब के बारे में हम इतना ज़रूर कहेंगे कि एक रुपया दाम ज़ियादा है और भाषा में भी कहीं कहीं सुधार की गुंजायश है. साथ ही साथ हमारी समझ में नहीं आता कि लेखक के नीचे सम्पादक का नाम क्यों दिया गया है और सम्पादक ने इस किताब में क्या और कितना काम किया है. इसके अलावा हमें यह भी नहीं पता चलता कि 'भूमिका' किस के क़लम से और कब लिखी गई. तारीख़ या सन की शुरू से आख़ीर तक कहीं हवा भी नहीं है. हमें उम्मीद है कि हमारे इन सुझावों पर ध्यान देकर वानप्रस्थी जी अगला एडीशन सस्ता और आसान निकालेंगे जिससे ज़ियादा से ज़ियादा आदमी इससे फ़ायदा उठा कर चिन्ता रहित जीवन बिता सकें.

—कामेश्वर नाथ श्रीवास्तव

چنتا رہت جیون

لیکھک، شری اودھ بہاری لال بان پرستھی، سمپادک، ڈاکٹر شانتی دیو، پرکاشک، آدرش سواستھیہ پرکاشن، 17 امینآباد پارک، لکھنؤ؛ صفحے 99، دام ایک روپیہ، جلد کے ساتھ سوا روپیہ .

یوں تو آج کل دنیا میں ہر کوئی دکھی اور پریشان دکھائی دیتا ہے اور اس سے بچنے کی کوشش بھی کرتا ہے. لیکن مرض بڑھتا گیا جتنی دوا کی . وجہ شاید یہ ہے کہ چیز کی جڑ میں بہت کم لوگ جاتے ہیں، اور وہ ہے چنتا یا فکر کرنا . کسی نے سچ کہا ہے کہ چتا شریر کو جلاتی ہے لیکن چنتا من کو جلاتی ہے . اِس لئے چنتا پر کلہاڑا چلائے بنا کوئی کامیابی نہیں ہو سکتی . ڈاکٹر اودھ بہاری لال بان پرستھی نے اِس گر کو اپنے جیون میں نبھایا ہے اور وہ ہر دم خوش رہ کر بنا چنتا کا جیون بتاتے ہیں . اسی لئے وہ 'چنتا رہت جیون' لکھنے کے حقدار ہیں اور ہم اُن کی اِس کتاب کا دل سے سواگت کرتے ہیں .

اِس کتاب کو کتاب کہنے میں ہمیں تھوڑی سی جھجک معلوم ہوتی ہے، کیونکہ یہ پراکرتک چکتسا کے پیشہ ور ڈاکٹر کا جمع کیا ہوا مسالہ نہیں ہے بلکہ ایک ایماندار اور نیک آدمی کے گاڑھے تجربوں کا لاجواب نچوڑ ہے . سیدھی سادی باتیں اور روز کے جیون کی مثالیں جو اِس کتاب میں دی گئی ہیں اُن کو دیکھکر لیکھک کی اِس سمجھ اور پہنچ کا کچھ اندازہ لگتا ہے . اِسمیں کوئی شک نہیں کہ جو بھی اِس کتاب کو پڑھیگا اُسکی طبیعت کھل اُٹھیگی اور وہ چاہے کتنا ہی اُداس کیوں نہ رہتا ہو، ایک بار زور سے ہنسیگا اور تھوڑی دیر کے لئے اپنی چنتا بھول جائے گا .

کتاب کے بارے میں ہم اتنا ضرور کہینگے کہ ایک روپیہ دام زیادہ ہے اور بھاشا میں بھی کہیں کہیں سدھار کی گنجائش ہے . ساتھ ہی ساتھ ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ لیکھک کے نیچے سمپادک کا نام کیوں دیا گیا ہے اور سمپادک نے اس کتاب میں کیا اور کتنا کام کیا ہے . اِس کے علاوہ ہمیں یہ بھی نہیں پتہ چلتا کہ 'بھومکا' کس کے قلم سے اور کب لکھی گئی . تاریخ یا سن کی، شروع سے آخیر تک کہیں ہوا بھی نہیں ہے . ہمیں اُمید ہے کہ ہمارے اِن سجھاؤں پر دھیان دیکر بان پرستھی جی اگلا ایڈیشن سستا اور آسان نکالیں گے جس سے زیادہ سے زیادہ آدمی اِس سے فائدہ اُٹھا کر چنتا رہت جیون بتا سکیں .

—کامیشور ناتھ شری واستو

हमारे सामने इस अखबार के पहले साल का तीसरा परचा, अप्रैल 1952, मौजूद है. शुरू से आखीर तक हम इसे देख गये तो ऐसा लगा कि यह किसी ब्योपारी फ़ेडरेशन या कारोबारी संघ या और किसी धनी मानी के कारनामों की रिपोर्ट है, या दूसरी निगाह से देखें तो हिन्दुस्तान की मौजूदा पूँजीवादी, फ़ौजीयाना और ग़रीब-चूस सरकार का एक बखान है. तब फिर 'सम्पदा' हम जैसों से तो दूर ही होती चली जायेगी.

लेकिन हम अच्छी तरह जानते हैं कि अर्थ या माल से ताल्लुक़ रखने वाले अखबार हमारे देश की भाषाओं में और ख़ास कर हिन्दी में बहुत थोड़े हैं. इसलिये हमें 'सम्पदा' के आने की ख़ुशी है पर इसकी कामयाबी इसी से नापी जायेगी कि वह जनता के ख़ालिस हितों की कितनी पैरवी करती है और जनता और सरकार व पूँजीपति के बीच की खाई को कितना और किस तरह भरने की कोशिश करती है.

—सुरेश रामभाई

ہمارے سامنے اِس اخبار کے پہلے سال کا تیسرا پرچہ' اپریل 1952' موجود ہے ۔ شروع سے آخیر تک ہم اِسے دیکھ گئے تو ایسا لگا کہ یہ کسی بیوپاری فیڈریشن یا کاروباری سنگھ یا اور کس دھنی مانی کے کارناموں کی رپورٹ ہے' یا دوسری نگاہ سے دیکھیں تو ہندستان کی موجودہ پونجی وادی' فوجیانہ اور غریب چوس سرکار کا ایک بکھان ہے ۔ تب پھر یہ 'سمپدا' ہم جیسوں سے دور ہی ہوتی چلی جائے گی ۔

لیکن ہم اچھی طرح جانتے ہیں کہ ارتھ یا مال سے تعلق رکھنے والے اخبار ہمارے دیش کی بھاشاؤں میں اور خاص کر ہندی میں بہت تھوڑے ہیں۔ اسلئے ہمیں 'سمپدا' کے آنے کی خوشی ہے پر اِس کی کامیابی اِسی سے ناپی جائے گی کہ وہ جنتا کے خالص ہِتوں کی کتنی پیروی کرتی ہے اور جنتا اور سرکار و پونجی پتی کے بیچ کی کھائی کو کتنا اور کس طرح بھرنے کی کوشش کرتی ہے ۔

—سریش رام بھائی

विश्वज्योति

माहवारी परचा; सम्पादक भाई विश्व बंधु और भाई संतराम बी. ए., सालाना चन्दा आठ रुपये; पता—विश्वज्योति, होशियारपुर.

पंजाब के ज़िला होशियारपुर में साधू आश्रम नाम की धार्मिक संस्था काफ़ी अरसे से चल रही है. इसके पीछे कानपुर के नामी सेठ स्वर्गीय लाला धनीराम भल्ला की पूरी ताक़त थी. उनका इरादा एक समाजी, धार्मिक और कलचरी पहलुओं को लेकर एक माहवारी परचा निकालने का था. कुछ मजबूरियों की वजह से उनके जीते जी यह मुमकिन न हो सका. पर उनके जाने के बाद उनके साथियों और उनके दोस्तों ने बड़ी ख़ूबी से इस काम को उठाया और 'विश्वज्योति' निकाल कर भल्ला जी का सपना सच्चा साबित किया.

'विश्वज्योति' मार्च के महीने से निकलना शुरू हुई है. इसके तीन परचे हमारी निगाह से गुज़रे. इनके अन्दर एक मिशनरी भावना और सेवा की लगन मिलती है. हमें उम्मीद है कि देश के मौजूदा ज़हरीले वातावरन में 'विश्वज्योति' एक रहबर का काम करेगा और धार्मिक व समाजी मामलों में लकीर का फ़क़ीर न बन कर सही और सच्चा रास्ता निडर होकर पेश करेगा.

—सुरेश रामभाई

وشو جیوتی

ماہواری پرچہ؛ سمپادک' بھائی وشو بندھو اور سنت رام بی ۔ اے ۔ سالانہ چندہ آٹھ روپئے؛ پتہ—'وشو جیوتی' ہوشیار پور ۔

پنجاب کے ضلع ہوشیار پور میں سادھو آشرم نام کی دھارمک سنستھا کافی عرصے سے چل رہی ہے ۔ اِس کے پیچھے کانپور کے نامی سیٹھ سورگیہ لالہ دھنی رام بھلہ کی پوری طاقت تھی ۔ اُن کا ارادہ سماجی' دھارمک اور کلچری پہلوؤں کو لے کر ایک ماہواری پرچہ نکالنے کا تھا۔ کچھ مجبوریوں کی وجہ سے اُن کے جیتے جی یہ ممکن نہ ہو سکا ۔ پر اُن کے جانے کے بعد اُن کے ساتھیوں اور اُن کے دوستوں نے بڑی خوبی سے اِس کام کو اُٹھایا اور 'وشو جیوتی' نکال کر بھلہ جی کا سپنا سچا ثابت کیا ۔

'وشو جیوتی' مارچ کے مہینے سے نکلنا شروع ہوئی ہے: اس کے تین پرچے ہماری نگاہ سے گذرے ۔ اِن کے اندر' ایک مشنری بھاونا اور سیوا کی لگن ملتی ہے ۔ ہمیں اُمید ہے کہ دیش کے موجودہ زہریلے واتاورن میں 'وشو جیوتی' ایک رہبر کا کام کرے گا اور دھارمک و سماجی معاملوں میں لکیر کا فقیر نہ بن کر صحیح اور سچا راستہ نڈر ہو کر پیش کرے گا ۔

—سریش رام بھائی

...नीत

(हिन्दी डाइजेस्ट), माहवारी परचा, एडीटर—रतन ...ल जोशी, सालाना चन्दा, दस रुपये; पता—नवनीत ...काशन, 341, तार देव, बम्बई—7.

चिकना काग़ज़, रंग बिरंगी छपाई, बढ़िया कवर और ...ढ़ से आख़ीर तक ख़ूबसूरत 'नवनीत' को देख कर ...मारा जी इस तरह ललचा गया मानो ताज़ा मक्खन रखा ...। लेकिन जब मुँह में डाला तो पता चला कि वनस्पति है ...र न क़ै करते बनता है न अन्दर जाने देना. ...सलिये हमारी समझ में नहीं आता कि अपने ...सी 'नवनीत' का स्वागत करें तो किस तरह करें. हमें ...त दुख होता है हिन्दी पर या हम कहें देश पर इस ...रह के अमरीकी हमलों को देख कर. अगर अमरीका से ...सा परचा निकलता होता तो हमें कोई शिकायत नहीं ...ती, लेकिन हिन्दुस्तान से निकलने पर हम इसको हिन्दी ...। डाइजेस्ट या 'नवनीत' मानने से इनकार करते हैं.

हमें नहीं मालूम कि इस अख़बार के पीछे क्या क्या ...र लग रहे हैं पर शैतान को भले किसी ने देखा न हो ...किन अक़्ल से पहचाना तो है. इसी तरह नवनीत से हमें ...। बड़ा डर लगता है कि यह कोका कोला, रीवर फ़िल्म ...र ख़ूबसूरती मैच का मानो अलमबरदार बनकर ...रोपा के वेश में हिन्दी के आंगन में आ घुसा है. हमार ...हने से तो कुछ नहीं होता लेकिन हम चाहते यही हैं ... सम्पादक भाई रतनलाल 'नवनीत' को देसी बनायें और ... हमारे असली व सच्चे रतन व लाल हैं उनको हिन्दी ...सार के सामने पेश करने की कोशिश करें.

—सुरेश रामभाई

نونیت

(هندی ڈائجسٹ) ماهواری پرچه' ایڈیٹر—رتن لال جوشی؛ سالانه چندہ' دس روپئے؛ پته—نونیت پرکاشن' 341' تاردیو' بمبئی 7 .

چکنا کاغذ' رنگ برنگی چھپائی' بڑھیا کور اور شروع سے آخیر تک خوبصورت 'نونیت' کو دیکھکر همارا جی اِس طرح للچا گیا مانو تازہ مکھن رکھا هو . لیکن جب منھ میں ڈالا تو پته چلا که بنسپتی هے اور نه قے کرتے بنتا هے نه اندر جانے دیتا . اس لئے هماری سمجھ میں نہیں آتا که ایسی 'نونیت' کا سواگت کریں تو کس طرح کریں . همیں بہت دکھ هوتا هے هندی پر یا هم کہیں دیش پر اِس طرح کے امریکی حملوں کو دیکھ کر . اگر امریکه سے ایسا پرچه نکلتا هوتا تو همیں کوئی شکایت نه هوتی' لیکن هندستان سے نکلنے پر هم اس کو هندی کا ڈائجسٹ یا 'نونیت' ماننے سے انکار کرتے هیں .

همیں نہیں معلوم که اِس اخبار کے پیچھے کیا کیا زور لگ رهے هیں پر شیطان کو بھلے کسی نے دیکھا نه هو لیکن عقل سے پہچانا تو هے . اِسی طرح نونیت سے همیں بھی بڑا ڈر لگتا هے که یه کوکا کولا 'ریور فلم' اور خوبصورتی میچ کا مانو علمبردار بن کر جوگیا کے ویش میں هندی کے آنگن میں آ گھسا هے همارے چاهنے سے تو کچھ نہیں هوتا لیکن هم چاهتے یہی هیں که سمپادک بھائی رتن لال 'نونیت' کو دیسی بنائیں اور جو همارے اصلی و سچے رتن و لال هیں اُن کو هندی سنسار کے سامنے پیش کرنے کی کوشش کریں .

—سریش رام بھائی

...म्पदा

माहवारी परचा; एडीटर—कृष्ण चन्द्र विद्यालंकार; ...ाना चन्दा, आठ रुपये; पता—सम्पदा, अशोक ...शन मंदिर, रोशन आरा रोड, दिल्ली.

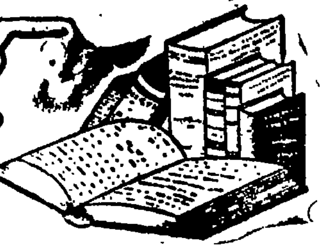
सम्पदा यानी धन या दौलत कई तरह की होती है पर ...स बात इसके बारे में यह है कि यह किस तरह हासिल की ...ती है. अगर हज़ारों लाखों की रोज़ी छीन कर ग़रीबों के ...उजाड़ कर और बे-साधन वालों को तबाह कर यह ...पदा जमा की जाती है तो उसे सम्पदा कहना इन्सानियत ...ख़िलाफ़ ज़्यादती करना है. इसलिये 'सम्पदा' की कसौटी ...री निगाह में यही है कि वह समाज के किस हिस्से की ...पदा या दौलत की नुमायन्दगी करती है और किस का ...ण्डा उठाने को तैयार रहती है.

سمپدا

ماهواری پرچه؛ ایڈیٹر—کرشن چندر ودیالنکار؛ سالانه چندہ' آٹھ روپئے؛ پته—سمپدا' اشوک پرکاشن مندر' روشن آرا روڈ' دلی .

سمپدا یعنی دھن یا دولت کئی طرح کی هوتی هے پر خاص بات اِس کے بارے میں یه هے که یه کس طرح حاصل کی جاتی هے . اگر هزاروں لاکھوں کی روزی چھین کر غریبوں کے گھر اُجاڑ کر اور بے سادھن والوں کو تباہ کر یه سمپدا جمع کی جاتی هے تو اُسے سمپدا کہنا انسانیت کے خلاف زیادتی کرنا هے . اسلئے 'سمپدا' کی کسوٹی هماری نگاہ میں یہی هے که وہ سماج کے کس حصے کی سمپدا یا دولت کی نمائندگی کرتی هے اور کس کا جھنڈا اُٹھانے کو تیار رهتی هے .

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

झाड़ू

माहवारी परचा, एडीटर—गोपाल कृष्ण मलिक और नवरंग प्रसाद जयसवाल, सालाना चन्दा पांच रुपये; पता—झाड़ू, सहर्षा, बिहार.

अप्रैल 1951 में हैदराबाद में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन में विनोबा जी ने सेवकों के सामने एक पंच पहलू प्रोग्राम पेश किया था—अन्दर की भीतरी सफ़ाई, बाहरी सफ़ाई, मेहनत, शान्ति और समर्पन. उनके इस नुसख़े को लेकर बिहार के दो नौ जवान दोस्तों ने—गोपाल कृष्ण मलिक और नवरंग प्रसाद जयसवाल—पिछले फ़रवरी के महीने से "झाड़ू" नाम का रिसाला निकालने की हिम्मत की है.

कौन नहीं जानता कि आज हिन्दुस्तान में सब से नीच समझे जाने वाले झाड़ूदार भंगी से लेकर सबसे ऊँचे माने जाने वाले झाड़ूदार बड़े वज़ीर और राजपती तक की "सफ़ाई" की ज़रूरत है. जब तक ऐसा नहीं होता हमारे यहां का समाजी और आर्थिक तरीक़ा बे-मेल बना रहेगा और यह दिखावटी स्वराज असली स्वराज न साबित होगा. सच कहा जाये तो हम सब के सब भंगी हैं लेकिन 'भंगी' से बदतर हैं क्योंकि झाड़ू ठीक से नहीं लगाते. इसलिये एक नमूने की 'झाड़ू' की सख़्त ज़रूरत है जो दूसरे 'भंगियों' को सही रास्ता बता सके.

इसलिये हम अपने इन दोनों साथियों की 'झाड़ू' का स्वागत करते हैं. इसकी पहली मूँठ की दो सीकें (एक ठीक और दूसरी उससे दोगुनी बड़ी) हमारे सामने हैं. हमें डर लगता है कि अगर इस तरह की छोटी बड़ी सीकें रहें तब झाड़ूदार का हाथ ठीक से न चल सकेगा. लेकिन हम यह जानते हैं कि मजबूरी सब कुछ कराती है और फिर आजकल आज़ाद ख़याल और ईमानदार रिसालों की जो दर्दनाक हालत है उसे देखकर तो यह अन्देशा होता है कि समाज 'झाड़ू' बर्दाश्त नहीं कर सकता. फिर भी अपना फ़र्ज़ अदा करना अपना फ़र्ज़ है. मालिक से हम दुआ करते हैं कि 'झाड़ू' का रास्ता आसान बनता जाये और वह समाज को दिन दिन ज़ियादा ख़ुशनुमा शक्ल दे सके.

—सुरेश रामभाई

جھاڑو

ماھواری پرچہ، ایڈیٹر—گوپال کرشن ملک اور نورنگ پرساد جیسوال، سالانہ چندہ پانچ روپئے؛ پتہ—جھاڑو، سہرشا، بہار.

اپریل 1951 میں حیدرآباد میں ہونے والے سروودے سمیلن میں ونوبا جی نے سیوکوں کے سامنے ایک پنچ پہلو پروگرام پیش کیا تھا—اندر کی بھیتری صفائی، باہری صفائی، محنت، شانتی اور سمرپن. اُن کے اِس نسخے کو لے کر بہار کے دونوں نوجوان دوستوں نے—گوپال کرشن ملک اور نورنگ پرساد جیسوال—پچھلے فروری کے مہینے سے "جھاڑو" نام کا رسالہ نکالنے کی ہمت کی ہے.

کون نہیں جانتا کہ آج ھندستان میں سب سے نیچ سمجھے جانے والے جھاڑودار بھنگی سے لیکر سب سے اونچے مانے جانے والے جھاڑودار بڑے وزیر اور راج پتی تک کی "صفائی" کی ضرورت ہے. جب تک ایسا نہیں ہوتا ہمارے یہاں کا سماجی اور آرتھک طریقہ بے میل بنا رہے گا اور یہ دکھاوٹی سوراج اصلی سوراج نہ ثابت ہوگا. سچ کہا جائے تو ہم سب کے سب بھنگی ہیں لیکن 'بھنگی' سے بدتر ہیں کیوں کہ جھاڑو ٹھیک سے نہیں لگاتے. اس لئے ایک نمونے کی 'جھاڑو' کی سخت ضرورت ہے جو دوسرے 'بھنگیوں' کو صحیح راستہ بتاسکے.

اِس لئے ہم اپنے اِن دونوں ساتھیوں کی 'جھاڑو' کا سواگت کرتے ہیں. اِس کی پہلی موٹھ کی دو سینکیں (ایک ٹھیک اور دوسری اُس سے دوگنی بڑی) ہمارے سامنے ہیں. ہمیں ڈر لگتا ہے کہ اگر اِس طرح کی چھوٹی بڑی سینکیں رہیں تب جھاڑودار کا ہاتھ ٹھیک سے نہ چل سکے گا. لیکن ہم یہ جانتے ہیں کہ مجبوری سب کچھ کراتی ہے اور پھر آج کل آزاد خیال اور ایماندار رسالوں کی جو دردناک حالت ہے اُسے دیکھکر تو یہ اندیشہ ہوتا ہے کہ سماج 'جھاڑو' برداشت نہیں کرسکتا. پھر بھی اپنا فرض ادا کرنا اپنا فرض ہے. مالک سے ہم دعا کرتے ہیں کہ 'جھاڑو' کا راستہ آسان بنتا جائے اور وہ سماج کو دن دن زیادہ خوشنما شکل دے سکے.

—سریش رام بھائی

(3)

सुबह हरे मोर की आंख खुली तो देखा कि मैं बिल्कुल मुंड हूं. वह बहुत घबराया कि अब क्या करूं. कोई दोस्त तो उसका था ही नहीं जो कोई राह बताता. वह घोंसले में अकेला पड़ा रहा.

हरे मोर के पंख कट गये थे. इससे आज दाना चुगने भी नहीं जा सका. जब सारा दिन बीत गया और भूख प्यास से बुरी हालत हो गई तब किसी न किसी तरह पेड़ से नीचे उतरा और खेत की तरफ़ चला.

रास्ते में उसे बतखें और मुर्ग़ियां मिलीं जो हरे मोर को उस हालत में देखकर हंसने लगीं. और बतखें कहने लगीं—

"फ़राफ़र, फ़राफ़र ! कैसी बे शरम चिड़िया है. अपने पर उतारे बाज़ार में नंगी घूम रही है."

मुर्ग़ियां कहने लगीं:

"कटा कट, कटा कट ! मारो तो इस नंग धड़ंग को."

चूज़ों ने जो देखा तो लगे तालियां बजा बजा गाने.

"दुम कट गई, पर झड़ गये फिरते हैं लंडूरे
है है मियां चिरकुट ! है है मियां चिरकुट !"

यह सुन कर हरा मोर बहुत बिगड़ा. और दौड़ा चूज़ों को मारने. जिस चूज़े की तरफ़ जाता वह तो भागता और सब पीछे से चिल्लाने लगते.

"दुम कट गई, पर झड़ गये, फिरते हैं लंडूरे
है है मियां चिरकुट ! है है मियां चिरकुट !"

× × ×

कहीं गश्त लगाते हुये इधर आ निकले सिपाही बिल्ले. उन्होंने जो देखा मोर को तो समझे कि बोटी है. फिर तो वह उस पर झपट पड़े और यह भागा अपनी जान लेकर. सिपाही बिल्ले चिल्लाने लगे—

"अरे बोटी भागी जा रही है ! अरे बोटी भागी जा रही है !"

हरे मोर ने भाग कर बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई और बिल्लों के डर इधर से उधर दुबकता फिरने लगा. आखिर जब भूक प्यास से मरने लगा और बहुत आजिज़ आ गया तो एक गिध के दरवाज़े जाकर कहने लगा:—"ऐ भाई तू मुझे खा ले."

मगर गिध को उस पर तरस आ गया.

हरा मोर वहीं दिन गुज़ारने लगा. उसी का दिया [illegible] खाता, [illegible] का पानी पीता और ग़ुलामों [illegible]

(3)

صبح ہرے مور کی آنکھ کھلی تو دیکھا کہ میں بالکل رنڈمنڈ ہوں ۔ وہ بہت گھبرایا کہ اب کیا کروں ۔ کوئی دوست تو اُس کا تھا ہی نہیں جو کوئی راہ بتاتا ۔ وہ گھونسلے میں اکیلا پڑا رہا ۔

ہرے مور کے پنکھ کٹ گئے تھے ۔ اس سے آج دانا چگنے بھی نہیں جاسکا ۔ جب سارا دن بیت گیا اور بھوک پیاس سے بری حالت ہوگئی تب کسی نہ کسی طرح پیڑ سے نیچے اترا اور کھیت کی طرف چلا ۔

راستے میں اُسے بطخیں اور مرغیاں ملیں جو ہرے مور کو اس حالت میں دیکھکر ہنسنے لگیں۔ اور بطخیں کہنے لگیں—

''فرافر' فرافر ! کیسی بے شرم چڑیا ہے ۔ اپنے پر اُتارے بازار میں ننگی گھوم رہی ہے ۔''

مرغیاں کہنے لگیں :

''کٹاکٹ' کٹاکٹ ! مارو تو اس ننگ دھڑنگ کو''.

چوزوں نے جو دیکھا تو لگے تالیاں بجا بجا چڑھانے.

''دم کٹ گئی' پر جھڑ گئے' پھرتے ہیں لنڈورے
ہے ہے میاں چرکٹ ! ہے ہے میاں چرکٹ !''

یہ سن کر ہرا مور بہت بگڑا ۔ اور دوڑا چوزوں کو مارنے ۔ جس چوزے کی طرف جاتا وہ تو بھاگتا اور سب پیچھے سے چلانے لگتے ۔

''دم کٹ گئی' پر جھڑگئے' پھرتے ہیں لنڈورے
ہے ہے میاں چرکٹ ! ہے ہے میاں چرکٹ!''

کہیں گشت لگاتے ہوئے ادھر آ نکلے سپاہی بلے ۔ اُنہوں نے جو دیکھا مور کو تو سمجھے کہ بوٹی ہے ۔ پھر تو وہ اُس پر جھپٹ پڑے اور یہ بھاگا اپنی جان لے کر ۔

سپاہی بلے چلانے لگے—

''ارے بوٹی بھاگی جا رہی ہے ! ارے بوٹی بھاگی جا رہی ہے !''

ہرے مور نے بھاگ کر بڑی مشکل سے اپنی جان بچائی ۔ اور بلوں کے ڈر سے ادھر ادھر دبکتا پھرنے لگا ۔ آخر جب بھوک پیاس سے مرنے لگا اور بہت عاجز آ گیا تو ایک گدھ کے دروازے جاکر کہنے لگا :—

''اے بھائی تو مجھے کھالے''.

مگر گدھ کو اس پر ترس آگیا ۔

ہرا مور وہیں دن گزارنے لگا ۔ اس کا دیا ہوا سڑا ہوا گوشت کھاتا' سنڈاس کا پانی پیتا اور غلاموں کی طرح اس کا کام کاج کرتا رہتا ۔

रे मोर और लाल मोर के बड़ी भारी भारी चमकदार दुमें निकल आईं. वह खूब नाचने लगे और बागों में घूमने लगे.

× × ×

एक दिन हरे मोर और लाल मोर दोनों ने बाग में मोरनी को देखा. उसकी बड़ी बड़ी आंखें थीं. नाजुक चोंच थी. मुलायम मुलायम पर थे. देखते ही दोनों की तबियत आ गई.

हरे मोर ने मोरनी से कहा—"मोरनी! मोरनी! हम से शादी कर लो."

लाल मोर ने मोरनी से कहा—"मोरनी! मोरनी! हम से शादी कर लो."

फिर दोनों ने मोरनी को अपना अपना नाच दिखाया.

मोरनी ने देखा कि दोनों मोर बहुत खूबसूरत हैं और दोनों बहुत अच्छा नाचते हैं. वह बहुत चकराई कि मैं किस से शादी करूं, और किस से न करूं. कहने लगी—"जाओ, मैं तुम दोनों का इम्तहान लूँगी. जो उसमें पूरा उतरा उसी के साथ शादी करूँगी."

× × ×

मोरनी की एक सहेली थी—चुहिया. वह शहर में रहती थी. मोरनी ने उसको बुला भेजा. जब वह आई तो मोरनी ने उससे कहा—

"अरे बहन चुहिया, तुम तो आदमियों में रहती हो. उनकी बातें जानती हो. तब जानूं कोई ऐसी तदबीर करो जिससे यह पता चल जाये कि लाल मोर अच्छा है या हरा." चुहिया ने जवाब दिया—"सहेली! तुम जरा भी फिकर न करो. मैं ऐसी ही तदबीर करती हूँ. तुम्हें क्या सारी दुनिया को पता चल जायेगा कि कौन मोर अच्छा है."

× × ×

जब आधी रात इधर, आधी रात उधर हुई और सारा संसार सो गया तब चुहिया काला कम्बल ओढ़ कर निकली. दबे पांव हरे मोर के घोंसले में आई. देखा कि वह पड़ा बेखबर सो रहा है. वह चुपके चुपके उसके पर कुतरने लगी.

हरा मोर सोते का सोता रह गया और चुहिया उसकी दुम और बदन भर के पर काट कर चलती बनी.

पर जो कट गये तो मोर अन्दर से लाल लाल गोश्त का ढेर निकल आया.

هرے مور اور لال مور کے بڑی بھاری بھاری چمکدار دمیں نکل آئیں . وہ خوب ناچنے لگے اور باغوں میں گھومنے لگے .

× × ×

ایک دن ہرے مور اور لال مور دونوں نے باغ میں مورنی کو دیکھا . اسکی بڑی بڑی آنکھیں تھیں . نازک چونچ تھی . پر ملائم ملائم تھے . دیکھتے ہی دونوں کی طبیعت آ گئی .

ہرے مور نے مورنی سے کہا—"مورنی ! مورنی ! ہم سے شادی کر لو ."

لال مور نے مورنی سے کہا—" مورنی ! مورنی ! ہم سے شادی کر لو ."

پھر دونوں نے مورنی کو اپنا اپنا ناچ دکھایا .

مورنی نے دیکھا کہ دونوں مور بہت خوبصورت ہیں اور دونوں بہت اچھا ناچتے ہیں . وہ بڑی چکرائی کہ میں کس سے شادی کروں' اور کس سے نہ کروں. کہنے لگی— " جاؤ' میں تم دونوں کا امتحان لوں گی . جو اس میں پورا اترا اسی کے ساتھ شادی کرونگی ."

× × +

مورنی کی ایک سہیلی تھی—چوہیا . وہ شہر میں رہتی تھی . مورنی نے اس کو بلا بھیجا . جب وہ آئی تو مورنی اس سے کہا—

" ارے بہن چوہیا' تم تو آدمیوں میں رہتی ہو . ان کی باتیں جانتی ہو . تب جانوں کوئی ایسی تدبیر کرو جس سے یہ پتہ چل جائے کہ لال مور اچھا ہے یا ہرا ." چوہیا نے جواب دیا —" سہیلی ! تم ذرا بھی فکر نہ کرو . میں ایسی ہی تدبیر کرتی ہوں . تمہیں کیا ساری دنیا کو پتہ چل جائیگا کہ کون مور اچھا ہے ."

× × ×

جب آدھی رات ادھر' آدھی رات ادھر ہوئی اور سارا سنسار سو گیا تب چوہیا کالا کمبل اوڑھ کر نکلی . دبے پاؤں ہرے مور کے گھونسلے میں آئی . دیکھا کہ وہ پڑا بے خبر سو رہا ہے . یہ چپکے چپکے اس کے پر کترنے لگی .

ہرا مور سوتے کا سوتا رہ گیا اور چوہیا اس کی دم اور بدن بھر کے پر کاٹ کر چلتی بنی .

پر جو کٹ گئے تو مور اندر سے لال لال گوشت کا ایسا [illegible]

बच्चों की दुनिया

: गई पर झड़ गये फिरते हैं लंडूरे

(हयात उल्ला अन्सारी)

(1)

में एक स्कूल था. वहां दो मोर पढ़ते थे. हरा लाल मोर. दोनों बड़े खूबसूरत थे.

. तोता, मैना, कौआ और जुगनू भी पढ़ते थे. की इन सब से दोस्ती थी. जब स्कूल में छुट्टी यह पांचों छुपी छुपैया खेलते.

ोर का कोई दोस्त अगर बीमार पड़ जाता तो घर जाता और अपना नाच दिखा दिखा कर ैसा बहलाता कि वह अच्छा हो जाता.

र से किसी से दोस्ती नहीं थी. न तो वह अपने साथ छुपी छुपैया खेलता और न किसी र आता जाता.

× × ×

न सब चिड़ियों ने हरे मोर से कहा, "आज तो खेलना पड़ेगा." बहुत कहने सुनने से वह या.

ने लगा. थोड़ी देर में हरा मोर चोर बन गया. पड़ा तो वह दिल ही दिल में बहुत बिगड़ा. ा पांव उसकी दुम पर पड़ गया. बस फिर बगूला हो गया. लगा मैना को अंधा और कहने. और दौड़ा मारने. सब ने बड़ी मुश्किल का. वह खफा होकर चला गया.

न से हरा मोर बिलकुल अलग थलग रहने

(2)

नों के बाद लाल मोर, हरा मोर, तोता, मैना, जुगनू सब पढ़ लिख कर स्कूल से चले गये [illegible]

بچوں کی دنیا

دم کٹ گئی پر جھڑ گئے پھرتے ہیں لنڈورے

(حیات اللہ انصاری)

(1)

جنگل میں ایک اسکول تھا ۔ وہاں دو مور پڑھتے تھے ۔ ہرا مور اور لال مور ۔ دونوں بڑے خوبصورت تھے ۔

اسکول میں طوطا، مینا، کوا اور جگنو بھی پڑھتے تھے ۔ لال مور کی ان سب سے دوستی تھی. جب اسکول میں چھٹی ہو جاتی تو یہ پانچوں چھپی چھپیا کھیلتے ۔

لال مور کا کوئی دوست اگر بیمار ہو جاتا تو وہ اس کے گھر جاتا اور اپنا ناچ دکھا دکھا کر اس کا جی ایسا بہلاتا کہ وہ اچھا ہو جاتا ۔

ہرے مور سے کسی سے دوستی نہیں تھی ۔ نہ تو وہ اپنے ساتھیوں کے ساتھ چھپی چھپیا کھیلتا اور نہ کسی بیمار کے گھر آتا جاتا ۔

× × × ×

ایک دن سب چڑیوں نے ہرے مور سے کہا، " آج تو تم کو بھی کھیلنا پڑیگا ." بہت کہنے سننے سے وہ راضی ہوگیا ۔

کھیل ہونے لگا ۔ تھوڑی دیر میں ہرا مور چور بن گیا داؤں جو دینا پڑا تو یہ دل ہی دل میں بہت بگڑا ۔ کہیں مینا کا پاؤں اس کی دم پر پڑ گیا ۔ بس پھر تو وہ آگ بگولا ہوگیا ۔ لگا مینا کو اندھا اور بدتمیز کہنے ۔ اور دوڑا مارنے ۔ سب نے بڑی شکل سے اس کو روکا ۔ وہ خفا ہو کر چلا گیا ۔

اس دن سے ہرا مور بالکل الگ تھلگ رہنے لگا ۔

(2)

تھوڑے دنوں کے بعد لال مور، ہرا مور، طوطا، مینا، کوا اور جگنو سب پڑھ لکھکر اسکول سے چلے گئے اور

जैसे गीता की भाषा में, जो भक्ति वही ज्ञान वही कर्म. हम तीनों को अलग अलग नहीं कर सकते. इसी तरह अगर इन्सान को सचमुच जिन्दा रहना है तो अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र को अलग अलग नहीं कर सकते.

इस अर्थशास्त्र में चालू अर्थशास्त्र की खासियत स्वदेशी, चालू राजनीतिशास्त्र की खासियत—शासन या ज़ियादती से इन्कार या असहयोग, और चालू समाजशास्त्र की खासियत संयम, तीनों शामिल हैं. स्वदेशी माने अपनी ज़रूरत जहां तक हो सके उतनी रखना—जितनी हम अपने जिस्म की मेहनत से खुद पूरी कर सकें और मशीन का उपयोग (अगर हो तो) उतना ही हो जिस पर हमारा क़ाबू हो (न कि उसका हम पर), असहयोग माने किसी का शासन या ज़ियादती—चाहे राजा हो, सरकार हो, ज़मींदार हो, पूंजीपति हो, पोथा या मौलवी हो, बड़ा हो या छोटा हो—बर्दाश्त नहीं करेंगे और उसके साथ असहयोग करेंगे. पर यह असहयोग करेंगे कैसे ? संयम से, यानी खुद तकलीफें सहेंगे, दूसरे को मारेंगे नहीं, चाहे अपनी जान से हाथ धो बैठना पड़े. इस तरह सर्वोदय अर्थशास्त्र में स्वधर्म-मय स्वदेशी, असहयोग सत्याग्रह और प्रेम है. इन तीनों के निभाये जाने पर हर किसी का भला या फ़ायदा होना लाज़मी है, आप से आप वह होगा.

हमारा यह विश्वास ही हमारा ध्रुवतारा है, जो धार के खिलाफ़ अपनी नाव ले जाने में हमारा अकेला सहारा है. जिस तरह अपने 'हिन्द स्वराज्य' में महात्मा जी ने लिखा है कि गोरी बादशाही का इटली आज आज़ाद है पर मैज़िनी का इटली अब भी ग़ुलाम बना हुआ है, उसी तरह हम देखते हैं कि जवाहर लाल का हिन्दुस्तान आज आज़ाद है पर गांधी का हिन्दुस्तान अब भी ग़ुलाम बना हुआ है.

सिरजनहार से मेरी विनती है कि इस किताब को पढ़कर हमारे अन्दर ऐसी प्रेरना पैदा हो कि हम गांधी के हिन्दुस्तान की ग़ुलामी की बेड़ियां काट कर उसे आज़ाद बनायें और सच्चे या परमार्थी यानी सर्वोदय अर्थशास्त्र का नमूना दुनिया के आगे पेश करें ●

—सुरेश रामभाई

● श्री भगवान दास केला की किताब "सर्वोदय अर्थशास्त्र" से.

جیسے گیتا کی بھاشا میں' جو بھکتی وہی گیان وہی کرم . ہم تینوں کو الگ الگ نہیں کرسکتے. اسی طرح اگر انسان کو سچ مچ زندہ رہنا ہے تو ارتھ شاستر' راج نیتی شاستر اور سماج شاستر کو الگ الگ نہیں کرسکتے .

اِس ارتھ شاستر میں چالو ارتھ شاستر کی خاصیت سودیشی' چالو راج نیتی شاستر کی خاصیت- شوشن یا زیادتی سے انکار یا اسہیوگ' اور چالو سماج شاستر کی خاصیت سنیم' تینوں شامل ہیں . سودیشی معنے اپنی ضرورتیں جہاں تک ہوسکیں اُتنی رکھنا— جتنی ہم اپنے جسم کی محنت سے خود پوری کرسکیں اور مشین کا اُپیوگ (اگر ہو تو) اتنا ہی ہو جس پر ہمارا قابو ہو (نہ کہ اُس کا ہم پر)' اسہیوگ معنے کسی کا شوشن یا زیادتی—چاہے راجہ ہو' سرکار ہو' زمیندار ہو' پونجی پتی ہو' پادھا یا مولوی ہو' بڑا ہو یا چھوٹا ہو—برداشت نہیں کرینگے اور اُس کے ساتھ اسہیوگ کرینگے . پر یہ اسہیوگ کرینگے کیسے ؟ سنیم سے' یعنی خود تکلیفیں سہینگے' دوسرے کو مارینگے نہیں' چاہے اپنی جان سے ہاتھ دھو بیٹھنا پڑے . اِس طرح سرووِدے ارتھ شاستر میں سودھرم مے سودیشی' اسہیوگ ستیاگرہ اور پریم ہے . اِن تینوں کے نبھائے جانے پر ہر کسی کا بھلا یا فائدہ ہونا لازمی ہے' آپ سے آپ وہ ہوگا .

ہمارا یہ وشواس ہی ہمارا دھروتارا ہے' جو دھار کے خلاف اپنی ناؤ لے جانے میں ہمارا اکیلا سہارا ہے . جس طرح اپنے 'ہند سوراج' میں مہاتما جی نے لکھا ہے کہ گوری بادشاہی کا اِٹلی آج آزاد ہے پر میزنی کا اِٹلی اب بھی غلام بنا ہوا ہے' اسی طرح ہم دیکھتے ہیں کہ جواہر لال کا ہندستان آج آزاد ہے پر گاندھی کا ہندستان اب بھی غلام بنا ہوا ہے .

سرجن ہار سے میری وِنتی ہے کہ اِس کتاب کو پڑھکر ہمارے اندر ایسی پریرنا پیدا ہو کہ ہم گاندھی کے ہندستان کی غلامی کی بیڑیاں کاٹ کر اُسے آزاد بنائیں اور سچے یا پرمارتھی یعنی سرووِدے ارتھ شاستر کا نمونہ دنیا کے آگے پیش کریں .●

—سریش رام بھائی

● شری بھگوان داس کیلا کی کتاب ''سرووِدے ارتھ شاستر'' سے .

...कालिज और यूनिवर्सिटी में पढ़ाया ही जाता है, ...सर्वोदय अर्थशास्त्र क्या बला है, इसके अनुसार धन ...किसे कहते हैं, श्रम या मेहनत क्या होती है, ...न या पैदावार से क्या मुराद है, वग़ैरा वग़ैरा? यह ...हमारे सामने हैं. इनकी जानकारी अगर कोई ...करना चाहे तो कैसे करे? वैसे तो संसार के धर्म ...ग्रन्थों और महात्माओं की बानियां मौजूद हैं, जो ...साथ साथ अर्थशास्त्र के भी सबसे अच्छे ख़ज़ाने ...तालीम का ऐसा असर है कि जब तक अर्थशास्त्र ...हमारे सामने चीज़ नहीं आये हम उसे समझने ...कार करते हैं. महात्मा गांधी ने इस अर्थशास्त्र को ...जीवन में उतारा पर उसे किताबी जामा न उन्होंने ...न उनका वह काम था. लेकिन उनके सामने से ...के कुछ विद्वानों ने यह काम अपने ऊपर उठा ...था, जिनमें सब में ख़ास नाम डाक्टर जे. सी. ...प्पा का है. गांधीवादी या सर्वोदय अर्थशास्त्र का ...अब पढ़े-लिखे लोग भी जान गये हैं, इसका श्रेय ...प्पा जी को ही है. पर इनका दायरा ज़ियादातर ...जी पाठकों तक ही सीमित रहा है. धीरे धीरे अपने ...भाषाओं में भी इस तरह का साहित्य तैयार होने ...जैसे गुजराती में भी नरहरि भाई परीख की 'मानव ...शास्त्र' नाम की किताब.

...न्दी में अब तक यह कमी बनी हुई थी; सो इस ...श्री भगवानदास केला ने पहला क़दम उठाया है. ...संसार उन्हें अच्छी जानता है. राजनीति और अर्थ-सम्बन्धी उनकी किताबें क़रीब एक पीढ़ी से विद्यार्थी ...बहन पढ़ते आ रहे हैं. अब हिन्दी में सच्चे या ...अर्थशास्त्र के साहित्य भवन की बुनियाद की पहली ...उन्होंने ही रखी, इससे बढ़कर और ख़ुशी की बात ...हो सकती है. मैं ख़ुद एक विद्यार्थी हूं. इस नाते मैं ...किताब को एक बार अच्छी तरह पढ़ गया हूं. और ...इसका पढ़ना अपने लिये बहुत तालीम देने वाला ...फ़ायदेमन्द साबित हुआ. मुझे यक़ीन है कि मेरा ...ह उससे ज़ियादा फ़ायदा दूसरे पाठक उठायेंगे, ...र हों या विद्यार्थी या कोई भी.

...सफ़ों को देख जाने के बाद पाठक महसूस करेंगे ...दय अर्थशास्त्र उतनी पढ़ने या चर्चा करने की ...नहीं है, जितनी गुनने और अमल करने की. यही ...और दूसरे अर्थशास्त्रों में फ़र्क़ है. सर्वोदय अर्थशास्त्र ...का हितैषी है पर व्यक्ति प्रधान है. इसमें पहला ...मुझे उठाना है, आपको उठाना है, जो उसको मान ...ना है. इस अर्थशास्त्र में कर्तव्य या फ़र्ज़ पहले, ...क़ या हक़ बाद में. यह अर्थशास्त्र न केवल अर्थ- ... ी है

اسکول، کالج اور یونیورسٹی میں پڑھایا جاتا ہے، لیکن سروودے ارتھ شاستر کیا بلا ہے، اس کے انوسار دھن یا دولت کسے کہتے ہیں، شرم یا محنت کیا ہوتی ہے، اُتپادن یا پیداوار سے کیا مراد ہے، وغیرہ وغیرہ؟ یہ سوال ہمارے سامنے ہیں۔ ان کی جانکاری اگر کوئی حاصل کرنا چاہے تو کیسے کرے؟ ویسے تو سنسار کے دھرم گرنتھوں اور مہاتماؤں کی بانیاں موجود ہیں، جو دھرم کے ساتھ ساتھ ارتھ شاستر کے بھی سب سے اچھے خزانے ہیں، پر تعلیم کا ایسا اثر ہے کہ جب تک ارتھ شاستر کہکر ہمارے سامنے چیز نہیں آئے ہم اسے سمجھنے سے انکار کرتے ہیں۔ مہاتما گاندھی نے اس ارتھ شاستر کو اپنے جیون میں اُتارا پر اسے کتابی جامہ نہ انہوں نے پہنایا نہ ان کا وہ کام تھا۔ لیکن ان کے سامنے سے ہی دیش کے کچھ ودوانوں نے یہ کام اپنے اوپر اٹھا لیا تھا، جن میں سب میں خاص نام ڈاکٹر جے۔ سی۔ کماریپا کا ہے۔ گاندھی وادی یا سروودے ارتھ شاستر کا نام اب پڑھے لکھے لوگ بھی جان گئے ہیں، اس کا شریہ کماریپا جی کو ہی ہے۔ پر ان کا دائرہ زیادہ تر انگریزی پاٹھکوں تک ہی سیمت رہا ہے۔ دھیرے دھیرے اپنے دیش کی بھاشاؤں میں بھی اس طرح کا ساہتیہ تیار ہونے لگا ہے جیسے گجراتی میں شری نرہری بھائی پریکھ کی 'مانو ارتھ شاستر' نام کی کتاب۔

ہندی میں اب تک یہ کمی بنی ہوئی تھی؛ سو اس طرف شری بھگوان داس کیلا نے پہلا قدم اٹھایا ہے۔ ہندی سنسار انہیں بخوبی جانتا ہے۔ راج نیتی اور ارتھ شاستر سمبندھی ان کی کتابیں قریب ایک پیڑھی سے ودیارتھی بھائی بہن پڑھتے آ رہے ہیں۔ اب ہندی میں سچے یا سروودے ارتھ شاستر کے ساہتیہ بھون کی بنیاد کی پہلی اینٹ بھی انہوں نے ہی رکھی، اس سے بڑھکر اور خوشی کی بات کیا ہو سکتی ہے۔ میں خود ایک ودیارتھی ہوں۔ اس ناتے میں ساری کتاب کو ایک بار اچھی طرح پڑھ گیا ہوں۔ اور مجھے اس کا پڑھنا اپنے لئے بہت تعلیم دینے والا اور فائدے مند ثابت ہوا۔ مجھے یقین ہے کہ میری طرح اس سے زیادہ فائدہ دوسرے پاٹھک اٹھائیںگے، پروفیسر ہوں یا ودیارتھی یا کوئی بھی۔

ان صفحوں کو دیکھ جانے کے بعد پاٹھک محسوس کریںگے کہ سروودے ارتھ شاستر اُتنی پڑھنے یا چرچا کرنے کی چیز نہیں ہے، جتنی گننے اور عمل کرنے کی۔ یہی اس میں اور دوسرے ارتھ شاستروں میں فرق ہے۔ سروودے ارتھ شاستر سماج کا ہتیشی ہے پر ویکتی پردھان ہے۔ اس میں پہلا قدم مجھے اٹھانا ہے، آپکو اٹھانا ہے، جو اسے مانے اسے اٹھانا ہے۔ اس ارتھ شاستر میں کرتویہ یا فرض پہلے، ادھیکار یا حق بعد میں۔ یہ ارتھ شاستر نہ کیول ارتھ شاستر

समझते हैं कि पुराने देवी-देवताओं को हमने छोड़ दिया लेकिन हमें होश नहीं कि हम पहले के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा पूजा करने लगे हैं पैसे और मशीन की, बल्कि कहना तो यह चाहिये कि हम पैसे और मशीन के इतने ज़ियादा ग़ुलाम बन गये हैं कि इन्सान की असली हस्ती की कोई क़ीमत हमारी निगाह में अब रह नहीं गई है. अपने पड़ोसी के लिये हमारे दिल में कोई जगह बाक़ी नहीं है और हमीं इस का भूत बुरी तरह सवार होता चला जा रहा है. अगर इसी ढर्रे पर दुनिया चलती रही तो कहां पहुँचेगी ? यह एक सोचने की बात है.

अपने देश हिन्दुस्तान की हालत देखें तो हमें महसूस होता है कि सरकार बड़ी तेज़ी के साथ स्वार्थी अर्थशास्त्र की जड़ें आज़ाद देश में जमाती चली जा रही है. अनाज के लिये हमें परदेश से भीख मांगनी पड़ती है, तरह तरह के सामान भी परदेश से ही आते हैं, पैसा बाहर से, एक्सपर्ट या माहर बाहर से—और किस लिये, ताकि देश में बड़े बड़े कारख़ाने खोले जायँ हमारे शहर और गांव विदेशी पैसा-परस्त 'सभ्य' कहे जाने वालों के मन की सोच के अनुसार ढाले जायें, लोग हरे-भरे और खुले-पाक खेत व गांव छोड़ कर हवा-बन्द, गन्दी, चिपचिपा मिलों व शहरों में बसें; अपने मालिक आप न बनकर मशीनों और पैसे या पैसे वालों के मोहताज बन जायें, अपनी ज़रूरतें इतनी ज़ियादा बढ़ा लें कि फिर उन्हें पूराकरने के लिये इस चक्कर से छुटकारा ही न मिले. हम इस पर सन्तोश कर लेते अगर यह काम हम ख़ुद करते, अपने देश की मिट्टी पानी के मुताबिक़ करते, अपने लोगों के स्वभाव व रीति-रिवाज के मुताबिक़ करते. लेकिन यहां तो होड़ लगी है विदेशी व्योपारियों और माहरों की जो अपने घर का संभाल तो कर नहीं सकते हमको पाठ पढ़ाने आते हैं, पर क़सूर उनका क्या है ? क़सूर है उस सरकार का, उन हाकिमों का जो यह करने की इजाज़त दे रहे हैं, जो विदेशी पैसे, सरमायेदार और एक्सपर्टों को मौक़ा दे देकर देश को गिरवी रख कर बेचे डाल रहे हैं. और रही सही जो दौलत है, जो ईमान है, जो कलचर है, उसे तबाह करने पर तुले हैं. किसी ने सच कहा है, हम ख़ुद ही अपने सब से बड़े दुश्मन हैं और ख़ुद ही अपने सबसे बड़े दोस्त. आज हमारी सरकार जाने-अनजाने देश की सबसे बड़ी दुश्मन बन गई है.

ऐसी हालत में कहां सर्वोदय और कहां सर्वोदय अर्थशास्त्र ! कौन इन्हें पूछेगा और कौन इनकी परवा करेगा ! हम अच्छी तरह जानते हैं कि आज के ज़माने में सर्वोदय अर्थशास्त्र की चर्चा करना धार के ख़िलाफ़ नाव खेना है. फिर, अर्थशास्त्र तो सब लोग जानते हैं,

سمجھتے ہیں کہ پرانے دیوی دیوتاؤں کو ہم نے چھوڑ دیا لیکن ہمیں ہوش نہیں کہ ہم پہلے کے مقابلے کہیں زیادہ پوجا کرنے لگے ہیں پیسے اور مشین کی، بلکہ کہنا تو یہ چاہئے کہ ہم پیسے اور مشین کے اتنے زیادہ غلام بن گئے ہیں کہ انسان کی اصلی ہستی کی کوئی قیمت ہماری نگاہ میں اب رہ نہیں گئی ہے . اپنے پڑوسی کے لئے ہمارے دل میں کوئی جگہ باقی نہیں ہے اور ہمیں ہم کا بھوت بری طرح سوار ہوتا چلا جا رہا ہے . اگر اسی ڈھرے پر دنیا چلتی رہی تو کہاں پہونچیگی ؟ یہ ایک سوچنے کی بات ہے .

اپنے دیش ہندستان کی حالت دیکھیں تو ہمیں محسوس ہوتا ہے کہ سرکار بڑی تیزی کے ساتھ سوارتھی ارتھ شاستر کی جڑیں آزاد دیش میں جماتی چلی جا رہی ہے . اناج کے لئے ہمیں پردیش سے بھیک مانگنی پڑتی ہے ' طرح طرح کے سامان بھی پردیش سے ہی آتے ہیں' پیسہ باہر سے' ایکسپرٹ یا ماہر باہر سے—اور کس لئے' تاکہ دیش میں بڑے بڑے کارخانے کھولے جائیں' ہمارے شہر اور گاؤں ودیشی پیسہ پرست ' سبھیہ ' کہے جانے والوں کے من کی سوچ کے انوسار ڈھالے جائیں' لوگ ہرے بھرے اور کھلے صاف کھیت و گاؤں چھوڑ کر ہوا بند' گندی کھچ پچی ملوں و شہروں میں بسیں' اپنے مالک آپ نہ بنکر مشینوں اور پیسے یا پیسے والوں کے محتاج بن جائیں . اپنی ضرورتیں اتنی زیادہ بڑھا لیں کہ پھر انہیں کے پورا کرنے لئے کے چکر سے چھٹکارا ہی نہ ملے . ہم اس پر سنتوش کر لیتے اگر یہ کام ہم خود کرتے' اپنے دیش کی مٹی پانی کے مطابق کرتے' اپنے لوگوں کے سوبھاو و ریتی رواج کے مطابق کرتے . لیکن یہاں تو ہوڑ لگی ہے ودیشی بیوپاریوں اور ماہروں کی جو اپنے گھر کا سنبھال تو کر نہیں سکتے ہمکو پاٹھ پڑھانے آئے ہیں . پر قصور ان کا کیا ہے ؟ قصور ہے اس سرکار کا' ان حاکموں کا جو یہ کرنے کی اجازت دے رہے ہیں' جو ودیشی پیسے' سرمایہ دار اور ایکسپرٹوں کو موقع دے دے کر دیش کو گروی رکھکر بیچے ڈال رہے ہیں . اور رہی سہی جو دولت ہے' جو ایمان ہے' جو کلچر ہے' اسے تباہ کرنے پر تلے ہیں. کسی نے سچ کہا ہے' ہم خود ہی اپنے سب سے بڑے دشمن ہیں اور خود ہی اپنے سب سے بڑے دوست . آج ہماری سرکار جانے انجانے دیش کی سب سے بڑی دشمن بن گئی ہے .

ایسی حالت میں کہاں سرودے اور کہاں سرودے ارتھ شاستر ! کون انہیں پوچھے گا اور کون ان کی پرواہ کرے گا ! ہم اچھی طرح جانتے ہیں کہ آج کے زمانے میں سرودے ارتھ شاستر کی چرچا کرنا دھار کے خلاف ناؤ کھینا ہے . پھر' ارتھ شاستر تو سب لوگ جانتے ہیں'

सर्वोदय अर्थशास्त्र की पुकार

एक का अनुभव है कि बाज़ार में चीज़ों के दाम ढ़ते रहते हैं. ख़ासकर जो चीज़ें बुनियादी ज़रूरत से अनाज, कपड़ा वग़ैरा, उनमें यह उतार-चढ़ाव ता है, जिससे मामूली गृहस्थ आदमी को हैरत कि आख़िर माजरा क्या है कि एक वक़्त में एक दाम तो कम हो जाते हैं पर दूसरी के वैसे ही हैं. फिर यह समझ में नहीं आता कि अगर स यह उतार-चढ़ाव आता है, तो क्यों आता है. सवालों में नहीं पड़ेंगे और न यहां इनमें पड़ने मौक़ा ही है. पर इतना ज़रूर कहेंगे कि इस महंगी ा—यह मुसीबत साबित हो या बरकत—कारन है मौजूदा अर्थशास्त्र, जिसको हम पूंजीवादी, दी, साम्राज्यवादी या फ़ासिस्ट वग़ैरा न कहकर अर्थशास्त्र कहेंगे. इसकी बुनियाद में एक ऐसी स्था है जिसमें क्या सरकारी, क्या ग़ैर-सरकारी, धन इस तरह लगे हुए हैं कि उनसे चंद आदमियों दा पहुंच जाये और वह मालामाल होते रहें और रीब बनते चले जायें.

तरफ़ ज़रा-सी ध्यान नहीं है कि वह व्यवस्था ह क़ायम की जाये, वैसा आर्थिक संगठन कैसे या जाये जिससे हर किसी का, सब का भला हो, में फूले-फलें और सब की तरक़्क़ी हो. अपनी चन्ता करने वाले, अपना हित संभालने वाले यह र्थशास्त्र और उसके अलमबरदार आज क़रीब मूची दुनिया पर हावी हैं. यही वजह है कि में आये दिन नई खोजें होती हैं. क़ुदरत पर पाने के नित नये साधन निकलते हैं, लेकिन एक दुनिया में ग़रीबों मोहताजों की तादाद बढ़ती और दूसरी तरफ़, सन्तोष या शान्ति नाम की ी को हासिल नहीं होती दीखती.

कल हम नाज़ करते हैं अपनी ज़रूरतें बढ़ाने में नी ज़रूरत ख़ुद मेहनत न करके पूरा करने में. रतों के बढ़न को हमें यह सिखाया जाता है, या 'स्टैन्डर्ड आफ़ लिविंग' का उठना कहते हैं तें अपने जिस्म की मेहनत के बजाये मशीन के पूरी करने को उद्योगीकरन या 'इन्डस्ट्रियलाइज़ेशन' कहते हैं. बताया जाता है कि आज विज्ञान का कि हिकमतों का, सब काम समझ-बूझ कर 'रेशनलाइज़ेशन' का, न कि अन्धपरस्ती का. हम

سرووديے ارتھ شاستر کی پکار

ہر ایک کا انوبھو ہے کہ بازار میں چیزوں کے دام گرتے چڑھتے رہتے ہیں. خاص کر جو چیزیں بنیادی ضرورت کی ہیں جیسے اناج، کپڑا وغیرہ، ان میں یہ اُتار چڑھاو بہت ہوتا ہے، جس سے معمولی گرہست آدمی کو حیرت ہوتی ہے کہ آخر ماجرا کیا ہے کہ ایک وقت میں ایک چیز کے دام تو کم ہو جاتے ہیں پر دوسری کے ویسے ہی بنے رہتے ہیں. پھر یہ سمجھ میں نہیں آتا کہ اگر کسی وقت یہ اُتار چڑھاو آتا ہے، تو کیوں آتا ہے. ہم ان سوالوں میں نہیں پڑینگے اور نہ یہاں ان میں پڑنے کا کوئی موقع ہی ہے. پر اتنا ضرور کہینگے کہ اس مہنگی سستی کا — یہ مصیبت ثابت ہو یا برکت — کارن ہے ہمارا موجودہ ارتھ شاستر، جس کو ہم پونجی وادی، سامیہ وادی، سامراجوادی یا فاسسٹ وغیرہ نہ کہکر سوارتھی ارتھ شاستر کہینگے. اسکی بنیاد میں ایک ایسی ارتھ ویوستھا ہے جس میں کیا سرکاری، کیا غیر سرکاری، سبھی سادھن اسطرح لگے ہوئے ہیں کہ ان سے چند آدمیوں کو فائدہ پہنچ جائے اور وہ مالا مال ہوتے رہیں اور غریب غریب بنتے چلے جائیں.

اس طرف ذرا بھی دھیان نہیں ہے کہ وہ ویوستھا کس طرح قائم کی جائے، ویسا آرتھک سنگھٹن کیسے کھڑا کیا جائے جس سے ہر کسی کا، سب کا بھلا ہو، سبھی اس میں پھولے پھلیں اور سب کی ترقی ہو. اپنی اپنی چنتا کرنے والے، اپنا ہت سنبھالنے والے یہ سوارتھی ارتھ شاستر اور اس کے علمبردار آج قریب قریب سموچی دنیا پر حاوی ہیں. یہی وجہ ہے کہ وگیان میں آئے دن نئی کھوجیں ہوتی ہیں. قدرت پر وجے پانے کے نت نئے سادھن نکلتے ہیں، لیکن ایک طرف تو دنیا میں غریبوں محتاجوں کی تعداد بڑھتی جاتی ہے اور دوسری طرف، سنتوش یا شانتی نام کی چیز کسی کو حاصل نہیں ہوتی دکھتی.

آج کل ہم ناز کرتے ہیں اپنی ضرورتیں بڑھانے میں اور اپنی ضرورت خود محنت نہ کر کے پورا کرنے میں. انہیں ضرورتوں کے بڑھنے کو ہمیں یہ سکھایا جاتا ہے، رہن سہن یا 'اسٹینڈرڈ آف لونگ' کا اُٹھنا کہتے ہیں اور ضرورتیں اپنے جسم کی محنت کے بجائے مشین کے ذریعے سے پوری کرنے کو ادیوگی کرن یا 'انڈسٹریلائزیشن' کہتے ہیں. بتایا جاتا ہے کہ آج وگیان کا یگ ہے نہ کہ ٹیکنیشنوں کا، سب کام سمجھ بوجھ کر کرنے ... کا نہ کہ اندھ ... کا. ہم

शक्ल का आदमी तांगे से आया जरूर पर वह नहीं मालूम कहां गया ?"

"बेटे, तुमने जबर्दस्त गलती की. मुझे खुशी हुई थी कि आज तुमने पहला गाहक पटाया. पर मेरी खुशी सब मिट्टी में मिल गई. तुमने पहले ही सौदे में झूठ बोल दिया. बेटे, कहो तो, जब खाने में डेढ़ लिखा था, जूते पर दो की रकम तुमने पढ़ी नहीं, फिर तुमने दो रुपये कैसे कह दिये ?"

"अब्बा, सच कहूँ ?"

"हां बेटे, सच कहो."

"सभी दुकानदार तो ऐसा करते हैं."

"पर तुम तो मेरे बेटे हो. क्या तुमने मुझे कभी ऐसा करते देखा ?"

"नहीं अब्बा, आपको तो कभी नहीं देखा."

"फिर ?"

"फिर क्या अब्बा, भूल हुई. अब ऐसी गलती नहीं करूंगा."

बच्चे की आंखों से टपटप आंसू गिरने लगे. बाप की आंखों ने भी बेटे की आंखों का साथ दिया. बाप के हाथों ने बेटे को उठाया, छाती से लगाया, पुचकारा और फिर दुकान के काम में लग गया.

पन्द्रह रोज तक बराबर वह हर दुकानदार से पूछते, उस गाहक की शकल बताते, और जानना चाहते कि कोई उस शकल का निकला या नहीं. उनका अपना भी यह हाल था कि सौदा करते करते उनकी आँखें बाजार में चलते हर कोट बूट पर पड़ती थीं, टिकती थीं, और निराश होकर लौट आती थी.

पन्द्रह दिन के बाद जुम्मेरात आई. उन्होंने पीर पर चादर चढ़ाई, दुआ मांगी, "ऐ मेरे पीर, मेरे बच्चे का कोई क़सूर नहीं, अगर कुछ हो तो उसे माफ़ करना. मेरा भी कोई क़सूर नहीं, वह अठन्नी अब तक अलग रखी है और उस वक़्त तक रखी रहेगी जब तक वह गाहक न आयेगा."

गाहक न आया, न आया, पर जीते जी मियां अहमद जान जुम्मेरात के जुम्मेरात पीर की क़ब्र पर पांच पैसे की मिठाई हमेशा चढ़ाते रहे.

—भगवानदीन

شکل کا آدمی تانگے سے آیا ضرور پر یہ نہیں معلوم کہاں گیا ؟"

"بیٹے، تم نے زبردست غلطی کی ۔ مجھے خوشی ہوئی تھی کہ آج تم نے پہلا گاہک پٹایا ۔ پر میری خوشی سب مٹی میں مل گئی ۔ تم نے پہلے ہی سودے میں جھوٹھ بول دیا ۔ بیٹے، کہو تو، جب خانے میں ڈیڑھ لکھا تھا، جوتے پر دو کی رقم تم نے پڑھی نہیں، پھر تم نے دو روپئے کیسے کہہ دیئے ؟"

"ابا، سچ کہوں ؟"

"ہاں بیٹے، سچ کہو ۔"

"سبھی دوکاندار تو ایسا کرتے ہیں ۔"

"پر تم تو میرے بیٹے ہو ۔ کیا تم نے مجھے کبھی ایسا کرتے دیکھا ؟"

"نہیں ابا، آپ کو تو کبھی نہیں دیکھا ۔"

"پھر ؟"

"پھر کیا ابا، بھول ہوئی ۔ اب ایسی غلطی نہیں کروں گا ۔"

بچے کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گرنے لگے ۔ باپ کی آنکھوں نے بھی بیٹے کی آنکھوں کا ساتھ دیا ۔ باپ کے ہاتھوں نے بیٹے کو اٹھایا، چھاتی سے لگایا، پچکارا اور پھر دوکان کے کام میں لگ گیا ۔

پندرہ روز تک برابر وہ ہر دوکاندار سے پوچھتے، اس گاہک کی شکل بتاتے، اور جاننا چاہتے کہ کوئی اس شکل کا نکلا یا نہیں۔ ان کا اپنا بھی یہ حال تھا کہ سودا کرتے کرتے ان کی آنکھیں بازار میں چلتے ہر کوٹ بوٹ پر پڑتی تھیں، ٹکتی تھیں، اور نراش ہوکر لوٹ آتی تھیں ۔

پندرہ دن کے بعد جمعرات آئی ۔ انھوں نے پیر پر چادر چڑھائی، دعا مانگی، "اے میرے پیر، میرے بچے کا کوئی قصور نہیں، اگر کچھ ہو تو اسے معاف کرنا ۔ میرا بھی کوئی قصور نہیں، وہ اٹھنی اب تک الگ رکھی ہے اور اس وقت تک رکھی رہےگی جب تک وہ گاہک نہ آئےگا ۔"

گاہک نہ آیا، نہ آیا، پر جیتے جی میاں احمد جان جمعرات کے جمعرات پیر کی قبر پر پانچ پیسے کی مٹھائی ہمیشہ چڑھاتے رہے ۔

—بھگوان دین

"…ह तीन देता तो तुम तीन ले लेते ?"

"…ह क्यों तीन देता, मैंने तो दो मांगे थे ?"

"…म तीन मांगते, और वह तीन दे देता तो तुम …?"

… चुप !

"…े सईद, सच बताओ, क्या तुमने दो रुपये जूती …ो देख कर कहे थे ?"

"…हीं अब्बा, मैंने तो योंही कह दिये थे."

"…ोंही कह दिये थे, क्यों ?"

"…ब्बा, भूल हुई."

"…ल नहीं, तुमने दुकान को हमेशा के लिये बदनाम …ा, देखो दुकान पर लिखा है—एक बात, इसलिये … दो दिये. जाओ और फौरन गाहक को ढूंढ कर …"

× × ×

"…ाई रामदास जी, आपने उस गाहक को देखा था, …भी मेरे बच्चे से जूती खरीदी ?"

"…यां अहमद जान, देखा तो था, पर वह तो डेढ़-दो …ी बात है."

"…हां, वही वही, तो कहिये उसकी शकल सूरत कुछ …आपको ?"

"…यादा तो नहीं, मैंने उसे पीछे से देखा था. कोट … था, नंगे सिर था, काले रंग जूता था. गोरा रंग …ाहिये, क्योंकि गर्दन गोरी थी. हो न हो, कालिज …ट रहा होगा. पर चेहरा बगैर देखे वह पहचाना …सकता. मैंन उसका चेहरा नहीं देखा."

"…फर भी इन कपड़ों में अगर कोई आदमी निकले तो … जरूर दिखाइये. खयाल तो मैं खुद भी रखूँगा. …तलाश में सईद को भी भेजा है. पर आप भी …रखें."

"…हों-क्यों क्या हुआ ? कुछ लेकर चलता बना क्या ?"

"…हीं-नहीं."

"… क्या खराब नोट दे गया ?"

"…हीं, ऐसी कोई बात नहीं. बच्चे ने गलती से डेढ़ …के दो रुपये ले लिये. अठन्नी उसकी रह गई है. …को वापिस करनी है."

× × ×

"…च्छा, वह तो कहीं नहीं मिला. बहुत दूर तक गया, …कानदारों से पूछा. हां, यह तो पता चला कि उस

" وہ تین دیتا تو تم تین لے لیتے ؟"

" وہ کیوں تین دیتا، میں نے تو دو مانگے تھے ؟"

" تم تین مانگتے، اور وہ تین دے دیتا تو تم لے لیتے ؟"

سعید چپ !

" بھلے سعید، سچ بتاؤ، کیا تم نے دو روپے جوتی پر لکھے دیکھکر کہے تھے ؟"

" نہیں ابا، میں نے تو یوں ہی کہہ دیئے تھے ."

" یوں ہی کہہ دیئے تھے، کیوں ؟"

" ابا، بھول ہوئی ."

" بھول نہیں، تم نے دوکان کو ہمیشہ کے لئے بدنام کر دیا، دیکھو دوکان پر لکھا ہے ایک بات، اس لئے گاہک نے دو دیئے . جاؤ اور فوراً گاہک کو ڈھونڈھکر لاؤ ."

× × × ×

" بھائی رام داس جی، آپ نے اُس گاہک کو دیکھا تھا، جس نے ابھی میرے بچے سے جوتی خریدی ؟"

" میاں احمد جان، دیکھا تو تھا، پر وہ تو ڈیڑھ دو گھنٹے پہلے کی بات ہے ."

" ہاں ہاں، وہی وہی، تو کہئے اس کی شکل وکل کچھ یاد ہے آپ کو ؟"

" زیادہ تو نہیں، میں نے اُسے پیچھے سے دیکھا تھا . کوٹ پتلون پہنے تھا، ننگے سر تھا، کالے رنگ کا جوتا تھا . گورا رنگ ہونا چاہیئے، کیونکہ گردن گوری تھی . ہو نہ ہو، کالج کا اسٹوڈینٹ رہا ہوگا . پر چہرہ بغیر دیکھے وہ پہچانا نہیں جا سکتا . میں نے اس کا چہرہ نہیں دیکھا ."

" پھر بھی ان کپڑوں میں اگر کوئی آدمی نکلے تو مجھے یاد ضرور دلایئے . خیال تو میں خود بھی رکھونگا . اس کی تلاش میں سعید کو بھی بھیجا ہے . پر آپ بھی خیال رکھیں ."

" کیوں کیوں کیا ہوا ؟ کچھ لیکر چلتا بنا کیا ؟"

" نہیں نہیں ."

" تو کیا خراب نوٹ دے گیا ؟"

" نہیں، ایسی کوئی بات نہیں . بچے نے غلطی سے ڈیڑھ کی جوتی کے دو روپئے لے لئے . اٹھنی اسکی رہ گئی ہے . یہی اسکو واپس کرنی ہے ."

× + × ×

" ابا، وہ تو کہیں نہیں ملا . بہت دور تک گیا، کئی دوکانداروں سے پوچھا . ہاں یہ تو پتہ چلا کہ اس

सच्ची घटना के आधार पर एक कहानी

मियां अहमद जान

"अब्बा, यह लो दो रुपये."

"आहा! आज तो हमारे बेटे सईद ने बड़ा अच्छा काम किया. पहला गाहक पटाया, और जुम्मेरात के रोज़. आज ज़रूर पांच आने की मिठाई बांटूंगा."

"अब्बा, मुझे तो सौदा करने में कुछ भी नहीं लगा. मैंने गाहक से दो रुपये मांगे, उसने दे दिये."

"यह तो और भी अच्छी बात है. यह तो बताओ, तुमने कौनसी जोड़ी बेची?"

"अब्बा, इसी तीसरे खाने में से एक बचकानी जोड़ी बेची है."

"तीसरे खाने से, बचकानी!"

उस खाने की ओर इशारा करके बारह बरस का सईद बोला, "हां अब्बा, इसी में से."

"पर बेटे, इस खाने पर तो डेढ़ रुपया लिखा है."

"अब्बा, गाहक ने तो जूती उलट कर देखी थी. उसपर दो रुपये लिखे थे."

"उसपर लिखे होंगे, पर खाने पर तो डेढ़ लिखा है. बेटे, तुम्हें मालूम है कि मैं रोज़ इसी में से डेढ़ के हिसाब से बेचता हूं. तुमने दो कैसे कह दिये!"

"अब्बा पता नहीं किस तरह मुंह से निकल गये. गाहक ने तो अच्छी तरह उसके पीछे लिखे दाम पढ़ लिये थे."

"यह तो मुझे भी ताज्जुब हो रहा है कि उस पर दो लिख किसने दिये? अच्छा और तो कोई जोड़ी निकालो."

सईद एक जोड़ी निकालता है, उस पर डेढ़ लिखा मिलता है. दूसरी निकालता है उस पर भी डेढ़ मिलता है. तीसरी-चौथी, सभी पर डेढ़ मिलता है. घबरा कर बोलता है:

"अब्बा, इन सब पर तो डेढ़ ही लिखा है."

"डेढ़ की चीज़ है तो डेढ़ लिखा ही होगा."

"उस जोड़ी पर तो दो लिखे थे, मैंने देखा था. गाहक ने भी पढ़ा था. जब ही तो उसने झट निकाल कर दो दे दिये."

"उसने दे दिये ठीक, तुमने ले कैसे लिये?"

"उसने दिये, मैंने लिये."

سچی گھٹنا کے ادھار پر ایک کہانی

میاں احمد جان

" ابا، یہ لو دو روپے ."

" آہا ! آج تو ہمارے بیٹے سعید نے بڑا اچھا کام کیا. پہلا گاہک پٹایا، اور جمعرات کے روز. آج ضرور پانچ آنے کی مٹھائی بانٹونگا ."

" ابا، مجھے تو سودا کرنے میں کچھ بھی نہیں لگا . میں نے گاہک سے دو روپے مانگے، اُس نے دے دیئے ."

" یہ تو اور بھی اچھی بات ہے . یہ تو بتاؤ، تم نے کون سی جوڑی بیچی ؟"

" ابا، اسی تیسرے خانے میں سے ایک بچکانی جوڑی بیچی ہے ."

" تیسرے خانے سے، بچکانی !"

اُس خانے کی اور اِشارہ کر کے بارہ برس کا سعید بولا، " ہاں ابا، اِسی میں سے ."

" پر بیٹے، اس خانے پر تو ڈیڑھ روپیہ لکھا ہے ."

" ابا، گاہک نے تو جوتی اُلٹ کر دیکھی تھی . اُس پر دو روپے لکھے تھے ."

" اُس پر لکھے ہونگے، پر خانے پر تو ڈیڑھ لکھا ہے . بیٹے، تمہیں معلوم ہے کہ میں روز اِسی میں سے ڈیڑھ کے حساب سے بیچتا ہوں . تم نے دو کیسے کہہ دیئے !"

" ابا پتہ نہیں کس طرح منھ سے نکل گئے . گاہک نے تو اچھی طرح اُس کے پیچھے لکھے دام پڑھے تھے ."

" یہ تو مجھے بھی تعجب ہو رہا ہے کہ اُس پر دو لکھ کس نے دیئے ؟ اچھا اور تو کوئی جوڑی نکالو."

سعید ایک جوڑی نکالتا ہے، اُس پر ڈیڑھ لکھا ملتا ہے . دوسری نکالتا ہے اُس پر بھی ڈیڑھ ملتا ہے . تیسری چوتھی، سبھوں پر ڈیڑھ ملتا ہے . گھبرا کر بولتا ہے :

" ابا، اِن سب پر تو ڈیڑھ ہی لکھا ہے ."

" ڈیڑھ کی چیز ہے تو ڈیڑھ لکھا ہی ہوگا ."

" اُس جوڑی پر تو دو لکھے تھے، میں دیکھا تھا . گاہک نے بھی پڑھا تھا . جب ہی تو اُس نے جھٹ نکال کر دو دے دیئے ."

" اُس نے دے دیئے ٹھیک، تم نے لے کیسے لئے ؟"

" اُس نے دیئے، میں نے لئے ."

ंगे या जायेंगे ? ऐसे घर-फूंक, जानलेवा और जनमा तमाशे वही सरकार खेल सकती है जो हती हो और जिसका जनता से कोई वास्ता न योजना पिछ-घसीटू है, रईसों और पूंजीपतियों का खेल है और समाज को चूसने वाले गिने-चुने लिये सहारा है. यह योजना ग़रीब को ग़रीब मीर को और भी अमीर बनाने वाली है. यह हिन्दुस्तान की रही सही दौलत को, लाज और बरबाद करने वाली है. यह योजना निकम्मी जो अपने देश के लाखों-करोड़ों नंगे-भूखों को यदा न पहुँचा सके. पर इटावा योजना तो उनकी टे को भी मुंह नहीं करती, उल्टे बेरोज़गार बना की रोज़ी छीनती है.

कार को चाहिये कि इस घर-फूंक तमाशे को बन्द टावा नाम की धोके की टट्टी को खतम करे. को चाहिये कि इन जानकारों को जो हिन्दुस्तान में उरद के ऊपर सफ़ेदी बराबर भी जानकारी नहीं वेदा कर दे, बाहर का जो पैसा लिया है वह कर दे, दूसरी कम्पनियों या सरकारों से जो नापाक नामे किये हैं उन्हें ख़ारीज कर दे और देश ले कर दे देश के असली बाशिन्दों के हाथों में. कोई कावट नहीं है जो यहाँ के लोग अपने आप हल न . न आदमी की कमी है, न अकल-समझ की कमी सामान की कमी है. कमी है हकूमत की सही की, उसके मुनासिब रूझान की, उसके ठीक .

दुस्तान में सिर्फ़ वही योजना कामयाब हो सकती केन्द्री करन और ग़ैर-फ़ौजियाना बुनियादों पर ये. वही एक सच्चा सहारा साबित होगी जिसके ोग अपने सूखे गलों को कुछ तर कर सकेंगे. पर सी योजना तो जले पर नमक छिड़कने का काम और देश को बरबाद और तबाह करने का एक . देश का भला इसी में है कि यह घर फूंक तमाशा लिये उठा दिया जाये.

گاؤں رہینگے یا جائینگے ؟ ایسے گھر پھونک، جان لیوا اور ظلم جلتا تماشے وہی سرکار کھیل سکتی ہے جو ہوا میں رہتی ہو اور جس کا جنتا سے کوئی واسطہ نہ ہو۔ یہ یوجنا پچھ گھسیٹو ہے، رئیسوں اور پونجی پتیوں کے ہاتھ کا کھیل ہے اور سماج کو چوسنے والے گنے چنے لوگوں کے لئے سہارا ہے۔ یہ یوجنا غریب کو غریب اور امیر کو اور بھی امیر بنانے والی ہے۔ یہ یوجنا ھندستان کی رہی سہی دولت کو لاج اور آن کو برباد کرنے والی ہے۔ وہ یوجنا نکمی ہوتی ہے جو اپنے دیش کے لاکھوں کروڑوں ننگے بھوکوں کو کچھ فائدہ نہ پہونچا سکے۔ پر اٹاوہ یوجنا تو اُن کی طرف چھوٹتی کو بھی منھ نہیں کرتی، الٹے بے روزگار بنا کر اُن کی روزی چھینتی ہے۔

سرکار کو چاہئے کہ اِس گھر پھونک تماشے کو بند کر دے۔ اِٹاوہ نام کی دھوکے کی ٹٹی کو ختم کرے۔ سرکار کو چاہئے کہ اِن جانکاروں کو—ھندستان کے بارے میں اُرد کے اوپر سفیدی برابر بھی جانکاری نہیں رکھتے وداع کردے، باہر کا جو پیسہ لیا ہے وہ واپس کردے، دوسری کمپنیوں یا سرکاروں سے جو ناپاک اقرار نامے کئے ہیں انہیں خارج کردے اور دیش کو حوالے کردے دیش کے اصلی باشندوں کے ہاتھوں میں۔ کوئی ایسی رکاوٹ نہیں ہے جو یہاں کے لوگ اپنے آپ حل نہ کرسکیں نہ آدمی کی کمی ہے، نہ عقل سمجھ کی کمی ہے، نہ سامان کی کمی ہے۔ کمی ہے حکومت کی صحیح نگاہ کی، اسکے مناسب رجحان کی، اسکے ٹھیک طرز کی۔

ھندستان میں صرف وہی یوجنا کامیاب ہوسکتی ہے جو وکیندری کرن اور غیر فوجیانہ بنیادوں پر بنائی جائے۔ وہ ہی ایک سچا سہارا ثابت ہوگی جس کے کنارے لوگ اپنے سوکھے گلوں کو کچھ تر کر سکیں گے۔ پر اٹاوہ جیسی یوجنا تو جلے پر نمک چھڑکنے کا کام کرتی ہے۔ دیش کو برباد اور تباہ کرنے کا ایک بہانا ہے۔ دیش کا بھلا اسی میں ہے کہ یہ گھر پھونک تماشہ ہمیشہ کے لئے اُٹھا دیا جائے۔

हमें इस वक़्त पंजाब के गुड़गांवा ज़िले के एक कलक्टर साहब की याद हो आई जो अपने को गांव का सुक़रात बताते थे. हमें डर है कि इन अपने मुंह-मियां मिट्ठू सुक़रात की तरह मेयर साहब की भी कोशिश—जिन्हें हम अफ़लातून कह सकते हैं—कहीं बेकार साबित न हों. क्योंकि उन्हें भी उस कलक्टर की तरह यह नहीं मालूम कि हिन्दुस्तान के गांव की असलियत क्या है और गांव वाले कैसा जीवन बिताते हैं.

योजना का निचोड़.

इटावा की सारी योजना को तीन दिन तक देखने-समझने के बाद हमारे मन में बार बार यही ख़याल पैदा होता है कि यह योजना न तो जनता की है, न जनता की तरफ़ से है और न जनता के वास्ते है. बल्कि ऊपर से लादी हुई एक बनावटी चीज़ है जिसकी बुनियादें एकदम खोखली हैं. जहां एक ईंट खसकी कि सारा क़िला धड़ाम धड़ाम गिर पड़ेगा ऐसी योजना देश के लिये ख़तरनाक है और अमल के लायक़ हरगिज़ नहीं है. राजकाजी, आर्थिक, समाजी, कलचरी वग़ैरा पहलुओं से सोचने पर हम तो कहेंगे कि सपने में भी इस योजना को हाथ नहीं लगाना चाहिये.

इस योजना की चर्चा अख़बारों में है, रेडियो में है, रईसों के बंगलों में है. अभी अभी अमरीका से एक मेहमान बहन आई थीं. उन्होंने भी इसकी तारीफ़ में आसमान तक पुल बांध दिये और फिर अमरीका जाकर वहां के राजपति को इसका कमाल बताया दुनिया भर में इटावे की गूंज है, मानों दुखी हिन्दुस्तान के मरज़ों की यही एक अकसीर दवा है. पर अफ़सोस कि शायद ही कोई जानता हो कि यह दवा क्या है, किस तरह की है, कितनी ख़ुराकें खानी चाहिये वग़ैरा. इसलिये ज़रूरी है कि इसकी सही जानकारी लोगों को दी जाये. और वह यह है कि इटावा योजना एक घर-फूंक तमाशा है. निहायत ही ख़र्चीला और दिखाऊ तमाशा है जो हमारे देश के रत्ती भर भी माफ़िक़ नहीं है. बहुत हुआ तो विलायती खाद दे देकर गेहूं व आलू पैदा कर लेंगे पर इनसे हमारी धरती की क्या सूरत बन जायेगी कौन कह सकता है. अगर कहीं यह बांझ हो गई तब तो भगवान ही मालिक है.

फिर, जब एक तरफ़ से यह योजना हमारी देहाती ज़िन्दगी को तबाह करती जायेगी, लोगों को मशीनों और पलटनों का मोहताज बनाती जायेगी, देश को विदेशी व्योपारियों के इशारे पर नचायेगी तो यह पैदावार भी कब तक और किस काम की? योरप के पढ़े-लिखे लोग विलायती खाद और ट्रैक्टर छोड़ रहे हैं पर हम आंख मींच कर उन पर लट्टू हो गये हैं. ऐसी हालत में हमारे

ہمیں اِس وقت پنجاب کے گوڑگاؤں ضلع کے ایک کلکٹر صاحب کی یاد ہو آئی جو اپنے کو گاؤں کا سقراط بتاتے تھے. ہمیں ڈر ہے کہ اِن اپنے منہ میاں مٹھو سقراط کی طرح میئر صاحب کی بھی کوشش—جنہیں ہم افلاطون کہہ سکتے ہیں—کہیں بیکار ثابت نہ ہو. کیونکہ انہیں بھی اُس کلکٹر کی طرح یہ نہیں معلوم کہ ہندستان کے گاؤں کی اصلیت کیا ہے اور گاؤں والے کیسا جیون بتاتے ہیں.

یوجنا کا نچوڑ.

اٹاوہ کی ساری یوجنا کو تین دن تک دیکھنے سمجھنے کے بعد ہمارے من میں بار بار یہی خیال پیدا ہوتا ہے کہ یہ یوجنا نہ تو جنتا کی ہے، نہ جنتا کی طرف سے ہے اور نہ جنتا کے واسطے ہے. بلکہ اوپر سے لادی ہوئی ایک بناوٹی چیز ہے جس کی بنیادیں ایک دم کھوکھلی ہیں. جہاں ایک اینٹ کھسکی کہ سارا قلعہ دھڑام دھڑام گر پڑیگا. ایسی یوجنا دیش کے لئے خطرناک ہے اور عمل کے لائق ہرگز نہیں ہے. راج کاجی، آرتھک، سماجی، کلچری وغیرہ پہلوؤں سے سوچنے پر ہم تو کہینگے کہ سپنے میں بھی اِس یوجنا کو ہاتھ نہیں لگانا چاہئے.

اِس یوجنا کی چرچا اخباروں میں ہے، ریڈیو میں ہے، رئیسوں کے بنگلوں میں ہے. ابھی ابھی امریکہ سے ایک مہمان بہن آئی تھیں، انہوں نے بھی اِسکی تعریف میں آسمان تک پل باندھ دیئے اور پھر امریکہ جا کر وہاں کے راج پتی کو اِسکا کمال بتایا. دنیا بھر میں اٹاوہ کی گونج ہے، مانو دکھی ہندستان کے مرضوں کی یہی ایک اکسیر دوا ہے. پر افسوس کہ شاید ہی کوئی جانتا ہو کہ یہ دوا کیا ہے، کس طرح کی ہے، کتنی خوراکیں کھانی چاہئیے وغیرہ. اِسلئے ضروری ہے کہ اِسکی صحیح جانکاری لوگوں کو دی جائے. اور وہ یہ ہے کہ اِٹاوہ یوجنا ایک گھر پھونک تماشہ ہے. نہایت ہی خرچیلا اور دکھاؤ تماشہ ہے جو ہمارے دیش کے رتی بھر بھی موافق نہیں ہے. بہت ہوا تو ولایتی کھاد دے دے کر گیہوں و آلو پیدا کر لینگے پر ان سے ہماری دھرتی کی کیا صورت بن جائیگی کون کہہ سکتا ہے. اگر کہیں یہ بانجھ ہوگئی تب تو بھگوان ہی مالک ہے.

پھر، جب ایک طرف سے یہ یوجنا ہماری دیہاتی زندگی کو تباہ کرتی جائیگی، لوگوں کو مشینوں اور پلٹنوں کا محتاج بناتی جائیگی، دیش کو بدیشی بیوپاریوں کے اِشارے پر نچائیگی تو یہ پیداوار بھی کب تک اور کس کام کی؟ یورپ کے پڑھے لکھے لوگ ولایتی کھاد اور ٹریکٹر چھوڑ رہے ہیں پر ہم آنکھ میچ کر اُن پر لٹو ہوگئے ہیں. ایسی حالت میں ہمارے

ने रख कर योजना बनाई जाये तब तो खर्च और करवों तक पहुँचेंगे. पर इटावा योजना के ; ही चला आये ता हिन्दुस्तान के पांच लाख देहात क़रीब सवा सौ करोड़ रुपये का हर साल ज़रूरत शायद हो कोई समझदार सरकार ऐसी हो जो या हर साल फूंकती रहे. फिर, बाहर से जो कोई र या दान की शकल में मदद देगा वह अपनी र देगा और हमारे पैरों में उल्टे बेड़ियां ही ।.

ना के ख़ास दोश.

: के खुलासे से साफ़ पता चलता है कि इस योजना सारे दोश हैं. उनमें से ख़ास ख़ास हम नीचे पेश

) इस योजना में सिर्फ़ गेहूँ व आलू की काश्त पर या गया है और स्वावलम्बी खेती के लिये ज़रूरी तों का कोई परवा नहीं की गई है.

) देहात के उद्योग-धन्दों से इस योजना का कोई ी है.

) विलायती खाद के सहारे रहकर देहाती खाद ात के मैल-कचरे को उपयोग में लाने की कोई : योजना में नहीं की गई है.

) जो औज़ार इसमें रखे गये हैं उनसे बेकारी ही

) इसके मातहत जो बालिग़ तालीम या स्कूली ो जाती है वह बुनियादी या 'नई तालीम' से कोसों ाज़ है.

) योजना को क़तई ख़याल बे-ज़मीन वाले लाखों का नहीं है जिनकी हालत और बिगड़ती जा

) यह योजना हमारी खेती को एक व्योपार का ना चाहती है जो बड़े बड़े सरमायेदारों और के इशारे पर नाचा करे.

) यह इतनी ख़र्चीली योजना है कि हिन्दुस्तान ब देश तो इसे अमल में ला ही नहीं सकते.

) यह हमारे गावों को शहरों का और देश को ा मोहताज बनाती है.

)) यह गांव वालों को मजबूर करती है कि हुक्कामों या जानकारों को "माई-बाप" समझो नी अक़्ल व समझ को ताक़ पर रख दो.

) गहरे देखें तो पता चलता है कि यह योजना है जिसका मक़सद हमारे सीधे सादे भाई-बहनों कर विदेशी तर्ज़ का ग़ुलाम बनाना है.

کو سامنے رکھکر یوجنا بنائی جائے تب تو خرچ عہدوں اور کھیتوں تک پہونچیںگے . پر اٹاوہ یوجنا کے نمونے پر ہی چلا جائے تو ہندوستان کے پانچ لاکھ دیہات کے لئے قریب سوا سو کروڑ روپے کی ہر سال ضرورت پڑے گی شائد ہی کوئی سمجھدار سرکار ایسی ہو جو اتنا روپیہ ہر سال پھونکتی رہے . پھر، باہر سے جو کوئی بھی ادھار یا دان کی شکل میں مدد دے گا وہ اپنی شرطوں پر دے گا اور ہمارے پیروں میں الٹے بیڑیاں ہی باندھ دے گا .

یوجنا کے خاص دوش .

اوپر کے خلاصے سے صاف پتہ چلتا ہے کہ اس یوجنا میں بہت سارے دوش ہیں . ان میں سے خاص خاص ہم نیچے پیش کرتے ہیں .

1. اس یوجنا میں صرف گیہوں و آلو کی کاشت پر دھیان دیا گیا ہے اور سواولمبی کھیتی کے لئے ضروری دوسری باتوں کی کوئی پرواہ نہیں کی گئی ہے .

2 دیہات کے ادیوگ دھندوں سے اس یوجنا کا کوئی واسطہ نہیں ہے .

3. ولایتی کھاد کے سہارے رہ کر دیہاتی کھاد اور دیہات کے میلے کچرے کو اپیوگ میں لانے کی کوئی صورت اس یوجنا میں نہیں کی گئی ہے .

4. جو اوزار اسمیں رکھے گئے ہیں ان سے بے کاری ہی بڑھتی ہے .

5. اسکے ماتحت جو بالغ تعلیم یا اسکولی تعلیم دی جاتی ہے وہ بنیادی یا نئی تعلیم سے کوسوں دور کی چیز ہے .

6. یوجنا کو قطعی خیال بے زمین والے لاکھوں مزدوروں کا نہیں ہے جن کی حالت اور بگڑتی جا رہی ہے .

7. یہ یوجنا ہماری کھیتی کو ایک بیوپار کا روپ دے دینا چاہتی ہے جو بڑے بڑے سرمایہ داروں اور دلالوں کے اشارے پر ناچا کرے .

8. یہ اتنی خرچیلی یوجنا ہے کہ ہندوستان جیسے غریب دیش تو اسے عمل میں لا ہی نہیں سکتے .

9. یہ ہمارے گاؤں کو شہروں کا اور دیش کو پردیش کا محتاج بناتی ہے .

10. یہ گاؤں والوں کو مجبور کرتی ہے کہ سرکاری حاکموں یا جانکاروں کو " مائی باپ " سمجھو اور اپنی عقل و سمجھ کو طاق پر رکھ دو .

11. گہرے دیکھیں تو پتہ چلتا ہے کہ یہ یوجنا ایک جال ہے جس کا مقصد ہمارے سیدھے سادے بھائی بہنوں کو پھنسا کر ودیشی طرز کا غلام بنانا ہے .

फ़िलहाल हम इतना कह सकते हैं कि इस योजना में जितना पैसा फूंका गया है और जितने आदमी लगाये गये हैं उसके लिहाज़ से जनता में उत्साह क़तई नहीं पैदा हुआ न उनका कोई हौसला ही बढ़ा है. बल्कि असल बात यह है कि उनके सामने नये नये सवाल खड़े हो गये हैं जिनका पहले सपने में भी शक नहीं था.

योजना का भविष्य.

इस तमाशे से अगर थोड़ा-बहुत कुछ फ़ायदा हुआ है तो वह अब आगे नहीं होने वाला है. वजह इसकी यह है कि रोज़ के काम में हुक्कामीयत अब दिन दिन बढ़ रही है जिससे हर जगह नये अड़ंगे पैदा हो रहे हैं, जो काम में अटकाव डालते हैं. हमारा ख़याल है कि जल्दी ही यह योजना दूसरी सरकारी योजनाओं के जैसी, दफ़्तरी चक्करों में पड़ कर सड़े ताल की तरह गंधाने लगेगी और हासिल कुछ भी न होगा.

हमने ऊपर कहा है कि इस योजना से देहात में कोई जोश पैदा नहीं हुआ है. नये बीज की ज़ात, मंहगे मंहगे औज़ार, गरम गरम विलायती खाद और कारकुनों का साहबी ढंग—यह ऐसी बातें हैं जिन्होंने गांव वालों का दिल इस योजना की तरफ़ से फेर लिया है. ऐसा लगता है कि उन्हें आप से आप ही मालूम हो गया कि यह योजना हमारे काम की नहीं है. इस योजना ने पुरानी मुसीबतें हल करने के बजाये नई खड़ी कर दी हैं. तफ़सील में न जाकर हम इतना ही कहेंगे कि इस योजना के कारन बेकारी और बढ़ गई है. हम बहुत से बे ज़मीन वाले मज़दूरों से मिले जिनमें हरिजन भी थे. उनका कहना था कि हमारी हालत तो सुधरने के बजाये और भी बदतर हो गई है. इसलिये यह योजना आगे चल कर बरक्कत की बजाये एक बला साबित होने वाली है.

योजना की नक़ल से नुक़सान.

जैसा ऊपर कहा जा चुका है इस योजना का भविष्य अच्छा नहीं है. इसलिये इसकी नक़ल करके जगह जगह इसके नमूने खड़े करने से तो और भी बंटाधार होने वाला है. फिर, नक़ली इटावे जो बनेंगे उनमें मेयर जैसी हस्तियां भी न होंगी जो और कुछ नहीं तो किसी तरह ज़ियादा गेहूँ या आलू ही पैदा करा सकें. सरकारी मशीनरी जो हर जगह मुर्दा है उसमें न कोई जान फूंक सकेगा न उससे कोई काम ले सकेगा.

इस योजना में लगे आदमी और इसके बड़े बड़े ख़र्चों का अन्दाज़ हम ऊपर दे चुके हैं. यह हालत उस वक़्त है जब केवल खेती पर, वह भी अधूरी शकल में, ध्यान दिया गया. अगर देहाती जीवन के सभी पहलुओं

فی الحال ہم اِتنا کہہ سکتے ہیں کہ اس یوجنا میں جتنا پیسہ پھونکا گیا ہے اور جتنے آدمی لگائے گئے ہیں اُس کے لحاظ سے جنتا میں اتساہ قطعی نہیں پیدا ہوا اور نہ اُن کا کوئی حوصلہ ہی بڑھا ہے. بلکہ اصل بات یہ ہے کہ اُن کے سامنے نئے نئے سوال کھڑے ہوگئے ہیں جن کا پہلے سپنے میں بھی شک نہیں تھا.

یوجنا کا بھوشیہ.

اِس تماشے سے اگر تھوڑا بہت کچھ فائدہ ہوا ہے تو وہ اب آگے نہیں ہونے والا ہے. وجہ اِس کی یہ ہے کہ روز کے کام میں حکمیت اب دن دن بڑھ رہی ہے جس سے ہر جگہ نئے اڑنگے پیدا ہو رہے ہیں، جو کام میں اٹکاؤ ڈالتے ہیں. ہمارا خیال ہے کہ جلدی ہی یہ یوجنا دوسری سرکاری یوجناؤں کے جیسی، دفتری چکروں میں پڑکر سڑے تال کی طرح گندھانے لگیگی اور حاصل کچھ بھی نہ ہوگا.

ہم نے اوپر کہا ہے کہ اِس یوجنا سے دیہات میں کوئی جوش پیدا نہیں ہوا ہے. نئے بیج کی ذات، مہنگے مہنگے اوزار، گرم گرم ولایتی کھاد اور کارکنوں کا صاحبی ڈھنگ—یہ ایسی باتیں ہیں جنہوں نے گاؤں والوں کا دل اِس یوجنا کی طرف سے پھیر لیا ہے. ایسا لگتا ہے کہ اُنہیں آپ سے ہی معلوم ہوگیا کہ یہ یوجنا ہمارے کام کی نہیں ہے. اس یوجنا نے پرانی مصیبتیں حل کرنے کے بجائے نئی کھڑی کردی ہیں. تفصیل میں نہ جاکر ہم اتنا ہی کہینگے کہ اِس یوجنا کے کارن بیکاری اور بڑھ گئی ہے. ہم بہت سے بے زمین والے مزدوروں سے ملے جن میں ہریجن بھی تھے. اُن کا کہنا تھا کہ ہماری حالت تو سدھرنے کے بجائے اور بھی بدتر ہوگئی ہے. اِس لئے یہ یوجنا آگے چل کر برکت کی بجائے ایک بلا ثابت ہونے والی ہے.

یوجنا کی نقل سے نقصان.

جیسا اوپر کہا جا چکا ہے اِس یوجنا کا بھوشیہ اچھا نہیں ہے. اِسلئے اِسکی نقل کرکے جگہ جگہ اِسکے نمونے کھڑے کرنے سے تو اور بھی بنٹا دھار ہونے والا ہے. پھر، نقلی اٹاوے جو بنینگے اُن میں میئر جیسی ہستیاں بھی نہ ہونگی جو اور کچھ نہیں تو کسی طرح زیادہ گیہوں یا آلو پیدا کرا سکیں. سرکاری مشینری جو ہر جگہ مردہ ہے اسمیں نہ کوئی جان پھونک سکیگا نہ اُس سے کوئی کام لے سکیگا.

اِس یوجنا میں لگے آدمی اور اِسکے بڑے بڑے خرچوں کا اندازہ ہم اوپر دے چکے ہیں. یہ حالت اُسوقت ہے جب کیول کھیتی پر، وہ بھی ادھوری شکل میں، دھیان دیا گیا. اگر دیہاتی جیون کے سبھی پہلوؤں

स्ते भी नहीं है. हमने यह भी देखा कि इन संघों में जिस्टर कायदा एहतियात से नहीं रखे जाते हैं और न ाडिट रिपोर्टों की कोई परवा की जाती है.

हम पूठिया गांव के महिला केन्द्र में भी गये. रजिस्टरों पता चला कि हाज़री लगातार घट रही है. हमने एक के भीतर घुस कर एक बारह बरस की लड़की के हाथ बना काम देखा. हमारे मन ही मन यह ख्याल पैदा आ कि काश इन्हें कोई ऐसी दस्तकारी सिखाई जाती स में इनको मिल का सूत या मिल की चीज़ कच्चे माल तौर पर न इस्तेमाल करना पड़ती. पर हम जानते हैं औरतों के बीच काम करना कोई हंसी खेल नहीं है. लिये इन सेविकाओं के काम की—जिन्हें अपनी गुज़र सर के लायक़ तनख़ाह भी पूरी सी नहीं मिलती—रीफ़ करते हैं. उनका जीवन त्याग और सेवा का जीवन है. धिकारियों को चाहिये कि उनकी सही शिकायतें दूर करें.

इस योजना का बच्चों की या बुनियादी तालीम से ई वास्ता ही नहीं है. लेकिन सोनबरसा नाम के गांव हमें एक स्कूल दिखाया गया जो नई योजना के मातहत ल रहा है. बाद में हमें मालूम हुआ कि इस स्कूल की मारत को पास की एक दानी विधवा ने बनवा दिया है. ूल में 80 से ऊपर बच्चे थे जिन्हें दो मास्टर पढ़ा रहे . पढ़ाई पहले दरजे से चौथे दर्जे की थी. जो तालीम दी रही थी उसे 'नई तालीम' हरगिज़ नहीं कहा जा सकता. थे दरजे के बच्चों की तकलियों का सूत ऐसा बेमेल और ज़ोर था कि उससे रस्सी भी नहीं बन सकती थी.

योजना वाले औज़ारों के तो दाम ही इतने ज़ियादा कि अकसर लोग उनका इस्तेमाल नहीं कर सकते. फिर के लिये लोहा और तेल कहां से आए. बहुत से लोग हमें ले जो इन औज़ारों के इस्तेमाल के एक दम ख़िलाफ़ थे.

इस स्कीम के माहर या जानकार लोग जो सलाह या करते हैं उससे भी काफ़ी लोग इत्तफ़ाक़ नहीं करते. साल के तौर पर गांव वालों से कहा गया कि गेहूँ के थ तिलहन या दूसरी चीज़ मत बोइये लेकिन सदियों तजुर्बे के बल पर उन्होंने इसे नहीं माना. इसके अलावा लायती खाद भी लोगों को पसन्द नहीं है. वह गरम यादा होते हैं जिसकी वजह से पानी ज़ियादा मांगते हैं. नी की अगर कमी रही तो सब चौपट. बहुत से सानों ने काफ़ी खोकर यह सबक़ हासिल किया और सिये विलायती खाद से उनकी तबियत हट गई है.

सरसरी तौर पर हम कह सकते हैं कि गांव वाले त सोच-समझ कर और होशियारी के साथ इस जना को दूर से देख रहे हैं. अगर वह सहयोग देंगे पूरी जांच और पूरी तसल्ली कर लेने के बाद ही देंगे.

واسطے بھی نہیں ہے۔ ہم نے یہ بھی دیکھا کہ اِن سنگھوں میں رجسٹر قاعدہ احتیاط سے نہیں رکھے جاتے ہیں اور نہ آڈٹ رپورٹوں کی کوئی پرواہ کی جاتی ہے۔

ہم پوٹھیا گاؤں کے مہیلا کیندر میں بھی گئے۔ رجسٹروں سے پتہ چلا کہ حاضری لگاتار گھٹ رہی ہے۔ ہم نے ایک گھر کے بھیتر گھس کر ایک بارہ برس کی لڑکی کے ہاتھ کا بنا کام دیکھا۔ ہمارے من ہی من یہ خیال پیدا ہوا کہ کاش اِنہیں کوئی ایسی دستکاری سکھائی جاتی جس میں اِن کو مل کا سوت یا مل کی چیز کچے مال کے طور پر نہ استعمال کرنا پڑتی۔ پر ہم جانتے ہیں کہ عورتوں کے بیچ کام کرنا کوئی ہنسی کھیل نہیں ہے۔ اِس لئے اِن سیوکاؤں کے کام کی—جنہیں اپنی گذر بسر کے لائق تنخواہ بھی پوری سی نہیں ملتی—تعریف کرتے ہیں۔ اُن کا جیون تیاگ اور سیوا کا جیون ہے۔ ادھیکاریوں کو چاہئیے کہ اُن کی صحیح شکائتیں دور کریں۔

اِس یوجنا کا بچوں کی یا بنیادی تعلیم سے کوئی واسطہ ہی نہیں ہے۔ لیکن سون برسا کے گاؤں میں ہمیں ایک اسکول دکھایا گیا جو نئی یوجنا کے ماتحت چل رہا ہے۔ بعد میں ہمیں معلوم ہوا کہ اِس اسکول کی عمارت کو پاس کی ایک دانی ودھوا نے بنوا دیا ہے۔ اسکول میں 80 سے اوپر بچے تھے جنہیں دو ماسٹر پڑھا رہے تھے۔ پڑھائی پہلے درجے سے چوتھے درجے کی تھی۔ جو تعلیم دی جا رہی تھی اُسے 'نئی تعلیم' ہرگز نہیں کہا جا سکتا۔ چوتھے درجے کے بچوں کی تکلیوں کا سوت ایسا بے میل اور کمزور تھا کہ اُس سے رسی بھی نہیں بن سکتی تھی۔

یوجنا والے اوزاروں کے تو دام ہی اتنے زیادہ ہیں کہ اکثر لوگ اُن کا استعمال نہیں کرسکتے۔ پھر اُن کے لئے لوہا اور تیل کہاں سے آئے۔ بہت سے لوگ ہمیں ملے جو اُن اوزاروں کے استعمال کے ایکدم خلاف تھے۔

اِس اسکیم کے ماہر یا جانکار لوگ جو صلاح دیا کرتے ہیں اُس سے بھی کافی لوگ اِتفاق نہیں کرتے۔ مثال کے طور پر گاؤں والوں سے کہا گیا کہ گیہوں کے ساتھ تلہن یا دوسری چیز مت بوئیے لیکن صدیوں کے تجربے کے بل پر اُنہوں نے اِسے نہیں مانا۔ اِس کے علاوہ ولایتی کھاد بھی لوگوں کو پسند نہیں ہے۔ وہ گرم زیادہ ہوتے ہیں جس کی وجہ سے پانی زیادہ مانگتے ہیں۔ پانی کی اگر کمی رہی تو سب چوپٹ۔ بہت سے کسانوں نے کافی کھوکر یہ سبق حاصل کیا اور اِس لئے ولایتی کھاد سے اُن کی طبیعت ہٹ گئی ہے۔

سرسری طور پر ہم کہ سکتے ہیں کہ گاؤں والے بہت سوچ سمجھکر اور ہوشیاری کے ساتھ اِس یوجنا کو دور سے دیکھ رہے ہیں۔ اگر وہ سہیوگ دینگے تو پوری جانچ اور پوری تسلی کر لینے کے بعد ہی دینگے۔

ऊपर के आंकड़ों से यह कहा जा सकता है कि इस योजना पर साल भर का कम से कम ढाई लाख रुपये का खर्च है. हमने मेयर साहब से पूछा कि इस तरह आप कब तक खर्च करते रहेंगे, तो वह बोले, "हमेशा, हमेशा ही." उनके जवाब को सुन कर हम दंग रह गये.

इस योजना में 97 गांव हैं. इसलिये हर गांव पर औसत खर्च कम से कम ढाई सौ रुपये समझना चाहिये. इसका मतलब यह है कि अगर समूचे उत्तर प्रदेश पर इसे लागू करना हो तो क़रीब दो लाख आदमियों की दरकार होगी और हर साल 25 करोड़ रुपया बहा देना पड़ेगा.

गांवों का रुख़.

हम ऊपर कह चुके हैं कि बढ़िया बीज का इस्तेमाल बहुत से किसानों ने किया है. लेकिन जब हमने उनसे बात चीत की तो पता चला कि उनमें से कुछ को इस नये बीज (P B-591) के बारे में शक है. उनका कहना था कि इस नये गेहूँ की रोटी हमारे देसी गेहूँ की रोटी जैसी नहीं होती. ज़ाहिर है कि नये गेहूँ का पूरा असर अच्छा या बुरा जो भी हो कई बरस बाद ही मालूम हो सकता है.

जैसा ऊपर कहा जा चुका है घुक्का और पोंके के टीकों से जानवरों को सचमुच फ़ायदा हुआ है जिससे गांव वालों को राहत पहुँची है. उसी तरह गेमक्सीन से भी फ़ायदा हुआ. पालुड्रीन की गोलियां भी कुछ लोगों ने खाईं पर उनसे कितना फ़ायदा हुआ ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता. गायों के बनावटी गर्भ के ख़िलाफ़ जितना कहा जाये थोड़ा है. भावना या जज़बात को जाने दें, तब भी यह गर्भ-हमल अकसर कामयाब नहीं हुए हैं. हमने ख़ुद एक ऐसा गर्भ दिये जाते देखा. जिस गंदे ढंग से क्रिया की जा रही थी उसे देख कर तो हम तोबा बोल गये. एक कम्पाउन्डर ने—जिसको सफ़ाई से कोई ख़ास मतलब नहीं मालूम पड़ता था—अपना हाथ गाय की योनि में डाल दिया और फिर पिचकारी से एक सांड का वीर्य अन्दर कर दिया. जब उसने हाथ बाहर निकाला तो ख़ून में लथ पथ था. हमें डर है कि इस तरह गाय की बच्चेदानी ख़राब हो जाने या दूसरी बीमारियां हो जाने का काफ़ी अंदेशा है. कुछ लोगों का यह भी ख़याल है कि गाय के चार पांच बार इस तरह ब्याहने पर वह फिर बांझ हो जाती है.

बड़े हैरत की बात है कि सहयोगी सोसाइटियां या संघों के काम में लोगों ने दिलचस्पी नहीं दिखाई है. वह इन संघों के दफ़्तर (जो बीज गोदाम के नाम से मशहूर हैं) जाते तो हैं पर उसी तरह जैसे किसी बाज़ारू दूकान पर. 'सहयोग' या 'संघ' का वातावरन तो मानो नाम के

اوپر کے آنکڑوں سے یہ کہا جاسکتا ہے کہ اس یوجنا پر سال بھر کا کم سے کم ڈھائی لاکھ روپئے کا خرچ ہے۔ ہم نے میئر صاحب سے پوچھا کہ اِس طرح آپ کب تک خرچ کرتے رہینگے' تو وہ بولے' "ہمیشہ' ہمیشہ ہی"۔ اُن کے جواب کو سنکر ہم دنگ رہ گئے۔

اِس یوجنا میں 97 گاؤں ہیں۔ اس لئے ہر گاؤں پر اوسط خرچ کم سے کم ڈھائی سو روپئے سمجھنا چاہئے۔ اِس کا مطلب یہ ہے کہ اگر سموچے اُتر پردیش پر اِسے لاگو کرنا ہو تو قریب دو لاکھ آدمیوں کی درکار ہوگی اور ہر سال 25 کروڑ روپیہ بہا دینا پڑے گا۔

گاؤں کا رخ۔

ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ بڑھیا بیج کا استعمال بہت سے کسانوں نے کیا ہے۔ لیکن جب ہم نے اُن سے بات چیت کی تو پتہ چلا کہ اُن میں سے کچھ کو اِس نئے بیج (P. B-591) کے بارے میں شک ہے۔ اُن کا کہنا تھا کہ اِس نئے گیہوں کی روٹی ہمارے دیشی گیہوں کی روٹی جیسی نہیں ہوتی۔ ظاہر ہے کہ نئے گیہوں کا پورا اثر اچھا یا برا جو بھی ہو کئی برس بعد ہی معلوم ہو سکتا ہے۔

جیسا اوپر کہا جا چکا ہے گھوکا اور پونکے کے ٹیکوں سے جانوروں کو سچ مچ فائدہ ہوا ہے جس سے گاؤں والوں کو راحت پہونچی ہے۔ اسی طرح گیمکسین سے بھی فائدہ ہوا۔ پالوڈرین کی گولیاں بھی کچھ لوگوں نے کھائیں پر ان سے کتنا فائدہ ہوا ٹھیک ٹھیک نہیں کہا جاسکتا۔ گایوں کے بناوٹی گربھ کے خلاف جتنا کہا جائے تھوڑا ہے۔ بھاونا یا جذبات کو جانے دیں' تب بھی یہ گربھ حمل اکثر کامیاب نہیں ہوئے ہیں۔ ہم نے خود ایک ایسا گربھ دیئے جاتے دیکھا۔ جس گندے ڈھنگ سے کریا کی جا رہی تھی اُسے دیکھ کر تو ہم توبہ بول گئے۔ ایک کمپونڈر نے—جس کو صفائی سے کوئی خاص مطلب نہیں معلوم پڑتا تھا—اپنا ہاتھ گائے کے یونی میں ڈال دیا اور پھر پچکاری سے ایک سانڈ کا ویریہ اندر کر دیا۔ جب اس نے ہاتھ باہر نکالا تو خون میں لتھ پتھ تھا۔ ہمیں ڈر ہے کہ اِس طرح گائے کی بچےدانی خراب ہو جانے یا دوسری بیماریاں ہو جانے کا کافی اندیشہ ہے۔ کچھ لوگوں کا یہ بھی خیال ہے کہ گائے کو چار پانچ بار اس طرح بیاہنے پر وہ پھر بانجھ ہو جاتی ہے۔

بڑے حیرت کی بات ہے کہ سہیوگی سوسائٹیاں یا سنگھوں کے کام میں لوگوں نے دلچسپی نہیں دکھائی ہے۔ وہ اِن سنگھوں کے دفتر (جو بیج گودام کے نام سے مشہور ہیں) جاتے تو ہیں پر اُسی طرح جیسے کسی بازارو دوکان پر۔ 'سہیوگ' یا 'سنگھ' کا واتاورن تو مانو نام کے

हैं. अगर उन सरकारी नौकरों को भी शामिल कर लिया जावे—जैसे वेटेरनरी सर्जन, सकिल अफसर, इन्सपेक्टर वगैरा—जो इस योजना में अपना पूरा समय नहीं देते लेकिन जिनसे मदद अकसर ली जाती है—तो हम कह सकते हैं कि हर दो गांव पीछे तीन आदमी इस योजना में रखे गये हैं.

खरचे के बारे में कुछ आंकड़े यह हैं.

गिनती	साल	तख़मीना (रुपये)	असल खर्च (रुपये)
1.	1948–49	8,32,900	2,69,112
2.	1949–50	3,15,800	6,67,877
3.	1950–51	2,37,700	2,28,500
4.	1951–52	3,46,600	मालूम नहीं

जगह की तंगी की वजह से बजट की तफ़सील पेश करना हमारे लिये नामुमकिन है. लेकिन खर्च का मोटा अन्दाज़ करने के लिये हम 1950–51 के खर्च के तख़मीने की सुर्खियां नीचे दे रहे हैं:

	रुपये
(I) देख भाल.	
(1) अफसरों की तनखा	24,600
(2) तनखा–(i) बाबू लोग	12,000
(ii) मिस्त्री लोग	11,280
(iii) चपरासी वगैरा.	9,276
(3) मंहगाई व भत्ता	25,000
(4) ऊपर के खर्च	6,315
	88,471
(II) अमल.	
(I) तनखा	44,760
(2) मंहगाई व भत्ता	41,340
(3) ऊपर के खर्च	52,810
	1,38,910
(III) देहाती प्रोग्राम.	
(1) तनखा	1,920
(2) मंहगाई व भत्ता	9,540
(3) ऊपर के खर्च	25,900
	37,360
(IV) इमारत व गांव बनाव.	
(1) नमूने के मकान	1,08,000
(2) गांव विकास	40,000
(3) कूएं	20,000
	1,68,000
कुल जोड़ 1950–51 के वास्ते	4,32,741 रुपया

ہیں . اگر اُن سرکاری نوکروں کو بھی شامل کر لیا جائے— جیسے ویٹرنری سرجن، سرکل افسر، انسپکٹر وغیرہ—جو اس یوجنا میں اپنا پورا سمے نہیں دیتے لیکن جن سے مدد اکثر لی جاتی ہے —تو ہم کہہ سکتے ہیں کہ ہر دو گاؤں پیچھے تین آدمی اِس یوجنا میں رکھے گئے ہیں .

خرچے کے بارے میں کچھ آنکڑے یہ ہیں :

گنتی	سال	تخمینہ روپئے	اصل خرچ روپئے
.1	1948-49	8,32,900	2,69,112
.2	1949-50	3,15,800	6,67,877
.3	1950-51	2,37,700	2,28,500
.4	1951-52	3,45,500	معلوم نہیں

جگہ کی تنگی کی وجہ سے بجٹ کی تفصیل پیش کرنا ہمارے لئے ناممکن ہے . لیکن خرچ کا موٹا انداز کرنے کے لئے ہم 1950-51 کے خرچ کے تخمینے کی سرخیاں نیچے دے رہے ہیں :

	روپئے
I. دیکھ بھال .	
(1) افسروں کی تنخواہ	24,600
(2) تنخواہ (i) بابو لوگ	12,000
(ii) مستری لوگ	11,280
(iii) چپراسی وغیرہ	9,276
(3) مہنگائی و بھتا	25,000
(4) اوپر کے خرچ	6,315
	88,471
II. عمل .	
(1) تنخواہ	44,760
(2) مہنگائی و بھتا	41,340
(3) اوپر کے خرچ	52,810
	1,38,910
III. دیہاتی پروگرام .	
(1) تنخواہ	1,920
(2) مہنگائی و بھتا	9,540
(3) اوپر کے خرچ	25,900
	87,360
IV. عمارت و گاؤں بناؤ .	
(1) نمونے کے مکان	1,08,000
(2) گاؤں وکاس	40,000
(3) کوئیں	20,000
	1,68,000
کل جوڑ 1950-51 کے واسطے	4,32,741 روپئے .

हम यहां यह बता दें कि जानवरों के टीकों का गांव वालों ने काफी स्वागत किया है. पर बनावटी गर्भ या हमल के बारे में ऐसा हरगिज़ नहीं कहा जा सकता.

जहां तक जन-सेहत का वास्ता है मलेरिया रोकने के लिये लोगों को खाने के वास्ते पालुड्रीन की गोलियाँ पहले साल मुफ्त बांटी गई. मकानों के अन्दर गेमक्सीन दीवारों और फर्श पर छिड़का गया ताकि मलेरिया के कीड़े मर जायें.

सिंचाई के सिलसिले में तीन आर्टीफियन कुंयें और एक ट्यूब वेल इस इलाक़े में खुदवाये गये साथ ही साथ यह भी कोशिश की गई कि उन ज़मीनों को क़ाबू में लायें जो या तो ऊसर हैं या जिनमें पानी बहुत रुक जाता है या जो खादर में हैं.

ऊपर कहा जा चुका है कि बढ़िया या सुधरे हुए औज़ार इस योजना की ख़सूसियत हैं. नीचे हम कुछ औज़ारों के नाम और दाम देते हैं.

		रुपये
1.	ओलपाड थ्रेशर	190
2.	कल्टीवेटर-सीडर	65
3.	सीड-ड्रिल	600
4.	कल्टीवेटर	85
5.	स्पाइक	90
6.	विक्ट्री हल	75
7.	मोअर (कटैया)	1200

इटावा योजना के अन्दर 41 जगहों पर बालिग़ तालीम चल रही है. एक चलती हुई लायब्रेरी भी है जिसमें किताबों की 50 पेटियां रहती हैं. महेवा से एक पंद्रहवाड़ा अख़बार "मन्दिर से" हिन्दी में निकलता है. इसमें 12 सफ़े होते हैं और सालाना चन्दा दो रुपया है.

पूरे इलाक़े में चार जगह महिला केन्द्र हैं—पुठिया, मरौली, बलजू और बनी. यह चारों हरिजन गांव हैं. हर सेन्टर पर तीन सेविकायें रहती हैं जिनके सिपुर्द जच्चा-काम, तालीम और कढ़ाई-बुनाई रहते हैं.

महेवा से दस मील के फ़ासले पर लखना में 'ग्राम सेवकों' की ट्रेनिंग का केन्द्र है. यहां पर ग्राम सेवकों और दूसरे लोगों को इस योजना से सम्बन्ध में ट्रेनिंग, विशेष कोर्स व जानकारी दी जाती है.

गांव वालों को तमाशे दिखाना, विशेष मेले और तरह तरह के दिखावों का इन्तज़ाम करना वग़ैरा काम इस योजना की ख़ास चीज़ें हैं.

योजना के कारकुन व ख़र्च.

ज़िला विकास अफ़सर से लेकर नीचे चपरासी या चौकीदार तक इस योजना में सवा सौ आदमी मुलाज़िम

ہم یہاں یہ بتا دیں کہ جانوروں کے ٹیکوں کا گاؤں والوں نے کافی سواگت کیا ہے. پر بناوٹی گربھ یا حمل کے بارے میں ایسا ہرگز نہیں کہا جاسکتا.

جہاں تک جن صحت کا واسطہ ہے ملیریا روکنے کے لئے لوگوں کو کھانے کے واسطے پالو ڈرین کی گولیاں پہلے سال مفت بانٹی گئیں. مکانوں کے اندر گیمکسین دیواروں اور فرش پر چھڑکا گیا تاکہ ملیریا کے کیڑے مرجائیں.

سینچائی کے سلسلے میں تین آرٹیزین کوئیں اور ایک ٹیوب ویل اس علاقے میں کھدوائے گئے. ساتھ ہی ساتھ یہ بھی کوشش کی گئی کہ ان زمینوں کو قابو میں لائیں جو یا تو اوسر ہیں یا جن میں پانی بہت رک جاتا ہے یا جو کھادر میں ہیں.

اوپر کہا جا چکا ہے کہ بڑھیا یا سدھرے ہوئے اوزار اس یوجنا کی خصوصیت ہیں. نیچے ہم کچھ اوزاروں کے نام اور دام دیتے ہیں.

روپیہ		
190	اولپاڈ تھریسر	1.
65	کلٹیویٹر سیڈر	2.
600	سیڈ ڈرل	3.
85	کلٹیویٹر	4.
90	اسپائیک	5.
75	وکٹری ہل	6.
1200	موور (کٹیا)	7.

اٹاوہ یوجنا کے اندر 41 جگہوں پر بالغ تعلیم چل رہی ہے. ایک چلتی ہوئی لائبریری بھی ہے جس میں کتابوں کی 50 پیٹیاں رہتی ہیں. مہیوا سے ایک پندرہ واڑہ اخبار "مندر سے" ہندی نکلتا ہے اسمیں 12 صفحے ہوتے ہیں اور سالانہ چندہ دو روپیہ ہے.

پورے علاقے میں چار جگہ مہیلا کیندر ہیں—پوٹھیا، مرولی، بلجو اور بنی. یہ چاروں ہریجن گاؤں ہیں. ہر سینٹر پر تین سیوکائیں رہتی ہیں جن کے سپرد زچاکام تعلیم اور کڑھائی بنائی رہتے ہیں.

مہیوا سے دس میل کے فاصلے پر لکھنا میں 'گرام سیوکوں' کی ٹریننگ کا کیندر ہے. یہاں پر گرام سیوکوں اور دوسرے لوگوں کو اس یوجنا کے سمبندھ میں ٹریننگ، وشیش کورس و جانکاری دی جاتی ہے.

گاؤں والوں کو تماشے دکھانا، وشیش میلے وغیرہ کا انتظام کرنا وغیرہ کام اس یوجنا کی خاص چیزیں ہیں.

یوجنا کے کارکن و خرچ.

ضلع وکاس افسر سے لے کر نیچے چپراسی یا چوکیدار تک اس یوجنا میں سوا سو آدمی ملازم

...ाई गई. गेहूँ और आलू में जो नतीजे निकले वह हम ...ेते हैं :

गेहूँ.

साल	बीज जो बंटा	जमीन जेर काश्त	देसी बीज से फ़ी एकड़ पैदावार	बढ़िया बीज से फ़ी एकड़ पैदावार
	मन	एकड़	मन	मन
.948-49	915	600	8	10
.949-50	3000	2000	9½	13
.950-51	7500	5000	14	23
.951-52	10,000	7000	...	18 से 20

आलू.

1948-49	300	35	98	218
1949-50	800	100	117	269
1950-51	1000	125	160	280
1951-52	1500	190	....	230

इस इलाक़े में जितनी ज़मीन पर गेहूं बोया जाता था ...का 92% इस योजना के अन्दर और आलू वाली का ...%आ चुका है. ऊपर के आंकड़ों से पता चलता है कि ...0-51 में पैदावार ख़ास तौर से ज़ियादा हुई, हमें ...या गया कि इसकी वजहें थीं बढ़िया बीज, हरी खाद, फ़ासफ़ेट फ़र्टीलाइज़र्स और जाड़े का पानी. देश में ...जगह लाखों-करोड़ों रुपया "अनाज उपजाओ" के ...में बरबाद कर दिया गया पर कहीं भी इस तरह के ...जे नहीं देखने में आये.

योजना की ख़ास बातें.

महेवा के 97 गांवों में 80 सहयोग सोसाइटियां हैं ...से सात यूनियन या संघ बना दिये गये हैं. उनके नाम ...वा, लखना, औरंग, जसवन्तपुर, लाखी, नेवारी कलां ...शेरपुर. हर संघ में क़रीब 10-12 सोसाइटियां हैं. इन के गोदामों पर बीज, औज़ार, सूत, कपड़ा, चीनी, ..., दवाईयां वग़ैरा मिला करती हैं.

...स इलाक़े में औज़ारों का एक वर्कशाप है जहां ...तैयारी, मरम्मत वग़ैरा का काम होता है और एक पशुपालन का है. यह दोनों महेवा ख़ास में ही रखे ... पशु पालन के सिलसिले में क्या और कितना काम नीचे दिये आंकड़ों से पता चलता है :

... काम	1948-49	49-50	50-51	51-52
...का टीका	4,647	18,559	22,000	24,029
...का टीका	11,233	23,116	6,530	8,885
...िया	670	752	862	754
...ती गर्भ	6	6	220	543
[illegible]	10	22	13	57

پہونچائی گئی . گیہوں اور آلو میں جو نتیجے نکلے وہ ہم نیچے دیتے ہیں .

گیہوں.

نمبر	سال	بیج جو بٹا	زمین زیر کاشت	دیشی بیج سے فی ایکڑ پیداوار	بڑھیا بیج سے فی ایکڑ پیداوار
		من	ایکڑ	من	من
.1	1948-49	915	600	8	10
.2	1949-50	3000	2000	9½	13
.3	1950-51	7500	5000	14	23
.4	1951-52	10,000	7000	„	18 سے 20

آلو.

.1	1948-49	300	35	98	218
.2	1949-50	800	100	117	269
.3	1950-51	1000	125	160	280
.4	1951-52	1500	190	...	230

اِس علاقے میں جتنی زمین پر گیہوں بویا جاتا تھا اِسکا 92% اِس یوجنا کے اندر اور آلو والی کا 80% آچکا ھے. اوپر کے آنکڑوں سے پتہ چلتا ھے کہ 1950-51 میں پیداوار خاص طور سے زیادہ ہوئی' ہمیں بتایا گیا کہ اس کی وجہیں تھیں بڑھیا بیج' ہری کھاد' سو پر فاسفیٹ فرٹیلائزرس اور جاڑے کا پانی . دیش میں جگہ جگہ لاکھوں کروڑوں روپیہ " اناج اپجاؤ " کے کام میں برباد کر دیا گیا پر نہیں بھی اِس طرح کے نتیجے نہیں دیکھنے میں آئے .

یوجنا کی خاص باتیں.

مہیوا کے 97 گاؤں میں 80 سہیوگ سوسائٹیاں ھیں جن سے سات یونین یا سنگھ بنا دیئے گئے ھیں. اُن کے نام ھیں مہیوا' لکھنا' اورنگ جسونت پور' لاکھی' نیواری کلاں اور شیرپور. ھر سنگھ میں قریب دس بارہ سوسائیٹیاں ھیں. اِن سنگھوں کے گوداموں' پر بیج' اوزار' سوت' کپڑا' چینی' کھاد' دوائیاں وغیرہ ملا کرتی ھیں.

اِس علاقے میں اوزاروں کا ایک ورک شاپ جہاں اِن کی تیاری' مرمت وغیرہ کا کام ہوتا ھے اور ایک پشو پالن کا ھے. یہ دونوں مہیوا خاص میں ھی رکھے گئے ھیں. پشو پالن کے سلسلے میں کیا اور کتنا کام ہوا نیچے دیئے آنکڑوں سے پتہ چلتا ھے :

نمبر	کام	1948-49	49-50	50-51	51-52
.1	کھورکا ٹیکہ	4,647	18,559	22,000	24,029
.2	پھنکہ ٹیکہ	11.233	23,116	6,530	8,885
.3	بچھیا	670	752	862	754
.4	بناوٹی گربھ	6	6	220	533
[illegible]	[illegible]	10	22	13	57

हुक्म नम्बर 10069-BI—XII C-D. C-561-48, तारीख 27 नवम्बर 1948 में इसकी मन्ज़ूरी दी. इस योजना अन्दर खेती, पशु पालन के कोआपरेशन, सिंचाई, औज़ार, इमारत और सफ़ाई, जन-सेहत, औरतों की सेवा, गांव शिरकत (जिसमें बालिग़ों की तालीम और तमाशा दिखाना वग़ैरा शामिल हैं) सम्बन्धी काम किये जाने की तजवीज़ इस सरकारी मन्ज़ूरी में की गई है.

योजना को चलाने के लिये सरकार ने एक बाक़ायदा निज़ाम खड़ा कर दिया है. इसकी बागडोर मिस्टर अलबर्ट मेयर के हाथों में है. योजना पर अमल-दरामद की ज़िम्मेदारी ज़िला विकास अफ़सर की है. वैसे तो उनके ऊपर इटावे ज़िले का ज़िला मजिस्ट्रेट व कलक्टर है जो पहले इस योजना में विकास अफ़सर का काम कर चुके हैं. विकास अफ़सर के नीचे चार अफ़सर हैं जो डिप्टी डेवलपमेन्ट अफ़सर कहलाते हैं. योजना सम्बन्धी काम को चार हिस्सों में बांट कर इनके सिपुर्द कर दिया गया है—खेती व पशु पालन, सिंचाई व औज़ार, ट्रेनिंग, और गांव प्रचार. इनके तले छै छोटे डेवलपमेन्ट अफ़सर हैं जो डेवलपमेन्ट इन्सपेक्टर कहलाते हैं, और उनके नीचे 24 ग्राम सेवक. सरकारी महकमों का जैसे सहयोग, खेती, विकास, पशु-पालन, सेहत वग़ैरा वग़ैरा के वह सारे अमलदार जो इलाक़े में मुलाज़िम हैं इसी स्कीम के मातहत काम कर रहे हैं. इस सरकारी पिंजड़े में जान डालने का काम मेयर साहब ने किया. उन्हीं की बदौलत इस मशीनरी में कुछ दम आ गया, दफ़्तरी लौटा फेरी झिकझिक से वह कुछ थोड़ा बाहर रह सकी और इस वजह से कुछ कर भी सकी, जब कि क्या देश के क्या सूबे के हर ज़िले के अन्दर मौजूद ऐसी सरकारी मशीनरियां एकदम नपुंसक पड़ी हुई हैं. साथ ही साथ यह भी कहना चाहिये कि अब तक सरकार ने किसी देशी या विदेशी जानकार या योजना-नवीस पर इतना विश्वास नहीं किया जितना तक़दीर के सिकन्दर मेयर साहब पर, और न कभी इतने ज़ोर-शोर के साथ किसी के सिपुर्द अपना सारा करोबार किया. हम कह सकते हैं कि सरकार ने अपनी तरफ़ से मेयर साहब को महेवा का बेताज का राजा बना रखा है.

योजना से काम

इस योजना की शुरूआत में और ख़सूसियत के साथ जो काम किया गया वह था बढ़िया बीज बांटना, ख़ासकर गेहूं और आलू के. सनई के जैसी हरी खाद के बीज और कीमियाई (विलायती) खाद भी दिये गये. साथ ही साथ यह भी बताया गया कि बढ़िया और ख़ास औज़ारों से किस तरह काम लिया जाता है. उन औज़ारों को इस्तेमाल करने की आसानी भी गांव वालों को, अगर वह चाहें,

حکم نمبر 10069-BI—XII-D. C-561-48، تاریخ 27 نومبر 1948 میں اس کی منظوری دی . اس یوجنا کے اندر کھیتی' پشوپالن کے کوآپریشن' سینچائی' اوزار' عمارت اور صفائی' جن صحت' عورتوں کی سیوا' گاؤں شرکت (جس میں بالغوں کی تعلیم اور تماشہ دکھانا وغیرہ شامل ہیں) سمبندھی کام کئے جانے کی تجویز اس سرکاری منظوری میں کی گئی ہے .

یوجنا کو چلانے کے لئے سرکار نے ایک باقاعدہ نظام کھڑا کر دیا ہے . اس کی باگڈور مسٹر البرٹ میئر کے ہاتھوں میں ہے . یوجنا پر عمل درآمد کی ذمہ داری ضلع وکاس افسر کی ہے . ویسے تو ان کے اوپر اٹاوے ضلع کا ضلع مجسٹریٹ و کلکٹر ہے جو پہلے اس یوجنا میں وکاس افسر کا کام کر چکے ہیں . وکاس افسر کے نیچے چار افسر ہیں جو ڈپٹی ڈیولپ مینٹ افسر کہلاتے ہیں . یوجنا سمبندھی کام کو چار حصوں میں بانٹ کر ان کے سپرد کر دیا گیا ہے—کھیتی و پشو پالن' سینچائی و اوزار' ٹریننگ' اور گاؤں پرچار . ان کے بعد چھ چھوٹے ڈیولپ مینٹ افسر ہیں جو ڈیولپ مینٹ انسپکٹر کہلاتے ہیں' اور ان کے نیچے 24 گرام سیوک ہیں . سرکاری محکموں کا جیسے سہیوگ' کھیتی' وکاس' پشو پالن' صحت وغیرہ وغیرہ کے وہ سارے عملدار جو اس حلقے میں ملازم ہیں اسی اسکیم کے ماتحت کام کر رہے ہیں . اس سرکاری پنجرے میں جان ڈالنے کا کام میئر صاحب نے کیا . انہیں کی بدولت اس مشینری میں کچھ دم آ گیا' دفتری لوٹا پھیری کی جھک جھک سے وہ کچھ تھوڑا باہر رہ سکی اور اس وجہ سے کچھ کر بھی سکی' جب کہ کیا دیش کے کیا صوبے کے ہر ضلعے کے اندر موجود ایسی سرکاری مشینریاں ایکدم نپنسک پڑی ہوئی ہیں. ساتھ ہی ساتھ یہ بھی کہنا چاہئے کہ اب تک سرکار نے کسی دیشی یا ودیشی جانکار یا یوجنا نویس پر اتنا وشواس نہیں کیا جتنا تقدیر کے سکندر میئر صاحب پر' اور نہ کبھی اتنے زور شور کے ساتھ کسی کے سپرد اپنا سارا کاروبار کیا . ہم کہ سکتے ہیں کہ سرکار نے اپنی طرف سے میئر صاحب کو مہیوا کا بےتاج کا راجہ بنا رکھا ہے .

یوجنا سے کام .

اس یوجنا کی شروعات میں اور خصوصیت کے ساتھ جو کام کیا گیا وہ تھا بڑھیا بیج بانٹنا' خاصکر گیہوں اور آلو کے . سنئی کے جیسی ہری کھاد کے بیج اور کیمیائی (ولایتی) کھاد بھی دئے گئے . ساتھ ہی ساتھ یہ بھی بتایا گیا کہ بڑھیا اور خاص اوزاروں سے کس طرح کام لیا جاتا ہے . ان اوزاروں کو استعمال کرنے کی آسانی بھی گاؤں والوں کو' اگر وہ چاہیں'

र आज कल वर्धा नगर व पास के तीस गांव च वाली योजना में काम कर रहे हैं, भाई प्रभाकर । कानेटकर जो चर्खा संघ की काश्मीर शाखा के ई हैं, भाई मधुकर चौधरी जो गोविन्दराम सक्सेरिया कालिज, वर्धा में एम. काम. के विद्यार्थी हैं और । (Planning) के विषय में खास दिलचस्पी हैं, और भाई गंगा प्रसाद गुप्त जो एक समझे-बूझे । हैं और मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा ज़िले में खेती हैं. सातवीं साथिन एक बहन थी—श्रीमती सुमन ने एम. ए. जो अपने पति के साथ स्वावलम्बी ि प्रयोग में महा काल नाम के गांव में जो (वर्धा से दूर है) में करती है.

टावा योजना के बारे में कुछ भी कहने के पहले इस योजना के अधिकारियों का शुक्रिया अदा हैं, खास कर भाई बैजनाथ सिंह का जो डिप्टी मेन्ट अफ़सर हैं. जिस आदर व सत्कार के साथ भ भाई हमारे साथ पेश आये, इन्होंने हमारे जो आसानियां मुहय्या कीं, जो अपना समय हमें उसके लिये हम इनके आभारी हैं. साथ ही साथ ोजना के प्रान और कर्ता धर्ता, मिस्टर अलबर्ट मेयर ो हम अहसान मन्द हैं जिन्होंने अपना अनमोल दे कर योजना सम्बन्धो कुछ बात चीत हम से की.

ोजना का जन्म.

टावा योजना ने नवम्बर 1948 में जन्म लिया. । नगर से 18 मील पूरब को महेवा नाम की एक है. उसके आस-पास के 97 गांवों में यह योजना रही है. इटावा शहर खास मुक़ाम है इटावा ज़िले का त्तर प्रदेश की इलाहाबाद कमिश्नरी के उत्तर पूरबी सिरे . इटावा के चारों तरफ़ कानपुर, फ़र्रुख़ाबाद, मैनपुरी जालौन के ज़िले हैं. इटावा शहर ईस्ट इन्डियन रेल और दिल्ली इलाहाबाद के क़रीब क़रीब बीच में । है. इटावाघी और तिलहन की मशहूर मंडी है.

न 97 गांवों को आबादी 79,000 है और रक़बा 00 एकड़ है. इनमें से 45,500 एकड़ कास्त में है. इस की दक्खिनी हद जमुना नदी है. और गंगा की एक इसके बीच को होकर जाती है.

ोजना क्या है?

स योजना को सोचने और चलाने का श्रेय मिस्टर र्ट मेयर को है जो अमरीका के रहने वाले हैं. आप एक फ़ौजी की हैसियत से पिछली लड़ाई में हिन्दुस्तान थे. वैसे आप नगर बनाने की कला के एक बहुत ही [illegible] जानकार हैं. उत्तर प्रदेश की सरकार ने अपने

ھیں اور آجکل وردھا نگر و پاس کے تیس گاؤں کے وکاس والی یوجنا میں کام کر رھے ھیں' بھائی پربھاکر واسودیو کانیٹ کر جو چرخہ سنگھ کاشمیر شاخا کے انچارج ھیں' بھائی مدھوکر چودھری جو گووندرام سیکسریا کامرس کالج وردھا میں ایم . کام کے ودیارتھی ھیں اور یوجنا (Planning) کے وشے میں خاص دلچسپی رکھتے ھیں' اور بھائی گنگا پرساد گپت جو ایک سمجھے بوجھے کسان ھیں اور مدھیہ پردیش کے چھندواڑا ضلعے میں کھیتی کرتے ھیں . ساتویں ساتھن ایک بہن تھیں— شریمتی سمن مانو دھنلے ایم . اے . جو اپنے پتی کے ساتھ سواولمبی کھیتی کے پریوگ میں مہاکال نام کے گاؤں میں جو(وردھا سے پانچ میل دور ھے) میں کام کرتی ھیں .

اٹاوہ یوجنا کے بارے میں کچھ بھی کہنے کے پہلے ھم اس یوجنا کے ادھیکاریوں کا شکریہ ادا کرتے ھیں' خاص کر بھائی بیج ناتھ سنگھ کا جو ڈپٹی ڈیولپمنٹ افسر ھیں. جس آدر و ستکار کے ساتھ یہ سب بھائی ھمارے ساتھ پیش آئے' انہوں نے ھمارے لئے جو آسانیاں مہیا کیں' جو اپنا سمے ھمیں دیا اس کے لئے ھم ان کے آبھاری ھیں. ساتھ ھی ساتھ اس یوجنا کے پران اور کرتا دھرتا مسٹر البرٹ میئر کے بھی ھم احسانمند ھیں جنھوں نے اپنا انمول سمے دے کر یوجنا سمبندھی کچھ بات چیت ھم سے کی .

یوجنا کا جنم .

اٹاوہ یوجنا نے نومبر 1948 میں جنم لیا . اٹاوہ نگر سے 18 میل پورب کو مہیوا نام کی ایک بستی ھے . اسکے آس پاس کے 97 گاؤں میں یوجنا چل رھی ھے اٹاوہ شہر کا خاص مقام ھے اٹاوہ ضلعے کا جو اتر پردیش کی الہ آباد کمشنری کے اتر پوربی سرے پر ھے اٹاوہ کے چاروں طرف کانپور' فرخ آباد مینپوری اور جالون کے ضلعے ھیں. اٹاوہ شہر ایسٹ انڈین ریل پر ھے اور دلی الہ آباد کے قریب قریب بیچ میں پڑتا ھے . اٹاوہ گھی اور تلھن کی مشہور منڈی ھے .

ان 97 گاؤں کی آبادی 79,000 ھے اور رقبہ 61,400 ایکڑ ھے. ان میں سے 45,500 ایکڑ کاشت میں ھے. اس علاقے کی دکھنی حد جمنا ندی ھے . گنگا کی ایک نہر اسکے بیچ کو ھوکر جاتی ھے .

یوجنا کیا ھے ؟

اس یوجنا کو سوچنے اور چلانے کا شریہ مسٹر البرٹ میئر کو ھے جو امریکہ کے رہنے والے ھیں . آپ پہلے ایک فوجی کی حیثیت سے پچھلی لڑائی میں ھندستان آئے تھے . ویسے آپ نگر بنانے کی کلا کے ایک بہت ھی زبردست جانکار ھیں . اتر پردیش کی سرکار نے اپنے

इटावे का घर फूंक तमाशा

(ठाकुरदास बंग और सुरेश रामभाई)

[क्या हिन्दुस्तान में, क्या अमरीका में इटावा योजना की बड़ी चर्चा है. हाल ही में वर्धा के प्रोफ़ेसर ठाकुरदास बंग, 'नया हिन्द' के सुरेश रामभाई कई साथियों के साथ इटावा गये जहां उन्होंने इस योजना को खूब देखा-समझा. उनकी रिपोर्ट हम नीचे दे रहे हैं. हमारा ख़याल है देश के सामने इटावा योजना की पहलीबार सच्ची व साबित तसवीर पेश की जा रही है. हमें उम्मीद हैं कि हमारे प्रेमी व पाठक इसे ध्यान से पढ़ेंगे—एडीटर]

आजकल का ज़माना 'विकास' या डेवलपमेन्ट का ज़माना कहलाता है. हर मुल्क में विकास की योजनायें या डेवलपमेन्ट प्लान बन रहे हैं और चल रहे हैं. हमारे देश में भी विकास की तूती बोल रही है और जिसे देखिये उसके पास एक ऐसी योजना मौजूद है जिससे हमारे अभागे भाई बहनों के 'रहन सहन का दर्जा' ऊंचा उठ सकता है. इधर कुछ अरसे से एक नई योजना की बहुत ज़ोरों से चर्चा चल रही है. इसका नाम है—इटावा विकास योजना. कहा जाता है कि इस योजना के नमूने पर सारे देश भर में ऐसी योजनायें चलाई जायेंगी और इसके वास्ते जानकारों की, मशीनरी की, रुपये-पैसे की, हर तरह की मदद देने का वादा अमरीका ने हाल के हिन्द-अमरीकी समझौते में कर लिया है. सरकारी और दूसरे हलक़ों का दावा है कि इस तरह इटावा जैसी योजना चलाने पर हमारे देश की हालत बहुत कुछ सुधर जायेगी.

लेकिन अब तक अख़बारों से या दूसरे प्रचारों से जनता को यह नहीं बताया गया कि इटावा योजना चीज़ क्या है, इसमें क्या किया गया है और किस तरह इसकी नक़ल की जायगी. इस योजना की कोई बेलाग जानकारी हमारे देखने में नहीं आई. इसलिये हमारी दिली इच्छा थी कि मौक़े पर जाकर ज़रा देखें-समझें कि इस योजना का क्या कमाल है और इससे सचमुच हमारा कितना फ़ायदा है. इसलिये सेवापुरी (बनारस) में होने वाले (13,14,15 अप्रैल) सर्वोदय सम्मेलन के बाद हम दोनों इटावा आये जहां तीन दिन 18,19,20 अप्रैल रहे, और इस योजना को समझने की पूरी कोशिश की. हमारी टोली में कुल मिला कर कुल सात भाई बहन थे—भाई चंद्रिका प्रसाद पांडे जो गो सेवा संघ, वर्धा के कार्य करता

اِٹاوے کا گھر پھونک تماشہ

(ٹھاکر داس بنگ اور سریش رام بھائی)

[کیا ھندستان میں' کیا امریکہ میں اِٹاوہ یوجنا کی بڑی چرچا ھے . حال ھی میں وردھا کے پروفیسر ٹھاکر داس بنگ' ' نیا ھند ' کے سریش رام بھائی کئی ساتھیوں ساتھ اِٹاوہ گئے جہاں اُنھوں نے اِس یوجنا کو خوب دیکھا سمجھا . اُن کی رپورٹ ھم نیچے دے رھے ھیں . ھمارا خیال ھے دیش کے سامنے اٹاوہ یوجنا کی پہلی بار سچی و ثابت تصویر پیش کی جا رھی ھے . ھمیں اُمید ھے کہ ھمارے پریمی و پاٹھک اِسے دھیان سے پڑھینگے—ایڈیٹر]

آجکل کا زمانہ ' وکاس ' یا ڈیولپمنٹ کا زمانہ کہلاتا ھے . ھر ملک میں وکاس کی یوجنائیں یا ڈیولپمنٹ پلان بن رھے ھیں اور چل رھے ھیں . ھمارے دیش میں بھی وکاس کی طوطی بول رھی ھے اور جسے دیکھئے اُس کے پاس ایک ایسی یوجنا موجود ھے جس سے ھمارے ابھاگے بھائی بہنوں کے 'رھن سہن کا درجہ' اُونچا اُٹھ سکتا ھے . اِدھر کچھ عرصہ سے ایک نئی یوجنا کی بہت زوروں سے چرچہ چل رھی ھے. اس کا نام ھے—اٹاوہ وکاس یوجنا . کہا جاتا ھے کہ اِس یوجنا کے نمونہ پر سارے دیش بھر میں ایسی یوجنائیں چلائی جائینگی اور اِس کے واسطے جانکاروں کی' مشینری کی' روپے پیسے کی' ھر طرح کی مدد دینے کا وعدہ امریکہ نے حال کے ھند امریکی سمجھوتے میں کر لیا ھے . سرکاری اور دوسرے حلقوں کا دعویٰ ھے کہ اس طرح اٹاوہ جیسی یوجنا چلانے پر ھمارے دیش کی حالت بہت کچھ سدھر جائیگی .

لیکن اب تک اخباروں سے یا دوسرے پرچاروں سے جنتا کو یہ نہیں بتایا کہ اِٹاوہ یوجنا چیز کیا ھے' اس میں کیا کیا گیا ھے اور کس طرح اس کی نقل کی جائے گی . اس یوجنا کی کوئی بیلاگ جانکاری ھمارے دیکھنے میں نہیں آئی . اس لئے ھماری دلی اِچھا تھی کہ موقعے پر جاکر ذرا دیکھیں سمجھیں تو کہ اس یوجنا کا کیا کمال ھے اور اِس سے سچ مچ ھمارا کتنا فائدہ ھے . اس لئے سیوا پوری (بنارس) میں ھونے والے (13,14,15 اپریل) سروودے سمیلن کے بعد ھم دونوں اٹاوہ آئے جہاں تین دن 18,19,20 اپریل رھے' اور اس یوجنا کو سمجھنے کی پوری کوشش کی . ھماری ٹولی میں کُل ملا کر سات بھائی بہن تھے—بھائی چندرکا پرساد پانڈے جو گو سیوا سنگھ وردھا کے کاریہ کرتا

इस कारण वह भी भौतिकवादी न होकर आदर्शवादी
द्वंद्वात्मक विचार धारा को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद
वाला मार्क्स है. वह द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पहले
वाद से मुख्तलिफ है. पहले भौतिकवादी माद्दे की
को नहीं समझते थे और वह जिन्दगी का मक़सद
पीना ही समझते थे. लेकिन मार्क्स ने बताया कि
की तमाम भौतिक, आर्थिक और सामाजिक
लियाँ एक नियम के मुताबिक़ हो रही हैं और हर
ग उससे पहले के युग के मुक़ाबले में तरक़्क़ी कर
. इन्सान की हर नई पीढ़ी को अपने से पहले की
का ज्ञान और अनुभव विरासत में मिलता है और
पीढ़ी का इन्सान अपने अनुभव से नया ज्ञान
है और दुनिया को बेहतर बनाता है. इस तरह
का विकास जारी रहता है. और इन्सान जैसे
आर्थिक उन्नति कर रहा है उसकी संस्कृति और
का भी विकास हो रहा है. इन्सान अपने ज्ञान
र साइन्स की ईजादों को जितना अधिक निर्माण
और सब के फ़ायदे के लिये अमल में लायेगा
ही दुनिया से अंधकार मिटेगा, इन्सान का
मिक या रूहानी विकास होगा, जितना समाज
करेगा उतना ही आदमी का व्यक्तित्व तरक़्क़ी
माली खुशहाली में ही आदमी की आत्मा खुशहाल
सम्पन्न रह सकती है. भूख और बीमारी से वह
और नाश होती है क्योंकि आत्मा माद्दे की तरक़्क़ी-
शक्ल ही है और शरीर से अलग उसका कोई
या हस्ती नहीं है.

मार्क्सवाद का फ़लसफ़ा है. सुरेश भाई का
ना है कि उन्नीसवीं सदी दुनिया के इतिहास में
ज़ियादा माद्दापरस्त और माद्दा पसंद थी, लेकिन
तरह उन्नीसवीं सदी के विज्ञानी उसूली क़िले को
चन्द्र बसु और आइन्सटाइन ने ढा दिया उसी
मार्क्स और लेनिन के उसूली क़िले को टालस्टाय
दिया, दुरुस्त नहीं. यह तो वही ज़मीन को चपटी
वाली बात है. हालांकि हक़ीक़त यह है कि टालस्टाय
रूस में मार्क्सवाद की जीत हुई और आज
गांधी के बाद चीन में हम उसकी जीत देख रहे
इस विचार धारा का विचार दिन दिन बढ़ रहा है.

आखिर में कुछ ज़ियादा न कह कर मैं सिर्फ़ इतना
ना चाहता हूँ कि गो सर्वोदयी और कम्यूनिस्टों
मक़सद एक है, मगर उनकी विचार धारा और उनके
उन्हें पहले ही क़दम पर अलग अलग कर देते हैं.
किस के साथ है इसका फ़ैसला तारीख़ हमारे
कर रही है.

تھا' اس کارن وہ بھی بھوتک وادی نہ ہو کر آدرش وادی تھا۔ دونددواتمک وچار دھارا کو دونددواتمک بھوتک واد بنانے والا مارکس ہے۔ یہ دونددواتمک بھوتک واد پہلے بھوتک واد سے مختلف ہے۔ پہلے بھوتک وادی مادے کی حرکت کو نہیں سمجھتے تھے اور وہ زندگی کا مقصد کھانا پینا ہی سمجھتے تھے۔ لیکن مارکس نے بتایا کہ سنسار کی تمام بھوتک' آرتھک اور سماجک تبدیلیاں ایک نیم کے مطابق ہو رہی ہیں اور ہر نیا یگ اُس سے پہلے کے یگ کے مقابلے میں ترقی کر رہا ہے۔ انسان کی ہر نئی پیڑھی کو اپنے سے پہلے کی پیڑھی کا گیان اور انوبھو وراثت میں ملتا ہے اور ہر نئی پیڑھی کا انسان اپنے انوبھو سے نیا گیان سیکھتا ہے اور دنیا کو بہتر بناتا ہے۔ اسطرح آدمی کا وکاس جاری رہتا ہے۔ اور انسان جیسے جیسے آرتھک اُنتی کر رہا ہے اُسکی سنسکرتی اور سبھیتا کا بھی وکاس ہو رہا ہے۔ انسان اپنے گیان کو اور سائنس کی ایجادوں کو جتنا ادھک نرمان کے لئے اور سب کے فائدے کے لئے عمل میں لائیگا اتنا ہی دنیا سے اندھکار مٹیگا' انسان کا آدھیاتمک یا روحانی وکاس ہوگا' جتنا سماج ترقی کریگا اتنا ہی آدمی کا ویکتتو ترقی کریگا۔ مالی خوشحالی میں ہی آدمی کی آتما خوشحال اور سمپن رہ سکتی ہے بھوک اور بیماری سے وہ کمزور اور ناش ہوتی ہے کیونکہ آتما مادے کی ترقی یافتہ شکل ہی ہے اور شریر سے الگ اُسکا کوئی وجود یا ہستی نہیں ہے۔

یہ مارکس واد کا فلسفہ ہے۔ سریش بھائی کا یہ کہنا کہ اُنیسویں صدی دنیا کے اتہاس میں سب سے زیادہ مادہ پرست اور مادہ پسند تھی' لیکن جس طرح اُنیسویں صدی کے وگیانی اُصولی قلعے کو جگدیش چندر بسو اور آئنسٹائن نے ڈھا دیا اُسی طرح مارکس اور لینن کے مالی اُصولی قلعے کو ٹالسٹائے نے ڈھا دیا' درست نہیں۔ یہ تو وہی زمین کو چپٹی ماننے والی بات ہے۔ حالانکہ حقیقت یہ ہے کہ ٹالسٹائے کے بعد روس میں مارکس واد کی جیت ہوئی اور آج مہاتما گاندھی کے بعد چین میں ہم اُسکی جیت دیکھ رہے ہیں اور اس وچار دھارا کا وچار دن دن بڑھ رہا ہے۔

آخر میں کچھ زیادہ نہ کہکر میں صرف اِتنا ہی کہنا چاہتا ہوں کہ گو سروودئی اور کمیونسٹوں کا مقصد ایک ہے مگر اُن کی وچار دھارا اور اُن کے سادھن پہلے ہی قدم پر الگ الگ کر دیتے ہیں۔ سچائی کس کے ساتھ ہے اُس کا فیصلہ تاریخ ہمارے سامنے کر رہی ہے۔

करता रहे, और शोषण के कारन जो भूक, बीमारी और व्यभिचार फैलता है वह फैला करे और इस से लाखों करोड़ों इन्सान सिसक सिसक हर पल मरते हैं वह मरते रहें.

इस असूली बहस को पूरी तरह समझने के लिये मार्क्सवाद और आदर्शवाद का ऐतिहासिक सम्बन्ध जानना जरूरी है.

तारीख़ का मुताला हमें बताता है कि जब इन्सान पैदा हुआ तो उसने अपनी जीवन रक्षा के लिये क़ुदरत के ख़िलाफ़ संघर्ष शुरू किया. उसने रहने के लिये मकान बनाए, पहनने को कपड़े तैयार किये, पशुओं को पाला और सिखाया. यह दुनिया को अमल में बदलने का नया तरीक़ा था.

लेकिन इस पहली हालत में दुनिया को बदलना मुशकिल था, इसलिये इन्सान ने अपने आप को ख़यालात और जज़बात में भी बदला; चांद, सूरज, बादल और धरती के बारे में कहानियां बनाईं. यह अपने आपको बदलने का तरीक़ा है.

दुनिया को अमल से बदलने से माद्दीयत, माटीवाद या भौतिक वाद की विचार धारा बनी और अपने आप को ख़यालात में बदलने से आदर्शवाद की विचार धारा ने जन्म लिया.

शुरू से ही इन दोनों विचार धाराओं के ज़रिये आदमी क़ुदरत के ख़िलाफ़ और आदमी का आदमी के ख़िलाफ़ संघर्ष चलता रहा. हर देश में दोनों विचारों के फ़िलासफ़र पाये जाते हैं और दोनों विचार धाराएं एक दूसरे पर असर डालती रही हैं और इन्सान के विकास में मदद करती रही हैं. जैसे जैसे पैदावार के साधन और ढंग बदलते रहे आदर्शवादी और भौतिकवादी विचारधारा भी बदलती रही.

दुनिया में सिर्फ़ असलियत (Rational) का वजूद रहता है और जो चीज़ असलियत खो देती है उसका वजूद भी मिट जाता है. दुनिया में हर नई असलियत (Thesis) की एक विरोधी असलियत (Anti thesis) भी होती है. धीरे धीरे Thesis कमज़ोर और Anti thesis मज़बूत होता जाता है. आख़िर Thesis को ख़त्म कर के Anti thesis उसका स्थान लेता है. अब यह Anti thesis, Thesis बन जाता है और उसके स्थान पर नया Anti thesis जन्म लेता है. हेगल के इस असूल के मुताबिक़ दुनिया में तबदीलियाँ और इनक़लाब आते हैं.

इस असूल को हेगल ने जहां छोड़ा था, फ़्योरबाख़ ने उसे और आगे बढ़ाया और योरप के बादशाहों और ढोंगी पादरियों के ख़िलाफ़ जनता की लड़ाई को तेज़ करने में मदद दी. फ़्योरबाख़ ईश्वर की हस्ती को मानता था और दायमी असलीयत या अटल सत्य को भी मानता

تا رھے، اور شوشن کے کارن جو بھوک، بیماری اور ویبھچار پھیلتا ھے وہ پھیلا کرے اور اس سے لاکھوں کروڑوں انسان سسک سسک ہر پل مرتے ھیں وہ مرتے رھیں .

اس اصولی بحث کو پوری طرح سمجھنے کے لئے مارکس ، اور آدرش واد کا اتہاسک سمبندھ جاننا ضروری ھے .

تاریخ کا مطالعہ ھمیں بتاتا ھے کہ جب انسان پیدا ! تو اس نے اپنی جیون رکشا کے لئے قدرت کے خلاف نگھرش شروع کیا . اس نے رھنے کے لئے مکان بنائے، ہننے کو کپڑے تیار کئے، پشوؤں کو پالا اور سکھایا . یہ یا کو عمل میں بدلنے کا نیا طریقہ تھا .

لیکن اس پہلی حالت میں دنیا کو بدلنا مشکل ا، اس لئے انسان نے اپنے آپ کو خیالات اور جذبات ں بھی بدلا؛ چاند، سورج، بادل اور دھرتی کے بارے ں کہانیاں بنائیں . یہ اپنے آپ کو بدلنے کا طریقہ ھے .

دنیا کو عمل سے بدلنے سے مادیت، ماٹی واد یا بھوتک ، کی وچار دھارا بنی اور اپنے آپ کو خیالات میں بدلنے ، آدرش واد کی وچار دھارا نے جنم لیا .

شروع سے ھی ان دونوں وچار دھاراؤں کے ذریعے آدمی رت کے خلاف اور آدمی کا آدمی کے خلاف سنگھرش لتا رھا . ہر دیش میں دونوں وچاروں کے فلاسفر پائے اتے ھیں اور دونوں وچار دھارائیں ایک دوسرے پر اثر التی رھی ھیں اور انسان کے وکاس میں مدد کرتی ی ھیں، جیسے جیسے پیداوار کے سادھن اور ڈھنگ بدلتے ، آدرش وادی اور بھوتک وادی وچار دھارا بھی لتی رھی .

دنیا میں صرف اصلیت (Rational) کا وجود تا ھے اور جو چیز اصلیت کھو دیتی ھے اسکا وجود ی مٹ جاتا ھے . دنیا میں ہر نئی اصلیت (Thesis) ایک وِرودھی اصلیت (Anti Thesis) بھی ہوتی ھے. ھیرے دھیرے Thesis کمزور اور Anti Thesis مضبوط تا جاتا ھے. آخر Thesis کو ختم کرکے Anti Thesis سکا استھان لیتا ھے . اب یہ Anti Thesis Thesi بن جاتا ھے اور اس کے استھان پر نیا Anti Thesi جنم لیتا ھے . ھیگل کے اس اصول کے طابق دنیا میں تبدیلیاں اور انقلاب آتے ھیں .

اس اصول کو ھیگل نے جہاں چھوڑا تھا، فیور باخ ے اور آگے بڑھایا اور یورپ کے بادشاھوں اور ونگی پادریوں کے خلاف جنتا کی لڑائی کو تیز کرنے یں مدد دی . فیور باخ ایشور کی ھستی کو مانتا ور دائمی اصلیت یا اٹل ستیہ کو بھی مانتا

म और माओ त्से तुंग ने उसे अपने अमल से आगे
या इसलिये वह वीर और महान हैं.

मार्क्सवाद विचारों की अलग हस्ती नहीं मानता.
लात माद्दी हालात से जन्म लेते हैं और जब वह
त बदलते हैं तो ख़यालात भी बदलते हैं और सच्चाई
बदलती है. मार्क्सवाद किसी अटल सच्चाई में विश्वास
रखता बल्कि माद्दी हालात को समझते रहने और
साथ तब्दील होने को ही सच्चाई मानता है.

मार्क्सवादी यानी कम्यूनिस्ट चूँकि ख़यालात की
ग हस्ती नहीं मानते इसलिये वह समाज को बदलने
ये आदमी को बदलने की बात नहीं कहते बल्कि
मी को बदलने के लिये समाज को बदलने की बात
हैं क्योंकि नए और अच्छे माद्दी हालात में आदमी
ही आप अच्छा बन जायेगा. जब लोगों को आम
र में चीज़ न मिले और अदालत या दफ़्तर से उनका
न निकले, तो वह चोर बाज़ारी में चीज़ ख़रीदने और
त देने पर मजबूर होते हैं, इसके लिये उन्हें दोषी
ना ग़लत है. जिस राजा, ज़मींदार और पूँजीपति का
ही दूसरों की मेहनत पर है, उनका दिल बदलना
न नहीं. फिर यह दो चार आदमियों का सवाल
बल्कि पूरे गिरोह या वर्ग का सवाल है. उसे तभी
जा सकता है जब उससे दूसरों की मेहनत
के साधन छीन लिये जायें, केवल उपदेश से काम
चलता. यही कारन है कि माओ त्से तुंग ने दो साल में
माजी चोरी, रिश्वत और व्यभिचार को ख़त्म कर
और यहां दिल बदलने के उपदेश का असर उलटा
ा है, तबाही और बरबादी दिन दिन बढ़ रही है.

र्वोदयी छीनने के नाम से घबराते हैं और कम्यूनिस्टों
सावादी कहते हैं. हालांकि हिंसावादी वह हैं जो
और कारख़ानों पर अपनी मिलकियत क़ायम रख
सरों की मेहनत चूसते हैं और इस चूसने के कारन
लाखों इन्सान हर रोज़ धीरे धीरे भूक और
ी से मरते रहते हैं. फिर यह लोग अपनी ज़मींदारी,
द और शोषण के दूसरे साधनों की रक्षा के लिये
और फ़ौज रखते हैं, जनता विरोधी क़ानून,
तें और जेलख़ाने बनाते हैं और दूसरों की मेहनत
ाया हुआ करोड़ों रुपया हथियारों पर ख़र्च करते
गर इस ताक़त का दुखी और मेहनतकश जनता
क़त ही से मुक़ाबला करे तो जनता और उसका
ने वाले कम्यूनिस्टों पर हिंसा का इल्ज़ाम क्यों ?
और उसकी पारटी को संगठित होने और ताक़त
करने का और अहिंसा का मतलब यह है कि
[illegible]

اسٹالن اور ماؤتسے تنگ نے اسے اپنے عمل سے آگے بڑھایا
اِس لئے وہ ویر اور مہان ہیں ۔

مارکس واد وچاروں کی الگ ہستی نہیں مانتا ۔ خیالات مادی حالات سے جنم لیتے ہیں اور جب وہ حالات بدلتے ہیں تو خیالات بھی بدلتے ہیں اور سچائی بھی بدلتی ہے ۔ مارکس واد کسی اٹل سچائی میں وشواس نہیں رکھتا بلکہ مادی حالات کو سمجھتے رہنے اور اُن کے ساتھ تبدیل ہونے کو ہی سچائی مانتا ہے ۔

مارکس وادی یعنی کمیونسٹ چونکہ خیالات کی کی الگ ہستی نہیں مانتے اس لئے وہ سماج کو بدلنے کے لئے آدمی کو بدلنے کی بات نہیں کہتے بلکہ آدمی کو بدلنے کے لئے سماج کو بدلنے کی بات کہتے ہیں کیونکہ نئے اور اچھے مادی حالات میں آدمی آپ ہی آپ اچھا بن جائیگا ۔ جب لوگوں کو عام بازار میں چیز نہ ملے اور عدالت یا دفتر سے اُن کا کام نہ نکلے تو وہ چور بازاری میں چیز خریدنے اور رشوت دینے پر مجبور ہوتے ہیں، اس کے لئے اُنہیں دوشی ٹھہرانا غلط ہے ۔ جس راجہ، زمیندار اور پونجی پتی کا وجود ہی دوسروں کی محنت پر ہے، اُن کا دل بدلنا ممکن نہیں ۔ پھر یہ دو چار آدمیوں کا سوال نہیں بلکہ پورے گروہ یا ورگ کا سوال ہے ۔ اُسے تبھی بدلا جا سکتا ہے جب اُس سے دوسروں کی محنت چوسنے کے سادھن چھین لئے جائیں، کیول اُپدیش سے کام نہیں چلتا ۔ یہی کارن ہے کہ ماؤتسے تنگ نے دو سال میں ہی سماجی چوری، رشوت اور ویبھیچار کو ختم کر دیا اور یہاں دل بدلنے کے اُپدیش کا اثر اُلٹا ہو رہا ہے، تباہی اور بربادی دن دن بڑھ رہی ہے ۔

سروودئی چھیننے کے نام سے گھبراتے ہیں اور کمیونسٹوں کو ہنساوادی کہتے ہیں ۔ حالانکہ ہنساوادی وہ ہیں جو زمین اور کارخانوں پر اپنی ملکیت قائم رکھکر دوسروں کی محنت چوستے ہیں اور اِس چوسنے کے کارن ہزاروں لاکھوں اِنسان ہر روز دھیرے دھیرے بھوک اور بیماری سے مرتے رہتے ہیں ۔ پھر یہ لوگ اپنی زمینداری، جائداد اور شوشن کے دوسرے سادھنوں کی رکشا کے لئے پولیس اور فوج رکھتے ہیں، جنتا ورودھی قانون، عدالتیں اور جیلخانے بناتے ہیں اور دوسروں کی محنت کا چرایا ہوا کروڑوں روپیہ ہتھیاروں پر خرچ کرتے ہیں، اگر اِس طاقت کا دکھی اور محنت کش جنتا بھی طاقت ہی سے مقابلہ کرے تو جنتا اور اُس کا ساتھ دینے والے کمیونسٹوں پر ہنسا کا الزام کیوں ؟ جنتا اور اُس کی پارٹی کو سنگٹھت ہونے اور طاقت اِستعمال کرنے کا اور اہنسا کا مطلب یہ ہے کہ اگر
[illegible]

का दिल बदलने में मदद मिलती है. बुद्ध और ईसा इसी असूल पर चलकर महान बने और उन्होंने दुनिया का सुधार किया. बीसवीं सदी में महात्मा टालस्टाय और महात्मा गांधी ने इसी विचार धारा को अपनाया और इस पर अमल कर के दुनिया को बेहतर बनाया. अब आचार्य विनोबा भावे भी इसी विचार धारा द्वारा दुनिया का उद्धार करना चाहते हैं और लोगों को हिंसा और हिंसक इनक़लाब के रास्ते से रोक रहे हैं.

इसके ख़िलाफ़ मार्क्सवादी या कम्यूनिस्ट विचार धारा संसार का और विचारों का आधार माद्दे को मानती है. आदर्शवादी विचार धारा के मुताबिक़ माद्दा जड़ है और सिर्फ़ जगह घेरता है. वह अपने आप हिलता डुलता नहीं. चेतन शक्ति उसे हरकत में लाती है. मार्क्सवाद कहता है कि माद्दा अपने आप हरकत करता है. उसमें दो विरोधी तत्व या अनासिर होते हैं. उनके आपस के संघर्ष से माद्दा हरकत करता है. इस संघर्ष और हरकत से माद्दे का विकास होता है और एक ख़ास हालत में माद्दा सोचने लगता है और उसमें से जीव पैदा होता है. अब यह जीव अपनी रक्षा और ख़ूराक के लिये संघर्ष करता है जिससे समाज का विकास होता है.

आदमी का जन्म इसी विकास के ज़रिये हुआ है और उसका दिमाग़ माद्दे की तरक़्क़ी याफ़्ता शक्ल है. जैसे जैसे माद्दी हालात बदलते हैं आदमी का दिमाग़ और ख़याल भी बदलता है. अब आदमी चूँकि सोच सकता है इसलिये जहां वह माद्दी हालात की पैदावार है वहां वह अपनी सोच और अमल से माद्दी हालात को भी तब्दील करता है. वह हर अमल और हर नई तब्दीली से सीखता है और यों माद्दी तरक़्क़ी करता है और अपने ज्ञान को भी आगे बढ़ाता है.

इसका मतलब है कि आदमी अपनी मेहनत से न सिर्फ़ चीज़ें पैदा करता है बल्कि उसका ज्ञान भी मेहनत ही से पैदा होता है. नए माद्दी हालात के साथ नए ख़यालात जन्म लेते हैं. इसलिये ख़यालात की कोई अलग हस्ती नहीं है, कोई बंधा हुआ असूल और कोई कभी न बदलने वाली एक सचाई भी नहीं है. मिटने वाले युग के साथ एक सच्चाई मिट जाती है और नए युग के साथ नई सच्चाई जन्म लेती है. जो नए युग की सचाई को सबसे पहले समझ कर उसे अपने ज्ञान का अंग बनाते हैं, अपने अमल से उसे आगे बढ़ाते हैं और उसके लिये दूसरे लोगों को संगठित करते हैं, वह वीर और महान कहलाते हैं.

हमारे युग की सच्चाई कम्यूनिज़्म को पूंजीवाद ने पैदा किया था. मार्क्स ने उसे सबसे पहले जाना, लेनिन,

عمل بدلنے میں مدد ملتی ہے ۔ بدھ اور عیسیٰ اسی اصول پر چل کر مہان بنے اور انہوں نے دنیا کا سدھار کیا ۔ بیسویں صدی میں مہاتما ٹالسٹائی اور مہاتما گاندھی نے اسی وچار دھارا کو اپنایا اور اس پر عمل کر کے دنیا کو بہتر بنایا ۔ اب آچاریہ ونوبا بھاوے بھی اسی وچار دھارا دوارا دنیا کا اُدھار کرنا چاہتے ہیں اور لوگوں کو ہنسا اور ہنسک انقلاب کے راستے سے روک رہے ہیں ۔

اس کے خلاف مارکس وادی یا کمیونسٹ وچار دھارا سنسار کا اور وچاروں کا آدھار مادے کو مانتی ہے ۔ آدرش وادی وچار دھارا کے مطابق مادہ جڑ ہے اور صرف جگہ گھیرتا ہے ۔ وہ اپنے آپ ہلتا ڈلتا نہیں ۔ چیتن شکتی اسے حرکت میں لاتی ہے ۔ مارکس واد کہتا ہے کہ مادہ اپنے آپ حرکت کرتا ہے ۔ ان میں دو ورودھی تتو یا عنصر ہوتے ہیں ۔ ان کے آپس کے سنگھرش سے مادہ حرکت کرتا ہے ۔ اس سنگھرش اور حرکت سے مادے کا وکاس ہوتا ہے اور ایک خاص حالت میں مادہ سوچنے لگتا ہے اور اس میں سے جیون پیدا ہوتا ہے ۔ اب یہ جیو اپنی رکشا اور خوراک کے لئے سنگھرش کرتا ہے جس سے سماج کا وکاس ہوتا ہے ۔

آدمی کا جنم اسی وکاس کے ذریعے ہوا ہے اور اس کا دماغ مادے کی ترقی یافتہ شکل ہے ۔ جیسے جیسے مادی حالات بدلتے ہیں آدمی کا دماغ اور خیال بھی بدلتا ہے ۔ اب آدمی چونکہ سوچ سکتا ہے اس لئے جہاں وہ مادی حالات کی پیداوار ہے وہاں وہ اپنی سوچ اور عمل سے مادی حالات کو بھی تبدیل کرتا ہے ۔ وہ ہر عمل اور ہر نئی تبدیلی سے سیکھتا ہے اور یوں مادی ترقی کرتا ہے اور اپنے گیان کو بھی آگے بڑھاتا ہے ۔

اس کا مطلب ہے کہ آدمی اپنی محنت سے نہ صرف چیزیں پیدا کرتا ہے بلکہ اس کا گیان بھی محنت ہی سے پیدا ہوتا ہے ۔ نئے مادی حالات کے ساتھ نئے خیالات جنم لیتے ہیں ۔ اس لئے خیالات کی کوئی الگ ہستی نہیں ہے، کوئی بندھا ہوا اصول اور کوئی کبھی نہ بدلنے والی ایک سچائی بھی نہیں ہے ۔ مٹنے والے یگ کے ساتھ ایک سچائی مٹ جاتی ہے اور نئے یگ کے ساتھ نئی سچائی جنم لیتی ہے ۔ جو نئے یگ کی سچائی کو سب سے پہلے سمجھ کر اسے اپنے گیان کا انگ بناتے ہیں، اپنے عمل سے اسے آگے بڑھاتے ہیں اور اس کے لئے دوسرے لوگوں کو سنگٹھت کرتے ہیں، وہ ویر اور مہان کہلاتے ہیں ۔

ہمارے یگ کی سچائی کمیونزم کو پونجی واد نے پیدا کیا تھا ۔ مارکس نے اسے سب سے پہلے جانا، لینن،

बात है कि खास हालात में गांधी जी ने इसके लिये काम किया और इसे 'सर्वोदय' का नया नाम भी दिया. अब जिन लोगों का इस विचार धारा से फ़ायदा है या जो लोग इससे दूसरों का हित समझते हैं वह इसे गांधी जी के बाद भी मानेगें, लेकिन जो लोग इसे अपने हित के खिलाफ़ समझते हैं वह जरूर ही इसका विरोध करेंगे. उनके खयाल के मुताबिक़ यह विचार धारा ऐसी आर्थिक व्यवस्था को क़ायम रखना चाहती है जो राजा को राजा, रंक को रंक, अमीर को अमीर और ग़रीब को ग़रीब बनाए रखना चाहती है. राजा और रंक, अमीर और मज़दूर दोनों का वजूद रहते इन्सान का विकास मुमकिन नहीं. जब राजा या अमीर बहुत से धन पर सांप बन कर बैठता है तब कुछ लोग रंक बनने पर मजबूर हो जाते हैं; पूँजीपति तब तक ही पूंजीपति है जब तक वह कारखाने—ज़ाती जायदाद के ज़रिये मज़दूर की मेहनत का शोशन करता है. सर्वोदय का शब्द रंक और मज़दूर को सबके भले की झूटी तसल्ली देता है, असल में फ़ायदा उससे राजा और पूंजीपति को होता है.

गांधी वाद का एक और नाम आदर्शवाद भी है. या यों कहा जा सकता है कि गांधीवाद का आधार आदर्शवाद है. यह बहुत पुराना फ़लसफ़ा है और सारे मज़हबों का आधार इसी फ़लसफ़े पर है. इस फ़लसफ़े के मुताबिक़ जड़ या माद्दे की उत्पत्ति चेतन से हुई है और जैसा कि सुरेश भाई ने भी लिखा है कि 'अगर चेतन न हो तो जड़ का पता हरगिज़ नहीं चल सकता. यह चेतन ही जीवन है, सत्य है और सत्य ही असल चीज़ है. इसका मतलब यह है कि यह चेतन, सत्य या असल चीज़ परमात्मा है. जिस तरह मकड़ी अपने अन्दर से जाला बुनती है, उसी तरह परमात्मा जड़ और जीव संसार को जन्म देता है और सब जीव परमात्मा के रूप हैं, इसलिये किसी से नफ़रत करना पाप है. सब चीज़ें नाश हो कर उसी चेतन अर्थात परमात्मा में जा मिलती हैं.'

इस विचार धारा के मुताबिक़ ख़याल या विचार अपनी अलग हस्ती रखते हैं. जब लोगों पर अच्छे ख़यालों का असर होता है तो वह अच्छे बन जाते हैं और जब बुरे विचार हमला करते हैं तो बुरे बन जाते हैं. हर आदमी चूँकि चेतन, सत्य या परमात्मा के रूप हैं इसलिये वह बुनियादी तौर पर भला है; इसलिये उपदेश से बुरे आदमी को भी सुधारा जा सकता है और ज़ालिम से ज़ालिम आदमी का भी दिल बदलना मुमकिन है. ज़ुल्म और हिंसा के जवाब में हिंसा करने से ज़ुल्म और हिंसा बढ़ती है. न ज़ुल्म और हिंसा को चुपचाप सह लेने से अहिंसा और भलाई बढ़ती है और बुराई और हिंसा करने वाले.

بات ہے کہ خاص حالت میں گاندھی جی نے اِس کے لئے کام کیا اور اِسے 'سروودے' کا نیا نام بھی دیا . اب جن لوگوں کا اِس وچار دھارا سے فائدہ ہے یا جو لوگ اِس سے دوسروں کا ہت سمجھتے ھیں وہ اِسے گاندھی جی کے بعد بھی مانیںگے' لیکن جو لوگ اِسے اپنے ہت کے خلاف سمجھتے ھیں وہ ضرور ھی اِس کا وِرودھ کرینگے . ان کے خیال کے مطابق یہ وچار دھارا ایسی آرتھک ویوستھا کو قائم رکھنا چاھتی ھے جو راجہ کو راجہ' رنک کو رنک' امیر کو امیر اور غریب کو غریب بنائے رکھنا چاھتی ھے . راجہ اور رنک' امیر اور مزدور دونوں کا وجود رہتے اِنسان کا وکاس ممکن نہیں . جب راجہ یا امیر بہت سے دھن پر سانپ بن کر بیٹھتا ھے تب کچھ لوگ رنک بننے پر مجبور ھوجاتے ھیں؛ پونجی پتی تب تک ھی پونجی پتی ھے جب تک وہ کارخانے ذاتی جائداد کے ذریعے مزدور کی محنت کا شوشن کرتا ھے . سروودے کا شبد رنک اور مزدوروں کو سب کے بھلے کی جھوٹی تسلی دیتا ھے . اصل میں فائدہ اُس سے راجہ اور پونجی پتی کو ھوتا ھے .

گاندھی واد کا ایک اور نام آدرش واد بھی ھے . یا یوں کہا جاسکتا ھے کہ گاندھی واد کا آدھار آدرش واد ھے . یہ بہت پرانا فلسفہ ھے اور سارے مذہبوں کا آدھار اسی فلسفے پر ھے . اس فلسفے کے مطابق جڑ یا مادّے کی اُتپتی چیتن سے ھوئی ھے اور جیسا کہ سریش بھائی نے بھی لکھا ھے کہ 'اگر چیتن نہ ھو تو جڑ کا پتہ ھرگز نہیں چل سکتا . یہ چیتن ھی جیون ھے' ستیہ ھے اور ستیہ ھی اصل چیز ھے . اس کا مطلب یہ ھے کہ یہ چیتن' ستیہ یا اصل چیز پرماتما ھے . جس طرح مکڑی اپنے اندر سے جالا بنتی ھے' اُسی طرح پرماتما جڑ اور جیو سنسار کو جنم دیتا ھے اور سب جیو پرماتما کا روپ ھیں' اِس لئے کسی سے نفرت کرنا پاپ ھے . سب چیزیں ناش ھوکر اُسی چیتن یعنی پرماتما میں جا ملتی ھیں .'

اِس وچار دھارا کے مطابق خیال یا وچار اپنی الگ ھستی رکھتے ھیں . جب لوگوں پر اچھے خیالوں کا اثر ھوتا ھے تو وہ اچھے بن جاتے ھیں اور جب برے وچار حملہ کرتے ھیں تو برے بن جاتے ھیں . ھر آدمی چونکہ چیتن' ستیہ یا پرماتما کے روپ ھیں اس لئے وہ بنیادی طور پر بھلا ھے؛ اس لئے اپدیش سے برے آدمی کو بھی سدھارا جاسکتاھے اور ظالم سے ظالم آدمی کا بھی دل بدلنا ممکن ھے . ظلم اور ھنسا کے جواب میں ھنسا کرنے سے ظلم اور ھنسا بڑھتی ھے. ظلم اور ھنسا کو چپ چاپ سہہ لینے سے اہنسا اور بھلائی بڑھتی ھے اور برائی اور ھنسا کرنے والے

कम्यूनिज़्म और सर्वोदय

(हंसराज 'रहबर')

[नवम्बर के 'नया हिन्द' में "सर्वोदय और कम्यूनिस्ट" नाम से एक लेख छपा था. इस पर हमारे कई लायक़ साथियों ने अपनी राय भेजी है. उनमें से एक की राय हम जनवरी नम्बर में दे चुके हैं. दूसरी राय भाई हंसराज 'रहबर' की है जिसका खुलासा हम नीचे पेश कर रहे हैं. हम यहां पर बता दें कि भाई हंसराज की बहुत-सी बातों से हम इत्तफ़ाक़ नहीं करते पर उनके कलाम की क़द्र ज़रूर करते हैं—एडीटर]

"सर्वोदय और कम्यूनिस्ट" लेख में कुछ ग़लत बातें कही गई हैं और इससे कई ग़लत फ़हमियां फैलने का भी अंदेशा है, सबसे पहले अगर लेख का नाम "सर्वोदय और कम्यूनिस्ट" की बजाय "सर्वोदय और कम्यूनिज़्म" होता तो भ्रम पैदा होने की गुँजायश न रहती और दोनों विचार धाराओं के मानने वालों के साथ इनसाफ़ हो जाता.

कोई भी विचार धारा के किसी ख़ास आदमी के नाम पर मशहूर हो जाने से यह साबित नहीं होता कि वह उस आदमी के साथ जन्मी था या उसके साथ मर गई. मार्क्सवाद के मुताबिक़ हर विचार धारा का एक आर्थिक आधार होता है. जब पूँजीवाद युग में बड़े बड़े कारख़ाने बनने से पैदावार का केन्द्री करन (Centralization) हुआ और हज़ारों लाखों मज़दूर एक जगह मिल कर काम करने लगे, तब इन कारख़ानों को किसी एक आदमी की जायदाद रहने के बजाय सब मज़दूरों यानी काम करने वालों की—समाज की साझी जायदाद बनाने का ख़याल पैदा हुआ. यही ख़याल बढ़ते बढ़ते समाजवाद, साइंटिफ़िक सोशलिज़्म और कम्यूनिज़्म बन गया. चूँकि इससे मेहनत करने वालों का भला होता था वह इसे मानने लगे और कारख़ाने के मालिकों पूंजीपतियों से उनकी जायदाद छिनती थी इसलिये वह इसका विरोध करने लगे. इससे यह बात भी साबित होती है कि जिस विचार धारा से जिन लोगों को फ़ायदा पहुँचता है वह उसका साथ देते हैं और जिन्हें नुक़सान पहुंचता है वह उसका विरोध करते हैं.

जिस तरह मार्क्सवादी विचार धारा मार्क्स से पहले पैदा हो चुकी थी और उसके बाद भी क़ायम है, इसी तरह गांधीवादी विचार धारा भी गांधीजी से बहुत पहले पैदा हुई थी और गांधीजी के बाद भी क़ायम है. यह दूसरी

کمیونزم اور سروودے

(هنس راج 'رهبر')

[نومبر کے 'نیا هند' میں "سروودے اور کمیونسٹ" نام سے ایک لیکھ چھپا تھا ۔ اس پر همارے کئی لائق ساتھیوں نے اپنی رائے بھیجی ھے ۔ اُن میں سے ایک کی رائے هم جنوری نمبر میں دے چکے هیں ۔ دوسری رائے بھائی هنس راج رهبر کی ھے جسکا خلاصہ هم نیچے دے رھے هیں ۔ هم یہاں یہ بتا دیں کہ بھائی هنس راج کی بہت سی باتوں سے هم اتفاق نہیں کرتے پر اُنکے کلام کی قدر ضرور کرتے هیں—ایڈیٹر]

"سروودے اور کمیونسٹ" لیکھ میں کچھ غلط باتیں کہی گئی هیں اور اس سے کئی غلط فہمیاں پھیلنے کا بھی اندیشہ ھے ۔ اگر سب سے پہلے لیکھ کا نام "سروودے اور کمیونسٹ" کے بجائے "سروودے اور کمیونزم" هوتا، تو بھرم پیدا هونے کی گنجائش نہ رهتی اور دونوں وچار دھاراؤں کے ماننے والوں کے ساتھ انصاف هو جاتا ۔

کوئی وچار دھارا کے کسی خاص آدمی کے نام پر مشہور هو جانے سے یہ ثابت نہیں هوتا کہ وہ اُس آدمی کے ساتھ جنمی تھی یا اُس کے ساتھ مر گئی ۔ مارکس واد کے مطابق هر وچار دھارا کا ایک آرتھک آدھار هوتا ھے ۔ جب پونجی واد یگ میں بڑے بڑے کارخانے بننے سے پیداوار کا کیندری کرن (Centralization) هوا اور هزاروں لاکھوں مزدور ایک جگہ مل کر کام کرنے لگے، تب اِن کارخانوں کو کسی ایک آدمی کی جائداد رهنے کے بجائے سب مزدوروں یعنی کام کرنے والوں کی—سماج کی ساجھی جائداد بنانے کا خیال پیدا هوا ۔ یہی خیال بڑھتے بڑھتے سماج واد، سائنٹفک سوشلزم اور کمیونزم بن گیا. چونکہ اِس سے محنت کرنے والوں کا بھلا هوتا تھا وہ اِسے ماننے لگے اور کارخانے کے مالکوں پونجی پتیوں سے اُن کی جائداد چھنتی تھی اس لئے وہ اِس کا ورودھ کرنے لگے ۔ اِس سے یہ بات بھی ثابت هوتی ھے کہ جس وچار دھارا سے جن لوگوں کو فائدہ پہونچتا ھے وہ اُس کا ساتھ دیتے هیں اور جنہیں نقصان پہونچتا ھے وہ اُس کا ورودھ کرتے هیں ۔

جس طرح مارکس وادی وچار دھارا مارکس سے پہلے پیدا هو چکی تھی اور اُس کے بعد بھی قائم ھے ۔ اِسی طرح گاندھی وادی وچار دھارا بھی گاندھی جی سے بہت پہلے پیدا هوئی تھی اور گاندھی جی کے بعد بھی قائم ھے. یہ دوسری

े बड़े शहरी इलाक़ों की तरफ़ ले जाया गया और ाक़ों की तरफ़ भी जहां बाढ़ वग़ैरा आ गई थी या ाले इलाक़ों की तरफ़ जहां लोग अपनी ज़रूरत के अनाज नहीं उगा सकते थे. उत्तर पूरबी चीन से ाख 30 हज़ार टन, सेचुआन 2 लाख टन, चीच से 3 लाख टन अनाज दूसरे सूबों में भेजना तय . इसमें वह तादादें शामिल नहीं हैं जो व्योपारियों पने आप ख़ुद पहुँचाईं.

लेकिन असल में हुआ क्या? जब शंघाई में कांग्रसी स्ते 50 हज़ार टन ही पहुँचे थे—यानी कोटे का एक ई—कि वहां से आवाज़ आई अब और नहीं चाहिये इस अरसे में दूसरी जगहों से वहां अनाज आ पहुंचा भंडार भर गये. इसी तरह यह देखा गया कि उत्तर । चीन के कोटे के सिर्फ़ 80 फ़ी सदी की बड़ी दीवार ेस्चन में भेजने की ज़रूरत पड़ी.

ज़ियादा जाँच करने पर पता चला कि पिछले साल ाढ़ वग़ैरा के डर से घबराकर ना-तजुर्बेकार सरकारी ज़िमों ने सताये हुए इलाक़ों की ज़रूरत का जोड़ ज़ियादा लगा लिया था. ख़ैरियत यह हुई कि यह जल्दी ही पकड़ ली गई और अनाज बेकार न ा पड़ा. पर बेशी इलाक़े तो चाहते ही थे कि हमारा हलका हो, इसलिये सरकार ने इस माल को मौक़ों पर मुनासिब जगह रखवा दिया ताकि वक़्त त पर बाज़ार भाव क़ाबू रखने में काम आये. यही है कि जून के आख़िर में सरकार के पास दस लाख नाज बेशी मौजूद था.

अनाज के इस नये प्रोग्राम से सरकार ने बहुत से सीखे और वह यह भी जान गई कि कहां कितने ज की ज़रूरत है, कहां कितने की पैदावार है. इन मसलों पर पहले बहुत कम सही जानकारी रहती ाथ ही साथ सरकार को यह भी तजुर्बा हो गया नाज इधर से उधर पहुँचाने के लिये किस तरह सारे को एक सूत में पिरोया जा सकता है.

स पिछवाड़े के साथ सरकारी हुक्काम पूरे विश्वास थ यह कह सकते हैं कि चीन में कहीं भी अनाज मी का डर हो वह उसे चुटकियों में ख़त्म कर सकते यह भी भरोसे के साथ कह सकते हैं कि चीन को कभी भी बाहर से अनाज नहीं मंगाना पड़ेगा. वह ज़रूरत के लायक़ अनाज उगा सकता है और सब मेंथों के पास पहुँचा भी सकता है.

दो बरस के ऊपर हुए यह लेख लिखा गया था. एक एक बात सच्ची निकली और आज चीन के मामले में अपने मन का राजा है.

سے بڑے بڑے شہری علاقوں کی طرف لے جایا گیا اور اُن علاقوں کی طرف بھی جہاں باڑھ وغیرہ آگئی تھی یا روئی والے علاقوں کی طرف جہاں لوگ اپنی ضرورت کے لائق اناج نہیں اُگا سکتے تھے۔ اتر پوربی چین سے 10 لاکھ 30 ہزار ٹن، سیچوان 2 لاکھ ٹن، بیچ چین سے 3 لاکھ ٹن اناج دوسرے صوبوں میں بھیجنا طے پایا۔ ان میں وہ تعدادیں شامل نہیں ہیں جو بیوپاریوں نے اپنے آپ خود پہنچائیں۔

لیکن اصل میں ہوا کیا؟ جب شنگھائی میں پانگسی کے راستے 50 ہزار ٹن ہی پہونچے تھے — یعنی کوٹے کا ایک چوتھائی — کہ وہاں سے آواز آئی اب اور نہیں چاہئے کیونکہ اِس عرصے میں دوسری جگہوں سے وہاں آ پہونچا اور بھنڈار بھر گئے۔ اسی طرح یہ دیکھا گیا کہ اتر پوربی چین کے کوٹے کے صرف 80 فی صدی کی بڑی دیوار کے دکھن میں بھیجنے کی ضرورت پڑی۔

زیادہ جانچ کرنے پر پتہ چلا کہ پچھلے سال کی باڑھ وغیرہ کے ڈر سے گھبرا کر ناتجربہ کار سرکاری ملازموں نے ستائے ہوئے علاقوں کی ضرورت کا جوڑ بہت زیادہ لگایا تھا۔ خیریت یہ ہوئی کہ یہ غلطی جلدی ہی پکڑ لی گئی اور اناج بیکار نہ بھیجنا پڑا۔ پر بیشی علاقے تو چاہتے ہی تھے کہ ہمارا بوجھ ہلکا ہو، اس لئے سرکار نے اس مال کو موقعوں موقعوں پر مناسب جگہ رکھوا دیا تاکہ وقت ضرورت پر بازار بھاؤ قابو رکھنے میں کام آئے۔ یہی وجہ ہے کہ جون کے آخر میں سرکار کے پاس دس لاکھ ٹن اناج بیشی موجود تھا۔

اناج کے اِس نئے پروگرام سے سرکار نے بہت سے سبق سیکھے اور وہ یہ بھی جان گئی کہ کہاں کتنے اناج کی ضرورت ہے، کہاں کتنے کی پیداوار ہے۔ اِن دونوں مسئلوں پر پہلے بہت کم صحیح جانکاری رہتی تھی۔ ساتھ ہی ساتھ سرکار کو یہ بھی تجربہ ہوگیا کہ اناج اِدھر سے اُدھر پہونچانے کے لئے کس طرح سارے دیش کو ایک سوت میں پرویا جاسکتا ہے۔

اِس پچھواڑے کے ساتھ سرکاری حکام پورے وشواس کے ساتھ یہ کہہ سکتے ہیں کہ چین میں کہیں بھی اناج کی کمی کا ڈر ہو وہ اُسے چٹکیوں میں ختم کرسکتے ہیں۔ وہ یہ بھی بھروسے کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ چین کو اب کبھی بھی باہر سے اناج نہیں منگانا پڑیگا۔ وہ اپنی ضرورت کے لائق اناج اُگا سکتا ہے اور سب آدمیوں کے پاس پہنچا بھی سکتا ہے۔

دو برس کے اوپر ہوئے یہ لیکھ لکھا گیا تھا۔ اِس کی ایک ایک بات سچی نکلی اور آج چین اناج کے معاملے میں اپنے من کا راجہ ہے۔

अनाज खपाने में उसकी दिलचस्पी खत्म होती गई. इसका एक नतीजा यह भी हुआ कि उसकी खरीद-ताक़त कम होती गई जिसकी वजह से वह चीन के कारखानों का बना माल भी नहीं खरीद सकता था. इस तरह चीन की तरक़्क़ी और भी रुक गई.

अब ज़रा यह देखिये कि हमारा देशी अनाज किस तरह बाज़ार से लापता हो जाता था. सन् 1932 में हुनान के सूबे में (जो चीन का चावल कुन्ड कहलाता है) चावल का पिकल छै सात डालर का मिलता था. उस वक़्त शंघाई में विदेश से आया चावल साढ़े सात डालर फ़ी-पिकल बिकता था. फिर एक पिकल अनाज को हुनान से शंघाई तक पहुंचाने में उस वक़्त सवा तीन डालर लग जाते थे क्योंकि सरकार ने तरह तरह की चुँगियाँ व टैक्स लगा रखे थे. नतीजा यह हुआ कि हुनान के पास जो देशी चावल था वह समुन्द्र के पास के इलाक़ों में न पहुंच कर अन्दर ही पड़ा रहा जिससे दामों में मंदी आई और चावल पैदा करने वाले किसानों पर मार पड़ी.

वूहू अन्हवाई सूबे का एक ख़ास हिस्सा है जहां चावल कसरत से होता है. 1894 से 1904 के बीच में इस हिस्से से 3,37500 टन चावल हर साल बाहर जाता था. पर विदेशी अनाज की धका-पेल मचने के कारन 1930-35 यह तादाद सिर्फ़ 1,42,500 पर आ गिरी—यानी 42 फ़ी सदी कमी हो गई.

बाहर अनाज की इस चढ़ाई ने चीन के हज़ारों-लाखों किसानों का दिवाला निकाल दिया और उन्हें अपनी ज़मीनों से हाथ धो बैठना पड़ा. वह या तो ज़मींदार के पैरों तले ग़ुलाम बन कर रह सकते थे या दूसरे के खेत पर मज़दूरी कर सकते थे या शहर में आकर कारख़ानों की राह देखते थे. पर कारखाने वाले भी उन्हें चूसने में माहर थे क्योंकि मज़दूरों की तादाद ज़ियादा थी और वह कम से कम—दुनिया भर में कम से कम—मज़दूरी उन्हें देते थे.

यह हालत थी जो नई सरकार को पुरानी सरकार से विरासत में मिली थी. ऐसी सूरत में हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठा जा सकता था. कुछ करना था और फ़ौरन करना था, देश के अनाज सवाल की गुत्थी को सुलझाना था. पारसाल जो कहीं कहीं अनाज कम पड़ गया था उसने हालत को और भी संगीन बना दिया था.

मार्क्सवादी अर्थशास्त्रियों और खेती माहरों ने जब ध्यान के साथ इस सवाल पर सोचा तो वह इस नतीजे पर पहुंचे कि असली मुसीबत अनाज की कमी नहीं है बल्कि माल को ठीक वक़्त पर ठीक जगह पहुंचाने की है. नई सरकार ने क़ायम होने के कुछ महीनों के ही भीतर एक प्रोग्राम तैयार किया कि कितना अनाज कहां पर रहे. इसके मुताबिक़ सरकारी ख़र्चे पर अनाज को देशी इलाक़ों

اناج کھپانے میں اس کی دلچسپی ختم ہوتی گئی۔ اس کا ایک نتیجہ یہ بھی ہوا کہ اسکی خرید طاقت کم ہوتی گئی جسکی وجہ سے وہ چین کے کارخانوں کا بنا مال بھی نہیں خرید سکتا تھا۔ اس طرح چین کی ترقی اور بھی رک گئی۔

اب ذرا یہ دیکھئے کہ ہمارا دیشی اناج کس طرح بازار سے لاپتہ ہو جاتا تھا۔ سن 1932 میں ہونان کے صوبے میں (جو چین کا چاول کنڈ کہلاتا ہے) چاول کا پکل چھ سات ڈالر کا ملتا تھا۔ اس وقت شنگھائی میں ودیش سے آیا چاول ساڑھے سات ڈالر فی پکل بکتا تھا۔ پھر ایک پکل اناج کو ہونان سے شنگھائی تک پہنچانے میں اسوقت سوا تین ڈالر لگ جاتے تھے کیونکہ سرکار نے طرح طرح کی چنگیاں و ٹیکس لگا رکھے تھے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ہونان کے پاس جو دیشی چاول تھا وہ سمندر کے پاس کے علاقوں میں نہ پہنچ کر اندر ہی پڑا رہا جس سے داموں میں مندی آئی اور چاول پیدا کرنے والے کسانوں پر مار پڑی۔

ووہو انہوائی صوبے کا ایک خاص حصہ ہے جہاں چاول کثرت سے ہوتا ہے۔ 1894 سے 1904 کے بیچ میں اس حصے سے 3,37500 ٹن چاول ہر سال باہر جاتا تھا۔ پر ودیشی اناج کی دھکا پیل مچنے کے کارن 1930—1935 یہ تعداد صرف 1,42,500 پر آ گری—یعنی 42 فیصدی کی کمی ہو گئی۔

باہر اناج کی اس چڑھائی نے چین کے ہزاروں لاکھوں کسانوں کا دیوالہ نکال دیا اور انہیں اپنی زمینوں سے ہاتھ دھو بیٹھنا پڑا۔ وہ یا تو زمیندار کے پیروں تلے غلام بن کر رہ سکتے تھے یا دوسرے کے کھیت پر مزدوری کر سکتے تھے یا شہر میں آ کر کارخانوں کی راہ دیکھتے تھے۔ پر کارخانے والے بھی انہیں چوسنے میں ماہر تھے کیونکہ مزدوروں کی تعداد زیادہ تھی اور وہ کم سے کم—دنیا بھر میں کم سے کم—مزدوری انہیں دیتے تھے۔

یہ حالت تھی جو نئی سرکار کو پرانی سرکار سے وراثت ملی تھی۔ ایسی صورت میں ہاتھ پر ہاتھ دھر کر نہیں بیٹھا جا سکتا تھا۔ کچھ کرنا تھا اور فوراً کرنا تھا، دیش کے اناج سوال کی گتھی کو سلجھانا تھا۔ پار سال جو کہیں کہیں اناج کم پڑ گیا تھا اس نے حالت کو اور بھی سنگین بنا دیا تھا۔

مارکس وادی ارتھ شاستریوں اور کھیتی ماہروں نے جب دھیان کے ساتھ اس سوال پر سوچا تو وہ اس نتیجے پر پہونچے کہ اصلی مصیبت اناج کی کمی نہیں ہے بلکہ مال کو ٹھیک وقت پر ٹھیک جگہ پہونچانے کی ہے۔ نئی سرکار نے قائم ہونے کے کچھ مہینوں کے ہی بھیتر ایک پروگرام تیار کیا کہ کتنا اناج کہاں پر رہے۔ اس کے مطابق سرکاری خرچ پر اناج کو دیشی علاقوں

नाज खरीदने में चीन का लाखों करोड़ों रुपया यूँ गया. अगर उसके बदले में ज़रूरी मशीनरी सरी चीज़ों व सामान खरीदे होते तो चीन में कहीं दा कारखाने खुल गये होते और देश की सभी चीज़ों दावार बढ़ जाती.

न में अनाज बाहर से मंगाने का दौर सन् 1721 होता है. उस साल बादशाह कांग-सी ने जो मन्चू न के थे—दक्खिन चीन के समुन्द्री शहरों के लिये से 22,500 टन चावल मंगाया. तब से अब तक यह सिला चला ही आ रहा है और हमारा देश दूसरों न दूना रात चौगुना मोहताज बनता गया. पर मंचू न के ज़माने में शायद ही किसी बरस साढ़े सात टन से ज़ियादा अनाज आया हो पर च्यांगी राज ने में यह तादाद बीस लाख पर पहुँच गई. आंकड़ों चलता है कि 1888 में चीन में बाहर से आने माल में अनाज छठे नम्बर पर था पर 1930 में र्जे पर पहुँच गया और दो साल बाद चोटी पर !

हर से इस तरह अनाज मंगाने में हमारा कितना एक्सचेन्ज स्वाहा हो गया ? अपनी किताब The naking of China's Economy में नामी अर्थशास्त्री मा इन-चू का कहना है कि 1927 से 1929 में चीन को विदेशी व्योपार में जो घाटा पड़ा उसके आधे की वजह अनाज की आमद थी. na's Foreign Trade नाम की एक किताब की कमर्शियल प्रेस ने निकाली है जिसमें बताया कि 1932 में यह सूरत पहुँच गई कि बाहर से वाली चीज़ों में अनाज की तादाद 19.67 फ़ी सदी मशीनरी की सिर्फ़ 2.95. इसका यह मतलब नहीं है कि अनाज की वजह से चीन मशीनें कम था बल्कि सच यह कि पिछलग्गू च्यांगी राज साम्राजशाहों और पूंजीपतियों के इशारे पर था ताकि चीन में वह बना रहे. इसलिये च्यांग देश के विकास के रास्ते में खुद एक बड़ी भारी था.

मने देखा कि किस तरह से चीन के बाहर से अनाज वजह से उसके कारखाने वग़ैरा नहीं पनप सके. सरा नुक़सान हुआ चीन की देहाती अर्थनीति धार हो जाना.

इतनी बड़ी तादाद में बाहर से अनाज आकर में लद जाता था तो उसका भाव आप से आप ता था और किसान अपनी पैदावार को सस्ते भाव ने को मजबूर हो जाता था या उसे सड़ने देता था. सिर्फ़ उसकी माली हालत व रहन-सहन में तबाही बल्कि उसका सारा जोश भी मारा जाता था और

اناج خریدنے میں چین کا لاکھوں کروڑوں روپیہ یونہی نکل گیا . اگر اس کے بدلے میں ضروری مشینری اور دوسری چیزیں و سامان خریدے ہوتے تو چین میں کہیں زیادہ کارخانے کھل گئے ہوتے اور دیش کی سبھی چیزوں کی پیداوار بڑھ جاتی .

چین میں اناج باہر سے منگانے کا دور سن 1721 سے شروع ہوتا ہے . اُس سال بادشاہ کانگ سی نے جو منچو خاندان کے تھے—دکھن چین کے سمندری شہروں کے لئے سیام سے 22,500 ٹن چاول منگایا . تب سے اب تک یہ سلسلہ چلا ہی آرہا ہے اور ہمارا دیش دوسروں کا دن دونا رات چوگنا محتاج بنتا گیا . پر منچو خاندان کے زمانے میں شائد ہی کسی برس ساڑھے سات لاکھ ٹن سے زیادہ اناج آیا ہو پر چیانگی راج کے زمانے میں یہ تعداد بیس لاکھ پر پہنچ گئی . آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ 1888 میں چین میں باہر سے آنے والے مال میں اناج چھٹے نمبر پر تھا پر 1930 میں دوسرے درجے پر پہنچ گیا اور دو سال بعد چوٹی پر !

باہر سے اس طرح اناج منگانے میں ہمارا کتنا فارن ایکسچینج سواہا ہوگیا؟ اپنی کتاب The Re-making of China's Economy میں نامی چینی ارتھ شاستری ما ان . چو کا کہنا ہے کہ 1927 سے لیکر 1929 میں چین کو ودیشی بیوپار میں جو گھاٹا اٹھانا پڑا اُس کے آدھے کی وجہ اناج کی آمد تھی . China's Foreign Trade نام کی ایک کتاب شنگھائی کی کمرشیل پریس نے نکالی ہے جس میں بتایا گیا ہے کہ 1932 میں یہ صورت پہنچ گئی کہ باہر سے آنے والی چیزوں میں اناج کی تعداد 19.67 فیصدی تھی اور مشینری کی صرف 2.95 . اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں ہے کہ اناج کی وجہ سے چین مشینیں کم منگاتا تھا بلکہ سچ یہ کہ پچھلگو چیانگی راج ودیشی سامراج شاہوں اور پونجی پتیوں کے اِشارہ پر ناچتا تھا تاکہ چین میں وہ بنا رہے . اس لئے چیانگ کا راج دیش کے وکاس کے راستے میں خود ایک بڑی بھاری رکاوٹ تھا.

ہم نے دیکھا کہ کس طرح سے چین کے باہر سے اناج آنے کی وجہ سے اس کے کارخانے وغیرہ نہیں پنپ سکے . اِس سے دوسرا نقصان ہوا چین کی دیہاتی ارتھ نیتی کا بنٹادھار ہو جانا .

جب اتنی بڑی تعدا میں باہر سے اناج آ کر بازاروں میں لد جاتا تھا تو اُس کا بھاؤ آپ سے آپ گر جاتا تھا اور کسان اپنی پیداوار کو سستے بھاؤ پر بیچنے کو مجبور ہوجاتا تھا یا اُسے سڑنے دیتا تھا . اس سے نہ صرف اُس کی مالی حالت و رہن سہن میں تباہی آئی بلکہ اُس کا سارا جوش بھی مارا جاتا تھا اور

पैदा कर लेगा कि उसका काम मजे में चलता रहेगा. और यही बात सच्ची निकली, जैसा कि नये चीन की लोकशाही सरकार ने हुकूमत संभालने के एक साल के भीतर कर के दिखा दिया.

सन् 1950 में कुल अनाज की काश्त का जोड़ 12 करोड़ 50 लाख टन लगाया गया जो पिछले साल की फ़सल के मुक़ाबले एक करोड़ 22 लाख 50 हज़ार टन ज़ियादा थी. इस साल गेहूँ की फ़सल ही दो करोड़ टन की हुई जो पारसाल के मुक़ाबले 33 लाख टन ज़ियादा है. सिर्फ़ उन इलाक़ों को छोड़ कर जिनमें इस साल फिर से बाढ़ आ गई, हमारी ख़रीफ़ की फ़सल निहायत ही अच्छी है.

पिछली कई सदियों से चीन में हर आदमी पीछे अनाज की औसत सालाना तादाद 125 किलोग्राम पड़ती थी, जिससे मुश्किल से पेट भर सकता था. पर इस साल जो पैदावार का अन्दाज़ है उससे यह कहा जा सकता है कि चीन में रहने वाले हर मर्द, औरत और बच्चे के हिस्से में आने वाले अनाज की तादाद दूनी बढ़ जायेगी.

यह भी मान लें कि इस साल भी पार साल के जैसी आफ़तें और मुसीबतें आवेंगी तब भी हम यह कह सकते हैं कि सरकार अकाल तो किसी हालत में न पड़ने देगी. पिछली जून 30 को—जाड़े की गेहूँ की फ़सल पर लगान वसूल करने के पहले—बड़ी दीवार के दक्खिन वाले सरकारी भंडारों में 11 लाख 87 हज़ार 450 टन जमा था. इतने अनाज से तो शंघाई के पचास लाख आदमियों को क़रीब दो बरस तक खिलाया जा सकता है या शंघाई, पिकिंग, टिन्टसिन और हांकाओ—चारों बड़े शहर—के लोगों को एक साल तक.

चीन के हाल के इतिहास में यह पहला मौक़ा है जब बसन्त के आख़ीर में सरकार के पास इतनी तादाद में अनाज है. फिर क़ाबिले तारीफ़ बात तो यह है कि यह उस हालत में हुआ है जब 1949 में क़ुदरती मुसीबतों की वजह से क़रीब 12 करोड़ मौ ज़मीन के चार करोड़ रहने वालों पर बड़ी बुरी चोट आ गई थी.

सरकारी भंडारों में अनाज रहने की वजह से सरकार उसे जब चाहा जहां चाहा भेज सकी. यही वजह है कि—चीन के मौजूदा इतिहास में पहली बार—इस साल फ़सल के पहले वाले अरसे में अनाज के दाम एक से बने रहे और घटे-बढ़े नहीं. किसानों के पास अनाज कम रह जाने पर उसके दाम अकसर ऊँचे उठने लगते हैं पर इस साल सरकार बाज़ारों में काफ़ी अनाज भेज सकी जिससे दल्लालों और आढ़तियों की एक न चली और दाम अपनी जगह पर क़ायम रहे.

پیدا کرلے گا کہ اُس کا کام مزے میں چلتا رہیگا . اور یہی بات سچی نکلی، جیسا کہ چین کی لوک شاہی سرکار نے حکومت سنبھالنے کے ایک سال کے بھیتر کر کے دکھا دیا .

سن 1950 میں کل اناج کی کاشت کا جوڑ 12 کروڑ 50 لاکھ ٹن لگایا گیا جو پچھلے سال کی فصل کے مقابلے ایک کروڑ 22 لاکھ 50 ہزار ٹن زیادہ تھی. اس سال گیہوں کی فصل ہی دو کروڑ ٹن کی ہوئی جو پارسال کے مقابلے 33 لاکھ ٹن زیادہ ہے . صرف ان علاقوں کو چھوڑ کر جن میں اس سال پھر سے باڑھ آ گئی، ہماری خریف کی فصل نہایت ہی اچھی ہے .

پچھلی کئی صدیوں سے چین میں ہر آدمی پیچھے اناج کی اوسط سالانہ تعداد 125 کلوگرام پڑتی تھی، جس سے مشکل سے پیٹ بھر سکتا تھا . پر اس سال جو پیداوار کا اندازہ ہے اُس سے یہ کہا جا سکتا ہے کہ چین میں رہنے والے ہر مرد، عورت اور بچے کے حصے میں آنے والے اناج کی تعداد دونی بڑھ جائیگی .

یہ بھی مان لیں کہ اس سال بھی پارسال کے جیسی آفتیں اور مصیبتیں آئینگی تب بھی ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ سرکار اکال تو کسی حالت میں نہ پڑنے دیگی . پچھلی جون 30 کو—جاڑے کی گیہوں کی فصل پر لگان وصول کرنے کے پہلے—بڑی دیوار کے دکھن والے سرکاری بھنڈاروں میں 11 لاکھ 87 ہزار 450 ٹن جمع تھا . اتنے اناج سے تو شنگھائی کے پچاس لاکھ آدمیوں کو قریب دو برس تک کھلایا جا سکتا ہے یا شنگھائی، پیکنگ، ٹنٹسن اور ہانکاؤ—چاروں بڑے شہر—کے لوگوں کو ایک سال تک .

چین کے حال کے اتہاس میں یہ پہلا موقع ہے جب بسنت کے آخیر میں سرکار کے پاس اتنی تعداد میں اناج ہے . پھر قابل تعریف بات تو یہ ہے کہ یہ اُس حالت میں ہوا ہے جب 1949 میں قدرتی مصیبتوں کی وجہ سے قریب 12 کروڑ مو زمین کے چار کروڑ رہنے والوں پر بڑی بری چوٹ آگئی تھی .

سرکاری بھنڈاروں میں اناج رہنے کی وجہ سے سرکار اُسے جب چاہا جہاں چاہا بھیج سکی . یہی وجہ ہے کہ—چین کے موجودہ اتہاس میں پہلی بار—اس سال فصل کے پہلے والے عرصے میں اناج کے دام ایک سے بنے رہے اور گھٹے بڑھے نہیں . کسانوں کے پاس اناج کم رہ جانے پر اُسکے دام اکثر اونچے اٹھنے لگتے ہیں پر اس سال سرکار بازاروں میں کافی اناج بھیج سکی جس سے دلالوں اور آڑھتیوں کی ایک نہ چلی اور دام اپنی جگہ پر قائم رہے .

चीन ने अनाज का सवाल कैसे हल किया

(के चिया-लुंग)

[हमारे देश में आये दिन अकाल पड़ रहे हैं. बिहार में तो कल राजस्थान या गुजरात में, पूरबी प्रदेश में, आंध्र या मद्रास में. नौकरशाही में और पले हमारे एक्सपर्ट और अर्थशास्त्री समझते बाहर से अनाज मंगाने के सिवा कोई चारा ही है, पर यह उनकी जबरदस्त भूल है. चीन में कहीं दा बदतर हालत थी. पर नई सरकार ने किस आंख खोल कर काम किया और सारा घर संभाल यह नीचे के लेख से पता चलेगा. क्या हमारी ार व अर्थशास्त्री चेतेंगे ?—एडीटर]

ये चीन के सब से बड़े और खास कारनामों में एक कि अनाज के मामले में आज उसे परदेशों का नहीं देखना पड़ता. पर यह करिश्मा हुआ कैसे ? एक बड़ी दिलचस्प कहानी है.

यांग काई शेक के जमाने में चीन में जो चीजें बाहर ती थीं उन में से सबसे खास में अनाज की गिनती र साल क़रीब बीस लाख टन अनाज बाहर से था. इस आवाई को रोकने से क्या विदेशी, क्या अन्दरूनी बाजारों व व्योपार पर असर पड़ना था. विदेशी बाजारों पर तो असर यह पड़ेगा कि ठिकानों की खोज जोरों से करने लग जायेंगे जहां माल किसी भी सूरत से पहुंचाया जा सके. अन्दरूनी पर असर यह होगा कि अनाज खरीदने के लिये एक्सचेन्ज में स्वाहा हो जाने वाला पैसा अब देश ग धन्धे बढ़ाने में लगाया जा सकेगा और लोगों त सुधरेगी.

त से नौकरशाह अर्थशास्त्री और समाज शास्त्री रते थे (जैसे हिन्दुस्तान में आज भी कहते हैं) ती हुई आबादी की वजह से चीन अपने अनाज ल को कभी हल कर ही नहीं सकता. वह बड़े दावे अपनी तान लगाते थे और सबूत में माल्थूसी वगैरा की गवाही पेश करते थे. लेकिन जो असली थे उनके ऐसी पिद्दी पसीद्दू बातों पर कभी यकीन या और उनका यही ख्याल था कि अगर चीन दारी का तरीका बदल दिया जावे तो पैदावार में [illegible] हल [illegible] अनाज

چین نے اناج کا سوال کیسے حل کیا

(کے . چیا لنگ)

[ہمارے دیش میں آئے دن اکال پڑ رہے ہیں . آج بہار میں تو کل راجستھان یا گجرات میں، پوربی اتر پردیش میں، آندھر یا مدراس میں . نوکر شاہی میں پڑھے اور پلے ہمارے ایکسپرٹ اور ارتھ شاستری سمجھتے ہیں کہ باہر سے اناج منگانے کے سوائے کوئی چارا ہی نہیں ہے، پر یہ اُن کی زبردست بھول ہے، چین میں کہیں زیادہ بدتر حالت تھی . پر نئی سرکار نے کس طرح آنکھ کھولکر کام کیا اور سارا گھر سنبھال لیا . یہ نیچے کے لیکھ سے پتہ چلیگا . کیا ہماری سرکار و ارتھ شاستری چیتینگے ؟—ایڈیٹر]

نئے چین کے سب سے بڑے اور خاص کارناموں میں ایک یہ ہے کہ اناج کے معاملے میں آج اسے پردیشوں کا منہ نہیں دیکھنا پڑتا . پر یہ کرشمہ ہوا کیسے ؟ اِسکی ایک بڑی دلچسپ کہانی ہے .

چیانگ کائی شیک کے زمانے میں چین میں جو چیزیں باہر سے آتی تھیں اُن میں سے سب سے خاص میں اناج کی گنتی تھی . ہر سال قریب بیس لاکھ ٹن اناج باہر سے آتا تھا . اس آبائی کو روکنے سے کیا ودیشی، کیا چین کے اندرونی بازاروں و بیوپار پر اثر پڑنا لازمی تھا . ودیشی بازاروں پر تو اثر یہ پڑیگا کہ وہ اُن ٹھکانوں کی کھوج زوروں سے کرنے لگ جائینگے جہاں اُن کا مال کسی بھی صورت سے پہونچایا جا سکے . اندرونی بازاروں پر اثر یہ ہوگا کہ اناج خریدنے کے لئے ودیشی ایکسچینج میں سواہا ہوجانے والا پیسہ اب دیش کے اُدیوگ دھندے بڑھانے میں لگایا جاسکیگا اور لوگوں کی حالت سدھریگی.

بہت سے نوکر شاہ ارتھ شاستری اور سماج شاستری کہا کرتے تھے (جیسے ہندستان میں آج بھی کہتے ہیں) کہ بڑھتی ہوئی آبادی کی وجہ سے چین اپنے اناج کے سوال کو کبھی حل کر ہی نہیں سکتا . وہ بڑے دعووں کے ساتھ اپنی تان لگاتے تھے اور ثبوت میں مالتھوزی قانون وغیرہ کی گواہی پیش کرتے تھے . لیکن جو اصلی جانکار تھے ان کے ایسی پوچ گھسگو باتوں پر کبھی یقین نہیں آیا اور اُن کا یہی خیال تھا کہ اگر چین کی زمینداری کا طریقہ بدل دیا جائے تو پیدلوار [illegible]

धर्म के बुनियादी सिद्धान्तों में कोई फ़र्क़ नहीं था और वह हमेशा ऐसा नुक़्ता ढूँढने की कोशिश करता था जहाँ मानवता को अलग अलग करने वाले विचार एक हो सकें. भागवत गीता और 'योग वशिष्ठ' का अनुवाद करने के बाद दाराशिकोह का ध्यान उपनिशदों की तरफ़ गया. उसने इनको पढ़ा और 'अलसिर अल अकबर' के नाम से इनका अनुवाद फ़ारसी में कर डाला. दारा ने इस अनुवाद के 'दो शब्द' में लिखा है कि मैं सूफ़ी-मुल्लाशाहअल काश्मीरी का चेला बन कर सूफ़ीवाद में जिस मन की शान्ती को ढूंढता फिरता था वह वेदों और उपनिशदों में मुझे मिल गई. इसके बाद 1654 में सूफ़ी वाद और वेदान्त की एकता को दिखाने के लिये उसने 'मजमउल बहरीन' नामी किताब लिखी. इस शहज़ादे ने और बहुत सी किताबें भी लिखी हैं. दारा की हीरे की अंगूठी और दूसरा क़ीमती चीज़ों पर 'प्रभू' खुदा रहता था. दुख की बात है कि राजगद्दी की लड़ाई में दारा की हार हुई और औरंगज़ेब सम्राट बन गया. उसके ज़माने में संस्कृत की तरक़्क़ी को काफ़ी धक्का लगा. औरंगज़ेब के बाद तो सिर्फ़ नाम के सुल्तान होने लगे और धीरे धीरे मुसलमान हकूमत ही ख़त्म हो गई. लेकिन मुसलमानों का संस्कृत के बढ़ाने में इतना हिस्सा है कि संस्कृत में भी बहुत से अरबी, फ़ारसी और तुरकी शब्द शामिल हो गये हैं.

नीचे लिखे तरीक़ों से मुसलमान बादशाहों, हाकिमों और पंडितों ने संस्कृत की सेवा की और उसे माला माल करने और दुनिया में उसकी अहमियत के फैलाने में बड़ा काम कियाः

(1) संस्कृत के कवियों, फ़िलासफ़रों, ज्योतिशियों की सरपरस्ती की गई और उन्हें बड़ा मान दिया गया.

(2) ख़ुद भी संस्कृत में लिखने की कोशिश की गई.

(3) संस्कृत के साहित्य और यहां के कलचर पर अरबी और फ़ारसी में किताबें लिखी गईं.

(4) संस्कृत के साहित्य का अरबी फ़ारसी में अनुवाद किया गया.

(5) बड़े बड़े संस्कृत के पंडितों को संस्कृत ग्रन्थों का अरबी फ़ारसी और बंगला में अनुवाद करने के लिये प्रोत्साहन दिया गया.

ऊपर के बयान की रोशनी से साफ़ हो जाता है कि ग्यारहवीं सदी से किस तरह हिन्दू मुस्लिम कलचर मिल कर एक होने की तरफ़ बढ़ रहा है.

('इस्लामिक रिव्यु' के एक लेख का आज़ाद तरजुमा)

دھرم کے بنیادی سدھانتوں میں کوئی فرق نہیں تھا اور وہ ہمیشہ ایسا نقطہ ڈھونڈھنے کی کوشش کرتا تھا جہاں مانوتا کو الگ الگ کرنے والے وچار ایک ہوسکیں۔ بھاگوت گیتا اور 'یوگ وششٹھ' کا انوواد کرنے کے بعد دارا شکوہ کا دھیان اپنشدوں کی طرف گیا۔ اس نے ان کو پڑھا اور 'السرالکبر' کے نام سے ان کا انوواد فارسی میں کر ڈالا۔ دارا نے اس انوواد کے 'دو شبد' میں لکھا ہے کہ میں صوفی ملا شاہ الکاشمیری کا چیلا بن کر صوفی واد میں جس من کی شانتی کو ڈھونڈھتا پھرتا تھا وہ ویدوں اور اپنشدوں میں مجھے مل گئی۔ اس کے بعد 1654 میں صوفی واد اور ویدانت کی ایکتا کو دکھانے کے لئے اس نے 'مجمع البحرین' نامی کتاب لکھی۔ اس شہزادے نے اور بہت سی کتابیں بھی لکھی ہیں۔ دارا کی ہیرے کی انگوٹھی اور دوسری قیمتی چیزوں پر 'پربھو' کھدا رہتا تھا۔ دکھ کی بات ہے کہ راج گدی کی لڑائی میں دارا کو ہار ہوئی اور اورنگ زیب سمراٹ بن گیا۔ اس کے زمانے میں سنسکرت کی ترقی کو کافی دھکا لگا۔ اورنگ زیب کے بعد تو صرف نام کے سلطان ہونے لگے اور دھیرے دھیرے مسلمان حکومت ہی ختم ہوگئی۔ لیکن مسلمانوں کا سنسکرت کے بڑھانے میں اتنا حصہ ہے کہ سنسکرت میں بھی بہت سے عربی، فارسی اور ترکی شبد شامل ہوگئے ہیں۔

نیچے لکھے طریقوں سے مسلمان بادشاہوں، حاکموں اور پنڈتوں نے سنسکرت کی سیوا کی، اور اسے مالا مال کرنے اور دنیا میں اس کی اہمیت کے پھیلانے میں بڑا کام کیا :

(1) سنسکرت کے کویوں، فلاسفروں، جیوتشیوں کی سرپرستی کی گئی اور انہیں بڑا مان دیا گیا۔

(2) خود بھی سنسکرت میں لکھنے کی کوشش کی گئی۔

(3) سنسکرت کے ساہتیہ اور یہاں کے کلچر پر عربی اور فارسی میں کتابیں لکھی گئیں۔

(4) سنسکرت کے ساہتیہ کا عربی فارسی میں انوواد کیا گیا۔

(5) بڑے بڑے سنسکرت کے پنڈتوں کو سنسکرت گرنتھوں کا عربی فارسی اور بنگلہ میں انوواد کرنے کے لئے پروتساہن دیا گیا۔

اوپر کے بیان کی روشنی سے صاف ہوجاتا ہے کہ گیارھویں صدی سے کس طرح ہندو مسلم کلچر مل کر ایک ہونے کی طرف بڑھ رہا ہے۔

('اسلامک ریویو' کے ایک لیکھ کا آزاد ترجمہ)

। में खुद भी हिस्सा ले रहा था. रोज़ रात को वह
दोनों पंडितों को ख़ुद ही अनुवाद की रूप रेखा
ता था. महा भारत के दो पर्व का अनुवाद होने के
मुल्ला शीर और हाजी थानेश्वरी भी इसी काम में
दिये गये. असल में यह पूरा अनुवाद नहीं था.
महा भारत की फ़ालतू चीज़ों को निकालने की
एक कोशिश थी और उस का नाम 'रज़्म नामा'
गया था. इसके बहुत बाद क़रीब उन्नीसवीं सदी में
भारत, रामायन और कालीदास की शकुन्तला,
त और विक्रम उर्वशी' का अनुवाद उर्दू में भी किया
नल और दमयन्ती की कहानी को लैला मजनूं की
के ढंग पर फ़ारसी में लिखा गया और उस किताब
म 'नल-व-दामा' रखा गया. नसरुल्ला मुस्तफ़ा ने
वन्स' का फ़ारसी में अनुवाद किया और मौलाना
हम्मद शाहाबादी ने संस्कृत से कश्मीरी तारीख़ का
द कर के उसका नाम 'रौज़ये ताहरीन' रखा. इस
स की किताब का कलहना की लिखी राज-तरान्जनी
ताल्लुक़ नहीं है. राजतरान्जनी का अनुवाद कश्मीर
तान ज़ैनुल आब्दीन के ज़माने में मौलाना इमाम
ने किया था. नीलकंठ की लिखी ज्योतिश की किताब
नुवाद मुहम्मद ख़ां गुजराती ने पूरा किया. लीलावती
हिसाब की किताब है. और इस के लेखक भास्कर हैं.
री दरबार के महाकवि फ़ैज़ी ने ख़ुद इस किताब
नुवाद किया था.

ृश्न जोशी, गंगाधारा, महाशय महानन्द वग़ैरा किताबों
नुवाद 'अकबर नामा' और 'आईन अकबरी' के लेखक
फ़ज़ल की देख रेख में कराया गया. अकबर ही के युग
सी संस्कृत डिक्शनरी 'पारसी प्रकाश' भी तैयार हुई.
अलावा संस्कृत के कवि गोविन्द भट्ट का अकबर से
बनी सम्बन्ध था कि वह अकबरी कालीदास कहलाते
शाहजहाँ के दरबार में भी संस्कृत के कवि जगन्नाथ
राजा का बड़ा मान था. जानवरों के इलाज पर संस्कृत
किताब 'सलहोत्रि' का अनुवाद अब्दुल्ला फ़ीरोज़
ने शाहजहां के युग में किया था. इस किताब में
सौ संस्कृत श्लोक थे. ख़ुद शाहजहां का साला
ख़ाँ इतनी अच्छी संस्कृत जानता था कि वह
में कविता करता था. शाइस्ता ख़ाँ के दरबार में
ज एक मशहूर कवि थे उनकी किताब 'रास-कल्प
अभी तक छप नहीं सकी. इस किताब में उन्होंने
ख़ाँ की छै कविताओं को भी लिखा है.

शिकोह—महान संस्कृत पंडित.

रा शिकोह शाहजहाँ का चहेता बेटा था. वह
का बहुत बड़ा पंडित था और साहित्य की ख़ूब
स्ती करता था. उसके लिये हिन्दू धर्म और इस्लाम

کرانے میں خود بھی حصہ لے رہا تھا ۔ روز رات
کو وہ اِن دونوں پنڈتوں کو خود ھی انوواد کی روپ ریکھا
سمجھاتا تھا ۔ مہا بھارت کے دو پروکا انوواد ھونے کے بعد
ملا شیر اور حاجی تھانیشوری بھی اُسی کام میں لگا دیئے
گئے ۔ اصل میں یہ پورا انوواد نہیں تھا بلکہ مہابھارت
کی فالتو چیزوں کو نکالنے کی یہ ایک کوشش تھی اور اِس
کا نام ' رزم نامہ ' رکھا گیا تھا ۔ اِس کے بہت بعد قریب
انیسویں صدی میں مہا بھارت' رامائن اور کالی داس
کی شکنتلا' ' میگھدوت اور وکرم اُروشی' کا انوواد اُردو
میں بھی کیا گیا ۔ نل اور دمینتی کی کہانی کو لیلا
مجنوں کی کہانی کے ڈھنگ پر فارسی میں لکھا گیا اور
اُس کتاب کا نام ' نل و داما ' رکھا گیا ۔ نصراللہ مصطفیٰ
نے ' ھری ومس ' کا فارسی میں انوواد کیا اور مولانا
شاہ محمد شاہ آبادی نے سنسکرت سے کشمیر تاریخ کا
انوواد کر کے اُس کا نام ' روضہ طاھرین ' رکھا ۔ اِس اتہاس
کی کتاب کا کلہنا کی لکھی راجترانجنی سے کوئی تعلق
نہیں ھے ۔ راجترانجنی کا انوواد کشمیر کے سلطان
زین العابدین کے زمانے میں مولانا امام الدین نے کیا تھا ۔
نیل کنٹھ کی لکھی جیوتش کی کتاب کا انوواد محمد
خاں گجراتی نے پورا کیا ۔ لیلاوتی ایک حساب کی کتاب
ھے اور اس کے لیکھک بھاسکر ھیں ۔ اکبری دربار کے
مہاکوی فیضی نے خود اس کتاب کا انوواد کیا تھا ۔

کرشن جوشی' گنگا دھارا' اور مہاشیے مہا نند وغیرہ
کتابوں کا انوواد ' اکبر نامہ' اور ' آئین اکبری' کے لیکھک
ابوالفضل کی دیکھ ریکھ میں کرایا گیا ۔ اکبر ھی کے یگ
میں فارسی سنسکرت ڈکشنری ' پراسی پرکاش ' بھی
تیار ھوئی ۔ اس کے علاوہ سنسکرت کے کوی گووند بھٹ
کا اکبر سے ایسا گہرا سمبندھ تھا کہ وہ اکبری کالی داس
کہلاتے تھے ۔ شاھجہاں کے دربار میں بھی سنسکرت کے
کوی جگن ناتھ پنڈت راجا کا بڑا مان تھا ۔ جانوروں کے علاج
پر سنسکرت کی ایک کتاب ' سلھوتری ' کا انوواد عبداللہ
فیروز جنگ نے شاھجہاں کے یگ میں کیا تھا ۔ اِس
کتاب میں سولہ سو سنسکرت اشلوک تھے۔ خود شاھجہاں
کا سالا شائستہ خاں اِتنی اچھی سنسکرت جانتا تھا
کہ وہ سنسکرت میں کویتا کرتا تھا ۔ شائستہ خاں کے
دربار میں چکر بوج ایک مشہور کوی تھے ۔ اُن کی کتاب
' راس کلپ دھرم ' ابھی تک چھپ نہیں سکی ۔ اِس
کتاب میں اُنہوں نے شائستہ خاں کی چھ کویتاؤں کو
بھی لکھا ھے ۔

داراشکوہ—مہان سنسکرت پنڈت ۔

دارا شکوہ شاھجہاں کا چہیتا بیٹا تھا ۔ وہ
سنسکرت کا بہت بڑا پنڈت تھا اور ساھتیہ کی خوب
سرپرستی کرتا تھا ۔ اُس کے لئے ھندو دھرم اور اسلام

दौड़ा दी. कृष्ण जी का नाम सारे बंगाल पर छा गया. हर तबक़े के औरत और मर्द सब भेद भाव को छोड़ कर चैतन्य रिशी के झंडे के नीचे आ गये. सब के सब प्रेम के धागे में बंध कर एक हो गये थे. इन नई ताक़तों ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच की खाई को पाटने की कोशिश की. यह वह ज़माना था जब देहली की तुग़लक़ सलतनत की चूल हिल गई थी. थोड़े दिनों के लिये लोदी राज ने देहली का फिर असर क़ायम कर दिया. इस ख़ानदान के दूसरे सुलतान सिकन्दर लोदी ने संस्कृत की एक किताब 'अग्र महा वैद्यक' (इलाज और दवाओं का विज्ञान) का अनुवाद फ़ारसी में करवाया और इस फ़ारसी अनुवाद का नाम 'तिब्बे सिकन्दरी' रखा. लेकिन कुछ पंडितों का ख़याल है कि 'तिब्बे सिकन्दरी' अनुवाद नहीं है बल्कि इसे बहुत से हकीमों ने मिल कर और बहुत सोच विचार के बाद सिकन्दर लोदी के ज़माने में लिखा था. इस उथल पुथल के ज़माने में भी मुसलमानों ने संस्कृत से अपनी दिलचस्पी कम नहीं की और संस्कृत से इस प्रेम को उसी तरह मुग़लों के सुपुर्द कर दिया.

संस्कृत साहित्य के बढ़ाने में मुग़ल सलतनत का हिस्सा.

1526 की पानीपत की लड़ाई ने हिन्दुस्तान की तारीख़ का रुख़ पलट दिया. बाबर ने एक राज की स्थापना की जिसका लगभग दो सौ बरस तक देश पर बहुत गहरा असर रहा. बाबर ख़ुद ज़ियादा दिनों हिन्दुस्तान पर राज न कर सका लेकिन इस थोड़े अरसे में भी हिन्दू ज्योतिश का सिक्का उसके दिल पर जम गया था. बाबर के पोते अकबर ने कला और विज्ञान की ख़ूब सरपरस्ती की. इसके युग में हिन्दुस्तान में ख़ुशहाली छा गई.

1585 में सम्राट अकबर ने 'तारीख़े बदायूनी' के लेखक अब्दुल क़ादिर को वाल्मीकी रामायन का फ़ारसी तरजुमा करने का काम सौंपा. 1589 में यह अनुवाद पूरा हो गया. बदायूनी ने लिखा है कि 'अथर्वेद' का अनुवाद करने के लिये अकबर ने अब्दुल क़ादिर और दक्खिन के एक नये मुसलमान को मुक़र्रर किया. बाद को अपने बस की बात न समझ कर अब्दुल क़ादिर ने इस ज़िम्मेदारी से अपना कंधा हल्का कर लिया और उनकी जगह पर हाजी इब्राहीम सरहिन्दी को अनुवाद करने का काम सौंप दिया गया. इसके बाद अकबर ने अब्दुल क़ादिर से इच्छा ज़ाहिर की कि वह 'सिंहासन बत्तीसी' का फ़ारसी अनुवाद कर डालें. इस अनुवाद का नाम 'ख़िरद अफ़्ज़ा नामा' रखा गया. 1582 में अकबर ने नक़ीब ख़ां और अब्दुल क़ादिर को महा भारत का फ़ारसी अनुवाद का काम सुपुर्द किया. अकबर महा भारत के अनुवाद

دوڑا دی۔ کرشن جی کا نام سارے بنگال پر چھا گیا۔ ہر طبقے کے عورت اور مرد سب بھید بھاؤ کو چھوڑ کر چیتن رشی کے جھنڈے کے نیچے آ گئے۔ سب کے سب پریم کے دھاگے میں بندھ کر ایک ہوگئے تھے۔ اِن نئی طاقتوں نے ہندو اور مسلمانوں کے بیچ کی کھائی کو پاٹنے کی کوشش کی۔ یہ وہ زمانہ تھا جب دہلی کی تغلق سلطنت کی چول ہل گئی تھی۔ تھوڑے دنوں کے لئے لودی راج نے دہلی کا پھر اثر قائم کردیا۔ اِس خاندان کے دوسرے سلطان سکندر لودی نے سنسکرت کی ایک کتاب 'اگر مہاویدک' (علاج اور دواؤں کا وگیان) کا انوواد فارسی میں کروالیا اور اِس فارسی انوواد کا نام 'طب سکندری' رکھا۔ لیکن کچھ پنڈتوں کا خیال ہے کہ 'طب سکندری' انوواد نہیں ہے بلکہ اِسے بہت سے حکیموں نے مل کر اور بہت سوچ وچار کے بعد سکندر لودی کے زمانے میں لکھا تھا۔ اِس اُتھل پتھل کے زمانے میں بھی مسلمانوں نے سنسکرت سے اپنی دلچسپی کم نہیں کی اور سنسکرت سے اِس پریم کو اُسی طرح مغلوں کے سپرد کر دیا۔

سنسکرت ساہتیہ کے بڑھانے میں مغل سلطنت کا حصہ۔

1526 کی پانی پت کی لڑائی نے ہندستان کی تاریخ کا رخ پلٹ دیا۔ بابر نے ایک راج کی استھاپنا کی جس کا لگ بھگ دو سو برس تک دیش پر بہت گہرا اثر رہا۔ بابر خود زیادہ دنوں ہندستان پر راج نہ کرسکا لیکن اِس تھوڑے عرصے میں بھی ہندو جیوتش کا سکہ اُس کے دل پر جم گیا تھا۔ بابر کے پوتے اکبر نے کلا اور وگیان کی خوب سرپرستی کی۔ اِس کے یگ میں ہندستان میں خوشحالی چھاگئی۔

1585 میں سمراٹ اکبر نے 'تاریخ بدایونی' کے لیکھک عبدالقادر کو والمیکی رامائن کا فارسی ترجمہ کرنے کا کام سونپا۔ 1589 میں یہ انوواد پورا ہوگیا۔ بدایونی نے لکھا ہے کہ 'اتھروید' کا انوواد کرنے کے لئے اکبر نے عبدالقادر اور دکھن کے ایک نئے مسلمان کو مقرر کیا۔ بعد کو اپنے بس کی بات نہ سمجھ کر عبدالقادر نے اِس ذمہ داری سے اپنا کندھا ہلکا کر لیا اور اُن کی جگہ پر حاجی ابراہیم سرہندی کو انوواد کرنے کا کام سونپ دیا گیا۔ اس کے بعد اکبر نے عبدالقادر سے اِچھا ظاہر کی کہ وہ 'سنگھاسن بتیسی' کا فارسی انوواد کر ڈالیں۔ اِس انوواد کا نام 'خردافزا نامہ' رکھا گیا۔ 1582 میں اکبر نے نقیب خاں اور عبدالقادر کو مہابھارت کا فارسی انوواد کا کام سپرد کیا۔ اکبر مہابھارت کے انوواد

लिया. हुसैनी खान्दान का राज क़ायम होने से में एक नया युग शुरू हुआ, इस खान्दान का पहला न अलाउद्दीन हुसेन था जो बहुत ही योग्य आदमी और कला और इमारत की कला की सरपरस्ती था. इसी सुलतान ने 'श्री कृष्ण विजय' के लेखक र बसु को 'भगवती पुरान' का अनुवाद करने का श दिया था. नुसरत शाह दूसरा बंगाली सुलतान है बंगाल के मशहूर कवि विद्यापती ने अपना एक गीत पित किया है. इसी सुलतान के हुक्म से सब से पहले भारत बंगला भाषा में लिखी गई थी. कला और का प्रेम केवल सुलतानों का ही हिस्सा नहीं था. शाह के सेना पति परगुल खां ने भी इस तरह की सी संस्कृत किताबों के अनुवाद करवाये हैं. परगुल को संस्कृत से इतना प्रेम था कि रोज़ वह और उसके री फ़ेनी के परगुल महल (ज़िला नोआखाली, पूरबी स्तान) इकट्ठा होते थे और कवीन्द्र से महा भारत अनुवाद सुनते थे. इस सेनापति के लड़के छुट्टी ख़ाँ भी करनन्दनी को प्रोत्साहन दिया कि वह संस्कृत से वाद का काम जारी रखें.

जब छुट्टी ख़ां चटागांव का गवर्नर हो गया तो महा भारत के 'अश्व मेध पर्व' का भी करनन्दनी अनुवाद करवाया. यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है मुसलमानों के राज में ही बंगाल में संस्कृत ज्ञान की ाखें फूटीं—नवस्मृति और नव नव. हुसेन शाह ने पीर' नाम का एक धर्म भी चलाया था. इस धर्म मक़सद हिन्दू और मुसलमानों को मिलाना था. 'सत्य' संस्कृत शब्द है जिसका मतलब है सच्चाई और ' एक फ़ारसी लफ़्ज़ है जिस के मानी हैं सांख रने. 'सत्य पीर' वह धर्म था जिसकी हिन्दू मुसलमान पूजा करते थे. अभी तक बंगाली साहित्य में 'सत्य की भक्ति में लिखी कवितायें मिलती हैं. चौदहवीं पंद्रहवीं सदी में बंगाल में मज़हब ने कई करवटें लीं. बतूता ने चौदहवीं सदी में बंगाल का दौरा किया सका कहना है कि फ़ख़रुद्दीन के युग में बंगाल में मान फ़क़ीरों के 150 हुजरे थे. इसी युग में इस्लाम हिन्दू धर्म बहुत नज़दीक आये और इस नज़दीकी सी ताक़तें पैदा हुईं जिन्होंने हिन्दू और मुसलमानों क बनाने में बड़ा काम किया और हिन्दू धर्म पर एक रंग चढ़ा दिया. विश्नू वाद ने बंगाल में काफ़ी तरक़्क़ी और चेतन रिशी के ज़माने में तो विश्नू वाद को चार लग गये.

चेतन रिशी ने भक्ति का संदेश सुनाया और अपने ार व्यक्तित्व से अपने पैरवों की आत्मा में बिजली

حصہ تھا ۔ حسینی خاندان کا راج قائم ہونے سے بنگال میں ایک نیا یگ شروع ہوا ۔ اِس خاندان کا پہلا سلطان علاالدین حسین تھا جو بہت ہی یوگیہ آدمی تھا اور کلا اور عمارت کی کلا کی سرپرستی کرتا تھا۔ اسی سلطان نے 'شری کرشن وجے' کے لیکھک مالا دھر بسو کو 'بھگوتی پران' کا انوواد کرنے کا آدیش دیا تھا ۔ نصرت شاہ دوسرا بنگالی سلطان ہے جسے بنگال کے مشہور کوی ودیاپتی نے اپنا ایک گیت سمرپت کیا ہے ۔ اسی سلطان کے حکم سے سب سے پہلے مہابھارت بنگلا بھاشا میں لکھی گئی تھی ۔ کلا اور گیان کا پریم کیول سلطانوں کا ہی حصہ نہیں تھا ۔ حسین شاہ کے سینا پتی پرگل خاں نے بھی اس طرح کی بہت سی سنسکرت کتابوں کے انوواد کروائے ہیں ۔ پرگل خاں کو سنسکرت سے اتنا پریم تھا کہ روز وہ اور اُس کے درباری فینی کے پرگل محل (ضلع نواکھالی، پوربی پاکستان) میں اکٹھا ہوتے تھے اور کویندر سے مہابھارت کا انوواد سنتے تھے ۔ اِس سیناپتی کے لڑکے چھٹی خاں نے بھی شری کرنندی کو پروتساہن دیا کہ وہ سنسکرت سے انوواد کا کام جاری رکھیں ۔

جب چھٹی خاں چٹاگاؤں کا گورنر ہوگیا تو اُس نے مہابھارت کے 'اشومیدھ پرو' کا شری کرنندی سے انوواد کروایا۔ یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ مسلمانوں کے راج میں ہی بنگال میں سنسکرت گیان کی دو شاخیں پھوٹیں— نو اسمرتی اور نو نو۔ حسین شاہ نے 'ستیہ پیر' نام کا ایک دھرم بھی چلایا تھا ۔ اِس دھرم کا مقصد ہندو اور مسلمانوں کو ملانا تھا ۔ 'ستیہ' ایک سنسکرت شبد ہے جس کا مطلب ہے سچائی اور 'پیر' ایک فارسی لفظ ہے جس کے معنی ہیں سیکھ دینے والا ۔ 'ستیہ پیر' وہ دھرم تھا جس کی ہندو مسلمان دونوں پوجا کرتے تھے ۔ ابھی تک بنگالی ساہتیہ میں 'ستیہ پیر' کی بھکتی میں لکھی کویتائیں ملتی ہیں۔ چودھویں اور پندرھویں صدی میں بنگال میں مذہب نے کئی کروٹیں لیں ۔ ابن بطوطہ نے چودھویں صدی میں بنگال کا دورہ کیا تھا اُس کا کہنا ہے کہ فخرالدین کے یگ میں بنگال میں مسلمان فقیروں کے 150 حجرے تھے ۔ اسی یگ میں اسلام اور ہندو دھرم بہت نزدیک آئے اور اِس نزدیکی سے ایسی طاقتیں پیدا ہوئیں جنہوں نے ہندو اور مسلمانوں کو ایک بنانے میں بڑا کام کیا اور ہندو دھرم پر ایک نیا رنگ چڑھا دیا ۔ وشنوواد نے بنگال میں کافی ترقی کی اور چیتن رشی کے زمانے میں تو وشنوواد کو چار چاند لگ گئے ۔

چیتن رشی نے بھکتی کا سندیش سنایا اور اپنے اتر دار ویکتتو سے اپنے پیرووں کی آتما میں بجلی

सरपरस्ती की बल्कि वह खुद संस्कृत का मशहूर कवि और पंडित था. अलबेरूनी और इब्न बतूता दोनों ने लिखा है: सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ अकाल से परेशान हो कर अपनी फ़ौज फाटक समेत गंगा के किनारे क़न्नौज के क़रीब आ कर ठहर गया था. यहां पर एक शहर सा बस गया था. इसका नाम सुल्तान ने खुद ही 'स्वर्ग द्वारी' रख दिया. 'स्वर्ग द्वार' संस्कृत शब्द है और इससे पता चलता है कि संस्कृत के कलचर में सुल्तान को कितनी दिलचस्पी थी. अपनी गुजरात पर चढ़ाई का वर्नन खुद सुल्तान ने ही संस्कृत के अड़तीस श्लोकों में किया है. यह श्लोक आज भी मौजूद हैं. हिन्दी के मशहूर कवि जैन पर्वसूरी ने अपनी कविता में सुल्तान के संस्कृत के ज्ञान की सराहना की है. फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ को भी नगर कोट की चढ़ाई के मौक़े पर बहुत सी संस्कृत किताबें मिली थीं और उसने हुक्म दिया था कि वह सब फ़ारसी में अनुवाद कर दी जायें. अज़ीज़ उद्दीन ख़ालिद ख़ानी ने इन किताबों का अनुवाद किया था. अनुवाद की इस ग्रन्थ माला का नाम उसने 'दलायले फ़ीरोज़ शाही' रखा था. इसी के बाद उसने बाईलाजी की एक संस्कृत किताब का अनुवाद फ़ारसी में किया. जानवरों के इलाज से ताल्लुक़ रखने वाली एक दूसरी संस्कृत किताब का अनुवाद भी फ़ारसी में हुआ था. इस किताब के "दो शब्द" में अनुवादक ने लिखा है—"यह किताब सुल्तान ग़यासउद्दीन खिलजी के हुक्म से अनुवाद की गई है"—इस अनुवाद से पहले बग़दाद में इसी मज़मून पर एक दूसरी संस्कृत किताब का अनुवाद किया जा चुका था जिसका नाम 'किताब अलबतरा' है 'मजमऊल तवारीख़' के लेखक ने लिखा है कि उनकी नज़र से हिन्दुओं के पुराने दर्शन का एक फ़ारसी अनुवाद गुज़रा जिसे अबुल हसन अली इब्न मुहम्मद अलजली ने 417 हिजरी में किया था. हिन्दुस्तान की राजकाजी हालत रोज़ बदलती रही और एक के बाद दूसरी सलतनत बनती और मिटती रही लेकिन इस हालत के होते हुये भी मुसलमान सुलतानों ने संस्कृत को कभी नहीं भुलाया.

बंगाल के मुस्लिम सुलतान और संस्कृत साहित्य.

1398 में तैमूर लंग ने हिन्दुस्तान पर हमला किया और दो सौ बरस पुरानी तुग़लक़ सलतनत के परख़चे उड़ा दिये. इस हमले से पहले ही तुग़लक़ सलतनत में बहुत सी खुद मुख़्तार रियासतें बन गई थीं—मालवा, गुजरात, बंगाल, जौनपुर, ख़ानदेश और दक्खिन हिन्दुस्तान में बहमनी राज और विजय नगर राज. पंद्रहवीं सदी में हिन्दुस्तान उन्हीं टुकड़ों में बंटा हुआ था. हिन्दुस्तानी ज्ञान भंडार को बढ़ाने में उस समय बंगाल ने बहुत बड़ा

سرپرستی کی بلکہ وہ خود سنسکرت کا مشہور کوی اور پنڈت تھا۔ البیرونی اور ابن بطوطہ دونوں نے لکھا ہے: سلطان محمد تغلق اکال سے پریشان ہوکر اپنی فوج پھاٹک سمیت گنگا کے کنارے قنوج کے قریب آکر ٹھہر گیا تھا۔ یہاں پر ایک شہر سا بس گیا تھا۔ اس کا نام سلطان نے خود ہی 'سورگ دواری' رکھ دیا۔ 'سورگ دوار' سنسکرت شبد ہے اور اِس سے پتہ چلتا ہے کہ سنسکرت کے کلچر میں سلطان کو کتنی دلچسپی تھی۔ اپنی گجرات پر چڑھائی کا ورنن خود سلطان نے ہی سنسکرت کے اڑتیس اشلوکوں میں کیا ہے۔ یہ اِشلوک آج بھی موجود ہیں۔ ہندی کے مشہور کوی جین پرو سوری نے اپنی کویتا میں سلطان کے سنسکرت کے گیان کی سراہنا کی ہے۔ فیروز شاہ تغلق کو بھی نگر کوٹ کی چڑھائی کے موقعے پر بہت سی سنسکرت کتابیں ملی تھیں اور اُس نے حکم دیا تھا کہ وہ سب فارسی میں انوواد کردی جائیں۔ عزیزالدین خالد خانی نے اِن کتابوں کا انوواد کیا تھا۔ انوواد کی اِس گرنتھ مالا کا نام اُس نے 'دلائل فیروز شاہی' رکھا تھا۔ اسی کے بعد اُس نے بائی لاجی کی ایک سنسکرت کتاب کا انوواد فارسی میں کیا۔ جانوروں کے علاج سے تعلق رکھنے والی ایک دوسری سنسکرت کتاب کا انوواد بھی فارسی میں ہوا تھا۔ اس کتاب کے ''دو شبد'' میں انووادک نے لکھا ہے—''یہ کتاب سلطان غیاث الدین خلجی کے حکم سے انوواد کی گئی ہے''—اس انوواد سے پہلے بغداد میں اسی مضمون پر ایک دوسری سنسکرت کتاب کا انوواد کیا جاچکا تھا جس کا نام 'کتاب البترا' ہے۔ 'مجمع التواریخ' کے لیکھک نے لکھا ہے کہ اُن کی نظر سے ہندوؤں کے پرانے درشن کا ایک فارسی انوواد گزرا جسے ابوالحسن علی ابن محمد الجلی نے 417 ہجری میں کیا تھا۔ ہندستان کی راجکاجی حالت روز بدلتی رہی اور ایک کے بعد دوسری سلطنت بنتی اور مٹتی رہی لیکن اِس حالت کے ہوتے ہوئے بھی مسلمان سلطانوں نے سنسکرت کو کبھی نہیں بھلایا۔

بنگال کے مسلم سلطان اور سنسکرت ساہتیہ۔

1398 میں تیمورلنگ نے ہندستان پر حملہ کیا اور دو سو برس پرانی تغلق سلطنت کے پرخچے اڑا دیئے۔ اِس حملے سے پہلے ہی تغلق سلطنت میں بہت سی خود مختار ریاستیں بن گئی تھیں—مالوہ، گجرات، بنگال، جونپور، خاندیش اور دکھن ہندستان میں بہمنی راج اور وجیانگر راج۔ پندرہویں صدی میں ہندستان انہیں ٹکڑوں میں بٹا ہوا تھا۔ ہندستانی گیان بھنڈار کو بڑھانے میں اس سے بنگال نے بہت بڑا

बैतुल हुक्मा (यानी ज्ञान का घर) की बुनियाद.

खलीफ़ा अलमामून ने 'बैतुल हुक्मा' नाम की एक
स्था बग़दाद में क़ायम की और यही संस्था मुसलमानों
ज्ञान हासिल करने का केन्द्र बनी. यहीं कला और
ान की हर शाख़ पर अच्छी से अच्छी किताबें दुनिया
की भाषाओं से अरबी और फ़ारसी के अनुवाद की
और बाद में उनका अनुवाद योरपी भाषाओं में
के कला और विज्ञान को योरप में फैलाया गया.
त के प्रचार में दूसरे ख़लीफ़ाओं के मुक़ाबले में
ीफ़ा मामून का सबसे ज़ियादा हिस्सा है. इसी तरह
मूद ग़ज़नवी के ज़माने में भी संस्कृत साहित्य की
न हिन्दुस्तान में मुसलमान पंडित आये और उन्होंने
कृत को बढ़ाने में बहुत काम किया. मुसलमान पंडित
न की तड़प और पंडिताई के लिये बहुत मशहूर थे
र उन्होंने संस्कृत भाषा पर अपना पूरा अधिकार
ा लिया था. मशहूर पंडित अबूरेहान बेरूनी सुलतान
मूद ग़ज़नवी के साथ हिन्दुस्तान आये थे. हिन्दुस्तान के
म्ध में जानकारी देने वाले पंडितों में उनका जवाब
है. अल्बेरूनी ने थोड़े अरसे में संस्कृत भाषा का
ज्ञान हासिल कर लिया और संस्कृत के बड़े बड़े
थे अरबी और फ़ारसी में अनुवाद कर डाले और
बी और फ़ारसी की ख़ास किताबों का तरजुमा
कृत में कर डाला. इसी पंडित ने अरबी और फ़ारसी
शब्दों और जुमलों का हू बहू संस्कृत में तरजुमा करने
कोशिश की. इस्लामी कलमें का उन्होंने अनुवाद किया
—अव्यक्त एकम मुहम्मद अवतार—अलबेरूनी की
ताबों में हिन्दुस्तान से ताल्लुक़ रखने वाली किताब
रीख़ुल हिन्द' बहुत ही नायाब किताब है. इससे हिन्दू
कृति और कलचर के बारे में काफ़ी जानकारी मिलती
और इस किताब के पढ़ने से उस समय की हालत
लूम होती है. लेखक ने यहां आ कर हिन्दू रीत रिवाज
र संस्थाओं की हमदर्दी के साथ जांच पड़ताल की
र उनका बर्नन 'अल हिन्द' में लिख कर छोड़ गया.
बेरूनी इस मैदान में अकेला नहीं था. कहा जाता है
मुहम्मद बिन इसराईल भी इसी मिशन को लेकर
न्दुस्तान आया था और उसने ज्योतिश का ज्ञान हासिल
या था.

ख़िलजी और तुग़लक़ राज और संस्कृत साहित्य.

इस बीच में ग़ुलाम ख़ानदान का राज ख़त्म हुआ और
के बाद ख़िलजी बादशाहों का दौर दौरा हुआ. इनका
असर ख़त्म हुआ और तुग़लक़ सलतनत क़ायम हो
यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है कि तुग़लक़ बाद-
मुहम्मद तुग़लक़ ने न सिर्फ़ संस्कृत साहित्य की

بیت الحکما (یعنی گیان کا گھر) کی بنیاد .

خلیفہ المامون نے ' بیت الحکما ' نام کی ایک
سنستھا بغداد میں قائم کی اور یہی سنستھا مسلمانوں
کے گیان حاصل کرنے کا کیندر بنی . یہیں کلا اور وگیان
کی ہر شاخ پر اچھی سے اچھی کتابیں دنیا بھر کی
بھاشاؤں سے عربی اور فارسی میں انوواد کی گئیں اور بعد
میں ان کا انوواد یورپی بھاشاؤں میں کر کے کلا اور وگیان
کو یورپ میں پھیلایا گیا . سنسکرت کے پرچار میں دوسرے
خلیفاؤں کے مقابلے میں خلیفہ مامون کا سب سے زیادہ
حصہ ہے . اسی طرح محمود غزنوی کے زمانے میں بھی
سنسکرت ساھتیہ کی گیان ھندستان میں مسلمان پنڈت
آئے اور انہوں نے سنسکرت کو بڑھانے میں بہت کام کیا .
مسلمان پنڈت گیان کی تڑپ اور پنڈتائی کے لئے بہت
مشہور تھے اور انہوں نے سنسکرت بھاشا پر اپنا پورا ادھیکار
جمالیا تھا. مشہور پنڈت ابوریحان بیرونی سلطان محمود
غزنوی کے ساتھ ھندستان آئے تھے . ھندستان کے سمبندھ
میں جانکاری دینے والے پنڈتوں میں ان کا جواب نہیں
ہے . البیرونی نے تھوڑے عرصے میں سنسکرت بھاشا کا
پورا گیان حاصل کر لیا اور سنسکرت کے بڑے بڑے پوتھے
عربی اور فارسی میں انوواد کر ڈالے اور عربی اور فارسی کی
خاص کتابوں کا ترجمہ سنسکرت میں کر ڈالا . اسی
پنڈت نے عربی اور فارسی کے شبدوں اور جملوں کا ھوبھو
سنسکرت میں ترجمہ کرنے کی کوشش کی . اسلامی کلمے
کا انہوں نے انوواد کیا تھا— اویکتھ ایکم محمد اوتار—
البیرونی کی کتابوں میں ھندستان سے تعلق رکھنے والی
کتاب ' تاریخ الہند ' بہت ھی نایاب کتاب ہے . اس
سے ھندو سنسکرتی اور کلچر کے بارے میں کافی جانکاری
ملتی ہے . اور اس کتاب کے پڑھنے سے اس سمے کی حالت
معلوم ھوتی ہے . لیکھک نے یہاں آکر ھندو ریت رواج
اور سنستھاؤں کی ھمدردی کے ساتھ جانچ پڑتال کی اور
ان کا ورنن ' الہند ' میں لکھکر چھوڑ گیا . البیرونی اس
میدان میں اکیلا نہیں تھا . کہا جاتا ہے کہ محمد
بن اسرائیل بھی اسی مشن کو لے کر ھندستان آیا تھا اور
اس نے جوتش کا گیان حاصل کیا تھا .

خلجی اور تغلق راج اور سنسکرت ساھتیہ .

اس بیچ میں غلام خاندان کا راج ختم ھوا
اور اس کے بعد خلجی بادشاھوں کا دور دورا ھوا . ان کا
بھی اثر ختم ھوا اور تغلق سلطنت قائم ھوگئی .
یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ تغلق
بادشاہ محمد تغلق نے نہ صرف سنسکرت ساھتیہ کی

सीखने की तरफ़ ध्यान दिया. उस समय तक सिन्ध में एक अरब राज्ञ क़ायम हो चुका था और अब्बासी खिलाफ़त की राजधानी बग़दाद और हिन्दुस्तान एक दूसरे के बहुत नज़दीक आ गए थे. अब्बासी ख़लीफ़ा, विज्ञान और कला के बहुत बड़े सरपरस्त थे.. 773 में बग़दाद के उस समय के ख़लीफ़ा अलमंसूर को एक हिन्दुस्तानी यात्री ने ब्रह्मगुप्त की लिखी हुई ज्योतिश की दो संस्कृत किताबें 'ब्रह्म सिद्धान्त' और 'खान्डो खान्डुका' भेंट की थी. कुछ पंडितों का कहना है कि उन दोनों किताबों का ख़लीफ़ा की आज्ञा से मुहम्मद बिन इब्राहीम फ़िज़ारी ने संस्कृत से अरबी में अनुवाद किया और उन्हीं किताबों के असर से इस्लाम में ज्योतिश की वैज्ञानिक सीख की शुरुआत हुई. यह भी कहा जाता है कि महान ज्योतिशी और हिसाबिया मुहम्मद बिनमूसा की ज्योतिश कुँडली की बुनियाद भी उन्हीं किताबों पर है, लेकिन कुछ पंडितों की राय है कि ख़लीफ़ा मामून के हुक्म से मुहम्मद बिन मूसा ने 'ब्रह्म सिद्धांत' ही का अनुवाद संस्कृत से अरबी में किया था. 'कलेलावदेमा' अरबी गद्य की सबसे पुरानी किताब समझी जाती है. ख़लीफ़ा हारून के ज़माने में पहलवी भाशा से ईरान के एक नए मुसलमान अब्दुल्ला बिन मुक़फ़्फ़ा ने यह किताब अरबी में अनुवाद की थी, और हकीम बुर्ज़ू ने इस किताब को मशहूर राजा अनुशेरवां के युग में संस्कृत से पहलवी भाशा में अनुवाद किया था. अरबी अनुवाद बहुत ही फैला क्योंकि पहलवी अनुवाद और संस्कृत की असली किताब ग़ायब हो गई थी.

'कलेला बदेमा' की शोहरत का इस से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि लगभग चालीस भाशाओं में इसका अनुवाद हुआ जिस में योरपी भाशाओं के अलावा हेब्रू, तुर्की, एथियोपिक भाशा, आईसलैंडी और मलाया की भाशा भी शामिल हैं. इसी किताब पर आधार करके 'अयार दानिश' नामी किताब लिखी गई थी. उसी का एक दूसरा अनुवाद मौलाना हुसैनो वायज़ अल्काशफ़ी ने भी किया था जिसका नाम 'अनवार सहेली' है. यही क़िस्सा कुछ 'सिन्ध बाद' का भी है. पहले इस किताब का संस्कृत से पहलवी में अनुवाद किया गया और बाद में पहलवी से इसका अनुवाद अरबी में हुआ. अरब के मशहूर इतिहासकार मसूदी ने लिखा है कि 'किताबुलसिंद बाद' हिन्दुस्तान की पैदावार है. फ़ारसी का 'सिंदबाद नामा' 'सीरिया का सिन्दबाद' अरबी की 'सात वज़ीर' हेब्रू का सिन्द बाद, यूनान की सेन्टीपस और योरप के और क़िस्से कहानियों की किताबें इसी संस्कृत किताब से मिलती जुलती हैं. इन किताबों की एक रंगी से पता चलता है कि मुसलमानों ने कितना गहरा ध्यान संस्कृत भाशा पर दिया और उसके प्रचार की कितनी ज़बरदस्त कोशिश की.

سیکھنے کی طرف دھیان دیا. اس سمے تک سندھ ں ایک عرب راج قائم ہوچکا تھا اور عباسی خلافت ، راجدھانی بغداد اور ہندستان ایک دوسرے بہت نزدیک آگئے تھے . عباسی خلیفہ' وگیان کلا کے بہت بڑے سرپرست تھے . 773 میں بغداد کے ں سمے کے خلیفہ المنصور کو ایک ہندستانی یاتری نے م گپت کی لکھی ہوئی جیوتش کی دو سنسکرت کتابیں ہم سدھانت' اور 'کھانڈ کھانڈو کا' بھینٹ کی تھی. کچھ ڈتوں کا کہنا ہے کہ ان دونوں کتابوں کا خلیفہ کی آگیاں محمد بن ابراہیم فزاری نے سنسکرت سے عربی میں اد کیا اور انہیں کتابوں کے اثر سے اسلام میں جیوتش کی یانک سیکھ کی شروعات ہوئی . یہ بھی کہا جاتا ہے مہان جیوتشی اور حسابیہ محمد بن موسیٰ کی جیوتش ڈلی کی بنیاد بھی انہیں کتابوں پر ہے' لیکن کچھ ڈتوں کی رائے ہے کہ خلیفہ مامون کے حکم سے محمد موسیٰ نے ' برہم سدھانت ' ہی کا انوواد سنسکرت سے ں میں کیا تھا . ' کلیلہ ودیما ' عربی گدیہ کی سب رانی کتاب سمجھی جاتی ہے . خلیفہ ہارون کے زمانے ں پہلوی بھاشا سے ایران کے ایک نئے مسلمان عبداللہ مقفعا نے یہ کتاب عربی میں انوواد کی تھی' اور حکیم نے اس کتاب کو مشہور راجہ انوشیرواں کے یگ میں سکرت سے پہلوی بھاشا میں انوواد کیا تھا . عربی انوواد ت ہی پھیلا کیونکہ پہلوی انوواد اور سنسکرت کی ی کتاب غائب ہوگئی تھی . ' کلیلہ ودیما ' کی رت کا اس سے اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ لگ بھگ چالیس اشاؤں میں اسکا انوواد ہوا جس میں یورپی بھاشاؤں کے ہیبرو' ترکی' یتھیوپک بھاشا' آئس لینڈی اور ملایا ، بھاشا بھی شامل ہیں . اسی کتاب پر آدھار کر کے یاردانش ' نامی کتاب لکھی گئی تھی . اسی کا ایک سرا انوواد مولانا حسینی واعظ الکاشفی نے بھی کیا تھا س کا نام ' انوار سہیلی ' ہے . یہی قصہ کچھ 'سندباد' بھی ہے . پہلے اس کتاب کا سنسکرت سے پہلوی میں اد کیا گیا اور بعد میں پہلوی سے اس کا انوواد عربی ں ہوا . عرب کے مشہور اتہاس کار مسعودی نے لکھا ہے 'کتاب السندباد ' ہندستان کی پیداوار ہے . فارسی کا سندباد نامہ ' سیریا کا 'سند باد' عربی کی ' سات ر ' ہیبرو کا سند باد' یونان کی سینٹی پس اور یورپ کے قصے کہانیوں کی کتابیں اسی سنسکرت کتاب سے ملتی جلتی ہیں . ان کتابوں کی یک رنگی سے پتہ چلتا ہے کہ مسلمانوں نے کتنا گہرا دھیان سنسکرت بھاشا پر اور اس کے پرچار کی کتنی زبردست کوشش کی .

और उसके प्रचार में सहायता दी. इस लेख में थोड़े से में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि संस्कृत के कौन कौन से मुसलमान पंडित हुए और मुसलमानों ने किस तरह हिन्दू कलचर और संस्कृत की सराहना की.

इस्लाम के पैदा होने से पहले भी अरब लोग हिन्दुस्तान से अनजान नहीं थे, और उसे 'अलहिन्द' कहा करते थे. अरब हिन्दुस्तान की तलवार की बहुत तारीफ़ किया करते थे और इस्लाम से पहले की अरबी कविताओं में हिन्दी तलवार का ज़िक्र कहीं न कहीं ज़रूर आ जाता था. पूरी तरह से यह बात साबित हो चुकी है कि इस्लाम से पहले के अरब हिन्दुस्तान से गहरे व्योपारी सम्बन्ध रखते थे और इस्लाम से पहले ही बहुत से अरबी सौदागर हिन्दुस्तान के पच्छिमी समुन्द्री किनारे पर आकर बस गए थे और इस किनारे का नाम 'मालाबार' रख दिया था. सन 571 में इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद के असर के फैलते ही अरब में नई सुबह की नई किरनें फूट पड़ीं, लोगों में ज्ञान हासिल करने की तड़प और हिम्मत पैदा हो गई और अरब लोग ज्ञान की खोज में दुनिया के दूर-दूर बसे देशों में फैल गए. हिन्दुस्तान में उन्हें संस्कृत साहित्य का अथाह ख़ज़ाना मिला और वह उसे अपनाने में लग गए. कुछ लोगों का कहना है कि वैदिक ही संस्कृत ज्ञान की वह शाख़ है जिधर सबसे पहले अरबों ने ध्यान दिया. दुख की बात है कि ख़िलाफ़त के शुरू शुरू के ज़मानों में संस्कृत से अनुवाद किया हुआ अरबी साहित्य अब बहुत कम मिलता है फिर भी पुराने आंकड़ों से पता चलता है कि ज्योतिश, संगीत, खेती बाड़ी और धातु से ताल्लुक़ रखने वाली बहुत सी किताबों का उस ज़माने में संस्कृत से अरबी में अनुवाद किया गया. इससे साफ़ पता लगता है कि अनुवादक संस्कृत और अरबी दोनों भाषाओं के ज़रूर पूरे पंडित रहे होंगे. सबसे मज़े की बात यह है कि मुसलमानों ने 712 में मुहम्मद बिन क़ासिम के हमले से पहले ही साहित्य के यह सब रत्न अपना लिये थे.

अब्बासी ख़िलाफ़त के युग में मुसलमानों ने पूरब की हिकमत समझने के लिये संस्कृत को साधन बनाया.

सिन्ध की जीत के लगभग चालीस साल बाद सन् 750 में दमिश्क़ में उमैया ख़िलाफ़त का ख़ात्मा हो गया और बग़दाद में अब्बासी ख़िलाफ़त क़ायम हुई. 'अलिफ़ लैला' का मशहूर शहर बग़दाद ज्ञान का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया. दूसरा केन्द्र स्पेन का एक शहर कारडोवा था. संस्कृत ही ऐसी भाषा थी जिसमें पूरब के सारे ज्ञान भंडार भरे पड़े थे. इसीलिए मुसलमानों ने ज़ियादा से ज़ियादा संस्कृत

اور اُس کے پرچار میں سہائتا دی ۔ اس لیکھ میں تھوڑے سے میں یہ دکھانے کی کوشش کی گئی ہے کہ سنسکرت کے کون کون سے مسلمان پنڈت ہوئے اور مسلمانوں نے کس طرح ہندو کلچر اور سنسکرتی کی سراہنا کی ۔

اسلام کے پیدا ہونے سے پہلے بھی عرب لوگ ہندستان سے انجان نہیں تھے، اور اُسے ' الہند ' کہا کرتے تھے ۔ عرب ہندستان کی تلوار کی بہت تعریف کیا کرتے تھے اور اسلام سے پہلے کی عربی کویتاؤں میں ہندی تلوار کا ذکر کہیں نہ کہیں ضرور آجاتا تھا ۔ پوری طرح سے یہ بات ثابت ہو چکی ہے کہ اسلام سے پہلے کے عرب ہندستان سے گہرے بیوپاری سمبندھ رکھتے تھے اور اسلام سے پہلے ہی بہت سے عربی سوداگر ہندستان کے پچھمی سمندری کنارے پر آکر بس گئے تھے اور اس کنارے کا نام ' مالا بار ' رکھ دیا تھا ۔ سن 571 میں اسلام کے پیغمبر حضرت محمد کے اثر کے پھیلتے ہی عرب میں نئی صبح کی نئی کرنیں پھوٹ پڑیں، لوگوں میں گیان حاصل کرنے کی تڑپ اور ہمت پیدا ہوگئی اور عرب لوگ گیان کی کھوج میں دنیا کے دور دور بسے دیشوں میں پھیل گئے ۔ ہندستان میں انہیں سنسکرت ساہتیہ کا اتھاہ خزانہ ملا اور وہ اُسے اپنانے میں لگ گئے ۔ کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ ویدک ہی سنسکرت گیان کی وہ شاخ ہے جدھر سب سے پہلے عربوں نے دھیان دیا ۔ دکھ کی بات ہے کہ خلافت کے شروع شروع کے زمانوں میں سنسکرت سے انوواد کیا ہوا عربی ساہتیہ اب بہت کم ملتا ہے پھر بھی پرانے آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ جیوتش، سنگیت، کھیتی باڑی اور دھات سے تعلق رکھنے والی بہت سی کتابوں کا اُس زمانے میں سنسکرت سے عربی میں انوواد کیا گیا ۔ اس سے صاف پتہ لگتا ہے کہ انووادک سنسکرت اور عربی دونوں بھاشاؤں کے ضرور پورے پنڈت رہے ہونگے ۔ سب سے مزے کی بات یہ ہے کہ مسلمانوں نے 712 میں محمد بن قاسم کے حملے سے پہلے ہی ساہتیہ کے یہ سب رتن اپنا لئے تھے ۔

عباسی خلافت کے یگ میں مسلمانوں نے پورب کی حکمت سمجھنے کے لئے سنسکرت کو سادھن بنایا ۔

سندھ کی جیت کے لگ بھگ چالیس سال بعد سن 750 میں دمشق میں امیہ خلافت کا خاتمہ ہوگیا اور بغداد میں عباسی خلافت قائم ہوئی ۔ 'الف لیلا ' کا مشہور شہر بغداد گیان کا سب سے بڑا کیندر بن گیا. دوسرا کیندر اسپین کا ایک شہر کارڈوا تھا. سنسکرت ہی ایسی بھاشا تھی جس میں پورب کے سارے گیان بھنڈار بھرے پڑے تھے ۔ اس لئے مسلمانوں نے زیادہ سے زیادہ سنسکرت

ज़रा झिझक नहीं होती. वह सब तरफ़ से सत्य का संग्रह करते हैं, और जो मार्के की बात उनके हाथ लगती है वह दुनिया को दे डालते हैं. ऐसा करने से उनका साहस और बढ़ जाता है.

जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, वह क्या कह गये हैं ? और जो आज हैं उन के क्या विश्वास हैं ? सत्य के खोजी इन सब को ज्यों का त्यों नहीं मान लेते. उन सब बातों को अपनी कसौटी पर कसते हैं. ईमानदारी से उन बातों के बारे में अपने विचार सब के सामने रख देते हैं. जो सत्य के मित्र हैं ध्यान से वह उनकी सुनते हैं. जो सत्य के शत्रु हैं वह उन की बात न ख़ुद सुनते हैं न औरों को सुनने देते हैं. जो ऐसा करते हैं उन को स्वार्थी समझना चाहिये. और यह समझना चाहिये कि वह बेहयाई की पगड़ी बांधकर दुनिया को धोके में रखना चाहते हैं.

यह कहना कि मेरा सोना ऐसा है, कि मैं इसे कभी आग में नहीं रखने दूंगा, यह बताता है कि सोना खरा नहीं है. वैसे ही किसी का यह कहना कि मेरे सिद्धान्त और मेरे ग्रंथ इतने पवित्र हैं और ऐसे आदमी के कहे हुए हैं जो सब कुछ जानते थे, इसलिये मैं किसी को उन सिद्धान्तों के विरोध में कुछ न कहने दूंगा, इस बात का सबूत है कि वह सिद्धान्त खोटे हैं. इसी से परीक्षा के बिना उन्हें खरे और पवित्र कहलवाना उन ग्रन्थों की इज़्ज़त बढ़ाना नहीं, उनके बारे में संदेह पैदा करना है.

सोना सजाता है, लजता नहीं. सत्य सजाता है, लजता नहीं. सत्य को लजाना सत्य को लजाना है.

—भगवानदीन

ذرا جھجھک نہیں ہوتی ۔ وہ سب طرف سے ستیہ کا سنگرہ کرتے ہیں ۔ اور جو مارکے کی بات اُن کے ہاتھ لگتی ہے وہ دنیا کو دے ڈالتے ہیں. ایسا کرنے سے اُن کا ساہس اور بڑھجاتا ہے۔

جو اب اس دنیا میں نہیں ہے' وہ کیا کہ گئے ہیں ؟ اور جو آج ہیں ان کے کیا وشواس ہیں ؟ ستیہ کے کھوجی اِن سب کو جیوں کا تیوں نہیں مان لیتے ۔ ان سب باتوں کو اپنی کسوٹی پر کستے ہیں ۔ ایمانداری سے اُن باتوں کے بارے میں اپنے وچار سب کے سامنے رکھ دیتے ہیں ۔ جو ستیہ کے متر ہیں دھیان سے وہ اُن کی سنتے ہیں ۔ جو ستیہ کے شترو ہیں وہ اُن کی بات نہ خود سنتے ہیں نہ اوروں کو سننے دیتے ہیں ۔ جو ایسا کرتے ہیں اُن کو سوارتھی سمجھنا چاہئے ۔ اور یہ سمجھنا چاہئے کہ وہ بےحیائی کی پگڑی باندھ کر دنیا کو دھوکے میں رکھنا چاہتے ہیں ۔

یہ کہنا کہ میرا سونا ایسا ہے' کہ میں اِسے کبھی آگ میں نہیں رکھنے دونگا' یہ بتاتا ہے کہ سونا کھرا نہیں ہے ۔ ویسے ہی کسی کا یہ کہنا کہ میرے سدھانت اور میرے گرنتھ اتنے پوتر ہیں اور ایسے آدمی کے کہے ہوئے ہیں جو سب کچھ جانتے تھے' اس لئے میں کسی کو اُن سدھانتوں کے ورُدھ میں کچھ نہ کہنے دونگا' اس بات کا ثبوت ہے کہ وہ سدھانت کھوٹے ہیں ۔ اِسی سے پریکشا کے بنا اُنہیں کھرے اور پوتر کہلوانا اُن گرنتھوں کی عزت بڑھانا نہیں' اُن کے بارے میں سندیہ پیدا کرنا ہے ۔

سونا سجاتا ہے' لجتا نہیں ۔ ستیہ سجاتا ہے' لجتا نہیں ۔ ستیہ کو لجانا ستیہ کو لجانا ہے ۔

—بھگوان دین

संस्कृत साहित्य के मुसलिम पंडित

(अली अकबर)

"ज्ञान हासिल करो चाहे उसकी खोज में तुम्हें चीन ही क्यों न जाना पड़े."—मुहम्मद

हिन्दुस्तान और इस्लाम से पहले के अरब में ब्योपारी नाता.

इतिहास के सफ़ों से इसका काफ़ी सबूत मिलता है कि मुसलमानों ने संस्कृत की सरपरस्ती की लेकिन इस बात पर अभी तक बहुत कम रोशनी पड़ी है कि कहां तक मुसलमान सुलतानों और पंडितों ने संस्कृत को अपनाया, उसके साहित्य पर अपना अधिकार जमाया

سنسکرت ساھتیہ کے مسلم پنڈت

(علی اکبر)

" گیان حاصل کرو چاہے اُس کی کھوج میں تمہیں چین ہی کیوں نہ جانا پڑے ."—محمد .

ہندستان اور اسلام سے پہلے کے عرب میں بیوپاری ناتا .

اتہاس کے صفحوں سے اِس کا کافی ثبوت ملتا ہے کہ مسلمانوں نے سنسکرت کی سرپرستی کی لیکن اِس بات پر ابھی تک بہت کم روشنی پڑی ہے کہ کہاں تک مسلمان سلطانوں اور پنڈتوں نے سنسکرت کو اپنایا اُس کے ساھتیہ پر اپنا ادھیکار جمایا

मैं बोला, तो अम्मा हमें भगवान से नहीं डरना चाहिये ?

अम्मा बड़े प्यार से बोली, भगवान से डरने का क्या काम. वह हमारा डर दूर करने के लिए पैदा हुए. उनकी कथा सुन सुन कर हमारे कितने ही डर भाग गये. भगवान से नहीं डरा करते. डरना चाहिये किसी को दुख पहुंचाने से, किसी का जी दुखाने से, किसी की चीज छीन लेने से. और इसी तरह के दूसरे काम करने से.

अम्मा की इन बातों का असर उस उमर में तो कुछ मालूम न हुआ. इन बातों के बाद भी सब काम वैसे ही चलते रहे, जैसे हमेशा चलते थे. हां, उमर पाकर उस बात में अंकुर फूटे और सत्य के समझने में खूब मदद मिली.

सत्य छिपाना असत्य है. पर अगर किसी का कोई भेद तुम्हारे पास है, और अगर उसे न छिपाकर किसी दूसरे से कह दो तो वह न छिपाना असत्य होगा. व्यवहार में जो सत्य आ रहा है, इस किताब में हमने उसको सच नाम दिया है. पर जो गहरी असलियत है उसको हम सत्य कहकर लिखते हैं. वही असलियत वाला सत्य छिपाने की चीज नहीं. सबको बताने की चीज है. मेरी मां ने अपनी बुद्धि के अनुसार जितना सत्य वह जानती थी सब का सब बड़े मीठे और सीधे ढंग से मुझे समझा दिया. मैं सत्य समझ गया और कोई ऐसी बुराई मुझमें न आने पाई जो दूसरी तरह समझाने से आ जाती.

सत्य के मामले में किसी का ख्याल रखने से या बहुमत की पर्वाह करने से, या सिद्धान्तों पर अड़ जाने से काम नहीं चलता. सत्य हमारी बुद्धि के अनुकूल जंचना चाहिये.

जब सत्य खोजने के लिये निकले तो उसे हर जगह खोजना चाहिये. जहां वह मिले वहीं चले जाना चाहिये. उसके लेने में सुख मानना चाहिये. ईमानदारों का यही रास्ता है. ईमानदारी इसी राह गई है. बुद्धिमानी इसी राह चलकर कुछ पा सकी.

दुनिया में आदमी ने हर जगह सत्य की खोज की. इतिहास इन खोजियों की कथा से भरा पड़ा है. सत्य की खोज की खातिर आदमी ग्रंथ पढ़ता है, उसकी हर बात में फंस कर नहीं रह जाता. सोने का खोजी जमीन खोदता खोदता सोने के पास रुकेगा. बीच की चीजें छोड़ता चला जायगा. सत्य का खोजी इसी तरह आगे बढ़ता चला जायगा. पर रास्ते में आये असत्य को सत्य समझ कर अपनी खोज नहीं छोड़ बैठेगा.

तरह तरह के विज्ञानवेत्ता अपनी अपनी खोज में लगे हुए हैं. एक सत्य के बाद दूसरे सत्य पर आते उन्हें

میں بولا تو اماں ہمیں بھگوان سے نہیں ڈرنا چاہئے ؟

اماں بڑے پیار سے بولی، بھگوان سے ڈرنے کا کیا کام ۔ وہ ہمارا ڈر دور کرنے کے لئے پیدا ہوئے ۔ ان کی کتھا سن سن کر ہمارے کتنے ہی ڈر بھاگ گئے ۔ بھگوان سے نہیں ڈرا کرتے ۔ ڈرنا چاہئے کسی کو دکھ پہونچانے سے، کسی کا جی دکھانے سے، کسی کی چیز چھین لینے سے ۔ اور اسی طرح کے دوسرے کام کرنے سے ۔

اماں کی ان باتوں کا اثر اس عمر میں تو کچھ معلوم نہ ہوا ۔ ان باتوں کے بعد بھی سب کام ویسے ہی چلتے رہے، جیسے ہمیشہ چلتے تھے ۔ ہاں، عمر پاکر اس بات میں انکر پھوٹے اور ستیہ کے سمجھنے میں خوب مدد ملی ۔

ستیہ چھپانا استیہ ہے ۔ پر اگر کسی کا کوئی بھید تمہارے پاس ہے، اور اگر اسے نہ چھپاکر کسی دوسرے سے کہہ دو تو یہ نہ چھپانا استیہ ہوگا ۔ ویوہار میں جو ستیہ آ رہا ہے، اس کتاب میں ہم نے اسکو سچ نام دیا ہے ۔ پر جو گہری اصلیت ہے اس کو ہم ستیہ کہہ کر لکھتے ہیں ۔ وہی اصلیت والا ستیہ چھپانے کی چیز نہیں ۔ سب کو بتانے کی چیز ہے ۔ میری ماں نے اپنی بدھی کے انوسار جتنا ستیہ وہ جانتی تھیں سب کا سب بڑے میٹھے اور سیدھے ڈھنگ سے مجھے سمجھا دیا ۔ میں ستیہ سمجھ گیا اور کوئی ایسی برائی مجھ میں نہ آنے پائی جو دوسری طرح سمجھانے سے آ جاتی ۔

ستیہ کے معاملے میں کسی کا خیال رکھنے سے یا بہومت کی پرواہ کرنے سے، یا سدھانتوں پر اڑ جانے سے کام نہیں چلتا ۔ ستیہ ہماری بدھی کے انوکول جنچنا چاہئے ۔

جب ستیہ کھوجنے کے لئے نکلے تو اسے ہر جگہ کھوجنا چاہئے ۔ جہاں وہ ملے وہیں چلے جانا چاہئے ۔ اس کے لینے میں سکھ ماننا چاہئے ۔ ایمانداروں کا یہی راستہ ہے ۔ ایمانداری اسی راہ گئی ہے ۔ بدھیمانی اسی راہ چل کر کچھ پا سکی ۔

دنیا میں آدمی نے ہر جگہ ستیہ کی کھوج کی ۔ اتہاس ان کھوجیوں کی کتھا سے بھرا پڑا ہے ۔ ستیہ کی کھوج کی خاطر آدمی گرنتھ پڑھتا ہے، اس کی ہر بات میں پھنس کر نہیں رہ جاتا ۔ سونے کا کھوجی زمین کھودتا کھودتا سونے کے پاس رکیگا ۔ بیچ کی چیزیں چھوڑتا چلا جائیگا ۔ ستیہ کا کھوجی اسی طرح آگے بڑھتا چلا جائیگا ۔ پر راستے میں آئے استیہ کو ستیہ سمجھ کر اپنی کھوج نہیں چھوڑ بیٹھیگا ۔

طرح طرح کے وگیان ویتا اپنی اپنی کھوج میں لگے ہوئے ہیں ۔ ایک ستیہ کے بعد دوسرے ستیہ پر جاتے انہیں

उन्हें खोलते बांधते देखकर बच्चों में मूर्तियों का आदर कम हो सकता है. अपने लालाजी को तुम रोज देखते हो उनसे थोड़ा बहुत डरते भी हो, पर भगवान को तुमने कभी नहीं देखा, उनका नाम सुना है, उनकी कथा सुनी है, अपने लालाजी से और मुझसे तुमने भजन सीखे हैं, प्रार्थना सीखी है, भगवान की मूर्तियों को धोक देना सीखा है, पर सब सुना सीखा है. यह सुनी सीखी बातें तुम्हारे दिल से निकल सकती हैं, अगर तुम किसी को मूर्ति से पांव लगाते या बुरी तरह उलटते पुलटते देख लो.

मैं बोला, अम्मा, मंदिर के भगवान हमें इम्तहान में पास नहीं करा सकते ?

अम्मा बोली, नहीं, कभी नहीं करा सकते, इम्तहान में पास तो तुम मन लगाकर पढ़ने से होंगे, तुम्हारे लालाजी तुम्हें पढ़ाकर पास करा सकते हैं. उनकी तस्वीर या मूरत तुम्हें पास नहीं करा सकती, क्योंकि वह तुम्हें पढ़ा नहीं सकती. तुम अपने लालाजी की तस्वीर को नमस्कार करके खुद खुश हो सकते हो, मुझे खुश कर सकते हो, अच्छे लड़के समझे जा सकते हो, पर उस तस्वीर से पैसे मांगकर, पैसे नहीं पा सकते. इस तस्वीर से कुछ पूछो तो जवाब नहीं पा सकते.

अम्मा, तो भगवान से हमें कुछ नहीं मिलेगा ?

अम्मा बोली, कुछ क्यों नहीं मिलेगा ? उनकी कथा सुनने से तुम्हारे अन्दर तुम्हारा मन भलाई करने के लिये जोर मारेगा. और इतना मिलना क्या कम है ? देखो मुहल्ले के सब लड़के गाली देते हैं, तुम कभी गाली नहीं देते, क्योंकि तुम्हारे पिताजी कभी गाली नहीं देते, मैं गाली नहीं देती. देखो, तुम्हारे स्कूल के लड़के गिलोल रखते हैं, बेमतलब चिड़ियां कौवे मार डालते हैं, गिलोल तुम्हारे पास भी है, तुम वैसा नहीं करते, क्योंकि तुम्हारे लालाजी वैसा नहीं करते, मैं वैसा नहीं करती. तुम अपने घर के नौकर को वैसा नहीं करने देते, हम सब ऐसा इसलिये नहीं करते कि हमारे भगवान ऐसा नहीं करते थे. हमने यह बात उनकी कथा सुनकर सीखी, तुम्हें सिखायी. उन्हीं भगवान के मंदिर में मूरत है. हम सब उनको धोक देते हैं, ठीक करते हैं और उनसे क्या चाहिये ?

मैं बोला, हम सब तो यह समझते थे कि मंदिर के भगवान सब कुछ कर सकते हैं, और अम्मा, जब भूल से मैं उनकी तरफ पीठ कर देता था तो रात को बड़े बड़े डरावने सपने आते थे. ऐसा क्यों होता था ?

अम्मा बोली, डरोगे तो डरावने सपने आयेंगे, किसी को डरावोगे तो डरावने सपने आवेंगे. किसी को डराने की सोचोगे तो डरावने सपने आवेंगे. जो सपने डरावने तुम्हें आते वह डरने से आते.

انہیں کھولتے باندھتے دیکھکر بچوں میں مورتیوں کا آدر کم ہو سکتا ہے. اپنے لالہ جی کو تم روز دیکھتے ہو ان سے تھوڑا بہت ڈرتے بھی ہو، پر بھگوان کو تم نے کبھی نہیں دیکھا، اُن کا نام سنا ہے، اُن کی کتھا سنی ہے، اپنے لالہ جی سے اور مجھ سے تم نے بھجن سیکھے ہیں، پرارتھنا سیکھی ہے، بھگوان کی مورتیوں کو دھوک دینا سیکھا ہے، پر سب سنا سیکھا ہے. یہ سنی سیکھی باتیں تمہارے دل سے نکل سکتی ہیں، اگر تم کسی کو مورتی سے پاؤں لگاتے یا بری طرح الٹتے پلٹتے دیکھ لو.

میں بولا، اماں، مندر کے بھگوان ہمیں امتحان میں پاس نہیں کرا سکتے ؟

اماں بولی، نہیں کبھی نہیں کرا سکتے، امتحان میں پاس تو تم من لگا کر پڑھنے سے ہوگے، تمہارے لالہ جی تمہیں پڑھا کر پاس کرا سکتے ہیں. ان کی تصویر یا مورت تمہیں پاس نہیں کرا سکتی، کیونکہ وہ تمہیں پڑھا نہیں سکتی. تم اپنے لالہ جی کی تصویر کو نمسکار کر کے خود خوش ہو سکتے ہو، مجھے خوش کر سکتے ہو، اچھے لڑکے سمجھے جا سکتے ہو، پر اس تصویر سے پیسے مانگ کر، پیسے نہیں پا سکتے. اس تصویر سے کچھ پوچھو تو جواب نہیں پا سکتے.

اماں، تو بھگوان سے ہمیں کچھ نہیں ملیگا ؟

اماں بولی، کچھ کیوں نہیں ملے گا ؟ ان کی کتھا سننے سے تمہارے اندر تمہارا من بھلائی کرنے کے لئے زور ماریگا. اور اتنا ملنا کیا کم ہے ؟ دیکھو محلے کے سب لڑکے گالی دیتے ہیں، تم کبھی گالی نہیں دیتے، کیونکہ تمہارے پتاجی کبھی گالی نہیں دیتے، میں گالی نہیں دیتی. دیکھو، تمہارے اسکول کے لڑکے غلول رکھتے ہیں، بے مطلب چڑیاں کوے مار ڈالتے ہیں، غلول تمہارے پاس بھی ہے، تم ویسا نہیں کرتے، کیونکہ تمہارے لالہ جی ویسا نہیں کرتے، میں ویسا نہیں کرتی. تم اپنے گھر کے نوکر کو ویسا نہیں کرنے دیتے، ہم سب ایسا اس لئے نہیں کرتے کہ ہمارے بھگوان ایسا نہیں کرتے تھے. ہم نے یہ بات اُن کی کتھا سن کر سیکھی، تمہیں سکھائی. انہیں بھگوان کے مندر میں مورت ہے. ہم سب ان کو دھوک دیتے ہیں، ٹھیک کرتے ہیں اور اُن سے کیا چاہئے ؟

میں بولا، ہم سب تو یہ سمجھتے تھے کہ مندر کے بھگوان سب کچھ کر سکتے ہیں، اور اماں، جب بھول سے میں ان کی طرف پیٹھ کر دیتا تھا تو رات کو بڑے بڑے ڈراونے سپنے آتے تھے. ایسا کیوں ہوتا تھا ؟

اماں بولی، ڈروگے تو ڈراونے سپنے آئینگے، کسی کو ڈراوگے تو ڈراونے سپنے آئینگے. کسی کو ڈرانے کی سوچو گے تو ڈراونے سپنے آئینگے. جو سپنے ڈراونے تمہیں آتے وہ ڈرنے سے آتے.

मैं बोला, और बच्चे न सही, मैं तो सफ़ाई के काम पूरा हाथ बंटा सकता था और अब वह वेदी सजाते हैं मुझ से काम लेते हैं, दूसरों से भी काम लेते हैं.

अम्मा बोलीं, पर इस वक़्त वह वेदी नहीं सजा रहे, ान की मूर्तियां साफ़ कर रहे हैं.

मैं बोला, वह काम भी मैं अच्छा कर सकता था.

अम्मा बोलीं, तुम अच्छा तो कर सकते थे, पर कहीं कोई मूरत टूट फूट जाती तो क्या होता ?

मैं बोला, और उन से टूट फूट जावे तो ?

अम्मा बोलीं, वह बहुत होशियारी से काम करते हैं. र इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी का काम तुम्हें नहीं सौंप ते.

मैं बोला, यह ठीक सही, वह मुझे काम न दें, मुझे दर क्यों नहीं आने देते ? देखने क्यों नहीं देते ? दूसरे काई की तरह वह भी एक सफ़ाई है. दूसरों में आने देते इसमें क्यों रोकते हैं ?

अम्मा बोलीं, वजह यह है कि धातु की मूर्तियों की फ़ाई करते वक़्त उनको टेढ़े सीधे करके मांजना पड़ता कभी ज़रूरत पड़ जाय तो पांव का ज़ोर भी लगाना ता है इसलिये वहां बच्चों को नहीं रहने देते.

मैं बोला, इसमें न रहने देने की क्या बात है ?

अम्मा बोलीं, बच्चे मूर्तियों को इस तरह मांजता कर खिलौना समझने लगेंगे; और सब आदर भाव । बैठेंगे. भगवान मानना छोड़ देंगे और कभी अकेले में टी छोटी मूर्तियों के साथ ऐसे ही खेलने लगेंगे जैसे रों खिलौनों के साथ.

मैं बोला, तो वह भगवान नहीं हैं ?

अम्मा बोलीं, भगवान नहीं, भगवान की मूरत है.

मैं बोला, भगवान की मूरत जैसे लालाजी की वीर.

अम्मा बोलीं, तस्वीर नहीं, जैसे लालाजी की मूरत. लाजी की मूरत को अगर वैसी कोई मूरत तुम्हारे घर होती, तो तुम अच्छी तरह संभालकर रखते या नहीं ?

मैं बोला, संभाल कर तो रखता, पर धोक (साष्टांग नस्कार) न देता.

अम्मा बोलीं, धोक तो तुम लालाजी को भी नहीं देते. (भगवान अगर तुम्हारे लालाजी की तरह जीते जागते म्हारे सामने आ जाते तो तुम धोक देते या नहीं ?

मैं बोला, हां तब तो धोक देता.

अम्मा बोलीं, बस यही बात भगवान की मूरत की है.

میں بولا' اور بچے نہ سہی' میں تو صفائی کے کام میں پورا ہاتھ بٹا سکتا تھا . اور جب وہ ویدی سجاتے ہیں تو مجھ سے کام لیتے ہیں' دوسروں سے بھی کام لیتے ہیں .

اماں بولی' پر اس وقت وہ ویدی نہیں سجا رہے' بھگوان کی مورتیاں صاف کر رہے ہیں .

میں بولا' یہ کام بھی میں اچھا کر سکتا تھا .

اماں بولی' تم اچھا تو کر سکتے تھے' پر کہیں سے کوئی مورت ٹوٹ پھوٹ جاتی تو کیا ہوتا ؟

میں بولا' اور ان سے ٹوٹ پھوٹ جاوے تو ؟

اماں بولی' وہ بہت ہوشیاری سے کام کرتے ہیں . اور اتنی بڑی ذمہ داری کا کام تمہیں نہیں سونپ سکتے .

میں بولا' یہ ٹھیک سہی' وہ مجھے کام نہ دیں' مجھے اندر کیوں نہیں آنے دیتے ؟ دیکھنے کیوں نہیں دیتے ؟ دوسرے صفائی کی طرح وہ بھی ایک صفائی ہے . دوسروں میں آنے دیتے ہیں' اس میں کیوں روکتے ہیں ؟

اماں بولی' وجہ یہ ہے کہ دھات کی مورتیوں کی صفائی کرتے وقت ان کو ٹیڑھے سیدھے کر کے مانجھنا پڑتا ہے . کبھی ضرورت پڑ جائے تو پاؤں کا زور بھی لگانا پڑتا ہے اس لیے وہاں بچوں کو نہیں رہنے دیتے .

میں بولا' اس میں نہ رہنے دینے کی کیا بات ہے ؟

اماں بولی' بچے مورتیوں کو اس طرح مانجھتا دیکھکر کھلونا سمجھنے لگینگے؛ اور سب آدر بھاؤ کھو بیٹھینگے . بھگوان ماننا چھوڑ دینگے اور کبھی اکیلے میں چھوٹی چھوٹی مورتیوں کے ساتھ ایسے ہی کھیلنے لگینگے جیسے دوسرے کھلونوں کے ساتھ .

میں بولا' تو وہ بھگوان نہیں ہیں ؟

اماں بولی' بھگوان نہیں' بھگوان کی مورت ہے .

میں بولا' بھگوان کی مورت جیسے لالہ جی کی تصویر .

اماں بولی' تصویر نہیں' جیسے لالہ جی کی مورت . لالہ جی کی مورت کو' اگر ویسی کوئی مورت تمہارے گھر میں ہوتی' تو تم اچھی طرح سنبھال کر رکھتے یا نہیں؟

میں بولا' سنبھال کر تو رکھتا' پر دھوک (ساشٹانگ نمسکار) نہ دیتا .

اماں بولی' دھوک تو تم لالہ جی کو بھی نہیں دیتے. پر بھگوان اگر تمہارے لالہ جی کی طرح جیتے جاگتے تمہارے سامنے آ جاتے تو تم دھوک دیتے یا نہیں ؟

میں بولا' ہاں تب تو دھوک دیتا .

اماں بولی' بس یہی بات بھگوان کی مورت کی ہے .

एक बार एक लड़के से भूत के बारे में बहस हो जाने पर मैं यह कह बैठा, "आज तुम्हारे बाप के सिर में कोई भूत न आने दूंगा." उस लड़के का बाप अखाड़े में भूत बुलाने का काम करता था. उस लड़के से शर्त हो गई. दिवाली का दिन था. रात काफी ठंडी हो चुकी थी. मैं एक कपड़ा ओढ़ कर और बांस की एक खपच्ची में एक सुई बांध कर अपने कपड़े में छुपाकर उस लड़के के साथ जिसे मैंने चुनौती दी थी, उसके घर पहुँचा. अखाड़े में ठीक उसके बाप के पीछे बैठ गया. वह लड़का मेरे बराबर बैठ गया. अखाड़े में लालटेन न थी. कोठरी के एक कोने में एक दिया जल रहा था. वह ऐसी जगह था जहाँ से वह मेरे ऊपर लड़के के बाप की परछाईं डाल रहा था, यानी मैं कुछ अंधेरे में था. अखाड़े के और लोग मुझे ठीक ठीक न देख सकते थे.

मेरे पहुँचने के दो मिनट बाद लड़के के बाप ने एक भूत बुलाया. जैसे ही लड़के के बाप ने सिर हिलाना शुरू किया, मैंने चुपके से खपच्ची में बंधी सुई पीछे से लड़के के बाप के बदन में चुभा दी. खपच्ची चट नीचे छुपा ली. सिर हिलना बंद हो गया. लड़के के बाप ने दाएँ बाएँ गुस्सा होकर देखा, पर कुछ न समझा, फिर भूत बुलाया गया. वह आया, मैंने फिर सुई चुभाई, वह फिर भाग गया. फिर उसी तरह दाएँ बाएँ निगाह दौड़ाई गई, फिर भी कोई कुछ न समझा, आध घंटे की कोशिश के बाद लड़के के बाप को यह कहना पड़ा कि आज भूत सिर नहीं आएगा.

दूसरे दिन सारा भेद खुल गया. उस दिन के बाद से मुझे कभी अखाड़े में नहीं शामिल होने दिया गया. शायद यह भी एक कारन हो कि मुझे मंदिर में उस वक़्त न आने देते हों, जब किसी और लड़के को वहां आने की इजाज़त न थी.

जब मैं सब जगह से निराश हो गया तब अपनी मां से पूछ बैठा, मां, हम बच्चों को मंदिर में यह लोग क्यों नहीं आने देते ? मां बोली, मंदिर तो तुम रोज़ जाते हो, कोई रोकता नहीं. कब किसने तुमको रोका ? मैं बोला, हर साल भादों की पूजा शुरू होने से पहिले दो तीन दिन दोपहर को कुछ लोग मंदिर में दरवाज़ा बंद करके बैठ जाते हैं, हम लड़कों को अन्दर नहीं आने देते. दो एक दिन की बात होने से मैं हर साल तुम से पूछना भूल जाता था, इस साल भी कल ऐसा ही हुआ. और आज अभी मैं मंदिर से आ रहा हूँ, कोई दरवाज़ा नहीं खोलता, कोई कुछ बताता भी नहीं, अम्मा, यह बात क्या है ?

अम्मा हंस पड़ी, बोली, अच्छा यह बात है ? बेटा बात कुछ नहीं, लोग दरवाज़ा बंद करके पूजा के लिए मंदिर की सफ़ाई करते हैं, इसलिए बच्चों को नहीं आने देते.

ایک بار ایک لڑکے سے بھوت کے بارے میں بحث ہو جانے پر میں یہ کہہ بیٹھا' "آج تمہارے باپ کے سر میں کوئی بھوت نہ آنے دونگا." اس لڑکے کا باپ اکھاڑے میں بھوت بلانے کا کام کرتا تھا. اس لڑکے سے شرط ہو گئی. دیوالی کا دن تھا . رات کافی ٹھنڈی ہو چکی تھی . میں ایک کپڑا اوڑھ کر اور بانس کی ایک کھپچی میں ایک سوئی باندھکر اپنے کپڑے میں چھپا کر اس لڑکے کے ساتھ جسے میں نے چنوتی دی تھی' اس کے گھر پہنچا . اکھاڑے میں ٹھیک اس کے باپ کے پیچھے بیٹھ گیا . وہ لڑکا میرے برابر بیٹھ گیا . اکھاڑے میں لالٹین نہ تھی . کوٹھری کے ایک کونے میں ایک دیا جل رہا تھا . وہ ایسی جگہ تھا جہاں سے وہ میرے اوپر لڑکے کے باپ کی پرچھائی ڈال رہا تھا' یعنی میں کچھ اندھیرے میں تھا . اکھاڑے کے اور لوگ مجھے ٹھیک ٹھیک نہ دیکھ سکتے تھے .

میرے پہنچنے کے دو منٹ بعد لڑکے کے باپ نے ایک بھوت بلایا . جیسے ہی لڑکے کے باپ نے سر ہلانا شروع کیا' میں نے چپکے سے کھپچی میں بندھی سوئی پیچھے سے لڑکے کے باپ کے بدن میں چبھا دی . کھپچی جھٹ نیچے چھپا لی . سر ہلنا بند ہوگیا . لڑکے کے باپ نے دائیں بائیں غصہ ہو کر دیکھا' پر کچھ نہ سمجھا' پھر بھوت بلایا گیا . وہ آیا' میں نے پھر سوئی چبھائی' وہ پھر بھاگ گیا . پھر اسی طرح دائیں بائیں نگاہ دوڑائی گئی' پھر بھی کوئی کچھ نہ سمجھا' آدھ گھنٹے کی کوشش کے بعد لڑکے کے باپ کو یہ کہنا پڑا کہ آج بھوت سر نہیں آئیگا .

دوسرے دن سارا بھید کھل گیا . اس دن کے بعد سے مجھے کبھی اکھاڑے میں نہیں شامل ہونے دیا گیا . شائد یہ بھی ایک کارن ہو کہ مجھے مندر میں اسوقت نہ آنے دیتے ہوں' جب کسی اور لڑکے کو وہاں آنے کی اجازت نہ تھی .

جب میں سب جگہ سے نراش ہوگیا تب اپنی ماں سے پوچھ بیٹھا' ماں' ہم بچوں کو مندر میں یہ لوگ کیوں نہیں آنے دیتے ؟ ماں بولی' مندر تو تم روز جاتے ہو' کوئی روکتا نہیں . کب کس نے تم کو روکا ؟ میں بولا' ہر سال بھادوں کی پوجا شروع ہونے سے پہلے دو تین دن دوپہر کو کچھ لوگ مندر میں دروازہ بند کر کے بیٹھ جاتے ہیں' ہم لڑکوں کو اندر نہیں آنے دیتے . دو ایک دن کی بات ہونے سے میں ہر سال تم سے پوچھنا بھول جاتا تھا' اس سال بھی کل ایسا ہی ہوا . اور آج ابھی میں مندر سے آ رہا ہوں' کوئی دروازہ نہیں کھولتا' کوئی کچھ بتاتا بھی نہیں' اماں' یہ بات کیا ہے ؟

اماں ہنس پڑی' بولی' اچھا یہ بات ہے ؟ بیٹا بات کچھ نہیں' لوگ دروازہ بند کر کے پوجا کے لئے مندر کی صفائی کرتے ہیں' اس لئے بچوں کو نہیں آنے دیتے .

…ं बाप, सत्य की क़द्र करने पर भी, अपने …च्चे से सत्य को न जाने क्यों छिपाये रखना चाहते …छिपाये रखते हैं. उनका छोटा बच्चा झूठे विचारों …रहा होता है, फँसने को होता है, या फँसने की …में होता है और वह देखते रहते हैं. इसे आप मेरा … समझिये कि मुझे ऐसी माँ मिली थी जो सत्य को उस वक़्त भी छिपा कर न रखना चाहती थी, जब …बरस का था, वह सत्य बात क्या थी उसे

…ों के महीनों में, पर्व शुरू होने से पहले, एक दो … होते थे, जब दोपहर के वक़्त छोटे बच्चों को …नहीं आने दिया जाता था, दो चार अधेड़ और मंदिर के अन्दर रहते थे. अन्दर से दरवाज़ा … लेते थे. तीन चार घंटे बराबर बच्चों के लिये आने की मनाही रहती थी. मैं बारह बरस का था, …र के लिहाज़ से काफ़ी समझदार था, मुझे भी नहीं आने दिया जाता था. यह रोक टोक मुझे बहुत … थी.

रोक टोक के बारे में मैं अपने और साथियों से … लेकिन वह कुछ न बता सकते. सोलह सतरह बरस … भी कुछ न बताते. या तो वह जानते न थे या … कर बात छिपाते थे. बड़े बूढ़ों से जब यह बात …, तब फटकार हाथ आई. वह लोग जो मन्दिर …हो कर काम करते थे, मेरे क़रीबी रिश्तेदार होते …प्यार करते थे, मुझे अच्छा लड़का समझते थे, पर यह न बताते थे कि वह किसलिये मन्दिर में बन्द नहीं बताते थे, इतना ही नहीं, नाराज़ होकर कह … “क्या पूछते हो ?” यह सुन कर मैं अपना सा …र रह जाता.

…ा तो बारह बरस का पर भूत प्रेत में बिलकुल … न करता था. मेरे माँ बाप को छोड़ कर सारा … भूत प्रेत का विश्वासी था. मुहल्ले के दो खाते …ाने भूत प्रेत बुलाने का काम करते थे. उन घरों में … एक घर में होली दिवाली को ज़रूर भूत बुलाये … इस काम के लिये जो सभा लगती थी उसको … कहा जाता था. ऐसे अखाड़ों में, जहां तक बने, …ो नहीं आने दिया जाता था. लेकिन अगर कोई …आ ही जाय तो उसे निकाला नहीं जाता था, उसको …ाई से भी वंचित नहीं रखा जाता था, जो अखाड़े के आने पर सभा में बांटी जाती थी.

… इस मिठाई का बहुत लालच रहता था. और … किसी तरह वहां पहुँच जाता था.

کچھ ماں باپ، ستیہ کی قدر کرنے پر بھی، اپنے چھوٹے بچے سے ستیہ کو نہ جانے کیوں چھپائے رکھنا چاہتے ہیں، یا چھپائے رکھتے ہیں۔ اُن کا چھوٹا بچہ جھوٹے وچاروں میں پھنس رہا ہوتا ہے، پھنسنے کو ہوتا ہے، یا پھنسنے کی امید میں ہوتا ہے اور وہ دیکھتے رہتے ہیں۔ اسے آپ میرا سوبھاگیہ سمجھئے کہ مجھے ایسی ماں ملی تھی جو ستیہ کو مجھ سے اُس وقت بھی چھپا کر نہ رکھنا چاہتی تھی، جب میں بارہ برس کا تھا، وہ ستیہ بات کیا تھی آیے سنئے۔

بہادر کے مہینوں میں، پرو شروع ہونے سے پہلے، ایک دو دن ایسے ہوتے تھے، جب دوپہر کے وقت چھوٹے بچوں کو مندر میں نہیں آنے دیا جاتا تھا، دو چار ادھیڑ اور بڑے بوڑھے مندر کے اندر رہتے تھے۔ اندر سے دروازہ بند کر لیتے تھے۔ تین چار گھنٹے برابر بچوں کے لئے اندر آنے کی مناہی رہتی تھی۔ میں بارہ برس کا تھا، پر عمر کے لحاظ سے کافی سمجھدار تھا، مجھے بھی اندر نہیں آنے دیا جاتا تھا۔ یہ روک ٹوک مجھے بہت اکھرتی تھی۔

اس روک ٹوک کے بارے میں میں اپنے اور ساتھیوں سے پوچھتا، لیکن وہ کچھ نہ بتا سکتے۔ سولہ سترہ برس کے لڑکے بھی کچھ نہ بتاتے۔ یا تو وہ جانتے نہ تھے یا جان بوجھ کر بات چھپاتے تھے۔ بڑے بوڑھوں سے جب یہ بات پوچھی گئی، تب پھٹکار ہاتھ آئی۔ وہ لوگ جو مندر میں بند ہو کر کام کرتے تھے، میرے قریبی رشتہ دار ہوتے تھے۔ مجھے پیار کرتے تھے، مجھے اچھا لڑکا سمجھتے تھے، پر وہ بھی یہ نہ بتاتے تھے کہ وہ کس لئے مندر میں بند رہتے ہیں۔ نہیں بتاتے تھے، اتنا ہی نہیں، ناراض ہو کر کہہ بیٹھتے تھے ”کیا پوچھتے ہو؟“ یہ سن کر میں اپنا سا منہ لے کر رہ جاتا۔

میں تھا تو بارہ برس کا پر بھوت پریت میں بالکل وشواس نہ کرتا تھا۔ میرے ماں باپ کو چھوڑ کر سارا محلہ بھوت پریت کا وشواسی تھا۔ محلے کے دو کھاتے پیتے گھرانے بھوت پریت بلانے کا کام کرتے تھے۔ اُن گھروں میں سے کسی ایک گھر میں ہولی دیوالی کو ضرور بھوت بلائے جاتے تھے۔ اس کام کے لئے جو سبھا لگتی تھی اس کو اکھاڑا کہا جاتا تھا۔ ایسے اکھاڑوں میں، جہاں تک بنے، بچوں کو نہیں آنے دیا جاتا تھا۔ لیکن اگر کوئی بچہ آ ہی جائے تو اسے نکالا نہیں جاتا تھا، اس کو اس مٹھائی سے بھی ونچت نہیں رکھا جاتا تھا، جو اکھاڑے میں بھوتوں کے آنے پر سبھا میں بانٹی جاتی تھی۔

مجھے اس مٹھائی کا بہت لالچ رہتا تھا۔ اور کسی نہ کسی طرح وہاں پہنچ جاتا تھا۔

सत्य की सजावट क्यों ?

सत्य को सजाने की जरूरत नहीं. सजाने से सत्य की सुन्दरता कम हो जाती है. सत्य से सुन्दर दुनिया में दूसरी चीज नहीं. सत्यम्, शिवम् सुँदरम् का यह अर्थ नहीं कि वह तीन अलग अलग चीजें हैं. इसका अर्थ है, सत्य, शिव और सुन्दर है. सत्य को ईश्वर कहा जाता है, तब वह शिव सुन्दर नहीं होगा तो और कौन होगा ?

झूट न सुन्दर होता है, न हो सकता है. जिन किताबों में काम की चीज कम रहती है, उनकी दूकानदार, जिल्द बड़ी खूबसूरत बनाते हैं. उस जिल्द पर सोने से बेल बूटे निकालते हैं. झूट बाजार में सजधज के बिना नहीं आ सकता.

झूट को यश की चाह होती है. उसको वर्दी पहन कर, पगड़ी बांधकर सामने आना पड़ता है. झूट ऐसा न करे तो वह दुनिया में जगह नहीं बना सकता. झूट के सजधज कर आने की वजह कुछ लोग सत्य को सजाने लगे हैं. इससे सत्य को, फ़ायदा न होकर, नुक़सान हुआ है. सजधज की वजह सत्य को अब कोई यों ही सत्य नहीं मान लेता, कसौटी पर कस कर देखता है. जिसका मतलब है, सत्य सजावट की वजह से आदमी की पहली निगाह में झूट मालूम पड़ता है. सजने की झूट को जरूरत है. सजे हुए सत्य को परीक्षा की आग में हो कर निकलना ही पड़ेगा. यह ठीक है, सत्य परीक्षा में खरा उतरता है, पर सत्य को परीक्षा की जरूरत पड़े, यह सत्य को शोभा नहीं देता.

सजावट ने, जिसकी झूट के लिये जरूरत थी, सत्य की कम क़द्री कर दी, उसको झूट की पंगत में बिठा दिया.

दुनिया में ईमानदार, विचारवान कम हैं, और बुद्धिमान भी कम पाये जाते हैं. आज दुनिया का काम बहुमत से चल रहा है, तब सत्य को जगह कहाँ ? यों सत्य को सजा कर लाने का रिवाज चल पड़ा. इस रिवाज से सत्य की भलाई नहीं हुई. झूट की भलाई जरूर हुई. सत्य दब गया, झूट सारी दुनिया में फैल गया. इस झूट से भरी दुनिया में अगर बहुमत की पर्वाह की जावे तो सत्य कभी हाथ नहीं लग सकता, इसलिये ईमानदार, समझदार, बुद्धिमान बहुमत की पर्वाह सत्य के मामले में नहीं करते. वह सत्य को कहे जाते हैं, दुनिया के सामने बराबर रखते हैं. भले ही सत्य बोलने, सत्य विचार फैलाने, या सत्य समझाने से उन पर कितनी ही आफ़त क्यों न आये ?

ستیہ کی سجاوٹ کیوں؟

ستیہ کو سجانے کی ضرورت نہیں ۔ سجانے سے ستیہ ی سندرتا کم ہوجاتی ہے ۔ ستیہ سے سندر دنیا میں سری چیز نہیں ۔ ستیم' شوم سندرم کا یہ ارتھ نہیں کہ تین الگ الگ چیزیں ہیں ۔ اس کا ارتھ ہے' ستیہ' یو اور سندر ہے ۔ ستیہ کو ایشور کہا جاتا ہے' تب وہ شیو ندر نہیں ہوگا تو اور کون ہوگا ؟

جھوٹ نہ سندر ہوتا ہے' نہ ہوسکتا ہے جن کتابوں میں کام ی چیز کم رہتی ہے' ان کی دوکان دار' جلد بڑی خوبصورت نماتے ہیں ۔ اس جلد پر سونے سے بیل بوٹے نکالتے ہیں ۔ جھوٹ بازار میں سج دھج کے بنا نہیں آ سکتا ۔

جھوٹ کو یش کی چاہ ہوتی ہے ۔ اس کو وردی پہنکر' گڑی باندھکر سامنے آنا پڑتا ہے ۔ جھوٹ ایسا نہ کرے تو ہ دنیا میں جگہ نہیں بنا سکتا ۔ جھوٹ کے سج دھج ر آنے کی وجہ کچھ لوگ ستیہ کو سجانے لگے ہیں ۔ اس ے ستیہ کو' فائدہ نہ ہو کر' نقصان ہوا ہے ۔ سج دھج ی وجہ ستیہ کو اب کوئی یونہی ستیہ نہیں مان لیتا' سوٹی پر کس کر دیکھتا ہے ۔ جس کا مطلب ہے' ستیہ سجاوٹ کی وجہ سے آدمی کی پہلی نگاہ میں جھوٹ معلوم پڑتا ہے ۔ سجنے کی جھوٹ کو ضرورت ہے ۔ سجے ہوئے ستیہ کو پریکشا کی آگ میں ہو کر نکلنا ہی پڑے گا ۔ یہ ٹھیک ہے' ستیہ پریکشا میں کھرا اترتا ہے' پر ستیہ کو پریکشا کی ضرورت پڑے' یہ ستیہ کو شوبھا نہیں دیتا ۔

سجاوٹ نے' جس کی جھوٹ کے لئے ضرورت تھی' ستیہ کی کم قدری کر دی' اس کو جھوٹ کی پنگت میں ٹھا دیا ۔

دنیا میں ایماندار' وچاروان کم ہیں' اور بدھی مان ی کم پائے جاتے ہیں ۔ آج دنیا کا کام بہومت سے چل ہا ہے' تب ستیہ کو جگہ کہاں ؟ یوں ستیہ کو سجا کر نے کا رواج چل پڑا ۔ اس رواج سے ستیہ کی بھلائی نہیں ہوئی ۔ جھوٹ کی بھلائی ضرور ہوئی ۔ ستیہ دب گیا' جھوٹ ساری دنیا میں پھیل گیا ۔ اس جھوٹ سے بھری نیا میں اگر بہومت کی پرواہ کی جاوے تو ستیہ کبھی اتھ نہیں لگ سکتا' اس لئے ایماندار' سمجھدار' بدھی ان بہومت کی پرواہ ستیہ کے معاملے میں نہیں کرتے ۔ ستیہ کو کہے جاتے ہیں' دنیا کے سامنے برابر رکھتے ہیں ۔ بھلے ہی ستیہ بولنے' ستیہ وچار پھیلانے' یا ستیہ سمجھانے سے ان پر کتنی ہی آفت کیوں نہ آئے ؟

…हिन्द

نیا ہند

मई सन् '52 नम्बर 5

نمبر 5 مئی' سن '52 جلد 12

'' आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
। हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ھندستانی بولی'
'نیا ھند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی .

"आकाश रंग"

(स्वामी मारहरवी)

त्म, परम आत्म बदले रिशी, मुनी, अवतारी बदले
ता, घर वाले बदले देश के सब नर नारी बदले
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

ती, मत वाले बदले मद बदला मद शाले बदले
ता, हरि वाले बदले दुख सुख न्यारे न्यारे बदले
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

न संतोश नहीं है दीप बुझे कुछ होश नहीं है
को दोस नहीं है फूल भी अब निर्दोश नहीं है
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

धनवान से उलझे निर्बल हैं बलवान से उलझे
नादान से उलझे मूरख हैं भगवान से उलझे
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

र और ठाकुर द्वारे मस्जिद, गिरजा और गुरुद्वारे
याग और गुरुकुलद्वारे शांति नहीं अब यह हरिद्वारे
क्या क्या रंग आकाश ने बदले ,
सारे ठाट पुराने बदले.

दले सांझ सकारे गरहन में डूबे सूर्य हमारे
तुमने काज सुधारे दिये तले यह घुप अंधियारे
क्या क्या रंग आकाश ने बदले
सारे ठाठ पुराने बदले.

ी ! सत नाम भले जी स्वार्थ हों वह काम भले जी
विराजे श्याम भले जी राम भले भी ! राम भले जी
क्या क्या रंग आकाश ने बदले

"آکاش رنگ"

(سوامی مارھروی)

دھرم آتم' پرم آتم بدلے رشی' منی' اوتاری بدلے
گھر بدلا' گھر والے بدلے دیش کے سب نر ناری بدلے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے .

مت بدلی' متوالے بدلے مد بدلا' مد شالے بدلے
ھری بدلا' ھری والے بدلے دکھ سکھ نیارے نیارے بدلے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے .

کاھومن سنتوش نہیں ہے دیپ بجھے کچھ ھوش نہیں ہے
کانٹوں ھی کو دوش نہیں ہے پھول بھی اب نردوش نہیں ہے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے .

نردھن ھیں دھنوان سے اُلجھے نربل ھیں بلوان سے اُلجھے
چاتر ھیں نادان سے اُلجھے مورکھ ھیں بھگوان سے اُلجھے
کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے .

مٹھ' مندر اور ٹھاکر دوارے مسجد' گرجا اور گردوارے
کاشی' پریاگ اور گروکل دوارے شانت نہیں اب یہ ھردوارے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے .

دھندلے دھندلے سانجھ سکارے گرھن میں ڈوبے سوریہ ھمارے
بھلے جی تم نے کاج سدھارے دیئے تلے یہ گھپ اندھیارے
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
سارے ٹھاٹھ پرانے بدلے .

سوامی جی! ست نام بھلے جی سوارتھ ھیں وہ کام بھلے جی
من میں براجے شیام بھلے جی رام بھلے بھی! رام بھلے جی
کیا کیا رنگ آکاش نے بدلے
[illegible]

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

मई 1952

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچہ

مئی 1952

सर्वोदय सम्मेलन—सुन्दरलाल, नैनीताल से राजधानी हटाइये; विदेशी व्योपारियों का नया जाल; डाक्टरों का घमंड; ग़रीब भारत और ऊंची तनख़ाहें; कश्मीर का नया क़दम—सुरेश रामभाई.

سرودے سمیلن—سندرلال؛ نینی تال سے راجدھانی ہٹائیے؛ ودیشی بیوپاریوں کا نیا جال؛ ڈاکٹروں کا گھمنڈ؛ غریب بھارت اور اونچی تنخواہیں؛ کشمیر کا نیا قدم—سریش رام بھائی ۔

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے ۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

या हिन्द — نیا ہند

के ख़ास लेख

اِس نمبر کے خاص لیکھ

गद्य—

कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद — ستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

मई 1952 مئی

Registered No. A-- 210.

चीन की आवाज़

(पंडित सुन्दरलाल की कुछ स्पीचों व बयानों का संग्रह)

पहली अक्तूबर 1951 को हमारे पड़ोसी नये चीन ने अपने नये लोकराज की दूसरी सालगिरह मनाई थी. ख़ुशी के इस मौक़े पर चीन की कई संस्थाओं की दावत पर हिन्दुस्तान से एक ग़ैर सरकारी मिशन पंडित सुन्दरलाल की सदारत में गया था जिसने वहां जाकर हिन्दुस्तान की आम जनता की तरफ़ से शिरकत की. पंडित जी दिल्ली से 20 सितम्बर 1951 को रवाना हुए और चालीस दिन चीन में रह कर 2 नवम्बर को वापस आये.

चीन में इस मिशन का बहुत शानदार और ज़ोरदार स्वागत किया गया, ऐसे लगा मानो बरसों के बिछुड़े दो सगे भाई मिल रहे हैं. मिशन को भी ऐसा महसूस हुआ कि एक क़ौम की क़ौम जाग कर उठ खड़ी हुई है, उसमें एक अजीब-ग़रीब जोश है, चेहरे पर दमक है और बदन में फुर्ती. पिछले दो बरस में चीन के रहने वालों ने जो किया वह एक लासानी और नुमायाँ बढ़ाव है. उन्होंने क्या किया—इसकी झलक आप को इस छोटी सी किताब में मिलेगी.

चीन में जगह जगह पंडित जी के जो बयान या स्पीचें हुईं और फिर हिन्दुस्तान में लौटने पर उन्होंने प्रेस, रेडियो और अख़बारों को जो बयान दिये उनमें से ख़ास ख़ास इस किताब में जमा कर दिये गए हैं.

यह वह किताब है जिसे हर मर्द-औरत और बच्चा शौक़ से पढ़ेगा और सचमुच फ़ायदा उठायेगा.

बढ़िया काग़ज़ पर छपी, चालीस सफ़ों से ऊपर की किताब, दाम सिर्फ़ चार आना.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

چین کی آواز

(پنڈت سندر لال کی کچھ اسپیچوں و بیانوں کا سنگرہ)

پہلی اکتوبر 1951 کو ہمارے پڑوسی نئے چین نے اپنے نئے لوک راج کی دوسری سالگرہ منائی تھی۔ خوشی کے اس موقعے پر چین کی کئی سنستھاؤں کی دعوت پر ہندستان سے ایک غیر سرکاری مشن پنڈت سندر لال کی صدارت میں گیا تھا جس نے وہاں جا کر ہندستان کی عام جنتا کی طرف سے شرکت کی۔ پنڈت جی دلی سے 20 ستمبر 1951 کو روانہ ہوئے اور چالیس دن چین میں رہ کر 2 نومبر کو واپس آئے۔

چین میں اس مشن کا بہت شاندار اور زوردار سواگت کیا گیا، ایسے لگا مانو برسوں کے بچھڑے دو سگے بھائی مل رہے ہوں۔ مشن کو بھی ایسا محسوس ہوا کہ ایک قوم کی قوم جاگ کر اٹھ کھڑی ہوئی ہے، اس میں ایک عجیب غریب جوش ہے، چہرے پر دمک ہے اور بدن میں پھرتی۔ پچھلے دو برس میں چین کے رہنے والوں نے جو کیا وہ ایک لاثانی اور زبردست بڑھاؤ ہے۔ انہوں نے کیا کیا—اسکی جھلک آپ کو اس چھوٹی سی کتاب میں ملے گی۔

چین میں جگہ جگہ پنڈت جی کے جو بیان یا اسپیچیں ہوئیں اور پھر ہندستان میں لوٹنے پر انہوں نے پریس، ریڈیو اور اخباروں کو جو بیان دیئے ان میں سے خاص خاص اس کتاب میں جمع کر دیئے گئے ہیں۔

یہ وہ کتاب ہے جسے ہر مرد عورت اور بچہ شوق سے پڑھے گا اور سچ مچ فائدہ اٹھائے گا۔

بڑھیا کاغذ پر چھپی، چالیس صفحوں سے اوپر کی کتاب، دام صرف چار آنہ۔

ملنے کا پتہ—
مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145 Mutthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों .

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना .

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना .

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा. वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल .

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिंदुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद .

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेते पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे .

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہیں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:०:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

115 مٹھی گنج، الہ آباد ۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے ۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے ۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से जियादा दाम की किताबें खरीदने वालों को और बुकसेलरों को खास रिआयत दी जायगी. पूरी जानकारी के लिये लिखिये.

डाक या रेल खर्च हर हालत में गाहक के जिम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंग्रेजी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेजी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना जरूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—श्री सुरेश रामभाई.

नामी गांधी वादी डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा की इस किताब के अंगरेजी में कई एडीशन हो चुके हैं. इस में हजरत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि इंजील की पवित्र तालीम अपने सही रूप में पूरे तौर पर आपके सामने आ जायगी.

इस किताब के बारे में महात्मा गांधी का कहना है—

"हर आस्तिक चाहे वह ईसाई हो या और किसी धरम का मानने वाला हो मेरी सिफ़ारश है कि इसे पढ़े........."

हिन्दी में अपने ढंग की बे मिसाल किताब है. किताब के आखीर में "ईसा के जीवन के कुछ किस्से" देकर अनुवादक ने इस की शोभा और भी बढ़ा दी है.

खुशनुमा जिल्द, बढ़िया कागज, सवा सौ पन्नों की किताब का दाम सिर्फ एक रुपया.

मिलने का पता—

هندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انوودت۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کمارپا.

انوادک—شری سریش رامبھائی.

نامی گاندھی وادی ڈاکٹر جے. سی. کمارپا کی اس کتاب کے انگریزی میں کئی ایڈیشن ہوچکے ہیں۔ اس میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ انجیل کی پوتر تعلیم اپنے صحیح روپ میں پورے طور پر آپ کے سامنے آجائے گی۔

اس کتاب کے بارے میں مہاتما گاندھی کا کہنا ہے—

"ہر آستک چاہے وہ عیسائی ہو یا اور کسی دھرم کا ماننے والا ہو میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے......"

ہندی میں اپنے ڈھنگ کی بے مثال کتاب ہے۔ کتاب کے آخیر میں "عیسیٰ کے جیون کے کچھ قصے" دیکر انوادک نے اس کی شوبھا اور بھی بڑھا دی ہے۔

خوشنما جلد، بڑھیا کاغذ، سوا سو پنوں کی کتاب کا صرف ایک روپیہ۔

ملنے کا

…मे का वचन न दे. यह वह कम से कम चीज़ है जो …री राय में भारत सरकार और दुनिया की सब सभ्य …ारों को करनी चाहिये.

…मारी निगाह में इस समय न दुनिया का राजकाज …ैर न कोई राज काजी दल. हमारी निगाह सिर्फ़ …न, इनसानी क़ौम, इनसानी कलचर और इनसान …ज़ारों बरस की कमाई पर है.

एक बात हम अपने अमरीका के भाइयों और …रीकी सरकार से और कर लेना चाहते हैं. ज़ाहिर है …री बात का क्या असर होगा. हमारी बात किसी के … तक पहुंचेगी भी या नहीं, यह भी हम नहीं जानते. … केवल अपना दिल हलका करना है और अपना फ़र्ज़ … करना है. हम ठंडे दिल से पूछना चाहते हैं कि …रीकी सरकार के नेता इतने अन्धे क्यों हो रहे हैं. …र किसी ज़माने की भी इस तरह की ताक़तों या चालों …निया क़ाबू में आ सकती तो न हिन्दुस्तान से अंगरेज़ी … गया होता, न चीन से मंचू हकूमत या चांग काई … की हकूमत मिटी होती, न रूस से ज़ार की सलतनत …होती और न दुनिया से हिटलर और मुसोलिनी मिटे … रेत में मुँह छिपा लेने से दुनिया के बढ़ते हुए तूफ़ान नहीं जाते और न राजकाजी और अख़लाक़ी लहरें अपना …म करने से रुक सकती हैं. चीन आज़ाद रहेगा, कोरिया आज़ाद होगा, एशिया फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो … है और खड़ा होगा, दुनिया की जनता जाग रही है …र जागेगी. इन बढ़ती हुई ताक़तों के सामने एटम बम या हाइड्रोजन बम, गैस बम हो या बीमारी बम बेकार …बित होंगे. दुनिया की जनता की आज़ादी और बहबूदी …इस बाग़ में नई और लासानी बहार आवेगी. फिर हम …ने दिलों को मैला क्यों करें? अपने ख़िलाफ़ द्वेश और …बेपन के बीज चारों तरफ़ क्यों बिखेरें और इस बाग़ … रहे सहे थोड़े से दरख़्तों को क्यों झुलसावें? आख़िर हम दुनिया का अमन चाहते हुए केवल यही दुआ कर …सते हैं—सब को सम्मति दे भगवान.

10. 4. '52 —सुन्दरलाल

نہ کرنے کا وچن نہ دے ۔ یہ وہ کم سے کم چیز ہے جو ہماری رائے میں بھارت سرکار اور دنیا کی سب سبھیہ سرکاروں کو کرنی چاہئے ۔

ہماری نگاہ میں اِس سمے نہ دنیا کا راج کاج ہے اور نہ کوئی راج کاجی دل ۔ ہماری نگاہ صرف انسان، انسانی قوم، انسانی کلچر اور انسان کی ہزاروں برس کی کمائی پر ہے ۔

ایک بات ہم اپنے امریکہ کے بھائیوں اور امریکی سرکار سے اور کر لینا چاہتے ہیں ۔ ظاہر ہے ہماری بات کا کیا اثر ہوگا ۔ ہماری بات کسی کے کان تک پہونچیگی بھی یا نہیں، یہ بھی ہم نہیں جانتے۔ ہمیں کیول اپنا دل ہلکا کرنا ہے اور اپنا فرض ادا کرنا ہے ۔ ہم ٹھنڈے دل سے پوچھنا چاہتے ہیں کہ امریکی سرکار کے نیتا اتنے اندھے کیوں ہو رہے ہیں ۔ اگر کسی زمانے کی بھی اس طرح کی طاقتوں یا چالوں سے دنیا قابو میں آ سکتی تو نہ ہندستان سے انگریزی راج گیا ہوتا، نہ چین سے منچو حکومت یا چانگ کائی شیک کی حکومت مٹی ہوتی، نہ روس سے زار کی سلطنت گئی ہوتی اور نہ دنیا سے ہٹلر اور مسولنی مٹے ہوتے ۔ ریت میں منہ چھپالینے سے دنیا کے بڑھتے ہوئے طوفان مٹ نہیں جاتے اور نہ راج کاجی اور اخلاقی لہریں اپنا کام کرنے سے رک سکتی ہیں ۔ چین آزاد رہیگا، کوریا بھی آزاد ہوگا، ایشیا پھر سے اپنے پیروں پر کھڑا ہو رہا ہے اور کھڑا ہوگا، دنیا کی جنتا جاگ رہی ہے اور جاگیگی ۔ ان بڑھتی ہوئی طاقتوں کے سامنے ایٹم بم ہو یا ہائیڈروجن بم، گیس بم ہو یا بیماری بم بیکار ثابت ہونگے ۔ دنیا کی جنتا کی آزادی اور بہبودی کے اِس باغ میں نئی اور لاثانی بہار آئیگی ۔ پھر ہم اپنے دلوں کو میلا کیوں کریں؟ اپنے خلاف دویش اور کروپن کے بیج چاروں طرف کیوں بکھیریں اور اس باغ کے رہے سہے تھوڑے سے درختوں کو کیوں جھلسائیں؟ آخیر میں ہم دنیا کا امن چاہتے ہوئے کیول یہی دعا کر سکتے ہیں— سب کو سمتی دے بھگوان ۔

—سندر لال 10-4-'52

यू. एन. के सेक्रेटरी जनरल मिस्टर ट्रिग्वे लाई ने उत्तर कोरिया और चीन की सरकारों को यह भी लिखा है कि आप कहिये तो हम रोगियों के इलाज के लिये डाक्टर भेज सकते हैं !

एक नई खबर अमरीका से यह भी आई है कि वहां के इस तरह के बम तैयार करने वाले महकमे ने अपने काम को बढ़ाने के लिये सरकार से करोड़ों डालर और मांगे हैं.

ज़ाहिर है चीन और एशिया की इतनी ज़बरदस्त आबादी को क़ाबू में करने का अमरीकी सरकार के पास अब कोई और तरीक़ा नहीं रह गया है.

हमारा सबका फ़र्ज़.

समझ में नहीं आता कि इन खबरों पर हम क्या कहें. हम हैरान हैं कि अपने को मोहज़्ज़ब और सभ्य कहने वाला इनसान किधर जा रहा है. हमारी सारी इनसानी तहज़ीब, हमारी इनसानियत और हमारी हज़ारों बरस की मानव संस्कृति का क्या होने वाला है.

क्या अभी भी कोई सचमुच ऐसे आदमी हैं जिन्हें इस बात में कुछ शक रह गया हो कि अमरीकी सरकार कोरिया और चीन में निहत्थी बेगुनाह आबादियों के ऊपर इस तरह के बम फेंक रही है और दुनिया के करोड़ों इनसानों को जिस तरह भी हो मिटा डालने या अपने क़ाबू में करने के लिये कमर कसे हुए है.

हम सोच नहीं सकते कि इससे बढ़कर पाप दुनिया में और क्या हो सकता है और इस पाप का करने वाला अपने को इनसान कैसे कह सकता है.

हमें यह फ़िकरे लिखते हुए कुछ अच्छा नहीं लग रहा है. हम मजबूर हैं और हैरान हैं कि दुनिया के अख़बार और दुनिया की सरकारें इस मामले में इतनी चुप क्यों हैं ?

हम बड़े दर्द और दुख के साथ यह पूछने पर भी मजबूर हैं कि हमारी अपनी भारत की सरकार इस मामले में चुप क्यों है ? दुनिया के और सभ्य देशों की सरकारें चुप क्यों हैं ? हमारी अपनी सरकार ने इससे पहले इससे कम अहम बातों पर सच्ची हिम्मत दिखलाई है. इस समय कम से कम चीज़ जो वह कर सकती है उसे करनी चाहिये और करना उसका इनसानी फ़र्ज़ है. वह यह है कि अमरीका के साथ अपने राजकाजी सम्बन्ध को तोड़ ले, अपने राजदूत अमरीका से वापिस बुला ले और तब तक दोबारा सम्बन्ध क़ायम न करे जब तक अमरीका की सरकार अपनी ग़लती को ग़लती मान कर उस पर पछतावा न करे और आगे के लिये ऐसी नापाक हरकतें

یو. این. او. کے سکریٹری جنرل مسٹر ٹرگوے لئی نے اُتر کوریا اور چین کی سرکاروں کو یہ بھی لکھا ہے کہ آپ کہئے تو ہم روگیوں کے علاج کے لئے ڈاکٹر بھیج سکتے ہیں !

ایک نئی خبر امریکہ سے یہ بھی آئی ہے کہ وہاں کے اِسطرح کے بم تیار کرنے والے محکمے نے اپنے کام کو بڑھانے کے لئے سرکار سے کروڑوں ڈالر اور مانگے ہیں .

ظاہر ہے چین اور ایشیا کی اتنی زبردست آبادی کو قابو میں کرنے کا امریکی سرکار کے پاس اب کوئی اور طریقہ نہیں رہ گیا ہے .

ہمارا سب کا فرض .

سمجھ میں نہیں آتا کہ ان خبروں پر ہم کیا کہیں . ہم حیران ہیں کہ اپنے کو مہذب اور سبھیہ کہنے والا انسان کدھر جا رہا ہے . ہماری ساری انسانی تہذیب' ہماری اِنسانیت اور ہماری ہزاروں برس کی مانو سنسکرتی کا کیا ہونے والا ہے .

کیا ابھی بھی کوئی سچ مچ ایسے آدمی ہیں جنہیں اس بات میں کچھ شک رہ گیا ہو کہ امریکی سرکار کوریا اور چین میں نہتھی بے گناہ آبادیوں کے اوپر اس طرح کے بم پھینک رہی ہے اور دنیا کے کروڑوں انسانوں کو جس طرح بھی ہو مٹا ڈالنے یا اپنے قابو میں کرنے کے لئے کمر کسے ہوئے ہے .

ہم سوچ نہیں سکتے کہ اس سے بڑھکر پاپ دنیا میں اور کیا ہو سکتا ہے اور اس پاپ کا کرنے والا اپنے کو انسان کیسے کہہ سکتا ہے .

ہمیں یہ فقرے لکھتے ہوئے کچھ اچھا نہیں لگ رہا ہے . ہم مجبور ہیں اور حیران ہیں کہ دنیا کے اخبار اور دنیا کی سرکاریں اِس معاملے میں اتنی چپ کیوں ہیں ؟

ہم بڑے درد اور دکھ کے ساتھ یہ پوچھنے پر بھی مجبور ہیں کہ ہماری اپنی بھارت کی سرکار اس معاملے میں چپ کیوں ہے ؟ دنیا کے اور سبھیہ دیشوں کی سرکاریں چپ کیوں ہیں؟ ہماری اپنی سرکار نے اِس سے پہلے اِس سے کم اہم باتوں پر سچی ہمت دکھلائی ہے . اس سمے کم سے کم چیز جو وہ کرسکتی ہے اُسے کرنی چاہئے' اور کرنا اُسکا انسانی فرض ہے . وہ یہ ہے کہ امریکہ کے ساتھ اپنے راج کاجی سمبندھ کو توڑ لے' اپنے راج دوت امریکہ سے واپس بلا لے اور تب تک دوبارہ سمبندھ قائم نہ کرے جب تک امریکہ کی سرکار اپنی غلطی کو غلطی مان کر اُس پر پچھتاوا نہ کرے اور آگے کے لئے ایسی ناپاک حرکتیں

:—"असली जड़ की बात यह है कि हम जितने ज़्यादा से ज़्यादा कोरियनों और चीनियों को मार सकें मार डालने चाहिएं."

अप्रैल सन् 1951 के अमरीकी रिसाले 'साइन्स डाइजेस्ट' के एक लेख "एपीडेमिक्स मेड टू आर्डर" 'जब चाहें बबा फैला दो' में लेखक ने लिखा था कि—"अगर हम यह याद कर लें कि पहली सारी बड़ी जंग में जितने आदमी मरे उससे ज़ियादा सन् 1918 के इनफ्लोएन्ज़ा से मरे तो हमें साफ़ दिखाई दे सकता है कि जंग में बीमारी के जर्म्स के हथियारों से कितना बड़ा काम हो सकता है."

4 जुलाई सन 51 को अमरीका के दो बड़े साइन्सदानों ने घमंड के साथ कहा था कि अमरीका की मेरी लैंड रियासत के मुक़ाम केम्प डेट्रिक में हथियार बंद फ़ौजों के पहरे में अमरीकी सरकार के हुक्म से इस तरह के बीमारियों के बम बनाने का काम ज़ोरों से जारी है. आज भी सन 1952 में मेरी लैंड का यह कारख़ाना पहले से कहीं ज़ियादा ज़ोर के साथ काम कर रहा है.

यह भी बार बार कहा गया कि इस तरह के हथियार कोरिया में काम में लाये जा सकते हैं. जिनकी बदौलत अमरीका को बड़ी बड़ी फ़ौजें मैदान में भेजने की ज़रूरत न होगी. यह भी कहा गया था कि ख़ास कर कोरिया जैसे मैदान में एटम बम के मुक़ाबले में यह दूसरे बम ज़्यादा कारगर होंगे. अमरीका ही की तरफ़ से बताया गया है कि जो बीमारियां इन बमों से पैदा होती और फैलती हैं वह ख़ूब दूर तक और देर तक बढ़ती और फैली रहती हैं. जिससे कोई यह भी नहीं कह सकता कि बीमारी हमारे बम से फैली या क़ुदरती तौर पर.

जून सन् 1943 में प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट ने एक बयान में कहा था :—

"मैं साफ़ साफ़ एलान करता हूं कि किसी तरह की किसी हालत में भी हम इस हथियार को तब तक इस्तेमाल नहीं करेंगे जब तक दुश्मन उसे इस्तेमाल न कर ले."

अक्तूबर सन 51 में न्यूयार्क के एक अख़बार में यह साफ़ लिखा गया कि प्रेसीडेन्ट रूज़वेल्ट की सन 43 की बात अब आठ बरस के बाद अमल के क़ाबिल नहीं रह गई है वग़ैरा वग़ैरा.

5 अप्रैल सन 1952 को यह ख़बर भी दुनिया के अख़बारों में छप चुकी है कि इस तरह की बबायें चीन में ज़ोरों के साथ फैल रही हैं. पचास हज़ार से ऊपर मर चुके चार लाख से ऊपर बीमार हो चुके हैं और सारे चीन का काफ़ी हिस्सा इन बबाओं के असर में आ चुका है. यह ख़बर यू. एन. ओ. के ज़रिये से दुनिया को दी गई है.

تھا ہے—" اصلی جڑ کی بات یہ ہے کہ ہم جتنے زیادہ سے زیادہ کوریئنوں اور چینیوں کو مار سکیں ہمیں مار ڈالنے چاہئیں."

اپریل سن 1951 کے امریکی رسالے 'سائنس ڈائجسٹ' کے ایک لیکھ " ایپی ڈیمکس میڈ ٹو آرڈر " ' جب چاہیں وبا پھیلا لو' میں لیکھک نے لکھا تھا کہ—" اگر ہم یہ یاد کر لیں کہ پہلی ساری بڑی جنگ میں جتنے آدمی مرے اس سے زیادہ سن 1918 کے انفلوئنزا سے مرے تو ہمیں صاف دکھائی دے سکتا ہے کہ جنگ میں بیماری کے جرمس کے ہتھیاروں سے کتنا بڑا کام ہو سکتا ہے ."

4 جولائی سن 51 کو امریکہ کے دو بڑے سائنسدانوں نے گھمنڈ کے ساتھ—کہا تھا کہ امریکہ کی میری لینڈ ریاست کے مقام کیمپ ڈیٹرک میں ہتھیار بند فوجوں کے پہرے میں امریکی سرکار کے حکم سے اس طرح بیماریوں کے بم بنانے کا کام زوروں سے جاری ہے . آج بھی سن 1952 میں میری لینڈ کا یہ کارخانہ پہلے سے بھی کہیں زیادہ زور کے ساتھ کام کر رہا ہے .

یہ بھی بار بار کہا گیا کہ اس طرح کے ہتھیار کوریا میں کام میں لائے جا سکتے ہیں . جن کی بدولت امریکہ کو بڑی بڑی فوجیں میدان میں بھیجنے کی ضرورت نہ ہوگی . یہ بھی کہا گیا تھا کہ خاص کر کوریا جیسے میدان میں ایٹم بم کے مقابلے میں یہ دوسرے بم زیادہ کارگر ہونگے . امریکہ ہی کی طرف سے بتایا گیا ہے کہ جو بیماریاں ان بموں سے پیدا ہوتی اور پھیلتی ہیں وہ خوب دور تک اور دیر تک بڑھتی اور پھیلتی رہتی ہیں . جس سے کوئی یہ بھی نہیں کہ سکتا کہ بیماری ہمارے بم سے پھیلی یا قدرتی طور پر .

جون سن 1943 میں پریسیڈنٹ روزویلٹ نے ایک بیان میں کہا تھا :—

" میں صاف صاف اعلان کرتا ہوں کہ کسی طرح کی کسی حالت میں بھی ہم اس ہتھیار کو تب تک استعمال نہیں کرینگے جب تک دشمن اسے پہلے استعمال نہ کر لے ."

اکتوبر سن 51 میں نیویارک کے اخبار میں یہ صاف نکل گیا کہ پریسیڈنٹ روزویلٹ کی سن 43 کی وہ بات اب آٹھ برس کے بعد عمل کے قابل نہیں رہ گئی ہے وغیرہ وغیرہ .

5 اپریل سن 1952 کو وہ خبر بھی دنیا کے اخباروں میں چھپ چکی ہے کہ اس طرح کی وبائیں چین میں زوروں کے ساتھ پھیل رہی ہیں . پچاس ہزار سے اوپر مر چکے ہیں چار لاکھ سے اوپر بیمار ہو چکے ہیں اور سارے چین کا معقول حصہ ان وباؤں کے اثر میں آ چکا ہے . یہ خبر یو . این . او . کے ذریعہ سے دنیا کو دی گئی ہے .

क़बर भी ज़िन्दा रहते और काम करते हैं. धूप के अन्दर वह टिड्डी दलों की तरह चलते दिखाई देते हैं. इनमें कुछ कीड़े ऐसे हैं जो सत्तर सत्तर बरस के बूढ़ों ने यह कहा कि हम ने इस तरह के कीड़े अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखे. अख़बारों में इनके फ़ोटो भी छपे हैं.

जून सन् 1944 से अब तक के अमरीकी अख़बारों में इस तरह के काफ़ी ब्यान मिलते हैं जिनसे साफ़ पता चलता है कि अमरीका की सरकार कम से कम उसी वक़्त से इसी तरह के बमों की तैयारी में लगी हुई थी. अमरीकी अफ़सरों ने इसका एक फ़ायदा यह भी बताया है कि इससे आदमी मर जाते हैं लेकिन कारख़ानों, मशीनों, इमारतों, हवाई अड्डों, रेलवे लाइनों वग़ैरा को कोई नुक़सान नहीं पहुँचता और हमला करने वाली फ़ौज उन इलाक़ों के इन्सानों के मर जाने के बाद आसानी से आकर इन सब चीज़ों पर क़ब्ज़ा कर सकती है और इन्हें अपने काम में ला सकती है. एक अमरीकी अफ़सर ने एक जगह यह भी साफ़ कहा है कि यह तरीक़ा ऐटम बम के मुक़ाबले में ज़्यादा कारगर और ज़्यादा सस्ता है. अमरीकी जरनैलों का यह बयान भी मौजूद है कि अगली जंग के लिए हमें इस तरह के सामान से पूरी तरह लैस हो जाना चाहिए ताकि इन हथियारों में दूसरा हम से बढ़ न जाए. अमरीकी सरकार के भी इस तरह के बयान मौजूद हैं जिनमें कहा गया है कि इन तरह तरह की बीमारियों के कीड़ों को पाल कर करोड़ों, अरबों और खरबों की तादाद में उन्हें बढ़ाने के लिये अमरीका में बड़े बड़े कारख़ाने खोले गए जिनमें से केवल एक कारख़ाने में फ़रवरी सन 1949 में चार हज़ार मर्द और औरत काम करते थे. जिन्हें "अमरीका के हीरो" कहा जाता था. यह भी कहा गया कि इन ज़हरीले हथियारों से आदमी, जानवर और दरख़्त कोई नहीं बच सकेगा और इनमें कोई एक चीज़ ऐसी भी है कि जिसके 65 ग्रेन से 100 करोड़ आदमी यानी दुनिया की आधी आबादी ख़त्म हो सकती है. यह भी बयान मिलता है कि अमरीका के कुछ बड़े से बड़े साइन्सदां इसी काम में लगे हुए हैं. यह भी कहा गया है कि इस तरह के तीन हज़ार से ऊपर क़िस्म के जर्म तैयार किए गए हैं और कोशिश की गई है कि उन्हें इस तरह तैयार किया जावे कि कोई इन्सान बीमार पड़ कर बच न सके. 8 जुलाई सन 1950 को एक साहब ने यह भी साफ़ कहा था कि अगर कोरिया की लड़ाई ज़्यादा देर तक चली तो हमें बीमारियों के बम वहाँ आज़माने पड़ेंगे. इस तरह के बयान सन 1946 से लेकर अब तक के अमरीका और इंगलैंड के अख़बारों से बेशुमार नक़ल किए जा सकते हैं.

18 फ़रवरी सन 1951 को जनरल रिजवे ने कहा

بھی زندہ رہتے اور کام کرتے ہیں۔ دھوپ کے اندر یہ ٹڈی دلوں کی طرح چلتے دکھائی دیتے ہیں۔ ان میں کچھ کیڑے ایسے ہیں جو ستر ستر برس کے بوڑھوں نے یہ کہا کہ ہم نے اس طرح کے کیڑے اپنی زندگی میں کبھی نہیں دیکھے۔ اخباروں میں ان کے فوٹو بھی چھپے ہیں۔

جون سن 1946 سے اب تک کے امریکی اخباروں میں اس طرح کے کافی بیان ملتے ہیں جن سے صاف پتہ چلتا ہے کہ امریکہ کی سرکار کم سے کم اسی وقت سے اسی طرح کے بموں کی تیاری میں لگی ہوئی تھی۔ امریکی افسروں نے اس کا ایک فائدہ یہ بھی بتایا ہے کہ اس سے آدمی مر جاتے ہیں لیکن کارخانوں، مشینوں، عمارتوں، ہوائی اڈوں، ریلوے لائنوں وغیرہ کو کوئی نقصان نہیں پہونچتا اور حملہ کرنے والی فوج ان علاقوں کے انسانوں کے مر جانے کے بعد آسانی سے جاکر ان سب چیزوں پر قبضہ کر سکتی ہے اور انہیں اپنے کام میں لا سکتی ہے۔ ایک امریکی افسر نے ایک جگہ یہ بھی صاف کہا ہے کہ یہ طریقہ ایٹم بم کے مقابلے میں زیادہ کارگر اور زیادہ سستا ہے۔ امریکی جرنیلوں کے یہ بیان بھی موجود ہیں کہ اگلی جنگ کے لئے ہمیں اس طرح کے سامان سے پوری طرح لیس ہو جانا چاہئے تاکہ ان ہتھیاروں میں دوسرا ہم سے نہ بڑھ جائے۔ امریکی سرکار کے بھی اس طرح کے بیان موجود ہیں جن میں کہا گیا ہے کہ ان طرح طرح کی بیماریوں کے کیڑوں کو پال کر کروڑوں، اربوں اور سنکھوں کی تعداد میں انہیں بڑھانے کے لئے امریکہ میں بڑے بڑے کارخانے کھولے گئے جن میں سے کیول ایک کارخانے میں فروری سن 1949 میں چار ہزار مرد اور عورت کام کرتے تھے۔ جنہیں "امریکہ کے ہیرو" کہا جاتا تھا۔ یہ بھی کہا گیا کہ ان زہریلے ہتھیاروں سے آدمی، جانور اور درخت کوئی نہیں بچ سکیگا اور ان میں کوئی ایک چیز ایسی بھی ہے کہ جس کے 65 گرین سے 100 کروڑ آدمی یعنی دنیا کی آدھی آبادی ختم ہو سکتی ہے۔ یہ بھی بیان ملتا ہے کہ امریکہ کے کچھ بڑے سے بڑے سائنسداں اسی کام میں لگے ہوئے ہیں۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ اس طرح کے تین ہزار سے اوپر قسم کے جرم تیار کئے گئے ہیں اور کوشش کی گئی ہے کہ انہیں اس طرح تیار کیا جاوے کہ کوئی انسان بیمار پڑ کر بچ نہ سکے۔ 8 جولائی سن 1950 کو ایک صاحب نے یہ بھی صاف کہا تھا کہ اگر کوریا کی لڑائی زیادہ دیر تک چلی تو ہمیں بیماریوں کے بم وہاں آزمانے پڑینگے۔ اس طرح کے بیان سن 1946 سے لیکر اب تک کے امریکہ اور انگلینڈ کے اخباروں سے بےشمار نقل کئے جاسکتے ہیں۔

18 [illegible] 1951 کو جنرل رجوے نے کہا

न, शिऊ कुम, ची-आन, शान-तू-ओ, हांग चाई-तेंत में और चान क्वीन और हांग चाई तेंत जो रेलवे के बीच बाईस बार्हें इसी तरह की बीमारी से लदे लों और तरह तरह के ज़हरीली चीज़ों के फेंके."

सब खबरें 15 मार्च 1952 से पहले की हैं.

खबरें जब दुनिया के अखबारों में छपीं तो की सरकार ने एक बार इन्हें झूटी खबरें कहकर चाहा. इस पर दुनिया की एक मशहूर अन्तर संस्था 'इन्टर नेशनल एसोसीयेशन आफ डेमाक्रेटिक र्स (International Association of ocratic Lawyers) ने अलग अलग मुल्कों बड़े बड़े और ग़ैर जानिबदार लोगों का एक कमीशन क़ात के लिए कोरिया और चीन भेजा और उनके जांच के लिये कई डाक्टर और साइन्स दां भी भेजे. मीशन के आठ मेम्बर यह थे :—इसके सदर थे या के मिस्टर ब्रैन्ड वेनर और बाक़ी मेम्बर थे के मिस्टर के वेलिकरी, ब्राज़ील के मिस्टर डी ब्रिट्टो, स्तान के मिस्टर गेस्टर, फ्रांस के मिस्टर जोकियर, यम के मिस्टर मोरेन्स, पोलेंड के मिस्टर वासल का और चीन के मिस्टर पो-नियन.

उ कमीशन ने मौक़े पर जा कर जांच करके यह दी :—

We are horrified beyond measure at facts we have ascertained but in opinion they are indisputable."

यानी जिन सच्ची घटनाओं का हमने पता लगाया मालूम करके हम बेहद घबरा गए हैं लेकिन हमारी इन घटनाओं की सच्चाई से कोई इनकार नहीं कता."

अमरीका की पहले से तैयारी.

स कमीशन ने रिपोर्ट की कि अमरीकी हवाई जहाज़ों बम फेंके उन में प्लेग, हैज़ा, मोती झरा और दूसरी रियों के जर्म भरे हुए थे. उन्होंने यह भी लिखा कि जहां यह बम फेंके गए वहां वहां और उनके आस क दिन के अन्दर ही प्लेग और हैज़ा ख़ूब फैले.

कहीं कहीं ऐसा भी हुआ कि अमरीकी हवाई जहाज़ो आबादियों के ऊपर चक्कर लगाते हुए दिखाई दिये. बम गिरता दिखाई दिया और न कोई आवाज़ र सुबह को देखा गया तो तमाम आबादी और पास के इलाक़े लाखों करोड़ों तरह तरह के नए नए से भरे दिखाई दिये. लोगों में वबा दो तीन के बाद [illegible] ढंग से फैलती है. यह कीड़े बर्फ़ के

فینگ چینگ' شھو ہی' چی آن' شان توکو' ہوانگ پائی تینت زونگروں اور یان فین اور ہوانگ پائی تینت زو ریلوے اسٹیشنوں کے بیچ بائیس بارھیں اسی طرح کے بیماری سے لدے بم گولوں اور طرح طرح کے زہریلی چیزوں کے پھینکے ۔

یہ سب خبریں 15 مارچ 1952 سے پہلے کی ہیں ۔

یہ خبریں جب دنیا کے اخباروں میں چھپیں تو امریکی سرکار نے ایک بار انہیں جھوٹی خبریں کہہ کر ٹالنا چاہا ۔ اس پر دنیا کی ایک مشہور انٹر قومی سنستھا انٹر نیشنل ایسوسی ایشن آف ڈیماکریٹک لائرس (International Association of Democratic Lawyers) نے الگ الگ ملکوں کے آٹھ بڑے بڑے اور غیرجانبدار لوگوں کا ایک کمیشن تحقیقات کے لئے کوریا اور چین بھیجا اور اُن کے ساتھ جانچ کے لئے کئی ڈاکٹر اور سائنسداں بھی بھیجے ۔ اس کمیشن کے آٹھ ممبر یہ تھے :—اس کے صدر تھے آسٹریا کے مسٹر بریڈ ویلر اور باقی ممبر تھے اِٹلی کے مسٹر کے ویلٹری' برازیل کے مسٹر ڈی بریٹو' انگلستان کے مسٹر گیسٹر' فرانس کے مسٹر جوئیر' بلجیم کے مسٹر موریلس' پولینڈ کے مسٹر واصل کو وزکا اور چین کے مسٹر پونین.

اِس کمیشن نے موقعہ پر جاکر جانچ کرکے یہ رپورٹ دی :—

"We are horrified beyond measure at the facts we have ascertained but in our opinion they are indisputable."

"یعنی جن سچی گھٹناؤں کا ہم نے پتہ لگایا ہے انہیں معلوم کرکے ہم بے حد گھبرا گئے ہیں لیکن ہماری رائے میں ان گھٹناؤں کی سچائی سے کوئی انکار نہیں کرسکتا."

امریکہ کی پہلے سے تیاری ۔

اِس کمیشن نے رپورٹ کی کہ امریکی ہوائی جہازوں نے جو بم پھینکے اُن میں پلیگ' ہیضہ' موتی جھرا اور دوسری بیماریوں کے جرم بھرے ہوئے تھے ۔ اُنہوں نے یہ بھی لکھا کہ جہاں جہاں یہ بم پھینکے گئے وہاں وہاں اور اُن کے آس پاس کچھ دن کے اندر ہی پلیگ اور ہیضہ خوب پھیلے ۔

کہیں کہیں ایسا بھی ہوا کہ امریکی ہوائی جہاز رات کو آبادیوں کے اوپر چکر لگاتے ہوئے دکھائی دیئے ۔ نہ کوئی بم گرتا دکھائی دیا اور نہ کوئی آواز ہوئی ۔ پر صبح کو دیکھا گیا تو تمام آبادی اور آس پاس کے علاقے لاکھوں کروڑوں طرح طرح کے نئے نئے کیڑوں سے بھرا دکھائی دئے ۔ لوگوں میں وبا دو تین کے بعد ایک ہم [illegible] ڈھنگ سے [illegible] ۔ یہ کیڑے برف کے

उसी तारीख़ को फिर एक अमरीकी जहाज़ चीन के ची-आन नगर पर चढ़ आया. उसने ची-आन पर और आस पास की आबादियों पर यहां तक कि मंचूरिया की राजधानी मुकडन पर भी ख़ूब बीमारियों से भरे हुए बम फेंके.

7 तारीख़ को अमरीकी जहाज़ों ने इन सांग के दक्खिन पूरब में जर्म्स से भरे हुए कीड़े फेंके और प्यून यांग के पूरब में ज़हर में बुझे हुए बिस्कुटों और खाने की चीज़ों के डिब्बे बरसाए. उसी दिन प्यून यांग के ऊपर अमरीकी हवाई जहाज़ों ने बीमारियों के जर्म्स से लदे बम फेंके. इनमें पहला बम जिस मकान पर पड़ा उस मकान के अन्दर और चारों तरफ़ मक्खियों और मच्छरों का एक घना बादल बन गया. यह बम एक सिलन्डर की शक्ल में था. हरे रंग का, मोटे दल वाला, उसके अन्दर चार ख़ाने थे वग़ैरा.

8 मार्च को चीन के आठ या नौ बड़े शहरों में अमरीकी हवाई जहाज़ों से फेंके हुए ज़हरीली बीमारियों से लदे हुए बेशुमार कन खजूरे, टिड्डे और मक्कड़ मिले.

9 मार्च को दोपहर को एक बजे फिर पान मुन जोन नगर के ऊपर दस बारह इसी तरह की ख़तरनाक बीमारियों के बम गोलों की बाढ़ें फेंकी गईं. इन बाढ़ों में जो जर्म्स फेंके गए वह मक्खियों और चींटियों से मिलते हुए कीड़ों के सहारे थे.

उसी दिन यह भी ख़बर आई कि अमरीकी हवाई जहाज़ों ने कोरिया से आगे बढ़ कर चीन के उत्तर पूरब से लेकर चीन के सान तुंग सूबे के सुंग-ताओ नगर तक बराबर इसी तरह के बम फेंके.

9 मार्च को आठ जत्थों में अमरीकी हवाई जहाज़ चीन के ग्यारह नगरों के ऊपर बढ़ आए और अड़तीस बाढ़ों में उन्होंने तरह तरह की ज़हरीली बीमारियों से भरे हुए बम फेंके.

10 मार्च को अमरीकी हवाई जहाज़ों के आठ जत्थे फिर सात चीनी शहरों पर बढ़ आए और उन्होंने बयालीस बाढ़ों में ज़हरीली बीमारियों से भरे हुए बम फेंके.

11 मार्च को अमरीकी हवाई जहाज़ों के चार जत्थों ने फिर सात शहरों और आस पास की आबादियों के ऊपर बढ़ कर सत्ताइस बाढ़ें इसी तरह की ज़हरीले बमों की फेंकी. इन बमों से पीले और सफ़ेद रंग के चमकते हुए और निहायत मोहलिक ज़हर चारों तरफ़ हवा में भर जाते थे.

12 मार्च को अमरीकी हवाई जहाज़ों के ग्यारह जत्थों ने—आन टुंग, इन-पिंग-हू, कंग तिन हू को, ता-तुंग-को,

اسی تاریخ کو پھر ایک امریکی جہاز چین کے چی آن نگر پر چڑھ آیا ۔ اس نے چی آن پر اور اس پاس کی آبادیوں پر یہاں تک کہ منچوریا کی راجدھانی مکڈن پر بھی خوب بیماریوں سے بھرے ہوئے بم پھینکے ۔

7 تاریخ کو امریکی جہازوں نے ان سانگ کے دکھن پورب میں جرمس سے بھرے ہوئے کیڑے پھینکے اور پیون یانگ کے پورب میں زہر میں بجھے ہوئے بسکٹوں اور کھانے کی چیزوں کے ڈبے برسائے ۔ اسی دن پیون یانگ کے اوپر امریکی ہوائی جہازوں نے بیماریوں کے جرمس سے لدے بم پھینکے ۔ ان میں پہلا بم جس مکان پر پڑا اس مکان کے اندر اور چاروں طرف مکھیوں اور مچھروں کا ایک گھنا بادل بن گیا ۔ یہ بم ایک سلینڈر کی شکل میں تھا ۔ ہرے رنگ کا، موٹے دل والا، اسکے اندر چار خانے تھے وغیرہ ۔

8 مارچ کو چین کے آٹھ یا نو بڑے شہروں میں امریکی ہوائی جہازوں سے پھینکے ہوئے زہریلی بیماریوں سے لدے ہوئے بے شمار کن کھجورے، ٹڈے اور مکڑ ملے ۔

9 مارچ کو دوپہر کے ایک بجے پھر پان من جون نگر کے اوپر دس بارہ اسی طرح کی خطرناک بیماریوں کے بم گولوں کی باڑھیں پھینکی گئیں ۔ ان باڑھوں میں جو جرمس پھینکے گئے وہ مکھیوں اور چینٹیوں سے ملتے ہوئے کیڑوں کے سہارے تھے ۔

اسی دن یہ بھی خبر آئی کہ امریکی ہوائی جہازوں نے کوریا سے آگے بڑھ کر چین کے اتر پورب سے لیکر چین کے سان تنگ صوبے کے سنگ تاؤ نگر تک برابر اسی طرح کے بم پھینکے ۔

9 مارچ کو آٹھ جتھوں میں امریکی ہوائی جہاز چین کے گیارہ نگروں کے اوپر بڑھ آئے اور اڑتیس باڑھوں میں انہوں نے طرح طرح کی زہریلی بیماریوں سے بھرے ہوئے بم پھینکے ۔

10 مارچ کو امریکی ہوائی جہازوں کے آٹھ جتھے پھر سات چینی شہروں پر بڑھ آئے اور انہوں نے بیالیس باڑھوں میں زہریلی بیماریوں سے بھرے ہوئے بم پھینکے ۔

11 مارچ کو امریکی ہوائی جہازوں کے چار جتھوں نے پھر سات شہروں اور آس پاس کی آبادیوں کے اوپر بڑھ کر ستائیس باڑھیں اس طرح کی زہریلے بموں کی پھینکیں ۔ ان بموں سے پیلے اور سفید رنگ کے چمکتے ہوئے اور نہایت مہلک زہر چاروں طرف ہوا میں بھر جاتے تھے ۔

12 مارچ کو امریکی ہوائی جہازوں کے گیارہ جتھوں نے—آن تنگ، اِن پنگ ہو، پنگ تین ہوکو، تاتنگ کو،

...सान किधर जा रहा है.

5 फ़रवरी सन 1952 को नए चीन के वाइस प्रीमियर वर्ल्ड कौंसिल आफ़ पीस के वाइस प्रेसीडेन्ट श्री को. जो ने वर्ल्ड कौंसिल आफ़ पीस के प्रेसीडेन्ट को एक भेजा जिसमें और बातों के साथ साथ लिखा था कि:—

"28 जनवरी से 17 फ़रवरी तक कोरिया के अन्दर वाली अमरीकी फ़ौजों ने कोरियन और चीनी फ़ौजों पर और दूर दूर तक निहत्थी आबादियों के ऊपर हवाई जहाज़ों से बहुत बड़ी तादाद में इस तरह के फेंके जो प्लेग, हैज़ा, मोती झरा, गरदन तोड़ बुख़ार दूसरी ख़तरनाक छूत की बीमारियों के जर्म्स से लदे ..."

कोरिया और चीन में कीड़ा बीमारी बमबाज़ी.

4 मार्च को ख़बर आई कि अमरीकी फ़ौजें पुन मुन जोन के ...क हैज़े और मोतीझरा से लदे हुए बम फेंक रही हैं.

... मार्च को ख़बर आई कि दो अमरीकी बम फेंकने हवाई जहाज़ों ने सो शुन डांग के उत्तर में और मांग ख़ान के उत्तर पच्छिम में 26 फ़रवरी की रात को आठ और नौ बजे के दरमियान तरह तरह की ...नाक बीमारियों के जर्म्स से लदे हुए बम फेंके. यह 26 फ़रवरी की चली हुई दुनिया को 6 मार्च को मिली. उसी 6 मार्च को सुबह पौने दस बजे चांद दौरी के ...न पूरब में तरह तरह की वबाओं के बम फेंके गए. ...न इसी तरह के कुछ बम सांग-युंग शहर की ...दी के ऊपर फेंके गए. उसी दिन सात अमरीकी हवाई ...ों ने सुक चुंग नगर के ऊपर और सब योनो नगर ...स जर्म्स से भरे हुए बम फेंके.

...3 मार्च सुबह दस बजे से शाम को चार बजे तक ...की हवाई जहाज़ों के चार और जत्थों ने जिनमें से ...क में कई कई जहाज़ थे कितने ही नगरों और क़स्बों पर बीमारियों से लदे हुए बम फेंके. इन बमों की उन्नीस फेंकी गई.

...सी तारीख़ को रात को नौ बजे एक अमरीकी हवाई ... चीन के इलाक़े में संग ताओ के पास तक बढ़ ... और आस पास की आबादियों पर उसने जर्म भरे फेंके. इस हवाई जहाज़ के वापिस लौटते ही उन ...दियों में तरह तरह के कीड़े, मक्खियां, मकड़ियां, ..., टिड्डे वग़ैरा चारों तरफ़ भर गए.

... मार्च को ग्यारह बजे दिन के एक अमरीकी हवाई ... चीन के सांग को और लिव सुन नगरों के ऊपर बढ़ ... और उसने बीमारियों से लदे हुए काफ़ी बम फेंके. ... पूरब चीन में इस तरह के बहुत से बम फेंके गए, ... दिन तक फेंके जाते रहे.

إنسان كدھر جا رھا ھے

25 فروری سن 1952 کو نئے چین کے وائس پریمیر اور ورلڈکونسل آف پیس کے وائس پریسیڈنٹ شری کوموجو نے ورلڈکونسل آف پیس کے پریسیڈنٹ کو ایک خط بھیجا جس میں اور باتوں کے ساتھ ساتھ لکھا تھا کہ :—

"28 جنوری سے 17 فروری تک کوریا کے اندر لڑنے والی امریکی فوجوں نے کورین اور چینی فوجوں کے اوپر اور دور دور تک نہتھی آبادیوں کے اوپر فوجی ہوائی جہازوں سے بہت بڑی تعداد میں اس طرح کے کیڑے پھینکے جو پلیگ، ہیضہ، موتی جھارہ، گردن توڑ بخار اور دوسری خطرناک چھوتکی بیماریوں کے جرمس سے لدے ہوئے تھے."

کوریا اور چین میں کیڑا بیماری بم بازی .

4 مارچ کو خبر آئی کہ امریکی فوجیں پن من جون کے نزدیک ہیضے اور موتی جھرا سے لدے ہوئے بم پھینک رہی ہیں .

6 مارچ کو خبر آئی کہ دو امریکی بم پھینکنے والے ہوائی جہازوں نے سوشن ڈانگ کے اتر میں اور مانگ ین سان کے اتر پچھم میں 26 فروری کی رات کو ساڑھے آٹھ اور نو بجے کے درمیان طرح طرح کی خطرناک بیماریوں کے جرمس سے لدے ہوئے بم پھینکے . یہ خبر 26 فروری کی چلی ہوئی دنیا کو 6 مارچ کو ملی .

اسی 6 مارچ کو صبح پونے دس بجے چاند دوری کے دکھن پورب میں طرح طرح کی وباؤں کے بم پھینکے گئے. اسی دن اسی طرح کے کچھ بم سانگ ینگ شہر کی آبادی کے اوپر پھینکے گئے . اسی دن سات امریکی ہوائی جہازوں نے سک چونگ نگر کے اوپر اور سب یونی نگر کے پاس جرمس سے بھرے ہوئے بم پھینکے .

6 مارچ صبح دس بجے سے شام کو چار بجے تک امریکی ہوائی جہازوں کے چار اور جتھوں نے جن میں سے ایک ایک میں کئی کئی جہاز تھے کتنے ہی نگروں اور قصبوں کے اوپر بیماریوں سے لدے بم پھینکے . ان بموں کی انیس بارمیں پھینکی گئیں .

اسی تاریخ کو رات کو نو بجے ایک امریکی ہوائی جہاز چین کے علاقے میں سنگ تاؤ کے پاس تک بڑھ آیا اور آس پاس کی آبادیوں پر اس نے جرم بھرے بم پھینکے . اس ہوائی جہاز کے واپس لوٹتے ہی ان آبادیوں میں طرح طرح کے کیڑے، مکھیاں، مکڑیاں، مکوڑے، ٹڈے وغیرہ چاروں طرف بھر گئے .

7 مارچ کو گیارہ بجے دن کے ایک امریکی ہوائی جہاز چین کے سانگ کو اور لیوت سن نگروں کے اوپر بڑھ آیا اور اس نے بیماریوں سے لدے ہوئے کافی بم پھینکے. اتر پورب چین میں اس طرح کے بہت سے بم پھینکے گئے اور کئی دن تک پھینکے جاتے رہے .

इसी तरह बिना किसी शक शुबे के यह कहा जा सकता है कि गांधी का हिन्दुस्तान आज भी गुलामी की हालत में है. दो बातों एक बात यह है कि हिन्दुस्तान आजाद है पर उसके रहने वाले गुलाम बनते जा रहे हैं. जवाहरलाल का हिन्दुस्तान आजाद हो सकता है पर गांधी का हिन्दुस्तान गुलाम है.

सरकार जो करती है वह जवाहरलाल के हिन्दुस्तान के लिये. देखिये विलायती खाद के सिन्द्री कारखाने को, रेलवे इंजनों के चितरंजन कारखाने को, दामोदर के डाम वाले कारखाने को या रंग-दवाई के पारनेरा वाले कारखाने को—या देखिये देश में इधर-उधर फैली ग्यारह खोज घरों या लेबरेट्रियों को. यह सब क्या हैं? यह सब घर-फूंक तमाशे हैं जिनकी मदद से फायदा हो जावेगा कुछ पूंजी-पतियों को, कुछ सरकारी अफसरों को और कुछ विदेशी एक्सपर्टों को. उन्हें मौक़ा मिल जायेगा गांवों व गांव वालों को और अधिक चूसने, धन कमाने और निचोड़ने का. यह कारखाने और लेबरेटरियां हिन्दुस्तान के नाम पर बट्टा हैं और बट्टा साबित होंगी. असली हिन्दुस्तान की वह कल्पना के बाहर हैं, उसकी औक़ात और बिसात के बाहर हैं. इनकी वजह से बीमारियां फैलेंगी, रोग बढ़ेंगे, अकाल आयेंगे, बेगुनाहों की जानें जायेंगी और दुखियों की मिट्टी पलीद होगी.

अपनी सरकार की नुक्ताचीनी करने में किसे मज़ा आता है? और फिर जब चोटी पर राजेन्द्र बाबू और जवाहरलाल जैसे तजुर्बेकार लोग हों? लेकिन नुक्ता चीनी या एतराज़ एक फ़र्ज़ बन जाता है जब साफ़ साफ़ दीखता है कि रचना नाम से जो काम इन लोगों ने हाथ में उठाया है वह तबाही और बरबादी का काम है जिससे जनता का हित कोसों दूर है. अगर नई सरकार सचमुच जनता का सहयोग चाहती है तो उसके अलमबरदारों को हवा से उतर कर धरती पर आना चाहिये, धरती वालों की सी बात करनी चाहिये. सरकार को चाहिये कि अपने दिमाग़ को अपने नज़रिये को और अपने ढंग को पूरी तरह बदल दे.

अगर सरकार ऐसा न करके अपनी रफ़्तार जारी रखती है तो उसके और जनता के बीच की खाई बढ़ेगी और बढ़ती ही रहेगी.

4. 4. 1952 —सुरेश रामभाई

اسی طرح بنا کسی شک شبہ کے یہ کہا جا سکتا ہے کہ گاندھی کا ہندستان آج بھی غلامی کی حالت میں ہے. سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ ہندستان آزاد ہے پر اس کے رہنے والے غلام بنتے جا رہے ہیں . جواہر لال کا ہندستان آزاد ہو سکتا ہے پر گاندھی کا ہندستان غلام ہے .

سرکار جو کرتی ہے وہ جواہر لال کے ہندستان کے لئے. دیکھئے ولایتی کھاد کے سندری کارخانے کو، ریلوے انجنوں کے چترنجن کارخانے کو، دامودر کے ڈام والے کارخانے کو یا رنگ دوائی کے پارنیرا والے کارخانے کو—یا دیکھئے دیش میں ادھر ادھر پھیلی گیارہ کھوج گھروں یا لیبریٹریوں کو . یہ سب کیا ہیں ؟ یہ سب گھر پھونک تماشے ہیں جن کی مدد سے فائدہ ہوجائیگا کچھ پونجی پتیوں کو، کچھ سرکاری افسروں اور کچھ ودیشی ایکسپرٹوں کو . انہیں موقع مل جائیگا گاؤں و گاؤں والوں کو اور ادھک چوسنے، دھن کمانے اور نچوڑنے کا . یہ کارخانے اور لیبریٹریاں ہندستان کے نام پر بٹا ہیں اور بٹا ثابت ہونگی . اصلی ہندستان کی وہ کلپنا کے باہر ہیں، اس کی اوقات اور بساط کے باہر ہیں . ان کی وجہ سے بیماریاں پھیلینگی، روگ بڑھینگے اکال آئینگے، بے گناہوں کی جانیں جائیں گی اور دکھیوں کی مٹی پلید ہوگی .

اپنی سرکار کی نکتہ چینی کرنے میں کسے مزہ آتا ہے ؟ اور پھر جب چوٹی پر راجیندر بابو اور جواہر لال جیسے تجربہ‌کار لوگ ہوں ؟ لیکن نکتہ چینی یا اعتراض ایک فرض بن جاتا ہے جب صاف صاف دکھتا ہے کہ رچنا نام سے جو کام ان لوگوں نے ہاتھ میں اٹھایا ہے وہ تباہی اور بربادی کا کام ہے جس سے جنتا کا ہت کوسوں دور ہے . اگر نئی سرکار سچ مچ جنتا کا سہیوگ چاہتی ہے تو اس کے علمبرداروں کو ہوا سے اتر کر دھرتی پر آنا چاہئے، دھرتی والوں کی سی بات کرنی چاہئے . سرکار کو چاہئے کہ اپنے دماغ، اپنے نظریئے کو اور اپنے ڈھنگ کو پوری طرح بدل دے .

اگر سرکار ایسا نہ کرکے اپنی رفتار جاری رکھتی ہے تو اس کے اور جنتا کے بیچ کی کھائی بڑھیگی اور بڑھتی ہی رہے گی .

—سریش رام بھائی 4-4-1952

मारी नई सरकार के सामने अचानक नये नये सवाल जैसे शरणार्थी, कश्मीर वगैरा खड़े हो गये. और न हम यही कहते हैं कि इसकी वजह यह है कि अन्दर क़ौमी ...लात हमारे मन के मुताबिक़ नहीं थी. यह बातें भी कमो बेश इस खाई के बढ़ाने की जिम्मेदार रही हैं.

पर हमारी निगाह में इस खाई की एक और सबसे बड़ी वजह है—सरकार का जनता और जनता के सवालों की तरफ़ घमंड और लापरवाही का रुख़. सरकार का पूरा रवैया तानाशाही और साहबी है. ज़ियादा ठोस भाषा में कहें, हमारी सरकार पूँजीवाद, कारख़ाने दारी और फ़ौजी ...ाना में सोलह आने एतबार रखती है. हमारी सरकार पूँजीपतियां, कारख़ानेदार और फ़ौजी सरकार है. ग़ैर पूंजी-...द, गांववाद या विकेन्द्रीकरन और ग़ैर फ़ौजयाना से ...सकी रूह फ़ना होती है इसीलिये सरकार की ख़ूब पटती बड़े बड़े पैसे वालों से, ऊंचे ऊंचे कारख़ाने वालों से और ...री भारी तोप बम वालों से. यही वजह है कि यह ऐसे ...रख़ाने खड़े कर रही है जिनमें मसनूई (प्रि-फ़ैबरीकेटेड) ...कान तैयार किये जायें न कि मिट्टी के झोंपड़े. हमारी ...रकार को मिस्र और अमरीका की रुई से मिल में तैयार ...या कपड़ा पसंद है न कि बुढ़िया के हाथ का कते सूत से ...लाहे का बुना खद्दर; पिचपिच, गन्दे गांव और झोपड़ ...ट शहर पसंद हैं न कि साफ़ सुथरे, स्वावलम्बी गांव; ...दन नंगा किये, क्रीम पाउडर लगाये, सुन्दर दिखने वाली, ...बसूरती मैच में शरीक होने वाली फ़ैशन परस्त बिऊटी ...ा फ़िल्मी सितारा (जिनके साथ हाल में ही क्या राज ...ति क्या बड़े वज़ीर ने तसवीरें खिंचवाई थीं) पसंद है ...कि शर्मदार, लगन से काम करने वाली, मेहनती और ...दा मय देहाती बिटिया, वग़ैरा वग़ैरा. सरकार के इस ...वालिये रुझान की वजह से ही वह दिन दूने रात ...गुने मोहताज बनती जा रही है. विदेशी पूँजीपति व ...रमायेदार की ओर उसे बाहर से भीक मांगना पड़ रही है ...नाज की, मशीनों की, मामूली सामान की, पैसे की, ...क्सपर्टों की वग़ैरा वग़ैरा. इस चक्कर में वह लगातार ...सती जा रही है और कोई चारा उसे नहीं दीखता. यह ...सिलसिला हमारी शान के ख़िलाफ़ है, हमारी कलचर के ...ख़िलाफ़ है और ख़िलाफ़ है हमारी परम्परा के.

ऐसी सूरत में हमारे बड़े वज़ीर जवाहरलाल यह आस ...गाते हैं कि वह हिन्दुस्तान पूरी शान शौकत के साथ चमक...गा जिसके सपने महात्मा गांधी देखा करते थे और जिसे ...बनाने की उन्होंने कोशिश की. सच यह है कि जिस हिन्दु-...स्तान की तैयारी आज हमारी सरकार कर रही है वह ...उसका ठीक उलटा है जिसके सपने महात्मा गांधी देखा ...करते थे. अपने 'हिन्द स्वराज्य' में उन्होंने कहा है कि ..."मिनी का इटली आज भी ग़ुलामी की हालत में है."

ہماری نئی سرکار کے سامنے اچانک نئے نئے سوال جیسے شرنارتھی، کشمیر وغیرہ کھڑے ہوگئے ۔ اور نہ ہم یہی کہتے ہیں کہ اسکی وجہ یہ ہے کہ اندر قومی حالت ہمارے من کے مطابق نہیں تھی ۔ یہ باتیں بھی کم و بیش اس کھائی کے بڑھانے کی ذمہ دار رہی ہیں ۔

پر ہماری نگاہ میں اِس کھائی کی ایک اور سب سے بڑی وجہ ہے ـــ سرکار کا جنتا اور جنتا کے سوالوں کی طرف گھمنڈ اور لاپرواہی کا رخ، سرکار کا پورا رویہ تاناشاہی اور صاحبی ہے ۔ زیادہ ٹھوس بھاشا میں کہیں، ہماری سرکار پونجی واد، کارخانے داری اور فوجی پانہ میں سولہ آنے اعتبار رکھتی ہے ۔ ہماری سرکار پونجی پتیا، کارخانے دار اور فوجی سرکار ہے ۔ غیر پونجی واد گاؤں واد یا وکیندریکرن اور غیر فوجیانہ سے اُس کی روح فنا ہوتی ہے اسی لئے سرکار کی خوب پٹتی ہے بڑے بڑے پیسے والوں سے، اونچے اونچے کارخانے والوں سے اور بھاری بھاری توپ بم والوں سے یہی وجہ ہے کہ یہ ایسے کارخانے کھڑے کر رہی ہے جن میں مصنوعی (پری فیبری کیٹڈ) مکان تیار کئے جائیں نہ کہ مٹی کے جھونپڑے ۔ ہماری سرکار کو مصر اور امریکہ کی روئی سے مل میں تیار کیا کپڑا پسند ہے نہ کہ بڑھیا کے ہاتھ کا کتے سوت سے جولاہے کا بنا کھدر؛ گچ پچ، گندے گاؤں اور جھوپڑ پٹ شہر پسند ہیں نہ کہ صاف ستھرے، سواولمبی گاؤں؛ بدن ننگا کئے، کریم پاوڈر لگائے، سندر دکھنے والی، خوبصورتی میچ میں شریک ہونے والی فیشن پرست بیوٹی یا فلمی ستارہ (جن کے ساتھ حال میں ہی کیا راج پتی کیا بڑے وزیر نے تصویریں کھنچوائی تھیں) پسند ہے نہ کہ شرم دار، لگن سے کام کرنے والی، محنتی اور سیدھا سادہ دیہاتی بٹیا، وغیرہ وغیرہ۔ سرکار کے اِس دیوالیہ رجحان کی وجہ سے ہی وہ دن دونے رات چوگنے محتاج بنتی جا رہی ۔ ودیشی پونجی پتی و سرمائے دار کی اور اُسے باہر سے بھیک مانگنا پڑ رہی ہے اناج کی، مشینوں کی، معمولی سامان کی، پیسے کی، ایکسپرٹوں کی، وغیرہ وغیرہ۔ اِس چکر میں وہ لگاتار پھنستی جا رہی ہے اور کوئی چارہ اُسے نہیں دیکھتا ۔ یہ سلسلہ ہماری شان کے خلاف ہے ہماری کلچر کے خلاف ہے اور خلاف ہے ہماری پرمپرا کے ۔

ایسی صورت میں ہمارے بڑے وزیر جواہر لال یہ آس لگاتے ہیں کہ وہ ہندستان پوری شان شوکت کے ساتھ چمک اٹھیگا جس کے سپنے مہاتما گاندھی دیکھا کرتے تھے اور جسے بنانے کی انہوں نے کوشش کی ۔ سچ یہ ہے کہ جس ہندستان کی تیاری آج ہماری سرکار کر رہی ہے وہ اُس کا ٹھیک اُلٹا ہے جس کے سپنے مہاتما گاندھی دیکھا کرتے تھے ۔ اپنے 'ہند سوراج' میں اُنہوں نے کہا ہے "موزنی کا اٹلی آج بھی غلامی کی حالت میں ہے ۔"

सरकार और सहयोग

हाल के चुनाव के बाद से हमारे बड़े वज़ीर जवाहर लाल जी आये दिन अपीलें करते हैं कि देश की तरक़्क़ी के काम में सब लोग एक साथ जुट जायें. 24 फ़रवरी को कानपुर में मुलाज़िम बीमा स्कीम खोलते वक़्त उन्होंने कहा था कि "अगर समाज के सब हिस्से एक साथ मिलकर आगे क़दम बढ़ायें तो हम कामयाबी के साथ बड़ी बड़ी चीज़ें कर सकते हैं." 16 मार्च को पार्नेरा (गुजरात) नाम के गांव में एक रंग व दवाई फ़ैक्टरी (जिसमें अमरीकी पैसा भी लगा है) खोलते हुये उन्होंने कहा कि लोगों को देखना चाहिये कि "सरकार ने भी कुछ काम किया है" और उन लोगों के काम को "तबाह कुन" बताया जो "खुर्दबीन से दूसरों के ऐब देखा करते हैं." फिर एक हफ़्ते के अन्दर ही कलकत्ते में, कुल हिन्द कांगरेस कमेटी में उन्होंने उन लोगों से अपील की जो पहले कांगरेस में थे पर अब नहीं हैं. जवाहरलाल जी ने उनसे कहा कि देश को खुशहाल बनाने के काम में हमारा साथ दीजिये. इसके बाद अप्रैल के शुरू में कालका (पंजाब) में उन्होंने "पूरे छत्तीस करोड़ के आपसी सहयोग" की मांग की ताकि देश को बेहतरीन और खुशनुमा बनाया जा सके.

ताज्जुब है कि जवाहरलाल जी जैसी हर दिल अज़ीज़ हस्ती अपीलें करती है पर हालत में दरद के ऊपर सफ़ेदी बराबर भी असर नहीं पड़ता दीखता और जनता और सरकार के बीच की खाई बढ़ती ही जा रही है जिसकी तरफ़ अपनी चार साला रिपोर्ट में जवाहरलाल जी ने इशारा भी किया था. ज़रूरत इस बात की है कि इस खाई के कारनों पर ठंडे दिल से और ईमान के साथ विचार किया जाये, क्योंकि अगर वह खाई यूं ही बनी रहती है या बढ़ती रहती है तो इससे सरकार और जनता दोनों को नुक़सान है. सरकार को इस वजह से कि उसकी सारी मेहनत बेकार जायेगी और जनता को इस वजह से कि वह कहीं ज़ियादा बेदम और अपाहिज बन जायेगी.

जनता और सरकार के बीच सहयोग क्यों नहीं हो पा रहा है ? इसकी वजह केवल वह ऊंची तनख़ाहें और मोटे मोटे भत्ते ही नहीं हैं जो सन 1931 के कराची ठहराव को पैरों तले रौंद कर हमारे राजपति और मिनिस्टर उड़ा रहे हैं. इसकी वजह केवल वह तानाशाह और मौक़ा परस्त नौकरशाही भी नहीं है जो अंगरेज़ों से हमें विरासत में मिली और आज भी ज्यों की त्यों चली आती है. इसकी वजह केवल हमारे वह एम. एल. ए. या एम. पी. भी नहीं हैं जो सरकारी हुक्काम को मन लगा कर और आज़ादी के साथ काम नहीं करने देते. न इसकी वजह यही है कि

سرکار اور سہیوگ

حال کے چناؤ کے بعد سے ہمارے بڑے وزیر جواہر لال جی آئے دن اپیلیں کرتے ہیں کہ دیش کی ترقی کے کام میں سب لوگ ایک ساتھ جٹ جائیں ۔ 24 فروری کو کانپور میں ملازم بیما اسکیم کھولتے وقت انہوں نے کہا تھا کہ " اگر سماج کے سب حصے ایک ساتھ ملکر آگے قدم بڑھائیں تو ہم کامیابی کے ساتھ بڑی بڑی چیزیں کر سکتے ہیں ." 16 مارچ کو پارنیرا (گجرات) نام کے گاؤں میں ایک رنگ و دوائی فیکٹری (جس میں امریکی پیسہ بھی لگا ہے) کھولتے ہوئے انہوں نے کہا کہ لوگوں کو دیکھنا چاہئے کہ " سرکار نے بھی کچھ کام کیا ہے " اور ان لوگوں کے کام کو "تباہ کن" بتایا جو خردبین سے دوسروں کے عیب دیکھا کرتے ہیں .' پھر ایک ہفتے کے اندر ہی کلکتہ میں' کل ہند کانگریس کمیٹی میں انہوں نے ان لوگوں سے اپیل کی جو پہلے کانگریس میں تھے ۔ پر اب نہیں ہیں ۔ جواہر لال جی نے ان سے کہا کہ دیش کو خوشحال بنانے کے کام میں ہمارا ساتھ دیجئے. اس کے بعد اپریل کے شروع میں کالکا (پنجاب) میں انہوں نے " پورے چھتیس کروڑ کے آپسی سہیوگ " کی مانگ کی تاکہ دیش کو بہترین اور خوشنما بنایا جاسکے ۔

تعجب ہے کہ جواہر لال جی جیسی ہر دل عزیز ہستی اپیلیں کرتی ہے پر حالت میں درد کے اوپر سفیدی برابر بھی اثر نہیں پڑتا دیکھتا اور جنتا اور سرکار کے بیچ کی کھائی بڑھتی ہی جا رہی ہے جس کی طرف اپنی چار سالہ رپورٹ میں جواہر لال جی نے اشارہ بھی کیا تھا ۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ اس کھائی کے کارنوں پر ٹھنڈے دل سے اور ایمان کے ساتھ وچار کیا جائے ۔ کیونکہ اگر یہ کھائی یوں ہی بنی رہتی ہے یا بڑھتی رہتی ہے تو اس سے سرکار اور جنتا دونوں کو نقصان ہے ۔ سرکار کو اس وجہ سے کہ اسکی ساری محنت بیکار جائیگی اور جنتا کو اس وجہ سے کہ وہ کہیں زیادہ بے دم اور اپاہج بن جائے گی ۔

جنتا اور سرکار کے بیچ سہیوگ کیوں نہیں ہو پا رہا ہے ؟ اسکی وجہ کیول وہ اونچی تنخواہیں اور موٹے بھتے ہی نہیں ہیں جو سن 1931 کے کراچی ٹھہراؤ کو پیروں تلے روند کر ہمارے راج پتی اور منسٹر اڑا رہے ہیں ۔ اسکی وجہ کیول وہ تانا شاہ اور موقع پرست نوکر شاہی بھی نہیں ہے جو انگریزوں سے ہمیں وراثت میں ملی اور آج بھی جیوں کی تیوں چلی آتی ہے ۔ اس کی وجہ کیول ہمارے وہ ایم . ایل . اے یا ایم . پی بھی نہیں ہیں جو سرکاری حکام کو من لگا کر اور آزادی کے ساتھ کام نہیں کرنے دیتے ۔ نہ اسکی وجہ یہی ہے کہ

है जिस में एक पैसा लगा कर वह दो पैसा कमावेंगे? ारी के नाते, अपने मतलब के लिये वह सभी को न छोड़ें—चाहे हाई कोर्ट का जज हो, या मिनिस्टर मेन्ट कान्फ्रेंस की सदर या बम्बई कांग्रेस सदर और कोई?

में यकीन है कि 'मिस इण्डिया' मैच करा कर का ने हिन्दुस्तान की लाज नंगी करने की कोशिश . हमें डर है कि अमरीका वाले जानकर 'मिस या' को 'मिस यूनिवर्स' मैच का पहला नहीं तो इनाम जरूर देंगे ताकि यहां की मां बहनें अपनी को ताक पर रख कर आइन्दा और ज़ियादा तादाद रीक हों और रहन सहन, वेश भूषा और खान-पान मरीका की रीस करें. फिर उनके सहारे से हिन्दुस्तान बाजारों और घरों में अमरीका का माल पट जाये देशी रोजगार धंदे चौपट हों! इसीलिये हम कहते खूबसूरती मैच हिन्दुस्तान की मां बहनों के माथे हाग का सिन्दूर नहीं बल्कि कलंक का टीका है. मारे सबके लिये बहुत शरम की चीज है.

महात्मा गांधी अकसर कहा करते थे कि उन्हें योरप की हकूमत से उतना डर नहीं है जितना उनके रहन और उनकी ग़लत कलचर के इस देश में फैलने ह मिस इन्डिया मैच बड़ी तेज़ी के साथ हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानी कलचर की उसी बरबादी की तरफ ले हे हैं जिसकी तरफ महात्मा जी ने इशारा किया था.

ये अब भी हम चाहते हैं कि जो हुआ सो हुआ अमरीका वाले मैच में हिन्दुस्तान से कोई बहन न जाये. लेडी रामा राव से हमारी अपील है कि ज़रा में आयें और याद करें कि किस मिट्टी में पाली गई हैं. बहन इन्द्राणी (मिस इन्डिया) से हमारी है कि एक बार ठोकर खाई सो खाई, आइन्दा गढ़े में गिरने से क्या फायदा और कौन खूबसूरती त है? सरकार से अपील करना बेकार सा लगता कि अगर आज वह अमरीका का पैसा, अनाज न खाती होती तो अमरीका वालों की यह हिम्मत ो सकती थी कि इस तरह हमारी मां बहनों को आम, दस हजार मर्दों के सामने सरे बाजार ाते!

यह हिन्दुस्तान की औरत जात की लाज का सवाल है, स्तान की लाज व आबरू का सवाल है. हमारी अर्ज़ मिस यूनिवर्स मैच में हिन्दुस्तान से न कोई बहन हो, न उसे शरीक होने देना चाहिये और यह जो बम्बई व दूसरे बड़े शहरों में इस बार हुआ ऐसी चीज इस देश में आइन्दा कभी नहीं होनी चाहिये.

—सुरेश रामभाई

نہیں ہے جس میں ایک پیسہ لگاکر وہ دو پیسہ کمائیں گے؟ بیوپاری کے ناتے اپنے مطلب کے لئے وہ سبھی کو کیوں نہ چوست لیں— چاہے ہائی کورٹ کا جج ہو یا منسٹر یا ویمنس کانفرنس کی صدر یا بمبئی کانگریس صدر یا اور کوئی؟

ہمیں یقین ہے کہ 'مس انڈیا' میچ کراکر امریکہ نے ہندستان کی لاج ننگی کرنے کی کوشش کی ہے. ہمیں ڈر ہے کہ امریکہ والے جان کر 'مس انڈیا' کو 'مس یونیورس' میچ کا پہلا نہیں تو دوسرا انعام ضرور دینگے تاکہ یہاں کی ماں بہنیں اپنی لاج کو طاق پر رکھ کر آئندہ اور زیادہ تعداد میں شریک ہوں اور رہن سہن، ویش بھوشا اور کھان پان میں امریکہ کی ریس کریں. پھر ان کے سہارے سے ہندستان کے بازاروں اور گھروں میں امریکہ کا مال پٹ جائے اور دیشی روزگار دھندے چوپٹ ہوں! اسی لئے ہم کہتے ہیں کہ خوبصورتی میچ ہندستان کی ماں بہنوں کے ماتھے پر سہاگ کا سندور نہیں بلکہ کلنک کا ٹیکہ ہے. یہ ہمارے سب کے لئے بہت شرم کی چیز ہے.

مہاتما گاندھی اکثر کہا کرتے تھے کہ انہیں یورپ والوں کی حکومت سے اتنا ڈر نہیں ہے جتنا ان کے رہن سہن اور ان کی غلط کلچر کے اس دیش میں پھیلنے سے. یہ مس انڈیا میچ ہمیں تیزی کے ساتھ ہندستان اور ہندستانی کلچر کی اسی بربادی کی طرف لے جا رہے ہیں جسکی طرف مہاتما جی نے اشارہ کیا تھا.

اس لئے اب بھی ہم چاہتے ہیں کہ جو ہوا سو ہوا لیکن امریکہ والے میچ میں ہندستان سے کوئی بہن نہ بھیجی جائے. لیڈی راما راؤ سے ہماری اپیل ہے کہ ذرا ہوش میں آئیں اور یاد کریں کہ کس مٹی میں پالی پوسی گئی ہیں. بہن اندرانی (مس انڈیا) سے ہماری اپیل ہے کہ ایک بار ٹھوکر کھائی سو کھائی' آئندہ اسی گڈھے میں گرنے سے کیا فائدہ اور کون خوبصورتی کی بات ہے؟ سرکار سے اپیل کرنا بیکار سا لگتا ہے کیونکہ اگر آج وہ امریکہ کا پیسہ' اناج وغیرہ نہ کھاتی ہوتی تو امریکہ والوں کی یہ ہمت نہیں ہوسکتی تھی کہ اس طرح ہماری ماں بہنوں کو کھلے عام' دس ہزار مردوں کے سامنے سرے بازار گھمواتے!

یہ ہندستان کی عورت ذات کی لاج کا سوال ہے' ہندستان کی لاج و آبرو کا سوال ہے. ہماری عرض ہے کہ 'مس یونیورس' میچ میں ہندستان سے نہ کوئی بہن شریک ہو' نہ اسے شریک ہونے دینا چاہئے اور یہ جو تماشہ بمبئی و دوسرے بڑے شہروں میں اس بار ہوا ایسی کوئی چیز اس دیش میں آئندہ کبھی نہیں ہونی چاہئے.

—سریش رامبھائی

6 . 4 . 1952

पर शिकायत हमें तब होती है जब लेडी धनवती रामा राव जैसी बुजुर्ग यह कहें कि हिन्दुस्तान वालों को ही 'मिस यूनिवर्स' का दर्जा मिलना चाहिये क्योंकि हिन्दुस्तानी औरतों की अदा और खूबसूरती सदियों से सारी दुनिया ने क़बूल की है और उसे लाजवाब समझा गया है. लेडी रामा राव ने यहां तक कहा कि जिसे हमने 'मिस इण्डिया' चुना है वह हिन्दुस्तान की कलचर और परम्परा की सच्ची नुमायन्दा साबित होगी और जिस मक़सद से हमारी कमेटी 'मिस इण्डिया' को 'मिस यूनिवर्स' मैच के लिये भेजना चाहती है वह मक़सद पूरा होगा.

यह लफ़्ज़ किसी फ़ैशन परस्त अमरीकी या अंगरेज़ मेम के नहीं हैं बल्कि आल इण्डिया वीमेन्स कान्फ्रेंस की पिछले सद्र के लेडी रामा राव और उनकी बिरादरी की बहनें अपनी ही दुनिया में आनन्द करती हैं जिनके और दूसरी बहनों के बीच में चीन के जैसी मोटी दीवार है. लेडी रामा राव का कोई वास्ता इन बहनों से नहीं जो यह भी नहीं जानतीं कि भर पेट खाना क्या होता है या धोती का एक जोड़ा किसे कहते हैं. लेडी रामा राव या उनकी बिरादरी वाली खूबसूरती मैच कराने वाली बहनें इनको फूहड़, बेवक़ूफ़, देहाती और नासमझ भले कह लें और मज़ाक़ बना लें पर हमारी देहाती बहनें जानती हैं और सही जानती हैं कि खूबसूरती बदन के नाप से और बाहर की दिखावट से नहीं आंकी जा सकती बल्कि वह अन्दर दिल की और चालचलन की चीज़ है. यह देहाती बहनें जानती हैं कि गोरे चाम का मतलब हमेशा गोरा काम नहीं होता और लेडी रामा राव की बिरादरी से वे लाखों दर्जे अच्छी हैं, उस सजी धजी, पढ़ी लिखी बिरादरी से जिसको घंटों लगते हैं अपना रूप बनाने में और जिसे क्या भूख, क्या नींद, क्या सच्चा जीवन, कुछ भी असल में नसीब नहीं होता. लेडी राम राव ने पोथियां पढ़ी हैं पर इन देहातियों ने जीवन की पोथी पढ़ी है और इसलिये वह समझती हैं कि असली खूबसूरती क्या है.

खूबसूरती के इन बेहयाई भरे तमाशों में हाई कोर्ट के जज, नये मिनिस्टर, पुराने मिनिस्टर, रईस वग़ैरा किसी न किसी रूप में शरीक हुए हैं. हम यह मानने से इनकार करते हैं कि उन दस बहनों की तरह यह भी भोले भाले हैं और यह नहीं समझते कि इन मैचों के पीछे जो ताक़तें काम कर रही हैं उनका असली मन्शा क्या है. कौन नहीं जानता कि इस खूबसूरती मैच को कराने में तीन अमरीकी व्योपारी कारखानों और एक हिन्दुस्तानी कारखाने का बड़ा हाथ है? क्या यह कारखाने वाले अपनी जेब से पैसा खर्च करेंगे? क्या यह मैच उनके लिये इश्तिहार

پر شکایت ہمیں تب ہوتی ہے جب لیڈی دھنوتی ا راؤ جیسی بزرگ یہ کہے کہ ہندستان والی کو ہی س یونیورس' کا درجہ ملنا چاہئے کیونکہ ہندستانی توں کی ادا اور خوبصورتی صدیوں سے ساری دنیا نے ول کی ہے اور اُسے لاجواب سمجھا گیا ہے ۔ لیڈی راما نے یہاں تک کہا کہ جسے ہم نے 'مس انڈیا' چنا وہ ہندستان کی کلچر اور پرمپرا کی سچی نمائندہ ت ہوگی اور جس مقصد سے ہماری کمیٹی 'مس یا' کو 'مس یونیورس' میچ کے لئے بھیجنا چاہتی ہے مقصد پورا ہوگا ۔

یہ لفظ کسی فیشن پرست امریکی یا انگریز میم نہیں ہے بلکہ آل انڈیا ویمنس کانفرنس کی پچھلے صدر کے ۔ لیڈی راما راؤ اور اُن کی برادری کی بہنیں ی ہی دنیا میں آنند کرتی ہیں جن کے اور دوسری ہنوں کے بیچ میں چین کے جیسی موٹی دیوار ہے ۔ ڈی راما راؤ کا کوئی واسطہ اِن بہنوں سے نہیں جو یہ ی نہیں جانتیں کہ بھر پیٹ کھانا کیا ہوتا ہے یا ھوتی کا ایک جوڑا کسے کہتے ہیں ۔ لیڈی راما راؤ یا ن کی برادری والی خوبصورتی میچ کرانے والی بہنیں ن کو کپڑوا' بیوقوف' دیہاتی اور ناسمجھ بھلے کہ لیں ر مذاق بنالیں پر ہماری دیہاتی بہنیں جانتی ں اور صحیح جانتی ہیں کہ خوبصورتی بدن کے اپ سے اور باہر کی دکھاوٹ سے نہیں آنکی جاسکتی لکہ وہ اندر دل کی اور چال چلن کی چیز ہے ۔ یہ یہاتی بہنیں جانتی ہیں کہ گورے چام کا مطلب ہمیشہ ورا کام نہیں ہوتا اور لیڈی راما راؤ کی برادری سے وہ کھوں درجے اچھی ہیں' اُس سجی دھجی پڑھی لکھی رادری سے جس کو گھنٹوں لگتے ہیں اپنا روپ بنانے ں اور جسے کیا بھوک' کیا نیند' کیا سچا جیون چھ بھی اصل میں نصیب نہیں ہوتا ۔ لیڈی راما راؤ نے پوتھیاں پڑھیں ہیں پر اُن دیہاتیوں نے جیون کی وتھی پڑھی ہے اور اسلئے وہ سمجھتی ہیں کہ اصلی خوبصورتی کیا ہے ۔

خوبصورتی کے اِن بےحیائی بھرے تماشوں میں ہائی رٹ کے جج' نئے منسٹر' پرانے منسٹر رئیس وغیرہ کسی نہ نسی روپ میں شریک ہوئے ہیں ۔ ہم یہ ماننے سے انکار رتے ہیں کہ اُن دس بہنوں کی طرح یہ بھی بھولے بھالے ہیں اور یہ نہیں سمجھتے کہ اِن میچوں کے پیچھے جو طاقتیں کام کر رہی ہیں اُن کا اصلی منشا کیا ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ اِس خوبصورتی میچ کو کرانے میں تین امریکی بیوپاری کارخانوں اور ایک ہندستانی کارخانے کا بڑا ہاتھ ہے ؟ کیا یہ کارخانے والے اپنی جیب سے پیسہ خرچ کریں گے ؟ کیا یہ میچ اُن کے لئے اشتہار

...वे आदर के साथ हम विनोबा जी से भी यह जानना चाहते हैं कि क्या उन्हें सरकार से इस तरह की मदद लेना ...है, और क्या वह इसी तरह और जगह भी सरकारों ...दद कबूल करके पांच करोड़ एकड़ ज़मीन जमा करना चाहते हैं ? क्या इस तरह ज़मीनें जमा करके वह देश के ...र अहिंसक इन्क़िलाब का वातावरन पैदा कर सकेंगे ... अपने अनेक सवालों को सही ढंग से हल करना ... जायेंगे ? '

हम यू. पी. सरकार को भी ख़बरदार कर देना चाहते ...गर उसने दो घोड़ों पर सवारी जारी रखी—एक तरफ़ ...शी विदेशी पूंजीपतियों और एक्सपर्टों के सहारे गावों ... 'प्लानिंग' करके देहाती धंधों को कुचल देना और ...री तरह से फ़रमान निकाल कर ग़रीबों दुखियों से ...बरदस्ती ज़मीनें ले कर भूदान यज्ञ में आहुति चढ़ाना— ...सकी हालत सांप-छछूंदर जैसी हुए बिना न रहेगी.

5. 4. 1952 —सुरेश रामभाई

...बसूरती मैच—एक कलंक

पिछली तीसरी अप्रैल को बम्बई में एक वह चीज़ ...ो देश के लिये निहायत शर्म की बात है. अख़बारों ...ह इस तरह छपी है—

"बम्बई, अप्रैल 3 23 बरस वाली कलकत्ते की श्रीमती, इन्द्राणी ...न एक ख़ूबसूरती मैच में 'मिस इन्डिया' चुनी गईं......अब 'मिस इन्डिया' कैलीफ़ोर्निया (अमरीका) जायेंगी जहां 22 जून ...ने वाली "मिस यूनिवर्स" मैच में शरीक होंगी.

"आज मैच के पहले फूलों की नावें निकाली गईं, सुन्दरियां ... मोटर में ब्रेबोर्न स्टेडियम में घुमाई गईं. जहां फ़ौज और ...ड के बाजे बज रहे थे और दस हज़ार की भीड़ थी.

"...टेडियम के बाहर कुछ लोगों ने इसके ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया. ...हाथों में तख़्ते थे जिन पर कुछ लिखा था, उनमें से एक पर —"भारत मिस इन्डिया' नहीं चाहता."

"श्रीमती रहमान के सर पर 'मिस इन्डिया' का ताज ...स के सदर और पिछले बम्बई मेयर पाटिल साहब ने ...या........"

...मैच में कुल दस बहनें शरीक थीं....."

बम्बई के इस बेशर्मी के तमाशे को "हिन्दुस्तान की ... अनोखी चीज़" बताया गया है. इसके लिये हमें ... नासमझ दस बहनों से कोई शिकायत नहीं है. वह ...री मासूम बहनें हैं जिन्हें यह नहीं मालूम कि इस ... में शरीक होकर वह किन ताक़तों का शिकार बनी ... उन्हें यह मालूम कि इससे देश की कुटया कैसे ...ती है.

بڑے آدر کے ساتھ ہم ونوباجی سے بھی یہ جاننا چاہتے ہیں کہ کیا انہیں سرکار سے اِس طرح کی مدد لینا منظور ہے، اور کیا وہ اسی طرح اور جگہ بھی سرکاروں کی مدد قبول کر کے پانچ کروڑ ایکڑ زمین جمع کرنا چاہتے ہیں ؟ کیا اس طرح زمین جمع کر کے وہ دیش کے اندر اہنسک انقلاب کا واتاورن پیدا کر سکینگے اور اپنے انیک سوالوں کو صحیح ڈھنگ سے حل کرنا سیکھ جائینگے ؟

ہم یوپی سرکار کو بھی خبردار کر دینا چاہتے ہیں اگر اس نے دو گھوڑوں پر سواری جاری رکھی—ایک طرف سے دیشی ودیشی پونجی پتیوں اور ایکسپرٹوں کے سہارے گاؤں کا 'پلاننگ' کر کے دیہاتی دھندوں کو کچل دینا اور دوسری طرف سے فرمان نکال کر غریبوں دکھیوں سے زبردستی زمینیں لے کر بھومی دان یگیہ میں آہوتی چڑھانا—تو اس کی حالت سانپ چھچھوندر جیسی ہوئے بنا نہ رہے گی .

—سریش رام بھائی 5-4-1952

خوبصورتی میچ—ایک کلنک

پچھلی تیسری اپریل کو بمبئی میں ایک وہ چیز ہوئی جو دیش کے لئے نہایت شرم کی بات ہے. اخباروں میں وہ اِس طرح چھپی ہے—

''بمبئی' اپریل 3 . 23 برس والی' کلکتے کی شریمتی اندرانی رحمان ایک خوبصورتی میچ میں 'مس انڈیا' چنی گئیں..........اب یہ 'مس انڈیا' کیلیفورنیا (امریکہ) جائینگی جہاں 22 جون سے ہونے والی ''مس یونیورس'' میچ میں شریک ہونگی .

''آج میچ کے پہلے پھولوں کی ناویں نکالی گئیں. سندریاں کھلی موٹر میں برےبورن اسٹیڈیم میں گھمائی گئیں . جہاں فوج اور پولس کے باجے بج رہے تھے اور دس ہزار کی بھیڑ تھی.

''اسٹیڈیم کے باہر کچھ لوگوں نے اِس کے خلاف درشن کیا . اُن کے ہاتھوں میں تختے تھے جن پر کچھ لکھا تھا' اُن میں سے ایک پر تھا—''بھارت 'مس انڈیا' نہیں چاہتا.''

شریمتی رحمان کے سر پر 'مس انڈیا' تاج بمبئی کانگریس کے صدر اور پچھلے بمبئی میئر پاٹل صاحب نے پہنایا.......

میچ میں کل دس بہنیں شریک تھیں..... ..''

بمبئی کے اِس بے شرمی کے تماشے کو ''ہندستان کی بہت انوکھی چیز'' بتایا گیا ہے . اِس کے لئے ہمیں اُن ناسمجھ دس بہنوں سے کوئی شکایت نہیں ہے . وہ بیچاری معصوم بہنیں ہیں جنہیں یہ نہیں معلوم کہ اِس میچ میں شریک ہوکر وہ کن کن طاقتوں کا شکار بنی ہیں . نہ انہیں یہ معلوم کہ اِس سے دیش کی کتنا ہنسی ہوتی ہے .

गांव वाले तबाह हो जायें. अगर यू. पी. सरकार को गांव वाले प्यारे होते, अगर उसे महात्मा गांधी या विनोबा जी के उसूलों में विश्वास होता तो उसका फ़र्ज़ था कि 'भूदान यज्ञ' में हाथ बंटाने का ढोंग न रच के नीचे लिखे काम करती—

1. सूबे के अन्दर मिल के कपड़े की जगह खादी का प्रचार करती और हर सरकारी मुलाज़िम को खादी पहनवाती.

2. क़ुदरती इलाज के साधन जमा कर देती और जान-लेवा बीमारी-फैलाऊ अस्पताल या डाक्टर न बढ़ाती;

3. न्याय के सीधे सादे रास्ते क़ायम करके हाईकोर्ट और अदालतें बन्द करती जिन्हें महात्मा जी ने ग़ुलामी की बेड़ियाँ कहा है.

4. अंगरेज़ी चाल के नौकर उपजाऊ स्कूल कालिज यूनिवर्सिटी बन्द करके नई तालीम के मदरसे या विद्यालय खुलवाती और सूबे के पढ़ुवा लड़के लड़कियों के दिल के अन्दर काम करने की मुहब्बत व इज़्ज़त पैदा करती.

5. हिन्दुस्तानी (हिन्दी और उर्दू दोनों लिखावटों) का प्रचार करके हिन्दू-मुसलमान को एक दूसरे के नज़दीक लाती और लोगों के दिल को हरा भरा बनाती.

6. मिनिस्टरों की तलब व बंगले व भत्ते मोटे मोटे न रख कर पाँच सौ की हद बना देती.

7. झगड़े बदअमनी की हालत में पुलिस फ़ौज की बजाये शान्ति के साधन अपनाती वग़ैरा वग़ैरा.

लेकिन इतना करना तो दूर, इस यू. पी. सरकार ने अमरीका से एक एक्सपर्ट बुला कर अपने गांवों का सत्यानाश करवाना शुरू कर दिया, ट्रैक्टर चलवा रही है, अंगरेज़ी खाद डलवा रही है, हर बात में विदेश की नक़ल कर रही है—यहां तक कि माताओं-बेटियों को क़रीब क़रीब नंगा करके उनकी ख़ूबसूरती मैच भी कराने लगी !

कहां यह सब न्यारे न्यारे काम और कहां भूमिदान यज्ञ के लिये यह फ़रमान ! इसी को कहते हैं हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और.

फिर अगर सरकार को भूमिदान करना ही है तो इस तरह सरकारी एलान निकाल कर हुकूमत की मशीनरी के ज़रिये ज़मीन लेना कहां का न्याय है ? अगर यूं ज़बरदस्ती ज़मीन लेना हिन्सा नहीं है और इन्साफ़ है तो फिर यू. पी. के आख़री लाट साहब का लड़ाई में चन्दा जमा करना अहिंसा और इन्साफ़ के लिहाज़ से जा और बुरी चीज़ समझी जानी चाहिये थी. साफ़ है कि इस तरह फ़रमानों के डर से ज़मीनें छीनना धांधली है, और अत्याचार है.

ؤں والے تباہ ہوجائیں. اگر یو پی سرکار کو گاؤں والے پیارے ہوتے' اگر اُسے مہاتما گاندھی یا ونوبا جی کے اُصولوں میں وشواس ہوتا تو اُس کا فرض تھا کہ ' بھو دان یگیہ' میں ہاتھ بٹانے کا ڈھونگ نہ رچ کے نیچے لکھے کام کرتی—

1. صوبے کے اندر مل کے کپڑے کی جگہ کھادی کا پرچار کرتی اور ہر سرکاری ملازم کو کھادی پہنواتی .

2. قدرتی علاج کے سادھن جمع کر دیتی اور جان لیوا بیماری پھیلاؤ اسپتال یا ڈاکٹر نہ بڑھاتی .

3. نیائے کے سیدھے سادے راستے قائم کرکے ھائی کورٹ اور عدالتیں بند کرتی جنھیں مہاتما جی نے غلامی کی بیڑیاں کہا ھے .

4. انگریزی چال کے نوکر اُپجاؤ اسکول کالج یونیورسٹی بند کر کے نئی تعلیم کے مدرسے یا ودیالے کھلواتی اور صوبے کے پڑھوا لڑکے لڑکیوں کے دل کے اندر کام کرنے کی محبت و عزت پیدا کرتی .

5. ھندستانی (ھندی اور اُردو دونوں لکھاوٹوں) پرچار کر کے ھندو مسلمان کو ایک دوسرے کے نزدیک لاتی اور لوگوں کے دل کو ھرا بھرا بناتی .

6. منسٹروں کی طلب و بنگلے و بھتے موٹے موٹے نہ رکھکر پانچ سو کی حد بنا دیتی .

7. جھگڑے بدامنی کی حالت میں پولیس فوج کی بجائے شانتی کے سادھن اپناتی وغیرہ وغیرہ .

لیکن اتنا کرنا تو دور' اس یو پی سرکار نے امریکہ سے ایکسپرٹ بلا کر اپنے گاؤں کا ستیاناس لگوانا شروع کر دیا' ٹریکٹر چلوا رھی ھے' انگریزی کھاد ڈلوا رھی ھے' ہر چیز میں ودیش کی نقل کر رھی ھے—یہاں تک کہ ماتاؤں بیٹیوں کو قریب قریب ننگا کر کے اُن کی خوبصورتی میچ بھی کرانے لگی !

کہاں یہ سب نیارے نیارے کام اور کہاں بھومی دان یگیہ کے لئے یہ فرمان ! اسی کو کہتے ھیں ھاتھی کے دانت کھانے کے اور دکھانے کے اور .

پھر اگر سرکار کو بھومی دان کرنا ھی ھے تو اس طرح سرکاری اعلان نکال کر حکومت کی مشینری کے ذریعے زمین لینا کہاں کا نیائے ھے ؟ اگر یوں زبردستی زمین لینا ھنسا نہیں ھے اور انصاف ھے تو پھر یو پی کے آخری لاٹ صاحب کا لڑائی میں چندہ جمع کرنا اھنسا اور انصاف کے لحاظ سے جا اور بری چیز سمجھی جانی چاہئے تھی . صاف ھے کہ اس طرح فرمانوں کے ڈر سے زمینیں چھیننا دھاندلی ھے اور اتیاچار ھے .

चुनौती बनते जा रहे हैं. और जब पहली दूसरी
बर को उन्होंने मथुरा में ऐलान किया कि मैं यू. पी.
ंच लाख एकड़ से कम नहीं लूँगा तो सरकार के
पर और भी दहशत सवार हो गई. मगर वह एकदम
रही.

पर धीरे धीरे उसने नीति में तबदीली शुरू की.
ेस वाले निजी रूप में भूदान यज्ञ का समर्थन करने
इसके बाद प्रदेश कांगरस कमेटी से जिला कमेटियों
त जारी हुए कि विनोबा जी की मदद कीजिये. फिर
आज की ताजी खबर है जो हम नीचे दे रहे हैं—

"लखनऊ, अप्रेल 4 उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रदेश की 36,000
पंचायतों को हिदायत दी है कि पांच एकड़ फी गांव
। जमा करके आचार्य विनोबा भावे के "भूमिदान यज्ञ" में
करें.

"30 मार्च से एक पखवाड़ा उत्तर प्रदेश में मनाया जा रहा
कि बे ज़मीन वाले मज़दूरों में बांटने के लिये पांच लाख एकड़
। मिल जाये.

"पखवाड़े के खत्म होने पर यह ज़मीन बनारस के पास जो
री आश्रम है वहां पर आचार्य विनोबा भावे को भेंट दी
गी."

(अमृत बाज़ार पत्रिका 5 अप्रेल)

यू. पी. सरकार का यह फ़र्मान क्या माने रखता है ?
प में कहें तो—

1. दुनिया को दिखाना कि इस सरकार को महात्मा
। या विनोबाजी के उसूलों में कितना गहरा विश्वास है.

2. भूमिदान यज्ञ की कामयाबी का सेहरा अपने
पर बांधना.

3. भूमिदान यज्ञ के नाम पर पंचायतों को अपनी
तली बना कर निकम्मा कर देना.

4. महात्मा गांधी या विनोबा जी के नाम पर गांव
ों से ज़बरदस्ती ज़मीन लेना और जो न दे उसके साथ
ज़ियादती करना..............

5. रचनात्मक कार्य कर्ताओं को बता देना कि तुम
ी मतलब के नहीं हो और सरकार के बिना कुछ नहीं
सकते.

6. विनोबा जी पर अहसान कि उनका संकल्प पूरा
े में कितनी गहरी मदद सरकार ने दी.

7. इस तरह गांव वालों, कार्य कर्ताओं और सब
ग जमा कर अपन मनमानी करते रहना.

मनमानी करते रहने से हमारा मतलब है हर वह
करना और इस तरह करना कि गांव मिट जावें,

ایک چنوتی بنتے جا رہے ہیں ۔ اور جب پہلی دوسری
نومبر کو انہوں نے متھرا میں اعلان کیا کہ میں یو ۔ پی ۔
سے پانچ لاکھ ایکڑ سے کم نہیں لونگا تو سرکار کے دل پر اور
بھی دہشت سوار ہوگئی۔ مگر وہ ایکدم چپ رہی ۔

پر دھیرے دھیرے اس نے نیتی میں تبدیلی شروع
کی ۔ کانگریس والے نجی روپ میں بھودان یگیہ کا
سمرتھن کرنے لگے ۔ اس کے بعد پردیش کانگریس کمیٹی
سے ضلع کمیٹیوں کو خط جاری ہوئے کہ ونوبا جی کی مدد
کیجئے ۔ پھر اب آج کی ایک تازی خبر ہے جو ہم نیچے دے
رہے ہیں ۔

" لکھنو' اپریل 4 اتر پردیش سرکار نے پردیش کی
36,000 گاؤں پنچایتوں کو ہدایت دی ہے کہ پانچ ایکڑ
فی گاؤں زمین جمع کر کے آچاریہ ونوبا بھاوے کے " بھومی
یگیہ " میں مدد کریں ۔

" 30 مارچ سے ایک پکھواڑا اتر پردیش میں منایا
جا رہا ہے تا کہ بے زمین والے مزدوروں میں بانٹنے کے لئے
پانچ لاکھ ایکڑ زمین مل جائے ۔

" پکھواڑے کے ختم ہونے پر یہ زمین بنارس کے پاس
جو سیواپوری آشرم ہے وہاں پر آچاریہ ونوبا بھاوے کو بھینٹ
دی جائیگی ۔"

(امرت بازار پترکا—5 اپریل)

یو ۔ پی ۔ سرکار کا یہ فرمان کیا معنی رکھتا ہے ؟
سنکشیپ میں کہیں تو —

1. دنیا کو دکھانا کہ اس سرکار کو مہاتما گاندھی
یا ونوبا جی کے اصولوں میں کتنا گہرا وشواس ہے ۔

2. بھومی دان یگیہ کی کامیابی کا سہرا اپنے سر
پر باندھنا ۔

3. بھومی دان یگیہ کے نام پر پنچایتوں کو اپنی
کٹھ پتلی بنا کر نکما کر دینا ۔

4. مہاتما گاندھی یا ونوبا جی کے نام پر گاؤں والوں
سے زبردستی زمین لینا اور جو نہ دے اس کے ساتھ خوب
زیادتی کرنا ......

5. رچناتمک کاریہ کرتاؤں کو بتا دینا کہ تم کسی
مطلب کے نہیں ہو اور سرکار کے بنا کچھ نہیں کر سکتے ۔

6. ونوبا جی پر احسان کہ ان کا سنکلپ پورا کرنے
میں کتنی گہری مدد سرکار نے دی ۔

7. اس طرح گاؤں والوں کاریہ کرتاؤں اور سب پر
رنگ جمع کر اپنی من مانی کرتے رہنا ۔

من مانی کرتے رہنے سے ہمارا مطلب ہے ہر وہ
کام کرنا اور اس طرح کرنا کہ گاؤں مٹ جائیں'

तजरबेकार और पहुँचे हुए नेता या मिनिस्टर जैसे बाबू सम्पूर्णानन्द इस तरह की कीचड़ उछाल कर दूसरों के मुँह पर कालिख लगाते हैं. हमें कोई शुबा नहीं कि अगर इनका यह ढंग बना रहा या दूसरे मिनिस्ट्रों ने इनसे तालीम ली तो पंडित जवाहरलाल नेहरू के लोकराज या सेक्युलर स्टेट के महल को गिराने में पहली चोट इन्हीं से पहुँचेगी. ऐसी हालत में कांगरेस का फ़िरक़े बन्दी या जात-पात पर अपनी हर बैठक में ठहरावें लाना और पास करना कराना बेमाने हो जाता है. सेक्युलर स्टेट का महल बनाने के लिये जवाहरलाल जैसे ऊपर से चुनाई करते जायेंगे तो श्री सम्पूर्णानन्द जैसे नीचे से ईंटें ढाते जायेंगे.

बाबू सम्पूर्णानन्द जी के बयान का निचोड़ यही है कि मुसलमानों को किसी तरह डरा धमकाकर उन्हें हमेशा के लिये कांगरेस का ताबेदार बना लिया जाये. उनकी तमन्ना है कि आगे चुनावों में किसी को वोट कांगरेस को मिले या न मिले कम से कम मुसलमान आंख बन्द करके सदा कांगरेस की पेटी में ही अपनी पर्ची डालता रहे. कांगरेस सदर और बड़े वज़ीर नेहरू का ध्यान हम इस वाक़ये की तरफ़ दिलाना चाहते हैं और उन्हें सोचना चाहिये कि क्या इस तरह के भेद भाव रखने वाला कोई शख़्स किसी लोकराज या सेक्युलर स्टेट में मिनिस्टर रहने के लायक़ है या नहीं ?

20. 3. 1952 —सुरेश रामभाई

تجربہ کار اور پہونچے ہوئے نیتا یا منسٹر جیسے بابو سمپورنانند اِس طرح کی کیچڑ اُچھال کر دوسرے کے منہ پر کالکھ لگاتے ہیں . ہمیں کوئی شبہ نہیں کہ اگر اِن کا یہ ڈھنگ بنا رہا یا دوسرے منسٹروں نے اِن سے تعلیم لی تو پنڈت جواہر لال نہرو کے لوک راج یا سیکولر اسٹیٹ کے محل کو گرانے میں پہلی چوٹ اِنہیں سے پہونچیگی . ایسی حالت میں کانگریس کا فرقے بندی یا جات پات پر اپنی ہر بیٹھک میں ٹھہراؤ لانا اور پاس کرنا کرانا بے معنے ہو جاتا ہے . سیکولر اسٹیٹ کا محل بنانے کے لئے جواہر لال جیسے اوپر سے چنائی کرتے جائیں گے تو شری سمپورنانند جیسے نیچے سے اینٹیں ڈھاتے جائیں گے .

بابو سمپورنانند جی کے بیان کا نچوڑ یہی ہے کہ مسلمانوں کو کس طرح ڈرا دھمکا کر اُنہیں ہمیشہ کے لئے کانگریس کا تابعدار بنا لیا جائے . اُن کی تمنا ہے کہ آگے چناؤں میں کسی کا ووٹ کانگریس کو ملے یا نہ ملے کم سے کم مسلمان آنکھ بند کرکے صدر کانگریس کی پیٹی میں ہی اپنی پرچی ڈالتا رہے . کانگریس صدر اور بڑے وزیر نہرو کا دھیان ہم اِس واقعہ کی طرف دلانا چاہتے ہیں اور اُنہیں سوچنا چاہئے کہ کیا اِس طرح کے بھید بھاؤ رکھنے والا کوئی شخص کسی لوک راج یا سیکولر اسٹیٹ میں منسٹر رہنے کے لائق ہے یا نہیں؟

—سریش رام‌بھائی 20 . 3 . 1952

यू. पी. सरकार और भूमिदान—

इधर कई महीने से विनोबा जी हमारे उत्तर प्रदेश में घूम रहे हैं उनकी अनोखी साधना लोगों के दिल में जगह कर रही है और उनका भूमिदान यज्ञ एक अहिंसक इन्क़िलाब का निशान बनता जा रहा है.

हम बड़ी एहतियात से यह भी देख रहे हैं कि यू. पी. की कांगरेस संस्था और कांगरेस सरकार पर विनोबा जी की कामयाबी का क्या असर पड़ रहा है. हमें लगा कि विनोबा जी का इस तरह गांव गांव घूमने और बात की बात में लोगों से ज़मीनें ले लेने से कांगरेस या सरकार (अमली रूप से दोनों एक ही हैं और कोई फ़र्क़ की ज़रूरत नहीं) को ऐसा महसूस होता है मानो उसके तले से ज़मीन निकलती जाती है. कौन नहीं जानता कि यू. पी. में ज़मीदारी ख़ात्मा तहरीक 1937 से चल रही है पर पंद्रह बरस में जो काम सरकार पूरी ताक़त लगा कर भी न कर सकी वह विनोबा जी आसानी से करते चले जा रहे हैं. इस लिये जाने अनजाने विनोबा जी यू. पी. सरकार के लिये

یو . پی . سرکار اور بھومی دان

ادھر کئی مہینے سے ونوبا جی ہمارے اُتر پردیش میں گھوم رہے ہیں . ان کی انوکھی سادھنا لوگوں کے دل میں جگہ کر رہی ہے اور اُن کا بھومی دان یگیہ ایک اہنسک انقلاب کا نشان بنتا جا رہا ہے .

ہم بڑی احتیاط سے یہ بھی دیکھ رہے ہیں کہ یو پی کی کانگریس سنستھا اور کانگریس سرکار پر ونوبا جی کی کامیابی کا کیا اثر پڑ رہا ہے . ہمیں لگا کہ ونوبا جی کا اس طرح گاؤں گاؤں گھومنے اور بات کی بات میں لوگوں سے زمینیں لے لینے سے کانگریس یا سرکار (عملی روپ سے دونوں ایک ہی ہیں اور کوئی فرق کی ضرورت نہیں) کو ایسا محسوس ہوتا ہے مانو اس کے تلے سے زمین نکلتی جاتی ہے . کون نہیں جانتا کہ یو . پی . میں زمینداری خاتمہ تحریک 1937 سے چل رہی ہے پر پندرہ برس میں جو کام سرکار پوری طاقت لگا کر بھی نہ کر سکی وہ ونوبا جی آسانی سے کرتے چلے جا رہے ہیں . اس لئے جانے انجانے ونوبا جی یو . پی . سرکار کے لئے

जगह मुसलमानों ने इस के ख़िलाफ़ वोट डाला या
ओं ने उसके हक़ में वोट डाला. मालूम कैसे हुआ ?
जानना चाहते हैं कि क्या वोट गिनते वक़्त या गिनने
द हिन्दू मुसलमान के लिहाज़ से कोई तमीज़ की
या नहीं ? अगर की गई है तो किस के हुक्म से
किस क़ानून के मुताबिक़ और इसकी ख़बर खुले
प्रेस को क्यों न दी गई ? हमारा ख़याल है कि
नन्द जी के बयान से साफ़ शक पैदा होता है कि
गिनने में उस ग़ैर जानिबदारी और इन्साफ़ से काम
लिया गया जो कि लोकराज या डिमाक्रेसी का पहला
ज़ा है.

सके बाद हम सम्पूर्णानन्द जी की शिकायत पर
हैं. हम जानना चाहते हैं कि उन्हें मुसलमानों से यह
यत क्यों है कि उन्होंने कांगरेस के हक़ में वोट
डाला. क्या सम्पूर्णानन्द जी यह समझते हैं कि
स्तान बन जाने के बाद हिन्दुस्तान के मुसलमान की
द हस्ती ख़त्म हो गई और वह सिर्फ़ हिन्दू का
बन कर ही रह सकता है ? अगर यह नहीं, तो
वह यह समझते हैं कि हिन्दुस्तान में जितने मुसलमान
हैं वह हुकूमत की बदौलत और मेहरबानी से
इसलिये उन्हें हुकूमत की हां में हां मिलाना चाहिये.
यह भी नहीं तो क्या सम्पूर्णानन्द जी यह समझते
हिन्दुस्तान के मुसलमान की ख़ैरियत इसी में है
ह आंख बन्द करके कांगरेस का साथ देता रहे और
ुरे में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं करे ? किसी के दिल का
तो वही जानता है, पर अगर यह ख़याल किसी
के दिल में दौड़ रहे हैं तो हम कहेंगे वह हिन्दू नहीं
गर किसी कांगरेसी के दिल में दौड़ रहे हैं तो वह
सी नहीं है और अगर किसी इन्सान के दिल में
रहे हैं तो वह इन्सान नहीं है.

म पूछते हैं कि किसी को क्या अख़्तियार है कि हम से
त करे कि तुमने एक कांगरेसी हिन्दू को वोट न
एक कम्यूनिस्टी मुसलमान को क्यों वोट दिया. हमने
चाहा वोट दिया अपनी मरज़ी, अपनी तबियत,
पसंद के मुताबिक़ वोट दिया और इसलिये दिया
यह हमारा महज़ विधान से मिला हक़ नहीं बल्कि
जात हक़ है. हम चाहे चीफ़ मिनिस्टर के हक़ में
या ख़िलाफ़ आप बीच में बोलने वाले कौन ? और
आप यह सवाल हमसे पूछते हैं और बीच में
हैं तो आपका बैलट बाक्स झूठा है, आपका चुनाव
, आपका लोकराज झूठा है, और उसके अलमबरदार
ी के पैरोकार नहीं बल्कि शैतानियत के पुतले हैं.
अफ़सोस होता है कि एक पढ़े-लिखे, पुराने

قلں جگہ مسلمانوں نے اس کے خلاف ووٹ ڈالا یا ہندوؤں
نے اس کے حق میں ووٹ ڈالا معلوم کیسے ہوا ؟ ہم جاننا
چاہتے ہیں کہ کیا ووٹ گنتے وقت یا گننے کے بعد ہندو
مسلمان کے لحاظ سے کوئی تمیز کی گئی ہے یا نہیں؟ اگر کی
گئی ہے تو کس کے حکم سے اور کس قانون کے مطابق اور
اس کی خبر کھلے عام پریس کو کیوں نہ دی گئی ؟ ہمارا
خیال ہے کہ سمپورنانند جی کے بیان سے صاف شک
پیدا ہوتا ہے کہ ووٹ گننے میں اس غیرجانبداری اور انصاف
سے کام نہیں لیا گیا جو کہ لوک راج یا ڈیماکریسی کا پہلا
تقاضہ ہے .

اس کے بعد ہم سمپورنانند جی کی شکایت پر آتے
ہیں . ہم جاننا چاہتے ہیں کہ انہیں مسلمانوں سے یہ
شکایت کیوں ہے کہ انہوں نے کانگریس کے حق میں ووٹ
نہیں ڈالا . کیا سمپورنانند جی یہ سمجھتے ہیں کہ
پاکستان بن جانے کے بعد ہندستان کے مسلمان کی آزاد
ہستی ختم ہوگئی اور وہ صرف ہندو کا بھکتی بن کر ہی
رہ سکتا ہے ؟ اگر یہ نہیں، تو کیا وہ یہ سمجھتے ہیں کہ
ہندستان میں جتنے مسلمان زندہ ہیں وہ حکومت
کی بدولت اور مہربانی سے اور اس لئے انہیں حکومت
کی ہاں میں ہاں ملانا چاہئے . اگر یہ بھی نہیں تو
کیا سمپورنانند جی یہ سمجھتے ہیں کہ ہندستان کے
مسلمان کی خیریت اسی میں ہے کہ وہ آنکھ بند کرکے
کانگریس کا ساتھ دیتا رہے اور بھلے برے میں ذرا بھی
فرق نہیں کرے ؟ کسی کے دل کا حال تو وہی جانتا ہے،
پر اگر یہ خیال کسی ہندو کے دل میں دوڑ رہے ہیں تو
ہم کہیں گے وہ ہندو نہیں ہے، اگر کسی کانگریسی کے دل
میں دوڑ رہے ہیں تو وہ کانگریسی نہیں ہے اور اگر کسی
انسان کے دل میں دوڑ رہے ہیں تو وہ انسان نہیں ہے.

ہم پوچھتے ہیں کہ کسی کو کیا اختیار ہے کہ ہم
سے دریافت کرے کہ تم نے ایک کانگریسی ہندو کو ووٹ
نہ دے کر ایک کمیونسٹی مسلمان کو کیوں ووٹ دیا .
ہم نے جسے چاہا ووٹ دیا اپنی مرضی، اپنی طبیعت،
اپنی پسند کے مطابق ووٹ دیا اور اس لئے دیا کیونکہ
یہ ہمارا محض ودھان سے ملا حق نہیں بلکہ جنم جات
حق ہے . ہم چاہے چیف منسٹر کے حق میں ووٹ
دیں یا خلاف آپ بیچ میں بولنے والے کون ؟ اور اگر آپ
یہ سوال ہم سے پوچھتے ہیں اور بیچ میں بولتے ہیں
تو آپکا بیلٹ باکس جھوٹا ہے، آپ کا چناؤ جھوٹا ہے،
آپ کا لوک راج جھوٹا ہے اور اس کے علمبردار لوک شاہی
کے پیروکار نہیں بلکہ شیطانیت کے پتلے ہیں .

ہمیں افسوس ہوتا ہے کہ ایک پڑھے لکھے، پرانے

हमारी राय — ہماری رائے

चुनाव और मुसलमान

जिसे पच्छिम की ज़बान में लोकराज या डिमाक्रेसी कहा जाता है उसकी बुनियाद में चुनाव है और चुनाव माने बहुगिनत का ज़बरदस्ती से कमगिनत के ऊपर अपना रंग व असर क़ायम करना और उसे अपना ताबेदार बनाना. मिसाल के लिये हमारे देश में अभी चुनाव हुये हैं. जहां जहां कांगरेस जीती वहां के लिये कहा गया कि लोकराज या डिमाक्रेसी की विजय हुई और जहां कांगरेस हारी वहां लोकराज की हार समझी गई. इसी तरह जिसने कांगरेस के लिये वोट दिया वह लोकराज का अलमबरदार समझा गया और जिसने कांगरेस के खिलाफ़ वोट दिया वह लोकराज का दुश्मन, कम्यूनिस्ट, फ़िरक़ापरस्त या निकम्मा समझा गया.

अपनी इस राय की सफ़ाई में हम यू. पी. के शिक्षा मंत्री श्री सम्पूर्णानन्द जी के उस बयान की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहते हैं, जिसमें उन्होंने यू. पी. के मुसलमानों से—ख़ासकर शहराती मुसलमानों से—अपनी शिकायत ज़ाहिर की है. उनको शिकायत है कि बनारस के ग़ैर-मोमिन सुन्नी मुसलमानों ने 'कसकर' कांगरेस के ख़िलाफ़ वोट दिया; उनको शिकायत है कि इलाहाबाद में मुसलमानों की ज़बरदस्त तादाद ने कांगरेसी हिन्दू के ख़िलाफ़ एक कम्युनिस्ट मुसलमान के हक़ में वोट दिया; उनको शिकायत है कि बरेली में एक हलके में जहां मुसलमान वोटर 40 फ़ी सदी थे उनमें से मुश्किल से एक तिहाई ने कांगरेसी हिन्दू के हक़ में वोट डाले. सम्पूर्णानन्द जी इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि चुनाव से फ़िरक़ा वाराना ताल्लुक़ात पर चोट पहुंची है और इसमें एक खाई पड़ गई है जिसे पाटने की ज़रूरत है.

खाई कैसे पटे या सम्पूर्णानन्द जी के जैसे रुख़ से वह कहां तक पाटी जा सकती है इसकी चर्चा तो हम ज़रूर करेंगे. पहले हम यह जानना चाहते हैं कि इन मिनिस्टर साहब को बैलट बाक्स के पेट का यह राज़ कि

چناؤ اور مسلمان

جسے پچھم کی زبان میں لوک راج یا ڈیماکریسی ا جاتا ہے اُس کی بنیاد میں چناؤ ہے اور چناؤ معنی کثرت کا زبردستی سے کم کثرت کے اوپر اپنا رنگ و اثر ئم کرنا اور اسے اپنا تابعدار بنانا . مثال کے لئے ہمارے ش میں ابھی چناؤ ہوئے ہیں . جہاں جہاں کانگریس یتی وہاں کے لئے کہا گیا کہ لوک راج یا ڈیماکریسی کی ے ہوئی اور جہاں کانگریس ہاری وہاں لوک راج کی ار سمجھی گئی . اسی طرح جس نے کانگریس کے لئے ٹ دیا وہ لوک راج کا علمبردار سمجھا گیا اور جس نے نگریس کے خلاف ووٹ دیا وہ لوک راج کا دشمن' میونسٹ' فرقہ پرست یا نکما سمجھا گیا .

اپنی اس رائے کی صفائی میں ہم یو .پی کے شکشا منتری شری سمپورنا نند جی کے اُس بیان کی طرف دھیان لانا چاہتے ہیں جس میں اُنہوں نے یو . پی . کے مسلمانوں سے—خاصکر شہراتی مسلمانوں سے—اپنی شکایت ظاہر کی ہے . اُن کو شکایت ہے کہ بنارس کے غیر مومن سنی مسلمانوں نے ' کس کر ' کانگریس کے خلاف ٹ دیا؛ اُن کو شکایت ہے کہ الہ آباد میں مسلمانوں کی زبردست تعداد نے کانگریسی ہندو کے خلاف ایک کمیونسٹ مسلمان کے حق میں ووٹ دیا؛ اُن کو شکایت ہے کہ بریلی یں ایک حلقے میں جہاں مسلمان ووٹر 40 فی صدی ، ان میں سے مشکل سے ایک تہائی نے کانگریسی ہندو ، حق میں ووٹ ڈالے . سمپورنانند جی اِس نتیجے پر ہونچے ہیں کہ چناؤ سے فرقہ وارانہ تعلقات پر چوٹ پہنچتی ہے اور اس میں کھائی پڑ گئی ہے جسے پاٹنے کی ضرورت ہے .

کھائی کیسے پٹے یا سمپورنا نند جی کے جیسے رخ ، وہ کہاں تک پاٹی جا سکتی ہے اِس کی چرچا تو م ضرور کرینگے . پہلے ہم یہ جاننا چاہتے ہیں کہ اِن منسٹر صاحب کو بیلٹ بکس کے پیٹ کا یہ راز کہ

5. हिन्दुस्तान की पुरानी पार्लियामेन्ट खत्म हुई. पार्लियामेन्ट का पहला इजलास मई में होगा.

6. मास्को पार्लियामेन्ट में रूस का बजट पेश—फौज का बजट का केवल 23 फी सदी खर्च. ब्रिटेन के मजदूर वालों में ताना तानी.

7. अमरीकी राजपति का एलान कि हिन्दुस्तान को यार से नहीं बल्कि आर्थिक और तकनीकी मदद ही निज्म से बचा सकते हैं. बम्बई के पास से 19640 सोना एक ट्रक में पकड़ा गया.

8. इन्डोचीन में फ्रांसीसियों के वास्ते और जियादा रीकी मदद चाहिये—ट्रूमन.

9. लोक राज के नाकामयाब होने पर कम्यूनिज्म आयेगा—मिसेज रुजवेल्ट. रायल सीमा के अकाल-इलाक़े में फूड मिनिस्टर मुन्शी का दौरा. सरकार ों के भाव पर निगाह लगातार रखे है—इन्डस्ट्री स्टर मेहताब.

10. कम्यूनिस्टों को हमारी शर्तों के लिये मजबूर जाये—यूनो ट्रस डेलीगेट लनंटच ज्वाय का एलान. स्तान में पेन्सिलीन नाम की दवा बनाने का कारखाना . सारे देश के रुई बाजार पर संकट.

11. कोरिया सुलह की बात चीत अटक गई. जी पार्लियामेन्ट में नया 'पौंड बचाऊ' बजट पेश, ने जरमनी के मामले में चार बड़ों की कान्फ्रेंस की ीज पेश की.

12. लड़ाई का खतरा कम होता जा रहा है—ल टीटो. ट्रावनकोर कोचीन में कांगरेस मिनिस्ट्री गई.

13. हिन्दुस्तान को अमरीकी मदद की सख्त जरूरत अमरीकी सेक्रेट्री ऐचीसन का एलान.

14. डिस आर्मामेन्ट कान्फ्रेंस में रूसी नुमायन्दे मरीका पर "कीड़े" फेंकने का इलजाम लगाया. .ऊ की असेम्बली में बजट पेश किया गया.

15. मिस्री बड़े वजीर ने वफ्द पार्टी पर "बगावत ाने" का इलजाम लगाया, मूँगफली, अनाज वगैरा पर सरकार ने जावक ड्यूटी हटा दी. मद्रास बजट में ल मदद के लिये पांच करोड़ रुपये की तजवीज. बंगाल वर्नर मुकर्जी सिर्फ पांच सौ रुपया माहवार तनखा लेंगे.

5. هندستان کی پرانی پارلیامنٹ ختم هوئی . نئی پارلیامنٹ کا پهلا اجلاس مئی میں هوگا .

6. ماسکو پارلیامنٹ میں روس کا بجٹ پیش— فوج پر کل بجٹ کا کیول 23 فی صدی خرچ . برٹن کے مزدور دل والوں میں تناتنی .

7. امریکی راج پتی کا اعلان که هندستان کو هتهیار سے نہیں بلکه آرتهک اور تکنی کی مدد هی کمیونزم سے بچا سکتے هیں . بمبئی کے پاس سے 19640 توله سونا ایک ٹرک میں پکڑا گیا .

8. انڈوچین میں فرانسیسیوں کے واسطے اور زیادہ امریکی مدد چاهئے—ٹرومین .

9. لوک راج کے ناکامیاب هونے پر کمیونزم آجائے گا —مسیز روزویلٹ . رائل سیما کے اکال زدہ علاقے میں فوڈ منسٹر منشی کا دورا . سرکار چیزوں کے بهاؤ پر نگاہ لگاتار رکھے ہے—انڈسٹری منسٹر مہتاب .

10. کمیونسٹوں کو همارے شرطوں کے لئے مجبور کیا جائے—یونو ٹرس ڈیلی گیٹ لرنگز جوائے کا اعلان . هندستان میں پنسلین نام کی دوا بنانے کا کارخانه کهلا . سارے دیش کی روئی بازار پر سنکٹ .

11. کوریا صلح کی بات چیت اٹک گئی. انگریزی پارلیامنٹ میں 'نیا پونڈ بچاؤ' بجٹ پیش . روس نے جرمنی کے معاملے میں چار بڑوں کی کانفرنس کی تجویز پیش کی .

12. لڑائی کا خطرہ کم هوتا جا رها ہے —مارشل ٹیٹو. ٹراونکور کوچین میں کانگریس منسٹری بن گئی۔

13. هندستان کو امریکی مدد کی سخت ضرورت ہے—امریکی سکریٹری ایچیسن کا اعلان .

14. ڈس آرمامینٹ کانفرنس میں روسی نمائندے نے امریکه پر ''کیڑے'' پھینکنے کا الزام لگایا . لکھنؤ کی اسمبلی میں بجٹ پیش کیا گیا .

15. مصری بڑے وزیر نے وفد پارٹی پر ''بغاوت بھڑکانے'' کا الزام لگایا . مونگ پھلی' اناج وغیرہ پر هند سرکار نے جاوک ڈیوٹی هٹا دی . مدراس بجٹ میں اکال مدد کے لئے پانچ کروڑ روپئے کی تجویز . بنگال کے گورنر مکرجی صرف پانچ سو روپیه ماهوار تنخواہ لیں گے.

24. तीन साल में फ़्रांसीसी सिपाही पीछे हटाये. बड़े वज़ीर नेहरू ने कानपुर में मुलाज़िम बीमा स्कीम की शुरुआत की और सब लोगों से सहयोग की अपील की.

25. फ़्रांस ने "उसूली तौर पर" तियूनिस में जनता की ख़ुद मुख़्तारी का ख़याल मंज़ूर किया. चीनी बड़े वज़ीर चू-आंग की शिकायत कि अमरीका ने कोरिया में "कीड़े" छोड़े. बम्बई में एक प्रेस कान्फ़्रेंस के दौरान में अमरीकी राजदूत ने प्रसिद्ध गांधीवादी अर्थशास्त्री डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा को "बहुत बेवक़ूफ़ आदमी" कहा क्योंकि कुमारप्पाजी अमरीकी मदद को हिन्दुस्तान के गले में "फन्दा" मानते हैं.

26. अंगरेज़ी पार्लियामेन्ट में लेबर मोरान हार गया—चर्चिल की विदेशी नीति पास हो गई. जनता हिसाब किताब कमेटी ने पार्लियामेन्ट को रिपोर्ट पेश की—बहुत सी ख़ामियों की शिकायत.

27. यूनो के सेक्रेट्री मिस्टर लाई ने कहा कि दुनिया की हालत पहले से बेहतर है. मरहूम अमरीकी राज पति रूज़वेल्ट की बीवी मिसेज़ इलानेर रूज़वेल्ट नई दिल्ली पहुंची.

28. बड़े वज़ीर नेहरू ने नई दिल्ली में प्रेस कान्फ़्रेंस की.

29. फ़्रांसीसी सरकार ने इस्तीफ़ा दिया. पार्लियामेन्ट में फ़ाइनेन्स बिल पेश किया गया. एहतियाती नज़रबन्दी क़ानून छै माह तक के लिये और बढ़ा दिया गया.

मार्च.

1. मिस्र में अली मेहर पाशा ने इस्तीफ़ा दिया. बादशाह फ़ारूक़ ने हिलाली पाशा से मिनिस्ट्री बनाने को कहा. हाँग कांग की हद के क़रीब अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ बलवा.

2. बर्मा में च्यांग काई शेक की फ़ौजों में अमरीकी कम्पनियां डाकोटा जहाज़ों के ज़रिये सामान पहुँचा रही हैं. पंडित नेहरू ने सिन्दरी (बिहार) में अंगरेज़ी खाद बनाने का कारख़ाना खोला.

3. वर्ल्ड बैंक के सदर ब्लैक का एलान कि हिन्दुस्तान की हवा बाहरी पूंजी के लिये मुनासिब है. हिन्द अमरीकी समझौते में प्लानिंग कमीशन सेन्ट्रल कमेटी का काम करेगा.

4. दक्खिनी जापान में हुल्लड़ चला और ज्वार भाटा. अफ़्रीका की नेशनल कांगरेस ने बड़े वज़ीर डाक्टर मलान को लिखा कि छै अप्रैल से हम काला क़ानून तोड़ेंगे. 31 जनवरी तक हिन्दुस्तान में 13 लाख 28 हज़ार टन गेहूँ अमरीका से आ चुका. आंध्र के रायल सीमा ज़िलों में अकाल

24. ویتنام میں فرانسیسی سپاہی پیچھے ہٹے۔ بڑے وزیر نہرو نے کانپور میں ملازم بیما اسکیم شروعات کی اور سب لوگوں سے سہیوگ کی اپیل کی۔

25. فرانس نے "اصولی طور پر" تیونس میں جنتا کی خود مختاری کا خیال منظور کیا۔ چینی بڑے وزیر چوں آئے کی شکایت کہ امریکہ نے کوریا میں "کیڑے" چھوڑے۔ بمبئی میں ایک پریس کانفرنس کے دوران میں امریکی راج دوت نے پرسدھ گاندھی وادی ارتھ شاستری ڈاکٹر جے۔ سی۔ کماریپا کو "بہت بیوقوف آدمی" کہا کیونکہ کماریپا جی امریکی مدد کو ہندستان کے گلے میں "پھندا" مانتے ہیں۔

26. انگریزی پارلیامنٹ میں لیبر موران ہار گیا۔ چرچل کی ودیشی نیتی پاس ہوگئی۔ جنتا حساب کتاب کمیٹی نے پارلیامنٹ کو رپورٹ پیش کی۔ بہت سی خامیوں کی شکایت۔

27. یونو کے سکریٹری مسٹر لائی نے کہا کہ دنیا کی حالت پہلے سے بہتر ہے۔ مرحوم امریکی راج پتی روزویلٹ کی بیوی مسز الانیر روزویلٹ نئی دلی پہونچی۔

28. بڑے وزیر نہرو نے نئی دلی میں پریس کانفرنس کی۔

29. فرانسیسی سرکار نے استعفیٰ دیا۔ پارلیامنٹ میں فائننس بل پیش کیا گیا۔ احتیاطی نظر بندی قانون چھ ماہ کے لئے اور بڑھا دیا گیا۔

مارچ۔

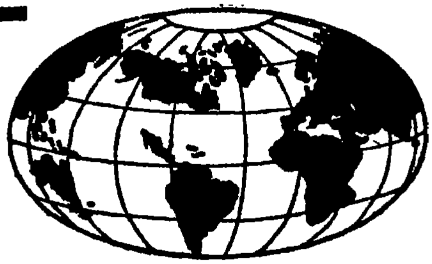
1. مصر میں علی مہر پاشا نے استعفیٰ دیا۔ بادشاہ فاروق نے ہلالی پاشا سے منسٹری بنانے کو کہا۔ ہانگ کانگ کی حد کے قریب انگریزوں کے خلاف بلوا۔

2. برما میں چیانگ کائی شیک کی فوج میں امریکی کمپنیاں ڈکوٹا جہازوں کے ذریعے سامان پہونچا رہی ہیں۔ پنڈت نہرو نے سندری (بہار) میں انگریزی کھاد بنانے کا کارخانہ کھولا۔

3. ورلڈ بینک کے صدر بلیک کا اعلان کہ ہندستان کی ہوا باہری پونجی کے لئے مناسب ہے۔ ہند امریکی سمجھوتے میں پلاننگ کمیشن سنٹرل کمیٹی کا کام کرے گا۔

4. دکھنی جاپان میں ہلڑ چلا اور جوار بھاٹا۔ افریقہ کی نیشنل کانگریس نے بڑے وزیر ڈاکٹر ملان کو لکھا کہ چھ اپریل سے ہم کالا قانون توڑیں گے۔ 31 جنوری تک ہندستان میں 13 لاکھ 28 ہزار ٹن گیہوں امریکہ سے آچکا۔ آندھرا کے رائل سیما ضلعوں میں اکال۔

…निया …का …हाल



د… کا …ال

1.

6. अगर हिन्दुस्तान कम्यूनिस्ट हो गया तो दुनिया …माजादी खतरे में पड़ जायेगी—अमरीकी नायब …सेक्रेट्री का ऐलान. उत्तर अटलांटिक दल में तुर्की और … को शरीक होने की दावत.

…7. वर्ल्ड बैन्क और ईरान की बात चीत टूट गई. …समझौता न हो सका. आपसी मदद के लिये नेपाल …दुस्तान में राजीनामा.

…8. लन्दन में अमरीका, हालैंड और फ्रांस के …मिनिस्ट्रों की बैठक. उत्तर प्रदेश की लोकल बाडीज (…नसपिल्टी वग़ैरा) के हिसाब-किताब में तरह तरह …ड़ियां, ग़बन व अन्धेर—जांच करने वालों की …ना रिपोर्ट.

…9. चीन ने ल्हासा में फ़ौजी हेडक्वार्टर क़ायम … नई दिल्ली में अनाज मिनिस्ट्रों की बैठक.

…0. अंगरेज़ों ने भी एटम-बम बना लिया. आस्ट्रेलिया … का तजुर्बा किया जायेगा. यू पी में चावल के राशन … की की जायेगी—यू. पी. सपलाई मिनिस्टर का … में एलान.

…1. लिस्बन में उत्तर अटलांटिक दल की ताक़तों … मीटिंग. साढ़े चौदह लाख जवानों की फ़ौज खड़ी … की तैयारी. ब्रिटेन के विदेश मंत्री ईडेन का मिस्री … वज़ीर को ख़त. दिल्ली में बड़े वज़ीर के हाथों फ़िल्मी … की शुरुआत.

…2. जापान में अमरीकी फ़ौज रखने पर टोकियो के … रों में नाराज़गी. ट्यूनिस की मसजिद में 15 औरतों … ताल शुरू कर दी. नई दिल्ली पार्लियामेन्ट में रेलवे … —25 करोड़ की आमदनी. पूर्वी पाकिस्तान में … भाषा पर बलवे—विद्यार्थियों पर गोली, आठ … .

… च्यांग काईशेक की फ़ौज लाल चीन पर पूर्वी … तरफ़ से हमला करने की तैयारी में.

فروری .

16. اگر ہندستان کمیونسٹ ہوگیا تو دنیا کی آزادی خطرے میں پڑ جائے گی—امریکی نائب اسٹیٹ سکریٹری کا اعلان . اتر اٹلانٹک دل میں ترکی اور ایران کو شریک ہونے کی دعوت .

17. ورلڈ بینک اور ایران کی بات چیت ٹوٹ گئی' کوئی سمجھوتہ نہ ہوسکا . آپسی مدد کے لئے نیپال و ہندستان میں راضی نامہ .

18. لندن میں امریکہ' ہالینڈ اور فرانس کے ودیشی منسٹروں کی بیٹھک . اتر پردیش کی لوکل باڈیز (میونسپلٹی وغیرہ) کے حساب کتاب میں طرح طرح کی گڑبڑیاں غبن و اندھیر—جانچ کرنے والوں کی سالانہ رپورٹ .

19. چین نے لہاسہ میں فوجی ہیڈ کوارٹر قائم کئے . نئی دلی میں اناج منسٹروں کی بیٹھک .

20. انگریزوں نے بھی ایٹم بم بنا لیا . آسٹریلیا میں اس کا تجربہ کیا جائے گا .

یو . پی میں چاول کے راشن میں کٹوتی کی جائے گی—یو . پی سپلائی منسٹر کا دلی میں اعلان .

21. لسبن میں اتر اٹلانٹک دل کی طاقتوں کی میٹنگ . ساڑھے چودہ لاکھ جوانوں کی فوج کھڑی کرنے کی تیاری . برٹین کے ودیش منتری ایڈن کا مصری بڑے وزیر کو خط . دلی میں بڑے وزیر کے ہاتھوں فلمی تیوہار کی شروعات .

22. جاپان میں امریکی فوج رکھنے پر ٹوکیو کے اخباروں میں ناراضگی . ٹیونس کی مسجد میں 15 عورتوں نے ہڑتال شروع کردی . نئی دلی پارلیمنٹ میں ریلوے بجٹ پیش—25 کروڑ کی آمدنی ہوئی . پاکستان میں بھاشا کے سوال پر بلوے—ودیارتھیوں پر گولی' آٹھ مارے گئے .

23. چیانگ کائی شیک کی فوج لال چین پر پورب برما کی طرف سے حملہ کرنے کی تیاری میں .

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

3. **अमिट रेखाएं,** लेखक—सत्यवती मल्लिक, पहली बार. 1952 सफ़े 246, क़ीमत तीन रुपये.

4. **रीढ़ की हड्डी,** सम्पादक—विष्णु प्रभाकर, पहली बार 1952 सफ़े 147, दाम एक रुपया आठ आना.

भारत जैन महा मंडल, वर्धा

5. **जीवन जौहरी** लेखक—रिशभदास रांका; पहला एडीशन, सफ़े 167, दाम एक रुपया चार आना.

6. **समाज और जीवन,** सम्पादक—जमना लाल जैन; पहला एडीशन, सफ़े 114, दाम एक रुपया.

7. **उज्ज्वल-प्रवचन,** सम्पादक—रतन कुमार जैन, पहला एडीशन; सफ़े 86, दाम दस आने.

8. **तत्त्वार्थसूत्र,** विवेचन कर्ता—पंडित सुखलाल जी संघवी, दूसरा एडीशन, सफ़े 410, दाम पांच रुपया आठ आना.

9. **आदर्श विवाह-विधि,** सम्पादक—रिशभ दास रांका; पहला एडीशन, सफ़े 28, दाम पांच आने.

10. **प्यारे राजा बेटा,** लेखक—रिशभदास रांका; पहला एडीशन, सफ़े 96, दाम दस आने.

11. **बुद्ध और महावीर,** लेखक—किशोरलाल घ० मशरूवाला; पहला एडीशन, सफ़े 148, दाम एक रुपया.

12. **मणि भद्र,** लेखक—श्री० 'सुशील'; दूसरा एडीशन, सफ़े 143, दाम एक रुपया चार आना.

13. **धर्म और संस्कृति,** संकलन कर्ता—जमुना लाल जैन, साहित्य रत्न, पहलीबार, 1952, सफ़े 143 दाम सवा रुपये.

14. **गांधी गौरव,** लेखक—गोकुलचन्द्र शर्मा निकालने वाले—नवयुग साहित्य प्रकाशन, दिल्ली पहली बार 1951 सफ़े 112 दाम एक रुपया.

15. **अशोक वन,** लेखक—गोकुलचन्द्र शर्मा, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, पहलीबार 1951, सफ़े 176, दाम डेढ़ रुपया.

16. **शैतान,** लेखक खलील जिब्रान, अनुनादक—श्री नरेन्द्र चौधरी, पहलीबार 1952, सफ़े 88, दाम एक रुपया.

अंगरेज़ी

17. **गांधी जीज़ आटोबायोग्रेफ़ी (एब्रिज्ड)** लेखक—भारतन कुमारप्पा, निकालने वाले—नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, सफ़े 294, दाम दो रुपया.

18. **ड्रिंक्स, ड्रग्स एन्ड गैम्बलिंग,** लेखक—एम. के. गांधी; सफ़े 173, दाम दो रुपया.

ستا ساہتیہ منڈل، نئی دلی۔

3. امٹ ریکھائیں، لیکھک—ستیہ وتی ملک، پہلی بار، 1952 صفحے 246، قیمت تین روپئے۔

4. ریڑھ کی ہڈی، سمپادک—وشنو پربھاکر، پہلی 1952 صفحے 147، دام ایک روپیہ آٹھ آنہ۔

بھارت جین مہامنڈل، وردھا

5. جیون جوہری، لیکھک—رشبھ داس رانکا؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 167؛ دام ایک روپیہ چار آنہ۔

6. سماج اور جیون، سمپادک—جمنا لال جین؛ ایڈیشن؛ صفحے 114، دام ایک روپیہ۔

7. اوجول پروچن، سمپادک—رتن کمار جین، پہلا ایڈیشن، صفحے 86، دام دس آنے۔

8. تتوارتھ سوتر، وِویچن کرتا—پنڈت سکھ لال جی سنگھوی، دوسرا ایڈیشن، صفحے 410؛ دام—پانچ روپیہ آٹھ آنہ۔

9. آدرش وواہ ودھی، سمپادک—رشبھ داس رانکا؛ ایڈیشن، صفحے 28، دام پانچ آنے۔

10. پیارے راجہ بیٹا، لیکھک—رشبھ داس رانکا؛ پہلا ایڈیشن، صفحے 96، دام دس آنے۔

11. بدھ اور مہاویر، لیکھک-کشور لال گ مشروالا؛ پہلا ایڈیشن؛ صفحے 148؛ دام ایک روپیہ۔

12. منی بھدر، لیکھک—شری 'سشیل' دوسرا ایڈیشن، صفحے 143؛ دام ایک روپیہ چار آنہ۔

13. دھرم اور سنسکرتی؛ سنکلن کرتا جمنا لال جین، ساہتیہ رتن، پہلی بار 1952، صفحے 143 دام سوا روپئے۔

14. گاندھی گورو، لیکھک—گوکل چند شرما، نکالنے والے—نویگ ساہتیہ پرکاشن، دلی، پہلی بار 1951، صفحے 112، دام ایک روپیہ۔

15. اشوک بن، لیکھک—گوکل چند شرما، ہندی پرکاشن مندر، الہ آباد، پہلی بار 1951، صفحے 176، دام ڈیڑھ روپیہ۔

16. شیطان، لیکھک خلیل جبران، انوادک—شری نریندر چودھری، پہلی بار 1952، صفحے 88، دام ایک روپیہ۔

انگریزی۔

17. گاندھی جیز آٹو بایو گریفی (ابریجڈ)۔ لیکھک—بھارتن کماریپا، نکالنے والے—نوجیون پبلشنگ ہاؤس صفحے 294، دام دو روپیہ۔

18. ڈرنکس، ڈرگس اینڈ گیمبلنگ، لیکھک—ایم۔ کے۔ گاندھی، صفحے 173؛ دام دو روپیہ۔

मन में साफ-साफ आ जाता है. हमें यकीन है अगर सरकार प्लानिंग के मामले में विनोबा जी की राय खेती—सबको काम देना और अनाज में स्वावलम्बी आना—तो हमें अमरीका वगैरा के टुकड़ों पर न रहना पड़ता और न विदेशी ऐक्सपर्टों से हिन्दुस्तान का गुजारा होता.

—सुरेश रामभाई

क आदर्श महिला

(स्वर्गीय अवंतिका बाई गोखले)

लेखक—श्री विनायक तिवारी; निकालने वाले—सस्ता त्य मंडल, नई दिल्ली; पहलीबार, 1951; सफे 82, एक रुपया.

देश की बदकिस्मती है कि आल इण्डिया वीमेन्स फ्रेंस जैसी संस्थाओं की ओहदेदार औरतें ना वक्त बरबाद करती हैं खूबसूरती मेंढें कराने न नुमायश (फ़्लावर शो) वगैरा में उन्हें अपनी लाखों-करोड़ों बहनों की कभी याद नहीं आती को न दो जून रोटी नसीब होती है न तन पूरा-सा कपड़ा. पर महात्मा जी की रहनुमाई में ऐसी भी मैदान में आईं जो दुखी समाज की सेवा करना ना फर्ज समझती थीं और उनके दुःख को दिल में अपना मानती थीं. इन बहनों में बड़ी ऊंची जगह है राष्ट्र की पुरानी सेवक—सौभाग्यवती अवंतिका बाई ले की जिनका 1949 में 67 बरस की उमर में देहान्त i.

जब गांधीजी ने 1917 में बिहार में बिगुल बजाया से आप सेवा के काम में लग गईं और आखरी दम लगी रहीं. आपकी बेलाग और निर्मल जीवनी सच्चे एक मिसाल है. हमें उम्मीद है कि इस किताब ब प्रचार होगा और फैशन के पुतले हमारे बहन इससे कुछ सबक लेंगे.

—सुरेश रामभाई

र किताबें

नवजीवन, अहमदाबाद

1. उस पार के पड़ोसी, लेखक—काका काले; पहलीबार 1952, सफे 311, दाम तीन रुपया आना.

2. कलकत्ते का चमत्कार, लेखक—मनुबहन पहलीबार 1952; सफे 132, दाम सवा रुपया.

بروجی میں صاف صاف آ جاتا ہے۔ ہمیں یقین ہے اگر ہند سرکار پلاننگ کے معاملے میں ونوبا جی کی رائے مان لیتی— سب کو کام دینا اور اناج میں سوالمبی بن جاتا— تو ہمیں امریکہ وغیرہ کے ٹکڑوں پر نہ گزارا ہوتا اور نہ ودیشی ایکسپرٹوں سے ہندستان کا ناس ہوتا۔

—سریش رام بھائی

ایک آدرش مہلا

(سورگیہ اونتکا بائی گوکھلے)—

لیکھک—شری ونایک تواری؛ نکالنے والے—سستا ساہتیہ منڈل، نئی دلی؛ پہلی بار، 1951؛ صفحے 82، دام ایک روپیہ۔

دیش کی بدقسمتی ہے کہ آل انڈیا ویمنس کانفرنس جیسی سنستھاؤں کی عہدے دار عورتیں اپنا وقت برباد کرتی ہیں خوبصورتی مقابلے کرانے میں، پھول نمائش (فلاور شو) وغیرہ میں انہیں اپنی ان لاکھوں کروڑوں بہنوں کی کبھی یاد نہیں آتی جن کو نہ دو جون روٹی نصیب ہوتی ہے نہ تن پر پورا سا کپڑا۔ پر مہاتما جی کی رہنمائی میں ایسی بہنیں بھی میدان میں آئیں جو دکھی سماج کی سیوا کرنا اپنا فرض سمجھتی تھیں اور ان کے دکھ کو اپنا دکھ مانتی تھیں۔ ان بہنوں میں بڑی اونچی جگہ ہے مہاراشٹر کی پرانی سیوک—سوبھاگیہ وتی اونتکا بائی گوکھلے کی جن کا 1949 میں 67 برس کی عمر میں دیہانت ہوا۔

جب گاندھی جی نے 1917 میں بہار میں بگل بجایا تبھی سے آپ سیوا کے کام میں لگ گئیں اور آخری دم تک لگی رہیں۔ آپ کی بے لاگ اور نرمل جیونی سدا کے لئے ایک مثال ہے۔ ہمیں امید ہے کہ اس کتاب کا خوب پرچار ہوگا اور فیشن کے پتلے ہمارے بھائی بہن اس سے کچھ سبق لینگے۔

—سریش رام بھائی

اور کتابیں

ہندی

نوجیون، احمدآباد

1. اس پار کے پڑوسی، لیکھک—کاکا کالیلکر؛ پہلی بار 1952، صفحے—311، دام تین روپیہ آٹھ آنے

2. کلکتے کا چمتکار، لیکھک—منوبہن گاندھی؛ پہلی بار 1932؛ صفحے—132، دام سوا روپیہ۔

तब तक प्रेमचन्द बिल्कुल जिन्दा मालूम होंगे, पढ़ने वाला उनके अन्दर, अपने घर, अपने मुहल्ले और अपने आस पास की समस्याओं को साफ़ साफ़ देख सकेगा और उसके दिल में ऐसी ज़मीन नक़्श होगी जिसमें सही बीज बोकर समाज को हरा-भरा बनाया जा सकेगा.

—मुजीब रिज़वी

भू-दान-यज्ञ

(विनोबाजी की दो भाषणों का संग्रह) निकालने वाले—सस्ता साहित्य मंडल; पहली बार, 1951; सफ़े 32, दाम चार आने.

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ के नाम से हज़ारों-लाखों भाई बहन वाक़िफ़ हो गये हैं. पर वह असल में चीज़ क्या है, उसका मक़सद क्या है, उसका रास्ता क्या है—इन बातों की जानकारी हर किसी को नहीं है. सस्ता साहित्य मंडल ने विनोबाजी की दो ख़ास भाषन जमा करके यह बताने का काम ख़ूबसूरत ढंग से किया है. साथ में कविवर मैथिली शरन जी की एक कविता और दो छोटे नोट भी जोड़ दिये हैं. महात्मा गांधी का कहना कि "श्री विनोबा भावे कौन है ?" और दूसरा काका साहेब कालेलकर का विनोबा जी की भूमि दान यात्रा—जिन से इस छोटी-सी किताब की क़ीमत और भी बढ़ जाती है. बढ़िया छपाई, काग़ज़ और कवर—चार आने का यह गुटका बड़े काम की चीज़ है.

राज घाट की संनिधि में

(13 नवम्बर से 23 नवम्बर तक दिल्ली में दिये विनोबा जी के प्रवचन); निकालने वाले—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली पहली बार, 1952; सफ़े 80, दाम चौदह आने.

दिल्ली वालों को अपने शहर की बहुत-सी बातों की याद रहेगी उनमें से एक यह भी कि विनोबा जी जमुना के किनारे बापू की समाधि राजघाट के पास आकर ग्यारह दिन ठहरे और अपने भूदान-यज्ञ का अनोखा संदेश दिया. इन ग्यारह दिन में उन्होंने शाम की प्रार्थना के बाद जो प्रवचन दिये उनको एक जगह जमा करके सस्ता साहित्य मंडल ने बड़ा उपकार किया है. इस छोटी-सी किताब से पता चलता है कि भूदान यज्ञ का भेद क्या है और उसके कामयाब होने पर हमारे देश के बड़े बड़े सवाल किस तरह हल हो सकते हैं. सरकारी प्लानिंग कमीशन से विनोबा जी का जो मतभेद है वह भी एक

ب تک پریم چند بالکل زندہ معلوم هونگے' پڑھنے والا
ن کے اندر اپنے گھر' اپنے محلے اور اپنے آس پاس کی
مسیاؤں کو صاف صاف دیکھ سکے گا اور اُس کے دل میں
سی زمین نقش هوگی جس میں صحیح بیج بوکر
ماج هرا بھرا بنایا جاسکے گا .

—مجیب رضوی

بھودان یگیه

(ونوباجی کی دو بھاشنوں کا سنگرہ)

نکالنے والے—سستا ساهتیه منڈل؛ پہلی بار' 1951؛
فحے 32' دام چار آنے .

ونوباجی کے بھودان یگیه کے نام سے هزاروں لاکھوں
ائی بہن واقف هوگئے هیں . پر وہ اصل میں چیز کیا
' اُس کا مقصد کیا هے' اُس کا راستہ کیا هے— اِن
توں کی جانکاری هر کسی کو نہیں هے . سستا ساهتیه
منڈل نے ونوباجی کی دو خاص بھاشن جمع کرکے
بتانے کا کام خوبصورت ڈھنگ سے کیا هے . ساتھ میں
یور میتھلی شرن جی کی ایک کویتا اور دو چھوٹے
ٹ بھی جوڑ دئے هیں . مہاتما گاندھی کا کہنا کہ "شری
وبا بھاوے کون هیں؟" اور دوسرا کاکا صاحب کالیلکر کا
نوباجی کی بھودان یاترا'—جن سے اِس چھوٹی سی کتاب
ی قیمت اور بھی بڑھ جاتی هے . بڑھیا چھپائی' کاغذ اور
ر—چار آنے کا یہ گٹکا بڑے کام کی چیز هے .

راج گھاٹ کی سنندھی میں

(13 نومبر سے 23 نومبر تک دلی میں دیئے ونوبا
ی کے پروچن؛ نکالنے والے' سستا ساهتیه منڈل' نئی
لی؛ پہلی بار' 1952؛ صفحے 80' دام چودہ آنے .

دلی والوں کو اپنے شہر کی جہاں بہت سی باتوں کی
اد رهیگی اُن میں سے ایک یہ بھی کہ ونوبا جی جمنا
کنارے باپو جی سمادھی راج گھاٹ کے پاس آکر
ارہ دن ٹھہرے اور اپنے بھودان یگیه کا انوکھا سندیش دیا.
ن گیارہ دن میں انہوں نے شام کی پرارتھنا کے بعد جو
روچن دیئے اُن کو ایک جگہ جمع کرکے ستا ساهتیه
منڈل نے بڑا اُپکار کیا هے . اِس چھوٹی سی کتاب سے
تہ چلتا هے کہ بھودان یگیه کا بھید کیا هے اور اُس
ے کامیاب هونے پر همارے دیش کے بڑے بڑے سوال
س طرح حل هو سکتے هیں . سرکاری پلاننگ
میشن سے ونوبا جی کا جو مت بھید هے وہ بھی ایک

ख से भरी कहानी है. पढ़ने वालों का सौभाग्य है कि कहानियों को महात्मा भगवानदीन जी ऐसा लेखक गया.

में आशा है कि भारत जैन महामंडल जल्द ही त्मा भगवानदीन जी की दूसरी रचनाएं भी हमारे ने पेश कर सकेगा और उनकी लेखनी से प्रेरना लेने मौक़ा दे सकेगा.

—मुजीब रिज़वी

दात

लिखने वाले—प्रेमचन्द; निकालने वाले—मक्तबे या लिमिटेड जामिया नगर, देहली. लिखावट उरदू, 212, क़ीमत दो रुपया.

'वारदात' के सम्बन्ध में इतना लिखना काफ़ी है कि यह न्द की चीज़ है. इस किताब में प्रेमचन्द की तेरह नियाँ जमा की गई हैं पर 'वारदात' नाम की कोई नी नहीं है. फिर भी इसका नाम वारदात रखा गया योंकि यह सारी कहानियाँ ऐसी वारदातें हैं जो हर जीवन के मैदान में घटा करती हैं. प्रेमचन्द को गये बहुत दिन बीत गये और उस पर यह कहानियां र भी पुरानी हैं. फिर भी कहानी की घटना स्थल, ी के पात्र, कहानी का विषय, सब आज का मालूम और इसीलिये पढ़ने वाला इनमें अपने माहौल अपनी ज़िन्दगी का रंग पाता है. ब मुश्किल तमाम स सरकार एक अधकचरा हिन्दू कोडबिल पास करना थी पर इससे बहुत से पंडों पंडितों और दक़ियानू-को हिन्दू धर्म ख़तरे में मालूम पड़ने लगा. और ल अब तक पास नहीं हुआ और न मालूम कभी या नहीं. समाज के ठेकेदार "बदनसीब माँ" को बदनसीब बनाये रखना चाहते हैं और उसको कोई र देना नहीं चाहते. जो बेचारी गृहस्थी बटोरे उसका पर कोई अधिकार नहीं, सदा दूसरों का मुँह ताकना है. हमारी सलाह है कि हिन्दू कोडबिल के विरोधी ल से प्रेमचन्द की कहानी "बदनसीब मां" को पढ़ें. के दिमाग़ खुलेंगे और दिल साफ़ होंगे और उन्हें सूझेगा.

मचन्द के इस संग्रह में समाज को नंगी हालत में गया है, हर तबक़े की ग़लत धारनाओं की चुपके सी उड़ाई है पर यह नहीं बताया गया कि इस बुरे का भला कैसे बनाया जाय. फिर भी जब तक यह ऐसे चलता है, उसकी उन्नति सोचने वाले हैं,

نصیحت سے بھری کہانی ہے . پڑھنے والوں کا سوبھاگیہ ہے کہ ان کہانیوں کو مہاتما بھگواندین جی ایسا لیکھک مل گیا .

ہمیں آشا ہے کہ بھارت جین مہا منڈل جلدہی مہاتما بھگوان دین جی کی دوسری رچنائیں بھی ہمارے سامنے پیش کر سکے گا اور اُن کی لیکھنی سے پریرنا لینے کا موقع دے سکے گا .

—مجیب رضوی

واردات

لکھنے والے—پریم چند' نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ جامعہ نگر' دھلی . لکھاوٹ اُردو' صفحہ 212' قیمت دو روپیہ .

'واردات' کے سمبندھ میں اتنا لکھنا کافی ہے کہ یہ پریم چند کی چیز ہے . اس کتاب میں پریم چند کی تیرہ کہانیاں جمع کی گئی ہیں پر 'واردات' نام کی کوئی کہانی نہیں ہے . پھر بھی اِس کا نام واردات رکھا گیا ہے . کیونکہ یہ ساری کہانیاں ایسی وارداتیں ہیں جو ہر دم جیون کے میدان میں گھٹا کرتی ہیں . پریم چند کو گئے ہوئے بھی بہت دن بیت گئے اور اُس پر یہ کہانیاں تو اور پرانی ہیں . پھر بھی کہانی کی گھٹنا استھل' کہانی کے پاتر' کہانی کا وشے' سب آج کا معلوم ہوتا ہے اور اسی لئے پڑھنے والا اِن میں اپنے ماحول اور اپنی زندگی کا رنگ پاتا ہے . بہ‌مشکل تمام کانگریس سرکار ایک ادھ کچرا ہندو کوڈبل پاس کرنا چاہتی تھی پر اُس سے ہی بہت سے پنڈوں' پنڈتوں اور دقیانوسوں کو ہندو دھرم خطرے میں معلوم پڑنے لگا . اور کوڈبل اب تک پاس نہیں ہوا اور معلوم کبھی نہ ہوگا یا نہیں. سماج کے ٹھیکیدار ''بدنصیب ماں'' کو ہمیشہ بدنصیب بنائے رکھنا چاہتے ہیں اور اُس کو کوئی ادھیکار دینا نہیں چاہتے . جو بیچاری گرہستی بٹورے اُس کا ہی اُس پر کوئی ادھیکار نہیں' سدا دوسروں کا منہ تاکنا پڑتا ہے . ہماری صلاح ہے کہ ہندو کوڈبل کے ورودھی ٹھنڈے دل سے پریم چند کی کہانی ''بدنصیب ماں'' کو پڑھیں . تب اُن کے دماغ کھلیں گے اور دل صاف ہونگے اور اُنہیں انصاف سوجھے گا .

پریم چند کے اِس سنگرہ میں سماج کو ننگی حالت میں دکھایا گیا ہے' ہر طبقے کی غلط دھارناؤں کی چپکے چپکے ہنسی اُڑائی ہے پر یہ نہیں بتایا گیا کہ اِس برے سماج کو بھلا کیسے بنایا جائے. پھر بھی جب تک یہ سماج ایسے چلتا ہے' اس کی اُنتی سدھی وسمیں بالی ہیں'

मेरे साथी

लिखने वाले—महात्मा भगवान दीन, निकालने वाले—भारत जैन महा मंडल, लिखावट हिन्दी, सफ़े 127 क़ीमत एक रुपया.

महात्मा भगवान दीन महात्मा भी हैं और साथ ही आदमी भी हैं. महात्माओं में वह इसलिये ऊंचे हैं क्योंकि वह आदमी हैं और आदमियों में वह इसलिए ऊंचे हैं कि वह महात्मा हैं. वह आदमियों की भाशा में, आदमियों की समझ में आने वाले ढंग से, महात्मा पन की बातें करते हैं. वह लगभग सत्तर साल के बूढ़े हैं फिर भी उनके हर क़दम में एक नया पन है, एक नई अदा है. उनकी लेखनी पुरानी चीज़ों को नए और आसान ढंग से लिखना जानती है. उनके हर लेख में नया विचार, नई शैली, भाशा का नया लोच दिखाई पड़ता है. वह कहानी भी लिखते हैं, कविता भी लिखते हैं और पत्रकार भी हैं. ढंग चाहे कोई भी हो, विशय कोई भी हो पर वह दुनिया का, मानव का एक अपना नया नक़शा सामने रख देते हैं.

'मेरे साथी' उन लोगों की जीवन कथा है जो महात्मा भगवानदीन जी के साथ रहे हैं, जिन्होंने उन्हें बहुत से कामों में अपना सहयोग दिया है. इस किताब के दो भाग हैं. हम ढूंढ कर थक गए लेकिन यह पता न चल सका कि यह किताब 'मेरे साथी' के दोनों हिस्सों में से कौन सा हिस्सा है. इस भाग में आठ आदमियों के जीवन की झलक महात्मा जी ने एक ख़ास दृश्टिकोन से दी है. इन कथाओं के आठों पात्र जैनी हैं और समाज के बाग़ी हैं. इनके जीवन से प्रेरना मिलती है—रूढ़ियों से बग़ावत करने की, सच्चाई के लिए डटने की, कश्ट उठाने की. 'मेरे साथी' ऐसा उपन्यास है जिसके आठो हीरों के सामने सिर्फ़ एक ही नक़्शा है—इन्सानियत या मानवता. अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिये अगर कहीं जैनी कठ मुल्लाओं के रूढ़ी वाद ने उनके क़दम रोके तो वह उन्हें ठुकराकर, बग़ावत करके आगे बढ़ गए.

महात्मा जी ने इस किताब में कुछ लोगों की जीवन कथा ही नहीं लिखी बल्कि इस बहाने उन्होंने समाज का खोखला पन भी दिखाया है. इन्सान के स्वाभिमान और बड़प्पन पर भी रोशनी डाली है, रोज़ के जीवन में आने वाली समस्याओं का अपना हल भी पेश किया है, बालक के मनोविज्ञान पर भी लेखनी उठाई है.

हर एक का जीवन एक सुन्दर कहानी है. बस ऐसे लेखक की ज़रूरत रहती है जो कहानी को सुन्दर ढंग से लिख सके 'मेरे साथी' के पात्रों की तो बहुत ही सुन्दर और

میرے ساتھی

لکھنے والے—مہاتما بھگوان دین، نکالنے والے—بھارت جین مہا منڈل، لکھاوٹ ہندی، صفحے 127 قیمت ایک روپیہ۔

مہاتما بھگوان دین مہا تما بھی ہیں اور ساتھ ہی آدمی بھی ہیں۔ مہاتماؤں میں وہ اس لئے اونچے ہیں کیونکہ وہ آدمی ہیں اور آدمیوں میں وہ اس لئے اونچے ہیں کہ وہ مہاتما ہیں۔ وہ آدمیوں کی بھاشا میں، آدمیوں کی سمجھ میں آنے والے ڈھنگ سے، مہاتما پن کی باتیں کرتے ہیں۔ وہ لگ بھگ ستر سال کے بوڑھے ہیں پھر بھی اُن کے ہر قدم میں ایک نیا پن ہے، ایک نئی ادا ہے۔ اُن کی لیکھنی پرانی چیزوں کو نئے اور آسان ڈھنگ سے لکھنا جانتی ہے۔ اُن کے ہر لیکھ میں نیا وچار، نئی شیلی، بھاشا کا نیا لوچ دکھائی پڑتا ہے۔ وہ کہانی بھی لکھتے ہیں، کویتا بھی لکھتے ہیں اور پترکار بھی ہیں۔ ڈھنگ چاہے کوئی بھی ہو، وشے کوئی بھی ہو پر وہ دنیا کا، مانو کا ایک اپنا نیا نقشہ سامنے رکھ دیتے ہیں۔

'میرے ساتھی' اُن لوگوں کی جیون کتھا ہے جو مہاتما بھگوان دین جی کے ساتھ رہے ہیں، جنہوں نے اُنہیں بہت سے کاموں میں اپنا سہیوگ دیا ہے۔ اس کتاب کے دو بھاگ ہیں۔ ہم ڈھونڈ کر تھک گئے لیکن یہ پتہ نہ چل سکا کہ یہ کتاب 'میرے ساتھی' کے دونوں حصوں میں سے کونسا حصہ ہے۔ اس بھاگ میں آٹھ آدمیوں کے جیون کی جھلک مہاتما جی نے ایک خاص درشٹی کون سے دی ہے۔ اِن کتھاؤں کے آٹھوں پاتر جینی ہیں اور سماج کے باغی ہیں۔ اِن کے جیون سے پریرنا ملتی ہے—روڑھیوں سے بغاوت کرنے کی، سچائی کے لئے ڈٹنے کی، کشٹ اُٹھانے کی۔ 'میرے ساتھی' ایسا اپنیاس ہے جس کے آٹھوں ہیرو کے سامنے صرف ایک ہی لکش ہے—انسانیت یا مانوتا۔ اپنی منزل تک پہنچنے کے لئے اگر کہیں جینی کٹھ ملاؤں کے روڑھی واد نے اُن کے قدم روکے تو وہ اُنہیں ٹھکرا کر، بغاوت کرکے آگے بڑھ گئے۔

مہاتما جی نے اِس کتاب میں کچھ لوگوں کی جیون کتھا ہی نہیں لکھی بلکہ اِس بہانے اُنہوں نے سماج کا کھوکھلا پن بھی دکھایا ہے۔ انسان کے سوابھیمان اور بڑپپن پر بھی روشنی ڈالی ہے، روز کے جیون میں آنے والی سمسیاؤں کا اپنا حل بھی پیش کیا ہے، بالک کے منوویگیان پر بھی لیکھنی اُٹھائی ہے۔

ہر ایک کا جیون ایک سندر کہانی ہے۔ بس ایسے لیکھک کی ضرورت رہتی ہے جو کہانی کو سندر ڈھنگ سے لکھ سکے۔ 'میرے ساتھی' کے پاتروں کی تو بہت ہی سندر اور

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

न्टू दि लास्ट

मूल लेखक—महात्मा गांधी.

अनुवादक—बालजी गोविन्द जी देसाई.

निकालने वाले—नवजीवन अहमदाबाद.

लिखावट—अंगरेजी. सफ़े–64, दाम छै आने.

महात्मा गांधी के जीवन पर जिन चंद किताबों का क़लाबी असर हुआ था. यह उनमें से एक है, अंगरेजी क जान रसकिन की किताब–'अन्टू दि लास्ट' जो अमर हो गई है. 24 घंटे के रेल सफ़र में गांधी जी से पढ़ा और उसके बाद अपने जीवन को नई राह पर दिया जिसे उन्होंने 'सर्वोदय' (सब का उदय या उरूज) दिया.

रसकिन की इस किताब का निचोड़ महात्मा जी ने र्वोदय' नाम की एक छोटी-सी किताब गुजराती में कर दुनिया को पेश किया था. अब भाई बालजी वन्द जी देसाई ने इसका अंगरेजी में उल्था किया है. तरह हम इस किताब को रसकिन की बड़ी किताब का चोड़ कह सकते हैं. अनुवादक ने कोशिश भी इस बात है कि जहां तक बन पड़े रसकिन के लफ़्ज़ों को क़ायम जाये.

किताब के अन्दर जो विचार दिये गये हैं उनके बारे में भी कहना सूरज को दीपक दिखाना है. जो यह जानना ते हों कि असली अर्थशास्त्र क्या है और धर्म या नीत से उसका क्या सम्बन्ध है उन्हें यह छोटी-सी ब ज़रूर पढ़ना चाहिये.

शिक्षा विभागों से हमारी सिफ़ारिश है कि इस छोटी-किताब को हर सेकेन्डरी स्कूल या कालिज में जगह जाये.

—सुरेश रामभाई.

انٹو دی لاسٹ

مول لیکھک—مہاتما گاندھی .

انوادک— بال جی گووند جی دیسائی .

نکالنے والے—نوجیون احمدآباد .

لکھاوٹ—انگریزی. صفحے—64' دام—چھ آنے .

مہاتما گاندھی کے جیون پر جن چند کتابوں کا انقلابی اثر ہوا تھا' یہ ان میں سے ایک ہے . انگریزی لیکھک جان رسکن کی کتاب—'انٹو دی لاسٹ' جو اب امر ہوگئی ہے . 24 گھنٹے کے ریل سفر میں گاندھی جی نے اسے پڑھا اور اس کے بعد اپنے جیون کو نئی راہ پر لگا دیا جسے اُنہوں نے 'سرووِدے' (سب کا اُدے یا عروج) نام دیا .

رسکن کی اس کتاب کا نچوڑ مہاتما جی نے 'سرووِدے' نام کی ایک چھوٹی سی کتاب گجراتی میں لکھکر دنیا کو پیش کیا تھا . اب بھائی بال جی گووند جی دیسائی نے اس کا انگریزی میں اُلتھا کیا ہے . اس طرح ہم اس کتاب کو رسکن کی بڑی کتاب کا نچوڑ کہ سکتے ہیں . انوادک نے کوشش بھی اس بات کی کی ہے کہ جہاں تک بن پڑے رسکن کے لفظوں کو قائم رکھا جائے .

کتاب کے اندر جو وچار دیئے گئے ہیں اُن کے بارے میں کچھ بھی کہنا سورج کو دیپک دکھانا ہے. جو یہ جاننا چاہتے ہوں کہ اصلی ارتھشاستر کیا ہے اور دھرم یا راج نیت سے اسکا کیا سمبندھ ہے اُنہیں یہ چھوٹی سی کتاب ضرور پڑھنا چاہئے .

شکشا وبھاگوں سے ہماری سفارش ہے کہ اس چھوٹی سی کتاب کو ہر سیکنڈری اِسکول یا کالج میں جگہ دی جائے .

—سریش رام بھائی

एक पुराने तहसीलदार साहब बीमार पड़े उनके लड़के लखनऊ में ऊंचे दर्जे में पढ़ते थे—तार देकर उन्हें बाप की देख भाल के लिये बुलाया गया. उन्होंने बड़े लगन से बाप की सेवा की. एक दिन डाक्टर साहब ने नई दवा पिलाने को कहा और चलते समय लड़के से कहते गये कि दवा पिलाने से पहले खूब हिला लीजियेगा. अस्पताल से दवा आ गई. लड़के ने बीमार बाप के बाजू को पकड़ कर खूब झंझोरा. बाप ने जब तकलीफ़ की शिकायत की तो उसने कहा कि डाक्टर साहब कह गये हैं कि जितना हिला हिला कर दवा पिलाई जायेगी उतना ही फ़ायदा होगा. तीन चार रोज़ के बाद डाक्टर साहब फिर आये और उन्होंने तहसीलदार साहब से हाल पूछा. उन्होंने कहा कि डाक्टर साहब दवा असर तो कर रही है लेकिन लड़का जब दिन में तीन चार बार झंझोरता है तो सारा बदन टूट जाता है, हड्डी हड्डी में दर्द होने लगता है. डाक्टर साहब ज़ोर से हंसने लगे और उन्होंने कहा—मैंने आपको हिलाने के लिये नहीं कहा था बल्कि यह कहा था कि दवा को हिला लिया जाये.

× × ×

एक बार औरंगज़ेब बादशाह शिकारपुर गया. वहां के लोगों ने बड़े धूम धाम से अपने बादशाह का स्वागत किया. औरंगज़ेब दोपहर को खाना खाकर अपने साथियों के साथ दूसरी जगह के लिये रवाना हो गया. शिकारपुर के रहने वालों में दावत की चर्चा चल पड़ी. किसी ने कहा कि दावत तो बहुत अच्छी हुई और बादशाह ख़ुश भी हुआ लेकिन एक ग़लती हो गई क़ुरमा में नमक कम था. सब पर जैसे ओस पड़ गई. सारे मेहमान इस ग़लती ठीक करने के तरीक़े की खोज में जुट गये. एक लाल बुझक्कड़ ने बहुत चिन्ता के बाद कहा कि अब सवारों के हाथ नमक बादशाह की ख़िदमत में भेज दिया जाये. और उससे प्रार्थना की जाये कि वह ऊपर से नमक खा कर क़ुरमे में नमक की कमी को पूरा कर लें. दो आदमी तेज़ घोड़े पर नमक लेकर चल दिये. दो सवारों को इस तरह पीछे आते देख कर औरंगज़ेब को ख़तरा लगा और वह रुक गया. दोनों सवार पास पहुंच कर घोड़े से उतर कर बादशाह के पास गये और अदब से कहा कि "हुज़ूर माफ़ कर दें. ग़लती से क़ुरमे में नमक की कमी हो गई थी. हम लोग बहुत शर्मिन्दा हैं. नमक हाज़िर है आप कमी को पूरा कर लीजिये." औरंगज़ेब बहुत हंसा. सवार बारबार प्रार्थना करने लगे. दिल रखने के लिये उसने नमक ऊपर से खा लिया.

ایک پرانے تحصیلدار صاحب بیمار ہوے ۔ اُن کے لڑکے لکھنؤ میں اونچے درجہ میں پڑھتے تھے—تار دے کر انہیں باپ کی دیکھ بھال کے لئے بلایا گیا ۔ انہوں نے بڑے لگن سے باپ کی سیوا کی ۔ ایک دن ڈاکٹر صاحب نے نئی دوا پلانے کو کہا اور چلتے سمے لڑکے سے کہتے گئے کہ دوا پلانے سے پہلے خوب ہلا لیجئے گا ۔ اسپتال سے دوا آ گئی، لڑکے نے بیمار باپ کے بازو کو پکڑ کر خوب جھنجھوڑا ۔ باپ نے جب تکلیف کی شکایت کی تو اُس نے کہا کہ ڈاکٹر صاحب کہہ گئے ہیں کہ جتنا ہلا ہلاکر دوا پلائی جائے گی اُتنا ہی فائدہ ہوگا ۔ تین چار روز کے بعد ڈاکٹر صاحب پھر آئے اور اُنہوں نے تحصیلدار صاحب سے حال پوچھا ۔ اُنہوں نے کہا کہ ڈاکٹر صاحب دوا اثر تو کر رہی ہے لیکن لڑکا جب دن میں تین چار بار جھنجھوڑتا ہے تو سارا بدن ٹوٹ جاتا ہے، ہڈی ہڈی میں درد ہونے لگتا ہے ۔ ڈاکٹر صاحب زور سے ہنسنے لگے اور انہوں نے کہا—میں نے آپ کو ہلانے کے لئے نہیں کہا تھا بلکہ یہ کہا تھا کہ دوا کو ہلا لیا جائے ۔

× × × ×

ایک بار اورنگ زیب بادشاہ شکارپور گیا ۔ وہاں کے لوگوں نے بڑے دھوم دھام سے اپنے بادشاہ کا سواگت کیا ۔ اورنگزیب دوپہر کو کھانا کھا کر اپنے ساتھیوں کے ساتھ دوسری جگہ کے لئے روانہ ہوگیا ۔ شکارپور کے رہنے والوں میں دعوت کی چرچا چل پڑی ۔ کسی نے کہا کہ دعوت تو بہت اچھی ہوئی اور بادشاہ خوش بھی ہوا لیکن ایک غلطی ہوگئی ۔ قورمہ میں نمک کم تھا ۔ سب پر جیسے اوس پڑ گئی ۔ سارے بدھیمان اس غلطی کو ٹھیک کرنے کے طریقے کی کھوج میں جٹ گئے—ایک لال بجھکڑ نے بہت چنتا کے بعد کہا کہ اب سواروں کے ہاتھ نمک بادشاہ کی خدمت میں بھیج دیا جائے اور اُس سے پرارتھنا کی جائے کہ وہ اوپر سے نمک کھا کر قورمہ میں نمک کی کمی کو پورا کر لیں ۔ دو آدمی تیز گھوڑے پر نمک لے کر چل دیئے۔ دو سواروں کو اسطرح پیچھے آتے دیکھکر اورنگ زیب کو خطرہ لگا اور وہ رک گیا ۔ دونوں سوار پاس پہنچ کر گھوڑے سے اُتر کر بادشاہ کے پاس گئے اور ادب سے کہا کہ "حضور معاف کر دیں ۔ غلطی سے قورمہ میں نمک کی کمی ہوگئی تھی ۔ ہم لوگ بہت شرمندہ ہیں ۔ نمک حاضر ہے آپ کمی کو پورا کر لیجئے—" اورنگزیب بہت ہنسا ۔ سوار بار بار پرارتھنا کرنے لگے دل رکھنے کے لئے اس نے نمک اوپر سے کھا لیا ۔

…ना मुँह नीचा करके चुन्नू को सूंघने लगी.
…ुश था रह रह कर हंसता था और बकरी के
…ाक सब पर हाथ फेर फेर कर कुछ जानने की
…ा था. अभी कुछ देर भी न हुई थी कि चुन्नू
…देखा खेलते खेलते चुन्नू ने बकरी का थन
बकरी उछलने कूदने के बजाये सीधे खड़ी.
…ान में दूध उतार लिया और इस तरह जुगाली
…से अपने ही बच्चों को दूध पिला रही हो.
…के थन को पकड़ कर खूब दूध पिया. वह
…ा था और बकरी उसके सर को अपनी जीभ
…ाती थी. अब चुन्नू को एक मां मिल गई.
…ा ने बकरी को खरीद लिया. बकरी सारा दिन
खुली रहती तो भी जंगल में न जाती. जब
…रोने की आवाज उसके कान में पड़ती तो वह
…हुई दौड़ पड़ती और चुन्नू को दूध पीने का
…ी. ऐसे बकरी छः महीने में [illegible] जाती है.
…करी सालों दूध देती रही. चुन्नू के साथ वह
थी. चुन्नू उसे ही मां समझने लगा था.
…ो गया और वह खाना खाने लगा. लेकिन
बकरी के साथ खेले उसे चैन न आता था.
…शान हो जाती थी. चुन्नू कुछ दिनों के लिये
बीमार हो गया. एक ज्योतषी ने उसके पिता
…के जब तक यह काली बकरी आप के घर
…चुन्नू अच्छा नहीं हो सकता. पिता ने बकरी
…. चुन्नू जब खाट से उठा तो व्याकुल हो कर
…ढूंढने लगा. पिता ने उससे कहा कि वह तो
…ुन्नू ने सब को शक की निगाह से देखा और
…ी बकरी याद उसे हमेशा सताती रही.

دیا ـــ بکری اپنا منہ نیچا کر کے چنو کو سونگھنے لگی۔ چنو بڑا خوش تھا ۔ رہ رہ کر ہنستا تھا اور بکری کے منہ ناک آنکھ سب پر ہاتھ پھیر پھیر کر کچھ جاننے کی کوشش کرتا تھا ۔ ابھی کچھ دیر بھی نہ ہوئی تھی کہ چنو کے پتا نے دیکھا کھیلتے کھیلتے چنو نے بکری کا تھن پکڑ لیا ۔ بکری اچھلنے کودنے کے بجائے سیدھی کھڑی رہی ۔ اس نے تھن میں دودھ اتار لیا اور اسطرح جگالی کرنے لگی جیسے اپنے ہی بچوں کو دودھ پلا رہی ہو ۔ چنو نے اس کے تھن کو پکڑ کر خوب دودھ پیا ۔ وہ دودھ پیتا جاتا تھا اور بکری اس کے سر کو اپنی جیبھ سے چاٹتی جاتی تھی ۔ اب چنو کو ایک ماں مل گئی ۔ چنو کے پتا نے بکری کو خرید لیا ۔ بکری سارا دن گھر میں رہتی کھلی رہتی تو بھی جنگل میں نہ جاتی ۔ جب بھی چنو کے رونے کی آواز اس کے کان میں پڑتی تو وہ میں میں کرتی ہوئی دوڑ پڑتی اور چنو کو دودھ پینے کا اشارہ کرتی ۔ ایسے بکری چھ مہینے میں اترا جاتی ہے ۔ لیکن یہ بکری سالوں دودھ دیتی رہی ۔ چنو کے ساتھ وہ کھیلتی بھی تھی ۔ چنو اسے ہی ماں سمجھنے لگا تھا ۔ چنو بڑا ہوگیا اور وہ کھانا کھانے لگا ۔ لیکن تو بھی بنا بکری کے ساتھ کھیلے اسے چین نہ آتا تھا ۔ بکری بھی پریشان ہوجاتی تھی ۔ چنو کچھ دنوں کے لئے بہت سخت بیمار ہوگیا ۔ ایک جوتشی نے اس کے پتا کو بتایا کہ جب تک یہ کالی بکری آپ کے گھر میں ہے تب تک چنو اچھا نہیں ہوسکتا ۔ پتا نے بکری کو بیچ دیا ۔ چنو جب کھاٹ سے اٹھا تو بیحال ہوکر وہ بکری کو ڈھونڈنے لگا ۔ پتا نے اس سے کہا کہ وہ تو مر گئی ہے ۔ چنو نے سب کو شک کی نگاہ سے دیکھا اور رو پڑا اپنی بکری کی یاد اسے ہمیشہ ستاتی رہی ۔

चुटकुले

(चेतनकुमार शर्मा)

…नऊ जिला में एक थाना है. वहां के लोग
…हैं. अगर आप किसी कुर्सी वाले से कह
…कुर्सी में रहते हो तो वह आप पर बिगड़
…वे समझते हैं कि वह सबसे ज़्यादा बुद्धि-
एक इन्जीनियर साहब थे. उन्होंने एक सड़क
…9 फर्लांग लगा दिये. वह सड़क अब भी
…की कहानी है.

چٹکلے

(چیتن کمار شرما)

کرسی لکھنؤ ضلع میں ایک تھانہ ہے ـــ یہاں کے لوگ بہت مشہور ہیں ۔ اگر آپ کسی کرسی والے سے کہہ دیجئے کہ تم کرسی میں رہتے ہو تو وہ آپ پر بگڑ پڑے گا ۔ کرسی والے سمجھتے ہیں کہ وہ سب سے زیادہ بدھیمان ہیں ۔ وہاں ایک انجینیر صاحب تھے ۔ انہوں نے ایک سڑک پر ایک میل میں 9 فرلانگ لگا دیئے ۔ وہ سڑک اب بھی موجود ہے ، وہیں کی کہانی ہے

मां

(बेनी माधव प्रसाद)

इलाहाबाद के जिले में फूलपुर एक क़सबा है. यहां कछौवे का मेला लगता है. दूर दूर से नागा और साधू आते हैं. नागा रहते तो बिल्कुल नंगे हैं लेकिन उनके पास सामान बहुत होता है. हाथियों पर चढ़ चढ़ कर आते हैं. मेले में हर तरह का सामान होता है. कहीं बांसुरी बजा कर कोई सांप नचाता है, कोई पलना झूलता है, कोई मिठाई की दुकान की तरफ़ लपकता है, बच्चे गुब्बारे और बाजे ख़रीदते हैं. सब बच्चे अपने मां बाप के साथ घूमते रहते हैं. रामू भी मेला देखने गया था. उसकी मां उसकी उंगली पकड़े चली जा रही थी. वह दोनों एक हाथी के पास से गुज़रे. हाथी का दिमाग़ कुछ ख़राब हो गया था. उसने सूंड बढ़ा कर रामू को पकड़ लिया. सूंड पर लटका कर हाथी ने रामू को ऊपर उठाया और चाहता था कि सूंड की ऐंठन से उसकी हड्डी पसली तोड़ डाले. एक हथनी सामने खड़ी थी. वह ज़ोर से चिंघाड़ी और बेतहाशा भागती हुई उस हाथी से भिड़ गई. उसने अपनी सूंड हाथी के सूंड पर मारनी शुरू कर दी, जिससे हाथी उसको मार न सका. महावत ने अंकुश मार मार कर हाथी को बेचैन कर दिया और वह रामू को छोड़ कर चिंघाड़ मार कर भाग निकला. हथनी रामू के मुंह पर अपना सूंड हिला कर उसे प्यार करने लगी. ऐसा लग रहा था जैसे रामू उसी का बच्चा हो.

× × ×

जब चुन्नू एक साल का ही था तभी उसकी मां मर गई. वह किसी तरह बहलता ही नहीं था. हर समय रोता रहता था. बहुत सी औरतों ने उसे दूध पिलाने की कोशिश की. उसने किसी का दूध नहीं पिया. हर तरह के जतन किये गये. शीशी में दूध भर कर पिलाया गया. फिर भी उसने सारा दूध उगल दिया. घर वालों को चिन्ता पैदा हो गई. न वह दूध पीता था और न किसी तरह चुप होता था. चुन्नू के पिता उसको लेकर एक दिन घर से बाहर निकले. उनके दरवाज़े पर ही एक बकरी चर रही थी. उन्होंने चुन्नू को बहलाने के लिये बकरी को दिखाया. चुन्नू ने इशारा किया कि वह बकरी पकड़ना चाहता है. उसके पिता उसे बकरी के पास ले गये. चुन्नू बकरी को पास बुलाता था. पहले बकरी अपनी जगह पर खड़ी रही और टकटकी बांधे चुन्नू को देखती रही. फिर 'मैं मैं' करने लगी और चुन्नू के पास आ गई. चुन्नू हंस दिया और बाप की गोद से हुमक कर बाहर निकल आने की कोशिश करने लगा. उसके पिता ने उसे गोद से उतार

ماں

(بینی مادھو پرساد)

الہ آباد کے ضلع میں پھولپور ایک قصبہ ہے ۔ یہاں کلکوا کا میلہ لگتا ہے ۔ دور دور سے ناگا اور سادھو آتے ہیں ۔ ناگا رہتے تو بالکل ننگے ہیں لیکن اُن کے پاس سامان بہت ہوتا ہے ۔ ہاتھیوں پر چڑھ چڑھکر آتے ہیں ۔ میلے میں ہر طرح کا سامان ہوتا ہے ۔ کہیں بانسری بجا کر کوئی سانپ نچاتا ہے، کوئی پلنا جھولتا ہے، کوئی مٹھائی کی دوکان کی طرف لپکتا ہے، بچے غبارے اور باجے خریدتے ہیں ۔ سب بچے اپنے ماں باپ کے ساتھ گھومتے رہتے ہیں ۔ رامو بھی میلہ دیکھنے گیا تھا ۔ اُسکی ماں اُسکی انگلی پکڑے چلی جا رہی تھی ۔ وہ دونوں ایک ہاتھی کے پاس سے گذرے ۔ ہاتھی کا دماغ کچھ خراب ہوگیا تھا ۔ اُسنے سونڈ بڑھا کر رامو کو پکڑ لیا ۔ سونڈ پر لٹکا کر ہاتھی نے رامو کو اوپر اُٹھایا اور چاہتا تھا کہ سونڈ کی اینٹھن سے اُسکی ہڈی پسلی توڑ ڈالے ۔ ایک ہتھنی سامنے کھڑی تھی ۔ وہ زور سے چنگھاڑی اور بے تحاشہ بھاگتی ہوئی اُس ہاتھی سے بھڑ گئی ۔ اُس نے اپنی سونڈ ہاتھی کے سونڈ پر مارنی شروع کر دی جس سے ہاتھی اس کو مار نہ سکا. مہاوت نے انکش مارمار کر ہاتھی کو بے چین کر دیا اور وہ رامو کو چھوڑ کر چنگھاڑ مار کر بھاگ نکلا ۔ ہتھنی رامو کے منہ پر اپنا سونڈ ہلا ہلا کر اُسے پیار کرنے لگی ۔ ایسا لگ رہا تھا کہ جیسے رامو اُسی کا بچہ ہو ۔

× × ×

جب چنو ایک سال کا ہی تھا تبھی اُسکی ماں مر گئی ۔ وہ کسی طرح بہلتا ہی نہیں تھا ۔ ہر سمے روتا رہتا تھا ۔ بہت سی عورتوں نے اُسے دودھ پلانے کی کوشش کی ۔ اُس نے کسی کا دودھ نہیں پیا ۔ ہر طرح کے جتن کئے گئے ۔ شیشی میں دودھ بھر کر پلایا گیا ۔ پھر بھی اس نے سارا دودھ اُگل دیا ۔ گھر والوں کو چنتا پیدا ہوگئی ۔ نہ وہ دودھ پیتا تھا اور نہ کسی طرح چپ ہوتا تھا ۔ چنو کے پتا اُسکو لے کر ایک دن گھر سے باہر نکلے ۔ اُن کے دروازے پر ہی ایک بکری چر رہی تھی ۔ اُنہوں نے چنو کو بہلانے کے لئے بکری کو دکھایا ۔ چنو نے اشارہ کیا کہ وہ بکری پکڑنا چاہتا ہے ۔ اُس کے پتا اُسے بکری کے پاس لے گئے ۔ چنو بکری کو پاس بلاتا تھا ۔ پہلے بکری اپنی جگہ پر کھڑی رہی اور ٹکٹکی باندھے چنو کو دیکھتی رہی ۔ پھر 'میں میں' کرنے لگی اور چنو کے پاس آ گئی ۔ چنو ہنس دیا اور باپ کی گود سے ہمک کر باہر نکل جانے کی کوشش کرنے لگا ۔ اُس کے پتا نے اُسے گود سے اتار

बच्चों की दुनिया

हरिजन बच्चे का रोना

(शंकर राजू नायडू)

हे गांधी बाबा ! कैसे मैं
जीकर दिनों को काटूं ?
ओ ! मेरे बापू ! बापू ! ओ मेरे बापू !
सभी लोग मुझ से कहते हैं—
'दूर हो ! दूर हो !
गंदे हरिजन नीच जाति के
अछूत हो ! अछूत हो !'
क्या मुझ में भी जान नहीं ?
दिल तो वैसा ही मेरा
मैं भी मनुष हूं, बापू ! ओ मेरे बापू !
मैं भंगी बन रोज सफाई
करता हूं, करता हूं
मैं तन मन को जन सेवा में
रखता हूं, रखता हूं
पर मिलता क्या भोजन है ?
खाना तो दूर रहे, हा !
सत्तू बिना हूं, बापू ! ओ मेरे बापू !
नहीं चाहता मैं राग रंग
बापू मैं ! बापू मैं !
नहीं चाहता पकवान भंग
बापू मैं ! बापू मैं !
चाहूं मैं, बस भूक मिटे,
कपड़ा लत्ता रक्खे, पर
नंगा खड़ा हूं, बापू ! ओ मेरे बापू !

بچوں کی دنیا

ہریجن بچے کا رونا

(شنکر راجو نائیڈو)

ہے گاندھی بابا! کیسے میں
جی کر دنوں کو کاٹوں؟
او! میرے باپو! باپو! او میرے باپو
سبھی لوگ مجھ سے کہتے ہیں—
'دور ہو! دور ہو!'
گندے ہریجن نیچ جات کے
اچھوت ہو! اچھوت ہو!
کیا مجھ میں بھی جان نہیں؟
دل تو ویسا ہی میرا
میں بھی منش ہوں، باپو! او میرے باپو!
میں بھنگی بن روز صفائی
کرتا ہوں، کرتا ہوں
میں تن من کو جن سیوا میں
رکھتا ہوں، رکھتا ہوں
پر ملتا کیا بھوجن ہے؟
کھانا تو دور رہے، ہا!
ستو بنا ہوں، باپو! او میرے باپو!
نہیں چاہتا میں، راگ رنگ
باپو میں! باپو میں!
نہیں چاہتا پکوان بھنگ
باپو میں! باپو میں!
چاہوں میں، بس بھوک مٹے،
کپڑا لتا رکھے، پر
ننگا کھڑا ہوں، باپو! او میرے باپو!

रचना की खास खास बातों को लेकर उनमें क्या फ़र्क़ किया जाना चाहिये इसकी चर्चा की गई है. जिसे समाजी और आर्थिक रूप-रंग को ध्यान में रख कर मौजूदा अर्थ-शास्त्र के नियम लिखे गये हैं उससे सर्वोदयी रचना बिल्कुल जुदा होने के कारन, मामूली किताबों के सिवाय सारे के सारे काम में लाये जा सकते हैं या किसी कमी-बेशी के साथ, यह सर्वोदयी समाज का बराहे रास्त तजुर्बा करने से ही तय किया जा सकेगा. इस तरह शायद इस किताब में शुरू से आख़ीर तक तबदीली करना पड़ जाये, फिर भी इसमें कोई शंका नहीं कि यह किताब सर्वोदयी अर्थ-रचना जानने की इच्छा रखने वालों के बहुत काम की होगी.

हमारे पढ़ने वालों या विद्यार्थियों के सामने पुराने विचारों की ही किताबें आती हैं और उन्हें अपने इम्तिहानों के लिये उन्हीं को घोटना पड़ता है. अब उनके कानों में 'सर्वोदय' लफ़्ज़ पड़ने लगा है. पर उनके सामने ऐसा मसाला नहीं के बराबर है जिससे यह पता चले कि अर्थशास्त्र के लिहाज़ से सर्वोदय की शकल कैसी होगी. इस दिशा में विद्यार्थियों के लिये यह किताब ख़ासकर उपयोगी साबित होगी.

समाज की सुधार और नई रचना करने की ज़िम्मेदारी बहुत-कुछ मास्टरों, अध्यापकों प्रोफ़ेसरों पर है. इन्हें सर्वोदय अर्थशास्त्र की विचार धारा से वाक़िफ़ होना ज़रूरी है. उम्मीद है कि वह भी इस किताब से काफ़ी फ़ायदा उठावेंगे.

—श्रीकृष्णदास जाजू

ارتھ شاستر کی خاص خاص باتوں کو لیکر اُن میں کیا فرق آرتھک روپ رنگ کیا جانا چاہئے اِسکی چرچہ کی گئی ہے. جس سماجی اور کو دھیان میں رکھکر موجودہ ارتھ شاستر کے نیم لکھے گئے ہیں اُس سے سرودئی رچنا بالکل جدا ہونے کے کارن معمولی کتابوں کے وشے سارے کے کام میں لائے جاسکتے ہیں یا کسی کمی بیشی کے ساتھ' یہ تو سرودئی سماج کا براہ راست تجربہ کرنے سے ہی طے کیا جا سکیگا. اس طرح شائد اِس کتاب میں شروع سے آخیر تک تبدیلی کرنا پڑ جائے' پھر بھی اِس میں کوئی شنکا نہیں کہ یہ کتاب سرودئی ارتھ رچنا جاننے کی اچھا رکھنے والوں کے بہت کام کی ہوگی.

ہمارے پڑھنے والوں یا ودیارتھیوں کے سامنے پرانے وچاروں کی ہی کتابیں آتی ہیں اور انہیں اپنے امتحانوں کے لئے انہیں کو گھوٹنا پڑتا ہے. اب اُن کے کانوں میں ' سرودے ' لفظ پڑنے لگا ہے. پر اُن کے سامنے ایسا مسالہ نہیں کے برابر ہے جس سے یہ پتہ چلے کہ ارتھ شاستر کے لحاظ سے سرودے کی شکل کیسی ہوگی. اس دشا میں ودیارتھیوں کے لئے یہ کتاب خاص کر اپیوگی ثابت ہوگی.

سماج کی سکھو اور نئی رچنا کرنے کی ذمہ داری بہت کچھ ماسٹروں' ادھیاپکوں پروفیسروں پر ہے. انہیں سرودے ارتھ شاستر کی وچار دھارا سے واقف ہونا ضروری ہے. اُمید ہے کہ وہ بھی اس کتاب سے کافی فائدہ اٹھاینگے.

—شری کرشن داس جاجو

"......सत्याग्रह एक ऐसी तलवार है जिसके सब तरफ़ धार है. उसे जैसे चाहो वैसे काम में लाया जा सकता है. काम में लाने वाला और जिस पर वह काम में लाई जाती है, दोनो उससे सुखी होते हैं. ख़ून न बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है. उस पर न तो कभी ज़ंग लगता है, और न कोई उसे चुरा ही सकता है......"

—महात्मा गांधी

"..........ستیا گرہ ایک ایسی تلوار ہے جس کے سب طرف دھار ہے. اُسے جیسے چاہو ویسے کام لیا جا سکتا ہے. کام میں لانے والا اور جس پر وہ کام میں لائی جاتی ہے' دونوں اُس سے سکھی ہوتے ہیں. خون نہ بہا کر بھی وہ بڑی کارگر ہوتی ہے. اُس پر نہ تو کبھی زنگ لگتا ہے' اور نہ کوئی اُسے چرا ہی سکتا ہے............"

—مہاتما گاندھی

काम-काज. आदमी को अपनी बुनियादी ज़रूरतों के बारे में स्वावलम्बी रहे बिना सच्ची आज़ादी मुमकिन नहीं. इसलिये रोज़ की ज़रूरत की चीज़ों की तैयारी विकेन्द्री ढंग पर होना चाहिये. हकूमत या राजसत्ता भी जहां तक मुमकिन हो विकेन्द्री होनी चाहिये. अपनी ज़रूरतें बढ़ाने के बजाये, मन और शरीर को तन्दुरुस्त रखते हुए, कम से कम चीज़ों से काम चलाना चाहिये.

अगर अर्थशास्त्र के नियम असली घटनाओं के आधार पर बताना है तो ज़ाहिर में तो ऊपर लिखे मुताबिक़ सर्वोदय समाज का ऐसा कोई ख़ाका नहीं है जिस को देख कर उसके नियम पक्के रूप में बताये जा सकें. लेकिन क्योंकि सर्वोदय व्यवस्था या तनज़ीम दुनिया के फ़ायदे कल्यान के लिये है इसलिये उसकी आर्थिक व्यवस्था या तनज़ीम क्या होनी चाहिये इसका विचार करना ज़रूरी हो गया है. उसमें आम आदमी की क़ुदरती रुझान के बदले इन्सान के बेहतरीन हिस्से यानी इन्सानियत का विचार करना होगा. यहां नीति-शास्त्र का सम्बन्ध आ जाता है. यह कहना ठीक नहीं होगा कि अर्थशास्त्र में नीतिशास्त्र लाने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह अर्थ या दौलत किसी काम की नहीं जिसमें नीति या इन्साफ़ न हो. आदमी के दिल के टुकड़े नहीं हो सकते. अगर वह पैसा कमाने में नीति या इन्साफ़ को अहमियत नहीं देता है तो उसका असर उसके सारे जीवन पर पड़े बिना नहीं रह सकता. कहीं-कहीं ऐसी आवाज़ सुनाई देती है कि अगर पब्लिक काम करने में इन्सान की ज़िन्दगी नेक-पाक हो तो उसकी ख़ानगी ज़िन्दगी की तरफ़ देखने की हमें क्या ज़रूरत. दूसरी जगह नेकी रखनी चाहिये पर राजकाज में यह बात चल नहीं सकती और उसकी ज़रूरत भी नहीं. ऐसी विचार धारा और अर्थ या दौलत का नीति या इन्साफ़ से सम्बन्ध टूटना दिनों दिन अनीति या ज़ियादती बढ़ने का कारन बन रहा है.

सर्वोदय की निगाह से जो विचार खड़े होते हैं उनमें से अर्थशास्त्र सम्बन्धी कुछ विचार ऊपर लिखे गये हैं. सर्वोदय का मुकम्मल अर्थशास्त्र लिख डालना आसान नहीं है. कहीं वैसे समाज का एक फैले हुए पैमाने पर नमूना हो और कुछ अरसे तक उसकी जाँच की जाये तब कहीं उस शास्त्र के नियम हाथ आ सकते हैं, पर वह भी अधूरी शकल में. सर्वोदय समाज की शकल क्या हो इस बारे में अब तक कुछ फुटकर विचार ज़रूर किया गया है पर उसकी पूरी तसवीर नहीं खींची जा सकती. आज की हालत में इतनी ही चर्चा की जा सकती है कि अर्थशास्त्र के चालू विचारों में सर्वोदय के लिहाज़ से क्या फ़र्क़ होना चाहिये. इस किताब में यह दिया गया है. मौजूदा

ساتھ کام ۔ آدمی کو اپنی بنیادی ضرورتوں کے بارے میں سواولمبی رہے بنا سچی آزادی ممکن نہیں ۔ اِسلئے روز کی ضرورت کی چیزوں کی تیاری وکیندری ڈھنگ پر ہونا چاہئے ۔ حکومت یا راج ستا بھی جہاں تک ممکن ہو وکیندری ہونی چاہئے ۔ اپنی ضرورتیں بڑھانے کے بجائے، من اور شریر کو تندرست رکھتے ہوئے، کم سے کم چیزوں سے کام چلانا چاہئے ۔

اگر ارتھ شاستر کے نیم اصلی گھٹناؤں کے آدھار پر بتانا ہے تو ظاہر میں تو اوپر لکھے مطابق سرووُدے سماج کا ایسا کوئی خاکہ نہیں ہے جس کو دیکھکر اُس کے نیم پکے روپ میں بتائے جا سکیں ۔ لیکن کیونکہ سرووُدے ویوستھا یا تنظیم دنیا کے فائدے کلیان کے لئے ہے اِس لئے اُسکی آرتھک ویوستھا یا تنظیم کیا ہونی چاہئے اِسکا وچار کرنا ضروری ہوگیا ہے ۔ اُسمیں عام آدمی کی قدرتی رجحان کے بدلے انسان کے بہترین حصے یعنی انسانیت کا وچار کرنا ہوگا ۔ یہاں نیتی شاستر کا سمبندھ آجاتا ہے ۔ یہ کہنا ٹھیک نہیں ہوگا کہ ارتھ شاستر میں نیتی شاستر لانے کی ضرورت نہیں کیونکہ وہ ارتھ یا دولت کسی کام کی نہیں جس میں نیتی یا انصاف نہ ہو ۔ آدمی کے دل کے ٹکڑے نہیں ہوسکتے ۔ اگر وہ پیسہ کمانے میں نیتی یا انصاف کو اہمیت نہیں دیتا ہے تو اس کا اثر اُس کے سارے جیون پر پڑے بنا نہیں رہ سکتا ۔ کہیں کہیں ایسی آواز سنائی دیتی ہے کہ اگر پبلک کام کرنے میں انسان کی زندگی نیک پاک ہو تو اُسکی خانگی زندگی کی طرف دیکھنے کی ہمیں کیا ضرورت ۔ دوسری جگہ نیکی رکھنی چاہئے پر راج کاج میں یہ بات چل نہیں سکتی اور اُسکی ضرورت بھی نہیں ۔ ایسی وچار دھارا اور ارتھ یا دولت کا نیتی یا انصاف سے سمبندھ ٹوٹنا دنوں دن نیتی یا زیادتی بڑھنے کا کارن بن رہا ہے ۔

سرووُدے کی نگاہ سے جو وچار کھڑے ہوتے ہیں اُن میں سے ارتھ شاستر سمبندھی کچھ وچار اوپر لکھے گئے ہیں ۔ سرووُدے کا مکمل ارتھ شاستر لکھ ڈالنا آسان نہیں ہے ۔ کہیں ویسے سماج کا ایک پھیلے ہوئے پیمانے پر نمونہ ہو اور کچھ عرصے تک اُسکی جانچ کی جائے تب کہیں اُس شاستر کے نیم ہاتھ آ سکتے ہیں، پر وہ بھی ادھوری شکل میں ۔ سرووُدے سماج کی شکل کیا ہو اِس بارے میں اب تک کچھ پھٹکر وچار ضرور کیا گیا ہے پر اُسکی پوری تصویر نہیں کھینچی جا سکتی ۔ آج کی حالت میں اتنی ہی چرچا کی جا سکتی ہے کہ ارتھ شاستر کے چالو وچاروں میں سرووُدے کے لحاظ سے کیا فرق ہونا چاہئے ۔ اِس کتاب میں یہ دیا گیا ہے ۔ موجودہ

चालू शास्त्र की किताबों में जो विचार पाये जाते हैं वह ज़ियादातर पच्छिमी राष्ट्रों के आर्थिक या माली बन्दोबस्त को लेकर क़ायम किये गये हैं. मशीन युग शुरू होने पर वहां जो केन्द्रीय या मरकज़ी और पूंजी पर माली बन्दोबस्त क़ायम किया गया इसी पर वह अर्थशास्त्र खड़ा किया गया है. वक़्त के साथ कुछ तब्दीली ज़रूर हुई लेकिन बुनियादी ढांचा जैसा का तैसा बना रहा. इसमें बड़े बड़े केन्द्री कारखानों की तूती बोलती है जिनमें बनी हुई चीज़ें दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचती हैं. इतना ही नहीं, बल्कि जहां ज़रूरत नहीं है वहां भी तरह तरह की तरकीबों-चालों से लाद दी जाती हैं. फिर उनके लिये कच्चा माल दुनिया भर से बटोर कर और कई देशों को अपने क़ाबू में रखने की ज़रूरत पैदा होती है. इस तरह बड़े बड़े वर्ग-भेद खड़े हो जाते हैं जिनके कारन झगड़े-लड़ाईयां होती हैं, छोटे पिसे जाते हैं और ग़रीबों को चूसा जाता है. एक दूसरे को चित कर देना तो उसकी असलियत ही है. नतीजा यह है कि कुछ थोड़े आदमियों के हाथ में बड़े बड़े कारोबार आ जाते हैं और क़ानूनी तौर से भले न हो, पर अमली तौर से उनका ही हुक्म चलता है और उनकी तूती बोलती है. यह चन्द लोग आपस में संगठन कर कर, एक ताक़त खड़ी कर लेते हैं और दुनिया में मन चाही उथल-पुथल कर सकते हैं. सब देशों में प्रजातन्त्र या लोकराज की दुहाई तो दी जाती है; पर जहां का आर्थिक बन्दोबस्त सारी जनता के हाथ में न होकर एक केन्द्र या मरकज़ के पंजे में आ जाता है और उसे क़ानून की ओट भी मिल जाती है तो वह प्रजातंत्र सचमुच एक दिखावट रह जाता है. आज के पेचीदे समाज में राजकाजी और आर्थिक इन्तज़ाम का बहुत असर पड़ा करता है. अगर उनका ठीक मेल न हो तो समाज का सच्चा हित कैसे सध सकता है! इस इन्तज़ाम में अमीरों का ही बोलबाला रहता है. ग़रीबों को उनकी मर्ज़ी पर मजबूर रहना पड़ता है, न कि अपने बुनियादी इन्सानी हक़ों पर. इस पूंजीवाद की आंच को कुछ हलका करने के लिये अब राज का कारोबार 'वेलफ़ेयर स्टेट' नाम से चलने लगा है. समाजवाद भी आ खड़ा हुआ है और मुक़ाबले पर हिन्सात्मक साम्यवाद या कम्यूनिज़्म तो है ही.

समाज की सुख-शान्ति के लिये अर्थशास्त्र पैसे की जगह इन्सानियत पर खड़ा होना चाहिये. आदमी को इन्सान के जैसी मुनासिब आज़ाद जगह मिलनी चाहिये. कमज़ोर या मज़बूत, सब को इज़्ज़त के साथ रहने का मौक़ा मिलना चाहिये. सब तरह के बनावटी भेद-भाव मिट कर व्यवहार में जहां तक हो सके बराबरी आनी चाहिये और मुक़ाबले या हिर्स के बदले सहकार या

چالو ارتھ شاستر کی کتابوں میں جو وچار پائے جاتے ہیں وہ زیادہ تر پچھمی راشٹروں کے آرتھک یا مالی بندوبست کو لیکر قائم کئے گئے ہیں۔ مشین یگ شروع ہونے پر وہاں جو کیندری یا مرکزی اور پونجی پر مالی بندوبست قائم کیا گیا اسی پر وہ ارتھ شاستر کھڑا کیا گیا ہے۔ وقت کے ساتھ کچھ تبدیلی ضرور ہوئی لیکن بنیادی ڈھانچہ جیسا کا تیسا بنا رہا۔ اسمیں بڑے بڑے کیندری کارخانوں کی طوطی بولتی ہے جن میں بنی ہوئی چیزیں دنیا کے ایک چھور سے دوسرے چھور تک پہونچتی ہیں۔ اتنا ہی نہیں، بلکہ جہاں ضرورت نہیں ہے وہاں بھی طرح طرح کی ترکیبوں چالوں سے لاد دی جاتی ہیں۔ پھر ان کے لئے کچا مال دنیا بھر سے بٹور کر اور کئی دیشوں کو اپنے قابو میں رکھنے کی ضرورت پیدا ہوتی ہے۔ اس طرح بڑے بڑے ورگ بھید کھڑے ہوجاتے ہیں جن کے کارن جھگڑے لڑائیاں ہوتی ہیں، چھوٹے پسے جاتے ہیں اور غریبوں کو چوسا جاتا ہے۔ ایک دوسرے کو چت کر دینا تو اسکی خاصیت ہی ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ کچھ تھوڑے آدمیوں کے ہاتھ میں بڑے بڑے کاروبار آ جاتے ہیں اور قانونی طور سے بھلے نہ ہو، پر عملی طور سے ان کا ہی حکم چلتا ہے اور ان کی طوطی بولتی ہے۔ یہ چند لوگ آپس میں سنگٹھن کر کر ایک طاقت کھڑی کر لیتے ہیں اور دنیا میں من چاہی اتھل پتھل کر سکتے ہیں۔ سب دیشوں میں پرجا تنتر یا لوک راج کی دہائی تو دی جاتی ہے؛ پر جہاں کا آرتھک بندوبست ساری جنتا کے ہاتھ میں نہ ہو کر ایک کیندر یا مرکز کے پنجے میں آ جاتا ہے اور اسے قانون کی اوٹ بھی مل جاتی ہے تو وہ پرجا تنتر سچ مچ ایک دکھاوٹ رہ جاتا ہے۔ آج کے پیچیدے سماج میں راج کاجی اور آرتھک انتظام کا بہت اثر پڑا کرتا ہے۔ اگر ان کا ٹھیک میل نہ ہو تو سماج کا سچا ہت کیسے سدھ سکتا ہے! اس انتظام میں امیروں کا ہی بول بالا رہتا ہے۔ غریبوں کو ان کی مرضی پر مجبور رہنا پڑتا ہے، نہ کہ اپنے بنیادی انسانی حقوں پر۔ اس پونجی واد کی آنچ کو کچھ ہلکا کرنے کے لئے اب راج کا کاروبار 'ویلفیئر اسٹیٹ' نام سے چلنے لگا ہے۔ سماج واد بھی آ کھڑا ہوا ہے اور مقابلے پر ہنساتمک سامیہ واد یا کمیونزم تو ہے ہی۔

سماج کی سکھ شانتی کے لئے ارتھ شاستر پیسے کی جگہ انسانیت پر کھڑا ہونا چاہئے۔ آدمی کو انسان کے جیسی مناسب آزاد جگہ ملنی چاہئے۔ کمزور یا مضبوط، سب کو عزت کے ساتھ رہنے کا موقع ملنا چاہئے۔ سب طرح کے بناوٹی بھید بھاو مٹ کر ویوہار میں جہاں تک ہو سکے برابری آنی چاہئے اور مقابلے یا حرص کے بدلے سہکار یا

...र्थशास्त्र अमूमन दौलत की महिमा में ही उलझा
...ता है. अगर आम आदमी की क़ुदरती तबियत
...ही अर्थ या दौलत का विचार करना हो तो
...ष्टि बहुत कुछ वही रहेगी जो पश्चिमी अर्थशास्त्र
सामने रखी है. पर इन्सानी क़ौम के भले के
...अर्थ के मुक़ाबले इन्सानियत को बड़ी वह ऊंची
...मिलनी चाहिये. दौलत पर ज़ोर देने के कारन
अर्थशास्त्र इन्सानियत के ख़याल से एक मानी में
...बन गया है.

...मी सुख चाहता है. दौलत का मतलब भी सुख
...चाहिये. पश्चिमी अर्थशास्त्र की किताबों में
...की कोई ख़ास चर्चा हमें नहीं मिलती कि इन्सान
...सुख किस में है. कहीं कुछ थोड़ीसी हो भी
...नीति शास्त्र का या असूली या ख़याली आदर्श
...हिस्सा मान कर अर्थशास्त्र में शामिल नहीं
... इसका नतीजा यह है कि अर्थशास्त्र के अन्दर
...दौलत का मतलब भोग लालसा को पूरा करना
...कहीं कहीं पश्चिमी तहज़ीब की तारीफ़ ही यह
है—'इन्सान की ज़रूरतों को बढ़ाना और उन्हें
...'. क्या इस तरीक़े से इन्सान को सच्चा सुख
...सकता है? जिस्म और मन को तन्दुरुस्त रखने
...जिन चीज़ों की ज़रूरत है उनके बारे में कोई झगड़ा
...से आगे बढ़ कर जब मन की मौज या मस्ती या
...के भोगों के लिये जद्दोजहद करने में ही बेहतरी
...तो गहराई में जा कर इस सवाल का जवाब
...कि क्या तरह तरह के ऐश आराम की चीज़ों
...का सच्चा सुख बढ़ाने की बिसात है या नहीं—
...में आदमी की क़ुदरती तबियत के भरोसे कैसे
हैं? विवेक या सूझ बूझ का जीवन ही हमारी
कर सकता है. दुनिया के रिशी मुनियों ने तरह
...योग करने के बाद अपने तजरबे के बल पर
लुब्बेलुबाब निकाला है कि—

...जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति.
...षा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते.
...या लालसा विषयों के भोग से शान्त नहीं
...टे आहुति डाली हुई आग की तरह बढ़ती

...यह तजुरबा ग़लत है? अगर सही है जैसा
...को क़बूल करना पड़ेगा तो मानना होगा कि
अर्थशास्त्र ग़लत नींव पर खड़ा है. इन्सान की
...कल्याण के लिहाज़ से उसकी रचना ऊपर के
...बिना पर ही जानी चाहिये.

پچھمی ارتھ شاسٹر عموماً دولت کی مہما میں
ہی الجھا رہا دیکھتا ہے . اگر عام آدمی کی قدرتی
طبیعت کو دیکھکر ہی ارتھ یا دولت کا وچار کرنا ہو
تو اسکی درشٹی بہت کچھ وہی رہے گی جو پچھمی ارتھ
شاسٹر نے ہمارے سامنے رکھی ہے . پر انسانی قوم کے بھلے
کے لحاظ سے ارتھ کے مقابلہ انسانیت کو بڑی و اونچی
جگہ ملنی چاہئے . دولت پر زور دینے کے کارن پچھمی
ارتھ شاسٹر انسانیت کے خیال سے ایک معنی میں ارتھ
شاسٹر بن گیا ہے .

آدمی سکھ چاہتا ہے . دولت کا مطلب بھی سکھ
ہی ہونا چاہئے . پچھمی ارتھ شاسٹر کی کتابوں میں
اس بات کی کوئی خاص چرچہ ہمیں نہیں ملتی کہ
انسان کا سچا سکھ کس میں ہے . کہیں کچھ تھوڑی سی
ہو بھی تو اسے نیتی شاسٹر کا یا اصولی یا خیالی آدرش
شاسٹر کا حصہ مان کر ارتھ شاسٹر میں شامل نہیں کیا
گیا . اس کا نتیجہ یہ ہے کہ ارتھ شاسٹر کے اندر ارتھ یا
دولت کا مطلب بھوگ لالسا کو پورا کرنا ہی رہا . کہیں
کہیں پچھمی تہذیب کی تعریف ہی یہ بتائی گئی ہے—
' انسان کی ضرورتوں کو بڑھانا اور انہیں پورا کرنا .' کیا
اس طریقہ سے انسان کو سچا سکھ نصیب ہوسکتا ہے ؟
جسم اور من کو تندرست رکھنے کے لئے جن چیزوں کی
ضرورت ہے ان کے بارے میں کوئی جھگڑا نہیں . پر اس سے
آگے بڑھکر جب من کی موج یہ مستی یا طرح طرح کے
بھوگوں کے لئے جدوجہد کرنے میں ہی بہتری سمجھی جائے
تو گہرائی میں جا کر اس سوال کا جواب دینا ہوگا کہ کیا
طرح طرح کے عیش آرام کی چیزوں میں آدمی کا سچا
سکھ بڑھانے کی بساط ہے یا نہیں—اس معاملے میں
آدمی کی قدرتی طبیعت کے بھروسے کیسے رہ سکتے ہیں ؟
وویک یا سمجھ بوجھ کا جیون ہی ہماری رہنمائی کر سکتا
ہے . دنیا کے رشی منیوں نے طرح طرح کے پریوگ کرنے کے
بعد اپنے تجربے کے بل پر یہ لب لباب نکالا ہے کہ—

نہ جاتو کاما کامانام اپبھوگین شامیتی
ہوشا کرشن ورتمیو بھویہ ایوابھیوردھتے

(واسنا یا لالسا وشیوں کے بھوگ سے شانت نہیں ہوتی'
الٹے آہوتی ڈالی ہوئی آگ کی طرح بڑھتی
جاتی ہے)

کیا یہ تجربہ غلط ہے ؟ اگر صحیح ہے جیسا کہ ہر
ایک کو قبول کرنا پڑیگا تو ماننا ہوگا کہ پچھمی ارتھ
شاسٹر غلط نیو پر کھڑا ہے . انسان کی بہبودی وکلیان کے
لحاظ سے اس کی رچنا اوپر کے تجربے کی بنا پر کی
جانی چاہئے .

सर्वोदय अर्थशास्त्र

(श्रीकृष्णदास जाजू)

["नया हिन्द" के इस नम्बर के क़रीब साथ साथ "सर्वोदय अर्थशास्त्र" नाम की एक किताब भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद से निकल रही है जो हमारे ही प्रेस में छपी है. इसके लिखने वाले भाई भगवानदासजी केला हैं जिनके नाम से हिन्दी वाले बख़ूबी वाक़िफ़ हैं और जो पिछले तीस बरस से हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे हैं. 'सर्वोदय अर्थशास्त्र' अपने ढंग की हिन्दी में पहली किताब है. इसकी भूमिका हमारे भाई श्रीकृष्णदास जाजू जी ने लिखी है जो देश की तामीरी दुनिया की एक मशहूर हस्ती हैं. यह भूमिका हम नीचे दे रहे हैं.

—एडीटर]

शास्त्र का काम आम तौर से यह समझा जाता है कि मौक़े महल की जांच करके उसकी जुदा-जुदा घटनाओं के सब क़ायदे नियम बताए जाएं, यानी जो कुछ है उसे क़ायदे क़ानून में बांधा जाय. क्या होना चाहिए इस विशय का शास्त्र अलग माना जाता है. सवाल यह है कि अर्थ या दौलत के साथ जो रवैया आम तौर से इन्सान बरत रहा है उसी की चर्चा करने वाला अर्थशास्त्र हमारे लिये काफ़ी है या नहीं ? यह बात सही है कि आदमी के ज़िन्दा रहने के लिये कई चीज़ों की ज़रूरत है और अर्थ या रुपये-पैसे से इसका लाज़मी ताल्लुक़ है. उसकी इन्द्रियों का क़ुदरती रुझान भी भोगों की तरफ़ है और उन्हें पूरा करने के लिये पैसे की ज़रूरत है. मगर क्या इन इन्द्रियों को बेलगाम छोड़कर उनकी मांग के मुताबिक़ चीज़ें पाने की उधेड़ बुन में ही लगे रहने में इन्सान का सच्चा कल्यान है ? इन्द्रियों के अलावा आदमी के अन्दर अक़्ल या बुद्धि और समझ भी है. उनके ज़रिये वह आगे का विचार कर अपने ठोस और टिकाऊ फ़ायदे या हित के ख़्याल से इन्द्रियों को क़ाबू या संयम में रख सकता है. यह विशय इस दायरे में आता है कि आदमी का दौलत से सम्बन्ध क्या हो. असली सवाल यह है कि आदमी दौलत के लिये बना है या दौलत आदमी के लिये.

सब लोग मंज़ूर करेंगे कि दौलत आदमी के लिये बनी है. पर जब हम इस सवाल को कि दौलत का आदमी से क्या रिश्ता होना चाहिये अर्थशास्त्र से अलग कर देते हैं तो फिर दौलत हावी हो जाती है न कि आदमी. कई अर्थशास्त्री क्या होना चाहिए यह सवाल नीति शास्त्र का मान कर इसे अर्थशास्त्र से अलग रखते हैं. इस वजह से

سروودے ارتھ شاستر

(شری کرشن داس جاجو)

["نیا هند" کے اس نمبر کے قریب ساتھ ساتھ "سروودے ارتھ شاستر" نام کی ایک کتاب بھارتیہ گرنتھ مالا' دارالگنج' الہ آباد سے نکل رہی ہے جو ہمارے ہی پریس میں چھپی ہے. اسکے لکھنے والے بھائی بھگوان داس جی کیلا ہیں جنکے نام سے ہندی والے بخوبی واقف ہیں اور جو پچھلے تیس برس سے ہندی ساہتیہ کی سیوا کر رہے ہیں. "سروودے ارتھ شاستر" اپنے ڈھنگ کی ہندی میں پہلی کتاب ہے. اس کی بھومیکا ہمارے بھائی شری کرشن داس جاجو جی نے لکھی ہے جو دیش کی تعمیری دنیا کی ایک مشہور ہستی ہیں. یہ بھومیکا ہم نیچے دے رہے ہیں.

—ایڈیٹر]

شاستر کا کام عام طور سے یہ سمجھا جاتا ہے کہ موقع محل کی جانچ کرکے اسکی جدا جدا گھٹناؤں کے سب قاعدہ نیم بتائے جائیں' یعنی جو کچھ ہے اس قاعدہ قانون میں باندھا جائے. کیا ہونا چاہئے اس وشے کا شاستر الگ مانا جاتا ہے. سوال یہ ہے کہ ارتھ یا دولت کے ساتھ جو رویہ عام طور سے انسان برت رہا ہے اسی کی چرچہ کرنے والا ارتھ شاستر ہمارے لئے کافی ہے یا نہیں؟ یہ بات صحیح ہے کہ آدمی کے زندہ رہنے کے لئے کئی چیزوں کی ضرورت ہے اور ارتھ یا روپیہ پیسہ سے اسکا لازمی تعلق ہے. اسکی اندریوں کا قدرتی رجحان بھی بھوگوں کی طرف ہے اور انہیں پورا کرنے کے لئے پیسہ کی ضرورت ہے. مگر کیا ان اندریوں کو بے لگام چھوڑ کر انکی مانگ کے مطابق چیزیں پانے کی ادھیڑبن میں ہی لگے رہنے میں انسان کا سچا کلیان ہے؟ اندریوں کے علاوہ آدمی کے اندر عقل یا بدھی اور سمجھ بھی ہے. انکے ذریعہ وہ آگے کا وچار کر اپنے ٹھوس اور ٹکاؤ فائدہ یا ہت کے خیال سے اندریوں کو قابو یا سنیم میں رکھ سکتا ہے. یہ وشے اس دائرہ میں آتا ہے کہ آدمی کا دولت سے سمبندھ کیا ہو. اصلی سوال یہ ہے کہ آدمی دولت کے لئے بنا ہے یا دولت آدمی کے لئے.

سب لوگ منظور کرینگے کہ دولت آدمی کے لئے بنی ہے. پر جب ہم اس سوال کو کہ دولت کا آدمی سے کیا رشتہ ہونا چاہئے ارتھ شاستر سے الگ کر دیتے ہیں تو پھر دولت حاوی ہو جاتی ہے نہ کہ آدمی. کئی ارتھ شاستری کیا ہونا چاہئے یہ سوال نیتی شاستر کا مان کر اسے ارتھ شاستر سے الگ رکھتے ہیں. اس وجہ سے

विटामिन वग़ैरह को मारना. इस करतूत से तेल ज़ियादा से ज़ियादा बे-गुण बन जाता है. ज़ियादा छान बीन से साइन्स ने पाया कि यह साफ़ तेल जमाया भी जा सकता है और घी के जैसा रूप दे कर काम में लाया जा सकता है—घी क्या, वही घी जो हम लोगों को बड़ा प्यारा है. अगर असल घी के साथ मिला दिया जाये तो यह मिलावटी चीज़ घी से टक्कर लेती है और व्योपारिक होड़ में असल घी को नाकों चने चबा सकती है. व्योपार की भलाई में साइन्स ने कैसी बढ़िया खोज की ! कमाल है.

लेकिन कुछ दिन बाद पता चला कि साफ़ करने के फेर में इस सस्ते 'घी' के वह सब तत्व बरबाद हो जाते हैं जो तन्दुरुस्ती और पोशन के ख़याल से बहुत ज़रूरी हैं. इसलिये उसके साथ थोड़ा कलंक लग गया. जिसे मिटाना ज़रूरी था और तभी रोज़गार पनप सकता था. अब साइन्स को फिर न्योता दिया गया और उसने झूठी ख़ुशबूदार चीज़ें, विटामिन वग़ैरा इस तेल में सफ़ाई के साथ भिड़ों दीं. जहां तक हुआ असली घी और जमे तेल का सारा बाहरी भेद मिटा दिया गया. व्योपार की मदद में लगे साइन्स ने घी के बाज़ार में घुस कर जमे हुए तेल को घी का ताक़तवर रक़ीब बना दिया. घी पैदा करने वाले लोग यानी दूध देने वाली ढोरों के पालने वाले लोग क़ुदरती तौर पर सिर्फ़ गांवों में ही होते हैं. इस जमे तेल के व्योपार ने उनकी रोज़ी—छीन कर उनको कहीं का न रखा. बलिहारी है ख़ुराक में ऐसी खोज की !

खोज का असली मक़सद

हमें साइन्स से प्यार करना और उसे बढ़ाना चाहिये. इन्सानी सुख की बढ़ोतरी के लिये वह ज़रूरी है. ख़ुराक की खोज ज़रूर की जानी चाहिये. पर होशियारी के साथ. उसका मक़सद व्योपार और रोज़गार को फैलाना नहीं, बल्कि ग़रीबों की मदद होना चाहिये.

وٹامن' وغیرہ کو مارنا۔ اس کرتوت تیل زیادہ سے زیادہ بےگن بن جاتا ہے۔ زیادہ چھان بین سے سائنس نے پایا کہ یہ صاف تیل جمایا بھی جا سکتا ہے اور گھی کے جیسا روپ دے کر کام میں لیا جا سکتا ہے—گھی کیا' وہی گھی جو ہم لوگوں کو بڑا پیارا ہے۔ اگر اصل گھی کے ساتھ ملا دیا جائے تو یہ ملاوٹی چیز گھی سے ٹکر لیتی ہے اور بیوپارک ہوڑ میں اصل گھی کو ناکوں چنے چبا سکتی ہے۔ بیوپار کی بھلائی میں سائنس نے کیسی بڑھیا کھوج کی! کمال ہے۔

لیکن کچھ دن بعد پتہ چلا کہ صاف کرنے کے پھیر میں اس سستے 'گھی' کے وہ سب تتو برباد ہوجاتے ہیں جو تندرستی اور پوشن کے خیال سے بہت ضروری ہیں۔ اس لئے اسکے ساتھ تھوڑا کلنک لگ گیا۔ جسے مٹانا ضروری تھا اور تبھی روزگار پنپ سکتا تھا۔ اب سائنس کو پھر نیوتا دیا گیا اور اسنے جھوٹی خوشبودار چیزیں وٹامن وغیرہ اس تیل میں صفائی کے ساتھ بھڑو دیں۔ جہاں تک ہوا اصلی گھی اور جمے تیل کا سارا باہری بھید مٹا دیا گیا۔ بیوپار کی مدد میں لگے سائنس نے گھی کے بازار میں گھسکر جمے ہوئے تیل کو گھی کا طاقت ور رقیب بنا دیا۔ گھی پیدا کرنے والے لوگ یعنی دودھ دینے والی ڈھوروں کے پالنے والے لوگ قدرتی طور پر صرف گاؤں میں ہی ہوتے ہیں۔ اس جمے تیل کے بیوپار نے اُن کی روزی— چھین کر اُن کو کہیں کا نہ رکھا۔ بلہاری ہے خوراک میں ایسی کھوج کی!

کھوج کا اصلی مقصد۔

ہمیں سائنس سے پیار کرنا اور اسے بڑھانا چاہئے۔ انسانی سکھ کی بڑھوتری کے لئے وہ ضروری ہے۔ خوراک کی کھوج ضرور کی جانی چاہئے۔ پر ہوشیاری کے ساتھ۔ اس کا مقصد بیوپار اور روزگار کو پھیلانا نہیں' بلکہ غریبوں کی مدد ہونا چاہئے۔

चावल व्योपार-रोज़गार बढ़ाने का नया साधन मुहय्या कर दिया. हम जानते हैं कि देश में काफ़ी चावल के होते हुए भी हिन्दुस्तान के लोग भूक से तड़प तड़प कर मर गए, क्योंकि ऊपर से सस्ते दिखाई देने वाले चावल ख़रीदने के पैसे भी उनके पास नहीं थे. क्या इन माहिरों से यह उमीद की जा सकती है कि चावल को मिल में साफ़ करने और पालिश करने से उनमें से जो कमियां पैदा होती हैं, उनको पूरा करने के लिए वह कोई नया ख़ुराकी सामान देंगे या उस चावल में ही पोशक तत्व बढ़ाएंगे ?

मूँग फली से रोज़गार

यही या इससे भी ज़ियादा दुख भरी कहानी मूँग फली की है. यह एक मीठी और ठोस चीज़ है, जिसे लोग ख़ास मौक़ों पर काम में लाते थे. सब कोई जानते थे कि मूंग-फली में तेल होता है, लेकिन इस मतलब के लिये कभी उसकी खेती नहीं की जाती थी. गांव की घानी में वह आसानी से पेरी नहीं जा सकती थी. भारत में रिवाज भी तेल के रोज़गार के ख़िलाफ़ था. तेल, दूध और कुछ दूसरी चीज़ें बेचना शान के ख़िलाफ़ माना जाता था. वह घरेलू ख़र्च की चीज़ें समझी जाती थीं. किसी ज़रूरत मन्द पड़ोसी को यह चीज़ें मुफ़्त दी जा सकती थीं, लेकिन इन्हें कोई बेचता नहीं था. इसलिये तिलहन की खेती बड़े पैमाने पर नहीं की जाती थी. यह फ़सलें अनाजों के साथ साथ थोड़ी मिक़दार में बो दी जाती थीं.

साइन्स ने तेल निकालने की मशीनें ईजाद कीं. कारख़ानों में रोज़ सैकड़ों हज़ारों मन तिलहन पेरी जाने लगी. 'इस तरह व्योपारी तेल उद्योग ने गांव के घरेलू तेली की जगह ले ली और तिलहन की फ़सल का महत्व पहले से कहीं ज़ियादा बढ़ गया. तेल निकालने वाली मशीन तो पत्थरों को भी पेर सकती है. बशर्ते कि उसमें तेल हो. तो फिर मूंगफली को पेरना कौन आफ़त का काम है ? इसलिये तेल की मिल को तिल, राई या सरसों के छोटे दानों की ज़रूरत न रही. उसके लिये मूंग फली के बड़े दानों से ज़ियादा सुभीता था. इस तरह मूंगफली फ़ायदे वाली व्योपारिक फ़सल बन गई.

बनस्पति की ईजाद और घी का ख़ात्मा

लेकिन इतनी बड़ी मिक़दार में तैयार किया हुआ तेल आसानी से नहीं बिक सकता. खाने के काम में लाने से पहले उसे महीनों रखना पड़ता है. लेकिन इस अरसे में वह बिगड़ जाता है. इसलिये रोज़गार के सामने जो सवाल खड़ा हुआ, उसे के हल करने के लिये फिर साइन्स को दावत दी गई. वह आई और उसने व्योपार को तेल साफ़ करने के साधन दिये. तेल को साफ़ करने का मतलब है उसकी गंध, स्वाद,

ایسا بیوپار روزگار بڑھانے کا نیا سادھن مہیا کر دیا . ہم جانتے ہیں کہ دیش میں کافی چاول کے ہوتے ہوئے بھی ہندستان کے لوگ بھوک سے تڑپ تڑپ کر مر گئے' کیونکہ اُوپر سے سستے دکھائی دینے والے چاول خریدنے کے پیسے بھی اُن کے پاس نہیں تھے . کیا ان ماہروں سے یہ اُمید کی جا سکتی ہے کہ چاول کو مل میں صاف کرنے اور پالش کرنے سے اُن میں سے جو کمیاں پیدا ہوتی ہیں' اُن کو پورا کرنے کے لئے وہ کوئی نیا خوراکی سامان دیں گے یا اُس چاول میں ہی پوشک تتو بڑھائیں .

مونگ پھلی سے روزگار .

یہی یا اس سے بھی زیادہ دکھ بھری کہانی مونگ پھلی کی ہے . یہ ایک میٹھی اور ٹھوس چیز ہے' جسے لوگ خاص موقعوں پر کام میں لاتے تھے . سب کوئی جانتے تھے کہ مونگ پھلی میں تیل ہوتا ہے' لیکن اِس مطلب کے لئے کبھی اُس کی کھیتی نہیں کی جاتی تھی . گاؤں کی گھانی میں وہ آسانی سے پیری نہیں جا سکتی تھی . بھارت میں رواج بھی تیل کے روزگار کے خلاف تھا . تیل' دودھ اور کچھ دوسری چیزیں بیچنا شان کے خلاف مانا جاتا تھا . وہ گھریلو خرچ کی چیزیں سمجھی جاتی تھیں. کسی ضرورت مند پڑوسی کو یہ چیزیں مفت دی جا سکتی تھیں' لیکن اِنہیں کوئی بیچتا نہیں تھا . اِس لئے تلہن کی کھیتی بڑے پیمانے پر نہیں کی جاتی تھی . یہ فصلیں اناجوں کے ساتھ ساتھ تھوڑی مقدار میں بو دی جاتی تھیں .

سائنس نے تیل نکالنے کی مشینیں ایجاد کیں . کارخانوں میں روز سیکڑوں ہزاروں من تلہن پیری جانے لگی . اِس طرح بیوپاری تیل اُدیوگ نے گاؤں کے گھریلو تیلی کی جگہ لے لی اور تلہن کی فصل کا مہتو پہلے سے کہیں زیادہ بڑھ گیا . تیل نکالنے والی مشین تو پتھروں کو بھی پیر سکتی ہے' بشرطیکہ اُسمیں تیل ہو . تو پھر مونگ پھلی کو پیرنا کون آفت کا کام ہے . اِس لئے تیل کی مل کو تل' رائی یا سرسوں کے چھوٹے دانوں کی ضرورت نہ رہی . اُس کے لئے مونگ پھلی کے بڑے دانوں سے زیادہ سوبھیتا تھا . اِس طرح مونگ پھلی فائدہ والی بیوپاری فصل بن گئی .

بنسپتی کی ایجاد اور گھی کا خاتمہ .

لیکن اتنی بڑی مقدار میں تیار کیا ہوا تیل آسانی سے نہیں بک سکتا . کھانے کے کام میں لانے سے پہلے اُسے مہینوں رکھنا پڑتا ہے. لیکن اس عرصے میں وہ بگڑ جاتا ہے. اسلئے روزگار کے سامنے جو سوال کھڑا ہوا اُسکے حل کرنے کے لئے پھر سائنس کو دعوت دی گئی . وہ آئی اور اُس نے بیوپار کو تیل صاف کرنے کے سادھن دیئے . تیل کو صاف کرنے کا مطلب ہے اُن کی گندھ' سواد'

भी महरूम कर देते हैं, क्योंकि अपनी खोज के ज़रिये वह इन से बनी हुई नई चीज़ों को खुशहाल लोगों के सामने लुभावने रूप में पेश करते हैं. यह खुशहाल लोग नई चीज़ों के न होने पर भी कोई तकलीफ़ नहीं उठाते थे. नतीजा यह है कि एक वक़्त जो सिर्फ़ ग़रीब आदमी की ही खुराक थी उसे अब अमीर और ऊंचे बीच वाले दरजे के लोग भी चाहने लगते हैं. इस तरह इन चीज़ों के लिए बाज़ार खड़ा हो जाता है. इनसे व्यापारियों को अच्छे दाम मिलते हैं—खाने के खास अनाजों वग़ैरह से भी ज़ियादा अच्छे दाम. समय बीतने पर इन चीज़ों की मांग इस हद तक बढ़ जाती है कि किसान अनाज, दाल वग़ैरह जैसी बा क़ायदा खुराक की चीज़ें पैदा करने के बजाय यह चीज़ें पैदा करने लगते हैं. इस तरह यह खुराकी फ़सलों के बजाय व्योपारी फ़सलें बन जाती हैं.

चावल की बरबादी।

चावल और मूंगफली उस तरीक़े की दो दर्दनाक मिसालें हैं जिनसे साइन्स ने ग़रीब आदमी की खुराक के मामले में मदद पहुँचाने के बजाय नुक़सान ही पहुँचाया है. पहले विज्ञान ने चावल के भूसी निकालने की मशीनरी को ईजाद किया. मज़दूरों का काम मशीन ने छीन लिया जिसकी वजह से मशीन का निकला चावल सस्ता मालूम हुआ. लेकिन क्योंकि इसके लिए बड़ी बड़ी मशीनों की ज़रूरत होती थी इसलिए सिर्फ़ पूंजीवाला व्यापारी ही इससे फ़ायदा उठा सकता था. विज्ञान ने इसके साथ साथ चावल को पालिश करने का काम भी कर डाला. इससे चावल आंखों को ज़ियादा चटकीला और जीभ को ज़ियादा मीठा लगने लगा. इस तरह भूसी निकालने का काम खालिस व्यापार और रोज़गार बन गया. साइन्स ने यह जानने की परवाह नहीं की कि इसका ग़रीबों पर क्या असर पड़ता है. उनके हाथ से कूट कर चावल की भूसी निकालने का धन्धा छिन गया. साथ ही भूसी और ताक़तदेह चावल भी पेट से छिन गया.

ज़ियादा तजरबे और खोज से विज्ञान को पता चला कि मशीनों की मदद से भूसी निकाला हुआ मोती सा चमकने वाला चावल पोषण की निगाह से निकम्मा है. अगर कोई पोषक चीज़ या तत्व उसके साथ जोड़ा न जाए, तो वह तन्दुरुस्ती को नुक़सान पहुँचाता है. इसलिए चावल को मिल में कूट कर भूसी निकालने और पालिश करने से उसमें खुराक के विचार से जो कमियां पैदा होती हैं, उन्हें दूर करने के लिए साइन्स ने ज़ियादा बनावटी तरीक़े खोजे और बाहर से चावल के साथ पोषक तत्व जोड़े. इस तरह दोबारा उस ग़रीब को ज़ियादा खुराक और उसे खरीदने के साधन देने के बजाय पूंजीपतियों को

بھی محروم کر دیتے ہیں، کیونکہ اپنی کھوج کے ذریعہ وہ ان سے بنی ہوئی نئی چیزوں کو خوش حال لوگوں کے سامنے لبھاونے روپ میں پیش کرتے ہیں . یہ خوش حال لوگ نئی چیزوں کے نہ ہونے پر بھی کوئی تکلیف نہیں اٹھاتے تھے . نتیجہ یہ ہے کہ ایک وقت جو صرف غریب آدمی کی ہی خوراک تھی اسے اب امیر اور اونچے بیچ والے درجے کے لوگ بھی چاہنے لگتے ہیں . اس طرح ان چیزوں کے لئے بازار کھڑا ہو جاتا ہے . ان سے بیوپاریوں کو اچھے دام ملتے ہیں— کھانے کے خاص اناجوں وغیرہ سے بھی زیادہ اچھے دام . سمے بیتنے پر ان چیزوں کی مانگ اس حد تک بڑھ جاتی ہے کہ کسان اناج، دال وغیرہ جیسی باقاعدہ خوراک کی چیزیں پیدا کرنے کے بجائے یہ چیزیں پیدا کرنے لگتے ہیں . اس طرح یہ خوراکی فصلوں کے بجائے بیوپاری فصلیں بن جاتی ہیں .

چاول کی بربادی .

چاول اور مونگ پھلی اس طریقے کے دو دردناک مثالیں ہیں جن سے سائنس نے غریب آدمی کو خوراک کے معاملے میں مدد پہونچانے کے بجائے نقصان ہی پہونچایا ہے . پہلے وگیان نے چاول کی بھوسی نکالنے کی مشینری کو ایجاد کیا . مزدوروں کا کام مشین نے چھین لیا جس کی وجہ سے مشین کا نکلا چاول سستا معلوم ہوا . لیکن کیونکہ اس کے لئے بڑی بڑی مشینوں کی ضرورت ہوتی تھی اس لئے صرف پونجی والا بیوپاری ہی اس سے فائدہ اٹھا سکتا تھا . وگیان نے اس کے ساتھ ساتھ چاول کو پالش کرنے کا کام بھی کر ڈالا . اس سے چاول آنکھوں کو زیادہ چٹکیلا اور جیبھ کو زیادہ میٹھا لگنے لگا . اس طرح بھوسی نکالنے کا کام خاص بیوپار اور روزگار بن گیا . سائنس نے یہ جاننے کی پرواہ نہیں کی کہ اس کا غریبوں پر کیا اثر پڑتا ہے . ان کے ہاتھ سے کوٹ کر چاول کی بھوسی نکالنے کا دھندا چھن گیا . ساتھ ہی بھوسی اور طاقت دیہ چاول بھی پیٹ سے چھن گیا .

زیادہ تجربے اور کھوج سے وگیان کو پتہ چلا کہ مشینوں کی مدد سے بھوسی نکالا ہوا موتی سا چمکنے والا چاول پوشن کی نگاہ سے نکما ہے . اگر کوئی پوشک چیز یا تتو اس کے ساتھ جوڑا نہ جائے، تو وہ تندرستی کو نقصان پہنچاتا ہے . اس لئے چاول کو مل میں کوٹ کر بھوسی نکالنے اور پالش کرنے سے اس میں خوراک کے وچار سے جو کمیاں پیدا ہوتی ہیں، انہیں دور کرنے کے لئے سائنس نے زیادہ بناوٹی طریقے کھوجے اور باہر سے چاول کے ساتھ پوشک تتو جوڑے . اس طرح دوبارہ اس غریب کو زیادہ خوراک اور اسے خریدنے کے سادھن دینے کے بجائے پونجی پتیوں کو

तादाद और परवरिश की दृष्टि से पूरा अनाज नहीं मिलता. जिन लोगों को भर पेट अनाज मिल जाता है, वह भी परवरिश के लिहाज़ से भूकों ही मरते हैं. नतीजा यह है कि राष्ट्र जो खुराक खाता है, उसका एक हिस्सा बिल्कुल ख़राब जाता है, क्योंकि अच्छी तरह हज़म न होने के कारन उससे लोगों को कोई फ़ायदा नहीं मिलता.

ब्योपारियों का फ़ायदा.

इस लिये जब खुराक की खोज करने वाले वैज्ञानिक तन्दुरुस्ती बढ़ाने वाली खुराक की कोई ऐसी नई चीज़ सुझाते हैं, जो कसरत से मिलने वाली लेकिन अनजानी या ग़ैर मामूली बनस्पति से तैयार की जा सकती हो, तो वह मुफ़्लिस राष्ट्र को नया सन्देश देने वाले फ़रिश्ते से मालूम होने चाहियें. राष्ट्र के सेवक इन खोजियों से इस तरह का कोई घरेलू तरीक़ा जानना चाहते हैं जिसकी मदद से वह किसी बनस्पति से पोशक खुराक तैयार कर सकें. वह चाहते हैं कि इस तरह वे बनस्पतियाँ काम में आ जायें जो न खाने लायक़ या न हज़म होने लायक़ मानी जाती हैं और आस पास बेकार पड़ी रहती हैं, या जिन्हें वह परती ज़मीन पर या डांवाडोल फ़सल देने वाली ज़मीन पर आसानी से पैदा कर सकते हैं. जिस मक़सद को सामने रखकर हमारे माहिर लोग खोज करते हैं, उसके कारन उनके सारे काम की मिट्टी पलीद हो जाती है—कभी कभी तो वह ग़रीबों के लिए नुक़सान देह भी साबित होता है. उनका काम इन्सान के भोजन की खानगियों सूची की में एक नई चीज़ ज़रूर जोड़ देता है. पर ऐसी चीज़ों से वह लोग ही फ़ायदा उठा सकते हैं, जो दूसरे रास्तों से रोज़ी कमाते हैं और बाज़ार में ऊपर से सस्ती दिखने वाली बनावटी खुराक ख़रीदते हैं. जो लोग ऐसा कर सकते हैं उनमें से ज़ियादातर उन चीज़ों के अलावा यह चीज़ें खाते, हैं, जिनको अमीर और ग़रीब दोनों खुराक के तौर पर काम में लाते हैं. अगर माहिरों के ज़रिये तलाश की हुई तैयार की हुई नई चीज़ें ऐसी हों जो अनाज, दाल, ख़ालिस खुराकों के पूरे हिस्सों को ग़रीबों के खाने के लिए छोड़ दें तो यह कोशिश ज़रूर की जानी चाहिए. लेकिन माहिरों की यह खोजें ग़रीबों के लिए नई खुराक पैदा नहीं करतीं. वह सिर्फ़ ऐश व आराम और शौक़ की नई चीज़ें व खानगियां पैदा करती हैं, ब्योपार और रोज़गार को जन्म देती हैं फिर इन चीज़ों के बनाने में साइन्सी आधार के तौर पर अक्सर उन चीज़ों को काम में लाते हैं जिन्हें एक समय ग़रीब लोग ही मुसीबत के वक़्त अपनी खुराक की कमी पूरी करने के लिए काम में लाते थे. यह माहिर लोग इस तरह ग़रीबों को मामूली कन्द मूल, फलों और अनाजों से

تعداد اور پرورش کی درشٹی سے پورا اناج نہیں ملتا . جن لوگوں کو بھر پیٹ اناج مل جاتا ہے' وہ بھی پرورش کے لحاظ سے بھوکوں ہی مرتے ہیں . نتیجہ یہ ہے کہ راشٹر جو خوراک کھاتا ہے' اُس کا ایک حصہ بالکل خراب جاتا ہے' کیونکہ اچھی طرح ہضم نہ ہونے کے کارن اُس سے لوگوں کو کوئی فائدہ نہیں ملتا .

بیوپاریوں کا فائدہ .

اس لئے جب خوراک کی کھوج کرنے والے وگیانک تندرستی بڑھانے والی خوراک کی کوئی ایسی نئی چیز سجھاتے ہیں' جو کثرت سے ملنے والی لیکن اَن جانی یا غیر معمولی بنسپتی سے تیار کی جاسکتی ہو' تو وہ بھوکے راشٹر کو نیا سندیش دینے والے فرشتے سے معلوم ہونے چاہئیں. راشٹر کے سیوک اِن کھوجیوں سے اِس طرح کا کوئی گھریلو طریقہ جاننا چاہتے ہیں جس کی مدد سے وہ کسی بنسپتی سے پوشک خوراک تیار کر سکیں . وہ چاہتے ہیں کہ اس طرح وہ بنسپتیاں کام میں آجائیں جو نہ کھانے لائق یا نہ ہضم ہونے لائق مانی جاتی ہیں اور آس پاس بیکار پڑی رہتی ہیں' یا جنہیں وہ پرتی زمین پر یا ڈانواڈول فصل دینے والی زمین پر آسانی سے پیدا کر سکتے ہوں. جس مقصد کو سامنے رکھکر ہمارے ماہر لوگ کھوج کرتے ہیں' اسکے کارن اُن کے سارے کام کی مٹی پلید ہو جاتی ہے--کبھی کبھی تو وہ غریبوں کے لئے نقصان دیہ بھی ثابت ہوتا ہے . اُن کا کام انسان کے بھوجن کی بانگیوں کی سوچی میں ایک نئی چیز ضرور جوڑ دیتا ہے . پر ایسی چیزوں سے وہ لوگ ہی فائدہ اُٹھا سکتے ہیں' جو دوسرے راستوں سے روزی کماتے ہیں اور بازار میں اوپر سے سستی دیکھنے والی بناوٹی خوراک خریدتے ہیں . جو لوگ ایسا کر سکتے ہیں' اُن میں سے زیادہ تر اُن چیزوں کے علاوہ یہ چیزیں کھاتے ہیں' جن کو امیر اور غریب دونوں خوراک کے طور پر کام میں لاتے ہیں . اگر ماہروں کے ذریعہ تلاش کی ہوئی یا تیار کی ہوئی نئی چیزیں ایسی ہوں جو اناج' دال' خالص دودھ اور اصلی گھی تیل جیسی معمولی خوراکوں کے پورے حصوں کو غریبوں کے کھانے کے لئے چھوڑ دیں تو یہ کوشش ضرور کی جانی چاہئے . لیکن ماہروں کی یہ کھوجیں غریبوں کے لئے نئی خوراک پیدا نہیں کرتیں . وہ صرف عیش و آرام اور شوق کی نئی چیزیں وبانگیاں پیدا کرتی ہیں' بیوپار اور روزگار کو جنم دیتی ہیں . پھر اِن چیزوں کے بنانے میں سائنسی آدھار کے طور پر اکثر اُن چیزوں کو کام میں لاتے ہیں جنہیں ایک سمے غریب لوگ ہی مصیبت کے وقت اپنی خوراک کی کمی پوری کرنے کے لئے کام میں لاتے تھے . یہ ماہر لوگ اِس طرح غریبوں کو معمولی کند مول' پھلوں اور اناجوں سے

दो सौ रुपये, जो करारदारी की शकल में तय हुए थे, न लिये जायें. और उनके बाप इस बात पर राज़ी भी हो गये. राज़ी हो जाने के बाद उन बुज़ुर्ग से एक नई बात का पता और चला और वह यह कि उनकी ब्राह्मनी उनसे ज़ियादा सन्तोषी थी. यह दूसरी बात है कि वह पढ़ी-लिखी न होने की वजह से पुराने संस्कारों में विश्वास रखती थी और ग़लत रस्म-रिवाज को ही धरम मानती थी, इसलिये उन बुज़ुर्ग को समझाने में थोड़ी दिक़्क़त हुई. और वह यह बात थी कि जैसे ही बुज़ुर्ग घर पहुँचे और उन्होंने एक मुसलमान से दान लेकर आने की बात अपनी ब्राह्मनी से कही तो वह एकदम बिगड़ गईं और उन्होंने उस रुपये को छूने तक से इन्कार कर दिया. बुज़ुर्ग वेद वेदांग के जानकार थे इसलिये उसको आसानी से समझा सके और पूरी तरह राज़ी कर सके. आगे का हाल तो आप जानते ही हैं. जब मैं उनके गाँव में पहुंचा तो क्या ब्राह्मनी, क्या उनकी लड़की, क्या गांव वाले, क्या बाराती और क्या नौशह सभी ने मुझे इस तरह अपनाया मानों मैं इन्हीं में से एक हूँ और फिर जनाब, आज के दिन तक उस घराने से मेरे घराने की राहोरस्म ऐसी चली आ रही है मानो हम सब एक ही धरम और एक ही जाति के हों.'

क्या अब भी आप समझते हैं कि यह कलजुग है ?

'राष्ट्र भारती' से —भगवानदीन

دو سو روپے' جو قرار داری کی شکل میں طے ہوئے تھے' نہ لئے جائیں. اور اس کے باپ اِس بات پر راضی بھی ہوگئے. شادی ہوجانے کے بعد اُن بزرگ سے ایک نئی بات کا پتہ اور چلا اور وہ یہ کہ اُن کی براہمنی اُن سے زیادہ سنتوشی تھی' یہ دوسری بات ہے کہ وہ پڑھی لکھی نہ ہونے کی وجہ سے پرانے سنسکاروں میں وشواس رکھتی تھی اور غلط رسم رواج کو ہی دھرم مانتی تھی' اس لئے اُن بزرگ کو سمجھانے میں تھوڑی دقت ہوئی . اور وہ یہ بات تھی کہ جیسے ہی بزرگ گھر پہنچے اور اُنھوں نے ایک مسلمان سے دان لیکر آنے کی بات اپنی براہمنی سے کہی تو وہ ایک دم بگڑ گئیں اور انھوں نے اُس روپے کو چھونے تک سے انکار کر دیا . بزرگ وید ویدانگ کے جانکار تھے اس لئے اُس کو آسانی سے سمجھا سکے اور پوری طرح راضی کر سکے . آگے کا حال تو آپ جانتے ہی ہیں . جب میں اُن کے گاؤں میں پہنچا تو کیا براہمنی' کیا اُن کی لڑکی' کیا گاؤں والے' کیا باراتی اور کیا نوشہ سبھی نے مجھے اِس طرح اپنایا مانوں میں انھیں میں سے ایک ہوں اور پھر جناب' آج کے دن تک اُس گھرانے سے میرے گھرانے کی راہ و رسم ایسی چلی آ رہی ہے مانوں ہم سب ایک ہی دھرم اور ایک ہی جات کے ہوں.'

کیا اب بھی آپ سمجھتے ہیں کہ یہ کلجگ ہے ؟

'راشٹر بھارتی' سے —بھگوان دین

'हरिजन' से

खुराक में खोज और सरकार

(किशोर लाल मशरूवाला)

[आजकल आए दिन हमारे सरकारी हुक्काम बताया करते हैं कि खुराक के मामले में देश में बड़ी बड़ी खोजें की जा रही हैं और वह वक़्त क़रीब है जब इस तरह खुराक के हमारे सब सवाल हल हो जायेंगे. लेकिन कौन नहीं जानता कि हमारे देश में जो खोज का काम होता है वह जनता से कितनी दूर रह कर किया जाता है और उसमें किसी व्यापारी वग़ैरह को भले फ़ायदा होता हो जनता को तो हरगिज़ नहीं होता. इस सम्बन्ध में हाल ही में 'हरिजन' में श्री किशोरलाल भाई मशरूवाला ने एक चुभता हुआ लेख लिखा है. हम उसी का अनुवाद नीचे दे रहे हैं.—एडीटर]

हमारे देश में ठीक और पूरी खुराक में कुछ ज़रूरी चीज़ों की बहुत कमी है. राष्ट्र के ज़ियादा बड़े हिस्से को

'ہریجن' سے

خوراک میں کھوج اور سرکار

(کشور لال مشرو والا)

[آج کل آئے دن ہمارے سرکاری حکام بتایا کرتے ہیں کہ خوراک کے معاملے میں دیش میں بڑی بڑی کھوجیں کی جا رہی ہیں اور وہ وقت قریب ہے جب اِسطرح خوراک کے ہمارے سب سوال حل ہو جائیں گے . لیکن کون نہیں جانتا کہ ہمارے دیش میں جو کھوج کا کام ہوتا ہے وہ جنتا سے کتنی دور رہ کر کیا جاتا ہے اور اُس میں کسی بیوپاری وغیرہ کو بھلے فائدہ ہوتا ہو جنتا کو تو ہرگز نہیں ہوتا . اِس سمبندھ میں حال ہی میں 'ہریجن' میں شری کشور لال بھائی مشرووالا نے ایک چبھتا ہوا لیکھ لکھا ہے . ہم اُسی کا انوواد نیچے دے رہے ہیں.—ایڈیٹر]

ہمارے دیش میں ٹھیک اور پوری خوراک میں کچھ ضروری چیزوں کی بہت کمی ہے. راشٹر کے زیادہ بڑے حصے کو

दे चुका. अब इनमें से एक भी मेरा नहीं है. आप उन दो नोटों को, जिन्हें आप ज़रूरत से ज़ियादा समझते हैं, किसी और काम में लगा दीजिये.'

'आप कहते तो ठीक हैं, पर मैं क्या करूं ? मैं पैदायशी ब्राह्मन हूं और खेती करता हूँ. दोनों ही के नाते मुझे ज़रूरत से ज़ियादा लेने का अधिकार नहीं और बे ज़रूरत की चीज़ को लेकर उसे ख़र्च करने की सोचना मुझे कुछ जँचता नहीं. और फिर भीक से पाई रक़म को किसी दूसरे को दे डालने में मज़ा भी क्या है ?'

'महाराज, आपको अपने मज़े का तो हर तरह ख़याल, पर मेरी तकलीफ़ का ज़रा भी ख़याल नहीं. मैं जिस रक़म को दे चुका उसे कैसे वापस ले लूँ. और अगर ले लूं तो मेरे दिल को कितनी तकलीफ़ होगी.'

'भाई साहब, मैं यह तो कैसे कहूँ कि आप जो कुछ कह रहे हैं वह सच नहीं है, पर मैंने तो आते ही आपके सामने अपनी सारी कहानी सच-सच सुना दी थी और अपनी ज़रूरत भी बता दी थी; फिर आप मुझे ज़ियादा लेने के लिये क्यों मजबूर करते हैं.'

'देखिये आप मुझे भाई कहकर बोलते हैं. अब आप और हम भाई-भाई हैं. अब न आप दान लेनेवाले और न मैं दान देनेवाला. अब आप इस रक़म को दान हरगिज़ न समझिये, यह तो मैं अपनी भतीजी के ब्याह में ख़र्च करने के लिये आपको दे रहा हूँ.'

'जब यह बात है तब आपको रुपये वापिस ले लेने चाहिये. और मुझे ज़रूरत से ज़ियादा लेने के लिये ज़ोर नहीं देना चाहिये. मैं ब्याह में ज़ियादा ख़र्च करके ऐसी बात क्यों करूँ जिसे मैं आगे न निभा सकूँ. और फिर जब आप इस रक़म को दान ही नहीं मानते तब इसको वापिस लेने में क्यों आनाकानी ?'

'अच्छा एक काम कीजिये. आप यह दो नोट न लीजिये. मेरी तरफ़ से ये दोनों नोट मेरी भतीजी को दे दीजिये.'

'भाई साहब, यह न हो सकेगा. मैं ज़रूरत से ज़ियादा एक पैसा भी न ले सकूंगा.'

'अब मैं आप से क्या कहूं. मैं उन बुज़ुर्ग ब्राह्मन को किसी तरह तीन सौ से ऊपर एक पैसा लेने के लिये राज़ी न कर सका. हाँ, यह दूसरी बात है कि मैं वक़्त निकालकर उनकी लड़की के ब्याह के मौक़े पर उनके गाँव पहुँच गया. और फिर बड़ी मुश्किल से इस बात में कामयाब हो सका. कि मैं जो कुछ नक़द, ज़ेवर, कपड़ा उस लड़की के लिये ले गया था, उसे दे सका. हाँ, मेरे गांव पहुँचने का यह नतीजा ज़रूर हुआ कि बारात को जैसे ही यह सारा क़िस्सा मालूम हुआ तो लड़के ने अपने बाप से इस बात पर ज़िद की कि

دے چکا ۔ اب ان میں سے ایک بھی میرا نہیں ہے ۔ آپ اُن دو نوٹوں کو، جنہیں آپ ضرورت سے زیادہ سمجھتے ہیں کسی اور کام میں لگا دیجئے ۔'

' آپ کہتے تو ٹھیک ہیں، پر میں کیا کروں ؟ میں پیدائشی براہمن ہوں اور کھیتی کرتا ہوں ۔ دونوں ہی کے ناطے مجھے ضرورت سے زیادہ لینے کا ادھیکار نہیں اور بے ضرورت کی چیز کو لیکر پھر اُسے خرچ کرنے کی سوچنا مجھے کچھ جنچتا نہیں ۔ اور پھر بھیک سے پائی رقم کو کسی دوسرے کو دے ڈالنے میں مزا بھی کیا ہے ؟

' مہاراج، آپ کو اپنے مزہ کا تو ہر طرح خیال، پر میری تکلیف کا ذرا بھی خیال نہیں ۔ میں جس رقم کو دے چکا اُسے کیسے واپس لے لوں ۔ اور اگر لے لوں تو میرے دل کو کتنی تکلیف ہوگی ۔'

' بھائی صاحب، میں یہ کیسے کہوں کہ آپ جو کچھ کہہ رہے ہیں وہ سچ نہیں ہے، پر میں نے تو آتے ہی آپ کے سامنے اپنی ساری کہانی سچ سچ سنا دی تھی اور اپنی ضرورت بھی بتا دی تھی؛ پھر آپ مجھے زیادہ لینے کے لئے کیوں مجبور کرتے ہیں ۔

' دیکھئے آپ مجھے بھائی کہکر بولتے ہیں ۔ اب آپ اور ہم بھائی بھائی ہیں ۔ اب نہ آپ دان لینے والے اور نہ میں دان دینے والا ۔ اب آپ اِس رقم کو دان ہرگز نہ سمجھئے، یہ تو میں اپنی بھتیجی کے بیاہ میں خرچ کرنے کے لئے آپ کو دے رہا ہوں ۔'

' جب یہ بات ہے تب آپ کو روپے واپس لے لینے چاہئیں ۔ اور مجھے ضرورت سے زیادہ لینے کے لئے زور نہیں دینا چاہئے ۔ میں بیاہ میں زیادہ خرچ کر کے ایسی بات کیوں کروں جسے میں آگے نہ نبھا سکوں ۔ اور پھر جب آپ اِس رقم کو دان ہی نہیں مانتے تب اِس کو واپس لینے میں کیوں آنا کانی ؟'

' اچھا ایک کام کیجئے ۔ آپ یہ دو نوٹ نہ لیجئے ۔ میری طرف سے یہ دونوں نوٹ میری بھتیجی کو دے دیجئے ۔'

' بھائی صاحب، یہ نہ ہوسکیگا ۔ میں ضرورت سے زیادہ ایک پیسہ بھی نہ لے سکونگا ۔'

' اب میں آپ سے کیا کہوں ۔ میں اُن بزرگ براہمن کو کسی طرح تین سو سے اوپر ایک پیسہ لینے کے لئے راضی نہ کر سکا ۔ ہاں، یہ دوسری بات ہے کہ میں وقت نکال کر اُن کی لڑکی کے بیاہ کے موقع پر اُن کے گاؤں پہنچ گیا ۔ اور پھر بڑی مشکل سے اِس بات میں کامیاب ہوسکا کہ میں جو کچھ نقد، زیور، کپڑا اس لڑکی کے لئے لے گیا تھا، اُسے دے سکا ۔ ہاں، میرے گاؤں پہنچنے کا یہ نتیجہ ضرور ہوا کہ بارات کو جیسے ہی یہ سارا قصہ معلوم ہوا تو لڑکے نے اپنے باپ سے اس بات پر ضد کی کہ

ा [illegible] सामने आया. ज्यों-त्यों कर एक लड़का तय कया. उसका बाप दो सौ रुपये मांगता है. मैंने खेत के ाम से घर खर्च से बचाकर सौ रुपये जमा कर रखे हैं. ड़की के ब्याह के लिये हिसाब लगाया. चार सौ रुपये ा बजट बनाया. दो सौ नक़द देने के लिये और दो सौ ूपर का खर्च जिस में कपड़े-लत्ते, गहना-पाती और ाहमानों की खातिरदारी सब शामिल है. लोगों ने समझ ा यह रखा है कि भीक मांगना ब्राह्मन का पेशा है, पर ेती करते-करते मुझे भीक मांगने से नफ़रत हो गई है. मर भर कभी भीक मांगी नहीं, पर ब्राह्मनी के हठ करने र अपने कुछ यजमानों से भीक मांगने के लिये बम्बई ाना ही पड़ा. दो-तीन घरों मे मैं गया. वह मुझ को दस-स बीस-बीस देने को तैयार हैं. मैं एक ही घर से दो सौ पये लेना चाहता हूँ जिसके लिये कोई तैयार नहीं. इस-लिये मैं हर घर में दस-पन्द्रह मिनट ठहरता हूँ और ाकामयाब बाहर आ जाता हूं. दो-एक यजमान और बचे ', उनसे मिलकर घर लौट जाऊंगा. ऐसा मालूम होता है क खाली हाथ ही घर पहुँचूंगा. ब्राह्मनी के कहने से मैंने अपनी-सी कोशिश कर ली. अब जैसा लड़की का भाग्य ैसा होगा. यह है मेरी कथा.'

'लतीफ़ी ! मेरी कैशबॉक्स तो लाओ,' मैंने अपने नौकर ो हुक्म दिया.

वह कैशबाक्स उठा लाया और मैंने उसमें से सौ-सौ े पांच नोट निकाले और अपने दोनों हाथों में रख उन ुज़ुर्ग की नज़र किये.

यह देख कर उन बुज़ुर्ग के दोनों हाथ उठे, जुड़े, ऊपर ी तरफ़ हुये, उन्होंने मालिक को धन्यवाद दिया, और ात्र मिनट कुछ सोचा, और उनका सारा बदन मुझे ुकड़ता-सा मालूम हुआ. उन्होंने अपने जुड़े हुये हाथ ोले और मेरे हाथ से पांचों नोट उठाकर उनमें से तीन िनकर ले लिये और दो मुझे वापिस करने लगे.

'मैं तो यह पांचों नोट आपके नाम से निकाल चुका,' ैं बोला.

'यह आपकी मेहरबानी है पर मुझे तो तीन की ज़रूरत ै,' वह बोले.

'पर मैं आपके नाम से निकाली हुई रक़म में से एक ैसा भी कैसे वापस ले सकता हूँ ?'

'पर मैं ज़रूरत से ज़ियादा ले भी कैसे सकता हूँ. मेरा ईश्वर मुझ से क्या कहेगा. ज़रूरत की भीक मांगी जा सकती है, ली जा सकती है, काम में लाई जा सकती है, ज़रूरत से ज़ियादा क़बूल करना मेरे धरम में पाप है.'

'महाराज, आप तो ठीक कहते हैं, पर मेरे धरम का ी तो कुछ ख़याल रखिये. मैं तो यह पांचों नोट आपको

کا سوال سامنے آیا ، جیوں تیوں کر ایک لڑکا طے کیا ۔ اُس کا باپ دو سو روپے مانگتا ہے ۔ میں نے کھیت کے کام سے گھر خرچ سے بچا کر سو روپے جمع کر رکھے ہیں ۔ لڑکی کے بیاہ کے لئے حساب لگایا ۔ چار سو روپے کا بجٹ بنایا ۔ دو سو نقد دینے کے لئے اور دو سو اوپر کا خرچ جس میں کپڑے لتے' گہنا پاتی' اور مہمانوں کی خاطرداری سب شامل ہے ۔ لوگوں نے سمجھ تو یہ رکھا ہے کہ بھیک مانگنا براہمن کا پیشہ ہے' پر کھیتی کرتے کرتے مجھے بھیک مانگنے سے نفرت ہو گئی ہے ۔ عمر بھر کبھی بھیک مانگی نہیں' پر براہمنی کے ہٹھ کرنے پر اپنے کچھ یجمانوں سے بھیک مانگنے کے لئے بمبئی آنا ہی پڑا ۔ دو تین گھروں میں میں گیا ۔ وہ مجھکو دس دس بیس بیس دینے کو تیار ہیں ۔ میں ایک ہی گھر سے دو سو روپے لینا چاہتا ہوں جس کے لئے کوئی تیار نہیں ۔ اِس لئے میں ہر گھر میں دس پندرہ منٹ ٹھہرتا ہوں اور ناکامیاب باہر آجاتا ہوں ۔ دو ایک یجمان اور بچے ہیں' اُن سے ملکر گھر لوٹ جاؤنگا ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ خالی ہاتھ ہی گھر پہنچونگا ۔ براہمنی کے کہنے سے میں نے اپنی سی کوشش کر لی اب جیسا لڑکی کا بھاگیہ ویسا ہوگا ۔ یہ ہے میری کتھا ۔'

' لطیفی ! میری کیش باکس تو لاؤ ' میں نے اپنے نوکر کو حکم دیا ۔

وہ کیش باکس اُٹھا لایا اور میں نے اُس میں سے سو سو کے پانچ نوٹ نکالے اور اپنے دونوں ہاتھوں میں رکھ اُن بزرگ کی نظر کئے ۔

یہ دیکھکر اُن بزرگ کے دونوں ہاتھ اٹھے' جڑے' اوپر کی طرف ہوئے' اُنہوں نے مالک کو دھنواد دیا' اور پاؤ منٹ کچھ سوچا' اور اُن کا سارا بدن مجھے سکڑتا سا معلوم ہوا ۔ اُنہوں نے اپنے جڑے ہوئے ہاتھ کھولے اور میرے ہاتھ سے پانچوں نوٹ اُٹھا کر اُن میں سے تین گن کر لے لئے اور دو مجھے واپس کرنے لگے ۔

'میں تو یہ پانچوں نوٹ آپ کے نام سے نکال چکا' میں بولا ۔

' یہ آپ کی مہربانی ہے پر مجھے تو تین کی ضرورت ہے ' وہ بولے ۔

' پر میں آپ کے نام سے نکالی ہوئی رقم میں سے ایک پیسہ بھی کیسے واپس لے سکتا ہوں ؟

' پر میں ضرورت سے زیادہ لے بھی کیسے سکتا ہوں ۔ میرا ایشور مجھ سے کیا کہے گا ۔ ضرورت کی بھیک مانگی جا سکتی ہے' لی جا سکتی ہے' کام میں لائی جا سکتی ہے' ضرورت سے زیادہ قبول کرنا میرے دھرم میں پاپ ہے ۔'

' مہاراج' آپ تو ٹھیک کہتے ہیں' پر میرے دھرم کا بھی تو کچھ خیال رکھئے ۔ میں تو یہ پانچوں نوٹ آپ کو

या कोई ब्याह शादी कभी खाली नहीं जाता जिस में मैं शरीक न होऊँ या वह मेरे यहां न आवें.'

'यह सब तो ठीक है, हमें तो आप यह सुनाइये कि उस ब्राह्मन को आप सन्तोषी क्यों कहते हैं ?'

'जी हां, मैं उसी को अर्ज़ करने जा रहा हूँ, लीजिये सुनिये.

'मेरा कारोबार बम्बई में होता है. वहीं एक चाल में मेरा मकान है. उस चाल में कई मारवाड़ी और गुजराती सेठ रहते हैं. एक दिन का ज़िक्र है. मैंने एक बूढ़े आदमी को पास के दो-तीन मकानों में से थोड़ी थोड़ी देर में दाखिल होते और निकलते देखा. मैं समझ ही न पाया कि माजरा क्या है ? खुद तो मेरी हिम्मत न हुई कि मैं उन बूढ़े भाई से पूछूं, इसलिये मैंने अपने नौकर लतीफ़ी को उसका हाल जानने के लिये भेजा. उसने थोड़ी देर में आकर यह खबर दी कि वह एक ब्राह्मन है और अपनी लड़की की शादी के सिलसिले में कुछ पैसा जमा करने आया है. पर उसको कहीं भी कामयाबी नहीं हुई. यह सुनकर न जाने क्यों यकायक मेरे दिल में उसके लिये हमदर्दी पैदा हो गई और मैंने फ़ौरन ही लतीफ़ी को भेज कर उन्हें अपने पास बुलवा भेजा. वह अब मेरे कमरे में आ पहुंचे और मैंने उनसे बात चीत करना शुरू कर दी.

'भाई साहब क़सूर माफ़ हो मैंने आपको इसलिये तकलीफ़ दी कि मैं बड़ी देर से देख रहा हूं कि आप कभी किसी मकान में दाखिल होते हैं और कभी किसी मकान में और हर मकान से दस पांच मिनट में बाहर आ जाते हैं. क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप ऐसा क्या कर रहे हैं ?'

'हाँ, भाई साहब, पूछने में कोई हर्ज नहीं' पर असली बात मैं आप के नौकर से कह चुका हूँ.'

'बेशक, उस बात का कुछ इशारा तो मिल गया है. पर क्या मैं उस बात को तफ़सील से जान सकता हूँ ?'

'क्यों नहीं, जब मैं भीख मांगने ही निकला हूँ तब आप से कहते भी मुझे लज्जा क्यों होने लगी !'

'तो फिर कह डालिये.'

'देखिये ! मैं बलिया के पास एक गांव का रहनेवाला हूं. जाति का ब्राह्मन हूँ. खेती का काम करता हूँ. बारह बरस काशी में वेदवेदांग पढ़कर भी मुझे पंडिताई का काम न रुचा. खेती के काम में मुझे आनन्द आता है. मैं और मेरी घर वाली दोनों उसी काम में लगे रहते हैं. मेरे एक बेटी है, उसकी उम्र चौदह बरस की है. खेत से मेरी आमदनी इतनी ही होती है जिससे हम तीनों प्रानियों का गुज़र हो सके. लड़की अब सयानी हो गई. उसके ब्याह

یا کوئی بیاہ شادی کبھی خالی نہیں جاتا جس میں میں شریک نہ ہوؤں یا وہ میرے یہاں نہ آئیں .'

'یہ سب تو ٹھیک ہے' ہمیں تو آپ یہ سنائیے کہ اس براہمن کو آپ سنتوشی کیوں کہتے ہیں ؟'

'جی ہاں میں اسی کو عرض کرنے جا رہا ہوں' لیجئے سنئے .

'میرا کاروبار بمبئی میں ہوتا ہے . وہیں ایک چال میں میرا مکان ہے . اس چال میں کئی مارواڑی اور گجراتی سیٹھ رہتے ہیں . ایک دن کا ذکر ہے . میں نے ایک بڈھے آدمی کو پاس کے دو تین مکانوں میں سے تھوڑی تھوڑی دیر میں داخل ہوتے اور نکلتے دیکھا . میں سمجھ ہی نہ پایا کہ ماجرہ کیا ہے ؟ خود تو میری ہمت نہ ہوئی کہ میں ان بوڑھے بھائی سے پوچھوں' اس لئے میں نے اپنے نوکر لطیفی کو اس کا حال جاننے کے لئے بھیجا . اس نے تھوڑی دیر میں آکر یہ خبر دی کہ وہ ایک براہمن ہے اور اپنی لڑکی کی شادی کے سلسلے میں کچھ پیسہ جمع کرنے آیا ہے . پر اس کو کہیں بھی کامیابی نہیں ہوئی . یہ سن کر نہ جانے کیوں یکایک میرے دل میں اس کے لئے ہمدردی پیدا ہوگئی . اور میں نے فوراً ہی لطیفی کو بھیجکر انہیں اپنے پاس بلوا بھیجا . وہ اب میرے کمرے میں آ پہنچے اور میں نے ان سے بات چیت کرنا شروع کردی .'

'بھائی صاحب قصور معاف ہو' میں نے آپکو اس لئے تکلیف دی کہ میں بڑی دیر سے دیکھ رہا ہوں کہ آپ کبھی کسی مکان میں داخل ہوتے ہیں اور کبھی کسی مکان میں اور ہر مکان سے دس پانچ منٹ میں باہر آ جاتے ہیں . کیا میں پوچھ سکتا ہوں کہ آپ ایسا کیوں کر رہے ہیں ؟'

'ہاں بھائی صاحب' پوچھنے میں کوئی ہرج نہیں' پر اصلی بات آپ کے نوکر سے کہ چکا ہوں .'

'بے شک اس بات کا کچھ اشارہ تو مل گیا ہے . پر کیا میں اس بات کو تفصیل سے جان سکتا ہوں ؟'

'کیوں نہیں جب میں بھیک مانگنے ہی نکلا ہوں تب آپ سے کہتے ہی مجھے لجا کیوں ہونے لگی !'

'تو پھر کہ ڈالئے .'

' دیکھئے ! میں بلیا کے پاس ایک گاؤں کا رہنے والا ہوں . ذات کا براہمن ہوں . کھیتی کا کام کرتا ہوں . بارہ برس کاشی میں وید ویدانگ پڑھکر بھی مجھے پنڈتائی کا کام نہ روچا . کھیتی کے کام میں مجھے آنند آتا ہے . میں اور میری گھر والی دونوں اسی کام میں لگے رہتے ہیں . میرے ایک بیٹی ہے' اسکی عمر چودہ برس کی ہے . کھیت سے میری آمدنی اتنی ہی ہوتی ہے جس سے ہم تینوں پرانیوں کا گذر ہو سکے . لڑکی اب سیانی ہوگئی . اسکے بیاہ

कहानी

यही कलजुग है !

सेकन्ड क्लास वेटिंग रूम में बैठा मैं एक किताब पढ़ रहा था. एक साहब मेरे पास बैठे अचानक, न जाने क्यों, मेरा पढ़ना रोक कर बोले कि आजकल के ब्राह्मन सब के सब बेहद असन्तोशी हो गये हैं, कितना भी उन्हें खिलाओ, कितनी भी दक्शिना दो, उन्हें सन्तोश नहीं होता. मुझे अपनी किताब पढ़ने में इतना आनन्द आ रहा था कि मैं उन्हें टालने के लिये फ़ौरन कह बैठा: 'हां, आप कहते तो ठीक हैं.' इस जवाब से उनकी कुछ तसल्ली नहीं हुई और वह फिर बोले कि मैं ठीक ही नहीं कहता बल्कि अपने अनुभव के बल पर कहता हूं कि मुझे एक भी ब्राह्मन सन्तोशी नहीं मिला. मैं उनकी इस बात का जवाब दूं कि पास बैठे हुये एक मुसलमान सज्जन बोल उठे, "अगर बीच में बोलना बे अदबी न हो तो मैं कुछ अर्ज़ करूँ ?"

हम दोनों एक साथ बोल उठे, "ज़रूर, ज़रूर फ़रमाइये."

"मैंने एक सन्तोशी ब्राह्मन को अपनी आँखों से देखा है. उसे जानता हूँ अगर आप इजाज़त दें तो मैं उसका क़िस्सा अर्ज़ करूँ."

मैंने घड़ी निकाल कर देखा, साढ़े आठ बजे थे. जिस गाड़ी से जाना था वह सवा नौ बजे आती थी. मैं बोला अभी तो गाड़ी आने मे काफ़ी देर है. आप अपने सन्तोशी ब्राह्मन का क़िस्सा ज़रूर सुनाइये.

'सुनाइये साहब, ज़रूर सुनाइये', मेरे साथी ने यह कहकर मेरा साथ दिया, इस कलजुग में, और सन्तोशी ब्राह्मन !'

'कलजुग मैं जानता नहीं, उसमें सन्तोशी ब्राह्मन है या नहीं, मैं तो हिन्दुस्तान की बात करता हूँ और सो भी बलिया ज़िले के एक गांव की बात. वहीं का वह सन्तोशी ब्राह्मन है. मैं आरा (बिहार) का रहने वाला हूँ. सैयद हफ़ीज़ मेरा नाम है, मेरी पहली मुलाक़ात उस ब्राह्मन से बम्बई में हुई. मुलाक़ात के दो महीने के भीतर ही उससे मेरी इतनी दोस्ती हो गई कि अब उसे दोस्त कहना, न उसे भायेगा और न उसके गांव वालों को. अब वह मेरा छोटा भाई है और उनकी इकलौती लड़की मेरी लड़की और उसका शौहर मेरा दामाद है. शादी होने के बाद से कई बार वह दोनों मेरे मेहमान रह चुके हैं. और अब उन दोनों घरानों से इतना राहोरस्म हो गई है कि त्योहार

کہانی

یہی کل جگ ھے !

سیکنڈ کلاس ویٹنگ روم میں بیٹھا میں ایک کتاب پڑھ رہا تھا ۔ ایک صاحب میرے پاس بیٹھے اچانک، نہ جانے کیوں، میرا پڑھنا روک کر بولے کہ آج کل کے براہمن سب کے سب بیحد اسنتوشی ہوگئے ہیں، کتنا بھی انہیں کھلاؤ، کتنا بھی دکشنا دو، انہیں سنتوش نہیں ہوتا ۔ مجھے اپنی کتاب پڑھنے میں اِتنا آنند آ رہا تھا کہ میں انہیں ٹالنے کے لئے فوراً کہہ بیٹھا: 'ہاں آپ کہتے تو ٹھیک ہیں ۔' اِس جواب سے اُن کی کچھ تسلی نہیں ہوئی اور وہ پھر بولے کہ میں ٹھیک ہی نہیں کہتا بلکہ اپنے انوبھو کے بل پر کہتا ہوں ۔ کہ مجھے ایک بھی براہمن سنتوشی نہیں ملا ۔ میں اُن کی اِس بات کا جواب دوں کہ پاس بیٹھے ہوئے ایک مسلمان سجن بول اٹھے، "اگر بیچ میں بولنا بےادبی نہ ہو تو میں کچھ عرض کروں؟"

ہم دونوں ایک ساتھ بول اٹھے، "ضرور، ضرور فرمائیے ۔"

"میں نے ایک سنتوشی براہمن کو اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے، اُسے جانتا ہوں، اگر آپ اِجازت دیں تو میں اُس کا قصہ عرض کروں ۔"

میں نے گھڑی نکال کر دیکھا، ساڑھے آٹھ بجے تھے ۔ جس گاڑی سے جانا تھا وہ سوا نو بجے آتی تھی ۔ میں بولا ابھی تو گاڑی آنے میں کافی دیر ہے ۔ آپ اپنے سنتوشی براہمن کا قصہ ضرور سنائیے ۔

'سنائیے صاحب، ضرور سنائیے، میرے ساتھی نے یہ کہکر میرا ساتھ دیا، اِس کلجگ میں اور سنتوشی براہمن !'

'کلجگ میں جانتا نہیں، اس میں سنتوشی براہمن ہیں یا نہیں، میں تو ہندستان کی بات کرتا ہوں اور سو بھی بلیا ضلع کے ایک گاؤں کی بات ۔ وہیں کا وہ سنتوشی براہمن ہے ۔ میں آرہ (بہار) کا رہنے والا ہوں ۔ سید حفیظ میرا نام ہے، میری پہلی ملاقات اُس براہمن سے بمبئی میں ہوئی ۔ ملاقات کے دو مہینے کے بھیتر ہی اس سے میری اِتنی دوستی ہوگئی کہ اب اُسے دوست کہنا، نہ اُسے بھائیگا اور نہ اس کے گاؤں والوں کو ۔ اب وہ میرا چھوٹا بھائی ہے اور اُس کی اِکلوتی لڑکی میری لڑکی ہے اور اس کا شوہر میرا داماد ہے ۔ شادی ہونے کے بعد سے کئی بار وہ دونوں میرے مہمان رہ چکے ہیں، اور اب ان دونوں گھرانوں سے اِتنی راہ رسم ہوگئی ہے کہ تہوار

"मैं शान्ति के आन्दोलन में काम करती हूँ". उसने मेरी तरफ़ ताज्जुब से देखते हुये कहा—"क्या आप के यहां औरतें शान्ति आन्दोलन में तन मन से नहीं लगी हुई हैं"

मैं सिट पिटा सा गया लेकिन तुरन्त कह पड़ा—"असल बात यह है कि हमारे यहां लड़ाई के क़दम नहीं आये थे. हमने मौत की भयानक शकल तो देखी है, अकाल में हमारे लाखों आदमी मरे हैं, लेकिन लड़ाई से हम दो चार नहीं हुये. इस लिये हमारी स्त्रियां शांति आन्दोलन में बहुत आगे नहीं हैं......."

"ठीक कहते हैं आप, लेकिन उन्हें शान्ति के लिये आगे आना चाहिये. शान्ति हम सब को चाहिये. लड़ाई! ओक कितना भयानक दृश्य होता है. यह चौक, यह फ़ूल, यह दृश्य, यह क़िला सब का ख़ात्मा हो गया था. संगीत की तानों के बजाय गोलों की आवाज़ सुनाई पड़ती थी. स्तालिनग्राड बिलकुल तबाह हो गया था. लेकिन हमने सब कुछ बना लिया. स्तालिनग्राड को हम फिर दुल्हन बना रहे हैं—उस भयंकर स्तालिनग्राड को हम आज भी नहीं भूल सकते."

बोलते बोलते उसने उस बच्चे को गोद में उठा लिया और चिमटा कर बोली—"मेरे लाल को शान्ति चाहिये, हम इन बच्चों को फौजी तालीम नहीं देते, हम इनको लड़ाई के तरीक़े नहीं सिखाते. हम तबाही और बरबादी के क़िस्से सुनाकर इनको शान्ति के लिये तैयार करते हैं.............हम लड़ाई का कोई काम नहीं करते, कर भी कैसे सकते हैं, हम उन दृश्यों को नहीं भूल सकते. हमने जो पहली सड़क बनाई है उसका नाम "शान्ति रोड" रखा है. हमें शान्ति चाहिये. इन बच्चों के लिये शान्ति चाहिये."

वह कहे जा रही थी और मैं ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था. उसने बच्चे को फिर प्यार से नीचे उतारा और मेरी तरफ़ देख कर बोली "आप भारत की महिलाओं से जाकर कहियेगा कि उनकी एक रूसी बहन ने उनसे मांग की है कि वह शान्ति आन्दोलन में काम करें. उन्हें भी शान्ति चाहिये, हमें भी शान्ति चाहिये"

मेरा सिर श्रद्धा से उस बूढ़ी रूसी औरत के सामने झुक गया. कोई देवी थी जो शान्ति का संदेश दे रही थी!

सत्येन्द्र बाबू देर तक बोलते रहे. और न जाने क्या क्या उन्होंने कहा होगा. लेकिन मेरे लिए तो सिर्फ़ यह दो घटनायें ही काफी थीं. मेरा अविश्वास ख़त्म हो गया था. मैं रूस के हर नर-नारी—मज़दूर, लेखक, सिपाही—को यह कहते सुन रहा था—'शान्ति ज़िन्दाबाद' और उसी भावुक वातावरण में चुपके चुपके मेरे होंठ भी हिले और उनसे आवाज़ निकली "शान्ति ज़िन्दाबाद! शान्ति ज़िन्दाबाद!!

"میں شانتی کے آندولن میں کام کرتی ہوں." اس نے میری طرف تعجب سے دیکھتے ہوئے کہا—" کیا آپ کے یہاں عورتیں شانتی آندولن میں تن من سے نہیں لگی ہوئی ہیں."

میں سٹپٹا سا گیا. لیکن ترنت کہہ پڑا—"اصل بات یہ ہے کہ ہمارے یہاں لڑائی کے قدم نہیں آئے تھے. ہم نے موت کی بھیانک شکل تو دیکھی ہے' اکال میں ہمارے لاکھوں آدمی مرے ہیں' لیکن لڑائی سے ہم دو چار نہیں ہوئے. اس لئے ہماری استریاں شانتی آندولن میں بہت آگے نہیں ہیں......"

" ٹھیک کہتے ہیں آپ' لیکن انہیں شانتی کے لئے آگے آنا چاہئے. شانتی ہم سب کو چاہئے. لڑائی! اوف کتنا بھیانک درشیہ ہوتا ہے. یہ چوک' یہ پھول' یہ درشیہ' یہ قلعہ سب خاتمہ ہوگیا تھا. سنگیت کی تانوں کے بجائے گولوں کی آواز سنائی پڑتی تھی. اسٹالن گراڈ بالکل تباہ ہوگیا تھا. لیکن ہم نے سب کچھ بنا لیا. سٹالن گراڈ کو ہم پھر دلہن بنا رہے ہیں—اس بھیانکر سٹالن گراڈ کو ہم آج بھی نہیں بھول سکتے."

بولتے بولتے اس نے اس بچے کو گود میں اٹھا لیا اور چمٹا کر بولی—" میرے لال کو شانتی چاہئے' ہم ان بچوں کو فوجی تعلیم نہیں دیتے' ہم ان کو لڑائی کے طریقے نہیں سکھاتے. ہم تباہی اور بربادی کے قصے سنا کر ان کو شانتی کے لئے تیار کرتے ہیں.........ہم لڑائی کا کوئی کام نہیں کرتے' کر بھی کیسے سکتے ہیں' ہم ان درشیوں کو نہیں بھول سکتے. ہم نے جو پہلی سڑک بنائی ہے اس کا نام " شانتی روڈ " رکھا ہے. ہمیں شانتی چاہئے. ان بچوں کے لئے شانتی چاہئے." وہ کہے جا رہی تھی اور میں دھیان سے اسکی باتیں سن رہا تھا. اس نے بچے کو پھر سے پیار سے نیچے اتارا اور میری طرف دیکھ کر بولی " آپ بھارت کی مہلاؤں سے جا کر کہئے گا کہ ان کی ایک روسی بہن نے ان سے مانگ کی ہے کہ وہ شانتی آندولن میں کام کریں. انہیں بھی شانتی چاہئے' ہمیں بھی شانتی چاہئے."

میرا سر شردھا سے اس بوڑھی روسی عورت کے سامنے جھک گیا. کوئی دیوی تھی جو شانتی کا سندیش دے رہی تھی!

ستیندر بابو دیر تک بولتے رہے. اور نہ جانے کیا کیا انہوں نے کہا ہوگا. لیکن میرے لئے تو صرف یہ دو گھٹنائیں ہی کافی تھیں. میرا اوشواس ختم ہوگیا تھا. میں روس کے ہر نر ناری—مزدور' لیکھک' سپاہی—کو یہ کہتے سن رہا تھا—' شانتی زندہ باد' اور اسی بھاوک واتاورن میں چپکے چپکے میرے ہونٹ بھی ہلے اور ان سے آواز نکلی " شانتی زندہ باد! شانتی زندہ باد!

इस देश की है जो शांति का ढोंग रचता है लेकिन असल में लड़ाई की तैयारी करता है लेकिन असलियत को क्या कहा जाय. यह सच्ची और साधारण घटना इसी देश की है, रूस की है. इसी शांति चाहते हैं इसलिये कि उन की महिलाओं की पसलियों में हत्या की गोलियां अब भी घुसी हुई हैं. क्योंकि वह लोग बरबरता के खिलाफ लड़ रहे थे, पिस रहे थे, बरबाद हो रहे थे. क्योंकि वह लोग नाइट क्लबों में शराब में डूबे नाच नहीं रहे थे, रंग रलियां नहीं मना रहे थे !

मैं न जाने क्या-क्या सोच गया. सत्येन्द्र बाबू की भी जबान बन्द नहीं हुई. मेरा दिमाग़ मेरे पास नहीं था कि मैं सुन सकता कि उन्होंने इस घटना के बाद और क्या क्या कहा. लेकिन जब मैं वास्तविक दुनिया में लौटा तो मुझे दूसरी घटना सत्येन्द्र बाबू कहते सुनाई दिये:—

"स्तालिनग्राद के शहीद चौक में मैं टहल रहा था. चारों तरफ़ खुशनुमा फूल खिले थे. एक बच्चे की मौत के बाद दूसरे बच्चे को पाकर मां के मुँह पर मुस्कराहट छा जाती है. स्तालिन ग्राद की ज़मीन तबाही का भयानक दृश्य देख चुकने के बाद इस शांति को पाकर शायद मुस्करा उठी थी. हर वस्तु पर बहार थी. आम आदमी वहां विहार कर रहे थे. वहां रूस दिखाई पड़ रहा था—कोई भूखा नहीं, कोई मुफ़लिस नहीं, कोई फ़क़ीर नहीं, कोई गुदड़ी पहने हुये नहीं. सब खुश थे. बच्चे खेल रहे थे. उनको पता था या नहीं कि यह शांति का वातावरन उनके बुज़ुर्गों ने अपनी जान पर खेल कर उनके लिये पैदा किया है ! मैं भावनाओं के समुन्द्र में डुबकियां लगा रहा था—एक बूढ़ी महिला एक बच्चे की उंगली पकड़ मेरी तरफ़ आती दिखाई पड़ी. मेरा वेश भूषा से उसने मुझे पहचान लिया और आते ही कहा—"आप हिन्दुस्तान से आए हैं."

"जी माता" मैंने उत्तर दिया.

वह कुछ देर तक इधर उधर की बातें करती रहीं और फिर बोलीं "वह दूर का दृश्य आपको दिखाई पड़ता है न. यहां बड़ी भयानक लड़ाई हुई थी.............मेरे दो लाल यहां ही मारे गए थे, मेरी बहू भी यहीं शहीद हुई थी.........वह बड़े बहादुर थे."

मुझसे बात करते करते उस औरत ने उस तरफ़ देखा और इस तरह का भाव ज़ाहिर किया जैसे उन सब को आशीर्वाद दे रही हो और फिर उसने मुझ से कहा—"मैंने हिन्दुस्तान कभी देखा नहीं है लेकिन उसके बारे में मैं बहुत कुछ जानती हूँ. मुझे पता है कि भारत की संस्कृति बहुत पुरानी है."

"आप क्या काम करती हैं" मैंने पूछा.

اس دیش کی ہے جو شانتی کا ڈھونگ رچتا ہے لیکن اصل میں لڑائی کی تیاری کرتا ہے ۔ لیکن اصلیت کو کیا کہا جائے یہ سچی اور سادھارن گھٹنا اسی دیش کی ہے، روس کی ۔ روسی شانتی چاہتے ہیں اس لئے کہ ان کی مہلاؤں کی پسلیوں میں ہتیا کی گولیاں اب بھی گھسی ہوئی ہیں، کیوں کہ وہ لوگ بربرتا کے خلاف لڑ رہے تھے، پس رہے تھے، برباد ہو رہے تھے ۔ کیونکہ وہ لوگ نائٹ کلبوں میں شراب میں ڈوبے ناچ نہیں رہے تھے، رنگ رلیاں نہیں منا رہے تھے !

میں نہ جانے کیا کیا سوچ گیا ۔ ستیندر بابو کی بھی زبان بند نہیں ہوئی ۔ میرا دماغ میرے پاس نہیں تھا کہ میں سن سکتا کہ انہوں نے گھٹنا کے بعد اور کیا کیا کہا ۔ لیکن جب میں واستوک دنیا میں لوٹا تو مجھے دوسری گھٹنا ستیندر بابو کہتے سنائی دیئے :—

"استالن گراڈ کے شہید چوک میں میں ٹہل رہا تھا ۔ چاروں طرف خوشنما پھول کھلے تھے ۔ ایک بچے کی موت کے بعد دوسرے بچے کو پاکر ماں کے منہ پر مسکراہٹ چھا جاتی ہے ۔ استالن گراڈ کی زمین تباہی کا بھیانک درشیہ دیکھ چکنے کے بعد اس شانتی کو پاکر شاید مسکرا اٹھی تھی ۔ ہر وستو پر بہار تھی ۔ عام آدمی وہاں وہار کر رہے تھے ۔ وہاں روس دکھائی پڑ رہا تھا—کوئی بھوکا نہیں، کوئی مفلس نہیں، کوئی فقیر نہیں، کوئی گدڑی پہنے ہوئے نہیں، سب خوش تھے ۔ بچے کھیل رہے تھے ۔ ان کو پتہ تھا یا نہیں کہ یہ شانتی کا واتاورن ان کے بزرگوں نے اپنی جان پر کھیل کر ان کے لئے پیدا کیا ہے ! میں بھاوناؤں کے سمندر میں ڈبکیاں لگا رہا تھا—ایک بوڑھی مہلا ایک بچے کی انگلی پکڑے میری طرف آتی دکھائی پڑی ۔ میری ویش بھوشا سے اس نے مجھے پہچان لیا اور آتے ہی کہا—"آپ ہندستان سے آئے ہیں۔"

"جی ماتا" میں نے اتر دیا ۔

وہ کچھ دیر تک ادھر ادھر کی باتیں کرتی رہیں اور پھر بولیں "وہ دور کا درشیہ آپ کو دکھائی پڑتا ہے نہ ۔ یہاں بڑی بھیانک لڑائی ہوئی تھی.................میرے دو لال یہاں ہی مارے گئے تھے، میری بہو بھی یہیں شہید ہوئی تھی......وہ بڑے بہادر تھے ۔"

مجھ سے بات کرتے کرتے اس عورت نے اس طرف دیکھا اور اسطرح کا بھاؤ ظاہر کیا جیسے ان سب کو آشیرباد دے رہی ہو اور پھر اس نے مجھ سے کہا—"میں نے ہندستان کبھی دیکھا نہیں ہے لیکن اس کے بارے میں میں بہت کچھ جانتی ہوں ۔ مجھے پتہ ہے کہ بھارت کی سنسکرتی بہت پرانی ہے ۔"

"آپ کیا کام کرتی ہیں" میں نے پوچھا ۔

मैंने जिज्ञासा पूर्वक उन चमचमाते सोने के टुकड़ों को उठा लिया. मेरे लिये उन मिडलों की कोई क़ीमत रही हो या न रही हो लेकिन उनकी क़ीमत मैं उस लड़की की आंखों से आंक रहा था. एक बहादुर पती की पत्नी को उसकी सरकार का यह आदर चिन्ह था. एक आशा थी, इन मिडलों की क़ीमत बहुत थी. उद्गार ही क़ीमत आंक सकते हैं !

"आप इनको हमेशा साथ रखती हैं." मैंने भावुक स्वर में पूछा.

"यह सोने के मिडिल नहीं हैं, यह गोलियां हैं जो मेरे पती को मुझ से छीन चुकी हैं. यह मिडल उन गोलियों की तरह मेरी पसली में घुसे रहते हैं. यह हर समय मुझे याद दिलाते रहते हैं—शांति ! शान्ति !! लड़ाई बहुतों का सोहाग लूट ले जाती है, मुल्क बरबाद हो जाते हैं. शान्ति के लिये लड़ती हूँ, मैं शान्ति चाहती हूं. सिर्फ़ इस लिये क्योंकि मैं नहीं चाहती कि मेरी तरह मेरी बहनें और बेटियां भी सोहाग से महरूम हो जायें...."

उसके चेहरे से पीलाहट हट गई थी, मुख पर वीरता और गम्भीरता की रेखाएं खिच गई थीं. मैंने उसकी बात काट कर पूछा—"आप के यहां दूसरी शादी करना तो बहुत ही स्वभाविक है, आप जवान हैं, दूसरी शादी क्यों नहीं कर लेतीं."

"जी दूसरी शादी करने में मैं कोई हर्ज नहीं समझती. जब बुद्धि से पूछती हूँ तो मुझे मेरा बेवापन बेमतलब मालूम होता है. दिल लेकिन नहीं मानता. मेरी भावनायें मुझे इजाज़त नहीं देतीं—मेरे पती की याद मुझ से अलग नहीं हो सकती, मैं उसे कभी नहीं भूल सकती, मैं उस साथ बिताए जीवन को हरगिज़ हरगिज़ नहीं भुला सकता. देश की रस्म हमें दूसरी शादी की इजाज़त देता है लेकिन मेरा दिल इजाज़त नहीं देता. हम आज़ाद हैं, हम अपने दिल और दिमाग़ से काम लेते हैं, रस्म के ग़ुलाम नहीं हो सकते......."

उद्गार भरे शब्दों में अपने दिल का ग़ुबार निकालते निकालते उस महिलाने बच्चों की तरफ़ आंख फेरी और फिर बोली—"अगर मैं दूसरी शादी कर भी लेती तो भी क्या होता ? मेरे बच्चे होते, मैं मां बन जाती......लेकिन मैं तो इतने सारे बच्चों की मां हूँ, यह सब मेरे बच्चे हैं, यह सब मेरे लाल हैं."

और उसने उठकर एक बच्ची को छाती से लगा लिया, मां का प्यार उमंड पड़ा.

सत्येन्द्र बाबू की कहानी में मैं खोया हुआ था. मैं उनका मुँह देखता रहा और सोचता रहा. क्या यह कहानी उसी देश की है जहां कहा जाता है कि सब चीज़ें माद्दी होती हैं, सबके विचार माद्दी होते हैं, क्या यह महिला

میں نے جگیاسا پوروک اُن چمچماتے سونے کے ٹکڑوں کو اُٹھا لیا . میرے لئے اُن مڈلوں کی کوئی قیمت رہی ہو یا نہ رہی ہو لیکن اُن کی قیمت میں اُس لڑکی کی آنکھوں سے آنک رہا تھا . ایک بہادر پتی کی پتنی کو اُس کی سرکار کا یہ آدر چنھ تھا. ایک آشا تھی' اِن مڈلوں کی قیمت بہت تھی. اُدگار ہی قیمت آنک سکتے ہیں !

"آپ اِن کو ہمیشہ ساتھ رکھتی ہیں." میں نے بھاوک سور میں پوچھا .

"یہ سونے کے مڈل نہیں ہیں' یہ گولیاں ہیں جو میرے پتی کو مجھ سے چھین چکی ہیں . یہ مڈل اُن گولیوں کی طرح میری پسلی میں گھسے رہتے ہیں . یہ ہر سمے مجھے یاد دلاتے رہتے ہیں—شانتی! شانتی !! لڑائی بہتوں کا سہاگ لوٹ لے جاتی ہے' ملک برباد ہو جاتے ہیں. میں شانتی کے لئے لڑتی ہوں' میں شانتی چاہتی ہوں . صرف اس لئے کیونکہ میں نہیں چاہتی کہ میری طرح میری بہنیں اور بیٹیاں بھی سہاگ سے محروم ہو جائیں............ ..."

اُس کے چہرے سے پیلاہٹ ہٹ گئی تھی' مکھ پر ویرتا اور گمبھیرتا کی ریکھائیں کھنچ گئی تھیں . میں نے اُس کی بات کاٹ کر پوچھا—"آپ کے یہاں دوسری شادی کرنا تو بہت ہی سبھاوک ہے' آپ جوان ہیں' دوسری شادی کیوں نہیں کرلیتیں".

"جی' دوسری شادی کرنے میں میں کوئی حرج نہیں سمجھتی. میں جب بدھی سے پوچھتی ہوں تو مجھے میرا بیواپن بے مطلب معلوم ہوتا ہے . دل لیکن نہیں مانتا . میری بھاونائیں مجھے اجازت نہیں دیتیں—میرے پتی کی یاد مجھ سے الگ نہیں ہو سکتی' میں اُسے کبھی نہیں بھول سکتی' میں اُس کے ساتھ بتائے جیون کو ہرگز ہرگز نہیں بھلا سکتی . دیش کی رسم ہمیں دوسری شادی کی اجازت دیتی ہے لیکن میرا دل اجازت نہیں دیتا . ہم آزاد ہیں' ہم اپنے دل اور دماغ سے کام لیتے ہیں' رسم کے غلام نہیں ہوسکتے..."

اُدگار بھرے شبدوں میں اپنے دل کا غبار نکالتے نکالتے اُس مہیلا نے بچوں کی طرف آنکھ پھیری اور پھر بولی—"اگر میں دوسری شادی کر بھی لیتی تو بھی کیا ہوتا؟ میرے بچے ہوتے' میں ماں بن جاتی.........لیکن میں تو اتنے سارے بچوں کی ماں ہوں' یہ سب میرے بچے ہیں' یہ سب میرے لال ہیں ."

اور اُس نے اُٹھکر ایک بچی کو چھاتی سے لگا لیا' ماں کا پیارا اُمنڈ پڑا .

ستیندر بابو کی کہانی میں میں کھویا ہوا تھا . میں اُن کا منہ دیکھتا رہا اور سوچتا رہا . کیا یہ کہانی اسی دیش کی ہے جہاں کہا جاتا ہے کہ سب چیزیں مادی ہوتی ہیں' سب کے وچار مادی ہوتے ہیں' کیا یہ مہیلا

—जंग—जिससे सब पर तबाही आती है, खून की नदियां बहती हैं, बाग़ उजड़ते हैं, नसलें उजड़ती हैं......

मैं चाहता था कि फ़ौरन ही अपने सारे सवाल पूछ डालूं. लेकिन अपनी जिज्ञासा पर मुझे अंकुश लगाना पड़ा. सत्येन्द्र बाबू ने बोलना शुरू कर दिया था. उनकी मीठी बंगला भाषा, उनका भाव, दिल पर असर करने वाले जुमले और उनकी सच्चाई बिना प्रभावित किये नहीं रह सकती. उन्होंने तक़रीर करते करते दो घटनायें सुनाईं.

"गर्मियों की छुट्टियां थीं, पानियर कैम्प लगे हुए थे. शहर के लड़के देहात आगए थे, और देहात के लड़के शहर में. रूस के यह बालक नागरिक खेल रहे थे और सीख रहे थे. इनको फूलों के बारे में बताया जा रहा था, किसानों के बारे में जानकारी दी जा रही थी, मज़दूर जीवन से इनका परिचय कराया जा रहा था. वह सब ख़ुश थे और ख़ूब खाते थे. रूस में जहां भी जाइये खिलाये पिलाये बिना वह आपको छोड़ेंगे ही नहीं. मैं रूस की सैर करता हुआ एक पानियर कैम्प में जा पहुँचा. पहले मैं उन लड़कों के साथ खेलता रहा. उन बच्चों की भोली सूरतें कभी नहीं भुलाई जा सकतीं. कितने अच्छे और कितने शोख़ थे वह सब! खाने का समय आया. उस कैम्प की महिला मुझे खाने के कमरे में ले गई. एक कुरसी पर मुझे बैठा दिया और ख़ुद मेरे बग़ल में बैठ गई. लड़के सलीक़े से अपनी अपनी जगहों पर बैठ कर भोज उड़ाने लगे.

खाते खाते मैंने उस महिला से पूछा—"क्या आपकी शादी हो चुकी है'?

उस लड़की के सुर्ख़ गालों पर पीलाहट छा गई. आंखों में नमी छलछला उठी. उसने भरे दिल से जवाब दिया—"जी, मैं बेवा हूँ." फिर एक सेकन्ड के लिये ख़ामोशी छाई रही. उसके मुँह पर मेरी आंखें गड़ी थीं. मैंने देखा कि जैसे वह अपने दिल पर क़ाबू पाने और वीरता से सारी कठिनाइयों का मुक़ाबला करने की कोशिश कर रही हो. उसने मरी हुई मुस्कराहट में जान डालने की कोशिश करते हुए फिर कहना शुरू किया:

"मेरा पति बहुत ही बहादुर था, वह देश भक्त था, देश की सेवा करता हुआ वह मारा गया. मुझे उस पर गर्व है, मुझे उसकी बहादुरी पर फ़ख़र है. हिटलर के ख़िलाफ़, बरबरता के ख़िलाफ़ उसने लड़ाई लड़ी और मुझे अकेला छोड़ कर चला गया—मुझे बड़ी तसल्ली है कि मेरा पति कायर नहीं था. मुझे पति की बहादुरी के लिये यह दो सुन्दर मैडल मिले हैं..........."

कहते कहते उस लड़की ने अपने पास से निकाल कर दोनों मैडल मेरे सामने रख दिये.

جنگ—جس سے سب پر تباہی آتی ہے، خون کی ندیاں بہتی ہیں، باغ اُجڑتے ہیں، نسلیں اُجڑتی ہیں......

میں چاہتا تھا کہ فوراً ہی اپنے سارے سوال پوچھ ڈالوں۔ لیکن اپنی جگیاسا پر مجھے انکش لگانا پڑا۔ ستیندر بابو نے بولنا شروع کردیا تھا۔ اُن کی میٹھی بنگلہ بھاشا، اُن کا بھاؤ، دل پر اثر کرنے والے جملے اور اُن کی سچائی بنا پربھاوت کئے نہیں رہ سکتی۔ اُنہوں نے تقریر کرتے کرتے دو گھٹنائیں سنائیں:

"گرمیوں کی چھٹیاں تھیں، پانیر کیمپ لگے ہوئے تھے۔ شہر کے لڑکے دیہات آگئے تھے، اور دیہات کے لڑکے شہر میں۔ روس کے یہ بالک ناگرک کھیل رہے تھے اور سیکھ رہے تھے۔ اِن کو پھولوں کے بارے میں بتایا جارہا تھا، کسانوں کے بارے میں جانکاری دی جا رہی تھی، مزدور جیون سے اِن کا پریچے کرایا جا رہا تھا۔ وہ سب خوش تھے اور خوب کھاتے تھے۔ روس میں جہاں بھی جائیے کھلائے پلائے بنا وہ آپ کو چھوڑیں گے ہی نہیں۔ میں روس کی سیر کرتا ہوا ایک پانیر کیمپ میں جا پہونچا۔ پہلے میں اُن لڑکوں کے ساتھ کھیلتا رہا۔ اُن بچوں کی بھولی صورتیں کبھی نہیں بھولائی جا سکتیں کتنے اچھے اور کتنے شوخ تھے وہ سب! کھانے کا سمے آیا۔ اُس کیمپ کی مہلا مجھے کھانے کے کمرے میں لے گئیں۔ ایک کرسی پر مجھے بیٹھا دیا اور خود میرے بغل میں بیٹھ گئیں۔ لڑکے سلیقے سے اپنی اپنی جگہوں پر بیٹھ کر بھوج اُڑانے لگے۔

کھاتے کھاتے میں نے اُس مہلا سے پوچھا—"کیا آپ کی شادی ہوچکی ہے"؟

اُس لڑکی کے سرخ گالوں پر پیلاہٹ چھاگئی۔ آنکھوں میں نمی چھلچھلا اُٹھی۔ اس نے بھرے دل سے جواب دیا—"جی، میں بیوہ ہوں"۔ پھر ایک سکنڈ کے لئے خاموشی چھائی رہی۔ اُس کے منھ پر میری آنکھیں گڑی تھیں۔ میں نے دیکھا کہ جیسے وہ اپنے دل پر قابو پانے اور ویرتا سے ساری کٹھنائیوں کا مقابلہ کرنے کی کوشش کر رہی ہو۔ اُس نے مری ہوئی مسکراہٹ میں جان ڈالنے کی کوشش کرتے ہوئے پھر کہنا شروع کیا:

"میرا پتی بہت ہی بہادر تھا، وہ دیش بھکت تھا، دیش کی سیوا کرتا ہوا وہ مارا گیا۔ مجھے اُس پر گرو ہے، مجھے اُس کی بہادری پر فخر ہے۔ ہٹلر کے خلاف، بربرتا کے خلاف اُس نے لڑائی لڑی اور مجھے اکیلا چھوڑ کر چلا گیا—مجھے بڑی تسلی ہے کہ میرا پتی کایر نہیں تھا۔ مجھے پتی کے بہادری کے لئے یہ دو سندر میڈل ملے ہیں............"

کہتے کہتے اُس لڑکی نے اپنے پاس سے نکال کر دونوں میڈل میرے سامنے رکھ دیئے۔

पर फ्रांसीसियों के वहशियाना जुर्म के खिलाफ़ सारी दुनिया के लोगों में ग़म और गुस्सा की लहर दौड़ गई है. फ्रांस की मेहनत करने वाली आम जनता खास तौर पर इस कारवाई के खिलाफ़ गुस्सा का प्रदर्शन कर रही है.

پر فرانسیسیوں کے وحشیانہ ظلم کے خلاف ساری دنیا کے لوگوں میں غم اور غصہ کی لہر دوڑ گئی ہے ۔ فرانس کی محنت کرنے والی عام جنتا خاص طور پر اس کارروائی کے خلاف غصہ کا پردرشن کر رہی ہے ۔

शान्ति ज़िन्दाबाद!

(मुजीब रिज़वी)

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के मार्कसिस्ट क्लब की तरफ़ से एक मीटिंग था. श्री सत्येन्द्रबाबू बोलने वाले थे.

मैं उनके बारे में कुछ भी नहीं जानता था. बात असल में यह है मैं उन्हें सुनने भी नहीं गया था, मैं उन अनुभवों को सुनने गया था जो उन्हें रूस में हुए थे. मेरे मन में रोज़ अख़बार पढ़ पढ़ कर तरह तरह के विचार उठते थे. मैं जानना चाहता था कि रूस की हालत सचमुच कैसी है. विश्वास और अविश्वास के मिले जुले भाव मेरे मन में उठ रहे थे. सब से अधिक जिस चीज़ के बारे में मैं जानना चाहता था वह था रूस का शान्ति आन्दोलन. इस बीच में मैं कई लेख इस विषय पर पढ़ चुका था. सब का सार एक ही था—शान्ति आन्दोलन भी स्तालिन का एक जादू है, रूसी शान्ति आन्दोलन असल में जंग आन्दोलन है.................वग़ैरा वग़ैरा.

मैं रूस से मोहब्बत करने लगा था. क्योंकि जब अमरीका वग़ैरा ऐसे बड़े देश ऐटम बम बनाने और हथियार इकट्ठा करने की दौड़ लगा रहे हैं, कोरिया में बीमारी के कीड़ों के बम फेंक रहे हैं, तो सिर्फ़ रूस ही ऐसा देश है जो शान्ति शान्ति चिल्लाता है. मुझे शान्ति चाहिये. अपने देश के लिये, अपने विश्वास के लिये, अपनी मां के लिये, अपनी बहन के लिये, और अपने लिये! मैं उसका दोस्त हूँ जो शान्ति का दोस्त है, जो शान्ति क़ायम करने की बात करता है—लेकिन हमारे अख़बार हमें रोज़ यह बताते हैं कि रूस तो हत्यारों का देश है, वह शान्त चाह ही नहीं सकता—मैं यही जानने गया था. मजूमदार साहब रूस होकर आये हैं, वह रूस के अनुभव बताने वाले थे. मैं अपनी जिज्ञासा साथ लेकर गया था. मैं यह पूछने गया था कि क्या रूस में भी शान्ति आन्दोलन कोई हिन्द सरकार की स्कीमों की तरह की चीज़ है, क्या वहां के लोग शान्ति नहीं चाहते, क्या वह लोग जंग चाहते हैं

شانتی زندہ باد !

(مجیب رضوی)

الہ آباد یونیورسٹی کے مارکسسٹ کلب کی طرف سے ایک میٹنگ تھی ۔ شری ستیندر بابو بولنے والے تھے ۔

میں ان کے بارے میں کچھ بھی نہیں جانتا تھا ۔ بات اصل میں یہ ہے میں انہیں سننے بھی نہیں گیا تھا، میں ان انوبھووں کو سننے گیا تھا جو انہیں روس میں ہوئے تھے ۔ میرے من میں روز اخبار پڑھ پڑھ کر طرح طرح کے وچار اٹھتے تھے ۔ میں جاننا چاہتا تھا کہ روس کی حالت سچ مچ کیسی ہے ۔ وشواس اور اوشواس کے ملے جلے بھاؤ میرے من میں اٹھ رہے تھے ۔ سب سے ادھک جس چیز کے بارے میں میں جاننا چاہتا تھا وہ تھا روس کا شانتی آندولن ۔ اس بیچ میں میں کئی لیکھ اس وشے پر پڑھ چکا تھا ۔ سب کا سار ایک ہی تھا— شانتی آندولن بھی استالن کا ایک جادو ہے، روسی شانتی آندولن اصل میں جنگ آندولن ہے..........وغیرہ وغیرہ ۔

میں روس سے محبت کرنے لگا تھا ۔ کیونکہ جب امریکہ وغیرہ ایسے بڑے دیش ایٹم بم بنانے اور ہتھیار اکٹھا کرنے کی دوڑ لگا رہے ہیں، کوریا میں بیماری کے کیڑوں کے بم پھینک رہے ہیں، تو صرف روس ہی ایسا بڑا دیش ہے جو شانتی شانتی چلاتا ہے ۔ مجھے شانتی چاہئے اپنے دیش کے لئے، اپنے وشواس کے لئے، اپنی ماں کے لئے، اپنی بہن کے لئے، اور اپنے لئے ! میں اس کا دوست ہوں جو شانتی کا دوست ہے، جو شانتی قائم کرنے کی بات کرتا ہے— لیکن ہمارے اخبار ہمیں روز یہ بتاتے ہیں کہ روس تو ہتھیاروں کا دیش ہے، وہ شانتی چاہ ہی نہیں سکتا— میں یہی جاننے گیا تھا ۔ مزمدار صاحب روس ہوکر آئے ہیں، وہ روس کے انوبھو بتانے والے تھے ۔ میں اپنی جگیاسا ساتھ لے کر گیا تھا ۔ میں یہ پوچھنے گیا تھا کہ کیا روس میں بھی شانتی آندولن کوئی ہند سرکار کی اسکیموں کی طرح کی چیز ہے، کیا وہاں کے لوگ شانتی نہیں چاہتے، کیا وہ لوگ جنگ چاہتے ہیں—

...ढ़ाकों के ... में शहरों और गांवों पर हवाई ...के बम बारी की.

...ुनिस में फ्रांसीसी लोग "दमन" और "लालच ...की नीति" पर अमल कर रहे हैं. सन 1947 में सारे ... आम हड़ताल के आन्दोलन के बाद फ्रांसीसी ... को शासन में सुधार करने का वादा करना ...सी क़िस्म का एक और वादा फ्रांसीसी हकूमत ने सन 1950 में भी किया. एलान हुआ कि तियुनिसी के अख़्तियार बढ़ाने के अलावा वह इस मुल्क को ...रे "अन्दरूनी ख़ुद अख़्तियारी" देने के सम्बन्ध ...चीत शुरू करने को भी तैयार हैं. लेकिन बाद की ...ों से ज़ाहिर हो गया कि फ्रांसीसी हकूमत अपना ...ूरा करने का कोई इरादा नहीं रखती थी बल्कि ...स लगाए हुए थी कि इन चालबाज़ियों के ज़रिया ...आज़ादी के आन्दोलन में फूट डालने में कामयाबी कर लेगी.

...ांसीसी हकूमत के वादों से प्रभावित होकर तियुनिस ... तियुनिसी मंत्री मंडल में शामिल हो गए लेकिन ...ात चीत के बाद 15 दिसम्बर सन 1951 को ...ी हकूमत ने एक एलान जारी किया जिस में ... की तमाम मांगें रद्द कर दी गईं और कह दिया ... निगरानी के अख़्तियारात ज्यों के त्यों क़ायम ...ियुनिसी जनता फ्रांसीसी हकूमत की इस कार्रवाई ... नाराज़ हुई. और नए आन्दोलन से उसने उसका ...दिया. मुल्क भर में प्रदर्शन किए गए, आम जल्से ...ड़तालें हुईं. 21 से 23 दिसम्बर 1951 तक जो ...ड़ताल हुई उसमें तमाम लोगों ने बिना राजकाजी ... के हिस्सा लिया.

...निस की हालत दिन पर दिन ज़ियादा ख़तरनाक ...ा रही है. मुल्क के कोने कोने में हड़तालें प्रदर्शन ...लिस व फ़ौज, से टक्करें हो रही हैं. फ्रांसीसी हाकिम ...ा से तियुनिसी जनता की शक्ति को ख़त्म करने ...श कर रहे हैं. पुलिस और फ़ौज प्रदर्शन करने ...हत्थे लोगों पर गोलियां चला देती है. क़ौमी ... के आन्दोलन के नेताओं और आन्दोलन में ...लेने वालों को पूरे तियुनिस में बड़े पैमाने पर ...र किया जा रहा है. गिरफ़्तार होने वालों में ...ा की कम्यूनिस्ट पारटी के लीडर भी हैं. फ्रांसीसियों ... की कार्रवाई सब से पहले कम्यूनिस्ट पारटी ही ...फ़ की जाती है. दूसरे क़ैदियों में "नूदस्तूर" पारटी, ... और अमन के लिये आन्दोलन करने वाली ... कमेटी और तियुनिस के मेहनत करने वालों ...र्ड यूनियन के नेता हैं. तियूनिसी और मराक्को

طور پر طاقت کے سبب میں شہروں اور گاؤں پر ہوائی جہازوں سے بمباری کی .

تیونس میں فرانسیسی لوگ " دمن " اور " لالچ دینے " کی نیتی پر عمل کر رہے ہیں . سن 1947 میں سارے دیش کے عام ہڑتال کے آندولن کے بعد فرانسیسی حکومت کو شاسن میں سدھار کرنے کا وعدہ کرنا پڑا . اسی قسم کا ایک اور وعدہ فرانسیسی حکومت نے اگست سن 1950 میں بھی کیا . اعلان ہوا کہ تیونسی وزیروں کے اختیار بڑھانے کے علاوہ وہ اس ملک کو دھیرے دھیرے " اندرونی خود اختیاری " دینے کے سمبندھ میں بات چیت شروع کرنے کو بھی تیار ہے . لیکن بعد کی گھٹناؤں سے ظاہر ہوگیا کہ فرانسیسی حکومت اپنا وعدہ پورا کرنے کا کوئی ارادہ نہیں رکھتی تھی بلکہ یہ آس لگائے ہوئے تھی کہ ان چالبازیوں کے ذریعہ قومی آزادی کے آندولن میں پھوٹ ڈالنے میں کامیابی حاصل کر لے گی .

فرانسیسی حکومت کے وعدوں سے پربھاوت ہو کر تیونس کے لیڈر تیونسی منتری منڈل میں شامل ہوگئے لیکن لمبی بات چیت کے بعد 15 دسمبر سن 1951 کو فرانسیسی حکومت نے ایک اعلان جاری کیا جس میں تیونس کی تمام مانگیں رد کر دی گئیں اور کہدیا گیا کہ نگرانی کے اختیارات جوں کے توں قائم رہینگے . تیونسی جنتا فرانسیسی حکومت کی اس کاروائی سے بہت ناراض ہوئی اور نئے آندولن سے اس نے اسکا جواب دیا . ملک بھر میں پردرشن کئے گئے، عام جلسے اور ہڑتالیں ہوئیں . 21 سے 23 دسمبر سن 1951 تک جو عام ہڑتال ہوئی اسمیں تمام لوگوں نے بنا راج کاجی بھید بھاؤ کے حصہ لیا .

تیونس کی حالت دن پر دن زیادہ خطرناک ہوتی جا رہی ہے . ملک کے کونے کونے میں ہڑتالیں ، پردرشن اور پولیس و فوج سے ٹکریں ہو رہی ہیں . فرانسیسی حاکم بربرتا سے تیونسی جنتا کی شکتی کو ختم کرنے کی کوشش کر رہے ہیں . پولیس اور فوج پردرشن کرنے والے نہتے لوگوں پر گولیاں چلا دیتی ہے . قومی آزادی کے آندولن کے نیتاؤں اور آندولن میں حصہ لینے والوں کو پورے تیونس میں بڑے پیمانے پر گرفتار کیا جا رہا ہے . گرفتار ہونے والوں میں تیونس کی کمیونسٹ پارٹی کے لیڈر ہیں. فرانسیسیوں کی دمن کی کاروائی سب سے پہلے کمیونسٹ پارٹی ہی کے خلاف کی جاتی ہے . دوسرے قیدیوں میں " نو دستور " پارٹی ، آزادی اور امن کے لئے آندولن کرنے والی تیونسی ... اور تیونس کے محنت کرنے والوں کی ... کے نیتا ہیں . تیونس اور مراکو

के बाद "संस्कृति" के अमरीकी और फ्रांसीसी "ठेकेदारों" ने जो कारनामा दिखाया है वह यह कि मराको में सन् 1950 में स्कूल जाने की उम्र वालों में कुल सात फ़ी सदी बच्चे स्कूलों में दाखिल थे.

जब से तियूनिस और मराको पर फ्रांसीसी और अमरीकी साम्राजी राज कर रहे हैं तब ही से इन मुल्कों की जनता भी विदेशी ग़ुलामी से छुटकारा पाने के लिए बराबर संघर्ष कर रही है. दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद राष्ट्रीय आज़ादी का आंदोलन ख़ास तौर पर बढ़ा है. इस आन्दोलन का एक ख़ास पहलू यह है कि इसका मक़सद न सिर्फ़ नौ आबादियाई ग़ुलामी से छुटकारा हासिल करना है बल्कि अम शांति के लिये कोशिश करना और तियूनिस और मराको की धरती को अमरीका की जंगी कार्रवाईयों का अड्डा न बनने देना है.

आज़ादी के आन्दोलन को कुचलने के लिये फ्रांसीसी साम्राज्यशाहों ने मराको में इन्तहाई सख़्त क़ानून लागू कर दिये हैं और जनता को जन्म सिद्ध अधिकारों तक से महरूम कर दिया है. फ्रांसीसी अफ़सरों से इजाज़त हासिल किये बग़ैर अंजुमन या यूनियन बनाने या मज़हबी त्योहारों और शादी ब्याह, मौत वग़ैरा के मौक़ा पर भी दस से ज़ियादा की तादाद में एक जगह जमा होने की मनाही कर दी गई है. मुल्क में तरक़्क़ी पसन्द राजकाजी पार्टियों और दूसरे जन संगठनों और खेलों की अंजुमनों को ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दिया गया है.

25 फ़रवरी सन् 1951 को फ्रांसीसी साम्राजीयों ने मराको के सुल्तान से एक ख़ास समझौते पर दस्तख़त करा लिये जिसमें सुल्तान ने मान लिया है कि मराको में "फ्रांसीसीयों की मौजूदगी बिल्कुल ठीक है." और वचन दिया है कि फ्रांसीसी जो "सुधार" करना चाहेंगे उन्हें बे रोक टोक करने दिया जायगा. सुल्तान से यह फ्रांसीसी मांग भी मनवा ली गई है कि वह उन मराक़सी ऊंचे अफ़सरों को निकाल दें जो क़ौमी आज़ादी के आन्दोलनों की मदद कर रहे थे. इसके बाद फ्रांसीसी साम्राजीयों ने तरक़्क़ी पसन्द विचार के तमाम लोगों की गिरफ़्तारियाँ शुरू कर दीं और कभी कभी ऐसा भी हुआ कि इन गिरफ़्तारियों के साथ साथ क़त्ल व ख़ून और लूट मार भी हुई.

फ्रांसीसी साम्राज्यशाहों की इन कार्रवाइयों का जवाब मराको की जनता ने प्रदर्शनों और आम-जल्सों में आवाज़ें उठा कर दिया. इन जल्सों में हर तबक़े के ज़ियादा से ज़ियादा लोग शामिल हुए. बहुत से स्थानों पर जनता और फ्रांसीसी फ़ौज व पुलिस के बीच टक्करें हुईं. क़ौमी आज़ादी के आन्दोलन को कुचलने के दौरान में फ्रांसीसीयों ने मराको के बहुत से स्थानों पर और ख़ास

کے بعد "سنسکرتی" کے امریکی اور فرانسیسی "ٹھیکیداروں" نے جو کارنامہ دکھایا ہے وہ یہ کہ مراکو میں سن 1950 میں اسکول جانے کی عمر والوں میں کل سات فیصدی بچے اسکول میں داخل تھے ۔

جب سے تیونس اور مراکو پر فرانسیسی اور امریکی سامراجی راج کر رہے ہیں تب ہی سے ان ملکوں کی جنتا بھی بدیسی غلامی سے چھٹکارا پانے کے لئے برابر سنگھرش کر رہی ہے ۔ دوسری بڑی لڑائی کے بعد راشٹری آزادی کا آندولن خاص طور پر بڑھا ہے ۔ اس آندولن کا ایک خاص پہلو یہ ہے کہ اس کا مقصد نہ صرف نوآبادیائی غلامی سے چھٹکارا حاصل کرنا ہے بلکہ جگ شانتی کے لئے کوشش کرنا اور تیونس اور مراکو کی دھرتی کو امریکہ کی جنگی کاروائیوں کا اڈا نہ بننے دینا ہے ۔

آزادی کے آندولن کو کچلنے کے لئے فرانسیسی سامراج شاہوں نے مراکو میں انتہائی سخت قانون لاگو کر دیئے ہیں اور جنتا کو جنم سدھ ادھیکاروں تک سے محروم کر دیا ہے ۔ فرانسیسی افسروں سے اجازت حاصل کئے بغیر انجمن یا یونین بنانے، یا مذہبی تہواروں اور شادی بیاہ، موت وغیرہ کے موقع پر بھی دس سے زیادہ کی تعداد میں ایک جگہ جمع ہونے کی مناہی کر دی گئی ہے ملک میں ترقی پسند راج کاجی پارٹیوں اور دوسرے جن سنگٹھنوں اور کھیلوں کی انجمنوں کو غیر قانونی قرار دے دیا گیا ہے ۔

25 فروری سن 1951 کو فرانسیسی سامراجیوں نے مراکو کے سلطان سے ایک خاص سمجھوتے پر دستخط کرا لئے جس میں سلطان نے مان لیا ہے کہ مراکو میں "فرانسیسیوں کی موجودگی بالکل ٹھیک ہے" اور وچن دیا ہے کہ فرانسیسی جو "سدھار" کرنا چاہیں گے انہیں بے روک ٹوک کرنے دیا جائیگا ۔ سلطان سے یہ فرانسیسی مانگ بھی منوا لی گئی ہے کہ وہ ان مراقشی اونچے افسروں کو نکال دیں جو قومی آزادی کے آندولنوں کی مدد کر رہے تھے ۔ اس کے بعد فرانسیسی سامراجیوں نے ترقی پسند وچار کے تمام لوگوں کی گرفتاریاں شروع کر دیں اور کبھی کبھی ایسا بھی ہوا کہ ان گرفتاریوں کے ساتھ ساتھ قتل و خون اور لوٹ مار بھی ہوئی ۔

فرانسیسی سامراج شاہوں کی ان کاروائیوں کا جواب مراکو کی جنتا نے پردرشنوں اور عام جلسوں میں آوازیں اٹھا کر دیا ۔ ان جلسوں میں ہر طبقے کے زیادہ سے زیادہ لوگ شامل ہوئے ۔ بہت سے استھانوں پر جنتا اور فرانسیسی فوج و پولیس کے بیچ ٹکریں ہوئیں ۔ قومی آزادی کے آندولن کو کچلنے کے دوران میں فرانسیسیوں نے مراکو کے بہت سے استھانوں پر اور خاص

. तियूनिस और मराको की जनता की राय के ख़िलाफ़ [फ़्रां]सीसी साम्राज्यशाहों ने अपने अमरीकी [आ]क़ाओं के कहने पर दोनों मुल्कों को अतलांटिक गिरोह [में] शामिल कर लिया है. अमरीका के हुक्म पर तियूनिस [औ]र मराको दोनों मुल्कों में हवाई अड्डे और लड़ाई के [लि]ये सड़कें और रेलवे लाइनें बनाई जा रही हैं. मराको [में] कोई चालीस हवाई और समुन्दरी अड्डे बनाने का [इ]रादा है. यहां कम से कम पैंतीस हज़ार से ज़ियादा अमरीकी फ़ौजी और दस हज़ार अमरीकी 'एक्सपर्ट' [य]ानी माहिर मौजूद हैं.

तियूनिस और मराको की जनता की ज़िन्दगी दुख और मुसीबत की ज़िन्दगी है. इनको अमरीकी और फ़्रांसीसी साम्राज्यशाहों की दुहरी ग़ुलामी सहनी पड़ रही है. विदेशियों की इस ग़ुलामी ने तियूनिस और मराको की जनता को भुखमरी और फ़क़ीरों-मुहताजों की सी ज़िन्दगी बसर करने पर मजबूर कर दिया है. खाने पीने और रोज़ाना इस्तेमाल की चीज़ें मंहगी होती जा रही हैं. मिसाल के लिये तियूनिस में एक आदमी का औसत ख़र्च [जं]ग के पहले के ज़माने से 25 गुना बढ़ गया है. फ़्रांसीसी [हु]क्काम हज़ारों किसानों को ज़मीन से बेदख़ल कर रहे हैं और ज़मीनें छीनते वक़्त फ़सलें और इमारतें बेधड़क बरबाद कर देते हैं. लोगों को फ़ाक़ा करने पर मजबूर कर दिया जाता है. पिछले चंद बरसों में फ़्रांसीसी साम्राज्यशाहों ने जिनकी यहां कुल तीन फ़ी सदी के क़रीब आबादी है मराक़शियों से बीस फ़ीसदी से ज़ियादा, उमदा और [उ]पजाऊ ज़मीन छीन ली. मराको के किसानों की तबाही और बरबादी का अन्दाज़ा इस तरह लगाया जा सकता [है] कि इस मुल्क में पन्द्रह लाख किसानों के पास अपनी ज़मीन नहीं है. इस तरह यहां के एक चौथाई किसान बे ज़मीन हैं. तियूनिस और मराको के लोग हद दरजे [क]ी ग़रीबी और दुख की ज़िन्दगी बसर करते हैं. रहने को छोटी-छोटी झोंपड़ियां हैं जो पुराने और ज़ंग लगे टीन के टुकड़ों को काट-काट कर और जोड़ जोड़ कर बनाई जाती हैं.

ग़रीबी की वजह से इन दोनों मुल्कों में हर साल [हज़]ारों लोग भूख की बीमारियों की भेंट हो रहे हैं. दूध-मुंहे बच्चों की मौत ख़ास तौर पर बहुत होती है. विदेशी [हा]किम जनता की तन्दुरुस्ती बेहतर करने के सम्बन्ध में [कु]छ नहीं कर रहे हैं. सन 1949 में तियूनिस में 87 डाक्टर [थे]. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक़ मराको में एक लाख बीस हज़ार की देहाती आबादी के लिए सिर्फ़ एक डाक्टर है.

तालीम की हालत भी बहुत ही ख़राब है. तियूनिस में 84 फ़ी सदी लोग अनपढ़ हैं, [illegible] की कार्रवाइयों.

ہے . تیونس اور مراکو کی جنتا کی رائے کے خلاف فرانسیسی سامراجی شاہوں نے اپنے امریکی مالکوں کے کہنے پر دونوں ملکوں کو اٹلانٹک گروہ میں شامل کر لیا ہے . امریکہ کے حکم پر تیونس اور مراکو دونوں ملکوں میں ہوائی اڈے اور لڑائی کے لئے سڑکیں اور ریلوے لائنیں بنائی جا رہی ہیں . مراکو میں کوئی چالیس ہوائی اور سمندری اڈے بنانے کا ارادہ ہے . یہاں کم سے کم 35 ہزار سے زیادہ امریکی فوجی اور دس ہزار امریکی 'ایکسپرٹ' یعنی ماہر موجود ہیں .

تیونس اور مراکو کی جنتا کی زندگی دکھ اور مصیبت کی زندگی ہے . ان کو امریکی اور فرانسیسی سامراجی شاہوں کی دوہری غلامی سہنا پڑ رہی ہے . بدیشیوں کی اس غلامی نے تیونس اور مراکو کی جنتا بھوک مری اور فقیروں محتاجوں کی سی زندگی بسر کرنے پر مجبور کردیا ہے . کھانے پینے اور روزانہ استعمال کی چیزیں مہنگی ہوتی جا رہی ہیں . مثال کے لئے تیونس میں ایک آدمی کا اوسط خرچ جنگ سے پہلے کے زمانے سے 25 گنا بڑھ گیا ہے . فرانسیسی حکام ہزاروں کسانوں کو زمین سے بے دخل کر رہے ہیں اور زمینیں چھینتے وقت فصلیں اور عمارتیں بے دھڑک برباد کر دیتے ہیں . لوگوں کو فاقہ کرنے پر مجبور کردیا جاتا ہے . پچھلے چند برسوں میں فرانسیسی سامراجی شاہوں نے جن کی یہاں کل تین فیصدی کے قریب آبادی ہے مراکشیوں سے بیس فیصدی سے زیادہ عمدہ اور اپجاؤ زمین چھین لی . مراکو کے کسانوں کی تباہی اور بربادی کا اندازہ اس طرح لگایا جا سکتا ہے کہ اس ملک میں پندرہ لاکھ کسانوں کے پاس اپنی زمین نہیں ہے . اس طرح یہاں ایک چوتھائی کسان بے زمین ہیں . تیونس اور مراکو کے لوگ حد درجہ کی غریبی اور دکھ کی زندگی بسر کرتے ہیں . رہنے کو چھوٹی چھوٹی جھونپڑیاں ہیں جو پرانے اور زنگ لگے ٹین کے ٹکڑوں کو کاٹ کاٹ کر اور جوڑ جوڑ کر بنائی جاتی ہیں .

غریبی کی وجہ سے ان دونوں ملکوں میں ہر سال ہزاروں لوگ بھوک کی بیماریوں کی بھینٹ ہو رہے ہیں . دودھ مونہے بچوں کی موت خاص طور پر بہت ہوتی ہے . بدیشی حاکم جنتا کی تندرستی بہتر کرنے کے سمبندھ میں کچھ نہیں کر رہے ہیں . سن 1949 میں تیونس میں 87 ڈاکٹر تھے . آنکڑوں کے مطابق مراکو میں ایک لاکھ بیس ہزار کی دیہاتی آبادی کے لئے صرف ایک ڈاکٹر ہے .

تعلیم کی حالت بھی بہت ہی خراب ہے . تیونس میں 84 فیصدی لوگ ان پڑھ ہیں . پڑھنا [illegible] کی کارروائیوں

मराको कई सदियों से एक आज़ाद अरब रियासत थी. सन 1912 में इसका भी यही हाल हुआ. मराको के सुल्तान को भी एक समझौते पर ज़बरन दस्तख़त बनाना पड़ा और मुल्क का अधिकतर इलाक़ा फ़्रांस की "हिफ़ाज़त" में आ गया. एक छोटा सा हिस्सा स्पेन के क़ब्ज़े में रहने दिया गया और तंजा को अन्तर क़ौमी बन्दरगाह बना दिया गया.

ग़ुलामी के इन समझौतों के अनुसार फ़्रांस को अपनी फ़ौजें इन इलाक़ों में लाने और अपनी पुलिस रखने के अधिकार दे दिये गये. दोनों मुल्कों को विदेशों से किसी तरह का सम्बन्ध क़ायम करने के हक़ से महरूम कर दिया गया. क़ानून बनाने और मुल्क का इन्तज़ाम करने के सारे अख़्तियार फ़्रांसीसी अफ़सरों के हाथों में चले गये. इन दोनों देशों में फ़्रांसीसी हुकूमत के दो बड़े प्रतिनिधि मुक़र्रर किये गये जो रेज़ीडेन्ट जनरल कहलाते हैं. तमाम अफ़सर उन्हीं के मातहत हैं.

बाद में पूरबी मुल्कों की नौ-आबादियों की जो गत हुई वही ट्यूनिस और फ़्रांसीसी मराको की भी हुई.

यों तो दूसरी लड़ाई के पहले ही अमरीका ने इन मुल्कों में अपने क़दम जमाने शुरू कर दिये थे लेकिन सन 1942 में अमरीकी फ़ौजें मराको की धरती पर उतरीं और तभी से इस मुल्क पर अमरीकी क़ब्ज़े की बाक़ायदा शुरूआत हुई. दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद मारशल एड के बोझ से दबे हुए फ़्रांस को ट्यूनिस और मराको में अमरीकी साम्राज को हाथ पांव फैलाने के लिये ज़ियादा से ज़ियादा जगह देना पड़ी. अख़बारों की सूचना के अनुसार मराको की माली ज़िन्दगी पर अमरीकी ब्योपार मंडल के सद्र राबर्ट वुड्स की हुकमरानी है. मराको की चीनी, चाय और सूती कपड़े की तिजारत का साठ फ़ीसदी हिस्सा इसी मंडल के क़ब्ज़े में है. लड़ाई के एतबार से ज़रूरी कच्चे माल जैसे तेल, सीसा, मैंगनीज़, कोबाल्ट और यूरेनियम पर अमरीकियों ने क़ब्ज़ा जमा लिया है. मराको में यूरेनियम की खुदाई पर ख़ास ध्यान दिया जा रहा है. ट्यूनिस में अमरीका के माली हथकंडों का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि लड़ाई से पहले के ज़माने के मुक़ाबले में पिछले साल अमरीका को वहां से दस गुना ज़ियादा माल मिला.

एक नई जंग शुरू करने के अमरीकी मंसूबों में इन दोनों मुल्कों का एक महत्त्व पूर्ण स्थान है. रोज़ाना "न्यूयार्क हेराल्ड ट्रिब्यून" ने साफ़ साफ़ शब्दों में लिखा है कि मराको की स्थिति और एटलान्टिक गठ जोड़ में उसकी स्थिति को लड़ाई के एतबार से पहली अहमियत हासिल

مراکو کئی صدیوں سے ایک آزاد عرب ریاست تھی . سنہ 1912 میں اس کا بھی یہی حال ہوا . مراکو کے سلطان کو بھی ایک سمجھوتے پر جبراً دستخط بنانا پڑا اور ملک کا اکثر علاقہ فرانس کی "حفاظت" میں آگیا . ایک چھوٹا سا حصہ اسپین کے قبضہ میں رہنے دیا گیا اور طنجہ کو انٹر قومی بندرگاہ بنا دیا گیا .

غلامی کے ان سمجھوتوں کے انوسار فرانس کو اپنی فوجیں ان علاقوں میں لانے اور اپنی پولیس رکھنے کے ادھیکار دیدئے گئے . دونوں ملکوں کو بدیشوں سے کسی طرح کا سمبندھ قائم کرنے کے حق سے محروم کردیا گیا . قانون بنانے اور ملک کا انتظام کرنے کے سارے اختیار فرانسیسی افسروں کے ہاتھوں میں چلے گئے . ان دونوں دیشوں میں فرانسیسی حکومت کے دو بڑے پرتیندھی مقرر کئے گئے جو ریزیڈینٹ جنرل کہلاتے ہیں . تمام افسر انہیں کے ماتحت ہیں .

بعد میں پوربی ملکوں کی نو آبادیوں کی جو گت ہوئی وہی تیونس اور فرانسیسی مراکو کی بھی ہوئی .

یوں تو دوسری لڑائی کے پہلے ہی امریکہ نے ان ملکوں میں اپنے قدم جمانے شروع کر دیئے تھے لیکن سنہ 1942 میں امریکی فوجیں مراکو کی دھرتی پر اتریں اور تب ہی سے اس ملک پر امریکی قبضہ کی باقاعدہ شروعات ہوئی . دوسری بڑی لڑائی کے بعد مارشل ایڈ کے بوجھ سے دبے ہوئے فرانس کو تیونس اور مراکو میں امریکی سامراج کو ہاتھ پاؤں پھیلانے کے لئے زیادہ سے زیادہ جگہ دینی پڑی . اخباروں کی سوچنا کے انوسار مراکو کی مالی زندگی پر امریکی بیوپار منڈل کے صدر رابرٹ وڈس کی حکمرانی ہے . مراکو کی چینی، چائے اور سوتی کپڑے کی تجارت کا ساٹھ فیصدی حصہ اسی منڈل کے قبضہ میں ہے . لڑائی کے اعتبار سے ضروری کچے مال جیسے تیل، سیسہ، مینگنیز، کوبالٹ اور یورینیم پر امریکیوں نے قبضہ جما لیا ہے . مراکو میں یورینیم کی کھدائی پر خاص دھیان دیا جا رہا ہے . تیونس میں امریکہ کے مالی ہتھکنڈوں کا اندازہ اس بات سے لگایا جا سکتا ہے کہ لڑائی سے پہلے کے زمانے کے مقابلے میں پچھلے سال امریکہ کو وہاں سے دس گنا زیادہ مال ملا .

ایک نئی جنگ شروع کرنے کے امریکی منصوبوں میں ان دونوں ملکوں کا ایک مہتوپورن استھان ہے . روزانہ "نیویارک ہیرالڈ ٹریبیون" نے صاف صاف شبدوں میں لکھا ہے کہ مراکو کی استھتی اور اٹلانٹک گٹھ جوڑ میں اس کی حیثیت کو لڑائی کے اعتبار سے پہلی اہمیت حاصل

[illegible] की [illegible] पहनते हैं. वह हाथ के [illegible] से बनी बांस की छतरियां इस्तेमाल करते हैं. बरसात से हिफ़ाज़त के वास्ते वह लोग फूस के बने बरसाती कोट इस्तेमाल करते हैं, फूस के टोप ओढ़ते हैं और फूस के थैलों में सामान रखते हैं. आम तौर से, हम लोगों के मुक़ाबले उनको आदत वैसी चीज़ें इस्तेमाल करने की कहीं ज़ियादा है. हमारे देश में तो हाथ की बनी चीज़ को नीची निगाह से देखा जाता है. पर ख़ुशी की बात है कि जापानियों के शौक़ इतने नीचे नहीं गिरे हैं. वह लोग जो मशीन की बनी चीज़ें इस्तेमाल करते हैं तो व्यापार और आमदनी के ख़याल से न कि अपनी पसंद की वजह से. इस क़ौमी मांग के कारन देहाती उद्योग-धन्धों की चीज़ों की वहां पर बहुत काफ़ी गुंजायश रहती है. अगर हम देहाती उद्योग-धन्धों को बढ़ाना चाहते हैं तो हम पहला काम यह करें कि इन धन्धों में बनने वाले माल के लिये बढ़ता हुआ बाज़ार खड़ा करें. पर हमारे यहां तो एक दम उल्टी दिलचस्पी पैदा की जाती है. इसलिये माल तैयार करने के जापानी ढंग को अपनाने के पेशतर यह ज़रूरी है कि हम उनके दैनिक जीवन से एक-दो सबक़ सीखें, ताकि हम भी हाथ की बनी चीज़ की क़द्र कर सकें और यह समझ सकें कि इन से जीवन को सरस और हरा-भरा बनाने में कितनी मदद मिलती है.

जापान में घूम फिर कर और वहां के उद्योगों को देखकर मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि शायद ही कोई ऐसी दस्तकारी वहां की है जो हम हू-बहू अपने यहां राइज कर सकें. बहुत एहतियात के साथ हम को समझना होगा कि हमारे यहां का वातावरन कैसा है, क्या क्या साधन हमारे पास हैं, हमारे यहां लोगों के रुझान और रीति-रिवाज कैसे हैं. जो कोई भी दस्तकारी हम शुरू करें उसे यहां की हालतों के मुताबिक़ बैठाना चाहिये. इस तरह अगर अपनी आर्थिक व्यवस्था में हम कामयाब तब्दीलियां करना चाहते हैं तो उसके पहले कुछ बातों का पूरा हो जाना इन्तहाई ज़रूरी है. वह हम नीचे दे रहे हैं—

1. सरकार और जनता के बीच वह चौड़ी खाई नहीं होनी चाहिये जो आर्थिक, समाजी और तालीमी लिहाज़ से हमारे देश में मौजूद है. इस का इलाज यही है कि जापान में जो तनख़ाह का हिसाब है वह यहां भी लागू कर दिया जाये और तालीम सबको दी जाये.

2. जापानियों की तरह हम भी अपनी चीज़ों की क़द्र करना सीखें. सरकारी हलक़ों में इस बात पर ख़ास ध्यान दिये जाने की ज़रूरत है.

3. हमारे यहां चीज़ों की जो मांग पैदा हो उसका आधार [illegible] और [illegible] ओहदेदारों का जीवन होना

[illegible] کی چیز پہنتے ہیں . وہ ہاتھ کے [illegible]
[illegible] بانس کی چھتریاں استعمال کرتے ہیں . بارش سے
حفاظت کے واسطے وہ لوگ پھوس کے بنے برساتی کوٹ
استعمال کرتے ہیں' پھوس کے ٹوپ اوڑھتے ہیں اور
پھوس کے تھیلوں میں سامان رکھتے ہیں . عام طور سے'
ہم لوگوں کے مقابلے اُن کی عادت ویسی چیزیں استعمال
کرنے کی کہیں زیادہ ہے . ہمارے دیش میں تو ہاتھ کی
بنی چیز کو نیچی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے . پر خوشی کی
بات ہے کہ جاپانیوں کے شوق اتنے نیچے نہیں گرے ہیں .
وہ لوگ جو مشین کی بنی چیزیں استعمال کرتے ہیں
تو بیوپار اور آمدنی کے خیال سے نہ کہ اپنی پسند کی
وجہ سے . اِس قومی مانگ کے کارن دیہاتی اُدیوگ
دھندوں کی چیزوں کی وہاں پر بہت کافی گنجائش
رہتی ہے . اگر ہم دیہاتی اُدیوگ دھندوں کو بڑھانا
چاہتے ہیں تو ہم پہلا کام یہ کریں کہ اِن دھندوں میں
بننے والے مال کے لئے بڑھتا ہوا بازار کھڑا کریں . پر
ہمارے یہاں تو ایک دم اُلٹی دلچسپی پیدا کی جاتی
ہے . اِس لئے مال تیار کرنے کے جاپانی ڈھنگ کو اپنانے
سے پیشتر یہ ضروری ہے کہ ہم اُن کے دینک جیون سے
ایک دو سبق سیکھیں تاکہ ہم بھی ہاتھ کی بنی چیز
کی قدر کرسکیں اور یہ سمجھ سکیں کہ اِن سے جیون
کو سرس اور ہرا بھرا بنانے میں کتنی مدد ملتی ہے .

جاپان میں گھوم پھر کر اور وہاں کے اُدیوگوں کو
دیکھ کر میں اِس نتیجے پر پہنچا کہ شاید ہی کوئی
ایسی دستکاری وہاں کی ہے جو ہم ہو بہو اپنے یہاں رائج
کرسکیں . بہت احتیاط کے ساتھ ہم کو سمجھنا ہوگا
کہ ہمارے یہاں کا واتاورن کیسا ہے' کیا کیا سادھن ہمارے
پاس ہیں' ہمارے یہاں لوگوں کے رجحان اور ریت رواج
کیسے ہیں . جو کوئی بھی دستکاری ہم شروع کریں اُسے
یہاں کی حالتوں کے مطابق بیٹھانا چاہئے . اِس طرح اگر
اپنی آرتھک ویوستھا میں ہم کامیاب تبدیلیاں
کرنا چاہتے ہیں تو اس کے پہلے کچھ باتوں کا پورا ہو
جانا انتہائی ضروری ہے . وہ ہم نیچے دے رہے ہیں—

1. سرکار اور جنتا کے بیچ وہ چوڑی کھائی نہیں
ہونی چاہئے جو آرتھک' سماجی اور تعلیمی لحاظ سے
ہمارے دیش میں موجود ہے . اِس کا علاج یہی ہے کہ
جاپان میں جو تنخواہ کا حساب ہے وہ یہاں بھی لاگو کر
دیا جائے اور تعلیم سب کو دی جائے .

2. جاپانیوں کی طرح ہم بھی اپنی چیزوں کی
قدر کرنا سیکھیں . سرکاری حلقوں میں اِس بات پر خاص
دھیان دیئے جانے کی ضرورت ہے .

3. ہمارے یہاں چیزوں کی جو مانگ پیدا ہو
اس کا آدھار نیتاؤں اور اونچے عہدے داروں کا جیون ہونا

जापान के उद्योग-धन्दे और हिन्दुस्तान

(जे. सी. कुमारप्पा)

[हाल ही में जापानी एक्सपर्टों का एक डेलीगेशन हमारे देश में आया था जिसने हिन्दुस्तान के कारखाने देखे और हिन्द जापान के बीच व्योपारी ताल्लुक क़ायम करने के लिये हिन्द सरकार से बात चीत भी की. हमें उम्मीद है कि जापान से कोई राज़ी नामा करने के पहले हिन्द सरकार खूब सोच समझ लेगी. हम नीचे डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का एक गम्भीर लेख ग्राम उद्योग पत्रिका से लेकर दे रहे हैं. डाक्टर कुमारप्पा दिसम्बर के महीना में जापान का दौरा करके लौटे हैं. उनके यह सुझाव बहुत ग़ौर करने लायक़ हैं.—एडीटर]

इधर कुछ अरसे से इस बात की बड़ी चर्चा चल रही है कि जिस तरह छोटे पैमाने पर उद्योग-धन्दे चला कर जापान ने अपने यहां की पैदावार बढ़ा ली है उसकी नक़ल हिन्दुस्तान भी करे. कोशिश यह हो रही है कि जापानी औज़ार, हथियार और मशीनें यहां मंगाई जायें और उन्हें अपनाया जाये. लेकिन यह किसी को ख़याल नहीं है कि जापान का आर्थिक संगठन कैसा है. आया वह उसके जीवन का हिस्सा है या नहीं, उसके इतिहास, परम्परा और रीति-रिवाज से मेल खाता है या नहीं. बनावटी तौर पर जापानी हालतों को यहां पर हू-बहू पैदा कर देने से हमारा कुछ भी भला नहीं होने वाला है. हमारे देश में जो देहाती उद्योग-धन्दे नहीं चल रहे हैं इसकी वजह यह है कि क्या सरकार, क्या जनता किसी को इनकी कोई परवाह ही नहीं है. काग़ज़ की नाव कितनी ही ख़ूबसूरत क्यों न हो चल नहीं सकती.

हम देखते हैं कि जापानियों ने पच्छिमी पहनावा वग़ैरह अपना लिया है. फिर भी उनकी घरेलू ज़िन्दगी अब तक पुराने ढर्रे पर चली जाती है. शायद वहां की तालीम या समाजी लोकाचार का यह असर हो कि एक राष्ट्र की हैसियत से जापानी लोग देहाती उद्योग-धन्दों की चीज़ों की बहुत क़द्र करते हैं. उनके मकान हाथ के बने काग़ज़ से सजाये जाते हैं, फ़र्श पर मूंज या बांस की चटाइयां बिछाई जाती हैं और खाने के बरतन ज़ियादातर चीनी मिट्टी के रहते हैं. घर पर लोग कोट-पतलून या फ़्राक न पहन कर ठेठ जापानी लिबास इस्तेमाल करते हैं. पैरों में वह लोग आम तौर से देहात की बनी लकड़ी या फूस

جاپان کے اُدیوگ دھندے اور ھندستان

(جے . سی . کماریپا)

[حال ہی میں جاپانی اکسپرٹوں کا ایک ڈیلی‌گیشن ہمارے دیش میں آیا تھا جس نے ہندستان کے کارخانے دیکھے اور ہند جاپان کے بیچ بیوپاری تعلق قائم کرنے کے لئے ہند سرکار سے بات چیت بھی کی. ہمیں اُمید ہے کہ جاپان سے کوئی راضی نامہ کرنے کے پہلے ہند سرکار خوب سوچ سمجھ لے گی . ہم نیچے ڈاکٹر جے . سی . کماریپا کا ایک گمبھیر لیکھ گرام اُدیوگ پتریکا سے لے کر دے رہے ہیں . ڈاکٹر کماریپا دسمبر کے مہینے میں جاپان کا دورہ کر کے لوٹے ہیں . اُن کے یہ سجھاؤ بہت غور کرنے لائق ہیں—ایڈیٹر]

اِدھر کچھ عرصہ سے اِس بات کی بڑی چرچا چل رہی ہے کہ جس طرح چھوٹے پیمانے پر اُدیوگ دھندے چلاکر جاپان نے اپنے یہاں کی پیداوار بڑھالی ہے اُس کی نقل ہندستان بھی کرے. کوشش یہ ہو رہی ہے کہ جاپانی اوزار، ہتھیار اور مشینیں یہاں منگائی جائیں اور اُنہیں اپنایا جائے . لیکن یہ کسی کو خیال نہیں ہے کہ جاپان کا آرتھک سنگھٹن کیسا ہے. آیا وہ اُس کے جیون کا حصہ ہے یا نہیں، اُس کے اتہاس، پرمپرا اور ریت‌رواج سے میل کھاتا ہے یا نہیں بناوٹی طور پر جاپانی حالتوں کو یہاں پر ہو بہو پیدا کر دینے سے ہمارا کچھ بھی بھلا نہیں ہونے والا ہے. ہمارے دیش میں جو دیہاتی اُدیوگ دھندے نہیں چل رہے ہیں اِس کی وجہ یہ ہے کہ کیا سرکار، کیا جنتا کسی کو اِن کی کوئی پرواہ ہی نہیں ہے . کاغذ کی ناؤ کتنی ہی خوبصورت کیوں نہ ہو چل نہیں سکتی .

ہم دیکھتے ہیں کہ جاپانیوں نے پچھمی پہناوا وغیرہ اپنا لیا ہے . پھر بھی اُن کی گھریلو زندگی اب تک پرانے طرز پر چلی جاتی ہے . شاید وہاں کی تعلیم یا سماجی لوکاچار کا یہ اثر ہو کہ ایک راشٹر کی حیثیت سے جاپانی لوگ دیہاتی اُدیوگ دھندوں کی چیزوں کی بہت قدر کرتے ہیں . اُن کے مکان ہاتھ کے بنے کاغذ سے سجائے جاتے ہیں، فرش پر مونج یا بانس کی چٹائیاں بچھائی جاتی ہیں اور کھانے کے برتن زیادہ تر چینی مٹی کے رہتے ہیں . گھر پر لوگ کوٹ پتلون یا فراک نہ پہن کر ٹھیٹھ جاپانی لباس استعمال کرتے ہیں . پیروں میں وہ لوگ عام [illegible] دیہات کی بنی لکڑی یا پھوس

रसूल है. इसके मानी क्या समझे जायँ? कुछ लोग इसका मतलब यह बताते हैं कि मुहम्मद ही एक अल्लाह का रसूल है. लेकिन यह अर्थ गलत है. इस्लाम ने तो यह कहा कि "ला नुफ़र्रिक़ु बैन-अहदिम् मिर्रुसुलिह्" यानी दुनिया में जितने रसूल आये हैं उन सब में हम कोई फर्क नहीं करते. यह इस्लाम का एक बुनियादी यक़ीन है. इसलिये मुहम्मद अल्लाह का रसूल है, इस वचन का सीधा अर्थ इतना ही है कि ईश्वर की जगह कोई नहीं ले सकता, मुहम्मद भी नहीं ले सकते. वह अल्लाह के एक रसूल की तरह हैं.

मुहम्मद यानी भगवान का ही एक रूप.

यहां मुहम्मद का अर्थ सिर्फ मुहम्मद नहीं समझना चाहिये, बल्कि राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, ईसा, जरतुश्त वग़ैरा सब का मिलान उसमें समझ लेना चाहिए. इस तरह अगर कलमे के इस हिस्से का हम व्यापक अर्थ लें, तो यह कलमा सारी दुनिया के लिये सही हो सकता है. हां, कुछ लोग यह जरूर कह सकते हैं कि हमारे लिये मुहम्मद पैग़म्बर काफ़ी हैं. बच्चे के लिये उसका अपना अब्बा या पिता काफ़ी होता है. दूसरों के पिता की भी वह इज़्ज़त करेगा, लेकिन अपने पिता में अक़ीदत या निष्ठा उसके लिये पूरा सहारा या आधार दे सकती है. वैसी ही यह बात है. जैसे सिक्खों ने कहा कि हमारे लिये दस गुरु हो गये हैं और इसके आगे कोई गुरु नहीं होगा. वह उनके लिये ठीक हो सकता है लेकिन सारी दुनिया के ख़याल से यह नहीं कहा जायगा कि आगे कोई गुरु होने वाला ही नहीं है. परमेश्वर की कुदरत के लिये हम इस तरह की कोई मर्यादा नहीं बना सकते. अपने अपने विश्वास की एक मर्यादा होती है. इसलिये अपने निज के लिये कोई एकाध गुरु, पैग़म्बर या मार्ग दर्शक काफ़ी हो सकता है और ऐसा हम कह भी सकते हैं. लेकिन उसका अर्थ यह नहीं होना चाहिये कि उसमें किसी दूसरे रहबर या गुरु की गुँजाइश ही न रखी जाय. इसी तरह व्यापक बुद्धि रखने पर सब धर्मों का मेल हो सकता है.

इस तरह आप देखेंगे तो पायेंगे कि हिन्दुस्तान के इस्लाम ने एक ख़ास काम किया है, एक ख़ास देन दी है. मैं बाहर के इस्लाम की बात नहीं कहता. उसी तरह ईसाई धर्म के बारे में है. मैंने मलाबार में देखा है कि वहां के लोग शंकराचार्य के विचारों के साथ ईसा के विचारों का मेल कर देते हैं. इसलिये मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान का एक ख़ास इस्लाम है, और हिन्दुस्तान का एक ख़ास ईसाई धर्म भी है.

प्यारे भाइयो, मैंने जो कुछ कहा, ख़ालिस प्रेम से कहा. वैसे ही कहा है जैसे अपने से कहता हूँ.

—विनोबा

رسول هے. اس کے معنی کیا سمجھے جائیں؟ کچھ لوگ اِس کا مطلب یہ بتاتے ھیں کہ محمد ھی ایک اللہ کا رسول ھے. لیکن یہ ارتھ غلط ھے. اسلام نے تو یہ کہا ھے کہ "لانفرق بین احدم من رسولہ" یعنی دنیا میں جتنے رسول آئے ھیں اُن سب میں ھم کوئی فرق نہیں کرتے. یہ اسلام کا ایک بنیادی یقین ھے. اِس لئے محمد اللہ کا رسول ھے' اِس وچن کا سیدھا ارتھ اتنا ھی ھے کہ ایشور کی جگہ کوئی نہیں لے سکتا' محمد بھی نہیں لے سکتے. وہ اللہ کے ایک رسول کی طرح ھیں.

محمد یعنی بھگوان کا ھی ایک روپ.

یہاں محمد کا ارتھ صرف محمد نہیں سمجھنا چاھئے' بلکہ رام' کرشن' بدھ' مہاویر' عیسیٰ' زرتشت وغیرہ سب کا ملان اُس میں سمجھ لینا چاھئے. اِس طرح اگر کلمے کے اِس حصے کا ھم ویاپک ارتھ لیں' تو یہ کلمہ ساری دنیا کے لئے صحیح ھو سکتا ھے. ھاں' کچھ لوگ یہ ضرور کہہ سکتے ھیں کہ ھمارے لئے محمد پیغمبر کافی ھیں. بچے کے لئے اُس کا اپنا ابا یا پتا کافی ھوتا ھے. دوسروں کے پتا کو بھی وہ عزت کرے گا' لیکن اپنے پتا میں عقیدت یا نشٹھا اُس کے لئے پورا سہارا یا آدھار دے سکتی ھے. ویسی ھی یہ بات ھے. جیسے سکھوں نے کہا کہ ھمارے لئے دس گرو ھو گئے ھیں اور اس کے آگے کوئی گرو نہیں ھوگا. وہ اُن کے لئے ٹھیک ھو سکتا ھے لیکن ساری دنیا کے خیال سے یہ نہیں کہا جائے گا کہ آگے کوئی گرو ھونے والا ھی نہیں ھے. پرمیشور کی قدرت کے لئے ھم اس طرح کی کوئی مریادا نہیں بنا سکتے. اپنے اپنے وشواس کی ایک مریادا ھوتی ھے. اس لئے اپنے نج کے لئے کوئی ایک آدھ گرو' پیغمبر یا مارگ درشک کافی ھو سکتا ھے اور ایسا ھم کہہ بھی سکتے ھیں. لیکن اُس کا ارتھ یہ نہیں ھونا چاھئے کہ اس میں کسی دوسرے رھبر یا گرو کی گنجائش ھی نہ رکھی جائے. اسی طرح ویاپک بدھی رکھنے پر سب دھرموں کا میل ھو سکتا ھے.

اِس طرح آپ دیکھیں تو پائیں گے کہ ھندستان کے اسلام نے ایک خاص کام کیا ھے' ایک خاص دین دی ھے. میں باھر کے اسلام کی بات نہیں کہتا. اُسی طرح عیسائی دھرم کے بارے میں ھے. میں نے ملابار میں دیکھا کہ وھاں کے لوگ شنکراچاریہ کے وچاروں کے ساتھ عیسیٰ کے وچاروں کا بھی میل کر دیتے ھیں. اس لئے میرا ماننا ھے کہ ھندستان کا ایک خاص اسلام ھے' اور ھندستان کا ایک خاص عیسائی دھرم بھی ھے.

پیارے بھائیو' میں نے جو کچھ کہا' خالص پریم سے کہا' ویسے ھی کہا ھے جیسے اپنے سے کہتا ھوں.

—ونوبا

अपनी तहजीब और कल्चर का दर्शन होना चाहिये और उसका नमूना मिलना चाहिये. इस देश में इस्लाम आया. उसने अपनी खूबियां बख्शीं, ईसाई मत आया, उसने भी कुछ खूबियां दीं. सब ने अपनी अपनी खुसूसियत दीं. हर एक में कुछ न कुछ गुन होते हैं, कमियां भी होती हैं, बुराइयां भी होती हैं. खूबियां लेने और बुराइयां छोड़ने का यह काम युनिवर्सिटी कर सकती है.

मुसलमानों की देन.

हिन्दू और मुसलमान दोनों की खूबियों से हमारा यह देश बड़ा बना है. हर जमात ने बुरे-भले दोनों तरह के काम किये हैं. बुराइयों को भुलाना, अच्छाइयों को बढ़ाना, इसी में देश का भला है. हिन्दुओं को यह नहीं समझना चाहिये कि उन्होंने ही इस मुल्क को बनाया है. मुसलमानों ने भी इस मुल्क को काफ़ी देन दी है. यह भी सोचना चाहिये कि आखिर यह सब लोग यहीं के तो हैं. मुसलमानों को भी यह सोचना चाहिये कि हिन्दू और हम एक ही हैं. हिन्दुओं की तरह मुसलमानों में भी साधू संत हुए हैं. दोनों के धर्म किताबों को दोनों को ग़ौर से पढ़ना चाहिये.

मांस खाना छोड़िये.

हर धर्म की कुछ न कुछ खुसूसियत होती है. मैं मानता हूं कि हमारे समाज को एक न एक दिन बिना मांस के खुराक पर पहुंचना है. मैं जानता हूं कि अनाज की कमी के कारन इन दिनों में यह बात मुशकिल है, लेकिन कभी न कभी गोश्त छोड़ना होगा जैसे जैनियों ने छोड़ दिया है; और हिन्दू धर्म की इस खूबी को अपनाना होगा. ईसाई लोगों ने हिन्दुस्तान के कोढ़ियों की सेवा की. उनके जीवन में सेवा की भावना बहुत है. ईसा के जीवन में भी यह भावना पाई जाती है. ईसाइयों का यह गुन भी हमें लेना चाहिये.

इस्लाम में अच्छे भाईचारे की भावना है. हमें यह गुन भी लेना चाहिये. मेरा मतलब यह है कि हर धर्म ने समाज को कुछ न कुछ अच्छी चीजें दी हैं. हमें चाहिये कि उनको समझें और उन्हें अपने जीवन में उतारने की कोशिश करें. मैं आशा करता हूं कि हम इस मुल्क में प्रेम का वातावरन पैदा करने में कामयाब हो सकेंगे.

सब रसूल एक हैं.

एक बात और. मैंने इस्लाम को कुछ पढ़ा है. मैं यह नहीं कह सकता कि मैं उसका आलिम बन गया हूं. लेकिन कुरान शरीफ़ को समझने की कोशिश मैंने की है. इस्लाम का कलमा "ला इलाह इल्लिल्लाह मुहम्मदुर् रसूलिल्लाह..." मैं बहुत पसंद करता हूं. इसके एक हिस्से में कहा गया है कि अल्लाह एक है. इस बात को सभी मान सकते हैं. उसमें कहा गया है कि मुहम्मद अल्लाह का

اپنی تہذیب اور کلچر کا درشن ہونا چاہئے اور ان کا نمونہ ملنا چاہئے ۔ اس دیش میں اسلام آیا ۔ اس نے اپنی خوبیاں بخشیں، عیسائی مت آیا اس نے بھی کچھ خوبیاں دیں ۔ سب نے اپنی اپنی خصوصیت دیں ۔ ہر ایک میں کچھ نہ کچھ گن ہوتے ہیں، کمیاں بھی ہوتی ہیں، برائیاں بھی ہوتی ہیں ۔ خوبیاں لینے اور برائیاں چھوڑنے کا یہ کام آپ کی یونیورسٹی کر سکتی ہے ۔

مسلمانوں کی دین ۔

ہندو اور مسلمان دونوں کی خوبیوں سے ہمارا یہ دیش بڑا بنا ہے ۔ ہر جماعت نے برے بھلے دونوں طرح کے کام کئے ہیں ۔ برائیوں کو بھلانا، اچھائیوں کو بڑھانا، اسی میں دیش کا بھلا ہے ۔ ہندوؤں کو یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ انہوں نے ہی اس ملک کو بنایا ہے ۔ مسلمانوں نے بھی اس ملک کو کافی دین دی ہے ۔ یہ بھی سوچنا چاہئے کہ آخر یہ سب لوگ یہیں کے تو ہیں ۔ مسلمانوں کو بھی یہ سوچنا چاہئے کہ ہندو اور ہم ایک ہی ہیں ۔ ہندوؤں کی طرح مسلمانوں میں بھی سادھو سنت ہوئے ہیں ۔ دونوں کے دھرم کتابوں کو دونوں کو غور سے پڑھنا چاہئے ۔

مانس کھانا چھوڑیئے ۔

ہر دھرم کی کچھ نہ کچھ خصوصیت ہوتی ہے ۔ میں مانتا ہوں کہ ہمارے سماج کو ایک نہ ایک دن بنا مانس کے خوراک پر پہنچنا ہے ۔ میں جانتا ہوں کہ اناج کی کمی کے کارن ان دنوں میں یہ بات مشکل ہے، لیکن کبھی نہ کبھی گوشت چھوڑنا ہوگا، جیسے جینیوں نے چھوڑ دیا ہے؛ اور ہندو دھرم کی اس خوبی کو اپنانا ہوگا ۔ عیسائی لوگوں نے ہندوستان کے کوڑھیوں کی سیوا کی ۔ ان کے جیون میں سیوا کی بھاونا بہت ہے ۔ عیسیٰ کے جیون میں بھی یہ بھاونا پائی جاتی ہے ۔ عیسائیوں کا یہ گن بھی ہمیں لینا چاہئے ۔

اسلام میں اچھے بھائی چارے کی بھاونا ہے ۔ ہمیں یہ گن بھی لینا چاہئے ۔ میرا مطلب یہ ہے کہ ہر دھرم نے سماج کو کچھ نہ کچھ اچھی چیزیں دی ہیں ۔ ہمیں چاہئے کہ ان کو سمجھیں اور انہیں اپنے جیون میں اتارنے کی کوشش کریں ۔ میں آشا کرتا ہوں کہ ہم اس ملک میں پریم کا واتاورن پیدا کرنے میں کامیاب ہو سکیں گے ۔

سب رسول ایک ہیں ۔

ایک بات اور ۔ میں نے اسلام کو کچھ پڑھا ہے ۔ میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ میں اس کا عالم بن گیا ہوں ۔ لیکن قرآن شریف کو سمجھنے کی کوشش میں نے کی ہے ۔ اسلام کا کلمہ "لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ........" میں بہت پسند کرتا ہوں ۔ اس کے ایک حصے میں کہا گیا ہے کہ اللہ ایک ہے ۔ اس بات کو سبھی مان سکتے ہیں ۔ اس میں کہا گیا ہے کہ محمد اللہ کا

बतलाये थे) हम नौकर की तरह काम लें. मैं चाहता हूं कि आप लोग इस पर ध्यान देंगे, यह असली [विद्या] है. किताबी विद्या से यह नहीं हो सकेगा. किताबी [विद्या] से लोग गुलाम बन जाते हैं.

पैदावार बढ़ाइये.

दूसरी बात जो मुझे आपसे कहनी है वह पैदावार [बढ़ा]ने के बारे में है. हमारे देश में आज पैदावार की बहुत [क]मी है. गाय का दूध, अनाज, फल, कपड़ा—जिधर देखो [उध]र सब तरह की कमी ही कमी है. और हर तरह से [ज़रू]रत इस बात की है कि पैदावार बढ़े. ऐसी हालत में [हम] लोगों का फ़र्ज़ हो जाता है कि हम भले वह काम [कर]ते हों, जो दुनिया की निगाह में ज़रूरी हों, लेकिन बिना [पैदा]वार किये हिन्दुस्तान का यह मसला हल होना संभव [नहीं] है. आप चाहे जैसी योजना बनाइये, अगर सारे [लो]ग उसे कामयाब बनाने को तैयार नहीं होते हैं तो वह [यो]जना कागज़ पर ही रह जाती है. इसलिये हम सभी [को], ख्वाह वह विद्यार्थी हों या प्रोफ़ेसर, व्यापारी हों या [ख]रीदार, कुछ न कुछ पैदावार करनी चाहिये. इसलिये [गांधी] जी ने हमारे सामने चरखा रखा था जिसे छोटे-बड़े [स]भी इस्तेमाल कर सकते हैं. लेकिन उनका मक़सद सिर्फ़ [च]रखे से ही नहीं था. जो लोग कुदाली चला सकते हैं [वे] कुदाली भी चलायें. जो चक्की चला सकते हैं चक्की [च]लायें, बग़ीचे में काम कर सकते हैं तो करें. लेकिन [पै]दावार बढ़ाने में हाथ बंटाना सब का फ़र्ज़ है.

परमेश्वर ने हर एक को दिमाग़ दिया है, हर एक को [ह]ाथ दिये हैं और भूख भी दी है. अगर उसकी यह मंशा [ह]ोती कि कुछ लोग पैदावार ही करते रहें और कुछ लोग [दि]माग़ी काम करते रहें तो कुछ को वह सिर्फ़ हाथ ही हाथ [दे]ता और कुछ को सिर ही सिर; क्योंकि वह सब तरह [क]ी ताक़त रखता है. लेकिन उसने ऐसा नहीं किया. सबको [भ]ूख दी और काम करने के लिये हाथ भी दिये. यह नहीं [ह]ो सकता कि कुछ लोग केवल लिखने पढ़ने का ही काम [क]रते रहें और कुछ को हाथ का ही काम करना पड़े. जब [ह]म अपने मुल्क में सब तरह की चीज़ों की कमी महसूस [क]रते हैं—कपड़े की, दूध की, अनाज की—तो मैं आप [ल]ोगों से प्रार्थना करता हूं कि हम सब को कुछ न कुछ [पै]दावार करना ही चाहिये.

युनिवर्सिटी कल्चर का नमूना हो.

तीसरी बात यह है कि जिस जगह हम अभी आये [हैं] उससे हमारे देश वाले बहुत सी आशायें रखते हैं. यह एक युनिवर्सिटी का मुक़ाम है इसकी शुरूआत एक अच्छे विचार से हुई है. हमारे देश का इतिहास बनाने [में] इस युनिवर्सिटी ने काफ़ी हिस्सा लिया है. हमें यहां

(بتلائیں سے) ہم نوکر کی طرح کام لیں. میں آشا کرتا ہوں کہ آپ لوگ اِس پر دھیان دیں گے' یہ اصلی ودیا ہے. کتابی ودیا سے یہ نہیں ہوسکے گا. کتابی ودیا سے لوگ غلام بن جاتے ہیں.

پیداوار بڑھائیے.

دوسری بات جو مجھے آپ سے کہنی ہے وہ پیداوار بڑھانے کے بارے میں ہے. ہمارے دیش میں آج پیداوار کی بہت کمی ہے. گئو کا دودھ' اناج' پھل' کپڑا—جدھر دیکھو ادھر سب طرح کی کمی ہی کمی ہے. اور ہر طرح سے ضرورت اِس بات کی ہے کہ پیداوار بڑھے. ایسی حالت میں ہم لوگوں کا فرض ہو جاتا ہے کہ ہم بھلے وہ کام کرتے ہوں' جو دنیا کی نگاہ میں ضروری ہوں' لیکن بنا پیداوار کئے ہندستان کا یہ مسئلہ حل ہونا سمبھو نہیں ہے. آپ چاہے جیسی یوجنا بنائیں' اگر سارے لوگ اُسے کامیاب بنانے کو تیار نہیں ہوتے ہیں تو وہ یوجنا کاغذ پر ہی رہ جاتی ہے. اِس لئے ہم سبھی کو' خواہ وہ ودیارتھی ہوں یا پروفیسر' بیوپاری ہوں یا خریدار' کچھ نہ کچھ پیداوار کرنی چاہئے. اِس لئے گاندھی جی نے ہمارے سامنے چرخہ رکھا تھا جسے چھوٹے بڑے سبھی استعمال کرسکتے ہیں.

لیکن اُن کا مقصد صرف چرخے سے ہی نہیں تھا. جو لوگ کدالی چلا سکتے ہیں وہ کدالی بھی چلائیں. جو چکی چلا سکتے ہیں چکی چلائیں' باغیچے میں کام کر سکتے ہیں تو کریں. لیکن پیداوار بڑھانے میں ہاتھ بٹانا سب کا فرض ہے.

پرمیشور نے ہر ایک کو دماغ دیا ہے' ہر ایک کو ہاتھ دیئے ہیں اور بھوک بھی دی ہے. اگر اُس کی یہ منشا ہوتی کہ کچھ لوگ پیداوار ہی کرتے رہیں اور کچھ لوگ دماغی کام کرتے رہیں تو کچھ کو وہ صرف ہاتھ ہی ہاتھ دیتا اور کچھ کو سر ہی سر؛ کیونکہ وہ سب طرح کی طاقت رکھتا ہے. لیکن اُس نے ایسا نہیں کیا. سب کو بھوک دی اور کام کرنے کے لئے ہاتھ بھی دیئے. یہ نہیں ہو سکتا کہ کچھ لوگ کیول لکھنے پڑھنے کا ہی کام کرتے رہیں اور کچھ کو ہاتھ کا ہی کام کرنا پڑے. جب ہم اپنے ملک میں سب طرح کی چیزوں کی کمی محسوس کرتے ہیں—کپڑے کی' دودھ کی' اناج کی—تو میں آپ لوگوں سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ ہم سب کو کچھ نہ کچھ پیداوار کرنا ہی چاہئے.

یونیورسٹی کلچر کا نمونہ ہو.

تیسری بات یہ ہے کہ جس جگہ ہم ابھی آئے ہیں اس سے ہمارے دیش والے بہت سی امیدیں رکھتے ہیں. یہ ایک یونیورسٹی کا مقام ہے. اِسکی شروعات ایک اچھے وچار سے ہوئی ہے. ہمارے دیش کا اتہاس بنانے میں اِس یونیورسٹی نے کافی حصہ لیا ہے. ہمیں یہاں

यह चन्द शब्द मैंने अपने हाल के काम के बारे में कहे. अब आप लोगों के लिये कुछ बातें कह दूं.

अपने पर क़ाबू पाने का इल्म.

आप सब लोग तालीबे-इल्म हैं, विद्यार्थी हैं. बग़ैर इल्म इन्सान की तरक़्क़ी नहीं हो सकती. इस वास्ते अपनी ज़िन्दगी के कुछ साल पूरे पढ़ाई में ही लगा देते हैं, यह ठीक है. लेकिन इल्म के साथ और भी कोई चीज़ है जिसके बग़ैर ख़ाली इल्म किसी काम का नहीं. मैं अपने अनुभव से और बहुतों के अनुभव से कह सकता हूँ कि सब इल्मों में बड़ा इल्म अपने ख़ुद पर क़ाबू पाना है. विद्यार्थियों को और सब को यह इल्म हासिल करना चाहिये. उसके साथ ही सब इल्म कारगर होते हैं. उसके बग़ैर सब बेकार हैं. घोड़े पर अगर क़ाबू है तो सवार के लिये घोड़ा कारगर है. लेकिन अगर क़ाबू न रहा तो घोड़ा सवार हो जाता है. यही हालत हमारे बारे में है. अपने पर क़ाबू पाने का रास्ता बचपन से ही पकड़ सकते हैं. इंद्रियों पर क़ाबू पाना, मन पर क़ाबू पाना बहुत ज़रूरी है. अगर हम समझें कि हम ही मन हैं तो मन को हम दुरुस्त नहीं कर सकते. इसलिये यह पहचानने की ज़रूरत है कि हम मन नहीं हैं बल्कि मन हमारा नौकर है और हम मन के मालिक हैं. बहुत से लोग अपने को आज़ाद मानते हैं. वह कहते हैं कि हम किसी का नहीं मानेंगे. हम किसी के ग़ुलाम नहीं हैं, अपने मन की करेंगे. मैं कहता हूं कि ठीक बात है पर आप को अपने मन के मुआफ़िक़ नहीं करना चाहिये, अपने ख़ुद के मुआफ़िक़ करना चाहिये. मन के मुआफ़िक़ करने का अर्थ है “नौकर के मुआफ़िक़ करना”. मन में तो अच्छाईयां और बुराइयां दोनों ही होती हैं. लेकिन हमें मन को नेक बनाना है. इसलिये अच्छाइयों को बढ़ाना है, उन पर अमल करना है और बुराइयों को निकालना है. उल्टे, अगर हम मन को नेता बनाते हैं तो हम आज़ाद नहीं रहेंगे, ग़ुलाम बन जायेंगे. अकसर लोग सोचते हैं कि हमें अपने जज़बात के मुआफ़िक़ काम करना चाहिये. जज़बात यानी भावनायें भाप की तरह होती हैं. भाप अगर इंजन में बन्द रहती है तो ताक़त पैदा करती है. अगर खोल दी जाती है तो हवा में गुम हो जाती है और ताक़त की शकल नहीं ले सकती. इसलिये करना यह चाहिये कि भावनाओं को परखते रहना चाहिये, सब्र से काम लेना चाहिये. अगर सब्र रखते हैं तो जज़बात रोकी हुई भाप के मुआफ़िक़ कारगर हो सकते हैं. बहादुर वह हैं जिन्होंने अपने जज़बात पर क़ाबू पा लिया, जो सोच विचार कर काम करते हैं. इसलिये पहला काम अपने जज़बात पर क़ाबू पाना और उन्हें ठीक रास्ते पर ले आना है—उस रास्ते, जिस रास्ते से कामयाब लोग गये हैं. उनसे

یہ چند شبد میں نے اپنے حال کے کام کے بارے میں کہے۔ اب آپ لوگوں کے لئے کچھ باتیں کہہ دوں۔

اپنے پر قابو پانے کا علم۔

آپ سب لوگ طالب علم ہیں، ودیارتھی ہیں۔ بغیر پڑھے انسان کی ترقی نہیں ہوسکتی۔ اس واسطے اپنی زندگی کے کچھ سال پورے پڑھائی میں ہی لگا دیتے ہیں، یہ ٹھیک ہے۔ لیکن علم کے ساتھ اور بھی کوئی چیز ہے جس کے بغیر خالی علم کسی کام کا نہیں۔ میں اپنے انوبھو سے اور بہتوں کے انوبھو سے کہہ سکتا ہوں کہ سب علموں میں بڑا علم اپنے خود پر قابو پانا ہے۔ ودیارتھیوں کو اور سب کو یہ علم حاصل کرنا چاہئے۔ اس کے ساتھ ہی سب علم کارگر ہوتے ہیں۔ اس کے بغیر سب بیکار ہیں۔ گھوڑے پر اگر قابو ہے تو سوار کے لئے گھوڑا کارگر ہے۔ لیکن اگر قابو نہ رہا تو گھوڑا ہی سوار ہو جاتا ہے۔ یہی حالت ہمارے بارے میں ہے۔ اپنے پر قابو پانے کا راستہ بچپن سے ہی پکڑ سکتے ہیں۔ اندریوں پر قابو پانا، من پر قابو پانا بہت ضروری ہے۔ اگر ہم سمجھیں کہ ہم ہی من ہیں تو من کو ہم درست نہیں کرسکتے۔ اس لئے یہ پہچاننے کی ضرورت ہے کہ ہم من نہیں ہیں بلکہ من ہمارا نوکر ہے اور ہم من کے مالک ہیں۔ بہت سے لوگ اپنے کو آزاد مانتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ ہم کسی کا نہیں مانیں گے۔ ہم کسی کے غلام نہیں ہیں، اپنے من کی کریں گے۔ میں کہتا ہوں کہ ٹھیک بات ہے پر آپ کو اپنے من کے موافق نہیں کرنا چاہئے، اپنے خود کے موافق کرنا چاہئے۔ من کے موافق کرنے کا ارتھ ہے ''نوکر کے موافق کرنا''۔ من میں تو اچھائیاں اور برائیاں دونوں ہی ہوتی ہیں۔ لیکن ہمیں من کو نیک بنانا ہے۔ اس لئے اچھائیوں کو بڑھانا ہے، ان پر عمل کرنا ہے اور برائیوں کو نکالنا ہے۔ الٹے، اگر ہم من کو نیتا بناتے ہیں تو ہم آزاد نہیں رہیں گے، غلام بن جائیں گے۔ اکثر لوگ سوچتے ہیں کہ ہمیں اپنے جذبات کے موافق کام کرنا چاہئے۔ جذبات یعنی بھاونائیں بھاپ کی طرح ہوتی ہیں۔ بھاپ اگر انجن میں بند رہتی ہے تو طاقت پیدا کرتی ہے۔ اگر کھول دی جاتی ہے تو ہوا میں گم ہو جاتی ہے اور طاقت کی شکل نہیں لے سکتی۔ اس لئے کرنا یہ چاہئے کہ بھاوناؤں کو پرکھتے رہنا چاہئے، صبر سے کام لینا چاہئے۔ اگر صبر رکھتے ہیں تو جذبات روکی ہوئی بھاپ کے موافق کارگر ہوسکتے ہیں۔ بہادر وہ ہیں جنہوں نے اپنے جذبات پر قابو پالیا، جو سوچ وچار کر کام کرتے ہیں۔ اس لئے پہلا کام اپنے جذبات پر قابو پانا اور انہیں ٹھیک راستے پر لے جانا ہے— اس راستے، جس راستے سے کامیاب لوگ گئے ہیں۔ ان سے

कांग्रेसियों की, मुझसे जितनी भी बन सकी, मैंने सेवा की; क्योंकि मुझसे जितनी कोशिश खुद ग़रीब बनने की हो सकती थी उतनी मैंने की थी, इसलिये ग़रीबों के लिये मुहब्बत होना लाज़िमी था. पर श्रीमानों का भी मैं दोस्त था और कम्युनिस्टों का भी. कम्युनिस्ट छिपकर रहते थे. जंगली जानवरों की जिस तरह तलाश होती है, वैसी उनकी भी तलाश होती थी. मैं सोच रहा था कि कोई ऐसा रास्ता निकले जिससे शांति क़ायम हो सके. तब मेरे ध्यान में आया कि वहां ज़मीन का एक ऐसा मसला है. जिसके हल होने से शांति क़ायम हो सकती है.

सरकार ने शांति क़ायम करने के लिये वहां मिलिटरी भेज रखी थी, जिस पर पांच करोड़ रुपया सालाना खर्च होता था. लेकिन ऐसे मसले मिलिटरी से हल नहीं हो सकते. जहां सिर्फ़ शेरों का शिकार करने का सवाल हो वहां मिलिटरी काम कर सकती है. लेकिन जहां विचार का मुक़ाबला करना हो वहां विचार से ही वह काम हो सकता था.

ज़मीन की बात.

तो वह ज़मीन का मसला मेरे ध्यान में आ गया था. लेकिन ज़मीन मांगना कोई आसान बात नहीं है. ज़मीन के लिये बाप बेटों में झगड़े होते हैं. और फिर जैसे-जैसे आबादी बढ़ती जा रही है, ज़मीन की क़ीमतें भी बढ़ती जा रही हैं. इसलिये ज़मीन मांगने की हिम्मत करना बहुत मुश्किल काम है. लेकिन मैंने परमात्मा का नाम लेकर ज़मीन मांगना शुरू कर दिया. जो परमेश्वर सबके दिलों में मौजूद है उसकी हस्ती श्रीमानों के दिलों में भी होनी चाहिये. अगर हमारे दिलों में परमेश्वर जागता है, तो सबके दिलों में वह ज़रूर जागेगा. इसलिये लोगों को समझाने की जितनी ताक़त मेरे पास थी, वह सब मैंने लगा दी. आख़िर लोगों के दिल पिघल गये. वहां की हालत पूरी सुधर गई, ऐसा नहीं कह सकते; पर इसमें शक नहीं कि हालत काफ़ी सुधरी है.

भगवान अधूरा काम नहीं करता.

फिर मैं वर्धा आया और खेती के काम में लग गया. बारिश के बाद उत्तर दिशा में ज़मीन मांगते-मांगते गांव गांव घूमता हुआ अब चला जा रहा हूं. मैं मानता हूं कि मुझे परमेश्वर ने मांगने की प्रेरणा दी है और जब उसने मुझे मांगने की प्रेरणा दी तो वह औरों को देने की प्रेरणा भी देगा, वह अधूरा काम नहीं करता. बच्चे को पैदा करता है तो मां के पास दूध का इन्तज़ाम भी कर देता है. यह नहीं हो सकता कि वह भूख तो पैदा करे और ख़ुराक पैदा न करे. इसलिये मेरा विश्वास है कि यह जो ज़मीन मांगने का काम शुरू हुआ है उससे न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्कि सारी दुनिया को रास्ता मिलेगा.

کانگریسیوں کی، مجھ سے جتنی بھی بن سکی، میں نے سیوا کی؛ کیونکہ مجھ سے جتنی کوشش خود غریب بننے کی ہو سکتی تھی اتنی میں نے کی تھی، اس لئے غریبوں کے لئے محبت ہونا لازمی تھا. پر شریمانوں کا بھی میں دوست تھا اور کمیونسٹوں کا بھی. کمیونسٹ چھپ کر رہتے تھے. جنگلی جانوروں کی جس طرح تلاش ہوتی ہے، ویسی اُن کی بھی تلاش ہوتی تھی. میں سوچ رہا تھا کہ کوئی ایسا راستہ نکلے جس سے شانتی قائم ہوسکے. تب میرے دھیان میں آیا کہ یہاں زمین کا ایک ایسا مسئلہ ہے جس کے حل ہونے سے شانتی قائم ہو سکتی ہے.

سرکار نے شانتی قائم کرنے کے لئے وہاں ملٹری بھیج رکھی تھی، جس پر پانچ کروڑ روپیہ سالانہ خرچ ہوتا تھا. لیکن ایسے مسئلے ملٹری سے حل نہیں ہوسکتے. جہاں صرف شیروں کا شکار کرنے کا سوال ہو وہاں ملٹری کام کرسکتی ہے. لیکن جہاں وچار کا مقابلہ کرنا ہو وہاں وچار سے ہی وہ کام ہوسکتا تھا.

زمین کی بات.

تو یہ زمین کا مسئلہ میرے دھیان میں آگیا تھا. لیکن زمین مانگنا کوئی آسان بات نہیں ہے. زمین کے لئے باپ بیٹے میں جھگڑے ہوتے ہیں. اور پھر جیسے جیسے آبادی بڑھتی جارہی ہے زمین کی قیمتیں بھی بڑھتی جارہی ہیں، اس لئے زمین مانگنے کی ہمت کرنا بہت مشکل کام ہے. لیکن میں نے پرماتما کا نام لے کر زمین مانگنا شروع کر دیا. جو پرمیشور سب کے دلوں میں موجود ہے اس کی ہستی شریمانوں کے دلوں میں بھی ہونی چاہئے. اگر ہمارے دلوں میں پرمیشور جاگتا ہے، تو سب کے دلوں میں وہ ضرور جاگے گا. اس لئے لوگوں کو سمجھانے کی جتنی طاقت میرے پاس تھی، وہ سب میں نے لگا دی. آخر لوگوں کے دل پگھل گئے. وہاں کی حالت پوری سدھر گئی، ایسا نہیں کہہ سکتے؛ پر اس میں شک نہیں کہ حالت کافی سدھری ہے.

بھگوان ادھورا کام نہیں کرتا.

پھر میں وردھا آیا اور کھیتی کے کام میں لگ گیا. بارش کے بعد اُتر دشا میں زمین مانگتے مانگتے گاؤں گاؤں گھومتا ہوا اب چلا جا رہا ہوں. میں مانتا ہوں کہ مجھے پرمیشور نے مانگنے کی پریرنا دی ہے، اور جب اُس نے مجھے مانگنے کی پریرنا دی تو وہ اوروں کو دینے کی پریرنا بھی دے گا. وہ ادھورا کام نہیں کرتا. بچے کو پیدا کرتا ہے تو ماں کے پاس دودھ کا انتظام بھی کر دیتا ہے. یہ نہیں ہوسکتا کہ وہ بھوک تو پیدا کرے اور خوراک پیدا نہ کرے. اس لئے میرا وشواس ہے کہ یہ جو زمین مانگنے کا کام شروع ہوا ہے اس سے نہ صرف ہندوستان ہی بلکہ ساری دنیا کو راستہ ملے گا.

इस्लाम की सीख

[तारीख 6-11-'51 को अलीगढ़ यूनीवर्सिटी में विनोबा जी का भाषण.]

आज मुझे बहुत खुशी है कि मैं आप लोगों के बीच आ सका हूँ. इस जगह के बारे में मैंने बहुत सुन रखा था और कभी यहां आने का मौका मिलेगा, ऐसा भी मान रखा था. जब तक गांधीजी थे, वह देश में घूमते थे. इसलिये तब तक मैंने देश में घूमने का सोचा ही नहीं. वह मुझ से जो काम लेना चाहते थे लेते थे, उन कामों में जो कुछ मुझसे हो सकता था, उसमें मैं लगा रहता और उसी में मुझे खुशी होती थी और शांति मिलती थी. लेकिन गांधी जी के जाने के बाद कुछ ऐसी हालत पैदा हो गई, जिसके कारन लोगों ने कहा और मुझे भी लगा कि मुझे देश में घूमना चाहिये. पहले साल दो साल मैंने इधर उधर घूमकर देख लिया. कुछ सेवा का काम करने का मौका मिला. खासकर मेवात में तो कुछ ठीक काम हो सका.

तेलंगाना का काम.

फिर मैं अपने आश्रम में पहुँचा और सोचने लगा कि इस देश में शान्ति का तरीक़ा चलाना हो और देश की तरक्क़ी भी शांति के तरीक़े से करनी हो, तो रेल में घूमने फिरने से कोई नतीजा नहीं निकल सकता. क्योंकि मुझे तो लोगों के दिलों में घुसना था. पर रेलवे और मोटर के सफ़र से वह काम नहीं हो सकता था. इसलिये मैंने पैदल चलना तय किया. यह नहीं कि मैंने ऐसा कोई व्रत ले लिया कि 'और किसी साधन का इस्तेमाल ही नहीं करूंगा' लेकिन पैदल चलकर देहात देहात में प्रेम का पैग़ाम लोगों को सुनाना मैंने ज़रूरी समझा. आप में से कुछ लोग जानते होंगे कि मुझे पिछले दिनों तेलंगाना में जाने का मौक़ा मिला था. वहां की हालत का बयान मैं लफ़्ज़ों में नहीं कर सकता. सारे लोग डरे हुए थे. ज़मींदार लोग देहात छोड़ कर भाग गये थे, शहरों में जा कर रहते थे. धनवान लोग भी भाग गये थे. जान-माल को काफ़ी नुक़सान पहुँच चुका था. कम्युनिस्टों से लोग तंग आ चुके थे. इधर रात को कम्युनिस्ट आकर सताते थे, तो दिन में मिलिटरी और पुलिस परेशान करती थी. इस तरह जनता दोनों से तंग आ चुकी थी. ऐसी हालत में मैं वहां पहुंचा. मैं यहां सारा क़िस्सा बयान नहीं करूंगा. इतना ही कह देना काफ़ी होगा कि मैंने, जितनी मुझसे हो सकती थी, सबकी सेवा करने की कोशिश की. श्री-मानों का, ग़रीबों का, कम्युनिस्टों का, किसानों

اسلام کی سیکھ

[تاریخ 6-11-'51 کو علیگڑھ یونیورسٹی میں ونوبا جی کا بھاشن .]

آج مجھے بہت خوشی ہے کہ میں آپ لوگوں کے بیچ آسکا ہوں . اس جگہ کے بارے میں میں نے بہت سن رکھا تھا اور کبھی یہاں آنے کا موقع ملیگا' ایسا بھی مان رکھا تھا ' جب تک گاندھی جی تھے' وہ دیش میں گھومتے تھے ' اسلئے تب تک میں نے دیش میں گھومنے کا سوچا ہی نہیں ' وہ مجھ سے جو کام لینا چاہتے تھے لیتے تھے' اُن کاموں میں جو کچھ مجھ سے ہو سکتا تھا' اُس میں میں لگا رہتا اور اُسی میں مجھے خوشی ہوتی تھی اور شانتی ملتی تھی . لیکن گاندھی جی کے جانے بعد کچھ ایسی حالت پیدا ہوگئی' جس کے کارن لوگوں نے کہا اور مجھے بھی لگا کہ مجھے دیش میں گھومنا چاہئے. پہلے سال دو سال میں نے اِدھر اُدھر گھوم کر دیکھ لیا. کچھ سیوا کا کام کرنے کا موقع ملا. خاصکر میوات میں تو کچھ ٹھیک کام ہوسکا.

تیلنگانا کا کام

پھر میں اپنے آشرم میں پہنچا اور سوچنے لگا کہ اس دیش میں شانتی کا طریقہ چلانا ہو اور دیش کی ترقی بھی شانتی کے طریقے سے کرنی ہو' تو ریل میں گھومنے پھرنے سے کوئی نتیجہ نہیں نکل سکتا. کیونکہ مجھے تو لوگوں کے دلوں میں گھسنا تھا. پر ریلوے اور موٹر کے سفر سے وہ کام نہیں ہو سکتا تھا. اس لئے میں نے پیدل چلنا طے کیا. یہ نہیں کہ میں نے ایسا کوئی برت لے لیا کہ 'اور کسی سادھن کا استعمال ہی نہیں کرونگا' لیکن پیدل چلکر دیہات دیہات میں پریم کا پیغام لوگوں کو سنانا میں نے ضروری سمجھا. آپ میں سے کچھ لوگ جانتے ہونگے کہ مجھے پچھلے دنوں تیلنگانا میں جانے کا موقع ملا تھا. وہاں کی حالت کا بیان میں لفظوں میں نہیں کر سکتا. سارے لوگ ڈرے ہوئے تھے. زمیندار لوگ دیہات چھوڑکر بھاگ گئے تھے' شہروں میں جاکر رہتے تھے . دھن وان لوگ بھی بھاگ گئے تھے . جان مال کو کافی نقصان پہنچ چکا تھا . کمیونسٹوں سے لوگ تنگ آ چکے تھے . اِدھر رات کو کمیونسٹ آکر ستاتے تھے' تو دن میں ملٹری اور پولیس پریشان کرتی تھی . اِس طرح جنتا دونوں سے تنگ آ چکی تھی . ایسی حالت میں میں وہاں پہنچا . میں یہاں سارا قصہ بیان نہیں کرونگا . اِتنا ہی کہ دینا کافی ہوگا کہ میں نے' جتنی مجھسے ہو سکتی تھی' سب کی سیوا کرنے کی کوشش کی. شری مانوں کی' غریبوں کی' کمیونسٹوں کی' کسانوں کی'

उनका यह भी कहना था कि जब तक हमारे गांव आज़ाद और स्वावलम्बी न होंगे तब तक क़ौमों-क़ौमों के बीच की लाग डाट, लूट खसोट और सल्तनत की प्यास मिट नहीं सकती और न जंगों की संभावना दूर हो सकती है." इसीलिये बड़ी बड़ी मशीनों और छोटों के उद्योग धंधों दोनों में एक मेल और बैठ बिठाव चाहते थे. उनका कहना था कि हमारी ज़िन्दगी की आए दिन की ज़रूरत की चीज़ें ख़ासकर हमारा खाना और कपड़ा घरेलू धंधों से ही तैयार होना चाहिये. बाक़ी बहुत सी चीज़ों के वह मशीनों से बनने के हक़ में थे. मिसाल के लिये काग़ज़ का बनाया जाना वह मशीनों से ही ठीक मानते थे. गांधीवाद या गांधी जी के विचारों का यही ख़ास आर्थिक यानी माली पहलू है. दुनिया को महात्मा गांधी की यह तीसरी बड़ी देन है.

इस देश में भी अभी हमारे राजकाजी नेता गांधी जी के इन आर्थिक विचारों की ठीक ठीक क़द्र नहीं कर पा रहे हैं लेकिन इस बात के लक्षण काफ़ी मौजूद हैं कि इस तरफ़ भी दुनिया के विचारवान अर्थशास्त्रियों का ध्यान धीरे धीरे मुड़ता आ रहा है. लोग इस बात को महसूस करने लगे हैं कि जब तक ज़िन्दगी की मामूली ज़रूरतों के लिये हमें बड़े बड़े कल कारख़ानों का सहारा लेना पड़ता है तब तक युद्ध का डर दुनिया से नहीं मिट सकता.

महात्मा गांधी अपने ज़माने के इनसानी एकता और शान्ति के सबसे बड़े पुजारी थे. युद्ध को वह दुनिया से हमेशा के लिये मिटा देना चाहते थे. दुनिया की इस समय की मुसीबतों के उनके बताए हुए इलाज कोई अनोखे इलाज नहीं हैं, फिर भी वह हमें अभी बहुत आगे ज़माने की सूचना दे रहे हैं. हमें विश्वास है कि केवल अपने देश में ही नहीं बाहर की तरक़्क़ी पसन्द दुनिया में भी, गांधी जी के बताए हुए उसूलों और उनके दिखाए हुए रास्ते की क़द्र बढ़ेगी. दुनिया इस बात को समझेगी कि महात्मा गांधी कोई कोरे आदर्श वादी या रजअत पसन्द प्रतिक्रियावादी या [illegible] इनसान नहीं थे बल्कि अच्छे से अच्छे मानी में इस ज़माने के एक ऊंचे दर्जे के विचारक दुनिया के सच्चे हितचिंतक अमली सुधारक और एक बहुत बड़े क्रान्तिकारी थे.

یہ کہنا تھا کہ جب تک ہمارے گاؤں آزاد اور سواولمبی نہ ہونگے تب تک قوموں قوموں کے بیچ کی لاگ ڈانٹ لوٹ کھسوٹ اور سلطنت کی پیاس مٹ نہیں سکتی اور نہ جنگوں کی سمبھاونا دور ہوسکتی ہے . اس لئے بڑی بڑی مشینوں اور چھوٹوں کے ادیوگ دھندوں دونوں میں ایک میل اور بیٹھ بٹھاؤ چاہتے تھے . ان کا کہنا تھا کہ ہماری زندگی کی آئے دن کی ضرورت کی چیزیں خاص کر ہمارا کھانا اور کپڑا گھریلو دھندوں سے ہی تیار ہونا چاہئے . باقی بہت سی چیزوں کے وہ مشینوں سے بننے کے حق میں تھے . مثال کے لئے کاغذ کا بنایا جانا وہ مشینوں سے ہی ٹھیک مانتے تھے. گاندھی واد یا گاندھی جی کے وچاروں کا یہی خاص آرتھک یعنی مالی پہلو ہے , دنیا کو مہاتما گاندھی کی یہ تیسری بڑی دین ہے .

اس دیش میں بھی ابھی ہمارے راج کاجی نیتا گاندھی جی کے ان آرتھک وچاروں کی ٹھیک ٹھیک قدر نہیں کر پا رہے ہیں لیکن اس بات کے لچھن کافی موجود ہیں کہ اس طرف بھی دنیا کے وچاروان ارتھ شاستریوں کا دھیان دھیرے دھیرے مڑتا جا رہا ہے . لوگ اس بات کو محسوس کرنے لگے ہیں کہ جب تک زندگی کی معمولی ضرورتوں کے لئے ہمیں بڑے بڑے کل کارخانوں کا سہارا لینا پڑتا ہے تب تک یدھ کا ڈر دنیا سے نہیں مٹ سکتا .

مہاتما گاندھی اپنے زمانے کے انسانی ایکتا اور شانتی کے سب سے بڑے پجاری تھے . یدھ کو وہ دنیا سے ہمیشہ کے لئے مٹا دینا چاہتے تھے. دنیا کی اس سمے کی مصیبتوں کے ان کے بتائے ہوئے علاج کوئی انوکھے علاج نہیں ہیں، پھر بھی وہ ہمیں ابھی بہت آگے زمانے کی سوچنا دے رہے ہیں . ہمیں وشواس ہے کہ کیول اپنے دیش میں ہی نہیں باہر کی ترقی پسند دنیا میں بھی گاندھی جی کے بتائے ہوئے اصولوں اور ان کے دکھائے ہوئے راستے کی قدر بڑھے گی . دنیا اس بات کو سمجھیگی کہ مہاتما گاندھی کوئی کورے آدرش وادی یا رجعت پسند پرتی کریا وادی یا ویکبھلری انسان نہیں تھے بلکہ اچھے سے اچھے معنی میں اس زمانے کے ایک اونچے درجے کے وچارک دنیا کے سچے ہت چنتک عملی سدھارک اور ایک بہت بڑے کرانتی کاری تھے .

गांधी जी के इन उसूलों को 'सर्व धर्म समभाव' का नाम दिया जाता है. अपनी प्रार्थना के अन्दर उनका गीता, क़ुरान, इंजील, ज़िन्द अवस्ता सब को जगह देना और ईश्वर और अल्ला दोनों को उसको नाम मानना इसी सर्व धर्म समभाव के असली रूप हैं. भारत को और इनसानी समाज को गांधी जी की यह दूसरी बड़ी देन थी.

गांधी जी का यह सर्व धर्म समभाव कोई नैन चीज़ नहीं है. दुनिया के सब धर्म आचार्य और दुनिया की सब धर्म पुस्तकें यही उपदेश देती रही हैं. ग़लत और सकीर्न ढंग की धार्मिक तालीम ने और अंगरेजों की लिखी हुई इतिहास की झूठी पुस्तकों ने मिलकर हमारे अन्दर अंधविश्वासों, आपसी नफ़रतों और ज़हरीले साम्प्रदायिक भावों को जन्म दिया और उभारा. मुल्क को इससे काफ़ी नुक़सान पहुँचा, वह ज़हर अभी तक देश के जिस्म से निकला नहीं है. पर हालात साबित कर रहे हैं कि इस महान कार्य के लिये महात्मा गांधी का सच्चा बलिदान रामबान की तरह अपना काम कर गया. हमारे अन्दर का वह ज़हर काफ़ी तेज़ी के साथ कम होता जा रहा है. और जिस दिन भी हमारा राष्ट्रीय शरीर इस ज़हर से बिलकुल पाक होगा उस दिन इसका सबसे बड़ा श्रेय महात्मा गांधी की ज़िन्दगी और उनकी क़ुरबानी को ही मिलेगा.

महात्मा गांधी जनता के आदमी थे. उनकी निगाह बार बार शहरों और शहरवालों से हटकर गांव और वहां की करोड़ों ग़रीब जनता की तरफ़ जाती थी. वह सारी दुनिया की जनता को, सारे इनसानी समाज को एक मानते थे. दुनिया की इस करोड़ों बल्कि अरबों जनता को ही वह 'दरिद्रनारायन' कह कर अपना उपास्य देव मानते थे. आम जनता यानी सब के भले को ही वह सर्वोदय का नाम देते थे. उनका ख़याल था कि सच्चा अहिंसात्मक इनसानी समाज गांव के आज़ाद धंधों को नष्ट करके बड़ी बड़ी मिलों के सहारे क़ायम नहीं हो सकता. इस बात में भी गांधी जी के विचारों के बारे में काफ़ी ग़लतफ़हमी है. गांधी जी सब मशीनों या मिलों के ख़िलाफ़ नहीं थे. साइन्स की अधिक से अधिक तरक़्क़ी के वह पूरी तरफ़दार थे. लेकिन उनका कहना है कि हमारे गांव की आज़ाद ज़िन्दगी, हमारे घरों और कुटुम्बों की ख़ुशी, गांव और खेतों की खुली हवा में प्रकृति के साथ हमारा सम्पर्क और जहां तक हो सके समाज को छोटी से छोटी इकाइयों के लिये स्वावलम्बी होना यानी अपनी ज़रूरतों के लिये दूसरों या बाहर वालों का मोहताज न होना, यह सब ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम हाथ से नहीं खोना चाहते. आदमी की नैतिक और आध्यात्मिक स्वस्थता और उन्नति के लिये वह अजालाकी

گاندھی جی کے اِن اصولوں کو ' سروِدھرم سمبھاو ' کا نام دیا جاتا ھے ۔ اپنی پرارتھنا کے اندر اُن کا گیتا' قرآن' انجیل' ژند اوستا سب کو جگہ دینا اور ایشور اور اللہ دونوں کو اُس کو نام ماننا اِسی سروِدھرم سمبھاو کے اصلی روپ ھیں ۔ بھارت کو اور انسانی سماج کو گاندھی جی کی یہ دوسری بڑی دین تھی ۔

گاندھی جی کا یہ سروِدھرم سمبھاو کوئی نئی چیز نہیں ھے ۔ دنیا کے سب دھرم آچاریہ اور دنیا کی سب دھرم پستکیں یہی اُپدیش دیتی رہی ھیں ۔ غلط اور سنکیرن ڈھنگ کی دھارمک تعلیم نے اور انگریزوں کی لکھی ہوئی اتہاس کی جھوٹی پستکوں نے ملکر ہمارے اندر اندھ وشواسوں' آپسی نفرتوں اور زہریلے سامپردائیک بھاوں کو جنم دیا اور اُبھارا ۔ ملک کو اِس سے کافی نقصان پہونچا' وہ زہر ابھی تک دیش کے جسم سے نکلا نہیں ھے ۔ پر حالات ثابت کر رہے ھیں کہ اس مہان کاریہ کے لئے مہاتما گاندھی کا سچا بلیدان رام بان کی طرح اپنا کام کر گیا ۔ ہمارے اندر کا یہ زہر کافی تیزی کے ساتھ کم ہوتا جا رہا ھے ۔ اور جس دن بھی ہمارا راشٹریہ شریر اِس زہر سے بالکل پاک ہوگا اُس دن اِس کا سب سے بڑا شریہ مہاتما گاندھی کی زندگی اور اُن کی قربانی کو ہی ملے گا ۔

مہاتما گاندھی جنتا کے آدمی تھے ۔ اُن کی نگاہ بار بار شہروں اور شہر والوں سے ہٹ کر گاؤں اور وہاں کی کروڑوں غریب جنتا کی طرف جاتی تھی ۔ وہ ساری دنیا کی جنتا کو' سارے انسانی سماج کو ایک مانتے تھے ۔ دنیا کی اِس کروڑوں بلکہ اربوں جنتا کو ہی وہ 'درِدر نارائن' کہکر اپنا اُپاسیہ دیو مانتے تھے ۔ عام جنتا یعنی سب کے بھلے کو ہی وہ سروودے کا نام دیتے تھے ۔ اُن کا خیال تھا کہ سچا اہنسااتمک انسانی سماج گاؤں کے آزاد دھندوں کو نشٹ کر کے بڑی بڑی ملوں کے سہارے قائم نہیں ہو سکتا ۔ اِس بات میں بھی گاندھی جی کے وچاروں کے بارے میں کافی غلط فہمی ھے ۔ گاندھی جی سب مشینوں یا ملوں کے خلاف نہیں تھے ۔ سائنس کی ادھک سے ادھک ترقی کے وہ پوری طرح طرفدار تھے ۔ لیکن اُن کا کہنا ھے کہ ہمارے گاؤں کی آزاد زندگی' ہمارے گھروں اور کٹمبوں کی خوشی' گاؤں اور کھیتوں کی کھلی ہوا میں پرکرتی کے ساتھ ہمارا سمپرک اور جہاں تک ہوسکے سماج کو چھوٹی سے چھوٹی اکائیوں کے لئے سواولمبی ہونا یعنی اپنی ضرورتوں کے لئے دوسروں یا باہر والوں کا محتاج نہ ہونا' یہ سب ایسی چیزیں ھیں جنھیں ہم ہاتھ سے نہیں کھونا چاہتے ۔ آدمی کی نیتک اور آدھیاتمک سوستھتا اور اُنتی کے لئے وہ اخلاقی

लड़ाई में उन्होंने इसके कुछ नमूने भी दुनिया के सामने पेश कर दिये. लेकिन अहिंसा के तरीक़े से अन्याय या ज़ुल्म के मुक़ाबला करने का ढंग हर समय हर एक को नहीं सूझ सकता. उस पर आसानी से विश्वास भी नहीं होता. इसलिए गांधी जी की यह साफ़ राय थी कि अन्याय का बिना मुक़ाबला किये उसे चुपचाप सह लेने की निस्बत उसका अहिंसा से मुक़ाबला करना ज़ियादा अच्छा है. कायरता को वह हिंसा से ज़ियादा बुरा मानते थे. उनकी अहिंसा में हिंसा के मुक़ाबले ज़ियादा बहादुरी और ज़ियादा क़ुरबानी की ज़रूरत पड़ती थी. दुनिया के दूर दूर कोनों से कभी कभी इस तरह की ख़बरें आती रहती हैं. जिससे पता चलता है कि इनसानी समाज के सच्चे हित चिन्तकों का ध्यान धीरे धीरे गांधी जी के अहिंसा के रास्ते और अहिंसा के तरीक़ों की तरफ़ बढ़ता आ रहा है.

हमारे देश में गांधी जी के राजकाजी लड़ाई के इन नए तरीक़ों ने थोड़े दिनों के अन्दर ही वह गहरा असर पैदा किया कि अंगरेज़ वायसराय लार्ड रीडिंग को कलकत्ते के अन्दर खुले जलसे में यह इक़बाल करना पड़ा:—“महात्मा गांधी के प्रोग्राम की कामयाबी में केवल एक इंच भर की कसर रह गयी थी. मैं हैरान था और घबरा गया था.”

अंगरेज़ सरकार के तरकस में अब एक ही आख़िरी तीर बाक़ी रह गया था. वह था हिन्दू और और मुसल-मानों में फ़िरक़ापरस्ती की आग को भड़काना. सन् 1923 में गांधी जी के जेल में रहते जगह जगह साम्प्रदायिक दंगे हुए. शुद्धि और संगठन, तबलीग़ और तंज़ीम का बाज़ार, दोनों तरफ़ से गरम हुआ. एक बार गांधी जी का और देश का सब किया कराया ख़ाक में मिलता हुआ दिखाई देने लगा. जेल से लौटते ही उन्होंने देश वासियों को बताया कि देश की और इनसानी समाज की स्वस्थता के लिये इस तरह की साम्प्रदायिकता सब से ख़तरनाक ज़हर है. इस ज़हर को देश के जिस्म से निकालने के लिये उन्होंने उसी समय से अनथक कोशिश की और आख़ीर में इसी कोशिश में अपने प्राण दिये.

उन्होंने देश को और दुनिया को बताया कि नफ़रत धर्म नहीं है. धर्म प्रेम है और प्रेम ही ईश्वर है. दुनिया के सब अवतार पैग़म्बर और तीर्थंकर और सब धर्म पुस्तकें आदर की हक़दार हैं. हमें इन सब महापुरुषों के उपदेशों और इन सब ग्रन्थों के अन्दर से अपने जीवन को सफल करने के लिये अनमोल हिदायतें मिल सकती हैं. ऊपर के रीति रिवाजों की निस्बत हमें दिल की सफ़ाई, सचाई और किसी को पीड़ा पहुंचाने के असूलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए, और सब के साथ प्रेम से मिल कर रहना चाहिए.

لڑائی میں اُنہوں نے اس کے کچھ نمونے بھی دنیا کے سامنے پیش کر دیئے . لیکن اہنسا کے طریقے سے انیائے یا ظلم کے مقابلہ کرنے کا ڈھنگ ہر سمے ہر ایک کو نہیں سوجھ سکتا . اس پر آسانی سے وسواس بھی نہیں ہوتا . اس لئے گاندھی جی کی یہ صاف رائے تھی کہ انیائے کا بنا مقابلہ کئے اسے چپ چاپ سہہ لینے کی نسبت اس کا اہنسا سے مقابلہ کرنا زیادہ اچھا ہے . کایرتا کو وہ ہنسا سے زیادہ برا مانتے تھے . ان کی اہنسا میں ہنسا کے مقابلے زیادہ بہادری اور زیادہ قربانی کی ضرورت پڑتی تھی . دنیا کے دور دور کونوں سے کبھی کبھی اس طرح کی خبریں آتی رہتی ہیں . جن سے پتہ چلتا ہے کہ انسانی سماج کے سچے ہت چنتکوں کا دھیان دھیرے دھیرے گاندھی جی کے اہنسا کے راستے اور اہنسا کے طریقوں کی طرف بڑھتا جا رہا ہے .

ہمارے دیش میں گاندھی جی کے راج کاجی لڑائی کے ان نئے طریقوں نے تھوڑے دنوں کے اندر ہی وہ گہرا اثر پیدا کیا کہ انگریز وائسرائے لارڈ ریڈنگ کو کلکتے کے اندر کھلے جلسے میں یہ اقبال کرنا پڑا :—" مہاتما گاندھی کے پروگرام کی کامیابی میں کیول ایک انچ بھر کی کسر رہ گئی تھی . میں حیران تھا اور گھبرا گیا تھا ."

انگریزی سرکار کے ترکس میں اب ایک ہی آخری تیر باقی رہ گیا تھا . وہ تھا ہندو اور مسلمانوں میں فرقہ پرستی کی آگ کو بھڑکانا . سن 1923 میں گاندھی جی کے جیل میں رہتے جگہ جگہ سامپردائیک دنگے ہوئے . شدھی اور سنگٹھن' تبلیغ اور تنظیم کا بازار' دونوں طرف سے گرم ہوا . ایک بار گاندھی جی کا اور دیش کا سب کیا کرایا خاک میں ملتا ہوا دکھائی دینے لگا . جیل سے لوٹتے ہی اُنہوں نے دیش واسیوں کو بتایا کہ دیش کی اور انسانی سماج کی سوستھتا کے لئے اسطرح کی سامپردائیکتا سب سے خطرناک زہر ہے . اس زہر کو دیش کے جسم سے نکالنے کے لئے اُنہوں نے اسی سمے سے ان تھک کوشش کی اور آخیر میں اسی کوشش میں اپنے پران دیئے .

اُنہوں نے دیش کو اور دنیا کو بتایا کہ نفرت دھرم نہیں ہے . دھرم پریم ہے اور پریم ہی ایشور ہے . دنیا کے سب اوتار پیغمبر اور تیرتھنکر اور سب دھرم پستکیں آدر کی حقدار ہیں . ہمیں ان سب مہاپرشوں کے اپدیشوں اور ان سب پرنتھوں کے اندر سے اپنے جیون کو سپھل کرنے کے لئے انمول ہدایتیں مل سکتی ہیں . اوپر کے رسم رواجوں کی نسبت ہمیں دل کی صفائی' سچائی اور کسی کو پیڑا پہونچانے کے اصولوں پر ادھک دھیان دینا چاہئے اور سب کے ساتھ پریم سے ملکر رہنا چاہئے .

महात्मा गांधी ने कुछ दिनों देश की हालत देखने और समझने के बाद अहिन्सात्मक असहयोग और सत्याग्रह के नए तरीक़े और लड़ाई के नए ढंग देश के सामने रक्खे. खेड़ा और चम्पारन में दो छोटे लेकिन नये ढंग के तजरबे हुए आज़ादी के मतवालों का ध्यान उस तरफ़ खिंचा. पहले महायुद्ध ने लोगों के अन्दर आज़ादी की प्यास को और ज़ियादा भड़काया. अंगरेज़ हाकिमों ने रौलट एक्ट जैसे अन्यायी क़ानूनों के ज़रिये नई उमंगों को कुचल डालना चाहा. महात्मा गांधी ने अपने सत्याग्रह यानी सिविल नाफ़रमानी के हथियार को और ज़ियादा तेज़ किया. सन 1919 में बावजूद पंजाब के अत्याचारों और भयंकर दमन के जागृति की वह ज़बरदस्त लहर सारे देश में दौड़ गई जिसे देखकर अंगरेज़ हाकिम एक बार घबरा गए. शायद छः अप्रैल सन 1919 जैसी ज़बरदस्त हड़ताल······जिसमें समझा जाता है कि दूर से दूर के किसी गांव में भी कोई हल नहीं चलाया गया. इस देश में उससे पहले या उसके बाद कभी नहीं हुई. पहली बार भारतवासियों को यह सूझा कि अगर वह केवल पक्का इरादा कर लें, अंगरेज़ी क़ानूनों को मानने से इन्कार कर दें और अपनी बात निभाने के लिए मिटने को तैयार हो जाँय तो दुनियाँ की कोई ताक़त उन्हें दबा नहीं सकती और बिना हथियार उठाए, वह देश को विदेशी राज से आज़ाद कर सकते हैं. महात्मा गांधी की इस देश को और सारी राजकाजी दुनिया को यह पहली बड़ी देन था.

गांधी जी के इस अहिन्सात्मक असहयोग और सत्याग्रह के बारे में कुछ लोगों के दिलों में कई तरह की ग़लतफ़हमियां हैं. दुनिया की कोई भी पारटी इस बात से इन्कार नहीं कर सकती कि इनसानी समाज का आख़िरी ध्येय प्रेम, शान्ति और अहिन्सा है, नफ़रत लड़ाई झगड़े और एक दूसरे की हिन्सा नहीं. इसके बाद सवाल आता है कि अगर कहीं अन्याय या ज़ुल्म दिखाई दे तो हमें क्या करना चाहिए. गांधी जी का यहां साफ़ कहना था कि किसी भी अन्याय या ज़ुल्म के सामने सर झुका देना या उसे चुपचाप सह लेना पाप और ग़लत है. फिर सवाल होता है कि उस अन्याय या ज़ुल्म का मुक़ाबला कैसे किया जाये दुनिया के सामने, अभी तक आमतौर पर इसका एक ही तरीक़ा रहा है, और वह हिंसा का तरीक़ा है. गांधी जी ने इस मुक़ाबला करने का एक नया तरीक़ा यानी अहिंसा का तरीक़ा सुझाया. वह इस तरीक़े को हिन्सा के तरीक़े से ज़ियादा अच्छा बताते थे उनका यह भी कहना था कि इस रास्ते पर चलकर इनसानी समाज अपने आख़री ध्येय तक ज़ियादा जल्दी और ज़ियादा आसानी से पहुंच सकता है. इस देश की आज़ादी की

مہاتما گاندھی نے کچھ دنوں دیش کی حالت دیکھنے اور سمجھنے کے بعد اہنسانمک اسہیوگ اور ستیاگرہ کے نئے طریقے اور لڑائی کے نئے ڈھنگ دیش کے سامنے رکھے۔ کھیڑا اور چمپارن میں دو چھوٹے لیکن نئے ڈھنگ کے تجربے ہوئے آزادی کے متوالوں کا دھیان اُس طرف کھینچا۔ پہلے مہا یدھ نے لوگوں کے اندر آزادی کی پیاس کو اور زیادہ بھڑکایا۔ انگریز حاکموں نے رولٹ ایکٹ جیسے انیائی قانونوں کے ذریعے نئی اُمنگوں کو کچل ڈالنا چاہا۔ مہاتما گاندھی نے اپنے ستیاگرہ یعنی سول نافرمانی کے ہتھیار کو اور زیادہ تیز کیا۔ سن 1919 میں باوجود پنجاب اتیاچاروں اور بھینکر دمن کے جاگرتی کی وہ زبردست لہر سارے دیش میں دوڑ گئی جسے دیکھکر انگریز حاکم ایک بار گھبرا گئے۔ شاید چھ اپریل سن 1919 جیسی زبردست ہڑتال............جس میں سمجھا جاتا ہے کہ دور سے دور کے کسی گاؤں میں بھی کوئی ہل نہیں چلایا گیا..............اس دیش میں اُس سے پہلے یا اس کے بعد کبھی نہیں ہوئی۔ پہلی بار بھارت واسیوں کو یہ سوجھا کہ اگر وہ کیول پکا ارادہ کر لیں، انگریزی قانونوں کو ماننے سے انکار کر دیں اور اپنی بات نبھانے کے لئے مٹنے کو تیار ہو جائیں تو دنیا کی کوئی طاقت اُنہیں دبا نہیں سکتی اور بنا ہتھیار اُٹھائے، وہ دیش کو ودیشی راج سے آزاد کر سکتے ہیں۔ مہاتما گاندھی کی اس دیش کو اور ساری راج کاجی دنیا کو یہ پہلی بڑی دین تھی۔

گاندھی جی کے اِس اہنساتمک اسہیوگ اور ستیاگرہ کے بارے میں کچھ لوگوں کے دلوں میں کئی طرح کی غلط فہمیاں ہیں۔ دنیا کی کوئی بھی پارٹی اِس بات سے انکار نہیں کر سکتی کہ اِنسانی سماج کا آخری دھیہ پریم، شانتی اور اہنسا ہے، نفرت لڑائی جھگڑے اور ایک دوسرے کی ہنسا نہیں۔ اِس کے بعد سوال آتا ہے کہ اگر کہیں انیائے یا ظلم دکھائی دے تو ہمیں کیا کرنا چاہئے۔ گاندھی جی کا یہاں صاف کہنا تھا کہ کسی بھی انیائے یا ظلم کے سامنے سر جھکا دینا یا اُسے چپ چاپ سہہ لینا پاپ اور غلط ہے۔ پھر سوال ہوتا ہے کہ اُس انیائے یا ظلم کا مقابلہ کیسے کیا جائے دنیا کے سامنے، ابھی تک عام طور پر اِس کا ایک ہی طریقہ رہا ہے، اور وہ ہنسا کا طریقہ ہے۔ گاندھی جی نے اِس مقابلہ کرنے کا ایک نیا طریقہ یعنی اہنسا کا طریقہ سجھایا۔ وہ اِس طریقے کو ہنسا کے طریقے سے زیادہ اچھا بتاتے تھے اُن کا یہ بھی کہنا تھا کہ اِس راستے پر چل کر انسانی سماج اپنے آخری دھیہ تک زیادہ جلدی اور زیادہ آسانی سے پہنچ سکتا ہے۔ اِس دیش کی آزادی کی

बापू

[30 जनवरी 1952 को आल इण्डिया रेडियो, इलाहाबाद पर पंडित सुन्दरलाल जी की तक़रीर]

इस देश के राजकाजी मंच पर महात्मा गांधी ऐसे समय सामने आते हैं जिस समय देश को विदेशियों की ग़ुलामी से आज़ाद करने की कोशिश करने वालों में गहरी निराशा छाई हुई थी. अंगरेज़ी राज से भारत को आज़ाद करने की कोशिशों का सूत्रपात हमें अठारहवीं सदी के आख़िर में सबसे पहले हैदर और टीपू की कोशिशों में मिलता है. वह कोशिशें नाकाम गईं. उसके बाद सन् 1857 की आज़ादी की मशहूर लड़ाई आती है, वह भी असफल रही. उन्नीसवीं सदी के आख़ीर के दिनों में पंजाब की कूका की बग़ावत और सरहद पर मुसलमान जां निसारों की तहरीक मिलती है. वह भी कोई ख़ास नतीजा पैदा न कर सकी. उन्नीसवीं सदी के आख़ीर में शायद कोई भी छोटा या बड़ा हिन्दुस्तानी यह सपना देखने का साहस न कर सकता था कि यह मुल्क कभी भी अंगरेज़ों के पंजे से आज़ाद हो सकेगा. यह वह समय था जब कि बड़े से बड़े साहसी देशभक्त अधिक से अधिक यही उम्मीद कर सकते थे कि वह अंगरेज़ी राज की छत्रछाया में कुछ पदवियाँ लेलें या अपने मुल्क वालों के लिये कुछ और छोटी मोटी रिआयतें या सहूलियतें हासिल कर लें. बीसवीं सदी के शुरू में बंगाल के दो टुकड़े हुए, भारत की सोई हुई आत्मा को एक गहरी ठेस लगा. आज़ादी के कुछ नये मतवाले इधर उधर दिखाई देने लगे. रूस जापान युद्ध के नतीजे से उनकी और भी हिम्मत बढ़ी. पर उस समय के देशभक्तों के सामने मिसालें थीं इटली, आयरलैंड और रूस के आज़ादी के संग्रामों की: बम, रिवालवर, गुप्त हत्यायें और राजकाजी डाकों के सिवा उन्हें कोई और उपाय न सूझता था. हां, इनके साथ थोड़ी बहुत अंगरेज़ी माल के बाइकाट की कोशिश भी थी. लोक मान्य तिलक, लाला लाजपतराय और अरविन्द बाबू उस आन्दोलन के ख़ास नेता थे. इन तरीक़ों से देश में कुछ बेदारी पैदा हुई. अंगरेज़ हाकिमों की अकल को भी कुछ धक्का लगा पर चार पांच बरस के अन्दर ही साफ़ दिखाई दे गया कि इन तरीक़ों से देश को आज़ाद कर सकना बिलकुल नामुमकिन था जैसा हम कह चुके हैं 1915 के आस पास समय यानी महात्मा गांधी के दक्खिन अफ़्रिका से भारत आने का समय आज़ादी की कोशिशें करने वालों के लिए गहरी निराशा का ज़माना था. जेल से लौटने के बाद लोकमान्य तिलक को कोई आगे की राह न सूझती थी. लाला लाजपतराय का दिल टूट चुका था. अरविन्द बाबू राजकाज से [illegible] योग में अपना मन लगा चुके थे.

باپو

[30 جنوری 1952 کو آل انڈیا ریڈیو' الہ آباد پر پنڈت سندر لال جی کی تقریر]

اِس دیش کے راج کاجی منچ پر مہاتما گاندھی ایسے سمے سامنے آتے ھیں جس سمے دیش کو ودیشیوں کی غلامی سے آزاد کرنے کی کوشش کرنے والوں میں گہری نراشا چھائی ہوئی تھی ۔ انگریزی راج سے بھارت کو آزاد کرنے کی کوششوں کا سوتر پات ہمیں اٹھارویں صدی کے آخر میں سب سے پہلے حیدر اور ٹیپو کی کوششوں میں ملتا ھے ۔ وہ کوششیں ناکام گئیں ۔ اُس کے بعد سن 1857 کی آزادی کی مشہور لڑائی آتی ھے' وہ بھی اسپھل رہی ۔ اُنیسویں صدی کے آخیر کے دنوں میں پنجاب کی کوکا کی بغاوت اور سرحد پر مسلمان جاں نثاروں کی تحریک ملتی ھے ۔ وہ بھی کوئی خاص نتیجہ پیدا نہ کر سکی ۔ اُنیسویں صدی کے آخیر میں شائد کوئی بھی چھوٹا یا بڑا ہندوستانی یہ سپنا دیکھنے کا ساہس نہ کر سکتا تھا کہ یہ ملک کبھی بھی انگریزوں کے پنجے سے آزاد ہوسکے گا ۔ یہ وہ سمے تھا جبکہ بڑے سے بڑے ساہسی دیش بھکت ادھک سے ادھک یہی اُمید کر سکتے تھے کہ وہ انگریزی راج کی چھتر چھایا میں کچھ پدویاں لے لیں یا اپنے ملک والوں کے لئے کچھ اور چھوٹی موٹی رعایتیں یا سہولتیں حاصل کر لیں ۔ بیسویں صدی کے شروع میں بنگال کے دو ٹکڑے ہوئے' بھارت کی سوئی ہوئی آتما کو ایک گہری ٹھیس لگی ۔ آزادی کے کچھ نئے متوالے اِدھر اُدھر دکھائی دینے لگے ۔ روس جاپان یدھ کے نتیجے سے اُن کی اور بھی ہمت بڑھی ۔ پر اُس سمے کے دیش بھکتوں کے سامنے مثالیں تھیں اٹلی' آئرلینڈ اور روس کے آزادی کے سنگراموں کی : بم' ریوالور' گپت ہتھیائیں اور راج کاجی ڈاکوں کے سوا اُنہیں کوئی اور اُپائے نہ سوجھتا تھا ۔ ہاں' اِن کے ساتھ تھوڑی بہت انگریزی مال کے بائیکاٹ کی کوشش بھی تھی ۔ لوک مانیہ تلک' لالہ لجپت رائے اور اروند بابو اُس آندولن کے خاص نیتا تھے ۔ اِن طریقوں سے دیش میں کچھ بیداری پیدا ہوئی ۔ انگریز حاکموں کی اکل کو بھی کچھ دھکا لگا پر چار پانچ برس کے اندر ہی صاف دکھائی دے گیا کہ اِن طریقوں سے دیش کو آزاد کر سکنا بالکل ناممکن تھا جیسا ہم کہہ چکے ہیں 1915 کے آس پاس سمے یعنی مہاتما گاندھی کے دکھن افریقہ سے بھارت آنے کا سمے آزادی کی کوشش کرنے والوں کے لئے گہری نراشا کا زمانہ تھا ۔ جیل سے لوٹنے کے بعد لوک مانیہ تلک کو کوئی آگے کی راہ نہ سوجھتی تھی ۔ لالہ لجپت رائے کا دل ٹوٹ چکا تھا ۔ اروند بابو راج کاج سے الگ ہو کر یوگ میں اپنا دل لگا چکے تھے ۔

ज़ाहिर है वही चेतनता, ईश्वर की चेतनता, आदमी की चेतनता, आत्मा की चेतनता सब चीज़ों को अपने में लिये हुए सबको घेरे हुए और सब को रोशन किये हुए है. जानना ही होना है.

सब नाम उसके नाम हैं. सब नामों के पीछे वही एक असलियत है. देवी भागवत में लिखा है:—"शैव लोग उसको शिव कह कर पूजा करते हैं, वेदान्ती लोग उसी को ब्रह्म कहते हैं, बौद्ध उसी को बुद्ध कहते हैं, नैयायक यानी मुन्तक़ी उसी को कर्ता कहते हैं, जैन उसी को अरहंत कहते हैं और मीमांसा वाले उसी को कर्म कहते हैं. वही हरि तीनों लोकों का मालिक है, वही सबकी इच्छाएं पूरी करने वाला है, कोई उसे तप कहता है कोई ज्ञान, कोई प्रकृति, कोई शक्ति; लोग उसे तरह तरह से बयान करने और समझने की कोशिश करते हैं. है वह एक ही हक़ीक़त. अलग अलग मुल्कों और अलग अलग भाषाओं में उसे अलग अलग नामों से पुकारा गया है. ब्रह्म और ब्रह्मा में वही फ़रक़ है—अगर फ़रक़ है तो—जो सूफ़ियों की इस सलाह में अहद और अल्लाह में है. ब्रह्म नाम पारसी किताबों और बौद्ध किताबों दोनों में आता है. अरबी 'हई' और 'यहिया' इबरानी 'यहोवा' और सामवेद का 'ओहऊ' और 'ओहऊही' ऐसे ही फ़ीनीशियन 'ईआओ' सब एक ही शब्द हैं.

यही वह क़ुदरती आवाज़ें हैं जो शुरू के आदमी के मुँह से निकलती हैं. इन्हीं से वह अपने अंदर के अचरज को प्रगट करता है.

ठीक इसी तरह के नाम चीनी धर्म की किताबों और जैन धर्म की किताबों में भी आते हैं. चीनी महापुरुश क्वान-यन-त्से ने लिखा है:—"ताओ (ख़ुदा) को अपनी आत्मा के अन्दर ढूंढ़ो और तुम्हें बाक़ी सब बातें अपने आप मालूम हो जायगी. धर्मात्मा, आदमी अनेक में एक और एक में अनेक, यानी कसरत में वहदत और वहदत में कसरत को देखता है. वह एक सदा एक रस है. वही हमारा आपा है वही सब का आपा है. उससे बढ़ कर कोई जानने की चीज़ नहीं. उसे जान लिया तो सबको जान लिया.

ظاہر ہے یہی چیتنتا' ایشور کی چیتنتا' آدمی کی چیتنتا' آتما کی چیتنتا سب چیزوں کو اپنے میں لئے ہوئے سب کو گھیرے ہوئے اور سب کو روشن کئے ہوئے ہے. جاننا ہی ہونا ہے .

سب نام اُس کے نام ہیں . سب ناموں کے پیچھے وہی ایک اصلیت ہے . دیوی بھاگوت میں لکھا ہے:—
" شیو لوگ اُسکی شو کہکر پوجا کرتے ہیں' ویدانتی لوگ اُسی کو برھمہ کہتے ہیں' بودھ اسی کو بودھ کہتے ہیں' نیائیک یعنی منطقی اسی کو کرتا کہتے ہیں' جین اُسی کو ارھنت کہتے ہیں اور میمانسا والے اُسی کو کرم کہتے ہیں . وہی ہری تینوں لوکوں کا مالک ہے' وہی سب کی اچھائیں پوری کرنے والا ہے' کوئی اُسے تپ کہتا ہے کوئی گیان' کوئی پرکرتی' کوئی شکتی؛ لوگ اسے طرح طرح سے بیان کرنے اور سمجھنے کی کوشش کرتے ہیں. ہے وہ ایک ہی حقیقت . الگ الگ ملکوں اور الگ الگ بھاشاؤں میں اُسے الگ الگ ناموں سے پکارا گیا ہے . برھمہ اور برھما میں وہی فرق ہے—اگر فرق ہے تو—جو صوفیوں کی اِس صلح میں احد اور اللہ میں ہے . برھم نام پارسی کتابوں اور بودھ کتابوں دونوں میں آتا ہے . عربی 'ھئی' اور 'یحیا' عبرانی 'یہوا' اور سام وید کا 'اوھو' اور ' اوھوھو ' ایسے ہی فینیشین ' ای یاؤ ' سب ایک ہی شبد ہیں .

یہی وہ قدرتی آوازیں ہیں جو شروع کے آدمی کے منھ سے نکلتی ہیں . انہیں سے وہ اپنے اندر کے اچرج کو پرکٹ کرتا ہے .

ٹھیک اسی طرح کے نام چینی دھرم کے کتابوں اور جین دھرم کی کتابوں میں بھی آتے ہیں . چینی مہا پُرُش کوان ین تسے نے لکھا ہے:—" تاؤ (خدا) کا اپنی آتما کے اندر ڈھونڈھو اور تمہیں باقی سب باتیں اپنے آپ معلوم ہو جائیگی . دھرماتما آدمی انیک میں ایک اور ایک میں انیک' یعنی کثرت میں وحدت اور وحدت میں کثرت کو دیکھتا ہے . وہ ایک سدا ایک رس ہے . وہی ہمارا آپا ہے وہی سب کا آپا ہے . اُس سے بڑھکر کوئی جاننے کی چیز نہیں . اُسے جان لیا تو سب کو جان لیا .

और बुरे रास्ते से हटाकर नेकी और सबकी भलाई की तरफ़ ले जाता है."

क़ुरान में हारूत और मारूत दो फ़रिश्तों का ज़िक्र आता है. यहूदी किताबों में इन्हीं को होरोत और मोरोत कहा गया है. पारसी किताबों में होरवाता और अमेरेता. वेदों में इन्हीं को ऋतम और अमृतम कहा गया है. इन्हीं दोनों की खींचातानी पर आदमी का ऊपर उठना या नीचे गिरना निर्भर है.

इस ख़तरे से हमेशा बहुत होशियार रहने की ज़रूरत है. कहीं हम ख़ुदी या अहंकार को जो सचमुच हम में शैतान का अंश और सब बुराईयों की जड़ है, अपना असली अपनापा न समझ बैठें. यही हम में लोभ लालच फ़ौजी घमंड और दूसरों के ज़र ज़मीन की चाह पैदा करता है. चोरी, डकैती, व्यभिचार, क़त्ल और एक दूसरे पर हमले राजकाजी जंग और मज़हबी कट्टरता सब इसी से पैदा होते हैं. हमारे अंदर का ख़ुदा कहता रहता है—"ऐ भगवान ऐ सब के दिलों में बैठे हुए परमात्मा तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी नहीं." हमारे अन्दर का शैतान बोलता है 'मेरी इच्छा पूरी हो तेरी नहीं.'" हमें लगातार इस शैतान से होशियार रहने की ज़रूरत है. ख़ुदा और शैतान दोनों हमारे अन्दर हैं.

हम इससे पहले के एक लेख में लिख चुके हैं कि साइंस अब सब के अंदर रमी हुई एक अटूट व्यापक चेतनता से इनकार नहीं करता. यही रूह कुल या परम आत्मा है. साइंस का शुरू का भौतिक वाद, जड़ वाद या मादी वाद ख़तम हो चुका. चेतनता के वजूद से अब इनकार नहीं किया जाता. चेतनता ही माद्दे के और इन्द्रियों के वजूद को साबित करती है. इन्द्रियाँ माद्दे को महसूस करती हैं. इन्द्रियाँ माद्दा चेतनता को साबित नहीं कर सकते. यह चेतनता ही सब को रोशन किये हुए है और यही ख़ुद अपने को रोशन किये हुए है.

उपनिषद् में लिखा है:—"ब्रह्म सब चीज़ों को घेरे हुए है और सबसे पार है. उसी की रोशनी से यह सब चीज़ें रोशन हैं."

क़ुरान में लिखा है:—"अल्लाह सब चीज़ों को घेरे हुए है. अल्लाह ही ज़मीन और आस्मानों का नूर है."

इंजील में लिखा है:—"उस ईश्वर ही के अंदर सब चीज़ें रहती हैं, हरकत करती हैं और जीती हैं."

"आदमी और हर चीज़ को रोशन करने वाली रोशनी वह ईश्वर ही है."

चीन की किताब शीकिंग में लिखा है:—"वह ईश्वर सब समझता है, सब देखता है और तुम्हारे सब कामों में तुम्हारे साथ है."

اور عمدہ سے کام بھلی اندریوں سے ہٹا کر نیکی اور سب کی بھلائی کی طرف لیا جاتا ہے ."

قرآن میں ہاروت اور ماروت دو فرشتوں کا ذکر آتا ہے . یہودی کتابوں میں انہیں کو هوروت اور موروت کہا گیا ہے . پارسی کتابوں میں هورواتا اور امیریتا . ویدوں میں انہیں کو رتم اور امرتم کہا گیا ہے . انہیں دونوں کی کھینچا تانی پر آدمی کا اوپر اُٹھنا یا نیچے گرنا نربھر ہے .

اِس خطرے سے ہمیشہ بہت ہوشیار رہنے کی ضرورت ہے . کہیں ہم خودی یا اہنکار کو جو سچ مچ ہم میں شیطان کا انش اور سب برائیوں کی جڑ ہے اپنا اصلی اپناپا نہ سمجھ بیٹھیں . یہی ہم میں لوبھ لالچ فوجی گھمنڈ اور دوسروں کے زر زمین کی چاہ پیدا کرتا ہے . چوری، ڈکیتی، ویبھی چار، قتل اور ایک دوسرے پر حملے راج کاجی جنگ اور مذہبی کٹرتا سب اسی سے پیدا ہوتے ہیں . ہمارے اندر کا خدا کہتا رہتا ہے—" اے بھگوان اے سب کے دلوں میں بیٹھے ہوئے پرم آتما تیری اچھا پوری ہو میری نہیں ." ہمارے اندر کا شیطان بولتا ہے " میری اچھا پوری ہو تیری نہیں ." ہمیں لگاتار اس شیطان سے ہوشیار رہنے کی ضرورت ہے . خدا اور شیطان دونوں ہمارے اندر ہیں .

ہم اِس سے پہلے کے ایک لیکھ میں دکھا چکے ہیں کہ سائنس اب سب کے اندر رمی ہوئی ایک اٹوٹ ویاپک چیتنتا سے انکار نہیں کرتی . یہی روح کل یا پرم آتما ہے . سائنس کا شروع کا بھوتک واد، جڑواد یا مادیواد ختم ہو چکا . چیتنتا کے وجود سے اب انکار نہیں کیا جاتا . چیتنتا ہی معدے کے اور اندریوں کے وجود کو ثابت کرتی ہے . اندریاں معدے کو محسوس کرتی ہیں . اندریاں معدا چیتنتا کو ثابت نہیں کر سکتے . یہ چیتنتا ہی سب کو روشن کئے ہوئے ہے اور یہی خود اپنے کو روشن کئے ہوئے ہے .

اپنشد میں لکھا ہے:—" برہمہ سب چیزوں کو گھیرے ہوئے ہے اور سب سے پار ہے . اُسی کی روشنی سے یہ سب چیزیں روشن ہیں ."

قرآن میں لکھا ہے:—" اللہ سب چیزوں کو گھیرے ہوئے ہے . اللہ ہی زمین اور آسمانوں کا نور ہے ."

انجیل میں لکھا ہے :—" اس ایشور ہی کے اندر سب چیزیں رہتی ہیں، حرکت کرتی ہیں اور جیتی ہیں ."

" آدمی اور ہر چیز کو روشن کرنے والی روشنی وہ ایشور ہی ہے ."

چین کی کتاب شیکنگ میں لکھا ہے :—

" وہ ایشور سب سمجھتا ہے، سب دیکھتا ہے اور تمہارے سب کاموں میں تمہارے ساتھ ہے ."

'मोक्ष देने वाला' है. नारद विष्णु के भक्त हैं और उनका खास काम है राजाओं को एक दूसरे से लड़ाना. एक की दूसरे के सामने तारीफ़ करके या एक की दूसरे से बुराई करके. इन्द्र भी लोगों को और ख़ास कर ऋषियों को आज़माने और आज़माइश के ज़रिये ऊंचा ले जाने का काम करते हैं. बौद्ध-धर्म में यही काम मार का है. मार का वही अर्थ है जो कामदेव का..

आदमी का यह धोका क़रीब क़रीब वैसा ही है जैसा आजकल का कोई सरकारी मुलाज़िम या अफ़सर ग़लती से अपने को जनता का नौकर और सेवक समझने की जगह अपने को उनका मालिक या आक़ा समझ बैठे. या कोई अमानतदार ट्रस्टी ट्रस्ट के माल का अपने को मालिक समझ बैठे. गुन और कर्म से अपने को ब्राह्मन क्षत्रिय वैश्य या शूद्र समझने की जगह जन्म से अपनी जात मान बैठना भी इसी तरह की एक ग़लती है. इस तरह की ग़लती बड़ी से बड़ी बरकत को भी लानत बना देती है. इसीलिये पुराने ज़माने में वहदतुल वजूद यानी आत्मा और ईश्वर के एक होने की हक़ीक़त सबके सामने बयान नहीं की जाती थी. सब उसके हक़दार या पात्र नहीं होते. यह रूहानी हक़ीक़त जिनके अन्दर प्रेम और नम्रता की जगह नफ़रत और घमंड पैदा करे वह इसके हक़दार नहीं हैं.

पर आज ज़माना बदल गया है. लोगों की सूझ बूझ आमतौर पर बढ़ी हुई है. उसके साथ ख़ुदी यानी अहंकार भी बढ़ता आ रहा है. इसलिये लोगों का ध्यान असलियत की तरफ़ खींचने की ज़रूरत है. मुमकिन है सोई हुई आत्माएं जग उठें. असली धर्म का यही मक़सद है, यानी लोगों को ख़ुदी से हटाकर ख़ुदा की तरफ़ ले चलना. स्वार्थ से हटाकर परमार्थ की तरफ़, अंधेरे से हटाकर रोशनी की तरफ़, असत्य से हटाकर सत्य की तरफ़ और बदी से हटा कर नेकी की तरफ़ ले चलें.

पारसी धर्म की किताब 'गाथा' में लिखा है :—

"ऐ अहुरमज़्द (अल्लाह) हमें इस क़ाबिल बना कि हम अपने दोनों अपनापों यानी नीचे के जिस्मानी अपनापे और ऊपर के रूहानी अपनापे में फ़रक़ कर सकें. यह दोनों अपनापे तुम्हारे ही दिये हुए हैं. इनमें पहिला अपनापा बुराई की तरफ़ ले जाता है, और दूसरा सदा नेकी की तरफ़ ले जाता है. हमारे सब काम इन्हीं दो से पैदा होते हैं. इनमें से पहिला आदमी को आदमी से अलग करता है और दूसरा आदमी को आदमी से मिलता है."

यही बात उपनिशदों में तरह तरह से कही गई है. लिखा है :—

"मन दो तरह का होता है, एक शुद्ध और दूसरा अशुद्ध. अशुद्ध मन काम संकल्प यानी नफ़्स की तरफ़ ले जाता है

'موکش دینے والا' ہے . نارد وشنو کے بھکت ہیں اور اُن کا خاص کام ہے راجاؤں کو ایک دوسرے سے لڑانا . ایک کی دوسرے کے سامنے تعریف کرکے یا ایک کی دوسرے سے برائی کر کے . اندر بھی لوگوں کو اور خاص کر رشیوں کو آزمانے اور آزمائش کے ذریعے اونچا لے جانے کا کام کرتے ہیں . بودھ دھرم میں یہی کام مار کا ہے . مار کا وہی ارتھ ہے جو کام دیوکا .

آدمی کا یہ دھوکا قریب قریب ویسا ہی ہے جیسا آج کل کا کوئی سرکاری ملازم یا افسر غلطی سے اپنے کو جنتا کا نوکر اور سیوک سمجھنے کی جگہ اپنے کو اُن کا مالک یا آقا سمجھ بیٹھے یا کوئی امانت دار ٹرسٹی ٹرسٹ کے مال کا اپنے کو مالک سمجھ بیٹھے . گن اور کرم سے اپنے کو براہمن چھتری ویش یا شودر سمجھنے کی جگہ جنم سے اپنی جات مان بیٹھنا بھی اسی طرح کی ایک غلطی ہے . اس طرح کی غلطی بڑی سے بڑی برکت کو بھی لعنت بنا دیتی ہے . اسی لئے پرانے زمانے میں وحدت الوجود یعنی آتما اور ایشور کے ایک ہونے کی حقیقت سب کے سامنے بیان نہیں کی جاتی تھی . سب اُس کے حقدار یا پاتر نہیں ہوتے . یہ روحانی حقیقت جن کے اندر پریم اور نمرتا کی جگہ نفرت اور گھمنڈ پیدا کرے وہ اس کے حقدار نہیں ہیں .

پر آج زمانہ بدل گیا ہے . لوگوں کی سوجھ بوجھ عام طور پر بڑھی ہوئی ہے . اس کے ساتھ خودی یعنی اہنکار بھی بڑھتا جا رہا ہے . اسلئے لوگوں کا دھیان اصلیت کی طرف کھینچنے کی ضرورت ہے . ممکن ہے سوئی ہوئی آتمائیں جاگ اٹھیں . اصلی دھرم کا یہی مقصد ہے ' یعنی لوگوں کو خودی سے ہٹا کر خدا کی طرف لے چلنا . سوارتھ سے ہٹا کر پرمارتھ کی طرف ' اندھیرے سے ہٹا کر روشنی کی طرف ' استیہ سے ہٹا کر ستیہ کی طرف اور بدی سے ہٹا کر نیکی کی طرف لے چلیں .

پارسی دھرم کی کتاب 'گاتھا' میں لکھا ہے :—

" اے اہرموزد (اللہ) ہمیں اس قابل بنا کہ ہم اپنے دونوں اپناپوں یعنی نیچے کے جسمانی اپناپے اور اوپر کے روحانی اپناپے میں فرق کر سکیں . یہ دونوں اپناپے تمہارے ہی دئیے ہوئے ہیں . ان میں پہلا اپناپا برائی کی طرف لے جاتا ہے ' اور دوسرا سدا نیکی کی طرف لے جاتا ہے . ہمارے سب کام انہیں دو سے پیدا ہوتے ہیں . ان میں سے پہلا آدمی کو آدمی سے الگ کرتا ہے اور دوسرا آدمی کو آدمی سے ملاتا ہے ."

یہی بات اپنشدوں میں طرح طرح سے کہی گئی ہے . لکھا ہے :—

" من دو طرح کا ہوتا ہے ' ایک شدھ اور دوسرا اشدھ . اشدھ من کام سنکلپ یعنی نفس کی طرف لے جاتا ہے

ख़ुदी और ख़ुदा

(डाक्टर भगवान दास)

इससे पहिले के लेख में हम आत्मा और परमात्मा यानी रूह और ख़ुदा दोनों के हक़ीक़ी वजूद के एक होने की बात कह चुके हैं. इसी का नाम अद्वैतवाद यानी वहदतुल वजूद है. आदमी का यह महसूस करना कि वह ईश्वर ही का एक अंश है उसकी रूह उस नूरेकुल (ज्योतिर्मय) की ही एक चिनगारी है या वजूद के उसी समुन्दर की एक बूंद है, बहुत बड़ी और ऊंची बात है और यही ऐन हक़ीक़त है, लेकिन एक दूसरी निगाह से इस विचार के साथ एक बहुत बड़ा ख़तरा लगा हुआ है. यह विचार जितना लाभदायक हो सकता है उतना ही बल्कि उससे अधिक हानिकर भी हो सकता है. हर आदमी के अन्दर दो तरह का अपनापन होता है, एक उसकी आत्मा या रूह का अपनापन और दूसरा उसके जिस्म (शरीर) इन्द्रियों और वासनाओं का अपनापन. हर आदमी के अन्दर इन दोनों में बराबर खेंचातानी होती रहती है. यही खेंचातानी ख़ुदा और ख़ुदी, परमार्थ और स्वार्थ के बीच की लगातार खेंचातानी है. डर इस बात का है कि आदमी ख़ुदा के साथ अपनी एकता को महसूस करते करते कहीं जान बूझकर या अनजाने में इन्द्रियों यानी नफ़्से अम्मारा के साथ अपने को एक न मान बैठे. अगर ऐसा हुआ तो वह अपने भीतर ख़ुदा की जगह शैतान को ला बैठायगा और बरबादी के रास्ते पर चल पड़ेगा. रूहानी सचाइयों को समझने और अनुभव करने के लिये ख़ुदी को जीत कर ख़ुदा को उसकी जगह देना ज़रूरी है. इसके लिये इन्द्रियों यानी नफ़्स पर क़ब्ज़ा हासिल करना ज़रूरी है.

आदमी के अन्दर की इसी खेंचातानी को उपनिषदों में इन्द्र और विरोचन की कहानी के रूप में बयान किया गया है. ईसाई किताबों और मुस्लिम रिवायतों में इसी को अज़ाज़ील यानी शैतान की गिरावट के रूप में बयान किया गया है. अज़ाज़ील शैतान का नाम है. अज़ाज़ील सब फ़रिश्तों का उस्ताद था. अज़ाज़ील शब्द के मानी भी बहुत अच्छे हैं यानी 'अल्लाह का बड़प्पन' लेकिन चीज़ों के ज़रा सा उलट जाने से नतीजा कुछ का कुछ निकल आता है. यहूदी किताबों के अनुसार शैतान अल्लाह का ख़ास फ़रमाबरदार फ़रिश्ता है, और अल्लाह ने लोगों को आज़माने, मज़बूत करने और तरक़्क़ी देने का काम ख़ास तौर पर उसके सुपुर्द कर रखा है. इसी तरह का काम हिन्दू रिवायतों में नारद से लिया गया है. नारद के मानी

خودی اور خدا

(ڈاکٹر بھگوان داس)

اِس سے پہلے کے لیکھ میں ہم آتما اور پرماتما یعنی روح اور خدا دونوں کے حقیقی وجود کے ایک ہونے کی بات کہہ چکے ہیں ۔ اِسی کا نام ادویت واد یعنی وحدۃالوجود ہے ۔ آدمی کا یہ محسوس کرنا کہ وہ ایشور ہی کا ایک انش ہے اُس کی روح اُس نور کل (جیوتر مئے) کی ہی ایک چنگاری ہے یا وجود کے اُسی سمندر کی ایک بوند ہے' بہت بڑی اور اونچی بات ہے اور یہی عین حقیقت ہے' لیکن ایک دوسری نگاہ سے اِس وچار کے ساتھ ایک بہت بڑا خطرہ لگا ہوا ہے ۔ یہ وچار جتنا لابھدائیک ہو سکتا ہے اُتنا ہی بلکہ اُس سے ادھک ہانیکر بھی ہو سکتا ہے ۔ ہر آدمی کے اندر دو طرح کا اپنا پن ہوتا ہے' ایک اُسکی آتما یا روح کا اپنا پن اور دوسرا اُسکے جسم (شریر) اندریوں اور واسناؤں کا اپنا پن ۔ ہر آدمی کے اندر اِن دونوں میں برابر کھینچاتانی ہوتی رہتی ہے ۔ یہی کھینچاتانی خدا اور خودی' پرمارتھ اور سوارتھ کے بیچ کی لگاتار کھینچاتانی ہے ۔ ڈر اِس بات کا ہے کہ آدمی خدا کے ساتھ اپنی ایکتا کو محسوس کرتے کرتے کہیں جان بوجھکر یا انجانے میں اندریوں یعنی نفس امارہ کے ساتھ اپنے کو ایک نہ مان بیٹھے ۔ اگر ایسا ہوا تو وہ اپنے بھیتر خدا کی جگہ شیطان کو لا بیٹھائے گا اور بربادی کے راستے پر چل پڑے گا ۔ روحانی سچائیوں کو سمجھنے اور انوبھو کرنے کے لئے خودی کو جیت کر خدا کو اُسکی جگہ دینا ضروری ہے ۔ اس کے لئے اندریوں یعنی نفس پر قبضہ حاصل کرنا ضروری ہے ۔

آدمی کے اندر کی اِسی کھینچاتانی کو اپنشدوں میں اندر اور ویروچن کی کہانی کے روپ میں بیان کیا گیا ہے ۔ عیسائی کتابوں اور مسلم روایتوں میں اِسی کو عزازیل یعنی شیطان کی گراوٹ کے روپ میں بیان کیا گیا ہے ۔ عزازیل شیطان کا نام ہے ۔ عزازیل سب فرشتوں کا اُستاد تھا ۔ عزازیل شبد کے معنی بھی بہت اچھے ہیں یعنی ' اللہ کا بڑاپنا' لیکن چیزوں کے ذرا سا اُلٹ جانے سے نتیجہ کچھ کا کچھ نکل آتا ہے۔ یہودی کتابوں کے انوسار شیطان اللہ کا خاص فرمابردار فرشتہ ہے' اور اللہ نے لوگوں کو آزمانے' مضبوط کرنے اور ترقی دینے کا کام خاص طور پر اُس کے سپرد کر رکھا ہے ۔ اِسی طرح کا کام ہندو روایتوں میں نارد سے لیا گیا ہے ۔ نارد کے معنی

झन झन झन झन झनका देगी हाथों की ज़ंजीर
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन कर लेंगे तसख़ीर
तदबीरों से अपनी 'नौकर' बदलेंगे तक़दीर

बदलेंगे तक़दीर रे साथी बदलेंगे तक़दीर
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

दुनिया की हर शै पर होगा जनता का अधिकार
ठंडा पड़ जाएगा इक दिन इन सब का व्योपार
शैतानों का राज मिटाने आएंगे अवतार

आएंगे अवतार रे साथी आएंगे अवतार
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

घन बरसेगा कुटिया कुटिया झम झम झम झम झाम
हिन्दू मुसलिम सिख इसाई हों या पस्त अक़वाम
मंदिर एक किस्म का होगा जपने को हर नाम

जपने को हरनाम रे साथी जपने को हरनाम
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

सारे जग में लागू होंगे प्रभु के अहकाम
एक तरीक़े पर बोलेगी दुनिया हर हर नाम
साक़ी एक सुराही एक, होगा एक ही जाम

होगा एक ही जाम रे साथी हुगा एक ही जाम
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

جھن جھن جھن جھن جھنکیگی ہاتھوں کی زنجیر
پورب پچھم اُتر دکھن کرلینگے تسخیر
تدبیروں سے اپنی 'نوکر' بدلینگے تقدیر

بدلینگے تقدیر رے ساتھی بدلینگے تقدیر
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

دنیا کی ہر شے پر ہوگا جنتا کا ادھیکار
ٹھنڈا پڑ جائیگا اک دن ان سب کا بیوپار
شیطانوں کا راج مٹانے آئینگے اوتار

آئینگے اوتار رے ساتھی آئینگے اوتار
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

گھن برسیگا کٹیا کٹیا جھم جھم جھم جھم جھام
ہندو مسلم سکھ عیسائی ہوں یا پست اقوام
مندر ایک قسم کا ہوگا جپنے کو ہر نام

جپنے کو ہر نام رے ساتھی جپنے کو ہر نام
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

سارے جگ میں لاگو ہونگے پربھو کے احکام
ایک طریقے پر بولیگی دنیا ہر ہر نام
ساقی ایک صراحی ایک' ہوگا ایک ہی جام

ہوگا ایک ہی جام رے ساتھی ہوگا ایک ہی جام
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

घन—बादल, सरमायादारी—पूंजीवाद, तसख़ीर—जीत, शै—चीज़, पस्त अक़वाम—अछूत, अहकाम—हुक्म

گھن—بادل' سرمایہداری—پونجی واد' تسخیر—جیت' شے—چیز' پست اقوام—اچھوت' احکام—حکم۔

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द 12 अप्रैल, सन् '52 नम्बर 4

जात आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جلد 12 اپریل، سن '52 نمبر 4

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ھندستانی بولی
'نیا ھند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

चलेगा कब तक अत्याचार

(भाई नौसर कमदानी)

अन्याय के बादल आए, छाए घन, घनघोर
बेबस जनता की नगरी में कूदे धम धम चोर
मरी इज्जत हलकी करने खर्चे तन मन जोर

खर्चे तन मन जोर रे साथी खर्चे तन मन जोर
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार.

ीने कपड़ा, छीने रोटी, सब सरमायादार
रो कर परलोक सिधारे बेबस और नाचार
गें रोटी तो गिन गिन कर मारे है सरकार

ारे है सरकार रे साथी मारे है सरकार
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार.

ाकों की मस्ती में आखिर एक दिन होकर चूर
गारे आहों के लेकर उठेंगे मजबूर
मायादारी के सर को कुचलेंगे मजदूर

कुचलेंगे मजदूर रे साथी कुचलेंगे मजदूर
कब तक अत्याचार चलेगा कब तक अत्याचार

तिजोरी और खजाने, तहखाने रम ढोल
बेबस, भूखे नंगे कर देंगे सब गोल
...एगा उस दिन आखिर सारा ढोल का पोल

[illegible] रे साथी सारा ढोल का पोल
[illegible] कब तक अत्याचार

چلیگا کب تک اتیاچار

(بھائی نوتو کمدانی)

انیائے کے بادل آئے، چھائے گھن، گھن گھور
بے بس جنتا کی نگری میں کودے دھم دھم چور
ھمری عزت ھلکی کرنے خرچے تن من زور

خرچے تن من زور رے ساتھی خرچے تن من زور
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

چھینے کپڑا، چھینے روٹی، سب سرمایہ‌دار
رو رو کر پرلوک سدھارے بے بس اور ناچار
مانگیں روٹی تو گن گن کر مارے ھے سرکار

مارے ھے سرکار رے ساتھی مارے ھے سرکار
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

والوں کی مستی میں آخر ایک دن ھوکر چور
انگارے آھوں کے لیکر اٹھینگے مجبور
سرمایہ‌داری کے سر کو کچلینگے مزدور

کچلینگے مزدور رے ساتھی کچلینگے مزدور
کب تک اتیاچار چلیگا کب تک اتیاچار

بھیلک تجوری اور خزانے، تہخانے دم ڈھول
بے بس بے کس، بھوکے ننگے کر دینگے سب گول
کھل جائیگا اُس دن آخر سارا ڈھول کا پول —

سارا ڈھول کا پول رے ساتھی سارا ڈھول کا پول

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अप्रैल 1952

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اپریل 1952

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد.

नया हिन्द

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, महमूद अहमद 'हुनर'

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، محمود احمد 'ہنر'

* * * * *

नम्बर के ख़ास लेख

हमारी राय—

نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے—

…तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — …انی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

अप्रैल 1952 اپریل

कीमत दस आना

हमारी नई किताब

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर ज. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जाएगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

आज हम योरप और अमरीका के लोगों को एक तरफ़ अपने को ईसा का पैरो कहते और दूसरी तरफ़ कमज़ोर क़ौमों को ग़ुलाम बनाने के लिये एटम बम और हाइड्रोजन बम की रचना करते देख सोचने लगते हैं कि क्या ईसाई धर्म में यह सब ज़ुल्म और नाइन्साफ़ी जायज़ है ? लेकिन इस किताब को पढ़ कर इस तरह के सारे भ्रम दूर हो जाएंगे और इंजील की पवित्र तालीम अपने सही रूप में पूरे तौर पर आपके सामने आ जाएगी.

यह किताब कुमारप्पा जी ने सन 1944 में जबलपुर जेल में लिखी थी. इसके बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की राय है—

> "मैं अपने अनुभव के बल पर कह सकता हूँ कि प्रोफ़ेसर कुमारप्पा ने इन सफ़ों में गास्पेल (इंजील) का जो मतलब लगाया है वह सच्चा और सही है..."

महात्मा जी ने यह भी कहा था कि—

> "हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े ... "

अंगरेज़ी में इस किताब के कई एडीशन निकल चुके हैं. अब यह इसका सरल और बामुहावरा हिन्दुस्तानी अनुवाद निकल रहा है. किताब के आख़ीर में 'ईसा के जीवन के कुछ क़िस्से' देकर अनुवादक ने इसकी शोभा और भी बढ़ा दी है.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہماری نئی کتاب

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کماریپا .

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے .

آج ہم یورپ اور امریکہ کے لوگوں کو ایک طرف اپنے کو عیسیٰ کا پیرو کہتے اور دوسری طرف کمزور قوموں کو غلام بنانے کے لئے ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم کی رچنا کرتے دیکھ سوچنے لگتے ہیں کہ کیا عیسائی دھرم میں یہ سب ظلم اور ناانصافی جائز ہے ؟ لیکن اِس کتاب کو پڑھکر اِس طرح کے سارے بھرم دور ہوجائیں گے اور انجیل کی پوتر تعلیم اپنے صحیح روپ میں پورے طور پر آپ کے سامنے آجائیگی .

یہ کتاب کماریپا جی نے سن 1944 میں جبل پور جیل میں لکھی تھی . اِسکے بارے میں راشٹر پتا مہاتما گاندھی کی رائے ہے—

> "میں اپنے انوبھو کے بل پر کہہ سکتا ہوں کہ پروفیسر کماریپا نے ان صفحوں میں گاسپل (انجیل) کا جو مطلب لگایا ہے وہ سچا اور صحیح ہے........"

مہاتما جی نے یہ بھی کہا تھا کہ—

> "ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے ......"

انگریزی میں اِس کتاب کے کئی ایڈیشن نکل چکے ہیں . اب یہ اِس کا سرل اور بامحاورا ہندستانی انوواد نکل رہا ہے . کتاب کے آخیر میں 'عیسیٰ کے جیون کے کچھ قصے' دیکر انوادک نے اسکی شوبھا اور بھی بڑھادی ہے .

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد .

(1) [illegible] हिन्दुस्तानी कल्चर का बढ़ाना, फैलाना [illegible]र [illegible] जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) [illegible] फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों [illegible]रा [illegible].

(3) [illegible] घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, [illegible] के सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फिर्क़ों में [illegible] मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा; [illegible]स प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल [illegible]; [illegible] बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; [illegible]क्रेटरी—[illegible] सुन्दरलाल.

[illegible] बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० [illegible]र, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम[illegible]न्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम [illegible]कारा [illegible].

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

नोट—[illegible] के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस [illegible] कर दी गई है. "नया हिन्द" [illegible] जो गाहक [illegible] पाई [illegible] लिये है [illegible] मेम्बर बना लिया जायगा. [illegible] की लिखी हुई [illegible] [illegible] की होगी [illegible] [illegible]

ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا پھیلانا [illegible] جس میں سب هندستانی شامل هوں .

[illegible] پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں [illegible] چھاپنا .

[illegible] پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، [illegible] کے سب مذهبوں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں [illegible] میل بڑھانا .

—:○:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ [illegible] پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . [illegible] باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ [illegible]کری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید [illegible]ان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. [illegible]، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم [illegible]چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش [illegible]وال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری، هندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے [illegible] ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ [illegible] ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی [illegible] والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو [illegible] کی ہوئی منگوا سکیں گے یا [illegible]

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्न दास

इस पुस्तक में सन 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिकता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिंदुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रिया मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया.

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मजदूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आप के दिल गहराइयों को छुयेगी.

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द. बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

فرقہ‌بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصانوں کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے۔

سندر جلد۔ اچھا کاغذ۔ دو سو صفحے۔ قیمت دو روپیہ۔

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی۔ راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریہ مٹیں گی۔

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ۔

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے۔ اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل گہرائیوں کو چھوئیگی۔

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ سندر جلد۔ بڑھیا کاغذ۔ عمدہ چھپائی۔ دام صرف تین روپیہ۔

ملنے کا پتہ۔

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الٰہ آباد۔

गांधी बाबा

लेखक—बेगम कुदसिया जैदी.

बच्चों के दिल को हरने वाली, कहानियों की शकल में महात्मा गांधी की यह नन्हीं सी जीवनी पढ़ते ही बनता है. इसमें आप देखेंगे कि किस तरह सीधे सादे ढंग से, मां-दादी-नानी अपने बच्चों के दिल पर, बात की बात में, गांधी बाबा की पूरी तसवीर नक्श कर देती हैं.

अपने ढंग की हिन्दी में लाजवाब किताब, क़रीब सत्तर सफ़े, रंग-बिरंगी छपाई, मोटा-खुबसुरत काग़ज़, बीसियों रंगीन तसवीरें, मज़बूत सुन्दर जिल्द, दाम सिर्फ़ तीन रुपये.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांग्रेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिये अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधीजी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिये इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

लेखक—श्री रतन लाल बंसल.

उन बहादुरों की कहानियाँ जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देशभक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاندھی بابا

لیکھک — بیگم قدسیہ زیدی

بچوں کے دل کو ہرنے والی' کہانیوں کی شکل میں مہاتما گاندھی کی یہ ننھی سی جیونی پڑھتے ہی بنتا ہے۔ اس میں آپ دیکھیں گے کہ کسطرح سیدھے سادے ڈھنگ سے ماں دادی نانی اپنے بچوں کے دل پر' بات کی بات میں' گاندھی بابا کی پوری تصویر نقش کر دیتی ہیں۔

اپنے ڈھنگ کی ہندی میں لاجواب کتاب' قریب ستر صفحے' رنگ برنگی چھپائی' موٹا خوبصورت کاغذ' بیسیوں رنگین تصویریں' مضبوط سندر جلد' دام صرف تین روپے۔

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی۔ یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک انقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح ان کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے۔

پینتیس پیج کی کتاب' دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

لیکھک — شری رتن لال بنسل

ان بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی۔ دام صرف ڈھائی روپیہ۔

مسلم دیش بھکت

سمپادک—شری رتن لال بنسل

ان مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی۔ کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145 'مٹھی گنج' الہ آباد

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग १५ ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब ५०० आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरह दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक बर्नन. इस छोटीसी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिये ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

لیکھک — پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں، گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ ۱۵ خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب ۵۰۰ آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ۔

ہندو مسلم ایکتا

اس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے۔

سو صفحے کی کتاب۔ قیمت صرف بارہ آنے۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا۔

قیمت بارہ آنے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھیانکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں۔ قیمت چار آنے۔

بنگال اور اُس سے سبق

اس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے۔ قیمت صرف دو آنے۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायगी. पूरी जानकारी के लिये लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन् 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंग्रेज़ी राज' के लेखक पं० सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़ लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

चीन की आवाज़

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नए चीन ने अपने नए लोकराज की दूसरी साल गिरह मनाई थी. ख़ुशी के उस मौक़े पर चीन की कई संस्थाओं की दावत पर हिन्दुस्तान से पंडित सुन्दरलाल की सिदारत में एक मिशन भी गया था जिसने हिंदुस्तान की आम जनता की तरफ़ से शिरकत की.

चीन में इस मिशन का बहुत शानदार और ज़ोरदार स्वागत किया गया. पिछले दो बरस में चीन के रहने वालों ने जो किया उसकी मिसाल इतिहास में ढूंढने पर मुश्किल से ही मिल सकती है. लेकिन उन्होंने क्या किया—इसकी झलक आपको इस छोटी-सी किताब में मिलेगी.

चालीस पन्नों से ऊपर की किताब, दाम सिर्फ़ चार आना.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठी गंज, इलाहाबाद.

ھندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلر کو خاص رعایت دی جائیگی. پوری جانکاری کے لئے لکھئے.

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا.

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندر لال دوارا مول انگریزی سے انووادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنّے. کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

چین کی آواز

لیکھک—پنڈت سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین نے اپنے نئے لوک راج کی دوسری سالگرہ منائی تھی . خوشی کے اُس موقعے پر چین کی کئی سنستھاؤں کی دعوت پر ہندستان سے پنڈت سندر لال کی صدارت میں ایک مشن بھی گیا تھا جس نے ہندستان کی عام جنتا کی طرف سے شرکت کی.

چین میں اِس مشن کا بہت شاندار اور زوردار سواگت کیا گیا . پچھلے دو برس میں چین کے رہنے والوں نے جو کیا اُس کی مثال اِتہاس میں ڈھونڈنے پر مشکل سے ہی مل سکتی ہے. لیکن اُنہوں نے کیا کیا—اِس کی جھلک آپ کو اِس چھوٹی سی کتاب میں ملے گی .

چالیس پنّوں سے اوپر کی کتاب دام صرف چار آنہ .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد.

ने जनरल च्यांग काई शेक की मदद की और फ़ारमूसा में अब भी उनकी मदद कर रहा है. लिहाज़ा हिन्दुस्तान को मदद देना या यह "दया" दिखाना राजनीति से ख़ाली नहीं है.

3. यहां हमें अपने देश की मशहूर मसल याद आ रही है—आम के आम गुठलियों के दाम. सब जानते हैं कि अमरीका में साइन्स की दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी हो रही है. आज एक मशीन हज़ारों लाखों की तादाद में तैयार होती है, कल दूसरी नई मशीन बनने पर पुरानी मशीन ख़ारिज हो जाती है. आख़िर पुराना स्टाक कहां जाये ? अगर नया माल नहीं बनाते हैं तो अमरीका के मज़दूर क्या खायें और वहां के पूंजीपतियों का गुज़ारा कैसे हो ? मशीन तो उस शैतान की तरह है जिसे या तो काम दीजिये नहीं तो वह मालिक को ही खाने को तैयार हो जाती है. इस तरह 'एड' के नाम पर पुराना माल निकल जाता है जो अपने देश में टके के मोल भी न बिकता. साथ ही साथ दूसरे देश का रुपया फांस कर उसकी गर्दन पर चढ़ बैठने का मौक़ा मिल जाता है, और एहसान मुफ़्त में रहा.

समझौता या ग़ुलामीनामा ?

इस तरह इस समझौते को राजकाजी निगाह से देखने पर पता चलता है कि यह हिन्दुस्तान के गले में फन्दा डालने की कोशिश है. हमारी समझ में नहीं आता कि इस हिन्द अमरीकी समझौते को समझौता कहें या ग़ुलामी नामा. इसमें कोई शक नहीं मालूम होता कि अगर यह समझौता पूरी तरह अमल में आया तो हिन्दुस्तान क्या आर्थिक, क्या राजकाजी, सभी पहलुओं से अमरीकी शिकंजे में जकड़ जायेगा.

अफ़सोस कि हमारी सरकार को बाहर से भीक मांग मांग कर गुज़र चलाने की आदत पड़ती जा रही है. आज कोलम्बो प्लैन के नाम पर, कल वर्ल्ड बैन्क के नाम पर, परसों पाइन्ट फ़ोर के नाम पर, फिर फ़ाइव इयर प्लान के नाम पर वग़ैरा वग़ैरा. यह आदत देश के लिये बहुत ही ख़तरनाक है. यह ऐसी आदत है जो फिर छोड़े नहीं छूटेगी और आख़री दम के साथ जायेगी. चुनाव के बाद अब नई सरकार बनने वाली है. क्या हम उम्मीद करें कि वह चेतेगी और महसूस करेगी:—

ईश्वर उनकी मदद करता है जो अपनी मदद ख़ुद करते हैं, लेकिन अमरीका (या कोई ग़ैर सरकार क्यों न हो) उनकी मदद करता है जो अपने को ग़ुलाम बनाते हैं !

6. 2. 1952. —सुरेश रामभाई

۔ جنرل چیانگ کائی شیک کی مدد کی اور فارموسا میں اب بھی اُن کی مدد کر رہا ہے ۔ لہذا ہندستان کو مدد دینا یا یہ "دیا" دکھانا راج نیتی سے خالی نہیں ہے ۔

3. یہاں ہمیں اپنے دیش کی مشہور مثل یاد رہی ہے—آم کے آم گٹھلیوں کے دام ۔ سب جانتے ہیں کہ امریکہ میں سائنس کی دن دونی رات چوگنی ترقی ہو رہی ہے ۔ آج ایک مشین ہزاروں لاکھوں کی تعداد میں تیار ہوتی ہے، کل دوسری نئی مشین بننے پر پرانی مشین خارج ہو جاتی ہے ۔ آخر پرانا اسٹاک کہاں جائے ؟ اگر نیا مال نہیں بناتے ہیں تو امریکہ کے مزدور کیا کھائیں اور وہاں کے پونجی پتیوں کا گذارا کیسے ہو ؟ مشین تو اُس شیطان کی طرح ہے جسے یا تو کام دیجئے نہیں تو وہ مالک کو ہی کھانے کو تیار ہو جاتی ہے ۔ اِس طرح 'ایڈ' کے نام پر پرانا مال نکل جاتا ہے، جو اپنے دیش میں ٹکے کے مول بھی نہ بکتا ۔ ساتھ ہی ساتھ دوسرے دیش کا روپیہ پھانس کر اُس کی گردن پر چڑھ بیٹھنے کا موقع مل جاتا ہے، اور احسان مفت میں رہا ۔

سمجھوتہ یا غلامی نامہ ؟

اِس طرح اِس سمجھوتے کو راج کاجی نگاہ سے دیکھنے پر پتہ چلتا ہے کہ یہ ہندستان کے گلے میں پھندا ڈالنے کی کوشش ہے ۔ ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ اِس ہند امریکی سمجھوتے کو سمجھوتہ کہیں یا غلامی نامہ ۔ اِس میں کوئی شک نہیں معلوم ہوتا کہ اگر یہ سمجھوتہ پوری طرح عمل میں آیا تو ہندستان کیا آرتھک، کیا راج کاجی، سبھی پہلوؤں سے امریکی شکنجے میں جکڑ جائے گا !

افسوس کہ ہماری سرکار کو باہر سے بھیک مانگ مانگ کر گذر چلانے کی عادت پڑتی جا رہی ہے ۔ آج کولمبو پلین کے نام پر، کل ورلڈ بینک کے نام پر، پرسوں پائنٹ فور کے نام پر، پھر فائیو ایئر پلان کے نام پر وغیرہ وغیرہ ۔ یہ عادت دیش کے لئے بہت ہی خطرناک ہے ۔ یہ ایسی عادت ہے جو پھر چھوڑے نہیں چھوٹے گی اور آخری دم کے ساتھ جائے گی ۔ چناؤ کے بعد اب نئی سرکار بننے والی ہے ۔ کیا ہم اُمید کریں کہ وہ چیتے گی اور محسوس کرے گی :—

ایشور اُن کی مدد کرتا ہے جو اپنی مدد خود کرتے ہیں، لیکن امریکہ (یا کوئی غیر سرکار کیوں نہ ہو) اُن کی مدد کرتا ہے جو اپنے کو غلام بناتے ہیں !

—سریش رام بھائی 6 . 2 . 1952

तक़दीर का फ़ैसला फिर हमारे या हमारी सरकार के हाथों में न रह कर अमरीकी डायरेक्टर और अमरीकी सरकार के हाथों में पहुंच गया.

इन सातों नतीजों का निचोड़ यह है कि अमरीका जो इमदाद दे रहा है वह एक पक्की लागत की पूँजी जैसी है जिसके ज़रिये वह हिन्दुस्तान में अपना आर्थिक जाल फैला कर अपने आर्थिक बड़प्पन को हमेशा के लिये बनाये रखना चाहता है. यह एक लागत की पूँजी है जिसके ज़रिये वह हिन्दुस्तान के करोड़ों ग़रीबों-नंगों के बल पर अपना आर्थिक क़िला खड़ा रखना चाहता है.

एक मिसाल से बात साफ़ हो जायेगी हांलाकि वह मिसाल ज़ियादा दूर तक नहीं जाती. आजकल हमारे यहां चाय का रिवाज बहुत बढ़ गया है और आज चाय के बिना हमारे अकसर पढ़े-लिखों का काम नहीं चलता. लेकिन यह चाय की आदत कैसे डाली गई. कुछ बरस पहले तक हिन्दुस्तान भर में चाय मुफ़्त पिलाई जाती थी और चाय की पुड़ियाँ मुफ़्त बांटी जाती थीं. पर चाय कम्पनियां चाय केवल मुफ़्त में या दान में नहीं पिला रही थीं. शुरू की मुफ़्त तक़सीम पर ख़र्च एक तरह से उनका लागत पूँजी ही थी जिस से थोड़े अरसे में दूना-चौगुना वसूल होने लग गया. या जैसे चीन में अफ़ीम का रिवाज अंगरेज़ों ने शुरू में मुफ़्त खिला खिला कर डाला था—इसी तरह यह 'एड' अमरीका की तरफ़ से अपने व्यापार और सामान के लिये एक ऐसा ख़र्च है जिसके बिना आगे की आमदनी का रास्ता नहीं खुलता.

अब हम राजकाजी नतीजों पर विचार करें.

राजकाजी नतीजे.

1. इस समझौते के दोनों मक़सदों को देखने से फ़ौरन ख़याल पैदा होता है कि हिन्दुस्तान की सरकार ने दुनिया के अन्दर क़ौमी मनमुटाव या मेल मिलाप को उसी चश्मे से देखना मन्ज़ूर कर लिया जो अमरीकी सरकार की आंखों पर चढ़ा है.

2. कौन नहीं जानता कि यह मदद अमरीका के ख़ज़ाने से पहली मदद नहीं है. अमरीका कई बरस से योरप के जुदा जुदा देशों को 'मार्शल एड' नाम से मदद दे चुका है. योरप में अपना रंग जमा लेने के बाद अब अमरीका एशिया—ख़ास कर दक्खिन एशिया और दक्खिन पूरबी एशिया की तरफ़ मुड़ रहा है. फिर, एशिया के इसी हिस्से में सही या ग़लत, उसे कम्यूनिज़्म का होवा छाया दीख रहा रहा है जिसकी वजह से अमरीका महसूस करता है कि अपने ढंग की "लोकशाही" के बचाने के लिये हर मुमकिन क़दम उठाये. दुनिया को मालूम है कि चीन में इसी "लोकशाही" (?) को बचाने के लिये अमरीका

تقدیر کا فیصلہ پھر ہمارے یا ہماری سرکار کے ہاتھوں میں نہ رہکر امریکی ڈائرکٹر اور امریکی سرکار کے ہاتھوں میں پہونچ گیا .

اِن ساتوں نتیجوں کا نچوڑ یہ ہے کہ امریکہ جو امداد دے رہا ہے وہ ایک پکی لاگت کی پونجی جیسی ہے جس کے ذریعے وہ ہندستان میں اپنا آرتھک جال پھیلا کر اپنے آرتھک بڑپن کو ہمیشہ کے لئے بنائے رکھنا چاہتا ہے . یہ ایک لاگت کو پونجی ہے جس کے ذریعے وہ ہندستان کے کروڑوں غریبوں ننگوں کے بل پر اپنا آرتھک قلعہ کھڑا رکھنا چاہتا ہے .

ایک مثال سے بات صاف ہو جائے گی حالانکہ وہ مثال زیادہ دور تک نہیں جاتی · آجکل ہمارے یہاں چائے کا رواج بہت بڑھ گیا ہے اور آج چائے کے بنا ہمارے اکثر پڑھے لکھوں کا کام نہیں چلتا . لیکن یہ چائے کی عادت کیسے ڈالی گئی . کچھ برس پہلے تک ہندستان بھر میں چائے مفت پلائی جاتی تھی اور چائے کی پڑیاں مفت بانٹی جاتی تھیں . پر چائے کمپنیاں چائے کیول مفت میں یا دان میں نہیں پلا رہی تھیں . شروع کی مفت تقسیم پر خرچ ایک طرح سے اُن کا لاگت پونجی ہی تھی جس سے تھوڑے عرصے میں دونا چوگنا وصول ہونے لگ گیا . یا جیسے چین میں افیم کا رواج انگریزوں نے شروع میں مفت کھلا کھلا کر ڈالا تھا—اِسی طرح یہ 'ایڈ' امریکہ کی طرف سے اپنے بیوپار اور سامان کے لئے ایک ایسا خرچ ہے جس کے بنا آگے کی آمدنی کا راستہ نہیں کھلتا .

اب ہم راج کاجی نتیجوں پر وچار کریں .

راج کاجی نتیجے .

1. اِس سمجھوتے کے دونوں مقصدوں کو دیکھنے سے فوراً خیال پیدا ہوتا ہے کہ ہندستان کی سرکار نے دنیا کے اندر قومی من مٹاو یا میل ملاپ کو اُسی چشمے سے دیکھنا منظور کر لیا جو امریکی سرکار کی آنکھوں پر چڑھا ہے .

2. کون نہیں جانتا کہ یہ مدد امریکہ کے خزانے سے پہلی مدد نہیں ہے . امریکہ کئی برس سے یورپ کے جدا جدا دیشوں کو 'مارشل ایڈ' نام سے مدد دے چکا ہے. یورپ میں اپنا رنگ جما لینے کے بعد اب امریکہ ایشیا —خاص کر دکھن ایشیا اور دکھن پوربی ایشیا کی طرف مڑ رہا ہے . پھر، ایشیا کے اِسی حصے میں صحیح یا غلط، اسے کمیونزم کا ہوا چھایا دیکھ رہا ہے جس کی وجہ سے امریکہ محسوس کرتا ہے کہ اپنے ڈھنگ کی "لوک شاہی" بچانے کے لئے ہر ممکن قدم اٹھائے . دنیا کو معلوم ہے کہ چین میں اِسی "لوک شاہی" (؟) کو بچانے کے لئے امریکہ

2. यह अमरीकी जो स्याह-सफ़ेद करना चाहेंगे उसमें हिन्दुस्तान का कोई आदमी या संस्था या सरकार दख़ल अन्दाज़ी नहीं कर सकेगी.

3. तीसरी शर्त से ज़ाहिर होता है कि अमरीका के पांच करोड़ डालर में से एक छदाम भी अमरीकी सरकार की मरज़ी के ख़िलाफ़ ख़र्च नहीं किया जा सकेगा. यह वह देनगी या दान है जिसे देकर दाता अपने को मुक्त नहीं समझ लेता, बल्कि वह दान दानी के क़ब्ज़े में ही रहता है जिसे वह अपने निजी पैसे की तरह, अपने मन के मुताबिक़, लेकिन दूसरे के मत्थे मढ़ कर, ख़र्च करता है.

4. चौथी शर्त के लिहाज़ से हिन्दुस्तान के निजी फ़न्ड 'बी' के ऊपर भी ख़र्च का सारा अख़्तियार पांच साल तक—या जब तक यह समझौता रहे—अमरीका का हो गया. दूसरे लफ़्ज़ों में, पराया पैसा क्या मिला अपना पैसा भी फंस गया.

5. पांचवीं शर्त में बताया गया है कि फ़न्ड 'ए' से जो हिस्सा या हिस्से सूबों की सरकारों या दूसरे लोगों को दिये जायेंगे वह देनगी या उधारी के रुपए होंगे. लेकिन यह नहीं बताया गया कि उधारी वाले हिस्से की वसूलयाबी की सूरत क्या होगी. इसके माने हैं कि जो पाबन्दियां या शर्तें अमरीकी सरकार इस सिलसिले में लागू करना चाहे वह कर सकती है और फिर उनका जो भी नतीजा हो.

6. यह सबसे संगीन और ख़तरनाक शर्त है. इससे मतलब यह निकलता है कि अमरीकी हकूमत हमारे देश में देख भाल कर, अपनी मरज़ी के मुताबिक़, इस तरह के नये काम-धंदे खोल, बना या बिगाड़ सकेगी जिससे उसको अपने पक्के माल की खपत के लिये या अपने कारख़ानों के वास्ते कच्चे माल के लिये, हमेशा को, बज़ार या साधन मिल जायें और अमरीकी आर्थिक संगठन को कभी किसी तरह की कोई अड़चन न हो. दूसरे लफ़्ज़ों में इस शर्त की मुराद यह है कि हिन्दुस्तान की खेती, हिन्दुस्तान के उद्योग-धंदे, हिन्दुस्तान की कला-दस्तकारी, हिन्दुस्तान की तिजारत-व्यापार, हिन्दुस्तान के बाज़ार—और हिन्दुस्तान के घर—हर पहलू से, अमरीका के मुहताज बन जायें.

7. और सातवीं शर्त का मन्शा यह है कि जहां जहां पांव पड़े संतन के तहां तहां बंटाधार. यानी, हमारे देश के फिर-बनाव या फिर-बसाव या बेहतरी-तरक़्क़ी के किसी काम में अमरीका का अगर धेला भी ख़र्च हुआ तो वह काम, वह प्रोग्राम और उस काम में लगा हमारा पैसा और उसमें काम करने वाले आदमी इन सबकी

2. یہ امریکی جو سیاہ سفید کرنا چاهینگے اُس میں هندستان کا کوئی آدمی یا سنستها یا سرکار دخل اندازی نہیں کر سکیگی .

3. تیسری شرط سے ظاهر هوتا ہے کہ امریکہ کے پانچ کروڑ ڈالر میں سے ایک چھدام بھی امریکی سرکار کی مرضی کے خلاف خرچ نہیں کیا جا سکیگا . یہ وہ دینگی یا دان ہے جسے دیکر داتا اپنے کو مکت نہیں سمجھ لیتا' بلکہ یہ دان دانی کے قبضے میں ہی رهتا ہے جسے وہ اپنے نجی پیسے کی طرح' اپنے من کے مطابق' لیکن دوسرے کے متھے مڑھکر' خرچ کرتا ہے .

4. چوتھی شرط کے لحاظ سے هندستان کے نجی فنڈ ' بی ' کے اوپر بھی خرچ کا سارا اختیار پانچ سال تک—یا جب تک یہ سمجھوتہ رہے—امریکہ کا هوگیا . دوسرے لفظوں میں' پرایا پیسہ کیا ملا اپنا پیسہ بھی پھنس گیا .

5. پانچویں شرط میں بتایا گیا ہے کہ فنڈ ' اے ' سے جو حصہ یا حصے صوبے کی سرکاروں یا دوسرے لوگوں کو دیئے جائینگے وہ دینگی یا اُدھاری کے روپے هونگے . لیکن یہ نہیں بتایا گیا کہ اُدھاری والے حصے کی وصولیابی کی صورت کیا هوگی' اِس کے معنی هیں کہ جو پابندیاں یا شرطیں امریکی سرکار اس سلسلے میں لاگو کرنا چاہے وہ کر سکتی ہے اور پھر اُن کا جو بھی نتیجہ هو .

6. یہ سب سے سنگین اور خطرناک شرط ہے . اِس سے مطلب یہ نکلتا ہے کہ امریکی حکومت همارے دیش میں دیکھ بھال کر' اپنی مرضی کے مطابق' اس طرح کے نئے کام دھندے کھول' بنا یا بگاڑ سکیگی جس سے اُس کو اپنے پکے مال کی کھپت کے لئے یا اپنے کارخانوں کے واسطے کچے مال کے لئے' همیشہ کو' بازار یا سادھن مل جائیں اور امریکہ آرتھک سنگٹھن کو کبھی کسی طرح کی کوئی اڑچن نہ هو' دوسرے لفظوں میں اِس شرط کی مراد یہ ہے کہ هندستان کی کھیتی' هندستان کے اُدیوگ دھندے' هندستان کی کلا دستکاری' هندستان کی تجارت بیاپار' هندستان کے بازار' اور هندستان کے گھر' هر پہلو سے امریکہ کے محتاج بن جائیں .

7. اور ساتویں شرط کا منشا یہ ہے کہ جہاں جہاں پاؤں پڑے سنتن کے تہاں تہاں بنٹا دھار . یعنی' همارے دیش کے پھر بساؤ یا بہتری ترقی کے کسی کام میں امریکہ کا دھیلا بھی خرچ هوا تو وہ کام' وہ پروگرام اور اس کام میں لگا همارا پیسہ اور اس میں کام کرنےوالے آدمی—اِن سب کی

सरकार की तरफ़ से एक अफ़सर और दूसरी तरफ़ से डायरेक्टर साहब यह काम करेंगे. वह फ़न्ड उन्हीं कामों में ख़र्च किया जा सकेगा जिन पर दोनों की एक राय हो. इसी तरह 'बी' फ़न्ड का भी कोई हिस्सा बिना दोनों की एक राय के ख़र्च नहीं किया जा सकेगा.

5. फ़न्ड 'ए' में से जो पैसा ख़र्च के वास्ते दिया जायेगा वह देनगी (Grant) या उधारी (Loan) दोनों रूप में दिया जायेगा. लेकिन यह कहीं नहीं बताया गया है कि यह उधारी किस तरह से वसूल की जायेगी.

6. अमरीकी सरकार जो मदद करेगी और उसके सिलसिले में जो प्रोग्राम वग़ैरा होंगे, इन में जो पैसा लगाया जायेगा या इनकी वजह से जो आमदनी होगी उस में से किसी पर या उसके ख़िलाफ़ कोई आदमी, कारख़ाना या सरकार किसी तरह की कोई क़ानूनी या ग़ैर-क़ानूनी कार्रवाई नहीं कर सकेगी.

7. रुपया ख़र्च करने के लिये हिन्द सरकार एक सेन्ट्रल कमेटी बनायेगी जिसमें सात आदमियों से ज़ियादा न होंगे. लेकिन इस कमेटी की किसी सिफ़ारिश पर तब तक अमल नहीं किया जायेगा जब तक अमरीकी डायरेक्टर की रज़ामन्दी न मिल जाये.

काम.

इस समझौते में यह नहीं बताया गया है कि यह रुपया किन ख़ास ख़ास कामों में ख़र्च किया जायेगा. लेकिन जो चर्चा अख़बारों में चल रही है उससे पता चलता है कि यह दो तरह के कामों में ख़र्च किया जायेगा. पहले, अनाज और दूसरी चीज़ों की पैदावार बढ़ाना, दूसरे, देश में जगह जगह बस्तियां बसाना यानी कम्यूनिटी स्कीमें क़ायम करना. इस तरह की एक बस्ती अमरीकी इन्तज़ाम में उत्तर प्रदेश के इटावा ज़िले में क़ायम करने की ख़बर भी छपी है. उसके नमूने पर ही—कहा गया है—सारे देश में बस्तियां बसाई जायेंगी लेकिन जो समझौता इस वक़्त हमारे सामने है उसमें यह बातें क़लमबन्द नहीं की गई हैं. इसलिये हम इस पर कुछ न कह कर आगे बढ़ें.

आर्थिक नतीजे.

ऊपर हमने देखा कि इस समझौते के मक़सद क्या हैं और इसकी शर्तें क्या हैं. अब हम इन शर्तों से पैदा होने वाले आर्थिक नतीजों पर विचार करते हैं.

पहली व दूसरी शर्तों से साफ़ ज़ाहिर होता है—

1. अब हमारे देश में अमरीकी व्यापारी माहिरों का एक ऐसा तांता लग जायेगा जैसा अब तक कभी नहीं हुआ.

سرکار کی طرف سے ایک افسر اور دوسری طرف سے ڈائریکٹر صاحب یہ کام کرینگے . یہ فنڈ انہیں کاموں میں خرچ کیا جاسکیگا جن پر دونوں کی رائے ایک ہو . اسی طرح 'بی' فنڈ کا بھی کوئی حصہ بنا دونوں کی ایک رائے کے خرچ نہیں کیا جا سکیگا .

5. فنڈ 'اے' میں سے جو پیسہ خرچ کے واسطے دیا جائیگا وہ دین کی (Grant) یا ادھاری (Loan) دونوں روپ میں دیا جائیگا . لیکن یہ کہیں نہیں بتایا گیا ہے کہ یہ ادھاری کس طرح سے اصول کی جائیگی .

6. امریکی سرکار جو مدد کرے گی اور اس کے سلسلے میں جو پروگرام وغیرہ ہونگے' ان میں جو پیسہ لگایا جائیگا یا ان کی وجہ سے جو آمدنی ہوگی اس میں سے کسی پر یا اس کے خلاف کوئی آدمی' کارخانہ یا سرکار کسی طرح کی کوئی قانونی یا غیر قانونی کارروائی نہیں کر سکیگی .

7. روپیہ خرچ کرنے کے لئے ہند سرکار ایک سینٹرل کمیٹی بنائے گی جس میں سات آدمیوں سے زیادہ نہ ہونگے . لیکن اس کمیٹی کی کسی سفارش پر تب تک عمل نہیں کیا جائیگا جب تک امریکی ڈائرکٹر کی رضا مندی نہ مل جائے .

کام .

اس سمجھوتے میں یہ نہیں بتایا گیا ہے کہ یہ روپیہ کن خاص خاص کاموں میں خرچ کیا جائیگا . لیکن جو چرچہ اخباروں میں چل رہی ہے اس سے پتہ چلتا ہے کہ یہ دو طرح کے کاموں میں خرچ کیا جائیگا . پہلے' اناج اور دوسری چیزوں کی پیداوار بڑھانا' دوسرے' دیش میں جگہ جگہ بستیاں بسانا یعنی کمیونٹی اسکیمیں قائم کرنا . اس طرح کی ایک بستی امریکی انتظام میں اتر پردیش کے اٹاوہ ضلعہ میں قائم کرنے کی خبر بھی چھپی ہے . اس کے نمونے پرہی—کہا گیا ہے—سارے دیش میں بستیاں بسائی جائینگی . لیکن جو سمجھوتہ اس وقت ہمارے سامنے ہے اس میں یہ باتیں قلمبند نہیں کی گئی ہیں . اس لئے ہم اس پر کچھ نہ کہکر آگے بڑھیں .

آرتھک نتیجے .

اوپر ہم نے دیکھا کہ اس سمجھوتے کے مقصد کیا ہیں اور اسکی شرطیں کیا ہیں . اب ہم ان شرطوں سے پیدا ہونے والے آرتھک نتیجوں پر وچار کرتے ہیں—

پہلی و دوسری شرطوں سے صاف ظاہر ہوتا ہے—

1. اب ہمارے دیش میں امریکی بیوپاری ماہروں کا ایسا تانتا لگ جائیگا جیسا اب تک کبھی نہیں ہوا .

करेगी और अमरीकी सरकार की तरफ़ से टैकनिकल कोआपरेशन ऐडमिनिस्ट्रेशन नाम की निज़ामत करेगी. इस निज़ामत का एक नुमायन्दा हिन्दुस्तान में रहेगा जो डायरेक्टर कहलायेगा और वही अमरीकी सरकार की तरफ़ से सारा काम चलायेगा. इस डायरेक्टर और उसके कारिन्दों वग़ैरा को अमरीकी सरकार मुक़र्रर करेगी, जिसमें हिन्द सरकार का कोई दख़ल नहीं रहेगा. यह डायरेक्टर और उनका दल-बल अमरीकी राजदूती मिशन की तरह रहेगा, यानी जो हक़ और सहूलियतें अमरीकी सरकार के राजदूत को हमारे देश में हासिल हैं वही इन डायरेक्टर साहब को रहेंगे. दूसरे लफ़्ज़ों में, इनके किसी काम या अमल पर कोई क़ानूनी या ग़ैर क़ानूनी कार्रवाई हिन्द सरकार नहीं कर सकेगी.

2. यह निज़ामत तकनीकी प्रोग्राम को अन्जाम देने के लिये कुछ माहिरों और कारीगरों की एक टोली हिन्दुस्तान में भेजेगी. इस टोली को अमरीकी डायरेक्टर और अमरीकी सरकार चुनेगी. हिन्द सरकार का यह फ़र्ज़ होगा कि डायरेक्टर और उनकी टोली वग़ैरह को काम करने की पूरी सहूलियतें दे ताकि इस समझौते का जो मक़सद है वह पूरा किया जा सके. इस टोली के लोगों को भी वही हक़ और सुविधायें रहेंगी जो अमरीकी राजदूती मिशन के लोगों को हासिल हैं.

3. समझौते के मुताबिक़ दो ख़ज़ाने या फ़न्ड क़ायम किये जायेंगे—'ए' और 'बी'. 'ए' फ़न्ड अमरीका में रहेगा, 'बी' हिन्दुस्तान में. 'ए' फ़न्ड में 30 जून 1952 तक अमरीकी सरकार 24 करोड़ रुपया (पांच करोड़ डालर) जमा कर देगी और 'बी' फ़न्ड में हिन्द सरकार 25 करोड़ रुपये से ज़ियादा की रक़म 'ए' फ़न्ड के ख़र्च की मदद के लिये अलग रख देगी. इसके अलावा अमरीकी सरकार लगभग चालीस लाख डालर का ख़र्च अलग से बर्दाश्त करेगी. यह ख़र्च अमरीकी माहिरों पर और उन हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों या कारकुनों पर किया जायेगा जो हिन्दुस्तान के बाहर काम काज या ट्रेनिंग वग़ैरह के लिये भेजे जायेंगे. अपने यहां के ग़ैर सरकारी या निजी कारख़ानों वग़ैरा से जो मदद अमरीकी सरकार लेगी उसका ख़र्च भी फ़न्ड 'ए' या 'बी' में न पड़कर इसी मद से दिया जायेगा. फ़न्ड 'बी' में हिन्द सरकार के जमा किये हुए पैसे के अलावा दो तरह की रक़मों से इज़ाफ़ा होता रहेगा. एक उन चीज़ों की बिक्री से जो इस समझौते के मुताबिक़ अमरीका से आएंगी और बिक्री के लायक़ होंगी, दूसरे उन रक़मों की वापसी से जो फ़न्ड 'ए' से सूबों की सरकारों या निजी भारती व्योपारियों को मदद के तौर पर दी जायंगी.

4. फ़न्ड 'ए' पर देख भाल और इन्तज़ाम हिन्द और अमरीकी सरकारों का मिला जुला रहेगा. हिन्द

کریگی اور امریکی سرکار کی طرف سے ٹیکنیکل کوآپریشن ایڈمنسٹریشن نام کی نظامت کریگی ۔ اس نظامت کا ایک نمائندہ ہندستان میں رہیگا جو ڈائرکٹر کہلائیگا اور وہی امریکی سرکار کی طرف سے سارا کام چلائیگا ۔ اس ڈائرکٹر اور اُسکے کارندوں وغیرہ کو امریکی سرکار مقرر کریگی، جس میں ہند سرکار کا کوئی دخل نہیں رہیگا ۔ یہ ڈائرکٹر اور اُن کا دل بل امریکی راج دوتی مشن کی طرح رہیگا، یعنی جو حق اور سہولتیں امریکی سرکار کے راج دوت کو ہمارے دیش میں حاصل ہیں وہی ان ڈائرکٹر صاحب کو رہینگے ۔ دوسرے لفظوں میں، اِن کے کسی کام یا عمل پر کوئی قانونی یا غیر قانونی کارروائی ہند سرکار نہیں کر سکیگی ۔

2. یہ نظامت تکنیکی پروگرام کو انجام دینے کے لئے کچھ ماہروں اور کاریگروں کی ایک ٹولی ہندستان میں بھیجیگی ۔ اِس ٹولی کو امریکی ڈائرکٹر اور امریکی سرکار چنیگی ۔ ہند سرکار کا یہ فرض ہوگا کہ ڈائرکٹر اور اُن کی ٹولی وغیرہ کو کام کرنے کی پوری سہولتیں دے تاکہ اس سمجھوتے کا جو مقصد ہے وہ پورا کیا جاسکے ۔ اِس ٹولی کے لوگوں کو بھی وہی حق اور سوودھائیں رہینگی جو امریکی راجدوتی مشن کے لوگوں کو حاصل ہیں ۔

3. سمجھوتے کے مطابق دو خزانے یا فنڈ قائم کئے جائینگے—'اے' اور 'بی'. 'اے' فنڈ امریکہ میں رہیگا 'بی' ہندستان میں ۔ 'اے' فنڈ میں 30 جون 1952 تک امریکی سرکار 24 کروڑ روپیہ (پانچ کروڑ ڈالر) جمع کر دیگی اور 'بی' فنڈ میں ہند سرکار 25 کروڑ روپئے سے زیادہ کی رقم 'اے' فنڈ کے خرچ کی مدد کے لئے الگ رکھ دیگی ۔ اِس کے علاوہ امریکی سرکار لگ بھگ چالیس لاکھ ڈالر کا خرچ الگ سے برداشت کریگی یہ خرچ امریکی ماہروں پر اور اُن ہندستانی ودیارتھیوں یا کارکنوں پر کیا جائیگا جو ہندستان کے باہر کام کاج یا ٹریننگ وغیرہ کے لئے بھیجے جائینگے ۔ اپنے یہاں کے غیر سرکاری یا نجی کارخانوں وغیرہ سے جو مدد امریکی سرکار لیگی اُس کا خرچ بھی فنڈ 'اے' یا 'بی' میں نہ پڑ کر اسی مد سے دیا جائیگا ۔ فنڈ 'بی' میں ہند سرکار کے جمع کئے ہوئے پیسے کے علاوہ دو طرح کی رقموں سے اضافہ ہوتا رہیگا ۔ ایک اُن چیزوں کی بکری سے جو اس سمجھوتے کے مطابق امریکہ سے آئینگی اور بکری کے لائق ہونگی، دوسرے اُن رقموں کی واپسی سے جو فنڈ 'اے' سے صوبوں کی سرکاروں یا نجی بھارتی بیوپاریوں کو مدد کے طور پر دی جائینگی ۔

4. فنڈ 'اے' پر دیکھ بھال اور انتظام ہند اور امریکی سرکاروں کا ملا جلا رہیگا ۔ ہند

हिन्द मरीकी समझौता या गुलामी-नामा?

लन्दन के एक मशहूर और अच्छे अख़बार "न्यू स्टेट्स मैन एन्ड नेशन" ने 1951 के साल पर एक सरसरी निगाह दौड़ाते हुए कहा है कि यह साल विदेशों में अमरीकी राज व असर क़ायम होने व फैलने की शुरूआत का पहला साल है. 1952 में इस अमरीकी राज व असर ने हिन्दुस्तान में भी अपनी जड़ें जमाना शुरू कर दीं. और 5 जनवरी 1952 को एक काग़ज़ पर नई दिल्ली में अमरीका की तरफ़ से अमरीकी राजदूत ने और हिन्दुस्तान की तरफ़ से बड़े वज़ीर पंडित जवाहर लाल ने दस्तख़त किये जो हिन्द-अमरीकी समझौते के नाम से सारी दुनिया में ब्राडकास्ट किया गया है. हिन्दुस्तान के राजपति ने पार्लियामेन्ट में अपनी कल की स्पीच में इस समझौते का स्वागत किया है. इस समझौते पर राय ज़ाहिर करने के पहले यह समझ लेना ज़रूरी है कि इस समझौते के पीछे मक़सद क्या हैं यानी दोनों सरकारों ने यह समझौता क्यों किया. दूसरे यह भी जान लें कि इसकी शर्तें क्या क्या हैं.

मक़सद

यह समझौता उसी तरह के तकनीकी सहयोग और प्रोग्राम का एक हिस्सा है जिसमें 28 दिसम्बर 1950 को एक राज़ीनामा किया जा चुका है. यह राज़ीनामा 'पाइन्ट फोर एड राज़ीनामा' कहलाता है. इसके मुताबिक़ अमरीकी तकनीकी माहिरों के हिन्दुस्तान में काम करने और हिन्दुस्तानियों की अमरीका में तकनीकी तालीम व ट्रेनिंग के लिये बारह लाख डालर की मदद अमरीका ने दी थी.

1. इस नये समझौते में दोनों सरकारों ने यह इच्छा ज़ाहिर की है कि हिन्दुस्तान के समूचे आर्थिक विकास में मिल कर काम करें और इसका रफ़्तार तेज़ी के साथ बढ़े.

2. दोनों सरकारें मानती हैं कि आर्थिक विकास के मामले में दोनों देशों के बीच तकनीकी जानकारी और तरीक़ों के अदल बदल से दोनों को फ़ायदा होगा. दोनों सरकारें मानती हैं कि अन्तर क़ौमी मेलमिलाप और भाई चारे के काम में एक साथ क़दम बढ़ाने चाहियें, दुनिया में अमन क़ायम रखने के लिये दोनों मिल कर ऐसे काम करें जिनसे अन्तर क़ौमी झगड़े और मनमुटाव के कारन ख़त्म हों.

ऊपर के मक़सद को हासिल करने के लिये यह समझौता किया गया है. इसकी शर्तें यह हैं.

शर्तें

1. इस समझौते के मुताबिक़ अमल दरामद हिन्दुस्तान की सरकार की तरफ़ से एक बाक़ायदा मिनिस्ट्री

ہند امریکی سمجھوتہ یا غلامی نامہ؟

لندن کے ایک مشہور اور اچھے اخبار "نیو اسٹیٹس مین اینڈ نیشن" نے 1951 کے سال پر ایک سر سری نگاہ دوڑاتے ہوئے کہا ہے کہ یہ سال بدیشوں میں امریکی راج و اثر قائم ہونے و پھیلنے کی شروعات کا پہلا سال ہے. 1952 میں اس امریکی راج و اثر نے ہندستان میں بھی اپنی جڑیں جمانا شروع کردیں. اور 5 جنوری 1952 کو ایک کاغذ پر نئی دلی میں امریکہ کی طرف سے امریکی راج دوت نے اور ہندستان کی طرف سے بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نے دستخط کئے جو ہند امریکی سمجھوتے کے نام سے ساری دنیا میں براڈکاسٹ کیا گیا ہے. ہندستان کے راج پتی نے پارلیامنٹ میں اپنی کل کی اسپیچ میں اس سمجھوتے کا سواگت کیا ہے. اس سمجھوتے پر رائے ظاہر کرنے کے پہلے یہ سمجھ لینا ضروری ہے کہ اس سمجھوتے کے پیچھے مقصد کیا ہیں یعنی دونوں سرکاروں نے یہ سمجھوتہ کیوں کیا. دوسرے یہ بھی جان لیں کہ اِسکی شرطیں کیا کیا ہیں.

مقصد.

یہ سمجھوتہ اسی طرح کے تکنیکی سہیوگ اور پروگرام کا ایک حصہ ہے جسمیں 28 دسمبر 1950 کو ایک راضی نامہ کیا جا چکا ہے. یہ راضی نامہ 'پائنٹ فور ایڈ راضی نامہ' کہلاتا ہے. اس کے مطابق امریکی تکنیکی ماہروں کے ہندستان میں کام کرنے اور ہندستانیوں کی امریکہ میں تکنیکی تعلیم و ٹریننگ کے لئے بارہ لاکھ ڈالر کی مدد امریکہ نے دی تھی.

1. اس نئے سمجھوتے میں دونوں سرکاروں نے یہ اچھا ظاہر کی ہے کہ ہندستان کے سموچے آرتھک وکاس میں مل کر کام کریں اور اس کی رفتار تیزی کے ساتھ بڑھے.

2. دونوں سرکاریں مانتی ہیں کہ آرتھک وکاس کے معاملے میں دونوں دیشوں کے بیچ تکنیکی جانکاری اور طریقوں کے ادل بدل سے دونوں کو فائدہ ہوگا. دونوں سرکاریں مانتی ہیں کہ انتر قومی میل ملاپ اور بھائی چارے کے کام میں ایک ساتھ قدم بڑھانے چاہئیں' دنیا میں امن قائم رکھنے کے لئے دونوں مل کر ایسے کام کریں جن سے انتر قومی جھگڑے اور من متاو کے کارن ختم ہوں.

اوپر کے مقصد کو حاصل کرنے کے لئے یہ سمجھوتہ کیا گیا ہے. اِسکی شرطیں یہ ہیں.

شرطیں.

1. اس سمجھوتے کے مطابق عمل درآمد ہندستان کی سرکار کی طرف سے ایک باقاعدہ منسٹری

हाल में यह खबर भी मिली है कि फ़ारमूसा के कुछ समुन्द्री गुरीला लोगों ने आज़ाद चीन के फ़ूकियन इलाक़े पर हमला किया और 120 कम्यूनिस्ट मार डाले और 110 गिरफ़्तार कर लिये.

ऊपर की तीनों घटनाओं से साफ़ पता चलता है कि फ़ारमूसा टापू में पड़े हुए जनरल च्यांग काई-शेक को चैन नहीं पड़ रहा है और वह बिला किसी वजह से आज़ाद चीन पर समुन्दर के रास्ते सामने से और खुश्की के रास्ते पीछे बरमा में से हमले कर रहे हैं.

लेकिन जनरल साहब के सर पर हाथ किसका रखा है ? सब जानते हैं—अमरीका का. इसके अलावा लन्दन के अखबार 'डेली एक्सप्रेस' में उसके वाशिंगटन वाले खबर दाता की रिपोर्ट छपी है कि च्यांग के लोगों को जो मदद पहुँचाई जा रही है वह उन हवाई जहाज़ों के ज़रिये जिन्हें अमरीकी पाइलट चला रहे हैं. इनमें से कुछ पाइलट अमरीकी फ़ौज में रह भी चुके हैं. इससे ज़ाहिर है कि अमरीका इन सारे हंगामें में ज़रूर शरीक है. अमरीका की इस शिरकत और दिलचस्पी की वजह से उसकी यह हरकत पैरिस, लन्दन, पेकिंग और दूसरे बड़े बड़े शहरों में चर्चा और चिन्ता की चीज़ बन गई है. फिर अमरीका की कठपुतली, पराधीन जापान के प्राइम मिनिस्टर योशीदा के इस कहने ने, कि जापान आज़ाद चीन के बजाये च्यांगी चीन के साथ समझौता करेगा, लोगों के दिलों में और भी शक-शुबा पैदा कर दिया है.

बरमा के यूनो डेलीगेट ने इसे "आग से खेल" कहा है. सचमुच अमरीका इस तरह च्यांगी पलटन को मदद दे कर, जापान को अपने इशारे पर नचा कर और आज़ाद चीन पर चढ़ाई करवा कर, आग के साथ खेल रहा है. शायद वह अपनी दौलत के नशे में चूर है. शायद उसे यह गुमान है कि जब पूरब में थाई लैन्ड और हिन्दुस्तान से लेकर पच्छिम में इंगलैन्ड तक उसके डालर देवता को खुश करने के लिये तरह तरह के चढ़ावे चढ़ाये जा रहे हैं तब कौन उसका बाल बांका कर सकता है.

लेकिन आग का खेल आग का ही खेल ठहरा. उससे कोई सही सलामत नहीं निकल सका है. इन्जील में कहा गया है कि जो तलवार के सहारे जीते हैं वह तलवार के ही घाट उतार दिये जाते हैं.

हम चाहते हैं कि अमरीका ज़रा होश में आये और संभल कर क़दम उठाये. साथ ही साथ हिन्द सरकार से कहना चाहते हैं कि वह भी आंख खोल कर मौजूदा हालत को देखे और हिन्दुस्तान को अमरीका की गोद में न फेंके.

5. 2. '52 —सुरेश रामभाई

حال میں یہ خبر بھی ملی ہے کہ فارموسا کے کچھ سمندری گوریلا لوگوں نے آزاد چین کے فوکین علاقے پر حملہ کیا اور 120 کمیونسٹ مار ڈالے اور 110 گرفتار کر لئے .

اوپر کی تینوں گھٹناؤں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ فارموسا ٹاپو میں پڑے ہوئے جنرل چیانگ کائی شیک کو چین نہیں پڑ رہا ہے اور وہ بلا کسی وجہ کے آزاد چین پر سمندر کے راستے سامنے سے اور خشکی کے راستے پیچھے برما میں سے حملے کر رہے ہیں .

لیکن جنرل صاحب کے سر پر ہاتھ کس کا رکھا ہے ؟ سب جانتے ہیں — امریکہ کا. اس کے علاوہ لندن کے اخبار 'ڈیلی ایکسپریس' میں اس کے واشنگٹن والے خبرداتا کی رپورٹ چھپی ہے کہ چیانگ کے لوگوں کو جو مدد پہنچائی جا رہی ہے وہ ان ہوائی جہازوں کے ذریعے جنہیں امریکی پائلٹ چلا رہے ہیں . ان میں سے کچھ پائلٹ امریکی فوج میں رہ بھی چکے ہیں . اس سے ظاہر ہے کہ امریکہ اس سارے ہنگامے میں ضرور شریک ہے . امریکہ کی اس شرکت اور دلچسپی کی وجہ سے اسکی یہ حرکت پیرس لندن' پیکنگ اور دوسرے بڑے بڑے شہروں میں چرچا اور چنتا کی چیز بن گئی ہے . پھر امریکہ کی کٹھ پتلی' پرادھین جاپان کے پرائم منسٹر یوشیدا کے اس کہنے نے' کہ جاپان آزاد چین کے بجائے چیانگی چین کے ساتھ سمجھوتا کرے گا' لوگوں کے دلوں میں اور بھی شک شبہ پیدا کر دیا ہے .

برما کے یونو ڈیلیگیٹ نے اسے " آگ سے کھیل " کہا ہے . سچ مچ امریکہ اس طرح چیانگی پلٹن کو مدد دے کر' جاپان کو اپنے اشارے پر نچا کر اور آزاد چین پر چڑھائی کروا کر، آگ کے ساتھ کھیل رہا ہے . شائد وہ اپنی دولت کے نشے میں چور ہے . شائد اسے یہ گمان ہے کہ جب پورب میں تھائی لینڈ اور ہندستان سے لیکر پچھم میں انگلینڈ تک اس کے ڈالر دیوتا کو خوش کرنے کے لئے طرح طرح کے چڑھاوے چڑھائے جا رہے ہیں تب کون اس کا بال بانکا کر سکتا ہے .

لیکن آگ کا کھیل آگ کا ہی کھیل ٹھہرا . اس سے کوئی صحیح سلامت نہیں نکل سکا ہے . انجیل میں کہا گیا ہے کہ جو تلوار کے سہارے جیتے ہیں وہ تلوار کے ہی گھاٹ اتار دیئے جاتے ہیں .

ہم چاہتے ہیں کہ امریکہ ذرا ہوش میں آئے اور سنبھل کر قدم اٹھائے . ساتھ ہی ساتھ ہند سرکار سے کہنا چاہتے ہیں کہ وہ بھی آنکھ کھولکر موجودہ حالت کو دیکھے اور ہندستان کو امریکہ کی گود میں نہ پھینکے .

—— سریش رام بھائی 5-2-'52

इस जलसे के होने न होने या उसकी कार्रवाई की कोई खबर हमारे देखने में नहीं आई.

ऊपर की दोनों चीजें दुनिया के इतिहास में नई हैं और उनसे कम से कम यह जाहिर होता है कि पच्छिम के समझदार और विचारशील लोगों के दिल में क्या भाव छुपे हुए हैं. आज उनकी भले क़द्र न हो क्योंकि उनका कोई संगठन नहीं है; लेकिन दुनिया धीरे धीरे इसी रास्ते जा रही है और "आपरेशन गांधी" ही वह आपरेशन या नश्तर है जो इन्सानी समाज के रोगों और फोड़ों को अच्छा कर सकेगा. मगर यह चीरा तभी पूरा असर दिखायेगा जब राजकाजी के साथ साथ आर्थिक और समाजी और दूसरे सब दायरों में इससे काम लिया जाये.

5. 2. '52 —सुरेश रामभाई

आग से खेल

आज कल पेरिस में यूनो और उसकी अनेक छोटी बड़ी कमेटियों, कौन्सिलों की बैठकें हो रही हैं. राजकाजी कमेटी की एक बैठक में 28 जनवरी को बरमा के नुमायन्दे, यू. मिन्ट. थाइन ने कहा कि बरमा की आजादी के लिये एक नया खतरा पैदा हो गया है. वह यह कि बरमा के उत्तरी हिस्से में च्यांग काई शेक की कुछ चीनी पलटन है जो आजाद चीन के यूनान सूबे पर छुट पुट हमले करती रहती है. बरमी भाई ने यह भी बताया कि इस पलटन को बाहर से लगातार मदद मिल रही है. यह मदद तीन तरह की है—हथियारों की मदद, सिपाहियों की मदद और रहनुमाई. यह मदद फारमूसा और थाई लैन्ड दोनों जगह से मिल रही है.

इसके दूसरे ही दिन 29 जनवरी को उस कमेटी ने एक दूसरा ठहराव पास किया जिसमें च्यांगी चीन यानी फारमूसा की सरकार के नुमायन्दे की रूस के खिलाफ एक शिकायत ठीक ठहराई गई. वह शिकायत यह थी कि जापान के हथियार डालने के बाद रूस ने 1945 वाले रूस-चीन सुलहनामे के मुताबिक अमल नहीं किया. 24 देशों के वोट इस ठहराव के माफिक पड़े, 9-खिलाफ और 25 चुप रहे.

हम जरा यह भी याद कर लें कि 1945 वाला रूस चीन समझौता क्या था. वह यह था कि जापान के हथियार डालने के बाद चीन पर अगर कोई हमला करेगा तो रूस चीन को मदद देगा. इस समझौते की बिना पर हजरत च्यांग काई-शेक यह उम्मीद करते थे कि आजाद चीन और च्यांग काई-शेक की लड़ाई में रूस च्यांग को असल चीन मान कर आजाद चीन के खिलाफ च्यांग काई-शेक की मदद करेगा और रूस का ऐसा न करना समझौते को तोड़ना हुआ! कहने की जरूरत नहीं कि इस ठहराव में च्यांग काई-शेक की तरफ से पैरवी अमरीका ने की थी.

اس جلسے کے ہونے نہ ہونے یا اس کی کاروائی کی کوئی خبر ہمارے دیکھنے میں نہیں آئی۔

اوپر کی دونوں چیزیں دنیا کے اتہاس میں نئی ہیں اور اُن سے کم سے کم یہ ظاہر ہوتا ہے کہ پچھم کے سمجھدار اور وچار شیل لوگوں کے دل میں کیا بھاؤ چھپے ہوئے ہیں۔ آج ان کی بھلے قدر نہ ہو کیونکہ اُن کا کوئی سنگھٹن نہیں ہے۔ لیکن دنیا دھیرے دھیرے اسی راستے جارہی ہے اور ''آپریشن گاندھی'' ہی وہ آپریشن یا نشتر ہے جو انسانی سماج کے روگوں اور پھوڑوں کو اچھا کرسکیگا۔ مگر یہ چیرا تبھی پورا اثر دکھائیگا جب راج کاجی کے ساتھ ساتھ آرتھک اور سماجی اور دوسرے سب دائروں میں بھی اس سے کام لیا جائے۔

5. 2. '52 —سریش رام بھائی

آگ سے کھیل

آجکل پیرس میں یونو اور اُسکی انیک چھوٹی بڑی کمیٹیوں، کونسلوں کی بیٹھکیں ہو رہی ہیں۔ راج کاجی کمیٹی کی ایک بیٹھک میں 28 جنوری کو برما کے نمائندے، یو. منٹ. تھائین نے کہا کہ برما کی آزادی کے لئے ایک نیا خطرہ پیدا ہوگیا ہے۔ وہ یہ کہ برما کے اُتری حصے میں چیانگ کائی شیک کی کچھ چینی پلٹن ہے جو آزاد چین کے یونان صوبے پر چھٹ پٹ حملے کرتی رہتی ہے۔ برمی بھائی نے یہ بھی بتایا کہ اس پلٹن کو باہر سے لگاتار مدد مل رہی ہے۔ یہ مدد تین طرح کی ہے—ہتھیاروں کی مدد سپاہیوں کی مدد اور رہنمائی۔ یہ مدد فارموسا اور تھائی لینڈ دونوں جگہ سے مل رہی ہے۔

اسکے دوسرے ہی دن 29 جنوری کو اُس کمیٹی نے ایک دوسرا ٹھہراؤ پاس کیا جسمیں چیانگی چین یعنی فارموسا کی سرکار کے نمائندے کی روس کے خلاف ایک شکایت ٹھیک ٹھہرائی گئی۔ وہ شکایت یہ تھی کہ جاپان کے ہتھیار ڈالنے کے بعد روس نے 1945 والے روس چین صلح نامے کے مطابق عمل نہیں کیا۔ 24 دیشوں کے ووٹ اِس ٹھہراؤ کے موافق پڑے، 9 خلاف اور 25 چپ رہے۔

ہم ذرا یہ بھی یاد کر لیں کہ 1945 والا روس چین سمجھوتا کیا تھا۔ وہ یہ تھا کہ جاپان کے ہتھیار ڈالنے کے بعد چین پر اگر کوئی حملہ کرے گا تو روس چین کو مدد دے گا۔ اِس سمجھوتے کی بنا پر حضرت چیانگ کائی شیک یہ اُمید کرتے تھے کہ آزاد چین اور چیانگ کائی شیک کی لڑائی میں روس چیانگ کو اصل چین مان کر آزاد چین کے خلاف چیانگ کائی شیک کی مدد کرے گا اور روس کا ایسا نہ کرنا سمجھوتے کا توڑنا ہوا! کہنے کی ضرورت نہیں کہ اِس ٹھہراؤ میں چیانگ کائی شیک کی طرف سے پیروی امریکہ نے کی تھی۔

न हमारे मुल्क की हिफ़ाज़त हो सकेगी, न हमारी शान बाक़ी रहेगी और न हमारा जीवन-तर्ज़ ही क़ायम रह सकेगा."

हमें नहीं मालूम कि इन तेरह भाई-बहनों को क्या सज़ा दी गई या क्या सलूक उनके साथ किया गया. शायद नक़्क़ारख़ाने में उनकी तूती की आवाज़ किसी ने नहीं सुनी.

ऊपर की घटना के दो हफ़्ते के अंदर ही एक ख़बर बीच इटली के शहर पेरुगिया से आई कि वहां पर 30 जनवरी को—महात्मा गांधी के बलिदान के दिन—एक अंतर क़ौमी जलसा होगा जिस में पूरब और पच्छिम, सारे आलम के लोगों से बिनती की जायेगी कि अहिंसा का रास्ता—जिसके लिये प्रेरना मिलती है पूरब में महात्मा गांधी से और पच्छिम में संत फ़्रांसिस से—अपनाया जावे. यह जलसा प्रोफ़ेसर ऐल्डो केपीटिनी की कोशिश से किया जायेगा. प्रोफ़ेसर केपीटिनी धर्म शास्त्र, इतिहास, फ़लसफ़ा और तालीम के मसलों पर नामी लिखने वाले हैं. वह मुसोलिनी के ज़माने में दो बार जेल में बंद कर दिये गये थे. क्योंकि उन्होंने सरकारी पारटी में मिलने से इनकार किया था और "आज़ाद ख़यालों की सोसाइटी" बनाया करते थे.

प्रोफ़ेसर केपीटिनी ने 30 जनवरी के जलसे के सिल-सिले में बारह हज़ार ख़त भेजे. बहुत से देशों से उन्हें अपने ख़त के सन्तोश जनक जवाब मिले हैं.

ख़ास बात यह है कि यह जलसा 30-31 दोनों दिन के लिये रखा गया. 31 तारीख़ को संत फ़्रांसिस की समाधि पर जाने का प्रोग्राम था जो पास ही असीसी नाम के गांव में है जहां उन्होंने सन 1226 में शरीर छोड़ा था.

प्रोफ़ेसर केपीटिनि ने इस जलसे के लिये चार काम ख़ास रखे हैं.

1. अहिंसा के उसूल और तरीक़ों को देख-समझ कर ऐसे सुझाव बनाना जिन से लड़ाई न हो और इन्सान इन्सान में भाई चारे की नई लहर पैदा हो.

2. इन सुझावों को तरतीब देकर यूनो के आगे, बिना किसी गुट में मिले पेश करना.

3. अहिंसा के लिये दुनिया भर में एक तहरीक चलाना.

4. अहिंसा और इन्सानी प्रेम के ज़रिये पूरब और पच्छिम के लोगों को पास लाना और इस तरह दुनिया को आज़ाद करने और उसमें नयी जान डालने के लिये एक रास्ता क़ायम करना.

نہ ہمارے ملک کی حفاظت ہو سکیگی' نہ ہماری شان باقی رہیگی اور نہ ہمارا جیون طرز ہی قائم رہ سکیگا۔"

ہمیں نہیں معلوم کہ اِن تیرہ بھائی بہنوں کو کیا سزا دی گئی یا کیا سلوک اُن کے ساتھ کیا گیا ۔ شائد نقارخانہ میں اُن کی طوطی کی آواز کسی نے نہیں سنی ۔

اوپر کی گھٹنا کے دو ہفتے کے اندر ہی ایک خبر بیچ اِٹلی کے شہر پیروگیا سے آئی کہ وہاں پر 30 جنوری کو—مہاتما گاندھی کے بلیدان کے دن—ایک انتر قومی جلسہ ہوگا جس میں پورب اور پچھم' سارے عالم کے لوگوں سے بنتی کی جائیگی کہ اہنسا کا راستہ—جس کے لئے پریرنا ملتی ہے پورب میں مہاتما گاندھی سے اور پچھم میں سنت فرانسس سے—اپنایا جاوے ۔ یہ جلسہ پروفیسر ایلڈو کیپیٹنی کی کوشش سے کیا جائیگا ۔ پروفیسر کیپیٹنی دھرم شاستر' اتہاس' فلسفہ اور تعلیم کے مسئلوں پر نامی لکھنے والے ہیں۔ وہ مسولنی کے زمانے میں دو بار جیل میں بند کر دئے گئے تھے ۔ کیونکہ انہوں نے سرکاری پارٹی میں ملنے سے انکار کیا تھا اور "آزاد خیالوں کی سوسائٹی" بنایا کرتے تھے ۔

پروفیسر کیپیٹنی نے 30 جنوری کے جلسے کے سلسلے میں بارہ ہزار خط بھیجے ۔ بہت سے دیشوں سے انہیں اپنے خط کے سنتوش جنک جواب ملے ہیں ۔

خاص بات یہ ہے کہ یہ جلسہ 30-31 دونوں دن کے لئے رکھا گیا ۔ 31 تاریخ کو سنت فرانسس کی سمادھی پر جانے کا پروگرام تھا جو پاس ہی ایسیسی نام کے گاؤں میں ہے جہاں انہوں نے سن 1226 میں شریر چھوڑا تھا ۔

پروفیسر کیپیٹنی نے اس جلسے کے لئے چار کام خاص رکھے ہیں ۔

1. اہنسا کے اُصول اور طریقوں کو دیکھ سمجھ کر ایسے سجھاؤ بنانا جن سے لڑائی نہ ہو اور انسان انسان میں بھائی چارے کی نئی لہر پیدا ہو ۔

2. اِن سجھاؤں کو ترتیب دے کر یونو کے آگے' بنا کسی گٹ میں ملے' پیش کرنا ۔

3. اہنسا کے لئے دنیا بھر میں ایک تحریک چلانا ۔

4. اہنسا اور انسانی پریم کے ذریعے پورب اور پچھم کے لوگوں کو پاس پاس لانا اور اس طرح دنیا کو آزاد کرنے اور اس میں نئی جان ڈالنے کے لئے ایک راستہ قائم کرنا۔

ोवियत रूस और नए चीन में है. और कम से कम
. के मामले में यही असूल गांधीजी के लोक सेवक
का है. पर हम यह एक दूसरी बहस में पड़ गए.
अभी सिर्फ़ हाल के चुनाव की बात कर रहे थे. हम
सफल चुनाव पर देश वासियों को मुबारक बाद देते
ौर हमारे विचार से देश का आगे का भला इसी में
: जो लोग गांधीजी के उसूलों, विचारों और आदर्शों
ानते हैं वह दुनिया की दूसरी बढ़ती हुई ताक़तों से
कर और अलग रह कर नहीं बल्कि उन्हें समझने की
ाश करके और बिना अपने असूलों से इंच भर भी
जहाँ तक हो सके उनसे मिल कर देश को अपनी
ाओं से लाभ उठाने का पूरा अवसर दें.

1-2-'52 —सुन्दरलाल

ापरेशन गांधी'

बारह जनवरी को एक बड़ी दिलचस्प और अनोखी
र दुनिया भर के अख़बारों में छपी. उसका ख़ुलासा
है—

लन्दन, 11 जनवरी—वार आफ़िस (जंगी महकमे
दफ़्तर) के सामने आज 13 अंगरेज़ जो अपने को
अहिंसक मुक़ाबला करने वाले" यानी सत्याग्रही कहते थे
कड़े गये. वह अमन शांति के लिये एक प्रदर्शन कर रहे थे
ौर इनका नारा था "आपरेशन गांधी." यह लोग वार
ाफ़िस के सामने पगडंडी पर बैठे हुए थे और इनका
कहना था कि "पूरब या पच्छिम, किसी के लिये भी, कोई
ग या हिंसक आन्दोलन किया जायेगा तो उसमें शिरकत
रने से हम इनकार करते हैं."

यह प्रदर्शन थोड़ी देर तक रहा. पहले जब पुलिस ने
ोगों को हटाया तो उनकी जगह दूसरे आ पहुँचे. लेकिन
ाख़िर में 13 जने—सात मर्द छै औरतें—स्काटलैंड
वालात ले जाये गये जहां उन पर यह जुर्म लगाया जायेगा
5 उन्होंने "पुलिस के काम में रुकावट डाली और पगडंडी
ा रास्ता रोक लिया."

इस प्रदर्शन में परचे बांटे गये जिनमें कहा गया कि
'हम अपने देश की हिफ़ाज़त उसी तरह करना चाहते हैं
जस तरह गांधी ने अपनी देश की हिफ़ाज़त की. अहिंसक
मुक़ाबले के ज़रिये गांधी ने बिना लड़ाई के हिन्दुस्तान
ाज़ाद कर लिया. उनका सीधा-सादा तरीक़ा यह था—
नब की इज़्ज़त करो और बुराई के साथ सहयोग करने से
नकार कर दो."

"आपरेशन गांधी अंगरेज़ क़ौम की आत्मा से अपील
करता है कि मौजूदा जंग को धिक्कारा जाये. इस जंग से

ڈھلگ سوویت روس اور نئے چین میں ھے . اور کم سے کم
چناؤ کے معاملے میں یہی اصول گاندھی جی کے لوک
سیوک سنگھ کا ھے . پر ہم یہ ایک دوسری بحث
میں پڑ گئے . ہم ابھی صرف حال کے چناؤ کی بات کر رہے تھے.
ہم اس سپھل چناؤ پر دیش واسیوں کو مبارک باد دیتے
ھیں . اور ہمارے وچار سے دیش کا آگے کا بھلا اسی میں
ھے کہ جو لوگ گاندھی جی کے اصولوں' وچاروں اور
آدرشوں کو مانتے ھیں وہ دنیا کی دوسری بڑھتی ھوئی
طاقتوں سے ڈر کر اور الگ رہ کر نہیں بلکہ انہیں سمجھنے
کی کوشش کرکے اور بنا اپنے اصولوں سے انچ بھر بھی
ہٹے جہاں تک ھو سکے اُن سے مل کر دیش کو اپنی
سیواؤں سے لابھ اٹھانے کا پورا اوسر دیں .

1-2-'52 — سندر لال

'آپریشن گاندھی'

بارہ جنوری کو ایک بڑی دلچسپ اور انوکھی خبر
دنیا بھر کے اخباروں میں چھپی . اس کا خلاصہ یہ ھے—

لندن' 11 جنوری—وار آفس (جنگی محکمے کے
دفتر) کے سامنے آج 13 انگریز جو اپنے کو "اہنسک
مقابلہ کرنے والے" یعنی ستیاگرہی کہتے تھے پکڑے گئے .
وہ امن شانتی کے لئے ایک پردرشن کر رہے تھے اور ان کا
نعرہ تھا "آپریشن گاندھی" یہ لوگ وار آفس کے سامنے
پگڈنڈی پر بیٹھے ھوئے تھے اور اُن کا کہنا تھا کہ "پورب
یا پچھم' کسی کے لئے بھی' کوئی جنگ یا ہنسک
آندولن کیا جائیگا تو اس میں شرکت کرنے سے ہم انکار
کرتے ھیں."

یہ پردرشن تھوڑی دیر تک رہا . پہلے جب پولیس نے
لوگوں کو ہٹایا تو ان کی جگہ دوسرے آ پہنچے . لیکن
آخر میں 13 جنے—سات مرد چھ عورتیں—اسکاٹلینڈ
حوالات لے جائے گئے جہاں اُن پر یہ جرم لگایا جائیگا کہ
اُنہوں نے "پولیس کے کام میں رکاوٹ ڈالی اور پگڈنڈی
کا راستہ روک لیا."

اس پردرشن میں پرچے بانٹے گئے جن میں کہا گیا
کہ "ہم اپنے دیش کی حفاظت اسی طرح کرنا چاہتے
ھیں جس طرح گاندھی نے اپنے دیش کی حفاظت کی .
اہنسک مقابلے کے ذریعہ گاندھی نے بنا لڑائی کے ہندستان
آزاد کرلیا . اُن کا سیدھا سادہ طریقہ یہ تھا—سب کی
عزت کرو اور برائی کے ساتھ سہیوگ کرنے سے انکار کر دو ."

"آپریشن گاندھی انگریز قوم کی آتما سے اپیل کرتا ھے
کہ موجودہ جنگ کو دھکارا جائے . اس جنگ سے

मैं अपना वोट डालना चाहता हूं. मैं अंधा हूं. अगर आप मुझे धोका देंगे तो मैं क़यामत के दिन आपका दामन पकड़ूंगा." पोलिंग अफ़सर ने फिर वोटर को यक़ीन दिलाया कि यही हंसिया वाला बक्स है. वोटर ने तीसरी बार कहा—"मैं आपसे फिर एक बार पूछता हूं. मुझे इसलिये भरोसा नहीं होता कि आख़िर आप कांगरेस सरकार के नौकर हैं. देखिये, मुझे धोका न दीजिये. ठीक बताइये, हंसिया वाला बक्स कौन सा है. नहीं तो मैं क़यामत के दिन आप का दामन पकड़ूंगा.'' पोलिंग अफ़सर ने तीसरी बार वोटर को विश्वास दिलाया. इस पर वोटर ने "अच्छा साहब, यह लीजिये'' कह कर उसी बक्स में अपना वोट डाल दिया. वोटर के दिल की सफ़ाई और पोलिंग अफ़सर का धीरज दोनों इस मामले में तारीफ़ के क़ाबिल हैं.

(7) सातवीं और आख़िरी बात जो देश के इस पहले चुनाव में दिखाई दे रही थी यह थी कि महात्मा गांधी के इस देश में तरह तरह की पारटियां चुनाव में हिस्सा ले रही थीं, गांधी जी की दुहाई दे कर उससे ना-जेबा फ़ायदा उठा लेने वाले भी थे पर गांधी वादी यानी गांधी जी के असूलों को सच्चाई से मानने और उन पर अमल करने की कोशिश करने वाले चुनाव के मैदानों में कहीं खुर्दबीन से देखने पर भी दिखाई नहीं देते थे.

हो सकता है इसका एक कारन यह हो कि इस तरह के चुनाव अपने ढंग की एक बड़ी अच्छी चीज़ होते हुए भी गांधी जी के राजकाजी सिद्धान्तों के अनुसार ठीक चीज़ नहीं हैं. हमारा विधान और हमारी इस समय की सरकार का ढांचा अधिक तर इंगलैंड की पारलीमेन्ट्री हुकूमत पर ढला हुआ है. गांधी जी इस तरह की पारलीमेन्ट्री हुकूमत को मुल्क के लिये एक गहरा ख़तरा मानते थे. इस तरह के चुनाव हलक़े जिनमें बीस बीस लाख आदमियों से जो दूर दूर तक गांव में फैले हुए हैं यह उम्मीद करना कि वह हमेशा एक ऐसे आदमी के बारे में जिसकी उन्हें निजी जानकारी भी नहीं है सचाई, समझ और ग़ैर जानिबदारी से राय दे सकें, एक ग़लत आशा करना है. इसके अलावा ऐसे चुनाव के लिये जिसमें लाखों वोटरों के लिये हज़ारों रुपए ख़र्च करके परचियाँ छपवानी पड़ें किसी ग़रीब आदमी का खड़ा हो सकना भी नामुमकिन है. इस तरह के चुनाव आख़ीर में जाकर पूँजी पति मुल्कों को ही ठीक बैठते हैं. सच्चे लोकराज के लिये नीचे के चुनाव के दायरे बहुत छोटे छोटे और बहुत बड़ी तादाद में होने चाहियें. और फिर गाँव, तहसील, ज़िला, सूबा और मुल्क नीचे से ऊपर तक इस तरह के हलक़े होने चाहियें कि नीचे के चुने हुए लोग अपने से ऊपर के लोगों को चुनें. इसी से मिलता जुलता चुनाव का

میں اپنا ووٹ ڈالنا چاہتا ہوں. میں اندھا ہوں . اگر آپ مجھے دھوکہ دیںگے تو میں قیامت کے دن آپ کا دامن پکڑوں گا." پولنگ افسر نے پھر ووٹر کو یقین دلایا کہ یہی ہنسیا والا بکس ہے . ووٹر نے تیسری بار کہا— ''میں آپ سے پھر ایک بار پوچھتا ہوں . مجھے اس لئے بھروسہ نہیں ہوتا کہ آخر آپ کانگریس سرکار کے نوکر ہیں . دیکھئے' مجھے دھوکہ نہ دیجئے . ٹھیک بتایئے' ہنسیا والا بکس کون سا ہے . نہیں تو میں قیامت کے دن آپ کا دامن پکڑوں گا ." پولنگ افسر نے تیسری بار ووٹر کو وشواس دلایا . اس پر ووٹر نے ''اچھا صاحب' یہ لیجئے'' کہکر اسی بکس میں اپنا ووٹ ڈال دیا . ووٹر کے دل کی صفائی اور پولنگ افسر کا دھیرج دونوں اِس معاملے میں تعریف کے قابل ہیں .

(7) ساتویں اور آخری بات جو دیش کے اِس پہلے چناؤ میں دکھائی دے رہی تھی یہ تھی کے مہاتما گاندھی کے اِس دیش میں طرح طرح کی پارٹیاں چناؤ میں حصہ لے رہی تھیں' گاندھی جی کی دہائی دیکر اس سے نا بیجا فائدہ اُٹھا لینے والے بھی تھے پر گاندھی وادی یعنی گاندھی جی کے اصولوں کو سچائی سے ماننے اور اُن پر عمل کرنے کی کوشش کرنے والے چناؤ کے میدانوں میں کہیں خوردبین سے دیکھنے پر بھی دکھائی نہیں دیتے تھے .

ہوسکتا ہے اس کا ایک کارن یہ ہو کہ اِس طرح کے چناؤ اپنے ڈھنگ کی ایک بڑی اچھی چیز ہوتے ہوئے بھی گاندھی جی کے راج کاجی سدھانتوں کے انوسار ٹھیک چیز نہیں ہیں . ہمارا ودھان اور ہماری اِس سمے کی سرکار کا ڈھانچہ ادھک تر انگلینڈ کی پارلیمنٹری حکومت پر ڈھلا ہوا ہے . گاندھی جی اِس طرح کی پارلیمنٹری حکومت کو ملک کے لئے ایک گہرا خطرہ مانتے تھے . اِس طرح کے چناؤ حلقے جن میں بیس بیس لاکھ آدمیوں سے جو دور دور تک گاؤں میں پھیلے ہوئے ہیں یہ امید کرنا کہ وہ ہمیشہ ایک ایسے آدمی کے بارے میں جس کی انہیں نجی جانکاری بھی نہیں ہے سچائی' سمجھ اور غیر جانبداری سے رائے دے سکیں' ایک غلط آشا کرنا ہے . اسکے علاوہ ایسے چناؤ کے لئے جس میں لاکھوں ووٹروں کے لئے ہزاروں روپے خرچ کرکے پرچیاں چھپوانی پڑیں کسی غریب آدمی کا کھڑا ہوسکنا بھی ناممکن ہے . اِس طرح کے چناؤ آخیر میں جاکر پونجی پتی ملکوں کو ہی ٹھیک بیٹھتے ہیں . سچے لوکراج کے لئے نیچے کے چناؤ کے دائرے بہت چھوٹے چھوٹے اور بہت بڑی تعداد میں ہونے چاہئیں . اور پھر گاؤں' تحصیل' ضلع' صوبہ اور ملک نیچے سے اوپر تک اس طرح کے حلقے ہونے چاہئیں کہ نیچے کے چنے ہوئے لوگ اپنے سے اوپر کے لوگوں کو چنیں . اِسی سے ملتا جلتا چناؤ کا

हैं और दुनिया की आज़ादी के इस समय के सब से बड़े दुश्मन मुल्कों के साथ साज़ बाज़ भी करते हैं. साम्प्रदायिकता से ऊपर होने का दावा भी करते हैं और ज़रा सा मौक़ा मिल जाने पर पाकिस्तान पर चढ़ाई का शोर भी मचाते हैं वग़ैरा वग़ैरा. इस चुनाव ने यह दिखा दिया कि मौक़ा परस्ती इतनी अच्छी, ऊँची या काम की चीज़ नहीं है जितनी असूल परस्ती.

(4) चौथी बात इस चुनाव ने यह भी पूरी तरह दिखला दी कि इस समय देश के अन्दर की अगर कोई पारटी आगे चल कर कांगरेस की जगह लेती दिखाई देती है तो वह अच्छी हो या बुरी कम्युनिस्ट पारटी ही है. जेल में पड़े हुए या नज़रबन्द लोगों पर चारों तरफ़ से वोटों की बौछार होना और सब से ज़ियादः फ़ी सदी वोट उन्हीं इलाक़ों में पड़ना जहाँ कम्युनिस्टों का ज़ोर बताया जाता है कोई मामूली चीज़ नहीं है. देखने वालों के लिये इससे हवा के रुख़ का पता चलता है.

(5) पांचवीं बात चुनाव के नतीजों से यह भी मालूम होती है कि जगह जगह अगर ग़ैर कांगरेसी 'शक्तियाँ आपस में फट जाने की जगह मिल कर खड़ी हो सकतीं यानी सब ग़ैर कांगरेसी शक्तियाँ कांगरेसी उम्मीदवार के मुक़ाबले में एक ही ग़ैर कांगरेसी उम्मीदवार पर ज़ोर लगा सकतीं तो मुमकिन है चुनाव के नतीजे बिलकुल उलट जाते.

(6) छटे इस चुनाव ने इस सचाई को भी अच्छी तरह साबित कर दिया कि आम लोगों, ख़ास कर बे पढ़े लोगों के न केवल दिल पढ़े लिखे लोगों के दिलों से अधिक शुद्ध होते हैं बल्कि उनकी क़ुदरती सूझ बूझ और सादा समझ भी पढ़े लिखे लोगों की अक़्ल से अधिक ठीक काम करती है. दिल का असर आदमी के दिमाग़ पर भी पड़ता है. जात परस्ती, प्रान्त परस्ती, फ़िरक़ा परस्ती, ग़लत तरह की मज़हबी कट्टरता, चालाकी और बेईमानी जितनी पढ़े लिखे लोगों में मिलती है उतनी आम बे पढ़े या कम पढ़े लोगों में नहीं मिलती. अपनी सादा समझ से वह सचाई को भी अधिक जल्दी और अधिक ठीक ठीक ताड़ जाते हैं. हम एक छोटी सी घटना बयान करते हैं.

एक बड़ी उमर का अंधा मुसलमान वोटर इलाहाबाद के एक पोलिंग बूथ पर वोट देने गया. पोलिंग अफ़सर उसकी मदद के लिये उसके साथ अन्दर गया. वोटर ने कहा—"मुझे हँसिया वाला बक्स बता दीजिये. मैं उसमें अपना वोट डालूँगा." पोलिंग अफ़सर ने हँसिया वाले बक्स पर वोटर का हाथ रख दिया. वोटर ने फिर कहा—"देखिये साहब, मैं आप से फिर पूछता हूँ. आप मुझे सच सच बताइये कि हँसिया वाला बक्स कौन सा है. मैं उसी

ہیں اور دنیا کی آزادی کے اِس سمے کے سب سے بڑے دشمن ملکوں کے ساتھ ساز باز بھی کرتے ہیں. سامپردایکتا سے اوپر ہونے کا دعویٰ بھی کرتے ہیں اور ذرا سا موقع مل جانے پر پاکستان پر چڑھائی کا شور بھی مچاتے ہیں وغیرہ وغیرہ . اِس چناؤ نے یہ دکھا دیا کہ موقع پرستی اتنی اچھی' اونچی یا کام کی چیز نہیں ہے جتنی اصول پرستی .

(4) چوتھی بات اِس چناؤ نے یہ بھی پوری طرح دکھلا دی کہ اِس سمے دیش کے اندر کی اگر کوئی پارٹی آگے چلکر کانگریس کی جگہ لیتی دکھائی دیتی ہے تو وہ اچھی ہو یا بری کمیونسٹ پارٹی ہی ہے . جیل میں پڑے ہوئے یا نظر بند لوگوں پر چاروں طرف سے ووٹوں کی بوچھار ہونا اور سب سے زیادہ فی صدی ووٹ انہیں علاقوں میں پڑنا جہاں کمیونسٹوں کا زور بتایا جاتا ہے کوئی معمولی چیز نہیں ہے . دیکھنے والوں کے لئے اِس سے ہوا کے رخ کا پتہ چلتا ہے .

(5) پانچویں بات چناؤ کے نتیجوں سے یہ بھی معلوم ہوتی ہے کہ جگہ جگہ اگر غیر کانگریسی شکتیاں آپس میں پھٹ جانے کی جگہ ملکر کھڑی ہو سکتیں یعنی سب غیر کانگریسی شکتیاں کانگریسی امیدوار کے مقابلے میں ایک ہی غیر کانگریسی امیدوار پر زور لگا سکتیں . تو ممکن ہے چناؤ کے نتیجے بالکل الٹ جاتے .

(6) چھٹے اِس چناؤ نے اِس سچائی کو بھی اچھی طرح ثابت کر دیا کہ عام لوگوں' خاص کر بے پڑھے لوگوں کے نہ کیول دل پڑھے لکھے لوگوں کے دلوں سے ادھک شدھ ہوتے ہیں بلکہ اُن کی قدرتی سوجھ بوجھ اور سادہ سمجھ بھی پڑھے لکھے لوگوں کی عقل سے ادھک ٹھیک کام کرتی ہے . دل کا اثر آدمی کے دماغ پر بھی پڑتا ہے . جات پرستی' پرانت پرستی' فرقہ پرستی' غلط طرح کی مذہبی کٹرتا' چالاکی اور بےایمانی جتنی پڑھے لکھے لوگوں میں ملتی ہے اُتنی عام بے پڑھے یا کم پڑھے لوگوں میں نہیں ملتی . اپنی سادہ سمجھ سے وہ سچائی کو بھی ادھک جلدی اور ادھک ٹھیک ٹھیک تاڑ جاتے ہیں . ہم ایک چھوٹی سی گھٹنا بیان کرتے ہیں .

ایک بڑی عمر کا اندھا مسلمان ووٹر الہ آباد کے ایک پولنگ بوتھ پر ووٹ دینے گیا . پولنگ افسر اُسکی مدد کے لئے اُسکے ساتھ اندر گیا . ووٹر نے کہا—"مجھے ہنسیا والا بکس بتا دیجئے . میں اُس میں اپنا ووٹ ڈالوں گا." پولنگ افسر نے ہنسیا والے بکس پر ووٹر کا ہاتھ رکھدیا . ووٹر نے پھر کہا— "دیکھئے صاحب' میں آپ سے پھر پوچھتا ہوں . آپ مجھے سچ سچ بتائیے کہ ہنسیا والا بکس کون سا ہے . میں اُسی

सब से अधिक सीट कांगरेसी उम्मीदवारों की ही रही. सरकारें एक दो जगह को छोड़ कर कांगरेस की ही बनेंगी, पर कुल जितने वोट पड़े उनमें से कांगरेसियों को कम और और ग़ैर कांगरेसियों को सब मिला कर अधिक वोट मिले. इस तरह देखा जाय तो जनता कांगरेस के हक़ में कम और कांगरेस के ख़िलाफ़ अधिक है. और भी जिस तरह से वोटिंग हुआ, जिस तरह के विचार जगह जगह लोगों ने ख़ास कर कांगरेस को वोट देने वालों तक ने, प्रकट किये, उससे साफ़ ज़ाहिर है कि देश की आम जनता पिछले चार साल के कांगरसी राज और छोटे बड़े कांगरेसी हाकिमों से काफ़ी दुखी और नाराज़ है. जनता का फ़ैसला कांगरेस के लिये यह है—"इन चार साल के अन्दर तुम काफ़ी नालायक़ और राज करने के नाक़ाबिल साबित हुए. तुमसे रिआया को आराम की जगह तकलीफ़ पहुँची. तुम हमारी मुसीबतों को हल नहीं कर सके. लेकिन हमें कोई दूसरा दिखाई भी नहीं देता जिस पर तुम से अधिक भरोसा हो सके. तुम्हारा मुल्क पर किसी ज़माने का बहुत एहसान भी है. इस लिये हम तुम्हें यह एक मौक़ा और देते हैं. तुम अगर संभल सको तो संभल जाओ और अगले पांच साल में कुछ करके दिखा दो." देश की कांगरेस को यह ज़बरदस्त चेतावनी है.

(2) दूसरे यह कि देश की साम्प्रादयिक शक्तियों से कुछ लोग बेजा तौर पर डरे हुए थे, उन्हें इन शक्तियों का कुछ अजीब अन्देशा था. चुनाव ने साम्प्रदायिक शक्तियों के इस बुलबुले को पूरी तरह फोड़ दिया. शायद सैकड़ा पीछे जितनी ज़मानतें जन संघ, हिन्दू महासभा और राम राज परिशद के उम्मीदवारों की ज़ब्त हुई हैं उतनी किसी दूसरी पारटी की नहीं हुईं. चुनाव ने दिखा दिया कि मुल्क की आम जनता इस तरह की नफ़रतों और आपसी झगड़ों को पसन्द नहीं करती. हिन्दू हों या मुसलमान या कोई भी, आम जनता का दिल अभी सूखा नहीं है. उसमें प्रेम और इनसानी भाई चारे की काफ़ी नमी है. यों तो थोड़े से भी बहके हुए या सरफिरे आदमी किसी भी शहर या मुल्क के अमन को ख़तरे में डाल सकते हैं और किसी को भी क़त्ल करवा सकते हैं या कहीं भी आग लगवा सकते हैं. लेकिन देश के आम लोग और देश का असली दिल इस ज़हर से पाक है. केवल सच्ची तालीम, अपने बहके हुए भाइयों को समझाने बुझाने और मुल्क को थोड़ा संभल कर चलने की ज़रूरत है.

(3) सब से ज़ियादा कमज़ोर और कम समझ इस चुनाव में वह भाई साबित हुए जो मार्क्स के असूलों का दम भी भरते हैं और मार्क्स के असूलों पर चलने की कोशिश करने वाले दुनिया के दो सब से बड़े देशों की झूटी सच्ची बुराई भी करते फिरते हैं. आज़ादी का दम भी भरते

سب سے ادھک جیت کانگریسی اُمیدواروں کی ہی رہی ۔ سرکاریں ایک دو جگہ کو چھوڑ کر کانگریس کی ہی بنیں گی ۔ پر کل جتنے ووٹ پڑے اُن میں سے کانگریسیوں کو کم اور غیر کانگریسیوں کو سب ملا کر ادھک ووٹ ملے ۔ اس طرح دیکھا جائے تو جنتا کانگریس کے حق میں کم اور کانگریس کے خلاف ادھک ہے ۔ اور بھی جس طرح سے ووٹنگ ہوا' جسطرح کے وچار جگہ جگہ لوگوں نے خاص کر کانگریس کو ووٹ دینے والوں تک نے پرکٹ کئے اُس سے صاف ظاہر ہے کہ دیش کی عام جنتا پچھلے چار سال کے کانگریسی راج اور چھوٹے بڑے کانگریسی حاکموں سے کافی دکھی اور ناراض ہے ۔ جنتا کا فیصلہ کانگریس کے لئے یہ ہے—'' اِن چار سال کے اندر تم کافی نالائق اور راج کرنے کے ناقابل ثابت ہوئے ۔ تم سے رعایا کو آرام کی جگہ تکلیف پہنچی ۔ تم ہماری مصیبتوں کو حل نہیں کر سکے ۔ لیکن ہمیں کوئی دوسرا دکھائی بھی نہیں دیتا جس پر تم سے ادھک بھروسہ ہو سکے ۔ تمہارا ملک پر کسی زمانے کا بہت احسان بھی ہے ۔ اِس لئے ہم تمہیں یہ ایک موقع اور دیتے ہیں ۔ تم اگر سنبھل سکو تو سنبھل جاؤ اور اگلے پانچ سال میں کچھ کر کے دکھا دو ۔'' دیش کی کانگریس کو یہ زبردست چیتاونی ہے ۔

(2) دوسرے یہ دیش کی سامپردایک شکتیوں سے کچھ لوگ بیجا طور پر ڈرے ہوئے تھے ' انہیں اِن شکتیوں کا کچھ عجیب اندازہ تھا ۔ چناؤ نے سامپردایک شکتیوں کے اس بلبلے کو پوری طرح پھوڑ دیا ۔ شاید سیکڑہ پیچھے جتنی ضمانتیں جن سنگھ' ہندو مہاسبھا اور رام راج پریشد کے امیدواروں کی ضبط ہوئی ہیں اُتنی کسی دوسری پارٹی کی نہیں ہوئیں ۔ چناؤ نے دکھا دیا کہ ملک کی عام جنتا اسطرح کی نفرتوں یا آپسی جھگڑوں کو پسند نہیں کرتی ۔ ہندو ہوں یا مسلمان یا کوئی بھی' عام جنتا کا دل ابھی سوکھا نہیں ہے ۔ اُسمیں پریم اور انسانی بھائی چارے کی کافی نمی ہے ۔ یوں تو تھوڑے سے بھی بہکے ہوئے یا سر پھرے آدمی کسی بھی شہر یا ملک کے امن کو خطرے میں ڈال سکتے ہیں اور کسی کو بھی قتل کروا سکتے ہیں یا کہیں بھی آگ لگوا سکتے ہیں ۔ لیکن دیش کے عام لوگ اور دیش کا اصلی دل اِس زہر سے پاک ہے ۔ کیول سچی تعلیم' اپنے بہکے ہوئے بھائیوں کو سمجھانے بجھانے اور ملک کو تھوڑا سنبھل کر چلنے کی ضرورت ہے ۔

(3) سب سے زیادہ کمزور اور کم سمجھ اِس چناؤ میں وہ بھائی ثابت ہوئے جو مارکس کے اصولوں کا دم بھی بھرتے ہیں اور مارکس کے اصولوں پر چلنے کی کوشش کرنے والے دنیا کے دو سب سے بڑے دیشوں کی جھوٹی سچی برائی بھی کرتے پھرتے ہیں ۔ آزادی کا دم بھی بھرتے

र पर काफी दंगे-फिसाद, और नाजायज हरकतें होती हैं. हमारे चुनाव से पहले भी बहुत से लोगों को डर था कि देश का यह पहला चुनाव अमन से नहीं गुजर सकता. इधर उधर कुछ छोटी मोटी छेड़ छाड़ और भूलें भी हुईं. एक हलका सा मजाक हमें इस समय याद आ रहा है और वह भी दिल्ली में बड़े बड़े नेताओं के रहते. देश भर के अखबारों में छपा कि हमारे दोस्त डाक्टर सैफुद्दीन किचलू ने दिल्ली में चुनाव के एक बड़े जलसे में भाशन दिया और कहा कि कांगरेस ही लोगों के खाने पीने की और दूसरी कठिनाइयों को दूर कर सकती है इसलिये लोगों को चाहिये कि कांगरेस ही को वोट दें वगैरा. उनका वह भाशन भी तीन पैराग्राफ के अन्दर दूर दूर के अखबारों में छप गया. डाक्टर किचलू के विचारों को जानते हुए हमें इस खबर पर कुछ अचरज हुआ था. जब हम दिल्ली गए तो हमने खुद डाक्टर किचलू से पूछा. मालूम हुआ कि वह अपने बंगले से निकल कर कभी किसी जलसे में गए ही नहीं. हां, उन्होंने खुद बहुत हैरान होकर अपना भाशन अखबारों में पढ़ा था. खैर! हो सकता है इसी तरह की और भी बातें कई जगह हुई हों और हुई होंगी. आखिर देश इतना बड़ा देश है और सब का सदाचार का आदर्श एक सा ऊंचा भी नहीं होता. पर चारों तरफ निगाह डालते हुए और सारे देश को देखते हुए इसमें भी कोई शक नहीं कि हमारा यह पहला चुनाव बहुत ही शान्ति, सुन्दरता और ईमानदारी के साथ पूरा हुआ.

इस कामयाबी का श्रेय देश की आम जनता की पुरानी ईमानदारी की परम्परा और महात्मा गांधी के असर को तो है ही, पर इसके साथ साथ अगर किसी एक आदमी को इसका श्रेय दिया जा सकता है तो वह जवाहर लाल जी को. खास कर कांगरेस कारकरताओं, कांगरेसी सरकारों और उन के अफसरों की तरफ से अगर इतनी गैर जानिबदारी और ईमानदारी बरती जा सकी तो वह जवाहर लाल जी की ही वजह से. हम यह नहीं कहते कि कांगरेस वालों या सरकारी अफसरों की तरफ से कहीं कोई बेजा बात हुई ही नहीं. हमारा मतलब केवल यह है कि कुल मिलाकर देखते हुए इस सारे चुनाव में सब पार-टियों और हर विचार के लोगों को पूरा अवसर दिया गया और कुल मिला कर काफी ईमानदारी और गैर जानिबदारी से काम हुआ जिस पर देश को उचित अभि-मान हो सकता है.

अब हम यह देखें कि इस चुनाव से मोटे मोटे नतीजे क्या निकल सकते हैं. हमारे विचार से इस चुनाव में यह सात बातें साफ चमक गईं:—

(1) मरकज में और अलग अलग सूबों में कुल मिलाकर

طور پر کافی دنگے فساد' اور نا جائز حرکتیں ہوتی ھیں . ھمارے چناؤ سے پہلے بھی بہت سے لوگوں کو ڈر تھا کہ دیش کا یہ پہلا چناؤ امن سے نہیں گزر سکتا . اِدھر اُدھر کچھ چھوٹی موٹی چھیڑ چھاڑ اور بھولیں بھی ہوئیں . ایک ہلکا سا مذاق ھمیں اِس سمے یاد آ رہا ھے اور وہ بھی دلی میں بڑے بڑے نیتاؤں کے رہتے . دیش بھر کے اخباروں میں چھپا کہ ھمارے دوست ڈاکٹر سیف الدین کچلو نے دلی میں چناؤ کے ایک بڑے جلسے میں بھاشن دیا اور کہا کہ کانگریس ھی لوگوں کے کھانے پینے کی اور دوسری کٹھنائیوں کو دور کر سکتی ھے . اس لئے لوگوں کو چاھئے کہ کانگریس ھی کو ووٹ دیں وغیرہ . اُن کا وہ بھاشن بھی تین پیراگراف کے اندر دور دور کے اخباروں میں چھپ گیا. ڈاکٹر کچلو کے وچاروں کو جانتے ہوئے ھمیں اِس خبر پر کچھ اچرج ہوا تھا . جب ہم دلی گئے تو ہم نے خود ڈاکٹر کچلو سے پوچھا . معلوم ہوا کہ وہ اپنے بنگلے سے نکل کر کبھی کسی جلسے میں گئے ھی نہیں . ہاں' اُنہوں نے خود بہت حیران ہو کر اپنا بھاشن اخباروں میں پڑھا تھا . خیر! ہو سکتا ھے کہ اسی طرح کی اور بھی باتیں کئی جگہ ہوئی ھوں اور ہوئی ہوں گی . آخر دیش اتنا بڑا دیش ھے اور سب کا سداچار کا آدرش ایک سا اونچا بھی نہیں ہوتا . پر چاروں طرف نگاہ ڈالتے ہوئے اور سارے دیش کو دیکھتے ہوئے اِسمیں بھی کوئی شک نہیں کہ ھمارا یہ پہلا چناؤ بہت ھی شانتی' سندرتا اور ایمانداری کے ساتھ پورا ہوا .

اِس کامیابی کا شریہ دیش کی عام جنتا کی پرانی ایمانداری کی پرمپرا اور مہاتما گاندھی کے اثر کو تو ھے ھی' پر اسکے ساتھ ساتھ اگر کسی ایک آدمی کو اِسکا شریہ دیا جا سکتا ھے تو وہ جواھر لال جی کو. خاص کر کانگریس کارکرتاؤں' کانگریسی سرکاروں اور اُن کے افسروں کی طرف سے اگر اتنی غیر جانبداری اور ایمانداری برتی جاسکی تو وہ جواھر لال جی کی ھی وجہ سے . ہم یہ نہیں کہتے کہ کانگریس والوں یا سرکاری افسروں کی طرف سے کہیں کوئی بیجا بات ہوئی ھی نہیں . ھمارا مطلب کیول یہ ھے کہ کل ملا کر دیکھتے ہوئے اِس سارے چناؤ میں سب پارٹیوں اور وچار کے لوگوں کو پورا اوسر دیا گیا اور کل ملا کر کافی ایمانداری اور غیر جانبداری سے کام ہوا جس پر دیش کو اُچت ابھیمان ہوسکتا ھے .

اب ہم ذرا یہ دیکھیں کہ اِس چناؤ سے موٹے موٹے نتیجے کیا نکل سکتے ھیں . ھمارے وچار سے اِس چناؤ میں یہ سات باتیں صاف چمک گئیں :—

(1) مرکز میں اور الگ الگ صوبوں میں کل ملا کر

हमारी राय — ہماری رائے

हाल का चुनाव—

हाल का चुनाव हिन्दुस्तान के इतिहास में बिलकुल एक नई घटना थी. साढ़े सतरह करोड़ वोटरों में से कम से कम पांच सात करोड़ का भी, जिन में मर्द, औरतें, बूढ़े, अंधे और अपाहिज तक शामिल थे, अपनी अपनी जगहों से हिल कर वोट देने जाना, और यह समझना कि वह देश के एक बड़े काम में हिस्सा ले रहे हैं, और महसूस करना कि आख़िर वह भी राज का एक अंग हैं और मुल्क की क़िस्मत को इधर से उधर फेर सकते हैं, एक बहुत बड़ी बात थी. रासकुमारी से हिमालय तक और बंगाल से पंजाब तक इतना बड़ा त्योहार, पर्व या मेला इस देश में आज तक कभी नहीं हुआ था.

इस चुनाव से देश के अन्दर बेदारी भी काफ़ी बढ़ी है. करोड़ों बालिग़ आदमियों पर तो असर है ही, नाबालिग़ बच्चों पर असर की एक छोटी सी आँखों देखी घटना हमारे एक दोस्त ने सुनाई:—

एक पोलिंग स्टेशन पर वोटिंग हो रही थी. कुछ बच्चे एक तरफ़ खड़े तमाशा देख रहे थे. उनमें से एक ने दूसरे से कहा—"हमारी उमर अभी तेरह बरस की है. पांच साल बाद अगला चुनाव होगा. तब तक हम अठारह के हो जायंगे. दो साल बढ़ा के लिखा देंगे तो अगले चुनाव में हम भी वोट देंगे." दूसरे लड़के ने कहा—"हमारी उमर तो अभी ग्यारह बरस की ही है, हम कब वोट दे सकेंगे ?" पहले ने जवाब दिया—"तुम्हें तो अभी तीसरे चुनाव में वोट देने का हक़ मिलेगा."

घटना छोटी सी है पर काफ़ी अर्थ भरी. अंगरेज़ी राज के जाने और मुल्क को सियासी आज़ादी मिलने से कोई भी और अच्छा नतीजा पैदा हुआ हो या न हुआ हो इसमें कोई शक नहीं कि बालिग़ मताधिकार और उसके अधीन हाल का चुनाव नई आज़ादी का एक बहुत बड़ा नतीजा है जिस पर देश को बधाई दी जा सकती है.

इस तरह के चुनावों में योरप के देशों के अन्दर जहां वोटरों की गिनती हमारे यहां से बेहद कम होती है आम

حال کا چناؤ—

حال کا چناؤ ھندستان کے اتہاس میں بالکل ایک نئی گھٹنا تھی . ساڑھے سترہ کروڑ ووٹروں میں سے کم سے کم پانچ سات کروڑ کا بھی، جن میں مرد، عورتوں، بوڑھے، اندھے اور اپاہج تک شامل تھے، اپنی اپنی جگہوں سے ھلکر ووٹ دینے جانا، اور یہ سمجھنا کہ وہ دیش کے ایک بڑے کام میں حصہ لے رھے ھیں، اور محسوس کرنا کہ آخر وہ بھی راج کا ایک انگ ھیں اور ملک کی قسمت کو اِدھر سے اُدھر پھیر سکتے ھیں، ایک بہت بڑی بات تھی . راس کماری سے ھمالیہ تک اور بنگال سے پنجاب تک اتنا بڑا تیوھار، پرب یا میلہ اِس دیش میں آج تک کبھی نہیں ھوا تھا .

اِس چناؤ سے دیش کے اندر بیداری بھی کافی بڑھی ھے . کروڑوں بالغ آدمیوں پر تو اثر ھے ھی، نابالغ بچوں پر اثر کی ایک چھوٹی سی آنکھوں دیکھی گھٹنا ھمارے ایک دوست نے سنائی :—

ایک پولنگ اسٹیشن پر ووٹنگ ھو رھی تھی . کچھ بچے ایک طرف کھڑے تماشہ دیکھ رھے تھے . اُن میں سے ایک نے دوسرے سے کہا—" ھماری عمر ابھی تیرہ برس کی ھے . پانچ سال بعد اگلا چناؤ ھوگا . تب تک ھم اٹھارہ کے ھو جائیں گے . دو سال بڑھا کے لکھا دیں گے تو اگلے چناؤ میں ھم بھی ووٹ دینگے ." دوسرے لڑکے نے کہا—" ھماری عمر تو ابھی گیارہ برس کی ھی ھے . ھم کب ووٹ دے سکیں گے ؟" پہلے نے جواب دیا—" تمھیں تو ابھی تیسرے چناؤ میں ووٹ دینے کا حق ملے گا ."

گھٹنا چھوٹی سی ھے پر کافی ارتھ بھری . انگریزی راج کے جانے اور ملک کو سیاسی آزادی ملنے سے کوئی بھی اور اچھا نتیجہ پیدا ھوا ھو یا نہ ھوا ھو اس میں کوئی شک نہیں کہ بالغ متا دھیکار اور اُس کے ادھین حال کا چناؤ نئی آزادی کا ایک بہت بڑا نتیجہ ھے جس پر دیش کو بدھائی دی جا سکتی ھے .

اِسطرح کے چناؤوں میں یورپ کے دیشوں کے اندر جہاں ووٹروں کی گنتی ھمارے یہاں سے بیحد کم ھوتی ھے عام

ासमें अमरीका, इंगलैन्ड और फ़्रांस शरीक हुए. नेपाल
। नई पीढ़ी में कम्यूनिज़म का ज़ोर बढ़ रहा है—बड़े
ज़ीर कोयराला का बयान.

12. ट्यूनीसिया के नेताओं ने कहा कि हमारे मामले
फ़्रांस को दख़ल देने की गुंजायश नहीं. इंगलैन्ड
रपियन फ़ेडरेशन में शामिल नहीं हो सकता. अपनी
ाद के लिये हिन्दुस्तान की आस्ट्रेलिया से बात चीत.
ाहाबाद के एक बन्द कमरे में 9 यात्री मरे पाये गये.

13. मिस्र में गोला बारी फिर शुरू. 21 जनवरी
5 ईरान के अन्दर अंगरेज़ों के सब दफ़्तर व कन्सलेट
द हो जायें—ईरान सरकार का अंगरेज़ों को हुक्म.
स्टर चर्चिल कुछ बात चीत करने के लिये कनाडा गये.

14. चीन के शहर मुकडन के ऊपर अमरीकी जहाज़
). पहली मार्च तक अमरीका स्पेन को मदद देने के लिये
ससे राज़ीनामा कर लेगा. एक शहीद विद्यार्थी के जनाज़े
काहिरा में दो-तीन मील लम्बा जुलूस. क्रिकेट के खेल
कानपुर में अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानियों को हरा दिया.
ार प्रदेश के पूरबी ज़िलों में अनाज की बेहद तंगी—
शल ट्रेनें दौड़ाई जा रही हैं.

15. लन्दन में अंगरेज़ी कामन वेल्थ के अर्थ-
निस्टरों की बातचीत शुरु. फ़ारमूसा में छै लाख सिपाही
ार—ज़रूरत है हथियार व सामान की—च्यांग सरकार
एक हाकिम का बयान.

جسمیں امریکہ، انگلینڈ اور فرانس شریک ہوئے. نیپال
کی نئی پیڑھی میں کمیونزم کا زور بڑھ رہا ہے—بڑے وزیر
کوئرالا کا بیان .

12. ٹیونیسیا کے نیتاؤں نے کہا کہ ہمارے معاملے
میں فرانس کو دخل دینے کی گنجائش نہیں. انگلینڈ
یوروپین فیڈریشن میں شامل نہیں ہوسکتا. اپنی مدد
کے لئے ہندستان کی آسٹریلیا سے بات چیت . الہ آباد کے
ایک بند کمرے میں 9 یاتری مرے پائے گئے .

13 مصر میں گولا باری پھر شروع . 21 جنوری
تک ایران کے اندر انگریزوں کے سب دفتر و کنسلیٹ بند
ہوجائیں—ایران سرکار کا انگریزوں کو حکم . مسٹر
چرچل کچھ بات چیت کرنے کے لئے کناڈا گئے .

14. چین کے شہر مکڈن کے اوپر امریکی جہاز
آئے . پہلی مارچ تک امریکہ اسپین کو مدد دینے کے لئے
اُس سے راضی نامہ کرلیگا . ایک شہید ودیارتھی کے جنازے
کا قاہرہ میں دو تین میل لمبا جلوس . کریکٹ کے کھیل
میں کانپور میں انگریزوں نے ہندستانیوں کو ہرا دیا .
اتر پردیش کے پوربی ضلعوں میں اناج کی بے حد تنگی
—اسپیشل ٹرینیں دوڑائی جارہی ہیں .

15. لندن میں انگریزی کامن ویلتھ کے ارتھ
منسٹروں کی بات چیت شروع . فارموسا میں چھ لاکھ
سپاہی تیار—ضرورت ہے ہتھیار و سامان کی—چیانگ
سرکار کے ایک حاکم کا بیان .

3. कोरिया की लड़ाई ख़त्म करने के लिये सिक्यूरिटी कौन्सिल के आगे रूस की तजवीज़. वर्ल्ड बैन्क की शर्तें मानने से डाक्टर मुसादिक़ का इन्कार.

4. स्वेज़ नहर के इलाक़े में लड़ाई फिर जारी. सूबा सरहद में खुले रेफ़रेन्डम (रायज़नी) के लिये एक अफ़ग़ानी हुक्काम की मांग.

5. ब्रिटेन के बड़े वज़ीर मिस्टर चर्चिल अमरीका पहुँचे. अन्तर-क़ौमी सुलह के लिये मार्शल स्तालिन अमरीकी या अंगरेज़ नेताओं से मिलने को तैयार. चीन पर हवाई और समुन्द्री चढ़ाई करने के लिये (अगर कोरिया की बातचीत कामयाब न हो तो) अमरीका की तैयारी. अमरीका से कई-करोड़ रुपया उधार लेने के लिये हिन्दुस्तान और अमरीका में माहेदा.

6. अमरीका में "क़ौमी" लुटेरों के ख़िलाफ़ "सफ़ाई" का नश्तर. नैपाल के बड़े वज़ीर दिल्ली आये. भू-दान यज्ञ के सिलसिले में घूमते हुए विनोबा जी काशीपुर (ज़िला नैनीताल) पहुंचे.

7. कोरिया की बात चीत यकायक ख़त्म. कोरिया और इन्डोचीन की लड़ाई "सारे आलम की" लड़ाई है—जनरल आइ ज़ेनहावर. अमरीका "तोप और मक्खन" दोनों बनायेगा—एक डिफ़ेन्स डाइरेक्टर का बयान.

8. वाशिंगटन में मिस्टर चर्चिल और मिस्टर ट्रूमैन में बातचीत. यूनो की राजकाजी कमेटी की मांग कि हर मुल्क कुछ यूनिट यूनो के लिये आगे के हमलों के मुक़ाबले के वास्ते दे.

9. राज पति ट्रूमैन ने अमरीकी कांगरेस से कहा—ग़ैर कम्यूनिस्टी मुल्कों को फ़ौजी और आर्थिक मदद देना चाहिये. स्वेज़ नहर के इलाक़े में घमासान लड़ाई. अमरीका को अरब मुल्कों से बराबरी के दर्जे पर बात करना चाहिये—अरब लीग के सेक्रेटरी का एलान.

10. फ़्रांस में बड़े वज़ीर का इस्तीफ़ा. यूनो की आर्थिक कमेटी ने ज़मीन सुधार क़ानून पास किये जाने की सिफ़ारिश की. यूनो की ट्रस्टी शिप कमेटी ने ठहराव पास किया कि विदेशी ताक़तों को वह तारीख़ें मुक़र्रर कर देना चाहिये जिन तक वह अपने मातहत ट्रस्टी देशों को आज़ाद कर देंगी. स्वामी सीताराम आंध्र देश के लिये 12 फ़रवरी से सत्याग्रह शुरू करेंगे.

11. लन्दन शहर में 13 आदमियों ने "आपरेशन गांधी" के नाम से लड़ाई के ख़िलाफ़, अंगरेज़ी वार आफ़िस के सामने, प्रदर्शन किया. दक्खिन पूरब एशिया की हिफ़ाज़त के लिये वाशिंगटन में फ़ौजी बात चीत शुरू

3. کوریا کی لڑائی ختم کرنے کے لئے سیکورٹی کونسل کے آگے روس کی تجویز۔ ورلڈ بینک کی شرطیں ماننے سے ڈاکٹر مصادق کا انکار ۔

4. سوئیز نہر کے علاقے میں لڑائی پھر جاری ۔ صوبہ سرحد میں کھلے ریفرینڈم (رائے زنی) کے لئے ایک افغانی حکام کی مانگ ۔

5. برٹین کے بڑے وزیر مسٹر چرچل امریکہ پہونچے ۔ انتر قومی صلح کے لئے مارشل استالن امریکی یا انگریز نیتاؤں سے ملنے کو تیار ۔ چین پر ہوائی اور سمندری چڑھائی کرنے کے لئے (اگر کوریا کی بات چیت کامیاب نہ ہو تو) امریکہ کی تیاری ۔ امریکہ سے کئی کروڑ روپیہ ادھار لینے کے لئے ہندستان اور امریکہ میں معاہدہ ۔

6. امریکہ میں '' قومی '' لٹیروں کے خلاف ''صفائی'' کا نشتر ۔ نیپال کے بڑے وزیر دلی آئے ۔ بھودان یگیہ کے سلسلے میں گھومتے ہوئے ونوباجی کاشی‌پور (ضلع نینی تال) پہونچے ۔

7. کوریا کی بات چیت یکایک ختم ۔ کوریا اور انڈوچین کی لڑائی ''سارے عالم کی'' لڑائی ہے—جنرل آئزن ہوور ۔ امریکہ ''توپ اور مکھن'' دونوں بنائیگا—ایک ڈیفینس ڈائرکٹر کا بیان ۔

8. واشنگٹن میں مسٹر چرچل اور مسٹر ٹرومین میں بات چیت ۔ یونو کی راج کاجی کمیٹی کی مانگ کہ ہر ملک کچھ یونٹ یونو کے لئے آگے کے حملوں کے مقابلے کے واسطے دے ۔

9. راج پتی ٹرومین نے امریکی کانگریس سے کہا—غیر کمیونسٹی ملکوں کو فوجی اور آرتھک مدد دینا چاہئے ۔ سوئیز نہر کے علاقے میں گھماسان لڑائی ۔ امریکہ کو عرب ملکوں سے برابری کے درجے پر بات کرنا چاہئے—عرب لیگ کے سکریٹری کا اعلان ۔

10. فرانس میں بڑے وزیر کا استعفیٰ ۔ یونو کی آرتھک کمیٹی نے زمین سدھار قانون پاس کئے جانے کی سفارش کی ۔ یونو کی ٹرسٹی شپ کمیٹی نے ٹھہراؤ پاس کیا کہ ودیشی طاقتوں کو وہ تاریخیں مقرر کر دینا چاہئے جن تک وہ اپنے ماتحت ٹرسٹی دیشوں کو آزاد کر دینگی ۔ سوامی سیتارام آندھر دیش کے لئے 12 فروری سے ستیاگرہ شروع کرینگے ۔

11. لندن شہر میں 13 آدمیوں نے ''آپریشن گاندھی'' کے نام سے لڑائی کے خلاف، انگریزی وار آفس کے سامنے، پردرشن کیا ۔ دکھن پورب ایشیا کی حفاظت کے لئے واشنگٹن میں فوجی بات چیت شروع

25. सिक्योरिटी कौंसिल को चाहिये कि काशमीर मामला बराह रास्त खुद तै करे—पाकिस्तानी बड़े वज़ीर एलान. गोआ का सवाल कुछ अरसे में शान्ति के साथ ने आप हल हो जायगा—पंडित जवाहरलाल का गाम में भाशन.

26. मिस्र में बड़े अंगरेज़ी अफ़सर—लार्ड अर्स ने बदला लेने की धमकी दी. चीन पर च्यांग फ़ौज मले की तैयारी—अमरीकी सलाहकार नक़्शे बना .. ईरान ने ख़र्च की कमी की वजह से लन्दन, रोम र दिल्ली से अपने राजदूत वापिस बुला लिये.

27. ईरान में मजलिस के ख़ास इजलास के लिये ोधी पार्टी की मांग. मिस्र वाले हेग अदालत का फ़ैसला मान सकते—उनके देश में अंगरेज़ों का ज़बरदस्ती .ा नामुमकिन. काशमीर के मामले में किसी के आंखें ाने पर हिन्दुस्तान डर नहीं सकता—पंडित जवाहर ा की चेतावनी.

28. दक्खिन अफ़रीक़ा का काला क़ानून रद्द किया ा चाहिये—दक्खिन अफ़रीक़ा हिन्द कांगरेस के सदर टर दादू का एलान. कम्यूनिस्ट फ़ौज अपना रवैया बदल सकती—पेकिंग रेडियो की ख़बर.

29. हिन्दुस्तान में बढ़िया बारीक कपड़े का दाम े में पाँच आने क़रीब बढ़ जायेगा.

30. मिस्र के मामले में पड़ने के लिये अमरीका की ाश. बंगाल के जादवपुर कालिज में डाक्टर राधा नन की हिन्द सरकार को चेतावनी.

31. कोरिया में सुलह हो जाने पर भी अमरीका को की एहतियात के ख़याल से फ़ौज रखना पड़ेगी— ारी सेक्रेट्री एचीसन का बयान. इस साल नदियों को ने के काम में हिन्द सरकार ने 54 करोड़ रुपये का सूबे की सरकारों को दिया. आंध्र देश में सत्याग्रह के स्वामी सीताराम की तैयारी.

जनवरी.

1. मिस्र में अंगरेज़ी और देशी सिपाहियों में गोलाबारी. बैंक जो भी सुझाव पेश करे वह हमारी 'क़ौमी मांग' न्दर रहना चाहिये—ईरान के बड़े वज़ीर डाक्टर द्दिक़ का एलान. कलकत्ते में बज बज नाम की जगह पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कोम गाटा मारू के ों की यादगार का उद्घाटन किया.

2. यूनो की राज काजी कमेटी में दक्खिन अफ़रीक़ा ार की पालिसी पर बहस. मिस्र में बन्दूक़बारी

25. سکیورٹی کونسل کو چاہئے کہ کاشمیر کا معاملہ براہ راست خود طے کرے—پاکستانی بڑے وزیر کا اعلان. گوآ کا سوال کچھ عرصے میں شانتی کے ساتھ اپنے آپ حل ہو جائیگا—پنڈت جواہر لال کا بول گام میں بھاشن.

26. مصر میں بڑے انگریزی افسر—لارڈ عرس کی نے بدلا لینے کی دھمکی دی. چین پر چیانگ فوج کے حملے کی تیاری—امریکی صلاح کار نقشے بنا رہے ہیں. ایران نے خرچ کی کمی کی وجہ سے لندن، روم اور دلی سے اپنے راج دوت واپس بلا لئے.

27. ایران میں مجلس کے خاص اجلاس کے لئے ورودھی پارٹی کی مانگ. مصر والے ہیگ عدالت کا فیصلہ نہیں مان سکتے—ان کے دیش میں انگریزوں کا زبردستی رہنا ناممکن. کاشمیر کے معاملے میں کسی کے آنکھیں دکھانے پر ہندستان ڈر نہیں سکتا—پنڈت جواہر لال کی چیتاونی.

28. دکھن افریقہ کا کالا قانون رد کیا جانا چاہئے. دکھن افریقہ ہند کانگریس کے صدر ڈاکٹر دادو کا اعلان. کمیونسٹ فوج اپنا رویا نہیں بدل سکتی—پیکنگ ریڈیو کی خبر.

29. ہندستان میں بڑھیا باریک کپڑے کا دام روپے میں پانچ آنے قریب بڑھ جائیگا.

30. مصر کے معاملے میں پڑنے کے لئے امریکہ کی کوشش. بنگال کے جادو پور کالج میں ڈاکٹر رادھا کرشنن کی ہند سرکار کو چیتاونی.

31. کوریا میں صلح ہوجانے پر بھی امریکہ کو آگے کی احتیاط کے خیال سے فوج رکھنا پڑے گی—سرکاری سکریٹری ایچیسن کا بیان. اس سال ندیوں کو باندھنے کے کام میں ہند سرکار نے 54 کروڑ روپے کا قرض صوبے کی سرکاروں کو دیا. آندھر دیش میں ستیاگرہ کے لئے سوامی سیتارام کی تیاری.

جنوری.

1. مصر میں انگریزی اور دیشی سپاہیوں میں گولہ باری. ورلڈ بینک جو بھی سجھاؤ پیش کرے وہ ہماری 'قومی مانگ' کے اندر رہنا چاہئے—ایران کے بڑے وزیر ڈاکٹر مصادق کا اعلان. کلکتے میں بج بج نام کی جگہ پر پنڈت جواہر لال نہرو نے کوم گاٹا مارو کے شہیدوں کی یادگار کا ادگھاٹن کیا.

2. یونو کی راج کاجی کمیٹی میں دکھن افریقہ سرکار کی پالسی پر بحث. مصر میں بندوق باری جاری.

देश विदेश की डायरी

(16 दिसम्बर 1951 से 15 जनवरी 1952 तक)

दिसम्बर

16. कोरिया में सुलह की बात चीत जारी है. ट्यूनिसिया की जनता की आज़ादी के लिये मांग और जिद्दो जिहद. उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर ज़िले में कोयले की कानों का पता चला.

17. पाकिस्तान के सूबा सरहद में मार्शल ला का एलान.

18. पच्छिम देशों के बनाये सुलह नामे का मसविदा दूसरों का राज़ जानने की एक कोशिश है—यूनो की बैठक में रूसी नुमायन्दे विशिन्सकी की शिकायत. डाक्टर ग्राहम अपनी जाँच-खोज की रिपोर्ट सिक्योरिटी कौंसिल को देंगे.

19. अमरीका के सिक्रेट्री मिस्टर ऐचीसन का इक़रार कि अरब मिस्र वग़ैरा में हालत ज़ियादा संगीन है. कोरिया की लड़ाई में कितने फ़ौजी क़ैदी किसके पास हैं—लिस्ट का एलान. हिन्दुस्तान और इंगलैंड क्रिकेट की दूसरी बाज़ी में (जो दिल्ली में हुई) बराबर रहे.

20. लिबिया बड़े दिन यानी 24 दिसम्बर को आज़ाद हो जायेगा. पेरिस में यूनो कमेटी ने काले-गोरे के सवाल पर बहस की. पख़्तूनों ने अपनी आज़ादी के लिये डाक्टर ग्राहम को एक मेमोरन्डम पेश किया. अनाज के मामले में हिन्दुस्तान बरसों तक स्वावलम्बी नहीं हो सकता—वर्ल्डबैन्क मिशन के मुखिया का एलान.

21. मिस्र के स्वेज़ नहर वाले इलाक़े इस्मालिया नामी मुक़ाम में अंगरेज़ी हाकिम ने करफ़्यू का एलान किया. ईरान के 38 डिप्टियों ने मजलिस का बाईकाट किया. डाक्टर ग्राहम ने सिक्योरिटी कौंसिल में रिपोर्ट पेश की.

22. मिस्र अपना मामला यूनो में नहीं रखेगा—सरकारी मिनिस्टर का एलान. ईरान के राजकाजी हलक़ों में सनसनी.

23. कोरिया की बातचीत में कोई तरक़्क़ी नहीं. हिन्द आर्थिक कान्फ्रेंस के सदर डाक्टर डे ने पटना में कहा कि हिन्दुस्तान में गिरानी बहुत बढ़ गई है और लोगों की आमदनी का बंटवारा बहुत बे मेल है.

24. मिस्र और रूस में छिपे छिपे ख़ासी बात चीत चल रही है—मिस्री अख़बार का एलान.

دیش ودیش کی ڈائری

(16 دسمبر 1951 سے 15 جنوری 1952 تک)

دسمبر ۔

16. کوریا میں صلح کی بات چیت جاری ہے. ٹیونیسیا کی جنتا کی آزادی کے لئے مانگ اور جدو جہد ۔ اتر پردیش کے مرزا پور ضلع میں کوئلہ کی کانوں کا پتہ چلا ۔

17. پاکستان کے صوبہ سرحد میں مارشل لا کا اعلان ۔

18. پچھم دیشوں کے بنائے صلح نامے کا مسودا دوسروں کا راز جاننے کی ایک کوشش ہے—یونو کی بیٹھک میں روسی نمائندے وشنسکی کی شکایت ۔ ڈاکٹر گراہم اپنی جانچ کھوج کی رپورٹ سیکورٹی کونسل کو دینگے ۔

19. امریکہ کے سکریٹری مسٹر ایچیسن کا اقرار کہ عرب مصر وغیرہ میں حالت زیادہ سنگین ہے ۔ کوریا کی لڑائی میں کتنے فوجی قیدی کس کے پاس ہیں—لسٹ کا اعلان ۔ ہندستان اور انگلینڈ کرکٹ کی دوسری بازی میں (جو دلی میں ہوئی) برابر رہے ۔

20. لیبیا بڑے دن یعنی 24 دسمبر کو آزاد ہو جائیگا ۔ پیرس میں یونو کمیٹی نے کالے گورے کے سوال پر بحث کی ۔ پختونوں نے اپنی آزادی کے لئے ڈاکٹر گراہم کو ایک میمورنڈم پیش کیا ۔ اناج کے معاملے میں ہندستان برسوں تک سواولمبی نہیں ہوسکتا—ورلڈ بینک مشن کے مکھیا کا اعلان ۔

21. مصر کے سویز نہر والے علاقہ اسمعلیہ نامی مقام میں انگریزی حاکم نے کرفیو کا اعلان کیا ۔ ایران کے 38 ڈپٹیوں نے مجلس کا بائی کاٹ کیا ۔ ڈاکٹر گراہم نے سکیورٹی کونسل میں رپورٹ پیش کی ۔

22. مصر اپنا معاملہ یونو میں نہیں رکھیگا—سرکاری منسٹر کا اعلان ۔ ایران کے راج کاجی حلقوں میں سنسنی ۔

23. کوریا کی بات چیت میں کوئی ترقی نہیں ۔ ہند آرتھک کانفرنس کے صدر ڈاکٹر ڈے نے پٹنہ میں کہا کہ ہندستان میں گرانی بہت بڑھ گئی ہے اور لوگوں کی آمدنی کا بٹوارا بہت بے میل ہے ۔

24. مصر اور روس میں چھپے چھپے خاصی بات چیت چل رہی ہے—مصری اخبار کا اعلان ۔

इशारे पर यदि आवश्यकता हो तो लोग नहीं, सारा देश नंगे हो कर नंगा नाच नहीं, नग्न (नंगा) महातांडव (नाच) करे. जो यह न करे वह शान्ति का उपासक नहीं, जो इस पर आलोचनात्मक विचार तक करना चाहे वह संसार विरोधी, बुज़दिल, निकम्मा."

इस किताब का दाम बहुत ही ज़ियादा है. इसलिये यह आम जन्ता की पहुँच के बाहर होगई है. यह ज़रूरी है कि यात्रा वर्नन हमारी जनता के सामने आएं और बहुत ही सस्ते दामों में आएं जिनसे अधिक से अधिक लोग फ़ायदा उठा सकें. —मुजीब रिज़वी

जीवन साहित्य—भूदान यज्ञ अंक

सम्पादक—श्री हरि भाऊ उपाध्याय और श्री यशपाल जैन,

निकालने वाले—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली;

लिखावट—हिन्दी;

सफ़े 96 दाम बारह आने; सालाना चन्दा चार रुपए.

'जीवन साहित्य' की हिन्दी दुनिया में अपनी अनोखी शान है. कई बरस की सच्ची और लगातार सेवा के बल पर इसने अपनी ख़ास जगह भी बना ली है.

इसके ख़ास नम्बर तो मानो एक तरह से किताब ही होते हैं जो समझने और गुनने के लायक़ रहते हैं. हाल ही में शान्ति अंक और प्राकृतिक चिकित्सा अंक इसने निकाले हैं. अब यह भूदान यज्ञ अंक है.

भूदान यज्ञ हिन्दुस्तान में ही नहीं दुनिया के इतिहास में एक नई चीज़ है. विनोबा जी इस यज्ञ के ज़रिये से जहां एक तरफ़ सवालों के हल करने के पच्छिमी तर्ज़ को चुनौती देते हैं वहां दूसरी तरफ़ हिन्दुस्तान को भी उलहना देते हैं कि अगर वह हाथ पर हाथ रख कर बैठा रहेगा और मेहनत से काम नहीं करेगा तो उसे न माया मिलेगी न राम.

'जीवन साहित्य' के इस नम्बर में भूदान यज्ञ के जुदा जुदा पहलुओं पर रोशनी डाली गई है—जिससे उसकी सच्ची जानकारी हासिल करने में मदद मिलती है. ज़ियादा तर लेख उन भाई-बहनों के हैं जो इस यज्ञ में विनोबा जी के साथ हैं और उसको कामयाब बनाने में अपने तन-मन धन से लगे हुये हैं. इसकी वजह से यह नम्बर दिल को कहीं ज़ियादा छूने वाला और असर दार बन गया है.

हमें उम्मीद है कि हिन्दी पढ़ने वाले भाई बहन इस भूदान यज्ञ अंक को अपनायेंगे और 'जीवन साहित्य' को मौक़ा देंगे कि वह दिन दूना रात चौगुना अच्छा साहित्य निकाल कर अहिंसक समाज के बनने बनाने में मदद दे.

—सुरेश रामभाई

اشارے پر یدی آوشیکتا ہو تو لوگ نہیں، سارا دیش ننگے ہوکر ننگا ناچ نہیں، نگن (ننگا) مہاتانڈو (ناچ) کرے. جو یہ نہ کرے وہ شانتی کا اپاسک نہیں، جو اِس پر آلوچناتمک وچار تک کرنا چاہے وہ سنسار وِرودھی، بزدل، نکما".

اِس کتاب کا دام بہت ہی زیادہ ہے اِس لئے یہ عام جنتا کی پہونچ باہر ہوگئی ہے. یہ ضروری ہے کہ یاترا ورنن ہماری جنتا کے سامنے آئیں اور بہت ہی سستے داموں میں آئیں جن سے ادھک سے ادھک لوگ فائدہ اُٹھاسکیں. —مجیب رضوی

جیون ساھتیہ—بھودان یگیہ انک

سمپادک—شری ہری بھاؤ اپادھیائے اور شری یش پال جین؛

نکالنے والے—سستا ساھتیہ منڈل، نئی دلی؛

لکھاوٹ—ھندی؛ صفحے 96؛ دام—بارہ آنے؛ سالانہ چندہ چار روپئے.

' جیون ساھتیہ ' کی ھندی دنیا میں اپنی انوکھی شان ہے. کئی برس کی سچی اور لگاتار سیوا کے بل پر اِس نے اپنی خاص جگہ بھی بنا لی ہے.

اس کے خاص نمبر تو مانو ایک طرح سے کتاب ہی ہوتے ہیں جو سمجھنے اور گننے کے لائق رہتے ہیں. حال ہی میں شانتی انک اور پراکرتک چکستا انک اس نے نکالے ہیں. اب یہ بھودان یگیہ انک ہے.

بھودان یگیہ ھندستان میں ہی نہیں دنیا کے اتہاس میں ایک نئی چیز ہے. ونوبا جی اس یگیہ کے ذریعے سے جہاں ایک طرف سوالوں کے حل کرنے کے پچھمی طرز کو چنوتی دیتے ہیں وہاں دوسری طرف ھندستان کو بھی اُلہنا دیتے ہیں کہ اگر وہ ہاتھ پر ہاتھ رکھکر بیٹھا رہے گا اور محنت سے کام نہیں کرے گا تو اُسے مایا ملےگی نہ رام.

' جیون ساھتیہ ' کے اس نمبر میں بھودان یگیہ کے جدا جدا پہلوؤں پر روشنی ڈالی گئی ہے--جس سے اس کی سچی جانکاری حاصل کرنے میں مدد ملتی ہے. زیادہ تر لیکھ اُن بھائی بہنوں کے ہیں جو اس یگیہ میں ونوبا جی کے ساتھ ہیں اور اُس کو کامیاب بنانے میں اپنے تن من دھن سے لگے ہوئے ہیں. اس کی وجہ سے یہ نمبر دل کو کہیں زیادہ چھونے والا اور اثردار بن گیا ہے.

ہمیں اُمید ہے کہ ھندی پڑھنے والے بھائی بہن اس بھودان یگیہ انک کو اپنائینگے اور 'جیون ساھتیہ' کو موقع دینگے کہ وہ دن دونا رات چوگنا اچھا ساھتیہ نکال کر اہنسک سماج کے بننے بنانے میں مدد دے.

—سریش رام بھائی

के हाथों का कमाल है. इस तरह इस किताब से तीन तरह का आनन्द मिलता है.

लेकिन हम एक बात ज़रूर कहेंगे कि इन्जील की कहानी जो लेखक ने दी है वह अंगरेज़ी जानने वाले मामूली हिन्दुस्तानी पाठक को भारी पड़ेगी. आख़िर में ईसाई इतिहास का एक चार्ट और दो नक़्शे जो दिये गये हैं उनसे समझने में मदद ज़रूर मिलती है मगर ज़ियादा नहीं और भूल भुलैयों में पड़ जाने का अंदेशा रहता है. हमें आशा है कि दूसरी बार लेखक इसको सहज समझ में आने वाली और ज़ियादा आसान करने की कोशिश करेंगे.

—सुरेश रामभाई

सुदूर दक्खिन पूर्व

लिखने वाले—सेठ गोविन्द दास

निकालने वाले—आदर्श प्रकाशन, जबलपुर.

लिखावट—हिन्दी, सफ़ा 164, पांच रुपया आठ आना.

किसी देश के बारे में भूगोल, इतिहास या दर्शन और साहित्य की किताबें पढ़ कर पूरी जानकारी हासिल नहीं की जा सकती. इस कमी को वहां के निवासियों और उनके रोज़ाना के जीवन के बारे में पूरी जानकारी ही पूरी कर सकती है. इसी लिये यात्रा पर लिखी किताबों का साहित्य में बड़ा महत्व रहा है. दुख है कि हिन्दी साहित्य में यात्रा पर लिखी किताबों की बहुत बड़ी कमी है. इस बात का और भी दुख है कि आज जब आए दिन प्रतिनिधि मंडल बिदेशों को जाया करते हैं तो भी हमारे साहित्य की यह कमी पूरी नहीं होती. यात्रा के इस तरह के वर्नन हमारी आंखें हो सकते हैं जिनकी रोशनी से हम बाहर की दुनिया को देख और समझ सकते हैं.

सेठ गोविन्द दास जी की पुस्तक "सुदूर दक्खिन पूर्व" में न्युज़ीलैंड, आस्ट्रेलिया वग़ैरा देशों का वर्नन है. लेकिन हमें अफ़सोस है कि इस किताब में आप बीती अधिक है और जग बीती कम. हम जानना चाहते हैं कि इन देशों के लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इन देशों की समस्याएं क्या हैं, दुनिया की राजनीति को यह लोग किस दृश्टिकोन से देखते हैं, और कामनवेल्थ पार्लियामेन्ट्री एसोसीएशन और दूसरी ऐसी ही बैठकों में लोग किस तरह समस्याओं पर सोचते और कैसे कैसे विचार ज़ाहिर करते हैं. कहीं कहीं सेठ जी ने कोशिश की है लेकिन वह अपने में इतना खो गए हैं कि दूसरी ज़रूरी बातों पर उचित ध्यान दे ही नहीं पाए. कैनबरा की 10 दिसम्बर सन '50 की कानफ़्रेन्स के बारे में ज़रूर उन्हों ने अपनी सच्ची राय लिखी है जिस से हम को काफ़ी रोशनी मिलती है:

"लड़ाई ही सब के दिवस (दिन) की चिन्ता और रात्री (रात) का स्वप्न हो और हर बात में अमरीका के

کے ہاتھوں کا کمال ھیں. اس طرح اس کتاب سے تین طرح کا آنندملتا ہے .

لیکن ھم ایک بات ضرور کہینگے کہ انجیل کی کہانی جو لیکھک نے دی ھے وہ انگریزی جاننے والے معمولی ہندستانی پاٹھک کو بھاری پڑیگی . آخیر میں عیسائی اتہاس کا ایک چارٹ اور دو نقشے جو دیئے گئے ھیں اُن سے سمجھنے میں مدد ضرور ملتی ھے مگر زیادہ نہیں اور بھول بھلیوں میں پڑ جانے کا اندیشہ ھے . ھمیں آشا ھے کہ دوسری بار لیکھک اسکو سہج سمجھ میں آنے والی اور زیادہ آسان کرنے کی کوشش کرینگے .

—سریش رامبھائی

سدور دکھن پورو

لکھنے والے—سیٹھ گووند داس

نکالنے والے—آدرش پرکاشن' جبل پور .

لکھاوٹ ھندی' صفحہ 164' دام پانچ روپیہ آٹھ آنہ .

کسی دیش کے بارے میں بھوگول' اتہاس یادرشن اور ساھتیہ کی کتابیں پڑھکر پوری جانکاری حاصل نہیں کی جا سکتی . اس کمی کو وھاں کے نواسیوں اور اُن کے روزانہ جیون کے بارے میں پوری جانکاری ھی پوری کر سکتی ھے . اسی لئے یاترا پر لکھی کتابوں کا ساھتیہ میں بڑا مہتو رھا ھے . دکھ ھے کہ ھندی ساھتیہ میں یاترا پر لکھی کتابوں کی بہت بڑی کمی ھے . اِس بات کا اور بھی دکھ ھے کہ آج جب آئے دن پرتیندھی منڈل ودیشوں کو جایا کرتے ھیں تو بھی ھمارے ساھتیہ کی یہ کمی پوری نہیں ھوتی . یاترا کے اسطرح کے ورنن ھماری آنکھیں ھوسکتے ھیں جن کی روشنی ھم باھر کی دنیا کو دیکھ اور سمجھ سکتے ھیں .

سیٹھ گووندداس جی کی پستک "سدور دکھن پورو" میں نیوزیلینڈ' آسٹریلیا وغیرہ دیشوں کا ورنن ھے . لیکن ھمیں افسوس ھے کہ اِس کتاب میں آپ بیتی ادھک ھے اور جگ بیتی کم . ھم جاننا چاھتے ھیں اِن دیشوں کے لوگ ھمارے بارے میں کیا سوچتے ھیں' اِن دیشوں کی سمسیائیں کیا ھیں' دنیا کی راجنیت کو یہ لوگ کس درشٹی کون سے دیکھتے ھیں' کامن ویلتھ پارلیامنٹری ایسوسی ایشن اور دوسری ایسی ھی بیٹھکوں میں لوگ کس طرح سمسیاؤں پر سوچتے اور کیسے کیسے وچار ظاھر کرتے ھیں . کہیں کہیں سیٹھ جی نے کوشش کی ھے لیکن وہ اپنے میں اتنا کھو گئے ھیں کہ دوسری ضروری باتوں پر اُچت دھیان دے ھی نہیں پائے . کینبرا کی 10 دسمبر سن '50 کی کانفرنس کے بارے میں ضرور اُنھوں نے اپنی سچی رائے لکھی ھے جس سے ھم کو کافی روشنی ملتی ھے :

"لڑائی ھی سب کے دوس (دن) کی چنتا اور راتری (رات) کا سپن ھو اور ھر بات میں امریکہ کے

अर्थ-शास्त्र के सवालों, देश की मौजूदा राजनीति और प्लानिंग के मसलों में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन के लिये यह किताब बहुत उपयोगी साबित होगी. जो यह जानना चाहते हों कि आर्थिक पहलू से महात्मा जी के रामराज का क्या मतलब है उन्हें यह किताब जरूर पढ़नी चाहिये.

—सुरेश रामभाई

दि स्टोरी आफ़ दि बाईबिल

लेखक—एस. के. जार्ज;

निकालने वाले—नवजीवन, अहमदाबाद;

लिखावट—अंगरेज़ी;

सफ़े 217, दाम चार रुपए.

वेद और क़ुरान शरीफ़ की तरह बाईबिल (या इन्जील) दुनिया की उन गिनी चुनी किताबों में है जिनके सहारे लाखों करोड़ों को अपनी रूहानी ख़ुराक नसीब होती रही है. बाईबिल और ईसा के ऊपर योरप की भाषाओं में जहां बेशुमार किताबें लिखी गई हैं हमारे देश की भाषाओं में उतना ही कम. ऐसा होना कुछ तो क़ुदरती है क्योंकि हिन्दुस्तान में ईसाई मज़हब विदेशी शासकों के साथ नत्थी था. मगर इसकी ख़ास वजह यह है कि क्या ईसाई धर्म, क्या ईसा का निजी जीवन—दोनों चीज़ों से हम हिन्द के रहने वाले हिन्दू मुसलमान भाइयों की जानकारी बहुत कम है. लेकिन अब तक—अंगरेज़ी राज में—ईसाई स्कूलों में इन्जील लाज़मी तौर पर पढ़ाई जाती थी और इसलिये उनमें तालीम पाने वाले हिन्दुस्तानी बच्चों को कुछ जानकारी हो जाती थी. मगर आज़ादी के बाद यह चीज़ अब शायद न रहेगी जिसका नतीजा यह हो सकता है (हालांकि होना तो इसका उलटा चाहिये) कि इन्जील की जानकारी रखने वालों की तादाद और भी गिर जाये. इसलिये हम श्री एस. के. जार्ज की इस किताब का स्वागत करते हैं जिस से थोड़े में ही यह झलक मिल जाती है कि इन्जील की कहानी क्या है और उससे हमें क्या सबक़ मिलता है.

लेखक ने इन्जील की कहानी को बारह छोटे छोटे अध्यायों में बांट दिया है. हर अध्याय के आख़िर में इन्जील से लेकर कुछ हिस्से या वाक्या दिये गये हैं जिनसे उसके अमृत का थोड़ा बहुत रस भी मिल जाता है. इस तरह यह किताब एक संग्रह का भी काम देती है.

इनके अलावा इस किताब में ईसा के जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बड़ी सुन्दर सुन्दर नौ तसवीरें हैं जो शान्ति निकेतन के एक कलाकार श्री विनायक मासोजी

ارتھ شاستر کے سوالوں، دیش کی موجودہ راج نیتی اور پلاننگ کے مسئلوں میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کے لئے یہ کتاب بہت اُپیوگی ثابت ہوگی. جو یہ جاننا چاہتے ہوں کہ آرتھک پہلو سے مہاتما جی کے رام راج کا کیا مطلب ہے اُنہیں یہ کتاب ضرور پڑھنی چاہئے.

—سریش رام بھائی

دی اِسٹوری آف دی بائبل

لیکھک—ایس. کے. جارج؛

نکالنے والے—نوجیون، احمدآباد؛

لکھاوٹ—انگریزی؛

صفحے 217؛ دام چار روپئے.

وید اور قرآن شریف کی طرح بائبل (یا انجیل) دنیا کی اُن گنی چنی کتابوں میں ہے جنکے سہارے لاکھوں کروڑوں کو اپنی روحانی خوراک نصیب ہوتی رہی ہے. بائبل اور عیسیٰ کے اوپر یورپ کی بھاشاؤں میں جہاں بے شمار کتابیں لکھی گئی ہیں ہمارے دیش کی بھاشاؤں میں اُتنی ہی کم. ایسا ہونا کچھ تو قدرتی ہے کیونکہ ہندستان میں عیسائی مذہب ودیشی شاسکوں کے ساتھ نتھی تھا. مگر اس کی خاص وجہ یہ ہے کہ کیا عیسائی دھرم، کیا عیسیٰ کا نجی جیون—دونوں چیزوں سے ہم ہند کے رہنے والے ہندو مسلمان بھائیوں کی جانکاری بہت کم ہے. لیکن اب تک—انگریزی راج میں—عیسائی اسکولوں میں انجیل لازمی طور پر پڑھائی جاتی تھی اور اس لئے اُن میں تعلیم پانے والے ہندستانی بچوں کو کچھ جانکاری ہو جاتی تھی. مگر آزادی کے بعد یہ چیز اب شاید نہ رہیگی جسکا ایک نتیجہ یہ ہو سکتا ہے (حالانکہ ہونا تو اس کا اُلٹا چاہئے) کہ انجیل کی جانکاری رکھنے والوں کی تعداد اور بھی گر جائے. اس لئے ہم شری ایس. کے. جارج کی اس کتاب کا سواگت کرتے ہیں جس سے تھوڑے میں ہی یہ جھلک مل جاتی ہے کہ انجیل کی کہانی کیا ہے اور اُس سے ہمیں کیا سبق ملتا ہے.

لیکھک نے انجیل کی کہانی کو بارہ چھوٹے چھوٹے ادھیاؤں میں بانٹ دیا ہے. ہر ادھیائے کے آخر میں انجیل سے لیکر کچھ حصے یا واکیہ دیئے گئے ہیں جن سے اُس کے امرت کا تھوڑا بہت رس بھی مل جاتا ہے. اس طرح یہ کتاب ایک سنگرہ کا بھی کام دیتی ہے.

اسکے علاوہ اس کتاب میں عیسیٰ کے جیون سے سمبندھ رکھنے والی بڑی سندر سندر نو تصویریں ہیں جو شانتی نکیتن کے ایک کلاکار شری وناتک ماسو جی

तसवीरें हैं. इधर हाल ही में कुमारप्पा जी चीन गये थे, उनके वहां के सफ़र के भी कई चित्र दिये गये हैं.

पूरी किताब देख जाने के बाद सवाल उठता है कि जब हिन्दुस्तान की सरकार विदेशी—ख़ास कर अमरीकी—पैसा और "एक्सपर्ट" ले लेकर देश की जनता को मशीनों, कारख़ानों और फ़ौज को ग़ुलाम बनाने पर उतारू है, तो उस हालत में 'शान्ति की अर्थनीति' की कहां तक गुंजायश है और उसके पैरोकार कहां तक सरकार की रविश और सरगर्मियों का मुक़ाबला करके देश को सही अर्थ नीति पर ला सकेंगे. और इस अर्थ नीति को क़ायम करने के वास्ते मुसीबतों का सामना करने के लिये वह पूरी तरह तैयार हैं या नहीं ? धीमे से आवाज़ आती है कि तैयार हो रहे हैं और जब विनोबा या कुमारप्पा जैसी हस्तियां मौजूद हों तब तो डरने या घबराने की कोई बात ही नहीं है.

हमारी सिफ़ारिश है कि इस किताब का देश की भाषाओं में अनुवाद हो कर ख़ूब प्रचार किया जाना चाहिये.

हम दोनों सम्पादकों को बधाई देते हैं जिन्होंने इतनी मेहनत और लगन से यह अभिनन्दन ग्रंथ तैयार किया है. यह उनकी एक ठोस रचनात्मक सेवा है. आख़िर में हम कुमारप्पा जी को उनकी साठवीं सालगिरह पर बधाई देते हैं और मालिक से बिनती करते हैं कि उनके नेक इरादों को पूरा करे.

—सुरेश रामभाई

تصویریں ھیں . اِدھر حال ھی میں کمارپپا جی چین گئے تھے' اُن کے وھاں کے سفر کے بھی کئی چتر دئے گئے ھیں .

پوری کتاب دیکھ جانے کے بعد سوال اُٹھتا ہے کہ جب ھندستان کی سرکار ودیشی—خاص کر امریکی—پیسہ اور "ایکس پرٹ" لے لیکر دیش کی جنتا کو مشینوں' کارخانوں اور فوج کو غلام بنانے پر اُتارو ھے' تو اس حالت میں 'شانتی کی ارتھ نیتی' کی کہاں تک گنجائش ھے اور اس کے پیروکار کہاں تک سرکار کی روش اور سرگرمیوں کا مقابلہ کر کے دیش کو صحیح ارتھ نیتی پر لا سکینگے . اور اِس ارتھ نیتی کو قائم کرنے کے واسطے مصیبتوں کا سامنا کرنے کے لئے—وہ پوری طرح تیار ھیں یا نہیں؟ دھیمے سے آواز آتی ھے کہ تیار ھو رھے ھیں اور جب ونوبا یا کمارپپا جیسی ھستیاں موجود ھوں تب تو ڈرنے یا گھبرانے کی کوئی بات ھی نہیں ھے .

ھماری سفارش ھے کہ اس کتاب کا دیش کی بھاشاؤں میں انوواد ھو کر خوب پرچار کیا جانا چاھئے .

ھم دونوں سمپادکوں کو بدھائی دیتے ھیں جنھوں نے اتنی محنت اور لگن سے یہ ابھینندن گرنتھ تیار کیا ھے . یہ ان کی ایک ٹھوس رچناتمک سیوا ھے . آخر میں ھم کمارپپا جی کو اُن کی ساٹھویں سال گرہ پر بدھائی دیتے ھیں اور مالک سے بنتی کرتے ھیں کہ اُن کے نیک ارادوں کو پورا کرے .

—سریش رام بھائی

टुवरड्स नानवायलेन्ट सोशलिज़्म

(महात्मा गांधी के लेखों व स्पीचों का संग्रह)

एडीटर—भारतन कुमारप्पा ; निकालने वाले—नवजीवन, अहमदाबाद ; लिखावट अंगरेज़ी, सफ़े 165 ; दाम दो रुपये.

नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद महात्मा गांधी के लेखों व स्पीचों का अलग अलग विशयों पर अलग अलग संग्रह निकाल कर कई बरस से देश की एक क़ुदरती मांग को पूरा कर रहा है. सम्पादन का काम भाई भारतन कुमारप्पा के सिपुर्द है. उनके कई संग्रहों पर हम पिछले महीनों में अपने ख़याल ज़ाहिर कर चुके हैं.

इस संग्रह में सोशलिज़्म और कम्यूनिज़्म से ताल्लुक़ रखने वाली चीज़ें जमा कर दी गई हैं. पाठक की आसानी के लिये किताब को ग्यारह हिस्सों में बांटा गया है, जैसे मक़सद, नैतिक शर्तें, बराबर बंटवारा, उद्योग-धन्दे, कम से कम मज़दूरी, पूंजी और मेहनत, हड़ताल, क़ुली और किसान, पूंजीपति व ज़मींदार, ग़रीब, कम्यूनिज़्म.

ٹوورڈس نان وائلنٹ سوشلزم

(مہاتما گاندھی کے لیکھوں و اسپیچوں کا سنگرہ)

ایڈیٹر—بھارتن کمارپپا؛ نکالنے والے—نوجیون' احمدآباد؛ لکھاوٹ—انگریزی؛ صفحے 165؛ دام دو روپئے .

نوجیون ٹرسٹ' احمدآباد مہاتما گاندھی کے لیکھوں و اسپیچوں کا الگ الگ وشیوں پر الگ الگ سنگرہ نکال کر کئی برس سے دیش کی ایک قدرتی مانگ کو پورا کر رھا ھے . سمپادن کا کام بھائی بھارتن کمارپپا کے سپرد ھے . اُن کے کئی سنگرھوں پر ھم پچھلے مہینوں میں اپنے خیال ظاھر کرچکے ھیں .

اِس سنگرہ میں سوشلزم اور کمیونزم سے تعلق رکھنے والی چیزیں جمع کردی گئی ھیں . پاٹھک کی آسانی کے لئے کتاب کو گیارہ حصوں میں بانٹا گیا ھے' جیسے مقصد' نیتک شرطیں' برابر بٹوارا' اُدیوگ دھندے' کم سے کم مزدوری' پونجی اور محنت' ھڑتال' قلی اور کسان' پونجی پتی و زمیندار' غریب' کمیونزم .

ने लिखे हैं. विनायक जी ने तमिल भाषा में कुमारप्पा जी की जीवनी भी लिखी है.

दूसरा हिस्सा सब से बड़ा है, 130 सफ़ों का. उसमें धर्म-मजहब, अर्थ-माल और राजनीति-स्यासत पर कुमारप्पा जी के विचार दिये गये हैं. और जो उनकी किताबों, लेखों और स्पीचों से लिये गये हैं. इनको पढ़ने पर मालूम होता है कि अहिंसक अर्थ शास्त्र किस गहराई के साथ कुमारप्पा जी की नस-नस में समाया हुआ है और किस लासानी और अनोखे ढंग से वह उसकी पैरवी करते हैं. हमारा खयाल है कि इनमें से कुछ चीज़ें तो दुनिया के अर्थ शास्त्र व राजनीति शास्त्र में हमेशा अमर रहेंगी.

लेकिन लेखों-स्पीचों के इस संग्रह के बारे में हम इतना ज़रूर कहेंगे कि धर्म वाले हिस्से में जैसे यह बता दिया गया है कि कौन चीज़ कहां से ली गई है उस तरह अर्थ-शास्त्र और राजनीति-स्यासत वालों में नहीं बताया गया है. इसके अलावा सफ़े 44 और 48 पर किताबों के हवाले ग़लत दिये गये हैं.

इन्क़लाबी तामीर वाले हिस्से से उस नये हिन्दुस्तान की तसवीर सामने आती है जो शान्ति की अर्थ नीति के आधार पर खड़ा किया जा रहा है. महात्मा गांधी ने तामीरी काम के अलग अलग पहलुओं को अलग अलग संस्थाओं और कारकुनों के हाथ में सौंप दिया था. खादी, हरिजन सेवा, ग्रामोद्योग, नई तालीम, गो सेवा, हिन्दुस्तानी प्रचार, औरतहिं सेवा इनमें खास हैं. इनमें से हर एक में अब तक कितना काम हुआ, अब क्या हो रहा है, और आगे का क्या प्रोग्राम है यह इस हिस्से से बखूबी पता चल जाता है. हमारी राय है कि इस हिस्से को अलग किताब की शकल में निकालना चाहिये ताकि देश को मालूम हो कि महात्मा गांधी के बाद उनके बताये रास्ते पर क्या काम हो रहा है. लेकिन इस हिस्से में गांधी स्मारक निधि का कुछ भी चर्चा न होना खटकता है.

किताब के चौथे हिस्से में आज की दुनिया से ताल्लुक़ रखने वाले कुछ सवालों पर खासी अच्छी रोशनी डाली गई है—जैसे विश्व-शान्ति को खतरा, नई तालीम की पुकार, सर्वोदय और कम्यूनिज़म, कन्ट्रोल, पच्छिम का रुख, सरकार और ग्रामोद्योग, गांव वालों की हालत वग़ैरा. आखरी हिस्से में कुमारप्पा जी को श्रद्धांजलि देते हुए काका साहेब कालेलकर, किशोरलाल भाई मशरूवाला, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू वग़ैरह के सुन्दर लेख हैं.

किताब मगनवाड़ी में बने हाथ के काग़ज़ पर छापी गई है. इसमें कुमारप्पा जी से सम्बन्ध रखने वाली 33

لے لکھے ہیں ۔ ونائیک جی نے تامل بھاشا میں کمارپپا جی کی جیونی بھی لکھی ہے ۔

دوسرا حصہ سب سے بڑا ہے، 130 صفحوں کا ۔ اس میں دھرم-مذہب، ارتھ-مال اور راج نیتی-سیاست پر کمارپپا جی کے وچار دیئے گئے ہیں جو اُن کی کتابوں، لیکھوں اور اسپیچوں سے لئے گئے ہیں ۔ اِن کو پڑھنے پر معلوم ہوتا ہے کہ اہنسک ارتھ شاستر کس گہرائی کے ساتھ کمارپپا جی کی نس نس میں سمایا ہوا ہے اور کس لاثانی اور انوکھے ڈھنگ سے وہ اُسکی پیروی کرتے ہیں ۔ ہمارا خیال ہے کہ اِن میں سے کچھ چیزیں تو دنیا کے ارتھ شاستر و راج نیتی شاستر میں ہمیشہ امر رہینگی ۔

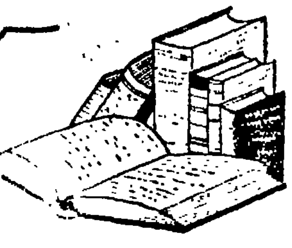
لیکن لیکھوں-اسپیچوں کے اِس سنگرہ کے بارے میں ہم اتنا ضرور کہیں گے کہ دھرم والے حصے میں جیسے یہ بتا دیا گیا ہے کہ کون چیز کہاں سے لی گئی ہے اُس طرح ارتھ شاستر اور راج نیتی سیاست والوں میں نہیں بتایا گیا ہے ۔ اِس کے علاوہ صفحے 11 اور 18 پر کتابوں کے حوالے غلط دیئے گئے ہیں ۔

انقلابی تعمیر والے حصے سے اُس نئے ہندستان کی تصویر سامنے آتی ہے جو شانتی کی ارتھ نیتی کے آدھار پر کھڑا کیا جا رہا ہے ۔ مہاتما گاندھی نے تعمیری کام کے الگ الگ پہلوؤں کو الگ الگ سنستھاؤں اور کارکنوں کے ہاتھ میں سونپ دیا تھا ۔ کھادی، ہریجن سیوا، گرامودیوگ، نئی تعلیم، گو سیوا، ہندستانی پرچار، عورتہیں سیوا اِن میں خاص ہیں ۔ ان میں سے ہر ایک میں اب تک کتنا کام ہوا، اب کیا ہو رہا ہے اور آگے کا کیا پروگرام ہے یہ اس حصے سے بخوبی پتہ چل جاتا ہے ۔ ہماری رائے ہے کہ اس حصے کو الگ کتاب کی شکل میں نکالنا چاہئے تاکہ دیش کو معلوم ہو کہ مہاتما گاندھی کے بعد اُن کے بتائے راستے پر کیا کام ہو رہا ہے ۔ لیکن اِس حصے میں گاندھی سمارک ندھی کا کچھ بھی چرچہ نہ ہونا کھٹکتا ہے ۔

کتاب کے چوتھے حصے میں آج کی دنیا سے تعلق رکھنے والے کچھ سوالوں پر خاصی اچھی روشنی ڈالی گئی ہے—جیسے وشو شانتی کو خطرہ، نئی تعلیم کی پکار، سرودے اور کمیونزم، کنٹرول، پچھم کا رخ، سرکار اور گرامودیوگ، گاؤں والوں کی حالت، وغیرہ ۔ آخری حصے میں کمارپپا جی کو شردھا نجلی دیتے ہوئے کاکا صاحب کالیلکر، کشور لال بھائی مشرو والا، شریمتی رامیشوری نہرو وغیرہ کے سندر لیکھ ہیں ۔

کتاب مگن واڑی میں بنے ہاتھ کے کاغذ پر چھاپی گئی ہے ۔ اس میں کمارپپا جی سے سمبندھ رکھنے والی 33

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

दि एकोनामिक्स आफ़ पीस

एडीटर—एस. के. जार्ज और जी. रामचंद्रन;

निकालने वाले—अखिल भारत ग्राम उद्योग संघ, वर्धा;

लिखावट—अंगरेज़ी ;

सफ़े—378; काग़ज़ हाथ का; तसवीरें 33;

दाम—दस रुपए.

दरअसल यह किताब एक अभिनन्दन ग्रंथ है जो आचार्य जे. सी. कुमारप्पा की साठवीं सालगिरह पर उनके साथियों और प्रेमियों ने मगनवाड़ी में उन्हें पेश किया. कुमारप्पाजी क्या हैं—एक इन्सान जिसने अपना जीवन लगा दिया है एक काम में. किस काम में—आज की दुनिया में जो लड़ाई, शोशन और बैर की आर्थिक नीति है उसकी जगह भाई चारे, सहयोग और प्रेम की आर्थिक नीति क़ायम करने के काम में. इस अर्थ नीति को आम तौर से गांधी अर्थ नीति कहा जाता है. यह वही अर्थ नीति है जिसके सहारे दुनिया में सच्ची शान्ति मुसतक़िल तौर पर क़ायम हो सकती है. इस तरह कुमारप्पाजी शान्ति की अर्थनीति के अलमबरदार हैं. शायद इसी वजह से उनको जो अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया उसका नाम 'शान्ति की अर्थ नीति' रखा गया और यह ठीक ही किया गया.

किताब को पांच हिस्सों में बांटा गया है—(1) कुमारप्पा जी की जीवन सम्बन्धी झलक, (2) उनकी स्पीचों और लेखों का संग्रह, (3) इन्क़लाबी तामीर (4) आज के सवाल, और (5) श्रद्धांजलि.

पहले हिस्से में शुरू का लेख कुमारप्पा जी की बड़ी बहन का लिखा हुआ है जिसमें उनके बचपन के जीवन की झलक मिलती है और साफ़ पता चलता है कि जोसफ़ चल्लादुराई एक दिन चलकर ज़रूर बड़ा आदमी होगा. इस हिस्से के दूसरे लेख रामचंद्रन जी (जो आजकल ग्राम उद्योग संघ के मंत्री हैं) और विनायक जी (जो मगनवाड़ी के पुराने तजुरबेकार कार्य कर्ता हैं और जिनका काफ़ी समय कुमारप्पा जी के साथ घूमने-फिरने में बीता है)

دی ایکونامکس آف پیس

ایڈیٹر—ایس . کے . جارج اور جی . رام چندرن ؛

نکالنے والے—اکھل بھارت گرام اُدیوگ سنگھ، وردھا ؛

لکھاوٹ—انگریزی ؛

صفحے—378 ؛ کاغذ ہاتھ کا ؛ تصویریں 33 ؛

دام—دس روپے .

دراصل یہ کتاب ایک ابھینندن گرنتھ ہے جو آچاریہ جے . سی . کماریپا کی ساٹھویں سالگرہ پر اُن کے ساتھیوں اور پریمیوں نے مگن واڑی میں اُنھیں پیش کیا . کماریپا جی کیا ہیں—ایک انسان جس نے اپنا جیون لگا دیا ہے ایک کام میں . کس کام میں—آج کی دنیا میں جو لڑائی، شوشن اور بیر کی آرتھک نیتی ہے اُسکی جگہ بھائی چارے، سہیوگ اور پریم کی آرتھک نیتی قائم کرنے کے کام میں . اِس ارتھ نیتی کو عام طور سے گاندھی ارتھ نیتی کہا جاتا ہے یہ وہی ارتھ نیتی ہے جسکے سہارے دنیا میں سچی شانتی مستقل طور پر قائم ہوسکتی ہے . اِسطرح کماریپا جی شانتی کی ارتھ نیتی کے علمبردار ہیں . شاید اِسی وجہ سے اُن کو جو ابھینندن گرنتھ بھینٹ کیا گیا اُسکا نام ' شانتی کی ارتھ نیتی ' رکھا گیا اور یہ ٹھیک ہی کیا گیا .

کتاب کو پانچ حصوں میں بانٹا گیا ہے—(1) کماریپا جی کی جیون سمبندھی جھلک (2) اُن کی اسپیچوں اور لیکھوں کا سنگرہ (3) انقلابی تعمیر (4) آج کے سوال، اور (5) شردھانجلی .

پہلے حصے میں شروع کا لیکھ کماریپا جی کی بڑی بہن کا لکھا ہوا ہے جس میں اُن کے بچپن کے جیون کی جھلک ملتی ہے اور صاف پتہ چلتا ہے کہ جوسف چلادرائی ایک دن چلکر ضرور بڑا آدمی ہوگا . اِس حصے کے دوسرے لیکھ رام چندرن جی (جو آجکل گرام اُدیوگ سنگھ کے منتری ہیں) اور ونائیک جی (جو مگن واڑی کے پرانے تجربے کار کاریہ کرتا ہیں اور جن کا کافی سمے کماریپا جی کے ساتھ گھومنے پھرنے میں بیتا ہے)

खूब दुरुस्त हो जावे. इसलिये या तो तुम अपनी दादी से कहो कि वह भी चलें या तुम खुद चाचा और चाची के साथ जाने को तैयार हो जाओ. इन दोनों बातों में से एक ज़रूर होनी चाहिये. और सब से अच्छी तो यह ही बात है कि तुम अपने मन को अक़ल के कहने पर हमेशा चलाओ. देखो चाचा ने तुम से लाहौर चलने को कहा तो पहले तुम ने हां कर ली, मगर फिर सिर्फ़ इस सबब से नहीं गई कि तुम्हारा मन अकेले यानी बग़ैर दादी के चाचा चाची के साथ जाने को न चाहा. लेकिन इस बात में तुम्हारा मन अक़ल के तो बिल्कुल बरख़िलाफ़ था क्योंकि अगर तुम लाहौर चली जातीं तो वहां नई नई बातें और नई नई चीज़ें देखने से तुम्हारा दिल ज़रूर खुश होता. और इसलिये तुम्हे जो बीमारी थी उसको भी ज़रूर फ़ायदा होता. चाचा तुम्हें वहां ऐसी ऐसी लड़कियों से भी मिलाते जिन्होंने खूब पढ़ा है और जिनकी शादी छोटी उम्र में नहीं हुई, बड़ी उम्र में होगी. इसी तरह अब शिमले जाने की बात है, अगर तुम्हारी बुआ दादी वग़ैरा सब चले जाएं तब तो बहुत ही अच्छी बात है. लेकिन अगर सब किसी सबब से न जा सकें तो फिर तुम्हें तो ज़रूर चाचा चाची के साथ जाना चाहिये. क्योंकि हर एक आदमी को अपनी अक़ल के मुताबिक़ काम करना चाहिये, न कि मन के. और न आदमी को किसी में ऐसा मन लगाना चाहिये कि उससे अलग होने ही को मन न चाहे. इस वास्ते तुम्हें असल में इस तरह करना चाहिये कि खुद तो चाचा के साथ जब उनको छुट्टियां हों तो उसी वक़्त चली जाओ. और फिर भय्या को जब छुट्टियां होंगी तो वह भी किसी के साथ तुम्हारे पास आ सकता है.

राधे, सब से बड़ी बात जो तुम्हें सीखनी है और हर एक आदमी को सीखना चाहिये वह यह है कि किसी काम या बात या चीज़ या आदमी या जानवर में ऐसा और इस तरह मन न लगाओ कि जब अक़ल के मुताबिक़ उसको छोड़ना ज़रूरी हो तो भी छोड़ने को दिल न करे और छोड़ा न जाए. जो आदमी इस तरह अपना मन कभी किसी में कभी किसी में लगाते रहते हैं उनको हमेशा कभी कुछ रंज होता है, कभी कुछ फ़िकर और उनकी तबियत कभी भी बिल्कुल ख़ुश और शान्ति में नहीं रहती. मगर जो आदमी रफ़ता रफ़ता यह आदत डाल लेते हैं उनको कभी कोई रंज या दुख या अफ़सोस नहीं होगा, चाहे उन पर कितनी ही मुसीबत भी पड़े फिर भी वह हमेशा ख़ुश रहते हैं और उनके दिल में इस बात का इत्मीनान रहता है कि जो कुछ उन्होंने किया भगवान की मरज़ी के मुताबिक़ किया है. फिर अफ़सोस किस बात का?

خوب درست ہو جاوے۔ اس لئے یا تو تم اپنی ادی سے کہو کہ وہ بھی چلیں یا تم خود چاچا ور چاچی کے ساتھ جانے کو تیار ہو جاؤ۔ ان ونوں باتوں میں سے ایک ضرور ہونی چاہئے۔ اور سب سے اچھی تو یہ ہی بات ہے کہ تم اپنے من کو عقل کے کہنے پر ہمیشہ چلاؤ۔ دیکھو چاچا نے تم سے لاہور چلنے کو کہا تو پہلے تم نے ہاں کرلی، مگر پھر صرف اِس سبب سے نہیں گئیں کہ تمہارا من اکیلے یعنی بغیر دادی کے چاچا چاچی کے ساتھ جانے کو نہ چاہا۔ لیکن اس بات میں تمہارا من عقل کے تو بالکل برخلاف تھا کیونکہ اگر تم لاہور چلی جاتیں تو وہاں نئی نئی باتیں اور نئی نئی چیزیں دیکھنے سے تمہارا دل ضرور خوش ہوتا۔ اور س لئے تمہیں جو بیماری تھی اُس کو بھی ضرور فائدہ ہوتا۔ چاچا تمہیں وہاں ایسی ایسی لڑکیوں سے بھی ملاتے جنہوں نے خوب پڑھا ہے اور جن کی شادی چھوٹی عمر میں نہیں ہوئی، بڑی عمر میں ہوگی۔ اسی طرح ب شملے جانے کی بات ہے، اگر تمہاری بوا دادی وغیرہ سب چلے جائیں تب تو بہت ہی اچھی بات ہے۔ لیکن اگر سب کسی سبب سے نہ جاسکیں تو پھر تمہیں و ضرور چاچا چاچی کے ساتھ جانا چاہئے۔ کیونکہ ہر یک آدمی کو اپنی عقل کے مطابق کام کرنا چاہئے، نہ کہ من کے۔ اور نہ آدمی کو کسی میں ایسا من لگانا چاہئے کہ اُس سے الگ ہونے ہی کو من نہ چاہے۔ اس واسطے مہیں اصل میں اس طرح کرنا چاہئے کہ خود تو چاچا کے ساتھ جب اُنکو چھٹیاں ہوں تو اُسی وقت چلی جاؤ۔ ور پھر بھیا کو جب چھٹیاں ہونگی تو وہ بھی کسی کے ساتھ تمہارے پاس آ سکتا ہے۔

رادھے، سب سے بڑی بات جو تمہیں سیکھنی ہے اور ر ایک آدمی کو سیکھنا چاہئے وہ یہ ہے کہ کسی کام یا ات یا چیز یا آدمی یا جانور میں ایسا اور اس طرح من نہ لگاؤ کہ جب عقل کے مطابق اُس کو چھوڑنا ضروری و تو بھی چھوڑنے کو دل نہ کرے اور چھوڑا نہ جائے۔ جو دمی اِس طرح اپنا من کبھی کسی میں کبھی کسی یں لگاتے رہتے ہیں اُن کو ہمیشہ کبھی کچھ رنج ہوتا ہے، کبھی کچھ فکر اور اُن کی طبیعت کبھی بھی بالکل خوش اور شانتی میں نہیں رہتی۔ مگر جو آدمی فتہ رفتہ یہ عادت ڈال لیتے ہیں اُن کو کبھی وئی رنج یا دکھ یا افسوس نہیں ہوگا، چاہے اُن پر کتنی ی مصیبت بھی پڑے پھر بھی وہ ہمیشہ خوش رہتے ہیں و اُن کے دل میں اس بات کا اطمینان رہتا ہے کہ جو کچھ اُنہوں نے کیا بھگوان کی مرضی کے مطابق کیا ہے۔ ر افسوس کس بات کا؟

पहले उठकर सीधा गिरजा घर को गया और ज़ीना चढ़कर ऊपर आ पहुँचा और घंटे की डोरी खेंच कर बजाने लगा. इतने में देखता क्या है कि सामने की तरफ़ जो गिरजे का दूसरा ज़ीना था उसके ऊपर वाले दरवाज़े में कोई सफ़ेद सफ़ेद शकल खड़ी है और उसका मुंह बिलकुल काला और आंखें लाल लाल हैं. यह देखकर लड़का ज़रा भी न डरा. बल्कि उसने पुकार कर पूछा कि तू कौन है ? उस शकल ने कुछ जवाब न दिया. लड़के ने फिर पूछा कि तू कौन है ? शकल ने फिर भी कुछ जवाब न दिया. लड़के ने कहा अगर तू जवाब न देगी तो मैं तुझे सीढ़ियों से नीचे धक्का दे दूँगा. शकल फिर भी चुप रही. यह देख लड़का [जो कि रोज़ वर्ज़िश करते रहने के कारन ख़ासा ताक़तवर था] शकल की तरफ़ दौड़ा. शकल ने उसको डराने के लिये एक बड़े ज़ोर की चीख़ मारी. मगर लड़के ने कुछ परवाह न की और ऐसे ज़ोर से धक्का दिया कि वह शकल लुढ़कती पुढ़कती सीढ़ियों के नीचे जा पड़ी. और लड़का घंटा बजा कर पादरी साहब के घर में आकर अपने कमरे में सो गया. जब सुबह हुई तो पादरी साहब नदारद. उनकी मेम ने लड़के से पूछा कि पादरी साहब कहां हैं ? लड़के ने कहा मुझे क्या ख़बर. पूछते पूछते एक नौकर ने कहा के पादरी साहब को साढ़े ग्यारह बजे रात के मैंने बाहर जाते देखा था. फिर ख़बर नहीं कि वापिस आए या न आए. इस पर लड़के को याद आया कि कहीं उस शकल के भेस में पादरी साहब ही को मैंने धक्का न दे दिया हो, यह सोच वह गिरजा गया और जाकर देखा कि पादरी साहब पीछे की तरफ़ के ज़ीने के नीचे पड़े हैं और पास ही उनका काले मुँह और लाल आंखों का चेहरा पड़ा है. थोड़े दिन बाद जब पादरी साहब अच्छे हुये तो उन्होंने कहा कि भाई तुम अपने घर जाओ, मैं तुम्हें डरना नहीं सिखा सकता.

इस्लाम
21. 6. '06

राधे,

कल की चिट्ठी में ऐसे आदमी की कहानी लिखी थी जिसको डर ही न लगता था. राधे, कल की चिट्ठी लिखी तो थी मगर डाक जाने के वक़्त लिफ़ाफ़े में बन्द कर कर भेजने की याद न रही. इस वास्ते कल की और आज की दोनों चिट्ठियां एक ही ख़त में भेजी जाती हैं.

राधे, आज तुम्हारे चाचा की चिट्ठी से मालूम हुआ कि जीजा तो पहाड़ पर यानी शिमले जाना चाह नहीं हैं. अब तुम बताओ कि तुम किस तरह करोगी. तुम्हारा तो पहाड़ पर जा कर रहना बड़ा ज़रूरी है ताकि एक दफ़े वहां की ताज़ी और साफ़ हवा के असर से तुम्हारा शरीर

لے اٹھکر سیدھا گرجا گھر کو گیا اور زینہ چڑھکر
ر جا پہونچا اور گھنٹے کی ڈوری کھینچکر
جانے لگا ۔ اتنے میں دیکھتا کیا ھے کہ سامنے
طرف جو گرجے کا دوسرا زینہ تھا اُس کے اوپر والے دروازے
ں کوئی سفید سفید شکل کھڑی ھے اور اُس کا منھ
لکل کالا اور آنکھیں لال لال ھیں ۔ یہ دیکھکر لڑکا ذرا
ی نہ ڈرا ۔ بلکہ اس نے پکار کر پوچھا کہ تو کون ھے ؟
س شکل نے کچھ جواب نہ دیا ۔ لڑکے نے پھر پوچھا
تو کون ھے ؟ شکل نے پھر بھی کچھ جواب نہ دیا ۔ لڑکے
کہا اگر تو جواب نہ دے گی تو میں تجھے سیڑھیوں سے
چے دھکا دے دونگا ۔ شکل پھر بھی چپ رھی ۔ یہ دیکھ
کا [جو کہ روز ورزش کرتے رھنے کے کارن خاصہ طاقتور
ا] شکل کی طرف دوڑا ۔ شکل نے اس کو ڈرانے کے لئے
ک بڑے زور کی چیخ ماری ۔ مگر لڑکے نے کچھ پرواہ نہ
ی اور ایسے زور سے دھکا دیا کہ وہ شکل لڑھکتی پڑھکتی
ڑھیوں کے نیچے جا پڑی ۔ اور لڑکا گھنٹا بجا کر
ادری صاحب کے گھر میں آ کر اپنے کمرے میں سو گیا ۔
ب صبح ھوئی تو پادری صاحب ندارد ۔ ان کی میم نے
ڑکے سے پوچھا کہ پادری صاحب کہاں ھیں ؟ لڑکے نے کہا
جھے کیا خبر ۔ پوچھتے پوچھتے ایک نوکر نے کہا کہ پادری
احب کو ساڑھے گیارہ بجے رات کے میں نے باہر جاتے
یکھا تھا ۔ پھر خبر نہیں کہ واپس آئے یا نہ آئے ۔
س پر لڑکے کو یاد آیا کہ کہیں اُس شکل کے بھیس میں
ادری صاحب ھی کو میں نے دھکا نہ دے دیا ھو' یہ
وچ وہ گرجا گیا اور جاکر دیکھا کہ پادری صاحب پیچھے
ی طرف کے زینے کے نیچے پڑے ھیں اور پاس ھی
ن کا کالے منھ اور لال آنکھوں کا چہرہ پڑا ھے ۔ تھوڑے
ن بعد جب پادری صاحب اچھے ھوئے تو انھوں نے کہا
ہ بھائی تم اپنے گھر جاؤ' میں تمھیں ڈرنا نہیں سکھا سکتا.

اسلام
21. 6. '06

ادھے'

کل کی چٹھی میں ایسے آدمی کی کہانی لکھی
ھی جس کو ڈر ھی نہ لگتا تھا ۔ رادھے' کل کی چٹھی
کھی تو تھی مگر ڈاک جانے کے وقت لفافے میں بندکر
ر بھیجنے کی یاد نہ رھی ۔ اس واسطے کل کی اور آج کی
ونوں چٹھیاں ایک ھی خط میں بھیجی جاتی ھیں ۔

رادھے' آج تمہارے چاچا کی چٹھی سے معلوم ھوا کہ
جیجا تو پہاڑ پر یعنی شملے جانا چاھے نہیں ھیں ۔
اب تم بتاؤ کہ کس طرح کروگی ۔ تمہارا تو
پہاڑ پر جاکر رھنا بڑا ضروری ھے تاکہ ایک دفعہ
وھاں کی تازی اور صاف ھوا کے اثر سے تمہارا شریر

बच्चों की दुनिया

इस्लाम
20.6.1906

राधे,

कल मैं बहुत काम होने के सबब से चिट्ठी नहीं लिख सका. परसों की चिट्ठी में जल्दी शादी करने के नुक़सान लिखे गये थे. आज एक आदमी की कहानी सुनो जिस को यह ही मालूम न था कि डर क्यों कर लगा करता है.

एक अमीर के दो लड़के थे. बड़ा लड़का तो एक मामूली आदमी था मगर छोटे लड़के में एक बड़ी खूबी यह थी कि उसको डर बिल्कुल किसी बात या चीज़ से कभी नहीं लगता था. अंधेरी रातों को जब कि घटा ख़ूब छाई हुई हो और हाथ तक दिखाई न देता हो, बड़ा लड़का तो घर से बाहर भी न निकलता था मगर छोटा लड़का जहां कहीं वहां चला जाता था और जो काम कहो वह ही रात ही रात में कर आया करता था. और जब कोई कहता कि हमें तो डर लगे है तो वह पूछा करता था कि डर ख़बर नहीं क्यों डर लगा करे है. कोई मुझे भी तो बताओ कि क्यों कर डरूं. डरना शायद कोई बड़ी अच्छी चीज़ होगी कि जिस को देखो वह यही कहता है कि मुझे उस बात या काम या चीज़ से डर लगता है. मगर मुझे कोई डरना नहीं सिखाता. यह बात छोटे लड़के की सुनकर कभी कोई कुछ मुश्किल काम अंधेरी रात में करने को उसे बताता कभी कोई. मगर वह लड़का सब काम फ़ौरन कर आता और ज़रा भी न डरता था. क्योंकि असल में देखा जाय तो डरना बिल्कुल ही फ़िज़ूल है और उससे बिल्कुल कुछ फ़ायदा नहीं है, नुक़सान ही नुक़सान है.

एक दिन एक पादरी साहब उस लड़के के घर आए और उन्होंने जब सुना कि छोटा लड़का डरना सीखना चाहता है तो उन्होंने कहा कि अच्छा तू मेरे साथ चल, मैं तुमको बड़ी जल्दी डरना सिखा दूंगा. लड़के ने कहा अच्छा. शाम को पादरी साहब के घर पहुँचा और पादरी साहब ने कहा कि तुम ठीक आधी रात के वक़्त गिरजा घर में जो घंटा है उसको ऊपर जा कर बजाना. लड़के ने कहा बहुत अच्छा. चुनांचे लड़का बारह बजे से कुछ

بچوں کی دنیا

اسلام .
20-6-1906

رادھے'

کل میں بہت کام ہونے کے سبب سے چٹھی نہیں لکھ سکا . پرسوں کی چٹھی میں جلدی شادی کرنے کے نقصان لکھے گئے تھے . آج ایک آدمی کی کہانی سنو جس کو یہ ہی معلوم نہ تھا کہ ڈر کیوں کر لگا کرتا ہے .

ایک امیر کے دو لڑکے تھے. بڑا لڑکا تو ایک معمولی آدمی تھا مگر چھوٹے لڑکے میں ایک بڑی خوبی یہ تھی کہ اس کو ڈر بالکل کسی بات یا چیز سے کبھی نہیں لگتا تھا . اندھیری راتوں کو جب کہ گھٹا خوب چھائی ہوئی ہو اور ہاتھ تک دکھائی نہ دیتا ہو' بڑا لڑکا تو گھر سے باہر بھی نہ نکلتا تھا مگر چھوٹا لڑکا جہاں کہیں وہاں چلا جاتا تھا اور جو کام کہو وہ ہی رات کی رات میں کر آیا کرتا تھا . اور جب کوئی کہتا کہ ہمیں تو ڈر لگے ہے تو وہ پوچھا کرتا تھا کہ ڈر خبر نہیں کیوں ڈر لگا کرے ہے . کوئی مجھے بھی تو بتاؤ کہ کیوں کر ڈروں . ڈرنا شاید کوئی بڑی اچھی چیز ہوگی کہ جس کو دیکھو وہ یہ ہی کہتا ہے کہ مجھے اُس بات یا کام یا چیز سے ڈر لگتا ہے . مگر مجھے کوئی ڈرنا نہیں سکھاتا . یہ بات چھوٹے لڑکے کی سن کر کبھی کوئی کچھ مشکل کام اندھیری رات میں کرنے کو اسے بتاتا کبھی کوئی . مگر وہ لڑکا سب کام فوراً کر آتا اور ذرا بھی نہ ڈرتا تھا . کیونکہ اصل میں دیکھا جائے تو ڈرنا بالکل ہی فضول ہے اور اس سے بالکل کچھ فائدہ نہیں ہے' نقصان ہی نقصان ہے .

ایک دن ایک پادری صاحب اُس لڑکے کے گھر آئے اور انہوں نے جب سنا کہ چھوٹا لڑکا ڈرنا سیکھنا چاہتا ہے تو انہوں نے کہا کہ اچھا تو میرے ساتھ چل' میں تجھکو بڑی جلدی ڈرنا سکھا دونگا . لڑکے نے کہا اچھا . شام کو پادری صاحب کے گھر پہونچا اور پادری صاحب نے کہا کہ تم ٹھیک آدھی رات کے وقت گرجا گھر میں جو گھنٹا ہے اُس کو اوپر جاکر بجانا . لڑکے نے کہا بہت اچھا . چنانچہ لڑکا بارہ بجے سے کچھ

हिन्दुस्तान के चुनाव में यहां पर सब को बहुत दिलचस्पी है. आप हिन्दुस्तान वाले बड़े ख़ुशक़िसमत हैं कि चंद महीनों के अन्दर एक ख़ालिस लोकशाही पार्लियामेन्ट खड़ी कर लेंगे. मैं आपसे अगले साल जुलाई के बाद इम्तहान ख़त्म होने पर वर्धा में मिलूंगा.

3. हमदर्दी से भरी आपकी चिट्ठी पाकर मेरे अन्दर ख़ुशी की लहर दौड़ गई. यह वह चीज है जो हमारे दिलों और देशों को सचमुच मिलाती है. मुझे तो ऐसा महसूस हुआ कि हम एक दूसरे के बहुत ही नज़दीक आ गये हैं—सिर्फ़ इस वजह से नहीं कि आपने हमारे साथ हमदर्दी दिखलाई बल्कि यह और भी गहरे जाती है.

मैंने 'स्टेट्स मैन' में पढ़ा कि हिन्दुस्तान के आगे के फिर-बनाव के सम्बन्ध में लाखों-करोड़ों ग़रीबों की तरफ़ से प्लानिंग कमीशन से बात करने के वास्ते विनोबा जी दिल्ली आये हैं. मुझे यक़ीन है कि उन्हें अपने काम में कामयाबी मिलेगी.

कुमारप्पाजी के चीन जाने की ख़बर भी मैंने पढ़ी. मेहरबानी करके अपने साथियों से मेरा मुहब्बत भरा सलाम कहियेगा.

—'ग्राम उद्योग पत्रिका' से

अक्सर पूछा जाता है कि मैं यंत्र या मशीन के ख़िलाफ़ हूँ या नहीं?

"जब मैं समझता हूँ कि मेरा शरीर ही एक बड़ी नाज़ुक मशीन है तब यंत्रों—मशीनों के ख़िलाफ़ होकर मैं कहां रह सकता हूं?...मेरा विरोध यंत्रों के सम्बन्ध में फैले हुये दीवानेपन के साथ है, यंत्रों के साथ नहीं. मेहनत का बचाव करने वाली मशीनों के बारे में लोगों का जो दीवानापन है उसी से मेरा विरोध है. मेहनत की बचत इस हद तक की जा रही है कि हज़ारों को आख़िर भूकों मरना पड़ता है और उन्हें बदन ढकने तक को कुछ नहीं मिलता. मैं भी वक़्त और मेहनत की बचत ज़रूर चाहता हूं, लेकिन वह मुट्ठी भर आदमियों के लिये नहीं, बल्कि तमाम इन्सानी समाज के लिए. वक़्त और मेहनत का बचाव करके मुट्ठी भर आदमी दौलतमंद हो बैठें, यह मेरे लिये नाक़ाबिल बरदाश्त है. मैं तो चाहता हूँ कि हर एक का समय और मेहनत बच जाये, सब को खाना मिल सके, सब पहन-ओढ़ सकें, सब की तरक़्क़ी यानी 'सर्वोदय' हो. यही मेरी तमन्ना है. आज यंत्रों के कारन लाखों की पीठ पर मुट्ठी भर आदमी सवार हो बैठे हैं और उन्हें सता रहे हैं, क्योंकि इन मशीनों के चलाने की जड़ में लालच है, धन की लालसा है और जन-कल्यान की भावना का कहीं पता ही नहीं है."

—गांधीजी

ہندستان کے چناؤ میں یہاں پر سب کو بہت دلچسپی ہے۔ آپ ہندستان والے بڑے خوش قسمت ہیں کہ چند مہینوں کے اندر ایک خالص لوک شاہی پارلیامنٹ کھڑی کر لینگے۔ میں آپ سے اگلے سال جولائی کے بعد امتحان ختم ہونے پر وردھا میں ملونگا۔

3. ہمدردی سے بھری آپ کی چٹھی پا کر میرے اندر خوشی کی لہر دوڑ گئی۔ یہ وہ چیز ہے جو ہمارے دلوں اور دیشوں کو سچ مچ ملاتی ہے۔ مجھے تو ایسا محسوس ہوا کہ ہم ایک دوسرے کے بہت ہی نزدیک آگئے ہیں—صرف اس وجہ سے نہیں کہ آپ نے ہمارے ساتھ ہمدردی دکھلائی بلکہ یہ اور بھی گہرے جاتی ہے۔

میں نے اسٹیٹس مین میں پڑھا کہ ہندستان کے آگے کے پھر بناؤ کے سمبندھ میں لاکھوں کروڑوں غریبوں کی طرف سے پلاننگ کمیشن سے بات کرنے کے واسطے ونوبا جی دلی آئے ہیں۔ مجھے یقین ہے کہ انہیں اپنے کام میں کامیابی ملیگی۔

کماریپا جی کے چین جانے کی خبر بھی میں نے پڑھی۔ مہربانی کر کے اپنے ساتھیوں سے میرا محبت بھرا سلام کہیگا۔

—'گرام ادیوگ پتریکا' سے

اکثر پوچھا جاتا ہے کہ میں ینتر یا مشین کے خلاف ہوں یا نہیں؟

"جب میں سمجھتا ہوں کہ میرا شریر ہی ایک بڑی نازک مشین ہے تب ینتروں—مشینوں کے خلاف ہوکر میں کہاں رہ سکتا ہوں؟......میرا وردھ ینتروں کے سمبندھ میں پھیلے ہوئے دیوانے پن کے ساتھ ہے، ینتروں کے ساتھ نہیں۔ محنت کا بچاؤ کرنے والی مشینوں کے بارے میں لوگوں کا جو دیوانہ پن ہے اسی سے میرا وردھ ہے۔ محنت کی بچت اس حد تک کی جا رہی ہے کہ ہزاروں کو آخر بھوکوں مرنا پڑتا ہے اور انہیں بدن ڈھکنے تک کو کچھ نہیں ملتا۔ میں بھی وقت اور محنت کی بچت ضرور چاہتا ہوں، لیکن وہ مٹھی بھر آدمیوں کے لئے نہیں، بلکہ تمام انسانی سماج کے لئے۔ وقت اور محنت کا بچاؤ کرکے مٹھی بھر آدمی دولت مند ہو بیٹھیں، یہ میرے لئے ناقابل برداشت ہے۔ میں تو چاہتا ہوں کہ ہر ایک کا سمے اور محنت بچ جائے، سب کو کھانا مل سکے، سب پہن اوڑھ سکیں، سب کی ترقی یعنی 'سرودے' ہو۔ یہی میری تمنا ہے۔ آج ینتروں کے کارن لاکھوں کی پیٹھ پر مٹھی بھر آدمی سوار ہو بیٹھے ہیں اور انہیں ستا رہے ہیں، کیونکہ ان مشینوں کے چلانے کی جڑ میں لالچ ہے، دھن کی لالسا ہے اور جن کلیان کی بھاونا کا کہیں پتہ ہی نہیں ہے۔"—گاندھی جی

हिस्से मैं नीचे दे रहा हूँ. इन से पता चलता है कि हमारा उनका दिल एक है, और अगर हमारे दोनों देशों के नौजवानों को मौक़ा मिले तो हम दोनों अच्छे और गहरे दोस्त बन सकते हैं. शायद जवानी का ज़ोर ऐसी ही चीज़ है जो क़ौमी हदों को आर-पार से काट कर दिलों को एक कर दे सकती है.

1. लियाक़त अली खां की दर्दनाक मौत पर आपके सदमे को जान कर मेरा अपना सदमा कुछ कम पड़ा. आप उस भारत के नमूने हैं जो चाहता है कि हमारे दोनों देशों में सच्चा और नज़दीकी रिश्ता रहे. हमें और आपको उन लोगों में से होना चाहिये जो यह दिखा सकें कि दोनों देशों में दोनों क़ौमें इतने पास पास ख़ुशी के साथ रह सकती हैं.

मुझे गांधीवादी अर्थ शास्त्र में बहुत दिलचस्पी है. क्या इस सिलसिले में आप कुछ किताबें मेरे पास भेज सकेंगे. ? कम से कम सर्वोदय प्लान तो भेज ही दीजिये. उसका मैंने बहुत नाम सुना है.

मैं वर्धा ज़रूर आना चाहता हूँ. मेरे साथ वह दोनों दोस्त भी होंगे. मुझे सैमीनार की, आपकी याद नहीं भूलती. मैं आपको भारत की सच्ची औलाद मानता हूँ. उस सैमीनार से हमें काफ़ी अच्छी बातें सीखने को मिलीं. मेरी दुआयें आपके और आपके साथ वर्धा में जो काम करते हैं उनके साथ हैं.

2. हमारे बड़े वज़ीर की मौत पर आपका दुख जानकर मुझे ज़ाती तौर पर और मेरे दोस्तों को थोड़ी-बहुत तसल्ली हुई और हमारा ग़म कम हुआ. मुझे यक़ीन है कि आपकी, मेरी और बहुत से दूसरे भाई-बहनों की जो तमन्ना है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लोग भाई चारे और मेल से रहें वह एक न एक दिन ज़रूर पूरी होगी. सिरफिरों और तंग नज़र वालों का ज़माना अब ख़त्म होने वाला है. ऐसे पागलों की सनक और जनून का क्या कहा जाय जो आज महात्माजी की जान लेकर हिन्दुस्तान को चोट पहुँचाते हैं और कल लियाक़त को मार कर पाकिस्तान को मुसीबत में डालते हैं. यह चोट पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को ही नहीं पहुँचती बल्कि सारी दुनिया को पहुँचती है. तीन बरस के अरसे में ही दुनिया एक बड़ा ज़बरदस्त हितैशी और एक बेहतरीन दिमाग़ वाला राजकाजी नेता खो बैठी है महज़ इन पागलों की वजह से. आप समझ सकते हैं कि यहां के लोगों को कितना गहरा धक्का लगा है. वह एक दम बयान से बाहर है. मेरा ख़्याल है कि हिन्दुस्तान के ज़्यादातर लोगों को भी धक्का लगा और दुख हुआ. हमारे राजकाजी भेदभाव होते हुए भी इस बात का होना बहुत माने रखता है.

حصے میں نیچے دے رہا ھوں ۔ ان سے پتہ چلتا ھے کہ ھمارا اُن کا دل ایک ھے' اور اگر ھمارے دونوں دیشوں کے نوجوانوں کو موقع ملے تو ھم دونوں اچھے اور گہرے دوست بن سکتے ھیں ۔ شاید جوانی کا زور ایسی ھی چیز ھے جو قومی حدوں کو آرپار سے کاٹ کر دلوں کو ایک کردے سکتی ھے ۔

1. لیاقت علی خاں کی دردناک موت پر آپ کے صدمے کو جان کر میرا اپنا صدمہ کچھ کم پڑا ۔ آپ اس بھارت کے نمونے ھیں جو چاھتا ھے کہ ھمارے دونوں دیشوں میں سچا اور نزدیکی رشتہ رھے ۔ ھمیں اور آپ کو اُن لوگوں میں سے ھونا چاھئے جو یہ دکھا سکیں کہ دونوں دیشوں میں دونوں قومیں اتنے پاس پاس خوشی کے ساتھ رہ سکتی ھیں ۔

مجھے گاندھی وادی ارتھ شاستر میں بہت دلچسپی ھے ۔ کیا اس سلسلے میں آپ کچھ کتابیں میرے پاس بھیج سکینگے ؟ کم سے کم سروودے پلان تو بھیج ھی دیجئے ۔ اس کا میں نے بہت نام سنا ھے ۔

میں وردھا ضرور آنا چاھتا ھوں ۔ میرے ساتھ وہ دونوں دوست بھی ھونگے ۔ مجھے سیمینار کی' آپ کی یاد نہیں بھولتی ۔ میں آپ کو بھارت کی سچی اولاد مانتا ھوں ۔ اس سیمنار سے ھمیں کافی اچھی باتیں سیکھنے کو ملیں ۔ میری دعائیں آپ کے اور آپ کے ساتھ وردھا میں جو کام کرتے ھیں ان کے ساتھ ھیں ۔

2. ھمارے بڑے وزیر کی موت پر آپکا دکھ جان کر مجھے ذاتی طور پر اور میرے دوستوں کو تھوڑی بہت تسلی ھوئی اور ھمارا غم کم ھوا ۔ مجھے یقین ھے کہ آپ کی' میری اور بہت سے دوسرے بھائی بہنوں کی یہ جو تمنا ھے کہ ھندستان اور پاکستان کے لوگ بھائی چارے اور میل سے رھیں وہ ایک نہ ایک دن ضرور پوری ھوگی ۔ سر پھروں اور تنگ نظر والوں کا زمانہ اب ختم ھونے والا ھے ۔ ایسے پاگلوں کی سنک اور جنون کا کیا کہا جائے جو آج مہاتما جی کی جان لیکر ھندستان کو چوٹ پہنچاتے ھیں اور کل لیاقت کو مار کر پاکستان کو مصیبت میں ڈالتے ھیں ۔ یہ چوٹ پاکستان اور ھندستان کو ھی نہیں پہنچتی بلکہ ساری دنیا کو پہنچتی ھے ۔ تین برس کے عرصے میں ھی دنیا ایک بڑا زبردست ھتیشی اور ایک بہترین دماغ والا راج کاجی نیتا کھو بیٹھی ھے محض ان پاگلوں کی وجہ سے ۔ آپ سمجھ سکتے ھیں کہ یہاں کے لوگوں کو کتنا گہرا دھکا لگا ھے ۔ وہ دم بیان سے باھر ھے ۔ میرا خیال ھے کہ ھندستان کے زیادہ تر لوگوں کو بھی دھکا لگا اور دکھ ھوا ۔ ھمارے راج کاجی بھید بھاؤ ھوتے ھوئے بھی اس بات کا ھونا بہت معنی رکھتا ھے ۔

हमारा उनका दिल एक है

(जी. रामचन्द्रन)

पिछले अक्तूबर के महीने में मैं झरग्राम (बंगाल) गया था जहां एक अंतरक़ौमी सेमीनार में शिरकत की—उसमें कई देशों के लोग शामिल हुए थे. पाकिस्तान की तरफ़ से ढाका से तीन मुसलमान जवानों ने शिरकत की थी. यह तीनों बहुत ही नेक, होशियार और फुरतीले मालूम पड़ते थे. उनकी आंखों में चमक थी और उन्हें चीज़ों की जानकारी का शौक़ था. मैंने उनसे रचनात्मक प्रोग्राम के बारे में ख़ास तौर से बातें की और बताया कि हम वर्धा में क्या कर रहे हैं. उन्होंने इसमें बहुत दिलचस्पी ली और इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने इम्तहान के बाद जुलाई 1952 में वर्धा आने का वादा किया.

उन तीन में से एक को अपने यहां के बड़े वज़ीर लियाक़त अली खां की पालिसी से बड़ा असन्तोश था और वह उसकी बहुत नुक़्ताचीनी करता था, ठीक उसी तरह जैसे हम यहां अपने देश में बड़े वज़ीर नेहरू की पालिसी की नुक्ताचीनी करते हैं. लेकिन इस बारे में हमारी राय एक थी कि मौजूदा हालात में यह ख़ुशी की बात है कि हिन्दुस्तान की हकूमत की बागडोर जवाहरलाल नेहरू के हाथों में है और पाकिस्तान की लियाक़त अली खां के हाथों में. इस बारे में भी हमारी राय एक थी कि यह दोनों बड़े वज़ीर खुले दिमाग़ के हैं और तरक़्क़ी पसन्द राजकाजी नेता हैं जिन्होंने अपनी आला क़ाबलियत और दानिशमन्दी से अपने अपने देशों के सिरफिरों और तंग ज़हनियत वालों की दाल नहीं गलने दी है. जब हम विदा हुए तो बहुत अच्छे दोस्त बन चुके थे.

इसके बाद अचानक ख़बर आई कि पाकिस्तान के बड़े वज़ीर गोली से मार डाले गये. मुझे यह संगीन और दर्दनाक ख़बर रेल में मिली जब मैं वर्धा लौट रहा था. रेल में बैठे हुए मुसाफ़िर इसी पर बात करने लगे. एक ने कहा कि पाकिस्तानी बड़े वज़ीर ने जो सैकड़ों-हज़ारों का क़त्ल कराया था इसका फल उन्हें परमात्मा ने दिया. मैंने एक चुनौती के साथ कहा कि तब तो गांधीजी की मौत भी इसी तरह से काम की सज़ा समझी जानी चाहिये. मेरी बात सुनकर वह भाई चुप हो गये.

वर्धा पहुँचने पर मैंने अपने तीनों दोस्तों को ख़त लिखे जिन में उनके ज़बरदस्त नुक़सान पर अफ़सोस ज़ाहिर किया और रेल की बात चीत का भी ज़िकर किया. उन तीनों ने मुझे जवाब भेजे हैं. उनकी चिट्ठियों में से कुछ

ھمارا اُن کا دل ایک ھے

(جی . رام چندرن)

پچھلے اکتوبر کے مہینے میں میں جھرگرام (بنگال) گیا تھا جہاں ایک انتر قومی سیمینار میں شرکت کی —اُس میں کئی دیشوں کے لوگ شامل ہوئے تھے . پاکستان کی طرف سے ڈھاکہ سے تین مسلمان جوانوں نے شرکت کی تھی . یہ تینوں بہت ھی نیک ' ھوشیار اور پھرتیلے معلوم پڑتے تھے . اُن کی آنکھوں میں چمک تھی اور اُنھیں چیزوں کی جانکاری کا شوق تھا . میں نے اُن سے رچناتمک پروگرام کے بارے میں خاص طور سے باتیں کی اور بتایا کہ ہم وردھا میں کیا کر رہے ھیں . اُنھوں نے اِس میں بہت دلچسپی لی اور اِتنے پربھاوت ہوئے کہ انہوں نے اپنے امتحان کے بعد جولائی 1952 میں وردھا آنے کا وعدہ کیا .

اُن تین میں سے ایک کو اپنے یہاں کے بڑے وزیر لیاقت علی خاں کی پالیسی سے بڑا اسنتوش تھا اور وہ اُس کی بہت نقطہ چینی کرتا تھا ' ٹھیک اُسی طرح جیسے ہم یہاں اپنے دیش میں بڑے وزیر نہرو کی پالیسی کی نکتہ چینی کرتے ھیں . لیکن اِس بارے میں ھماری رائے ایک تھی کہ موجودہ حالات میں یہ خوشی کی بات ھے کہ ھندوستان کی حکومت کی باگ ڈور جواھر لال نہرو کے ھاتھوں میں ھے اور پاکستان کی لیاقت علی خاں کے ھاتھوں میں . اِس بارے میں بھی ھماری رائے ایک تھی کہ یہ دونوں بڑے وزیر کھلے دماغ کے ھیں اور ترقی پسند راج کاجی نیتا ھیں جنھوں نے اپنی اعلیٰ قابلیت اور دانش مندی سے اپنے اپنے دیشوں کے سر پھروں اور تنگ ذھنیت والوں کی دال نہیں گلنے دی ھے . جب ھم وداع ھوئے تو بہت اچھے دوست بن چکے تھے .

اِس کے بعد اچانک خبر آئی کہ پاکستان کے بڑے وزیر گولی سے مار ڈالے گئے . مجھے یہ سنگین اور دردناک خبر ریل میں ملی جب میں وردھا لوٹ رہا تھا . ریل میں بیٹھے ھوئے مسافر اِسی پر بات کرنے لگے . ایک نے کہا کہ پاکستانی بڑے وزیر نے جو سیکڑوں ھزاروں کا قتل کرایا تھا اِس کا پھل اُنھیں پرماتما نے دیا . میں نے ایک چنوتی کے ساتھ کہا کہ تب تو گاندھی جی کی موت بھی اِسی طرح کے کام کی سزا سمجھی جانی چاھئے. میری بات سن کر وہ بھائی چپ ھوگئے .

وردھا پہنچنے پر میں نے اپنے تینوں دوستوں کو خط لکھے جن میں اُن کے زبردست نقصان پر افسوس ظاھر کیا . اور ریل کی بات چیت کا بھی ذکر کیا . اُن تینوں نے مجھے جواب بھیجے ھیں. اُن کی چٹھیوں میں سے کچھ

; कीजिये मुझे लगता है कि आपकी सफ़ाई न तो के लिहाज से सही है और न उस पर विश्वास ा है. शायद बीस साल पहले एक आन्दोलन गया कि अच्छी सड़कों पर रबड़ की टायर वाली ही चलाई जायें, और यह कहा गया कि बैलगाड़ियों ों के लोहे से उन सड़कों को बहुत नुक़सान पहुंचता से सड़कों पर पाबन्दी लगाना शुरू कर दी गई. असली वजह न कि आमद-रफ़्त का संभाल जो : बताते हैं.

.ग साईकिल पगडंडियों का आपका हवाला बेतुका जो मुक़ाबला आपने किया है वह भी भौंडा है. ा के रास्ते जो अलग बनाये तो उसी सड़क पर गये जिस पर मोटर वग़ारा चलते हैं. उसमें कोई या पाबन्दी की बात नहीं है बल्कि सड़क का कुछ एक ख़ास जमाअत (साईकिल सवार) के लिये कर दिया गया.

ौर न दूसरे देशों का हवाला देना ही ठीक होगा. । अपनी ज़रूरतों के मुताबिक़ अपने सवाल हल करने ेख मींच कर दूसरों की नक़ल नहीं करनी है.

ापने जो जानवर के बिदकने की बात कही उससे चलता है आपकी दलील कितनी खोखली है. क्या ानवर दूसरी सड़कों पर नहीं बिदक सकते ? अगर ी बात का सही मतलब निकाला जाये तो यही होगा ़सी सड़क पर मोटर व जानवर-गाड़ी एक साथ नहीं सकते.

ं आपसे कहना चाहता हूँ कि इस तरह की वाहियात कह कर और बे-सिर-पैर की दलीलें देकर आप जो ा को बेवक़ूफ़ बनाना चाहते हैं वह धोके की टट्टी है.

आप एक घिसे-घिसाये प्रोफ़ेसर सरीखे लगते हैं. मेरी हिश है आप फिर से इस विषय पर एक लेख लिखिये ां ! मेहरबां !

[होम सेक्रेट्री की दलील अगर पूरी उतारी जाये तेज़ सवारी वाली सड़कों पर 'इन्सान' जैसी सुस्त वारी की भी गुंजायश नहीं हो सकती. और शायद ा पूरी पाबन्दी के बाद ही हमारी सरकार आमद- त का सवाल लाजवाब ढंग से हल कर सकेगी. न ेगा बांस न बजेगी बांसरी !—एडीटर]

معاف کیجئے مجھے لگتا ہے کہ آپ کی صفائی نہ تو اتہاس کے لحاظ سے صحیح ہے اور نہ اُس پر وشواس ہی جمتا ہے . شائد بیس سال پہلے ایک آندولن مچایا گیا کہ اچھی سڑکوں پر ربر کی ٹائر والی گاڑیاں ہی چلائی جائیں' اور یہ کہا گیا کہ بیل گاڑیوں کے پہیوں کے لوہے سے اُن سڑکوں کو بہت نقصان پہنچتا ہے . تب سے سڑکوں پر پابندی لگانا شروع کردی گئی . یہ ہے اصلی وجہ نہ کہ آمد رفت کا سنبھال جو کہ آپ بتاتے ہیں .

الگ سائیکل پگڈنڈیوں کا آپکا حوالہ بے تکا ہے اور جو مقابلہ آپ نے کیا ہے وہ بھی بھونڈا ہے. سائیکل کے راستے جو الگ بنائے تو اُسی سڑک پر بنائے گئے جس پر موٹر وغیرہ چلتے ہیں . اس میں کوئی منادی یا پابندی کی بات نہیں ہے بلکہ سڑک کا کچھ حصہ ایک خاص جماعت (سائیکل سوار) کے لئے مقرر کردیا گیا .

اور نہ دوسرے دیشوں کا حوالہ دینا ہی ٹھیک ہوگا . ہمیں تو اپنی ضرورتوں کے مطابق اپنے سوال حل کرنے ہیں . آنکھ میچ کر دوسروں کی نقل نہیں کرنی ہے .

آپنے جو جانور کے بدکنے کی بات کہی اس سے پتہ چلتا ہے آپ کی دلیل کتنی کھوکھلی ہے . کیا یہ جانور دوسری سڑکوں پر نہیں بدک سکتے ؟ اگر آپ کی بات کا صحیح مطلب نکالا جائے تو یہی ہوگا کہ کسی سڑک پر موٹر و جانور گاڑی ایک ساتھ نہیں چل سکتے .

میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ اس طرح کی واہیات باتیں کہکر اور بے سر پیر کی دلیلیں دے کر آپ جو جنتا کو بیوقوف بنانا چاہتے ہیں وہ دھوکے کی ٹٹی ہے .

آپ ایک گھسے گھسائے پروفیسر سریکھے لگتے ہیں . میری خواہش ہے آپ پھر سے اِس وشے پر ایک لیکھ لکھئے . مہرباں ! مہرباں !

[ہوم سکریٹری کی دلیل اگر پوری اُتاری جائے تو تیز سواری والی سڑکوں پر 'انسان' جیسی سست سواری کی بھی گنجائش نہیں ہوسکتی . اور شاید اِس پوری پابندی کے بعد ہی ہماری سرکار آمدرفت کا سوال لاجواب ڈھنگ سے حل کر سکیگی. نہ رہے گا بانس نہ بجے گی بانسری !—ایڈیٹر]

कुछ सड़कों पर बैलगाड़ी जाने की मनादी कर देना एक अफ़सोस नाक और बुरी बात है. आपने यह भी बताया है कि इस तरह की पाबन्दियों से यह ज़ाहिर होता है कि जुदा जुदा लोगों में क्योंकर बे-सोचे-समझे भेद भाव बरता जाता है. लेकिन पाबन्दी का जो मक़सद है उसके सिलसिले में आपको कुछ ग़लतफ़हमी सी हुई दीखती है और इसलिये मैं बताना चाहता था कि असली बात क्या है.

आप यह तो मानते ही हैं कि आमद-रफ़्त के क़ायदों में बुनियादी ख़याल चलने वालों की हिफ़ाज़त का रहता है. इस सिलसिले में यह सवाल उठता है कि सड़कों पर आना-जाना एक-सा कैसे बना रहे और भीड़ जमा न होने पाये. इस बारे में बहुत से देशों में तजुरबे के बाद यह तय पाया कि तेज़ चाल और धीमी चाल की सवारियों को अलग अलग रखा जाये. ज़ाहिर है कि यह बंटवारा सब सड़कों पर नहीं किया जा सकता. लेकिन इसके यह माने नहीं होते कि जहां किया जा सकता है वहां भी नहीं किया जाये.

आपने देखा होगा कि नई दिल्ली में कुछ सड़कों पर साईकिलों के लिये अलग पगडंडियां सी बना दी गई हैं. इसके कारन अगर कोई यह समझ बैठे कि साईकिल सवार को नीचा समझा गया और उसे सड़क पर (जहां तेज़ सवारी यानी मोटर-बस-ट्रक वग़ैरा चला करती हैं) नहीं चलने दिया गया तो यह ज़ियादती होगी. यही असूल बैलगाड़ियों पर लागू है जिसकी वजह से कुछ सड़कों पर उन्हें आने की इजाज़त नहीं है. अव्वल तो वह बहुत धीरे धीरे चलती हैं, दूसरे उनसे राहगीर को ख़तरा है क्योंकि अगर जानवर अचानक डर के मारे ज़रा भी बिदका और थोड़ा सा बे-क़ाबू हुआ तो पास में पैदल आने जाने वालों और दूसरी सवारियों को काफ़ी नुक़सान पहुंच सकता है. यही वजह है कि तंग सड़कों पर या ज़रा चौड़ी सड़कों पर भी जहां तेज़ सवारियां चला करती हैं बैलगाड़ी की इजाज़त नहीं है. इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं लगाया जा सकता कि बैलगाड़ी वाले का हक़ छीना जा रहा है—जो असर आपके लेख से पैदा होता है. आपने अपने लेख में कहा है कि आप सड़क पर लारियां जाने की मनादी करवा देना पसंद करेंगे जहां उनसे सबको ख़तरा है. बात असल में यह है कि इस तरह की सड़कें हमारे देश में पहले से मौजूद हैं जिन पर लारी चलाने की इजाज़त नहीं है.

मुझे उम्मीद है कि इस ख़त से आपको यक़ीन हो जायेगा कि जो पाबन्दियां लागू की गई हैं उनका सिर्फ़ एक ही मक़सद है—आमद-रफ़्त की संभाल.

کچھ سڑکوں پر بیل گاڑی جانے کی منادی کر دینا ایک افسوس ناک اور بری بات ہے ۔ آپ نے یہ بھی بتایا ہے کہ اِسطرح کی پابندیوں سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ جدا جدا لوگوں میں کیوں کر بے سوچے سمجھے بھید بھاؤ برتا جاتا ہے ۔ لیکن پابندی کا جو مقصد ہے اُس کے سلسلے میں آپ کو کچھ غلط فہمی سی ہوئی دیکھتی ہے اور اِس لئے میں بتانا چاہتا تھا کہ اصلی بات کیا ہے ۔

آپ یہ تو مانتے ہی ہیں کہ آمدرفت کے قاعدوں میں بنیادی خیال چلنے والوں کی حفاظت کا رہتا ہے ۔ اِس سلسلے میں یہ سوال اُٹھتا ہے کہ سڑکوں پر آنا جانا ایک سا کیسے بنا رہے اور بھیڑ جمع نہ ہونے پائے ۔ اِس بارے میں بہت سے دیشوں میں تجربے کے بعد یہ طے پایا کہ تیز چال اور دھیمی چال کی سواریوں کو الگ الگ رکھا جائے. ظاہر ہے کہ یہ بٹوارا سب سڑکوں پر نہیں کیا جا سکتا ۔ لیکن اس کے یہ معنے نہیں ہوتے کہ جہاں کیا جا سکتا ہے وہاں بھی نہیں کیا جائے ۔

آپ نے دیکھا ہوگا کہ نئی دلی میں کچھ سڑکوں پر سائیکلوں کے لئے الگ پگڈنڈیاں سی بنا دی گئی ہیں ۔ اس کے کارن اگر کوئی یہ سمجھ بیٹھے کہ سائیکل سوار کو نیچا سمجھا گیا اور اُسے سڑک پر (جہاں تیز سواری یعنی موٹر ۔ بس ۔ ٹرک وغیرہ چلا کرتی ہیں) نہیں چلنے دیا گیا تو یہ زیادتی ہوگی ۔ یہی اصول بیل گاڑیوں پر لاگو ہے جس کی وجہ سے کچھ سڑکوں پر انہیں آنے کی اجازت نہیں ہے ۔ اول تو وہ بہت دھیرے دھیرے چلتی ہیں، دوسرے ان سے راہگیر کو خطرہ ہے کیونکہ اگر جانور اچانک ڈر کے مارے ذرا بھی بدکا اور تھوڑا سا بے قابو ہوا تو پاس میں پیدل آنے جانے والوں اور دوسری سواریوں کو کافی نقصان پہنچ سکتا ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ تنگ سڑکوں پر یا ذرا چوڑی سڑکوں پر جہاں تیز سواریاں چلا کرتی ہیں بیل گاڑی کی اجازت نہیں ہے ۔ اِس کا یہ مطلب ہرگز نہیں لگایا جا سکتا کہ بیل گاڑی والے کا حق چھینا جا رہا ہے— جو اثر آپ کے لیکھ سے پیدا ہوتا ہے ۔ آپ نے اپنے لیکھ میں کہا ہے کہ آپ سڑک پر لاریاں جانے کی منادی کروا دینا پسند کریں گے جہاں اُن سے سب کو خطرہ ہے ۔ بات اصل میں یہ ہے کہ اس طرح کی سڑکیں ہمارے دیش میں پہلے سے موجود ہیں جن پر لاری چلانے کی اجازت نہیں ہے ۔

مجھے اُمید ہے کہ اس خط سے آپ کو یقین ہو جائیگا کہ جو پابندیاں لاگو کی گئی ہیں اُن کا صرف ایک ہی مقصد ہے— آمدرفت کی سنبھال ۔

भू यज्ञ:-सर्वोदय का पांचवां काम.

इस तरह का पंच पहलू काम सर्वोदय समाज को .ा होगा. मैंने अपनी ताक़त भर पांचों तरह के कामों ाथ बंटाया है. अभी जो काम मैंने उठाया है, वह ंवां है. भूमि का सवाल हल करने में ग़लत और ग़ैर ख़लाक़ी तरीक़े परदेसों में अपनाए गये हैं, जिन्हें यह . यश कहते हैं और इस तरफ़ कुछ खिंचाव हमारे लिखों में भी है. उन तरीक़ों से दिमाग़ साफ़ हो और छे नैतिक तरीक़ों से भूमि का मसला हल हो, ऐसी शिश मैं कर रहा हूँ. मैं जानता हूं कि यह मुशकिल काम आसान समझ कर इसे मैंने नहीं उठाया है. यह इतना ाकिल है कि अपनी अक़्ल से मैं इसे नहीं उठा सकता , बल्कि वह सहज ही मेरे पास आ पहुंचा है. मैं तो परमेश्वर का आदेश मानता हूं और जब आ पहुंचा तो उसकी क़ाबलियत है या नहीं, उसे शक की निगाह सोचना या हिचकिचाना ठीक नहीं समझता हूँ. मुझे न लेना चाहिये कि जिस ताक़त ने यह काम हमारे मने ला खड़ा किया है, वही ताक़त उसके पूरा करने लिये भी ज़रूरी बल देगी. इस यक़ीन और भरोसे , बहुत नम्रता के साथ मैंने यह काम उठाया है और मैं उ वक़्त सर्वोदय में मानने वाले हर शख़्स से हमदरदी ौर मदद चाहता हूं.

इस तरह ग़ैर जानिबदार समाज के यह पांच काम ोंगे- जीवन बेहतरी, पढ़ाई और जानकारी, दुखियों ी सेवा, इनकार व सत्याग्रह और समाज के मसलों का अहिंसक हल.

بھویگیہ:- سروودے کا پانچواں کام ۔

اِس طرح کا پنچ پہلو کام سروودے سماج کو کرنا ہوگا. میں نے اپنی طاقت بھر پانچوں طرح کے کاموں میں ہاتھ بٹایا ہے ۔ ابھی جو کام میں نے اُٹھایا ہے، وہ پانچواں ہے ۔ بھومی کا سوال حل کرنے میں غلط اور غیر اخلاقی طریقے پردیشوں میں اپنائے گئے ہیں، جنہیں یہ لوگ یش کہتے ہیں اور اس طرف کچھ کھنچاؤ ہمارے یہاں لکھوں میں بھی ہے ۔ اُن طریقوں سے دماغ صاف ہو اور اچھے نیتک طریقوں سے بھومی کا مسئلہ حل ہو، ایسی کوشش میں کر رہا ہوں ۔ میں جانتا ہوں کہ یہ مشکل کام ہے ۔ آسان سمجھ کر اسے میں نے نہیں اُٹھایا ہے ۔ یہ اتنا مشکل ہے کہ اپنی عقل سے میں اسے نہیں اُٹھا سکتا تھا، بلکہ وہ سہج ہی میرے پاس آ پہونچا ہے ۔ میں تو اسے پرمیشور کا آدیش مانتا ہوں اور جب آ پہونچا ہے تو اُتنی قابلیت ہے یا نہیں، اسے شک کی نگاہ سے سوچنا یا ہچکچانا ٹھیک نہیں سمجھتا ہوں ۔ مجھے مان لینا چاہئے کہ جس طاقت نے یہ کام ہمارے سامنے لا کھڑا کیا ہے، وہی طاقت اُسکے پورا کرنے کے لئے بھی ضروری بل دیگی ۔ اِس یقین اور بھروسے سے، بہت نمرتا کے ساتھ میں نے یہ کام اُٹھایا ہے اور میں اِس وقت سروودے میں ماننے والے ہر شخص سے ہمدردی اور مدد چاہتا ہوں ۔

اس طرح غیر جانبدار سماج کے یہ پانچ کام ہونگے —جیون بہتری، پڑھائی اور جانکاری، دکھیوں کی سیوا، انکار و ستیاگرہ اور سماج کے مسئلوں کا اہنسک حل ۔

बैलगाड़ी और सरकार

[अक्तूबर के 'नया हिन्द' में डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का बैलगाड़ी सम्बन्धी लेख 'ग्राम उद्योग पत्रिका' से लेकर हमने दिया था. उस लेख पर हिन्द सरकार के होम महकमे के सेक्रेटरी ने कुमारप्पा जी को जो ख़त लिखा है और उसका जो जवाब, कुमारप्पा जी ने दिया है वह 'ग्राम उद्योग पत्रिका' से लेकर हम नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

होम सेक्रेटरी का ख़त.

हमें सितम्बर महीने की 'ग्राम उद्योग पत्रिका' की एक कापी मिली है जिसमें आपने लिखा है कि सरकार का

بیل گاڑی اور سرکار

[اکتوبر کے ' نیا ہند ' میں ڈاکٹر جے ۔ سی ۔ کماریپا کا بیل گاڑی سمبندھی لیکھ ' گرام اُدیوگ پتریکا ' سے لیکر ہم نے دیا تھا ۔ اس لیکھ پر ہند سرکار کے ہوم محکمے کے سکریٹری نے کماریپا جی کو جو خط لکھا ہے اور اُس کا جو جواب کماریپا جی نے دیا ہے وہ 'گرام اُدیوگ پتریکا' سے لے کر ہم نیچے دے رہے ہیں —ایڈیٹر]

ہوم سکریٹری کا خط ۔

ہمیں ستمبر مہینے کی 'گرام اُدیوگ پتریکا' کی ایک کاپی ملی ہے جس میں آپ نے لکھا ہے کہ سرکار کا کچھ

जमायत के लोगों को मुख़ातिब होना चाहिये. उनका फ़र्ज़ है कि बिना किसी फल की उम्मीद के, बेलाग तबियत से अपने काम में लगे रहें. उन्हें समझ लेना चाहिये कि उनके इस काम का नतीजा देर में निकलेगा और इस लिये उन्हें ज़रा भी घबराने या उतावलेपन की ज़रूरत नहीं है. सचमुच वह लोग चारों तरफ़ के फैले अंधेरे में एक दीपक की तरह काम करेंगे जिसे अंधेरे का कोई लिहाज़ ही नहीं रहता.

इनकार और सत्याग्रह.

उनका चौथा काम होगा—ग़लती को दूर करना चाहे वह ग़लतियाँ समाजी जीवन में दिखलाई पड़ें या सरकारी कामों में. यह ज़रूरी नहीं कि ग़लती को दूर करना या उसका इनकार ज़ाहिरा तौर पर किया जाय. लेकिन जहां ज़ाहिरा तौर पर इनकार करने का मौक़ा आए, वहां बिना किसी राग मोह के साफ़ साफ़ शब्दों में उसे जनता के सामने रखना और उसमें अपनी शख़्सियत ज़ाहिर करना उनका काम होगा. इस तरह समाजी और सरकारी कामों के बारे में विचार करते हुए उनमें कहीं चूक मालूम पड़े तो उसे ज़ाहिर करना उनका फ़र्ज़ होगा.

कभी कभी उन चूकों को दूर करने के लिये अमली मुक़ाबले का मौक़ा भी आ सकता है. वह इस तरह ख़ुद बख़ुद किया जायेगा कि जिनके विरोध में होगा उन्हें भी प्यारा लगेगा क्योंकि उनकी सेवा के लिये ही वह होगा. उसे मुक़ाबले का नाम देने के बजाये हथियारी कार्रवाई कहना ही ठीक रहेगा, क्योंकि हथियारी कार्रवाई जिस पर की जाती है उसे भी वह प्यारी होती है. इसे सत्याग्रह भी कह सकते हैं. लेकिन आज सत्याग्रह का अर्थ गिर गया है. अच्छे से अच्छे शब्द भी नालायक़ हाथों में गिर जाते हैं और मामूली से मामूली शब्द भी अच्छे हाथों में उठ जाते हैं. मतलब यह कि ज़बान से इनकार और अमल में सत्याग्रह यह इस समाज का एक प्रोग्राम होगा.

सवालों के अहिन्सक हल.

इसके अलावा पांचवां काम उनका यह रहेगा कि समाजी जीवन में जो भारी मसले खड़े हुआ करते हैं, उनका अहिंसक हल खोज निकालें. उन्हें साबित करना होगा कि अहिंसक और नैतिक तरीक़े से वह मसले हल हो सकते हैं. अगर वह ऐसा साबित कर सकें तो नैतिक और अहिंसक तरीक़ों पर लोगों का एतक़ाद या श्रद्धा बैठ सकती है. लोगों को नैतिक तरीक़े प्यारे तो होते ही हैं, लेकिन सामने नतीजा देखे बग़ैर उनका यक़ीन जम नहीं सकता. इस तरह इस समाज का पांचवाँ काम होगा आँखों देखे तजरबे से लोगों का यक़ीन साबित बनाना.

جماعت کے لوگوں کو مخاطب ہونا چاہئے ۔ اُن کا فرض ہے کہ بنا کسی پھل کی اُمید کے، بیلاگ طبیعت سے اپنے کام میں لگے رہیں ۔ انہیں سمجھ لینا چاہئے کہ ان کے اِس کام کا نتیجہ دیر میں نکلیگا اور اس لئے انہیں ذرا بھی گھبرانے یا اتاوے پن کی ضرورت نہیں ہے ۔ سچ مچ وہ لوگ چاروں طرف کے پھیلے اندھیرے میں دیپک کی طرح کام کرینگے جسے اندھیرے کا کوئی لحاظ ہی نہیں رہتا ۔

انکار اور ستیاگرہ ۔

اُن کا چوتھا کام ہوگا غلطی کو دور کرنا چاہے وہ غلطیاں انہیں سماجی جیون میں دکھلائی پڑیں یا سرکاری کاموں میں یہ ضروری نہیں کہ غلطی کو دور کرنا یا اُس کا انکار ظاہری طور پر کیا جائے ۔ لیکن جہاں ظاہرہ طور پر انکار کرنے کا موقعہ آئے، وہاں بنا کسی راگ موہ کے صاف صاف شبدوں میں اُسے جنتا کے سامنے رکھنا اور اُس میں اپنی شخصیت ظاہر کرنا اُن کا کام ہوگا ۔ اس طرح سماجی اور سرکاری کاموں کے بارے میں وچار کرتے ہوئے اُن میں کہیں چوک معلوم پڑے تو اسے ظاہر کرنا اُن کا فرض ہوگا ۔

کبھی کبھی اُن چوکوں کو دور کرنے کے لئے عملی مقابلے کا موقعہ بھی آسکتا ہے ۔ وہ اس طرح خود بخود کیا جائے کا جن کے وِرودھ میں ہوگا انہیں بھی پیارا لگیگا کیونکہ اُن کی سیوا کے لئے ہی وہ ہوگا ۔ اُسے مقابلے کا نام دینے کے بجائے ہتھیاری کارروائی کہنا ہی ٹھیک رہیگا، کیونکہ ہتھیاری کارروائی جس پر کی جاتی ہے اُسے بھی وہ پیاری ہوتی ہے ۔ اُسے ستیاگرہ بھی کہہ سکتے ہیں ۔ لیکن آج ستیاگرہ کا ارتھ گرگیا ہے ۔ اچھے سے اچھے شبد بھی نالائق ہاتھوں میں گر جاتے ہیں اور معمولی سے معمولی شبد بھی اچھے ہاتھوں میں اُٹھ جاتے ہیں ۔ مطلب یہ کہ زبان سے انکار اور عمل میں ستیاگرہ، یہ اس سماج کا ایک پروگرام ہوگا ۔

سوالوں کے اہنسک حل ۔

اِس کے علاوہ پانچواں کام اُن کا یہ رہیگا کہ سماجی جیون میں جو بھاری مسئلے کھڑے ہوا کرتے ہیں، اُن اہنسک کا حل وہ کھوج نکالیں ۔ اُنہیں ثابت کرنا ہوگا کہ اہنسک اور نیتک طریقے سے وہ مسئلے حل ہو سکتے ہیں ۔ اگر وہ ایسا ثابت کرسکے تو نیتک اور اہنسک طریقوں پر لوگوں کا اعتقاد یا سردھا بیٹھ سکتی ہے ۔ لوگوں کو نیتک طریقے پیارے تو ہوتے ہی ہیں، لیکن سامنے نتیجہ دیکھے بغیر اُن کا یقین جم نہیں سکتا ۔ اس طرح اس سماج کا پانچواں کام ہوگا ۔ آنکھوں دیکھے تجربے سے لوگوں کا یقین ثابت بنانا ۔

आज रखने की सोच रहा हूं. मुझे उम्मीद है कि इससे आप को अपने काम में मदद मिलेगी.

जीवन बेहतरी का काम.

इस जमायत के लोगों का बुनियादी और पहला काम यह होगा कि वह जीवन की बेहतरी के लिये कोशिश करें. वह अपनी जाती जीवन की बेहतरी के साथ-साथ अपने खानदान, दोस्त और जान पहचान वाले या दूसरों सब को बेहतरी का ध्यान लगातार रखेंगे. अगर झूट या असत्य कहीं अपने में छिप रहा है तो बारीकी से उसकी तलाश करेंगे, उस झूट को खत्म कर देंगे और यह भी देखेंगे कि दिल के किसी कोने में अगर डर के अंकुर रह गए हों तो वह किस तरह के हैं ? डर कई तरह के होते हैं. उन डरों में से कौन सी तरह के डर हैं, जो दिल में राज कर रहे हैं ? उन सब अंकुर को देख कर उन से मुक्ति पाने की कोशिश वह करेंगे. याना हमेशा निडर बनने की उनकी कोशिश रहेगी. वह हर काम शिस्त या संयम में रह कर करेंगे. जबान संयम, काम संयम, मन संयम, यह उनकी रोजाना की साधना रहेगी. उनको चाहिए कि अपनी गुजर औक़ात जहां तक हो सके अपनी जिस्म की मेहनत पर चलायें. वह अपने तजरबे निजी, खानदानी और सामाजिक तीनों तरह के दायरे में करेंगे. यह सारा जीवन बेहतरी का बुनियादी काम पहला काम होगा.

पढ़ाई पर ज़ोर.

दूसरी बात उन्हें यह करनी होगी कि लगातार पढ़ते रहना होगा. लोक जीवन की जितनी छोटी बड़ी शाखें हैं, उन सब के बारे में वह पढ़ेंगे. हर तरह की ठीक-ठीक जानकारी उनके पास रहेगी. यह नहीं कि वह बेकार की जानकारी हासिल करेंगे बल्कि जो जानकारी समाजी और निजी जीवन की भीतरी और बाहरी तरक्की के लिये जरूरी है उस को वह हासिल करते रहेंगे. जब इस तरह मेहनत से काम होता रहता है, तभी स्वराज तरक्की करता है. स्वराज में ऐसे मेहनती पढ़ने वालों की बहुत जरूरत रहती है. बिना पढ़ाई के कोई समाज गहरा काम नहीं कर पायगा. मैं देख रहा हूं कि इस तरफ ज़ियादा काम नहीं हो रहा है. मैं इसे बुनियादी काम तो नहीं कहूंगा, लेकिन जरूरी और अहमियत का कहूँगा.

दुखियों की सेवा का काम .

तीसरी बात यह करनी होगी कि उन्हें समाज के उन लोगोंकी तरफ ध्यान देना होगा जो समाज से खारिज समझे जाते हैं और जिनकी परवाह न समाज को है और न सरकार को. इस तरहके जितने काम हैं उनकी तरफ इस नई

رکھنے کی سوچ رہا ہوں. مجھے اُمید ہے کہ اس سے آپ ...اپنے کام میں مدد ملیگی .

جیون بہتری کا کام .

اُس جماعت کے لوگوں کا بنیادی اور پہلا کام یہ ہوگا ...وہ جیون کی بہتری کے لئیے کوشش کریں . وہ اپنی ذاتی ...جیون کی بہتری کے ساتھ ساتھ اپنے خاندان' دوست اور جان ...پہچان والے یا دوسروں سب کی بہتری کا دھیان لگاتار رکھینگے. ...جھوٹ یا استیہ کہیں اپنے میں چھپ رہا ہے تو باریکی ...اُس کی تلاش کرینگے' اُس جھوٹ کو ختم کر دینگے . ...یہ بھی دیکھینگے کہ دل کے کسی کونے میں اگر ڈر کے ...رہ گئے ہوں تو وہ کس طرح کے ہیں ؟ ڈر کئی طرح ...ہوتے ہیں . اُن ڈروں میں سے کون سی طرح کے ڈر ہیں' ...دل میں راج کر رہے ہیں ؟ ان سب انکر کو دیکھکر ...سے مکتی پانے کی کوشش وہ کرینگے . یعنی ہمیشہ ...بننے کی اُن کی کوشش رہے گی . وہ ہر کام شست یا ...میں رہ کر کرینگے . زبان سنیم' کام سنیم' من ...یہ ان کی روزانہ کی سادھنا رہے گی . ان کو چاہئیے ...اپنی گذر اوقات جہاں تک ہو سکے اپنے جسم کی محنت ...چلائیں . وہ اپنے تجربے نجی' خاندانی اور سماجی ...طرح کے دائرے میں کرینگے . یہ سارا جیون بہتری کا ...بنیادی کام پہلا کام ہوگا.

پڑھائی پر زور .

دوسری بات اُنہیں یہ کرنی ہوگی کہ روزانہ لگاتار پڑھتے ...رہنا ہوگا . لوک جیون کی جتنی چھوٹی بڑی شاخیں ...ہیں' اُن سب کے بارے میں وہ پڑھینگے . ہر طرح کی ...ٹھیک ٹھیک جانکاری اُن کے پاس رہیگی . یہ نہیں کہ ...بیکار کی جانکاری حاصل کرینگے . بلکہ جو جانکاری ...سماجی اور نجی جیون کی بھیتری اور باہری ترقی کے لئیے ...ضروری ہے اس کو وہ حاصل کرتے رہینگے . جب اس طرح ...محنت سے کام ہوتا ہے تبھی سوراج ترقی کرتا ہے . ...سوراج میں ایسے محنتی پڑھنے والوں کی بہت ضرورت ...رہتی ہے . بنا پڑھائی کے کوئی سماج گہرا کام نہیں کر ...سکیگا . میں دیکھ رہا ہوں کہ اس طرف زیادہ کام نہیں ...ہو رہا ہے . میں اسے بنیادی کام تو نہیں کہونگا' لیکن ...ضروری اور اہمیت کا کہونگا .

دکھیوں کی سیوا کا کام .

تیسری بات یہ کرنی ہوگی کہ اُنہیں سماج کے ان ...لوگوں کی طرف دھیان دینا ہوگا جو سماج سے خارج سمجھے ...جاتے ہیں اور جن کی پروا نہ سماج کو ہے اور نہ سرکار کو . ...اس طرح کے جتنے کام ہیں ان کی طرف اس نئی

बिठाना होगा, और अगर वह चाहते हैं कि उनके कंधे पर से सरमायादार उतर जायें तो उन्हें भी मज़दूर के कंधे पर से उतर कर जिस्मानी मेहनत का काम करना होगा.

आप सब विद्यार्थी ज़ियादातर इस छोटे हुक्षर जमाअत के हैं. अगर आप चाहते हैं कि समाज में बराबरी की इज़्ज़त हो तो आप सब को अपनी जमाअत बदल कर के मज़दूर बनना होगा.

मुझे उम्मीद है कि इन बातों पर ध्यान रख कर आप अपने काम का सिलसिला क़ायम करेंगे.

بٹھانا ہوگا اور اگر وہ چاہتے ہیں کہ اُن کے کندھے پر سے سرمائےدار اُتر جائیں تو اُنھیں بھی مزدور کے کندھے پر سے اُتر کر جسمانی محنت کا کام کرنا ہوگا .

آپ سب ودیارتھی زیادہ تر اس چھوٹے حضور جماعت کے ہیں . اگر آپ چاہتے ہیں کہ سماج میں برابری کی عزت ہو تو آپ سب کو اپنی جماعت بدل کر کے مزدور بننا ہوگا .

مجھے اُمید ہے کہ ان باتوں پر دھیان رکھکر آپ اپنے کام کا سلسلہ قائم کرینگے .

ग़ैर जानिबदार समाज का प्रोग्राम

[हमारे पाठकों को मालूम होगा नवम्बर के महीने में आचार्य विनोबाजी अपने भूमि दान यज्ञ के सिलसिले में देहली पहुँचे और वहां बारह रोज़ क़याम किया. एक दिन उन्होंने दिल्ली के रचनात्मक कारकुनों के सामने जो तक़रीर की उसका कुछ हिस्सा 'सर्वोदय' से लेकर हम नीचे दे रहे हैं.—एडीटर]

एक ग़ैर जानिबदार जमायत की ज़रूरत

देश की मौजूदा हालत पर रोशनी डालते हुए मैंने बताया था कि हमारे यहां एक तो अधिकारी या हाकिम पक्ष रहेगा जो लोगों की तरफ़ से अक्सरियत के आधार पर राज काज की ज़िम्मेदारी उठायेगा. और दूसरा एक मुख़ालिफ़ पक्ष होगा जो उनके साथ जवाबी सहयोग करेगा. यानी जहां मदद या हिमायत की ज़रूरत मालूम हो वहां सरकार का साथ देगा और जहां मुख़ालिफ़त की ज़रूरत हो वहां मुख़ालिफ़त करेगा. यह दोनों दल राज काजी दायरे में काम करेंगे इनके अलावा तीसरा एक ग़ैर जानिबदार समाज होना चाहिये जिसकी गिनती न हाकिम दल में होगी और न मुख़ालिफ़ दल में, बल्कि यह एक अलग जमायत होगी, जिसकी अपनी एक ख़सूसियत होगी और वह जमायत सेवा के काम में लगी रहेगी. इस तरह की जमायत जितनी बड़ी और मज़बूत होगी, राजतन्त्र और लोकतन्त्र दोनों उतने ही पाक साफ़ और मर्यादा में रहेंगे. यह जो तीसरा ग़ैर जानिबदार समाज होगा, उसका एक बड़ा भारी देश भर का प्रोग्राम होगा. उस प्रोग्राम के कुछ पहलू, मैं आप लोगों के सामने

غیر جانبدار سماج کا پروگرام

[ہمارے پاٹھکوں کو معلوم ہوگا نومبر کے مہینے میں آچاریہ ونوبا جی اپنے بھودان یگیہ کے سلسلے میں دہلی پہنچے اور وہاں بارہ روز قیام کیا . ایک دن اُنھوں نے دلی کے رچناتمک کارکنوں کے سامنے جو تقریر کی اُس کا کچھ حصہ ' سروودے ' سے لیکر ہم نیچے دے رہے ہیں . —ایڈیٹر]

ایک غیر جانبدار جماعت کی ضرورت .

دیش کی موجودہ حالت پر روشنی ڈالتے ہوئے میں نے بتایا تھا کہ ہمارے یہاں ایک تو ادھیکاری یا حاکم پکش رہے گا جو لوگوں کی طرف سے اکثریت کے آدھار پر راج کاج کی ذمے داری اُٹھائیگا . اور دوسرا ایک مخالف پکش ہوگا جو اُن کے ساتھ جوابی سہیوگ کریگا . یعنی جہاں مدد یا حمایت کی ضرورت معلوم ہو وہاں سرکار کا ساتھ دیگا اور جہاں مخالفت کی ضرورت ہو وہاں مخالفت کریگا . یہ دونوں دل راج کاجی دائرے میں کام کرینگے . ان کے علاوہ تیسرا ایک غیر جانبدار سماج ہونا چاہئے جسکی گنتی نہ حاکم دل میں ہوگی اور نہ مخالف دل میں ' بلکہ یہ ایک الگ جماعت ہوگی ' جس کی اپنی ایک خصوصیت ہوگی اور وہ جماعت سیوا کے کام میں لگی رہے گی . اس طرح کی جماعت جتنی بڑی اور مضبوط ہوگی ' راج تنتر اور لوک تنتر دونوں اتنے ہی پاک صاف اور مریادہ میں رہینگے . یہ جو تیسرا غیر جانبدار سماج ہوگا ' اُس کا ایک بڑا بھاری دیش بھر کا پروگرام ہوگا . اس پروگرام کے کچھ پہلو ' میں آپ لوگوں کے سامنے

विद्यार्थी समाज का फ़र्ज़—मज़दूर बनिये

(धीरेन्द्र मजूमदार)

[हाल ही में वालोड, ज़िला सूरत में कुल गुजरात विद्यार्थी कांग्रेस का पांचवां सालाना जलसा हुआ. इस मौक़े पर धीरेन्द्र भाई ने उनको जो संदेसा भेजा था वह हम 'सर्वोदय' से लेकर नीचे दे रहे हैं. धीरेन्द्र भाई आजकल कुल हिन्द चर्खा संघ के सदर हैं.]

आज दुनिया में जो घोर अशांति छा रही है, उसका कारन है, समाज के अन्दर एक दूसरे को चूसना या शोशन. उसका सबूत है समाज के अन्दर मुख्तलिफ़ दरजे. समाज हुज़ूर और मज़दूर के दो वर्गों में तक़सीम हो गया है. इस वजह से हुज़ूर वर्ग लगातार मज़दूर वर्ग को चूसता रहा है. चूसने का यह नया दस्तूर नहीं है. जिस्मानी मेहनत से पैदा करने वाले मज़दूर की सम्पत्ति दलाली करके खाने वाले हुज़ूर के पास चले जाने का पुराना तरीक़ा कब से शुरू हुआ है यह जानना ज़रा मुश्किल है, लेकिन इस पुराने तरीक़े का विकास होते होते दुनिया आज ऐसी हालत में पहुंच गई है कि भेद भाव की इस आग से समाज भस्म होना चाहता है.

इस हालत से निकलने के लिये दुनिया भर की इन्सानियत पुकार रही है. यही कारन है कि दुनिया में चारों तरफ़ से वर्गहीन या बिना दरजों के समाज की मांग आ रही है. यह बात सब विद्यार्थी समाज भी मानता है. लेकिन वह जो नहीं मानता है, उस तरफ़ ही आपको विचार करना होगा. वह यह तो मानता ही है कि मज़दूर के कंधे पर से हुज़ूर उतर जायें या मज़दूर हुज़ूर को अपने कंधे पर से नीचे पटक दे और इस तरह सरमायादार का नाश हो. यही नारा वह लगाते हैं, लेकिन उन्हें इन वर्गों या दरजों के फ़र्क़ की असली तसवीर से भी वाक़फ़ियत होना चाहिये. शोशन का सही नक़्शा यह है कि जिस्मानी मेहनत करके दौलत पैदा करने वाले मज़दूर के कंधे पर व्यवस्थापक या मैनेजर नाम धारी बाबू यानी छोटे हुज़ूर बैठे हुए हैं. उनके कंधे पर बड़ा हुज़ूर यानी सरमायादार बैठा है. आज यह छोटे हुज़ूर चाहते हैं कि हमारे कंधे पर से यह बड़े हुज़ूर हट जाएं, लेकिन हम मज़दूर के कंधे पर बैठे रहें. पर ऐसा इन्साफ़ नहीं चल सकता. दुनिया में एक ही इन्साफ़ चलेगा, कंधे पर बैठने का या उतरने का. अगर बाबू लोग चाहते हैं कि वह मज़दूर के कंधे पर बैठे रहें, तो उन्हें अपने कंधे पर बड़े हुज़ूर को

ودیارتھی سماج کا فرض — مزدور بنئے

(دھیریندر مزوم دار)

[حال ہی میں والوڈ، ضلع سورت میں کل گجرات ودیارتھی کانگریس کا پانچواں سالانہ جلسہ ہوا۔ اِس موقعے پر دھیریندر بھائی نے ان کو جو سندیسہ بھیجا تھا وہ ہم 'سروودے' سے لیکر نیچے دے رہے ہیں۔ دھیریندر بھائی آجکل کل ہند چرخہ سنگھ کے صدر ہیں]

آج دنیا میں جو گھور اشانتی چھا رہی ہے، اُس کا کارن ہے، سماج کے اندر ایک دوسرے کو چوسنا یا شوشن۔ اُسکا ثبوت ہے سماج کے اندر مختلف درجے۔ سماج حضور اور مزدور کے دو ورگوں میں تقسیم ہوگیا ہے۔ اسوجہ سے حضور ورگ لگاتار مزدور ورگ کو چوستا رہا ہے۔ چوسنے کا یہ نیا دستور نہیں ہے۔ جسمانی محنت سے پیدا کرنے والے مزدور کی سمپتی دلالی کر کے کھانے والے حضور کے پاس چلے جانے کا پرانا طریقہ کب سے شروع ہوا ہے یہ جاننا ذرا مشکل ہے، لیکن اس پرانے طریقے کا وکاس ہوتے ہوتے دنیا آج ایسی حالت میں پہونچ گئی ہے کہ بھید بھاو کی اِس آگ سے سماج بھسم ہونا چاہتا ہے۔

اس حالت سے نکلنے کے لئے دنیا بھر کی انسانیت پکار رہی ہے۔ یہی کارن ہے کہ دنیا میں چاروں طرف سے ورگ ہین یا بنا درجوں کے سماج کی مانگ آ رہی ہے۔ یہ بات سب ودیارتھی سماج بھی مانتا ہے۔ لیکن وہ جو نہیں مانتا ہے، اُس طرف ہی آپ کو وچار کرنا ہوگا۔ وہ یہ تو مانتا ہی ہے کہ مزدور کے کندھے پر سے حضور اُتر جائیں یا مزدور حضور کو اپنے کندھے پر سے نیچے پٹک دے اور اسطرح سرمایہ دار کا ناش ہو۔ یہی نعرہ وہ لگاتے ہیں، لیکن اُنہیں ان ورگوں یا درجوں کے فرق کی اصلی تصویر سے بھی واقفیت ہونا چاہئیے۔ شوشن کا صحیح نقشہ یہ ہے کہ جسمانی محنت کر کے دولت پیدا کرنے والے مزدور کے کندھے پر ویوستھاپک یا مینیجر نام دھاری بابو یعنی چھوٹے حضور بیٹھے ہوئے ہیں۔ ان کے کندھے پر بڑا حضور یعنی سرمایہ دار بیٹھا ہے۔ آج یہ چھوٹے حضور چاہتے ہیں کہ ہمارے کندھے پر سے یہ بڑے حضور ہٹ جائیں، لیکن ہم مزدور کے کندھے پر بیٹھیں رہیں۔ پر ایسا انصاف نہیں چل سکتا۔ دنیا میں ایک ہی انصاف چلیگا، کندھے پر بیٹھنے کا یا اُترنے کا۔ اگر بابو لوگ چاہتے ہیں کہ وہ مزدور کے کندھے پر بیٹھیں رہیں، تو اُنہیں اپنے کندھے پر بڑے حضور کو

जिन्हें पूँजी पतियों ने अपने ऐश के लिये जानवर बना रक्खा था, उन तमाम लोगों ने दिया जिन्हें गुलामी पसन्द नहीं थी, जो आजादी से प्रेम करते थे, जिन्हें भारत माता से प्यार था और जो अपने स्वाभिमान, अपनी मर्यादा, अपनी परम्पराओं और अपनी जन्म भूमि की रक्षा करना चाहते थे. आप उनसे......

धर्म राज—बस बस, हमें तुम्हारे बारे में सब पता है और तुमने जिस तरह अपने देश और देश वासियों की सेवा की है उसकी हमे खबर है. तुम ने इसके लिये जो कष्ट सहे उसकी हम क़द्र करते हैं और इसलिये हम तुम्हें मुक्त करते हैं. तुम जहां चाहो जा सकते हो. तुम्हारे लिये स्वर्ग का द्वार भी खुला है और मृत्यु लोक का मार्ग भी साफ़ है.

सुधारक—(फिर हाथ जोड़ कर निगाह नीची किये हुए) महाराज ! आपकी इस कृपा के लिये मैं बहुत बहुत आभारी हूं. मैं स्वर्ग में बड़े आनन्द से रहूँगा. पर मैं अभी आनन्द नहीं चाहता. जब तक धरती का एक एक प्राणी आनन्द से जीवन न बिता सके, मैं खुद आनन्द मनाना पाप समझता हूँ. यह ठीक है कि मेरा देश स्वतंत्र हो गया पर अभी देश की बहुत सी समस्याएं हल नहीं हो सकी हैं. हमारे विदेशी हाकिम मेरे देश को खोखला और कंगाल बना कर गये हैं. अभी मेरे देश वासी पेट भर भोजन और ज़रूरत भर कपड़ा नहीं पाते. अभी तक मेरे देश में पूँजी वाद का बोल बाला है और मज़दूर किसानों का खून चूसा जा रहा है. मैं जब तक अपने देश में फिर से दूध घी की नदी बहते न देख लूँ, मेरे लिये अच्छा भोजन हराम है. और महाराज ! अब मैं अपने देश को ही नहीं देखता, मैं सारे संसार को प्रीत की लड़ी में पिरोया देखना चाहता हूं. मैं चाहता हूँ कि पूरब और पच्छिम, उत्तर और दक्खिन के लोग एक हो जाएं. उनमें प्रेम हो, भाई चारा हो, एक का दुख सब का दुख और एक का सुख सबका सुख बन जाये. जब विज्ञान आदमी के नाश का नहीं बल्कि विकास का साधन बन जाय. जब सम्राजवाद और पूंजीवाद किसी क़ौम या किसी आदमी को गुलाम न बनाएं. आज संसार में बहुत से 'वाद' चल रहे हैं. हर एक अपने को अच्छा और दूसरे को बुरा कहता है. पर मैं ऐसा संसार चाहता हूँ जहां सिर्फ़ एक धर्म हो—मानव धर्म, और एक वाद हो—मानव वाद. नफ़रत, दुश्मनी और बुराइयों का बिलकुल खात्मा हो जाय और संसार में हर तरफ़ प्रेम ही प्रेम हो और पृथ्वी ही स्वर्ग बन जाय.

جنھیں پونجی پتیوں نے اپنے عیش کے لئے جانور بنا رکھا تھا، اُن تمام لوگوں نے دیا جنھیں غلامی پسند نہیں تھی، جو آزادی سے پریم کرتے تھے، جنھیں بھارت ماتا سے پیار تھا اور جو اپنے سوا بھیمان، اپنی مریادا، اپنی پرمپراؤں اور اپنی جنم بھومی کی رکشا کرنا چاہتے تھے۔ آپ اُن سے.........

دھرم راج—بس بس ہمیں تمہارے بارے میں سب پتہ ہے اور تم نے جس طرح اپنے دیش اور دیش واسیوں کی سیوا کی ہے اُسکی ہمیں خبر ہے۔ تم نے اسکے لئے جو کشٹ سہے اُسکی ہم قدر کرتے ہیں اور اِس لئے ہم تمہیں مکت کرتے ہیں۔ تم جہاں چاہو جاسکتے ہو۔ تمہارے لئے سورگ کا دوار بھی کھلا ہے اور مرتیو لوک کا مارگ بھی صاف ہے۔

سدھارک—(پھر ہاتھ جوڑ کر نگاہ نیچی کئے ہوئے) مہاراج! آپ کی اِس کرپا کے لئے میں بہت بہت آبھاری ہوں۔ میں سورگ میں بڑے آنند سے رہوں گا۔ پر میں ابھی آنند نہیں چاہتا۔ جب تک دھرتی کا ایک ایک پرانی آنند سے جیون نہ بتاسکے، میں خود آنند منانا پاپ سمجھتا ہوں۔ یہ ٹھیک ہے کہ میرا دیش سوتنتر ہوگیا پر ابھی دیش کی بہت سی سمسیائیں حل نہیں ہوسکی ہیں۔ ہمارے ودیشی حاکم میرے دیش کو کھوکھلا اور کنگال بناکر گئے ہیں۔ ابھی میرے دیش واسی پیٹ بھر بھوجن اور ضرورت بھر کپڑا نہیں پاتے۔ ابھی تک میرے دیش میں پونجی واد کا بول بالا ہے اور مزدور کسانوں کا خون چوسا جارہا ہے۔ میں جب تک اپنے دیش میں پھر سے دودھ گھی کی ندی بہتے نہ دیکھ لوں میرے لئے اچھا بھوجن حرام ہے۔ اور مہاراج! اب میں اپنے دیش کو ہی نہیں دیکھتا، میں سارے سنسار کو پریت کی لڑی میں پرویا دیکھنا چاہتا ہوں۔ میں چاہتا ہوں کہ پورب اور پچھم، اُتر اور دکھن کے لوگ ایک ہو جائیں۔ اُن میں پریم ہو، بھائی چارہ ہو، ایک کا دکھ سب کا دکھ اور ایک کا سکھ سب کا سکھ بن جائے۔ جب وگیان آدمی کے ناش کا نہیں بلکہ وکاس کا سادھن بن جائے۔ جب سامراج واد اور پونجی واد کسی قوم یا کسی آدمی کو غلام نہ بنائیں۔ آج سنسار میں بہت سے 'واد' چل رہے ہیں۔ ہر ایک اپنے کو اچھا اور دوسرے کو برا کہتا ہے۔ پر میں ایسا سنسار چاہتا ہوں جہاں صرف ایک دھرم ہو—مانو دھرم، اور ایک واد ہو—مانوواد۔ نفرت، دشمنی اور برائیوں کا بالکل خاتمہ ہو جائے اور سنسار میں ہر طرف پریم ہی پریم ہو اور پرتھوی ہی سورگ بن جائے۔

वे भी नहीं होतीं, क्या उनका दूध सा सफेद लिबास वे का नहीं होता. वह कहता था मसजिद, मंदिर, रे सब में भगवान रहते हैं. ऐसा होता तो क्या हम थे जो अलग गुरुद्वारे बनवाते. जी वह खुद महा न है. हम तो जी कभी उसके फंदे में नहीं आये. नहीं कब के पुलिस की लाठियाँ खाकर जेल हो आए होते. तो किसी को मारकर ही जेल जाना अपनी शान समझते सकी एक बात भी तुक की नहीं होती थी जी, वह ता था सब आदमी बराबर हैं, सब धर्म सच्चे हैं, सब न पुरुषों को एक समान मानना चाहिये. सब धर्म ग्रंथों आदर करो, प्रीत मंडल बनाओ और गुरुद्वारों की मदनी से खेती के फार्म खोलो. किसी भूके को खिलाते य यह न देखो कि उसका धर्म क्या है. पर जी, वह आप ा था, बताऊँ—एक बार हम भूके थे. सोचा कुछ अफीम आती तो काम चलता. उसके पास गए कि अपना का भाई है उससे कहें. पर जी जानते हो उसने क्या ब दिया—बोला अफीम न खाया करो. भूके हो तो किसी के सामने हाथ न फैलाओ. गुरु साहब ने बाकू के साथ शराब और अफीम की भी मनाही की है. बुरी बात है. बुरी बात का बच्चा. हमें गुरु साहब उपदेश सुनाता है. हम गुरु साहब की सब बात मानते हमारी दाढ़ी देखो जी कितनी बड़ी है, केश देख लो, च्छा देखो, कड़ा देखो, कंघा देखो, कृपान देखो. और क्या मानें. क्या उसके कहने से हम नशा पानी भी ड़ देते. मुसलमानों को अपने गांव की मसजिद में ज़ान देने देते? हलाल करने देते? हम तो जी यह नते हैं कि हिन्दू मुसलमान कमाये और खाए खालसा... .....बस जी, सुधारक का नाम हमारे सामने मत लो. म उसका नाम नहीं सुनना चाहते.........और जी, या यहाँ थोड़ी अफीम मिल सकती है? मिल जाय तो ी दया होगी कृपा निधान. बहुत दिनों से चक्खी तक हीं. वाह गुरु भला करें जी तुम्हारा. वाह गुरु वाह गुरु. और जी अगर यहाँ अफीम न मिलती हो तो हमें वापस जाब भेज दो.

(धर्म राज के इशारे पर चोबदार घमंडा सिंह को केल कर ले जाता है.)

धर्म राज—(सुधारक से) यहां तो सभी लोग तुम्हारे खिलाफ हैं. ऐसा क्यों है?

सुधारक—(बड़े विनम्र भाव से हाथ जोड़ कर) महाराज! यह लोग हमेशा मेरे खिलाफ रहे हैं.

धर्म राज—फिर तुम्हारे साथ कौन है?

सुधारक—महाराज! मेरा साथ उन नौजवानों ने दिया जिनकी निगाह और दिमाग तंग नहीं थे, उन किसानों ने दिया जिन्हें जमींदार चूस रहे थे, उन मजदूरों ने दिया

دکھاوے کی نہیں ہوتیں' کیا اُن کا دودھ سا سفید لباس دکھاوے کا نہیں ہوتا . وہ کہتا تھا مسجد' مندر' گوردوارے سب میں بھگوان رہتے ہیں . ایسا ہوتا تو کیا ہم مورکھ تھے جو الگ گردوارے بنواتے . جی وہ خود مہا مورکھ ہے . ہم تو جی کبھی اُسکے پھندے میں نہیں آئے . نہیں تو کب کے پولیس کی لاٹھیاں کھا کر جیل ہو آئے ہوتے . ہم تو کسی کو مار کر ہی جیل جانا اپنی شان سمجھتے ہیں . اُسکی ایک بات بھی تک کی نہیں ہوتی تھی جی' وہ کہتا تھا سب آدمی برابر ہیں' سب دھرم سچے ہیں' سب مہا پرشوں کو ایک سمان ماننا چاہئے . سب دھرم گرنتھوں کا آدر کرو . پریت منڈل بناؤ اور گوردواروں کی آمدنی سے کھیتی کے فارم کھولو . کسی بھوکے کو کھلاتے سمے یہ نہ دیکھو کہ اُس کا دھرم کیا ہے . پر جی' وہ آپ کیسا تھا بتاؤں—ایک بار ہم بھوکے تھے . سوچا کچھ افیم مل جاتی تو کام چلتا . اس کے پاس گئے کہ اپنا سکھ بھائی ہے اس سے کہیں . پر جی جانتے ہو اس نے کیا جواب دیا— بولا افیم نہ کھایا کرو . بھوکے ہو تو بھی کسی کے سامنے ہاتھ نہ پھیلاؤ . گرو صاحب نے تمباکو کے ساتھ شراب اور افیم کی بھی مناہی کی ہے . یہ بری بات ہے . بری بات کا بچہ . ہمیں گرو صاحب کا اُپدیش سناتا ہے . ہم گرو صاحب کی سب بات مانتے ہیں . ہماری داڑھی دیکھو جی کتنی بڑی ہے' کیش دیکھ لو' کچھا دیکھو' کڑا دیکھو' کنگھا دیکھو' کرپان دیکھو . اور ہم کیا مانیں . کیا اُس کے کہنے سے ہم نشہ پانی بھی چھوڑ دیتے . مسلمانوں کو اپنے گاؤں کی مسجد میں اذان دینے دیتے ؟ حلال کرنے دیتے ؟ ہم تو جی یہ مانتے ہیں کہ ہندو مسلمان کمائے اور کھائے خالصہ......بس جی' سدھارک کا نام ہمارے سامنے مت لو . ہم اُس کا نام نہیں سننا چاہتے........اور جی' کیا یہاں تھوڑی افیم مل سکتی ہے ؟ مل جائے تو بڑی دیا ہوگی کرپاندھان . بہت دنوں سے چکھی تک نہیں . واہ گرو بھلا کریں جی تمہارا . واہ گرو واہ گرو . اور جی' اگر یہاں افیم نہ ملتی ہو تو ہمیں واپس پنجاب بھیج دو .

(دھرم راج کے اشارے پر چوبدار گھمنڈا سنگھ کو دھکیل کر لے جاتا ہے)

دھرم راج—(سدھارک سے) یہ تو سبھی لوگ تمہارے خلاف ہیں . ایسا کیوں ہے ؟

سدھارک—(بڑے ونمر بھاؤ سے ہاتھ جوڑکر) مہاراج ! یہ لوگ ہمیشہ میرے خلاف رہے ہیں .

دھرم راج—پھر تمہارے ساتھ کون ہے ؟

سدھارک—مہاراج ! میرا ساتھ اُن نوجوانوں نے دیا جنکی نگاہ اور دماغ تنگ نہیں تھے' اُن کسانوں نے دیا جنہیں زمیندار چوس رہے تھے' اُن مزدوروں نے دیا

ने लोगों को अंगरेज़ों की मुख़ालफ़त से रोका और यही वजह है कि मुझे हुकूमत ने शम्सुल उलमा और ख़ान बहादुर का ख़िताब दिया. और अगर यह सुधारक उन्हें निकालने में कामयाब न हो गया होता तो मुझे सर का ख़िताब भी मिल जाता और जागीर भी अता होती. मगर अफ़सोस...(दुरोग बयान यह कहता हुआ लाल आंखों से दीन को घूरता धर्म राज की इजाज़त लिये बग़ैर चला जाता है.)

धर्म राज—भाई घमंडा सिंह ज्ञानी को हाज़िर करो.

चोबदार—(ऊंची आवाज़ में) भाई घमंडा सिंह हाज़िर है, कोई घमंडा सिंह हाज़िर है !

परदे के पीछे से आवाज़ आती है—ओय कौन है भई...आता हूँ...ओय आ रहा हूँ.

[एक मैली सी कच्छ, फटा हुआ नीला चोला, नीली पगड़ी जिस पर मैल के दाग़ दूर ही से दिखाई दे रहे हैं. मैल चिकटे बाल जैसे सर्दी भर न धोए गए हों, मोटी सी तोंद, दाढ़ी में धूल लगी हुई, बिना म्यान की चिथड़ों में लिपटी हुई कृपान, हांपता कांपता 'वाह गुरु, वाह गुरु' करता हुआ सिंहासन के एक तरफ़ खड़ा हो जाता है.]

घमंडा सिंह—हमें क्यों बुलाया गया है ? क्या कोई भोग कराना है या कड़ाह प्रशाद बँट रहा है (धर्म की तरफ़ देख कर) अरे यह ख़ुर्राट अभी तक मरा नहीं. ओय बुड्ढे, मरने से पहले अपना भोग डलवाले तब मरना. इसी कारन हम यहाँ आये हैं. फिर ख़बर नहीं कोई पाठी मिले या न मिले.

धर्मराज—बहुत मत बोलो. जो पूछा जाय उसका जवाब दो.

घमंडा सिंह—ओय हम बोल क्या रहे हैं जी. हम तो जी...बोलने में तो हम अकालियों के आगे भी नहीं डरे. हम को तो जी...बस...क्या नाम कि...ज्ञानी शेरसिंह जी...हम को जी कभी कभी बोलते समय चुप करा देते थे...पर जी यहाँ तो हम तुम्हारा भी कहना मानेंगे... हम जी बोलते कहाँ हैं.

धर्मराज—सुधारक को जानते हो ?

घमंडा सिंह—जी, हम उसके बाप को जानते हैं. वह दुश्ट महा पापी, उसे कौन नहीं जानता. उसने तो जी हमारे पंजाब में बड़ा ऊधम मचाया है. कहता था कि बनिये, लाला, सिक्ख और मुसलमान सब बराबर हैं. हमारी कृपान को कहता था कि वह बेकार चीज़ है, इसे चलाना नहीं चाहिये. वह धर्म का दुशमन था. कहता था कि दिखावे के लिये धर्म को न मानो. उससे पूछो कौनसा काम दिखावे के लिये नहीं किया जाता. क्या लाट साहब और वज़ीरों की बड़ी बड़ी कोठियाँ दिखावे के लिये नहीं होतीं, क्या उनकी चमकती मोटरें

میں نے لوگوں کو انگریزوں کی مخالفت سے روکا ۔ اور یہی وجہ ہے کہ مجھے حکومت نے شمس العلماء اور خان بہادر کا خطاب دیا ۔ اور اگر یہ سدھارک انہیں نکالنے میں کامیاب نہ ہوگیا ہوتا تو مجھے سر کا خطاب بھی مل جاتا اور جاگیر بھی عطا ہوتی ۔ مگر افسوس ....(دروغ بیان یہ کہتا ہوا لال آنکھوں سے دین کو گھورتا دھرم راج کی اجازت لئے بغیر چلا جاتا ہے ۔)

دھرم راج—بھائی گھمنڈا سنگھ گیانی کو حاضر کرو ۔

چوبدار—(اونچی آواز میں) بھائی گھمنڈا سنگھ حاضر ہے، کوئی گھمنڈا سنگھ حاضر ہے !

پردے کے پیچھے سے آواز آتی ہے—اوئے کون ہے بئی... آتا ہوں ۔ ۔ اوئے آ رہا ہوں ۔

[ایک میلی سی کچھ، پھٹا ہوا نیلا چولا، نیلی پگڑی جس پر میل کے داغ دور ہی سے دکھائی دے رہے ہیں ۔ میلے چکٹے بال جیسے سردی بھر نہ دھوئے گئے ہوں، موٹی سی توند، داڑھی میں دھول لگی ہوئی، بنا میان کی چیتھڑوں میں لپٹی ہوئی کرپان، ہانپتا کانپتا 'واہ گرو' واہ گرو' کرتا ہوا سنگھاسن کے ایک طرف کھڑا ہو جاتا ہے ۔]

گھمنڈا سنگھ—ہمیں کیوں بلایا گیا ہے ؟ کیا کوئی بھوگ کرانا ہے یا کڑاہ پرشاد بٹ رہا ہے (دھرم کی طرف دیکھکر) ارے یہ خرانٹ ابھی تک مرا نہیں ۔ ارے بڈھے، مرنے سے پہلے اپنا بھوگ ڈلوا لے تب مرنا ۔ اسی کارن ہم یہاں آئے ہیں ۔ پھر خبر نہیں کوئی پاٹھی ملے یا نہ ملے ۔

دھرم راج—بہت مت بولو ۔ جو پوچھا جائے اس کا جواب دو ۔

گھمنڈا سنگھ—اوئے ہم بول کیا رہے ہیں جی ۔ ہم تو جی.......... بولنے میں تو ہم اکالیوں کے آگے بھی نہیں ڈرے ۔ ہم کو تو جی .... بس......... کیا نام کہ......... گیانی شیر سنگھ جی......... ہم کو جی کبھی کبھی بولتے سمے چپ کرا دیتے تھے......... پر جی یہاں تو ہم تمہارا بھی کہنا مانیں گے......... ہم جی بولتے کہاں ہیں ۔

دھرم راج—سدھارک کو جانتے ہو ؟

گھمنڈا سنگھ—جی، ہم اس کے باپ کو جانتے ہیں ۔ وہ دشٹ مہا پاپی، اسے کون نہیں جانتا ۔ اس نے تو جی ہمارے پنجاب میں بڑا اودھم مچایا ہے ۔ کہتا تھا کہ بنئے، لالے، سکھ اور مسلمان سب برابر ہیں ۔ ہماری کرپان کو کہتا تھا کہ وہ بیکار چیز ہے ۔ اسے چلانا نہیں چاہئے ۔ وہ دھرم کا دشمن تھا ۔ کہتا تھا کہ دکھاوے کے لئے دھرم کو نہ مانو. اس سے پوچھو کون سا کام دکھاوے کے لئے نہیں کیا جاتا ۔ کیا لاٹ صاحب اور وزیروں کی بڑی بڑی کوٹھیاں دکھاوے کے لئے نہیں ہوتیں، کیا ان کی چمکتی موٹریں

दीन—इस दरोग़ बयान ने मुझे कहीं का न रक्खा, इसने मुझे सारी दुनिया में बदनाम कर दिया. मेरे रसूल हज़रत मोहम्मद ने कहा था कि हर इनसान बराबर है लेकिन यह इनसानों को छोटा बड़ा बनाता रहा. उन्होंने इत्तहाद का सबक़ दिया और यह फूट डालता रहा. उन्होंने फ़रमाया था दुशमन से भी मुहब्बत करो और यह दोस्तों को भी दुशमन बनाता रहा. उन्होंने फ़साद से बचने की नसीहत की लेकिन यह गाजे बाजे, तंज़ीम और तबलीग़ के नाम पर फ़साद फैलाता रहा. उन्होंने ग़ुलामों को आज़ाद करना और कराना बहुत बड़ा नेकी का काम बताया लेकिन इसने तमाम मुसलिम मुल्कों को ग़ुलाम बनाने वाले अंगरेज़ों की हिमायत की और उनसे आज़ादी हासिल करने की कोशिश करने वालों पर कुफ़्र के फ़तवे लगाता रहा. इसने क़ुरान पाक के ग़लत मानी बतला कर भोले मुसलमानों को तमाम उम्र गुमराह किया और इसलाम की हक़ीक़ी (सच्ची) तालीम को भुला कर मुसलमानों को रस्म रिवाज की पूजा सिखाई. मुख़्तसर यह कि इसने हर वह बात कही जो इसलाम के ख़िलाफ़ थी और हमेशा अपने को सच्चा मुसलमान कहता रहा. इसने मेरी सूरत को बिगाड़ कर रख दिया और लोगों को यक़ीन दिलाता रहा कि यही मेरी असली शक्ल है.

दरोग़ बयान—(दीन से) बड़े मियाँ, क्यों कुफ़्र बक रहे हो. मेरे साथ तुम्हारा वास्ता ही क्या रहा. मैं अगर तुम्हारी ख़िदमत में लगता तो क्या भूकों मरता. मौलवी बाप का बेटा हूं इसलिये मौलवी कहलाता हूं. बचपन में मेरे दादा ने ज़रूर तुम्हारी बड़ी तारीफ़ की थी, लेकिन बड़े होने पर मैंने महसूस किया कि तुम्हारी तालीम पर चल कर मैं न ख़ुद इज़्ज़त से जी सकता हूँ न अपने कुन्बे की शान से परवरिश कर सकता हूँ. मुझे तुम्हारे कहने पर चल कर तकिये की ईंट और टाट के बिछौने पर सोना होता, ख़ुद भूके रह कर पड़ोसियों का पेट भरना होता और अपने गाली देने वाले को दुआएँ देनी होतीं तो मैं तुम्हारा सहारा लेता. लेकिन मैं गद्दों पर सोता था और मुझे क़ालीन की ज़रूरत थी, मैं तांगे पर चलता था मुझे मोटर की ज़रूरत थी, मैं ख़ां साहब की जगह ख़ान बहादुरों से रिशता जोड़ना चाहता था, मुझे अपने पक्के मकान को पंच मंज़िला कोठी बनाना था इसलिये मैंने पुराने इसलाम को छोड़ कर बीसवीं सदी के इसलाम को अपनाया. मैं मुसलमानों को हिन्दुओं का ग़ुलाम नहीं देखना चाहता था इसलिये मैंने हिन्दुओं के ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाई. मैं अपनी तौहीन नहीं बरदाश्त कर सकता था इसलिये मैंने दुशमनों से मुक़दमे बाज़ी की और अदालत में सच बोलने से काम नहीं चल सकता था इसलिये झूट भी बोला. मैं हाकिमे वक़्त से बग़ावत को गुनाह समझता था इसलिये

دین—اس دروغ بیان نے مجھے کہیں کا نہ رکھا، اس نے مجھے ساری دنیا میں بدنام کر دیا۔ میرے رسول حضرت محمد نے کہا تھا کہ ہر انسان برابر ہے لیکن یہ انسانوں کو چھوٹا بڑا بناتا رہا۔ انہوں نے اتحاد کا سبق دیا اور یہ پھوٹ ڈالتا رہا۔ انہوں نے فرمایا تھا دشمن سے بھی محبت کرو اور یہ دوستوں کو بھی دشمن بناتا رہا۔ انہوں نے فساد سے بچنے کی نصیحت کی لیکن یہ گاجے باجے تنظیم اور تبلیغ کے نام پر فساد پھیلاتا رہا۔ انہوں نے غلاموں کو آزاد کرنا اور کرانا بہت بڑا نیکی کا کام بتایا لیکن اس نے تمام مسلم ملکوں کو غلام بنانے والے انگریزوں کی حمایت کی اور ان سے آزادی حاصل کرنے کی کوشش کرنے والوں پر کفر کے فتوے لگاتا رہا۔ اس نے قرآن پاک کے غلط معنی بتلا کر بھولے مسلمانوں کو تمام عمر گمراہ کیا اور اسلام کی حقیقی (سچی) تعلیم کو بھلا کر مسلمانوں کو رسم رواج کی پوجا سکھائی۔ مختصر یہ کہ اس نے ہر وہ بات کہی جو اسلام کے خلاف تھی اور ہمیشہ اپنے کو سچا مسلمان کہتا رہا۔ اس نے میری صورت کو بگاڑ کر رکھدیا اور لوگوں کو یقین دلاتا رہا کہ یہی میری اصلی شکل ہے۔

دروغ بیان—(دین سے) بڑے میاں، کیوں کفر بک رہے ہو۔ میرے ساتھ تمہارا واسطہ ہی کیا رہا۔ میں اگر تمہاری خدمت میں لگتا تو کیا بھوکوں مرتا۔ مولوی باپ کا بیٹا ہوں اس لئے مولوی کہلاتا ہوں۔ بچپن میں میرے دادا نے ضرور تمہاری بڑی تعریف کی تھی لیکن بڑے ہونے پر میں نے محسوس کیا کہ تمہاری تعلیم پر چل کر میں نہ خود عزت سے جی سکتا ہوں نہ اپنے کنبے کی شان سے پرورش کر سکتا ہوں۔ مجھے تمہارے کہنے پر چل کر تکیے کی اینٹ اور ٹاٹ کے بچھونے پر سونا ہوتا، خود بھوکے رہکر پڑوسیوں کا پیٹ بھرنا ہوتا اور اپنے گالی دینے والے کو دعائیں دینی ہوتیں تو میں تمہارا سہارا لیتا۔ لیکن میں گدوں پر سوتا تھا اور مجھے قالین کی ضرورت تھی، میں تانگے پر چلتا تھا اور مجھے موٹر کی ضرورت تھی، میں خانصاحب کی جگہ خان بہادروں سے رشتہ جوڑنا چاہتا تھا، مجھے اپنے پکے مکان کو پنچ منزلہ کوٹھی بنانا تھا اس لئے میں نے پرانے اسلام کو چھوڑ کر بیسویں صدی کے اسلام کو اپنایا۔ میں مسلمانوں کو ہندوؤں کا غلام نہیں دیکھنا چاہتا تھا اس لئے میں نے ہندوؤں کے خلاف نفرت پھیلائی۔ میں اپنی توہین نہیں برداشت کر سکتا تھا اس لئے میں نے اپنے دشمنوں سے مقدمے بازی کی اور عدالت میں سچ بولنے سے کام نہیں چل سکتا تھا اس لئے جھوٹ بھی بولا۔ میں حاکم وقت سے بغاوت کو گناہ سمجھتا تھا اس لئے

चोबदार—(चिल्लाकर) चलो कोई दरोग़ बयान हाज़िर है. दरोग़ बयान हाज़िर है !

परदे के पीछे से आवाज़ आती है—आता हूँ बे... कमबख़्त को बोलने की भी तमीज़ नहीं. दरोग़ बयान दरोग़ बयान चिल्ला रहा है. न मौलवी दरोग़ बयान कहता न मौलाना, बद तमीज़ कहीं का.

[ढीला पाजामा, तुरकी टोपी, हरी शेरवानी पर काला चोग़ा पहने हुए, दाढ़ी में मेंहदी लगाये, मूछें होंटों पर कतरे हुए, हाथ में छुरा, बग़ल में किताबें; पीठ पर बेगुनाहों के ख़ून का बोझ, चेहरा डरावना, आंखों में बेरहमी, माथे पर बल डाले और पान चबाते हुए दरोग़ बयान आता है.]

धर्म राज—मौलवी दरोग़ बयान.

दरोग़ बयान—जनाब.

धर्म राज—सुधारक को जानते हो ?

दरोग़ बयान—कौन सुधारक ? वह हिन्दुओं का ग़ुलाम, काफ़िरों का नमकख़्वार, कहने को मुसलमानों का दोस्त लेकिन हक़ीक़त में दुशमन. जिसके बहकाने में आकर मेरे ही मज़हब के कुछ सरफिरों ने मेरा नाम सदाक़त अली को बदल कर दरोग़ बयान रख दिया और वह नाम ऐसा मशहूर हुआ कि आप भी उसी नाम से याद फ़रमाते हैं, यह सब इसी की शरारत. . . .

धर्म राज—मौलवी साहब ! जो बात पूछी जाय सिर्फ़ उसका जवाब दीजिये.

दरोग़ बयान—वही अर्ज़ कर रहा हूँ जनाब. यह सुधारक अपने को क़ौम का ख़ादिम कहता था और हम जैसे क़ौम के सच्चे ख़ादिमों को ग़द्दार और अंगरेज़ों का एजेन्ट कहता था. क़दम क़दम पर हाकिम वक़्त के फ़रमानों की मुख़ालफ़त करता था और लोगों को अंगरेज़ों की इन्साफ़ पसन्द हकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमादा करता था. इसने बहुत से मुसलमानों को भी बहका लिया था और एक पूरा सूबा इसके इशारों पर नाचने लगा था. यह हिन्दुओं की तरह मुसलमान शेरों को भी भेड़ बनाने की कोशिश कर रहा था. इसने कितने ही शरीफ़ आदमियों को चोरों डाकुओं की तरह जेल भिजवाया और आख़िर कार शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाने वाले अंगरेज़ों को मुल्क से निकाल कर दम लिया. यह मज़हब का दुशमन है, इसलाम के अलावा दूसरे मज़हबों की सचाई पर भी एतक़ाद रखता है. ख़ुदा इसे हमेशा दोज़ख़ की आग में जलाये. (इस बार धर्म दीन के रूप में कुछ कहना चाहता है. उठना चाहता है मगर कमज़ोरी के कारन उठ नहीं पाता. आख़िर बैठे ही बैठे कहता है.)

چوبدار—(چلا کر) چلو کوئی دروغ بیان حاضر ہے . دروغ بیان حاضر ہے !

پردے کے پیچھے سے آواز آتی ہے—آتا ہوں بے...... کمبخت کو بولنے کی بھی تمیز نہیں . دروغ بیان' دروغ بیان چلا رہا ہے . نہ مولوی دروغ بیان کہتا ہے نہ مولانا . بدتمیز کہیں کا .

[ڈھیلا پاجامہ' ترکی ٹوپی' ہری شیروانی پر کالا چوغہ پہنے ہوئے' ڈاڑھی میں مہندی لگائے' مونچھیں ہونٹوں پر کترے ہوئے' ہاتھ میں چھرا' بغل میں کتابیں' پیٹھ پر بے گناہوں کے خون کا بوجھ' چہرا ڈراونا' آنکھوں میں بےرحمی' ماتھے پر بل ڈالے پان چباتے ہوئے دروغ بیان آتا ہے .)

دھرم راج—مولوی دروغ بیان .

دروغ بیان—جناب .

دھرم راج—سدھارک کو جانتے ہو ؟

دروغ بیان—کون سدھارک ؟ وہ ہندوؤں کا غلام' کافروں کا نمک خوار' کہنے کو مسلمانوں کا دوست لیکن حقیقت میں دشمن . جس کے بہکانے میں آکر میرے ہی مذہب کے کچھ سر پھروں نے میرے نام صداقت علی کو بدل کر دروغ بیان رکھ دیا اور وہ نام ایسا مشہور ہوا کہ آپ بھی اسی نام سے یاد فرماتے ہیں . یہ سب اسی کی شرارت......

دھرم راج—مولوی صاحب ! جو بات پوچھی جائے صرف اسکا جواب دیجئے .

دروغ بیان—وہی عرض کر رہا ہوں جناب . یہ سدھارک اپنے کو قوم کا خادم کہتا تھا اور ہم جیسے قوم کے سچے خادموں کو غدار اور انگریزوں کا ایجنٹ کہتا تھا . یہ قدم قدم پر حاکم وقت کے فرمانوں کی مخالفت کرتا تھا اور لوگوں کو انگریزوں کی انصاف پسند حکومت کے خلاف بغاوت پر آمادہ کرتا تھا . اس نے بہت سے مسلمانوں کو بھی بہکا لیا تھا اور ایک پورا صوبہ اس کے اشاروں پر ناچنے لگا تھا . یہ ہندوؤں کی طرح مسلمان شیروں کو بھی بھیڑ بنانے کی کوشش کر رہا تھا . اس نے کتنے ہی شریف آدمیوں کو چوروں ڈاکوؤں کی طرح جیل بھجوایا اور آخرکار شیر اور بکری کو ایک گھاٹ پانی پلانے والے انگریزوں کو ملک سے نکال کر دم لیا . یہ مذہب کا دشمن ہے' اسلام کے علاوہ دوسرے مذہبوں کی سچائی پر بھی اعتقاد رکھتا ہے . خدا اسے ہمیشہ دوزخ کی آگ میں جلائے . (اس بار دھرم دین کے روپ میں کچھ کہنا چاہتا ہے . اٹھنا چاہتا ہے مگر کمزوری کے کارن اٹھ نہیں پاتا . آخر بیٹھے ہی بیٹھے کہتا ہے .)

गपोड़ा नन्द और इनके जैसे दूसरे नाम के पंडितों ने मनुष्यों को आपस में एक दूसरे से नफरत करना सिखाया, मेरे नाम पर लोगों को मारकाट करना सिखाया और इस प्रकार मेरा असली रूप बिलकुल बिगाड़ कर मेरे ग़लत रूप को संसार के सामने पेश करते रहे. (यह कहते कहते गला भर आता है और आँखों में आँसू आ जाते हैं.)

गपोड़ा नन्द—(अपने आप से) यह बूढ़ा कहाँ से आ मरा. (धर्म राज से) महाराज! इसकी बातों में न आना. यह महा झूठा है. मैं तो इसे जानता भी नहीं कि यह कौन है.

(दरबार में फिर हँसी होती है. गपोड़ा नन्द मचल जाते हैं.)

धर्म राज—बस गपोड़ा नन्द, चुप रहो.

गपोड़ा नन्द—अब नहीं बोलूँगा सरकार. कान पकड़ता हूँ. (दोनों हाथों से कान पकड़ता है. देवियाँ हँसती हैं.)

धर्म राज—गपोड़ा नन्द! सुधारक को जानते हो?

गपोड़ा नन्द—(अपने आप) ओह! उसने यहां भी पीछा नहीं छोड़ा (ज़ोर से) सुधारक, कौन सुधारक? वह नास्तिक? वह तो बड़ा दुष्ट...

धर्म राज—फिर तुम बहकने लगे. हम जो कहते हैं वह सुनो. अधिक मत बोलो. बताओ, सुधारक ने धर्म के विरुद्ध कोई काम किया है?

गपोड़ा नन्द—आप भी महाराज, अनोखी बात कहते हो. वह कौन सा काम है जो इसने धर्म के अनुकूल किया है. इसने नास्तिकता का प्रचार किया है, लोगों को धर्म के खिलाफ़ भड़काता रहा है, ऊंच और नीच का भेद मिटाने के लिये लड़ता रहा है, सब धर्मों को एक बताकर सब की अच्छी शिक्षा पर चलने का उपदेश देता रहा है, अहिंसा जैसी निकम्मी चीज़ को अच्छी बतला कर शत्रुओं से भी प्रेम करने का बेतुका उपदेश देता रहा है, अछूतों को पवित्र देव स्थानों में प्रविष्ट करा के उनकी पवित्रता को नष्ट करने को वह अच्छा काम समझता रहा है. वह कौन सा बुरा काम है जो इसने नहीं किया. यह...वह...जो है.. सो नरक का भागी है.

धर्म राज—अच्छा जाओ.

(गपोड़ा नन्द डरता डरता और धर्म को ग़ुस्से से घूरता हुआ चला जाता है.)

धर्म राज—(चोबदार से) मौलवी दरोग़ बयान को पेश करो.

گپوڑا نند اور اِن کے جیسے دوسرے نام کے پنڈتوں نے منشیوں کو آپس میں ایک دوسرے سے نفرت کرنا سکھایا' میرے نام پر لوگوں کو مار کاٹ کرنا سکھایا اور اس پرکار میرا اصلی روپ بالکل بگاڑ کر میرے غلط روپ کو سنسار کے سامنے پیش کرتے رہے . (یہ کہتے کہتے گلا بھر آتا ہے اور آنکھوں میں آنسو آجاتے ہیں .)

گپوڑا نند—(اپنے آپ سے) یہ بوڑھا کہاں سے آ مرا . (دھرم راج سے) مہاراج ! اِس کی باتوں میں نہ آنا . یہ مہا جھوٹا ہے . میں تو اِسے جانتا بھی نہیں کہ یہ کون ہے .

(دربار میں پھر ہنسی ہوتی ہے . گپوڑا نند مچل جاتے ہیں .)

دھرم راج—بس گپوڑا نند . چپ رہو .

گپوڑا نند—اب نہیں بولوں گا سرکار . کان پکڑتا ہوں .

(دونوں ہاتھوں سے کان پکڑتا ہے . دیویاں ہنستی ہیں .)

دھرم راج—گپوڑا نند ! سدھارک کو جانتے ہو ؟

گپوڑا نند—(اپنے آپ) اوہ ! اُس نے یہاں بھی پیچھا نہیں چھوڑا . (زور سے) سدھارک' کون سدھارک ؟ وہ ناستک ؟ وہ تو بڑا دشٹ........

دھرم راج—پھر تم بہکنے لگے . ہم جو کہتے ہیں وہ سنو . ادھک مت بولو . بتاؤ' سدھارک نے دھرم کے ورودھ کوئی کام کیا ہے ؟

گپوڑا نند—آپ بھی مہاراج انوکھی بات کہتے ہو . وہ کون سا کام ہے جو اِس نے دھرم کے انوکول کیا ہے . اُس نے ناستکتا کا پرچار کیا ہے' لوگوں کو دھرم کے خلاف بھڑکاتا رہا ہے' اونچ اور نیچ کا بھید مٹانے کے لئے لڑتا رہا ہے' سب دھرموں کو ایک سمان بتلا کر سب کی اچھی شکشا پر چلنے کا اُپدیش دیتا رہا ہے . اہنسا جیسی نکمی چیز کو اچھا بتلا کر شترؤوں سے بھی پریم کرنے کا بے تکا اُپدیش دیتا رہا ہے' اچھوتوں کو پوتر دیواستھانوں میں پرویشٹ کراکر اُن کی پوترتا کو نشٹ کرنے کو یہ اچھا کام سمجھتا رہا ہے . وہ کون سا برا کام ہے جو اِس نے نہیں کیا. یہ......یہ...جو ہے.....سو نرک کا بھاگی ہے .

دھرم راج—اچھا جاؤ .

(گپوڑا نند ڈرتا ڈرتا اور دھرم کو غصے سے گھورتا ہوا چلا جاتا ہے .)

دھرم راج—(چوبدار سے) مولوی دروغ بیان کو پیش کرو .

नीचे मिस्सी लगा कर काले किये हुए दांत, नाक सुंघनी से भरी हुई और सुंघनी की डिबिया धोती में खोंसी हुई. खोपड़ी सफ़ा चट, लम्बी चोटी में बेल पत्र गुंथे हुए, पीठ पर पापों का बोझ, कंधों पर धर्म शास्त्र की किताबें लदी हुई और दम फूला हुआ. जल्दी जल्दी चलने से धोती की गांठ खुलने लगती है, उसे संभालने लगता है तो कंधे से किताबें गिर पड़ती हैं. धर्मराज के आगे आकर संभल कर खड़ा हो कर धर्मराज को प्रनाम करता है.]

गपोड़ा नन्द—मेरा नाम श्रीमान पंडित गपोड़ानन्द शास्त्री, व्याकरनाचार्य, महा महो पाध्याय, कथा वाचक, ज्योतिश मार्तन्ड, काव्यतीर्थ......

चित्रगुप्त—चुप रहो.

गपोड़ा नन्द—(धर्मराज से) देखो सरकार, कायस्थ हो कर कुलीन ब्राह्मन को डांटता है.

धर्मराज—जो बात पूछी जाय उसका जवाब दो.

गपोड़ा नन्द—पूछो महाराज ! बार बार पूछो. धर्म शास्त्र सम्बन्धी पूछो, ज्योतिश सम्बन्धी पूछो, भाग्य का हाल पूछो, व्याकरन के सूत्र पूछो, न्याय की गुत्थियां को सुलझाने का हल पूछो, मुझे क्या नहीं आता. मैं पंडित हूं. चारों धाम परस हैं. नित्य गंगा स्नान करता हूँ. शास्त्रार्थ में मुझे किसी ने जीता नहीं. मैं स्वर्ग का पूरा अधिकारी हूँ.

धर्म राज—(गपोड़ा नन्द से) बहुत मत बोलो, जो बात पूछी जाय उसी का जवाब दो.

गपोड़ा नन्द—जो आज्ञा महाराज !

[धर्म कुछ कहने के लिये उठना चाहता है पर कमज़ोर होने के कारन उठ नहीं सकता. देवदूत उसकी मदद करते हैं.]

धर्मराज—(धर्म से) क्यों बाबाजी, आप भी कुछ कहना चाहते हैं ?

धर्म—हाँ महारज.

धर्मराज—उठने की ज़रूरत नहीं. जो कहना हो बैठे बैठे ही कहिये.

धर्म—(बहुत धीमी आवाज़ में) सरकार, इस गपोड़ा नन्द की कृपा से मेरी यह गति हुई है. इसने मेरी असली सूरत छिपा दी, भोले लोगों को धर्म शास्त्रों के उलटे अर्थ बताये, मेरे नाम पर न जाने कितने ढकोसले खड़े किये, इसने खुद कभी मुझे अच्छी तरह समझने का जतन नहीं किया और दूसरों को भी मेरा गलत अर्थ बताया. धर्म-भूमि भारत पर जहां राम, कृश्न, बुद्ध और महावीर ने मेरी शिक्षा दी, अहिन्सा और प्रेम का पाठ पढ़ाया वहां

نیچے مسی لگاکر کالے کئے ہوئے دانت ناک سونگھنی سے بھری ہوئی اور سونگھنی کی ڈبیا دھوتی میں کھونسی ہوئی ۔ کھوپڑی صفا چٹ' لمبی چوٹی میں بیل پتر گونتھے ہوئے' پیٹھ پر پاپوں کا بوجھ' کندھوں پر دھرم شاستر کی کتابیں لدی ہوئی اور دم پھولا ہوا ۔ جلدی جلدی چلنے سے دھوتی کی گانٹھ کھلنے لگتی ہے' اُسے سنبھالنے لگتا ہے تو کندھے سے کتابیں گر پڑتی ہیں ۔ دھرم راج کے آگے آکر سنبھل کر کھڑا ہوکر دھرم راج کو پرنام کرتا ہے ۔]

گپوڑانند—میرا نام شری مان پنڈت گپوڑانند شاستری' ویاکرنا چاریہ' مہامہوپادھیائے' کتھا واچک' جیوتش مارتنڈ' کاویہ تیرتھ..........

چترگپت—چپ رہو ۔

گپوڑا نند—(دھرم راج سے) دیکھو سرکار' کائستھ ہوکر کلین براہمن کو ڈانٹتا ہے ۔

دھرم راج—جو بات پوچھی جائے اُس کا جواب دو ۔

گپوڑا نند—پوچھو مہاراج ! بار بار پوچھو ۔ دھرم شاستر سمبندھی پوچھو' جیوتش سمبندھی پوچھو' بھاگیہ کا حال پوچھو' ویاکرن کے سوتر پوچھو' نیائے کی گتھیوں کو سلجھانے کا حل پوچھو' مجھے کیا نہیں آتا ۔ میں پنڈت ہوں ۔ چاروں دھام پر سے ہیں ۔ نتیہ گنگا اسنان کرتا ہوں ۔ شاستراتھ میں مجھے کسی نے جیتا نہیں ۔ میں سورگ کا پورا ادھیکاری ہوں ۔

دھرم راج—(گپوڑا نند سے) بہت مت بولو ۔ جو بات پوچھی جائے اُسی کا جواب دو ۔

گپوڑا نند—جو آگیا مہا راج !

[دھرم کچھ کہنے کے لئے اُٹھنا چاہتا ہے' پر کمزور ہونے کے کارن اُٹھ نہیں سکتا ۔ دیو دوت اُس کی مدد کرتے ہیں ۔]

دھرم راج—(دھرم سے) کیوں بابا جی' آپ بھی کچھ کہنا چاہتے ہیں ؟

دھرم—ہاں مہاراج ۔

دھرم—اٹھنے کی ضرورت نہیں۔ جو کہنا ہو بیٹھے بیٹھے ہی کہئے ۔

دھرم—(بہت دھیمی آواز میں) سرکار' اِس گپوڑا نند کی کرپا سے میری گت ہوئی ہے' اِس نے میری اصلی صورت چھپادی' بھولے لوگوں کو دھرم شاستروں کے اُلٹے ارتھ بتائے' میرے نام پر نہ جانے کتنے ڈھکوسلے کھڑے کئے' اِس نے خود کبھی مجھے اچھی طرح سمجھنے کا جتن نہیں کیا اور دوسروں کو بھی میرا غلط ارتھ بتایا ۔ دھرم بھومی بھارت پر جہاں رام' کرشن' بدھ اور مہاویر نے میری شکشا دی' اہنسا اور پریم کا پاٹھ پڑھایا وہاں

ज पढ़ना भूल जाता है और उनकी तरफ देख कर ा है) क्या मैं झूट कहता हूं ?

धर्मराज—बस ? कह चुके ?

कर्म विपाकी—नहीं महाराज ! (गुस्सा पीकर फिर ज पढ़ता है) इसने कभी भोग नहीं लगवाया, कभी नारायन की कथा नहीं कराई, कभी पीर फ़क़ीरों नयाज़ नहीं कराई, बाप का श्राद्ध कराने में टाल मटोल ा रहा, माता का प्रसाद बलवाने में हीले बहाने करता और तीर्थ यात्रा के लिये तो पैसे होने पर भी नहीं ता.........

(अब तो दरबारियों की हँसी रोके नहीं रुकती. देवियाँ ा हँसते लोट पोट हो जाती हैं. चोबदार "शान्ति, त" की आवाज़ लगाते हैं.)

धर्म राज—और कोई अपराध ?

कर्म विपाकी—इसने अपने ससुर के साले की भतीजी ाह में दहेज नहीं देने दिया.

धर्म राज—कुछ और ?

कर्म विपाकी—धर्म शास्त्रों वेद और क़ुरान का हुक्म ; इसे.....

धर्म राज—तुम्हें हुक्म सुनाने का अधिकार नहीं. इसके में कुछ कहना हो तो कहो.

कर्मविपाकी—कहना तो बहुत कुछ है महाराज ! पर कहूँ. इसने संसार में कोई भी तो अच्छा काम किया . जो बातें मैंने कही हैं वह संसार के सब से पुराने, सनातन धर्म में अधर्म समझी गई हैं, मुसलमान उसे ब के ख़िलाफ़ कहते हैं, सिक्खों का धर्म ग्रंथ भी पाप कहता है. आप अकेले मेरी बात पर विश्वास करते हों तो पंडित गपोड़ानन्द जी शास्त्री, मौलाना ाबयान और भाई घमंडा सिंह ज्ञानी से भी गवाही . वह ज़रूर मेरी बातों का पूरा पूरा समर्थन करेंगे.

चित्रगुप्त—(धर्म राज से) महाराज ! गपोड़ानन्द त अपने यजमान के श्राद्ध में बहुत खा जाने के कारन में मर कर आज ही आया है.

धर्म राज—पेश करो.

चोबदार—(चित्रगुप्त का इशारा पाकर ज़ोर से चिल्लाता कोई गपोड़ानन्द हाज़िर है. गपोड़ा नन्द हाज़िर है ?

परदे के पीछे से आवाज़ आती है—उपस्थितम्. आय ्, जो है सो......हाज़िर है......हाज़िर.

[गपोड़ानन्द आता है. लाल किनारे की मैली धोती ा तोंद पर लटक रहा है. रामनामी अंगोछा कंधों पर . माथे पर साइन बोर्ड की तरह टीका. मोटे होठों के

مثل پڑھنا بھول جاتا ہے اور اُنکی طرف دیکھکر کہتا ہے) کیا میں جھوٹ کہتا ہوں ؟

دھرم راج—بس ؟ کہ چکے ؟

کرم وپاکی—نہیں مہاراج ! (غصہ پی کر پھر مثل پڑھتا ہے) اِسنے کبھی بھوگ نہیں لگوایا' کبھی ستیہ نارائن کی کتھا نہیں کروائی' کبھی پیر فقیروں کی نیاز نہیں کرائی' باپ کا شرادھ کرانے میں ٹال مٹول کرتا رہا' ماتا کا پرساد بلوانے میں حیلے بہانے کرتا رہا اور تیرتھ یاترا کے لئے تو پیسے ہونے پر بھی نہیں نکلا.........

(اب تو درباریوں کی ہنسی روکے نہیں رکتی. دیویاں ہنستے ہنستے لوٹ پوٹ ہو جاتی ہیں . چوبدار ''شانتی' شانتی" کی آواز لگاتے ہیں .)

دھرم راج—اور کوئی اپرادھ ؟

کرم وپاکی—اِس نے اپنے سسور کے سالے کی بھتیجی کے بیاہ میں دہیز نہیں دینے دیا .

دھرم راج—کچھ اور ؟

کرم وپاکی—دھرم شاستروں' وید اور قرآن کا حکم ہے کہ اِسے............

دھرم راج—تمہیں حکم سنانے کا ادھیکار نہیں . اِسکے بارے میں کچھ کہنا ہو تو کہو .

کرم وپاکی—کہنا تو بہت کچھ ہے مہاراج ! پر کیا کہوں . اِسنے سنسار میں کوئی بھی تو اچھا کام کیا ہوتا. جو باتیں میں نے کہی ہیں وہ سنسار کے سب سے پرانے' بوڑھے سناتن دھرم میں ادھرم سمجھی گئی ہیں' مسلمان اُسے مذھب کے خلاف کہتے ہیں' سکھوں کا دھرم گرنتھ بھی انہیں پاپ کہتا ہے . آپ اکیلے میری بات پر وشواس نہ کرتے ہوں تو پنڈت گپوڑانند جی شاستری' مولانا دروغ بیان اور بھائی گھمنڈا سنگھ گیانی سے بھی گواھی لے لیں . وہ ضرور میری باتوں کا پورا پورا سمرتھن کرینگے .

چترگپت—(دھرم راج سے) مہاراج ! گپوڑانند پنڈت اپنے یجمان کے شرادھ میں بہت کھا جانے کے کارن ہیضے میں مر کر آج ہی آیا ہے .

دھرم راج—پیش کرو .

چوبدار—(چترگپت کا اِشارہ پاکر زور سے چلاتا ہے) کوئی گپوڑا نند حاضر ہے . گپوڑا نند حاضر ہے ؟

پردے کے پیچھے سے آواز آتی ہے—اُپستھتم' آ رہے ہیں' جو ہے سو......حاضر ہیں......حاضر .

[گپوڑا نند آتا ہے . لال کنارے کی میلی دھوتی موٹی توند پر لٹک رہی ہے . رام نامی انگوچھا کندھوں پر اور ماتھے پر سائن بورڈ کی طرح ٹیکا . موٹے ہونٹوں کے

करते थे वहां धर्म का भी व्योपार करने लगे थे. अपने अपने सम्प्रदाय के नाम पर वह विदेशी हाकिमों के सामने अधिकारों की भीक मांगने जाते थे और जब उन्हें कोई ख़िताब, कोई ओहदा या कोई सनद मिल जाती थी वह अपने सम्प्रदाय को भूल जाते थे और विदेशी राज की जड़ें मज़बूत करने में लग जाते थे. साधारन जनता रूढ़ियों और रस्म व रिवाज की ग़ुलाम बना दी गई थी क्योंकि धर्म के ठेकेदारों को असली धर्म के प्रचार में अपना घाटा दिखाई देता था. यही कारन था कि लोग गाय और बाजे के सवाल पर आपस में ख़ूब लड़ते थे और जिस दिल को भगवान का घर बताया गया है उसमें छुरा भोंक कर अपने को धर्म का रक्षक या ग़ाज़ी समझते थे. ऐसे समय सुधारक का जन्म हुआ.

इसने राजकाजी ग़ुलामी और समाजी रूढ़ियों और रस्म व रिवाज के ख़िलाफ़ विद्रोह खड़ा किया. दुनिया ने उसकी आवाज़ पर कान दिये और अपना सुधार शुरू किया पर विरोधियों में हलचल मच गई. इसको गालियां दी गईं, ईंट पत्थर मारे गये और जेल की सज़ा दी गई. हिन्दुओं ने इसे नास्तिक, मुसलमानों ने काफ़िर और सिक्खों ने पतित कहकर दुतकारा.

धर्म राज—अच्छा,........ठहरो. (कर्म विपाकी से) तू कुछ कहना चाहता है ?

कर्म विपाकी—मुझे बहुत कुछ कहना है. (मिसिल लेकर पढ़ने लगता है) यह सुधारक महा पापी है. राजद्रोह के जुर्म में सज़ा काट चुका है, हिन्दू मुस्लिम दंगों को रोकने में लाठियाँ खा चुका है. कांगरेस आन्दोलन में गांधी के कहने पर इसने सरकार की नाफ़रमानी की. इसने नमक बनाया, इसने शराब की दूकान पर धरना दिया, यह.....

(दरबार के लोग हँस पड़ते हैं और कर्म विपाकी कुछ झेंप जाता है.)

धर्म राज—आगे पढ़ो.

कर्म विपाकी—इसने अपने जीवन में कोई धर्म का काम नहीं किया. यह लोगों को सदियों से चलती हुई रूढ़ियों को त्याग ने की राय देता रहा. इसने अछूतों को ब्राह्मनों के बराबर बिठाना चाहा, इसने स्त्रियों को पुरुशों की बराबरी के लिये बहकाया, इसने हिन्दुओं मुसलमानों को अपने धर्म का भेद भाव छोड़ कर आपस में सगे भाई बनने की शिक्षा दी, इसने विधवा विवाह का प्रचार किया, इसने बाल विवाह का विरोध किया, यही नहीं, इसने ब्राह्मनों और अछूतों में विवाह कराया और हिन्दू मुसलमानों में भी शादी ब्याह को अच्छा बताया......(दरबार के लोगों के चेहरों पर मुस्कराहट देख कर वह ग़ुस्से में

کرتے تھے وہاں دھرم کا بھی بیوپار کرنے لگے تھے. اپنے اپنے سمپردائے کے نام پر وہ بدیشی حاکموں کے سامنے ادھیکاروں کی بھیک مانگنے جاتے تھے اور جب انہوں کوئی خطاب' کوئی عہدہ یا کوئی سند مل جاتی تھی' تو وہ اپنے سمپردائے کو بھول جاتے تھے اور بدیشی راج کی جڑیں مضبوط کرنے میں لگ جاتے تھے. سادھارن جنتا روڑھیوں اور رسم رواج کی غلام بنا دی گئی تھی کیونکہ دھرم کے ٹھیکیداروں کو اصلی دھرم کے پرچار میں اپنا گھاٹا دکھائی دیتا تھا. یہی کارن تھا کہ لوگ گائے اور باجے کے سوال پر آپس میں خوب لڑتے تھے اور جس دل کو بھگوان کا گھر بتایا گیا ہے اس میں چھرا بھونک کر اپنے کو دھرم کا رکشک یا غازی سمجھتے تھے. ایسے سمے سدھارک کا جنم ہوا.

اِسنے راج کاجی غلامی اور سماجی روڑھیوں اور رسم و رواج کے خلاف ودروہ کھڑا کیا. دنیا نے اِسکی آواز پر کان دیئے اور اپنا سدھار شروع کیا پر ورودھیوں میں ہلچل مچ گئی. اِسکو گالیاں دی گئیں' اینٹ پتھر مارے گئے اور جیل کی سزا دی گئی. ہندوؤں نے اِسے ناستک' مسلمانوں نے کافر اور سکھوں نے پتت کہکر دتکارا.

دھرم راج—اچھا'......ٹھہرو. (کرم وپاکی سے) تو کچھ کہنا چاہتا ہے؟

کرم وپاکی—مجھے بہت کچھ کہنا ہے. (مثل لیکر پڑھنے لگتا ہے) یہ سدھارک مہا پاپی ہے. راج دروہ کے جرم میں سزا کاٹ چکا ہے. ہندو مسلم دنگوں کو روکنے میں لاٹھیاں کھا چکا ہے. کانگریس آندولن میں گاندھی کے کہنے پر اِس نے سرکار کی نافرمانی کی. اِسنے نمک بنایا' اِسنے شراب کی دوکان پر دھرنا دیا' یہ........

(دربار کے لوگ ہنس پڑتے ہیں اور کرم وپاکی کچھ جھینپ جاتا ہے.)

دھرم راج—آگے پڑھو.

کرم وپاکی—اِسنے اپنے جیون میں کوئی دھرم کا کام نہیں کیا. یہ لوگوں کو صدیوں سے چلتی ہوئی روڑھیوں کو تیاگنے کی رائے دیتا رہا. اِسنے اچھوتوں کو براہمنوں کے برابر بٹھانا چاہا' اِسنے استریوں کو پرشوں کی برابری کے لئے بہکایا' اِسنے ہندوؤں اور مسلمانوں کو اپنے دھرم کا بھید بھاو چھوڑ کر آپس میں سگے بھائی بننے کی شکشا دی' اِسنے ودھوا وواہ کا پرچار کیا' اِسنے بال وواہ کا ورودھ کیا' یہی نہیں' اسنے براہمنوں اور اچھوتوں میں وواہ کرایا اور ہندو مسلمانوں میں بھی شادی بیاہ کو اچھا بتایا...... (دربار کے لوگوں کے چہروں پر مسکراہٹ دیکھکر وہ غصے میں

गह—एक सुन्दर सुहावना मैदान. ठंडी मस्ती भरी हवा चल रही है. पंछी मीठे सुरों में चह चहा रहे हैं. कुछ दूर पर बड़ा सुहावना हरा भरा पहाड़, जिस पर रंग बिरंगे फूल खिल रहे हैं और झरना बह रहा है.

सीन 1

[एक सुन्दर सिंहासन पर धर्म राज पूरी शान के साथ े हैं. उनके दाहिने बायें न्याय और दंड खड़े हैं. एक फ़ तीनों देवताओं की मंडली (जूरी) बैठी है. सामने दूरी पर चित्रगुप्त, कर्म विपाकी, मुँशी मुसद्दी बही तों का ढेर लगाये बैठे हैं.]

चित्रगुप्त—(चोबदार से) सुधारक को पेश करो.

चोबदार—(सर झुकाकर) जो आज्ञा. (फिर ज़ोर से) ो कोई सुधारक हाज़िर है—सुधारक हाज़िर है !

[खद्दर का चूड़ीदार पाजामा, खद्दर की अचकन, र की टोपी और गले में खद्दर का गुलूबन्द लटकाये, ज़ आंखें, माथे पर निडरता की झलक लिये एक अधेड़ आदमी आता है. उसके चेहरे पर काम और चिन्ता कारण झुर्रियां पड़ी हुई हैं. उसकी पीठ पर समाजी नों, विधवाओं की मुसीबतों, किसानों मज़दूरों की ीबी, अनपढ़ों और धर्म के ठेकेदारों की जहालत की रियां लदी हुई हैं. बड़ी धीर गंभीर चाल से चलता हुआ र्म राज के पास आकर खड़ा हो जाता है.]

धर्मराज—(चित्रगुप्त से) सुधारक की मिसल पढ़ सुनाओ.

चित्रगुप्त—(मिसिल उठाकर पढ़ता है) यह उस य भारत में पैदा हुआ था जब देश राजकाजी ग़ुलामी, त पात और छुआ छूत के बंधनों में जकड़ा हुआ था. ीवाद का बोल बाला था. ग़रीब का ख़ून अमीर के ीने से भी सस्ता था. धर्म के नाम पर ज़ुल्म और त्याचार होते थे, धर्म को अपना निजी रोज़गार बनाने े कितने ही ठेकेदार थे जिनमें पंडित, मौलवी और नी सब से आगे थे. दिन रात मेहनत करने वाले मज़दूर े मरते थे और मिल मालिकों के कुत्ते दूध पीते थे और लीनों पर सोते थे. एक तरफ़ धर्म मज़हब के ठेकेदारों लड़के अलीगढ़, बनारस, अमृतसर और कितने ही लायत जाकर पढ़ने के नाम पर ऐश करते थे और दूसरी फ़ मज़दूरों के लड़के धरती पर नंगे फिरते और धूल कते थे. एक तरफ़ अमीर को ज़रा सी छींक आजाती थी डाक्टरों की फ़ौज इकट्ठा हो जाती थी और दूसरी तरफ़ ीब एड़ियां रगड़ रगड़ कर मर जाते थे पर उन्हें दवा ीं मिलती थी. पैसे वाले जहां और चीज़ों का व्योपार

جگہ—ایک سندر سہاونا میدان ۔ ٹھنڈی مستی بھری ہوا چل رہی ہے ۔ پنچھی میٹھے سروں میں چہچہا رہے ہیں ۔ کچھ دور پر بڑا سہانا ہرا بھرا پہاڑ، جس پر رنگ برنگے پھول کھل رہے ہیں اور جھرنا بہہ رہا ہے ۔

سین 1

[ایک سندر سنگھاسن پر دھرم راج پوری شان کے ساتھ بیٹھے ہیں ۔ اُن کے داہنے بائیں نیائے اور دنڈ کھڑے ہیں ۔ ایک طرف تینوں دیوتاؤں کی منڈلی (جوری) بیٹھی ہے ۔ سامنے کچھ دوری پر چترگپت، کرم وپاکی، منشی مصدی بہی کھاتوں کا ڈھیر لگائے بیٹھے ہیں ۔]

چترگپت—(چوبدار سے) سدھارک کو پیش کرو ۔

چوبدار—(سر جھکا کر) جو آگیا ۔ (پھر زور سے) چلو کوئی سدھارک حاضر ہے—سدھارک حاضر ہے !

[کھدر کا چوڑی دار پاجامہ، کھدر کی اچکن، کھدر کی ٹوپی اور گلے میں کھدر کا گلوبند لٹکائے، تیز آنکھیں، ماتھے پر نڈرتا کی جھلک لئے ایک ادھیڑ سا آدمی آتا ہے ۔ اُسکے چہرے پر کام اور چنتا کے کارن جھریاں پڑی ہوئی ہیں ۔ اُسکی پیٹھ پر سماجی بندھنوں، ودھواؤں کی مصیبتوں، کسانوں مزدوروں کی غریبی، ان پڑھوں اور دھرم کے ٹھیکیداروں کی جہالت کی گٹھڑیاں لدی ہوئی ہیں ۔ بڑی دھیر گمبھیر چال سے چلتا ہوا دھرم راج کے پاس آکر کھڑا ہوجاتا ہے ۔]

دھرم راج—(چترگپت سے) سدھارک کی مثل پڑھکر سناؤ ۔

چترگپت—(مثل اُٹھاکر پڑھتا ہے) یہ اُس سمے بھارت میں پیدا ہوا تھا جب دیش راج کاجی غلامی، جات پات اور چھوا چھوت کے بندھنوں میں جکڑا ہوا تھا ۔ پونجی واد کا بول بالا تھا ۔ غریب کا خون امیر کے پسینے سے بھی سستا تھا ۔ دھرم کے نام پر ظلم اور اتیاچار ہوتے تھے ۔ دھرم کو اپنا نجی روزگار بنانے والے کتنے ہی ٹھیکیدار تھے جنمیں پنڈت، مولوی اور گیانی سب سے آگے تھے ۔ دن رات محنت کرنے والے مزدور بھوکے مرتے تھے اور مل مالکوں کے کتے دودھ پیتے تھے اور قالینوں پر سوتے تھے ۔ ایک طرف دھرم مذہب کے ٹھیکیداروں کے لڑکے علیگڑھ، بنارس، امرتسر اور کتنے ولایت جاکر پڑھنے کے نام پر عیش کرتے تھے اور دوسری طرف مزدوروں کے لڑکے دھرتی پر ننگے پھرتے اور دھول پھانکتے تھے ۔ ایک طرف امیر کو ذراسی چھینک آجاتی تھی تو ڈاکٹروں کی فوج اکٹھا ہوجاتی تھی اور دوسری طرف غریب ایڑیاں رگڑ رگڑ کر مر جاتے تھے پر اُنہیں دوا نہیں ملتی تھی ۔ پیسے والے جہاں اور چیزوں کا بیوپار

वीत-मीन सरकार रेडियो के एलान काफ़ी बड़ी तादाद में लोग सुनते हैं और ख़ूब ध्यान से सुनते हैं. फ़्रांसीसी कड़ा पहरा रखते हैं मगर लोग नहीं मानते क्यों कि वह जानते हैं कि उन्हें सही ख़बरें उसी रेडियो से मिल सकती हैं. हो-ची-मीन्ह को भी लोग बहुत शौक़ से सुनते हैं. वैसे भी, हो-ची-मीन्ह एक निहायत क़ाबिल और होशियार स्पीकर हैं. उनकी स्पीचों का जनता पर ज़बरदस्त असर पड़ता है.

एक अमरीकन अख़बार नवीस का ख़याल है कि कोई ताज्जुब की बात नहीं कि बाओ-दाई की कुछ रानियां हो-ची मीन्ह के वास्ते ख़ुफ़िया का काम करती हों. उनका कहना है कि बाओ-दाई की रानियों और कुटुम्ब में वोट लिया जाय तो बाओ-दाई से ज़ियादा वोट हो-ची-मीन्ह को ही मिलेंगे.

सचमुच हो-ची-मिन्ह इन्डोचीन का असली शासक है जो फ़्रांसीसियों के पैर कभी नहीं जमने देगा.

ویت نام سرکار کے ریڈیو اعلان کافی بڑی تعداد میں لوگ سنتے ہیں اور خوب دھیان سے سنتے ہیں. فرانسیسی کڑا پہرا رکھتے ہیں مگر لوگ نہیں مانتے کیونکہ وہ جانتے ہیں کہ انہیں صحیح خبریں اسی ریڈیو سے مل سکتی ہیں. ہوچی منہہ کو بھی لوگ بہت شوق سے سنتے ہیں. ویسے بھی' ہوچی منہہ ایک نہایت قابل اور ہوشیار اسپیکر ہیں. ان کی اسپیچوں کا جنتا پر زبردست اثر پڑتا ہے.

ایک امریکن اخبار نویس کا خیال ہے کہ کوئی تعجب کی بات نہیں کہ باؤ دائی کی کچھ رانیاں ہوچی منہہ کے واسطے خفیہ کا کام کرتی ہوں. اُن کا کہنا ہے کہ باؤ دائی کی رانیوں اور کٹمب میں ووٹ لیا جائے تو باؤ دائی سے زیادہ ووٹ ہوچی منہہ کو ہی ملیںگے.

سچ مچ ہوچی منہہ انڈوچین کا اصلی شاسک ہے جو فرانسیسیوں کے پیر کبھی نہیں جمنے دیگا.

एकांकी नाटक

सुधारक

(सन्त इन्द्रसिंह चक्रवर्ती)

पात्र

धर्मराज	देवलोक का जज
चित्रगुप्त	धर्मराज का पेशकार
ब्रह्मा, विश्नु, शिव	देवता जूरी
कर्म विपाकी	धर्मराज का कार्य लेखक क्लर्क
धर्म	एक बूढ़ा सा चलने फिरने से लाचार मनुश्य
सुधारक	एक समाज सुधारक की आत्मा
पंडित गपोड़ा नन्द शास्त्री	धर्म के ठेकेदार
मौलवी दरोग़ बयान	धर्म के ठेकेदार
भाई घमंडा सिंह	धर्म के ठेकेदार

चोबदार, देवता देवियां, तमाशाई वग़ैरा.

समय—न दिन न रात. कुछ पौ फटने का सा.

ایکانکی ناٹک

سدھارک

(سنت اندر سنگھ چکرورتی)

پاتر

دھرم راج	دیو لوک کا جج
چتر گپت	دھرم راج کا پیشکار
برھما' وشنو' شیو	دیوتا جوری
کرم وپاکی	دھرم راج کا کاریہ لیکھک کلرک
دھرم	ایک بوڑھا سا چلنے پھرنے سے لاچار منشیہ
سدھارک	ایک سماج سدھارک کی آتما
پنڈت گپوڑا نند شاستری	دھرم کے ٹھیکےدار
مولوی دروغ بیان	دھرم کے ٹھیکےدار
بھائی گھمنڈا سنگھ	دھرم کے ٹھیکےدار

چوبدار' دیوتا دیویاں' تماشائی وغیرہ.

سمے—نہ دن نہ رات. کچھ پَوپھٹنے کا سا.

त में ही रहते थे. जब उनसे इस ज़ियादती का कहा गया । तो उन्होंने बस इतना किया कि अपनी राजधानी स से हटा कर हू में ले गये.

हो-ची-मीन्ह सरकार का ज़ोर.

हो-ची-मीन्ह और उनके साथियों ने इन तीनों कठ० ती सरकारों को मानने से हमेशा इन्कार किया था. ा कहना है कि 6 जनवरी 1946 को ही सारी जनता ाज़ाद प्रजा तंत्र क़ायम कर लिया था जिसके बाज़ाबता ् हो-ची-मिन्ह ही हैं. वह लोग कहते हैं कि फ़्रांसीसियों न्डोचीन में कहीं जगह नहीं है. फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े स वक़्त लौस और कम्बोडिया का काफ़ी हिस्सा है ् वीतनाम का दक्खनी हिस्सा भी जिसमें सैगोन ् हनोई के शहर हैं. लेकिन उत्तर का ज़ियादातर इलाक़ा ी-मीन्ह के पूरे क़ाबू में है. जिन इलाक़ों में फ़्रांसीसी र है उनकी बाबत भी यही कहा जाता है कि वहां पर ो-दाई दिन में राज करते हैं और हो-ची-मीन्ह रात में. को सब चौराहों पर सन्नाटा छाया रहता है. दिन भर के मारे फ़्रांसीसी सिपाही आराम करने चले जाते हैं.

हो-ची-मीन्ह की सरकार टैक्स अपने इलाक़े के लोगों ़लावा फ़्रांसीसी इलाक़े की जनता से भी वसूल कर है. कई महीने तक फ़्रांसीसियों को चावल का बाहर ना बन्द कर देना पड़ा क्योंकि जो चावल वह देहात ़मा करते थे वह जब सड़कों या दरियाओं पर से लाया । तो रास्ते में हो-ची-मीन्ह के आदमी ग़ायब कर देते कहा जाता है कि हो-ची-मीन्ह को अपने हिस्से का ़ अब भी मिल रही है. लेकिन इस सब की वजह से ानों की तकलीफ़ बहुत बढ़ गई है क्योंकि उन्हें अपनी ़ का ठीक दाम नहीं मिल पाता. सैगोन और हनोई के शहरों में हो-ची-मीन्ह के लोग आज़ादी के साथ— न लुके-छिपे तमाम व्योपारियों, आढ़तियों वग़ैरा से ़ वसूल करते हैं, यहां तक कि फ़्रांसीसियों से भी. देते इस वजह से हैं कि उनकी जान बची रहे और आफ़त में न फंसना पड़े. एक दिन का ज़िकर है मैं न में कुछ दोस्तों के साथ एक होटल में बाहर बैठकर -पानी कर रहा था. यह वाक़या उसके दूसरे दिन का व सैगोन में गोले फेंके गये थे. उस होटल का मालिक ख़ासा बड़ा व्योपारी और मालदार व असरदार ासी था. मैंने अपने एक दोस्त से—जो अरसे से होटल में रह रहा था—पूछा कि क्या कल रात के े के बाद इस जगह पर रहने में कोई ख़तरा तो नहीं सने मुस्करा कर जवाब दिया—"यह होटल तो बाओ- के महल से भी ज़ियादा सुरक्षित है. यहां का मालिक ी-मीन्ह के आदमियों को पैसा देने में कभी नहीं ़ है और इसलिये यहां कभी कोई वाक़या नहीं हुआ."

دلات میں ہی رہتےتھے ۔ جب اُن سے اِس زیادتی کا کہا گیا تو اُنہوں نے بس اتنا کہا کہ اپنی راجدھانی دلات سے ھٹاکر ھو میں لے گئے۔

ہوچی منہہ سرکار کا زور۔

ہوچی منہہ اور اِن کے ساتھیوں نے ان تینوں کٹ پتلی سرکاروں کو ماننے سے ہمیشہ انکار کیا تھا ۔ اُن کا کہنا ہے کہ 6 جنوری 1946 کو ہی ساری جنتا نے آزاد پرجا تنتر قائم کر لیا تھا جس کےباضابطہ صدر ہوچی منہہ ہی ہیں وہ لوگ کہتے ہیں کہ فرانسیسیوں کی انڈو چین میں کہیں جگہ نہیں ہے ۔ فرانسیسیوں کے قبضے میں اس وقت لوس اور کمبوڈیا کا کافی حصہ ہے اور ویت نام کا دکھنی حصہ بھی جس میں سیگون اور ہنوئی کے شہر ہیں۔ لیکن اُتر کا زیادہ تر علاقہ ہوچی منہہ کے پورے قابو میں ہے ۔ جن علاقوں میں فرانسیسی اثر ہے اُن کی بابت بھی یہی کہا جاتا ہے کہ وہاں پر باؤ دائی دن میں راج کرتے ہیں اور ہوچی منہہ رات میں ۔ رات کو سب چوراہوں پر سناٹا چھایا رہتا ہے ۔ دن بھر کے تھکے ماندے فرانسیسی سپاہی آرام کرنے چلے جاتے ہیں ۔

ہوچی منہہ کی سرکار ٹیکس اپنے علاقے کے لوگوں کے علاوہ فرانسیسی علاقے کی جنتا سے بھی وصول کر لیتی ہے ۔ کئی مہینے تک فرانسیسیوں کو چاول کا باہر بھیجنا بند کر دینا پڑا کیونکہ جو چاول وہ دیہات میں جمع کرتے تھے وہ جب سڑکوں یا دریاوں پر سے لایا جاتا تو راستے میں ہوچی منہہ کے آدمی غائب کر دیتے تھے ۔ کہا جاتا ہے کہ ہوچی منہہ کو اپنے حصے کی کاشت اب بھی مل رہی ہے ۔ لیکن اس سب کی وجہ سے کسانوں کی تکلیف بہت بڑھ گئی ہے کیونکہ انہیں اپنی چیز کا ٹھیک دام نہیں مل پاتا ۔ سیگون اور ہنوئی تک کے شہروں میں ہوچی منہہ کے لوگ آزادی کے ساتھ—لیکن لکے چھپے— تمام بیوپاریوں، آڑھتیوں وغیرہ سے ٹیکس وصول کرتے ہیں، یہاں تک کہ فرانسیسیوں سے بھی۔ لوگ دیتے اس وجہ سے ہیں کہ اُن کی جان بچی رہے اور اُنہیں آفت میں نہ پھنسنا پڑے ۔ ایک دن کا ذکر ہے میں سیگون میں کچھ دوستوں کے ساتھ ایک ہوٹل میں باہر بیٹھکر چائے پانی کر رہا تھا۔ یہ واقعہ اُس کے دوسرے دن کا ہے جب سیگون میں گولے پھینکے گئے تھے۔ اُس ہوٹل کا مالک ایک خاصہ بیوپاری اور مالدار و اثردار فرانسیسی تھا۔ میں نے اپنے ایک دوست سے—جو عرصے سے اُس ہوٹل میں رہ رہا تھا—پوچھا کہ کیا کل رات کے واقعے کے بعد اس جگہ پر رہنے میں کوئی خطرہ تو نہیں ہے ۔ اُس نے مسکرا کر جواب دیا— " یہ ہوٹل تو باؤ دائی کے محل سے بھی زیادہ سرکشت ہے ۔ یہاں کا مالک ہوچی منہہ کے آدمیوں کو پیسہ دینے میں کبھی نہیں چوکتا ہے اور اس لئے یہاں کبھی کوئی واقعہ نہیں ہوا ۔"

थे. पुलिस और फ़ौज काफ़ी तादाद में मौजूद थी. लेकिन उन सबके बीच में नौ बरस का एक लड़का आ घुसा जिसने मंच पर पहुंच कर अपनी जेब से बारूद का एक गोला निकाला. लेकिन उसके फेंकने के पहले ही वह गोला फट पड़ा. जिससे वह लड़का उसी ठौर मर गया और पास में खड़े हुए दो गवर्नर भी मर गये और पंद्रह-बीस आदमी बुरी तरह घायल हुए.

हर कोई जानता है कि जापानी सुलहनामा के सिलसिले में सैन फ्रांसिस्को में एक कान्फ्रेंस हुई थी. उसमें वीत नाम की तरफ़ से वहां के प्रधान-मंत्री, त्रानवान-हू और वीत नाम, कम्बोडिया और लौस के कई मिनिस्टरों ने जा कर शिरकत की. जिस वक़्त यह लोग जा रहे थे मैं सैगोन में ही था. मैंने देखा कि वीत नाम, कम्बोडिया और लौस की इस शिरकत का ज़बरदस्त प्रोपेगेन्डा वहां के अख़बारों में किया गया और जनता को बताया गया कि फ्रांस तो फ्रांस, दुनिया के सारे देश इन तीनों हकूमतों का इक़रार करते हैं.

गुरीला हमले.

सैन फ्रांसिस्को जाने वाले डेलीगेशन को बड़े ठाट बाट और सज धज के साथ विदा दी गई. लेकिन उनके जाने के चौबीस घंटों के ही भीतर हो-ची-मीन्ह के साथियों ने उन जगहों पर बम व गोले फेंके जिनमें फ्रांसीसी अफ़सर और सिपाही अकसर रहा करते थे. इस तरह करने से चौदह आदमी मरे और कोई पचीस-तीस घायल हुए. लेकिन इसके बाद फ्रांसीसी फ़ौज और पुलिस सारे शहर में छा गई और दो-तीन दिन तक बदला लेती रही. मैं रात भर अपने होटल के कमरे में बन्दूक छूटने की आवाज़ें सुनता रहा. मेरे एक दोस्त ने बताया कि अकसर गोले तो डराने धमकाने को छोड़ दिये जाते हैं. एक दूसरे दोस्त ने बताया कि सुबह को कई लाशें पड़ी पाई गईं जिनकी पीठ में बन्दूक के निशानों की अलामत मौजूद थी.

इस तरह हो-ची-मीन्ह के लोग फ्रांसीसियों का मुक़ाबला करते और बदले में फ्रांसीसी भी तगड़ी मार लगाते थे. थोड़े दिन हुए दलात नाम की एक पहाड़ी जगह में एक घटना हो गई. वहां के मुक़ामी लोगों ने एक फ्रांसीसी पुलिस अफ़सर को मार डाला. पुलिस ने मुजरिमों को पकड़ने की कोशिश की मगर नाकामयाब रही. नाउम्मीद हो कर उसने बदले की एक नई सूरत निकाली. वह यह कि उन्होंने वहाँ की जेल की तलाशी ली जिसमें हो-ची-मीन्ह के कई साथी नज़रबन्द थे. बिना किसी सबूत के चौदह मर्द और छह औरतों पर यह इलज़ाम लगाया गया कि पुलिस अफ़सर इनकी साज़िश से मारा गया. उन्हें जेल के बाहर निकाला गया और गोली से मार दिया गया. उनके जिस्म के टुकड़े टुकड़े किये गये और वह टुकड़े सारे शहर में बिखरा दिये गये. उस वक़्त बाओ-दाई

تھے. پولیس اور فوج کافی تعداد میں موجود تھی . لیکن اُن سب کے بیچ میں نو برس کا ایک لڑکا آ گھسا جس نے منچ پر پہنچکر اپنی جیب سے بارود کا ایک گولہ نکالا . لیکن اس کے پھینکنے کے پہلے ہی وہ گولہ پھٹ پڑا . جس سے وہ لڑکا اُسی ٹھور مر گیا اور پاس میں کھڑے ہوئے دو گورنر بھی مر گئے اور پندرہ بیس آدمی بری طرح گھائل ہوئے .

ہر کوئی جانتا ہے کہ جاپانی صلحنامہ کے سلسلے میں سین فرانسسکو میں ایک کانفرنس ہوئی تھی . اُس میں ویت نام کی طرف سے وہاں کے پردھان منتری' ترانوان ہو اور ویت نام' کمبوڈیا اور لوس کے کئی منسٹروں نے جا کر شرکت کی . جس وقت یہ لوگ جا رہے تھے میں سیگون میں ہی تھا . میں نے دیکھا کہ ویت نام' کمبوڈیا اور لوس کی اِس شرکت کا زبردست پروپیگنڈا وہاں کے اخباروں میں کیا گیا اور جنتا کو بتایا گیا کہ فرانس تو فرانس' دنیا کے سارے دیش اِن تینوں حکومتوں کو اقرار کرتے ہیں .

گوریلا حملے .

سین فرانسسکو جانے والے ڈیلیگیشن کو بڑے ٹھاٹ باٹ اور سج دھج کے ساتھ وداع دی گئی لیکن ان کے جانے کے چوبیس گھنٹوں کے ہی بھیتر ہو . چی منہ کے ساتھیوں نے اُن جگہوں پر بم و گولے پھینکے جن میں فرانسیسی افسر اور سپاہی اکثر رہا کرتے تھے اِس طرح کرنے سے چودہ آدمی مرے اور کوئی پچیس تیس گھائل ہوئے . لیکن اس کے بعد فرانسیسی فوج اور پولیس سارے شہر میں چھا گئی اور دو تین دن تک بدلا لیتی رہی . میں رات بھر اپنے ہوٹل کے کمرے میں بندوق چھوٹنے کی آوازیں سنتا رہا. میرے ایک دوست نے بتایا کہ اکثر گولے تو ڈرانے دھمکانے کو چھوڑ دئے جاتے ہیں . ایک دوسرے دوست نے بتایا کہ صبح کو کئی لاشیں پڑی پائی گئی جن کی پیٹھ میں بندوق کے نشانوں کی علامت موجود تھی .

اس طرح ہو . چی . منہ کے لوگ فرانسیسیوں کا مقابلہ کرتے اور بدلے میں فرانسیسی بھی تگڑی مار لگاتے تھے . تھوڑے دن ہوئے دلات نام کی ایک پہاڑی جگہ میں ایک گھٹنا ہوگئی . وہاں کے مقامی لوگوں نے ایک فرانسیسی پولیس افسر کو مار ڈالا . پولیس نے مجرموں کو پکڑنے کی کوشش کی مگر ناکامیاب رہی . ناامید ہوکر اس نے بدلے کی ایک نئی صورت نکالی . وہ یہ کہ انہوں نے وہاں کی جیل کی تلاشی لی جس میں ہو . چی . منہ کے کئی ساتھی نظر بند تھے. بنا کسی ثبوت کے چودہ مرد اور چھ عورتوں پر یہ الزام لگایا گیا کہ پولیس افسر ان کی سازش سے مارا گیا . انہیں جیل کے باہر نکالا گیا اور گولی سے مار دیا گیا. اُن کے جسم کے ٹکڑے ٹکڑے کئے گئے اور وہ ٹکڑے سارے شہر میں چھترا دیئے گئے . اُس وقت باؤ دائی

की है जब हिन्दुस्तान में अंगरेज़ और इन्डोनीशिया में डच लोग अपना बोरिया बिस्तरा बांध रहे थे. लेकिन फ़्रांसीसियों ने उतनी समझ व अक़्ल से काम में लिया.

फ़्रांस में हो-ची-मीन्ह को छै माह तक बात चीत के झमेले में फंसाये रखा गया. कभी एक मसले पर बात होती कभी दूसरे पर. लेकिन इस बात चीत का भी कुछ नतीजा नहीं निकला. फ़ोंतैंब्लू नाम की जगह में जो बैठक हुई उसमें फ़्रांसीसियों ने नाम भर की आज़ादी से ज़ियादा कुछ भी देने से इन्कार किया. हो-ची-मीन्ह भी अपनी बात पर डटे रहे और मुकम्मिल आज़ादी से रत्ती भर कम चीज़ के लिये तैयार नहीं हुये.

इन्डोचीन का बंटवारा.

इस अरसे में इन्डो चीन में फ़्रांसीसी सिपाही मन माना करते रहे और उनकी भरसक यही कोशिश रही कि विरोधी ताक़तों को एकदम कुचल दें और फ़्रांसीसी राज के लिये हमेशा के वास्ते रास्ता साफ़ कर लें. हनोई और सैगोन के सूबों में उन्होंने अच्छी तरह अपना असर जमा लिया, लौस और कम्बोडिया के राजाओं को पटा लिया और उनसे वादा किया कि हम आप की पुरानी सल्तनतें फिर से चालू करा देंगे, और बाओ-दाई से भी समझौता कर लिया. इस वक़्त तक बाओ-दाई वैसे हो-ची-मीन्ह के सलाहकार और देश भक्त समझे जाते थे लेकिन उनकी आर्थिक हालत बहुत कुछ ख़राब हो चुकी थी जिस की वजह से फ़्रांस वालों ने उन्हें तोड़ लिया और फिर से सम्राट बना दिया. हो-ची-मीन्ह को अब ग़द्दार या देश द्रोही कहा जाने लगा था. फ़्रांसीसियों ने कम्बोडिया, लौस और वीतनाम से अलग अलग राज़ी नामे किये. इसका नतीजा यह हुआ कि जिस आज़ाद हकूमत का 1946 में हो-ची-मीन्ह ने एलान किया था उसके तीन टुकड़े हो गये जिन के अलग अलग राजा थे. इन राज़ी नामों में ऊपरी तौर से तो तीनों राजाओं को—फ़्रांस देश के साये में—आज़ाद माना गया. मगर फ़ौज, पुलिस और ख़ज़ाने पर फ़्रांस वालों का ही इख़्तियार था और यह सचमुच फ़्रांसीसी सलाहकारों के हाथ की कठपुतली बना दिये गये. इस नयी तबदीली का बड़ा ढिंढोरा पीटा गया, बड़े बड़े जशन मनाये गये जिन में यह दिखाया गया कि हर महकमा फ़्रांसीसियों के हाथ से निकल कर इन्डोचीन वालों के हाथ में आ रहा है. लेकिन इन सभी जशनों में या इनके बाद ही हो-ची-मीन्ह के साथियों ने अपनी ख़िलाफ़त का इज़हार किया और बताने की कोशिश की कि यह सब स्वांग है और दिखावे की टट्टी है.

इस तरह के एक जशन में फ़्रांसीसी गवर्नर ख़ुद मौजूद थे और वह वीत-नाम राज का चार्ज बाओ-दाई के एक नामज़द आदमी को देने की रस्म अदायगी करनी चाहते

کی ھے جب ھندستان میں انگریز اور انڈونیشیا میں ڈچ لوگ اپنا بوریا بستر باندھ رہے تھے. لیکن فرانسیسیوں نے اُتنی سمجھ و عقل سے کام نہیں لیا .

فرانس میں ھوچی منھ کو چھ ماہ تک بات چیت کے جھمیلے میں پھنسائے رکھا گیا . کبھی ایک مسلئے پر بات ھوتی کبھی دوسرے پر . لیکن اِس بات چیت کا بھی کچھ نتیجہ نہیں نکلا. فونتینبلو نام کی جگہ میں جو بیٹھک ھوئی اُس میں فرانسیسیوں نے نام بھر کی آزادی سے زیادہ کچھ بھی دینے سے انکار کیا . ھوچی منھ بھی اپنی بات پر ڈٹے رھے اور مکمل آزادی سے رتی بھر کم چیز کے لئے تیار نہیں ھوئے.

انڈو چین کا بٹوارہ .

اِس عرصے میں انڈوچین میں فرانسیسی سپاھی من مانا کرتے رھے اور اُن کی بھر سک یہی کوشش رھی کہ وِرودھی طاقتوں کو ایک دم کچل دیں اور فرانسیسی راج کے لئے ھمیشہ کے واسطے راستہ صاف کرلیں . ھنوئی اور سیگون کے صوبوں میں اُنھوں نے اچھی طرح اپنا اثر جما لیا' لوس اور کمبوڈیا کے راجاؤں کو پٹا لیا اور اُن سے وعدہ کیا کہ ھم آپ کی پرانی سلطنتیں پھر سے چالو کرا دیں گے' اور باؤ دائی سے بھی سمجھوتا کرلیا . اِس وقت تک باؤ دائی ویسے ھوچی منھ کے صلاح کار اور دیش بھکت سمجھے جاتے تھے لیکن ان کی آرتھک حالت بہت کچھ خراب ھوچکی تھی جس کی وجہ سے فرانس والوں نے اُنھیں توڑ لیا اور پھر سے سمراٹ بنا دیا . ھوچی منھ کو اب غدار یا دیش دروھی کہا جانے لگا تھا . فرانسیسیوں نے کمبوڈیا' لوس اور ویت نام سے الگ الگ راضی نامے کئے . اِس کا نتیجہ یہ ھوا کہ جس آزاد حکومت کا 1946 میں ھوچی منھ نے اعلان کیا تھا اُس کے تین ٹکڑے ھو گئے جن کے الگ الگ راجہ تھے . اِن راضی ناموں میں اوپری طور سے تو تینوں راجاؤں کو فرانس دیش کے سائے میں آزاد مانا گیا . مگر فوج' پولیس اور خزانے پر فرانس والوں کا ھی اختیار تھا اور یہ سچ مچ فرانسیسی صلاح کاروں کے ھاتھ کی کٹھپتلی بنا دئے گئے . اِس نئی تبدیلی کا بڑا ڈھنڈھورا پیٹا گیا' بڑے بڑے جشن منائے گئے جن میں یہ دکھایا گیا کہ ھر محکمہ فرانسیسیوں کے ھاتھ سے نکل کر انڈوچین والوں کے ھاتھ میں جا رھا ھے. لیکن اِن سبھی جشنوں میں یا اِن کے بعد ھی ھوچی منھ کے ساتھیوں نے اپنی خلافت کا اظہار کیا اور بتانے کی کوشش کی کہ یہ سب سوانگ اور دکھاوے کی ٹٹی ھے .

اِس طرح کے ایک جشن میں فرانسیسی گورنر خود موجود تھے اور وہ ویت راج کا چارج باؤ دائی کے ایک نامزد آدمی کو دینے کی رسم ادائیگی کرنی چاھتے

का मुक़ाबला किया. इन फ़ौजों में वीत नामी भाइयों के अलावा लौस और कम्बोडिया के जवान भी थे.

आज़ाद रिपबलिक का एलान.

लेकिन जापान का राज थोड़े ही दिन रहा. उसके बाद इन्डो चीन के कहना चाहिये दो शासक हो गये—16 वीं पड़ी लकीर के ऊपर वाले हिस्से में चीनी और उसके नीचे वाले में अंगरेज़ और अमरीकन. इनकी मदद से देश का भीतरी इन्तज़ाम हो-ची-मीन्ह और उसके साथियों ने अपने हाथ में ले लिया और इन्डो चीन एक आज़ाद रिपबलिक एलान कर दिया गया. इसके पहले राजपति हो-ची-मीन्ह बने. ना उम्मेद होकर बाओ-दाई अपने बाल-बच्चों और दोस्तों के साथ हांग कांग चले गये.

लड़ाई के बाद राजनीति ने फिर पलटा खाया. उधर चीन में च्यांग-काई-शेक का टंडीला उठा और माओ-त्से-तुंग ने कम्यूनिस्ट राज क़ायम किया. दूसरे, रूस जो लड़ाई में साथी और मददगार माना जाता था अब दुश्मन समझा जाने लगा. तीसरे, फ़्रांस जो ग़द्दार और दग़ाबाज़ माना जाता था अब (अंगरेज़ी-अमरीकी फ़रीक़ का) ख़ास खम्भा समझा जाने लगा और इधर से अमरीका, उधर से रूस में एक "ठंडी लड़ाई" छिड़ गई. इन तबदीलियों का हो-ची-मीन्ह पर असर होना लाज़मी था. जिस मेहनत और क़ुरबानी से उन्होंने अपने देश के लिये आज़ादी हासिल की थी और उसे एक बनाया था वह नाकाम होती नज़र आई. उनके साथ अंगरेज़ और चीनी (च्यांगी दल) लोगों का जो सलूक था उसमें फ़र्क़ दिखाई पड़ने लगा. फिर अमरीका की मदद से जिस तरह इन्डोनीशिया में डच राज और मलाया में अंगरेज़ी राज दोबारा चालू हो गया, उसी तरह यहां भी अंगरेज़ी और चीनी फ़ौजें हट गईं और फ़्रांसीसी अमल-दरामद लौट आया.

फ़्रांस सरकार की ज़्यादती.

फ़्रांसीसी सेना के नये सेनापति—ऐडमीरल दार्गन लिऊ—ने आते ही दुहेरी नीति बरतनी शुरू की. अव्वल, हो-ची-मीन्ह की आज़ाद सरकार को ख़त्म करना और दूसरे, फ़्रांसीसी नौकर शाही को फिर से जमा देना, एडमीरल ने अपने फ़्रांसीसी आक़ाओं से वादा किया कि तीन महीने के अन्दर मैं हो-ची-मीन्ह और उनके दल-बल का क़िला क़ुमा करके फ़्रांसीसी राज पूरी शान-शौक़त के साथ क़ायम कर दूँगा, लेकिन थोड़े दिन की रगड़ के अन्दर ही फ़्रांसीसी इतने पिटे की फ़ौज की कमी पड़ गई. इसलिये अब उन्होंने चाल चलने की सोची, और एलोंग की खाड़ी में एडमीरल दार्गन लिऊ हो-ची-मीन्ह से मिले और उनकी लोक शाही को सरकार वीत नाम की सरकार मानना क़बूल किया. साथ ही साथ उन्होंने हो-ची-मीन्ह को फ़्रांस जाने के लिये भी राज़ी कर लिया. यह बात अगस्त 1946

کا مقابلہ کیا . اِن فوجوں میں ویت نامی بھائیوں کے علاوہ لوس اور کمبوڈیا کے جوان بھی تھے .

آزاد ریپبلک کا اعلان .

لیکن جاپان کا راج تھوڑے ھی دن رھا . اُس کے بعد انڈوچین کے کہنا چاھئے دو شاسک ھوگئے—16ھویں پڑی لکیر کے اوپر والے میں چینی اور اُس کے نیچے والے میں انگریز اور امریکن . ان کی مدد سے دیش کا بھیتری انتظام ھوچی مینہہ اور اُس کے ساتھیوں نے اپنے ھاتھ میں لے لیا اور انڈوچین ایک آزاد ریپبلک اعلان کر دیا گیا . اِس کے پہلے راج پتی ھوچی مینہہ بنے . نااُمید ھو کر باؤ ڈائی اپنے بال بچوں اور دوستوں کے ساتھ ھانگ کانگ چلے گئے .

لڑائی کے بعد راج نیتی پھر نے پلٹا کھایا . اُدھر چین میں چانگ کائی شیک کا تنڈیلا اُٹھا اور ماؤتسے تنگ نے کمیونسٹ راج قائم کیا . دوسرے، روس جو لڑائی میں ساتھی اور مددگار مانا جاتا تھا اب دشمن سمجھا جانے لگا . تیسرے، فرانس جو غدار اور دغاباز مانا جاتا تھا اب (انگریزی امریکی فریق کا) خاص کھمبا سمجھا جانے لگا اور اِدھر سے امریکہ، اُدھر سے روس میں ایک "ٹھنڈی لڑائی" چھڑ گئی. اِن تبدیلیوں کا ھوچی مینہ پر اثر ھونا لازمی تھا . جس محنت اور قربانی سے انہوں نے اپنے دیش کے لئے آزادی حاصل کی تھی اور اُسے ایک بنایا تھا وہ ناکام ھوتی نظر آئی . اُن کے ساتھ انگریز اور چینی (چیانگی دل) لوگوں کا جو سلوک تھا اُس میں فرق دکھائی پڑنے لگا . پھر امریکہ کی مدد سے جس طرح انڈونیشیا میں ڈچ راج اور ملایا میں انگریزی راج دوبارہ سے چالو ھوگیا، اُسی طرح یہاں بھی انگریزی اور چینی فوجیں ھٹ گئیں اور فرانسیسی عمل در آمد لوٹ آیا.

فرانس سرکار کی زیادتی .

فرانسیسی سینا کے نئے سیناپتی—ایڈمیرل دارگن لیو . نے آتے ھی دوھیری نیتی برتنی شروع کی . اول، ھوچی مینہ کی آزاد سرکار کو ختم کرنا اور دوسرے، فرانسیسی نوکر شاھی کو پھر سے جما دینا . ایڈمیرل نے اپنے فرانسیسی آقاؤں سے وعدہ کیا کہ تین مہینے کے اندر میں ھوچی مینہ اور اُن کے دل بل کا قلع قمع کرکے فرانسیسی راج پورے شان شوکت کے ساتھ قائم کر دوں گا. لیکن تھوڑے دن کی رگڑ کے اندر ھی فرانسیسی اتنے پٹے کہ فوج کی کمی پڑگئی . اِس لئے اب اُنہوں نے چال چلنے کی سوچی، اور ایلانگ کی کھاڑی میں ایڈمیرل دارگن لیو ھوچی مینہ سے ملے اور اُن کی لوک شاھی سرکار کو ویت نام کی سرکار ماننا قبول کیا . ساتھ ھی ساتھ اُنہوں نے ھوچی مینہ کو فرانس جانے کے لئے بھی راضی کرلیا . یہ بات اگست 1646

के चंद बरस पहले वह थैलैंड चले गये. वहां उन्होंने राज के खिलाफ एक गुरीला आन्दोलन का संगठन किया. इस क़ौमी काम मे उन्हें बहुत से वीतनामियों के अलावा कम्बोडिया और लाओस की ताक़तवर [illegible]ों और हस्तियों की भी मदद मिल गई.

जापान का मुक़ाबला.

पिछली लड़ाई के ज़माने में कुछ अरसे तक इन्डोचीन [illegible] जापान का क़ब्ज़ा रहा. उस ज़माने मे फ्रांस की हकूमत [illegible] कमज़ोरी साफ़ साफ़ ज़ाहिर हो गई. साथ ही साथ [illegible]-मीन्ह का असर और रोबदाब भी बहुत काफ़ी बढ़ [illegible]

[illegible]ास बात यह है कि जब जापान बढ़ता चला आ [illegible] था तो इन्डोनीशिया में डचों ने और मलाया में [illegible]ज़ों ने उसका मुक़ाबला कुछ तो किया, और जापान [illegible] क़ब्ज़ा हो जाने के बाद भी उन्होंने अपनी लाज थोड़ी [illegible] क़ायम रखी. लेकिन इन्डोचीन की फ्रांसीसी सरकार [illegible] कोई मुक़ाबला नहीं किया और चुप चाप उनको अपना [illegible] क़बूल कर लिया. यही नहीं वह हुक्काम भी 'जो [illegible]न झुलाते सो पिजन झुलाते हैं' वाली हालत हुई. जो [illegible] हुक्म दिया जाता था उसे वह फ्रांसीसी अफ़सर बड़ी [illegible]माबरदारी से पूरा करते थे, यहां तक कि सड़कों पर [illegible] भी लगाते थे !

मगर हो-ची-मीन्ह को जिस तरह फ्रांसीसी राज के [illegible] सहयोग करना क़बूल नहीं था उसी तरह से वह [illegible]ानियों का भी असर नहीं मान सकते थे. इस मामले [illegible] सम्राट बाओ-दाइ (जो अनाम और टानकिन के पुश्तैनी [illegible] हैं) उनके साथ मिल गये. लेकिन जापानी निज़ाम [illegible] 'सम्राट" की कोई गुंजायश नहीं थी क्योंकि जापान [illegible]िरो हितो नाम के एक सम्राट थे ही. इन्डो चीन में [illegible] अंगरेज़, क्या अमरीकी और क्या चीनी-सभी लोग [illegible]स वालों को गिरा हुआ समझते थे और उसी नीची [illegible] निगाह से देखते थे जिस तरह योरप में मार्शल पेतां और [illegible]रे देश के ग़द्दारों को देखा जाता था.

ऐसी हालत में हो-ची-मीन्ह का इज़्ज़त सबकी आंखों [illegible] बहुत बढ़ गई और चीनी, अंगरेज़ या अमरीकन, [illegible]के सब उनकी ख़ूब मदद करने लगे. उन्हें पैसा और [illegible]सामान वग़ैरा काफ़ी तादाद मे मिलने लगा. फिर, उन्होंने [illegible]रीफ़ के क़ाबिल यह बात कि फ्रांसीसियों के दग़ा [illegible]न के बावजूद, चीन में अपना अड्डा बना कर, जापानियों [illegible] ख़िलाफ़ एक अच्छा ख़ासा संगठन खड़ा कर लिया. कुछ [illegible]ार्थ और कुछ देश प्रेम के नाते सम्राट बाओ-दाइ ने [illegible] सलाहकार के तौर पर हो ची मीन्ह का इस काम में मदद [illegible] की और जब तक जापानियों की हकूमत रही हो-ची-[illegible]न्ह की फ़ौजों ने बड़ी दिलेरी और मर्दानगी से जापानियों

لڑائی کے چند برس پہلے وہ تھائی لینڈ چلے گئے وہاں اُنھوں نے فرانسیسی راج کے خلاف ایک گوریلا آندولن کا سنگٹھن شروع کیا . اس قومی کام میں اُنھیں بہت سے ویت نامیوں کی مدد کے علاوہ کمبوڈیا اور لاؤس کی طاقتور جماعتوں اور ہستیوں کی بھی مدد مل گئی.

جاپان کا مقابلہ .

پچھلی لڑائی کے زمانے میں کچھ عرصے تک انڈو چین پر جاپان کا قبضہ رہا . اُس زمانے میں فرانس کی حکومت کی کمزوری صاف صاف ظاہر ہوگئی . ساتھ ہی ساتھ ہوچی منہہ کا اثر اور رعب داب بھی بہت کافی بڑھ گیا .

خاص بات یہ ہے کہ جب جاپان بڑھتا چلا آ رہا تھا تو انڈونیشیا میں ڈچوں نے اور ملایا میں انگریزوں نے اُس کا مقابلہ کچھ تو کیا، اور جاپان کا قبضہ ہوجانے کے بعد بھی اُنھوں نے اپنی لاج تھوڑی بہت قائم رکھی . لیکن انڈوچین کی فرانسیسی سرکار نے کوئی مقابلہ نہیں کیا اور چپ چاپ اُن کو اپنا آقا قبول کر لیا . یہی نہیں وہ حکام بھی جو ' وجن ڈلاتے سو وجن ڈولاتے ہیں' والی حالت ہوئی. جو اُن کو حکم دیا جاتا تھا اسے وہ فرانسیسی افسر بڑی فرمانبرداری سے پورا کرتے تھے' یہاں تک کہ سڑکوں پر جھاڑو بھی لگاتے تھے !

مگر ہوچی منہہ کو جس طرح فرانسیسی راج کے ساتھ سہیوگ کرنا قبول نہیں تھا اسی طرح سے وہ جاپانیوں کا بھی اثر نہیں مان سکتے تھے . اِس معاملے میں سمراٹ باؤ ڈائی (جو انام اور ٹانکن کے پشتینی راجا ہیں) اُن کے ساتھ مل گئے. لیکن جاپانی نظام میں تو ''سمراٹ" کی کوئی گنجائش نہیں تھی کیونکہ جاپان کے ہیرو ہیتو نامک ایک سمراٹ تھے ہی . انڈوچین میں کیا انگریز' کیا امریکی اور کیا چینی' سبھی لوگ فرانس والوں کو گرا ہوا سمجھتے تھے اور اسی نیچی نگاہ سے دیکھتے تھے جس طرح یورپ میں مارشل پیتاں اور دوسرے دیش کے غداروں کو دیکھا جاتا تھا .

ایسی حالت میں ہوچی منہہ کی عزت سب کی آنکھوں میں بہت بڑھ گئی اور چینی' انگریز یا امریکن' سب نے سب اُن کی خوب مدد کرنے لگے . انھیں پیسہ اور سامان وغیرہ کافی تعداد میں ملنے لگا . پھر' انھوں نے تعریف کے قابل یہ بات کی کہ فرانسیسیوں نے دغا دینے کے باوجود' چین میں اپنا اڈا بنا کر' جاپانیوں کے خلاف ایک اچھا خاصا سنگٹھن کھڑا کر لیا . کچھ سوارتھ اور کچھ دیش پریم کے ناتے سمراٹ باؤ ڈائی نے صلاح کار کے طور پر ہوچی منہہ کی اس کام میں مدد بھی کی . اور جب تک جاپانیوں کی حکومت رہی ہوچی منہہ کی فوجوں نے بڑی دلیری اور مردانگی سے جاپانیوں

एच. ए. गाइल्स आखिरी सदी में चीन आए. वाडे ने यू-यन-जू-ओह-सी या "भाशा की बुनियादी कड़ी" नाम की किताब चीनी भाशा में लिखी और गायल्स ने चीनी अंगरेज़ी डिक्शनिरी बनाई जो अब तक सब से अच्छी डिक्शनरी मानी जाती है. चीनी भाशा के विदेशी पंडित जितनी भी शकलों को जानते और समझते हैं उन सब का रोमन हरफ़ में लिखने का पूरा तरीक़ा इन दोनों किताबों में मिलता है. हालांकि तरीक़ा मुकम्मल नहीं है तो भी उच्चारन का यह तरीक़ा चीनी भाशा के विदेशी विद्यार्थियों की मदद के लिये बहुत ठीक है. लेकिन हाल के रोमन आन्दोलन का मतलब यह था कि न सिर्फ़ रोमन हरफ़ों के ज़रिये से चीनी शकलों का उच्चारन किया जाय बल्कि शकलों की जगह पर रोमन हरफ़ों से ही काम लिया जाय. यहाँ तक सोचा जा रहा था कि पुरानी चीनी लिखावट को बिल्कुल ही ख़तम कर दिया जाय. इस आन्दोलन का अब तक कामयाबी का मुँह देखना नसीब नहीं हुआ और न कभी आगे कामयाबी मिल सकती है.

ایچ . اے . گائلز آخری صدی میں چین آئے . واڈے نے یو . ین . زو . اوہ . سی یا "بھاشا کی بنیادی کڑی" نام کی کتاب چینی بھاشا میں لکھی اور گائلز نے چینی انگریزی ڈکشنری بنائی جو اب تک سب سے اچھی ڈکشنری مانی جاتی ہے . چینی بھاشا کے ودیشی پنڈت جتنی بھی شکلوں کو جانتے اور سمجھتے ہیں اُن سب کا رومن حرف میں لکھنے کا پورا طریقہ اِن دونوں کتابوں میں ملتا ہے . حالانکہ طریقہ مکمل نہیں ہے تو بھی اُچچارن کا یہ طریقہ چینی بھاشا کے ودیشی ودیارتھیوں کی مدد کے لئے بہت ٹھیک ہے . لیکن حال کے رومن آندولن کا مطلب یہ تھا کہ نہ صرف رومن حرفوں کے ذریعہ سے چینی شکلوں کا اُچچارن کیا جائے بلکہ شکلوں کی جگہ پر رومن حرفوں سے ہی کام لیا جائے . یہاں تک سوچا جا رہا تھا کہ پرانی چینی لکھاوٹ کو بالکل ہی ختم کر دیا جائے . اِس آندولن کو اب تک کامیابی کا منہ دیکھنا نصیب نہیں ہوا اور نہ کبھی آگے کامیابی مل سکتی ہے .

इन्डोचीन और हो-ची-मीन्ह

(जे. एन. साहनी)

[थोड़ा अरसा हुआ दिल्ली के नामी पत्रकार भाई साहनी इन्डोचीन वग़ैरा गये थे. वहां से लौटने के बाद उन्होंने प्रेस में कई लेख दिये हैं जिनमें वहां की असली हालत बताई है. हम उनके एक लेख का आज़ाद अनुवाद नीचे दे रहे हैं. इन्डोचीन में इन दिनों लड़ाई फिर ज़ोरों से चल रही है—एडीटर]

जनता का सम्राट.

इन्डोचीन की जनता का सम्राट, हो ची मीन्ह की उमर 59 बरस के क़रीब है, उन्होंने तालीम फ़्रान्स में पाई और राजकाजी ट्रेनिंग रूस में. होची मीन्ह फ़्रांसीसी साम्राजवाद के लिये एक ज़बरदस्त चुनौती हैं. उनकी ज़िन्दगी बड़ी अजीब-ग़रीब रही है. सन 1920 के बाद वह कई बरस फ़्रांस में रहे जहां उन्होंने फ़्रान्सीसी जन-मत का ध्यान इन्डोचीन की आज़ादी के हक़ में खींचने की कोशिश की. लेकिन वह नाकामयाब से रहे और मास्को पहुंचे. रूस में कई बरस रह कर उन्होंने 'अन्डर ग्राउन्ड' या गुरीला काम करने का कम्यूनिस्टी ढंग सीखा. पिछली

انڈو چین اور ہوچی منہہ

(جے . این . ساہنی)

[تھوڑا عرصہ ہوا دلی کے نامی پترکار بھائی ساہنی انڈو چین وغیرہ گئے تھے. وہاں سے لوٹنے کے بعد انہوں نے پریس میں کئی لیکھ دیئے ہیں جن میں وہاں کی اصلی حالت بتائی ہے . ہم اُن کے ایک لیکھ کا آزاد انوواد نیچے دے رہے ہیں. انڈو چین میں ان دنوں لڑائی پھر زوروں سے چل رہی ہے—ایڈیٹر]

جنتا کا سمراٹ.

انڈوچین کی جنتا کا سمراٹ ہو چی منہہ کی عمر 59 برس کے قریب ہے . اُنہوں نے تعلیم فرانس میں پائی اور راج کاجی ٹریننگ روس میں . ہوچی منہہ فرانسیسی سامراج واد کے لئے ایک زبردست چنوتی ہیں . اُن کی زندگی بڑی عجیب غریب رہی ہے . سن 1920 کے بعد وہ کئی برس فرانس میں رہے جہاں انہوں نے فرانسیسی جن مت کا دھیان انڈوچین کی آزادی کے حق میں کھینچنے کی کوشش کی . لیکن وہ ناکامیاب سے رہے اور ماسکو پہنچے . روس میں کئی برس رہکر انہوں نے 'انڈرگراؤنڈ' یا گوریلا کام کرنے کا کمیونسٹی ڈھنگ سیکھا . پچھلی

अलग अलग इलाक़ों में अलग अलग उच्चारन होते हैं. हालांकि तिब्बत और मंगोलिया और कुछ छोटे मोटे सरहदी इलाक़ों को छोड़ कर पूरे चीन की लिखावट एक ही है लेकिन चूँकि उच्चारन में फ़रक़ होता है इस कारन अलग अलग इलाक़ों के लोग एक ही शकल से एक मतलब ज़ाहिर करते हुए भी एक दूसरे की बोली नहीं समझ पाते. इसी वजह से राष्ट्री उच्चारन आन्दोलन की ज़रूरत पड़ी. एक आम और सारे चीन के लिये यकसां उच्चारन का तरीक़ा निकालने के लिये 1913 में चीनी सरकार ने बड़े बड़े भाशा शास्त्र के पंडितों की एक कानफ़रेन्स की. तब से नया तरीक़ा तमाम स्कूलों में बरता जाने लगा और तमाम पंडित उसे सीखने लगे. अब क़रीब क़रीब हर पढ़ा लिखा चीनी, चाहे वह दक्खिन का रहने वाला हो या उत्तर का, शकलों को एक ही उच्चारन से पढ़ता बोलता है. इस तरह वह एक दूसरे की बोली समझते हैं. यह बहुत बड़ी कामयाबी है और इस चीज़ ने चीनी लिखी भाशा की ज़बरदस्त सेवा की है.

दूसरा—चेयन-ज़ू या शकलों को आसान करने का आन्दोलनः

यह आन्दोलन कुछ पंडितों ने व्यक्तिगत रूप से चलाया. यह कोई आन्दोलन नहीं था. असल में सांग-ची के ज़माने से ही थोड़ी सी ख़ास ख़ास शकलों से काम निकालने का रिवाज शुरू हुआ था. लेकिन इस आन्दोलन का मतलब चीनी लिखावट को नए सिरे से जनम देना था. पूरी तरह से इस आन्दोलन को कामयाबी नहीं मिली. फिर भी कुछ थोड़ी सी शकलों से ही काम निकालने का रिवाज ख़ुद बख़ुद लोगों में ज़ोर पकड़ गया है.

तीसरे—चीनी भाशा को रोमन हरफ़ों में लिखने का आन्दोलनः

इटली का एक मिशनरी मात्तो-रिक्की सोलहवीं सदी में चीन आया था और उसने एक किताब ताई-सी-ज़ू-मू या "पच्छिमी हरफ़" लिखी थी. इसने ही पहले पहल चीनी शकलों का रोमन हरफ़ों में उच्चारन की कोशिश शुरू की. इस मिशनरी की किताब तो गुम हो गई लेकिन इसके बाद दूसरे मिशनरियों ने भी उसके तरीक़े को अपनाया. दूसरा फ़्रान्सीसी मिशनरी निकोलस ट्रेगोल्ट सत्रहवीं सदी में चीन आया और उसने सन 1625 में सी-जू-ओह-मू-ज़ू या "पच्छिमी पंडितों के कानों और आंखों की मदद." नामी किताब लिखी. इस किताब में चीनी भाशा के रोमन हरफ़ों में उच्चारन का उसने एक नया तरीक़ा निकाला. यह किताब अब भी मौजूद है. इसके बाद दो चीन सम्बन्धी शास्त्र के पंडित टी. एफ़. वाडे और

الگ الگ گاؤں میں الگ الگ اُچچارن ہوتے ہیں ۔ حالانکہ تبت اور منگولیا اور کچھ چھوٹے موٹے سرحدی علاقوں کو چھوڑ کر پورے چین کی لکھاوٹ ایک ہی ہے لیکن چونکہ اُچچارن میں فرق ہوتا ہے اس کارن الگ الگ علاقوں کے لوگ ایک ہی شکل سے ایک مطلب ظاہر کرتے ہوئے بھی ایک دوسرے کی بولی نہیں سمجھ پاتے ۔ اسی وجہ سے راشٹری اُچچارن آندولن کی ضرورت پڑی ۔ ایک عام اور سارے چین کے لئے یکساں اُچچارن کا طریقہ نکالنے کے لئے 1913 میں چینی سرکار نے بڑے بڑے بھاشا شاستر کے پنڈتوں کی ایک کانفرنس کی. تب سے نیا طریقہ تمام اسکولوں میں برتا جانے لگا اور تمام پنڈت اُسے سیکھنے لگے ۔ اب قریب قریب ہر پڑھا لکھا چینی، چاہے وہ دکھن کا رہنے والا ہو یا اُتر کا، شکلوں کو ایک ہی اُچچارن سے پڑھتا بولتا ہے ۔ اسطرح وہ ایک دوسرے کی بولی سمجھتے ہیں ۔ یہ بہت بڑی کامیابی ہے اور اس چیز نے چینی لکھی بھاشا کی زبردست سیوا کی ہے ۔

دوسرا — چئین زو یا شکلوں کو آسان کرنے کا آندولن :

یہ آندولن کچھ پنڈتوں نے ویکتی گت روپ سے چلایا ۔ یہ کوئی آندولن نہیں تھا ۔ اصل میں سانگ چی کے زمانے سے ہی تھوڑی سی خاص خاص شکلوں سے کام نکالنے کا رواج شروع ہوا تھا ۔ لیکن اِس آندولن کا مطلب چینی لکھاوٹ کو نئے سرے سے جنم دینا تھا ۔ پوری طرح سے اِس آندولن کو کامیابی نہیں ملی ۔ پھر بھی کچھ تھوڑی سی شکلوں سے ہی کام نکالنے کا رواج خود بخود لوگوں میں زور پکڑ گیا ہے ۔

تیسرے—چینی بھاشا کو رومن حرفوں میں لکھنے کا آندولن :

اٹلی کا ایک مشنری ماؤ رکی سولھویں صدی میں چین آیا تھا اور اُس نے ایک کتاب تائی ۔ سی ۔ زو ۔ مو یا "پچھمی حرف" لکھی تھی ۔ اُس نے ہی پہلے پہل چینی شکلوں کا رومن حرفوں میں اُچچارن کی کوشش شروع کی ۔ اِس مشنری کی کتاب تو گم ہو گئی لیکن اِسکے بعد دوسرے مشنریوں نے بھی اُس کے طریقے کو اپنایا ۔ دوسرا فرانسیسی مشنری نیکولس تریگولٹ سترھویں صدی میں چین آیا اور اُس نے سن 1625 میں سی ۔ جو ۔ اوہ ۔ مو ۔ زو یا "پچھمی پنڈتوں کے کانوں اور آنکھوں کی مدد" نامی کتاب لکھی ۔ اس کتاب میں چینی بھاشا کے رومن حرفوں میں اُچچارن کا اُس نے ایک نیا طریقہ نکالا ۔ یہ کتاب اب بھی موجود ہے ۔ اس کے بعد دو چین سمبندھی شاستر کے پنڈت ٹی. ایف. واڈے اور

में भी फ़रक़ था. इस से केन्द्री और इलाक़ाई सरकारों के बीच की लिखत पढ़त में दिक़्क़तें पैदा हो गईं. इस लिये चीनी लिखावट में फिर से तबदीली की गई और उसे नई शकल में पिरोया गया. चाऊ वंश के सम्राट स्वान-वांग (827-781 ईसा से पहले) के इतिहास के मंत्री ताई, शिह-चाउ ने इस काम को पूरा किया था. लिखावट के इस नए रूप को चाऊ-वेन या ता-च्वांग कहते थे.

इसमें कोई शक नहीं कि ताई शिह चाउ ने लिखावट को नया रूप देकर बहुत उपकार किया. लेकिन उन्होंने शकलों को बहुत पेचीदा और बड़ा बना दिया. इस कारन उनकी बनाई लिखावट उतने ज़ियादा दिनों नहीं चल सकी जितनी कि सांग-चो की बनाई लिखावट चली थी. कुछ सदियों के बाद ही चिन वंश (255-209 ईसा से पहले) के मंत्री ली सू ने इस लिखावट में तबदीली की और इसको बहुत आसान शकल प्रदान की. इस रूप का नाम स्याव-च्वान रक्खा गया. उसी समय एक दूसरे अफ़सर चिन-मू ने भी लिखावट में तबदीली की और अपनी बनाई लिखावट का नाम ली-शू या "क्लर्की लिखावट" रक्खा. इसी का नाम बाद में चल कर क्याई-शू या "आदर्श लिखावट" पड़ गया. इस लिखावट में सिर्फ़ चिन्हों की शकल में तबदीली की गई थी और लिखने के तरीक़े को इस तरह से आसान किया गया था कि वह बदलती हुई ज़िन्दगी से मेल खा सके. असल में लिखावट की बनावट में यह तबदीली नहीं थी. तब से लगभग पिछले दो हज़ार बरस में चीनी लिखावट में कोई तबदीली नहीं हुई.

हाल के सुधार आन्दोलन.

इस सदी ईसवी में लिखावट की चीनी भाषा में सुधार के लिये बहुत सी कोशिशें की गई हैं. यहाँ पर सिर्फ़ तीन ख़ास ख़ास आन्दोलनों का ज़िक्र किया जा सकता है.

पहला—को-इन-ज़ु-मू या राष्ट्री उच्चारन आन्दोलन: लिखावट की चीनी भाषा में हर्फ़ नहीं होते और हर शब्द की अपनी एक अलग ख़ास शकल और अलग ख़ास आवाज़ होती है. इस कारन हिज्जे से इसका उच्चारन नहीं हो सकता. ज़रूरत इस बात की थी कि आवाज़ निकालने का एक ढंग पैदा किया जाय जिससे शकलों का उच्चारन किया जा सके. उच्चारन का पुराना तरीक़ा यह था कि दो अलग अलग शकलों को मिलाया जाता था जिन में पहली छोटी आवाज़ और दूसरी पूरी आवाज़ की होती थी और उनको जल्दी पढ़ कर एक नई शकल की आवाज़ पैदा की जाती थी. इस तरीक़े का नाम फ़ान-चिह था. इस में बहुत कठिनाइयाँ और दिक़्क़तें थीं. सब से ज़ियादा इसमें यह दिक़्क़त है कि अलग अलग जगहों और

میں بھی فرق تھا ۔ اِس سے کیندری اور علاقائی سرکاروں کے بیچ کی لکھت پڑھت میں دقتیں پیدا ہوگئیں. اس لئے چینی لکھاوٹ میں پھر سے تبدیلی کی گئی اور اُسے نئی شکل میں پرویا گیا ۔ چاؤ ونش کے سمراٹ سوان وانگ (827–781 عیسیٰ سے پہلے) کے اتہاس کے منتری تائی شیہہ چاؤ نے اس کام کو پورا کیا تھا ۔ لکھاوٹ کے اِس نئے روپ کو چاؤ ۔ وین ۔ یا تا ۔ چوانگ کہتے تھے ۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ تائی ۔ شیہہ ۔ چاؤ نے لکھاوٹ کو نیا روپ دے کر بہت اُپکار کیا لیکن اُنہوں نے شکلوں کو بہت پیچیدہ اور بڑا بنا دیا ۔ اس کارن اُن کی بنائی لکھاوٹ اتنے زیادہ دنوں نہیں چل سکی جتنی کہ سانگ چی کی بنائی لکھاوٹ چلی تھی ۔ کچھ صدیوں کے بعد ہی چن ونش 255–209 عیسیٰ سے پہلے) کے منتری لی ژو نے اِس لکھاوٹ میں تبدیلی کی اور اِس کو بہت آسان شکل پردان کی ۔ اِس روپ کا نام سیاو ۔ چوان رکھا گیا ۔ اُسی سمے ایک دوسرے افسر چن مو نے بھی لکھاوٹ میں تبدیلی کی اور اپنی بنائی لکھاوٹ کا نام لی شو یا " کلرکی لکھاوٹ " رکھا ۔ اسی کا نام بعد میں چل کر چیائی ۔ شو یا " آدرش لکھاوٹ " پڑ گیا ۔ اِس لکھاوٹ میں صرف چنہوں کی شکل میں تبدیلی کی گئی تھی اور لکھنے کے طریقے کو اس طرح سے آسان کیا گیا تھا کہ وہ بدلتی ہوئی زندگی سے میل کھا سکے ۔ اصل میں لکھاوٹ کی بناوٹ میں یہ تبدیلی نہیں تھی ۔ تب سے لگ بھگ پچھلے دو ہزار برس میں چینی لکھاوٹ میں کوئی تبدیلی نہیں ہوئی.

حال کے سدھار آندولن ۔

اس صدی عیسوی میں لکھاوٹ کی چینی بھاشا میں سدھار کے لئے بہت سی کوششیں کی گئی ہیں ۔ یہاں پر صرف تین خاص خاص آندولنوں کا ذکر کیا جا سکتا ہے :

پہلا—کو ۔ اِن ۔ زو ۔ مو یا راشٹری اُچچارن آندولن : لکھاوٹ کی چینی بھاشا میں حرف نہیں ہوتے اور ہر شبد کی اپنی ایک الگ خاص شکل اور الگ خاص آواز ہوتی ہے. اس کارن ہجے سے اِس کا اچچارن نہیں ہوسکتا. ضرورت اِس بات کی تھی کہ آواز نکالنے کا ایک ڈھنگ پیدا کیا جائے جس سے شکلوں کا اُچچارن کیا جا سکے ۔ اُچچارن کا پرانا طریقہ یہ تھا کہ دو الگ الگ شکلوں کو ملایا جاتا تھا جن میں پہلی چھوٹی آواز اور دوسری پوری آواز کی ہوتی تھیں ۔ اور اُن کو جلدی پڑھکر ایک نئی شکل کی آواز پیدا کی جاتی تھی ۔ اِس طریقے کا نام فان ۔ چیہہ تھا. اِسمیں بہت کٹھنائیاں اور دقتیں تھیں. سب سے زیادہ اِس میں یہ دقت ہے کہ الگ الگ جگہوں اور

…ने एक बनाया था. असल में चीनी शकलों की ईजाद न तो उसने की और न उसके ज़माने में इनकी ईजाद हुई. उसने तो सिर्फ़ इन शकलों को तरतीब में ला दिया और इन में मिलान पैदा करके अलग अलग क़िस्में तय कर दीं. असल में चीनी लिखावट न एक आदमी की ईजाद है और न हो सकती है और न इसको थोड़े अरसे में पूरा किया जा सकता था. यह सैकड़ों हज़ारों आदमियों की बरसहा बरस की इकट्ठा मेहनत का नतीजा है.

पुराने महान चीनी पंडित सुन जो ने कहा है—"चीनी भाशा की शकलों की बहुत सी ईजादें हुईं लेकिन उसी लिखावट को अपनाया गया जिसे सांग ची ने तैयार किया था."

ऊपर लिखी बातों से पता चलता है कि यह बात सच है कि चीनी लिखावट का आरम्भ फ़ोसी ने किया और उसको सांग ची ने पूरा किया.

चीनी भाशा की शकलों में तबदीली.

सांग ची की तैयार की हुई लिखावट लगभग दो हज़ार साल तक काम में आती रही—हवांग-ती के काल (2697-2598 ईसा से पहले) से लेकर चाव वंश के आधे शासन काल (1124-2416 ईसा से पहले) तक. बाद में इस लिखावट का नाम "कू-विन" या "पुरानी शकलें" पड़ गया. इन में से बहुत सी शकलें आज भी मौजूद हैं लेकिन आम तौर पर उनका इस्तेमाल नहीं होता.

पुरानी शकलों का कुछ हिस्सा तो चीन के मशहूर और सबसे पुराने शब्द कोश (लुग़त) शिव विन-च्याउ-त्सी में महफ़ूज़ है. इस शब्द कोश को हान वंश के ज़माने (206 ईसा से पहले-219 ईसा के बाद) में सू शुन ने तैयार किया था. इन शकलों का बाक़ी कुछ हिस्सा पत्थर और धात पर खुदा हुआ पाया गया. सन 1898 में हु नान सूबे में खुदाई हुई था जहाँ पर इस पुरानी लिखावट का बाक़ी हिस्सा कछुये की हड्डी पर खुदा हुआ मिला था. धात और पत्थर पर खुदी शकलों को आम तरीक़े से चिन-शीह-विन-त्सो कहते हैं और उन शकलों का नाम चिना-को-विन-त्सो है जो कछुए की हड्डियों पर खुदी हैं. इन तमाम लिखावटों से सिर्फ़ पुरानी लिखावट वाली चीनी भाशा के बारे में ही जानकारी नहीं बढ़ती बल्कि यह पुराने चीनी इतिहास पर भी नई रोशनी डालती है.

सांग ची की बनाई हुई शकलों के रिवाज के दो हज़ार बरस के बाद दूसरे लोगों ने बहुत से दूसरे चिन्हों की ईजाद की जिन का इस्तेमाल अलग अलग इलाक़ों या रियासतों में होने लगा. इन चिन्हों की सिर्फ़ शकल में ही फ़रक़ नहीं था बल्कि इन चिन्हों के उच्चारन और इस्तेमाल

کو ایک بنایا تھا. اصل میں چینی شکلوں کی ایجاد نہ تو اُس نے کی اور نہ اُس کے زمانے میں اِن کی ایجاد ہوئی. اُس نے تو صرف اِن شکلوں کو ترتیب میں لا دیا اور ان میں ملان پیدا کر کے الگ الگ قسمیں طے کر دیں. اصل میں چینی لکھاوٹ نہ ایک آدمی کی ایجاد ہے اور نہ ہو سکتی ہے اور نہ اس کو تھوڑے عرصے میں پورا کیا جا سکتا تھا. یہ سیکڑوں ہزاروں آدمیوں کی برسہا برس کی اکٹھا محنت کا نتیجہ ہے.

پرانے مہان چینی پنڈت سن زو نے کہا ہے—" چینی بھاشا کی شکلوں کی بہت سے ایجادیں ہوئیں لیکن اُسی لکھاوٹ کو اپنایا گیا جسے سانگ چی نے تیار کیا تھا."

اوپر لکھی باتوں سے پتہ چلتا ہے کہ یہ بات سچ ہے کہ چینی لکھاوٹ کا آرمبھ فوسی نے کیا اور اُس کو سانگ چی نے پورا کیا.

چینی بھاشا کی شکلوں میں تبدیلی.

سانگ چی کی تیار کی ہوئی لکھاوٹ لگ بھگ دو ہزار سال تک کام میں آتی رہی—ہوانگ تی کے کال (2697-2598 عیسوی سے پہلے) سے لے کر چاؤ ونش کے آدھے شاسن کال (1124-2416 عیسوی سے پہلے) تک بعد میں اِس لکھاوٹ کا نام "کو وین" یا "پرانی شکلیں" پڑ گیا. اِن میں سے بہت سی شکلیں آج بھی موجود ہیں لیکن عام طور پر اُن کا استعمال نہیں ہوتا. پرانی شکلوں کا کچھ حصہ تو چین کے مشہور اور سب سے پرانے شبد کوش (لغت) شوو. وین. چیائی. زو میں محفوظ ہے. اِس شبد کوش کو ہان ونش کے زمانے (206 عیسوی سے پہلے—219 عیسوی کے بعد) میں سوشن نے تیار کیا تھا. اِن شکلوں کا باقی کچھ حصہ پتھر اور دھات پر کھدا ہوا پایا گیا. سن 1898 میں ہونان صوبے میں کھدائی ہوئی تھی جہاں اِس پرانی لکھاوٹ کا باقی حصہ کچھوے کی ہڈی پر کھدا ہوا ملا تھا. دھات اور پتھر پر کھدی شکلوں کو عام طریقے سے چن. شیہ. وین. زو. کہتے ہیں اور اُن شکلوں کا نام چیا. کو. وین. زو ہے جو کچھوے کی ہڈیوں پر کھدی ہیں. اِن تمام لکھائیوں سے صرف پرانی لکھاوٹ والی چینی بھاشا کے بارے میں ہی جانکاری نہیں بڑھتی بلکہ یہ پرانے چینی اِتہاس پر بھی نئی روشنی ڈالتی ہیں.

سانگ چی کی بنائی ہوئی شکلوں کے رواج کے دو ہزار برس کے بعد دوسرے لوگوں نے بہت سے دوسرے چنہوں کی ایجاد کی جن کا استعمال الگ الگ علاقوں یا ریاستوں میں ہونے لگا. اِن چنہوں کی صرف شکل میں ہی فرق نہیں تھا بلکہ اِن چنہوں کے اچارن اور استعمال

था. इसके बाद के काल में अक़्लमन्दों ने डोरे की गांठ की जगह लिखे जाने वाले चिन्ह और मज़मून का आविष्कार किया. इस आविष्कार की वजह से तमाम अफ़सरों को ठीक ठीक हुक्म भेजे जा सके और तमाम जनता की ठीक ठीक देख रेख की जा सकी."

चीनी भाशा में लिखावट का आरम्भ.

तहज़ीबी दुनिया में चीनी भाशा की लिखावट सबसे पुरानी है. इसके आरम्भ के सम्बन्ध में बहुत सी कथाएँ मशहूर हैं. पुराने हिन्दुओं की तरह चीनियों का भी विश्वास था कि उनकी लिखावट और किताबें भगवान के घर से उतरी हैं. ई-चंग किताब में इस बारे में लिखा गया है—

"भगवान ने आत्मा की तरह की चीज़ें पैदा कीं और बुद्धिमानों ने उनको समझ लिया. आसमान और ज़मीन पर बहुत सी उथल पुथल और अदला बदली की निशानियाँ हैं और बुद्धिमानों ने उनकी नक़ल कर ली. भगवान ने अपने गीत उतारे जिनसे बुराई और अच्छाई का पता चला और बुद्धिमानों ने उनके सुन्दर सुन्दर मतलब लगा लिये. यलो नदी ने नक़्शा दिया और लो नदी ने लिखावट प्रदान की और बुद्धिमानों ने उनके नमूने बना लिये."

इसी किताब के अनुसार चीनी पंडित मानते हैं कि पुराने चीनी सम्राट फ़ो सी की ईजाद "बाकुआ" या आठ जड़ से ही चीनी लिखावट की शुरूआत होती है—

☰ चेयन = आकाश; ☷ ख्वान = ज़मीन; ☳ चंग = बिजली; ☴ सन = हवा; ☵ कान = पानी; ☲ ली = आग; ☶ कान = पहाड़ और ☱ तुई = झील.

लेकिन पुराने सम्राट फ़ोसी के काल का पता ही नहीं चलता. वह तारीख़ी होने के बजाय कल्पित मालूम होता है. बहुत सी लिखतों से पता चलता है कि फ़ो सी सम्राट का काल ईसा से दस लाख साल पहले का है. इन के अलावा कुछ का कहना है कि यह काल लगभग ईसा से तीन लाख साल पहले था. कुछ दूसरे लोगों का कहना है कि ईसा से लगभग चार पांच हज़ार बरस पहले फ़ोसी सम्राट का ज़माना था. लेकिन कोई भी इस बात से इनकार नहीं करता है या इस को ग़लत बताता है कि फ़ो सी सम्राट ने बा-कुआ या आठ जड़ की ईजाद की थी जिन से कि चीनी लिखावट शुरू हुई है.

एक और गाथा से पता चलता है कि चीन के सबसे पहले तारीख़ी राजा ह्वाँग-ती या पीले सम्राट के काल के वज़ीर सांग ची ने चीनी शकलों की ईजाद की. इसी सम्राट ने (2697-2598 ईसा से पहले) के ज़माने में पूरे चीन

تھا. اس کے بعد کے کال میں عقلمندوں نے ڈورے کی گانٹھ کی جگہ لکھے جانے والے چِنھ اور مضمون کا آوشکار کیا. اِس آوشکار کی وجہ سے تمام افسروں کو ٹھیک ٹھیک حکم بھیجے جا سکے اور تمام جنتا کی ٹھیک ٹھیک دیکھ ریکھ کی جا سکی ."

چینی بھاشا میں لکھاوٹ کا آرمبھ .

تہذیبی دنیا میں چینی بھاشا کی لکھاوٹ سب سے پرانی ہے . اِس کے آرمبھ کے سمبندھ میں بہت سی کتھائیں مشہور ہیں . پرانے ہندوؤں کی طرح چینیوں کا بھی وشواس تھا کہ اُن کی لکھاوٹ اور کتابیں بھگوان کے گھر سے اُتری ہیں . ای چنگ کتاب میں اِس بارے میں لکھا گیا ہے—

" بھگوان نے آتما کی طرح کی چیزیں پیدا کیں اور بدھیمانوں نے اُن کو سمجھ لیا . آسمان اور زمین پر بہت سی اُتھل پُتھل اور ادلا بدلی کی نشانیاں ہیں اور بدھیمانوں نے اُن کی نقل کر لی . بھگوان نے اپنے گیت اُتارے جن سے برائی اور اچھائی کا پتہ چلا اور بدھیمانوں نے اُن کے سندر سندر مطلب لگالئے . یلو ندی نے نقشہ دیا اور لو ندی نے لکھاوٹ پردان کی اور بدھیمانوں نے اُن کے نمونے بنا لئے ."

اسی کتاب کے انوسار چینی پنڈت مانتے ہیں کہ پرانے چینی سمراٹ فوسی کی ایجاد " باکوا " یا آٹھ جڑ سے ہی چینی لکھاوٹ کی شروعات ہوتی ہے—

☰ چیئن = آکاش؛ ☷ کھوان = زمین؛ ☳ چنگ = بجلی؛ ☴ سن = ہوا؛ ☵ کان = پانی؛ ☲ لی = آگ؛ ☶ کان = پہاڑ اور ☱ تُوئی = جھیل.

لیکن پرانے سمراٹ فوسی کے کال کا پتہ ہی نہیں چلتا . وہ تاریخی ہونے کے بجائے کالپت معلوم ہوتا ہے . بہت سی لکھتوں سے پتہ چلتا ہے کہ فوسی سمراٹ کا کال عیسیٰ سے دس لاکھ سال پہلے کا ہے . اِن کے علاوہ کچھ کا کہنا ہے کہ یہ کال لگ بھگ عیسیٰ سے تین لاکھ سال پہلے تھا. کچھ دوسرے لوگوں کا کہنا ہے کہ عیسیٰ سے لگ بھگ چار پانچ ہزار برس پہلے فوسی سمراٹ کا زمانہ تھا . لیکن کوئی بھی اِس بات سے انکار نہیں کرتا ہے یا اِس کو غلط بتاتا ہے کہ فوسی سمراٹ نے با-کوا یا آٹھ جڑ کی ایجاد کی تھی جن سے چینی لکھاوٹ شروع ہوئی ہے .

ایک اور کتھا سے پتہ چلتا ہے کہ چین کے سب سے پہلے تاریخی راجہ ہوانگ تی یا پیلے سمراٹ کے کال کے وزیر سانگ چی نے چینی شکلوں کی ایجاد کی تھی. اسی سمراٹ نے (2697-2598 عیسیٰ سے پہلے) کے زمانے میں پورے چین

क़ुरबानी के लिये तैयार रहना चाहिये. और अगर हमने ऐसा कर लिया तो इस धरती की काया पलट जायेगी और वह इसका दूसरा जन्म होगा.

क़ौमी तालीम का असली मक़सद यही है. हम दुनिया में हैं और हमारे ऊपर वह अटल-अचल चीज़ है. क़ौमी तालीम का आदर्श है कि इन दोनों को नज़दीक लाये.

चीनी लिखावट

(प्रोफ़ेसर तान युन शान)

अंगरेज़ी शब्द "लैंगवेज" का मतलब लिखी और बोली जाने वाली दोनों भाशाओं से होता है. लेकिन चीनी भाशा में लिखी और बोली जाने वाली भाशाएँ एक दूसरे से बिलकुल अलग होती हैं. बोली जाने वाली चीनी भाशा यू. यन कहलाती है जिसका मतलब है—शब्द और बोल. और लिखी चीनी भाशा वेनसू कहलाती है जिसका मतलब हरफ़ और चिन्ह होता है.

इन्सानी ज़िन्दगी की यह एक क़ुदरती घटना है कि लिखी जाने वाली भाशा से पहले बोली जाने वाली भाशा पैदा होती है. चीनी भाशा भी इस उसूल का कोई अपवाद नहीं है. इस बारे में सुंग काल (960 से 1279 ईसवी) के ताई-तुंग नामी चीनी पंडित ने कहा था—

"लिखी शकलों से पहले बोली जाने वाली आवाज़ पैदा हुई और लिखे जाने वाले चिन्हों से पहले डोरे में गांठ डाल कर बात समझाने के तरीक़े का आविश्कार हुआ. बाद में लकड़ी पर खुदाई शुरु हुई जिसकी वजह से क़ुदरती चीज़ों और चाल ढाल, हालत और सम्बंध को ज़ाहिर करने वाली ऐसी शकलें एक लाइन में खोदी जाने लगीं जो उन चीज़ों, उन चाल ढालों, उन हालतों और उन सम्बंधों के बोली वाले नामों को ज़ाहिर करती थीं.

इसके बाद खुदाई करने के चाक़ू और खुदाई करने के लिये तख़्तियों की ईजाद हुई. यही लिखावट थी और जिसका मतलब था कि बोली को पढ़ा जा सके."

ऊपर लिखा बयान चीन की सब से पुरानी किताब ई-चंग के आधार पर है. यह ई-चंग चीन का ऋग वेद है. इस किताब में लिखा है—

"पुराने ज़माने में डोरे में गांठ डाल डाल कर हुक्म दिया जाता था और सरकार का काम कामयाबी से चलता

قربانی کے لئے تیار رہنا چاہئے . اور اگر ہم نے ایسا کر لیا تو اس دھرتی کی کایا پلٹ جائے گی اور وہ اس کا دوسرا جنم ہوگا .

قومی تعلیم کا اصلی مقصد یہی ہے . ہم دنیا میں ہیں اور ہمارے اوپر وہ اٹل اچل چیز ہے . قومی تعلیم کا آدرش ہے کہ اِن دونوں کو نزدیک لائے .

چینی لکھاوٹ

(پروفیسر تان ین شان)

انگریزی شبد ''لینگویج'' کا مطلب لکھی اور بولی جانے والی دونوں بھاشاؤں سے ہوتا ہے . لیکن چینی بھاشا میں لکھی اور بولی جانے والی بھاشائیں ایک دوسرے سے بالکل الگ ہوتی ہیں . بولی جانے والی چینی بھاشا یو ین کہلاتی ہے جس کا مطلب ہے—شبد اور بول. اور لکھی چینی بھاشا وین سو کہلاتی ہے جس کا مطلب حرف اور چنہ ہوتا ہے .

انسانی زندگی کی یہ ایک قدرتی گھٹنا ہے کہ لکھی جانے والی بھاشا سے پہلے بولی جانے والی بھاشا پیدا ہوتی ہے . چینی بھاشا بھی اِس اصول کا کوئی اپواد نہیں ہے . اس بارے میں سنگ کال (960 سے 1279 عیسوی) کے تائی تنگ نامی چینی پنڈت نے کہا تھا—

'' لکھی شکلوں سے پہلے بولی جانے والی آواز پیدا ہوئی اور لکھے جانے والے چنہوں سے پہلے ڈورے میں گانٹھ ڈالکر بات سمجھانے کے طریقے کا آوشکار ہوا . بعد میں لکڑی پر کھدائی شروع ہوئی جس کی وجہ سے قدرتی چیزوں اور چال ڈھال، حالت اور سمبندھ کو ظاہر کرنے والی ایسی شکلیں ایک لائن میں کھودی جانے لگیں جو اُن چیزوں، اُن چال ڈھالوں، اُن حالتوں اور اُن سمبندھوں کے بولی والے ناموں کو ظاہر کرتی تھیں .

اِس کے بعد کھدائی کرنے کے چاقو اور کھدائی کرنے کے لئے تختیوں کی ایجاد ہوئی . یہی لکھاوٹ تھی اور جس کا مطلب تھا کہ بولی کو پڑھا جا سکے .''

اوپر لکھا بیان چین کی سب سے پرانی کتاب ای چنگ کے آدھار پر ہے . یہ ای چنگ چین کا رگ وید ہے . اس کتاب میں لکھا ہے—

'' پرانے زمانے میں ڈورے میں گانٹھ ڈال ڈالکر حکم دیا جاتا تھا اور سرکار کا کام کامیابی سے چلتا

अपने को इस हालत में संभालना होगा. लेकिन झंडे पर संसार चक्र या धर्म का पहिया ही सिर्फ़ नहीं है. यह पहिया सफ़ेद ज़मीन पर टिका हुआ है. सचमुच यह दुनिया एक ऐसी चीज़ की चलती हुई छाया है जो ख़ुद अटल और अचल है. इस दुनिया को आकाश और पाताल के बीच का कहा जाता है. हम सब जो इस दुनिया में हिस्सा लेते हैं उन्हें समझ लेना चाहिये कि हमारे जीने का अकेला मक़सद यह दुनिया नहीं है. इस दुनिया के पीछे एक अटल पिछवाड़ा है. इस अटल चीज़ को हम कैसे पा सकते हैं? जब हम 'संसार' के इस चक्र में शरीक रहते हैं तो यह कैसे समझें कि इस सब से परे भी कुछ है?

फिर एक बात यह भी है कि धर्म कहता है कि हर आदमी को तप करना चाहिये, यज्ञ करना चाहिये. बिना संयम से रहने में काम में न ख़ुशनूदी आती है, न पायेदारी और न सफ़ाई. अब हम झंडे पर के नारंगी रंग को लें. उसका मतलब है कि हमें अपने अन्दर के दुश्मनों को दबाना चाहिये. यह दुनिया नेक आदमियों के त्याग और तपस्या के बल पर ही जीती है. यही कारन है कि हमें बताया गया है कि बिना त्याग किये, बिना इन्द्रियों को क़ाबू में लाये, कोई आदमी अटल-अमर चीज़ नहीं पा सकता. अपने नफ़्स या जीव को मारना नारंगी रंग का संदेश है.

इसके बाद सवाल आता है, क्या त्याग-तपस्या ही हमारा मक़सद है? क्या हम त्याग-तपस्या पर सबर कर लें? त्याग-तपस्या एक साधन है या मक़सद या क्या? यह विचार करने पर हम हरे रंग पर आ जाते हैं, जिसका इशारा इन्सान के पैदावार या ईजाद करने के माद्दे से है. जिसके ज़रिये इन्सान धरती पर स्वर्ग कर सकता है, हर आदमी को यह बात समझ लेना चाहिये. उसे महसूस करना चाहिये कि दुनिया में हम जो कुछ भी करते हैं वह उस मक़सद के लिये करते हैं जो समय की गति से परे है.

इसलिये त्याग-तपस्या सिर्फ़ एक झगड़ा है जिसकी मदद से हम एक तरह का इन्सानी स्वर्ग बना कर समाजी न्याय क़ायम कर सकते हैं. हमारे दिल में भर पूर दया होना चाहिये ताकि हमारी क़ुरबानी होने पर हमारी मुक्ति हो और साथ ही साथ दूसरों की भी मुक्ति हो. मैं जानता हूँ कि यह रास्ता आसान नहीं है. इस दुनिया में अगर हम ईमानदारी से ज़िन्दा रहना चाहते हैं तो हमें उस्तरे की तेज़ धार पर चलना पड़ेगा. इसलिये मेरे कहने का मतलब यह है कि इस दुनिया में काम करते वक़्त हमें महसूस करना चाहिये कि इस सबके पीछे कोई अटल-अचल चीज़ है. हमें त्याग-तपस्या और अपनी

اپنے کو اس حالت میں سنبھالنا ہوگا . لیکن جھنڈے پر سنسار چکر یا دھرم کا پہیا ہی صرف نہیں ہے . یہ پہیا سفید زمین پر ٹکا ہوا ہے . سچ مچ یہ دنیا ایک ایسی چیز کی چلتی ہوئی چھایا ہے جو خود اٹل اور اچل ہے . اس دنیا کو آکاش اور پاتال کے بیچ کا کہا جاتا ہے . ہم سب جو اس دنیا میں حصہ لیتے ہیں انہیں سمجھ لینا چاہئے کہ ہمارے جینے کا اکیلا مقصد یہ دنیا نہیں ہے . اس دنیا کے پیچھے ایک اٹل پچھواڑا ہے . اس اٹل چیز کو ہم کیسے پا سکتے ہیں ؟ جب ہم ' سنسار ' کے اس چکر میں شریک رہتے ہیں تو یہ کیسے سمجھیں کہ اس سب سے پرے بھی کچھ ہے ؟

پھر ایک بات یہ بھی ہے کہ دھرم کہتا ہے کہ ہر آدمی کو تپ کرنا چاہئیے' یگ کرنا چاہئے . بنا سنیم سے رہنے میں کام میں نہ خوشنودی آتی ہے' نہ پائداری، اور نہ صفائی . اب ہم جھنڈے پر کے نارنگی رنگ کو لیں. اس کا مطلب ہے کہ ہمیں اپنے اندر کے دشمنوں کو دبانا چاہئے . یہ دنیا نیک آدمیوں کے تیاگ اور تپسیا کے بل پر ہی جیتی ہے . یہی کارن ہے کہ ہمیں بتایا گیا ہے کہ بنا تیاگ کئے' بنا اندریوں کو قابو میں لائے' کوئی آدمی اٹل امر چیز نہیں پا سکتا . اپنے نفس یا جیو کو مارنا نارنگی رنگ کا سندیش ہے .

اس کے بعد سوال آتا ہے' کیا تیاگ تپسیا ہی ہمارا مقصد ہے ؟ کیا ہم تیاگ تپسیا پر صبر کرلیں ؟ تیاگ تپسیا ایک سادھن ہیں یا مقصد یا کیا ؟ یہ وچار کرنے پر ہم ہرے رنگ پر آجاتے ہیں' جس کا اشارہ انسان کے پیداوار یا ایجاد کرنے کے مادے سے ہے جس کے ذریعے انسان دھرتی پر سورگ کر سکتا ہے' ہر آدمی کو یہ بات سمجھ لینا چاہئے. اسے محسوس کرنا چاہئے کہ دنیا میں ہم جو کچھ بھی کرتے ہیں وہ اس مقصد کے لئے کرتے ہیں جو سمے کی گتی سے پرے ہے .

اس لئے تیاگ تپسیا صرف ایک جھگڑا ہے جس کی مدد سے ہم ایک طرح کا انسانی سورگ بنا کر سماجی نیائے قائم کر سکتے ہیں . ہمارے دل میں بھر پور دیا ہونا چاہئے تاکہ ہماری قربانی ہونے پر ہماری مکتی ہو اور ساتھ ہی ساتھ دوسروں کی بھی مکتی ہو . میں جانتا ہوں کہ یہ راستہ آسان نہیں ہے . اس دنیا میں اگر ہم ایمانداری سے زندہ رہنا چاہتے ہیں تو ہمیں استرے کی تیز دھار پر چلنا پڑے گا . اس لئے میرے کہنے کا مطلب یہ ہے کہ اس دنیا میں کام کرتے وقت ہمیں محسوس کرنا چاہئے کہ اس سب کے پیچھے کوئی اٹل اچل چیز ہے . ہمیں تیاگ تپسیا اور اپنی

आर्थिक ढांचा संभाल लिया और अपनी बदस्तूर हालत को पहुँच गए ? हमें समझ लेना चाहिये कि आज सारी दुनिया ही एक इनक़लाबी दौर से निकल रही है. मौजूद हालतों के खिलाफ़ लोगों को असन्तोश है, यही नहीं, गुस्सा और बग़ावत की भावना ज़ोर पकड़ रहा है.

यह जो आमतौर से बेचैनी छाई हुई है उस से हम बच नहीं सकते. यह हर जगह मौजूद है. बिस्मार्क ने एक बार कहा था कि अक़लमन्द लोग दूसरों के तजर्बों से सीखते हैं, लेकिन बेवक़ूफ़ लोगों को अपने तजर्बों से सीखना पड़ता है, जो बहुत मंहगा और दुश्वारी का सौदा बैठता है. मुझे यक़ीन है कि आप के सदर, चीफ़ मिनिस्टर वग़ैरा जो सवालों का हल करेंगे तो दुनिया की दशा को समझ कर करेंगे और इस देश की मौजूदा हालत को संभालने के लिये जी जान से पूरी ताक़त लगा देंगे.

इस कालिज में दो जगह ऐसी भी हैं जिनके ज़रिये इस देश की पिछली बातों को बताने समझाने की कोशिश की जाती है. दूसरे देशों के तजुर्बों से हम सीख सकते हैं लेकिन उनके नैतिक या राजकाजी संगठनों या संस्थाओं की नक़ल हमें नहीं करना चाहिये. अगर हम कहें कि हमारे पास सबूत देने को कुछ है ही नहीं और नक़ल की बिना हमारा काम नहीं चल सकता तो यह रोगी के जैसी हालत है, जिस से पता चलता है कि हमें अपने पर कोई विश्वास नहीं है. दूसरे देशों से भले कुछ उत्साह या रोशनी मिल जाये लेकिन उन देशों से हमें अपना क़ौमी चालचलन नहीं मिल सकता. इसलिये यह मुनासिब है कि यह कालिज उस चीज़ पर ज़ोर देते रहें जिसे हम तालीम के अपने क़ौमी आदर्श कहते हैं. हमारे अपने ही रीतिरिवाज और चाल-ढाल के मुताबिक़ हमारा समाजी सुधार हो सकता है और तभी हमारा समाज पनप सकेगा. अब मैं यह कहना चाहता हूँ कि क़ौमी आदर्श क्या है ?

हमारे झंडे पर एक गोल पहिया है, धर्म का पहिया ऐसा पहिया जो घूमता रहता है, दुनिया या संसार का पहिया जो लगातार बदलता रहता है. अगर आप बदलने से इन्कार करते हैं तो धर्म की अपनी कल्पना को जड़ से ही आज काट डालते. बदलने के लिये आपको तैयार रहना चाहिये. पहिये का घूमना आपको बताता है कि इस दुनिया में अचल कोई चीज़ नहीं है, हर चीज़ लगातार हरकत कर रही है और आपको भी वक़्त के मुताबिक़ हरकत करना चाहिये. चुपचाप खड़े हो जाने या दो हज़ार बरस पहले की दुनिया को वापिस लाने की कोशिश करने से कोई फ़ायदा नहीं है. दुनिया हर दम आगे बढ़ रही है.

जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें एक तूफ़ान, शोर गुल मचा हुआ है. अपने धर्म के असूलों के मुताबिक़ हमें

آرتھک ڈھانچہ سنبھال لیا اور اپنی بدستور حالت کو پہنچ گئے ؟ ہمیں سمجھ لینا چاہئے کہ آج ساری دنیا ہی ایک انقلابی دور سے نکل رہی ہے . موجودہ حالتوں کے خلاف لوگوں کو اسنتوش ہے' یہی نہیں' غصہ اور بغاوت کی بھاونا زور پکڑ رہی ہے .

یہ جو عام طور سے بے چینی چھائی ہوئی ہے اُس سے ہم بچ نہیں سکتے . یہ ہر جگہ موجود ہے . بسمارک نے ایک بار کہا تھا کہ عقلمند لوگ دوسروں کے تجربوں سے سیکھتے ہیں' لیکن بیوقوف لوگوں کو اپنے تجربوں سے سیکھنا پڑتا ہے جو بہت مہنگا اور دشواری کا سودا بیٹھتا ہے . مجھے یقین ہے کہ آپ کے صدر' چیف منسٹر وغیرہ جو سوالوں کا حل کرینگے تو دنیا کی دشا کو سمجھکر کرینگے اور اِس دیش کی موجودہ حالت کو سنبھالنے کے لئے جی جان سے پوری طاقت لگا دینگے .

اِس کالج میں دو جگہ ایسی بھی ہیں جن کے ذریعے اِس دیش کی پچھلی باتوں کو بتانے سمجھانے کی کوشش کی جاتی ہے . دوسرے دیشوں کے تجربوں سے ہم سیکھ سکتے ہیں لیکن ان کے نیتک یا راج کاجی سنگھٹنوں یا سنستھاؤں کی نقل ہمیں نہیں کرنا چاہئے . اگر ہم کہیں کہ ہمارے پاس ثبوت دینے کو کچھ ہے ہی نہیں اور نقل کی بنا ہمارا کام نہیں چل سکتا تو یہ روگی کے جیسی حالت ہے' جس سے پتہ چلتا ہے کہ ہمیں اپنے پر کوئی وشواس نہیں ہے . دوسرے دیشوں سے بھلے کچھ اُتساہ یا روشنی مل جائے لیکن اُن دیشوں سے ہمیں اپنا قومی چال چلن نہیں مل سکتا . اس لئے یہ مناسب ہے کہ یہ کالج اس چیز پر زور دیتے رہیں جسے ہم تعلیم کے اپنے قومی آدرش کہتے ہیں . ہمارے اپنے ہی ریت اور رواج اور چال ڈھال کے مطابق ہمارا سماجی سدھار ہو سکتا ہے اور تبھی ہمارا سماج پنپ سکیگا . اب میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ قومی آدرش کیا ہے ؟

ہمارے جھنڈے پر ایک گول پہیا ہے' دھرم کا پہیا ایسا پہیا جو گھومتا رہتا ہے' دنیا یا سنسار کا پہیا جو لگاتار بدلتا رہتا ہے . اگر آپ بدلنے سے انکار کرتے ہیں تو دھرم کی اپنی کلپنا کو جڑ سے ہی آج کاٹ ڈالتے بدلنے کے لئے آپ کو تیار رہنا چاہئے . پہئے کا گھومنا آپ کو بتاتا ہے کہ اس دنیا میں اچل کوئی چیز نہیں ہے' ہر چیز لگاتار حرکت کر رہی ہے اور آپ کو بھی وقت کے مطابق حرکت کرنا چاہئے . چپ چاپ کھڑے ہو جانے یا دو ہزار برس پہلے کی دنیا کو واپس لانے کی کوشش کرنے سے کوئی فائدہ نہیں ہے . دنیا ہر دم آگے بڑھ رہی ہے .

جس دنیا میں ہم رہتے ہیں اس میں ایک طوفان' شور غل مچا ہوا ہے . اپنے دھرم کے اصولوں کے مطابق ہمیں

आपके सद्र ने कहा कि इस कालिज में इन्सानियत की तालीम पर भी ज़ोर दिया जाता है. मैं भी महसूस करता हूं कि साइन्स और इन्सानियत में आज ज़रूरत से ज़ियादा भेद किया जा रहा है. आपके कालिज से सम्बन्ध रखने वाली एक महान हस्ती ने एक बार कहा था कि कलाकार कोई ख़ास क़िस्म का आदमी नहीं होता है, क्यों कि हर आदमी एक न एक ख़ास क़िस्म का कलाकार होता ही है.

हम कह सकते हैं कि इन्सानियत की तालीम से ताल्लुक़ रखने वाला आदमी कोई ख़ास क़िस्म का आदमी नहीं होता है बल्कि हर आदमी अपने काम-काज में इन्सानियत से ताल्लुक़ रखा करता है. चाहे उसने तकनीकी या इन्जीनियरी काम में महारत हासिल की हो या चाहे वह कुछ ही काम क्यों न करता हो, उसको अपना नज़रिया इन्सानी और अख़लाक़ी पाये पर रखना होगा. इसलिये यह ज़रूरी है कि इन्सान की शख़्सियत के विकास पर हम काफ़ी ज़ोर दें. यह भी ज़रूरी है कि इन्सान की आज़ादी को हम न दबायें, न सोचने की उसकी आज़ादी को दबायें और न उसे अपने ढंग से पूजा पाठ करने या काम करने से रोकें. इन्सान ही सारे नापों या दर्जों का बनाने वाला है, वही सारी भलाई-बेहतरी की बुनियाद है.

हमें आज राजकाजी आज़ादी हासिल है. लेकिन केवल राजकाजी आज़ादी से आर्थिक तरक़्क़ी आप से आप नहीं हो जाती. हमारी सरकारों की—केन्द्र वाली हो या सूबों की—परख इस बात से की जायगी कि उन्होंने आर्थिक और सनअती ऊंचाई कितनी हासिल की. कम पैदावार, बे-रोज़गारी, ज़ियादा-आबादी और बढ़ती ग़रीबी वग़ैरा के सवालों को हम ने कितना हल किया? यही वह ज़बरदस्त कसौटी है जिसमें से हमारी सरकारों को निकलना होगा.

आप ने सुना होगा कि नैपोलियन कहा करता था कि फ़ौजें पेट के बल चला करती हैं. आजकल के लोग कहा करते हैं कि एक राष्ट्र अपने पेट के बल चला करता है. जिन लोगों को खाना नसीब नहीं है उन का राष्ट्र कभी बड़ा नहीं बन सकता.

अनाज ख़ूब पैदा करो और ज़मीन सुधार की बातें सुनते सुनते हमारे कान पक गए और फिर भी हमें बताया जा रहा है कि हमें क़रीब सत्तर लाख टन अनाज बाहर से मंगाना होगा. सोचने की बात है कि क्या आंधी, बाढ़, तूफ़ान, भूचाल सिर्फ़ उसी देश में आते हैं जो ताज़ा आज़ाद हुआ हो. क्या पच्छिम में ऐसे देश नहीं हैं जो लड़ाई की भयंकर ज्वालाओं में से गुज़रे, जो क़रीब क़रीब एकदम बरबाद हो गए थे, लेकिन फिर भी उन्होंने अपना

آپ کے صدر نے کہا کہ اِس کالج میں انسانیت کی تعلیم پر بھی زور دیا جاتا ہے . میں بھی محسوس کرتا ہوں کہ سائنس اور انسانیت میں آج ضرورت سے زیادہ بھید کیا جا رہا ہے . آپ کے کالج سے سمبندھ رکھنے والی ایک مہان ہستی نے ایک بار کہا تھا کہ کلا کار کوئی خاص قسم کا آدمی نہیں ہوتا ہے' کیونکہ ہر آدمی ایک نہ ایک خاص قسم کا کلا کار ہوتا ہی ہے .

ہم کہہ سکتے ہیں کہ انسانیت کی تعلیم سے تعلق رکھنے والا آدمی کوئی خاص قسم کا آدمی نہیں ہوتا ہے بلکہ ہر آدمی اپنے کام کاج میں انسانیت سے تعلق رکھا کرتا ہے . چاہے اُس نے تکنیکی یا انجینیری کام میں مہارت حاصل کی ہو یا چاہے وہ کچھ ہی کام کیوں نہ کرتا ہو' اُسکو اپنا نظریہ انسانی اور اخلاقی پائے پر رکھنا ہوگا . اس لئے یہ ضروری ہے کہ انسان کی شخصیت کے وکاس پر ہم کافی زور دیں . یہ بھی ضروری ہے کہ انسان کی آزادی کو ہم نہ دبائیں' نہ سوچنے کی اُسکی آزادی کو دبائیں اور نہ اُسے اپنے ڈھنگ سے پوجا پاٹھ کرنے یا کام کرنے سے روکیں . انسان ہی سارے ناپوں یا درجوں کا بنانے والا ہے' وہی ساری بھلائی بہتری کی بنیاد ہے .

ہمیں آج راج کاجی آزادی حاصل ہے . لیکن کیول راج کاجی آزادی سے آرتھک ترقی آپ سے آپ نہیں ہو جاتی. ہماری سرکاروں کی—کیندر والی ہو یا صوبوں کی—پرکھ اِس بات سے کی جائیگی کہ انہوں نے آرتھک اور صنعتی اونچائی کتنی حاصل کی . کم پیداوار' بے روزگاری' زیادہ آبادی اور بڑھتی غریبی وغیرہ کے سوالوں کو ہم نے کتنا حل کیا ؟ یہی وہ زبردست کسوٹی ہے جس میں سے ہماری سرکاروں کو نکلنا ہوگا .

آپ نے سنا ہوگا کہ نیپولین کہا کرتا تھا کہ فوجیں پیٹ کے بل چلا کرتی ہیں . آج کل کے لوگ کہا کرتے ہیں کہ ایک راشٹر اپنے پیٹ کے بل چلا کرتا ہے . جن لوگوں کو کھانا نصیب نہیں ہے اُن کا راشٹر کبھی بڑا نہیں بن سکتا .

اناج خوب پیدا کرو اور زمین سدھار کی باتیں سنتے سنتے ہمارے کان پک گئے اور پھر بھی ہمیں بتایا یہ جاتا ہے کہ ہمیں قریب ستتر لاکھ ٹن اناج باہر سے منگانا ہوگا . سوچنے کی بات ہے کہ کیا آندھی' باڑھ' طوفان' زلزلے صرف اِسی دیش میں آتے ہیں جو تازہ آزاد ہوا ہو . کیا پچھم میں ایسے دیش نہیں ہیں جو لڑائی کی بھینکر جوالا میں سے گذرے' جو قریب قریب ایک دم برباد ہو گئے تھے' لیکن پھر بھی اُنہوں نے اپنا

पड़ोसी है, तुम्हारी दीवार से उसकी दीवार मिली तुम जंगल में सर खपाते हुए क्यों फिर रहे हो, क्यों ो ? तुम जो ख़ुदा को ढूंढ रहे हो, ढूँढते फिरते हो, ी ज़रूरत नहीं है, तुम ख़ुद ही ख़ुदा हो, तुम ख़ुद दा हो. जो चीज़ कभी गुम हुई ही नहीं उसे काहे के ँढते हो. तुम्हारे सिवा कोई है ही नहीं, कहाँ जाते ाँ जाते हो ?

تمہارا پڑوسی ہے . تمہاری دیوار سے اسکی دیوار ملی ہوئی ہے . تم جنگل میں سر کھپاتے ہوئے کیوں پھر رہے ہو' کیوں پھر رہے ہو؟ تم جو خدا کو ڈھونڈ رہے ہو' ڈھونڈتے پھرتے ہو' ڈھونڈنے کی ضرورت نہیں ہے' تم خود ہی خدا ہو' تم خود ہی خدا ہو . جو چیز کبھی گم ہوئی ہی نہیں اُسے کا ہے کے لئے ڈھونڈتے ہو . تمہارے سوا کوئی ہے ہی نہیں' کہاں جاتے ہو' کہاں جاتے ہو؟

क़ौमी तालीम का आदर्श

(डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृश्नन)

[30 दिसम्बर 1951 को बंगाल के जादवपुर ंजिनियरिंग कालिज के कन्वोकेशन में डाक्टर सर्वपल्ली ाकृश्नन को दावत दी गई थी. उस मौक़े पर उन्होंने बड़ी दर्द भरी और गम्भीर तक़रीर की. यहां हम के कुछ हिस्से का अनुवाद दे रहे हैं—एडीटर]

ाज की दुनिया में कुछ ऐसी सोसाइटियां और सिले चल पड़े हैं जिनमें इन्सान की हस्ती को दबा उसे सिर्फ़ एक पुतला-सा बनाने की कोशिश की जाती न्हें इस बात का कोई ख़याल नहीं है कि इन्सान की ी कितनी शानदार और दौलत मन्द चीज़ है. इसके ने इन्सान- इन्सान के फ़र्क़, उनकी सनक और उनका ापन वग़ैरा टिक नहीं पाते हैं. कहा यह जाता है कि ान को दबाने से समाज को फिर से बनाया जा गा. लेकिन यह निहायत निकम्मी और नादानी की ल है.

अकसर लोग पूछते हैं कि आप को इन्सान की निजी ी का विकास ज़ियादा पसन्द है या राष्ट्र का फिर ाव ? पहले क्या चीज़ चाहिये ? यह वैसा ही सवाल है कि कोई यह पूछे कि मुर्ग़ी पहले होती है या अंडा. सवाल का जवाब हम यह देंगे कि इन्सान की निजी ी का विकास हम ज़रूर चाहते हैं और जब यह ास हम कर लेते हैं तो सोसाइटी या समाज भी ख़ुद र जायेगा. कोई भी योजना जिसमें इन्सान की हस्ती दौलत मिटा दी जाती है या इन्सान की निजी शख़्सियत ्म करने की कोशिश की जाती है उसे कामयाब योजना ीं कहा जा सकता.

قومی تعلیم کا آدرش

(ڈاکٹر سروپلی رادھا کرشنن)

[30 دسمبر 1951 کو بنگال کے جادو پور انجینیرنگ کالج کے کنووکیشن میں ڈاکٹر سرو پلی رادھا کرشنن کو دعوت دی گئی تھی . اُس موقعے پر اُنہوں نے ایک بڑی درد بھری اور گمبھیر تقریر کی . یہاں ہم اُس کے کچھ حصے کا انوواد دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

آج کی دنیا میں کچھ ایسی سوسائٹیاں اور سلسلے چل پڑے ہیں جن میں انسان کی ہستی کو دبا کر اُسے صرف ایک پتلا سا بنانے کی کوشش کی جاتی ہے . انہیں اس بات کا کوئی خیال نہیں ہے کہ انسان کی ہستی کتنی شاندار اور دولت مند چیز ہے . اِس کے سامنے انسان انسان کے فرق' ان کی سنک اور اُن کا بھونڈاپن وغیرہ تک نہیں پاتے ہیں . کہا یہ جاتا ہے کہ انسان کو دبانے سے سماج کو پھر سے بنایا جا سکیگا . لیکن یہ نہایت نکمی اور نادانی کی دلیل ہے .

اکثر لوگ پوچھتے ہیں کہ آپ کو انسان کی نجی ہستی کا وکاس زیادہ پسند ہے یا راشٹر کا پھر بناؤ ؟ پہلے کیا چیز چاہئے ! یہ ویسا ہی سوال ہے جیسے کہ کوئی یہ پوچھے کہ مرغی پہلے ہوتی ہے یا انڈا . اِس سوال کا جواب ہم یہ دینگے کہ انسان کی نجی ہستی کا وکاس ہم ضرور چاہتے ہیں اور جب یہ وکاس ہم کر لیتے ہیں تو سوسائٹی یا سماج بھی خود سدھر جائیگا . کوئی بھی یوجنا جس میں انسان کی ہستی کی دولت مٹا دی جاتی ہے یا انسان کی نجی شخصیت ختم کرنے کی کوشش کی جاتی ہے اُسے کامیاب یوجنا نہیں کہا جا سکتا .

तालीम दी गई है. जो लोग फ़रक़ देख देख कर ख़ुश नहीं होते उन्हें इस बारे में बौद्ध मज़हब और वेदान्त दोनों की तालीम एक ही दिखाई देगी. अपने एक उद्वान में समाधि से उठने के बाद महात्मा बुद्ध ने कहा था—"जो आदमी कामयाबी के साथ ब्रह्मचर्य के व्रत को पूरा कर लेता है और जिसे पूरा ज्ञान हासिल हो गया है वही ब्रह्म की बाबत दूसरे उन लोगों से बात करने का हक़ रखता है जो उस रास्ते पर चलना चाहते हैं. वही आदमी अपने को ब्राह्मन कह सकता है." महात्मा बुद्ध के यह शब्द बिल्कुल उपनिशदों के शब्दों से मिलते हैं. केवल उनकी भाषा संस्कृत की जगह पाली है.

बुद्ध से बहुत पहले इसी तरह की रूहानी हालत में अश्टावक्र ने कहा था—"अहो अहम्! नमो मह्यम!" इसके बहुत दिनों बाद बायज़ीद बुस्तामी ने कहा था—"सुबहानी व आज़म शानी" दोनों का मतलब एक ही है यानी यह कि मैं कैसी अजीब ग़रीब चीज़ हूँ मेरी शान कितनी बड़ी है. उपनिशदों में बार बार कहा गया है—"अहं ब्रह्म अस्मि" यानी मैं ही ब्रह्म हूं, "यस्त्वमसि सो अहम् अस्मि" जो तू है वही मैं हूं. "इदम् सर्वं असि, अहम् एव इदम् सर्वम्" यानी यह सब कुछ तू ही है और मैं ही यह सब कुछ हूँ.

वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों की बातें और दोनों के विचार एक दूसरे से इतने मिलते हैं कि अगर उन दोनों का किसी तीसरी भाषा में तरजुमा किया जावे तो उनमें किसी तरह का भी फ़रक़ दिखाई नहीं दे सकता.

शिव पुरान में लिखा है—"योगी लोग शिव यानी ईश्वर को अपनी आत्मा के अन्दर देखते हैं, पत्थर या मिट्टी की मूर्तियों के अन्दर नहीं. और जो लोग उस ईश्वर को अपने अन्दर नहीं देख पाते वह उसे तीर्थों में ढूंढते फिरते हैं."

शम्स तबरेज़ी ने कहा है—

> ऐ क़ौम ब हज रफ़्ता कुजाएद कुजाएद,
> माशूक़ हमीं जास्त बेयाएद बेयाएद!
> माशूक़े तो हमसाया तो दीवार ब दीवार,
> दर बादिया सर गश्ता चराएद चराएद!
> आनाँ कि तलबगार ख़ुदाएद ख़ुदाएद,
> हाजत ब तलब नेस्त शुमाएद शुमाएद.
> चीज़े कि न गर्देद गुम अज़ बहर च जोएद
> कस ग़ैर शुमा नेस्त कुजाएद कुजाएद.

यानी—ऐ लोगो, तुम जो हज को जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो? तुम्हारा माशूक़ यहीं मौजूद है, वापस आ जाओ, वापस आ जाओ. तुम्हारा माशूक़

تعلیم دی گئی ہے . جو لوگ فرق دیکھ دیکھ کر خوش نہیں ہوتے اُنھیں اِس بارے میں بودھ مذہب اور ویدانت دونوں کی تعلیم ایک ہی دکھائی دیگی . اپنے ایک اُدان میں سمادھی سے اُٹھنے کے بعد مہاتما بدھ نے کہا تھا—' جو آدمی کامیابی کے ساتھ برھمچریہ کے ورت کو پورا کرلیتا ہے اور جسے پورا گیان حاصل ہوگیا ہے وہی برھمہ کی بابت دوسرے اُن لوگوں سے بات کرنے کا حق رکھتا ہے جو اُس راستے پر چلنا چاہتے ہیں . وہی آدمی اپنے کو براہمن کہہ سکتا ہے ." مہاتما بدھ کے یہ شبد بالکل اُپنشدوں کے شبدوں سے ملتے ہیں . کیول اُنکی بھاشا سنسکرت کی جگہ پالی ہے .

بدھ سے بہت پہلے اِسی طرح کی روحانی حالت میں اشٹاوکر نے کہا تھا—"اہوا ہم ! نمو مہیم !" اسکے بہت دنوں بعد بایزید بسطامی نے کہا تھا—"سبحانی و اعظم شانی" دونوں کا مطلب ایک ہی ہے یعنی یہ کہ میں کیسی عجیب غریب چیز ہوں . میری شان کتنی بڑی ہے . اُپنشدوں میں بار بار کہا گیا ہے—"اہم برھمہ اسمی" یعنی میں ہی برھمہ ہوں' "یستومسی سواہم اسمی" جو تو ہے وہی میں ہوں . اِدم سروم اسی اہم ایو اِدم سروم" یعنی یہ سب کچھ تو ہی ہے اور میں ہی یہ سب کچھ ہوں .

ویدانت اور تصوف دونوں کی باتیں اور دونوں کے وچار ایک دوسرے سے اِتنے ملتے ہیں کہ اگر اُن دونوں کا کسی تیسری بھاشا میں ترجمہ کیا جاوے تو اُن میں کسی طرح کا بھی فرق دکھائی نہیں دے سکتا .

شیو پران میں لکھا ہے—"یوگی لوگ شیو یعنی ایشور کو اپنی آتما کے اندر دیکھتے ہیں' پتھر یا مٹی کی مورتیوں کے اندر نہیں . اور جو لوگ اُس ایشور کو اپنے اندر نہیں دیکھ پاتے وہ اُسے تیرتھوں میں ڈھونڈتے پھرتے ہیں .

شمس تبریزی نے کہا ہے—

> اے قوم بہ حج رفتہ کجائید کجائید'
> معشوق ہمیں جاست بیائید بیائید!
> معشوق تو ہمسایہ تو دیوار بہ دیوار'
> دربادیہ سرگشتہ چرائید چرائید!
> آناں کہ طلبگار خدائید خدائید'
> حاجت بہ طلب نیست شمائید شمائید'
> چیزے کہ نہ گردید گم از بہر چہ جوئید
> کس غیر شمانیست کجائید کجائید .

یعنی—اے لوگو' تم جو حج کو جا رہے ہو' کہاں جا رہے ہو' کہاں جا رہے ہو؟ تمہارا معشوق یہیں موجود ہے' واپس آجاؤ' واپس آجاؤ . تمہارا معشوق

…मने ऊपर परोक्ष ज्ञान और अपरोक्ष ज्ञान की बात …है. एक अरब फ़िलासफ़र का कहना है--"इल्म दो …म का है. एक सुना हुआ और दूसरा वह जिसे दिल …न्दर महसूस किया गया हो. सुने हुए इल्म से उस … तक कोई नतीजा पैदा नहीं हो सकता जब तक अपने …र के किसी तजरबे के ज़रिये से रूह ने उसे न जांच …ा हो."

एक और सूफ़ी का कहना है—"ख़ुदा ने हर आदमी जान में एक कसौटी रख दी है जिस पर कस कर वह यक़ीन के साथ सचाई को भूट से अलग कर सकता …

चीन की किताब 'सु-किंग' में लिखा है कि—"यह कसौटी …र ने हर छोटे से छोटे आदमी को दे रक्खी है." इसी 'कान्शन्स,' 'ज़मीर' या 'अन्तरात्मा' कहा जाता ' यही आदमी के अन्दर अल्लाह की आवाज़ है. हिन्दू …ाबों में इसे तरह तरह से बयान किया गया है. मोहम्मद …ब की एक हदीस है—"इस्तिफ़तह क़लबक" यानी … कभी तुम्हें शक हो तो अपने दिल पूछो.

चीनी किताब 'वांग यांग मिंग' में लिखा है—"हर …ल के अन्दर एक 'सजिन' यानी जानने वाला रहता है. आदमी उस पर पूरी तरह भरोसा नहीं करता. इसी …ये उसकी आवाज़ अन्दर ही अन्दर दब जाती है."

संस्कृत में जिसे परोक्ष ज्ञान कहा गया है उसी को …द ज्ञान या आगम भी कहते हैं और जिसे अपरोक्ष …न कहा गया है उसे प्रत्यक्ष ज्ञान भी कहते हैं. अरबी में …हें मतबूअ और मसमूअ या माक़ूलात और मनक़ूलात … कहते हैं.

संस्कृत में जिसे साधारन ज्ञान और योगज ज्ञान कहते उन ही को अरबी में इल्म लदुन्नी और इल्म कसबी …हते हैं. योगज ज्ञान को समाधिज ज्ञान या प्रतिभा ज्ञान …ी कहते हैं. ऐसे ही इल्म लदुन्नी को इल्म वजदानी या …इहामी, या कशफ़ा या इशराक़ी भी कहते हैं और इल्म …सबी को इल्म इकतसाबी या इस्तदलाली भी कहा जाता . इसलाम में 'अनल हक़' या 'हक़ तुई' का जो मतलब वही संस्कृत में 'अहं ब्रह्म' और 'तत्त्वमसि' का है. अरबी …ी कहावत है "क़लबुल इनसान बैतुर्रहमान" इसका ठीक …संस्कृत तरजुमा है "आत्मा अन्तर हृदये." इंजील में भी …हा गया है—"तुम लोग भगवान का मन्दिर हो." ख़लीफ़ा …ली कहा करते थे--"ईमान वाले आदमी का दिल …ल्लाह का तख़्त है." हज़रत ईसा ने कहा है—"मैं और …रा बाप एक हैं." "ज़रथुस्त्री धर्म में कहा गया है—"नेस्त …ज़द मगर यज़दां" जिसके लफ़्ज़ी मानी हैं 'लाइलाह …ल्लल्लाह.'' बौद्ध धर्म और जैन धर्म में भी ठीक यही

ہم نے اوپر پروکش گیان اور اپروکش گیان کی بات کہی ہے . ایک عرب فلاسفر کا کہنا ہے—'' علم دو قسم کا ہے . ایک سنا ہوا اور دوسرا وہ جسے دل کے اندر محسوس کیا گیا ہو . سنے ہوئے علم سے اُس وقت تک کوئی نتیجہ پیدا نہیں ہو سکتا جب تک اپنے اندر کے کسی تجربے کے ذریعے سے روح نے اُسے نہ جانچ لیا ہو .''

ایک اور صوفی کا کہنا ہے—''خدا نے ہر آدمی کی جان میں ایک کسوٹی رکھدی ہے جسپر کس کر وہ پورے یقین کے ساتھ سچائی کو جھوٹ سے الگ کرسکتا ہے.''

چین کی کتاب 'سوکنگ' میں لکھا ہے کہ ''یہ کسوٹی ایشور نے ہر چھوٹے سے چھوٹے آدمی کو دے رکھی ہے.'' اِسی کو 'کانشنس' ''ضمیر' یا 'انتر آتما' کہا جاتا ہے . یہی آدمی کے اندر اللہ کی آواز ہے. ہندو کتابوں میں اِسے طرح طرح سے بیان کیا گیا ہے . محمد صاحب کی ایک حدیث ہے--''استفتہ قلبک'' یعنی جب کبھی تمہیں شک ہو تو اپنے دل سے پوچھو .

چینی کتاب 'وانگ یانگ منگ' میں لکھا ہے—''ہر دل کے اندر ایک سجن یعنی جاننے والا رہتا ہے . پر آدمی اُس پر پوری طرح بھروسہ نہیں کرتا . اِسی لئے اُسکی آواز اندر ہی اندر دب جاتی ہے.''

سنسکرت میں جسے پروکش گیان کہا گیا ہے اُسی کو شبد گیان یا آگم بھی کہتے ہیں اور جسے اپروکش گیان کہا گیا ہے اُسے پرتیکش گیان بھی کہتے ہیں . عربی میں انہیں مطبوع اور مسموع یا معقولات اور منقولات بھی کہتے ہیں .

سنسکرت میں جسے سادھارن گیان اور یوگج گیان کہتے ہیں اُن ہی کو عربی میں علم‌لدنی اور علم‌کسبی کہتے ہیں . یوگج گیان کو سمادھج گیان یا پرتبھا گیان بھی کہتے ہیں . ایسے ہی علم‌لدنی کو علم‌وجدانی یا الہامی' یا کشفہ یا اشراقی بھی کہتے ہیں اور علم‌کسبی کو علم‌اکتسابی یا استدلالی بھی کہا جاتا ہے . اسلام میں 'اناالحق' یا 'حق توئی' کا جو مطلب ہے وہی سنسکرت میں 'اہم برہمہ' اور 'تتوم آسی' کا ہے . عربی کی کہاوت ہے ''قلب‌انسان بیت الرحمان'' اِسکا ٹھیک سنسکرت ترجمہ ہے ''آتما انتر ہردیے.'' انجیل میں بھی کہا گیا ہے—''تم لوگ بھگوان کا مندر ہو.'' خلیفہ علی کہا کرتے تھے—''ایمان والے آدمی کا دل اللہ کا تخت ہے.'' حضرت عیسیٰ نے کہا ہے—''میں اور میرا باپ ایک ہیں.'' زرتھستی دھرم میں کہا گیا ہے—''نیست ایزد مگریزداں'' جسکے لفظی معنی ہیں . ''لاإله إلا الله.'' بودھ دھرم اور جین دھرم میں بھی ٹھیک یہی

मुसलिम सूफ़ियों में यह बात मशहूर है कि सब से पहले हज़रत अली ने कुछ चुने हुए लोगों को, जो इस बात के हक़दार थे, इल्म रूहानी यानी तसव्वुफ़ की तालीम दी. यह इल्म रूहानी दुनिया के शुरू से चला आता है. इसी को दिव्य ज्ञान या थियासफ़ी कहते हैं. यह रूह की साइन्स है. इसे रूहानी साइन्स भी कहा जा सकता है. इसी को गुप्त विद्या या इल्म सीना कहते हैं. अंगरेज़ी में इसी को 'डाक्टरिन आफ़ दी हार्ट' कहते हैं. दरअसल यह इल्म सीना ब सीना ही यानी दिल से दिल को ही पहुंचता रहा है और सिर्फ़ फ़क़ीरों और ज्ञानियों ने इसे जाना है. आम लोग न इसे समझ सकते हैं और न उनके लिये यह फ़ायदे का हो सकता है. आम लोगों से इसकी बात चीत जितनी हो सकती है वह क़िस्से कहानियों, उपमाओं, इस्तआरों और मुतशाबेहात के ज़रिये ही हो सकती है. उपनिशद कहते हैं कि यह चीज़ें ज्ञान की आँखों से ही देखी जा सकती हैं.

सचमुच परम आत्मा सूरज की किरनों की तरह साफ़ और रौशन है. वह हर वक़्त हमारे पास है, हमारे अन्दर है, वही हमारी आत्मा है, फिर भी हम उसे नहीं देख पाते.

सूफ़ी कहता है—

ग़ायब जो हो ख़ुदा से आलम है उसको हू का
जिस में अनानियत है मौक़ा नहीं है तू का.

यानी जिसका दिल ख़ुदा से दूर है वह सिर्फ़ यही कह सकता है कि 'ख़ुदा है' लेकिन जिसने उस दिलबर को अपने अन्दर पा लिया है वह फिर ख़ुदा को 'वह' या 'तू' से याद नहीं कर सकता. वह फिर यही कहेगा—

ज़ाहिदे गुमराह कि मैं किस तरह हमराह हूं
वह कहे अल्लाह है और मैं कहूँ अल्लाह हूँ.

उपनिशद में लिखा है—

"जो यह समझता है कि ब्रह्म है उसका ज्ञान परोक्ष यानी आँखों से ओझल है, और जो जानता है कि मैं ब्रह्म हूँ उसका ज्ञान अपरोक्ष है यानी उसने सचमुच ख़ुदा को देख लिया है."

ज़रथुस्त्र (ज़रतुश्त) की एक गाथा में कहा गया है—

"मज़दाओ सख़ारे मैरेस्तो" यानी सिर्फ़ उस एक अल्लाह ताला की ही इबादत करनी चाहिये.

उपनिशदों में कहा गया है—"केवल आत्मा की ही बात सुननी चाहिये. उसी पर सोचना चाहिये. उसी पर ग़ौर करना चाहिये और कोई न जानने की चीज़ है और न जानने वाला है."

مسلم صوفیوں میں یہ بات مشہور ہے کہ سب سے پہلے حضرت علی نے کچھ چنے ہوئے لوگوں کو' جو اس بات کے حق دار تھے' علم روحانی یعنی تصوف کی تعلیم دی. یہ علم روحانی دنیا کے شروع سے چلا آتا ہے. اسی کو دیویہ گیان یا تھیاسفی کہتے ہیں. یہ روح کی سائنس ہے. اسے روحانی سائنس بھی کہا جا سکتا ہے. اسی کو گپت ودیا یا علم سینہ کہتے ہیں. انگریزی میں اسی کو 'ڈاکٹرین آف دی ہارٹ' کہتے ہیں. دراصل یہ علم سینہ بہ سینہ ہی یعنی دل سے دل کو ہی پہنچتا رہا ہے اور صرف فقیروں اور گیانیوں نے اسے جانا ہے. عام لوگ نہ اسے سمجھ سکتے ہیں اور نہ ان کے لئے یہ فائدے کا ہوسکتا ہے. عام لوگوں سے اسکی بات چیت جتنی ہو سکتی ہے وہ قصے کہانیوں' اپماؤں' استعاروں اور متشابہات کے ذریعے ہی ہوسکتی ہے. اپنشد کہتے ہیں کہ یہ چیزیں گیان کی آنکھوں سے ہی دیکھی جا سکتی ہیں.

سچ مچ پرم آتما سورج کی کرنوں کی طرح صاف اور روشن ہے. وہ ہر وقت ہمارے پاس ہے' ہمارے اندر ہے' وہی ہماری اپنی آتما ہے' پھر بھی ہم اسے نہیں دیکھ پاتے.

صوفی کہتا ہے—

غائب جو ہو خدا سے عالم ہے اسکو ہو کا
جس میں انانیت ہے موقع نہیں ہے تو کا.

یعنی جس کا دل خدا سے دور ہے وہ صرف یہی کہ سکتا ہے کہ 'خدا ہے' لیکن جس نے اس دلبر کو اپنے اندر پا لیا ہے وہ پھر خدا کو 'وہ' یا 'تو' سے یاد نہیں کر سکتا. وہ پھر یہی کہے گا—

زاہد گمراہ کہ میں کسطرح ہمراہ ہوں
وہ کہے اللہ ہے اور میں کہوں اللہ ہوں

اپنشد میں لکھا ہے—

"جو یہ سمجھتا ہے کہ برہمہ ہے اس کا گیان پروکش یعنی آنکھوں سے اوجھل ہے' اور جو جانتا ہے کہ میں برہمہ ہوں اس کا گیان اپروکش ہے یعنی اس نے سچ مچ خدا کو دیکھ لیا ہے."

زرتھسترو (زرتشت) کی ایک گاتھا میں کہا گیا ہے—

"مزداو سکھارے مے رستو" یعنی صرف اس ایک اللہ تعالیٰ کی ہی عبادت کرنی چاہئے.

اپنشدوں میں کہا گیا ہے—"کیول آتما کی ہی بات سننی چاہئے. اسی پر سوچنا چاہئے. اسی پر غور کرنا چاہئے اور کوئی نہ جاننے کی چیز ہے اور نہ جاننے والا ہے."

से पहले तरह तरह के ज्ञान की जरूरत है. हजरत मोहम्मद ने कहा है—"जो अपनी जिन्दगी इल्म के हासिल करने में लगा देता है वह कभी नहीं मरता." हजरत अली ने कहा है—"फलसफा मोमिनों की खोई हुई भेड़ है, उसे फिर से ले लेना चाहिये. अगर वह मुनकिरों या काफिरों से मिले तो भी ले लेनी चाहिये." शेख सादी ने कहा है कि "बिना इल्म के आदमी खुदा को नहीं पहचान सकता." वेदान्त की भी यही तालीम है.

इंजील में लिखा है—

"देखो ईश्वर का राज तुम्हारे अन्दर है."

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम ही ईश्वर का मन्दिर हो और ईश्वर की आत्मा तुम में रहती है."

"वह ईश्वर हम में से किसी से दूर नहीं है. क्योंकि हम उसी में रहते हैं, उसी में चलते फिरते हैं और उसी में जीते हैं.........ईश्वर एक है..........उसकी आत्मा आदमी के अन्दर काम करती है.........एक ईश्वर सब का पैदा करने वाला जो सब से ऊपर है और तुम सब में है."

गीता में श्री कृश्न ने कहा है—"ऐ अर्जुन ! मेरे सिवा और कोई चीज असल में है ही नहीं."

वेदों के सबसे आखीर के हिस्सों को उपनिशद कहते हैं. 'उपनिशद' शब्द का अर्थ है 'गुरु के बिलकुल पास बैठना.' उपनिशद वह ज्ञान है जो गुरु या पीर सच्चे खोजी को धीरे से उसके कान में बताता था. इस तरह का ज्ञान जब तक धीरे से न दिया जाय और पूरे चित्त से और भक्ति भाव से न सुना जाय दिल में नहीं उतर सकता और न आत्मा को ऊँचा ले जा सकता है. यहूदी, ईसाई, मुसलिम और हिन्दू हर मजहब में और हर देश में इस तरह के खोजी लोगों के गिरोह रहे हैं. यहूदियों में एस्से-नीज (संस्कृत सन्यासी) इसी तरह का एक गिरोह था. ईश्वर अल्लाह और आत्मा-रूह की बातें केवल सच्चे खोजी, नम्र, दीन, शुद्ध हृदय, शुद्ध चरित्र के और खुले दिल के लोग ही समझ सकते हैं. झगड़ालू, घमन्डी या हलके दिल के नहीं. जिस तरह मकान की खिड़कियां बन्द होने पर उसमें सूरज की रोशनी नहीं आ सकती वैसे ही दिल और दिमाग के बन्द होने पर आत्मज्ञान या मारफत इलाही हासिल नहीं हो सकता.

कुरान में लिखा है:

"वफी अनफुसेकुम अफला तबसेरून"

यानी मैं (अल्लाह) तुम्हारे अन्दर, तुम्हारे सांस के अन्दर मौजूद हूँ, लेकिन तुम नहीं देख पाते.

سے پہلے طرح طرح کے گیان کی ضرورت ہے . حضرت محمد نے کہا ہے—" جو اپنی زندگی علم کے حاصل کرنے میں لگا دیتا ہے وہ کبھی نہیں مرتا ." حضرت علی نے کہا ہے— " فلسفہ مومنوں کی کھوئی ہوئی بھیڑ ہے' اسے پھر سے لے لینا چاہئے . اگر وہ منکروں یا کافروں سے ملے تو بھی لے لینی چاہئے ." شیخ سعدی نے کہا ہے کہ" بنا علم کے آدمی خدا کو نہیں پہچان سکتا ."

ویدانت کی بھی یہی تعلیم ہے .

انجیل میں لکھا ہے—

" دیکھو ایشور کا راج تمہارے اندر ہے ."

" کیا تم نہیں جانتے کہ تم ہی ایشور کا مندر ہو اور ایشور کی آتما تم میں رہتی ہے ."

" وہ ایشور ہم میں سے کسی سے دور نہیں ہے . کیونکہ ہم اسی میں رہتے ہیں' اسی میں چلتے پھرتے ہیں اور اسی میں جیتے ہیں .... ایشور ایک ہے ...... اس کی آتما آدمی کے اندر کام کرتی ہے .... ایک ایشور سب کا پیدا کرنے والا جو سب سے اوپر ہے اور تم سب میں ہے ."

گیتا میں شری کرشن نے کہا ہے—" اے ارجن ! میرے سوا اور کوئی چیز اصل میں ہے ہی نہیں ."

ویدوں کے سب سے آخیر کے حصوں کو اپنشد کہتے ہیں . ' اپنشد ' شبد کا ارتھ ہے 'گرو کے بالکل پاس بیٹھنا .' اپنشد وہ گیان ہے جو گرو یا پیر سچے کھوجی کو دھیرے سے اس کے کان میں بتاتا تھا . اسطرح کا گیان جب تک دھیرے سے نہ دیا جائے اور پورے چت سے اور بھکتی بھاؤ سے نہ سنا جائے دل میں نہیں اتر سکتا اور نہ آتما کو اونچا لے جا سکتا ہے . یہودی' عیسائی' مسلم اور ہندو ہر مذہب میں اور ہر دیش میں اس طرح کے کھوجی لوگوں کے گروہ رہے ہیں . یہودیوں میں ایسشینیز (سنسکرت سنیاسی) اسی طرح کا ایک گروہ تھا . ایشور اللہ اور آتما روح کی باتیں کیول سچے کھوجی' نمر' دین' شدھ ہردے' شدھ چرتر کے اور کھلے دل کے لوگ ہی سمجھ سکتے ہیں . جھگڑالو' گھمنڈی یا ہلکے دل کے نہیں . جس طرح مکان کی کھڑکیاں بند ہونے پر اس میں سورج کی روشنی نہیں آ سکتی ویسے ہی دل اور دماغ کے بند ہونے پر آتم گیان یا معرفت الٰہی حاصل نہیں ہوسکتی .

قرآن میں لکھا ہے :

" وفی انفسکم افلا تبصرون "

یعنی میں (اللہ) تمہارے اندر' تمہارے سانس کے اندر موجود ہوں' لیکن تم نہیں دیکھ پاتے .

यानी तू ख़ुदा को भी पाना चाहता है और इस ज़लील
या को भी हासिल करना चाहता है. यह सिर्फ़ तेरा
ाल है. यह नामुमकिन और पागलपन है.

उपनिशद् में लिखा है—

"बुद्धिमान आदमी जानते हैं कि वासनाओं यानी
हिशों के ज़रिये आदमी का मन संसार में फंसा रहता
इन ख़ाहिशों से आज़ाद हो कर ही आत्मा आज़ाद हो
ती है."

इंजील में लिखा है—

"अगर तुम ख़ुदा को पा जाओ और उसके नेकी के
ज को हासिल कर लो तो बाक़ी सब चीज़ें तुम्हें अपने
ाप मिल जायँगी."

उपनिशद् में लिखा है—

"हक़ यानी सचाई को जान कर आदमी जो चाहेगा
ते हासिल कर लेगा."

सूफ़ी कहता है—

ख़ुदा को पाया तो क्या न पाया,
सभी मिला जो मिला ख़ुदा है.
ज़रा तो सोचे कभी भी ख़ालिक़ ‡
से उसकी ख़िलक़त § हुई जुदा है.
सभी तो मैं हूँ, सभी तो मेरा
हमेशा आती यही निदा* है,
तु ही है ख़ालिक़, तुम्ही में ख़िलक़त
ख़याले ख़ायल† तु ही ख़ुदा है.

जिस तरह डाक्टरी के मामले में उसी तरह दीन धर्म के मामले में. बड़े बड़े डाक्टरों और बड़ी बड़ी दवाओं से लोग ख़ुश रहते हैं. तन्दुरुस्ती अच्छी रखने के लिये लोगों को साफ़ हवा, साफ़ पानी और साफ़ सादे खाने की सलाह दी जावे तो उसका उनके दिल पर उतना असर नहीं होता. हालांकि बड़ी बड़ी दवाएँ अधिक से अधिक यह कर सकती हैं कि बीमारी को अच्छा कर दें. पर अगर नुक़सान कर जाएं तो और नई बीमारियाँ पैदा कर देती हैं. जब कि साफ़ हवा, पानी और सादा खाना तनदुरुस्ती को भी ठीक रखता है और बीमारी को भी आदमी से दूर रखता है. मगर आज कल की बनावटी ज़िन्दगी में साफ़ हवा, साफ़ पानी और साफ़ खाने का मिलना भी मुशकिल है. यही हाल हमारा दीन धर्म के मामले में हो रहा है.

सब मज़हब यही तालीम देते हैं कि इनसान का वजूद ख़ुदा से है. लेकिन अपने अन्दर के ख़ुदा को पहचानने

‡ ख़ालिक़ = सृष्टि कर्ता. § ख़िलक़त = सृष्टि.
* निदा = आवाज़. † ख़याले ख़ायल = विचारक का विचार.

یعنی تو خدا کو بھی پانا چاهتا هے اور اِس ذلیل دنیا کو بھی حاصل کرنا چاهتا هے . یہ صرف تیرا خیال هے . یہ ناممکن اور پاگل پن هے .

اُپنشد میں لکھا ھے—

'' بدھی مان آدمی جانتے هیں کہ واسناؤں یعنی خواهشوں کے ذریعے آدمی کا من سنسار میں پھنسا رهتا هے . اِن خواهشوں سے آزاد هو کر هی آتما آزاد هو سکتی هے .''

انجیل میں لکھا ھے—

'' اگر تم خدا کو پاجاؤ اور اُس کے نیکی کے راج کو حاصل کر لو تو باقی سب چیزیں تمھیں اپنے آپ مل جائینگی .''

اُپنشد میں لکھا ھے—

'' حق یعنی سچائی کو جان کر آدمی جو چاهے گا اسے حاصل کر لے گا .''

صوفی کہتا ھے—

خدا کو پایا تو کیا نہ پایا'
سبھی ملا جو ملا خدا هے .
ذرا تو سوچے کبھی بھی خالق‡
سے اُسکی خلقت§ هوئی جدا هے .
سبھی تو میں هوں سبھی تو میرا
همیشہ آتی یہی ندا* هے '
تو هی هے خالق' تجھی میں خلقت
خیال خایل† تو هی خدا هے .

جس طرح ڈاکٹری کے معاملے میں اُسی طرح دین دھرم کے معاملے میں . بڑے بڑے ڈاکٹروں اور بڑی بڑی دواؤں سے لوگ خوش رهتے هیں . تندرستی اچھی رکھنے کے لئے لوگوں کو صاف هوا' صاف پانی اور صاف سادے کھانے کی صلاح دی جاوے تو اُس کا ان کے دل پر اُتنا اثر نہیں هوتا . حالانکہ بڑی بڑی دوائیں ادھک سے ادھک یہ کر سکتی هیں کہ بیماری کو اچھا کر دیں . پر اگر نقصان کر جائیں تو اور نئی بیماریاں پیدا کر دیتی هیں. جبکہ صاف هوا' پانی اور سادہ کھانا تندرستی کو بھی ٹھیک رکھتا هے اور بیماری کو بھی آدمی سے دور رکھتا هے . مگر آج کل کی بناوٹی زندگی میں صاف هوا' صاف پانی اور صاف کھانے کا ملنا بھی مشکل هے . یہی حال همارا دین دھرم کے معاملے میں هو رها هے .

سب مذهب یہی تعلیم دیتے هیں کہ انسان کا وجود خدا سے هے . لیکن اپنے اندر کے خدا کو پہچاننے

‡ خالق = سرشٹی کرتا § خلقت = سرشٹی
* ندا = آواز . † خیال خایل = وچارک کا وچار .

यानी शुद्ध अद्वैत रूप के ऊपर ग़ैरियते एतबारी यानी मिथ्या द्वैतता का जामा पहर लिया. ख़ुदाय मुरक्कब, परमआत्मा यानी ब्रह्म ने मायावी काम संकल्प यानी शहूनात के ज़रिये जीव आत्मा यानी ख़ुदाए मोअय्यन की शकल अख़्तियार की. अब रूह यानी जीव आत्मा को फिर से अपने विराट आलमगीर रूप को जानना और पहचानना है. इसी एक सचाई को सब मज़हबों ने तरह तरह से बयान किया है. यह सचाई सब से सीधी लेकिन सब से मुशकिल सचाई है. वजह यह है कि हम सब ख़ुदी और ग़ैरियत की भूल भुलैयाँ में इस बुरी तरह फंसे हुए हैं कि वह वहदानियत यानी अद्वैत की बेलाग सचाई को हम समझना भी नहीं चाहते. एक सूफ़ी कहता है—

चीस्त दुनिया ? अज़ ख़ुदा ग़ाफ़िल शुदन
नै कि माश-ओ-नुक़रा-ओ-फ़रज़न्द-ओ-ज़न
न गुम शुद कि रूयश ज़ दुनिया बताफ़्त
कि गुमगशतए ख़ेशरा बाज़ याफ़्त.

यानी दुनिया क्या है ? रोज़ी, चांदी, बेटा या बीवी दुनिया नहीं हैं. ख़ुदा से ग़ाफ़िल होना दुनिया है. जिस किसी ने दुनिया से अपना मुंह मोड़ा वह फिर मिट नहीं सकता, क्योंकि वह अपनी भूली हुई असलियत को फिर से जान जाता है.

न कोई परदा है उसके दर पर
न रूए रोशन नक़ाब में है,
तू आप अपनी ख़ुदी से ए दिल
हिजाब* में है हिजाब में है.

चीनी महात्मा लाओ-त्से ने अपनी किताब 'ताओ-ते-किंग' में लिखा है—

"उस अनन्त को जान लेना ही असली ज्ञान है, उसे न जानने से नफ़्स यानी इन्द्रियाँ ज़ोर करती हैं और यही बुराई है."

ठीक यही बात श्री कृश्न ने बार बार गीता में कही है.

इंजील में लिखा है—

"तुम ईश्वर और दुनिया दोनों की सेवा नहीं कर सकते. असली ज़िन्दगी की तरफ़ जाने वाला रास्ता तंग और सीधा है. बहुत कम हैं जिन्हें वह रास्ता मिलता है और जो उस रास्ते पर आगे बढ़ते हैं उनमें से भी कम लिये जाते हैं."

यही बात एक सूफ़ी ने इस तरह कही है—

हम ख़ुदा ख़ाही व हम दुनिया ए दूं
ईं ख़याल अस्त-ओ-महाल अस्त-ओ-जनूं

* हिजाब = परदा.

یعنی شدھ ادویت روپ کے اوپر غیریت اعتباری یعنی متھیا دوئتا کا جامہ پہن لیا۔ خدائے مرکب، پرم آتما یعنی برہمہ نے مایاوی کام سنکلپ یعنی شہونات کے ذریعے جیو آتما یعنی خدائے معین کی شکل اختیار کی۔ اب روح یعنی جیو آتما کو پھر سے اپنے وراٹ عالمگیر روپ کو جاننا اور پہچاننا ہے۔ اسی ایک سچائی کو سب مذہبوں نے طرح طرح سے بیان کیا ہے۔ یہ سچائی سب سے سیدھی لیکن سب سے مشکل سچائی ہے۔ وجہ یہ ہے کہ ہم سب خودی اور غیریت کی بھول بھلیاں میں اس بری طرح پھنسے ہوئے ہیں کہ وحدانیت یعنی ادویت کی بے لاگ سچائی کو ہم سمجھنا بھی نہیں چاہتے۔

ایک صوفی کہتا ہے—

چیست دنیا ؟ از خدا غافل شدن
نے کہ معاش و نقرہ و فرزند و زن
نہ گم شد کہ رویش نہ دنیا بہ تافت
کہ گم گشتۂ خویش را باز یافت

یعنی دنیا کیا ہے ؟ روزی، چاندی، بیٹا یا بیوی دنیا نہیں ہیں۔ خدا سے غافل ہونا دنیا ہے۔ جس کسی نے دنیا سے اپنا منہ موڑا وہ پھر مٹ نہیں سکتا، کیونکہ وہ اپنی بھولی ہوئی اصلیت کو پھر سے جان جاتا ہے۔

نہ کوئی پردہ ہے اس کے در پر
نہ روئے روشن نقاب میں ہے،
تو آپ اپنی خودی سے اے دل
حجاب* میں ہے حجاب میں ہے۔

چینی مہاتما لاؤتسے نے اپنی کتاب 'تاؤتے کنگ' میں لکھا ہے—

"اس اننت کو جان لینا ہی اصلی گیان ہے۔ اسے نہ جاننے سے نفس یعنی اندریاں زور کرتی ہیں اور یہی برائی ہے۔"

ٹھیک یہی بات شری کرشن نے بار بار گیتا میں کہی ہے۔

انجیل میں لکھا ہے—

"تم ایشور اور دنیا دونوں کی سیوا نہیں کر سکتے۔ اصلی زندگی کی طرف جانے والا راستہ تنگ اور سیدھا ہے۔ بہت کم ہیں جنہیں وہ راستہ ملتا ہے اور جو اس راستے پر آگے بڑھتے ہیں ان میں سے بھی کم لئے جاتے ہیں۔"

یہی بات ایک صوفی نے اس طرح کہی ہے—

ہم خدا خواہی و ہم دنیائے دوں
ایں خیال است و محال است و جنوں

* حجاب = پردہ

ज्ञान यानी मारफ़त का रास्ता

(डाक्टर भगवानदास)

'ज्ञान' का विशय बहुत ही कठिन और रूखा विशय है. हिन्दू धर्म की किताबों में जिसे ज्ञान कांड कहा जाता है उसी को सूफ़ी किताबों में मारफ़त, हक़ायक़, दक़ायक़, और अक़ायद के नामों से बयान किया जाता है. दीन धर्म का यह एक ऊंचा और ज़रूरी पहलू है. ज्ञान का पहला असूल यह है कि असल हक़ीक़त एक है. सच एक है, झूट बहुत से होते हैं. रास्ती एक है ग़लतियां अनगिनत हैं. ठीक उसी तरह जिस तरह दो नुक़्तों के बीच सीधी लकीर एक ही हो सकती है. वही दोनों के बीच का सब से छोटा फ़ासला है. उन्हीं दोनों नुक़्तों के बीच टेढ़ी मेढ़ी लकीरें बेशुमार खिंच सकती हैं. आदमी के इल्म, उसकी समझ, उसके भावों यानी जज़बात और उसके चलन के लिये ठीक और सीधी राह एक ही है, और वह राह एक बुनियादी रूहानी सचाई का नताजा है. उक़्लैदिस (रेखा गनित) की सारी विद्या दो तीन बुनियादी तारीफ़ों के अन्दर बन्द है. संस्कृत की एक कहावत है—"सर्वं त्रैराशिकम् पाति" यानी सारा इल्म हिसाब एक 'रूल आफ़ थ्री' के अन्दर आ जाता है. इसी तरह सारा दीन धर्म, सारा फ़लसफ़ा और सारी साइन्स, ख़ुदा, क़ुदरत और इनसान इन तीन से सम्बन्ध रखती है. इनमें भी क़ुदरत और इनसान दोनों का वजूद ख़ुदा के वजूद में शामिल है.

हक़ यह है कि असल वजूद भी एक ही है, और वह उस पाक ज़ात ईश्वर अल्लाह का वजूद है. सब सचाइयां की बुनियादी सचाई यह है कि इनसान की आत्मा ईश्वर ही का एक अंश है. क़ुदरत भी अल्लाह ही की क़ुदरत है. यह सारी सृश्टि उसी अनन्त और सदा यकसाँ रहने वाले परमात्मा का नित्य बदलता हुआ लिबास है. इस ज़िन्दगी का असल मतलब यही है कि ईश्वर इनसान के अन्दर अपने को भूला हुआ है और इनसान को चाहिये कि फिर से ईश्वर के अन्दर अपने आप को पहचाने. आत्मा यानी रूह माद्दा परस्ती में फँस कर प्रवृति यानी क़ौसे नज़ूल के रास्ते नीचे उतरती जा रही है. उसे निवृति यानी क़ौसे उरूज के रास्ते फिर से ऊपर उठना है, अपने आप को पहचानना है और जिस ईश्वर अल्लाह से वह निकली थी उसी में फिर फ़ना यानी लीन हो जाना है. प्रवृति का रास्ता नफ़्स परस्ती यानी इन्द्री सुख का रास्ता है. निवृति का रास्ता नफ़्स पर यानी इन्द्रियों पर क़ाबू हासिल करने का रास्ता है. परम-आत्मा, रूहे कुल यानी अल्लाह ने अपने को महदूद करके अपनी ऐनियते हक़ीक़ी

گیان یعنی معرفت کا راستہ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

'گیان' کا وشے بہت ہی کٹھن اور روکھا وشے ہے . ہندو دھرم کی کتابوں میں جسے گیان کانڈ کہا جاتا ہے اسی کو صوفی کتابوں میں معرفت' حقائق' دقائق اور عقائد کے ناموں سے بیان کیا جاتا ہے. دین دھرم کا یہ ایک اونچا اور ضروری پہلو ہے . گیان کا پہلا اصول یہ ہے کہ اصل حقیقت ایک ہے . سچ ایک ہے' جھوٹ بہت سے ہوتے ہیں . راستی ایک ہے غلطیاں انگنت ہیں . ٹھیک اسی طرح جس طرح دو نقطوں کے بیچ سیدھی لکیر ایک ہی ہوسکتی ہے . وہی دونوں کے بیچ کا سب سے چھوٹا فاصلہ ہے . انہیں دونوں نقطوں کے بیچ ٹیڑھی میڑھی لکیریں بے شمار کھنچ سکتی ہیں . آدمی کے علم' اسکی سمجھ' اس کے بھاؤوں یعنی جذبات اور اس کے چلن کے لئے ٹھیک اور سیدھی راہ ایک ہی ہے' اور وہ راہ ایک بنیادی روحانی سچائی کا نتیجہ ہے . اقلیدس (ریکھا گنت) کی ساری ودیا دو تین بنیادی تعریفوں کے اندر ہے . سنسکرت کی ایک کہاوت ہے—'' سروم ترے راشکم پاتی .'' یعنی سارا علم حساب ایک 'رول آف تھری' کے اندر آ جاتا ہے . اسی طرح سارا دین دھرم' سارا فلسفہ اور ساری سائنس' خدا' قدرت اور انسان ان تینوں سے سمبندھ رکھتی ہے . ان میں بھی قدرت اور انسان دونوں کا وجود خدا کے وجود میں شامل ہے .

حق یہ ہے کہ اصل وجود بھی ایک ہی ہے' اور وہ اس پاک ذات ایشور اللہ کا وجود ہے . سب سچائیوں کی بنیادی سچائی یہ ہے کہ انسان کی آتما ایشور ہی کا ایک انش ہے . قدرت بھی اللہ ہی کی قدرت ہے . یہ ساری سرشٹی اسی اننت اور سدا یکساں رہنے والے پرماتما کا نتیہ بدلتا ہوا لباس ہے . اس زندگی کا اصل مطلب یہی ہے کہ ایشور انسان کے اندر اپنے کو بھولا ہوا ہے اور انسان کو چاہئے کہ پھر سے ایشور کے اندر اپنے آپ کو پہچانے . آتما یعنی روح مادہ پرستی میں پھنسکر پرورتی یعنی قوس نزول کے راستے نیچے اترتی جا رہی ہے . اسے نورتی یعنی قوس عروج کے راستے پھر سے اوپر اٹھنا ہے' اپنے آپ کو پہچاننا ہے اور جس ایشور اللہ سے وہ نکلی تھی اسی میں پھر فنا یعنی لین ہوجانا ہے . پرورتی کا راستہ نفس پرستی یعنی اندری سکھ کا راستہ ہے . نورتی کا راستہ نفس پر یعنی اندریوں پر قابو حاصل کرنے کا راستہ ہے . پرم آتما' روح کل یعنی اللہ نے اپنے کو محدود کر کے اپنی عینیت حقیقی

दानवता के दावानल में
जलने से कुछ शेष न होगा

(5)

यही नहीं, जब छा जायेंगे
बमवर्षक नभयान गगन में
"ऐटम" गोले बरसेंगे तब
राख बनेगी धरती क्षण में

(6)

आह न पूछो उस क्षण भू पर
कैसा भयानक दृश्य मचेगा ?
"नागासाकी-हिरोशिमा" से
बढ़कर शत-शत ज्वाला उठेगा !

(7)

युग-युग से निर्मित औ रक्षित
मानव का संसार जलेगा
लुप्त मनुज की संस्कृति होगी
मानव का इतिहास मिटेगा

(8)

क्या हम यह सब जानबूझकर
भी पत्थर से मौन रहेंगे ?
चिता हमारी ही बनती हो
औ हम जिन्दा मौन रहेंगे ?

(9)

जगती के इन्सान सँभल ! कर
जंगख़ोर की हार सुनिश्चित
गूँजे अमन-निनाद हमारा
"शान्ति-कबूतर" रहे सुरक्षित.

दानवता = हैवानी, दावानल = जंगल की आग, शेष = बाक़ी, बमवर्षक = बम बरसानेवाले, नभयान = हवाई जहाज़, शत शत = सैकड़ों, निर्मित = बनाया हुआ, रक्षित = महफ़ूज़, लुप्त = ग़ायब, मनुज = आदमी, संस्कृति = तहज़ीब, निनाद = नारा.

دانوتا کے داوانل میں
جلنے سے کچھ شیش نہ ہوگا

(5)

یہی نہیں، جب چھا جائینگے
بم ورشک نبھیان گگن میں
"ایٹم" گولے برسینگے تب
راکھ بنے گی دھرتی چھن میں

(6)

آہ نہ پوچھو اُس چھن بھو پر
کیسا بھیانک حشر مچے گا ؟
" ناگا ساکی ھیرو شیما " سے
بڑھکر شت شت جوال اُٹھیگا !

(7)

یگ یگ سے نرمت آو رکشت
مانو کا سنسار جلے گا
لپت منج کی سنسکرتی ہوئی
مانو کا اِتہاس مٹے گا

(8)

کیا ہم یہ سب جان بوجھکر
بھی پتھر سے مون رہینگے ؟
چتا ہماری ہی بنتی ہو
او ہم زندہ مون رہینگے ؟

(9)

جگتی کے انسان سنبھل ! کر
جنگ خور کی ہار سنشچت
گونجے امن نناد ہمارا
" شانتی کبوتر " رہے سرکشت

دانوتا = حیوانی، داوانل = جنگل کی آگ، شیش = باقی، بم ورشک = بم برسانے والے، نبھ یان = ہوائی جہاز، شت شت = سیکڑوں، نرمت = بنایا ہوا، رکشت = محفوظ، لپت = غائب، منج = آدمی، سنسکرتی = تہذیب، نناد = نعرہ .

नया हिन्द — نیا هند

12 फ़रवरी, सन '52 नम्बर 2 — نمبر 2 فروری' سن '52 جلد 12

…त आदमी, प्रेम धरम है, हिन्दुस्तानी बोली,
नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمي' پریم دھرم ھے' ھندستانی بولی'
'نیا ھند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کي جھولی .

लड़ाई की आग

(भारतीभक्त)

(1)

भूखे मानव तड़प रहे हैं
अघा रहा है गीधों का मन
महायुद्ध की घटा देखकर
हर्षित केवल जोंकों का मन

(2)

युद्ध छिड़ेगा—लूट मचेगी
पूँजी उसमें खुल खेलेगी
डालर के सब पिछलग्गों की
महलें नभ को ठेल बढ़ेंगी

(3)

जनता तो बेमौत मरेगी
घर भी उनके ही उजड़ेंगे
हँसते-हँसते बच्चे उनके
दम तोड़ जहाँ से गुज़रेंगे

(4)

रोटी सोने मोल बिकेगी
बेटी का कुछ मोल न होगा

لڑائي کی آگ

(بھارتی بھکت)

(1)

بھوکے مانو تڑپ رھے ھیں
اگھا رھا ھے گیدھوں کا من
مہا یدھ کی گھٹا دیکھکر
ھرشت کیول جونکوں کا من

(2)

یدھ چھڑے گا—لوٹ مچے گی
پونجی اُس میں کھل کھیلیگی
ڈالر کے سب پچھ لگوں کی
محلیں نبھ کو ٹھیل بڑھیگی

(3)

جنتا تو بے موت مرے گی
گھر بھی اُن کے ھی اُجڑینگے
ھنستے ھنستے بچے اُن کے
دم توڑ جہاں سے گذرینگے

(4)

روٹی سونے مول بکے گی
بیٹی کا کچھ مول نہ ھوگا

महायुद्ध = बड़ी लड़ाई, हर्षित = खुश.

مہایدھ = بڑی لڑائی' ھرشت = خوش .

24/321

[illegible]

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी का
माहवार परचा
फरवरी 1952

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا
ماہواری پرچا
فروری 1952

चन्दा—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, फी परचा दस आने.

چندہ—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

मैनेजर 'नया हिन्द'

مینیجر 'نیا ہند'

न हमेशा हमेशा के लिये टूट सकते हैं. बंटवारे के बावजूद कारोबारी, ब्योपारी, समाजी, विद्याई, साइन्सी सम्बंध क़ायम रहेंगे और बढ़ेंगे. हिन्दुस्तान के तीन टुकड़े कर दिये गये मगर इन टुकड़ों को जोड़ सकने वाली ताक़त मिलवां और आम समझ भाषा के रूप में क़ायम रहे तो फिर से अखंड हिन्दुस्तान पैदा हो सकता है. अखंड हिन्दुस्तान न भी पैदा हो तब भी भारत के मुख्तलिफ़ प्रान्तों में राजकाजी, ब्योपारी, समाजी, विद्याई, साइन्सी, कारोबारी और सनअती (उद्योगी) बन्धनों को क़ायम रखने वाली और सब को हर तरह का फ़ायदा और सहूलत पहुँचाने वाली वह भाषा होगी जिसे हम हिन्दुस्तानी कहते हैं. जिससे मुराद वह सरल हिन्दी या आसान उर्दू है जो पिछले ज़मानों की तरह मुख्तलिफ़ भाषाओं के शब्द लेती, अपनाती, टकसालती और सारे देस में चलाती है.

इसमें शक नहीं कि शुद्ध हिन्दी के तीन बड़े इलाक़े हैं: उत्तर प्रदेश (आगरा और अवध), बिहार और मध्य भारत जिसमें वह हिस्सा भी शामिल कर लिया जाय जो अब मध्य प्रदेश का हिन्दी इलाक़ा है. इसके बरअक्स हिन्दुस्तानी का हक़ीक़ी और या काम में आ सकने वाला इलाक़ा बक़िया सब मुल्क है. खालिस हिन्दी इलाक़ों की भी आम जनता और जनता पसन्द विद्वान हिन्दुस्तानी के पक्षपाति हैं, और रहेंगे. महाराष्ट्र, बंगाल, आसाम, उड़ीसा और तेलंगाना के लोग शुद्ध हिन्दी से ज़ियादा हिन्दुस्तानी से वाबस्ता हैं. खास कर बोल चाल और काम काज में हिन्दुस्तानी का चलन होगा. बिद्या, बासू, बिनोद, राबीन्द्र नाथ कहने वाले बंगालियों को कहां तक डंडे मार मार कर सिखाया जा सकेगा कि विद्या, वसु, विनोद और रवीन्द्र नाथ शुद्ध हैं.

हिन्दुस्तानी का भविश्य सब से ज़ियादा इन करोड़ों हिन्दू मुसलमानों की वजह से रौशन है जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मुख्तलिफ़ इलाक़ों में रहते बसते हैं और मादरी ज़बान की हैसियत से हिन्दुस्तानी बोलते हैं. मैसूर और मदरास, महाराष्ट्र और तेलंगाना, सिन्ध और बंगाल, सरहद और आसाम में करोड़ों लोग हैं जो न तो अदबी उर्दू बोलते हैं और न अदबी हिन्दी, इनकी ज़बान एक क़िस्म की मिलवां भाषा है जिसे अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानी कहा है और यह नाम सही मालूम होता है.

हिन्दुस्तानी का भविश्य इन लोगों की वजह से भी अच्छा मालूम देता है जो उर्दू से वाबस्ता हैं. उरदू का यह अहसान हिन्दी पर हमेशा रहेगा कि उर्दू की तरक़्क़ी से लाज़मी तौर पर हिन्दी के फैलने, बढ़ने और क़ौमी अहमियत हासिल करने में मदद मिली. अगर भारत में करोड़ों उर्दू बोलने वाले न हो : तो हिन्दी के राज भाषा बनने का सवाल

نہ ہمیشا ہمیشا کے لئے ٹوٹ سکتے ہیں ۔ بٹوارے کے باوجود کاروباری، بیوپاری، سماجی، ودیائی، سائنسی سمبندھ قائم رہیں گے اور بڑھیں گے ۔ ہندستان کے تین ٹکڑے کر دیئے گئے مگر اِن ٹکڑوں کو جوڑ سکنے والی طاقت ملواں اور آم سمجھ بھاشا کے روپ میں قائم رہے تو پھر سے اکھنڈ ہندستان پیدا ہو سکتا ہے ۔ اکھنڈ ہندستان نہ بھی پیدا ہو تب بھی بھارت کے مختلف پرانتوں میں راجکاجی، بیوپاری، سماجی، ودیائی، سائنسی، کاروباری اور صنعتی (ادیوگی) بندھنوں کو قائم رکھنے والی اور سب کو ہر طرح کا فایدا اور سہولت پہنچانے والی وہ بھاشا ہوگی جسے ہم ہندستانی کہتے ہیں ۔ جس سے مراد وہ سرل ہندی یا آسان اُردو ہے جو پچھلے زمانوں کی طرح مختلف بھاشاؤں کے شبد لیتی، اپناتی، ٹکسالتی اور سارے دیس میں چلاتی ہے ۔

اِس میں شک نہیں کہ شدھ ہندی کے تین بڑے علاقے ہیں : اُتر پردیش (آگرا اور اودھ)، بہار اور مدھیہ بھارت جس میں وہ حصا بھی شامل کرلیا جائے جو اب مدھیہ پردیش کا ہندی علاقا ہے ۔ اِس کے برعکس ہندستانی کا حقیقی اور یا کام میں آ سکنے والا علاقا بقیا سب ملک ہے ۔ خالص ہندی علاقوں کی بھی آم جنتا اور جنتا پسند ودوان ہندستانی کے پکش پاتی ہیں، اور رہیں گے ۔ مہاراشٹر، بنگال، آسام، اُڑیسا اور تلنگانہ کے لوگ شدھ ہندی سے زیادہ ہندستانی سے وابستا ہیں ۔ خاص کر بول چال اور کام کاج میں ہندستانی کا چلن ہوگا ۔ بِدیا، باسو، بِنود، رابِندر ناتھ کہنے والے بنگالیوں کو کہاں تک ڈنڈے مار مار کر سکھایا جا سکے گا کہ وِدیا، وسو، ونود اور رویندر ناتھ شدھ ہیں ۔

ہندستانی کا بھوشیہ سب سے زیادہ اِن کروڑوں ہندو مسلمانوں کی وجہ سے روشن ہے جو ہندستان اور پاکستان کے مختلف علاقوں میں رہتے بستے ہیں اور مادری زبان کی حیثیت سے ہندستانی بولتے ہیں ۔ میسور اور مدراس، مہاراشٹر اور تلنگانا، سندھ اور بنگال، سرحد اور آسام میں کروڑوں لوگ ہیں جو نہ تو ادبی اُردو بولتے ہیں اور نہ ادبی ہندی، اِن کی زبان ایک قسم کی ملواں بھاشا ہے جسے انگریزوں نے ہندستانی کہا ہے اور یہ نام صحیح معلوم ہوتا ہے ۔

ہندستانی کا بھوشیہ اِن لوگوں کی وجہ سے بھی اچھا معلوم دیتا ہے جو اُردو سے وابستا ہیں ۔ اُردو کا یہ احسان ہندی پر ہمیشہ رہیگا کہ اُردو کی ترقی سے لازمی طور پر ہندی کے پھیلنے، بڑھنے اور قومی اہمیت حاصل کرنے میں مدد ملی ۔ اگر بھارت میں کروڑوں اُردو بولنے والے نہ ہوتے تو ہندی کے راج بھاشا بننے کا سوال